CUET UG

NTA द्वारा जारी पाठ्यक्रम के अनुसार

EXAM 2026

भूगोल/भूविज्ञान

GEOGRAPHY/GEOLOGY

अध्यायवार MCQs

Nodia

Scan QR Code for Demo PDF

CUET UG 2026

भूगोल / भूविज्ञान

GEOGRAPHY / GEOLOGY

अध्यायवार MCQ

NTA द्वारा जारी पाठ्यक्रम के अनुसार

NODIA

CUET UG GEOGRAPHY / GEOLOGY
Edition March 2026
Published by :NODIA
An Imprint of Nodia EDITIONS LLP

MRP ₹620.00

NODIA EDITIONS LLP
125, Sector 6, Vidyadhar Nagar, Jaipur 302039
Phone :+91 9024037387
email : mail@nodia.in

CONTENTS

For the year 2026

GEOGRAPHY / GEOLOGY – 313 Syllabus for CUET(UG)

A. Fundamentals of Human Geography

Unit – I: Human Geography - Nature and Scope

Unit – II: People

- Population of the world- distribution, density and growth;
- Population change – spatial patterns and structure; determinants of population change;
- Human development – concept; selected indicators, international comparisons.

Unit – III: Human Activities

- Primary activities – concept and changing trends; gathering, pastoral, mining, subsistence agriculture, modern agriculture; people engaged in agriculture and allied activities – some examples from selected countries;
- Secondary activities – concept; manufacturing; agro-processing, household, small-scale, large-scale Industries, people engaged in secondary activities
- Tertiary activities – some examples from selected countries;
- Quaternary activities – concept; knowledge-based industries; people engaged in quaternary activities – some examples from selected countries.

Unit – IV: Transport, Communication and Trade

- Land transport – roads, railways – rail network; trans – continental railways;
- Water transport – inland waterways; major ocean routes;
- Air transport – Intercontinental air routes ;
- Oil and gas pipelines;
- Satellite communication and cyberspace ;
- International trade – basis and changing patterns; ports as gateways of international trade, role of WTO in International trade.

B. India: People and Economy

Unit – I: People

- Population – distribution density and growth, composition of population-linguistic and religious, rural – urban population occupational; change through time-regional variations.

Unit – II: Human Settlements

- Rural settlements – Types and distribution.
- Urban settlements – Types, distribution and functional classification.

Unit – III: Resources and Development

- Land resources-general land use; agriculture land use – major crops; agricultural development and problems, common property resources.
- Water resources – availability and utilization – irrigation, domestic, industrial and other uses; scarcity of water and conservation methods – rain water harvesting and watershed management.
- Mineral and energy resources – metallic and non-metallic minerals and their distribution; conventional and non-conventional energy sources.
- Planning in India – target area planning (case study); idea of sustainable development (case study).

Unit – IV: Transport, Communication and International Trade

- Transport and communication – roads, railways, waterways and airways; oil and gas pipelines; communication networking – radio, television, satellite and internet.
- International trade – changing pattern of India's foreign trade; seaports and their hinterland and airports.

Unit – V: Geographical Perspective on Selected Issues and Problems

- Environmental pollution ; Urban – waste disposal ;
- Urbanization-rural-urban migration; problems of slums;
- Land degradation.

अध्याय 01
मानव भूगोल

1. मानव भूगोल को एक अध्ययन क्षेत्र के रूप में किस प्रकार वर्णित किया गया है?
   (A) मुख्य रूप से आनुभविक और सैद्धांतिक
   (B) समाकलनात्मक, आनुभविक और व्यावहारिक
   (C) विशेष रूप से विवरणात्मक और प्रादेशिक
   (D) पूर्णतः भौतिक परिघटनाओं पर केंद्रित

2. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन भूगोल में द्वैतवाद के मुद्दे से संबंधित नहीं है?
   (A) क्या भूगोल को केवल मानवीय क्रियाओं का अध्ययन करना चाहिए?
   (B) क्या भूगोल को नियम बनाने वाला (नोमोथेटिक) होना चाहिए?
   (C) क्या भूगोल को विवरणात्मक (इडियोग्राफिक) होना चाहिए?
   (D) क्या अध्ययन का उपागम प्रादेशिक अथवा क्रमबद्ध होना चाहिए?

3. निम्नलिखित सूचियों का मिलान कीजिए:
   List I: (अवधारणा)
   P. पृथ्वी के 'रूप'
   Q. तूफान की 'आँख'
   R. नदी का 'मुख'
   S. 'परिसंचरण की धमनियों'
   List II: (विवरण)
   1. जलमार्गों का जाल
   2. जलडमरूमध्य
   3. मानव शरीर रचना से रूपक
   4. नदी का अंतिम भाग
   (A) P-3, Q-2, R-4, S-1
   (B) P-1, Q-2, R-3, S-4
   (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
   (D) P-2, Q-1, R-4, S-3

4. "मानव भूगोल मानव समाजों और धरातल के बीच संबंधों का संश्लेषित अध्ययन है।" यह परिभाषा किसने दी है?
   (A) पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश
   (B) एलन सी. सेंपल
   (C) ग्रिफिथ टेलर
   (D) रैटजेल

5. एलन सी. सेंपल की मानव भूगोल की परिभाषा में कौन-सा शब्द संबंधों की गत्यात्मकता को व्यक्त करता है?
   (A) संश्लेषित
   (B) नियंत्रित
   (C) परिवर्तनशील
   (D) संकल्पना

6. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
   अभिकथन (A): प्रौद्योगिकी किसी समाज के सांस्कृतिक विकास के स्तर की सूचक होती है।
   कारण (R): मानव ने प्रकृति के नियमों को बेहतर ढंग से समझने के बाद ही प्रौद्योगिकी का विकास किया है।
   (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
   (D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

7. आदिम मानव समाज और प्रकृति की प्रबल शक्तियों के बीच की अन्योन्यक्रिया को क्या कहा गया?
   (A) संभववाद
   (B) नवनिश्चयवाद
   (C) मानवतावाद
   (D) पर्यावरणीय निश्चयवाद

8. मानव के प्राकृतीकरण की अवधारणा के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
   1. मानव प्रकृति के आदेशों के अनुसार अपने आप को ढाल लेता है।
   2. प्रौद्योगिकी का स्तर अत्यंत निम्न होता है।
   3. मानव के सामाजिक विकास की अवस्था आदिम होती है।
   4. मानव प्रकृति पर विजय प्राप्त कर लेता है।
   उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
   (A) केवल 1 और 2
   (B) केवल 2, 3 और 4
   (C) केवल 1, 2 और 3
   (D) सभी 1, 2, 3 और 4

9. मध्य भारत के अबूझमाड़ क्षेत्र में रहने वाले 'बेंदा' की कहानी किस भौगोलिक अवधारणा का एक उदाहरण है?
   (A) प्रकृति का मानवीकरण
   (B) नवनिश्चयवाद

(C) मानव का प्राकृतीकरण
(D) व्यवहारवाद

10. 'माता-प्रकृति' की संकल्पना किस प्रकार के समाजों के लिए प्रासंगिक है?
(A) जो प्राकृतिक संसाधनों पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर हैं
(B) जो तकनीकी और औद्योगिक रूप से बहुत विकसित हैं
(C) जो आधुनिक नगरीय और महानगरीय क्षेत्रों में रहते हैं
(D) जो गहन औद्योगिक और व्यापारिक गतिविधियों में लगे हैं

11. निम्नलिखित में से कौन-सा एक 'संभववाद' का सबसे उपयुक्त वर्णन है?
(A) जिसमें मानव समाज पूरी तरह से प्रकृति द्वारा नियंत्रित होता है
(B) विकास की अंधी दौड़ जिसमें परिणामों पर ध्यान नहीं दिया जाता
(C) मानव गतिविधियों पर प्रकृति का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता
(D) जिसमें प्रकृति अवसर देती है और मानव उपयोग करता है

12. उच्च भूमियों पर स्वास्थ्य विश्रामस्थल, विशाल नगरीय प्रसार, और खेत जैसी मानवीय क्रियाएँ किसका निर्माण करती हैं?
(A) भौतिक भू-दृश्य
(B) सांस्कृतिक भू-दृश्य
(C) प्राकृतिक पर्यावरण
(D) जैविक पर्यावरण

13. नॉर्वे के 'कैरी' की जीवन शैली का उदाहरण, जो कृत्रिम रूप से गर्म कार्यालय और उष्णकटिबंधीय फलों का आनंद लेती है, किस अवधारणा को दर्शाता है?
(A) पर्यावरणीय निश्चयवाद
(B) रुको और जाओ निश्चयवाद
(C) प्रकृति का मानवीकरण
(D) आदिम साम्यवाद

14. निम्नलिखित में से कौन-सा एक मानव भूगोल का उपगमन नहीं है?
(A) क्षेत्रीय विभिन्नता
(B) मात्रात्मक क्रांति
(C) अन्वेषण और वर्णन
(D) जैविक नियतिवाद

15. 'नवनिश्चयवाद' या 'रुको और जाओ निश्चयवाद' की संकल्पना किसने प्रस्तुत की?
(A) ग्रिफिथ टेलर
(B) पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश
(C) रैटज़ेल
(D) एलन सी. सेंपल

16. नवनिश्चयवाद की संकल्पना के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) यह पर्यावरणीय निश्चयवाद और संभववाद के बीच का मध्य मार्ग है
(B) यह मानता है कि विकास के लिए प्राकृतिक नियमों की अवहेलना होनी चाहिए
(C) यह दर्शाता है कि न तो नितांत आवश्यकता है और न ही पूर्ण स्वतंत्रता
(D) यह संकल्पना एक संतुलन बनाने का प्रयास करती है जो द्वैतवाद को हटाती है

17. ग्रिफिथ टेलर द्वारा प्रयुक्त यातायात बत्तियों का रूपक क्या दर्शाता है?
(A) लाल बत्ती का अर्थ है 'जाओ' और हरी बत्ती का अर्थ है 'रुको'
(B) हरी बत्ती 'विकास' और लाल बत्ती 'सीमाओं' का प्रतीक है
(C) पीली बत्ती का अर्थ है विकास को पूरी तरह से रोक देना
(D) इसका यातायात नियमों से कोई लेना-देना नहीं है

18. विकसित अर्थव्यवस्थाओं द्वारा अपनाई गई 'मुक्त चाल' के परिणामस्वरूप निम्नलिखित में से कौन-सा पर्यावरणीय प्रभाव नहीं हुआ है?
(A) जैव-विविधता में वृद्धि
(B) हरित-गृह प्रभाव
(C) ओज़ोन परत अवक्षय
(D) भूमंडलीय तापन

19. मानव भूगोल की निम्नलिखित अवस्थाओं को कालक्रमानुसार व्यवस्थित करें:
1. उत्तर-आधुनिकवाद
2. क्षेत्रीय विभेदन
3. स्थानिक संगठन
4. अन्वेषण और वर्णन
5. मानवतावादी, आमूलवादी और व्यवहारवादी विचारधाराओं का उदय

(A) 4, 2, 3, 5, 1
(B) 1, 2, 3, 4, 5
(C) 4, 3, 2, 1, 5
(D) 2, 4, 5, 3, 1

20. मानव भूगोल की कौन-सी विचारधारा का संबंध मुख्यत: लोगों के सामाजिक कल्याण के विभिन्न पक्षों जैसे आवासन, स्वास्थ्य और शिक्षा से था?
(A) आमूलवादी विचारधारा
(B) व्यवहारवादी विचारधारा
(C) अस्तित्ववादी विचारधारा
(D) कल्याणपरक या मानवतावादी विचारधारा

21. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:

अभिकथन (A): आमूलवादी (रेडिकल) विचारधारा ने निर्धनता, बंधन और सामाजिक असमानता की व्याख्या के लिए मार्क्स के सिद्धांत का उपयोग किया।
कारण (R): इस विचारधारा के अनुसार, समकालीन सामाजिक समस्याओं का संबंध पूँजीवाद के विकास से था।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

22. प्रत्यक्ष अनुभव के साथ-साथ मानव जातीयता, प्रजाति, धर्म इत्यादि पर आधारित सामाजिक संवर्गों के दिक्काल बोध पर किस विचारधारा ने अधिक जोर दिया?
(A) कल्याणपरक विचारधारा
(B) व्यवहारवादी विचारधारा
(C) आमूलवादी विचारधारा
(D) नवनिश्चयवाद

23. निम्नलिखित में से कौन-सा जोड़ा सही सुमेलित है?
(A) सामाजिक भूगोल - सैन्य विज्ञान
(B) आर्थिक भूगोल - मनोविज्ञान
(C) राजनीतिक भूगोल - समाजशास्त्र
(D) जनसंख्या भूगोल - जनांकिकी

24. मानव भूगोल की प्रकृति को 'अंतर-विषयक' क्यों माना जाता है?
(A) क्योंकि यह मानवीय तत्वों को समझने हेतु सामाजिक विज्ञानों से जुड़ती है
(B) क्योंकि यह केवल भौतिकी के कठोर नियमों और सिद्धांतों का उपयोग करता है
(C) क्योंकि यह केवल पुरानी ऐतिहासिक घटनाओं और तथ्यों पर ध्यान देती है
(D) क्योंकि यह अन्य सभी सामाजिक विषयों से पूरी तरह से स्वतंत्र है

25. निम्नलिखित सूचियों का मिलान कीजिए:
List I: (मानव भूगोल उपक्षेत्र)
P. व्यवहारवादी भूगोल
Q. सामाजिक कल्याण का भूगोल
R. सांस्कृतिक भूगोल
S. लिंग भूगोल
List II: (सहयोगी अनुशासन)
1. कल्याण अर्थशास्त्र
2. समाजशास्त्र
3. मनोविज्ञान
4. मानवविज्ञान
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

26. ऐतिहासिक भूगोल मानव भूगोल के किस मुख्य क्षेत्र का उप-क्षेत्र है?
(A) सामाजिक भूगोल
(B) आर्थिक भूगोल
(C) राजनीतिक भूगोल
(D) जनसंख्या भूगोल

27. 'मात्रात्मक क्रांति' किस काल अवधि से संबंधित है?
(A) 1970 का दशक
(B) 1990 का दशक
(C) 1930 का दशक
(D) 1950 के दशक के अंत से 1960 के दशक के अंत तक

28. नीचे दिए गए कथनों पर विचार करें और सही विकल्प चुनें:
कथन 1: संभववाद की अवधारणा में, प्रकृति मानव के लिए अवसर प्रदान करती है।
कथन 2: पर्यावरणीय निश्चयवाद की अवधारणा में, मानव प्रकृति का दास होता है।
(A) केवल कथन 1 सही है।
(B) केवल कथन 2 सही है।
(C) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।
(D) न तो कथन 1 और न ही कथन 2 सही है।

29. मानव भूगोल के अध्ययन के आरंभिक उपनिवेश युग का मुख्य उपागम क्या था?
(A) प्रादेशिक विश्लेषण
(B) क्षेत्रीय विभेदन
(C) अन्वेषण और विवरण
(D) स्थानिक संगठन

30. 'रुको और जाओ निश्चयवाद' की संकल्पना का मूल तात्पर्य क्या है?
(A) इसका अर्थ है कि समस्त विकास कार्यों को पूरी तरह से रोक देना चाहिए
(B) इसका अर्थ है कि आधुनिक प्रौद्योगिकी का अंधाधुंध उपयोग किया जाए
(C) इसका अर्थ है कि मानव प्रकृति से पूर्णतः स्वतंत्र और स्वायत्त है
(D) प्रकृति के संकेतों को समझकर सतत विकास के पथ पर आगे बढ़ना

31. चिकित्सा भूगोल का अध्ययन किस सामाजिक विज्ञान के अनुशासन से संबंधित है?
(A) महामारी विज्ञान
(B) समाजशास्त्र
(C) मानवविज्ञान
(D) अर्थशास्त्र

32. निम्नलिखित में से कौन-सा एक 'संकेत' सूचना का स्रोत नहीं है?
(A) यात्रियों के विवरण
(B) चंद्रमा से चट्टानी पदार्थों के नमूने
(C) प्राचीन मानचित्र
(D) प्राचीन महाकाव्य

33. निम्नलिखित में से कौन-सा एक लोगों और पर्यावरण के बीच अन्योन्यक्रिया का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारक है?
(A) मानव बुद्धिमत्ता
(B) प्रौद्योगिकी
(C) लोगों के अनुभव
(D) मानवीय भाईचारा

34. मानव भूगोल की विचारधाराओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कल्याणपरक विचारधारा का संबंध सामाजिक कल्याण से था।
2. आमूलवादी विचारधारा ने निर्धनता की व्याख्या के लिए मार्क्स के सिद्धांत का उपयोग किया।
3. व्यवहारवादी विचारधारा ने प्रत्यक्ष अनुभव पर जोर दिया।
4. नवनिश्चयवाद विचारधारा 1980 के दशक में उभरी।
5. ये सभी विचारधाराएँ 1970 के दशक में मात्रात्मक क्रांति से उत्पन्न असंतुष्टि के कारण जन्मीं।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 2, 3, 4, 5
(C) केवल 1, 2, 3, 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4, 5

35. भूगोल में 'द्वैतवाद' से संबंधित निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक असत्य है?
(A) यह विषय को नियम बनाने वाला (नोमोथेटिक) या विवरणात्मक (इडियोग्राफिक) होने पर बहस करता है।
(B) यह अध्ययन के उपागम को प्रादेशिक या क्रमबद्ध होने पर चर्चा करता है।
(C) यह इस बात पर जोर देता है कि प्रकृति और मानव को हमेशा अलग-अलग अध्ययन किया जाना चाहिए।
(D) यह इस बात पर विचार करता है कि क्या व्याख्या सैद्धांतिक या ऐतिहासिक-संस्थागत होनी चाहिए।

36. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): मानव भूगोल की प्रकृति अत्यधिक अंतर-विषयक है।
कारण (R): यह मानवीय परिघटनाओं की व्याख्या करने के लिए विभिन्न सामाजिक विज्ञानों से सूचना और विधियों का उपयोग करता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

37. उत्तर उपनिवेश युग में मानव भूगोल के अध्ययन का मुख्य उपागम क्या था?
(A) अन्वेषण और विवरण
(B) स्थानिक संगठन
(C) प्रादेशिक विश्लेषण
(D) क्षेत्रीय विभेदन

38. निम्नलिखित सूचियों का मिलान कीजिए:
List I: (अवधि)
P. आरंभिक उपनिवेश युग
Q. उत्तर उपनिवेश युग
R. 1930 का दशक
S. 1970 का दशक

List II: (उपागम/प्रणोद)
1. प्रादेशिक विश्लेषण
2. क्षेत्रीय विभेदन
3. अन्वेषण और विवरण
4. मानवतावादी विचारधाराओं का उदय

(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

39. 'हमारी पृथ्वी को नियंत्रित करने वाले भौतिक नियमों तथा इस पर रहने वाले जीवों के मध्य संबंधों के अधिक संश्लेषित ज्ञान से उत्पन्न संकल्पना' - यह परिभाषा किस विद्वान की है?
(A) रैटजेल
(B) एलन सी. सेंपल
(C) ग्रिफिथ टेलर
(D) पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश

40. मानव द्वारा भौतिक पर्यावरण से प्राप्त संसाधनों का उपयोग करके निर्मित तत्वों की पहचान करें।
(A) गृह, गाँव, नगर, सड़कें
(B) भू-आकृति, मृदा, जलवायु
(C) प्राकृतिक वनस्पति, प्राणिजात
(D) जल, खनिज, वनस्पति

41. डी.एन.ए. और आनुवांशिकी के रहस्यों की समझ ने मानव को किस प्रकार सक्षम बनाया?
(A) आदिम युग में अग्नि की खोज करने में
(B) वायु गति के नियमों को समझने में
(C) अनेक बीमारियों पर विजय पाने में
(D) घर्षण और ऊष्मा की संकल्पनाओं को समझने में

42. 1990 के दशक में मानव भूगोल में 'उत्तर-आधुनिकवाद' के उदय का मुख्य परिणाम क्या था?
(A) प्रत्येक स्थानीय संदर्भ की समझ के महत्त्व पर जोर दिया गया।
(B) वृहत् सामान्यीकरण और वैश्विक सिद्धांतों पर जोर दिया गया।
(C) केवल मात्रात्मक विधियों का उपयोग किया गया।
(D) मार्क्सवादी सिद्धांतों को सार्वभौमिक रूप से लागू किया गया।

43. निम्नलिखित में से कौन-सा जोड़ा सही सुमेलित नहीं है?
(A) निर्वाचन भूगोल - राजनीति विज्ञान
(B) सैन्य भूगोल - सैन्य विज्ञान
(C) कृषि भूगोल - कृषि विज्ञान
(D) पर्यटन भूगोल - समाजशास्त्र

44. मानव भूगोल के विकास की निम्नलिखित अवस्थाओं का सही कालानुक्रम क्या है?
1. स्थानिक संगठन
2. मानवतावादी, आमूलवादी, व्यवहारवादी विचारधाराओं का उदय
3. उत्तर-आधुनिकवाद
4. प्रादेशिक विश्लेषण
(A) 4, 1, 2, 3
(B) 1, 4, 2, 3
(C) 4, 2, 1, 3
(D) 2, 3, 4, 1

45. भूगोल को एक विषय के रूप में 'समाकलनात्मक' क्यों कहा जाता है?
(A) केवल भौतिक पहलुओं का अध्ययन करता है।
(B) केवल मानवीय पहलुओं का अध्ययन करता है।
(C) क्योंकि यह काल और स्थान के संदर्भ में विभिन्न घटनाओं का विश्लेषण करता है
(D) क्योंकि यह केवल अतीत की घटनाओं का विश्लेषण करता है।

46. मानव भूगोल की परिभाषाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. रैटजेल की परिभाषा संश्लेषण पर जोर देती है।
2. सेंपल की परिभाषा में संबंधों की गत्यात्मकता मुख्य शब्द है।
3. ब्लाश की परिभाषा पृथ्वी और मनुष्य के अंतर्संबंधों की एक नई संकल्पना प्रस्तुत करती है।
4. ग्रिफिथ टेलर ने मानव को प्रकृति का दास बताया।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

47. 'नदी के मुख', 'हिमनदी के प्रोथ', 'जलडमरूमध्य की ग्रीवा' जैसे शब्दों का प्रयोग किसका उदाहरण है?
(A) मानव शरीर रचना विज्ञान से प्रतीकों का प्रयोग करते हुए रूपकों का उपयोग
(B) जीव विज्ञान की शब्दावली का सीधा अनुप्रयोग
(C) भौगोलिक घटनाओं का शाब्दिक वर्णन
(D) भौतिकी के सिद्धांतों का उपयोग

48. जर्मन भूगोलवेत्ता किस प्रकार राज्य/देश का वर्णन 'जीवित जीव' के रूप में करते हैं?
(A) सड़कों और रेलमार्गों को 'परिसंचरण की धमनियों' के रूप में वर्णित करके
(B) इसे एक गतिशील और बढ़ते हुए अस्तित्व के रूप में देखकर
(C) इसकी सीमाओं को स्थिर मानकर
(D) इसके निवासियों को निष्क्रिय मानकर

49. 'प्रकृति और मानव अविभाज्य तत्त्व हैं और इन्हें समग्रता में देखा जाना चाहिए।' इस कथन का क्या निहितार्थ है?
(A) मानव भूगोल और भौतिक भूगोल का अध्ययन हमेशा अलग-अलग करना चाहिए।
(B) प्रकृति और मानव के बीच कोई वैध द्वैधता (dualism) नहीं है।
(C) मानव प्रकृति पर पूरी तरह से हावी है।
(D) प्रकृति मानव गतिविधियों से अप्रभावित रहती है।

50. प्रौद्योगिकी के विकास के संदर्भ में क्या सत्य है?
(A) प्रकृति का ज्ञान प्रौद्योगिकी को विकसित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है।
(B) प्रौद्योगिकी मानव पर पर्यावरण की बंदिशों को बढ़ाती है।
(C) प्रौद्योगिकी का विकास समाज के सांस्कृतिक विकास के स्तर से स्वतंत्र है।
(D) प्रौद्योगिकी का स्तर हमेशा उच्च रहता है।

51. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): पर्यावरणीय निश्चयवाद की अवस्था में मानव प्रकृति की सुनता था, उसकी प्रचंडता से भयभीत होता था और उसकी पूजा करता था।
कारण (R): उस अवस्था में प्रौद्योगिकी का स्तर अत्यंत निम्न था और मानव के सामाजिक विकास की अवस्था भी आदिम थी।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

52. 'बेंदा' की कहानी के संदर्भ में, 'पेंडा' क्या है?
(A) एक प्रकार की झोपड़ी

(B) एक नदी का नाम
(C) एक स्थानीय देवता
(D) कृषि का आदिम रूप (स्थानांतरी कृषि)

53. संभववाद की अवधारणा का श्रेय किस भूगोलवेत्ता को दिया जाता है?
(A) रैटजेल
(B) ग्रिफिथ टेलर
(C) पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश
(D) कार्ल मार्क्स

54. निम्नलिखित सूचियों का मिलान कीजिए:
List I: (अवधारणा)
P. पर्यावरणीय निश्चयवाद
Q. संभववाद
R. नवनिश्चयवाद
S. प्रकृति का मानवीकरण
List II: (मुख्य विचार)
1. प्रकृति अवसर प्रदान करती है
2. प्रकृति मानव पर हावी है
3. मध्य मार्ग, रुको और जाओ
4. प्रौद्योगिकी द्वारा प्रकृति पर विजय
(A) P-2, Q-1, R-3, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

55. मानव भूगोल के क्षेत्रों और उप-क्षेत्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. सामाजिक भूगोल, राजनीतिक भूगोल और आर्थिक भूगोल इसके मुख्य क्षेत्र हैं।
2. व्यवहारवादी भूगोल सामाजिक भूगोल का एक उप-क्षेत्र है।
3. निर्वाचन भूगोल और सैन्य भूगोल राजनीतिक भूगोल के उप-क्षेत्र हैं।
4. संसाधन भूगोल, कृषि भूगोल और उद्योग भूगोल आर्थिक भूगोल के उप-क्षेत्र हैं।
5. जनसंख्या भूगोल का जनांकिकी से कोई संबंध नहीं है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2, 3 और 4
(C) केवल 2, 3, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

56. 1970 के दशक में मानव भूगोल में तीन नई विचारधाराओं के उदय का मुख्य कारण क्या था?
(A) मात्रात्मक क्रांति से उत्पन्न असंतुष्टि और अमानवीय अध्ययन
(B) प्रौद्योगिकी का तीव्र विकास
(C) उपनिवेशवाद का अंत
(D) नए देशों का उदय

57. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, मानव द्वारा प्रकृति के मानवीकरण का उदाहरण नहीं है?
(A) उच्च भूमियों पर स्वास्थ्य विश्रामस्थल
(B) तटों पर पत्तन
(C) आदिम समाज द्वारा प्रकृति की पूजा
(D) अंतरिक्ष में उपग्रह

58. आर्थिक भूगोल के निम्नलिखित उप-क्षेत्रों में से कौन-सा एक व्यावसायिक अर्थशास्त्र और वाणिज्य से संबंधित है?
(A) विपणन भूगोल
(B) संसाधन भूगोल
(C) उद्योग भूगोल
(D) पर्यटन भूगोल

59. मानव भूगोल का मुख्य सरोकार क्या है?
(A) केवल पृथ्वी की भौतिक विशेषताओं का अध्ययन करना।
(B) केवल जनसंख्या वितरण का विश्लेषण करना।
(C) केवल राजनीतिक सीमाओं का मानचित्रण करना।
(D) पृथ्वी को मानव के घर के रूप में समझना और उन सभी तत्वों का अध्ययन करना जिन्होंने मानव को पोषित किया है।

60. 'क्षेत्रीय विभेदन' उपागम का मुख्य बल किस पर था?
(A) सभी प्रदेशों की समानता की पहचान करने पर।
(B) यह समझने पर कि एक प्रदेश अन्य प्रदेशों से किस प्रकार और क्यों भिन्न है।
(C) वैश्विक सिद्धांतों का निर्माण करने पर।
(D) मात्रात्मक तकनीकों का उपयोग करने पर।

61. मानव भूगोल की विभिन्न विचारधाराओं के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) मानवतावादी विचारधारा का संबंध सामाजिक कल्याण से था।
(B) आमूलवादी विचारधारा ने पूंजीवाद के विकास को सामाजिक समस्याओं से जोड़ा।
(C) इन तीनों विचारधाराओं ने भूगोल को अधिक मात्रात्मक और सांख्यिकीय बना दिया।
(D) व्यवहारवादी विचारधारा ने धर्म और प्रजाति जैसे कारकों पर ध्यान केंद्रित किया।

62. मानव भूगोल की आरंभिक अवस्थाओं में द्वैतवाद की बहस के मुख्य बिंदु क्या थे?
1. नियम बनाने वाला (नोमोथेटिक) बनाम विवरणात्मक (इडियोग्राफिक)।
2. प्रादेशिक बनाम क्रमबद्ध उपागम।
3. सैद्धांतिक बनाम ऐतिहासिक-संस्थागत व्याख्या।
4. मानवीय बनाम भौतिक भूगोल।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3

(C) केवल 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

63. अवकाश का भूगोल (Geography of Leisure) किस सामाजिक विज्ञान से संबंधित है?
(A) समाजशास्त्र
(B) मनोविज्ञान
(C) इतिहास
(D) अर्थशास्त्र

64. मानव भूगोल के अध्ययन के लिए 'स्थानिक संगठन' उपागम की मुख्य विशेषता क्या थी?
(A) यह केवल गुणात्मक विश्लेषण पर निर्भर था।
(B) यह कंप्यूटर और परिष्कृत सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग पर केंद्रित था।
(C) इसने ऐतिहासिक विवरणों पर जोर दिया।
(D) इसने सामाजिक कल्याण के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया।

65. निम्नलिखित को उनके विकास के सही कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. नवनिश्चयवाद
2. संभववाद
3. पर्यावरणीय निश्चयवाद
(A) 1, 2, 3
(B) 3, 2, 1
(C) 2, 3, 1
(D) 3, 1, 2

66. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): भूगोल की पहुँच विस्तृत है और किसी भी घटना का भौगोलिक ढंग से अध्ययन किया जा सकता है।
कारण (R): भूगोल एक समाकलनात्मक, आनुभविक एवं व्यावहारिक विषय है जो दिक् एवं काल के संदर्भ में परिघटनाओं का अध्ययन करता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

67. 'भौतिक पर्यावरण' के अंतर्गत निम्नलिखित में से क्या सम्मिलित नहीं है?
(A) भू-आकृति
(B) जलवायु
(C) उद्योग
(D) जल

68. 'मानव-जनित सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण' के तत्व किसके द्वारा निर्मित होते हैं?
(A) केवल प्राकृतिक शक्तियों द्वारा
(B) जानवरों की गतिविधियों द्वारा
(C) अलौकिक शक्तियों द्वारा
(D) भौतिक पर्यावरण द्वारा प्रदत्त संसाधनों का उपयोग करके मानव द्वारा

69. निम्नलिखित में से कौन-सा एक मानव भूगोल का क्षेत्र नहीं है?
(A) सामाजिक भूगोल
(B) आर्थिक भूगोल
(C) भू-आकृति विज्ञान
(D) राजनीतिक भूगोल

70. निम्नलिखित सूचियों का मिलान कीजिए:
List I: (भूगोलवेत्ता)
P. रैटज़ेल
Q. एलन सी. सेंपल
R. पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश
S. ग्रिफिथ टेलर
List II: (अवधारणा/परिभाषा से संबंधित शब्द)
1. गत्यात्मकता, परिवर्तनशील
2. संभववाद
3. संश्लेषण
4. रुको और जाओ निश्चयवाद
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

71. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का भूगोल किस मुख्य विषय से गहनता से जुड़ा हुआ है?
(A) औद्योगिक अर्थशास्त्र
(B) कृषि विज्ञान
(C) जनांकिकी
(D) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार

72. 'बेंदा' की कहानी में, वह और उसके मित्र जंगल के छोटे टुकड़ों को क्यों जलाते हैं?
(A) जुताई के लिए जमीन साफ करने और राख से मृदा को उर्वर बनाने के लिए
(B) मनोरंजन के लिए
(C) जंगली जानवरों को डराने के लिए
(D) देवताओं को प्रसन्न करने के लिए

73. 'कैरी' की कहानी में, सर्दियों में उसके कार्यालय का तापमान 23 डिग्री सेल्सियस पर कैसे बना रहता है?
(A) प्राकृतिक सूर्य के प्रकाश के कारण
(B) भौगोलिक स्थिति के कारण
(C) कृत्रिम साधनों द्वारा
(D) महासागरीय धाराओं के कारण

74. निम्नलिखित में से किस उपागम का उद्देश्य किसी प्रदेश की 'विलक्षणता' की पहचान करना था?
(A) क्षेत्रीय विभेदन
(B) स्थानिक संगठन
(C) प्रादेशिक विश्लेषण
(D) अन्वेषण और विवरण

75. नवनिश्चयवाद की संकल्पना के अनुसार, विकास की प्रक्रिया में मानव को प्रकृति के संबंध में क्या करना चाहिए?
(A) प्रकृति के नियमों का पूर्ण रूप से पालन करना और कोई परिवर्तन न करना।
(B) प्रकृति की पूरी तरह से अवहेलना करना।
(C) प्रौद्योगिकी का उपयोग करके प्रकृति को पूरी तरह से नष्ट कर देना।
(D) प्रकृति जब रुपांतरण की स्वीकृति दे तभी विकास के प्रयत्नों में आगे बढ़ना।

76. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भौतिक भूगोल भौतिक पर्यावरण का अध्ययन करता है।
2. मानव भूगोल भौतिक और मानवीय जगत के बीच संबंधों का अध्ययन करता है।
3. मानव भूगोल मानवीय परिघटनाओं के स्थानिक वितरण का अध्ययन करता है।
4. मानव भूगोल विश्व के विभिन्न भागों में सामाजिक और आर्थिक विभिन्नताओं का अध्ययन करता है।
5. मानव भूगोल का भौतिक भूगोल से कोई संबंध नहीं है।
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 1, 2, 3, 4
(C) केवल 2, 3, 4, 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4, 5

77. 1950 और 1960 के दशकों में स्थानिक संगठन उपागम में भौतिकी के नियमों का अनुप्रयोग क्यों किया जाता था?
(A) सामाजिक असमानता को समझने के लिए।
(B) पर्यावरण संरक्षण के लिए।
(C) मानवीय परिघटनाओं के मानचित्र योग्य प्रतिरूपों की पहचान करने के लिए।
(D) ऐतिहासिक घटनाओं के विश्लेषण के लिए।

78. निम्नलिखित में से कौन-सा एक सांस्कृतिक भू-दृश्य का तत्व नहीं है?
(A) खेत
(B) पत्तन
(C) उद्योग
(D) पर्वत

79. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): समय के साथ, मानव बेहतर और अधिक सक्षम प्रौद्योगिकी का विकास करते हैं।
कारण (R): प्रौद्योगिकी के विकास के साथ, मानव अभाव की अवस्था से स्वतंत्रता की अवस्था की ओर अग्रसर होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

80. किस उपागम में यह मत था कि 'सभी प्रदेश पूर्ण अर्थात् पृथ्वी के भाग हैं, अतः इन भागों की पूरी समझ पृथ्वी पूर्ण रूप से समझने में सहायता करेगी'?
(A) क्षेत्रीय विभेदन
(B) प्रादेशिक विश्लेषण
(C) स्थानिक संगठन
(D) अन्वेषण और विवरण

81. पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश द्वारा प्रस्तुत मानव भूगोल की परिभाषा का मूल भाव क्या है?
(A) यह मानव और पृथ्वी के बीच स्थिर संबंधों पर जोर देती है।
(B) यह पृथ्वी और मनुष्य के बीच अंतर्संबंधों की एक नई और संश्लेषित संकल्पना प्रस्तुत करती है।
(C) यह केवल भौतिक नियमों के अध्ययन पर केंद्रित है।
(D) यह मानवीय क्रियाओं को पूरी तरह से निरर्थक मानती है।

82. मानव भूगोल के अध्ययन में 'मात्रात्मक क्रांति' का प्रमुख उद्देश्य क्या था?
(A) भूगोल में सांख्यिकीय विधियों और गणितीय मॉडल का उपयोग करके उसे अधिक वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ बनाना।
(B) भूगोल को अधिक व्यक्तिपरक और विवरणात्मक बनाना।
(C) भूगोल में ऐतिहासिक विश्लेषण को बढ़ावा देना।
(D) सामाजिक कल्याण के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना।

83. निम्नलिखित सूचियों का मिलान कीजिए:
List I: (मानव भूगोल का उप-क्षेत्र)
P. जनसंख्या भूगोल
Q. आवास भूगोल
R. उद्योग भूगोल
S. संसाधन भूगोल
List II: (संबंधित विषय)
1. नगर/ग्रामीण नियोजन
2. जनांकिकी
3. संसाधन अर्थशास्त्र
4. औद्योगिक अर्थशास्त्र
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

84. मानव भूगोल के विकास के संदर्भ में निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. कंप्यूटर और सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग
2. साम्राज्यी और व्यापारिक रुचियों द्वारा खोजों को प्रोत्साहन
3. मार्क्स के सिद्धांत का उपयोग
4. स्थानीय संदर्भ की समझ पर जोर

(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 3, 1, 4
(D) 3, 2, 4, 1

85. 'पर्यावरणीय निश्चयवाद' की अवधारणा के लिए निम्नलिखित में से कौन सा कथन सबसे उपयुक्त है?
(A) मानव प्रकृति पर विजय प्राप्त करता है।
(B) मानव और प्रकृति के बीच एक सहयोगात्मक संबंध है।
(C) आदिम मानव समाज प्रकृति की प्रबल शक्तियों से अत्यधिक प्रभावित था।
(D) प्रौद्योगिकी मानव को प्रकृति से पूरी तरह स्वतंत्र बनाती है।

86. लिंग भूगोल (Gender Geography) समाजशास्त्र के अलावा और किस अनुशासन से संबंधित है?
(A) राजनीति विज्ञान और इतिहास
(B) मानवविज्ञान और महिला अध्ययन
(C) अर्थशास्त्र और जनांकिकी
(D) मनोविज्ञान और सैन्य विज्ञान

87. आरंभिक उपनिवेश युग में 'विश्वज्ञानकोशीय विवरण' भूगोलवेत्ताओं के लिए क्यों महत्त्वपूर्ण था?
(A) क्योंकि वे केवल मानचित्र बनाने में रुचि रखते थे।
(B) क्योंकि वे सामाजिक सिद्धांतों का परीक्षण करना चाहते थे।
(C) क्योंकि वे पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे।
(D) क्योंकि साम्राज्यी और व्यापारिक रुचियों ने नए क्षेत्रों में खोजों को प्रोत्साहित किया था।

88. मानव भूगोल में 1970 के दशक की विचारधाराओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ये विचारधाराएँ मात्रात्मक क्रांति की प्रतिक्रिया थीं।
2. इन्होंने मानव भूगोल को सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ के प्रति अधिक प्रासंगिक बनाया।
3. कल्याणपरक विचारधारा आवासन, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे पक्षों से संबंधित थी।
4. आमूलवादी विचारधारा का सामाजिक असमानता से कोई लेना-देना नहीं था।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

89. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): नवनिश्चयवाद की संकल्पना एक संतुलन बनाने का प्रयास करती है जो द्वैतवाद को निष्फल करता है।
कारण (R): यह न तो नितांत आवश्यकता (निश्चयवाद) और न ही नितांत स्वतंत्रता (संभववाद) की स्थिति का समर्थन करती है, बल्कि एक मध्य मार्ग सुझाती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

90. भूगोल में 'क्रमबद्ध' बनाम 'प्रादेशिक' उपागम की बहस का मुख्य विषय क्या है?
(A) क्या भूगोल को एक विशिष्ट तत्व (जैसे जलवायु) का विश्व स्तर पर अध्ययन करना चाहिए या एक विशिष्ट क्षेत्र के सभी तत्वों का एक साथ अध्ययन करना चाहिए।
(B) क्या भूगोल को केवल भौतिक या केवल मानवीय पहलुओं का अध्ययन करना चाहिए।
(C) क्या भूगोल को अतीत या वर्तमान पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
(D) क्या भूगोल को गुणात्मक या मात्रात्मक होना चाहिए।

91. निम्नलिखित में से कौन-सा आर्थिक भूगोल का उप-क्षेत्र नहीं है?
(A) कृषि भूगोल
(B) विपणन भूगोल
(C) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का भूगोल
(D) ऐतिहासिक भूगोल

92. 'बेंदा' के संदर्भ में, वह और उसका कबीला किस प्रकार की कृषि करते हैं?
(A) गहन निर्वाह कृषि
(B) स्थानांतरी कृषि
(C) वाणिज्यिक अनाज कृषि
(D) मिश्रित कृषि

93. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, मानव और पर्यावरण के बीच अन्योन्यक्रिया का परिणाम नहीं है?
(A) सांस्कृतिक भू-दृश्य का निर्माण
(B) प्रौद्योगिकी का विकास
(C) पृथ्वी का घूर्णन
(D) पर्यावरण का रूपांतरण

94. निम्नलिखित सूचियों का मिलान कीजिए:
List I: (मानव भूगोल का क्षेत्र)
P. सामाजिक भूगोल
Q. राजनीतिक भूगोल
R. आर्थिक भूगोल

S. आवास भूगोल
List II: (एक संबंधित उप-क्षेत्र)
1. संसाधन भूगोल
2. सांस्कृतिक भूगोल
3. सैन्य भूगोल
4. नगर/ग्रामीण नियोजन
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

95. मानव भूगोल की कौन सी अवस्था/उपागम ने 'किसी प्रदेश की विलक्षणता की पहचान' पर बल दिया था?
(A) क्षेत्रीय विभेदन
(B) अन्वेषण और विवरण
(C) प्रादेशिक विश्लेषण
(D) स्थानिक संगठन

96. मानव के प्राकृतीकरण के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) आदिम सामाजिक विकास
(B) प्रौद्योगिकी का स्तर उच्च था।
(C) मानव प्रकृति के आदेशों के अनुसार स्वयं को ढालता था।
(D) मानव प्रकृति की प्रचंडता से भयभीत था।

97. संभववाद की अवधारणा का विकास किस भूगोलवेत्ता से मुख्य रुप से जुड़ा है?
(A) फ्रेडरिक रैटजेल
(B) पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश
(C) एल्सवर्थ हटिंगटन
(D) ग्रिफिथ टेलर

98. निम्नलिखित में से कौन सी गतिविधि 'मानव का प्राकृतीकरण' को दर्शाती है?
(A) वर्षा के लिए देवताओं की पूजा करना
(B) एयर कंडीशनर का उपयोग करना
(C) ग्रीनहाउस में सब्जियां उगाना
(D) तेज गति से चलने वाले हवाई जहाज बनाना

99. संभववाद की अवधारणा के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह मानव को एक निष्क्रिय कारक मानता है।
2. यह मानता है कि पर्यावरण संभावनाएं प्रदान करता है।
3. मानव इन संभावनाओं का उपयोग करने के लिए स्वतंत्र है।
4. इसके परिणामस्वरुप सांस्कृतिक भू-दृश्यों का निर्माण होता है।
5. यह पर्यावरणीय निश्चयवाद के बिल्कुल विपरीत है।
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 2, 3, 4
(C) केवल 2, 3, 4, 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4, 5

100. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): नॉर्वे के ट्रॉन्डहाइम जैसे ठंडे क्षेत्र में रहने वाली कैरी उष्णकटिबंधीय फलों का आनंद ले पाती है।
कारण (R): प्रौद्योगिकी, जैसे कि तीव्र वायु परिवहन, ने मानव को पर्यावरणीय बाधाओं को दूर करने में सक्षम बनाया है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

101. 'नोमोथेटिक' उपागम का लक्ष्य क्या है?
(A) विशिष्ट घटनाओं का विवरण देना
(B) सामान्य नियम या सिद्धांत बनाना
(C) ऐतिहासिक संदर्भों का विश्लेषण करना
(D) किसी क्षेत्र की विलक्षणता का अध्ययन करना

102. 'इडियोग्राफिक' उपागम किस पर केंद्रित है?
(A) सार्वभौमिक कानूनों का निर्माण
(B) विशिष्ट तथ्यों या घटनाओं का विवरणात्मक अध्ययन
(C) सांख्यिकीय मॉडलिंग
(D) भविष्य की भविष्यवाणी

103. निम्नलिखित में से कौन सा मानव भूगोल के उप-क्षेत्र और उसके सहयोगी अनुशासन का एक गलत युग्म है?
(A) चिकित्सा भूगोल - महामारी विज्ञान
(B) विपणन भूगोल - व्यावसायिक अर्थशास्त्र
(C) लिंग भूगोल - महिला अध्ययन
(D) सांस्कृतिक भूगोल - जनांकिकी

104. मानव भूगोल के कालानुक्रमिक विकास के निम्नलिखित चरणों को सही क्रम में व्यवस्थित करें:
1. उत्तर उपनिवेश युग (प्रादेशिक विश्लेषण)
2. 1970 का दशक (विचारधाराओं का उदय)
3. अंतर-युद्ध अवधि (क्षेत्रीय विभेदन)
4. आरंभिक उपनिवेश युग (अन्वेषण और विवरण)
(A) 4, 1, 3, 2
(B) 1, 4, 3, 2
(C) 4, 3, 1, 2
(D) 3, 4, 1, 2

105. मानव भूगोल के अध्ययन में 1970 के दशक में उभरी आमूलवादी (रेडिकल) विचारधारा की मुख्य प्रेरणा क्या थी?
(A) प्रत्यक्ष अनुभव और व्यवहार
(B) सामाजिक कल्याण और मानवीय मूल्य
(C) मार्क्स का सिद्धांत

(D) पर्यावरण संरक्षण

106. निम्नलिखित सूचियों का मिलान कीजिए:
List I: (विचारधारा)
P. कल्याणपरक
Q. आमूलवादी
R. व्यवहारवादी
S. नवनिश्चयवाद
List II: (मुख्य केंद्र-बिंदु)
1. प्रत्यक्ष अनुभव, जातीयता, धर्म
2. निर्धनता, बंधन, सामाजिक असमानता
3. आवासन, स्वास्थ्य, शिक्षा
4. पर्यावरण और विकास में संतुलन
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

107. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'प्रकृति के मानवीकरण' की अवधारणा का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) मानव प्रकृति की पूजा करता है।
(B) मानव और प्रकृति के बीच कोई अंतःक्रिया नहीं होती है।
(C) मानव पूरी तरह से प्राकृतिक शक्तियों के अधीन है।
(D) मानव प्रौद्योगिकी का उपयोग करके प्रकृति को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार बदलता है।

108. मानव भूगोल की प्रकृति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह भौतिक पर्यावरण का अध्ययन करता है।
2. यह मानव-जनित सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण का अध्ययन करता है।
3. यह इन दोनों के बीच परस्पर अन्योन्यक्रिया का अध्ययन करता है।
4. इसका अध्ययन क्षेत्र संकीर्ण है।
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

109. 'ग्रीनहाउस प्रभाव', 'ओजोन परत अवक्षय', और 'भूमंडलीय तापन' किसके परिणाम हैं?
(A) पर्यावरणीय निश्चयवाद के
(B) संभववाद के संतुलित उपयोग के
(C) विकसित अर्थव्यवस्थाओं द्वारा अपनाई गई अनियंत्रित विकास की नीति के
(D) नवनिश्चयवाद के सिद्धांतों के पालन के

110. 'परिसंचरण की धमनियों' का रूपक सामान्यतः किसके लिए प्रयोग किया जाता है?
(A) नदियों और झीलों के लिए
(B) पर्वतों और पठारों के लिए
(C) राजनीतिक सीमाओं के लिए
(D) सड़कों, रेलमार्गों और जलमार्गों के जाल के लिए

111. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): मानव भूगोल में द्वैतवाद की एक लंबी बहस रही है।
कारण (R): अंततः यह मूल्यांकन किया गया कि प्रकृति और मानव के बीच कोई वैध द्वैधता नहीं है, क्योंकि वे अविभाज्य हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

112. 'बेंदा' के मामले में, 'वन की आत्मा' की स्वीकृति की स्मृति उसे क्या करने के लिए प्रेरित करती है?
(A) पेड़ों को काटने से पहले अनुमति मांगना।
(B) नदी से जल पीने से पहले धन्यवाद करना।
(C) शिकार पर जाने से पहले प्रार्थना करना।
(D) फसल बोने से पहले अनुष्ठान करना।

113. निम्नलिखित में से कौन-सा लक्षण संभववाद की विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) मानव गतिविधियों पर पर्यावरण का पूर्ण नियंत्रण।
(B) मानवीय क्रियाओं द्वारा सांस्कृतिक भू-दृश्यों का निर्माण।
(C) प्रकृति के नियमों का कठोरता से पालन।
(D) प्रौद्योगिकी का विकास का अभाव।

114. निम्नलिखित सूचियों का मिलान कीजिए:
List I: (अध्ययन क्षेत्र)
P. ऐतिहासिक भूगोल
Q. नगरीय भूगोल
R. निर्वाचन भूगोल
S. कृषि भूगोल
List II: (सहयोगी अनुशासन)
1. इतिहास
2. नगरीय अध्ययन और नियोजन
3. राजनीति विज्ञान
4. कृषि विज्ञान
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-3, S-4
(C) P-1, Q-3, R-2, S-4
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

115. भूगोल के अध्ययन में 'प्रादेशिक विश्लेषण' उपागम का क्या मत था?
(A) किसी एक भौगोलिक तत्व का विश्वव्यापी अध्ययन किया जाना चाहिए।

(B) सभी प्रदेशों को एक दूसरे से स्वतंत्र माना जाना चाहिए।
(C) किसी प्रदेश के सभी पक्षों का विस्तृत वर्णन उस प्रदेश और संपूर्ण पृथ्वी को समझने में सहायक होता है।
(D) केवल आर्थिक तत्वों का विश्लेषण ही महत्वपूर्ण है।

116. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और गलत कथन की पहचान करें।
(A) मानव भूगोल भौतिक और मानवीय जगत के बीच संबंधों का अध्ययन है।
(B) प्रौद्योगिकी सांस्कृतिक विकास का सूचक है।
(C) नवनिश्चयवाद निश्चयवाद और संभववाद के बीच का मार्ग है।
(D) संभववाद मानव को पर्यावरण का दास मानता है।

117. मानव भूगोल के उप-क्षेत्र के रुप में 'आवास भूगोल' (Settlement Geography) का सहयोगी अनुशासन क्या है?
(A) जनांकिकी
(B) समाजशास्त्र
(C) नगर/ग्रामीण नियोजन
(D) अर्थशास्त्र

118. भूगोल में 'उत्तर-आधुनिकवाद' ने किस पर प्रश्न उठाए?
(A) स्थानीय संदर्भ की समझ पर
(B) वृहत् सामान्यीकरण और वैश्विक सिद्धांतों की प्रयोज्यता पर
(C) गुणात्मक अनुसंधान के महत्व पर
(D) क्षेत्रीय अध्ययन की प्रासंगिकता पर

119. मानव भूगोल के विकास की अवस्थाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. आरंभिक उपनिवेश युग में अन्वेषण और विवरण पर जोर था।
2. उत्तर उपनिवेश युग में प्रादेशिक विश्लेषण मुख्य उपागम था।
3. 1930 के दशक में क्षेत्रीय विभेदन पर बल दिया गया।
4. 1950-60 के दशकों को स्थानिक संगठन की अवधि के रुप में जाना जाता है।
5. 1970 के दशक में मात्रात्मक क्रांति अपने चरम पर थी।

(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 1, 2, 3, 4
(C) केवल 2, 3, 4, 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4, 5

120. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): मानव भूगोल का अध्ययन क्षेत्र समय के साथ विकसित और विस्तृत हुआ है।
कारण (R): ज्ञान के विस्तार के साथ, मानव भूगोल में नए उप-क्षेत्रों का विकास होता है और अन्य विषयों के साथ इसका अंतरापृष्ठ भी बढ़ता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

121. घर्षण और ऊष्मा की संकल्पनाओं ने मानव को किस खोज में सहायता की?
(A) बीमारियों पर विजय पाने में
(B) तीव्र गति के यान बनाने में
(C) आदिम युग में अग्नि की खोज में
(D) आनुवांशिकी को समझने में

122. निम्नलिखित में से कौन सी गतिविधि 'प्रकृति के मानवीकरण' का एक स्पष्ट उदाहरण है?
(A) मरुस्थल में सिंचाई नहरों का निर्माण करना।
(B) एक आदिम जनजाति द्वारा नदी की पूजा करना।
(C) तूफान आने पर एक गुफा में छिपना।
(D) भोजन के लिए जंगली फलों और कंदों को इकट्ठा करना।

123. 'रुको और जाओ निश्चयवाद' में 'हरी बत्ती' का क्या अर्थ है?
(A) विकास को रोक देना।
(B) पूरी तरह से रुकने के लिए तैयार रहना।
(C) बिना किसी सीमा के विकास करना।
(D) जब प्रकृति रुपांतरण की स्वीकृति दे तो विकास के प्रयत्नों में आगे बढ़ना।

124. निम्नलिखित में से कौन-सा भूगोलवेत्ता 'संभववाद' की विचारधारा से संबंधित है?
(A) रैटजेल
(B) पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश
(C) ग्रिफिथ टेलर
(D) एलन सी. सेंपल

125. निम्नलिखित सूचियों का मिलान कीजिए:
List I: (भूगोल का उपागम)
P. अन्वेषण और विवरण
Q. प्रादेशिक विश्लेषण
R. क्षेत्रीय विभेदन
S. स्थानिक संगठन
List II: (मुख्य विशेषता)
1. प्रदेश की विलक्षणता की पहचान
2. विश्वज्ञानकोशीय विवरण
3. भौतिकी के नियमों का अनुप्रयोग
4. प्रदेश के सभी पक्षों का विस्तृत वर्णन

(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

126. मानव भूगोल की निम्नलिखित विचारधाराओं के उदय को सही क्रम में व्यवस्थित करें:
1. मानवतावादी
2. आमूलवादी
3. व्यवहारवादी

(A) 1950 का दशक
(B) 1960 का दशक
(C) 1970 का दशक
(D) 1990 का दशक

127. 'भौतिक पर्यावरण मानव द्वारा वृहत् स्तर पर परिवर्तित किया गया है, साथ ही मानव जीवन को भी इसने प्रभावित किया है।' यह कथन किस अवधारणा से सबसे अधिक निकटता से संबंधित है?
(A) प्रकृति का मानवीकरण / संभववाद
(B) पर्यावरणीय निश्चयवाद
(C) रुको और जाओ निश्चयवाद
(D) जैविक निश्चयवाद

128. मानव भूगोल और सामाजिक विज्ञानों के बीच संबंध के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मानव भूगोल सामाजिक विज्ञानों के सहयोगी विषयों के साथ घनिष्ठ अंतरापृष्ठ विकसित करती है।
2. ज्ञान के विस्तार के साथ नए उप-क्षेत्रों का विकास होता है।
3. सामाजिक भूगोल का समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और कल्याण अर्थशास्त्र से संबंध है।
4. आर्थिक भूगोल का अर्थशास्त्र, संसाधन अर्थशास्त्र और कृषि विज्ञान से संबंध है।

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

129. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): 'स्थानिक संगठन' के उपागम में कंप्यूटर और सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया।
कारण (R): इस प्रावस्था का मुख्य उद्देश्य विभिन्न मानवीय क्रियाओं के मानचित्र योग्य प्रतिरूपों की पहचान करना था, जिसके लिए परिष्कृत विश्लेषण की आवश्यकता थी।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

130. रैटजेल की मानव भूगोल की परिभाषा में 'संश्लेषित अध्ययन' से क्या तात्पर्य है?
(A) मानव समाजों और धरातल के बीच के जटिल और एकीकृत संबंधों का अध्ययन।
(B) केवल मानवीय समाजों का विश्लेषण।
(C) केवल धरातल का विश्लेषण।
(D) अलग-अलग तत्वों का पृथक अध्ययन।

131. निम्नलिखित में से कौन मानव भूगोल का अध्ययन करने के लिए 'ऐतिहासिक-संस्थागत उपागम' का एक पहलू हो सकता है?
(A) केवल वर्तमान जनसंख्या के आंकड़ों का विश्लेषण करना।
(B) सार्वभौमिक गणितीय मॉडल बनाना।
(C) किसी क्षेत्र के विकास पर ऐतिहासिक घटनाओं और सामाजिक संरचनाओं के प्रभाव का अध्ययन करना।
(D) केवल जलवायु के प्रभाव का अध्ययन करना।

132. निम्नलिखित दार्शनिक बहसों को भूगोल के विकास में उनके उभरने के क्रम में व्यवस्थित करें:
1. पर्यावरणीय निश्चयवाद
2. नवनिश्चयवाद
3. संभववाद
4. उत्तर-आधुनिकवाद

(A) 1, 3, 2, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 1, 2, 4
(D) 2, 1, 3, 4

133. पर्यटन भूगोल (Tourism Geography) का संबंध किससे है?
(A) केवल यात्रा प्रबंधन
(B) केवल होटल प्रबंधन
(C) पर्यटन और यात्रा प्रबंधन
(D) केवल परिवहन अर्थशास्त्र

134. भूगोल में 'प्रादेशिक विश्लेषण' उपागम का विकास किस काल अवधि में हुआ?
(A) आरंभिक उपनिवेश युग
(B) उत्तर उपनिवेश युग
(C) 1970 का दशक
(D) 1990 का दशक

135. मानव भूगोल की परिभाषाओं और अवधारणाओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. एलन सी. सेंपल की परिभाषा में 'गत्यात्मकता' पर जोर है।
2. पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश की परिभाषा एक 'नयी संकल्पना' प्रस्तुत करती है।
3. 'संभववाद' प्रकृति द्वारा प्रदत्त अवसरों के उपयोग की बात करता है।
4. 'पर्यावरणीय निश्चयवाद' आदिम समाज की स्थिति का वर्णन करता है।
5. 'नवनिश्चयवाद' को ग्रिफिथ टेलर ने प्रस्तुत किया।

(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 2, 3, 4, 5
(C) केवल 1, 3, 4, 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4, 5

136. 'मानव का प्राकृतीकरण' की स्थिति में, मानव और प्रकृति के बीच संबंध कैसा था?
(A) प्रकृति और मानव के बीच पूर्ण सामंजस्य था, जिसमें मानव प्रकृति के अधीन था।
(B) मानव प्रकृति पर हावी था।
(C) मानव और प्रकृति के बीच कोई संबंध नहीं था।
(D) मानव प्रौद्योगिकी का उपयोग करके प्रकृति को बदल रहा था।

137. निम्नलिखित में से क्या एक भौतिक पर्यावरण का तत्व है?
(A) खेत
(B) नगर
(C) मृदाएँ
(D) उद्योग

138. निम्नलिखित सूचियों का मिलान कीजिए:
List I: (भूगोल की विचारधारा)
P. व्यवहारवादी
Q. आमूलवादी (रेडिकल)
R. कल्याणपरक (मानवतावादी)
S. उत्तर-आधुनिकवाद
List II: (संबंधित अवधारणा/विषय)
1. पूँजीवाद का विकास
2. सामाजिक कल्याण
3. प्रत्यक्ष अनुभव
4. वैश्विक सिद्धांतों पर प्रश्न
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-3, Q-2, R-1, S-4

139. 'अधिक तीव्र गति से चलने वाले यान विकसित करने के लिए हम वायु गति के नियमों का प्रयोग करते हैं।' यह कथन किस महत्वपूर्ण विचार को दर्शाता है?
(A) प्रौद्योगिकी प्रकृति से श्रेष्ठ है।
(B) मानव प्रकृति के नियमों को बदल सकता है।
(C) प्रौद्योगिकी का प्रकृति से कोई संबंध नहीं है।
(D) प्रकृति का ज्ञान प्रौद्योगिकी को विकसित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है।

140. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भूगोल की प्रकृति का सही वर्णन नहीं करता है?
(A) यह एक समाकलनात्मक अनुशासन है।
(B) यह द्वैधता पर आश्रित है और यह द्वैधता कभी हल नहीं हो सकती।
(C) यह मानव और पर्यावरण के बीच अंतर-संबंधों का अध्ययन करता है।
(D) इसकी पहुँच विस्तृत है और यह दिक्-काल के संदर्भ में परिघटनाओं का अध्ययन करता है।

141. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प चुनें:
अभिकथन (A): मानव भूगोल, भौतिक भूगोल से निकटता से संबंधित है।
कारण (R): मानव भूगोल, भौतिक पर्यावरण द्वारा प्रदत्त मंच पर मानवीय क्रियाओं और उनके द्वारा निर्मित सांस्कृतिक भू-दृश्य का अध्ययन करता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

142. राजनीतिक भूगोल के उप-क्षेत्र कौन से हैं?
(A) संसाधन भूगोल और कृषि भूगोल
(B) व्यवहारवादी भूगोल और सांस्कृतिक भूगोल
(C) पर्यटन भूगोल और विपणन भूगोल
(D) निर्वाचन भूगोल और सैन्य भूगोल

143. मानव भूगोल के अध्ययन के किस उपागम में 'विश्वज्ञानकोशीय विवरण' एक महत्वपूर्ण पक्ष था?
(A) अन्वेषण और विवरण
(B) प्रादेशिक विश्लेषण
(C) क्षेत्रीय विभेदन
(D) स्थानिक संगठन

144. नीचे दिए गए कथनों पर विचार करें और सही विकल्प चुनें:
कथन 1: भौतिक और मानवीय परिघटनाओं का वर्णन करने के लिए प्राय: मानव शरीर रचना विज्ञान से रूपकों का प्रयोग किया जाता है।
कथन 2: जर्मन भूगोलवेत्ता राज्य का वर्णन 'जीवित जीव' के रूप में करते हैं।
(A) केवल कथन 1 सही है।
(B) केवल कथन 2 सही है।
(C) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।
(D) न तो कथन 1 और न ही कथन 2 सही है।

145. मानव भूगोल के विभिन्न उपागमों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. प्रादेशिक विश्लेषण का मानना था कि सभी प्रदेश पृथ्वी के पूर्ण भाग हैं।
2. क्षेत्रीय विभेदन किसी प्रदेश की विलक्षणता पर केंद्रित था।
3. स्थानिक संगठन में सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया।
4. अन्वेषण और विवरण उपागम साम्राज्यी रुचियों से प्रेरित

था।
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

146. 'पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश' किस भौगोलिक विचारधारा के प्रबल समर्थक थे?
(A) संभववाद
(B) पर्यावरणीय निश्चयवाद
(C) नवनिश्चयवाद
(D) मात्रात्मक क्रांति

147. निम्नलिखित में से कौन-सा एक 'मानव का प्राकृतीकरण' का घटक नहीं है?
(A) निम्न प्रौद्योगिकी स्तर
(B) आदिम सामाजिक विकास
(C) विशाल नगरीय प्रसार
(D) प्रकृति के आदेशों का पालन

148. मानव भूगोल में 'कल्याणपरक या मानवतावादी' विचारधारा का मुख्य फोकस क्या था?
(A) गरीबी और सामाजिक असमानता के कारण।
(B) मानव व्यवहार और प्रत्यक्ष अनुभव।
(C) पर्यावरण और विकास के बीच संतुलन।
(D) लोगों के सामाजिक कल्याण के पक्ष जैसे आवास, स्वास्थ्य और शिक्षा।

149. भूगोल में द्वैतवाद की बहस के संबंध में अंतिम निष्कर्ष क्या है?
(A) भूगोल को हमेशा प्रादेशिक होना चाहिए।
(B) भूगोल को हमेशा नोमोथेटिक होना चाहिए।
(C) प्रकृति और मानव के बीच कोई वैध द्वैधता नहीं है क्योंकि वे अविभाज्य हैं।
(D) मानव भूगोल भौतिक भूगोल से श्रेष्ठ है।

150. निम्नलिखित सूचियों का मिलान कीजिए:
List I: (उदाहरण)
P. 'बेंदा' की जीवन शैली
Q. 'कैरी' की जीवन शैली
R. यातायात बत्ती का रुपक
S. स्वास्थ्य विश्रामस्थल का निर्माण
List II: (अवधारणा)
1. प्रकृति का मानवीकरण
2. मानव का प्राकृतीकरण
3. संभववाद
4. नवनिश्चयवाद
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-2, Q-1, R-3, S-4
(D) P-1, Q-3, R-4, S-2

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

मानव भूगोल में 'संभववाद' की विचारधारा का विकास मुख्य रूप से फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं, विशेषकर पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश के कार्यों के माध्यम से हुआ। यह दृष्टिकोण बीसवीं सदी की शुरुआत में जर्मन भूगोलवेत्ताओं द्वारा प्रतिपादित 'पर्यावरणीय निश्चयवाद' की अतिवादी धारणाओं की प्रतिक्रिया के रूप में उभरा। संभववाद यह तर्क देता है कि पर्यावरण मानव समाज के विकास के लिए केवल कुछ संभावनाएँ प्रस्तुत करता है, और यह मानव समुदाय पर निर्भर करता है कि वह अपनी संस्कृति, तकनीकी कौशल और सामाजिक संगठन के आधार पर इन संभावनाओं में से किसका चुनाव करता है। विडाल-डी-ला ब्लाश ने 'जीवन की शैलियों' (genres de vie) की संकल्पना प्रस्तुत की, जिसमें यह दर्शाया गया कि कैसे एक ही भौतिक वातावरण में विभिन्न मानव समूह अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत और ऐतिहासिक अनुभवों के आधार पर अलग-अलग जीवन-पद्धतियाँ विकसित कर सकते हैं। इस प्रकार, संभववाद प्रकृति को एक सलाहकार के रुप में देखता है, न कि एक निरंकुश शासक के रूप में। यह मानव की रचनात्मकता, स्वतंत्रता और निर्णय लेने की क्षमता पर बल देता है, तथा यह मानता है कि मनुष्य पर्यावरण का एक निष्क्रिय उत्पाद नहीं, बल्कि एक सक्रिय कारक है जो अपने परिवेश को संशोधित करने और आकार देने की क्षमता रखता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. संभववाद की विचारधारा को विकसित करने का श्रेय मुख्य रूप से किस देश के भूगोलवेत्ताओं को दिया जाता है?
(A) जर्मनी
(B) फ्रांस
(C) संयुक्त राज्य अमेरिका
(D) ब्रिटेन

152. 'जीवन की शैलियों' (genres de vie) की संकल्पना किस भूगोलवेत्ता द्वारा प्रस्तुत की गई थी?
(A) फ्रांसीसी विद्वान पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश
(B) प्रख्यात जर्मन विद्वान फ्रेडरिक रैटजेल
(C) अमेरिकी भूगोलवेत्ता एलेन चर्चिल सेंपल
(D) प्रसिद्ध ऑस्ट्रेलियाई विचारक ग्रिफ़िथ टेलर

153. संभववाद की विचारधारा किस अन्य भौगोलिक दृष्टिकोण की प्रतिक्रिया के रूप में उभरी?
(A) नवनिश्चयवाद
(B) व्यवहारवाद
(C) पर्यावरणीय निश्चयवाद
(D) मानवतावाद

154. संभववाद के अनुसार, मानव और पर्यावरण के बीच संबंध कैसा है?
(A) भौतिक पर्यावरण ही सभी प्रकार की मानवीय क्रियाओं को पूरी तरह से निर्धारित करता है।

(B) मानवीय गतिविधियों का प्राकृतिक पर्यावरण पर किसी भी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
(C) भौतिक प्रकृति और मानव समुदाय के बीच वास्तव में कोई भी कार्यात्मक संबंध नहीं है।
(D) मानव पर्यावरण द्वारा प्रदत्त विभिन्न संभावनाओं में से चुनाव करने के लिए स्वतंत्र है।

155. स्रोत के अनुसार, संभववाद किस बात पर सबसे अधिक बल देता है?
(A) कठोर प्राकृतिक नियमों और उनकी सार्वभौमिक अनिवार्यता के पालन पर
(B) पर्यावरण के प्रति मानव की पूर्ण निष्क्रियता और जैविक अनुकूलन पर
(C) मानव की विशेष रचनात्मकता और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता पर
(D) जटिल आर्थिक गतिविधियों और उनके विस्तृत स्थानिक वितरण के अध्ययन पर

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
पर्यावरणीय निश्चयवाद, जिसे भौगोलिक नियतिवाद भी कहा जाता है, एक ऐसा दार्शनिक दृष्टिकोण है जो यह मानता है कि किसी समाज की संस्कृति, आर्थिक विकास और सामाजिक संरचना मुख्य रूप से भौतिक पर्यावरण द्वारा निर्धारित होती है। इस विचारधारा के प्रमुख समर्थकों में फ्रेडरिक रैटजेल और उनकी अमेरिकी शिष्या एलेन चर्चिल सेंपल शामिल हैं। रैटजेल ने अपनी पुस्तक 'एंथ्रोपोजियोग्राफी' में तर्क दिया कि मानव समाजों के वितरण और विशेषताओं को प्राकृतिक परिस्थितियों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। सेंपल ने इस विचार को और आगे बढ़ाते हुए कहा, "मनुष्य पृथ्वी की सतह का उत्पाद है।" उनके अनुसार, जलवायु, स्थलाकृति, और प्राकृतिक संसाधन न केवल लोगों के व्यवसाय और अर्थव्यवस्था को आकार देते हैं, बल्कि उनके स्वभाव, धर्म और सरकार के स्वरूप को भी प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, इस दृष्टिकोण के समर्थकों का मानना था कि उष्णकटिबंधीय जलवायु में रहने वाले लोग स्वाभाविक रूप से आलसी और कम विकसित होते हैं, जबकि समशीतोष्ण क्षेत्रों के निवासी अधिक परिश्रमी, नवीन और शासन करने में सक्षम होते हैं। यद्यपि इस सिद्धांत की बाद में अत्यधिक सरलीकरण और मानव की भूमिका को कम आंकने के लिए आलोचना की गई, इसने भूगोल के इतिहास में मानव-पर्यावरण संबंधों पर बहस की नींव रखी।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. पर्यावरणीय निश्चयवाद का मुख्य तर्क क्या है?
(A) विकसित मानव समाज अपने प्राकृतिक पर्यावरण को पूरी तरह से नियंत्रित करता है।
(B) भौतिक पर्यावरण मानव समाज के सर्वांगीण विकास को प्रमुख रूप से निर्धारित करता है।
(C) आधुनिक प्रौद्योगिकी मानव को पर्यावरण के सभी कठोर बंधनों से मुक्त कर देती है।
(D) वर्तमान में मानव और भौतिक पर्यावरण के बीच कोई भी अंतःक्रिया नहीं होती है।

157. निम्नलिखित में से कौन पर्यावरणीय निश्चयवाद का एक प्रमुख समर्थक नहीं है?
(A) फ्रेडरिक रैटजेल
(B) एलेन चर्चिल सेंपल
(C) उपरोक्त दोनों (A) और (C)
(D) पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश

158. एलेन चर्चिल सेंपल का प्रसिद्ध कथन "मनुष्य पृथ्वी की सतह का उत्पाद है" किस विचारधारा को दर्शाता है?
(A) पर्यावरणीय निश्चयवाद
(B) फ्रांसीसी संभववाद
(C) टेलर का नवनिश्चयवाद
(D) मनोवैज्ञानिक व्यवहारवाद

159. स्रोत के अनुसार, पर्यावरणीय निश्चयवाद के समर्थकों ने समशीतोष्ण क्षेत्रों के निवासियों को कैसा माना?
(A) शारीरिक रूप से आलसी और सभ्यता में कम विकसित
(B) ललित कलाओं और श्रेष्ठ उच्च साहित्य में निपुण
(C) सदैव परिश्रमी और अन्य पर शासन करने में सक्षम
(D) अत्यंत आध्यात्मिक और गहराई से धार्मिक प्रवृत्ति के

160. बाद में पर्यावरणीय निश्चयवाद की आलोचना क्यों की गई?
(A) यह विचारधारा अत्यधिक सरलीकृत थी और मानव की सक्रिय भूमिका को कम आंकती थी।
(B) इस विचारधारा ने विकास में मानव की भूमिका को बहुत अधिक महत्व दिया था।
(C) यह भौगोलिक दृष्टिकोण सैद्धांतिक रूप से अत्यधिक जटिल और पूर्णतः अव्यावहारिक था।
(D) इसने भौगोलिक विकास में भौतिक पर्यावरण की भूमिका को पूरी तरह से नकार दिया था।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
बीसवीं सदी के मध्य में, ऑस्ट्रेलियाई भूगोलवेत्ता ग्रिफ़िथ टेलर ने पर्यावरणीय निश्चयवाद और संभववाद के दो चरम विचारों के बीच एक मध्य मार्ग प्रस्तुत किया, जिसे उन्होंने 'नवनिश्चयवाद' या 'रुको और जाओ निश्चयवाद' (Stop-and-Go Determinism) का नाम दिया। टेलर का मानना था कि मनुष्य न तो प्रकृति का दास है, जैसा कि निश्चयवादी मानते थे, और न ही उसका स्वामी, जैसा कि संभववादी दावा करते थे। उन्होंने मानव की भूमिका की तुलना एक बड़े शहर के ट्रैफिक कंट्रोलर से की, जो यातायात की गति को बदल सकता है, लेकिन उसकी दिशा को नहीं। इसी प्रकार, मनुष्य प्राकृतिक पर्यावरण द्वारा निर्धारित विकास की दिशा को नहीं बदल सकता, लेकिन वह अपनी बुद्धि और प्रौद्योगिकी का उपयोग करके विकास की दर को तेज या धीमा कर सकता है। टेलर के अनुसार, प्रकृति द्वारा निर्धारित सीमाओं का उल्लंघन करने पर मनुष्य को पर्यावरणीय समस्याओं जैसे मृदा अपरदन, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन का सामना करना पड़ता है।

यह दृष्टिकोण अनिवार्य रूप से यह संदेश देता है कि मनुष्य को प्राकृतिक नियमों का पालन करते हुए ही विकास की संभावनाओं को तलाशना चाहिए। इस प्रकार, नवनिश्चयवाद सतत विकास की आधुनिक अवधारणा का अग्रदूत माना जा सकता है, जो आर्थिक विकास और पर्यावरणीय संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करने पर जोर देता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. 'नवनिश्चयवाद' की संकल्पना किसने प्रस्तुत की?
(A) पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश
(B) फ्रेडरिक रैटजेल
(C) यी-फू तुआन
(D) ग्रिफ़िथ टेलर

162. 'रुको और जाओ निश्चयवाद' में मानव की भूमिका की तुलना किससे की गई है?
(A) एक जहाज के कप्तान से
(B) एक ट्रैफिक कंट्रोलर से
(C) एक निरंकुश शासक से
(D) एक निष्क्रिय दर्शक से

163. नवनिश्चयवाद किन दो विचारधाराओं के बीच एक मध्य मार्ग प्रस्तुत करता है?
(A) व्यवहारवाद और मानवतावाद
(B) मात्रात्मक क्रांति और कट्टरपंथ
(C) पर्यावरणीय निश्चयवाद और संभववाद
(D) प्रादेशिक भूगोल और क्रमबद्ध भूगोल

164. स्रोत के अनुसार, यदि मनुष्य प्रकृति द्वारा निर्धारित सीमाओं का उल्लंघन करता है तो क्या परिणाम होता है?
(A) समाज में अत्यंत तीव्र आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त होता है।
(B) सचेत मनुष्य भौतिक प्रकृति पर अपनी पूर्ण विजय प्राप्त कर लेता है।
(C) संपूर्ण समाज में वैयक्तिक पूर्ण स्वतंत्रता स्वतः स्थापित होती है।
(D) गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं का निरंतर सामना करना पड़ता है।

165. नवनिश्चयवाद की विचारधारा किस आधुनिक अवधारणा का अग्रदूत मानी जा सकती है?
(A) सतत विकास
(B) वैश्वीकरण
(C) शहरीकरण
(D) डिजिटल क्रांति

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
1960 और 1970 के दशक में, मानव भूगोल में 'व्यवहारवादी भूगोल' का उदय हुआ, जो मुख्य रूप से मात्रात्मक क्रांति के अवैयक्तिक और अत्यधिक आर्थिक-तर्कसंगत मॉडल की प्रतिक्रिया थी। मात्रात्मक क्रांति ने स्थानिक पैटर्न के विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय और गणितीय तकनीकों पर जोर दिया, लेकिन इसने मानव व्यवहार के पीछे की मनोवैज्ञानिक और संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की उपेक्षा की। व्यवहारवादी भूगोलवेत्ताओं ने तर्क दिया कि मनुष्य हमेशा आर्थिक रूप से तर्कसंगत 'आर्थिक मानव' (Economic Man) के रूप में कार्य नहीं करता है। इसके बजाय, उनके निर्णय और स्थानिक व्यवहार उनके 'अनुभूत पर्यावरण' (perceived environment) पर आधारित होते हैं, न कि केवल 'वस्तुनिष्ठ पर्यावरण' (objective environment) पर। यह 'अनुभूत पर्यावरण' व्यक्ति के ज्ञान, अनुभव, मूल्यों और विश्वासों से निर्मित होता है। इस दृष्टिकोण का एक केंद्रीय तत्व 'मानसिक मानचित्र' (mental map) की अवधारणा है, जो किसी व्यक्ति के मस्तिष्क में किसी स्थान या क्षेत्र का व्यक्तिपरक प्रतिनिधित्व है। ये मानसिक मानचित्र लोगों के दैनिक जीवन के निर्णयों को प्रभावित करते हैं, जैसे कि कहाँ रहना है, कहाँ खरीदारी करनी है, या किस रास्ते से यात्रा करनी है। इस प्रकार, व्यवहारवादी भूगोल ने मानव व्यवहार की जटिलताओं और व्यक्तिपरक अनुभवों को भौगोलिक विश्लेषण के केंद्र में लाने का प्रयास किया।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. व्यवहारवादी भूगोल का उदय किस भौगोलिक क्रांति की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ?
(A) संभववाद की क्रांति
(B) मात्रात्मक क्रांति
(C) निश्चयवादी क्रांति
(D) मानवतावादी क्रांति

167. व्यवहारवादी भूगोल के अनुसार, मानव के निर्णय किस पर आधारित होते हैं?
(A) केवल वस्तुनिष्ठ पर्यावरण पर
(B) अनुभूत पर्यावरण पर
(C) केवल आर्थिक लाभ पर
(D) सरकारी नियमों पर

168. 'मानसिक मानचित्र' की अवधारणा का क्या अर्थ है?
(A) किसी व्यक्ति के मस्तिष्क में स्थान का व्यक्तिपरक आंतरिक प्रतिनिधित्व
(B) केंद्र सरकार के संस्थानों द्वारा जारी आधिकारिक और प्रमाणित मानचित्र
(C) संपूर्ण पृथ्वी का एक अत्यंत सटीक और वैज्ञानिक त्रि-आयामी मॉडल
(D) सुदूर संवेदन उपग्रहों द्वारा लिया गया एक उच्च-गुणवत्ता डिजिटल चित्र

169. व्यवहारवादी भूगोल ने किस पारंपरिक भौगोलिक अवधारणा की आलोचना की?
(A) 'स्थान की भावना' की
(B) 'सांस्कृतिक परिदृश्य' की

(C) 'आर्थिक मानव' की
(D) 'क्षेत्रीय विभेदन' की

170. निम्नलिखित में से कौन सा अध्ययन व्यवहारवादी भूगोल के अंतर्गत आएगा?
(A) किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र की मृदा के प्रकारों का वैज्ञानिक विश्लेषण करना
(B) किसी देश के राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद की वार्षिक वृद्धि दर की सांख्यिकीय गणना
(C) विभिन्न नदियों के जलीय अपरदन पैटर्न का व्यवस्थित और विस्तृत मानचित्रण करना
(D) निवासियों की अपने पड़ोस के प्रति व्यक्तिपरक भावनाओं और कारणों का अध्ययन

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

मानवतावादी भूगोल 1970 के दशक में व्यवहारवाद और मात्रात्मक भूगोल के प्रति असंतोष से उत्पन्न हुआ एक दार्शनिक दृष्टिकोण है। इसका उद्देश्य भूगोल को मानव अनुभवों, भावनाओं, और अर्थों की समझ के करीब लाना था। इस धारा के प्रमुख प्रस्तावक, जैसे कि यी-फू तुआन और ऐनी बटाइमर, ने महसूस किया कि स्थानिक विज्ञान के मॉडल मानव जीवन की गहराई और जटिलता को पकड़ने में असफल रहे। मानवतावादी भूगोल इस बात पर जोर देता है कि मनुष्य केवल अंतरिक्ष में मौजूद बिंदु नहीं हैं, बल्कि वे सचेत प्राणी हैं जो अपने परिवेश के साथ सार्थक संबंध बनाते हैं। यी-फू तुआन ने 'टोपोफिलिया' (Topophilia) या 'स्थान-प्रेम' जैसी अवधारणाओं को लोकप्रिय बनाया, जो लोगों और स्थानों के बीच भावनात्मक जुड़ाव को संदर्भित करता है। यह दृष्टिकोण 'स्थान की भावना' (Sense of Place) के अध्ययन पर केंद्रित है - अर्थात, वे विशिष्ट अर्थ, मूल्य और भावनाएँ जो किसी स्थान को अद्वितीय बनाती हैं। मानवतावादी भूगोलवेत्ता मानव अनुभवों को समझने के लिए साहित्य, कला, धर्म और व्यक्तिगत वृत्तांतों जैसे गुणात्मक स्रोतों का उपयोग करते हैं। इसका लक्ष्य दुनिया को एक बाहरी पर्यवेक्षक के रूप में नहीं, बल्कि उसमें रहने वाले व्यक्ति के दृष्टिकोण से समझना है, और यह जानना है कि मनुष्य अपने 'स्थान' को कैसे 'घर' में बदलते हैं।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. मानवतावादी भूगोल का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) जटिल आर्थिक पैटर्न का सांख्यिकीय और गणितीय विश्लेषण करना
(B) विभिन्न राष्ट्रों की राजनीतिक सीमाओं का सटीक भौगोलिक मानचित्रण करना
(C) मानव के विविध अनुभवों, भावनाओं और निहित अर्थों को समझना
(D) पृथ्वी की विभिन्न भौतिक भू-आकृतियों का व्यवस्थित वैज्ञानिक अध्ययन करना

172. 'टोपोफिलिया' (Topophilia) की अवधारणा का क्या अर्थ है, जैसा कि यी-फू तुआन द्वारा प्रस्तुत किया गया है?
(A) अपरिचित या खतरनाक भौगोलिक स्थानों के प्रति उत्पन्न तीव्र भय
(B) लोगों और स्थानों के बीच विकसित होने वाला भावनात्मक जुड़ाव
(C) भौगोलिक मानचित्रों के निर्माण का व्यवस्थित और तकनीकी विज्ञान
(D) दुनिया के नए और अज्ञात क्षेत्रों में पर्यटन हेतु यात्रा करने की इच्छा

173. मानवतावादी भूगोलवेत्ता मानव अनुभव को समझने के लिए किस प्रकार के स्रोतों का उपयोग करते हैं?
(A) परिमाणात्मक और विश्वसनीय सांख्यिकीय डेटा
(B) उच्च रिजोल्यूशन वाली डिजिटल उपग्रह इमेजरी
(C) आधिकारिक विभागों द्वारा प्रकाशित सरकारी रिपोर्ट
(D) मानवीय साहित्य, दृश्य कला और व्यक्तिगत वृत्तांत

174. मानवतावादी भूगोल किस दृष्टिकोण से दुनिया को समझने का प्रयास करता है?
(A) उसमें रहने वाले व्यक्ति के दृष्टिकोण से
(B) एक बाहरी और निष्पक्ष पर्यवेक्षक के दृष्टिकोण से
(C) केवल आर्थिक तर्कसंगतता के दृष्टिकोण से
(D) केवल ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से

175. निम्नलिखित में से कौन मानवतावादी भूगोल का एक प्रमुख प्रस्तावक है?
(A) फ्रेडरिक रैटजेल
(B) ग्रिफ़िथ टेलर
(C) यी-फू तुआन
(D) वाल्टर क्रिस्टालर

ANSWERS

1. (B) समाकलनात्मक, आनुभविक और व्यावहारिक
मानव भूगोल पृथ्वी के भौतिक पर्यावरण और मानवीय जगत के बीच अंतर्संबंधों का व्यापक अध्ययन करता है। यह विषय एक समाकलनात्मक विधा है क्योंकि यह विभिन्न मानवीय और भौतिक घटनाओं को उनके स्थानिक और कालिक संदर्भों में जोड़कर देखता है। इसकी प्रकृति आनुभविक है क्योंकि यह वास्तविक आंकड़ों पर आधारित है, जबकि व्यावहारिक दृष्टिकोण इसे मानव समाज की समस्याओं के समाधान हेतु उपयोगी बनाता है।

2. (A) क्या भूगोल को केवल मानवीय क्रियाओं का अध्ययन करना चाहिए?
भूगोल में द्वैतवाद मुख्य रूप से इस बहस पर केंद्रित रहा है कि क्या विषय को नियम बनाने वाला या विवरणात्मक होना चाहिए। इसमें प्रादेशिक बनाम क्रमबद्ध उपागमों और सैद्धांतिक बनाम ऐतिहासिक-संस्थागत व्याख्याओं के बीच चर्चा शामिल है। भूगोल को केवल मानवीय क्रियाओं तक सीमित रखने का विचार द्वैतवाद के मुख्य विवादों का हिस्सा नहीं रहा है क्योंकि भूगोल में प्रकृति और मानव अविभाज्य हैं।

3. (A) P-3, Q-2, R-4, S-1
भूगोलवेत्ता अक्सर भौतिक परिघटनाओं का वर्णन करने के लिए मानव शरीर रचना विज्ञान से संबंधित रूपकों का उपयोग करते हैं। इस संदर्भ में पृथ्वी के रूपों को मानव अंगों के समान देखा जाता है, जैसे तूफान की आँख, नदी का मुख और जलडमरूमध्य की ग्रीवा। इसी प्रकार, सड़कों और रेलमार्गों के जाल को परिसंचरण की धमनियों के रूप में वर्णित किया जाता है, जो जीवनदायिनी प्रवाह का संकेत देते हैं।

4. (D) रैटजेल
प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता फ्रेडरिक रैटजेल ने मानव भूगोल को मानव समाजों और धरातल के बीच संबंधों के संश्लेषित अध्ययन के रूप में परिभाषित किया है। उनकी यह परिभाषा संश्लेषण पर विशेष जोर देती है, जिसका अर्थ है कि मानवीय गतिविधियों और प्राकृतिक वातावरण के बीच के संबंधों को अलग-अलग देखने के बजाय एक एकीकृत रूप में समझा जाना चाहिए ताकि मानव-पर्यावरण अंतर्संबंधों की पूर्णता स्पष्ट हो सके।

5. (C) परिवर्तनशील
एलन सी. सेंपल की परिभाषा के अनुसार मानव भूगोल अस्थिर पृथ्वी और क्रियाशील मानव के बीच परिवर्तनशील संबंधों का अध्ययन है। यहाँ 'परिवर्तनशील' शब्द संबंधों की गत्यात्मकता को व्यक्त करता है, जो दर्शाता है कि मनुष्य और प्रकृति के बीच का रिश्ता स्थिर नहीं है। समय के साथ मानवीय आवश्यकताओं और तकनीकी क्षमताओं के बदलने से पर्यावरण के साथ मनुष्य के अंतर्संबंध भी निरंतर बदलते रहते हैं।

6. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
प्रौद्योगिकी किसी भी समाज के सांस्कृतिक विकास के स्तर की एक महत्वपूर्ण सूचक मानी जाती है। मानव ने प्रकृति के नियमों को गहराई से समझने के बाद ही उन्नत प्रौद्योगिकी का विकास किया है। उदाहरण के लिए, घर्षण और ऊष्मा की समझ ने अग्नि की खोज में मदद की, और डी.एन.ए. के ज्ञान ने बीमारियों पर विजय पाने में सहायता की। अतः तकनीक और ज्ञान परस्पर जुड़े हैं।

7. (D) पर्यावरणीय निश्चयवाद
मानव इतिहास के शुरुआती चरणों में जब तकनीक का स्तर बहुत नीचा था, तब मनुष्य प्रकृति की शक्तियों से गहराई से प्रभावित और नियंत्रित था। इस स्थिति में मनुष्य प्रकृति की प्रचंडता से डरता था और उसकी पूजा करता था। इस आदिम अंतःक्रिया को पर्यावरणीय निश्चयवाद कहा जाता है, जहाँ प्रकृति एक शक्तिशाली बल के रूप में मानवीय गतिविधियों और विकास की सीमाओं को निर्धारित करती थी।

8. (C) केवल 1, 2 और 3
मानव के प्राकृतीकरण की अवस्था में सामाजिक विकास का स्तर आदिम होता है और प्रौद्योगिकी अत्यंत निम्न स्तर की होती है। इस स्थिति में मनुष्य प्रकृति के आदेशों के अनुसार स्वयं को ढाल लेता है और प्राकृतिक संसाधनों पर पूरी तरह निर्भर रहता है। यहाँ मनुष्य प्रकृति पर विजय प्राप्त नहीं करता, बल्कि उसकी प्रचंडता से भयभीत होकर उसकी सुनता है और उसकी पूजा करता है।

9. (C) मानव का प्राकृतीकरण
मध्य भारत के अबूझमाड़ क्षेत्र के बेंदा की कहानी मानव के प्राकृतीकरण का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। यह कहानी दिखाती है कि कैसे एक आदिम समाज पूरी तरह से जंगल और प्रकृति के नियमों के अधीन रहता है। बेंदा और उसका समुदाय प्रकृति को एक शक्तिशाली माता के रूप में पूजते हैं और अपनी बुनियादी जरूरतों के लिए पूरी तरह से प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहते हैं।

10. (A) जो प्राकृतिक संसाधनों पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर हैं
'माता-प्रकृति' की संकल्पना उन समाजों के लिए अत्यंत प्रासंगिक है जो अपने अस्तित्व के लिए सीधे तौर पर प्राकृतिक पर्यावरण पर निर्भर करते हैं। ऐसे समाज प्रकृति को एक पोषण करने वाली शक्ति के रूप में देखते हैं और उसका सम्मान करते हैं। यह दृष्टिकोण विशेष रूप से उन जनजातीय और आदिम समुदायों में पाया जाता है जहाँ तकनीक का विकास कम है और जीवन पूर्णतः प्रकृति से जुड़ा है।

11. (D) जिसमें प्रकृति अवसर देती है और मानव उपयोग करता है
संभववाद की विचारधारा के अनुसार, प्रकृति मानवीय गतिविधियों के लिए केवल एक मंच या संभावनाएँ प्रदान करती है। जैसे-जैसे मानव का तकनीकी ज्ञान बढ़ता है, वह इन अवसरों का लाभ उठाकर अपनी पसंद के अनुसार पर्यावरण में बदलाव लाता है। इसमें मानव को एक सक्रिय कारक माना गया है जो प्रकृति के बंधनों को तोड़कर अपनी सांस्कृतिक छाप छोड़ने और अपना विकास करने में सक्षम है।

12. (B) सांस्कृतिक भू-दृश्य
जब मनुष्य प्राकृतिक पर्यावरण द्वारा प्रदान किए गए संसाधनों का उपयोग करके अपनी आवश्यकताओं के अनुसार बदलाव करता है, तो सांस्कृतिक भू-दृश्य का निर्माण होता है। इसमें ऊंचे स्थानों पर बने विश्राम गृह, शहरों का विस्तार, बिछाए गए रेलमार्ग, चरागाह और फलों के बाग जैसे तत्व शामिल हैं। ये सभी मानवीय क्रियाओं की छाप हैं जो भौतिक धरातल पर मानव की उपस्थिति और उसके विकास को दर्शाती हैं।

13. (C) प्रकृति का मानवीकरण
नॉर्वे की कैरी की आधुनिक जीवन शैली प्रकृति के मानवीकरण का सटीक उदाहरण है। कड़ाके की ठंड के बावजूद प्रौद्योगिकी के माध्यम से उसने अपने कार्यस्थल को गर्म रखा है और उष्णकटिबंधीय फलों की उपलब्धता सुनिश्चित की है। यह दर्शाता है कि उन्नत तकनीक की सहायता से मनुष्य अब प्रकृति की कठोर सीमाओं से मुक्त हो गया है और उसने पर्यावरण को अपनी सुख-सुविधाओं के अनुसार ढाल लिया है।

14. (D) जैविक नियतिवाद
मानव भूगोल के विकास में अन्वेषण और वर्णन, प्रादेशिक विश्लेषण, क्षेत्रीय विभेदन और स्थानिक संगठन जैसे विभिन्न उपागमों का प्रयोग किया गया है। जैविक नियतिवाद मुख्य रूप से जीव विज्ञान से संबंधित है और यह मानव भूगोल का मान्यता प्राप्त भौगोलिक उपगमन नहीं है। भूगोल में मानवीय क्रियाओं और पर्यावरण के संबंधों को समझने के लिए मात्रात्मक और मानवतावादी जैसे सामाजिक विज्ञान आधारित उपागम अधिक प्रभावी रहे हैं।

15. (A) ग्रिफिथ टेलर
नवनिश्चयवाद की संकल्पना प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता ग्रिफिथ टेलर द्वारा प्रस्तुत की गई थी। इसे 'रुको और जाओ निश्चयवाद' के रूप में भी जाना जाता है। यह विचारधारा पर्यावरणीय निश्चयवाद और संभववाद के दो चरमों के बीच एक संतुलित मध्य मार्ग का प्रस्ताव करती है। इसके अनुसार, मनुष्य प्रकृति पर पूर्ण विजय प्राप्त नहीं कर सकता, लेकिन वह प्रकृति के संकेतों को समझकर सतत विकास के मार्ग पर चल सकता है।

16. (B) यह मानता है कि विकास के लिए प्राकृतिक नियमों की अवहेलना होनी चाहिए
नवनिश्चयवाद की विचारधारा विकास के लिए प्राकृतिक नियमों की अवहेलना करने का कतई समर्थन नहीं करती है। इसके विपरीत, यह सिखाती है कि यदि हम प्रकृति के नियमों का पालन नहीं करेंगे, तो विनाशकारी परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। यह संकल्पना एक ऐसे संतुलन पर बल देती है जहाँ विकास की गति को बनाए रखते हुए पर्यावरण की सीमाओं और संकेतों का सम्मान करना अनिवार्य माना गया है।

17. (B) हरी बत्ती 'विकास' और लाल बत्ती 'सीमाओं' का प्रतीक है
ग्रिफिथ टेलर द्वारा प्रयुक्त यातायात बत्तियों का रूपक यह समझाने के लिए है कि मनुष्य विकास कर सकता है लेकिन उसे सीमाओं का ध्यान रखना होगा। लाल बत्ती का अर्थ है कि जब प्रकृति प्रतिकूल हो तो विकास के कार्यों को रोकना चाहिए। पीली बत्ती तैयारी का संकेत है और हरी बत्ती का अर्थ है कि अनुकूल परिस्थितियों में प्रकृति की स्वीकृति के साथ विकास की ओर आगे बढ़ना चाहिए।

18. (A) जैव-विविधता में वृद्धि
विकसित अर्थव्यवस्थाओं द्वारा पर्यावरण की परवाह किए बिना अपनाई गई अनियंत्रित विकास की नीति के कारण अनेक गंभीर पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। इनमें ओजोन परत का क्षरण, भूमंडलीय तापन और हरित-गृह प्रभाव प्रमुख हैं। इन गतिविधियों से प्राकृतिक संतुलन बिगड़ा है और जैव-विविधता में कमी आई है, न कि वृद्धि। अतः पर्यावरण का ह्रास ही 'मुक्त चाल' वाली विकास नीति का मुख्य परिणाम रहा है।

19. (A) 4, 2, 3, 5, 1
मानव भूगोल के विकास का कालक्रम अन्वेषण और विवरण से शुरु होकर क्षेत्रीय विभेदन तक पहुँचा। इसके बाद 1950-60 के दशक में स्थानिक संगठन की प्रावस्था आई, जिसमें सांख्यिकीय विधियों का बोलबाला था। 1970 के दशक में मानवतावादी, आमूलवादी और व्यवहारवादी विचारधाराओं का उदय हुआ। अंततः 1990 के दशक में उत्तर-आधुनिकवाद का उदय हुआ, जिसने स्थानीय संदर्भों की समझ और वैश्विक सिद्धांतों पर प्रश्न उठाने पर जोर दिया।

20. (D) कल्याणपरक या मानवतावादी विचारधारा
कल्याणपरक या मानवतावादी विचारधारा मुख्य रूप से लोगों के सामाजिक कल्याण के विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित थी। इसका उद्देश्य आवास, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता का भौगोलिक विश्लेषण करना था। यह विचारधारा इस बात पर जोर देती है कि भूगोल का अध्ययन केवल आंकड़ों तक सीमित न रहकर मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और सामाजिक असमानताओं को दूर करने के प्रति संवेदनशील होना चाहिए।

21. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
1970 के दशक में उभरी आमूलवादी विचारधारा ने गरीबी और सामाजिक असमानता जैसे मुद्दों को केंद्र में रखा। इस विचारधारा ने मार्क्स के सिद्धांतों को आधार मानकर तर्क दिया कि समाज की समकालीन समस्याओं की जड़ें पूँजीवाद के विकास में निहित हैं। इसके अनुसार, सामाजिक अन्याय और बंधनों को दूर करने के लिए प्रचलित आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया गया।

22. (B) व्यवहारवादी विचारधारा
व्यवहारवादी विचारधारा ने मानव भूगोल में प्रत्यक्ष अनुभव को सबसे अधिक महत्व दिया। यह विचारधारा मानती है कि मनुष्य का व्यवहार केवल आर्थिक लाभ से प्रेरित नहीं होता, बल्कि उसके सामाजिक संवर्गों जैसे जातीयता, धर्म और प्रजाति के आधार पर बने मानसिक मानचित्रों से प्रभावित होता है। इसमें इस बात पर जोर दिया गया कि लोग अपने परिवेश को किस तरह महसूस करते हैं और उसी अनुसार निर्णय लेते हैं।

23. (D) जनसंख्या भूगोल - जनांकिकी
मानव भूगोल के विभिन्न उप-क्षेत्रों का सामाजिक विज्ञान के अन्य विषयों के साथ गहरा संबंध है। जनसंख्या भूगोल सीधे तौर पर जनांकिकी से जुड़ा है, क्योंकि दोनों ही जनसंख्या के वितरण, घनत्व और संरचना का विश्लेषण करते हैं। इसके विपरीत, सैन्य विज्ञान राजनीतिक भूगोल से, मनोविज्ञान व्यवहारवादी भूगोल से और समाजशास्त्र सामाजिक भूगोल से संबंधित है। जनांकिकी और जनसंख्या भूगोल के बीच का यह संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण और पूरक है।

24. (A) क्योंकि यह मानवीय तत्वों को समझने हेतु सामाजिक विज्ञानों से जुड़ती है
मानव भूगोल की प्रकृति अंतर-विषयक है क्योंकि यह धरातल पर मौजूद मानवीय परिघटनाओं को समझने के लिए विभिन्न सामाजिक विज्ञानों जैसे समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, इतिहास और राजनीति विज्ञान के साथ घनिष्ठ संबंध बनाती है। यह विषय इन अनुशासनों से डेटा और सिद्धांतों को लेकर मानव और पर्यावरण के बीच के जटिल संबंधों की व्याख्या करता है। इस समन्वय के बिना मानवीय तत्वों का संपूर्ण भौगोलिक विश्लेषण संभव नहीं है।

25. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
मानव भूगोल के उप-क्षेत्र अपने सहयोगी अनुशासनों से सूचनाएँ साझा करते हैं। व्यवहारवादी भूगोल मनोविज्ञान से, सामाजिक कल्याण का भूगोल कल्याण अर्थशास्त्र से, सांस्कृतिक भूगोल मानवविज्ञान से और लिंग भूगोल समाजशास्त्र व महिला अध्ययन से संबंधित है। यह अंतर्संबंध दर्शाता है कि भूगोल एक व्यापक विषय है जो मानवीय जीवन के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करने के लिए सामाजिक विज्ञान की विभिन्न शाखाओं के साथ मिलकर कार्य करता है।

26. (A) सामाजिक भूगोल
ऐतिहासिक भूगोल मुख्य रूप से सामाजिक भूगोल का एक महत्वपूर्ण उप-क्षेत्र है। यह इस बात का अध्ययन करता है कि समय के साथ किसी क्षेत्र की सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताएं कैसे बदली हैं। यद्यपि इसका संबंध इतिहास से है, लेकिन इसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक विकास के भौगोलिक पहलुओं को समझना है। सामाजिक भूगोल के अन्य उप-क्षेत्रों में सांस्कृतिक भूगोल, लिंग भूगोल और चिकित्सा भूगोल जैसे विषय भी शामिल हैं।

27. (D) 1950 के दशक के अंत से 1960 के दशक के अंत तक
भूगोल में मात्रात्मक क्रांति का दौर 1950 के दशक के अंत में शुरू हुआ और 1960 के दशक के अंत तक चला। इस अवधि के दौरान, भूगोल में सांख्यिकीय विधियों, कंप्यूटर के प्रयोग और गणितीय मॉडल के अनुप्रयोग पर बहुत जोर दिया गया। इसका मुख्य उद्देश्य भूगोल को एक अधिक वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ विषय बनाना था, जो सामान्य नियमों और प्रतिरूपों की पहचान करने में सक्षम हो सके।

28. (C) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।
संभववाद और पर्यावरणीय निश्चयवाद भूगोल की दो विपरीत अवधारणाएँ हैं। संभववाद मानता है कि मनुष्य एक सक्रिय कारक है और प्रकृति उसे अवसर प्रदान करती है, जिसका उपयोग वह अपनी प्रगति के लिए करता है। इसके विपरीत, पर्यावरणीय निश्चयवाद में प्रकृति को सर्वोच्च माना गया है और मनुष्य को प्रकृति की शक्तियों का दास माना गया है, जहाँ उसकी गतिविधियाँ पूरी तरह से प्राकृतिक कारकों द्वारा नियंत्रित होती हैं।

29. (C) अन्वेषण और विवरण
आरंभिक उपनिवेश युग के दौरान मानव भूगोल का मुख्य उपागम अन्वेषण और विवरण था। इस काल में साम्राज्यी और व्यापारिक हितों ने नए क्षेत्रों की खोज को बढ़ावा दिया। भूगोलवेत्ताओं का मुख्य कार्य अज्ञात देशों के बारे में जानकारी जुटाना और उनके संसाधनों का विस्तृत विवरण तैयार करना था। यह युग मुख्य रूप से विश्व मानचित्र को पूर्ण करने और विभिन्न प्रदेशों के बारे में विश्वज्ञानकोशीय जानकारी संचित करने का था।

30. (D) प्रकृति के संकेतों को समझकर सतत विकास के पथ पर आगे बढ़ना
'रुको और जाओ निश्चयवाद' का मूल सिद्धांत यह है कि मनुष्य को विकास की दौड़ में प्रकृति की सीमाओं को अनदेखा नहीं करना चाहिए। यह विचारधारा सिखाती है कि हम प्रकृति पर विजय तभी प्राप्त कर सकते हैं जब हम उसके नियमों को स्वीकार करें। इसका उद्देश्य एक ऐसा संतुलन बनाना है जहाँ संसाधनों का विनाश किए बिना विकास संभव हो सके, जो वर्तमान समय में सतत विकास की अवधारणा के समान है।

31. (A) महामारी विज्ञान
चिकित्सा भूगोल मानव भूगोल का एक महत्वपूर्ण उप-क्षेत्र है जो स्वास्थ्य और बीमारियों के स्थानिक वितरण का अध्ययन करता है। यह विषय सामाजिक विज्ञान के अनुशासन 'महामारी विज्ञान' से गहराई से जुड़ा हुआ है। चिकित्सा भूगोल इस बात का विश्लेषण करता है कि पर्यावरणीय कारक बीमारियों के फैलने में क्या भूमिका निभाते हैं और विभिन्न क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता और पहुँच में क्या भिन्नताएँ पाई जाती हैं।

32. (B) चंद्रमा से चट्टानी पदार्थों के नमूने
भूगोल में यात्रियों के विवरण, प्राचीन मानचित्र और प्राचीन महाकाव्य ऐतिहासिक सूचनाओं के महत्वपूर्ण स्रोत माने जाते

हैं, जो अतीत के भौगोलिक ज्ञान को समझने में मदद करते हैं। चंद्रमा से लाए गए चट्टानी पदार्थों के नमूने खगोल विज्ञान और अंतरिक्ष विज्ञान के लिए महत्वपूर्ण हैं, लेकिन वे सामान्यतः पृथ्वी के ऐतिहासिक मानव भूगोल के अध्ययन के लिए सूचना के प्राथमिक या पारंपरिक स्रोतों में शामिल नहीं किए जाते हैं।

33. (B) प्रौद्योगिकी
लोगों और पर्यावरण के बीच होने वाली अन्योन्यक्रिया में प्रौद्योगिकी सबसे महत्वपूर्ण कारक है। प्रौद्योगिकी न केवल मानव समाज के सांस्कृतिक विकास के स्तर को दर्शाती है, बल्कि यह मनुष्य को प्रकृति की बंदिशों को ढीला करने और संसाधनों का बेहतर उपयोग करने में भी सक्षम बनाती है। बेहतर तकनीक के माध्यम से ही मनुष्य पर्यावरण में बदलाव करने और प्रतिकूल परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने में सफल हो पाता है।

34. (C) केवल 1, 2, 3, 5
1970 के दशक में उभरी तीनों विचारधाराएँ मात्रात्मक क्रांति की यंत्रवत और अमानवीय पद्धति के विरुद्ध प्रतिक्रिया थीं। कल्याणपरक विचारधारा सामाजिक कल्याण पर, आमूलवादी विचारधारा मार्क्सवादी सिद्धांतों और गरीबी पर, तथा व्यवहारवादी विचारधारा प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित थी। ये विचारधाराएँ भूगोल को सामाजिक और राजनीतिक रूप से अधिक प्रासंगिक बनाने के लिए विकसित हुई थीं। नवनिश्चयवाद की संकल्पना इससे बहुत पहले ग्रिफिथ टेलर द्वारा दी जा चुकी थी।

35. (C) यह इस बात पर जोर देता है कि प्रकृति और मानव को हमेशा अलग-अलग अध्ययन किया जाना चाहिए।
भूगोल में द्वैतवाद की बहस विभिन्न उपागमों के बीच रही है, लेकिन आधुनिक भौगोलिक चिंतन यह मानता है कि प्रकृति और मानव को अलग-अलग नहीं किया जा सकता। वे एक-दूसरे से अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं। भूगोल में भौतिक और मानवीय परिघटनाओं को एक समग्रता में देखना ही उचित माना जाता है, क्योंकि मानवीय क्रियाएं हमेशा एक भौतिक परिवेश के भीतर ही घटित और विकसित होती हैं।

36. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
मानव भूगोल की प्रकृति अत्यंत अंतर-विषयक है क्योंकि मानवीय जीवन की कोई भी घटना सामाजिक विज्ञान के अन्य विषयों से अछूती नहीं है। यह धरातल पर मानवीय तत्वों की व्याख्या करने के लिए समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान जैसे विषयों से निरंतर सूचनाएं और शोध विधियां प्राप्त करता है। इस अंतरापृष्ठ के कारण ही मानव भूगोल मानवीय परिघटनाओं के स्थानिक वितरण का व्यापक और सटीक विश्लेषण कर पाता है।

37. (C) प्रादेशिक विश्लेषण
उत्तर उपनिवेश युग में भूगोलवेत्ताओं का ध्यान मुख्य रूप से प्रादेशिक विश्लेषण पर केंद्रित हो गया था। इस उपागम के अंतर्गत यह माना जाता था कि पृथ्वी के सभी प्रदेश एक बड़े पूर्ण इकाई के भाग हैं। अतः किसी प्रदेश के सभी पक्षों का विस्तृत वर्णन उस प्रदेश की विशिष्टता को समझने में और अंततः संपूर्ण पृथ्वी को एक इकाई के रूप में समझने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करता है।

38. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
मानव भूगोल के विकास के विभिन्न चरणों में अलग-अलग उपागमों की प्रधानता रही है। आरंभिक उपनिवेश युग में अन्वेषण और विवरण मुख्य था, जबकि उत्तर उपनिवेश युग में प्रादेशिक विश्लेषण पर जोर दिया गया। 1930 के दशक में क्षेत्रीय विभेदन का उदय हुआ, जिसने प्रदेशों की विशिष्टताओं की पहचान की। अंततः 1970 के दशक में मात्रात्मकता के विरुद्ध मानवतावादी और कल्याणपरक जैसी नई विचारधाराओं का प्रादुर्भाव हुआ।

39. (D) पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश
फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश ने मानव भूगोल को एक नवीन और संश्लेषित संकल्पना के रूप में परिभाषित किया है। उनकी परिभाषा पृथ्वी को नियंत्रित करने वाले भौतिक नियमों और इस पर रहने वाले जीवों के बीच के जटिल संबंधों के गहरे ज्ञान पर आधारित है। ब्लाश संभववाद के प्रबल समर्थक थे और उन्होंने मनुष्य को एक सक्रिय भौगोलिक कारक के रूप में देखा जो प्रकृति के साथ निरंतर संवाद करता है।

40. (A) गृह, गाँव, नगर, सड़कें
मानव भूगोल मुख्य रूप से उन तत्वों का अध्ययन करता है जो मनुष्य द्वारा भौतिक पर्यावरण से प्राप्त संसाधनों की सहायता से निर्मित किए जाते हैं। घर, गाँव, शहर, सड़कें, रेलमार्ग, उद्योग और खेत जैसे तत्व मानव-निर्मित सांस्कृतिक भू-दृश्य का हिस्सा हैं। इसके विपरीत, भू-आकृति, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति और खनिज प्राकृतिक पर्यावरण के अंग हैं जो मानवीय क्रियाओं के लिए आधार और अवसर प्रदान करते हैं।

41. (C) अनेक बीमारियों पर विजय पाने में
वैज्ञानिक प्रगति और प्रौद्योगिकी के विकास ने मानव को प्रकृति के गहरे रहस्यों को समझने में सक्षम बनाया है। डी.एन.ए. और आनुवांशिकी के ज्ञान ने चिकित्सा विज्ञान में क्रांति ला दी है, जिससे मनुष्य कई घातक बीमारियों पर विजय पाने और जीवन प्रत्याशा बढ़ाने में सफल हुआ है। यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि प्रकृति के नियमों का सूक्ष्म ज्ञान ही मानव को नई तकनीकी शक्तियां और क्षमताएं प्रदान करता है।

42. (A) प्रत्येक स्थानीय संदर्भ की समझ के महत्त्व पर जोर दिया गया।
1990 के दशक में मानव भूगोल में उत्तर-आधुनिकवाद के उदय ने पूर्व के वृहत् सामान्यीकरणों और वैश्विक सिद्धांतों पर सवाल उठाए। इस नए दृष्टिकोण ने इस बात पर जोर दिया कि प्रत्येक स्थान और समुदाय का अपना विशिष्ट ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ होता है। इसने भूगोलवेत्ताओं को स्थानीय विभिन्नताओं और सूक्ष्म स्तर के अध्ययनों के प्रति अधिक संवेदनशील बनाया, जिससे विषय में विविधता और गहराई आई।

43. (D) पर्यटन भूगोल - समाजशास्त्र
पर्यटन भूगोल का प्रत्यक्ष संबंध पर्यटन और यात्रा प्रबंधन से है, जबकि समाजशास्त्र का मुख्य जुड़ाव सामाजिक भूगोल और इसके विभिन्न पक्षों से होता है। अन्य विकल्पों में निर्वाचन भूगोल राजनीति विज्ञान से, सैन्य भूगोल सैन्य विज्ञान से और कृषि भूगोल कृषि विज्ञान से सही ढंग से मेल खाते हैं। मानव भूगोल के उप-क्षेत्र और उनके सहयोगी विषयों का सही मिलान भौगोलिक शोध की सटीकता के लिए अत्यंत आवश्यक होता है।

44. (A) 4, 1, 2, 3
मानव भूगोल का विकास चरणों में हुआ है, जिसकी शुरुआत प्रादेशिक विश्लेषण से हुई थी। इसके पश्चात 1950-60 के दशक में स्थानिक संगठन का दौर आया जिसमें सांख्यिकीय विधियों का उपयोग बढ़ा। 1970 के दशक में मानवतावादी, आमूलवादी और व्यवहारवादी विचारधाराएँ विकसित हुईं। सबसे अंत में 1990 के दशक में उत्तर-आधुनिकवाद आया। यह क्रम दर्शाता है कि कैसे भूगोल का विषय समय के साथ अधिक जटिल और विविधतापूर्ण होता गया।

45. (C) क्योंकि यह काल और स्थान के संदर्भ में विभिन्न घटनाओं का विश्लेषण करता है
भूगोल को समाकलनात्मक विषय इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह पृथ्वी पर घटने वाली भौतिक और मानवीय घटनाओं को समय और स्थान के व्यापक संदर्भ में जोड़कर देखता है। यह विषय केवल तथ्यों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह विभिन्न तत्वों के बीच के कार्यात्मक संबंधों और उनके आपसी प्रभावों का विश्लेषण करता है। यह दृष्टिकोण घटनाओं को उनकी समग्रता में समझने में मदद करता है, जो आधुनिक विज्ञान की एक प्रमुख आवश्यकता है।

46. (B) केवल 1, 2 और 3
रैटजेल, सेंपल और ब्लाश तीनों ने मानव भूगोल को परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रैटजेल ने संश्लेषण पर, सेंपल ने संबंधों की गत्यात्मकता पर और ब्लाश ने मानव-पर्यावरण अंतर्संबंधों की नई संकल्पना पर बल दिया। ग्रिफिथ टेलर ने मानव को प्रकृति का दास नहीं बताया, बल्कि उन्होंने 'नवनिश्चयवाद' के माध्यम से एक मध्य मार्ग सुझाया जहाँ मनुष्य प्रकृति के संकेतों को समझकर विकास कर सकता है।

47. (A) मानव शरीर रचना विज्ञान से प्रतीकों का प्रयोग करते हुए रूपकों का उपयोग
भूगोल में भौगोलिक घटनाओं का वर्णन करने के लिए अक्सर मानवीय शरीर के अंगों के नामों का उपयोग रूपक के रूप में किया जाता है। जैसे नदी के अंत को 'मुख', हिमनद के अग्र भाग को 'प्रोथ' और पतले जल क्षेत्र को 'ग्रीवा' कहा जाता है। यह पद्धति प्रकृति के प्रति मानवीय दृष्टिकोण और उसके साथ गहरे जुड़ाव को दर्शाती है, जिससे अमूर्त भौगोलिक संकल्पनाओं को समझना अधिक सहज हो जाता है।

48. (B) इसे एक गतिशील और बढ़ते हुए अस्तित्व के रूप में देखकर
जर्मन भूगोलवेत्ता राज्य या देश की तुलना एक 'जीवित जीव' से करते हैं। इस अवधारणा के अनुसार, राज्य केवल मानचित्र पर खींची गई सीमाओं का समूह नहीं है, बल्कि वह एक जैविक इकाई की तरह विकसित होता और बढ़ता है। सड़कों और रेलमार्गों को 'परिसंचरण की धमनियों' के रूप में देखना इसी जैविक दृष्टिकोण का विस्तार है। यह राज्य की आंतरिक एकता और उसकी गतिशील प्रकृति को स्पष्ट करता है।

49. (B) प्रकृति और मानव के बीच कोई वैध द्वैधता (dualism) नहीं है।
प्रकृति और मानव को अविभाज्य तत्व मानने का मुख्य अर्थ यह है कि उन्हें एक-दूसरे से अलग करके पूर्णता में नहीं समझा जा सकता। भूगोल में यह विचार महत्वपूर्ण है क्योंकि मानवीय गतिविधियां प्राकृतिक परिवेश के भीतर ही फलीभूत होती हैं। अतः इन दोनों के बीच कोई वास्तविक द्वैधता नहीं है; वे एक ही समग्र इकाई के दो पूरक पक्ष हैं जो एक-दूसरे को निरंतर प्रभावित और रूपांतरित करते रहते हैं।

50. (A) प्रकृति का ज्ञान प्रौद्योगिकी को विकसित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है।
प्रौद्योगिकी का विकास सीधे तौर पर प्रकृति के नियमों की समझ पर निर्भर करता है। मनुष्य ने जब तक भौतिकी और जीव विज्ञान के सिद्धांतों को नहीं समझा, तब तक वह उन्नत तकनीक विकसित करने में असमर्थ था। जैसे-जैसे प्रकृति के प्रति हमारी समझ गहरी होती गई, हमारी तकनीकी क्षमताएं भी बढ़ती गईं। अतः प्रकृति का ज्ञान मानवीय नवाचार और तकनीकी प्रगति की आधारशिला है, जो हमें पर्यावरण की सीमाओं से मुक्ति दिलाती है।

51. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
पर्यावरणीय निश्चयवाद की प्रारंभिक अवस्था में, मनुष्य की तकनीकी क्षमता अत्यंत सीमित थी, जिसके कारण वह पूरी तरह प्रकृति पर निर्भर था। इस आदिम अवस्था में मनुष्य प्रकृति की विशाल शक्तियों के सामने असहाय महसूस करता था। उसकी पूरी जीवनशैली और सामाजिक संरचना प्रकृति के आदेशों से संचालित होती थी। यही कारण है कि वह प्रकृति को एक शक्तिशाली दैवीय शक्ति मानकर उसकी पूजा करता था और उसकी प्रचंडता से डरता था।

52. (D) कृषि का आदिम रूप (स्थानांतरी कृषि)
बेंदा की कहानी में 'पेंडा' शब्द का प्रयोग स्थानांतरी कृषि या झूम कृषि के एक स्थानीय और आदिम रूप को दर्शाने के लिए किया गया है। यह कृषि पद्धति आदिम समाजों की विशेषता है जहाँ वे वन के एक छोटे टुकड़े को साफ करके और जलाकर खेती करते हैं। यह उदाहरण दिखाता है कि कैसे मानवीय गतिविधियां पूरी तरह से स्थानीय पर्यावरण और पारंपरिक ज्ञान पर आधारित होती हैं, जो मानव के प्राकृतीकरण का हिस्सा है।

53. (C) पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश
संभववाद की विचारधारा को व्यवस्थित रूप देने का श्रेय मुख्य रूप से फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश को दिया जाता है। उन्होंने इस विचार का पुरजोर समर्थन किया कि प्रकृति मनुष्य के लिए केवल संभावनाएं प्रस्तुत करती है, और मनुष्य अपनी बुद्धि और तकनीकी क्षमता से उन संभावनाओं को साकार करने में सक्षम है। उनकी शिक्षाओं ने मानव भूगोल में मानवीय पहल और चयन की स्वतंत्रता को केंद्रीय स्थान दिया।

54. (A) P-2, Q-1, R-3, S-4
पर्यावरणीय निश्चयवाद प्रकृति के प्रभुत्व को दर्शाता है, जबकि संभववाद प्रकृति द्वारा प्रदान किए गए अवसरों के मानवीय उपयोग पर बल देता है। नवनिश्चयवाद इन दोनों के बीच संतुलन स्थापित करने वाला मध्य मार्ग है, जिसे 'रुको और जाओ' भी कहा जाता है। अंततः प्रकृति का मानवीकरण उस अवस्था को सूचित करता है जहाँ मनुष्य अपनी उन्नत तकनीक द्वारा प्राकृतिक बाधाओं पर विजय पाकर उसे अपनी सुख-सुविधाओं के अनुसार बदल देता है।

55. (B) केवल 1, 2, 3, 4
मानव भूगोल के मुख्य क्षेत्रों में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक भूगोल शामिल हैं। व्यवहारवादी और सांस्कृतिक भूगोल सामाजिक भूगोल के अंतर्गत आते हैं, जबकि निर्वाचन और सैन्य भूगोल राजनीतिक भूगोल की शाखाएं हैं। आर्थिक भूगोल के तहत संसाधन, कृषि और उद्योग जैसे उप-क्षेत्रों का अध्ययन किया जाता है। जनसंख्या भूगोल का जनांकिकी से गहरा और अविभाज्य संबंध है, क्योंकि दोनों ही जनसंख्या के आंकड़ों और प्रवृत्तियों का विश्लेषण करते हैं।

56. (A) मात्रात्मक क्रांति से उत्पन्न असंतुष्टि और अमानवीय अध्ययन
1970 के दशक में मानवतावादी, आमूलवादी और व्यवहारवादी विचारधाराओं का उदय मात्रात्मक क्रांति की सीमाओं के कारण हुआ। भूगोलवेत्ता महसूस करने लगे थे कि केवल सांख्यिकीय मॉडलों और आंकड़ों से मानवीय संवेदनाओं, गरीबी और सामाजिक असमानता जैसे वास्तविक मुद्दों को नहीं समझा जा सकता। इन नई विचारधाराओं ने भूगोल को मानवीय मूल्यों और सामाजिक समस्याओं के प्रति अधिक संवेदनशील बनाकर उसे समाज के लिए अधिक प्रासंगिक बनाने का प्रयास किया।

57. (C) आदिम समाज द्वारा प्रकृति की पूजा
आदिम समाज द्वारा प्रकृति की पूजा करना 'मानव के प्राकृतीकरण' का उदाहरण है, न कि प्रकृति के मानवीकरण का। प्रकृति के मानवीकरण में मनुष्य सक्रिय होकर पर्यावरण में बदलाव करता है, जैसे पहाड़ों पर सैरगाह बनाना, बंदरगाहों का निर्माण करना या उपग्रहों को अंतरिक्ष में भेजना। पूजा करने की क्रिया मनुष्य की प्रकृति पर निर्भरता और उसके प्रति सम्मान को दर्शाती है, जो तकनीकी अभाव की स्थिति का सूचक है।

58. (A) विपणन भूगोल
विपणन भूगोल आर्थिक भूगोल का एक विशिष्ट उप-क्षेत्र है जो माल और सेवाओं के वितरण, विनिमय और उपभोग के स्थानिक प्रतिरूपों का अध्ययन करता है। यह विषय सीधे तौर पर व्यावसायिक अर्थशास्त्र और वाणिज्य के सिद्धांतों से जुड़ा है। इसमें बाजारों की स्थिति, उपभोक्ता व्यवहार और व्यापारिक नेटवर्क का विश्लेषण किया जाता है, जो इसे आर्थिक गतिविधियों को समझने के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण और व्यावहारिक शाखा बनाता है।

59. (D) पृथ्वी को मानव के घर के रूप में समझना और उन सभी तत्वों का अध्ययन करना जिन्होंने मानव को पोषित किया है।
मानव भूगोल का प्राथमिक उद्देश्य पृथ्वी के धरातल पर मानवीय जीवन के वितरण और उन कारकों का अध्ययन करना है जो मानव समाज को आकार देते हैं। यह विषय पृथ्वी को केवल एक पिंड के रूप में नहीं, बल्कि मानव के निवास स्थान के रूप में देखता है। यह उन सभी भौतिक और सांस्कृतिक तत्वों के बीच के अंतर्संबंधों की व्याख्या करता है जो मानव सभ्यता के विकास और पोषण में सहायक रहे हैं।

60. (B) यह समझना पर कि एक प्रदेश अन्य प्रदेशों से किस प्रकार और क्यों भिन्न है।
क्षेत्रीय विभेदन का मुख्य लक्ष्य विभिन्न प्रदेशों की विलक्षणता और उनकी विशिष्ट विशेषताओं की पहचान करना है। यह उपागम इस बात पर केंद्रित है कि दुनिया का कोई एक हिस्सा दूसरे हिस्से से क्यों अलग है। इसमें किसी क्षेत्र के इतिहास, संस्कृति और पर्यावरण के अनूठे संयोजन का अध्ययन किया जाता है ताकि उस स्थान की अपनी अलग पहचान और वैश्विक संदर्भ में उसके महत्व को स्पष्ट किया जा सके।

61. (C) इन तीनों विचारधाराओं ने भूगोल को अधिक मात्रात्मक और सांख्यिकीय बना दिया।
1970 के दशक में उभरी मानवतावादी, आमूलवादी और व्यवहारवादी विचारधाराओं ने वास्तव में मात्रात्मक विधियों के अत्यधिक प्रयोग का विरोध किया था। इन विचारधाराओं का उद्देश्य आंकड़ों के बजाय मानवीय अनुभवों, सामाजिक न्याय और व्यवहार को प्राथमिकता देना था। अतः इन्होंने भूगोल को मात्रात्मक बनाने के बजाय उसे अधिक सामाजिक, गुणात्मक और मानवीय सरोकारों से जोड़ने का कार्य किया, जिससे विषय की दार्शनिक गहराई और सामाजिक उपयोगिता बढ़ी।

62. (B) केवल 1, 2 और 3
मानव भूगोल के प्रारंभिक विकास में द्वैतवाद की बहस नोमोथेटिक बनाम इडियोग्राफिक, प्रादेशिक बनाम क्रमबद्ध और सैद्धांतिक बनाम ऐतिहासिक-संस्थागत व्याख्याओं के इर्द-गिर्द घूमती रही। ये विवाद भूगोल की पद्धति और दर्शन को आकार देने में सहायक थे। मानवीय बनाम भौतिक भूगोल की बहस भी रही है, लेकिन द्वैतवाद के मुख्य दार्शनिक आधार पहले तीन बिंदुओं में अधिक स्पष्ट रूप से निहित हैं, जो विषय की वैज्ञानिक प्रकृति को परिभाषित करते हैं।

63. (A) समाजशास्त्र
अवकाश का भूगोल सामाजिक भूगोल का एक उप-क्षेत्र है जो लोगों द्वारा अपने खाली समय के उपयोग और मनोरंजन की गतिविधियों के भौगोलिक वितरण का अध्ययन करता है।

यह विषय मुख्य रूप से समाजशास्त्र से प्रभावित है क्योंकि अवकाश की प्रवृत्तियां समाज की संरचना, जीवनशैली और सांस्कृतिक मूल्यों द्वारा निर्धारित होती हैं। पर्यटन और खेल जैसी गतिविधियों का विश्लेषण इसी शाखा के अंतर्गत समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से किया जाता है।

64. (B) यह कंप्यूटर और परिष्कृत सांख्यिकीय विधियों के प्रयोग पर केंद्रित था।
स्थानिक संगठन उपागम 1950 और 1960 के दशक की विशेषता थी, जिसे मात्रात्मक क्रांति के रूप में भी जाना जाता है। इस दौरान भूगोलवेत्ताओं ने मानवीय गतिविधियों के प्रतिरूपों को समझने के लिए गणितीय मॉडलों और कंप्यूटरों का व्यापक उपयोग किया। इसका उद्देश्य भौतिकी के नियमों की तरह भूगोल में भी सार्वभौमिक नियम बनाना था, ताकि विभिन्न स्थानों के बीच होने वाले प्रवाहों और स्थानिक वितरणों की सटीक भविष्यवाणी की जा सके।

65. (B) 3, 2, 1
भौगोलिक विचारों का विकास एक निश्चित क्रम में हुआ है। सबसे पहले पर्यावरणीय निश्चयवाद आया, जिसमें प्रकृति को सर्वशक्तिमान माना गया। इसके बाद संभववाद का उदय हुआ, जिसने मानवीय पहल और संभावनाओं पर जोर दिया। अंत में नवनिश्चयवाद आया, जो निश्चयवाद और संभववाद के बीच एक संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह क्रम मानव की बढ़ती तकनीकी क्षमता और प्रकृति के प्रति बदलते दृष्टिकोण का प्रतिबिंब है।

66. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भूगोल एक व्यापक और समाकलनात्मक विषय है, जिसके कारण इसमें लगभग किसी भी घटना का अध्ययन स्थानिक और कालिक दृष्टिकोण से किया जा सकता है। चूँकि यह विषय आनुभविक तथ्यों पर आधारित है और व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करता है, इसकी पहुँच अत्यंत विस्तृत है। समय और स्थान के संदर्भ में घटनाओं का विश्लेषण करना इसे एक अद्वितीय विधा बनाता है जो विज्ञान और सामाजिक विज्ञान को जोड़ता है।

67. (C) उद्योग
भौतिक पर्यावरण के अंतर्गत वे तत्व शामिल होते हैं जो प्रकृति द्वारा स्वयं निर्मित हैं और जिन पर मानवीय हस्तक्षेप का अभाव होता है, जैसे भू-आकृति, जलवायु, जल, मृदा और प्राकृतिक वनस्पति। इसके विपरीत, उद्योग एक मानवीय तत्व है जो सांस्कृतिक भू-दृश्य का हिस्सा है। उद्योगों का विकास मनुष्य द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और तकनीक के प्रयोग से किया जाता है, इसलिए इसे भौतिक पर्यावरण में शामिल नहीं किया जा सकता।

68. (D) भौतिक पर्यावरण द्वारा प्रदत्त संसाधनों का उपयोग करके मानव द्वारा
सामाजिक-सांस्कृतिक पर्यावरण का निर्माण शून्य में नहीं होता है। मनुष्य अपने भौतिक परिवेश से कच्चा माल और संसाधन प्राप्त करता है और अपनी बुद्धि तथा कौशल के माध्यम से उन्हें नए रूपों में बदल देता है। घर, कारखाने, परिवहन के साधन और संचार के जाल इसी प्रक्रिया का परिणाम हैं। अतः सांस्कृतिक पर्यावरण वास्तव में मनुष्य और प्रकृति के बीच होने वाली निरंतर अंतःक्रिया का एक दृश्य प्रतिबिंब है।

69. (C) भू-आकृति विज्ञान
भू-आकृति विज्ञान भौतिक भूगोल का एक मुख्य क्षेत्र है, जो पृथ्वी के धरातल के विभिन्न रूपों और उनकी निर्माण प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। इसके विपरीत, सामाजिक भूगोल, आर्थिक भूगोल और राजनीतिक भूगोल मानव भूगोल के प्रमुख क्षेत्र हैं जो मानवीय गतिविधियों और उनके स्थानिक वितरण पर केंद्रित हैं। मानव भूगोल मानवीय पहलुओं का विश्लेषण करता है, जबकि भौतिक भूगोल प्राकृतिक परिघटनाओं के अध्ययन तक सीमित रहता है।

70. (B) P-3, Q-1, R-2, S-4
रैटजेल ने मानव भूगोल में संश्लेषण की प्रक्रिया पर बल दिया है, जबकि एलन सी. सेंपल की परिभाषा मानवीय संबंधों की गत्यात्मकता और परिवर्तनशीलता को केंद्र में रखती है। पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश संभववाद के प्रणेता माने जाते हैं, जिन्होंने मानवीय संभावनाओं की बात की। ग्रिफिथ टेलर ने 'रुको और जाओ निश्चयवाद' के माध्यम से एक संतुलनकारी दृष्टिकोण दिया। ये सभी विद्वान मानव भूगोल के विकास के विभिन्न स्तंभ हैं।

71. (D) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का भूगोल आर्थिक भूगोल का एक विशिष्ट उप-क्षेत्र है जो विभिन्न देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान के स्थानिक प्रतिरूपों का विश्लेषण करता है। यह शाखा सीधे तौर पर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के सिद्धांतों और वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ी हुई है। इसमें व्यापारिक मार्गों, समझौतों और वैश्विक बाजारों की बदलती प्रवृत्तियों का अध्ययन किया जाता है, जो वर्तमान वैश्वीकृत दुनिया में किसी भी राष्ट्र की आर्थिक स्थिति को समझने के लिए अनिवार्य है।

72. (A) जुताई के लिए जमीन साफ करने और राख से मृदा को उर्वर बनाने के लिए
बेंदा और उसका कबीला स्थानांतरी कृषि करते हैं, जिसे झूम कृषि भी कहा जाता है। इसमें जंगल के छोटे हिस्सों को काटकर और जलाकर खेती के लिए जमीन तैयार की जाती है। जलने के बाद बची राख प्राकृतिक खाद का काम करती है, जिससे मिट्टी की उर्वरता बढ़ जाती है। यह पद्धति दिखाती है कि कैसे आदिम समाज बिना आधुनिक मशीनों के प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर अपनी आजीविका चलाने के तरीके खोज लेते हैं।

73. (C) कृत्रिम साधनों द्वारा
नॉर्वे जैसे ठंडे प्रदेश में कैरी के कार्यालय का तापमान तकनीक और बिजली के माध्यम से नियंत्रित किया जाता है। यह संभववाद का एक बेहतरीन उदाहरण है जहाँ मनुष्य ने अपनी तकनीकी शक्ति से प्रकृति की कठोर जलवायु की बाधा को पार कर लिया है। एयर कंडीशनिंग और हीटिंग जैसे कृत्रिम साधन

मनुष्य को प्रतिकूल मौसम में भी आरामदायक वातावरण में काम करने और रहने की सुविधा प्रदान करते हैं, जो आधुनिक जीवन की एक प्रमुख उपलब्धि है।

74. (A) क्षेत्रीय विभेदन
क्षेत्रीय विभेदन उपागम का मुख्य केंद्र बिंदु किसी प्रदेश की उन विशिष्टताओं को उजागर करना है जो उसे अन्य प्रदेशों से अलग बनाती हैं। भूगोलवेत्ता इस बात की खोज करते हैं कि एक स्थान की संस्कृति, संसाधन और पर्यावरण का संयोजन किस प्रकार उसे एक 'विलक्षण' पहचान देता है। यह दृष्टिकोण सामान्यीकरण के बजाय विविधता पर बल देता है और प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र के अद्वितीय व्यक्तित्व को समझने का प्रयास करता है।

75. (D) प्रकृति जब रुपांतरण की स्वीकृति दे तभी विकास के प्रयत्नों में आगे बढ़ना।
नवनिश्चयवाद के अनुसार, मनुष्य को प्रकृति के प्रति एक सजग और सम्मानजनक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। यह विचारधारा सिखाती है कि हम प्रकृति को तभी बदल सकते हैं जब वह हमें ऐसा करने की अनुमति दे। इसका अर्थ है कि विकास की ऐसी योजनाएं बनानी चाहिए जो प्राकृतिक संतुलन को न बिगाड़ें। यदि मनुष्य प्रकृति के संकेतों को अनदेखा कर अंधाधुंध विकास करता है, तो उसे पर्यावरणीय आपदाओं के रुप में उसकी कीमत चुकानी पड़ती है।

76. (B) केवल 1, 2, 3, 4
मानव भूगोल एक व्यापक विषय है जो भौतिक पर्यावरण और मानवीय जगत के बीच के संबंधों का गहन अध्ययन करता है। यह मानवीय परिघटनाओं के स्थानिक वितरण और विभिन्न क्षेत्रों में पाई जाने वाली सामाजिक व आर्थिक विविधताओं का विश्लेषण करता है। यह कहना गलत है कि इसका भौतिक भूगोल से कोई संबंध नहीं है, क्योंकि सभी मानवीय गतिविधियां अंततः भौतिक धरातल पर ही संपन्न होती हैं और उससे गहराई से प्रभावित होती हैं।

77. (C) मानवीय परिघटनाओं के मानचित्र योग्य प्रतिरूपों की पहचान करने के लिए।
स्थानिक संगठन के दौर में भूगोलवेत्ताओं ने मानवीय क्रियाओं को अधिक वैज्ञानिक ढंग से समझने के लिए भौतिकी और सांख्यिकी के सिद्धांतों का उपयोग किया। उनका मानना था कि लोगों के रहने, काम करने और वस्तुओं के प्रवाह के कुछ निश्चित पैटर्न होते हैं जिन्हें गणितीय रुप से मापा जा सकता है। इन प्रतिरूपों को मानचित्रों पर प्रदर्शित करके वे भौगोलिक व्यवस्थाओं के पीछे छिपे तर्क और संरचना को अधिक स्पष्टता से समझाना चाहते थे।

78. (D) पर्वत
पर्वत एक प्राकृतिक भू-आकृति है जो भौतिक भूगोल का हिस्सा है और इसका निर्माण भूगर्भीय प्रक्रियाओं द्वारा होता है। इसके विपरीत, खेत, बंदरगाह और उद्योग 'सांस्कृतिक भू-दृश्य' के अंग हैं क्योंकि इनका निर्माण मनुष्य ने अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए किया है। सांस्कृतिक भू-दृश्य उन सभी तत्वों को दर्शाता है जिन्हें मानव ने प्राकृतिक वातावरण में बदलाव करके बनाया है। पर्वत मानवीय कृति नहीं है, अतः यह इस श्रेणी में नहीं आता।

79. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या है।
समय के साथ मानवीय बुद्धि और अनुभव के आधार पर उन्नत प्रौद्योगिकी का विकास होता है, जिससे मनुष्य की कार्यक्षमता बढ़ती है। यह तकनीक मनुष्य को प्रकृति की कठोर बेड़ियों से मुक्त करने में मदद करती है, जिससे वह अपनी इच्छा अनुसार जीवन जी सकता है। हालांकि प्रौद्योगिकी का विकास और स्वतंत्रता की ओर प्रगति दोनों सत्य हैं, लेकिन वे हमेशा एक-दूसरे का सीधा कारण और व्याख्या नहीं होते, क्योंकि सामाजिक विकास के अन्य कारक भी इसमें भूमिका निभाते हैं।

80. (B) प्रादेशिक विश्लेषण
प्रादेशिक विश्लेषण उपागम इस दर्शन पर आधारित है कि पूरी दुनिया छोटे-छोटे क्षेत्रों या प्रदेशों से मिलकर बनी है। इस विचारधारा के समर्थक मानते थे कि यदि हम प्रत्येक प्रदेश के संसाधनों, संस्कृति और वातावरण का बारीकी से अध्ययन करें, तो इन सभी टुकड़ों को जोड़कर हमें संपूर्ण पृथ्वी की एक मुकम्मल समझ प्राप्त होगी। यह उपागम क्षेत्रीय विविधता के भीतर छिपी वैश्विक एकता को खोजने का एक प्रयास था।

81. (B) यह पृथ्वी और मनुष्य के बीच अंतर्संबंधों की एक नई और संश्लेषित संकल्पना प्रस्तुत करती है।
पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश की परिभाषा मानव भूगोल में एक क्रांतिकारी मोड़ थी क्योंकि इसने भौतिक नियमों और मानवीय जीवन को एक साथ जोड़कर देखा। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि मनुष्य और उसकी गतिविधियां पृथ्वी के प्राकृतिक तंत्र से अलग नहीं हैं, बल्कि वे उसके साथ एक जटिल और संश्लेषित रिश्ता साझा करते हैं। यह दृष्टिकोण मानव को एक सक्रिय कर्ता के रुप में प्रतिष्ठित करता है जो अपने पर्यावरण के साथ निरंतर अंतःक्रिया करता है।

82. (A) भूगोल में सांख्यिकीय विधियों और गणितीय मॉडल का उपयोग करके उसे अधिक वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ बनाना।
मात्रात्मक क्रांति का मुख्य लक्ष्य भूगोल को केवल वर्णनात्मक विषय होने से बचाकर एक कठोर वैज्ञानिक अनुशासन बनाना था। इसके तहत व्यक्तिगत धारणाओं के बजाय वास्तविक आंकड़ों और सांख्यिकीय विश्लेषण पर जोर दिया गया। भूगोलवेत्ताओं का मानना था कि गणितीय मॉडलों के माध्यम से वे मानवीय बस्तियों के वितरण, व्यापार के प्रवाह और आर्थिक गतिविधियों के प्रतिरूपों की अधिक सटीक और वस्तुनिष्ठ व्याख्या कर सकते हैं, जिससे भविष्य की भविष्यवाणियाँ संभव हो सकेंगी।

83. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
जनसंख्या भूगोल का जनांकिकी से गहरा संबंध है, जबकि आवास भूगोल नगर और ग्रामीण नियोजन के सिद्धांतों का उपयोग करता है। उद्योगों के स्थानिक वितरण का अध्ययन करने वाला उद्योग भूगोल औद्योगिक अर्थशास्त्र से सूचनाएं प्राप्त

करता है, और संसाधन भूगोल सीधे तौर पर संसाधन अर्थशास्त्र से जुड़ा है। यह विभाजन दर्शाता है कि मानव भूगोल के विभिन्न उप-क्षेत्र कैसे विशिष्ट सामाजिक विज्ञानों के साथ मिलकर ज्ञान का विस्तार करते हैं और व्यावहारिक समाधान प्रदान करते हैं।

84. (A) 2, 1, 3, 4
भूगोल का विकास खोजों और अन्वेषणों से शुरु हुआ, जहाँ व्यापारिक हितों ने नए क्षेत्रों की जानकारी जुटाई। इसके बाद तकनीक के विस्तार के साथ कंप्यूटर और सांख्यिकी का युग आया। 1970 के दशक में सामाजिक चेतना बढ़ी और मार्क्सवादी सिद्धांतों के माध्यम से असमानता की व्याख्या की गई। सबसे आधुनिक चरण में उत्तर-आधुनिकवाद आया, जिसने प्रत्येक स्थानीय संदर्भ की विशिष्टता पर बल दिया। यह कालक्रम विषय की बदलती प्राथमिकताओं और दार्शनिक विकास को दर्शाता है।

85. (C) आदिम मानव समाज प्रकृति की प्रबल शक्तियों से अत्यधिक प्रभावित था।
पर्यावरणीय निश्चयवाद की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें मनुष्य को प्रकृति के सामने असहाय और गौण माना गया है। प्राचीन समय में जब तकनीक का अभाव था, तब जलवायु, धरातल और प्राकृतिक संसाधन ही मनुष्य के जीवन का स्वरुप तय करते थे। इस अवस्था में मनुष्य को प्रकृति की शक्तियों का पालन करना पड़ता था, और वह अपनी इच्छा से पर्यावरण में कोई बड़ा बदलाव करने की स्थिति में नहीं था।

86. (B) मानवविज्ञान और महिला अध्ययन
लिंग भूगोल सामाजिक भूगोल का एक विशिष्ट उप-क्षेत्र है जो पुरुषों और महिलाओं के बीच के सामाजिक और स्थानिक अंतरों का विश्लेषण करता है। यह शाखा मुख्य रूप से महिला अध्ययन और मानवविज्ञान से प्रभावित है। इसमें इस बात का अध्ययन किया जाता है कि समाज में लिंग आधारित भूमिकाएँ कैसे भौगोलिक स्थानों के उपयोग और संसाधनों तक पहुँच को प्रभावित करती हैं। यह विषय सामाजिक समानता और लैंगिक न्याय को भौगोलिक दृष्टिकोण से समझने में मदद करता है।

87. (D) क्योंकि साम्राज्यी और व्यापारिक रुचियों ने नए क्षेत्रों में खोजों को प्रोत्साहित किया था।
उपनिवेशवाद के दौर में शक्तिशाली देशों ने व्यापारिक लाभ और संसाधनों पर नियंत्रण पाने के लिए दुनिया भर में खोज अभियान चलाए। इन अभियानों का उद्देश्य अज्ञात प्रदेशों के बारे में विस्तृत जानकारी एकत्र करना था। भूगोलवेत्ताओं द्वारा तैयार किए गए विश्वज्ञानकोशीय विवरण उस समय के शासकों और व्यापारियों के लिए अत्यधिक मूल्यवान थे, क्योंकि वे नए बाजारों और संसाधनों के दोहन की योजना बनाने में सहायक सिद्ध होते थे।

88. (B) केवल 2, 3, 4, 5
1970 के दशक की विचारधाराएँ भूगोल को सामाजिक और राजनीतिक रूप से अधिक प्रासंगिक बनाने के लिए मात्रात्मक क्रांति की प्रतिक्रिया के रूप में उभरीं। कल्याणपरक विचारधारा ने आवास और स्वास्थ्य पर ध्यान दिया, जबकि आमूलवादी विचारधारा ने मार्क्सवादी सिद्धांतों के माध्यम से सामाजिक असमानता की व्याख्या की। ये सभी विचारधाराएं भूगोल को आंकड़ों की दुनिया से बाहर निकालकर वास्तविक मानवीय समस्याओं से जोड़ने का एक सफल प्रयास थीं, जिसने विषय को नई दिशा दी।

89. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
नवनिश्चयवाद की संकल्पना भूगोल में द्वैतवाद को समाप्त करने का एक ठोस प्रयास है। यह विचारधारा यह स्पष्ट करती है कि मनुष्य न तो प्रकृति का पूरी तरह गुलाम है और न ही वह उस पर पूर्ण नियंत्रण रख सकता है। इसके बजाय, यह एक मध्य मार्ग का समर्थन करती है जहाँ मानव और प्रकृति के बीच सहयोग की स्थिति होती है। यह संतुलित दृष्टिकोण पर्यावरणीय स्थिरता के साथ-साथ विकास की निरंतरता को सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

90. (A) क्या भूगोल को एक विशिष्ट तत्व (जैसे जलवायु) का विश्व स्तर पर अध्ययन करना चाहिए या एक विशिष्ट क्षेत्र के सभी तत्वों का एक साथ अध्ययन करना चाहिए।
भूगोल में क्रमबद्ध बनाम प्रादेशिक उपागम का विवाद विषय की पद्धति को लेकर रहा है। क्रमबद्ध भूगोल किसी एक विशेष तत्व को लेकर पूरी दुनिया में उसके वितरण का अध्ययन करता है, जैसे कि विश्व की जलवायु या कृषि। इसके विपरीत, प्रादेशिक भूगोल एक निश्चित भू-भाग को चुनकर उसके भीतर मौजूद सभी भौतिक और मानवीय तत्वों के आपसी अंतर्संबंधों का गहन विश्लेषण करता है। ये दोनों पद्धतियां एक-दूसरे की पूरक हैं।

91. (D) ऐतिहासिक भूगोल
ऐतिहासिक भूगोल सामाजिक भूगोल का एक उप-क्षेत्र है जो समय के साथ स्थानों के भौगोलिक परिवर्तन का अध्ययन करता है। कृषि भूगोल, विपणन भूगोल और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का भूगोल सीधे तौर पर आर्थिक गतिविधियों, उत्पादन और विनिमय से जुड़े होने के कारण आर्थिक भूगोल के प्रमुख अंग हैं। यद्यपि ऐतिहासिक भूगोल का महत्व निर्विवाद है, लेकिन इसकी मुख्य धारा आर्थिक क्रियाओं के बजाय सामाजिक और ऐतिहासिक विकास के स्थानिक पहलुओं पर केंद्रित रहती है।

92. (B) स्थानांतरी कृषि
बेंदा और उसका कबीला मध्य भारत के जंगलों में जिस प्रकार की खेती करते हैं, उसे स्थानांतरी कृषि या झूम कृषि कहा जाता है। इसमें वे जंगल के कुछ हिस्सों को जलाकर भूमि साफ करते हैं और कुछ समय तक खेती करने के बाद उसे छोड़कर नए स्थान पर चले जाते हैं। यह कृषि का एक बहुत ही प्राचीन और बुनियादी रूप है जो प्राकृतिक चक्रों पर निर्भर करता है और पर्यावरण के साथ न्यूनतम हस्तक्षेप की नीति पर आधारित है।

93. (C) पृथ्वी का घूर्णन
पृथ्वी का घूर्णन एक प्राकृतिक खगोलीय प्रक्रिया है जो भौतिक नियमों के तहत स्वतः घटित होती है और इस पर मानवीय क्रियाओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इसके विपरीत,

सांस्कृतिक भू-दृश्य का निर्माण, प्रौद्योगिकी का विकास और पर्यावरण का रूपांतरण सीधे तौर पर मानव और पर्यावरण के बीच होने वाली निरंतर अंतःक्रिया के परिणाम हैं। ये तीनों प्रक्रियाएं दर्शाती हैं कि कैसे मनुष्य ने अपनी बुद्धि और तकनीक से अपने परिवेश को बदला है।

94. (B) P-2, Q-3, R-1, S-4
मानव भूगोल के मुख्य क्षेत्रों का उनके उप-क्षेत्रों के साथ सटीक मिलान विषय की संरचना को स्पष्ट करता है। सांस्कृतिक भूगोल सामाजिक भूगोल का अंग है, सैन्य भूगोल राजनीतिक भूगोल से संबंधित है, संसाधन भूगोल आर्थिक भूगोल की शाखा है और नगर व ग्रामीण नियोजन सीधे तौर पर आवास भूगोल से जुड़ा है। यह वर्गीकरण मानवीय गतिविधियों के विभिन्न पहलुओं का व्यवस्थित अध्ययन करने में भूगोलवेत्ताओं की सहायता करता है और विषय को विशेषज्ञता प्रदान करता है।

95. (A) क्षेत्रीय विभेदन
क्षेत्रीय विभेदन वह उपागम है जिसने इस विचार को जन्म दिया कि प्रत्येक भौगोलिक स्थान अद्वितीय है। इस विचारधारा के अंतर्गत भूगोलवेत्ताओं ने किसी क्षेत्र की उन खासियतों को खोजने पर जोर दिया जो उसे दुनिया के अन्य हिस्सों से अलग करती हैं। इसमें स्थानीय इतिहास, संस्कृति और प्राकृतिक बनावट के विशिष्ट मेल का विश्लेषण किया जाता है। यह दृष्टिकोण सामान्य नियमों के बजाय स्थानीय विशेषताओं और विलक्षणताओं के महत्व को रेखांकित करता है।

96. (B) प्रौद्योगिकी का स्तर उच्च था।
मानव के प्राकृतीकरण की अवस्था मुख्य रूप से आदिम समाज और तकनीकी पिछड़ेपन से संबंधित है। इस काल में मनुष्य के पास प्रकृति को नियंत्रित करने के लिए आधुनिक उपकरण और वैज्ञानिक ज्ञान नहीं था। अतः यह कहना कि इस अवस्था में प्रौद्योगिकी का स्तर उच्च था, पूरी तरह से गलत है। वास्तव में, तकनीकी अभाव के कारण ही मनुष्य प्रकृति के आदेशों को मानने और उसकी प्रचंडता के सामने झुकने को विवश था।

97. (B) पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश
संभववाद की संकल्पना का मुख्य श्रेय फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश को दिया जाता है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि प्रकृति मानव को सक्रिय होने के लिए अनेक अवसर प्रदान करती है, और मनुष्य अपनी बुद्धि और तकनीकी क्षमता से इन अवसरों का लाभ उठाकर अपनी पसंद का सांस्कृतिक परिदृश्य तैयार करता है। उनकी विचारधारा ने मानव को पर्यावरण के एक निष्क्रिय प्राप्तकर्ता के बजाय एक सक्रिय निर्माता के रूप में स्थापित किया।

98. (A) वर्षा के लिए देवताओं की पूजा करना
वर्षा के लिए देवताओं की पूजा करना इस बात का प्रतीक है कि मनुष्य अभी भी प्राकृतिक शक्तियों को स्वयं से ऊपर और शक्तिशाली मानता है। यह गतिविधि 'मानव के प्राकृतीकरण' को दर्शाती है, जहाँ मनुष्य अपनी जरूरतों के लिए प्रकृति की कृपा पर निर्भर है और तकनीकी रूप से उसे नियंत्रित करने में अक्षम है। इसके विपरीत, एयर कंडीशनर और हवाई जहाज जैसे उदाहरण तकनीक की शक्ति और प्रकृति पर मानवीय नियंत्रण को प्रदर्शित करते हैं।

99. (C) केवल 2, 3, 4, 5
संभववाद की विचारधारा मानती है कि पर्यावरण केवल संभावनाएँ प्रदान करता है और मानव इन अवसरों का उपयोग करने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र है। इसके माध्यम से मनुष्य अपनी सांस्कृतिक छाप छोड़ता है, जो पर्यावरणीय निश्चयवाद के विपरीत है। यहाँ मानव को एक सक्रिय कारक माना गया है, न कि निष्क्रिय। यह विचारधारा मानवीय कौशल और तकनीकी क्षमता को प्रकृति के बंधनों से ऊपर रखकर विकास की संभावनाओं को अनंत मानती है।

100. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
आधुनिक युग में प्रौद्योगिकी ने दूरी और जलवायु की बाधाओं को लगभग समाप्त कर दिया है। कैरी का उदाहरण दिखाता है कि कैसे तीव्र परिवहन और शीतलन तकनीक ने यह संभव कर दिया है कि ठंडे देशों में भी उष्णकटिबंधीय फल ताजे उपलब्ध हों। यह विकास स्पष्ट करता है कि मानव ने प्रकृति के नियमों को समझकर ऐसी तकनीकें विकसित कर ली हैं जो उसे अपनी भौगोलिक स्थिति की सीमाओं से बाहर निकलने और वैश्विक संसाधनों का आनंद लेने में सक्षम बनाती हैं।

101. (B) सामान्य नियम या सिद्धांत बनाना
नोमोथेटिक उपागम का मुख्य लक्ष्य वैज्ञानिक पद्धति का उपयोग करके ऐसी व्याख्याएं और नियम विकसित करना है जो सार्वभौमिक रूप से लागू हो सकें। भूगोल में इस दृष्टिकोण का उपयोग अक्सर मात्रात्मक क्रांति के दौरान किया गया, जहाँ सांख्यिकीय मॉडलों के माध्यम से मानवीय व्यवहार और स्थानिक वितरण के सामान्य सिद्धांतों को खोजने का प्रयास किया गया। इसका उद्देश्य विषय को अधिक पूर्वानुमान योग्य और व्यवस्थित बनाना था, जो वैज्ञानिक शोध की एक अनिवार्य विशेषता है।

102. (B) विशिष्ट तथ्यों या घटनाओं का विवरणात्मक अध्ययन
इडियोग्राफिक उपागम का केंद्र बिंदु किसी विशिष्ट स्थान, घटना या संस्कृति का विस्तृत और अनूठा वर्णन करना है। यह दृष्टिकोण सामान्य नियमों के निर्माण के बजाय स्थानीय विशेषताओं और ऐतिहासिक संदर्भों को समझने पर जोर देता है। इसमें यह माना जाता है कि प्रत्येक भौगोलिक इकाई अपनी प्रकृति में अद्वितीय है, और उसे केवल सामान्य सिद्धांतों के चश्मे से नहीं देखा जा सकता। यह उपागम क्षेत्रीय भूगोल और ऐतिहासिक शोध में अत्यंत प्रभावशाली रहा है।

103. (D) सांस्कृतिक भूगोल - जनांकिकी
सांस्कृतिक भूगोल का मुख्य संबंध मानवविज्ञान और समाजशास्त्र से है, क्योंकि यह समाज की परंपराओं, भाषाओं और जीवन शैली का भौगोलिक अध्ययन करता है। जनांकिकी का सीधा संबंध जनसंख्या भूगोल से है, जहाँ जन्म दर, मृत्यु दर और जनसंख्या संरचना का विश्लेषण किया जाता है। अन्य विकल्प जैसे चिकित्सा भूगोल का महामारी विज्ञान से और

विपणन भूगोल का व्यावसायिक अर्थशास्त्र से संबंध सही है। गलत युग्म का चुनाव विषय की अंतःविषयक सीमाओं को स्पष्ट करता है।

104. (A) 4, 1, 3, 2
मानव भूगोल का विकास खोजों के युग से शुरु होकर आधुनिक विचारधाराओं तक पहुँचा है। सबसे पहले अन्वेषण और विवरण का काल आया, जिसके बाद उत्तर उपनिवेश युग में प्रादेशिक विश्लेषण का महत्व बढ़ा। अंतर-युद्ध काल में क्षेत्रीय विभेदन की अवधारणा विकसित हुई जिसने प्रदेशों की विशिष्टता पर ध्यान दिया। अंततः 1970 के दशक में विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं का उदय हुआ। यह विकास क्रम विषय की परिपक्वता और बदलती हुई शोध प्राथमिकताओं को प्रदर्शित करता है।

105. (C) मार्क्स का सिद्धांत
1970 के दशक में उभरी आमूलवादी विचारधारा ने मुख्य रुप से कार्ल मार्क्स के सामाजिक और आर्थिक सिद्धांतों से प्रेरणा ली थी। इस विचारधारा के समर्थकों का मानना था कि समाज में व्याप्त गरीबी, बंधन और सामाजिक असमानता के लिए प्रचलित पूँजीवादी व्यवस्था जिम्मेदार है। उन्होंने तर्क दिया कि भूगोल को केवल स्थानों का विवरण नहीं देना चाहिए, बल्कि उसे सामाजिक न्याय की लड़ाई में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए और दमनकारी संरचनाओं को बदलने का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए।

106. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
कल्याणपरक विचारधारा सामाजिक सुविधाओं जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य पर केंद्रित है, जबकि आमूलवादी विचारधारा सामाजिक असमानता और मार्क्सवादी दृष्टिकोण को अपनाती है। व्यवहारवादी विचारधारा प्रत्यक्ष अनुभव और व्यक्तिगत दृष्टिकोण को महत्व देती है, और नवनिश्चयवाद पर्यावरण व विकास के बीच संतुलन की वकालत करता है। ये मिलान दर्शाते हैं कि कैसे भूगोल के भीतर विभिन्न दृष्टिकोण मानवीय जीवन के विभिन्न पहलुओं को गहराई से समझने और विश्लेषित करने में सहायक होते हैं।

107. (D) मानव प्रौद्योगिकी का उपयोग करके प्रकृति को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार बदलता है।
प्रकृति का मानवीकरण उस प्रक्रिया को कहते हैं जहाँ मनुष्य एक सक्रिय भौगोलिक कारक के रूप में अपनी तकनीकी शक्ति और बुद्धिमत्ता का उपयोग करके प्राकृतिक वातावरण में बड़े बदलाव करता है। इसमें नदियों पर बांध बनाना, पहाड़ों को काटकर रास्ते बनाना और शहरों का विकास करना शामिल है। यह अवधारणा संभववाद से प्रेरित है और दर्शाती है कि मनुष्य केवल प्रकृति का दास नहीं है, बल्कि वह अपनी जरूरत के अनुसार उसे ढालने में सक्षम है।

108. (B) केवल 1, 2 और 3
मानव भूगोल की प्रकृति अत्यंत विस्तृत है क्योंकि यह भौतिक पर्यावरण, मानव-जनित सांस्कृतिक पर्यावरण और इन दोनों के बीच होने वाली जटिल अंतःक्रियाओं का एक साथ अध्ययन करता है। यह विषय हमें यह समझने में मदद करता है कि प्राकृतिक संसाधन मानवीय जीवन को कैसे प्रभावित करते हैं और मानव ने इन संसाधनों का उपयोग करके अपनी दुनिया को कैसे बदला है। इसका अध्ययन क्षेत्र संकीर्ण नहीं, बल्कि अत्यधिक व्यापक और अंतर-विषयक है।

109. (C) विकसित अर्थव्यवस्थाओं द्वारा अपनाई गई अनियंत्रित विकास की नीति के
भूमंडलीय तापन और ओजोन परत का क्षरण जैसी गंभीर समस्याएं मानवीय लालच और प्रकृति के संकेतों की अनदेखी का परिणाम हैं। विकसित देशों ने औद्योगिक विकास की अंधी दौड़ में पर्यावरण के नियमों की अवहेलना की और संसाधनों का अत्यधिक दोहन किया। यह स्थिति दर्शाती है कि यदि मनुष्य संभववाद के नाम पर प्रकृति पर बेलगाम विजय पाने की कोशिश करता है, तो उसे अंततः विनाशकारी पर्यावरणीय परिणामों का सामना करना पड़ता है।

110. (D) सड़कों, रेलमार्गों और जलमार्गों के जाल के लिए
भूगोल में 'परिसंचरण की धमनियों' का रुपक परिवहन तंत्र की महत्वपूर्ण भूमिका को समझाने के लिए दिया जाता है। जिस प्रकार मानव शरीर में धमनियां रक्त और पोषक तत्वों का संचार करती हैं, उसी प्रकार सड़कें, रेलमार्ग और जलमार्ग किसी देश की अर्थव्यवस्था में माल और लोगों की आवाजाही को सुनिश्चित करते हैं। ये माध्यम राष्ट्र की एकता और उसके आर्थिक विकास की जीवनरेखा होते हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों को एक-दूसरे से जोड़ते हैं।

111. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
भूगोल में द्वैतवाद की लंबी बहस ने विषय की दार्शनिक नींव को मजबूत किया है, और यह भी सत्य है कि प्रकृति और मानव के बीच कोई वास्तविक अलगाव नहीं है। हालांकि ये दोनों तथ्य स्वतंत्र रुप से महत्वपूर्ण हैं, लेकिन यह कहना कि द्वैतवाद की बहस केवल इसलिए हल हो गई क्योंकि वे अविभाज्य हैं, पूर्ण व्याख्या नहीं है। यह बहस विषय की शोध विधियों और प्राथमिकताओं के इर्द-गिर्द अधिक केंद्रित रही है।

112. (B) नदी से जल पीने से पहले धन्यवाद करना।
बेंदा की कहानी में, प्रकृति के प्रति उसका सम्मान और जुड़ाव बहुत गहरा है। वह नदी से जल लेने से पहले उसे धन्यवाद देकर प्रकृति की शक्तियों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है। यह व्यवहार 'मानव के प्राकृतीकरण' का एक सुंदर उदाहरण है, जहाँ मनुष्य प्रकृति को केवल एक संसाधन नहीं मानता, बल्कि उसे एक जीवित सत्ता के रूप में पूजता है जो उसका पालन-पोषण करती है।

113. (B) मानवीय क्रियाओं द्वारा सांस्कृतिक भू-दृश्यों का निर्माण।
संभववाद की विचारधारा का सबसे प्रमुख लक्षण धरातल पर मानवीय छाप का होना है। जब मनुष्य प्रकृति द्वारा दिए गए अवसरों का उपयोग करके खेत, शहर, सड़कें और उद्योग बनाता है, तो वह एक सांस्कृतिक भू-दृश्य का निर्माण करता है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि मानव ने अपनी बुद्धि और कौशल से

प्राकृतिक पर्यावरण को रूपांतरित कर दिया है। सांस्कृतिक भू-दृश्य मानवीय स्वायत्तता और उसकी तकनीकी प्रगति का जीता-जागता प्रमाण हैं।

114. (A) P-1, Q-2, R-3, S-4
मानव भूगोल के विभिन्न क्षेत्रों का उनके संबंधित सामाजिक विज्ञानों के साथ मिलान विषय की गहराई को दर्शाता है। ऐतिहासिक भूगोल इतिहास से, नगरीय भूगोल नगर नियोजन से, निर्वाचन भूगोल राजनीति विज्ञान से और कृषि भूगोल कृषि विज्ञान से संबंधित है। यह अंतर्संबंध यह स्पष्ट करता है कि भौगोलिक अध्ययन किस प्रकार अन्य विषयों के ज्ञान का उपयोग करके मानवीय गतिविधियों का एक संपूर्ण और व्यापक चित्र प्रस्तुत करने में सक्षम होते हैं।

115. (C) किसी प्रदेश के सभी पक्षों का विस्तृत वर्णन उस प्रदेश और संपूर्ण पृथ्वी को समझने में सहायक होता है।
प्रादेशिक विश्लेषण का मुख्य विचार यह था कि पृथ्वी एक एकीकृत इकाई है और इसके विभिन्न भाग एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इस उपागम के तहत भूगोलवेत्ताओं ने प्रदेशों के विस्तृत विवरण तैयार करने पर बल दिया, जिसमें वहाँ की मिट्टी, जलवायु, जनसंख्या और संस्कृति का समग्र अध्ययन शामिल था। उनका मानना था कि इन क्षेत्रीय इकाइयों की गहरी समझ ही अंततः हमें पूरी दुनिया की जटिलताओं को सुलझाने में मदद करेगी।

116. (D) संभववाद मानव को पर्यावरण का दास मानता है।
संभववाद की विचारधारा मनुष्य को प्रकृति का दास मानने के बिल्कुल विपरीत है। यह मानव को एक सक्रिय और शक्तिशाली कारक के रूप में देखती है जो अपनी बुद्धि से संभावनाओं का चयन करता है। मनुष्य को प्रकृति का दास मानने वाली विचारधारा 'पर्यावरणीय निश्चयवाद' है। संभववाद तो मानवीय स्वतंत्रता और पर्यावरण को बदलने की उसकी क्षमता का उत्सव मनाता है, जहाँ प्रकृति केवल सलाहकार की भूमिका में होती है।

117. (C) नगर/ग्रामीण नियोजन
आवास भूगोल मानव भूगोल का वह उप-क्षेत्र है जो मानव बस्तियों के प्रकार, वितरण और संरचना का अध्ययन करता है। यह विषय सीधे तौर पर नगर और ग्रामीण नियोजन से जुड़ा है, क्योंकि बस्तियों के विकास के लिए उचित योजना और प्रबंधन की आवश्यकता होती है। इसमें भूमि उपयोग, बुनियादी ढांचे और भविष्य के विस्तार की रणनीतियों का भौगोलिक विश्लेषण किया जाता है, जो सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

118. (B) वृहत् सामान्यीकरण और वैश्विक सिद्धांतों की प्रयोज्यता पर
उत्तर-आधुनिकवाद ने भूगोल में प्रचलित उन वृहत् सिद्धांतों को चुनौती दी जो यह दावा करते थे कि वे पूरी दुनिया के लिए एक समान नियम बना सकते हैं। इस विचारधारा ने तर्क दिया कि दुनिया बहुत विविधतापूर्ण है और किसी एक सिद्धांत को हर जगह लागू नहीं किया जा सकता। इसने स्थानीय संस्कृतियों, विशिष्ट ऐतिहासिक परिस्थितियों और समुदायों की अपनी आवाज को सुनने पर जोर दिया, जिससे भूगोल का अध्ययन अधिक समावेशी और यथार्थवादी बन गया।

119. (B) केवल 1, 2, 3, 4
मानव भूगोल का क्रमिक विकास अन्वेषण से शुरू होकर प्रादेशिक विश्लेषण, क्षेत्रीय विभेदन और स्थानिक संगठन तक पहुँचा है। 1970 का दशक वास्तव में मात्रात्मक क्रांति के अंत और उसके विरुद्ध मानवतावादी विचारधाराओं के उदय का समय था। अतः यह कहना कि 1970 के दशक में मात्रात्मक क्रांति अपने चरम पर थी, ऐतिहासिक रूप से सही नहीं है। मात्रात्मकता का चरम दौर 1950 और 1960 के दशक का था।

120. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
मानव भूगोल का निरंतर विस्तार और विकास ज्ञान की नई शाखाओं के उद्भव के साथ जुड़ा हुआ है। जैसे-जैसे मानव समाज जटिल होता गया, भौगोलिक अध्ययन की आवश्यकताएं भी बढ़ीं, जिससे चिकित्सा, पर्यटन और लिंग भूगोल जैसे नए उप-क्षेत्र विकसित हुए। अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ बढ़ते अंतरापृष्ठ ने मानव भूगोल को नई शोध विधियां और दृष्टिकोण प्रदान किए हैं, जिससे यह विषय वर्तमान समय की चुनौतियों को समझने में अधिक सक्षम हो गया है।

121. (C) आदिम युग में अग्नि की खोज में
मानव इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण खोजों में से एक, अग्नि की खोज, घर्षण और ऊष्मा के भौतिक नियमों की प्रारंभिक समझ पर आधारित थी। आदिम मनुष्य ने जब पत्थरों को आपस में रगड़ा, तो उसने अनजाने में ही भौतिकी के सिद्धांतों का प्रयोग किया। यह उदाहरण दर्शाता है कि तकनीक चाहे कितनी भी बुनियादी क्यों न हो, उसका मूल आधार हमेशा प्रकृति के नियमों की समझ में ही निहित होता है, जो मानवीय विकास की पहली सीढ़ी है।

122. (A) मरुस्थल में सिंचाई नहरों का निर्माण करना।
मरुस्थल में सिंचाई नहरों का निर्माण प्रकृति के मानवीकरण का एक प्रत्यक्ष और सशक्त उदाहरण है। यहाँ मनुष्य ने अपनी इंजीनियरिंग और तकनीक का उपयोग करके एक शुष्क और प्रतिकूल वातावरण को कृषि योग्य भूमि में बदल दिया है। यह कार्य प्रकृति द्वारा थोपी गई पानी की कमी की सीमा को तोड़ने की मानवीय क्षमता को दर्शाता है। यह स्पष्ट करता है कि मनुष्य केवल परिस्थितियों का सामना नहीं करता, बल्कि उन्हें अपनी सुविधा के अनुसार बदल भी सकता है।

123. (D) जब प्रकृति रूपांतरण की स्वीकृति दे तो विकास के प्रयत्नों में आगे बढ़ना।
'रुको और जाओ निश्चयवाद' में हरी बत्ती का प्रतीकात्मक अर्थ यह है कि मनुष्य को विकास के लिए तभी आगे बढ़ना चाहिए जब परिस्थितियाँ अनुकूल हों और प्रकृति से कोई चेतावनी न मिल रही हो। यह एक संतुलित विकास की अवधारणा है जहाँ मनुष्य प्रकृति का स्वामी बनने के बजाय उसका सहभागी बनता है। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि हमारी प्रगति

दीर्घकालिक हो और वह पर्यावरण के विनाश की कीमत पर न आए।

124. (B) पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश
पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश संभववाद के प्रमुख प्रणेता थे और उन्होंने मानव भूगोल को एक सक्रिय विषय के रुप में स्थापित किया। उन्होंने तर्क दिया कि प्रकृति मनुष्य के सामने केवल विकल्प रखती है और यह मनुष्य की बुद्धि पर निर्भर करता है कि वह किसका चुनाव करता है। उनकी रचनाओं ने भूगोल में मानवीय कौशल, संस्कृति और जीवन पद्धति (genre de vie) के महत्व को रेखांकित किया, जिससे भूगोलवेत्ताओं का ध्यान भौतिक नियंत्रण से हटकर मानवीय पहल की ओर गया।

125. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
मानव भूगोल के विभिन्न उपागमों की अपनी विशिष्ट विशेषताएं हैं। अन्वेषण युग विवरणों पर आधारित था, जबकि प्रादेशिक विश्लेषण प्रदेश के सभी पक्षों के अध्ययन पर केंद्रित था। क्षेत्रीय विभेदन का लक्ष्य प्रदेश की विलक्षणता खोजना था, और स्थानिक संगठन ने भौतिकी के सांख्यिकीय नियमों को भूगोल में लागू किया। ये सभी उपागम विषय के क्रमिक बौद्धिक विकास को दर्शाते हैं और बताते हैं कि कैसे शोध की पद्धतियाँ समय के साथ अधिक परिष्कृत होती गईं।

126. (C) 1970 का दशक
1970 का दशक मानव भूगोल के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था क्योंकि इसी दौरान मानवतावादी, आमूलवादी और व्यवहारवादी जैसी तीन प्रमुख दार्शनिक विचारधाराएँ उभरीं। इन विचारधाराओं ने भूगोल को केवल मानचित्रों और आंकड़ों तक सीमित न रखकर उसे मानवीय भावनाओं, सामाजिक न्याय और व्यक्तिगत व्यवहार के प्रति संवेदनशील बनाया। यह दौर भूगोल के सामाजिक और दार्शनिक पक्ष को मजबूत करने और उसे समाज की वास्तविक समस्याओं के करीब लाने का था।

127. (A) प्रकृति का मानवीकरण / संभववाद
यह कथन संभववाद की मूल भावना को व्यक्त करता है, जहाँ मनुष्य प्रकृति द्वारा दिए गए संसाधनों का उपयोग करके उसमें बड़े पैमाने पर परिवर्तन लाता है। प्रकृति का मानवीकरण यह दर्शाता है कि मानवीय क्रियाओं ने पृथ्वी का चेहरा बदल दिया है, लेकिन साथ ही यह भी स्वीकार करता है कि मनुष्य का अपना जीवन भी इन पर्यावरणीय बदलावों से प्रभावित होता है। यह एक द्विमार्गी संबंध है जहाँ मानव और प्रकृति एक-दूसरे को निरंतर आकार देते हैं।

128. (D) सभी 1, 2, 3 और 4
मानव भूगोल की प्रकृति पूर्णतः अंतर-विषयक है और यह सामाजिक विज्ञान के विभिन्न अनुशासनों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखता है। सामाजिक भूगोल समाजशास्त्र और मनोविज्ञान से जुड़ा है, जबकि आर्थिक भूगोल अर्थशास्त्र और कृषि विज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित है। ज्ञान के निरंतर विस्तार के कारण नए उप-क्षेत्रों का जन्म होता है, जो भूगोल को मानवीय जीवन के हर पहलू का विश्लेषण करने के लिए अधिक सक्षम और प्रासंगिक बनाते हैं।

129. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
स्थानिक संगठन के दौर में भूगोलवेत्ता मानवीय क्रियाओं के पीछे के छिपे हुए प्रतिरूपों को उजागर करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने कंप्यूटर और जटिल सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया ताकि वे डेटा का सूक्ष्म विश्लेषण कर सकें। उनका मुख्य उद्देश्य यह पहचानना था कि शहर, सड़कें और बाजार कहाँ और क्यों स्थित हैं। सांख्यिकी के प्रयोग ने इन प्रतिरुपों को अधिक वैज्ञानिक और सटीक ढंग से समझने और मानचित्रों पर उतारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

130. (A) मानव समाजों और धरातल के बीच के जटिल और एकीकृत संबंधों का अध्ययन।
रैटजेल के अनुसार 'संश्लेषित अध्ययन' का अर्थ है कि मानव और पृथ्वी के बीच का संबंध केवल जोड़ मात्र नहीं है, बल्कि यह एक जटिल और एकीकृत अंतःक्रिया है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हमें मानवीय गतिविधियों को उनके भौगोलिक आधार से अलग करके नहीं देखना चाहिए। संश्लेषण का यह दृष्टिकोण भूगोलवेत्ताओं को मानवीय जीवन और प्राकृतिक वातावरण के बीच के गहरे और अटूट धागों को समझने में मदद करता है, जो विषय का मूल आधार है।

131. (C) किसी क्षेत्र के विकास पर ऐतिहासिक घटनाओं और सामाजिक संरचनाओं के प्रभाव का अध्ययन करना।
ऐतिहासिक-संस्थागत उपागम इस बात पर केंद्रित है कि वर्तमान भौगोलिक स्वरुप के पीछे कौन सी ऐतिहासिक प्रक्रियाएं और सामाजिक संस्थाएं रही हैं। यह केवल आंकड़ों को नहीं देखता, बल्कि उन कानूनों, नीतियों और सामाजिक व्यवस्थाओं का विश्लेषण करता है जिन्होंने समय के साथ किसी क्षेत्र के विकास को प्रभावित किया है। यह दृष्टिकोण भूगोल को इतिहास और राजनीति विज्ञान के करीब लाता है और मानवीय परिघटनाओं की एक गहरी और बहुआयामी व्याख्या प्रदान करता है।

132. (A) 1, 3, 2, 4
भौगोलिक चिंतन का विकास पर्यावरणीय निश्चयवाद से शुरु हुआ, जिसमें प्रकृति को सर्वोपरि माना गया। इसके बाद संभववाद ने मानवीय पहल को महत्व दिया। फिर नवनिश्चयवाद आया, जिसने दोनों के बीच संतुलन स्थापित किया। सबसे आधुनिक काल में उत्तर-आधुनिकवाद का उदय हुआ, जिसने सार्वभौमिक सिद्धांतों को नकार कर स्थानीय विविधता पर जोर दिया। यह क्रम मानव की प्रकृति पर बढ़ती पकड़ और उसके प्रति बदलते हुए दार्शनिक दृष्टिकोण का प्रतिबिंब है।

133. (C) पर्यटन और यात्रा प्रबंधन
पर्यटन भूगोल आर्थिक और सामाजिक भूगोल का एक उभरता हुआ उप-क्षेत्र है जो पर्यटन स्थलों के वितरण, पर्यटकों के प्रवाह और पर्यटन उद्योग के स्थानिक प्रभावों का अध्ययन करता है। यह विषय सीधे तौर पर पर्यटन और यात्रा प्रबंधन के सिद्धांतों से जुड़ा है। इसमें प्राकृतिक और सांस्कृतिक आकर्षणों का भौगोलिक विश्लेषण किया जाता है, जो पर्यटन क्षेत्र के

नियोजित विकास और पर्यावरण के संरक्षण के बीच संतुलन बनाने में मदद करता है।

134. (B) उत्तर उपनिवेश युग
उत्तर उपनिवेश युग में भूगोलवेत्ताओं ने नए क्षेत्रों की केवल खोज करने के बजाय उनके गहन विश्लेषण पर ध्यान केंद्रित किया। इस दौरान प्रादेशिक विश्लेषण का महत्व बढ़ा, जिसका उद्देश्य किसी प्रदेश के सभी भौतिक और मानवीय तत्वों के आपसी संबंधों को विस्तार से समझना था। यह युग भौगोलिक ज्ञान को अधिक व्यवस्थित और वर्णनात्मक बनाने का था, जहाँ प्रत्येक प्रदेश को पृथ्वी की एक महत्वपूर्ण इकाई के रुप में देखा जाता था।

135. (D) सभी 1, 2, 3, 4, 5
मानव भूगोल की विभिन्न परिभाषाएं और अवधारणाएं विषय के विकास के विभिन्न आयामों को दर्शाती हैं। सेंपल ने गत्यात्मकता पर, ब्लाश ने नवीन अंतर्संबंधों पर और ग्रिफिथ टेलर ने नवनिश्चयवाद पर जोर दिया। संभववाद और पर्यावरणीय निश्चयवाद क्रमशः मानवीय चयन और प्राकृतिक नियंत्रण की दो चरम सीमाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये सभी विचार मिलकर भूगोल को एक समृद्ध और विविधतापूर्ण विषय बनाते हैं, जो मानव-पर्यावरण संबंधों की व्याख्या करने में सक्षम है।

136. (A) प्रकृति और मानव के बीच पूर्ण सामंजस्य था, जिसमें मानव प्रकृति के अधीन था।
मानव के प्राकृतीकरण की अवस्था में मनुष्य और प्रकृति के बीच का संबंध एकतरफा था। मनुष्य प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर रहता था क्योंकि उसके पास तकनीक का अभाव था। इस स्थिति में, प्रकृति एक आदेश देने वाली शक्ति थी और मनुष्य एक आज्ञाकारी अनुयायी। यह सामंजस्य मजबूरी पर आधारित था, जहाँ मानवीय गतिविधियां पूरी तरह से प्राकृतिक चक्रों और सीमाओं के भीतर ही सीमित रहती थीं, जो आदिम समाजों की मुख्य पहचान है।

137. (C) मृदाएँ
मृदा भौतिक पर्यावरण का एक आधारभूत तत्व है, जिसका निर्माण चट्टानों के अपक्षय और जैविक प्रक्रियाओं के माध्यम से हजारों वर्षों में होता है। इसके विपरीत, खेत, नगर और उद्योग मानवीय क्रियाओं के परिणाम हैं जो सांस्कृतिक भू-दृश्य बनाते हैं। मृदा वह प्राकृतिक आधार प्रदान करती है जिस पर मानवीय कृषि और अन्य गतिविधियां निर्भर करती हैं। अतः मृदा को भौतिक भूगोल के अंतर्गत अध्ययन किया जाता है, न कि मानवीय निर्मिति के रूप में।

138. (C) P-3, Q-1, R-2, S-4
व्यवहारवादी विचारधारा प्रत्यक्ष अनुभव को प्राथमिकता देती है, जबकि आमूलवादी विचारधारा पूँजीवाद के विकास को सामाजिक समस्याओं की जड़ मानती है। कल्याणपरक विचारधारा का मुख्य लक्ष्य सामाजिक कल्याण की स्थिति का विश्लेषण करना है, और उत्तर-आधुनिकवाद वैश्विक सिद्धांतों की सार्वभौमिकता पर प्रश्न उठाता है। यह मिलान स्पष्ट करता है कि मानव भूगोल के भीतर विभिन्न दार्शनिक प्रवृत्तियाँ कैसे अलग-अलग दृष्टिकोणों से मानवीय और सामाजिक यथार्थ को समझने का प्रयास करती हैं।

139. (D) प्रकृति का ज्ञान प्रौद्योगिकी को विकसित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है।
तीव्र गति के यानों का विकास वायुगतिकी के वैज्ञानिक नियमों की समझ के बिना संभव नहीं था। यह उदाहरण सिद्ध करता है कि प्रौद्योगिकी वास्तव में प्रकृति के नियमों का ही व्यावहारिक अनुप्रयोग है। हम प्रकृति पर विजय तभी प्राप्त कर सकते हैं जब हम उसके सिद्धांतों को गहराई से समझें। अतः ज्ञान और तकनीक एक-दूसरे के पूरक हैं, और प्रकृति का ज्ञान ही वह शक्ति है जो मानव को भौतिक बाधाओं को पार करने में मदद करती है।

140. (B) यह द्वैधता पर आश्रित है और यह द्वैधता कभी हल नहीं हो सकती।
भूगोल में द्वैधता एक लंबी ऐतिहासिक बहस रही है, लेकिन आधुनिक भौगोलिक चिंतन यह मानता है कि यह कोई स्थायी समस्या नहीं है। प्रकृति और मानव के बीच के संबंधों को अब द्वैधता के बजाय एक एकीकृत इकाई के रूप में देखा जाता है। यह कहना गलत है कि यह द्वैधता कभी हल नहीं हो सकती, क्योंकि वर्तमान शोध पद्धतियां दोनों के बीच के अटूट अंतर्संबंधों को ही अपना मुख्य आधार बनाती हैं, जिससे यह विवाद धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है।

141. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
मानव भूगोल और भौतिक भूगोल एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। भौतिक भूगोल वह धरातलीय मंच और संसाधन प्रदान करता है जिस पर मानवीय गतिविधियां संपन्न होती हैं। मनुष्य इन्हीं प्राकृतिक परिस्थितियों के भीतर अपने घर, गाँव और उद्योग बनाकर एक सांस्कृतिक भू-दृश्य तैयार करता है। अतः मानवीय परिघटनाओं को समझने के लिए उस भौतिक आधार का ज्ञान होना अनिवार्य है जिसके भीतर वे क्रियाएं विकसित और संचालित होती हैं।

142. (D) निर्वाचन भूगोल और सैन्य भूगोल
निर्वाचन भूगोल और सैन्य भूगोल राजनीतिक भूगोल के दो महत्वपूर्ण उप-क्षेत्र हैं। निर्वाचन भूगोल चुनावों के स्थानिक प्रतिरुपों और मतदान व्यवहार का विश्लेषण करता है, जबकि सैन्य भूगोल युद्ध, सैन्य रणनीतियों और सीमाओं के भौगोलिक पहलुओं का अध्ययन करता है। अन्य विकल्प जैसे संसाधन और कृषि भूगोल आर्थिक भूगोल की शाखाएं हैं, और सांस्कृतिक भूगोल सामाजिक भूगोल का अंग है। यह वर्गीकरण राजनीतिक प्रक्रियाओं के भौगोलिक आयामों को स्पष्ट करता है।

143. (A) अन्वेषण और विवरण
अन्वेषण और विवरण के काल में भूगोल का मुख्य उद्देश्य नई खोजी गई जमीनों के बारे में अधिक से अधिक जानकारी एकत्र करना था। भूगोलवेत्ताओं ने इन प्रदेशों की जलवायु, वनस्पति, लोग और संसाधनों के विस्तृत 'विश्वज्ञानकोशीय विवरण'

तैयार किए। यह उपागम वर्णनात्मक प्रकृति का था और इसका उद्देश्य विश्लेषण के बजाय केवल सूचनाओं का संग्रह करना था, जो भविष्य के अधिक जटिल भौगोलिक शोधों के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुआ।

144. (C) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।
भूगोलवेत्ता अक्सर अमूर्त प्राकृतिक और राजनीतिक इकाइयों को समझाने के लिए मानवीय शरीर के अंगों का उदाहरण देते हैं। जैसे जर्मन भूगोलवेत्ता राज्य को एक 'जीवित जीव' के रूप में देखते हैं जिसकी अपनी जरूरतें और विकास होता है। इसी प्रकार 'तूफान की आँख' या 'सड़कों की धमनियां' जैसे शब्दों का प्रयोग भौगोलिक परिघटनाओं को मानवीय संवेदनाओं के करीब लाता है। यह रूपक पद्धति भूगोल को अधिक जीवंत और समझने में आसान बनाती है।

145. (D) सभी 1, 2, 3 और 4
मानव भूगोल के विभिन्न उपागमों ने विषय को समृद्ध करने में अलग-अलग भूमिकाएँ निभाई हैं। प्रादेशिक विश्लेषण ने समग्रता पर बल दिया, क्षेत्रीय विभेदन ने विशिष्टता को पहचाना, स्थानिक संगठन ने वैज्ञानिक सांख्यिकी का प्रयोग किया और अन्वेषण ने भौगोलिक सीमाओं का विस्तार किया। ये चारों बिंदु भूगोल के विकास के विभिन्न मील के पत्थर हैं जो बताते हैं कि विषय की पद्धति और सोच समय के साथ कैसे अधिक तार्किक और विश्लेषणात्मक होती गई।

146. (A) संभववाद
पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश संभववाद की विचारधारा के सबसे बड़े समर्थकों में से एक थे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मनुष्य प्रकृति के हाथों का खिलौना नहीं है, बल्कि वह अपनी संस्कृति और तकनीक से पर्यावरण को बदलने की क्षमता रखता है। उनकी सोच ने मनुष्य को एक चयन करने वाले कारक के रूप में देखा जो प्रकृति द्वारा दी गई अनेक संभावनाओं में से अपनी जरूरतों के अनुसार सर्वश्रेष्ठ का चुनाव करने में स्वतंत्र और सक्षम है।

147. (C) विशाल नगरीय प्रसार
विशाल नगरीय प्रसार 'प्रकृति के मानवीकरण' और उच्च तकनीकी विकास का परिणाम है, न कि मानव के प्राकृतीकरण का। मानव के प्राकृतीकरण की मुख्य विशेषताएं निम्न तकनीकी स्तर, आदिम समाज और प्रकृति के आदेशों के प्रति पूर्ण समर्पण हैं। शहर बसाना और उनका विस्तार करना मानवीय शक्ति और संसाधनों के हेरफेर की क्षमता को दर्शाता है, जो प्रकृति पर मानव के बढ़ते प्रभाव और उसके द्वारा किए गए रुपांतरण का स्पष्ट प्रमाण है।

148. (D) लोगों के सामाजिक कल्याण के पक्ष जैसे आवास, स्वास्थ्य और शिक्षा।
कल्याणपरक या मानवतावादी विचारधारा ने भूगोल के केंद्र में 'मानव' को रखा। इसका मुख्य सरोकार यह था कि भौगोलिक अध्ययन समाज के लिए उपयोगी होना चाहिए। इसने केवल स्थानों के मानचित्र बनाने के बजाय इस बात का विश्लेषण किया कि लोगों को बुनियादी सुविधाएं जैसे अच्छे घर, स्वास्थ्य सेवाएं और शिक्षा समान रूप से मिल रही हैं या नहीं। यह विचारधारा सामाजिक न्याय की दिशा में एक महत्वपूर्ण भौगोलिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है।

149. (C) प्रकृति और मानव के बीच कोई वैध द्वैधता नहीं है क्योंकि वे अविभाज्य हैं।
भूगोल में द्वैतवाद पर वर्षों की चर्चा के बाद यह निष्कर्ष निकला कि प्रकृति और मानव को अलग-अलग श्रेणियों में नहीं बांटा जा सकता। वे एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। मानवीय क्रियाएं प्राकृतिक पर्यावरण के बिना संभव नहीं हैं और आज का प्राकृतिक पर्यावरण मानवीय हस्तक्षेप से अछूता नहीं है। अतः भूगोल का अध्ययन एक समग्र दृष्टिकोण से ही किया जाना चाहिए जहाँ दोनों के बीच के संतुलन और अंतर्संबंधों को प्रमुखता दी जाए।

150. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
बेंदा की जीवन शैली जहाँ प्रकृति सर्वोपरि है, मानव के प्राकृतीकरण को दर्शाती है। कैरी की आधुनिक शैली तकनीक के माध्यम से प्रकृति के मानवीकरण का उदाहरण है। यातायात बत्तियों का रूपक ग्रिफिथ टेलर के नवनिश्चयवाद से जुड़ा है, और स्वास्थ्य विश्रामस्थलों का निर्माण संभववाद की मानवीय सक्रियता को प्रदर्शित करता है। ये उदाहरण मानव और पर्यावरण के बीच के संबंधों की अलग-अलग गहराइयों और ऐतिहासिक चरणों को स्पष्ट करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

151. (B) फ्रांस
संभववाद की विचारधारा का विकास मुख्य रूप से फ्रांसीसी भूगोलवेत्ताओं के योगदान से हुआ था। पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश इस विचारधारा के प्रमुख प्रतिपादक माने जाते हैं। उन्होंने यह तर्क दिया कि प्रकृति मानव समाज के लिए केवल अवसर या संभावनाएँ प्रदान करती है। मनुष्य अपनी तकनीकी और सांस्कृतिक क्षमताओं का उपयोग करके इन संभावनाओं का चुनाव करने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र होता है।

152. (A) फ्रांसीसी विद्वान पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश
'जीवन की शैलियों' की महत्वपूर्ण संकल्पना फ्रांसीसी भूगोलवेत्ता पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश द्वारा प्रतिपादित की गई थी। यह अवधारणा दर्शाती है कि कैसे विभिन्न मानव समूह एक ही भौतिक वातावरण में अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत के आधार पर अलग-अलग जीवन-पद्धतियाँ विकसित करते हैं। यह मानव की सक्रिय भूमिका और निर्णय लेने की क्षमता को रेखांकित करती है, जिससे वे अपने परिवेश को नया स्वरूप देते हैं।

153. (C) पर्यावरणीय निश्चयवाद
संभववाद की विचारधारा बीसवीं सदी की शुरुआत में जर्मन भूगोलवेत्ताओं द्वारा प्रतिपादित पर्यावरणीय निश्चयवाद की प्रतिक्रिया के रूप में उभरी थी। जहाँ निश्चयवाद प्रकृति को सर्वोपरि मानता था, वहीं संभववाद ने मानव की रचनात्मकता और स्वतंत्रता पर बल दिया। यह दृष्टिकोण मानता है कि पर्यावरण केवल संभावनाएँ प्रस्तुत करता है, जबकि मानव

अपनी आवश्यकतानुसार चुनाव करता है। इसने मानव-पर्यावरण संबंधों की व्याख्या को नया आयाम दिया।

154. (D) मानव पर्यावरण द्वारा प्रदत्त विभिन्न संभावनाओं में से चुनाव करने के लिए स्वतंत्र है।
संभववाद के अनुसार, मनुष्य और पर्यावरण के बीच का संबंध अत्यंत गतिशील और लचीला है। इस विचारधारा के तहत भौतिक पर्यावरण को केवल एक सलाहकार माना जाता है जो विभिन्न संभावनाएँ प्रदान करता है। मनुष्य अपनी संस्कृति, तकनीक और सामाजिक संगठन के आधार पर इन उपलब्ध विकल्पों में से चुनाव करने के लिए स्वतंत्र है। यह मानव को पर्यावरण का सक्रिय कारक मानता है जो अपने परिवेश को संशोधित करता है।

155. (C) मानव की विशेष रचनात्मकता और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता पर
संभववाद की विचारधारा मुख्य रूप से मानव की रचनात्मकता और उसकी स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता पर अत्यधिक बल देती है। यह इस विचार को खारिज करती है कि मनुष्य प्रकृति का एक निष्क्रिय उत्पाद है। इसके बजाय, यह तर्क दिया जाता है कि मानव अपने बुद्धि-कौशल से प्राकृतिक सीमाओं को पार कर सकता है। यह दृष्टिकोण मानवीय कौशल को पर्यावरण के साथ अंतःक्रिया में निर्णायक भूमिका प्रदान करता है।

156. (B) भौतिक पर्यावरण मानव समाज के सर्वांगीण विकास को प्रमुख रूप से निर्धारित करता है।
पर्यावरणीय निश्चयवाद एक ऐसा भौगोलिक दृष्टिकोण है जो मानता है कि भौतिक पर्यावरण ही मानवीय क्रियाओं का मुख्य निर्धारक है। इसके अनुसार, किसी समाज की संस्कृति, आर्थिक विकास और सामाजिक संरचना सीधे तौर पर वहां की जलवायु और स्थलाकृति से प्रभावित होती है। यह विचारधारा मानव को प्रकृति का एक उत्पाद मानती है, जहाँ प्राकृतिक शक्तियाँ मानव जीवन के हर पहलू को नियंत्रित और निर्देशित करती हैं।

157. (D) पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश
पॉल विडाल-डी-ला ब्लाश संभववाद की विचारधारा के प्रमुख प्रतिपादक थे, न कि पर्यावरणीय निश्चयवाद के। जहाँ फ्रेडरिक रैटजेल और एलेन चर्चिल सेंपल जैसे विद्वानों ने प्रकृति की सर्वोच्चता पर बल दिया, वहीं विडाल ने मानव की चुनाव करने की स्वतंत्रता का समर्थन किया। उन्होंने तर्क दिया कि पर्यावरण केवल अवसर प्रदान करता है। इसलिए, उन्हें निश्चयवाद के समर्थकों की श्रेणी में शामिल नहीं किया जा सकता है।

158. (A) पर्यावरणीय निश्चयवाद
एलेन चर्चिल सेंपल का प्रसिद्ध कथन कि "मनुष्य पृथ्वी की सतह का उत्पाद है", पर्यावरणीय निश्चयवाद की विचारधारा को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। यह विचार व्यक्त करता है कि मानवीय स्वभाव, व्यवसाय और यहाँ तक कि सरकारी स्वरूप भी प्राकृतिक संसाधनों और जलवायु द्वारा आकार लेते हैं। सेंपल के अनुसार, पृथ्वी ने ही मनुष्य को भोजन, आश्रय और उसके विकास के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ प्रदान की हैं।

159. (C) सदैव परिश्रमी और अन्य पर शासन करने में सक्षम
पर्यावरणीय निश्चयवाद के समर्थकों का यह मानना था कि किसी क्षेत्र की जलवायु वहां के निवासियों के चरित्र और क्षमता को सीधे प्रभावित करती है। उनके अनुसार, समशीतोष्ण क्षेत्रों की अनुकूल जलवायु वहां के लोगों को अधिक परिश्रमी, नवीन और शासन करने में सक्षम बनाती है। इसके विपरीत, उन्होंने उष्णकटिबंधीय जलवायु को आलस्य का कारक माना था। यह तर्क मानव विकास में भौगोलिक परिस्थितियों की निर्णायक भूमिका पर आधारित था।

160. (A) यह विचारधारा अत्यधिक सरलीकृत थी और मानव की सक्रिय भूमिका को कम आंकती थी।
पर्यावरणीय निश्चयवाद की आलोचना मुख्य रूप से इसके अति-सरलीकृत दृष्टिकोण के कारण की गई थी। आलोचकों का मानना था कि यह विचारधारा मानव की सक्रिय भूमिका और उसकी तकनीकी क्षमताओं को बहुत कम आंकती है। इसने मानव को केवल प्रकृति के हाथों की कठपुतली के रूप में प्रस्तुत किया, जबकि वास्तविकता में मनुष्य अपने ज्ञान और कौशल से पर्यावरण में बड़े बदलाव करने में सक्षम होता है।

161. (D) ग्रिफ़िथ टेलर
नवनिश्चयवाद की महत्वपूर्ण संकल्पना को ऑस्ट्रेलियाई भूगोलवेत्ता ग्रिफ़िथ टेलर ने बीसवीं सदी के मध्य में प्रस्तुत किया था। उन्होंने इसे 'रुको और जाओ निश्चयवाद' के नाम से भी संबोधित किया। यह विचारधारा पर्यावरणीय निश्चयवाद और संभववाद के दो चरम विचारों के बीच एक मध्य मार्ग स्थापित करती है। टेलर ने इस बात पर जोर दिया कि मनुष्य को विकास करते समय प्राकृतिक सीमाओं का सम्मान करना चाहिए।

162. (B) एक ट्रैफिक कंट्रोलर से
नवनिश्चयवाद के अंतर्गत ग्रिफ़िथ टेलर ने मानव की भूमिका की तुलना एक बड़े शहर के ट्रैफिक कंट्रोलर से की है। उनके अनुसार, जैसे ट्रैफिक कंट्रोलर यातायात की गति को नियंत्रित कर सकता है लेकिन उसकी दिशा को नहीं, वैसे ही मनुष्य प्रकृति द्वारा निर्धारित विकास की दर को बदल सकता है। यह उपमा दर्शाती है कि मनुष्य प्रकृति का स्वामी नहीं है, बल्कि उसके नियमों के भीतर कार्य करता है।

163. (C) पर्यावरणीय निश्चयवाद और संभववाद
नवनिश्चयवाद की विचारधारा पर्यावरणीय निश्चयवाद और संभववाद के बीच एक संतुलित मध्य मार्ग प्रस्तुत करती है। जहाँ निश्चयवाद प्रकृति की पूर्ण सर्वोच्चता मानता है और संभववाद मानव की असीमित स्वतंत्रता का दावा करता है, वहीं नवनिश्चयवाद इन दोनों के बीच समन्वय स्थापित करता है। यह स्वीकार करता है कि मनुष्य के पास विकल्प हैं, लेकिन उसे प्राकृतिक सीमाओं और पर्यावरण के संरक्षण का भी ध्यान रखना होगा।

164. (D) गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं का निरंतर सामना करना पड़ता है।
नवनिश्चयवाद के अनुसार, यदि मनुष्य विकास की अंधी दौड़ में प्राकृतिक सीमाओं और नियमों का उल्लंघन करता है, तो उसे गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसमें मृदा अपरदन, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी स्थितियां शामिल हैं। ग्रिफ़िथ टेलर का मानना था कि प्रकृति का तिरस्कार करना अंततः मानव समाज के लिए हानिकारक सिद्ध होता है, इसलिए विकास और संरक्षण में संतुलन आवश्यक है।

165. (A) सतत विकास
नवनिश्चयवाद की विचारधारा को आधुनिक 'सतत विकास' की अवधारणा का अग्रदूत माना जा सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह आर्थिक प्रगति और पर्यावरणीय संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करने पर जोर देती है। यह दृष्टिकोण सिखाता है कि विकास की संभावनाओं को तलाशते समय प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन नहीं करना चाहिए। इस प्रकार, यह भावी पीढ़ियों के लिए पर्यावरण को सुरक्षित रखने के विचार का समर्थन करता है।

166. (B) मात्रात्मक क्रांति
व्यवहारवादी भूगोल का उदय 1960 और 1970 के दशक के दौरान मात्रात्मक क्रांति की प्रतिक्रिया के रूप में हुआ था। मात्रात्मक क्रांति ने स्थानिक पैटर्न के विश्लेषण के लिए सांख्यिकीय मॉडलों पर जोर दिया, लेकिन मानवीय संवेदनाओं की उपेक्षा की। इसके विपरीत, व्यवहारवादी भूगोल ने मानव व्यवहार के पीछे की मनोवैज्ञानिक और संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को समझने पर ध्यान केंद्रित किया, जिससे भूगोल में मानवीय दृष्टिकोण को अधिक महत्व मिला।

167. (B) अनुभूत पर्यावरण पर
व्यवहारवादी भूगोल के सिद्धांतों के अनुसार, मनुष्य के निर्णय केवल 'वस्तुनिष्ठ पर्यावरण' पर आधारित नहीं होते हैं। इसके बजाय, वे व्यक्ति के 'अनुभूत पर्यावरण' द्वारा निर्देशित होते हैं। यह अनुभूत पर्यावरण व्यक्ति के स्वयं के ज्ञान, पिछले अनुभवों, मूल्यों और विश्वासों के आधार पर निर्मित होता है। इसका अर्थ है कि एक ही स्थान को अलग-अलग व्यक्ति अपनी मानसिक सोच के अनुसार अलग-अलग रूप में देखते हैं।

168. (A) किसी व्यक्ति के मस्तिष्क में स्थान का व्यक्तिपरक आंतरिक प्रतिनिधित्व
'मानसिक मानचित्र' की अवधारणा किसी व्यक्ति के मस्तिष्क में किसी स्थान या क्षेत्र के व्यक्तिपरक और आंतरिक प्रतिनिधित्व को संदर्भित करती है। यह कोई आधिकारिक नक्शा नहीं है, बल्कि व्यक्ति की अपनी धारणाओं और अनुभवों का परिणाम होता है। ये मानचित्र हमारे दैनिक जीवन के निर्णयों, जैसे कि यात्रा के मार्ग या खरीदारी के स्थानों का चुनाव करने में अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

169. (C) 'आर्थिक मानव' की
व्यवहारवादी भूगोल ने पारंपरिक भूगोल की 'आर्थिक मानव' की अवधारणा की कड़ी आलोचना की। इस पारंपरिक विचार के अनुसार मनुष्य हमेशा आर्थिक रूप से पूरी तरह तर्कसंगत व्यवहार करता है। व्यवहारवादियों ने तर्क दिया कि वास्तविक जीवन में मानवीय निर्णय भावनाओं, सामाजिक मूल्यों और सीमित जानकारी से प्रभावित होते हैं। इसलिए, मनुष्य को केवल लाभ-हानि की गणना करने वाली मशीन के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

170. (D) निवासियों की अपने पड़ोस के प्रति व्यक्तिपरक भावनाओं और कारणों का अध्ययन
व्यवहारवादी भूगोल के अंतर्गत उन अध्ययनों को प्राथमिकता दी जाती है जो मानवीय धारणाओं और व्यक्तिपरक अनुभवों से जुड़े होते हैं। उदाहरण के लिए, किसी मोहल्ले के निवासियों की अपने पड़ोस के प्रति भावनात्मक भावनाओं और उनके कारणों का गहराई से अध्ययन करना इसी श्रेणी में आता है। यह दृष्टिकोण केवल भौतिक आंकड़ों के बजाय इस बात पर ध्यान देता है कि लोग अपने परिवेश को कैसे महसूस करते हैं।

171. (C) मानव के विविध अनुभवों, भावनाओं और निहित अर्थों को समझना
मानवतावादी भूगोल का मुख्य उद्देश्य भूगोल के अध्ययन को मानव अनुभवों, भावनाओं और मानवीय अर्थों की गहरी समझ के साथ जोड़ना है। यह दृष्टिकोण केवल आंकड़ों या स्थानिक मॉडल तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह जानना चाहता है कि मनुष्य अपने परिवेश के साथ किस प्रकार के सार्थक संबंध बनाते हैं। इसका लक्ष्य दुनिया को उसमें रहने वाले सचेत प्राणियों के दृष्टिकोण से समग्र रूप में समझना है।

172. (B) लोगों और स्थानों के बीच विकसित होने वाला भावनात्मक जुड़ाव
'टोपोफिलिया' की अवधारणा प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता यी-फू तुआन द्वारा प्रस्तुत की गई थी, जिसका शाब्दिक अर्थ 'स्थान-प्रेम' है। यह शब्द लोगों और विशिष्ट भौगोलिक स्थानों के बीच विकसित होने वाले गहरे भावनात्मक जुड़ाव को व्यक्त करता है। यह दर्शाता है कि कैसे कोई स्थान किसी व्यक्ति के लिए केवल एक भौतिक स्थल न रहकर उसकी स्मृतियों और भावनाओं का एक अभिन्न हिस्सा बन जाता है।

173. (D) मानवीय साहित्य, दृश्य कला और व्यक्तिगत वृत्तांत
मानवतावादी भूगोलवेत्ता मानव अनुभवों और भावनाओं की जटिलताओं को समझने के लिए मुख्य रूप से गुणात्मक स्रोतों का उपयोग करते हैं। इनमें मानवीय साहित्य, दृश्य कला, धार्मिक ग्रंथ और व्यक्तियों के निजी वृत्तांत या जीवन कथाएं शामिल होती हैं। ये स्रोत किसी स्थान के प्रति मानवीय दृष्टिकोण और वहां के सामाजिक-सांस्कृतिक अर्थों को उजागर करने में मदद करते हैं, जो सांख्यिकीय डेटा के माध्यम से संभव नहीं होता है।

174. (A) उसमें रहने वाले व्यक्ति के दृष्टिकोण से
मानवतावादी भूगोल दुनिया को किसी बाहरी या निष्पक्ष पर्यवेक्षक के बजाय, उसमें वास्तव में निवास करने वाले व्यक्ति के दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करता है। यह इस बात पर केंद्रित है कि मनुष्य अपने पर्यावरण को कैसे देखते हैं और

वे किसी भौतिक स्थान को एक 'घर' में कैसे बदलते हैं। यह आंतरिक दृष्टिकोण मानवीय संवेदनाओं और स्थान के प्रति उनके व्यक्तिगत लगाव को प्राथमिकता देता है।

175. (C) यी-फू तुआन
यी-फू तुआन मानवतावादी भूगोल की विचारधारा के सबसे प्रमुख प्रस्तावक और विद्वान माने जाते हैं। उन्होंने भूगोल में 'स्थान' और 'अनुभव' के महत्व को रेखांकित किया और मानव-केंद्रित दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया। उनके कार्यों ने भूगोलवेत्ताओं को यह सोचने पर मजबूर किया कि मानवीय चेतना और भावनाएं किस प्रकार भौगोलिक परिवेश को अर्थ प्रदान करती हैं, जिससे इस विषय का मानवीय पक्ष सुदृढ़ हुआ।

अध्याय 02
विश्व जनसंख्या

1. एक राष्ट्र को क्या मजबूत और महान बनाता है?
(A) स्वर्ण और खनिज संसाधन
(B) केवल स्त्रियाँ और पुरुष
(C) उन्नत प्रौद्योगिकी
(D) विशाल सैन्य शक्ति

2. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): नदी-घाटियाँ विश्व के सबसे सघन बसे हुए क्षेत्र हैं।
कारण (R): जल जीवन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारक है और यह पीने, नहाने, भोजन बनाने, फसलों तथा उद्योगों के लिए आवश्यक है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

3. यह टिप्पणी कि "एशिया में बहुत अधिक स्थानों पर कम लोग और बहुत कम स्थानों पर बहुत अधिक लोग रहते हैं", किस महाद्वीप के जनसंख्या वितरण से संबंधित है?
(A) अफ्रीका
(B) यूरोप
(C) एशिया
(D) दक्षिण अमेरिका

4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. लोग समतल मैदानों और मंद ढालों पर बसने को वरीयता देते हैं।
2. पर्वतीय क्षेत्र परिवहन-तंत्र के विकास में अवरोधक होते हैं।
3. भूमध्य सागरीय प्रदेश सुखद जलवायु के कारण आरंभिक कालों से बसे हुए हैं।
4. उपजाऊ दोमट मिट्टी वाले प्रदेशों में कम लोग निवास करते हैं।

निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) उपरोक्त सभी

5. जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करने वाला निम्नलिखित में से कौन-सा एक आर्थिक कारक नहीं है?
(A) मूल्यवान खनिज निक्षेप
(B) व्यापक नगरीकरण
(C) धार्मिक महत्त्व के स्थान
(D) तीव्र औद्योगीकरण

6. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (प्रदेश)
P. कटंगा-जांबिया पेटी
Q. कोबे-ओसाका प्रदेश
R. गंगा का मैदान
S. भूमध्य सागरीय प्रदेश

List II: (आकर्षण का कारण)
1. सघन कृषि
2. सुखद जलवायु
3. ताँबा निक्षेप
4. औद्योगिकरण

(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

7. 'जनसंख्या वितरण' शब्द का सही अर्थ क्या है?
(A) समय के साथ जनसंख्या में परिवर्तन।
(B) प्रति वर्ग किलोमीटर में व्यक्तियों की संख्या।
(C) जन्म और मृत्यु दर के बीच का अंतर।
(D) भूपृष्ठ पर लोग किस प्रकार वितरित हैं।

8. विश्व की जनसंख्या का लगभग 90 प्रतिशत इसके कितने प्रतिशत स्थलभाग में निवास करता है?
(A) 10 प्रतिशत
(B) 90 प्रतिशत
(C) 50 प्रतिशत
(D) 20 प्रतिशत

9. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. प्रतिकर्ष कारक उद्गम स्थान को कम आकर्षक बनाते हैं।
2. बेरोज़गारी एक प्रमुख प्रतिकर्ष कारक है।
3. रहन-सहन की निम्न दशाएँ लोगों को स्थान छोड़ने पर विवश करती हैं।
4. काम के बेहतर अवसर एक प्रतिकर्ष कारक है।
5. प्रतिकूल जलवायु भी एक प्रतिकर्ष कारक है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3 और 5
(B) केवल 1, 2 और 4
(C) केवल 3, 4 और 5
(D) उपरोक्त सभी

10. निम्नलिखित में से कौन-सा एक विरल जनसंख्या वाला क्षेत्र नहीं है?
(A) दक्षिण-पूर्वी एशिया
(B) अटाकामा मरुस्थल
(C) ध्रुवीय प्रदेश
(D) भूमध्यरेखीय प्रदेश

11. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): किसी देश के निवासी ही उसके वास्तविक धन होते हैं।
कारण (R): यही लोग वास्तविक संसाधन हैं जो देश के अन्य संसाधनों का उपयोग करते हैं और उसकी नीतियाँ निर्धारित करते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

12. जनसंख्या घनत्व की गणना के सही सूत्र का चयन करें।
(A) घनत्व = (जनसंख्या × क्षेत्रफल) / 100
(B) घनत्व = जनसंख्या / क्षेत्रफल
(C) घनत्व = क्षेत्रफल / जनसंख्या
(D) घनत्व = (जनसंख्या + क्षेत्रफल) / 2

13. अशोधित जन्म दर (CBR) को कैसे व्यक्त किया जाता है?
(A) प्रति हज़ार पुरुषों पर जीवित जन्मे बच्चों की संख्या।
(B) प्रति सौ स्त्रियों द्वारा जन्मे बच्चों की कुल संख्या।
(C) प्रति हज़ार स्त्रियों द्वारा जन्म दिए जीवित बच्चों के रूप में।
(D) किसी वर्ष में जन्म और मृत्यु का अंतर।

14. जनांकिकीय संक्रमण के चरणों को सही क्रम में व्यवस्थित करें:
1. प्रजननशीलता और मर्त्यता दोनों घट जाती है; जनसंख्या स्थिर हो जाती है।
2. उच्च प्रजननशीलता व उच्च मर्त्यता; जनसंख्या वृद्धि धीमी होती है।
3. प्रजननशीलता ऊँची बनी रहती है, किंतु मर्त्यता घट जाती है; जनसंख्या में तीव्र वृद्धि।

सही क्रम है:
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 3, 1
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 1, 3

15. अफ्रीका की कटंगा-जांबिया ताँबा पेटी किस कारण से जनसंख्या को आकर्षित करती है?
(A) खनिज निक्षेप
(B) सुखद जलवायु
(C) उपजाऊ मृदा
(D) राजनीतिक स्थिरता

16. जनसंख्या परिवर्तन के तीन प्रमुख घटक कौन-से हैं?
(A) जन्म दर, मृत्यु दर और जीवन प्रत्याशा
(B) जन्म, मृत्यु और प्रवास
(C) आप्रवास, उत्प्रवास और विवाह
(D) लिंग अनुपात, आयु संरचना और घनत्व

17. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (अवधारणा)
P. जनसंख्या की वृद्धि
Q. जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि
R. अशोधित जन्म दर
S. अशोधित मृत्यु दर

List II: (विवरण)
1. जन्म - मृत्यु
2. प्रति हज़ार जनसंख्या पर मृतकों की संख्या
3. दो समय अंतरालों के बीच जनसंख्या में परिवर्तन
4. प्रति हज़ार स्त्रियों पर जीवित जन्मे बच्चे

(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

18. प्रवासी जो किसी नए स्थान पर जाते हैं, वे क्या कहलाते हैं?
(A) आप्रवासी
(B) उत्प्रवासी
(C) शरणार्थी
(D) पर्यटक

19. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. जल की उपलब्धता
2. भू-आकृति
3. जलवायु
4. मृदाएँ

उपरोक्त में से कौन से भौगोलिक कारक हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

20. जनसंख्या और खाद्य आपूर्ति के संबंध में दिए गए एक प्रसिद्ध सिद्धांत (1798) के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?
(A) खाद्य आपूर्ति लोगों की संख्या की अपेक्षा अधिक तेजी से बढ़ेगी।
(B) जनसंख्या वृद्धि और खाद्य आपूर्ति में संतुलन बना रहता है।
(C) तकनीकी प्रगति हमेशा जनसंख्या वृद्धि से होने वाली समस्याओं का समाधान कर देगी।
(D) लोगों की संख्या खाद्य आपूर्ति की अपेक्षा अधिक तेजी से बढ़ेगी।

21. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): जनांकिकीय संक्रमण की अंतिम अवस्था में जनसंख्या या तो स्थिर हो जाती है या मंद गति से बढ़ती है।
कारण (R): अंतिम अवस्था में प्रजननशीलता और मर्त्यता दोनों अधिक घट जाती हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

22. किसी क्षेत्र की जनसंख्या में ऋणात्मक वृद्धि कब होती है?
(A) जब जन्म दर मृत्यु दर से काफी अधिक हो।
(B) जब जन्म दर मृत्यु दर से कम हो जाए।
(C) जब जन्म दर और मृत्यु दर पूर्णतः समान हो।
(D) जब अन्य देशों से लोग स्थायी प्रवास पर आएँ।

23. निम्नलिखित में से कौन-सा एक अपकर्ष कारक (Pull Factor) है?
(A) बेरोज़गारी
(B) रहन-सहन की निम्न दशाएँ
(C) राजनीतिक उपद्रव
(D) शांति व स्थायित्व

24. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह सिद्धांत किसी क्षेत्र की भविष्य की जनसंख्या का पूर्वानुमान लगाने में मदद करता है।
2. इसके अनुसार समाज ग्रामीण, खेतिहर अवस्था से नगरीय, औद्योगिक अवस्था में परिवर्तित होता है।
3. इस परिवर्तन के दौरान जनसंख्या उच्च जन्म-मृत्यु से निम्न जन्म-मृत्यु में परिवर्तित होती है।
4. यह परिवर्तन विभिन्न अवस्थाओं में होता है जिन्हें जनांकिकीय चक्र कहते हैं।
5. लगभग 200 वर्ष पूर्व विश्व के सभी देश इसकी प्रथम अवस्था में थे।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) केवल 1, 2, 4 और 5

25. जनसंख्या की 'वास्तविक वृद्धि' की गणना कैसे की जाती है?
(A) जन्म दर और मृत्यु दर का अंतर
(B) जन्म दर और आप्रवास का योग
(C) जन्म - मृत्यु + आप्रवास - उत्प्रवास
(D) मृत्यु दर और उत्प्रवास का योग

26. जापान का कोबे-ओसाका प्रदेश किसके कारण सघन बसा हुआ है?
(A) अनेक उद्योगों की उपस्थिति
(B) उत्तम कृषि भूमि
(C) ऐतिहासिक महत्त्व
(D) सुखद जलवायु

27. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (कारक)
P. प्रतिकर्ष कारक
Q. अपकर्ष कारक
R. भौगोलिक कारक
S. सामाजिक/सांस्कृतिक कारक

List II: (उदाहरण)
1. जल की उपलब्धता
2. धार्मिक महत्त्व
3. बेरोजगारी
4. काम के बेहतर अवसर

(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

28. जनांकिकीय संक्रमण की प्रथम अवस्था की क्या विशेषता है?
(A) निम्न प्रजननशीलता व निम्न मर्त्यता
(B) उच्च प्रजननशीलता व उच्च मर्त्यता
(C) निम्न प्रजननशीलता व उच्च मर्त्यता
(D) उच्च प्रजननशीलता व निम्न मर्त्यता

29. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) विगत 500 वर्षों में मानव जनसंख्या 10 गुना से अधिक बढ़ी है।
(B) 20वीं शताब्दी में जनसंख्या 4 गुना बढ़ी है।
(C) 5 अरब से 6 अरब तक बढ़ने में जनसंख्या को 100 वर्ष लगे।
(D) प्रतिवर्ष लगभग 8 करोड़ लोग पहले की जनसंख्या में जुड़ जाते हैं।

30. जनसंख्या परिवर्तन की गणना के लिए निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. एक क्षेत्र की कुल जनसंख्या का पता लगाना।

2. जनसंख्या को क्षेत्रफल से विभाजित करना।
3. जनसंख्या घनत्व प्राप्त करना।
4. उस क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल ज्ञात करना।

सही क्रम है:
(A) 1, 4, 2, 3
(B) 4, 1, 2, 3
(C) 1, 2, 4, 3
(D) 4, 2, 1, 3

31. विश्व के दस सर्वाधिक आबाद देशों में से कितने एशिया में अवस्थित हैं?
(A) छह
(B) चार
(C) पाँच
(D) सात

32. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): जनांकिकीय संक्रमण की द्वितीय अवस्था में जनसंख्या में होने वाला शुद्ध योग उच्च होता है।
कारण (R): इस अवस्था में स्वास्थ्य संबंधी दशाओं व स्वच्छता में सुधार के साथ मर्त्यता में कमी आती है, जबकि जन्म दर ऊँची बनी रहती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

33. 'उद्गम स्थान' वह स्थान है:
(A) जहाँ लोग आगमन करते हैं।
(B) जहाँ से लोग गमन करते हैं।
(C) जहाँ जनसंख्या स्थिर रहती है।
(D) जो प्रवास से अप्रभावित रहता है।

34. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. जनसंख्या वृद्धि हमेशा धनात्मक होती है।
2. इसे निरपेक्ष संख्या अथवा प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त किया जा सकता है।
3. यह किसी क्षेत्र की आर्थिक प्रगति का सूचक हो सकती है।
4. जनसंख्या परिवर्तन और जनसंख्या वृद्धि समान अवधारणाएँ हैं।

निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) केवल 2, 3 और 4

35. परिवार नियोजन सुविधाओं का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) केवल जन्म दर को तेज़ी से बढ़ाना
(B) केवल बाह्य प्रवास को प्रोत्साहित करना
(C) जनसंख्या सीमित करना व स्वास्थ्य सुधार
(D) क्षेत्रीय मृत्यु दर में तीव्र वृद्धि करना

36. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (जनांकिकीय अवस्था)
P. प्रथम अवस्था
Q. द्वितीय अवस्था
R. तृतीय अवस्था
S. जनांकिकीय चक्र

List II: (उदाहरण/विशेषता)
1. विकसित देश
2. जनसंख्या विस्फोट
3. वर्षा वनों के आदिवासी
4. अवस्थाओं का सामूहिक रूप

(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

37. जनांकिकीय संक्रमण की किस अवस्था में जनसंख्या वृद्धि धीमी होती है और अधिकांश लोग खेती में कार्यरत होते हैं?
(A) द्वितीय अवस्था
(B) तृतीय अवस्था
(C) प्रथम अवस्था
(D) द्वितीय और तृतीय दोनों अवस्थाओं में

38. यदि एक प्रदेश का क्षेत्रफल 100 वर्ग कि.मी. और जनसंख्या 1,50,000 है, तो जनसंख्या का घनत्व क्या होगा?
(A) 150 व्यक्ति/वर्ग कि.मी.
(B) 1500 व्यक्ति/वर्ग कि.मी.
(C) 15 व्यक्ति/वर्ग कि.मी.
(D) 15000 व्यक्ति/वर्ग कि.मी.

39. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. अपकर्ष कारक गंतव्य स्थान को आकर्षक बनाते हैं।
2. रहन-सहन की अच्छी दशाएँ एक अपकर्ष कारक है।
3. शांति व स्थायित्व लोगों को आकर्षित करते हैं।
4. प्रतिकूल जलवायु एक अपकर्ष कारक है।
5. जीवन व संपत्ति की सुरक्षा एक महत्वपूर्ण अपकर्ष कारक है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3 और 5
(B) केवल 1, 2 और 4
(C) केवल 3, 4 और 5
(D) उपरोक्त सभी

40. निम्नलिखित में से कौन-सा एक प्रतिकर्ष कारक नहीं है?
(A) शैक्षणिक सुविधाएँ
(B) स्थानीय जलाभाव

(C) बढ़ती बेरोज़गारी
(D) भीषण महामारियाँ

41. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): पर्वतीय और पहाड़ी क्षेत्र सामान्यतः विरल जनसंख्या वाले होते हैं।
कारण (R): ये क्षेत्र परिवहन-तंत्र के विकास में अवरोधक हैं और कृषिगत विकास के लिए अनुकूल नहीं होते।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

42. जनसंख्या की 'प्राकृतिक वृद्धि' से क्या तात्पर्य है?
(A) किसी क्षेत्र में जन्म और मृत्यु के अंतर से बढ़ने वाली जनसंख्या।
(B) किसी क्षेत्र में आप्रवास और उत्प्रवास के अंतर से बढ़ने वाली जनसंख्या।
(C) किसी क्षेत्र में कुल जन्मों की संख्या।
(D) किसी क्षेत्र में कुल जनसंख्या वृद्धि।

43. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. खनिज
2. नगरीकरण
3. औद्योगीकरण
4. भू-आकृति
उपरोक्त में से कौन से आर्थिक कारक हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

44. जनांकिकीय संक्रमण की अंतिम अवस्था में जनसंख्या...
(A) बहुत तीव्र गति से बढ़ती है
(B) स्थिर या मंद गति से बढ़ती है
(C) पूरी तरह विस्फोटक हो जाती है
(D) अचानक से काफी घट जाती है

45. जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत के अनुसार, एक समाज किस अवस्था से किस अवस्था की ओर उन्नति करता है?
(A) नगरीय, औद्योगिक से ग्रामीण, खेतिहर
(B) साक्षर से अशिक्षित
(C) ग्रामीण, खेतिहर से नगरीय, औद्योगिक
(D) विकसित से अविकसित

46. जनसंख्या वृद्धि से संबंधित निम्नलिखित अवधारणाओं के प्रकट होने का सही तार्किक क्रम क्या है?
1. अशोधित जन्म दर की गणना
2. अशोधित मृत्यु दर की गणना
3. प्राकृतिक वृद्धि की गणना (जन्म - मृत्यु)
4. वास्तविक वृद्धि की गणना (प्राकृतिक वृद्धि + शुद्ध प्रवास)
सही क्रम है:
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 4, 3, 2, 1

47. 'गंतव्य स्थान' (Place of Destination) का क्या अर्थ है?
(A) वह स्थान जहाँ लोग आगमन करते हैं।
(B) वह स्थान जहाँ से लोग गमन करते हैं।
(C) वह स्थान जहाँ जनसंख्या घनत्व शून्य है।
(D) वह स्थान जहाँ जनसंख्या घट रही है।

48. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (अवधारणा)
P. आप्रवास
Q. उत्प्रवास
R. उद्गम स्थान
S. गंतव्य स्थान
List II: (परिभाषा)
1. वह स्थान जहाँ से लोग गमन करते हैं
2. किसी नए स्थान पर आना
3. वह स्थान जहाँ लोग आगमन करते हैं
4. एक स्थान से बाहर चले जाना
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-4, Q-2, R-3, S-1
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

49. निम्नलिखित में से कौन-सा एक सामाजिक-सांस्कृतिक कारक है जो लोगों को आकर्षित करता है?
(A) खनिज निक्षेपों की उपस्थिति
(B) धार्मिक या सांस्कृतिक महत्त्व का स्थान
(C) समतल भू-भाग
(D) रोजगार के अवसर

50. 21वीं शताब्दी के प्रारंभ में विश्व की जनसंख्या कितनी दर्ज की गई थी?
(A) 600 करोड़ से अधिक
(B) 600 करोड़ से कम
(C) ठीक 500 करोड़
(D) 700 करोड़ से अधिक

51. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इस अवस्था के प्रारंभ में प्रजननशीलता ऊँची बनी रहती है।
2. यह समय के साथ घटती जाती है।
3. स्वास्थ्य संबंधी सुधारों से मर्त्यता में कमी आती है।

4. जन्म दर और मृत्यु दर का अंतर जनसंख्या में शुद्ध योग को दर्शाता है, जो उच्च होता है।
5. इस अवस्था में जनसंख्या वृद्धि धीमी हो जाती है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से जनांकिकीय संक्रमण की द्वितीय अवस्था के संबंध में सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3 और 4
(B) केवल 2, 3 और 5
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) उपरोक्त सभी

52. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): उपजाऊ मृदा वाले प्रदेशों में अधिक लोग निवास करते हैं।
कारण (R): उपजाऊ मृदाएँ गहन कृषि का आधार बन सकती हैं, जिससे अधिक लोगों का भरण-पोषण हो सकता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

53. जनसंख्या की 'धनात्मक वृद्धि' कब होती है?
(A) जब जन्म दर, मृत्यु दर से कम हो।
(B) जब आप्रवास, उत्प्रवास से कम हो।
(C) जब जन्म दर, मृत्यु दर से अधिक हो।
(D) जब जन्म दर और मृत्यु दर बराबर हों।

54. जनसंख्या परिवर्तन का कौन-सा घटक जनसंख्या के आकार को परिवर्तित करता है लेकिन प्राकृतिक वृद्धि का हिस्सा नहीं है?
(A) जन्म दर
(B) प्रवास
(C) मृत्यु दर
(D) आयु संरचना

55. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. प्रवास स्थायी, अस्थायी अथवा मौसमी हो सकता है।
2. प्रवास केवल गाँवों से नगरों की ओर होता है।
3. एक ही व्यक्ति एक आप्रवासी और एक उत्प्रवासी दोनों हो सकता है।
4. प्रवास से उद्गम और गंतव्य दोनों स्थानों पर जनसंख्या में परिवर्तन होता है।

निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 3 और 4
(C) केवल 2 और 4
(D) उपरोक्त सभी

56. अशोधित मृत्यु दर (CDR) की गणना का सूत्र क्या है?
(A) (किसी वर्ष विशेष में मृतकों की संख्या / उस वर्ष के मध्य की अनुमानित जनसंख्या) × 1000
(B) (किसी वर्ष विशेष में जीवित जन्म / उस वर्ष के मध्य की अनुमानित जनसंख्या) × 1000
(C) (मृतकों की संख्या / जीवित जन्मों की संख्या) × 1000
(D) (जनसंख्या वृद्धि / कुल जनसंख्या) × 1000

57. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (देश/क्षेत्र)
P. भारत
Q. नाइजीरिया
R. रूस
S. मेक्सिको

List II: (महाद्वीप)
1. यूरोप
2. उत्तरी अमेरिका
3. एशिया
4. अफ्रीका

(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

58. जनसंख्या वृद्धि से संबंधित एक प्रमुख सिद्धांत के अनुसार, जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि का क्या परिणाम होता है?
(A) अकाल, बीमारी तथा युद्ध
(B) समृद्धि और शांति
(C) संसाधनों का समान वितरण
(D) जीवन प्रत्याशा में वृद्धि

59. किस प्रकार की जलवायु मानव बसाव के लिए असुविधाजनक होती है?
(A) आर्द्र समशीतोष्ण
(B) भूमध्य सागरीय
(C) ऊष्ण मानसूनी
(D) विषम मरुस्थलीय

60. 'जनांकिकीय संक्रमण' की प्रक्रिया में होने वाले परिवर्तनों का सही क्रम चुनें:
1. समाज का ग्रामीण, खेतिहर और अशिक्षित अवस्था में होना।
2. समाज का नगरीय, औद्योगिक और साक्षर बनना।
3. जनसंख्या का उच्च जन्म और उच्च मृत्यु से निम्न जन्म व निम्न मृत्यु में परिवर्तित होना।

सही क्रम है:
(A) 1 से 2 की ओर उन्नति, जिसके परिणामस्वरूप 3 होता है।
(B) 2 से 1 की ओर उन्नति, जिसके परिणामस्वरूप 3 में उलटफेर होता है।
(C) 3 से 1 की ओर उन्नति, जिसके परिणामस्वरूप 2 होता है।
(D) 1 और 2 स्वतंत्र प्रक्रियाएं हैं जिनका 3 से कोई संबंध नहीं है।

61. निम्नलिखित में से कौन-सा जनसंख्या वितरण का प्रारूप नहीं है?
(A) सघन बसा हुआ क्षेत्र
(B) विरल जनसंख्या वाला क्षेत्र
(C) शून्य जनसंख्या वृद्धि वाला क्षेत्र
(D) मध्यम घनत्व वाला क्षेत्र

62. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): नगरीकरण जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करता है।
कारण (R): नगर रोजगार के बेहतर अवसर, शैक्षणिक व चिकित्सा सुविधाएँ तथा परिवहन के बेहतर साधन प्रस्तुत करते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

63. प्रवास को प्रभावित करने वाले कारकों के दो समूह कौन से हैं?
(A) प्रतिकर्ष और अपकर्ष कारक
(B) भौगोलिक और ऐतिहासिक कारक
(C) आंतरिक और बाहरी कारक
(D) धनात्मक और ऋणात्मक कारक

64. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. प्रजननशीलता और मर्त्यता दोनों अधिक घट जाती हैं।
2. जनसंख्या या तो स्थिर हो जाती है या मंद गति से बढ़ती है।
3. जनसंख्या नगरीय और शिक्षित हो जाती है।
4. जनसंख्या के पास तकनीकी ज्ञान होता है।
5. बड़े परिवार को परिसंपत्ति माना जाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-से जनांकिकीय संक्रमण की अंतिम अवस्था की विशेषताओं से संबंधित हैं?
(A) केवल 1, 2 और 5
(B) केवल 1, 2, 3 और 4
(C) केवल 3, 4 और 5
(D) उपरोक्त सभी

65. जनसंख्या वृद्धि की दर को किसमें व्यक्त किया जाता है?
(A) निरपेक्ष संख्या में
(B) प्रतिशत में
(C) प्रति वर्ग किलोमीटर में
(D) प्रति हजार व्यक्तियों में

66. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (जनसंख्या वृद्धि का प्रकार)
P. धनात्मक वृद्धि
Q. ऋणात्मक वृद्धि
R. प्राकृतिक वृद्धि
S. वास्तविक वृद्धि
List II: (स्थिति)
1. जन्म दर < मृत्यु दर
2. जन्म दर > मृत्यु दर
3. जन्म - मृत्यु + शुद्ध प्रवास
4. जन्म - मृत्यु
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

67. किसी स्थान की जनसंख्या में कमी को दर्शाने वाला कारक कौन सा है?
(A) गंतव्य स्थान
(B) आप्रवास
(C) उद्गम स्थान
(D) जन्म दर

68. औद्योगिक पेटियाँ बड़ी संख्या में लोगों को क्यों आकर्षित करती हैं?
(A) क्योंकि वे केवल भारी कारखानों के श्रमिकों को रोजगार प्रदान करती हैं
(B) क्योंकि वे नगरीय जीवन के मनोरंजन हेतु अनेक अवसर प्रदान करती हैं
(C) क्योंकि वहाँ की प्राकृतिक जलवायु मानव बसाव हेतु बहुत सुखद होती है
(D) क्योंकि वे अनेक प्रकार की सहायक सेवाएँ उपलब्ध कराती हैं

69. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. अशोधित जन्म दर को प्रति हज़ार स्त्रियों पर जीवित जन्मे बच्चों के रूप में व्यक्त किया जाता है।
2. मृत्यु दर जनसंख्या परिवर्तन में सक्रिय भूमिका निभाती है।
3. जनसंख्या वृद्धि केवल बढ़ती हुई जन्म दर से होती है।
4. प्रवास से जनसंख्या का आकार परिवर्तित नहीं होता है।
निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 2 और 4

70. सरकारें लोगों को विरल जनसंख्या वाले क्षेत्रों में बसने के लिए क्यों प्रोत्साहित कर सकती हैं?
(A) शहरों में भीड़ कम करने के लिए।
(B) संसाधनों का संतुलित उपयोग करने के लिए।
(C) क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए।
(D) उपरोक्त सभी कारणों से।

71. जनांकिकीय संक्रमण की प्रथम अवस्था के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) जनसंख्या वृद्धि धीमी होती है।
(B) अधिकांश लोग खेती में कार्यरत होते हैं।
(C) अधिकांश लोग अशिक्षित होते हैं।
(D) जीवन-प्रत्याशा उच्च होती है।

72. विकास की प्रक्रिया में जनांकिकीय संक्रमण के चरणों का सही क्रम क्या है?
(A) उच्च उतार-चढ़ाव → विस्तृत होती जनसंख्या → निम्न उतार-चढ़ाव
(B) निम्न उतार-चढ़ाव → उच्च उतार-चढ़ाव → विस्तृत होती जनसंख्या
(C) विस्तृत होती जनसंख्या → निम्न उतार-चढ़ाव → उच्च उतार-चढ़ाव
(D) उच्च उतार-चढ़ाव → निम्न उतार-चढ़ाव → विस्तृत होती जनसंख्या

73. विश्व के सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों में शामिल नहीं है:
(A) गंगा का मैदान
(B) जापान का कोबे-ओसाका प्रदेश
(C) हिमालय का पर्वतीय भाग
(D) अफ्रीका की कटंगा-जांबिया ताँबा पेटी

74. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): मृत्यु दर किसी क्षेत्र की जनांकिकीय संरचना, सामाजिक उन्नति और आर्थिक विकास के स्तर द्वारा प्रभावित होती है।
कारण (R): उच्च आर्थिक विकास और सामाजिक उन्नति वाले क्षेत्रों में सामान्यतः निम्न मृत्यु दर पाई जाती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) and (R) both satisfy but R is not the correct explanation.
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

75. लोग बेहतर आर्थिक और सामाजिक जीवन के लिए क्या करते हैं?
(A) स्थिर रहते हैं
(B) केवल जन्म दर बढ़ाते हैं
(C) केवल मृत्यु दर घटाते हैं
(D) प्रवास

76. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. जनसंख्या की वृद्धिः समय के दो अंतरालों के बीच जनसंख्या में परिवर्तन।
2. जनसंख्या की वृद्धि दरः जनसंख्या में परिवर्तन जो प्रतिशत में व्यक्त किया जाता है।
3. जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धिः जन्म और मृत्यु के अंतर से बढ़ने वाली जनसंख्या।
4. जनसंख्या की वास्तविक वृद्धिः जन्म – मृत्यु + आप्रवास – उत्प्रवास।
5. जनसंख्या की ऋणात्मक वृद्धिः जब जनसंख्या कम हो जाए।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 4 और 5
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) उपरोक्त सभी

77. "स्वर्ण से नहीं वरन् केवल स्त्रियों और पुरुषों से एक राष्ट्र मज़बूत और महान बनता है।" यह प्रसिद्ध विचार किस विचारक से संबंधित है?
(A) जॉर्ज बी. क्रेसी
(B) थॉमस माल्थस
(C) राल्फ वाल्डो इमरसन
(D) इनमें से कोई नहीं

78. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (कारक का प्रकार)
P. भौगोलिक कारक
Q. आर्थिक कारक
R. सामाजिक कारक
S. प्रतिकर्ष कारक
List II: (उदाहरण)
1. नगरीकरण
2. राजनीतिक अशांति
3. भू-आकृति
4. सांस्कृतिक महत्त्व
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

79. जनांकिकीय संक्रमण की किस अवस्था में महामारियों और भोजन की अनिश्चित आपूर्ति से होने वाली मृत्यु होती है?
(A) प्रथम अवस्था
(B) द्वितीय अवस्था
(C) तृतीय अवस्था
(D) किसी भी अवस्था में नहीं

80. जनसंख्या नियंत्रण के उपायों में क्या शामिल है?
(A) परिवार नियोजन सुविधाएँ
(B) प्रचार और गर्भ-निरोधक की सुगम उपलब्धता
(C) बड़े परिवारों के लिए कर-निरुत्साहक उपाय
(D) उपरोक्त सभी

81. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. स्थायी प्रवास में व्यक्ति हमेशा के लिए बस जाता है।
2. अस्थायी प्रवास कुछ समय के लिए होता है।

3. मौसमी प्रवास ऋतुओं के अनुसार होता है।
4. प्रवास हमेशा गाँव से नगर की ओर ही होता है।

निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 4
(D) उपरोक्त सभी

82. 20वीं शताब्दी में मानव जनसंख्या में कितनी वृद्धि हुई?
(A) 4 गुना
(B) 2 गुना
(C) 6 गुना
(D) 10 गुना

83. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): मनुष्य जाति अत्यधिक नम्य है और अपनी प्रजननशीलता को समायोजित करने की योग्यता रखती है।
कारण (R): जनांकिकीय संक्रमण की अंतिम अवस्था में शिक्षित और नगरीय जनसंख्या विचारपूर्वक परिवार के आकार को नियंत्रित करती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

84. 'जनांकिकीय चक्र' किसे कहते हैं?
(A) जन्म और मृत्यु दर के वार्षिक चक्रीय परिवर्तन को
(B) क्षेत्रीय जनसंख्या वृद्धि के दस वर्षीय चक्र को
(C) बाह्य प्रवास के विशिष्ट मौसमी प्रारूप को
(D) संक्रमण की विभिन्न अवस्थाओं के सामूहिक रूप को

85. प्रवास को 'स्वतःस्फूर्त प्रयास' क्यों माना जाता है?
(A) क्योंकि यह सामान्यतः पूरी तरह अनियोजित होता है
(B) क्योंकि यह सरकार द्वारा अक्सर अनिवार्य किया जाता है
(C) क्योंकि यह मनुष्य-संसाधन संतुलन का एक प्रयास है
(D) क्योंकि इसका कभी कोई ठोस आर्थिक कारण नहीं होता

86. जनसंख्या वृद्धि से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के ऐतिहासिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. जनसंख्या और खाद्य आपूर्ति से संबंधित एक प्रसिद्ध सिद्धांत का प्रकाशन (1798)।
2. 21वीं शताब्दी के प्रारंभ में विश्व जनसंख्या का 600 करोड़ से अधिक होना।
3. एक प्रमुख देश की जनसंख्या का 102.70 करोड़ (2001) से 121.02 करोड़ (2011) होना।

सही क्रम है:
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 1, 3, 2
(D) 3, 2, 1

87. यदि किसी वर्ष में एक क्षेत्र में 35,000 जीवित जन्म होते हैं और उस वर्ष के मध्य की अनुमानित जनसंख्या 10,00,000 है, तो अशोधित जन्म दर क्या होगी?
(A) 3.5
(B) 350
(C) 0.35
(D) 35

88. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (देश)
P. चीन
Q. संयुक्त राज्य अमेरिका
R. इंडोनेशिया
S. ब्राजील

List II: (जनसंख्या के आधार पर विश्व में स्थान)
1. पहला
2. तीसरा
3. चौथा
4. पाँचवाँ

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

89. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. प्रतिकर्ष कारक उद्गम स्थान को कम आकर्षक बनाते हैं।
2. अपकर्ष कारक गंतव्य स्थान को अधिक आकर्षक बनाते हैं।
3. राजनीतिक उपद्रव एक प्रतिकर्ष कारक है।
4. काम के बेहतर अवसर एक अपकर्ष कारक है।
5. प्रतिकूल जलवायु एक अपकर्ष कारक है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2, 3 और 4
(D) उपरोक्त सभी

90. विश्व के लगभग 60 प्रतिशत लोग कितने देशों में निवास करते हैं?
(A) 10 सर्वाधिक आबाद देशों में
(B) 5 सर्वाधिक आबाद देशों में
(C) 20 सर्वाधिक आबाद देशों में
(D) 50 सर्वाधिक आबाद देशों में

91. जनांकिकीय संक्रमण की कौन सी अवस्था 'जनसंख्या विस्फोट' की स्थिति से संबंधित है?

(A) प्रथम अवस्था
(B) तृतीय अवस्था
(C) संक्रमण के बाद की अवस्था
(D) द्वितीय अवस्था

92. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): औद्योगीकरण जनसंख्या के घनत्व को बढ़ाता है।
कारण (R): औद्योगिक पेटियाँ केवल कारखानों के श्रमिकों को ही नहीं बल्कि परिवहन परिचालक, दुकानदार, बैंककर्मी, डॉक्टर, अध्यापक जैसी अन्य सेवाएँ उपलब्ध कराने वालों को भी आकर्षित करती हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

93. निम्नलिखित में से कौन-सा एक प्रवास का अपकर्ष (Pull) कारक नहीं है?
(A) काम के बेहतर अवसर
(B) रहन-सहन की अच्छी दशाएँ
(C) महामारियाँ
(D) जीवन व संपत्ति की सुरक्षा

94. निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:
1. जल की उपलब्धता
2. खनिज
3. नगरीकरण
4. धार्मिक महत्त्व
इनमें से कौन सा/से कारक आर्थिक श्रेणी में आता/आते है/हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

95. विगत 500 वर्षों में मानव जनसंख्या में कितनी वृद्धि हुई है?
(A) 10 गुना से अधिक
(B) 5 गुना से कम
(C) लगभग 8 गुना
(D) 2 गुना

96. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (शब्द)
P. प्रतिकर्ष
Q. अपकर्ष
R. जनांकिकी
S. घनत्व
List II: (सम्बन्धित अवधारणा)
1. जनसंख्या का अध्ययन
2. प्रति इकाई क्षेत्र में व्यक्ति
3. जो लोगों को दूर धकेलता है
4. जो लोगों को आकर्षित करता है
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

97. जनांकिकीय संक्रमण की प्रथम अवस्था में बड़े परिवारों को 'परिसंपत्ति' क्यों माना जाता है?
(A) क्योंकि वे उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा को दर्शाते हैं
(B) क्योंकि वे कृषि श्रम में सक्रिय योगदान करते हैं
(C) क्योंकि सरकार द्वारा बड़े परिवारों को प्रोत्साहन है
(D) क्योंकि उस काल में जीवन प्रत्याशा बहुत उच्च थी

98. एक ही व्यक्ति के आप्रवासी और उत्प्रवासी होने का क्या अर्थ है?
(A) वह व्यक्ति एक ही स्थान छोड़ दूसरे स्थान बस जाता है
(B) वह व्यक्ति कभी भी प्रवास नहीं करता है
(C) वह व्यक्ति एक ही स्थान पर जन्म लेकर मरता है
(D) वह व्यक्ति गंतव्य स्थान से कभी वापस नहीं आता

99. जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत के अनुसार, जनसंख्या की उच्च वृद्धि दर से निम्न वृद्धि दर में परिवर्तन की प्रक्रिया को क्या कहते हैं?
(A) जनसंख्या विस्फोट
(B) जनसंख्या का स्थिरीकरण
(C) जनांकिकीय संक्रमण
(D) जनसंख्या पतन

100. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. लोग समतल मैदानों पर बसने को वरीयता देते हैं।
2. खनिज निक्षेपों से युक्त क्षेत्र उद्योगों को आकृष्ट करते हैं।
3. अति ऊष्ण मरुस्थल मानव बसाव के लिए सुविधाजनक होते हैं।
4. नगर बेहतर अवसर प्रस्तुत करते हैं, जिससे प्रवास होता है।
5. उपजाऊ मृदा वाले क्षेत्रों में विरल जनसंख्या पाई जाती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-से जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने के संबंध में सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 3 और 5
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) केवल 2, 4 और 5

101. 200 वर्ष पूर्व विश्व के सभी देश जनांकिकीय संक्रमण की किस अवस्था में थे?
(A) द्वितीय अवस्था
(B) तृतीय अवस्था

(C) प्रथम अवस्था
(D) कोई भी देश इन अवस्थाओं में नहीं था

102. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): जनसंख्या वृद्धि ऋणात्मक भी हो सकती है।
कारण (R): यदि जन्म दर मृत्यु दर से कम हो जाए या उत्प्रवास की दर आप्रवास से अधिक हो, तो जनसंख्या कम हो जाती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

103. 'जनसंख्या परिवर्तन' का अभिप्राय क्या है?
(A) किसी क्षेत्र की जनसंख्या के आकार में परिवर्तन
(B) किसी क्षेत्र की जनसंख्या के घनत्व में परिवर्तन
(C) किसी क्षेत्र की केवल वार्षिक जन्म दर में परिवर्तन
(D) एक निश्चित अवधि में लोगों की संख्या में परिवर्तन

104. जनांकिकीय संक्रमण के चरणों को उनके घटित होने के क्रम में लगाइए:
1. समाज का नगरीय, शिक्षित और तकनीकी रूप से उन्नत होना।
2. महामारियों और भोजन की कमी से उच्च मृत्यु दर।
3. स्वास्थ्य और स्वच्छता में सुधार से मृत्यु दर में गिरावट।
4. प्रजननशीलता और मृत्यु दर दोनों का निम्न स्तर पर स्थिर होना।

सही क्रम है:
(A) 2, 3, 1, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 3, 2, 1, 4

105. प्रवास के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही नहीं है?
(A) प्रवास स्थायी या अस्थायी हो सकता है।
(B) प्रवास से उद्गम स्थान पर जनसंख्या कम होती है।
(C) प्रवास केवल एक ही दिशा में होता है, गाँव से शहर।
(D) प्रवास से गंतव्य स्थान पर जनसंख्या बढ़ जाती है।

106. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें।
List I: (अवधारणा)
P. जनसंख्या घनत्व
Q. जनसंख्या वृद्धि
R. प्राकृतिक वृद्धि
S. ऋणात्मक वृद्धि

List II: (मापन/परिणाम)
1. दो समय बिंदुओं के बीच जनसंख्या में परिवर्तन
2. जनसंख्या का कम हो जाना
3. जन्म दर और मृत्यु दर का अंतर
4. व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर

(A) P-4, Q-1, R-3, S-2
(B) P-1, Q-4, R-2, S-3
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-3, S-4

107. निम्नलिखित में से कौन-सा कारक सामान्यतः जनसंख्या के जमाव को प्रोत्साहित नहीं करता है?
(A) अनुकूल जलवायु
(B) उपजाऊ मृदा
(C) औद्योगिक केंद्र
(D) राजनीतिक अशांति

108. निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:
1. जल की उपलब्धता
2. भू-आकृति
3. जलवायु
4. मृदाएँ
5. खनिज

उपरोक्त में से कौन-से भौगोलिक कारक हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 1, 2, 3, 4
(C) केवल 5
(D) उपरोक्त सभी

109. यदि किसी देश की जन्म दर 20 प्रति हजार और मृत्यु दर 8 प्रति हजार है, और कोई प्रवास नहीं हुआ है, तो प्राकृतिक वृद्धि दर क्या होगी?
(A) 28 प्रति हजार
(B) 2.5 प्रति हजार
(C) 12 प्रति हजार
(D) 1.6 प्रति हजार

110. 'अशोधित' (Crude) जन्म या मृत्यु दर को 'अशोधित' क्यों कहा जाता है?
(A) क्योंकि यह केवल ग्रामीण जनसंख्या पर लागू होती है
(B) क्योंकि इसकी गणना करना गणितीय रूप से बहुत कठिन है
(C) क्योंकि यह केवल अति विकसित देशों के लिए प्रासंगिक है
(D) क्योंकि यह आयु-संरचना पर आधारित मोटा अनुमान है

111. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): सामाजिक और राजनीतिक अशांति वाले क्षेत्रों से लोग बाहर चले जाते हैं।
कारण (R): जीवन व संपत्ति की सुरक्षा और शांति व स्थायित्व प्रवास के लिए शक्तिशाली अपकर्ष कारक हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

112. भारत के किस भाग में विरल जनसंख्या पाई जाती है?
(A) गंगा का मैदान
(B) हिमालय के पर्वतीय भाग
(C) तटीय मैदान
(D) दक्कन का पठार

113. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. विश्व की जनसंख्या असमान रूप से वितरित है।
2. 90% जनसंख्या 10% स्थलभाग पर रहती है।
3. विश्व के 10 सर्वाधिक आबाद देशों में से 6 एशिया में हैं।
4. लोग सामान्यतः समतल मैदानों की अपेक्षा पर्वतों पर रहना पसंद करते हैं।

निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

114. प्रतिवर्ष विश्व की जनसंख्या में लगभग कितने लोग जुड़ जाते हैं?
(A) 8 करोड़
(B) 1 करोड़
(C) 5 करोड़
(D) 10 करोड़

115. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें।
List I: (प्रवास का प्रकार)
P. प्रतिकर्ष कारक
Q. अपकर्ष कारक
R. उत्प्रवासी
S. आप्रवासी

List II: (विवरण)
1. नए स्थान पर आने वाले प्रवासी
2. रहन-सहन की निम्न दशाएँ
3. एक स्थान से बाहर जाने वाले प्रवासी
4. अनुकूल जलवायु

(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-2, Q-4, R-3, S-1
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

116. जनांकिकीय संक्रमण की किस अवस्था में शिक्षित जनसंख्या विचारपूर्वक परिवार के आकार को नियंत्रित करती है?
(A) प्रथम अवस्था
(B) द्वितीय अवस्था
(C) प्रथम और द्वितीय दोनों अवस्थाओं में
(D) तृतीय अवस्था

117. निम्नलिखित में से कौन-सा एक जनसंख्या परिवर्तन का घटक नहीं है?
(A) जन्म
(B) मृत्यु
(C) साक्षरता दर
(D) प्रवास

118. जनांकिकीय संक्रमण के विभिन्न चरणों की विशेषताओं पर विचार करें:
1. प्रथम अवस्था: उच्च जन्म दर, उच्च मृत्यु दर, धीमी वृद्धि।
2. द्वितीय अवस्था: उच्च जन्म दर, घटती मृत्यु दर, तीव्र वृद्धि।
3. तृतीय अवस्था: घटती जन्म दर, निम्न मृत्यु दर, धीमी वृद्धि।
4. प्रथम अवस्था: अधिकांश लोग शहरी और शिक्षित।

उपरोक्त में से कौन से युग्म सही सुमेलित हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

119. किसी राष्ट्र का वास्तविक धन क्या है?
(A) उसकी भूमि
(B) उसके प्राकृतिक संसाधन
(C) उसकी औद्योगिक क्षमता
(D) उसके निवासी

120. प्रवास के चरणों का तार्किक क्रम क्या है?
1. उद्गम स्थान पर प्रतिकर्ष कारकों (जैसे बेरोजगारी) का अनुभव करना।
2. गंतव्य स्थान पर अपकर्ष कारकों (जैसे बेहतर अवसर) की जानकारी मिलना।
3. प्रवास का निर्णय लेना।
4. गंतव्य स्थान की ओर गमन करना।

सही क्रम है:
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 3, 1, 2, 4
(D) 4, 3, 2, 1

121. जनसंख्या घनत्व हमें क्या बताता है?
(A) जनसंख्या की संपूर्ण कुल संख्या
(B) जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर
(C) जनसंख्या व भूमि के आकार का अनुपात
(D) एक क्षेत्र की संपूर्ण कुल भूमि

122. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत भविष्य की

जनसंख्या का पूर्वानुमान करने में उपयोगी है।
कारण (R): यह सिद्धांत बताता है कि सभी समाज विकास की एक समान अवस्थाओं से गुज़रते हैं, जिससे उनकी जनसंख्या की प्रवृत्तियों का अनुमान लगाया जा सकता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

123. जनसंख्या वृद्धि के बारे में कौन सा तथ्य सही नहीं है?
(A) विगत 500 वर्षों में मानव जनसंख्या 10 गुणा से अधिक बढ़ी है।
(B) 20वीं शताब्दी में अकेले जनसंख्या 4 गुना बढ़ी है।
(C) जनांकिकीय संक्रमण की प्रथम अवस्था में जनसंख्या वृद्धि धीमी होती है।
(D) 5 अरब से 6 अरब तक बढ़ने में जनसंख्या को 100 वर्ष लगे।

124. निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिये:
1. बेरोजगारी
2. राजनीतिक उपद्रव
3. प्रतिकूल जलवायु
4. महामारियाँ
5. काम के बेहतर अवसर

इनमें से कौन से प्रवास के प्रतिकर्ष कारक हैं?
(A) केवल 1, 2, 3 और 4
(B) केवल 5
(C) उपरोक्त सभी
(D) केवल 1 और 5

125. जनसंख्या के संदर्भ में, 'परिवर्तन की दर' का क्या अर्थ है?
(A) जनसंख्या का संपूर्ण आकार
(B) जनसंख्या का सकल घनत्व
(C) प्रतिशत में व्यक्त परिवर्तन
(D) आप्रवासियों की कुल संख्या

126. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें।
List I: (भौगोलिक कारक)
P. जल की उपलब्धता
Q. भू-आकृति
R. जलवायु
S. मृदाएँ

List II: (प्रभाव)
1. उपजाऊ दोमट मिट्टी गहन कृषि का आधार बनती है
2. सुखद जलवायु वाले क्षेत्र अधिक बसे हैं
3. समतल मैदानों पर बसने को वरीयता
4. नदी-घाटियाँ सघन बसी हैं

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

127. मृत्यु दर में कमी के लिए उत्तरदायी कारक क्या हैं, जैसा कि जनांकिकीय संक्रमण की द्वितीय अवस्था में वर्णित है?
(A) स्वास्थ्य संबंधी दशाओं व स्वच्छता में सुधार।
(B) महामारियाँ का बढ़ना।
(C) जन्म दर में तीव्र गिरावट।
(D) युद्ध और अकाल।

128. निम्नलिखित में से कौन-सा जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करने वाला एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक है?
(A) व्यापक नगरीकरण
(B) राजनीतिक अशांति
(C) सघन औद्योगीकरण
(D) मृदा की उर्वरता

129. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. जनसंख्या वृद्धि धनात्मक या ऋणात्मक हो सकती है।
2. जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि की गणना जन्म और मृत्यु दर के अंतर से की जाती है।
3. जनसंख्या की वास्तविक वृद्धि में प्रवास को शामिल किया जाता है।
4. अशोधित जन्म दर को प्रति सौ स्त्रियों पर मापा जाता है।

निम्नलिखित में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

130. 21वीं सदी के प्रारंभ में विश्व की जनसंख्या 600 करोड़ से अधिक थी। इस वृद्धि के पीछे मुख्य कारण क्या है?
(A) उच्च जन्म दर व गिरती मृत्यु दर
(B) बाह्य प्रवास की उच्च दर
(C) जन्म व मृत्यु दर में वृद्धि
(D) केवल जन्म दर में भारी वृद्धि

131. लोग कुछ निश्चित प्रदेशों में क्यों रहना चाहते हैं और अन्य में क्यों नहीं? इसका मुख्य कारण क्या है?
(A) विभिन्न सरकारी नीतियां
(B) मानवीय व्यक्तिगत पसंद
(C) अनेक कारकों का संयोजन
(D) केवल ऐतिहासिक संयोग

132. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. उद्गम स्थान जनसंख्या में कमी को दर्शाता है।
2. गंतव्य स्थान पर जनसंख्या बढ़ जाती है।
3. प्रवास स्थायी, अस्थायी या मौसमी हो सकता है।
4. प्रवास केवल गाँव से नगर की ओर होता है।
5. अपकर्ष कारक गंतव्य स्थान को कम आकर्षक बनाते हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 4 और 5
(D) उपरोक्त सभी

133. जनांकिकीय संक्रमण की किस अवस्था में प्रजननशीलता और मर्त्यता दोनों ही उच्च स्तर पर होती हैं?
(A) द्वितीय अवस्था
(B) तृतीय अवस्था
(C) अवस्था I
(D) अवस्था I और II दोनों

134. विश्व का दूसरा सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश कौन सा है?
(A) चीन
(B) भारत
(C) संयुक्त राज्य अमेरिका
(D) इंडोनेशिया

135. जनसंख्या परिवर्तन का अध्ययन महत्वपूर्ण क्यों है?
(A) केवल भविष्य की जनसंख्या का अनुमान
(B) केवल जन्म दर को नियंत्रित करना
(C) केवल प्रवास के कारणों की व्याख्या
(D) आर्थिक व सामाजिक प्रगति का सूचक

136. किसी देश की पहचान अंततः किससे होती है?
(A) उसके लोगों से
(B) उसके क्षेत्रफल से
(C) उसके संसाधनों से
(D) उसकी सरकार से

137. यदि किसी क्षेत्र में जन्म दर मृत्यु दर से कम हो जाए, तो इसे क्या कहेंगे?
(A) जनसंख्या की धनात्मक वृद्धि
(B) जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि
(C) जनसंख्या की ऋणात्मक वृद्धि
(D) जनसंख्या स्थिरीकरण

138. निम्नलिखित में से कौन सा प्रवास का एक प्रतिकर्ष कारक है?
(A) रहन-सहन की निम्न दशाएँ
(B) शांति व स्थायित्व
(C) अनुकूल जलवायु
(D) रोजगार के अवसर

139. परिवार नियोजन सुविधाओं का एक मुख्य लाभ क्या है?
(A) पुरुषों के स्वास्थ्य का बेहतर होना
(B) बच्चों की शिक्षा का बेहतर होना
(C) केवल जनसंख्या में कमी
(D) महिलाओं के स्वास्थ्य का बेहतर होना

140. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. अति ऊष्ण अथवा ठंडे मरुस्थलों की विषम जलवायु मानव बसाव के लिए असुविधाजनक होती है।
2. भूमध्य सागरीय प्रदेश सुखद जलवायु के कारण इतिहास के आरंभिक कालों से बसे हुए हैं।
3. उपजाऊ मृदाएँ कृषि के लिए महत्त्वपूर्ण हैं।
4. लोग समतल मैदानों पर बसने को वरीयता देते हैं।

इनमें से कौन से भौगोलिक कारक के रूप में जनसंख्या वितरण को प्रभावित करते हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

141. एक उत्प्रवासी वह व्यक्ति है जो:
(A) एक नए स्थान पर आता है।
(B) अपने ही देश में घूमता है।
(C) एक स्थान से बाहर चला जाता है।
(D) कभी भी प्रवास नहीं करता है।

142. जनांकिकीय संक्रमण की दूसरी और तीसरी अवस्था में मुख्य अंतर क्या है?
(A) दूसरी अवस्था में जन्म और मृत्यु दर दोनों उच्च होती हैं, जबकि तीसरी में दोनों निम्न होती हैं।
(B) दूसरी अवस्था में जनसंख्या घटती है, जबकि तीसरी में बढ़ती है।
(C) दूसरी अवस्था में लोग ग्रामीण होते हैं, जबकि तीसरी में भी वे ग्रामीण ही रहते हैं।
(D) दूसरी अवस्था में जन्म दर उच्च रहती है और मृत्यु दर घटती है, जबकि तीसरी अवस्था में जन्म दर भी घटने लगती है।

143. निम्नलिखित में से कौन सा जनसंख्या वितरण का एक आर्थिक कारक है?
(A) औद्योगीकरण
(B) भू-आकृति
(C) जलवायु
(D) मृदा

144. निम्नलिखित में से कौन सा कारक गंतव्य स्थान को उद्गम स्थान की अपेक्षा अधिक आकर्षक बनाता है?
(A) प्रतिकर्ष कारक
(B) अपकर्ष कारक
(C) भौगोलिक कारक
(D) सामाजिक कारक

145. जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत के अनुसार, जब समाज उन्नति करता है तो जनसंख्या में क्या परिवर्तन होता है?
(A) निम्न जन्म/मृत्यु दर से उच्च जन्म/मृत्यु दर में।
(B) उच्च जन्म/मृत्यु दर से निम्न जन्म/मृत्यु दर में।
(C) जन्म/मृत्यु दर में कोई परिवर्तन नहीं होता।
(D) केवल मृत्यु दर घटती है, जन्म दर स्थिर रहती है।

146. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. गाँव से गाँव
2. गाँव से नगर
3. नगर से नगर
4. नगर से गाँव

उपरोक्त में से कौन से प्रवास के संभावित प्रकार हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

147. किसी क्षेत्र की जनसंख्या में परिवर्तन का अध्ययन क्या कहलाता है?
(A) जनसंख्या घनत्व
(B) जनसंख्या वितरण
(C) जनसंख्या वृद्धि
(D) जनसंख्या संरचना

148. निम्नलिखित में से कौन सा एक प्रवास का परिणाम नहीं है?
(A) उद्गम स्थान पर जनसंख्या कम होना।
(B) गंतव्य स्थान पर जनसंख्या बढ़ना।
(C) मनुष्य और संसाधनों के बीच संतुलन में परिवर्तन।
(D) जन्म दर और मृत्यु दर का हमेशा बराबर रहना।

149. जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों का कौन सा समूह सबसे उपयुक्त है?
(A) केवल भौगोलिक कारक
(B) केवल आर्थिक कारक
(C) केवल सामाजिक-सांस्कृतिक कारक
(D) भौगोलिक, आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक कारक

150. जनांकिकीय संक्रमण की अंतिम अवस्था में जनसंख्या की वृद्धि दर मंद क्यों हो जाती है?
(A) क्योंकि मृत्यु दर बढ़ जाती है
(B) प्रजननशीलता व मर्त्यता का निम्न स्तर
(C) कठोर जनसंख्या नियंत्रण लागू करना
(D) प्रवास का पूरी तरह से रुक जाना

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

जनसंख्या वितरण और घनत्व दो भिन्न जनांकिकीय संकल्पनाएँ हैं, जो किसी क्षेत्र के मानव-भूमि संबंध को समझने में महत्वपूर्ण हैं। जनसंख्या वितरण भूपृष्ठ पर लोगों के स्थानिक फैलाव के प्रारूप को संदर्भित करता है, अर्थात लोग कहाँ रहते हैं। यह अक्सर असमान होता है, जैसे कुछ क्षेत्रों में सघन आबादी होती है जबकि अन्य विरल बसे होते हैं। इसके विपरीत, जनसंख्या घनत्व एक औसत माप है जो कुल जनसंख्या और कुल क्षेत्रफल के बीच के अनुपात को दर्शाता है, जिसे सामान्यतः प्रति वर्ग किलोमीटर व्यक्तियों में व्यक्त किया जाता है। यह एक सरलीकृत औसत है और आंतरिक भिन्नताओं को छिपा सकता है। अधिक सूक्ष्म विश्लेषण के लिए, भूगोलवेत्ता कायिक घनत्व (physiologial density) और कृषि घनत्व (agricultural density) का उपयोग करते हैं। कायिक घनत्व कुल जनसंख्या को कुल कृषि योग्य भूमि से विभाजित करके मापता है, जो भूमि की पोषण क्षमता पर जनसंख्या के दबाव का एक बेहतर संकेतक है। उदाहरण के लिए, मिस्र जैसे देशों में कम अंकगणितीय घनत्व के बावजूद विशाल मरुस्थलों के कारण बहुत उच्च कायिक घनत्व है। कृषि घनत्व ग्रामीण जनसंख्या को कृषि योग्य भूमि से विभाजित करता है, जो कृषि दक्षता और ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि पर दबाव को दर्शाता है। ये विभिन्न घनत्व माप मिलकर किसी क्षेत्र की जनसंख्या की स्थिति और संसाधनों पर उसके दबाव की एक व्यापक तस्वीर प्रदान करते हैं।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. स्रोत के अनुसार, जनसंख्या वितरण और घनत्व के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) घनत्व स्थानिक फैलाव को दर्शाता है, जबकि वितरण एक औसत माप है।
(B) वितरण स्थानिक फैलाव को दर्शाता है, जबकि घनत्व एक औसत माप है।
(C) दोनों शब्द विनिमेय हैं और एक ही अवधारणा का वर्णन करते हैं।
(D) वितरण का उपयोग केवल देशों के लिए किया जाता है, जबकि घनत्व का उपयोग शहरों के लिए किया जाता है।

152. 'कायिक घनत्व' की गणना कैसे की जाती है?
(A) कुल जनसंख्या को कुल कृषि योग्य भूमि से विभाजित करके।
(B) कुल जनसंख्या को कुल क्षेत्रफल से विभाजित करके।
(C) ग्रामीण जनसंख्या को कुल क्षेत्रफल से विभाजित करके।
(D) ग्रामीण जनसंख्या को कुल कृषि योग्य भूमि से विभाजित करके।

153. स्रोत में मिस्र का उदाहरण क्यों दिया गया है?
(A) यह दिखाने के लिए कि वहाँ की कृषि बहुत कुशल है।
(B) यह साबित करने के लिए कि वहाँ जनसंख्या का वितरण समान है।
(C) यह दर्शाने के लिए कि कैसे अंकगणितीय घनत्व और कायिक घनत्व में बड़ा अंतर हो सकता है।
(D) यह बताने के लिए कि वहाँ का अंकगणितीय घनत्व विश्व में सर्वाधिक है।

154. कौन सा माप कृषि दक्षता और ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि पर दबाव को समझने के लिए सबसे उपयोगी है?
(A) अंकगणितीय घनत्व
(B) कायिक घनत्व
(C) जनसंख्या वितरण
(D) कृषि घनत्व

155. इस गद्यांश के आधार पर, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जिस देश का अधिकांश भूभाग पर्वतीय या मरुस्थलीय है,

लेकिन उसकी जनसंख्या छोटी, उपजाऊ घाटियों में केंद्रित है, वहाँ क्या होगा?
(A) एक कम अंकगणितीय घनत्व और एक कम कायिक घनत्व।
(B) एक उच्च अंकगणितीय घनत्व और एक कम कायिक घनत्व।
(C) एक कम अंकगणितीय घनत्व और एक उच्च कायिक घनत्व।
(D) एक उच्च अंकगणितीय घनत्व और एक उच्च कायिक घनत्व।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
मानव प्रवास एक जटिल घटना है जो प्रतिकर्ष (push) और अपकर्ष (pull) कारकों के संयोजन से प्रेरित होती है। ये कारक लोगों को अपने मूल स्थान (उद्गम) को छोड़ने और एक नए स्थान (गंतव्य) पर बसने के लिए निर्णय लेने को प्रभावित करते हैं। प्रतिकर्ष कारक वे नकारात्मक परिस्थितियाँ हैं जो लोगों को एक स्थान से दूर धकेलती हैं। इनमें आर्थिक मुद्दे जैसे बेरोजगारी, कम मजदूरी, और अवसरों की कमी शामिल हैं। सामाजिक-राजनीतिक प्रतिकर्ष कारकों में राजनीतिक अस्थिरता, युद्ध, उत्पीड़न (धार्मिक, जातीय, या राजनीतिक), और मानवाधिकारों का हनन शामिल हैं। पर्यावरणीय प्रतिकर्ष कारक भी महत्वपूर्ण हैं, जैसे प्राकृतिक आपदाएँ (सूखा, बाढ़, भूकंप) और जलवायु परिवर्तन के दीर्घकालिक प्रभाव। इसके विपरीत, अपकर्ष कारक वे सकारात्मक विशेषताएँ हैं जो प्रवासियों को एक नए स्थान की ओर आकर्षित करती हैं। आर्थिक अपकर्ष कारकों में नौकरी के बेहतर अवसर, उच्च वेतन, और एक उन्नत जीवन स्तर की संभावना सर्वोपरि है। सामाजिक अपकर्ष कारकों में बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, और परिवार या समुदाय के सदस्यों की उपस्थिति (श्रृंखला प्रवास) शामिल हैं। राजनीतिक स्थिरता और सुरक्षा भी शक्तिशाली अपकर्ष कारक हैं। आम तौर पर, प्रवासियों का निर्णय इन प्रतिकर्ष और अपकर्ष कारकों के बीच एक व्यक्तिपरक मूल्यांकन का परिणाम होता है, जिसे अक्सर मध्यवर्ती बाधाओं, जैसे दूरी, लागत, और कानूनी प्रतिबंधों, द्वारा संशोधित किया जाता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. स्रोत के अनुसार, प्रतिकर्ष और अपकर्ष कारकों के बीच मूल अंतर क्या है?
(A) प्रतिकर्ष कारक आर्थिक होते हैं, जबकि अपकर्ष कारक सामाजिक होते हैं।
(B) प्रतिकर्ष कारक लोगों को दूर धकेलते हैं, जबकि अपकर्ष कारक उन्हें आकर्षित करते हैं।
(C) प्रतिकर्ष कारक अस्थायी होते हैं, जबकि अपकर्ष कारक स्थायी होते हैं।
(D) प्रतिकर्ष कारक केवल विकासशील देशों में पाए जाते हैं, जबकि अपकर्ष कारक विकसित देशों में।

157. निम्नलिखित में से कौन सा एक 'प्रतिकर्ष कारक' का उदाहरण है जैसा कि गद्यांश में वर्णित है?
(A) एक नए देश में उच्च वेतन की संभावना।
(B) गंतव्य स्थान पर बेहतर शैक्षणिक संस्थानों की उपलब्धता।
(C) परिवार के सदस्यों का गंतव्य स्थान पर पहले से रहना।
(D) किसी क्षेत्र में राजनीतिक अस्थिरता और संघर्ष।

158. 'श्रृंखला प्रवास' (chain migration) की अवधारणा किस अपकर्ष कारक से संबंधित है?
(A) सामाजिक (परिवार या समुदाय की उपस्थिति)
(B) आर्थिक (उच्च वेतन)
(C) पर्यावरणीय (बेहतर जलवायु)
(D) राजनीतिक (स्थिरता)

159. गद्यांश में उल्लिखित 'मध्यवर्ती बाधाएं' (intervening obstacles) क्या दर्शाती हैं?
(A) वे कारण जो लोगों को प्रवास के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
(B) वे सकारात्मक पहलू जो गंतव्य को आकर्षक बनाते हैं।
(C) वे कारक जो प्रवास की प्रक्रिया को कठिन या महंगा बनाते हैं।
(D) प्रवास के बाद एकीकरण की प्रक्रिया।

160. एक इंजीनियर जो बेहतर वेतन और अनुसंधान सुविधाओं के लिए अपने देश को छोड़कर दूसरे देश में चला जाता है, उसका निर्णय मुख्य रुप से किस कारक से प्रभावित होता है?
(A) आर्थिक अपकर्ष कारक
(B) सामाजिक प्रतिकर्ष कारक
(C) राजनीतिक प्रतिकर्ष कारक
(D) पर्यावरणीय अपकर्ष कारक

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
जनांकिकीय संक्रमण मॉडल (Demographic Transition Model) एक सिद्धांत है जो समय के साथ किसी देश की जनसंख्या की जन्म और मृत्यु दर में परिवर्तन के प्रारूप का वर्णन करता है, क्योंकि वह समाज एक अविकसित से एक विकसित आर्थिक प्रणाली में परिवर्तित होता है। मॉडल को सामान्यतः चार या पाँच चरणों में विभाजित किया गया है। चरण 1, पूर्व-औद्योगिक समाज, में उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर दोनों की विशेषता होती है, जिसके परिणामस्वरूप धीमी या स्थिर जनसंख्या वृद्धि होती है। मृत्यु दर अक्सर अकाल, बीमारी और युद्ध के कारण अस्थिर होती थी। चरण 2 में, जैसे-जैसे समाज का विकास शुरू होता है, मृत्यु दर तेजी से गिरती है। यह गिरावट बेहतर स्वच्छता, स्वास्थ्य सेवा और खाद्य उत्पादन के कारण होती है। जन्म दर उच्च बनी रहती है, जिससे जनसंख्या में तीव्र वृद्धि या 'जनसंख्या विस्फोट' होता है। चरण 3 में, जन्म दर भी घटने लगती है। यह बढ़ी हुई शिक्षा, गर्भनिरोधक तक पहुंच, शहरीकरण और महिलाओं की स्थिति में बदलाव के कारण होता है। जनसंख्या वृद्धि जारी रहती है, लेकिन धीमी गति से। चरण 4 में, जन्म और मृत्यु दर दोनों

कम होती हैं, जिससे जनसंख्या वृद्धि स्थिर हो जाती है या बहुत धीमी गति से बढ़ती है। कुछ भूगोलवेत्ता एक चरण 5 का प्रस्ताव करते हैं, जहाँ जन्म दर मृत्यु दर से भी नीचे गिर जाती है, जिससे जनसंख्या में गिरावट आती है। यह मॉडल एक सामान्यीकरण है और सभी देशों का अनुभव बिल्कुल इस मार्ग का अनुसरण नहीं कर सकता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. जनांकिकीय संक्रमण मॉडल के चरण 2 की मुख्य विशेषता क्या है?
(A) उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर।
(B) निम्न जन्म दर और निम्न मृत्यु दर।
(C) घटती जन्म दर और निम्न मृत्यु दर।
(D) उच्च जन्म दर और तेजी से घटती मृत्यु दर।

162. गद्यांश के अनुसार, चरण 3 में जन्म दर क्यों घटने लगती है?
(A) अकाल और बीमारियों की आवृत्ति बढ़ने के कारण।
(B) शहरीकरण, शिक्षा और गर्भनिरोधक तक पहुंच में वृद्धि के कारण।
(C) सरकार द्वारा अनिवार्य जनसंख्या नियंत्रण नीतियों के कारण।
(D) मृत्यु दर में अचानक वृद्धि की प्रतिक्रिया के रूप में।

163. 'जनसंख्या विस्फोट' की घटना जनांकिकीय संक्रमण मॉडल के किस चरण से जुड़ी है?
(A) चरण 1
(B) चरण 4
(C) चरण 2
(D) चरण 5

164. चरण 5, जैसा कि कुछ भूगोलवेत्ताओं द्वारा प्रस्तावित है, की क्या विशेषता है?
(A) जन्म दर और मृत्यु दर दोनों में वृद्धि।
(B) जनसंख्या वृद्धि का स्थिरीकरण।
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों का बड़े पैमाने पर वापसी।
(D) जन्म दर का मृत्यु दर से नीचे गिरना, जिससे जनसंख्या में गिरावट आती है।

165. मॉडल के किस चरण में जनसंख्या वृद्धि सबसे धीमी या स्थिर होती है (चरण 5 को छोड़कर)?
(A) चरण 1 और चरण 4
(B) चरण 2 और चरण 3
(C) केवल चरण 2
(D) केवल चरण 3

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
विश्व में जनसंख्या का वितरण अत्यधिक असमान है, जो मुख्य रूप से भौतिक पर्यावरण के कारकों द्वारा नियंत्रित होता है। इन कारकों में, जल की उपलब्धता, भू-आकृति, जलवायु और मिट्टी की गुणवत्ता प्रमुख हैं। मानव बस्तियाँ ऐतिहासिक रूप से मीठे पानी के स्रोतों, विशेष रूप से नदियों के आसपास केंद्रित रही हैं, क्योंकि जल न केवल पीने और स्वच्छता के लिए बल्कि कृषि और परिवहन के लिए भी आवश्यक है। यही कारण है कि नील, सिंधु और गंगा जैसी नदी घाटियाँ दुनिया के सबसे घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से हैं। भू-आकृति भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है; समतल और उपजाऊ मैदान कृषि, बुनियादी ढांचे के विकास और शहरीकरण के लिए आदर्श होते हैं, जबकि ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी इलाके और दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र विकास में बाधा डालते हैं और विरल आबादी वाले होते हैं। जलवायु एक और निर्णायक कारक है। अत्यधिक ठंडे (ध्रुवीय क्षेत्र) या अत्यधिक गर्म और शुष्क (मरुस्थल) क्षेत्रों वाली कठोर जलवायु मानव निवास के लिए प्रतिकूल होती है। इसके विपरीत, शीतोष्ण जलवायु वाले क्षेत्र, जहाँ तापमान और वर्षा मध्यम होती है, अधिक आकर्षक होते हैं। अंत में, मृदा की उर्वरता, जिसे एडैफिक कारक भी कहा जाता है, सीधे तौर पर कृषि उत्पादकता को प्रभावित करती है और इस प्रकार उस जनसंख्या का समर्थन कर सकती है जो भूमि का भरण-पोषण करती है। इन पर्यावरणीय कारकों के संयोजन से 'एकुमेन' (ecumene) या बसे हुए विश्व का निर्माण होता है, जो पृथ्वी की सतह का वह हिस्सा है जिस पर स्थायी मानव बस्तियाँ हैं।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. गद्यांश के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन सा कारक जनसंख्या वितरण को नियंत्रित करने वाला एक प्रमुख भौतिक कारक नहीं है?
(A) जल की उपलब्धता
(B) राजनीतिक नीतियां
(C) भू-आकृति
(D) जलवायु

167. नदी घाटियाँ ऐतिहासिक रूप से घनी आबादी वाली क्यों रही हैं?
(A) क्योंकि वे रक्षात्मक लाभ प्रदान करती हैं।
(B) क्योंकि जल कृषि, पीने और परिवहन के लिए आवश्यक है।
(C) क्योंकि वहाँ की जलवायु हमेशा शीतोष्ण होती है।
(D) क्योंकि वहाँ खनिज संसाधनों की प्रचुरता होती है।

168. गद्यांश में 'एकुमेन' (ecumene) शब्द का क्या अर्थ है?
(A) पृथ्वी का वह भाग जिस पर स्थायी मानव बस्तियाँ हैं।
(B) पृथ्वी का निर्जन भाग।
(C) केवल कृषि के लिए उपयोग की जाने वाली भूमि।
(D) विश्व के सभी शहरी क्षेत्र।

169. किस प्रकार की भू-आकृति आमतौर पर विरल आबादी वाली होती है?
(A) समतल और उपजाऊ मैदान।
(B) नदी डेल्टा।
(C) ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी इलाके।

(D) तटीय क्षेत्र।

170. स्रोत में 'एडैफिक कारक' का संदर्भ किस पर्यावरणीय तत्व से है?

(A) जलवायु की स्थिति
(B) जल संसाधनों की उपलब्धता
(C) भू-आकृति की प्रकृति
(D) मृदा की उर्वरता

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

नगरीकरण की प्रक्रिया, जिसमें जनसंख्या ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में स्थानांतरित होती है, किसी क्षेत्र की जनांकिकीय संरचना पर गहरे और विविध प्रभाव डालती है। सबसे तात्कालिक परिणामों में से एक शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व में तीव्र वृद्धि है, जो अक्सर आवास, स्वच्छता और परिवहन जैसे बुनियादी ढांचे और सेवाओं पर भारी दबाव डालती है। प्रवास की प्रकृति के कारण, शहरी क्षेत्रों की आयु और लिंग संरचना में भी परिवर्तन होता है। आमतौर पर, युवा, कामकाजी उम्र के पुरुष नौकरी की तलाश में शहरों की ओर पलायन करने वाले पहले लोगों में से होते हैं, जिससे शहरी क्षेत्रों में लिंगानुपात असंतुलित हो सकता है (पुरुषों की संख्या अधिक) और ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्ध आबादी और महिलाओं का अनुपात बढ़ जाता है। समय के साथ, जैसे-जैसे परिवार भी स्थानांतरित होते हैं, यह असंतुलन कुछ हद तक कम हो सकता है। इसके अलावा, शहरी जीवनशैली, शिक्षा के उच्च स्तर और स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुंच के कारण शहरों में प्रजनन दर (जन्म दर) ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कम होती है। हालांकि, शहरी प्रवास के कारण कुल जनसंख्या वृद्धि अभी भी उच्च बनी रह सकती है। अनियंत्रित नगरीकरण अक्सर अनौपचारिक बस्तियों या झुग्गियों के विकास की ओर ले जाता है, जहाँ निवासी अपर्याप्त परिस्थितियों में रहते हैं, जो एक और जनांकिकीय और सामाजिक चुनौती पेश करता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. गद्यांश के अनुसार, नगरीकरण का सबसे तात्कालिक परिणाम क्या है?

(A) शहरी क्षेत्रों में प्रजनन दर में वृद्धि।
(B) ग्रामीण क्षेत्रों में लिंगानुपात का संतुलन।
(C) शहरी जनसंख्या घनत्व में तीव्र वृद्धि।
(D) शहरी क्षेत्रों में जीवन स्तर में तत्काल सुधार।

172. प्रवास के प्रारंभिक चरणों में शहरी क्षेत्रों के लिंगानुपात पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?

(A) महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक हो जाती है।
(B) पुरुषों की संख्या महिलाओं से अधिक हो जाती है।
(C) लिंगानुपात संतुलित रहता है।
(D) बच्चों की संख्या वयस्कों से अधिक हो जाती है।

173. शहरी क्षेत्रों में प्रजनन दर आमतौर पर ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कम क्यों होती है?

(A) ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी के कारण।
(B) शहरों में पुरुषों के उच्च अनुपात के कारण।
(C) सरकारी नियमों के कारण जो बड़े परिवारों को हतोत्साहित करते हैं।
(D) शहरी जीवनशैली, शिक्षा के उच्च स्तर और स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुंच के कारण।

174. 'अनौपचारिक बस्तियों' या झुग्गियों का विकास किसका परिणाम है?

(A) अनियंत्रित नगरीकरण और आवास की कमी का।
(B) नियोजित शहरी विकास का।
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च जन्म दर का।
(D) शहरी क्षेत्रों से लोगों के बहिर्गमन का।

175. गद्यांश से क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

(A) नगरीकरण केवल सकारात्मक जनांकिकीय परिवर्तन लाता है।
(B) नगरीकरण का ग्रामीण क्षेत्रों की जनांकिकीय संरचना पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
(C) नगरीकरण एक जटिल प्रक्रिया है जो शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के लिए जनांकिकीय चुनौतियां और अवसर पैदा करती है।
(D) नगरीकरण हमेशा जनसंख्या वृद्धि को धीमा करता है।

ANSWERS

1. (B) केवल स्त्रियाँ और पुरुष
किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति और पहचान उसकी भौगोलिक सीमाओं या वहाँ छिपे स्वर्ण और खनिज संसाधनों से नहीं होती है। वास्तव में, वहाँ रहने वाले स्त्री और पुरुष ही उस देश की असली पूँजी होते हैं। लोग ही प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके उन्हें मूल्यवान बनाते हैं। उनकी बुद्धिमत्ता और कार्यक्षमता ही अंततः एक राष्ट्र को मजबूत, महान और गौरवशाली बनाती है।

2. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
नदी-घाटियाँ विश्व के सघनतम बसे क्षेत्रों में आती हैं क्योंकि जल जीवन की प्राथमिक आवश्यकता है। पीने, नहाने और भोजन पकाने के अलावा, जल कृषि कार्यों, फसलों की सिंचाई और औद्योगिक प्रक्रियाओं के लिए अपरिहार्य है। जल की सुगम उपलब्धता मानवीय गतिविधियों को सरल बनाती है, जिससे इन क्षेत्रों में जनसंख्या का अत्यधिक जमाव और सघन आर्थिक विकास देखा जाता है। यह अंतर्संबंध पूर्णतः स्पष्ट है।

3. (C) एशिया
जॉर्ज बी. क्रेसी ने एशिया की जनसंख्या वितरण पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि यहाँ बहुत अधिक स्थानों पर कम लोग और बहुत कम स्थानों पर बहुत अधिक लोग रहते हैं। यह कथन एशिया महाद्वीप के असमान जनसंख्या वितरण को रेखांकित करता है। विश्व की अधिकांश जनसंख्या इसके कुछ सीमित उपजाऊ और औद्योगिक क्षेत्रों में केंद्रित है, जबकि विशाल भू-भाग भौगोलिक बाधाओं के कारण विरल बसे हैं।

4. (B) केवल 1, 2 और 3
मानवीय बसाव के लिए भौगोलिक परिस्थितियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं। लोग कृषि और आवास के लिए समतल मैदानों और मंद ढालों को प्राथमिकता देते हैं, जबकि पर्वतीय क्षेत्र परिवहन बाधाओं के कारण विरल होते हैं। सुखद जलवायु वाले भूमध्यसागरीय क्षेत्र ऐतिहासिक काल से ही सघन बसे रहे हैं। उपजाऊ दोमट मिट्टी वाले प्रदेश कृषि हेतु उत्तम होने के कारण हमेशा सघन आबादी वाले क्षेत्रों की श्रेणी में आते हैं।

5. (C) धार्मिक महत्त्व के स्थान
जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों में आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक कारक अलग-अलग होते हैं। खनिज निक्षेप, नगरीकरण और तीव्र औद्योगीकरण प्रत्यक्ष रूप से रोजगार और आर्थिक उन्नति से जुड़े आर्थिक कारक हैं। इसके विपरीत, धार्मिक या सांस्कृतिक महत्व के स्थान सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों की श्रेणी में आते हैं। ये स्थान लोगों को अपनी आस्था और विरासत के आधार पर आकर्षित करते हैं, न कि आर्थिक लाभ हेतु।

6. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में जनसंख्या का जमाव विशिष्ट आकर्षणों के कारण होता है। अफ्रीका की कटंगा-जांबिया पेटी ताँबे के समृद्ध निक्षेपों के कारण जानी जाती है, जबकि जापान का कोबे-ओसाका क्षेत्र अपने तीव्र औद्योगिक विकास के लिए प्रसिद्ध है। गंगा का मैदान उपजाऊ मृदा और सघन कृषि का केंद्र है, वहीं भूमध्यसागरीय प्रदेश अपनी सुखद और स्वास्थ्यप्रद जलवायु के कारण प्राचीन काल से ही लोगों को आकर्षित करते रहे हैं।

7. (D) भूपृष्ठ पर लोग किस प्रकार वितरित हैं।
जनसंख्या वितरण का तात्पर्य भूपृष्ठ पर लोगों के फैलाव या स्थानिक वितरण के प्रारूप से है। यह बताता है कि पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों में मानव आबादी किस प्रकार विभाजित है। कुछ क्षेत्र अत्यंत सघन बसे होते हैं जहाँ जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है, जबकि अन्य क्षेत्र प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण विरल या निर्जन हो सकते हैं। यह अवधारणा जनसंख्या की भौगोलिक स्थिति को स्पष्ट करती है।

8. (A) 10 प्रतिशत
विश्व की जनसंख्या का वितरण अत्यधिक असमान है, जिसका अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि वैश्विक आबादी का लगभग 90 प्रतिशत हिस्सा पृथ्वी के केवल 10 प्रतिशत स्थलभाग पर निवास करता है। यह सघन जमाव मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में है जहाँ उपजाऊ मिट्टी, पर्याप्त जल, अनुकूल जलवायु और रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं, जबकि पृथ्वी का विशाल भू-भाग अब भी विरल या निर्जन बना हुआ है।

9. (A) केवल 1, 2, 3 और 5
प्रतिकर्ष कारक वे परिस्थितियाँ हैं जो लोगों को अपने मूल स्थान को छोड़ने पर मजबूर करती हैं और उस स्थान को कम आकर्षक बनाती हैं। बेरोजगारी, रहन-सहन की निम्न दशाएँ, राजनीतिक उपद्रव, प्रतिकूल जलवायु और प्राकृतिक आपदाएँ इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इसके विपरीत, काम के बेहतर अवसर एक अपकर्ष कारक है, क्योंकि यह लोगों को नए स्थानों की ओर आकर्षित करता है और उनके जीवन स्तर को सुधारता है।

10. (A) दक्षिण-पूर्वी एशिया
दक्षिण-पूर्वी एशिया विश्व के सबसे सघन बसे क्षेत्रों में से एक है, जहाँ उपजाऊ भूमि और अनुकूल जलवायु के कारण जनसंख्या का भारी जमाव पाया जाता है। इसके विपरीत, अटाकामा मरुस्थल की शुष्कता, ध्रुवीय प्रदेशों की अत्यधिक ठंड और भूमध्यरेखीय प्रदेशों की अत्यधिक आर्द्रता व गर्मी मानवीय बसाव के लिए चुनौतीपूर्ण होती है। इसलिए, ये क्षेत्र विरल जनसंख्या वाले प्रदेशों की श्रेणी में शामिल किए जाते हैं और यहाँ आबादी कम है।

11. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
किसी भी राष्ट्र के निवासी ही उस राष्ट्र की वास्तविक पूँजी और धन होते हैं। ये लोग ही प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करते हैं, उन्हें मूल्यवान वस्तुओं में बदलते हैं और देश के सामाजिक-आर्थिक विकास की दिशा तय करते हैं। मानव संसाधन की गुणवत्ता और उनकी निर्णय लेने की क्षमता ही देश की नीतियों और भविष्य का निर्धारण करती है, जिससे अन्य निर्जीव संसाधन भी समाज के लिए अर्थपूर्ण बनते हैं।

12. (B) घनत्व = जनसंख्या / क्षेत्रफल
जनसंख्या घनत्व का उपयोग भूमि और जनसंख्या के बीच के अनुपात को समझने के लिए किया जाता है। इसकी गणना कुल जनसंख्या को उस क्षेत्र के कुल क्षेत्रफल से विभाजित करके की जाती है। यह माप हमें बताता है कि प्रति इकाई क्षेत्र, जैसे प्रति वर्ग किलोमीटर, में औसतन कितने व्यक्ति निवास कर रहे हैं। यह किसी प्रदेश की वहन क्षमता और उपलब्ध संसाधनों पर पड़ने वाले मानवीय दबाव को सटीक रूप से दर्शाता है।

13. (C) प्रति हज़ार स्त्रियों द्वारा जन्म दिए जीवित बच्चों के रूप में।
अशोधित जन्म दर किसी क्षेत्र में प्रजननशीलता को मापने का एक प्रमुख पैमाना है। इसे सामान्यतः किसी वर्ष विशेष में प्रति हज़ार जनसंख्या पर जन्म लेने वाले जीवित बच्चों की संख्या के रूप में व्यक्त किया जाता है। यह गणना जनांकिकीय परिवर्तनों को समझने का एक सरल और सीधा तरीका प्रदान करती है। यह दर किसी समाज की स्वास्थ्य सुविधाओं और सामाजिक-आर्थिक विकास के स्तर को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित करती है।

14. (B) 2, 3, 1
जनांकिकीय संक्रमण का सिद्धांत समाज की प्रगति को दर्शाता है। प्रथम अवस्था में उच्च जन्म और उच्च मृत्यु दर के कारण जनसंख्या वृद्धि धीमी होती है। दूसरी अवस्था में स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार से मृत्यु दर घटती है लेकिन जन्म दर ऊँची बनी रहती है, जिससे जनसंख्या में तीव्र वृद्धि होती है। अंतिम अवस्था में, समाज के शिक्षित और नगरीय होने पर जन्म और मृत्यु दर दोनों निम्न होकर स्थिर हो जाती हैं।

15. (A) खनिज निक्षेप
अफ्रीका की कटंगा-जांबिया ताँबा पेटी में जनसंख्या का सघन जमाव मुख्य रूप से वहाँ उपलब्ध मूल्यवान खनिज निक्षेपों के कारण है। इन खनिजों के खनन और शोधन के लिए बड़ी संख्या में कुशल और अकुशल श्रमिकों की आवश्यकता होती है। रोजगार के इन अवसरों के कारण लोग इन क्षेत्रों में आकर बसते हैं, जिससे परिवहन और अन्य सेवाओं का विकास होता है और पूरा क्षेत्र सघन रूप से आबाद हो जाता है।

16. (B) जन्म, मृत्यु और प्रवास
जनसंख्या के आकार में होने वाले परिवर्तन को मुख्य रूप से तीन घटक निर्धारित करते हैं: जन्म, मृत्यु और प्रवास। जन्म और मृत्यु दर के बीच का अंतर प्राकृतिक वृद्धि को दर्शाता है, जबकि प्रवास (आगमन और गमन) वास्तविक जनसंख्या परिवर्तन का कारण बनता है। ये तीनों प्रक्रियाएँ निरंतर चलती रहती हैं और किसी भौगोलिक क्षेत्र की जनांकिकीय संरचना, आयु संगठन और कुल आबादी के स्वरूप को व्यापक रूप से प्रभावित करती हैं।

17. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
जनसंख्या वृद्धि दो समय अंतरालों के बीच लोगों की संख्या में होने वाले परिवर्तन को दर्शाती है। प्राकृतिक वृद्धि केवल जन्म और मृत्यु के अंतर पर आधारित होती है, जबकि अशोधित जन्म दर को प्रति हज़ार स्त्रियों पर जीवित बच्चों और मृत्यु दर को मृतकों की संख्या के रूप में मापा जाता है। ये मापदंड किसी क्षेत्र की जनांकिकीय प्रवृत्तियों और सामाजिक विकास के स्तर को समझने के लिए ठोस आधार प्रदान करते हैं।

18. (A) आप्रवासी
जब कोई व्यक्ति या समूह किसी नए भौगोलिक स्थान या देश में जाकर बसता है, तो उसे उस गंतव्य स्थान के लिए आप्रवासी कहा जाता है। आप्रवास की यह प्रक्रिया किसी क्षेत्र की कुल जनसंख्या और उसके घनत्व में वृद्धि करती है। लोग सामान्यतः बेहतर आर्थिक अवसरों, सुरक्षा या सुखद जलवायु की तलाश में आप्रवास करते हैं, जिससे गंतव्य स्थल की जनांकिकीय और सांस्कृतिक विविधता में निरंतर विकास और वृद्धि देखी जाती है।

19. (D) उपरोक्त सभी
जनसंख्या के वितरण और घनत्व को निर्धारित करने में भौगोलिक कारकों की भूमिका प्राथमिक होती है। जल की उपलब्धता, धरातल की भू-आकृति, जलवायु की अनुकूलता और मिट्टी की उर्वरता वे मुख्य आधार हैं जो मानव बसाव को प्रोत्साहित करते हैं। लोग उन स्थानों पर रहना अधिक पसंद करते हैं जहाँ ये चारों कारक जीवन जीने और कृषि या औद्योगिक गतिविधियों के संचालन के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करते हैं।

20. (D) लोगों की संख्या खाद्य आपूर्ति की अपेक्षा अधिक तेजी से बढ़ेगी।
थॉमस माल्थस ने 1798 में अपने सिद्धांत में प्रतिपादित किया था कि मानवीय जनसंख्या की वृद्धि दर खाद्य आपूर्ति की तुलना में बहुत अधिक तीव्र होती है। उनके अनुसार, जनसंख्या ज्यामितीय अनुपात में बढ़ती है जबकि खाद्य उत्पादन केवल गणितीय अनुपात में बढ़ता है। इस असंतुलन के परिणामस्वरूप अंततः अकाल, बीमारियाँ और युद्ध जैसी आपदाएँ आती हैं, जो बढ़ती जनसंख्या को प्राकृतिक रूप से नियंत्रित करने का कार्य करती हैं।

21. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
जनांकिकीय संक्रमण की अंतिम अवस्था में जनसंख्या की वृद्धि दर मंद या स्थिर हो जाती है। इसका मुख्य कारण यह है कि इस चरण में समाज शिक्षित, नगरीय और तकनीकी रूप से उन्नत हो जाता है। इसके परिणामस्वरूप प्रजननशीलता और मर्त्यता दोनों ही न्यूनतम स्तर पर आ जाती हैं। लोग विचारपूर्वक परिवार

के आकार को नियंत्रित करते हैं, जिससे जनसंख्या का स्वरुप संतुलित हो जाता है और तीव्र वृद्धि रुक जाती है।

22. (B) जब जन्म दर मृत्यु दर से कम हो जाए।
किसी क्षेत्र की जनसंख्या में ऋणात्मक वृद्धि तब होती है जब दो समय अंतरालों के बीच वहाँ के निवासियों की कुल संख्या कम हो जाती है। यह स्थिति मुख्य रूप से तब उत्पन्न होती है जब मृत्यु दर जन्म दर से अधिक हो जाए या उस क्षेत्र से बाहर जाने वाले लोगों (उत्प्रवास) की संख्या आने वाले लोगों (आप्रवास) से अधिक हो। यह जनसंख्या के सिकुड़ने और जनांकिकीय असंतुलन का स्पष्ट संकेत होता है।

23. (D) शांति व स्थायित्व
प्रवास को प्रभावित करने वाले कारकों में अपकर्ष कारक वे होते हैं जो किसी स्थान को गंतव्य के रूप में आकर्षक बनाते हैं। शांति, स्थायित्व, जीवन व संपत्ति की सुरक्षा और बेहतर रोजगार के अवसर लोगों को नए क्षेत्रों में बसने के लिए प्रेरित करते हैं। इसके विपरीत, बेरोजगारी, निम्न जीवन स्तर और राजनीतिक उपद्रव प्रतिकर्ष कारक हैं जो लोगों को अपना मूल स्थान छोड़ने पर मजबूर करते हैं।

24. (A) केवल 1, 2 और 3
जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत किसी क्षेत्र की भविष्य की जनसंख्या का पूर्वानुमान लगाने में सहायक होता है। यह दर्शाता है कि जैसे-जैसे समाज ग्रामीण और खेतिहर अवस्था से विकसित होकर नगरीय और औद्योगिक बनता है, वैसे-वैसे वहाँ उच्च जन्म और मृत्यु दर का स्थान निम्न जन्म और मृत्यु दर ले लेती है। यह क्रमिक परिवर्तन विभिन्न अवस्थाओं में होता है, जो अंततः जनसंख्या को स्थिर और शिक्षित बनाने में मदद करता है।

25. (C) जन्म - मृत्यु + आप्रवास - उत्प्रवास
जनसंख्या की वास्तविक वृद्धि की गणना करते समय केवल प्राकृतिक जन्म और मृत्यु के अंतर को ही नहीं देखा जाता, बल्कि प्रवास को भी शामिल किया जाता है। इसका सटीक सूत्र जन्मों में से मौतों को घटाना और फिर उसमें आप्रवासियों की संख्या जोड़कर उत्प्रवासियों की संख्या घटाना है। यह पद्धति किसी क्षेत्र की आबादी में होने वाले कुल परिवर्तन का वास्तविक और संपूर्ण चित्र प्रस्तुत करती है, जो नीति-निर्माण हेतु आवश्यक है।

26. (A) अनेक उद्योगों की उपस्थिति
जापान का कोबे-ओसाका क्षेत्र विश्व के सघनतम बसे प्रदेशों में से एक है, जिसका मुख्य कारण वहाँ उद्योगों का व्यापक संकेंद्रण है। औद्योगिक इकाइयाँ न केवल कारखानों में रोजगार प्रदान करती हैं, बल्कि परिवहन, व्यापार, बैंकिंग और अन्य सेवाओं में भी बड़ी संख्या में अवसर सृजित करती हैं। इन आर्थिक संभावनाओं के कारण लोग बड़ी संख्या में यहाँ आकर बसते हैं, जिससे इस क्षेत्र का जनसंख्या घनत्व अत्यधिक बढ़ गया है।

27. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
जनसंख्या के प्रवास और वितरण को विभिन्न कारक प्रभावित करते हैं। बेरोजगारी जैसे प्रतिकर्ष कारक लोगों को बाहर धकेलते हैं, जबकि काम के बेहतर अवसर जैसे अपकर्ष कारक उन्हें आकर्षित करते हैं। भौगोलिक रूप से जल की उपलब्धता जीवन के लिए अनिवार्य है, इसलिए नदी घाटियाँ सघन बसी होती हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर पर, धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व के स्थान लोगों के रहने के लिए आकर्षण का केंद्र बनते हैं और जनसंख्या घनत्व बढ़ाते हैं।

28. (B) उच्च प्रजननशीलता व उच्च मर्त्यता
जनांकिकीय संक्रमण की प्रथम अवस्था की मुख्य विशेषता उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर का होना है। इस चरण में महामारियों और भोजन की अनिश्चित आपूर्ति के कारण मृत्यु दर अधिक रहती है, जिसकी भरपाई के लिए लोग अधिक बच्चों को जन्म देते हैं। इस अवस्था में जनसंख्या वृद्धि बहुत धीमी होती है और समाज मुख्य रूप से कृषि कार्यों में लगा होता है, जहाँ तकनीक और शिक्षा का स्तर निम्न होता है।

29. (C) 5 अरब से 6 अरब तक बढ़ने में जनसंख्या को 100 वर्ष लगे।
वैश्विक जनसंख्या वृद्धि का इतिहास बताता है कि आधुनिक काल में जनसंख्या बहुत तीव्र गति से बढ़ी है। विगत 500 वर्षों में यह 10 गुना से अधिक बढ़ी, जबकि 20वीं शताब्दी में ही यह 4 गुना बढ़ गई। जनसंख्या को 5 अरब से 6 अरब होने में केवल 12 वर्ष का समय लगा था, न कि 100 वर्ष। यह तीव्र वृद्धि चिकित्सा और प्रौद्योगिकी में हुए सुधारों के कारण संभव हो सकी है।

30. (A) 1, 4, 2, 3
जनसंख्या घनत्व की गणना करने के लिए एक व्यवस्थित प्रक्रिया का पालन किया जाता है। सर्वप्रथम, किसी विशिष्ट क्षेत्र की कुल जनसंख्या का निर्धारण किया जाता है और उसके बाद उस क्षेत्र का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल ज्ञात किया जाता है। अंत में, कुल जनसंख्या को कुल क्षेत्रफल से विभाजित किया जाता है, जिससे हमें जनसंख्या घनत्व प्राप्त होता है। यह विधि भूमि पर मानवीय दबाव को मापने का सबसे सटीक और वैज्ञानिक तरीका है।

31. (A) छह
विश्व की जनसंख्या का वितरण भौगोलिक रूप से अत्यंत असमान है, जिसमें एशिया महाद्वीप की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। विश्व के दस सबसे अधिक आबादी वाले देशों की सूची में से छह देश अकेले एशिया में स्थित हैं। इनमें चीन, भारत, इंडोनेशिया, पाकिस्तान, बांग्लादेश और जापान जैसे राष्ट्र शामिल हैं। यह तथ्य दर्शाता है कि एशिया महाद्वीप न केवल क्षेत्रफल में विशाल है, बल्कि यह वैश्विक मानव संसाधन का सबसे बड़ा केंद्र भी है।

32. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
जनांकिकीय संक्रमण की द्वितीय अवस्था में जनसंख्या में तीव्र वृद्धि देखी जाती है, जिसे अक्सर 'जनसंख्या विस्फोट' कहा जाता है। इस चरण में स्वास्थ्य सेवाओं और स्वच्छता में सुधार के कारण मृत्यु दर में तेजी से गिरावट आती है, जबकि सामाजिक और सांस्कृतिक कारणों से जन्म दर काफी समय तक ऊँची बनी रहती है। जन्म और मृत्यु दर के बीच का यह बड़ा अंतर जनसंख्या में भारी शुद्ध योग का मुख्य कारण बनता है।

33. (B) जहाँ से लोग गमन करते हैं।
प्रवास की प्रक्रिया में 'उद्गम स्थान' वह भौगोलिक क्षेत्र होता है जहाँ से कोई व्यक्ति या समूह किसी दूसरे स्थान पर जाने के लिए प्रस्थान करता है। जब लोग इस स्थान को छोड़कर जाते हैं, तो यहाँ की कुल जनसंख्या में कमी आती है। उद्गम स्थान पर सामान्यतः बेरोजगारी या खराब जलवायु जैसे प्रतिकर्ष कारक सक्रिय होते हैं, जो निवासियों को अपनी जड़ों से दूर जाने के लिए विवश या प्रोत्साहित करते हैं।

34. (B) केवल 2 और 3
जनसंख्या वृद्धि का तात्पर्य दो समय अंतरालों के बीच जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन से है, जो धनात्मक या ऋणात्मक दोनों हो सकता है। इसे कुल संख्या या प्रतिशत के रूप में मापा जाता है। जनसंख्या में होने वाला यह परिवर्तन किसी क्षेत्र की आर्थिक प्रगति और सामाजिक विकास का एक महत्वपूर्ण सूचक माना जाता है। यह संसाधनों के उपयोग और भविष्य की योजना बनाने के लिए एक आधारभूत सांख्यिकीय उपकरण के रूप में कार्य करता है।

35. (C) जनसंख्या सीमित करना व स्वास्थ्य सुधार
परिवार नियोजन सुविधाओं का प्राथमिक उद्देश्य जनसंख्या की अनियंत्रित वृद्धि को रोकना और लोगों को बच्चों के जन्म में उचित अंतराल रखने के लिए जागरूक करना है। यह न केवल जनसंख्या को संसाधनों के अनुरुप सीमित करने में मदद करता है, बल्कि महिलाओं के स्वास्थ्य में भी व्यापक सुधार लाता है। प्रचार-प्रसार और गर्भ-निरोधकों की उपलब्धता के माध्यम से सरकारें एक स्वस्थ और आर्थिक रूप से सक्षम समाज के निर्माण का प्रयास करती हैं।

36. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
जनांकिकीय संक्रमण की विभिन्न अवस्थाओं के अपने विशिष्ट उदाहरण और विशेषताएँ हैं। प्रथम अवस्था में वर्षा वनों के आदिवासी जैसे समुदाय आते हैं जहाँ विकास का स्तर प्रारंभिक है। द्वितीय अवस्था तीव्र जनसंख्या वृद्धि या विस्फोट को दर्शाती है, जबकि तृतीय अवस्था विकसित देशों की विशेषता है जहाँ जनसंख्या स्थिर हो जाती है। इन सभी अवस्थाओं के क्रमिक और सामूहिक रूप को जनांकिकीय चक्र कहा जाता है, जो समाज के क्रमिक विकास को दर्शाता है।

37. (C) प्रथम अवस्था
जनांकिकीय संक्रमण की प्रथम अवस्था में समाज का ढांचा मुख्य रूप से ग्रामीण और खेतिहर होता है। इस चरण में लोग प्राथमिक गतिविधियों में लगे होते हैं और तकनीक का अभाव होता है। उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर के कारण जनसंख्या वृद्धि अत्यंत धीमी रहती है। अधिकांश लोग अशिक्षित होते हैं और महामारियों व भोजन की अनिश्चितता के कारण जीवन प्रत्याशा भी निम्न स्तर पर होती है, जो इस अवस्था की प्रमुख पहचान है।

38. (B) 1500 व्यक्ति/वर्ग कि.मी.
जनसंख्या घनत्व निकालने के लिए उस क्षेत्र की कुल जनसंख्या को कुल क्षेत्रफल से विभाजित किया जाता है। यदि जनसंख्या 1,50,000 है और क्षेत्रफल 100 वर्ग किलोमीटर है, तो 1,50,000 को 100 से भाग देने पर हमें 1500 प्राप्त होता है। अतः उस प्रदेश का जनसंख्या घनत्व 1500 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर होगा। यह आँकड़ा दर्शाता है कि भूमि पर जनसंख्या का दबाव किस स्तर का है और संसाधन वितरण कैसा होना चाहिए।

39. (A) केवल 1, 2, 3 और 5
अपकर्ष कारक वे अनुकूल परिस्थितियाँ हैं जो किसी गंतव्य स्थान को लोगों के लिए आकर्षक बनाती हैं। रहन-सहन की बेहतर दशाएँ, शांति, राजनीतिक स्थिरता, जीवन व संपत्ति की सुरक्षा और काम के अच्छे अवसर इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ये कारक लोगों को अपने मूल स्थान से निकलकर नए और बेहतर क्षेत्रों में बसने के लिए प्रेरित करते हैं। इसके विपरीत, प्रतिकूल जलवायु एक प्रतिकर्ष कारक है जो लोगों को दूर धकेलता है।

40. (A) शैक्षणिक सुविधाएँ
प्रतिकर्ष कारक वे नकारात्मक परिस्थितियाँ होती हैं जो लोगों को अपना निवास स्थान छोड़ने पर मजबूर करती हैं, जैसे कि जलाभाव, बेरोजगारी और महामारियाँ। इसके विपरीत, शैक्षणिक सुविधाएँ एक अपकर्ष कारक हैं क्योंकि ये लोगों को बेहतर भविष्य के लिए किसी नए स्थान की ओर आकर्षित करती हैं। शैक्षणिक और चिकित्सा सुविधाओं का विस्तार शहरों को गंतव्य के रूप में अधिक लोकप्रिय बनाता है, जिससे वहां आप्रवास की दर में वृद्धि होती है।

41. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
पर्वतीय और पहाड़ी क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व सामान्यतः बहुत कम या विरल पाया जाता है। इसका मुख्य भौगोलिक कारण ऊबड़-खाबड़ धरातल है, जो कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त नहीं होता और परिवहन तंत्र के विकास में बड़ी बाधा उत्पन्न करता है। इन क्षेत्रों में औद्योगिक विकास और मूलभूत सुविधाओं की कमी भी लोगों को यहाँ बसने से रोकती है। अतः भौतिक विषमताओं के कारण ये क्षेत्र सघन मानवीय बसाव को सहारा नहीं दे पाते।

42. (A) किसी क्षेत्र में जन्म और मृत्यु के अंतर से बढ़ने वाली जनसंख्या।
जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि का तात्पर्य किसी भौगोलिक क्षेत्र में एक निश्चित समय अवधि के दौरान होने वाले जन्मों और मौतों के बीच के अंतर से है। यदि जन्म लेने वाले बच्चों की

संख्या मरने वालों से अधिक है, तो इसे धनात्मक प्राकृतिक वृद्धि कहा जाता है। इसमें प्रवास के प्रभावों को शामिल नहीं किया जाता है, बल्कि यह पूरी तरह से जैविक कारकों पर आधारित जनसंख्या परिवर्तन का एक सरल मापदंड है।

43. (C) केवल 1, 2 and 3
जनसंख्या के स्थानिक वितरण को आर्थिक कारक गहराई से प्रभावित करते हैं। मूल्यवान खनिजों की उपस्थिति खनन गतिविधियों को जन्म देती है, जिससे रोजगार बढ़ता है। इसी प्रकार, नगरीकरण बेहतर जीवन स्तर और सुविधाओं के माध्यम से लोगों को आकर्षित करता है, जबकि औद्योगीकरण रोजगार के नए द्वार खोलता है। भू-आकृति एक भौगोलिक कारक है, जबकि खनिज, नगरीकरण और औद्योगीकरण प्रत्यक्ष रूप से आर्थिक संभावनाओं और मानव आजीविका से जुड़े हुए महत्वपूर्ण कारक हैं।

44. (B) स्थिर या मंद गति से बढ़ती है
जनांकिकीय संक्रमण की अंतिम अवस्था में पहुँचने पर समाज पूरी तरह से विकसित, नगरीय और शिक्षित हो जाता है। इस चरण में चिकित्सा विज्ञान की उन्नति से मृत्यु दर काफी कम हो जाती है और लोग स्वेच्छा से जन्म दर को भी नियंत्रित कर लेते हैं। परिणामस्वरूप, जनसंख्या या तो स्थिर हो जाती है या फिर बहुत ही धीमी गति से बढ़ती है। यह अवस्था जनसंख्या के संतुलित और योजनाबद्ध विकास का उत्कृष्ट उदाहरण है।

45. (C) ग्रामीण, खेतिहर से नगरीय, औद्योगिक
जनांकिकीय संक्रमण का सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि जैसे-जैसे समाज का विकास होता है, वह अपनी पारंपरिक ग्रामीण और खेतिहर पहचान को छोड़कर आधुनिक नगरीय और औद्योगिक स्वरूप ग्रहण कर लेता है। इस परिवर्तन के साथ ही जनसंख्या की प्रवृत्तियाँ भी बदलती हैं, जहाँ उच्च जन्म और मृत्यु दर की जगह निम्न जन्म और मृत्यु दर ले लेती है। यह प्रक्रिया किसी भी राष्ट्र के जनांकिकीय विकास के विभिन्न चरणों को प्रदर्शित करती है।

46. (A) 1, 2, 3, 4
जनसंख्या परिवर्तन को समझने के लिए सांख्यिकीय गणनाओं का एक तार्किक क्रम होता है। सबसे पहले अशोधित जन्म और मृत्यु दरों का निर्धारण किया जाता है, जिनके अंतर से जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि ज्ञात होती है। इसके बाद, प्राकृतिक वृद्धि में शुद्ध प्रवास (आप्रवास और उत्प्रवास का अंतर) को जोड़कर जनसंख्या की वास्तविक वृद्धि निकाली जाती है। यह क्रमबद्ध प्रक्रिया किसी भी क्षेत्र की जनांकिकीय गतिशीलता का पूर्ण विश्लेषण करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।

47. (A) वह स्थान जहाँ लोग आगमन करते हैं।
प्रवास की प्रक्रिया में 'गंतव्य स्थान' वह क्षेत्र होता है जहाँ लोग अपने मूल स्थान को छोड़कर नए सिरे से बसने के लिए पहुँचते हैं। जब लोग यहाँ आते हैं, तो इस स्थान की कुल जनसंख्या और घनत्व में वृद्धि होती है। गंतव्य स्थान सामान्यतः अपनी अनुकूल जलवायु, बेहतर रोजगार के अवसरों या सुखद जीवन दशाओं के कारण लोगों को आकर्षित करता है, जिससे वहाँ सांस्कृतिक विविधता और आर्थिक गतिविधियाँ भी बढ़ती हैं।

48. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
प्रवास और जनसंख्या वितरण से संबंधित विभिन्न अवधारणाओं की सटीक परिभाषाएँ हैं। आप्रवास का अर्थ किसी नए स्थान पर आकर बसना है, जबकि उत्प्रवास का तात्पर्य अपने वर्तमान स्थान को छोड़कर बाहर जाना है। उद्गम स्थान वह है जहाँ से लोग प्रस्थान करते हैं, और गंतव्य स्थान वह है जहाँ वे पहुँचते हैं। ये चारों प्रक्रियाएँ मिलकर किसी भी भौगोलिक क्षेत्र की जनांकिकीय संरचना और जनसंख्या के आकार को निरंतर आधार पर परिवर्तित करती रहती हैं।

49. (B) धार्मिक या सांस्कृतिक महत्त्व का स्थान
जनसंख्या के वितरण में केवल भौगोलिक या आर्थिक कारक ही नहीं, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक कारक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अनेक लोग धार्मिक आस्था या सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव के कारण विशिष्ट स्थानों पर बसना पसंद करते हैं। ऐसे स्थानों का अपना ऐतिहासिक और आध्यात्मिक गौरव होता है जो लोगों को एक समुदाय के रूप में वहाँ रहने के लिए प्रेरित करता है। यह सामाजिक जुड़ाव किसी क्षेत्र की जनसंख्या के सघन होने का एक बड़ा कारण बनता है।

50. (A) 600 करोड़ से अधिक
21वीं शताब्दी के आगमन के समय विश्व की कुल आबादी ने 600 करोड़ के महत्वपूर्ण स्तर को पार कर लिया था। यह विशाल जनसंख्या वृद्धि पिछले दो शताब्दियों में हुई अभूतपूर्व तकनीकी और चिकित्सा प्रगति का परिणाम है। इस दौरान स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार से जीवन प्रत्याशा बढ़ी और शिशु मृत्यु दर में भारी कमी आई। वर्तमान में, विश्व की यह विशाल जनसंख्या संसाधनों के प्रबंधन और सतत विकास के लिए एक गंभीर चुनौती बनी हुई है।

51. (A) केवल 1, 2, 3 और 4
जनांकिकीय संक्रमण की द्वितीय अवस्था को अक्सर जनसंख्या विस्फोट का चरण माना जाता है। इस अवस्था की शुरुआत में जन्म दर ऊँची बनी रहती है, जो समय के साथ धीरे-धीरे कम होती है। स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार से मृत्यु दर में तेजी से गिरावट आती है, जिससे जन्म और मृत्यु के बीच का अंतर बढ़ जाता है। इस शुद्ध योग के कारण जनसंख्या में तीव्र वृद्धि होती है, न कि धीमी, जो इस चरण की मुख्य पहचान है।

52. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
उपजाऊ मृदा वाले प्रदेश सदैव से ही मानव बसाव के केंद्र रहे हैं क्योंकि वे सघन कृषि का आधार प्रदान करते हैं। पर्याप्त उत्पादन होने के कारण ये क्षेत्र अधिक जनसंख्या के भरण-पोषण में सक्षम होते हैं। उपजाऊ मिट्टी फसलों की विविधता और उच्च पैदावार सुनिश्चित करती है, जिससे खाद्य सुरक्षा बनी रहती है। यही कारण है कि प्राचीन काल से ही नदी घाटियों और मैदानों में जनसंख्या का जमाव सबसे अधिक पाया जाता है।

53. (C) जब जन्म दर, मृत्यु दर से अधिक हो।
जनसंख्या की धनात्मक वृद्धि तब होती है जब दो समय अंतरालों के बीच किसी क्षेत्र की कुल आबादी बढ़ जाती है। यह स्थिति मुख्य रूप से तब उत्पन्न होती है जब जन्म लेने वालों की संख्या मरने वालों से अधिक हो। इसके अतिरिक्त, यदि किसी क्षेत्र में बाहर से आने वाले लोगों (आप्रवास) की संख्या वहाँ से बाहर जाने वालों से अधिक है, तो भी जनसंख्या में धनात्मक वृद्धि दर्ज की जाती है, जो विकास का संकेत हो सकती है।

54. (B) प्रवास
जनसंख्या परिवर्तन के तीन प्रमुख घटकों में से प्रवास एक विशिष्ट भूमिका निभाता है। जन्म और मृत्यु दर के अंतर को प्राकृतिक वृद्धि कहा जाता है, जिसमें प्रवास शामिल नहीं होता। हालाँकि, प्रवास जनसंख्या के कुल आकार और घनत्व को सीधे तौर पर प्रभावित करता है, लेकिन इसे प्राकृतिक जैविक प्रक्रिया नहीं माना जाता। यह एक सामाजिक-आर्थिक निर्णय है जो लोगों द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने के कारण जनांकिकीय परिवर्तन लाता है।

55. (B) केवल 1, 3 और 4
प्रवास एक बहुआयामी प्रक्रिया है जो स्थायी, अस्थायी या मौसमी हो सकती है। यह न केवल गाँवों से नगरों की ओर, बल्कि गाँवों से गाँवों, नगरों से नगरों और नगरों से गाँवों की ओर भी होता है। प्रवास के कारण उद्गम और गंतव्य दोनों स्थानों की जनसंख्या संरचना बदल जाती है। एक ही व्यक्ति अपने मूल स्थान के लिए उत्प्रवासी और नए स्थान के लिए आप्रवासी हो सकता है, जो इसके विविध स्वरूप को दर्शाता है।

56. (A) (किसी वर्ष विशेष में मृतकों की संख्या / उस वर्ष के मध्य की अनुमानित जनसंख्या) × 1000
अशोधित मृत्यु दर किसी क्षेत्र की जनांकिकीय स्थिति को समझने का एक सरल साधन है। इसकी गणना करने के लिए किसी वर्ष विशेष में होने वाली कुल मौतों की संख्या को उसी वर्ष की मध्य अवधि की कुल अनुमानित जनसंख्या से भाग दिया जाता है और परिणाम को 1000 से गुणा किया जाता है। यह दर किसी समाज की स्वास्थ्य व्यवस्था, पोषण स्तर और जीवन की गुणवत्ता के स्तर को मापने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

57. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
विश्व के देशों को उनकी भौगोलिक स्थिति के आधार पर विभिन्न महाद्वीपों में वर्गीकृत किया गया है। भारत एशिया महाद्वीप का एक प्रमुख देश है, जबकि नाइजीरिया अफ्रीका की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। रूस का विस्तार यूरोप और एशिया दोनों में है, लेकिन सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से इसे अक्सर यूरोप से जोड़ा जाता है। मेक्सिको उत्तरी अमेरिका के दक्षिणी भाग में स्थित है। यह विविधता वैश्विक जनसंख्या वितरण और विकास को प्रभावित करती है।

58. (A) अकाल, बीमारी तथा युद्ध
थॉमस माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत के अनुसार, यदि जनसंख्या की वृद्धि खाद्य आपूर्ति की तुलना में बहुत अधिक हो जाती है, तो प्रकृति स्वयं उसे नियंत्रित करती है। ऐसी स्थिति में अकाल, भयंकर बीमारियाँ और युद्ध जैसी आपदाएँ उत्पन्न होती हैं जो बढ़ती हुई आबादी को कम कर देती हैं। माल्थस ने इन्हें 'सकारात्मक अवरोध' कहा था, जो मानवीय जनसंख्या और उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के बीच संतुलन स्थापित करने का एक कठोर लेकिन प्राकृतिक तरीका माना जाता है।

59. (D) विषम मरुस्थलीय
मानवीय बसाव के लिए जलवायु एक अत्यंत निर्णायक कारक है। विषम मरुस्थलीय जलवायु, जिसमें अत्यधिक गर्मी, वर्षा की कमी और शुष्कता होती है, मानव जीवन के लिए बहुत कष्टदायक और असुविधाजनक होती है। इसके विपरीत, भूमध्यसागरीय या मानसूनी जलवायु वाले क्षेत्र कृषि और सामान्य जीवन के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करते हैं। इसलिए, विषम जलवायु वाले क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व हमेशा बहुत कम रहता है क्योंकि वहाँ संसाधनों का अभाव और जीवन कठिन होता है।

60. (A) 1 से 2 की ओर उन्नति, जिसके परिणामस्वरुप 3 होता है।
जनांकिकीय संक्रमण की प्रक्रिया समाज के क्रमिक विकास का मार्ग है। जब समाज पारंपरिक ग्रामीण और अशिक्षित अवस्था से उन्नत होकर नगरीय, औद्योगिक और साक्षर बनता है, तो इसके परिणामस्वरुप जनसंख्या की प्रवृत्तियों में भी बड़ा बदलाव आता है। इस उन्नति के कारण उच्च जन्म और उच्च मृत्यु दर की स्थिति धीरे-धीरे निम्न जन्म और निम्न मृत्यु दर में बदल जाती है। यह संतुलन समाज की आर्थिक प्रगति और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार का सीधा परिणाम है।

61. (C) शून्य जनसंख्या वृद्धि वाला क्षेत्र
जनसंख्या वितरण का अध्ययन मुख्य रूप से लोगों के स्थानिक फैलाव और घनत्व के प्रारूपों पर केंद्रित होता है। इसमें सघन बसे क्षेत्र, विरल जनसंख्या वाले क्षेत्र और मध्यम घनत्व वाले क्षेत्र जैसे वर्गीकरण शामिल हैं। शून्य जनसंख्या वृद्धि एक जनांकिकीय अवस्था या प्रवृत्ति है, न कि वितरण का कोई भौगोलिक प्रारूप। वितरण इस बात को दर्शाता है कि लोग पृथ्वी की सतह पर कहाँ और कितनी मात्रा में बसे हुए हैं, जो भौतिक और आर्थिक कारणों से प्रभावित होता है।

62. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
नगरीकरण जनसंख्या के वितरण को बहुत गहराई से प्रभावित करता है क्योंकि नगर लोगों को बेहतर जीवन की संभावनाएँ प्रदान करते हैं। शहरों में रोजगार के व्यापक अवसर, उच्च शिक्षा के केंद्र, आधुनिक चिकित्सा सुविधाएँ और विकसित परिवहन के साधन उपलब्ध होते हैं। ये सभी सुविधाएँ ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं, जिससे नगरों में आप्रवास बढ़ता है और वहाँ जनसंख्या का घनत्व निरंतर सघन होता जाता है।

63. (A) प्रतिकर्ष और अपकर्ष कारक
प्रवास की प्रक्रिया को मुख्य रूप से दो प्रकार के कारक प्रभावित करते हैं: प्रतिकर्ष और अपकर्ष। प्रतिकर्ष कारक वे नकारात्मक स्थितियाँ हैं, जैसे बेरोजगारी या राजनीतिक अशांति, जो लोगों को अपना मूल स्थान छोड़ने के लिए मजबूर करती हैं। दूसरी ओर, अपकर्ष कारक वे आकर्षक अवसर हैं, जैसे बेहतर वेतन या सुखद जलवायु, जो लोगों को किसी नए स्थान पर बसने के लिए प्रेरित करते हैं। इन दोनों के प्रभाव से ही जनसंख्या का वैश्विक प्रवास प्रारूप निर्धारित होता है।

64. (B) केवल 1, 2, 3 और 4
जनांकिकीय संक्रमण की अंतिम अवस्था विकसित समाजों की पहचान है। इस चरण में जनसंख्या नगरीय, शिक्षित और तकनीकी रूप से संपन्न हो जाती है, जिससे लोग विचारपूर्वक परिवार के आकार को नियंत्रित करते हैं। प्रजननशीलता और मर्त्यता दोनों के घटने से जनसंख्या स्थिर हो जाती है या बहुत मंद गति से बढ़ती है। यहाँ बड़े परिवार को परिसंपत्ति नहीं माना जाता, बल्कि जीवन की गुणवत्ता और संसाधनों के उचित प्रबंधन पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

65. (B) प्रतिशत में
जनसंख्या वृद्धि की दर को सामान्यतः प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता है ताकि विभिन्न क्षेत्रों या समय अंतरालों के बीच तुलना करना आसान हो सके। यह दर बताती है कि एक निश्चित अवधि, जैसे एक वर्ष या एक दशक में, जनसंख्या में किस गति से परिवर्तन हो रहा है। यद्यपि इसे निरपेक्ष संख्या में भी गिना जाता है, लेकिन प्रतिशत के रूप में यह विकास की प्रवृत्तियों और भविष्य के जनांकिकीय पूर्वानुमानों के लिए अधिक प्रभावी उपकरण साबित होती है।

66. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
जनसंख्या परिवर्तन के विभिन्न स्वरूपों को समझना जनांकिकी में आवश्यक है। धनात्मक वृद्धि तब होती है जब जन्म दर मृत्यु दर से अधिक हो, जबकि ऋणात्मक वृद्धि में जन्म दर कम हो जाती है। प्राकृतिक वृद्धि का आकलन केवल जन्मों और मौतों के अंतर से किया जाता है, लेकिन वास्तविक वृद्धि की गणना में प्रवास (आप्रवास और उत्प्रवास) को भी सम्मिलित किया जाता है। ये मापदंड किसी क्षेत्र की आबादी में होने वाले वास्तविक बदलावों का पूर्ण विश्लेषण प्रदान करते हैं।

67. (C) उद्गम स्थान
प्रवास के संदर्भ में 'उद्गम स्थान' वह स्थान होता है जहाँ से लोग बेहतर अवसरों या अन्य कारणों से बाहर चले जाते हैं। इस प्रस्थान या गमन के कारण उस विशेष स्थान की कुल जनसंख्या में स्पष्ट कमी आती है। यह कमी जनांकिकीय संरचना को प्रभावित करती है और अक्सर वहाँ श्रम शक्ति के ह्रास का कारण बनती है। इसके विपरीत, गंतव्य स्थान वह होता है जहाँ लोग पहुँचते हैं और वहाँ की आबादी में वृद्धि होती है।

68. (D) क्योंकि वे अनेक प्रकार की सहायक सेवाएँ उपलब्ध कराती हैं
औद्योगिक पेटियाँ केवल कारखानों के कारण ही सघन नहीं होतीं, बल्कि वे आर्थिक गतिविधियों का एक पूरा पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करती हैं। उद्योगों की स्थापना से परिवहन परिचालकों, दुकानदारों, बैंककर्मियों, डॉक्टरों और शिक्षकों जैसी विभिन्न सेवाओं की मांग बढ़ती है। रोजगार के इन विविध अवसरों और सहायक सेवाओं की सुलभ उपलब्धता के कारण बड़ी संख्या में लोग इन क्षेत्रों की ओर आकर्षित होते हैं, जिससे वहाँ का जनसंख्या घनत्व बहुत अधिक बढ़ जाता है।

69. (A) केवल 1 और 2
जनांकिकीय मापदंडों में अशोधित जन्म दर को प्रति हज़ार जनसंख्या पर जीवित जन्मे बच्चों के रूप में मापा जाता है। जनसंख्या परिवर्तन में मृत्यु दर एक सक्रिय और महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि इसमें होने वाली कमी या वृद्धि सीधे आबादी के आकार को प्रभावित करती है। जनसंख्या वृद्धि केवल जन्म दर से नहीं, बल्कि मृत्यु दर में गिरावट और प्रवास से भी प्रभावित होती है। प्रवास भी जनसंख्या के स्थानिक वितरण और आकार को बदलने में सक्षम होता है।

70. (D) उपरोक्त सभी कारणों से।
सरकारें अक्सर संतुलित क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए लोगों को विरल जनसंख्या वाले क्षेत्रों में बसने हेतु प्रोत्साहित करती हैं। इसके पीछे मुख्य उद्देश्य बड़े शहरों में बढ़ती भीड़ और संसाधनों पर पड़ने वाले अत्यधिक दबाव को कम करना होता है। साथ ही, इससे दूरदराज के क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग संभव हो पाता है। इस प्रकार की नीतियाँ देश के समग्र आर्थिक और सामाजिक उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

71. (D) जीवन-प्रत्याशा उच्च होती है।
जनांकिकीय संक्रमण की प्रथम अवस्था में जीवन प्रत्याशा अत्यंत निम्न होती है, न कि उच्च। इस चरण में स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव, महामारियाँ और भोजन की अनिश्चित आपूर्ति जैसे कारण मृत्यु दर को ऊँचा रखते हैं। अधिकांश जनसंख्या अशिक्षित होती है और परंपरागत कृषि कार्यों में संलग्न रहती है। तकनीक का स्तर बहुत प्रारंभिक होता है, जिसके कारण जीवन कठिन होता है और लोग बड़ी संख्या में बच्चों को जन्म देना ही सुरक्षा का एकमात्र उपाय मानते हैं।

72. (A) उच्च उतार-चढ़ाव → विस्तृत होती जनसंख्या → निम्न उतार-चढ़ाव
जनांकिकीय संक्रमण का सिद्धांत जनसंख्या विकास के तीन मुख्य चरणों को दर्शाता है। प्रथम चरण में उच्च जन्म और मृत्यु दर के कारण उच्च उतार-चढ़ाव होता है। द्वितीय चरण में मृत्यु दर घटने से जनसंख्या का विस्तार होता है, जिसे 'विस्तृत होती जनसंख्या' कहा जाता है। अंतिम चरण में जन्म और मृत्यु दर दोनों के निम्न स्तर पर आ जाने से जनसंख्या स्थिर हो जाती है और निम्न उतार-चढ़ाव की स्थिति प्राप्त होती है। यह क्रमिक विकास की प्रक्रिया है।

73. (C) हिमालय का पर्वतीय भाग
विश्व के सघन बसे क्षेत्रों में उपजाऊ मैदान और औद्योगिक प्रदेश शामिल हैं, जैसे गंगा का मैदान और जापान का कोबे-ओसाका क्षेत्र। इसके विपरीत, हिमालय जैसे ऊँचे पर्वतीय भाग अपनी विषम भू-आकृति, ठंडी जलवायु और परिवहन की कठिनाइयों के कारण विरल जनसंख्या वाले क्षेत्र होते हैं। यहाँ जीवन निर्वाह के साधन सीमित होते हैं और कृषि योग्य भूमि का अभाव होता है, जिससे यहाँ सघन मानवीय बसाव संभव नहीं हो पाता और आबादी बहुत कम रहती है।

74. (B) (A) and (R) both satisfy but R is not the correct explanation.
मृत्यु दर किसी क्षेत्र की जनांकिकीय संरचना और सामाजिक-आर्थिक विकास के स्तर से गहराई से जुड़ी होती है। स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार और आर्थिक प्रगति आमतौर पर निम्न मृत्यु दर का कारण बनती है। हालाँकि दोनों कथन व्यक्तिगत रूप से सही हैं, लेकिन कारण सदैव अभिकथन की पूर्ण व्याख्या नहीं करता क्योंकि मृत्यु दर अन्य कारकों जैसे आयु संरचना और प्राकृतिक आपदाओं से भी प्रभावित हो सकती है। यह जनांकिकी की जटिलता को प्रदर्शित करता है, जहाँ कई कारक एक साथ कार्य करते हैं।

75. (D) प्रवास
मनुष्य स्वभावतः अधिक सुरक्षित और सुखी जीवन की तलाश में रहता है। जब लोगों को अपने मूल स्थान पर आर्थिक तंगी, बेरोजगारी या सामाजिक असुरक्षा का अनुभव होता है, तो वे बेहतर आर्थिक अवसरों और उच्च जीवन स्तर के लिए दूसरे स्थानों की ओर गमन करते हैं। इस स्वतःस्फूर्त प्रयास को प्रवास कहा जाता है। प्रवास के माध्यम से लोग उपलब्ध संसाधनों और अपनी आवश्यकताओं के बीच एक नया संतुलन स्थापित करने का निरंतर प्रयास करते हैं, जो मानव सभ्यता का इतिहास रहा है।

76. (D) उपरोक्त सभी
जनसंख्या से संबंधित विभिन्न अवधारणाएँ इसके स्वरूप को समझने में मदद करती हैं। जनसंख्या वृद्धि दो समय बिंदुओं के बीच का अंतर है, जबकि वृद्धि दर इसे प्रतिशत में व्यक्त करती है। प्राकृतिक वृद्धि केवल जन्म और मृत्यु के अंतर पर निर्भर है, जबकि वास्तविक वृद्धि में प्रवास का भी योगदान होता है। ऋणात्मक वृद्धि जनसंख्या में कमी को दर्शाती है। ये सभी परिभाषाएँ जनांकिकीय विश्लेषण और भविष्य की योजनाएँ बनाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती हैं।

77. (C) राल्फ वाल्डो इमरसन
प्रसिद्ध अमेरिकी विचारक राल्फ वाल्डो इमरसन ने राष्ट्र निर्माण में मानवीय संसाधनों की महत्ता पर बल दिया था। उनका मानना था कि किसी देश की शक्ति वहाँ के सोने या खनिजों में नहीं, बल्कि वहाँ के दृढ़ और परिश्रमी स्त्री-पुरुषों में निहित होती है। यह विचार इस सत्य को पुष्ट करता है कि लोग ही वास्तविक संसाधन हैं जो अपनी मेहनत और नैतिकता से राष्ट्र को महान बनाते हैं। मानवीय मूल्य ही किसी भी सभ्यता की स्थायी पूँजी होते हैं।

78. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
जनसंख्या के वितरण को विभिन्न कारक सामूहिक रूप से निर्धारित करते हैं। धरातल की भू-आकृति जैसे भौगोलिक कारक मानव बसाव को आधार देते हैं। नगरीकरण जैसे आर्थिक कारक आधुनिक सुविधाएँ और रोजगार प्रदान करते हैं, जबकि सांस्कृतिक महत्व के स्थान सामाजिक आकर्षण का केंद्र बनते हैं। दूसरी ओर, राजनीतिक अशांति जैसे प्रतिकर्ष कारक लोगों को असुरक्षा के कारण बाहर जाने पर मजबूर करते हैं। इन सभी कारकों का संतुलन ही किसी क्षेत्र के जनसंख्या घनत्व को तय करता है।

79. (A) प्रथम अवस्था
जनांकिकीय संक्रमण की प्रथम अवस्था में समाज स्वास्थ्य और तकनीक के मामले में पिछड़ा होता है। इस चरण में महामारियों का प्रकोप अधिक रहता है और कृषि पूरी तरह प्रकृति पर निर्भर होती है, जिससे भोजन की आपूर्ति अनिश्चित बनी रहती है। इन कारणों से मृत्यु दर बहुत ऊँची होती है। लोग अपनी सुरक्षा के लिए अधिक बच्चों को जन्म देते हैं, लेकिन उच्च मृत्यु दर के कारण जनसंख्या वृद्धि अत्यंत धीमी और अस्थिर बनी रहती है, जो विकास के प्रारंभिक चरण को दर्शाती है।

80. (D) उपरोक्त सभी
जनसंख्या नियंत्रण हेतु सरकारें बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाती हैं। इसमें परिवार नियोजन सुविधाओं का विस्तार, गर्भ-निरोधकों की आसान उपलब्धता और जन जागरूकता के लिए व्यापक प्रचार शामिल है। थॉमस माल्थस जैसे विचारकों के अनुसार, यदि जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ती है, तो उसे नियंत्रित करने के लिए कर-निरुत्साहक उपायों जैसे नीतिगत हस्तक्षेप भी आवश्यक हो सकते हैं। इन सभी प्रयासों का उद्देश्य मानव आबादी और उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के बीच एक स्वस्थ संतुलन बनाए रखना होता है।

81. (B) केवल 1, 2 और 3
प्रवास एक जटिल प्रक्रिया है जिसे उसके समय और स्वरूप के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। स्थायी प्रवास में व्यक्ति हमेशा के लिए नए स्थान पर बस जाता है, जबकि अस्थायी प्रवास कुछ समय के लिए होता है। मौसमी प्रवास ऋतुओं या काम की उपलब्धता के अनुसार होता है। प्रवास केवल गाँवों से नगरों की ओर ही नहीं, बल्कि विभिन्न दिशाओं में हो सकता है, जो लोगों की आर्थिक और सामाजिक आवश्यकताओं पर निर्भर करता है। यह गतिशीलता मानवीय विकास का अभिन्न अंग है।

82. (A) 4 गुना
20वीं शताब्दी मानव इतिहास में अभूतपूर्व जनसंख्या वृद्धि की गवाह रही है। इस मात्र एक शताब्दी के दौरान विश्व की जनसंख्या में लगभग 4 गुना की भारी बढ़ोत्तरी दर्ज की गई। इस तीव्र वृद्धि का मुख्य कारण विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में हुई क्रांतिकारी प्रगति थी, जिससे भयंकर महामारियों पर नियंत्रण पाया गया और मृत्यु दर में भारी गिरावट आई। इसने वैश्विक संसाधनों पर दबाव बढ़ा दिया और जनांकिकीय संक्रमण के नए चरणों की शुरुआत की।

83. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
मनुष्य अपनी जैविक प्रवृत्तियों को सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार ढालने में सक्षम है। जनांकिकीय संक्रमण की अंतिम अवस्था में, समाज के नगरीय और शिक्षित होने पर लोग जनसंख्या नियंत्रण के महत्व को समझते हैं। वे भविष्य की आर्थिक सुरक्षा और जीवन स्तर को ध्यान में रखते हुए विचारपूर्वक परिवार के आकार को छोटा रखते हैं। यह परिवर्तन स्पष्ट करता है कि शिक्षा और जागरुकता किस प्रकार मानवीय प्रजननशीलता को तर्कसंगत तरीके से समायोजित और नियंत्रित कर सकती है।

84. (D) संक्रमण की विभिन्न अवस्थाओं के सामूहिक रूप को
जनांकिकीय चक्र उस संपूर्ण प्रक्रिया को दर्शाता है जिसके माध्यम से कोई भी समाज जनसंख्या विकास के विभिन्न चरणों से गुजरता है। यह उच्च जन्म और मृत्यु दर वाली प्रारंभिक अवस्था से शुरु होकर, निम्न जन्म और मृत्यु दर वाली उन्नत अवस्था तक पहुँचने का एक क्रमिक सफर है। इन सभी अवस्थाओं का सामूहिक अध्ययन हमें यह समझने में मदद करता है कि आर्थिक और सामाजिक विकास के साथ किसी क्षेत्र की जनसंख्या की प्रवृत्तियाँ किस प्रकार बदलती हैं।

85. (C) क्योंकि यह मनुष्य-संसाधन संतुलन का एक प्रयास है
प्रवास को एक स्वतःस्फूर्त मानवीय प्रयास माना जाता है क्योंकि इसके माध्यम से व्यक्ति अपनी बुनियादी जरूरतों और उपलब्ध संसाधनों के बीच संतुलन स्थापित करना चाहता है। जब किसी स्थान पर संसाधनों की कमी या अवसरों का अभाव होता है, तो मनुष्य अपनी आजीविका और भविष्य को सुरक्षित करने के लिए स्वेच्छा से नए क्षेत्रों की ओर कदम बढ़ाता है। यह प्रक्रिया केवल भौगोलिक गतिशीलता नहीं है, बल्कि यह आर्थिक न्याय और बेहतर जीवन स्तर प्राप्त करने की मानवीय आकांक्षा का परिणाम है।

86. (A) 1, 2, 3
जनसंख्या से संबंधित ऐतिहासिक घटनाएँ विकास के क्रमिक चरणों को दर्शाती हैं। सर्वप्रथम 1798 में थॉमस माल्थस ने अपना प्रसिद्ध जनसंख्या सिद्धांत प्रतिपादित किया था। इसके बहुत बाद, 21वीं शताब्दी के प्रारंभ में विश्व की जनसंख्या 600 करोड़ के पार पहुँची। भारत के संदर्भ में, 2011 की जनगणना में जनसंख्या का 121 करोड़ से अधिक होना एक नवीनतम महत्वपूर्ण आंकड़ा है। यह क्रम समय के साथ बढ़ती वैश्विक आबादी और उसकी जनांकिकीय चुनौतियों को स्पष्ट रुप से उजागर करता है।

87. (D) 35
अशोधित जन्म दर निकालने के लिए किसी वर्ष के कुल जीवित जन्मों को उस वर्ष की मध्य अवधि की कुल जनसंख्या से विभाजित करके 1000 से गुणा किया जाता है। यहाँ 35,000 जन्मों को 10,00,000 की जनसंख्या से भाग देने पर 0.035 प्राप्त होता है, जिसे 1000 से गुणा करने पर परिणाम 35 आता है। अतः उस क्षेत्र की अशोधित जन्म दर 35 प्रति हज़ार होगी। यह सरल सांख्यिकीय गणना किसी क्षेत्र की प्रजननशीलता दर को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित करती है।

88. (A) P-1, Q-2, R-3, S-4
विश्व के सर्वाधिक जनसंख्या वाले देशों का क्रम वैश्विक जनांकिकी को समझने के लिए आवश्यक है। चीन लंबे समय तक विश्व का सबसे अधिक आबादी वाला देश रहा है, जिसके बाद भारत का स्थान आता है। संयुक्त राज्य अमेरिका तीसरे, इंडोनेशिया चौथे और ब्राजील पाँचवें स्थान पर जनसंख्या के मामले में अपनी स्थिति बनाए हुए हैं। यह वितरण न केवल इन देशों की आर्थिक नीतियों को प्रभावित करता है, बल्कि वैश्विक राजनीति और संसाधनों के उपभोग के प्रारूप को भी निर्धारित करता है।

89. (C) केवल 1, 2, 3 और 4
प्रवास के कारकों को उनकी प्रकृति के आधार पर समझा जाता है। प्रतिकर्ष कारक जैसे बेरोजगारी और राजनीतिक उपद्रव लोगों को उद्गम स्थान छोड़ने पर मजबूर करते हैं। अपकर्ष कारक जैसे बेहतर अवसर गंतव्य स्थान को आकर्षक बनाते हैं। प्रतिकूल जलवायु हमेशा एक प्रतिकर्ष कारक होती है क्योंकि वह जीवन को कठिन बनाती है। इन कारकों का सही विश्लेषण यह समझने में मदद करता है कि लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का निर्णय क्यों लेते हैं।

90. (A) 10 सर्वाधिक आबाद देशों में
वैश्विक जनसंख्या का संकेंद्रण अत्यंत सघन है, जिसका प्रमाण यह है कि विश्व की लगभग 60 प्रतिशत आबादी केवल 10 सबसे अधिक जनसंख्या वाले देशों में निवास करती है। इनमें से अधिकांश देश एशिया महाद्वीप में स्थित हैं। यह तथ्य वैश्विक स्तर पर संसाधनों के वितरण, खाद्य सुरक्षा और भविष्य की विकास योजनाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह सघनता इन देशों पर आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने के लिए भारी दबाव उत्पन्न करती है।

91. (D) द्वितीय अवस्था
जनांकिकीय संक्रमण की द्वितीय अवस्था को 'जनसंख्या विस्फोट' की स्थिति माना जाता है। इस चरण में चिकित्सा सुविधाओं और स्वच्छता में सुधार के कारण मृत्यु दर में बहुत तेजी से गिरावट आती है, जबकि सामाजिक परंपराओं और शिक्षा की कमी के कारण जन्म दर ऊँची बनी रहती है। जन्म और मृत्यु दर के बीच का यह विशाल अंतर जनसंख्या में अचानक और तीव्र वृद्धि का कारण बनता है, जिससे विकासशील देशों को संसाधनों के प्रबंधन में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

92. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
औद्योगीकरण जनसंख्या के घनत्व को बढ़ाने में एक प्रमुख कारक के रूप में कार्य करता है। औद्योगिक क्षेत्रों में न केवल कारखानों के श्रमिकों की आवश्यकता होती है, बल्कि वहाँ परिवहन, व्यापार, चिकित्सा और शिक्षा जैसी विविध सहायक सेवाओं का भी जाल बिछ जाता है। रोजगार के इन बहुआयामी

अवसरों और आधुनिक सुविधाओं की उपलब्धता के कारण लोग बड़ी संख्या में औद्योगिक पेटियों की ओर आकर्षित होते हैं और वहाँ स्थायी रूप से बस जाते हैं, जिससे सघन जनसंख्या केंद्रों का निर्माण होता है।

93. (C) महामारियाँ
अपकर्ष कारक वे सकारात्मक परिस्थितियाँ हैं जो लोगों को किसी नए स्थान पर आने के लिए प्रोत्साहित करती हैं, जैसे रोजगार के अवसर, अच्छी जीवन दशाएँ और सुरक्षा। इसके विपरीत, महामारियाँ एक शक्तिशाली प्रतिकर्ष कारक हैं क्योंकि वे स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा करती हैं और लोगों को अपना घर छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर जाने के लिए मजबूर करती हैं। अतः महामारियाँ किसी स्थान को आकर्षक नहीं बनातीं, बल्कि वहाँ से पलायन का प्रमुख कारण बनती हैं।

94. (B) केवल 2 और 3
जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों का वर्गीकरण उनके स्वरूप के आधार पर किया जाता है। खनिज और नगरीकरण प्रत्यक्ष रूप से रोजगार, आजीविका और आर्थिक संभावनाओं से जुड़े होते हैं, इसलिए इन्हें आर्थिक कारकों की श्रेणी में रखा जाता है। जल की उपलब्धता एक भौगोलिक कारक है, जबकि धार्मिक महत्व एक सामाजिक-सांस्कृतिक कारक है। आर्थिक कारक लोगों को बेहतर जीवन स्तर और भौतिक सुख-सुविधाओं की तलाश में विशिष्ट क्षेत्रों में बसने के लिए प्रेरित करते हैं।

95. (A) 10 गुना से अधिक
मानव इतिहास के पिछले 500 वर्षों में वैश्विक जनसंख्या में अभूतपूर्व और आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। तकनीकी विकास, कृषि उत्पादन में बढ़ोत्तरी और चिकित्सा विज्ञान की खोजों के कारण मानव आबादी इस अवधि में 10 गुना से भी अधिक बढ़ गई है। विशेष रूप से औद्योगिक क्रांति के बाद से जनसंख्या वृद्धि की गति और भी तेज हुई है। यह तीव्र विस्तार भविष्य के संसाधनों के सतत प्रबंधन और पर्यावरणीय स्थिरता को लेकर वैश्विक चर्चा का एक अनिवार्य विषय बन गया है।

96. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
जनांकिकी में विभिन्न पारिभाषिक शब्दों का विशिष्ट अर्थ होता है। प्रतिकर्ष कारक लोगों को अपने स्थान से दूर धकेलते हैं, जबकि अपकर्ष कारक उन्हें आकर्षित करते हैं। जनांकिकी स्वयं जनसंख्या के वैज्ञानिक अध्ययन का विषय है। जनसंख्या घनत्व प्रति इकाई क्षेत्र में रहने वाले व्यक्तियों की संख्या को दर्शाता है। इन अवधारणाओं को समझकर हम जनसंख्या के स्थानिक वितरण, गमन की प्रवृत्तियों और सामाजिक-आर्थिक विकास के आपसी संबंधों का सटीक विश्लेषण करने में सक्षम होते हैं।

97. (B) क्योंकि वे कृषि श्रम में सक्रिय योगदान करते हैं
जनांकिकीय संक्रमण की प्रथम अवस्था में समाज का आर्थिक ढांचा मुख्य रूप से पारंपरिक कृषि पर आधारित होता था। उस समय मशीनीकरण का अभाव था और अधिक मानव श्रम की आवश्यकता होती थी। इसलिए, बड़े परिवारों को एक परिसंपत्ति माना जाता था क्योंकि बच्चे कम उम्र से ही खेतों और अन्य घरेलू कार्यों में हाथ बँटाने लगते थे। यह जनांकिकीय व्यवहार तत्कालीन आर्थिक जरूरतों और उच्च मृत्यु दर के बीच संतुलन बनाने का एक सामाजिक तरीका था।

98. (A) वह व्यक्ति एक ही स्थान छोड़ दूसरे स्थान बस जाता है
प्रवास की प्रक्रिया में एक ही व्यक्ति दो अलग-अलग भूमिकाएँ निभाता है। जब वह अपना मूल स्थान छोड़कर बाहर जाता है, तो उस स्थान के लिए उसे 'उत्प्रवासी' कहा जाता है। वही व्यक्ति जब किसी नए गंतव्य स्थान पर पहुँचकर बसता है, तो वहाँ के लिए उसे 'आप्रवासी' की संज्ञा दी जाती है। यह दोहरा वर्गीकरण जनसंख्या के स्थानिक परिवर्तन को समझने में मदद करता है और यह दिखाता है कि कैसे एक ही क्रिया दो स्थानों की जनांकिकी को प्रभावित करती है।

99. (C) जनांकिकीय संक्रमण
जनांकिकीय संक्रमण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से कोई भी देश या समाज उच्च जन्म और मृत्यु दर वाली पारंपरिक अवस्था से निकलकर निम्न जन्म और मृत्यु दर वाली आधुनिक अवस्था में पहुँचता है। यह संक्रमण आर्थिक उन्नति, साक्षरता और बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं का परिणाम होता है। इस सिद्धांत का उपयोग भविष्य की जनसंख्या प्रवृत्तियों का पूर्वानुमान लगाने और विकास की योजनाओं को संसाधनों के अनुरूप ढालने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में किया जाता है।

100. (A) केवल 1, 2 और 4
जनसंख्या वितरण भौगोलिक, आर्थिक और सामाजिक कारकों के आपसी तालमेल से निर्धारित होता है। लोग रहने के लिए समतल मैदानों को प्राथमिकता देते हैं और जहाँ खनिज मिलते हैं, वहाँ उद्योगों के कारण जनसंख्या सघन हो जाती है। शहरों में बेहतर अवसरों के कारण भी प्रवास बढ़ता है। इसके विपरीत, विषम मरुस्थलीय जलवायु मानव बसाव को हतोत्साहित करती है और उपजाऊ मिट्टी वाले क्षेत्रों में सघन आबादी पाई जाती है, न कि विरल। ये कारक वैश्विक जनसंख्या मानचित्र को आकार देते हैं।

101. (C) प्रथम अवस्था
लगभग 200 वर्ष पूर्व विश्व के लगभग सभी देश जनांकिकीय संक्रमण की प्रथम अवस्था में थे। उस समय विज्ञान और तकनीक का स्तर बहुत प्रारंभिक था, जिससे महामारियों और अकाल के कारण मृत्यु दर बहुत ऊँची रहती थी। इसकी भरपाई के लिए जन्म दर भी बहुत अधिक थी। अधिकांश आबादी ग्रामीण और खेतिहर थी। धीरे-धीरे औद्योगिक क्रांति और चिकित्सा में सुधार के साथ विभिन्न देश इस अवस्था से आगे बढ़े और जनसंख्या विकास के नए चरणों में प्रवेश किया।

102. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
जनसंख्या वृद्धि हमेशा धनात्मक नहीं होती, बल्कि यह ऋणात्मक भी हो सकती है। यदि किसी क्षेत्र में जन्म लेने वाले बच्चों की संख्या मरने वालों से कम हो जाए, तो प्राकृतिक रूप

से जनसंख्या घटने लगती है। साथ ही, यदि वहाँ से बाहर जाने वाले लोगों (उत्प्रवास) की संख्या आने वाले लोगों (आप्रवास) से अधिक हो जाए, तो भी कुल आबादी कम हो जाती है। ये दोनों स्थितियाँ जनांकिकीय संकुचन का कारण बनती हैं और भविष्य के लिए चिंताजनक हो सकती हैं।

103. (D) एक निश्चित अवधि में लोगों की संख्या में परिवर्तन
जनसंख्या परिवर्तन का तात्पर्य किसी विशिष्ट क्षेत्र में एक निश्चित समय अंतराल के दौरान रहने वाले लोगों की कुल संख्या में होने वाले बदलाव से है। यह परिवर्तन धनात्मक या ऋणात्मक दोनों हो सकता है और इसे कुल संख्या या प्रतिशत के रूप में मापा जाता है। यह परिवर्तन किसी समाज की आर्थिक प्रगति, सामाजिक उत्थान और ऐतिहासिक परिस्थितियों का एक महत्वपूर्ण प्रतिबिंब होता है। यह नीति-निर्माताओं को संसाधनों के पुनर्वितरण और भविष्य की योजनाएँ बनाने का आधार प्रदान करता है।

104. (A) 2, 3, 1, 4
जनांकिकीय संक्रमण का सही क्रम समाज के विकास की कहानी कहता है। सबसे पहले भोजन की कमी और महामारियों के कारण उच्च मृत्यु दर वाली अवस्था आती है। फिर स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार से मृत्यु दर गिरने लगती है, जिससे जनसंख्या बढ़ती है। इसके बाद समाज नगरीय और शिक्षित होने लगता है। अंततः जन्म और मृत्यु दर दोनों निम्न स्तर पर आकर स्थिर हो जाते हैं। यह तार्किक क्रम जनांकिकीय स्थिरता प्राप्त करने की दिशा में एक समाज की क्रमिक उन्नति को दर्शाता है।

105. (C) प्रवास केवल एक ही दिशा में होता है, गाँव से शहर।
प्रवास एक बहुदिशात्मक प्रक्रिया है, यह सोचना गलत है कि यह केवल गाँव से शहर की ओर ही होता है। लोग रोजगार, विवाह या अन्य कारणों से गाँव से गाँव, शहर से शहर और कभी-कभी शहर से वापस गाँव की ओर भी प्रवास करते हैं। प्रवास स्थायी या अस्थायी दोनों हो सकता है। इससे उद्गम स्थान पर जनसंख्या कम होती है और गंतव्य स्थान पर बढ़ जाती है। यह गतिशीलता संसाधनों और जनसंख्या के बीच संतुलन बनाने का एक निरंतर मानवीय प्रयास है।

106. (A) P-4, Q-1, R-3, S-2
जनांकिकी से जुड़ी विभिन्न अवधारणाओं के विशिष्ट अर्थ हैं। जनसंख्या घनत्व प्रति वर्ग किलोमीटर व्यक्तियों की संख्या को बताता है, जबकि जनसंख्या वृद्धि दो समय बिंदुओं के बीच आबादी में बदलाव को दर्शाती है। प्राकृतिक वृद्धि जन्म और मृत्यु दर के बीच का अंतर है, और ऋणात्मक वृद्धि तब होती है जब कुल जनसंख्या पहले की तुलना में कम हो जाए। ये सभी सांख्यिकीय उपकरण किसी क्षेत्र की जनांकिकीय सेहत और भविष्य की प्रवृत्तियों को समझने के लिए अनिवार्य हैं।

107. (D) राजनीतिक अशांति
जनसंख्या के सघन जमाव के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ आवश्यक हैं। सुखद जलवायु, उपजाऊ मिट्टी और औद्योगिक केंद्रों की उपलब्धता लोगों को बसने के लिए प्रेरित करती है। इसके विपरीत, राजनीतिक अशांति, गृहयुद्ध या असुरक्षा जैसे वातावरण लोगों को उस स्थान से पलायन करने पर मजबूर कर देते हैं। लोग हमेशा शांति और स्थायित्व वाले क्षेत्रों में रहना पसंद करते हैं जहाँ वे और उनका परिवार सुरक्षित महसूस कर सकें। अतः राजनीतिक अस्थिरता जनसंख्या वृद्धि में एक बड़ी बाधा है।

108. (B) केवल 1, 2, 3, 4
जनसंख्या के वितरण को निर्धारित करने में भौगोलिक कारकों की भूमिका बुनियादी होती है। जल की उपलब्धता, धरातल की भू-आकृति, जलवायु की सुखद स्थिति और मिट्टी की उर्वरता मानवीय बसाव को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं। खनिज एक आर्थिक कारक है क्योंकि यह औद्योगिक गतिविधियों और रोजगार के अवसरों से जुड़ा है। भौगोलिक कारक यह तय करते हैं कि पृथ्वी की सतह पर किन स्थानों पर जीवन निर्वाह करना सरल है, जिससे वहाँ जनसंख्या का सघन जमाव हो सके।

109. (C) 12 प्रति हजार
जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि दर की गणना जन्म दर और मृत्यु दर के बीच के अंतर से की जाती है। यदि किसी देश की जन्म दर 20 प्रति हजार है और मृत्यु दर 8 प्रति हजार है, तो इनका अंतर 12 प्रति हजार आता है। चूँकि यहाँ प्रवास को शून्य माना गया है, इसलिए यही 12 प्रति हजार उस क्षेत्र की प्राकृतिक वृद्धि दर कहलाएगी। यह सरल गणितीय अंतर हमें बताता है कि बिना बाहरी हस्तक्षेप के जनसंख्या किस गति से स्वाभाविक रूप से बढ़ रही है।

110. (D) क्योंकि यह आयु-संरचना पर आधारित मोटा अनुमान है
जन्म और मृत्यु दर के लिए 'अशोधित' (Crude) शब्द का प्रयोग इसलिए किया जाता है क्योंकि इसकी गणना संपूर्ण जनसंख्या के आधार पर की जाती है। यह गणना जनसंख्या की आंतरिक जटिलताओं, जैसे कि आयु-संगठन या लिंग अनुपात को ध्यान में नहीं रखती है। यह केवल एक वर्ष में होने वाले जन्मों या मौतों का एक मोटा और सामान्य अनुमान प्रदान करती है। जनांकिकीय विश्लेषणों में इसे प्रारंभिक जानकारी के रूप में उपयोग किया जाता है ताकि बुनियादी प्रवृत्तियों का पता लग सके।

111. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
मनुष्य की पहली प्राथमिकता अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा होती है। जिन क्षेत्रों में सामाजिक तनाव, दंगे या राजनीतिक अस्थिरता होती है, वहाँ से लोग असुरक्षा के कारण बाहर चले जाते हैं। दूसरी ओर, जहाँ शांति, कानून का शासन और जीवन व संपत्ति की सुरक्षा की गारंटी होती है, वे स्थान लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। सुरक्षा और स्थिरता प्रवास के लिए अत्यंत शक्तिशाली अपकर्ष कारक के रूप में कार्य करते हैं, जो जनसंख्या वितरण को प्रभावित करते हैं।

112. (B) हिमालय के पर्वतीय भाग
भारत में जनसंख्या का वितरण भौगोलिक विविधता के कारण अत्यधिक असमान है। गंगा के उपजाऊ मैदान और तटीय क्षेत्र अपनी अनुकूल परिस्थितियों के कारण बहुत सघन बसे हुए

हैं। इसके विपरीत, हिमालय के पर्वतीय भाग अपनी विषम भू-आकृति, कठोर जलवायु और कृषि योग्य भूमि की कमी के कारण विरल जनसंख्या वाले क्षेत्र हैं। यहाँ आधारभूत सुविधाओं का विकास भी चुनौतीपूर्ण होता है, जिससे मानवीय बसाव सीमित रहता है और आबादी कम पाई जाती है।

113. (C) केवल 1, 2 और 3
विश्व की जनसंख्या का वितरण अत्यधिक विषम है, जहाँ 90% आबादी केवल 10% स्थलभाग पर रहती है। एशिया महाद्वीप जनसंख्या का सबसे बड़ा केंद्र है, जहाँ विश्व के दस सर्वाधिक आबादी वाले देशों में से छह स्थित हैं। लोग आमतौर पर पर्वतों के बजाय समतल मैदानों पर रहना पसंद करते हैं क्योंकि वहाँ कृषि और परिवहन आसान होता है। ये तथ्य वैश्विक जनांकिकीय संरचना और जनसंख्या की भौगोलिक प्रवृत्तियों को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण आधार प्रदान करते हैं।

114. (A) 8 करोड़
विश्व की जनसंख्या में होने वाली वार्षिक वृद्धि दर चिंता का विषय है, क्योंकि प्रतिवर्ष वैश्विक आबादी में लगभग 8 करोड़ नए लोग जुड़ जाते हैं। यह संख्या कई छोटे देशों की कुल आबादी से भी अधिक है। चिकित्सा विज्ञान में प्रगति और स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार के कारण मृत्यु दर में कमी आई है, जिससे जनसंख्या में यह निरंतर और भारी वृद्धि देखी जा रही है। यह बढ़ती जनसंख्या उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण पर निरंतर दबाव बढ़ा रही है।

115. (B) P-2, Q-4, R-3, S-1
प्रवास की प्रक्रिया को समझने के लिए उसके कारकों और प्रवासियों की भूमिका का ज्ञान आवश्यक है। प्रतिकर्ष कारक जैसे खराब जीवन दशाएँ लोगों को बाहर भेजती हैं, जबकि अपकर्ष कारक जैसे अनुकूल जलवायु उन्हें आकर्षित करते हैं। किसी स्थान को छोड़कर जाने वाला व्यक्ति वहाँ का उत्प्रवासी कहलाता है, और किसी नए स्थान पर आने वाला व्यक्ति आप्रवासी माना जाता है। ये अवधारणाएँ जनसंख्या की गतिशीलता और क्षेत्रीय जनांकिकीय परिवर्तनों का विश्लेषण करने के लिए आधारभूत उपकरण हैं।

116. (D) तृतीय अवस्था
जनांकिकीय संक्रमण की तृतीय या अंतिम अवस्था में समाज पूरी तरह से विकसित, नगरीय और शिक्षित हो जाता है। इस चरण में लोग तकनीकी रूप से भी दक्ष होते हैं। शिक्षा और जागरुकता के प्रसार के कारण, जनसंख्या विचारपूर्वक परिवार के आकार को नियंत्रित करती है। यहाँ प्रजननशीलता और मर्त्यता दोनों ही निम्न स्तर पर पहुँच जाती हैं। लोग उच्च जीवन स्तर और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को महत्व देते हैं, जिससे जनसंख्या वृद्धि बहुत धीमी या लगभग स्थिर हो जाती है।

117. (C) साक्षरता दर
जनसंख्या के आकार में परिवर्तन लाने के लिए मुख्य रुप से तीन घटक जिम्मेदार होते हैं: जन्म, मृत्यु और प्रवास। जन्म और मृत्यु दर के अंतर से प्राकृतिक परिवर्तन होता है, जबकि प्रवास लोगों के आने-जाने से संख्या को प्रभावित करता है। साक्षरता दर जनसंख्या की एक गुणवत्तापरक विशेषता या गुण है, न कि वह घटक जो सीधे तौर पर जनसंख्या की संख्यात्मक वृद्धि या कमी का कारण बनता है। हालाँकि, साक्षरता दर अप्रत्यक्ष रुप से प्रजननशीलता को प्रभावित कर सकती है।

118. (B) केवल 1, 2 और 3
जनांकिकीय संक्रमण के विभिन्न चरणों की अपनी विशिष्ट जनांकिकीय और सामाजिक पहचान है। प्रथम अवस्था में उच्च जन्म-मृत्यु दर के कारण विकास धीमा होता है और लोग अशिक्षित होते हैं। द्वितीय अवस्था में मृत्यु दर गिरने से जनसंख्या में तेजी से विस्तार होता है। तृतीय अवस्था में समाज विकसित और शिक्षित हो जाता है, जिससे वृद्धि दर फिर से धीमी हो जाती है। यह समझना गलत है कि प्रथम अवस्था के लोग शिक्षित होते हैं, क्योंकि वह समाज का प्रारंभिक चरण है।

119. (D) उसके निवासी
किसी भी राष्ट्र की असली महत्ता उसके क्षेत्रफल, प्राकृतिक संसाधनों या सैन्य शक्ति से अधिक वहाँ के लोगों में निहित होती है। निवासी ही वे वास्तविक संसाधन हैं जो अपनी बुद्धि, कौशल और परिश्रम से देश के संसाधनों को मूल्यवान बनाते हैं। वे ही राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत को सहेजते हैं और आर्थिक प्रगति के पहिए को गति देते हैं। अंततः, किसी देश का भविष्य और उसकी मजबूती वहाँ के नागरिकों की गुणवत्ता और उनके चारित्रिक मूल्यों पर ही निर्भर करती है।

120. (A) 1, 2, 3, 4
प्रवास का निर्णय एक क्रमिक और तार्किक प्रक्रिया का परिणाम होता है। सबसे पहले व्यक्ति अपने मूल स्थान पर बेरोजगारी या असुरक्षा जैसे प्रतिकर्ष कारकों का अनुभव करता है। इसके बाद वह अन्य स्थानों पर उपलब्ध बेहतर अवसरों या अपकर्ष कारकों के बारे में जानकारी जुटाता है। इन दोनों स्थितियों का विश्लेषण करने के बाद वह प्रवास का ठोस निर्णय लेता है और अंततः गंतव्य स्थान की ओर गमन करता है। यह क्रम मानवीय गतिशीलता के पीछे के आर्थिक और सामाजिक तर्क को स्पष्ट करता है।

121. (C) जनसंख्या व भूमि के आकार का अनुपात
जनसंख्या घनत्व एक महत्वपूर्ण सांख्यिकीय माप है जो किसी विशिष्ट क्षेत्र की जनसंख्या और वहाँ की उपलब्ध भूमि के बीच के वास्तविक संबंध को दर्शाता है। यह हमें बताता है कि प्रति इकाई क्षेत्र, जैसे एक वर्ग किलोमीटर, पर औसतन कितने लोग निर्भर हैं। यह अनुपात संसाधनों के वितरण, वहन क्षमता और उस क्षेत्र पर पड़ने वाले जनांकिकीय दबाव को समझने में मदद करता है। किसी भी क्षेत्र के नियोजन और विकास के लिए यह एक आधारभूत सूचना होती है।

122. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत भविष्य की जनसंख्या प्रवृत्तियों का सटीक पूर्वानुमान लगाने के लिए एक विश्वसनीय आधार प्रदान करता है। यह सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि समाज अपनी प्रगति के साथ जनांकिकीय विकास के समान चरणों से

गुज़रता है। चूँकि सभी समाजों के विकास का प्रारूप लगभग एक जैसा होता है, इसलिए पिछले अनुभवों के आधार पर यह अनुमान लगाना संभव हो जाता है कि आर्थिक उन्नति के साथ किसी क्षेत्र की जन्म और मृत्यु दर में कैसा बदलाव आएगा।

123. (D) 5 अरब से 6 अरब तक बढ़ने में जनसंख्या को 100 वर्ष लगे।
वैश्विक जनसंख्या वृद्धि की गति आधुनिक काल में अत्यंत तीव्र रही है। विगत 500 वर्षों में जनसंख्या 10 गुना से अधिक बढ़ी और 20वीं शताब्दी में यह 4 गुना बढ़ गई। यह तथ्य गलत है कि 5 अरब से 6 अरब होने में 100 वर्ष लगे, क्योंकि वास्तव में यह वृद्धि मात्र 12 वर्षों के अल्प समय में ही हो गई थी। यह तीव्र जनांकिकीय विस्तार स्वास्थ्य सेवाओं और पोषण के क्षेत्र में हुए सुधारों का सीधा परिणाम था।

124. (A) केवल 1, 2, 3 और 4
प्रवास के प्रतिकर्ष कारक वे प्रतिकूल परिस्थितियाँ हैं जो उद्गम स्थान को असुरक्षित या अनुपयोगी बनाती हैं। बेरोजगारी, राजनीतिक उपद्रव, प्रतिकूल जलवायु और महामारियाँ जैसे कारक लोगों को अपना घर छोड़ने के लिए मजबूर करते हैं क्योंकि ये उनके जीवन और आजीविका के लिए खतरा पैदा करते हैं। इसके विपरीत, काम के बेहतर अवसर एक अपकर्ष कारक है, क्योंकि यह लोगों को किसी नए स्थान की ओर अपनी स्वेच्छा से आकर्षित करता है और बेहतर भविष्य की उम्मीद जगाता है।

125. (C) प्रतिशत में व्यक्त परिवर्तन
जनांकिकी में 'जनसंख्या परिवर्तन की दर' का उपयोग दो समय अंतरालों के बीच आबादी में होने वाले बदलाव की गति को मापने के लिए किया जाता है। इसे सामान्यतः प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता है ताकि विभिन्न जनसंख्या समूहों के बीच तुलनात्मक अध्ययन सरल हो सके। यह दर हमें बताती है कि जनसंख्या कितनी तेजी से बढ़ रही है या घट रही है। यह भविष्य के जनांकिकीय रुझानों को समझने और संसाधनों की योजना बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण सांख्यिकीय उपकरण है।

126. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
भौगोलिक कारक जनसंख्या के स्थानिक वितरण को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। जल की सुलभ उपलब्धता के कारण नदी घाटियाँ ऐतिहासिक रूप से सघन आबाद रही हैं। समतल मैदान परिवहन और कृषि की सुगमता के कारण मानवीय बसाव के लिए पहली पसंद होते हैं। सुखद जलवायु वाले क्षेत्र लोगों को आकर्षित करते हैं, जबकि उपजाऊ दोमट मिट्टी गहन कृषि के लिए आधार प्रदान करती है। इन प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता ही किसी क्षेत्र के सघन या विरल होने को निर्धारित करती है।

127. (A) स्वास्थ्य संबंधी दशाओं व स्वच्छता में सुधार।
जनांकिकीय संक्रमण की द्वितीय अवस्था में मृत्यु दर में उल्लेखनीय गिरावट आती है। इसका मुख्य कारण चिकित्सा विज्ञान की उन्नति, स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार और व्यक्तिगत व सार्वजनिक स्वच्छता के प्रति बढ़ती जागरुकता है। इस चरण में महामारियों पर प्रभावी नियंत्रण पा लिया जाता है और बेहतर पोषण की उपलब्धता से जीवन प्रत्याशा बढ़ती है। हालाँकि जन्म दर काफी समय तक ऊँची बनी रहती है, लेकिन गिरती मृत्यु दर ही जनसंख्या विस्फोट की स्थिति पैदा करने के लिए जिम्मेदार होती है।

128. (B) राजनीतिक अशांति
जनसंख्या के वितरण और प्रवास को प्रभावित करने वाले कारकों में सामाजिक और राजनीतिक सुरक्षा का बड़ा महत्व है। राजनीतिक अशांति, गृहयुद्ध या दंगे जैसे सामाजिक कारक लोगों को अपने निवास स्थान से बाहर पलायन करने पर विवश करते हैं। लोग हमेशा उन क्षेत्रों में रहना पसंद करते हैं जहाँ उन्हें शांति और स्थायित्व का अनुभव हो। नगरीकरण और औद्योगीकरण जहाँ आर्थिक कारक हैं, वहीं राजनीतिक स्थिरता एक ऐसा सामाजिक-सांस्कृतिक आधार है जो मानवीय बसाव की सघनता को निर्धारित करता है।

129. (B) केवल 1, 2 और 3
जनसंख्या वृद्धि धनात्मक या ऋणात्मक दोनों स्वरुपों में हो सकती है। प्राकृतिक वृद्धि की गणना करने के लिए जन्म और मृत्यु दर के बीच का अंतर देखा जाता है। वास्तविक वृद्धि में प्राकृतिक वृद्धि के साथ-साथ प्रवास (आप्रवास और उत्प्रवास) के प्रभावों को भी जोड़ा जाता है। अशोधित जन्म दर की माप प्रति हज़ार जनसंख्या पर की जाती है, न कि प्रति सौ स्त्रियों पर। ये सभी अवधारणाएँ जनांकिकीय परिवर्तनों के सटीक और वैज्ञानिक विश्लेषण के लिए आधारभूत सांख्यिकीय उपकरण हैं।

130. (A) उच्च जन्म दर व गिरती मृत्यु दर
21वीं सदी के प्रारंभ में वैश्विक जनसंख्या का 600 करोड़ के पार होना जनांकिकीय बदलाव का एक बड़ा प्रमाण था। इस तीव्र वृद्धि का प्राथमिक कारण उच्च जन्म दर और स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार के कारण तेजी से गिरती मृत्यु दर के बीच का बढ़ता अंतर था। आधुनिक चिकित्सा तकनीक ने शिशु मृत्यु दर को कम किया और महामारियों पर नियंत्रण पाया, जिससे जनसंख्या में भारी शुद्ध योग हुआ। यह जनांकिकीय संक्रमण के दूसरे चरण की तीव्र गतिशीलता का परिणाम था।

131. (C) अनेक कारकों का संयोजन
जनसंख्या के स्थानिक वितरण का निर्णय केवल किसी एक कारक द्वारा नहीं होता, बल्कि यह अनेक कारकों के जटिल संयोजन का परिणाम है। इसमें भौगोलिक परिस्थितियाँ जैसे जल और जलवायु, आर्थिक कारक जैसे रोजगार और उद्योग, तथा सामाजिक-सांस्कृतिक कारक जैसे सुरक्षा और धार्मिक महत्व सामूहिक रूप से कार्य करते हैं। लोग उन स्थानों का चुनाव करते हैं जहाँ ये सभी कारक मिलकर जीवन को सुगम, सुरक्षित और आर्थिक रूप से लाभप्रद बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

132. (A) केवल 1, 2 और 3
प्रवास की प्रक्रिया जनांकिकीय संरचना को संतुलित करने का एक तरीका है। उद्गम स्थान पर लोगों के जाने से जनसंख्या कम

होती है, जबकि गंतव्य स्थान पर आप्रवास से आबादी बढ़ जाती है। प्रवास का स्वरुप स्थायी, अस्थायी या मौसमी हो सकता है, जो व्यक्ति की आवश्यकताओं पर निर्भर है। यह कहना गलत है कि प्रवास केवल एक दिशा में होता है या अपकर्ष कारक स्थान को कम आकर्षक बनाते हैं, क्योंकि वे वास्तव में आकर्षण का मुख्य केंद्र होते हैं।

133. (C) अवस्था I
जनांकिकीय संक्रमण की प्रथम अवस्था में प्रजननशीलता और मर्त्यता दोनों ही बहुत उच्च स्तर पर होती हैं। उच्च मृत्यु दर मुख्य रूप से महामारियों और खाद्य असुरक्षा के कारण होती है, जिसकी भरपाई करने के लिए समाज में उच्च जन्म दर की प्रवृत्ति पाई जाती है। इसके परिणामस्वरूप, जनसंख्या की कुल वृद्धि दर बहुत ही धीमी और उतार-चढ़ाव वाली बनी रहती है। यह अवस्था औद्योगिक क्रांति से पहले के अधिकांश समाजों की विशेषता रही है जहाँ विकास का स्तर प्रारंभिक था।

134. (B) भारत
विश्व के जनसंख्या परिदृश्य में भारत का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। ऐतिहासिक रूप से, चीन के बाद भारत विश्व का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश रहा है। हालाँकि हाल के वर्षों में भारत की जनसंख्या वृद्धि दर में कुछ कमी आई है, लेकिन यह अब भी वैश्विक मानवीय संसाधनों का एक विशाल केंद्र बना हुआ है। इतनी बड़ी जनसंख्या के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार की व्यवस्था करना देश की आर्थिक नीतियों और भविष्य की योजनाओं के लिए एक बड़ी जनांकिकीय चुनौती है।

135. (D) आर्थिक व सामाजिक प्रगति का सूचक
जनसंख्या परिवर्तन का अध्ययन केवल आँकड़ों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह किसी क्षेत्र की आर्थिक और सामाजिक प्रगति का एक महत्वपूर्ण दर्पण है। जनसंख्या की बदलती प्रवृत्तियाँ स्वास्थ्य सुविधाओं के विस्तार, शिक्षा के स्तर, नगरीकरण की गति और संसाधनों के उपभोग के प्रारुप को उजागर करती हैं। यह नीति-निर्माताओं को यह समझने में मदद करता है कि समाज विकास के किस चरण में है और भविष्य की आवश्यकताओं के अनुसार बुनियादी ढाँचे का नियोजन किस प्रकार किया जाना चाहिए।

136. (A) उसके लोगों से
किसी भी राष्ट्र का अस्तित्व उसकी सीमाओं, उसकी सरकारों या उसकी भौतिक संपदा से कहीं अधिक वहाँ के नागरिकों पर निर्भर करता है। लोग ही उस राष्ट्र की वास्तविक आत्मा और उसकी पहचान होते हैं। नागरिकों की बुद्धिमत्ता, उनके संस्कार और उनका परिश्रम ही संसाधनों को उपयोग में लाता है और राष्ट्र को महान बनाता है। बिना जागरूक और कार्यकुशल निवासियों के कोई भी देश केवल एक भौगोलिक मानचित्र बनकर रह जाता है, न कि एक जीवंत और प्रगतिशील राष्ट्र।

137. (C) जनसंख्या की ऋणात्मक वृद्धि
जनसंख्या की ऋणात्मक वृद्धि वह जनांकिकीय स्थिति है जिसमें दो समय बिंदुओं के बीच किसी क्षेत्र की कुल आबादी पहले की तुलना में कम हो जाती है। यह मुख्य रूप से तब घटित होता है जब उस क्षेत्र की मृत्यु दर वहाँ की जन्म दर से अधिक हो जाए। इसके अतिरिक्त, यदि लोग बड़ी संख्या में उस स्थान को छोड़कर अन्यत्र चले जाएँ (उत्प्रवास), तो भी यह स्थिति उत्पन्न होती है। यह प्रवृत्ती जनांकिकीय संकट और संसाधनों के कम उपयोग के भविष्य के जोखिमों का संकेत देती है।

138. (A) रहन-सहन की निम्न दशाएँ
प्रवास के कारकों में प्रतिकर्ष कारक वे नकारात्मक स्थितियाँ हैं जो लोगों को अपना निवास स्थान छोड़ने के लिए मजबूर करती हैं। रहन-सहन की निम्न दशाएँ, गरीबी और अवसरों का अभाव इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इसके विपरीत, शांति, अनुकूल जलवायु और रोजगार के अवसर अपकर्ष कारक माने जाते हैं क्योंकि ये गंतव्य स्थान को निवासियों के लिए आकर्षक बनाते हैं। लोग हमेशा अभावों से निकलकर उन क्षेत्रों की ओर गमन करते हैं जहाँ जीवन की गुणवत्ता बेहतर और सुरक्षित हो।

139. (D) महिलाओं के स्वास्थ्य का बेहतर होना
परिवार नियोजन सुविधाओं का सबसे महत्वपूर्ण और प्रत्यक्ष लाभ महिलाओं के स्वास्थ्य में होने वाला व्यापक सुधार है। बच्चों के जन्म के बीच उचित अंतराल रखने और अनचाहे गर्भ से बचाव की सुविधा मिलने से महिलाओं की शारीरिक और मानसिक स्थिति बेहतर होती है। यह न केवल मातृ मृत्यु दर को कम करने में सहायक है, बल्कि इससे महिलाएँ शिक्षा और रोजगार के अवसरों का लाभ उठाने के लिए भी सक्षम बनती हैं। यह सामाजिक-आर्थिक विकास और सशक्तिकरण का एक अनिवार्य घटक है।

140. (D) उपरोक्त सभी
जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले भौगोलिक कारक मानव जीवन की बुनियादी संभावनाओं को तय करते हैं। विषम मरुस्थलीय जलवायु जहाँ जीवन को कठिन बनाती है, वहीं भूमध्यसागरीय क्षेत्र अपनी सुखद जलवायु के कारण प्राचीन काल से ही सघन बसे रहे हैं। उपजाऊ मृदा कृषि उत्पादन के लिए अनिवार्य है और समतल मैदान आवास व परिवहन के लिए अनुकूलता प्रदान करते हैं। ये सभी कारक मिलकर यह निर्धारित करते हैं कि पृथ्वी के किन हिस्सों में मानव सभ्यता फलेगी-फूलेगी और आबादी सघन होगी।

141. (C) एक स्थान से बाहर चला जाता है।
प्रवास की प्रक्रिया में 'उत्प्रवासी' उस व्यक्ति को कहा जाता है जो अपने वर्तमान निवास स्थान को छोड़कर किसी अन्य स्थान पर बसने के लिए बाहर चला जाता है। उत्प्रवास के कारण उस मूल स्थान की कुल जनसंख्या में कमी आती है और अक्सर वहाँ की श्रम शक्ति का भी ह्रास होता है। यह कदम सामान्यतः बेरोजगारी, असुरक्षा या बेहतर भविष्य की तलाश में उठाया जाता है। उत्प्रवास की यह क्रिया उद्गम स्थान की जनांकिकीय संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव लाती है।

142. (D) दूसरी अवस्था में जन्म दर उच्च रहती है और मृत्यु दर घटती है, जबकि तीसरी अवस्था में जन्म दर भी घटने लगती है।
जनांकिकीय संक्रमण की दूसरी और तीसरी अवस्था में मुख्य अंतर जनसंख्या वृद्धि की गति का है। दूसरी अवस्था में स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार से मृत्यु दर तेजी से गिरती है लेकिन जन्म दर ऊँची ही बनी रहती है, जिससे भारी वृद्धि होती है। तीसरी अवस्था में समाज नगरीय और साक्षर हो जाता है, जिससे जन्म दर में भी गिरावट शुरु हो जाती है और जनसंख्या स्थिर होने की दिशा में बढ़ती है। यह बदलाव समाज के आर्थिक और जनांकिकीय परिपक्वता के स्तर को दर्शाता है।

143. (A) औद्योगीकरण
आर्थिक कारकों की श्रेणी में औद्योगीकरण जनसंख्या वितरण का एक अत्यंत शक्तिशाली कारक है। औद्योगिक इकाइयाँ न केवल श्रमिकों को सीधे रोजगार प्रदान करती हैं, बल्कि वे बैंकिंग, परिवहन, व्यापार और अन्य सेवा क्षेत्रों में भी बड़ी संख्या में अवसर पैदा करती हैं। रोजगार की इन प्रबल संभावनाओं के कारण लोग अपनी आजीविका के लिए औद्योगिक केंद्रों की ओर खिंचे चले आते हैं। इसके विपरीत, भू-आकृति, जलवायु और मृदा भौगोलिक कारकों की श्रेणी में आते हैं जो प्राकृतिक वातावरण को परिभाषित करते हैं।

144. (B) अपकर्ष कारक
प्रवास के संदर्भ में अपकर्ष कारक (Pull Factors) वे अनुकूल और आकर्षक स्थितियाँ हैं जो किसी गंतव्य स्थान को उद्गम स्थान की तुलना में अधिक श्रेष्ठ बनाती हैं। बेहतर रोजगार के अवसर, सुखद जलवायु, शांति, स्थायित्व और जीवन व संपत्ति की सुरक्षा जैसे कारक लोगों को नए क्षेत्रों में बसने के लिए प्रेरित करते हैं। ये कारक गंतव्य स्थान पर आप्रवास की दर को बढ़ाते हैं और वहाँ की जनसंख्या को सघन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे वह क्षेत्र समृद्ध होता है।

145. (B) उच्च जन्म/मृत्यु दर से निम्न जन्म/मृत्यु दर में।
जनांकिकीय संक्रमण सिद्धांत के अनुसार, जैसे-जैसे समाज का आर्थिक और सामाजिक विकास होता है, उसकी जनांकिकीय प्रवृत्तियों में स्पष्ट बदलाव आता है। समाज उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर वाली पारंपरिक पिछड़ी अवस्था से निकलकर निम्न जन्म दर और निम्न मृत्यु दर वाली आधुनिक उन्नत अवस्था की ओर अग्रसर होता है। यह परिवर्तन शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार और नगरीकरण का परिणाम है। इस प्रक्रिया के माध्यम से अंततः जनसंख्या स्थिर हो जाती है और जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है।

146. (D) उपरोक्त सभी
प्रवास एक बहुमुखी मानवीय गतिविधि है जो विभिन्न दिशाओं और रूपों में संपन्न होती है। यह केवल गाँवों से नगरों की ओर ही नहीं, बल्कि रोजगार या विवाह जैसे कारणों से गाँवों से गाँवों, नगरों से नगरों और विपरीत दिशा में नगरों से गाँवों की ओर भी हो सकता है। प्रवास के ये सभी प्रकार जनसंख्या के स्थानिक वितरण को निरंतर बदलते रहते हैं और विभिन्न क्षेत्रों के बीच सामाजिक-सांस्कृतिक आदान-प्रदान और संसाधनों के पुनर्वितरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

147. (C) जनसंख्या वृद्धि
किसी भी भौगोलिक क्षेत्र की जनसंख्या के आकार में एक निश्चित समय अवधि के दौरान होने वाले बदलाव के अध्ययन को जनसंख्या वृद्धि कहा जाता है। यह वृद्धि धनात्मक (आबादी बढ़ना) या ऋणात्मक (आबादी घटना) दोनों हो सकती है। यह केवल जन्म और मृत्यु पर ही नहीं, बल्कि प्रवास की प्रवृत्तियों पर भी निर्भर करती है। जनसंख्या वृद्धि का विश्लेषण किसी समाज की विकास यात्रा, स्वास्थ्य स्तर और संसाधनों के प्रति बढ़ती माँग को समझने के लिए एक अनिवार्य सांख्यिकीय आधार प्रदान करता है।

148. (D) जन्म दर और मृत्यु दर का हमेशा बराबर रहना।
प्रवास के जनांकिकीय और सामाजिक परिणाम अत्यंत व्यापक होते हैं। इससे उद्गम स्थान पर जनसंख्या कम हो जाती है और गंतव्य स्थान पर बढ़ जाती है, जिससे वहाँ के संसाधनों पर दबाव और आर्थिक गतिविधियों में बदलाव आता है। प्रवास मानव और संसाधनों के बीच के क्षेत्रीय संतुलन को पुनर्गठित करता है। हालाँकि, प्रवास का जन्म दर और मृत्यु दर को हमेशा बराबर रखने से कोई सीधा संबंध नहीं है, क्योंकि वे जैविक और स्वास्थ्य कारकों पर अधिक निर्भर करते हैं।

149. (D) भौगोलिक, आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक कारक
जनसंख्या के वितरण का निर्धारण किसी एक एकाकी कारक द्वारा नहीं होता। इसमें भौगोलिक कारक (जैसे जलवायु और जल), आर्थिक कारक (जैसे रोजगार और नगरीकरण), और सामाजिक-सांस्कृतिक कारक (जैसे सुरक्षा और धार्मिक महत्व) एक साथ मिलकर कार्य करते हैं। इन सभी कारकों का सामूहिक प्रभाव ही यह तय करता है कि लोग किन क्षेत्रों में सघन रूप से बसेंगे और किन क्षेत्रों को विरल या निर्जन छोड़ देंगे। यह एकीकृत दृष्टिकोण ही वैश्विक जनसंख्या के वास्तविक प्रारूप को स्पष्ट करता है।

150. (B) प्रजननशीलता व मर्त्यता का निम्न स्तर
जनांकिकीय संक्रमण की अंतिम अवस्था में जनसंख्या की वृद्धि दर बहुत मंद या स्थिर हो जाती है क्योंकि समाज पूरी तरह विकसित और साक्षर हो जाता है। इस चरण में चिकित्सा विज्ञान की उन्नति से मृत्यु दर न्यूनतम हो जाती है और लोग जागरूकता के कारण जन्म दर को भी नियंत्रित कर लेते हैं। प्रजननशीलता और मर्त्यता दोनों का यह निम्न स्तर जनसंख्या के जनांकिकीय स्थिरीकरण का मुख्य कारण बनता है। यह अवस्था संसाधनों के स्थायी प्रबंधन और उच्च जीवन स्तर का प्रतीक है।

151. (B) वितरण स्थानिक फैलाव को दर्शाता है, जबकि घनत्व एक औसत माप है।
जनसंख्या वितरण भूपृष्ठ पर लोगों के स्थानिक फैलाव के प्रारूप को संदर्भित करता है, जिससे पता चलता है कि लोग कहाँ बसे हैं। इसके विपरीत, जनसंख्या घनत्व एक औसत माप है जो कुल जनसंख्या और कुल क्षेत्रफल के बीच के अनुपात को दर्शाता है। वितरण असमानता को उजागर करता है जबकि घनत्व एक सामान्यीकृत सांख्यिकीय औसत प्रदान करता है।

152. (A) कुल जनसंख्या को कुल कृषि योग्य भूमि से विभाजित करके।
कायिक घनत्व एक महत्वपूर्ण जनांकिकीय माप है जो किसी क्षेत्र की जनसंख्या और उसकी उपलब्ध कृषि योग्य भूमि के बीच के वास्तविक संबंध को उजागर करता है। इसकी गणना करने के लिए क्षेत्र की संपूर्ण जनसंख्या को उस भूमि के कुल क्षेत्रफल से विभाजित किया जाता है जो खेती के योग्य होती है। यह भूमि की पोषण क्षमता पर दबाव का संकेतक है।

153. (C) यह दर्शाने के लिए कि कैसे अंकगणितीय घनत्व और कायिक घनत्व में बड़ा अंतर हो सकता है।
मिस्र का उदाहरण यह स्पष्ट करता है कि केवल कुल क्षेत्रफल के आधार पर घनत्व की गणना करना भ्रामक हो सकता है। वहां विशाल मरुस्थलों के कारण सामान्य घनत्व कम है, लेकिन कृषि योग्य भूमि अत्यंत सीमित होने से उस पर जनसंख्या का भार बहुत अधिक है। यह भौगोलिक विषमता अंकगणितीय और कायिक घनत्व के बीच एक बड़ा अंतर पैदा करती है।

154. (D) कृषि घनत्व
कृषि घनत्व एक विशिष्ट भौगोलिक उपकरण है जिसका उपयोग ग्रामीण अर्थव्यवस्था और भूमि पर निर्भरता के विश्लेषण हेतु किया जाता है। इसकी गणना ग्रामीण जनसंख्या को कुल उपलब्ध कृषि योग्य भूमि से विभाजित करके की जाती है। यह माप सीधे तौर पर कृषि दक्षता को दर्शाता है। इसके माध्यम से हम समझ सकते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि पर कितना दबाव है।

155. (C) एक कम अंकगणितीय घनत्व और एक उच्च कायिक घनत्व।
यदि किसी देश का विशाल भूभाग पर्वतीय या मरुस्थलीय है, तो उसका कुल क्षेत्रफल बहुत बड़ा होगा, जिससे अंकगणितीय घनत्व कम प्राप्त होगा। हालांकि, चूंकि जनसंख्या केवल छोटी उपजाऊ घाटियों में केंद्रित है, इसलिए उन सीमित कृषि योग्य क्षेत्रों पर जनसंख्या का बोझ बहुत अधिक होगा। इसके परिणामस्वरूप कायिक घनत्व बहुत उच्च हो जाएगा, जो संसाधनों पर वास्तविक दबाव दर्शाता है।

156. (B) प्रतिकर्ष कारक लोगों को दूर धकेलते हैं, जबकि अपकर्ष कारक उन्हें आकर्षित करते हैं।
प्रवास की प्रक्रिया मुख्य रूप से दो विपरीत प्रवृत्तियों द्वारा संचालित होती है। प्रतिकर्ष कारक उद्गम स्थान की वे प्रतिकूल स्थितियाँ हैं जो निवासियों को वहाँ से जाने के लिए विवश करती हैं। इसके विपरीत, अपकर्ष कारक गंतव्य स्थान की वे सकारात्मक विशेषताएँ हैं जो प्रवासियों को अपनी ओर खींचती हैं। इन दोनों कारकों की परस्पर क्रिया ही व्यक्ति के प्रवास का निर्णय निर्धारित करती है।

157. (D) किसी क्षेत्र में राजनीतिक अस्थिरता और संघर्ष।
प्रतिकर्ष कारक वे नकारात्मक परिस्थितियाँ होती हैं जो किसी व्यक्ति को अपने वर्तमान निवास स्थान को छोड़ने के लिए मजबूर करती हैं। राजनीतिक अस्थिरता, गृहयुद्ध, या किसी समुदाय का उत्पीड़न ऐसे ही सशक्त कारक हैं। ये स्थितियाँ जीवन और स्वतंत्रता के लिए असुरक्षा पैदा करती हैं, जिससे पलायन होता है। जबकि बेहतर शिक्षा या वेतन जैसे विकल्प गंतव्य को केवल आकर्षक बनाने वाले कारक हैं।

158. (A) सामाजिक (परिवार या समुदाय की उपस्थिति)
श्रृंखला प्रवास एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ पहले से बसे हुए प्रवासी अपने परिवार, मित्रों या समुदाय के सदस्यों को उसी गंतव्य स्थान पर आने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक अपकर्ष कारक के रूप में कार्य करता है। गंतव्य स्थान पर परिचित लोगों की उपस्थिति भविष्य की असुरक्षा को कम करती है और बसने की प्रक्रिया को काफी आसान और सुलभ बनाती है।

159. (C) वे कारक जो प्रवास की प्रक्रिया को कठिन या महंगा बनाते हैं।
प्रवास की योजना बनाते समय केवल प्रतिकर्ष और अपकर्ष कारक ही महत्वपूर्ण नहीं होते, बल्कि मार्ग में आने वाली चुनौतियाँ भी निर्णय को प्रभावित करती हैं। इन्हें मध्यवर्ती बाधाएँ कहा जाता है। इनमें गंतव्य की दूरी, यात्रा की उच्च लागत, कानूनी प्रतिबंध और भौगोलिक अवरोध शामिल हैं। ये बाधाएँ उद्गम और गंतव्य के बीच एक अवरोध के रूप में कार्य कर प्रवास को जटिल बनाती हैं।

160. (A) आर्थिक अपकर्ष कारक
जब कोई कुशल पेशेवर बेहतर वेतन और आधुनिक अनुसंधान सुविधाओं की तलाश में विदेश जाता है, तो यह निर्णय गंतव्य की सकारात्मक विशेषताओं से प्रेरित होता है। ये विशेषताएँ आर्थिक अपकर्ष कारकों की श्रेणी में आती हैं क्योंकि वे व्यक्ति की आर्थिक स्थिति में सुधार करती हैं। उच्च आय की संभावना और करियर विकास के अवसर व्यक्ति को स्वेच्छा से नए स्थान की ओर आकर्षित करते हैं।

161. (D) उच्च जन्म दर और तेजी से घटती मृत्यु दर।
जनांकिकीय संक्रमण मॉडल का दूसरा चरण विकास की प्रारंभिक अवस्था को दर्शाता है। इस दौरान चिकित्सा सुविधाओं में सुधार और खाद्य सुरक्षा के कारण मृत्यु दर में बहुत तेजी से गिरावट आती है। हालाँकि, सामाजिक परंपराओं के कारण जन्म दर अभी भी काफी उच्च बनी रहती है। जन्म और मृत्यु दर के बीच का यह बड़ा अंतर ही जनसंख्या में तीव्र वृद्धि का मुख्य कारण है।

162. (B) शहरीकरण, शिक्षा और गर्भनिरोधक तक पहुंच में वृद्धि के कारण।
संक्रमण मॉडल के तीसरे चरण में समाज की संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव आते हैं। शहरीकरण और शिक्षा के प्रसार से छोटे परिवारों को प्राथमिकता दी जाती है। महिलाओं की स्थिति में सुधार और गर्भनिरोधक साधनों की सुलभता जन्म दर को कम करने में निर्णायक भूमिका निभाती है। इस चरण में सामाजिक और आर्थिक प्रगति के परिणामस्वरूप प्रजनन दर में निरंतर गिरावट आती है, जिससे वृद्धि धीमी होती है।

163. (C) चरण 2
'जनसंख्या विस्फोट' की स्थिति तब उत्पन्न होती है जब मृत्यु दर में अचानक भारी गिरावट आती है, लेकिन जन्म दर पूर्ववत उच्च बनी रहती है। जनांकिकीय संक्रमण के दूसरे चरण में स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के कारण जीवन प्रत्याशा बढ़ती है। यह असंतुलन जनसंख्या में भारी वृद्धि करता है। यह चरण किसी भी राष्ट्र के जनांकिकीय इतिहास में सबसे अधिक जनसंख्या वृद्धि वाला समय माना जाता है।

164. (D) जन्म दर का मृत्यु दर से नीचे गिरना, जिससे जनसंख्या में गिरावट आती है।
जनांकिकीय संक्रमण का पाँचवाँ चरण एक अत्यधिक विकसित समाज की स्थिति को दर्शाता है। इस चरण में जन्म दर इतनी कम हो जाती है कि वह मृत्यु दर से भी नीचे चली जाती है। इसके परिणामस्वरुप, प्राकृतिक रूप से जनसंख्या बढ़ने के बजाय उसकी कुल संख्या घटने लगती है। यह स्थिति आमतौर पर उन विकसित देशों में देखी जाती है जहाँ आबादी बहुत तेजी से बूढ़ी हो रही है।

165. (A) चरण 1 और चरण 4
जनसंख्या वृद्धि की दर संक्रमण मॉडल के पहले और चौथे चरणों में सबसे कम या स्थिर होती है। पहले चरण में उच्च जन्म दर के साथ उच्च मृत्यु दर होती है, जिससे नेट वृद्धि बहुत कम रहती है। इसके विपरीत, चौथे चरण में जन्म दर और मृत्यु दर दोनों ही बहुत निम्न स्तर पर पहुँच जाती हैं, जिससे जनसंख्या का विकास पुनः स्थिर या बहुत धीमा हो जाता है।

166. (B) राजनीतिक नीतियां
जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों में जल की उपलब्धता, भू-आकृति और जलवायु प्रमुख भौतिक तत्व हैं। ये सीधे तौर पर मानव आवास की अनुकूलता और कृषि संभावनाओं को निर्धारित करते हैं। जबकि राजनीतिक नीतियां मानवीय या सांस्कृतिक कारकों का हिस्सा हैं। यद्यपि नीतियां जनसंख्या संचलन को प्रभावित कर सकती हैं, लेकिन वे प्राकृतिक पर्यावरण के भौतिक स्वरुप का अंग नहीं मानी जातीं।

167. (B) क्योंकि जल कृषि, पीने और परिवहन के लिए आवश्यक है।
इतिहास के आरंभ से ही मानव सभ्यताओं का विकास नदी घाटियों में हुआ है। नदियाँ मीठे पानी का निरंतर स्रोत प्रदान करती हैं, जो जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं जैसे पीने और स्वच्छता के लिए अनिवार्य है। नदियों के किनारे की उपजाऊ मिट्टी कृषि के लिए उपयुक्त होती है और जल परिवहन व्यापार को सुलभ बनाता है। इन बहुमुखी लाभों ने नदी घाटियों को सघन आबादी वाला बनाया है।

168. (A) पृथ्वी का वह भाग जिस पर स्थायी मानव बस्तियाँ हैं।
भूगोल में 'एकुमेन' शब्द का प्रयोग पृथ्वी की सतह के उस हिस्से के लिए किया जाता है जहाँ मनुष्य स्थायी रूप से निवास करते हैं और अपनी गतिविधियाँ संचालित करते हैं। यह वह क्षेत्र है जहाँ जलवायु, जल और मिट्टी जैसी स्थितियाँ मानव जीवन के अनुकूल पाई जाती हैं। यह अवधारणा बसे हुए विश्व को उन क्षेत्रों से अलग करती है जो निर्जन या रहने के लिए अनुपयुक्त हैं।

169. (C) ऊबड़-खाबड़ पहाड़ी इलाके
भू-आकृति जनसंख्या के वितरण में निर्णायक भूमिका निभाती है। पहाड़ी क्षेत्र अपनी कठिन ढलानों, कम उपजाऊ मिट्टी और परिवहन की समस्याओं के कारण मानव बसाव के लिए चुनौतीपूर्ण होते हैं। यहाँ बुनियादी ढांचे का निर्माण करना कठिन होता है, जिससे आर्थिक गतिविधियाँ सीमित हो जाती हैं। इसके विपरीत, समतल मैदानी इलाके कृषि और उद्योगों के लिए सुलभ होने के कारण हमेशा सघन आबादी वाले क्षेत्र बने रहते हैं।

170. (D) मृदा की उर्वरता
'एडैफिक कारक' विशेष रूप से मिट्टी की उन विशेषताओं से संबंधित होते हैं जो पौधों की वृद्धि और कृषि उत्पादकता को प्रभावित करते हैं। इसमें मृदा की उर्वरता और उसकी संरचना शामिल है। उपजाऊ मिट्टी वाले क्षेत्रों में कृषि उत्पादन अधिक होता है, जो बड़ी जनसंख्या का समर्थन कर सकता है। इसलिए, जनसंख्या वितरण के विश्लेषण में मिट्टी की गुणवत्ता को एक महत्वपूर्ण भौतिक तत्व के रूप में माना जाता है।

171. (C) शहरी जनसंख्या घनत्व में तीव्र वृद्धि।
नगरीकरण की प्रक्रिया में जब लोग भारी संख्या में गाँवों से शहरों की ओर पलायन करते हैं, तो शहर की सीमित भूमि पर अचानक लोगों का बोझ बढ़ जाता है। इसका सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव जनसंख्या घनत्व में होने वाली जबरदस्त वृद्धि के रूप में दिखाई देता है। यह वृद्धि शहर के बुनियादी ढांचे जैसे आवास, जल आपूर्ति और स्वच्छता प्रणाली पर तत्काल और भारी दबाव उत्पन्न कर देती है।

172. (B) पुरुषों की संख्या महिलाओं से अधिक हो जाती है।
प्रवास के प्रारंभिक दौर में अक्सर कार्यशील आयु वर्ग के पुरुष ही रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन करते हैं। वे आमतौर पर अपने परिवार को ग्रामीण क्षेत्रों में ही छोड़ देते हैं। इस चयनात्मक प्रवास के कारण शहरी क्षेत्रों में पुरुषों का अनुपात महिलाओं की तुलना में बहुत अधिक बढ़ जाता है, जिससे लिंगानुपात असंतुलित हो जाता है। यह शहरी प्रवास का एक प्रमुख जनांकिकीय लक्षण है।

173. (D) शहरी जीवनशैली, शिक्षा के उच्च स्तर और स्वास्थ्य सेवाओं तक बेहतर पहुंच के कारण।
शहरी क्षेत्रों में प्रजनन दर कम होने के पीछे कई सामाजिक और आर्थिक कारण हैं। शहरों में शिक्षा का स्तर उच्च होता है, जिससे लोग परिवार नियोजन के प्रति जागरूक होते हैं। शहरी जीवन की उच्च लागत और महिलाओं की श्रम शक्ति में भागीदारी भी छोटे परिवार चुनने के लिए प्रेरित करती है। साथ ही, बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के कारण बाल मृत्यु दर में कमी आती है।

174. (A) अनियंत्रित नगरीकरण और आवास की कमी का।
जब शहरों में जनसंख्या की वृद्धि नियोजित विकास और आवास की उपलब्धता से अधिक हो जाती है, तो गंभीर समस्या उत्पन्न होती है। कम आय वाले प्रवासियों के लिए औपचारिक आवास महंगे होते हैं, जिससे वे शहरों के खाली किनारों पर अवैध बस्तियाँ बसा लेते हैं। इन अनौपचारिक बस्तियों या झुग्गियों का उदय अनियंत्रित नगरीकरण की विफलता और तेजी से बढ़ते जनसंख्या दबाव का परिणाम है।

175. (C) नगरीकरण एक जटिल प्रक्रिया है जो शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के लिए जनांकिकीय चुनौतियां और अवसर पैदा करती है।
नगरीकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है जो पूरे समाज की जनांकिकीय बनावट को बदल देती है। यह शहरों में विकास के नए अवसर लाती है, लेकिन साथ ही भीड़भाड़ और बुनियादी ढांचे पर दबाव जैसी चुनौतियाँ भी पेश करती है। इसी तरह, ग्रामीण क्षेत्रों में यह श्रम शक्ति और लिंगानुपात को प्रभावित करती है। यह शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के विकास और संरचना को गहराई से प्रभावित करती है।

अध्याय 03
मानव विकास

1. वृद्धि के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
(A) यह सदैव गुणात्मक होती है।
(B) यह मात्रात्मक और मूल्य निरपेक्ष है।
(C) यह मूल्य सापेक्ष होती है।
(D) इसका चिह्न केवल धनात्मक हो सकता है।

2. निम्नलिखित में से कौन-सा उपागम अमर्त्य सेन से संबंधित है?
(A) क्षमता उपागम
(B) आय उपागम
(C) कल्याण उपागम
(D) आधारभूत आवश्यकता उपागम

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह सूचकांक 0 से 10 के स्कोर पर आधारित है।
2. स्वास्थ्य का मूल्यांकन जन्म के समय जीवन-प्रत्याशा के आधार पर किया जाता है।
3. संसाधनों तक पहुँच को क्रय शक्ति के संदर्भ में मापा जाता है।
4. प्रत्येक आयाम को 1/2 भारिता दी जाती है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 2, 3 और 4

4. विकास का मूल उद्देश्य क्या है?
(A) केवल राष्ट्र की आर्थिक वृद्धि को निरंतर बढ़ावा देना
(B) केवल देश की कुल जनसंख्या में निरंतर वृद्धि करना
(C) केवल देश की राष्ट्रीय आय को निरंतर अधिकतम करना
(D) सार्थक जीवन व्यतीत करने योग्य दशाएँ उत्पन्न करना

5. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए:
अभिकथन (A): किसी देश के विकास के स्तर को केवल आर्थिक वृद्धि के संदर्भ में मापना अपर्याप्त है।
कारण (R): विकास का संबंध लोगों के जीवन की गुणवत्ता, उन्हें उपलब्ध अवसरों और उनके द्वारा भोगी जाने वाली स्वतंत्रताओं से है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

6. मानव विकास की अवधारणा का प्रतिपादन किसके द्वारा किया गया था?
(A) अमर्त्य सेन
(B) महबूब-उल-हक
(C) एलन सी. सेम्पुल
(D) रैटजेल

7. निम्नलिखित में से कौन-सा एक मानव विकास का स्तंभ नहीं है?
(A) समता
(B) सतत पोषणीयता
(C) सशक्तीकरण
(D) भेदभाव

8. निम्नलिखित मदों को सुमेलित कीजिए:
List I: (उपागम)
P. आय उपागम
Q. कल्याण उपागम
R. आधारभूत आवश्यकता उपागम
S. क्षमता उपागम

List II: (मुख्य विचार)
1. मानव को निष्क्रिय प्राप्तकर्ता मानना
2. आय के स्तर को स्वतंत्रता का द्योतक मानना
3. मानव क्षमताओं का निर्माण
4. छः न्यूनतम आवश्यकताओं पर बल

(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

9. 'विकास' के संदर्भ में कौन-सा कथन असत्य है?
(A) यह गुणात्मक परिवर्तन है।
(B) यह मूल्य सापेक्ष होता है।
(C) सकारात्मक वृद्धि से सदैव विकास होता है।
(D) यह तब होता है जब गुणवत्ता में सकारात्मक परिवर्तन होता है।

10. निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिए और उन्हें सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. महबूब-उल-हक द्वारा मानव विकास सूचकांक का निर्माण।
2. सोवियत संघ का विघटन।
3. मानव विकास की अवधारणा का स्पष्टीकरण।

4. 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम का शुभारंभ।
(A) 3, 1, 2, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 4, 3, 2, 1

11. मानव विकास के कल्याण उपागम की मुख्य विशेषता क्या है?
(A) यह लोगों को विकास प्रक्रिया में सक्रिय प्रतिभागी मानता है
(B) यह आय को मानव विकास का एकमात्र प्रमुख मापदंड मानता है
(C) यह मुख्य रूप से मानव क्षमताओं के निर्माण पर बल देता है
(D) मानव को सभी विकासात्मक गतिविधियों के लक्ष्य के रूप में देखना

12. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. समता का आशय अवसरों तक समान पहुँच है।
2. सतत पोषणीयता का अर्थ अवसरों की उपलब्धता में निरंतरता है।
3. उत्पादकता का अर्थ मानव श्रम की उत्पादकता है।
4. सशक्तीकरण का अर्थ अपने विकल्प चुनने के लिए शक्ति प्राप्त करना है।
5. अमर्त्य सेन ने इन चार स्तंभों का प्रतिपादन किया।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 5
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 4
(D) उपरोक्त सभी

13. 'सार्थक जीवन' की अवधारणा में क्या शामिल नहीं है?
(A) दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन
(B) अपने विवेक और बुद्धि का विकास
(C) केवल भौतिक संपत्ति का संचय
(D) समाज में प्रतिभागिता

14. मानव विकास सूचकांक (HDI) में शिक्षा संबंधी घटक का मापन किससे किया जाता है?
(A) केवल प्रौढ़ साक्षरता दर द्वारा मापन
(B) केवल सकल नामांकन अनुपात द्वारा मापन
(C) विद्यालय छोड़ने वाले बच्चों की संख्या से
(D) साक्षरता दर और सकल नामांकन अनुपात से

15. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) ने किस उपागम का प्रस्ताव किया था?
(A) आधारभूत आवश्यकता उपागम
(B) आय उपागम
(C) कल्याण उपागम
(D) क्षमता उपागम

16. मानव विकास के निम्न स्तर वाले देशों की एक सामान्य विशेषता क्या है?
(A) वे देश सामाजिक सेक्टरों में अत्यधिक निवेश करते हैं
(B) सामाजिक सेक्टरों की बजाय प्रतिरक्षा पर अधिक व्यय करना
(C) वे देश राजनीतिक रूप से पूर्णतः स्थिर होते हैं
(D) उनमें संसाधनों का वितरण पूर्णतः समान होता है

17. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए:
अभिकथन (A): मानव विकास के उच्च स्तरों वाले देश सामाजिक सेक्टरों में अधिक निवेश करते हैं।
कारण (R): लोगों और सुशासन में उच्चतर निवेश ने इन देशों को अन्य देशों से अलग कर दिया है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

18. भूटान ने देश की प्रगति की आधिकारिक माप के रूप में किसे घोषित किया है?
(A) सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता (GNH)
(B) सकल घरेलू उत्पाद (GDP)
(C) सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)
(D) मानव विकास सूचकांक (HDI)

19. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मानव विकास सूचकांक (HDI) मानव विकास में प्राप्तियों का मापन करता है।
2. मानव गरीबी सूचकांक (HPI) मानव विकास में कमी को मापता है।
3. HPI एक आय-सहित माप है।
4. HDI वितरण के संबंध में मौन है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) उपरोक्त सभी

20. मानव विकास के 'समता' स्तंभ का सबसे उपयुक्त वर्णन कौन-सा है?
(A) भविष्य की पीढ़ियों हेतु अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित करना
(B) मानव श्रम की उत्पादकता में निरंतर तीव्र वृद्धि करना
(C) लोगों को स्वयं के विकल्प चुनने हेतु शक्ति प्रदान करना
(D) प्रत्येक व्यक्ति को उपलब्ध अवसरों के लिए समान पहुँच की व्यवस्था।

21. निम्नलिखित मदों को सुमेलित कीजिए:
List I: (HDI स्तर)

P. अति उच्च
Q. उच्च
R. मध्यम
S. निम्न

List II: (स्कोर परास 2023-24)
1. 0.550 से 0.699 के बीच
2. 0.800 से ऊपर
3. 0.550 से नीचे
4. 0.700 से 0.799 के बीच

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

22. मानव विकास की अंतर्राष्ट्रीय तुलनाओं के बारे में क्या सत्य है?
(A) प्रदेश के आकार का मानव विकास से सीधा संबंध है।
(B) प्रायः मानव विकास में बड़े देशों की अपेक्षा छोटे देशों का कार्य बेहतर रहा है।
(C) प्रति व्यक्ति आय का मानव विकास से हमेशा प्रत्यक्ष संबंध होता है।
(D) धनी राष्ट्रों का कोटि-क्रम हमेशा अपने निर्धन पड़ोसियों से ऊँचा रहा है।

23. 'सतत पोषणीयता' के स्तंभ का क्या अर्थ है?
(A) समाज के सभी लोगों हेतु समान अवसर उपलब्ध करना
(B) निरंतर मानव श्रम की उत्पादकता में वृद्धि करना
(C) शासन द्वारा लोगों को विकल्प चुनने की शक्ति देना
(D) अवसरों की उपलब्धता में निरंतरता सुनिश्चित करना

24. मानव गरीबी सूचकांक (HPI) में निम्नलिखित में से किसे शामिल नहीं किया जाता है?
(A) प्रति व्यक्ति आय
(B) 40 वर्ष की आयु तक जीवित न रह पाने की संभाव्यता
(C) प्रौढ़ निरक्षरता दर
(D) अल्पभार वाले छोटे बच्चों की संख्या

25. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वृद्धि मात्रात्मक और मूल्य निरपेक्ष है।
2. विकास गुणात्मक और मूल्य सापेक्ष है।
3. महबूब-उल-हक ने मानव विकास की अवधारणा का प्रतिपादन किया।
4. अमर्त्य सेन ने विकास का मुख्य ध्येय स्वतंत्रता में वृद्धि के रूप में देखा।
5. मानव विकास सूचकांक 1995 में बनाया गया था।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन असत्य है/हैं?
(A) केवल 5
(B) केवल 4 और 5
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 3 और 4

26. 1990 से वार्षिक मानव विकास प्रतिवेदन कौन प्रकाशित कर रहा है?
(A) संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP)
(B) विश्व बैंक
(C) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
(D) अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO)

27. मानव विकास के 'उत्पादकता' स्तंभ का संबंध किससे है?
(A) सीमित वित्तीय संसाधनों के उत्पादन में वृद्धि से
(B) नवीन तकनीकों द्वारा कृषि उपज को बढ़ाने से
(C) औद्योगिक उत्पादन में होने वाली तीव्र वृद्धि से
(D) मानव कार्य अथवा मानव श्रम की उत्पादकता से

28. आधारभूत आवश्यकता उपागम में पहचानी गई छः न्यूनतम आवश्यकताओं में से कौन-सी एक नहीं है?
(A) स्वास्थ्य
(B) मनोरंजन
(C) शिक्षा
(D) भोजन

29. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए:
अभिकथन (A): बालिकाओं को विद्यालय भेजा जाना सतत पोषणीय विकास का एक अच्छा उदाहरण है।
कारण (R): यदि समुदाय बालिकाओं को शिक्षित करने पर जोर नहीं देता, तो युवा होने पर उनके वृत्तिका के विकल्प सीमित हो जाएँगे, जो सतत पोषणीयता के सिद्धांत के विरुद्ध है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

30. मानव विकास के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष कौन-से हैं?
(A) केवल धन कमाना और भौतिक संपत्ति को एकत्रित करना
(B) केवल राजनीतिक शक्ति और विशेष अधिकार प्राप्त करना
(C) शहरी क्षेत्रों में निवास और औद्योगिकीकरण को बढ़ाना
(D) स्वस्थ जीवन, ज्ञान प्राप्ति और शिष्ट जीवन के साधन

31. निम्नलिखित में से कौन-सा देश 'अति उच्च' मानव विकास समूह में शामिल नहीं है?
(A) भारत
(B) स्विट्ज़रलैंड
(C) नॉर्वे
(D) सिंगापुर

32. निम्नलिखित मदों को सुमेलित कीजिए:
List I: (मानव विकास का स्तंभ)

P. समता
Q. सतत पोषणीयता
R. उत्पादकता
S. सशक्तीकरण

List II: (उदाहरण/अनुप्रयोग)
1. लोगों में क्षमताओं का निर्माण करके कार्यक्षमता बेहतर करना
2. अपने विकल्प चुनने के लिए शक्ति प्राप्त करना
3. लिंग या जाति के भेद के बिना अवसरों तक समान पहुँच
4. भावी पीढ़ियों के लिए अवसरों को सुनिश्चित करना

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

33. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मानव विकास का आय उपागम सबसे पुराने उपागमों में से एक है।
2. कल्याण उपागम लोगों को विकास में निष्क्रिय प्राप्तकर्त्ता मानता है।
3. आधारभूत आवश्यकता उपागम में मानव विकल्पों के प्रश्न पर जोर दिया गया है।
4. क्षमता उपागम का संबंध संसाधनों तक पहुँच के क्षेत्रों में मानव क्षमताओं के निर्माण से है।

उपरोक्त में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 3
(D) केवल 4

34. मानव विकास सूचकांक में विभिन्न आयामों को कितना भार दिया जाता है?
(A) प्रत्येक को 1/3 भारिता
(B) प्रत्येक को 1/2 भारिता
(C) प्रत्येक को 1/4 भारिता
(D) प्रत्येक को समान भारिता नहीं दी जाती

35. निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिए और उन्हें सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. महबूब-उल-हक और अमर्त्य सेन द्वारा विकास के वैकल्पिक विचार का प्रतिपादन।
2. दशकों तक विकास को केवल आर्थिक वृद्धि से मापना।
3. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा प्रथम मानव विकास प्रतिवेदन का प्रकाशन।

(A) 2, 1, 3
(B) 1, 2, 3
(C) 3, 1, 2
(D) 2, 3, 1

36. मानव विकास प्रतिवेदन 2023-24 के अनुसार, 'मध्यम' मानव विकास स्तर वाले देशों की संख्या कितनी है?
(A) 69
(B) 49
(C) 33
(D) 42

37. "आज जो वस्तुएँ हैं उन्हें देखते हो और पूछते हो क्यों? मैं उन वस्तुओं का स्वप्न लेता हूँ जो कभी नहीं थीं और पूछता हूँ ये क्यों नहीं हैं?" - यह कथन किसके विचारों को दर्शाता है?
(A) अमर्त्य सेन
(B) नेल्सन मंडेला
(C) महबूब-उल-हक
(D) महात्मा गांधी

38. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. श्रीलंका का मानव विकास सूचकांक भारत से ऊँचा है।
2. केरल का प्रदर्शन पंजाब और गुजरात से बेहतर है।
3. भूटान सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता (GNH) को प्रगति का मापदंड मानता है।
4. भारत 'अति उच्च' मानव विकास वाले देशों की श्रेणी में आता है।
5. मानव विकास में बड़े देशों का कार्य हमेशा छोटे देशों से बेहतर होता है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) उपरोक्त सभी

39. यदि किसी नगर की जनसंख्या एक लाख से दो लाख हो जाती है, लेकिन मूलभूत सेवाओं में कोई सुधार नहीं होता, तो इसे क्या कहा जाएगा?
(A) विकास सहित वृद्धि
(B) ऋणात्मक वृद्धि
(C) स्थिर विकास
(D) विकासहीन वृद्धि

40. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए:
अभिकथन (A): मानव विकास के निम्न स्तरों वाले देश प्रायः राजनीतिक अस्थिरता वाले क्षेत्रों में पड़ते हैं।
कारण (R): ये देश सामाजिक क्षेत्रों की अपेक्षा प्रतिरक्षा पर अधिक व्यय करते हैं, जिससे मानव विकास के लिए आवश्यक निवेश कम हो जाता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

41. मानव विकास के संदर्भ में 'निर्वहन' का क्या अर्थ है?
(A) अवसरों का अभाव

(B) केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए अवसर
(C) अवसरों की उपलब्धता में निरंतरता
(D) संसाधनों का अनियंत्रित उपयोग

42. विकास का वर्णन 'स्वतंत्रता में वृद्धि' के रूप में किसने किया है?
(A) अमर्त्य सेन
(B) महबूब-उल-हक
(C) अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन
(D) संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम

43. निम्नलिखित मदों को सुमेलित कीजिए:
List I: (अवधारणा)
P. वृद्धि
Q. विकास
R. सार्थक जीवन
S. सशक्तीकरण
List II: (वर्णन)
1. गुणात्मक परिवर्तन जो मूल्य सापेक्ष हो
2. मात्रात्मक परिवर्तन जो मूल्य निरपेक्ष हो
3. अपने विकल्प चुनने के लिए शक्ति प्राप्त करना
4. उद्देश्यपूर्ण और स्वस्थ जीवन
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

44. मानव विकास सूचकांक का स्कोर 0.983 क्या दर्शाता है?
(A) मानव विकास का अत्यंत निम्न स्तर
(B) मानव विकास का अति उच्च स्तर
(C) मानव विकास का मध्यम स्तर
(D) मानव विकास का अभाव

45. निम्नलिखित में से कौन-सा एक दक्षिण एशियाई अर्थशास्त्री मानव विकास की अवधारणा से प्रमुख रूप से जुड़ा नहीं है?
(A) महबूब-उल-हक
(B) अमर्त्य सेन
(C) एडम स्मिथ
(D) उपरोक्त में से कोई नहीं

46. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मानव विकास के मध्यम स्तर वाले देशों का वर्ग विशालतम है।
2. इस वर्ग के अधिकांश देशों का विकास द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हुआ।
3. इन देशों में सामाजिक विविधता उच्च मानव विकास वाले देशों से अधिक पाई जाती है।
4. ये सभी देश राजनीतिक रूप से पूर्णतः स्थिर हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

47. 'सशक्तीकरण' का सबसे अच्छा वर्णन क्या है?
(A) अपने विकल्प चुनने के लिए शक्ति प्राप्त करना
(B) आर्थिक रूप से मजबूत होना
(C) राजनीतिक दल का सदस्य बनना
(D) शारीरिक रूप से बलवान होना

48. मानव विकास प्रतिवेदन 2023-24 के अनुसार, 0.800 से ऊपर स्कोर वाले देशों को किस श्रेणी में रखा जाता है?
(A) निम्न
(B) अति उच्च
(C) मध्यम
(D) उच्च

49. निम्नलिखित में से किस एक कारण से लोगों के विकल्प सीमित हो सकते हैं?
(A) उच्च शिक्षा
(B) सामाजिक भेदभाव
(C) उत्तम स्वास्थ्य
(D) आर्थिक स्वतंत्रता

50. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए:
अभिकथन (A): एक अशिक्षित बच्चा डॉक्टर बनने का विकल्प नहीं चुन सकता।
कारण (R): शिक्षा के अभाव में व्यक्ति के विकल्प सीमित हो जाते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

51. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मानव विकास की अवधारणा 80 के दशक के अंत में स्पष्ट हुई।
2. महबूब-उल-हक एक पाकिस्तानी अर्थशास्त्री थे।
3. अमर्त्य सेन एक नोबेल पुरस्कार विजेता हैं।
4. मानव विकास सूचकांक 1990 में निर्मित किया गया।
5. मानव विकास प्रतिवेदन विश्व बैंक द्वारा प्रकाशित किया जाता है।
उपरोक्त में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) केवल 5
(B) केवल 4 और 5
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 3 और 5

52. निम्नलिखित में से कौन-सा कारक मानव विकास के निम्न स्तरों के लिए उत्तरदायी है?

(A) सामाजिक सेक्टर पर उच्च व्यय
(B) राजनीतिक स्थिरता
(C) संसाधनों का समान वितरण
(D) राजनीतिक उपद्रव और सामाजिक अस्थिरता

53. लोगों को सशक्त करने के लिए किसकी आवश्यकता होती है?
(A) तानाशाही शासन
(B) अवसरों को सीमित करना
(C) सुशासन एवं लोकोन्मुखी नीतियाँ
(D) सूचना तक पहुँच को रोकना

54. निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिए और उन्हें सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. मानव विकास के 'उच्च' स्तर वाले देशों का औद्योगिकरण।
2. मानव विकास के 'मध्यम' स्तर वाले अधिकांश देशों का विकास (द्वितीय विश्व युद्ध के बाद)।
3. सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् कुछ नए देशों का उदय।

(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 3, 2, 1
(D) 1, 3, 2

55. मानव विकास के 'कल्याण उपागम' की आलोचना क्यों की जाती है?
(A) क्योंकि यह आय पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित करता है।
(B) क्योंकि यह केवल आधारभूत आवश्यकताओं पर विचार करता है।
(C) क्योंकि यह बहुत जटिल है।
(D) क्योंकि यह लोगों को 'निष्क्रिय प्राप्तकर्त्ता' के रूप में देखता है।

56. निम्नलिखित मदों को सुमेलित कीजिए:
List I: (HDI संकेतक)
P. स्वास्थ्य
Q. शिक्षा
R. संसाधनों तक पहुँच
S. HDI स्कोर
List II: (माप)
1. प्रौढ़ साक्षरता दर और सकल नामांकन अनुपात
2. क्रय शक्ति (अमेरिकी डॉलर में)
3. जन्म के समय जीवन-प्रत्याशा
4. 0 से 1 के बीच

(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-2, R-1, S-4

57. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वृद्धि का चिह्न धनात्मक अथवा ऋणात्मक हो सकता है।
2. विकास तब तक नहीं हो सकता जब तक वर्तमान दशाओं में वृद्धि न हो।
3. ऋणात्मक वृद्धि का एक उदाहरण सुनामी से प्रभावित नगर हो सकता है।
4. विकास का अर्थ केवल जनसंख्या में वृद्धि है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) उपरोक्त सभी

58. मानव विकास सूचकांक की एक प्रमुख सीमा क्या है?
(A) यह वितरण के संबंध में मौन है।
(B) यह बहुत सरल है।
(C) यह केवल आर्थिक कारकों को मापता है।
(D) इसके आँकड़े अविश्वसनीय हैं।

59. महबूब-उल-हक के अनुसार, विकास का संबंध किससे है?
(A) लोगों के विकल्पों में कमी से
(B) केवल राष्ट्रीय आय में वृद्धि से
(C) केवल अवसंरचना निर्माण से
(D) लोगों के विकल्पों में बढ़ोतरी से

60. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए:
अभिकथन (A): भारत में स्त्रियाँ और सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए वर्गों के व्यक्ति बड़ी संख्या में विद्यालय से विरत होते हैं।
कारण (R): शिक्षा तक पहुँच न होना इन वर्गों के विकल्पों को सीमित करता है, जो समता के सिद्धांत के विरुद्ध है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

61. मानव विकास के केंद्र बिंदु क्या हैं?
(A) उद्योग, कृषि और सेवाएँ
(B) शहरीकरण, परिवहन और संचार
(C) संसाधन, स्वास्थ्य और शिक्षा
(D) आय, लाभ और निवेश

62. मानव विकास प्रतिवेदन 2023-24 के अनुसार, 0.550 से नीचे स्कोर वाले देशों को किस श्रेणी में रखा जाता है?
(A) अति उच्च
(B) उच्च
(C) मध्यम
(D) निम्न

63. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मानव विकास का आय उपागम में, आय के स्तर को स्वतंत्रता के स्तर का परिचायक माना जाता है।
2. कल्याण उपागम शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा पर उच्चतर सरकारी व्यय का तर्क देता है।
3. आधारभूत आवश्यकता उपागम अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा प्रस्तावित किया गया था।
4. क्षमता उपागम का संबंध अमर्त्य सेन से है।
5. आधारभूत आवश्यकता उपागम में छः न्यूनतम आवश्यकताओं की पहचान की गई थी।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?

(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) उपरोक्त सभी

64. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन मानव विकास के उच्च स्तर वाले देशों की विशेषता नहीं है?

(A) सामाजिक खंड में बहुत निवेश
(B) उच्च सामाजिक विविधता
(C) पूर्व साम्राज्य शक्तियाँ होना
(D) अधिकांश का यूरोप में अवस्थित होना

65. 'विकासहीन वृद्धि' का क्या अर्थ है?

(A) मात्रात्मक वृद्धि के साथ गुणात्मक सुधार
(B) गुणात्मक सुधार के बिना केवल मात्रात्मक वृद्धि
(C) मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों में कमी
(D) विकास की स्थिर अवस्था

66. निम्नलिखित मदों को सुमेलित कीजिए:

List I: (देश/क्षेत्र)

P. भूटान
Q. केरल
R. श्रीलंका
S. स्विट्ज़रलैंड

List II: (विशेषता/रैंक)

1. भारत की तुलना में उच्च HDI
2. सर्वोच्च HDI रैंक वाला देश (2023-24)
3. सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता (GNH)
4. कम प्रति व्यक्ति आय के बावजूद उच्च मानव विकास

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

67. निम्नलिखित में से कौन-सा विकास का सर्वोत्तम वर्णन करता है?

(A) आकार में वृद्धि
(B) आकार में स्थिरता
(C) गुण में धनात्मक परिवर्तन
(D) गुण में साधारण परिवर्तन

68. मानव विकास के निम्न स्तरों वाले देशों की संख्या (2023-24 रिपोर्ट के अनुसार) कितनी है?

(A) 69
(B) 49
(C) 42
(D) 33

69. निम्नलिखित में से क्या सार्थक जीवन का एक घटक है?

(A) दूसरों पर पूर्ण निर्भरता
(B) विकल्पों का अभाव
(C) अपने उद्देश्यों को पूरा करने में स्वतंत्र होना
(D) ज्ञान प्राप्ति से बचना

70. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए:

अभिकथन (A): मानव गरीबी सूचकांक (HPI), मानव विकास सूचकांक (HDI) की अपेक्षा अधिक कमी उद्घाटित करता है।

कारण (R): HPI एक बिना आय वाला माप है जो विकास में कमी जैसे कि निरक्षरता, अल्पायु, और स्वच्छ जल तक पहुँच की कमी को मापता है।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

71. मानव विकास के मध्यम स्तरों वाले देशों के समूह की क्या विशेषता है?

(A) यह सबसे छोटा समूह है।
(B) अधिकांश देश प्राचीन काल से विकसित हैं।
(C) इन देशों में सामाजिक विविधता नगण्य है।
(D) यह वर्ग विशालतम है और इसमें विकास द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हुआ।

72. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मानव विकास का मापन निरंतर परिष्कृत हो रहा है।
2. शोधकर्ताओं ने भ्रष्टाचार और राजनीतिक स्वतंत्रता के बीच संबंध ज्ञात किए हैं।
3. सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता (GNH) का विचार भूटान से संबंधित है।
4. GNH का अर्थ है कि प्रसन्नता की कीमत पर भौतिक प्रगति नहीं की जा सकती।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?

(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

73. एक देश के मानव विकास के स्तर को समझने के लिए क्या जानना महत्त्वपूर्ण है?

(A) देश का कुल क्षेत्रफल

(B) देश की जनसंख्या का धर्म
(C) सामाजिक सेक्टर पर सरकारी व्यय का प्रतिरूप
(D) देश की सैन्य शक्ति

74. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) उत्पादकता - मानव श्रम उत्पादकता
(B) वृद्धि - गुणात्मक परिवर्तन
(C) विकास - मात्रात्मक परिवर्तन
(D) समता - अवसरों तक असमान पहुँच

75. निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिए और उन्हें सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति।
2. महबूब-उल-हक और अमर्त्य सेन द्वारा मानव विकास पर विचारों का स्पष्टीकरण।
3. पहले वार्षिक मानव विकास प्रतिवेदन का प्रकाशन।
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 3, 2, 1
(D) 1, 3, 2

76. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. महबूब-उल-हक और अमर्त्य सेन घनिष्ठ मित्र थे।
2. दोनों ने आरंभिक 'मानव विकास प्रतिवेदन' निकालने के लिए कार्य किया।
3. मानव विकास सूचकांक 1990 में निर्मित किया गया।
4. अमर्त्य सेन के अनुसार विकास का संबंध लोगों के विकल्पों में बढ़ोतरी से है।
5. डॉ. हक का कार्य स्वतंत्रता की वृद्धि में संस्थाओं की भूमिका का अन्वेषण करता है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन गलत है?
(A) केवल 4 और 5
(B) केवल 5
(C) केवल 1 और 2
(D) केवल 3 और 4

77. मानव विकास के 'आय उपागम' की मुख्य धारणा क्या है?
(A) उच्च आय का विकास से कोई संबंध नहीं है।
(B) सरकार को कल्याण पर व्यय करना चाहिए।
(C) आय का स्तर स्वतंत्रता के स्तर को परिलक्षित करता है।
(D) लोगों की क्षमताओं का निर्माण किया जाना चाहिए।

78. निम्नलिखित मदों को सुमेलित कीजिए:
List I: (कार्यक्रम/अवधारणा)
P. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
Q. मानव विकास सूचकांक
R. मानव गरीबी सूचकांक
S. सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता
List II: (संबंधित देश/संगठन)
1. UNDP
2. भूटान
3. भारत सरकार
4. UNDP (कमी का मापक)
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

79. मानव विकास के संदर्भ में, एक लंबा जीवन पर्याप्त क्यों नहीं है?
(A) क्योंकि जीवन का कोई उद्देश्य होना भी आवश्यक है।
(B) क्योंकि संसाधन सीमित हैं।
(C) क्योंकि जनसंख्या वृद्धि एक समस्या है।
(D) क्योंकि आधुनिक जीवन तनावपूर्ण है।

80. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए:
अभिकथन (A): प्रायः लोग मानव विकास के निम्न स्तरों के लिए लोगों की संस्कृति को दोष देते हैं।
कारण (R): ऐसे वक्तव्य भ्रांतिपूर्ण हैं क्योंकि विकास का स्तर सामाजिक सेक्टर पर सरकारी व्यय और राजनीतिक परिवेश जैसे कारकों पर अधिक निर्भर करता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

81. वृद्धि और विकास के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) वृद्धि हमेशा सकारात्मक होती है, जबकि विकास नकारात्मक हो सकता है।
(B) वृद्धि मात्रात्मक है, जबकि विकास गुणात्मक है।
(C) विकास मात्रात्मक है, जबकि वृद्धि गुणात्मक है।
(D) दोनों का अर्थ एक ही है।

82. मानव विकास सूचकांक (HDI) के तीन प्रमुख क्षेत्र कौन से हैं?
(A) स्वास्थ्य, शिक्षा, संसाधनों तक पहुँच
(B) कृषि, उद्योग, सेवाएँ
(C) आय, व्यय, बचत
(D) समता, उत्पादकता, सशक्तीकरण

83. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मानव विकास प्रतिवेदन 2023-24 के अनुसार, भारत 'मध्यम मानव विकास' श्रेणी में है।
2. 2022 में भारत का HDI मान 0.644 था।
3. भारत की HDI रैंक 134 (193 देशों में से) थी।
4. भारत का प्रदर्शन अपने सभी पड़ोसी देशों से बेहतर है।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) उपरोक्त सभी

84. 'मानव विकास के चार स्तंभ' की अवधारणा में निम्नलिखित में से कौन-सा शामिल है?
(A) आय, कल्याण, आवश्यकता, और क्षमता
(B) स्वास्थ्य, शिक्षा, संसाधन, और स्वतंत्रता
(C) वृद्धि, विकास, स्थिरता, और समानता
(D) समता, सतत पोषणीयता, उत्पादकता, और सशक्तीकरण

85. मानव विकास सूचकांक (HDI) का स्कोर 0.268 क्या इंगित करता है?
(A) मानव विकास का अति उच्च स्तर
(B) मानव विकास का उच्च स्तर
(C) मानव विकास का अत्यंत निम्न स्तर
(D) मानव विकास का मध्यम स्तर

86. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मानव विकास के निम्न स्तरों वाले देश सामाजिक सेक्टरों पर अधिक व्यय करते हैं।
2. मानव विकास के उच्च स्तरों वाले देश प्रतिरक्षा पर अधिक व्यय करते हैं।
3. मानव विकास का स्तर राजनीतिक परिवेश और स्वतंत्रता से भी प्रभावित होता है।
4. उच्च HDI वाले देशों में संसाधनों का वितरण अपेक्षाकृत समान होता है।
5. निम्न HDI वाले देश त्वरित आर्थिक विकास प्रारंभ कर चुके होते हैं।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 5
(D) केवल 3, 4 और 5

87. निम्नलिखित मदों को सुमेलित कीजिए:
List I: (अवधारणा/व्यक्ति)
P. मानव विकास की अवधारणा
Q. विकास स्वतंत्रता के रूप में
R. आधारभूत आवश्यकता उपागम
S. मानव विकास सूचकांक

List II: (प्रस्तावक/संस्था)
1. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO)
2. महबूब-उल-हक
3. अमर्त्य सेन
4. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP)

(A) P-2, Q-3, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

88. मानव विकास के 'सशक्तीकरण' स्तंभ का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) लोगों को अपने विकल्प चुनने के लिए शक्ति प्रदान करना
(B) केवल आर्थिक सहायता प्रदान करना
(C) सरकारी नियंत्रण को बढ़ाना
(D) सभी के लिए समान आय सुनिश्चित करना

89. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) उच्चतर जीवन-प्रत्याशा का अर्थ है अधिक दीर्घ और स्वस्थ जीवन।
(B) प्रौढ़ साक्षरता दर ज्ञान तक पहुँच को प्रदर्शित करती है।
(C) HDI इन सभी आयामों को दिए गए भारों का कुल योग होता है।
(D) संसाधनों तक पहुँच को प्रति व्यक्ति आय से मापा जाता है।

90. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए:
अभिकथन (A): श्रीलंका और ट्रिनिडाड का मानव विकास सूचकांक भारत से ऊँचा है।
कारण (R): किसी देश का आकार और प्रति व्यक्ति आय का मानव विकास से हमेशा प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

91. मानव विकास के किस उपागम में मानव को विकासात्मक गतिविधियों का 'लाभार्थी' या 'लक्ष्य' माना जाता है?
(A) आय उपागम
(B) कल्याण उपागम
(C) क्षमता उपागम
(D) आधारभूत आवश्यकता उपागम

92. विकास उस समय होता है जब...
(A) गुणवत्ता में नकारात्मक परिवर्तन होता है।
(B) गुणवत्ता में सकारात्मक परिवर्तन होता है।
(C) गुणवत्ता में कोई परिवर्तन नहीं होता है।
(D) केवल मात्रा में वृद्धि होती है।

93. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मानव विकास के अति उच्च स्तर वाले देशों की संख्या 69 है।
2. मानव विकास के उच्च स्तर वाले देशों की संख्या 49 है।
3. मानव विकास के मध्यम स्तर वाले देशों की संख्या 42 है।
4. मानव विकास के निम्न स्तर वाले देशों की संख्या 33 है।

उपरोक्त में से कौन सा युग्म सही है? (2023-24 के अनुसार)
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

94. निम्नलिखित में से कौन-सा देश 2023-24 की रिपोर्ट के अनुसार सर्वोच्च 'उच्च मूल्य' सूचकांक वाले 10 देशों में शामिल है?
(A) चीन
(B) भारत
(C) ब्राजील
(D) स्विट्ज़रलैंड

95. मानव विकास के संदर्भ में 'स्वतंत्रता में वृद्धि' पर किसने बल दिया?
(A) अमर्त्य सेन
(B) महबूब-उल-हक
(C) एलन सी. सेम्पुल
(D) रैटजेल

96. निम्नलिखित मदों को सुमेलित कीजिए:
List I: (मानव विकास का स्तंभ)
P. समता
Q. सतत पोषणीयता
R. उत्पादकता
S. सशक्तीकरण
List II: (मुख्य शब्द)
1. निरंतरता
2. समान पहुँच
3. शक्ति
4. मानव श्रम
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-3, Q-2, R-4, S-1
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-1, Q-4, R-2, S-3

97. 'लिंग, प्रजाति, आय और जाति के भेदभाव के विचार के बिना समान अवसर' किस अवधारणा से संबंधित है?
(A) उत्पादकता
(B) समता
(C) सतत पोषणीयता
(D) सशक्तीकरण

98. मानव विकास के विभिन्न आयामों को मापने के लिए किसका विकास किया गया है?
(A) उपयुक्त सूचकों का
(B) केवल आर्थिक मॉडल का
(C) केवल सामाजिक नियमों का
(D) केवल राजनीतिक सिद्धांतों का

99. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मानव विकास के निम्न स्तरों वाले अधिकांश देश छोटे हैं।
2. वे अक्सर राजनीतिक उपद्रव, गृहयुद्ध या अकाल से गुज़रे हैं।
3. इन देशों को सुविचारित नीतियों की तत्काल आवश्यकता है।
4. ये सभी देश यूरोप में स्थित हैं।
5. इन देशों में सामाजिक सेक्टर पर बहुत अधिक खर्च होता है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) उपरोक्त सभी

100. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए:
अभिकथन (A): मानव विकास में बड़े देशों की अपेक्षा छोटे देशों का कार्य बेहतर रहा है।
कारण (R): मानव विकास का संबंध प्रदेश के आकार से न होकर, स्वास्थ्य, शिक्षा और संसाधनों तक पहुँच जैसे कारकों से है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

101. मानव विकास सूचकांक का निर्माण किस वर्ष किया गया?
(A) 1980
(B) 2000
(C) 1990
(D) 2010

102. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, आधारभूत आवश्यकता उपागम द्वारा प्रस्तावित छः न्यूनतम आवश्यकताओं में शामिल नहीं है?
(A) जलापूर्ति
(B) संचार
(C) स्वच्छता
(D) आवास

103. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. समता का अर्थ है प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर मिलना।
2. सतत पोषणीयता में भावी पीढ़ियों का ध्यान रखा जाता है।
3. उत्पादकता का संबंध केवल मशीनों से है, मानव श्रम से नहीं।
4. सशक्तीकरण के लिए सुशासन आवश्यक है।

उपरोक्त में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 3
(D) केवल 4

104. 'जन-समुदाय ही राष्ट्रों के वास्तविक धन होते हैं।' यह विचार मानव विकास के किस स्तंभ को पुष्ट करता है?

(A) उत्पादकता
(B) समता
(C) सतत पोषणीयता
(D) सशक्तीकरण

105. निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिए और उन्हें सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) द्वारा वार्षिक मानव विकास प्रतिवेदन का प्रकाशन आरंभ करना।
2. सोवियत संघ का विघटन।
3. भारत का HDI मान 0.644 होना।

(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 3, 1, 2
(D) 1, 3, 2

106. यदि एक देश का HDI स्कोर 0.750 है, तो उसे किस श्रेणी में वर्गीकृत किया जाएगा?
(A) उच्च
(B) अति उच्च
(C) मध्यम
(D) निम्न

107. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वृद्धि और विकास दोनों समय के संदर्भ में परिवर्तन को इंगित करते हैं।
2. वृद्धि मूल्य निरपेक्ष है, जबकि विकास मूल्य सापेक्ष है।
3. सकारात्मक वृद्धि से सदैव विकास होता है।
4. विकास का अर्थ गुणात्मक परिवर्तन है।
5. नगर की जनसंख्या में वृद्धि होना सदैव विकास का सूचक है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 4
(D) उपरोक्त सभी

108. निम्नलिखित मदों को सुमेलित कीजिए:
List I: (देशों का वर्ग)
P. अति उच्च HDI
Q. उच्च HDI
R. मध्यम HDI
S. निम्न HDI

List II: (एक विशेषता)
1. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विकास, विशालतम वर्ग
2. राजनीतिक उपद्रव, गृहयुद्ध का सामना
3. सामाजिक खंड में बहुत निवेश, अधिकांश यूरोपीय
4. पूर्व साम्राज्य शक्तियाँ, उच्च सरकारी प्राथमिकता

(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

109. लोगों के विकल्पों में वृद्धि करने के लिए किन क्षेत्रों में उनकी क्षमताओं का निर्माण करना महत्त्वपूर्ण है?
(A) केवल मनोरंजन और खेल
(B) केवल राजनीति और धर्म
(C) स्वास्थ्य, शिक्षा और संसाधनों तक पहुँच
(D) केवल शहरी विकास और औद्योगिकीकरण

110. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए:
अभिवथन (A): निर्धन लोग प्रायः बीमारी के लिए चिकित्सा उपचार नहीं चुन सकते।
कारण (R): संसाधनों के अभाव में उनका विकल्प सीमित हो जाता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

111. मानव विकास को मापने की विधियाँ कैसी हैं?
(A) निरंतर परिष्कृत हो रही हैं
(B) स्थिर और अपरिवर्तनशील
(C) सरल और सीमित
(D) केवल आर्थिक संकेतकों पर आधारित

112. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन महबूब-उल-हक के मानव विकास के वर्णन का सही प्रतिनिधित्व करता है?
(A) विकास द्वारा केवल आर्थिक और वित्तीय समृद्धि लाना
(B) लोगों के विकल्पों में वृद्धि और जीवन में सुधार लाना
(C) विकास द्वारा केवल पर्यावरण का पूर्ण संरक्षण करना
(D) विकास द्वारा केवल जनसंख्या वृद्धि दर को रोकना

113. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मानव विकास सूचकांक स्वास्थ्य, शिक्षा और आय के आधार पर देशों का क्रम तैयार करता है।
2. मानव गरीबी सूचकांक आय पर आधारित एक माप है।
3. UNDP प्रतिवर्ष मानव विकास प्रतिवेदन प्रकाशित करता है।
4. GNH (सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता) का विचार भारत से उत्पन्न हुआ है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

114. उच्च मानव विकास स्कोर वाले देशों की क्या विशेषता है जो उन्हें दूसरों से अलग करती है?
(A) लोगों और सुशासन में उच्चतर निवेश

(B) विशाल सैन्य बजट
(C) उच्च जनसंख्या घनत्व
(D) प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता

115. मानव विकास प्रतिवेदन 2023-24 के अनुसार, 'उच्च' मानव विकास समूह में कितने देश सम्मिलित हैं?
(A) 69
(B) 42
(C) 49
(D) 33

116. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) क्षमता उपागम - अमर्त्य सेन
(B) आधारभूत आवश्यकता उपागम - अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO)
(C) आय उपागम - सबसे पुराना उपागम
(D) कल्याण उपागम - लोग सक्रिय प्रतिभागी

117. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मानव विकास के निम्न स्तरों के लिए संस्कृति को दोष देना एक भ्रांति है।
2. उच्च HDI वाले देश सामाजिक सेक्टरों में अधिक निवेश करते हैं।
3. निम्न HDI वाले देश प्रतिरक्षा पर अधिक व्यय करते हैं।
4. मानव विकास का स्तर देश के राजनीतिक परिवेश से स्वतंत्र होता है।
5. उच्च HDI वाले देशों में संसाधनों का वितरण अधिक समान होता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन गलत है?
(A) केवल 4
(B) केवल 1 और 5
(C) केवल 2 और 3
(D) केवल 4 और 5

118. वृद्धि का चिह्न ऋणात्मक होने का क्या अर्थ है?
(A) स्थिरता
(B) ह्रास
(C) विकास
(D) गुणात्मक सुधार

119. मानव विकास के मापन के लिए HDI के अतिरिक्त UNDP द्वारा प्रयुक्त दूसरा महत्त्वपूर्ण सूचकांक कौन-सा है?
(A) मानव स्वतंत्रता सूचकांक
(B) सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता सूचकांक
(C) लैंगिक असमानता सूचकांक
(D) मानव गरीबी सूचकांक

120. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए:
अभिकथन (A): केरल का मानव विकास में प्रदर्शन पंजाब और गुजरात से बेहतर है।
कारण (R): केरल में प्रति व्यक्ति आय पंजाब और गुजरात से बहुत अधिक है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

121. निम्नलिखित मदों को सुमेलित कीजिए:
List I: (HDI स्कोर)
P. 0.983
Q. 0.750
R. 0.644
S. 0.268

List II: (विकास का स्तर/उदाहरण)
1. मध्यम (भारत 2022)
2. अत्यंत निम्न
3. अति उच्च
4. उच्च

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

122. सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए समूहों के सशक्तीकरण का विशेष महत्त्व क्यों है?
(A) क्योंकि वे ऐतिहासिक रूप से अवसरों से वंचित रहे हैं।
(B) क्योंकि वे जनसंख्या का बहुमत हैं।
(C) क्योंकि वे आर्थिक रूप से सबसे धनी हैं।
(D) क्योंकि वे राजनीतिक रूप से सबसे शक्तिशाली हैं।

123. मानव विकास सूचकांक में 'संसाधनों तक पहुँच' को किस संदर्भ में मापा जाता है?
(A) प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय
(B) सकल घरेलू उत्पाद
(C) बचत दर
(D) क्रय शक्ति (अमेरिकी डॉलरों में)

124. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मानव विकास के उच्च स्तर वाले अधिकांश देश यूरोप में हैं और औद्योगिकृत हैं।
2. इस सूची में गैर-यूरोपीय देशों की संख्या नगण्य है।
3. इन देशों में सामाजिक विविधता की डिग्री उच्च नहीं होती है।
4. ये सभी देश पूर्व साम्राज्य शक्तियाँ रही हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 3
(D) केवल 4

125. 'सार्थक जीवन' की अवधारणा में क्या शामिल है?
(A) स्वस्थ होना और अपने विवेक का विकास करना
(B) समाज में प्रतिभागिता करना
(C) उपरोक्त सभी
(D) अपने उद्देश्यों को पूरा करने में स्वतंत्र होना

126. मानव विकास प्रतिवेदन 2023-24 के अनुसार, 'अति उच्च' मानव विकास समूह में कितने देश शामिल हैं?
(A) 49
(B) 42
(C) 33
(D) 69

127. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मानव विकास के मध्यम स्तर वाले देशों का वर्ग विशालतम है।
2. इस वर्ग के कुछ देश पूर्वकालीन उपनिवेश थे।
3. कुछ देशों का विकास 1991 में सोवियत संघ के विघटन के पश्चात् हुआ।
4. ये देश लोकोन्मुखी नीतियां अपनाकर अपने HDI स्कोर में सुधार कर रहे हैं।
5. इन देशों में सामाजिक विविधता न के बराबर है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 4
(D) उपरोक्त सभी

128. मानव विकास और आर्थिक वृद्धि के बीच क्या संबंध है?
(A) मानव विकास पूर्णतः आर्थिक वृद्धि पर निर्भर होता है
(B) आर्थिक वृद्धि आवश्यक है किंतु पर्याप्त नहीं
(C) आर्थिक वृद्धि का मानव विकास से कोई संबंध नहीं है
(D) उच्च आर्थिक वृद्धि सदैव उच्च मानव विकास देती है

129. मानव विकास के किस उपागम का तर्क है कि सरकार को शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा और सुख-साधनों पर उच्चतर व्यय करना चाहिए?
(A) आय उपागम
(B) कल्याण उपागम
(C) आधारभूत आवश्यकता उपागम
(D) क्षमता उपागम

130. निम्नलिखित में से कौन-सा देश मानव विकास के 'मध्यम' स्तर की श्रेणी में आता है? (2023-24 रिपोर्ट के अनुसार)
(A) भारत
(B) नॉर्वे
(C) नाइजर
(D) स्विट्ज़रलैंड

131. मानव विकास पर महबूब-उल-हक और अमर्त्य सेन के विचारों को कब स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया?
(A) 60 के दशक में
(B) 70 के दशक में
(C) 80 के दशक के अंत और 90 के दशक के आरंभ में
(D) 21वीं सदी के आरंभ में

132. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मानव विकास में कमी दर्शाने के लिए मानव गरीबी सूचकांक (HPI) का प्रयोग होता है।
2. HPI में 40 वर्ष की आयु तक जीवित न रह पाने की संभाव्यता शामिल है।
3. HPI में स्वच्छ जल तक पहुँच न रखने वाले लोगों की संख्या शामिल है।
4. HPI एक आय वाला माप है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन गलत है?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 3
(D) केवल 4

133. मानव विकास का कौन-सा स्तंभ भविष्य की पीढ़ियों के लिए अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित करने पर बल देता है?
(A) समता
(B) उत्पादकता
(C) सतत पोषणीयता
(D) सशक्तीकरण

134. "स्वतंत्रताओं में वृद्धि भी विकास लाने वाला सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम है।" - यह विचार किसका है?
(A) महबूब-उल-हक
(B) अमर्त्य सेन
(C) रैटजेल
(D) कार्ल मार्क्स

135. निम्नलिखित अभिकथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए:
अभिकथन (A): मानव विकास की अंतर्राष्ट्रीय तुलनाएँ रुचिकर हैं।
कारण (R): प्रदेश के आकार और प्रति व्यक्ति आय का मानव विकास से प्रत्यक्ष संबंध नहीं है, और अक्सर छोटे या निर्धन देशों का प्रदर्शन बेहतर होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

136. मानव विकास के संदर्भ में, लोगों के ज्ञान को बढ़ाने या उन्हें बेहतर चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध कराने से क्या बेहतर होता है?
(A) उनकी कार्यक्षमता
(B) उनकी निर्भरता

(C) सरकार पर बोझ
(D) सामाजिक असमानता

137. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. महबूब-उल-हक ने विकास को विकल्पों में बढ़ोतरी के रूप में परिभाषित किया।
2. अमर्त्य सेन ने विकास को स्वतंत्रता में वृद्धि के रूप में देखा।
3. मानव विकास के केंद्र में मनुष्य है।
4. मानव विकास में विकल्प स्थिर होते हैं, परिवर्तनशील नहीं।
5. सार्थक जीवन केवल लंबा होना चाहिए, उद्देश्यहीन नहीं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन गलत है?
(A) केवल 4 और 5
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 3
(D) केवल 4

138. निम्नलिखित मदों को सुमेलित कीजिए:
List I: (HDI रैंक 2023-24)
P. 1
Q. 2
R. 3
S. 134
List II: (देश)
1. नॉर्वे
2. आइसलैंड
3. भारत
4. स्विट्ज़रलैंड

(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

139. विकास का ह्रास इंगित करने वाली अवस्था क्या कहलाती है?
(A) सकारात्मक वृद्धि
(B) स्थिर विकास
(C) गुणात्मक विकास
(D) ऋणात्मक वृद्धि

140. मानव विकास सूचकांक (HDI) किन तीन संकेतकों का एक संयुक्त सूचकांक है?
(A) शिशु मृत्यु दर, गरीबी दर और बेरोजगारी दर
(B) जीवन प्रत्याशा, साक्षरता और प्रति व्यक्ति आय
(C) जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण और औद्योगीकरण
(D) जन्म दर, मृत्यु दर और प्रवास दर

141. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मानव विकास के उच्च स्तर वाले देशों में सामाजिक विविधता की डिग्री उच्च नहीं है।
2. मानव विकास के मध्यम स्तर वाले देशों में सामाजिक विविधता अधिक पाई जाती है।
3. उच्च HDI वाले देश राजनीतिक अस्थिरता से प्रायः स्वतंत्र होते हैं।
4. निम्न HDI वाले देश अक्सर राजनीतिक उपद्रव के दौर से गुजरते हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) उपरोक्त सभी

142. मानव विकास की किस अवधारणा में पर्यावरण, वित्तीय और मानव संसाधनों का उपयोग भविष्य को ध्यान में रखकर करने पर बल दिया जाता है?
(A) समता
(B) उत्पादकता
(C) सशक्तीकरण
(D) सतत पोषणीयता

143. मानव विकास के निम्न स्तरों वाले देशों के संबंध में क्या सत्य नहीं है?
(A) वे सामाजिक क्षेत्रों पर भारी निवेश करते हैं।
(B) वे अक्सर राजनीतिक उपद्रव से ग्रस्त रहते हैं।
(C) उनमें अकाल या बीमारियों की अधिक घटनाएँ होती हैं।
(D) वे अक्सर छोटे देश होते हैं।

144. 'आज जो वस्तुएँ हैं उन्हें देखते हो और पूछते हो क्यों? मैं उन वस्तुओं का स्वप्न लेता हूँ जो कभी नहीं थीं और पूछता हूँ ये क्यों नहीं हैं?' यह कथन महबूब-उल-हक ने किसका उद्धरण देते हुए कहा था?
(A) अमर्त्य सेन
(B) जॉर्ज बर्नार्ड शॉ
(C) जॉन मेनार्ड कीन्स
(D) एडम स्मिथ

145. मानव विकास की अवधारणा में सभी प्रकार के विकास का केंद्र बिंदु क्या है?
(A) उद्योग
(B) मनुष्य
(C) प्रौद्योगिकी
(D) सरकार

146. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वृद्धि मात्रात्मक है।
2. विकास गुणात्मक है।
3. वृद्धि मूल्य सापेक्ष है।
4. विकास मूल्य निरपेक्ष है।
5. वृद्धि का चिह्न केवल धनात्मक हो सकता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 4
(D) उपरोक्त सभी

147. किसी देश के मानव विकास स्तर को निम्न स्तर का मानने का क्या आधार है यदि उसका HDI स्कोर 0.549 है?
(A) क्योंकि यह 0.800 से नीचे है।
(B) क्योंकि यह 0.700 से नीचे है।
(C) क्योंकि यह 0.550 से नीचे है।
(D) क्योंकि यह 0.600 से नीचे है।

148. मानव विकास के लिए आवश्यक है कि लोगों के विकल्पों में...
(A) कमी हो
(B) स्थिरता हो
(C) कोई परिवर्तन न हो
(D) वृद्धि हो

149. निम्नलिखित में से कौन-sa कथन विकास और वृद्धि के संबंध को सही ढंग से दर्शाता है?
(A) वृद्धि और विकास एक दूसरे के पूर्णतः पर्यायवाची शब्द हैं
(B) विकास के बिना वृद्धि संभव है, वृद्धि के बिना विकास नहीं
(C) वृद्धि के बिना विकास संभव है, विकास के बिना वृद्धि नहीं
(D) सकारात्मक वृद्धि होने से सदैव मानव विकास प्राप्त होता है

150. मानव विकास का कौन-सा उपागम यह विचार रखता है कि आय का स्तर किसी व्यक्ति द्वारा भोगी जा रही स्वतंत्रता के स्तर को परिलक्षित करता है?
(A) कल्याण उपागम
(B) आय उपागम
(C) क्षमता उपागम
(D) आधारभूत आवश्यकता उपागम

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
मानव विकास की अवधारणा को समझने के लिए अमर्त्य सेन द्वारा प्रतिपादित 'क्षमता उपागम' (Capability Approach) एक मौलिक वैचारिक ढाँचा प्रदान करता है। यह उपागम विकास को केवल आय, वस्तुओं या उपयोगिताओं के संचय के रूप में नहीं देखता, बल्कि व्यक्ति की उन वास्तविक स्वतंत्रताओं के विस्तार के रूप में देखता है जो उसे एक ऐसा जीवन जीने में सक्षम बनाती हैं जिसे वह महत्व देता है। इस दृष्टिकोण के केंद्र में 'फंक्शनिंग्स' (Functionings) और 'क्षमताएं' (Capabilities) हैं। 'फंक्शनिंग्स' वे अवस्थाएँ और कार्य हैं जिन्हें व्यक्ति प्राप्त करता है, जैसे कि स्वस्थ रहना, अच्छी तरह से पोषित होना, या सामाजिक जीवन में भाग लेना। वहीं, 'क्षमता' किसी व्यक्ति की उन विभिन्न 'फंक्शनिंग्स' के संयोजनों को प्राप्त करने की वास्तविक स्वतंत्रता और अवसर को संदर्भित करती है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति जो उपवास कर रहा है और एक व्यक्ति जो भुखमरी का शिकार है, दोनों ही पोषित नहीं हैं (समान फंक्शनिंग), लेकिन उपवास करने वाले व्यक्ति के पास भोजन करने की क्षमता है, जबकि भूखे व्यक्ति के पास नहीं है। इसलिए, क्षमता उपागम इस बात पर जोर देता है कि विकास नीतियों का लक्ष्य केवल संसाधन उपलब्ध कराना नहीं होना चाहिए, बल्कि लोगों की उन संसाधनों को अपनी पसंद के सार्थक जीवन में बदलने की क्षमता का निर्माण करना होना चाहिए। यह शिक्षा, स्वास्थ्य और राजनीतिक स्वतंत्रताओं के महत्व को रेखांकित करता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. क्षमता उपागम के अनुसार, विकास का अंतिम लक्ष्य क्या है?
(A) राष्ट्रीय आय में वृद्धि करना।
(B) व्यक्तियों की वास्तविक स्वतंत्रताओं का विस्तार करना।
(C) सभी के लिए समान वस्तुएँ उपलब्ध कराना।
(D) उपयोगिताओं का अधिकतम संचय सुनिश्चित करना।

152. स्रोत के अनुसार 'फंक्शनिंग्स' और 'क्षमता' के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) फंक्शनिंग्स प्राप्त की गई अवस्थाएँ हैं, जबकि क्षमता उन अवस्थाओं को प्राप्त करने की स्वतंत्रता है।
(B) फंक्शनिंग्स सैद्धांतिक हैं, जबकि क्षमताएं व्यावहारिक हैं।
(C) फंक्शनिंग्स आर्थिक हैं, जबकि क्षमताएं सामाजिक हैं।
(D) फंक्शनिंग्स और क्षमता में कोई वास्तविक अंतर नहीं है।

153. उपवास करने वाले व्यक्ति और भूखे व्यक्ति का उदाहरण क्या स्पष्ट करने के लिए दिया गया है?
(A) दोनों ही स्थितियों में पोषण का स्तर समान है।
(B) धार्मिक विश्वासों का विकास पर प्रभाव।
(C) समान 'फंक्शनिंग' के बावजूद 'क्षमता' में अंतर हो सकता है।
(D) विकासशील देशों में भुखमरी एक बड़ी समस्या है।

154. क्षमता उपागम विकास नीतियों के लिए क्या सुझाव देता है?
(A) नीतियों को केवल सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
(B) नीतियां केवल संसाधन वितरण पर आधारित होनी चाहिए।
(C) नीतियां केवल शहरी क्षेत्रों के विकास पर केंद्रित होनी चाहिए।
(D) नीतियों को शिक्षा, स्वास्थ्य और राजनीतिक स्वतंत्रता के माध्यम से लोगों की क्षमताओं का निर्माण करना चाहिए।

155. इस परिच्छेद का मुख्य तर्क क्या है?
(A) मानव विकास को मापने के लिए आय सबसे अच्छा संकेतक है।

(B) सभी व्यक्तियों की फंक्शनिंग्स एक समान होनी चाहिए।
(C) विकास का अर्थ केवल आर्थिक वृद्धि नहीं, बल्कि सार्थक जीवन जीने के विकल्पों का विस्तार है।
(D) अमर्त्य सेन ने मानव विकास सूचकांक का निर्माण किया।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

मानव विकास की अवधारणा चार मूलभूत स्तंभों पर आधारित है: समता, सतत पोषणीयता, उत्पादकता और सशक्तीकरण। ये स्तंभ न केवल अवधारणा को एक मजबूत सैद्धांतिक आधार प्रदान करते हैं, बल्कि नीति-निर्माण के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में भी कार्य करते हैं। समता का अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति को, उसकी लिंग, जाति, आय या पृष्ठभूमि के बावजूद, अवसरों तक समान पहुंच प्राप्त हो। इसका अर्थ केवल संसाधनों का समान वितरण नहीं है, बल्कि उन बाधाओं को दूर करना भी है जो लोगों को अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करने से रोकती हैं। सतत पोषणीयता यह सुनिश्चित करने पर जोर देती है कि भविष्य की पीढ़ियों के पास कम से कम उतने ही अवसर हों जितने वर्तमान पीढ़ी के पास हैं। यह अंतर-पीढ़ीगत समता के विचार को बढ़ावा देता है और पर्यावरणीय, वित्तीय और मानव संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग की वकालत करता है। उत्पादकता मानव श्रम की उत्पादकता या मानव कार्य के संदर्भ में आउटपुट को संदर्भित करती है। लोगों में उनकी क्षमताओं का निर्माण करके, जैसे कि बेहतर स्वास्थ्य और शिक्षा प्रदान करके, उनकी उत्पादकता में लगातार वृद्धि की जानी चाहिए, क्योंकि लोग ही किसी राष्ट्र की वास्तविक संपत्ति हैं। अंत में, सशक्तीकरण का अर्थ है अपने जीवन से संबंधित विकल्प चुनने के लिए शक्ति प्राप्त करना। यह शक्ति बढ़ती स्वतंत्रता और क्षमताओं से आती है और इसके लिए एक ऐसी शासन प्रणाली की आवश्यकता होती है जो पारदर्शी, जवाबदेह और लोकोन्मुखी हो। ये चारों स्तंभ परस्पर जुड़े हुए हैं; एक के बिना, अन्य कमजोर पड़ जाते हैं, और सच्चा मानव विकास अप्राप्य रहता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. मानव विकास के चार स्तंभों में से कौन-सा स्तंभ भविष्य की पीढ़ियों के अवसरों को सुरक्षित करने पर केंद्रित है?
(A) समता
(B) सतत पोषणीयता
(C) उत्पादकता
(D) सशक्तीकरण

157. स्रोत के अनुसार, 'समता' का सबसे सटीक वर्णन क्या है?
(A) सभी को समान आय देना।
(B) सभी को समान संसाधन देना।
(C) केवल पिछड़ी जातियों के लिए अवसर प्रदान करना।
(D) सभी व्यक्तियों के लिए अवसरों तक समान पहुँच सुनिश्चित करना।

158. परिच्छेद के अनुसार, लोगों की 'उत्पादकता' कैसे बढ़ाई जा सकती है?
(A) लोगों के स्वास्थ्य और शिक्षा में निवेश करके उनकी क्षमताओं का निर्माण करके।
(B) काम के घंटे बढ़ाकर।
(C) केवल तकनीकी निवेश करके।
(D) मजदूरी में कटौती करके।

159. 'सशक्तीकरण' का क्या अर्थ है, जैसा कि परिच्छेद में वर्णित है?
(A) दूसरों पर अधिकार जमाना।
(B) केवल राजनीतिक शक्ति प्राप्त करना।
(C) अपने जीवन के बारे में विकल्प चुनने के लिए शक्ति और स्वतंत्रता प्राप्त करना।
(D) वित्तीय रूप से स्वतंत्र होना।

160. परिच्छेद का केंद्रीय संदेश क्या है?
(A) समता, सतत पोषणीयता, उत्पादकता और सशक्तीकरण परस्पर जुड़े हुए हैं और समग्र मानव विकास के लिए आवश्यक हैं।
(B) उत्पादकता मानव विकास का सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ है।
(C) मानव विकास के चारों स्तंभ अलग-अलग और स्वतंत्र हैं।
(D) सशक्तीकरण केवल एक अच्छी सरकार के माध्यम से ही संभव है।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

मानव विकास सूचकांक (HDI) मानव विकास को मापने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण रहा है, लेकिन यह विकास की पूरी कहानी नहीं बताता। इसकी मुख्य सीमाओं में से एक यह है कि यह असमानताओं के प्रति असंवेदनशील है। एक देश का उच्च औसत HDI स्कोर आंतरिक असमानताओं को छिपा सकता है, जहाँ एक छोटा अभिजात वर्ग बहुत उच्च स्तर के विकास का आनंद लेता है जबकि अधिकांश आबादी पीछे रह जाती है। इस कमी को दूर करने के लिए, असमानता-समायोजित मानव विकास सूचकांक (IHDI) विकसित किया गया था। IHDI एक समाज के भीतर असमानता के कारण मानव विकास में होने वाले नुकसान को ध्यान में रखता है। जब कोई असमानता नहीं होती है, तो IHDI और HDI का मान बराबर होता है, लेकिन जैसे-जैसे असमानता बढ़ती है, IHDI का मान HDI से नीचे गिरता जाता है। इसके अलावा, लैंगिक असमानताओं को मापने के लिए लैंगिक विकास सूचकांक (GDI) और लैंगिक असमानता सूचकांक (GII) जैसे उपकरण विकसित किए गए हैं। GDI महिलाओं और पुरुषों के HDI मूल्यों की तुलना करता है, जबकि GII प्रजनन स्वास्थ्य, सशक्तीकरण और श्रम बाजार में भागीदारी में लैंगिक असमानताओं को मापता है। इसी तरह, बहुआयामी गरीबी सूचकांक (MPI) यह पहचानता है कि गरीबी केवल आय की कमी नहीं है। यह स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर के विभिन्न आयामों में अभावों को मापता है, जिससे गरीबी की अधिक सूक्ष्म और व्यापक तस्वीर मिलती है। ये उन्नत सूचकांक नीति-निर्माताओं को विशिष्ट कमजोरियों को लक्षित करने और

अधिक न्यायसंगत विकास को बढ़ावा देने में मदद करते हैं। उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. असमानता-समायोजित मानव विकास सूचकांक (IHDI) क्यों विकसित किया गया था?
(A) HDI की गणना को सरल बनाने के लिए।
(B) HDI में पर्यावरणीय कारकों को शामिल करने के लिए।
(C) केवल आर्थिक विकास को मापने के लिए।
(D) HDI द्वारा छिपाई गई आंतरिक असमानताओं को उजागर करने के लिए।

162. यदि किसी देश में पूर्ण समानता हो, तो IHDI और HDI के बीच क्या संबंध होगा?
(A) IHDI, HDI से बहुत अधिक होगा।
(B) IHDI और HDI के मान बराबर होंगे।
(C) IHDI, HDI से बहुत कम होगा।
(D) IHDI शून्य हो जाएगा।

163. परिच्छेद में वर्णित कौन-सा सूचकांक विशेष रूप से प्रजनन स्वास्थ्य और श्रम बाजार में लैंगिक असमानताओं को मापता है?
(A) मानव विकास सूचकांक (HDI)
(B) असमानता-समायोजित मानव विकास सूचकांक (IHDI)
(C) लैंगिक असमानता सूचकांक (GII)
(D) बहुआयामी गरीबी सूचकांक (MPI)

164. बहुआयामी गरीबी सूचकांक (MPI) गरीबी को कैसे मापता है?
(A) केवल प्रति व्यक्ति आय के आधार पर।
(B) केवल बेरोजगारी दर के आधार पर।
(C) केवल कैलोरी खपत के आधार पर।
(D) स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर जैसे विभिन्न आयामों में अभावों को मापकर।

165. इस परिच्छेद का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) यह दिखाना कि समय के साथ मानव विकास को मापने के तरीके कैसे विकसित हुए हैं ताकि असमानता और बहुआयामी अभावों को बेहतर ढंग से समझा जा सके।
(B) यह तर्क देना कि HDI एक निरर्थक माप है।
(C) यह साबित करना कि लैंगिक असमानता सबसे बड़ी चुनौती है।
(D) यह बताना कि सभी देशों को केवल MPI का उपयोग करना चाहिए।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
मानव विकास और सतत विकास की अवधारणाएँ आंतरिक रूप से जुड़ी हुई हैं। सतत विकास को अक्सर ऐसे विकास के रूप में परिभाषित किया जाता है जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है। यह परिभाषा मानव विकास के 'सतत पोषणीयता' स्तंभ के साथ सीधे संरेखित होती है, जो अंतर-पीढ़ीगत समता पर जोर देती है। मानव विकास ढाँचा लोगों की क्षमताओं और विकल्पों को बढ़ाने पर केंद्रित है, जबकि सतत विकास यह सुनिश्चित करता है कि ये विकल्प और क्षमताएँ समय के साथ और पीढ़ियों तक कायम रहें। पर्यावरणीय क्षरण, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों की कमी मानव विकास की उपलब्धियों के लिए सीधे खतरे हैं। उदाहरण के लिए, वायु प्रदूषण से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं (एक स्वस्थ जीवन की क्षमता को कम करना) होती हैं, और भूमि के मरुस्थलीकरण से आजीविका (एक सभ्य जीवन स्तर की क्षमता को कम करना) समाप्त हो सकती है। इसलिए, मानव विकास को पर्यावरणीय सीमाओं के भीतर होना चाहिए। 2015 में अपनाए गए संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य (SDGs) इस एकीकरण का एक स्पष्ट उदाहरण हैं। SDGs में गरीबी और भूख को समाप्त करने (मानव विकास के प्रमुख लक्ष्य) से लेकर जलवायु कार्रवाई और जिम्मेदार खपत (सतत विकास के प्रमुख लक्ष्य) तक के लक्ष्य शामिल हैं। यह एक समग्र दृष्टिकोण को दर्शाता है जो यह मानता है कि एक स्वस्थ ग्रह के बिना मानव कल्याण और विकास को बनाए नहीं रखा जा सकता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. परिच्छेद के अनुसार, सतत विकास और मानव विकास के बीच क्या संबंध है?
(A) वे दोनों पूरी तरह से अलग अवधारणाएँ हैं।
(B) वे आंतरिक रूप से जुड़े हुए हैं, जहाँ सतत विकास मानव विकास की दीर्घकालिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करता है।
(C) सतत विकास मानव विकास का एक छोटा हिस्सा है।
(D) मानव विकास केवल आर्थिक है, जबकि सतत विकास केवल पर्यावरणीय है।

167. 'अंतर-पीढ़ीगत समता' का विचार किससे संबंधित है?
(A) एक ही पीढ़ी के भीतर सभी लोगों के लिए समानता।
(B) यह सुनिश्चित करना कि भविष्य की पीढ़ियों के पास कम से कम वर्तमान पीढ़ी जितने अवसर हों।
(C) विभिन्न देशों के बीच संसाधनों का समान वितरण।
(D) केवल वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करना।

168. परिच्छेद पर्यावरणीय क्षरण को मानव विकास के लिए खतरा क्यों मानता है?
(A) क्योंकि यह लोगों के स्वास्थ्य, आजीविका और क्षमताओं को सीधे तौर पर नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।
(B) क्योंकि यह केवल जानवरों के आवास को प्रभावित करता है।
(C) क्योंकि यह केवल भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक समस्या है।
(D) क्योंकि यह आर्थिक विकास को धीमा कर देता है।

169. संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य (SDGs) क्या दर्शाते हैं?

(A) केवल विकसित देशों के लिए लक्ष्य।
(B) केवल पर्यावरणीय समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) यह मान्यता कि मानव कल्याण और पर्यावरणीय स्थिरता अविभाज्य हैं।
(D) एक पुराना विकास मॉडल जिसे अब उपयोग नहीं किया जाता है।

170. इस परिच्छेद के लिए सबसे उपयुक्त शीर्षक क्या होगा?
(A) मानव विकास सूचकांक की आलोचना
(B) आर्थिक विकास के मॉडल
(C) जलवायु परिवर्तन के कारण
(D) मानव विकास और सतत विकास: एक एकीकृत दृष्टिकोण

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

मानव विकास की उपलब्धियाँ केवल आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर नहीं करतीं, बल्कि इस पर भी निर्भर करती हैं कि उन संसाधनों का उपयोग कैसे किया जाता है। यहीं पर शासन (Governance) की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। सुशासन, जिसमें पारदर्शिता, जवाबदेही, कानून का राज और भागीदारीपूर्ण निर्णय-प्रक्रिया शामिल है, आर्थिक विकास को मानव विकास में बदलने के लिए एक आवश्यक तंत्र है। जिन देशों में भ्रष्टाचार व्यापक है और सार्वजनिक संस्थान कमजोर हैं, वे अक्सर अपने नागरिकों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी सेवाओं के रूप में विकास के लाभ प्रदान करने में विफल रहते हैं, भले ही उनकी राष्ट्रीय आय अधिक हो। संसाधनों को सेना या अभिजात वर्ग की विलासिता पर खर्च किया जा सकता है, जबकि सामाजिक क्षेत्रों की उपेक्षा की जाती है। इसके विपरीत, जो देश सामाजिक क्षेत्रों में बुद्धिमानी से निवेश करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि सेवाएँ उन तक पहुँचें जिन्हें उनकी सबसे अधिक आवश्यकता है, वे कम आय के स्तर पर भी उच्च मानव विकास प्राप्त कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, राजनीतिक स्वतंत्रता और एक सक्रिय नागरिक समाज सशक्तीकरण के लिए महत्वपूर्ण हैं। जब लोग स्वतंत्र रूप से संगठित हो सकते हैं, अपनी राय व्यक्त कर सकते हैं, और अपने नेताओं को जवाबदेह ठहरा सकते हैं, तो वे बेहतर सेवाओं और नीतियों की मांग करने में अधिक सक्षम होते हैं जो उनके जीवन को बेहतर बनाते हैं। इस प्रकार, मानव विकास केवल एक तकनीकी अभ्यास नहीं है, बल्कि एक गहन राजनीतिक प्रक्रिया है जो शक्ति, शासन और नागरिक अधिकारों से जुड़ी है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. परिच्छेद के अनुसार, आर्थिक विकास को मानव विकास में बदलने के लिए क्या आवश्यक है?
(A) केवल अधिक आर्थिक संसाधन।
(B) एक बड़ी सेना।
(C) सुशासन और प्रभावी सार्वजनिक संस्थान।
(D) अंतर्राष्ट्रीय सहायता पर निर्भरता।

172. स्रोत के अनुसार, कमजोर सार्वजनिक संस्थान और भ्रष्टाचार मानव विकास को कैसे बाधित करते हैं?
(A) वे हमेशा राष्ट्रीय आय को कम करते हैं।
(B) वे शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी आवश्यक सेवाओं के प्रभावी वितरण को रोकते हैं।
(C) वे केवल राजनीतिक स्वतंत्रता को प्रभावित करते हैं।
(D) वे केवल अमीर लोगों को प्रभावित करते हैं।

173. परिच्छेद इस बात का क्या उदाहरण देता है कि कम आय वाला देश भी उच्च मानव विकास प्राप्त कर सकता है?
(A) सैन्य खर्च में भारी निवेश करके।
(B) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर प्रतिबंध लगाकर।
(C) नागरिक स्वतंत्रता को सीमित करके।
(D) सामाजिक क्षेत्रों में बुद्धिमानी से निवेश करके।

174. राजनीतिक स्वतंत्रता और एक सक्रिय नागरिक समाज मानव विकास के लिए क्यों महत्वपूर्ण हैं?
(A) क्योंकि वे लोगों को अपने नेताओं को जवाबदेह ठहराने और बेहतर सेवाओं की मांग करने के लिए सशक्त बनाते हैं।
(B) क्योंकि वे सुनिश्चित करते हैं कि देश में केवल एक ही राजनीतिक दल हो।
(C) क्योंकि वे हमेशा आर्थिक विकास की गारंटी देते हैं।
(D) क्योंकि वे केवल चुनाव कराने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

175. इस परिच्छेद का मुख्य विचार क्या है?
(A) मानव विकास पूरी तरह से एक आर्थिक मुद्दा है।
(B) मानव विकास हासिल करने के लिए सैन्य ताकत सबसे महत्वपूर्ण है।
(C) मानव विकास केवल एक तकनीकी अभ्यास नहीं है, बल्कि यह शासन, राजनीति और नागरिक अधिकारों से भी गहराई से जुड़ा हुआ है।
(D) भ्रष्टाचार का मानव विकास पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

ANSWERS

1. (B) यह मात्रात्मक और मूल्य निरपेक्ष है।
वृद्धि समय के अंतराल में होने वाले मात्रात्मक परिवर्तन को दर्शाती है जिसका मूल्य निरपेक्ष होता है। यह परिवर्तन धनात्मक या ऋणात्मक दोनों स्वरूपों में संभव है। यदि किसी क्षेत्र की जनसंख्या में वृद्धि होती है किंतु वहां उपलब्ध मूलभूत सुविधाओं में कोई विस्तार नहीं होता, तो ऐसी स्थिति को विकास रहित केवल मात्रात्मक वृद्धि ही माना जाता है।

2. (A) क्षमता उपागम
क्षमता उपागम मुख्य रूप से नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन के विचारों से संबंधित माना जाता है। इस उपागम के अंतर्गत संसाधनों तक पहुँच के क्षेत्रों में मानवीय क्षमताओं का निर्माण करने पर विशेष बल दिया जाता है। क्षमताओं के निरंतर विकास से ही लोगों के विकल्पों में वृद्धि होती है, जो मानव विकास की प्रक्रिया का एक अनिवार्य अंग है।

3. (B) केवल 2 और 3
मानव विकास सूचकांक का मापन स्वास्थ्य, शिक्षा और संसाधनों तक पहुँच के आधार पर किया जाता है। स्वास्थ्य का मूल्यांकन जन्म के समय जीवन-प्रत्याशा से होता है, जबकि संसाधनों तक पहुँच को क्रय शक्ति के संदर्भ में मापा जाता है। सूचकांक 0 से 1 के स्कोर पर आधारित होता है और इसमें सम्मिलित प्रत्येक आयाम को एक-तिहाई भार दिया जाता है।

4. (D) सार्थक जीवन व्यतीत करने योग्य दशाएँ उत्पन्न करना
विकास का प्राथमिक ध्येय ऐसी दशाएं उत्पन्न करना है जिसमें लोग सार्थक जीवन व्यतीत कर सकें। सार्थक जीवन केवल दीर्घायु होना नहीं है, बल्कि व्यक्ति का स्वस्थ होना, विवेकशील होना और समाज में सक्रिय भागीदारी करना भी आवश्यक है। इसका उद्देश्य लोगों के विकल्पों में वृद्धि करना और उन्हें अपनी क्षमताओं के अनुसार उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने की स्वतंत्रता प्रदान करना है।

5. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
किसी राष्ट्र की प्रगति को केवल आर्थिक वृद्धि के पैमाने से मापना अपर्याप्त है क्योंकि वृद्धि मात्रात्मक होती है। विकास का वास्तविक अर्थ लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार और उन्हें प्राप्त स्वतंत्रताओं से है। इसीलिए अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, क्योंकि विकास का संबंध मात्र धन संचय से न होकर मानवीय गरिमा और विकल्पों में विस्तार से होता है।

6. (B) महबूब-उल-हक
मानव विकास की आधुनिक अवधारणा का प्रतिपादन प्रख्यात पाकिस्तानी अर्थशास्त्री डॉ. महबूब-उल-हक द्वारा किया गया था। उन्होंने विकास को लोगों के विकल्पों में वृद्धि के रूप में परिभाषित किया, जिसमें मनुष्य सभी विकास गतिविधियों के केंद्र में होता है। उनके अनुसार विकास का मुख्य उद्देश्य लोगों के लिए ऐसी परिस्थितियां बनाना है जहां वे स्वस्थ और सृजनात्मक जीवन जी सकें।

7. (D) भेदभाव
मानव विकास के चार प्रमुख स्तंभ हैं जिनमें समता, सतत पोषणीयता, उत्पादकता और सशक्तीकरण शामिल हैं। भेदभाव इस अवधारणा के पूर्णतः विपरीत है क्योंकि यह लोगों के विकल्पों को सीमित करता है। विकास की प्रक्रिया में जाति, लिंग या धर्म के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव विकास के उद्देश्यों को बाधित करता है और अवसरों तक समान पहुँच को रोकता है।

8. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
आय उपागम आय के स्तर को स्वतंत्रता का द्योतक मानता है, जबकि कल्याण उपागम मानव को सरकारी गतिविधियों का निष्क्रिय प्राप्तकर्ता मानता है। आधारभूत आवश्यकता उपागम में छः न्यूनतम आवश्यकताओं पर बल दिया गया है और क्षमता उपागम मानव क्षमताओं के निर्माण की वकालत करता है। यह मिलान विभिन्न दृष्टिकोणों से मानव विकास को समझने में सहायक होता है जो अत्यंत आवश्यक है।

9. (C) सकारात्मक वृद्धि से सदैव विकास होता है।
विकास एक गुणात्मक परिवर्तन है जो सदैव मूल्य सापेक्ष होता है। सकारात्मक वृद्धि होने पर भी विकास तब तक नहीं होता जब तक गुणवत्ता में सकारात्मक सुधार न हो। उदाहरण के लिए, किसी शहर की जनसंख्या बढ़ना सकारात्मक वृद्धि है, किंतु सुविधाओं का अभाव विकासहीनता को दर्शाता है। अतः यह कहना गलत है कि सकारात्मक वृद्धि से हर परिस्थिति में विकास होता है।

10. (A) 3, 1, 2, 4
मानव विकास के घटनाक्रम में सर्वप्रथम अस्सी के दशक के अंत में अवधारणा का स्पष्टीकरण हुआ। इसके पश्चात 1990 में प्रथम मानव विकास सूचकांक निर्मित किया गया। 1991 में सोवियत संघ का विघटन हुआ और बहुत बाद में 2015 में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम शुरु हुआ। यह कालानुक्रमिक क्रम विकास के सामाजिक और राजनीतिक आयामों के ऐतिहासिक विकास को सटीक दर्शाता है।

11. (D) मानव को सभी विकासात्मक गतिविधियों के लक्ष्य के रूप में देखना
कल्याण उपागम के अंतर्गत मानव को विकास का केंद्र और सभी सरकारी गतिविधियों का मुख्य लक्ष्य माना जाता है। यह उपागम शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा जैसे क्षेत्रों पर सार्वजनिक व्यय बढ़ाने का समर्थन करता है। इसमें लोग विकास के सक्रिय प्रतिभागी नहीं होते, बल्कि वे सरकार द्वारा

प्रदान की जाने वाली विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं और सुख-सुविधाओं के केवल निष्क्रिय प्राप्तकर्ता होते हैं।

12. (C) केवल 1, 2, 3 और 4
मानव विकास के चार स्तंभ समता, सतत पोषणीयता, उत्पादकता और सशक्तीकरण हैं जो विकास की नींव रखते हैं। समता का अर्थ समान पहुँच, सतत पोषणीयता का अर्थ निरंतरता, उत्पादकता का मानवीय श्रम से संबंध और सशक्तीकरण का अर्थ चयन की शक्ति है। पाँचवाँ कथन गलत है क्योंकि इन स्तंभों का विस्तृत प्रतिपादन मुख्य रूप से महबूब-उल-हक के विचारों और प्रतिवेदनों पर आधारित है।

13. (C) केवल भौतिक संपत्ति का संचय
सार्थक जीवन की अवधारणा भौतिक संपत्ति के संचय तक सीमित नहीं है। इसमें व्यक्ति का शारीरिक रूप से स्वस्थ होना, अपनी बुद्धि का विकास करना और सामाजिक कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेना सम्मिलित है। केवल धन कमाना विकास का सूचक नहीं हो सकता यदि व्यक्ति के पास अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए ज्ञान, कौशल और स्वास्थ्य के पर्याप्त अवसर न हों।

14. (D) साक्षरता दर और सकल नामांकन अनुपात से
मानव विकास सूचकांक में शिक्षा का मापन प्रौढ़ साक्षरता दर और सकल नामांकन अनुपात के संयुक्त विश्लेषण द्वारा किया जाता है। साक्षरता दर ज्ञान तक पहुँच को दर्शाती है, जबकि नामांकन अनुपात शैक्षणिक संस्थाओं में लोगों की भागीदारी को प्रकट करता है। ये दोनों घटक सामूहिक रूप से किसी देश की शैक्षिक स्थिति और वहां के लोगों के बौद्धिक विकास के स्तर को निर्धारित करते हैं।

15. (A) आधारभूत आवश्यकता उपागम
आधारभूत आवश्यकता उपागम मूल रूप से अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा प्रस्तावित किया गया था। इस उपागम में मानव विकास के लिए छः न्यूनतम आवश्यकताओं की पहचान की गई है जिनमें स्वास्थ्य, शिक्षा, भोजन, जलापूर्ति, स्वच्छता और आवास शामिल हैं। इसमें मानवीय विकल्पों के प्रश्न की उपेक्षा की गई है और केवल परिभाषित वर्गों की मूलभूत शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है।

16. (B) सामाजिक सेक्टरों की बजाय प्रतिरक्षा पर अधिक व्यय करना
निम्न मानव विकास वाले देशों में अक्सर सामाजिक क्षेत्र के बजाय प्रतिरक्षा पर अधिक बजट खर्च किया जाता है। ये देश प्रायः राजनीतिक अस्थिरता, गृहयुद्ध या सामाजिक उपद्रव जैसी समस्याओं से जूझ रहे होते हैं। परिणामस्वरूप, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में निवेश की कमी हो जाती है, जो अंततः देश के मानव विकास सूचकांक के स्कोर को निरंतर कम बनाए रखती है।

17. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
उच्च मानव विकास वाले देश शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे सामाजिक क्षेत्रों में भारी निवेश करते हैं। सुशासन और लोक कल्याणकारी नीतियों के कारण इन देशों के नागरिकों को बेहतर अवसर प्राप्त होते हैं। यही कारण है कि अभिकथन और कारण दोनों सही हैं, क्योंकि लोगों की क्षमताओं में निवेश ही इन देशों को वैश्विक स्तर पर विकास की श्रेणी में सर्वोच्च स्थान पर रखता है।

18. (A) सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता (GNH)
भूटान विश्व का एकमात्र ऐसा देश है जिसने सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता को देश की प्रगति का आधिकारिक माप घोषित किया है। यह अवधारणा भौतिक उन्नति के साथ-साथ आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण पर बल देती है। भूटान का मानना है कि प्रसन्नता की कीमत पर केवल भौतिक विकास करना वास्तविक प्रगति नहीं है, बल्कि पर्यावरण और संस्कृति का संतुलन भी आवश्यक है।

19. (C) केवल 1, 2 और 4
मानव विकास सूचकांक उपलब्धियों को मापता है, जबकि मानव गरीबी सूचकांक विकास में होने वाली कमियों को दर्शाता है। गरीबी सूचकांक एक गैर-आय माप है जो साक्षरता और स्वच्छ जल जैसी बुनियादी सुविधाओं के अभाव को मापता है। विकास सूचकांक की एक मुख्य सीमा यह है कि यह समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संसाधनों के वितरण के संबंध में कोई जानकारी नहीं देता है।

20. (D) प्रत्येक व्यक्ति को उपलब्ध अवसरों के लिए समान पहुँच की व्यवस्था।
समता मानव विकास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्तंभ है जिसका अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति को अवसरों तक समान पहुँच प्राप्त होनी चाहिए। यह पहुँच लिंग, जाति, आय या धर्म के किसी भी भेदभाव के बिना सुनिश्चित की जानी चाहिए। समाज में व्याप्त विषमताओं को दूर करना और सभी वर्गों को समान धरातल प्रदान करना ही वास्तविक रूप में मानव विकास को सफल बनाता है।

21. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
मानव विकास प्रतिवेदन में देशों का वर्गीकरण उनके सूचकांक स्कोर के आधार पर किया जाता है। अति उच्च श्रेणी के लिए स्कोर 0.800 से ऊपर, उच्च के लिए 0.700 से 0.799, मध्यम के लिए 0.550 से 0.699 और निम्न श्रेणी के लिए 0.550 से कम होना अनिवार्य है। यह वर्गीकरण वैश्विक स्तर पर देशों की तुलनात्मक स्थिति को स्पष्ट करने में अत्यधिक सहायक होता है।

22. (B) प्रायः मानव विकास में बड़े देशों की अपेक्षा छोटे देशों का कार्य बेहतर रहा है।
मानव विकास की अंतर्राष्ट्रीय तुलनाओं से यह स्पष्ट होता है कि विकास का सीधा संबंध देश के भौगोलिक आकार या प्रति व्यक्ति आय से नहीं है। कई छोटे देशों ने अपने बड़े पड़ोसी देशों

की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया है। उदाहरण के तौर पर, श्रीलंका और त्रिनिदाद का सूचकांक स्कोर भारत से बेहतर रहा है, जो यह दर्शाता है कि मानव संसाधन निवेश सर्वोपरि है।

23. (D) अवसरों की उपलब्धता में निरंतरता सुनिश्चित करना
सतत पोषणीयता का अर्थ है कि अवसरों की उपलब्धता में निरंतरता होनी चाहिए ताकि वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों को समान अवसर मिलते रहें। इसका तात्पर्य पर्यावरणीय, वित्तीय और मानवीय संसाधनों का इस प्रकार उपयोग करना है कि वे भविष्य के लिए भी सुरक्षित रहें। यदि संसाधनों का दुरुपयोग होता है, तो आगामी पीढ़ियों के लिए विकल्प और विकास के अवसर अत्यंत सीमित हो जाएंगे।

24. (A) प्रति व्यक्ति आय
मानव गरीबी सूचकांक एक गैर-आय आधारित मापन पद्धति है जो विकास की कमियों को उजागर करती है। इसमें 40 वर्ष की आयु तक जीवित न रह पाने की संभावना, प्रौढ़ निरक्षरता दर और सुरक्षित जल तक पहुँच न रखने वाले लोगों की संख्या शामिल की जाती है। चूंकि यह आय पर निर्भर नहीं है, इसलिए इसमें प्रति व्यक्ति आय को घटक के रूप में नहीं गिना जाता है।

25. (A) केवल 5
मानव विकास सूचकांक का निर्माण वर्ष 1990 में किया गया था, न कि 1995 में। अन्य सभी कथन सत्य हैं क्योंकि वृद्धि और विकास की अवधारणाएं क्रमशः मात्रात्मक और गुणात्मक होती हैं। डॉ. महबूब-उल-हक और अमर्त्य सेन ने इस क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया है। सूचकांक के प्रकाशन वर्ष संबंधी त्रुटि के कारण केवल पांचवां कथन असत्य है, जो ऐतिहासिक तथ्यों के विपरीत है।

26. (A) संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP)
संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम वर्ष 1990 से प्रतिवर्ष वैश्विक स्तर पर मानव विकास प्रतिवेदन प्रकाशित कर रहा है। यह प्रतिवेदन विभिन्न देशों को उनके स्वास्थ्य, शिक्षा और संसाधनों तक पहुँच के आधार पर क्रमबद्ध करता है। यह प्रकाशन वैश्विक समुदाय को विकास के केवल आर्थिक संकेतकों से आगे बढ़कर सामाजिक और मानवीय कल्याण के व्यापक परिप्रेक्ष्य में सोचने के लिए प्रेरित करता रहता है।

27. (D) मानव कार्य अथवा मानव श्रम की उत्पादकता से
उत्पादकता स्तंभ का मुख्य सरोकार मानव कार्य और मानवीय श्रम की उत्पादकता को निरंतर बढ़ाने से है। इसका अर्थ है कि लोगों में क्षमताओं का निर्माण करके और उनके स्वास्थ्य तथा ज्ञान में निवेश करके उनकी कार्यक्षमता को बेहतर बनाया जाए। जन-समुदाय ही राष्ट्रों का वास्तविक धन होता है, अतः उनकी उत्पादकता में वृद्धि करना समग्र राष्ट्रीय विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

28. (B) मनोरंजन
अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा प्रतिपादित आधारभूत आवश्यकता उपागम में छः अनिवार्य न्यूनतम आवश्यकताओं की पहचान की गई है। इनमें स्वास्थ्य, शिक्षा, भोजन, जलापूर्ति, स्वच्छता और आवास सम्मिलित हैं। मनोरंजन इस सूची का हिस्सा नहीं है क्योंकि यह उपागम केवल उन प्राथमिक भौतिक आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित करता है जो मानव अस्तित्व और बुनियादी जीवन स्तर को बनाए रखने के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक मानी जाती हैं।

29. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
बालिकाओं को शिक्षित करना सतत पोषणीय विकास का सशक्त उदाहरण है क्योंकि यह भविष्य के अवसरों को सुरक्षित करता है। यदि किसी समुदाय में लड़कियों को शिक्षा से वंचित रखा जाता है, तो वयस्क होने पर उनके पास रोजगार और विकास के विकल्प अत्यंत सीमित हो जाते हैं। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही हैं, क्योंकि यह वर्तमान निवेश भावी पीढ़ी के विकास को सुनिश्चित करता है।

30. (D) स्वस्थ जीवन, ज्ञान प्राप्ति और शिष्ट जीवन के साधन
मानव विकास के सबसे महत्वपूर्ण आयामों में दीर्घ और स्वस्थ जीवन जीना, ज्ञान प्राप्त करना तथा एक शिष्ट जीवन जीने के लिए पर्याप्त संसाधनों तक पहुँच होना शामिल है। ये तत्व व्यक्ति को समाज में गरिमापूर्ण स्थान दिलाने और उसे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में समर्थ बनाने के लिए आवश्यक हैं। भौतिक संपत्ति केवल एक साधन है, जबकि वास्तविक विकास मानव क्षमताओं के विस्तार में निहित है।

31. (A) भारत
वर्ष 2023-24 के मानव विकास प्रतिवेदन के अनुसार स्विट्ज़रलैंड, नॉर्वे और सिंगापुर जैसे देश 'अति उच्च' मानव विकास समूह में शामिल हैं। भारत इस श्रेणी में नहीं आता, बल्कि इसे 'मध्यम' मानव विकास वाले देशों के वर्ग में रखा गया है। अति उच्च श्रेणी में स्थान पाने के लिए किसी भी देश का मानव विकास सूचकांक स्कोर 0.800 से अधिक होना अनिवार्य होता है।

32. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
समता का संबंध अवसरों तक समान पहुँच से है और सतत पोषणीयता भावी पीढ़ियों के लिए निरंतरता सुनिश्चित करती है। उत्पादकता मानव क्षमताओं के निर्माण द्वारा कार्यक्षमता सुधारने पर केंद्रित है, जबकि सशक्तीकरण लोगों को अपने विकल्प चुनने की शक्ति प्रदान करता है। यह उचित मिलान मानव विकास के चारों आधारभूत स्तंभों की व्यावहारिक व्याख्या और उनके वास्तविक अनुप्रयोगों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है।

33. (C) केवल 3
आधारभूत आवश्यकता उपागम में मानवीय विकल्पों के प्रश्न पर जोर नहीं दिया गया है, बल्कि यह केवल छः न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति पर केंद्रित है। आय, कल्याण और क्षमता उपागमों के संबंध में दिए गए अन्य कथन पूर्णतः सत्य हैं। विकल्पों में वृद्धि की बात मुख्य रूप से डॉ. महबूब-उल-हक की अवधारणा और क्षमता उपागम में की गई है, जो इस कथन को असत्य बनाता है।

34. (A) प्रत्येक को 1/3 भारिता
मानव विकास सूचकांक की गणना करते समय स्वास्थ्य, शिक्षा और संसाधनों तक पहुँच नामक तीनों आयामों को समान महत्व दिया जाता है। प्रत्येक आयाम को कुल सूचकांक में एक-तिहाई भार प्रदान किया जाता है। यह समान भारिता सुनिश्चित करती है कि देश का समग्र विकास संतुलित हो और किसी एक क्षेत्र की प्रगति दूसरे महत्वपूर्ण क्षेत्र की अनदेखी न करने पाए, जिससे मापन सटीक हो।

35. (A) 2, 1, 3
विकास के इतिहास में दशकों तक केवल आर्थिक वृद्धि को ही प्रगति का पैमाना माना गया। इसके पश्चात डॉ. महबूब-उल-हक और अमर्त्य सेन ने विकल्पों और स्वतंत्रता पर आधारित वैकल्पिक विचार प्रस्तुत किए। अंततः 1990 में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा प्रथम मानव विकास प्रतिवेदन प्रकाशित किया गया। यह क्रम विकास की अवधारणा के संकुचित से व्यापक होने की ऐतिहासिक यात्रा को दर्शाता है।

36. (D) 42
मानव विकास प्रतिवेदन 2023-24 के आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, मध्यम मानव विकास श्रेणी में कुल 42 देश सम्मिलित हैं। इस श्रेणी में वे राष्ट्र आते हैं जिनका सूचकांक स्कोर 0.550 से 0.699 के मध्य रहता है। भारत भी इसी मध्यम श्रेणी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह वर्ग उन विकासशील देशों का प्रतिनिधित्व करता है जो सामाजिक और आर्थिक सुधारों के माध्यम से प्रगति कर रहे हैं।

37. (C) महबूब-उल-हक
यह प्रेरक उद्धरण डॉ. महबूब-उल-हक के मौलिक विचारों और उनकी दूरदर्शी सोच को प्रतिबिंबित करता है। उन्होंने विकास को केवल वर्तमान स्थिति के सुधार के रूप में नहीं, बल्कि उन नवीन संभावनाओं के सृजन के रूप में देखा जो पहले कभी अस्तित्व में नहीं थीं। उनका दर्शन लोगों के विकल्पों के निरंतर विस्तार और मानवीय जीवन की गुणवत्ता को नई ऊंचाइयों तक ले जाने पर आधारित था।

38. (A) केवल 1, 2 और 3
श्रीलंका का मानव विकास स्तर भारत से बेहतर है और भारत में केरल का प्रदर्शन पंजाब जैसे समृद्ध राज्यों से श्रेष्ठ है। भूटान द्वारा प्रसन्नता को मापने का विचार भी सत्य है। भारत 'मध्यम' श्रेणी में है, न कि 'अति उच्च' में, और बड़े देशों का प्रदर्शन हमेशा छोटे देशों से बेहतर नहीं होता। अतः प्रथम तीन कथन ही तथ्यात्मक रूप से सही और तर्कसंगत हैं।

39. (D) विकासहीन वृद्धि
यदि किसी क्षेत्र में जनसंख्या या आर्थिक उत्पादन जैसी मात्रात्मक वृद्धि होती है, किंतु स्वास्थ्य, शिक्षा और आवास जैसी गुणवत्तापूर्ण सेवाओं में कोई सुधार नहीं होता, तो उसे विकासहीन वृद्धि कहा जाता है। विकास के लिए धनात्मक वृद्धि के साथ-साथ जीवन की गुणवत्ता में गुणात्मक सुधार होना अनिवार्य है। बिना गुणात्मक सुधार के केवल संख्यात्मक बढ़ोत्तरी वास्तविक विकास के लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकती है।

40. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
निम्न मानव विकास वाले देशों में अक्सर राजनीतिक अस्थिरता और गृहयुद्ध जैसी स्थितियां पाई जाती हैं। इन समस्याओं के कारण ये राष्ट्र अपने संसाधनों का बड़ा हिस्सा प्रतिरक्षा पर खर्च करते हैं, जिससे शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों के लिए बजट कम हो जाता है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही हैं क्योंकि रक्षा पर अत्यधिक व्यय प्रत्यक्ष रूप से मानवीय विकास के निवेश को बाधित करता है।

41. (C) अवसरों की उपलब्धता में निरंतरता
मानव विकास के संदर्भ में निर्वहन या सतत पोषणीयता का अर्थ अवसरों की उपलब्धता में निरंतरता सुनिश्चित करना है। इसका मुख्य उद्देश्य यह है कि वर्तमान पीढ़ी अपने संसाधनों का उपयोग इस प्रकार करे कि भावी पीढ़ियों के लिए भी विकास के समान अवसर और संसाधन उपलब्ध रहें। संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखना इस अवधारणा के मूल में निहित प्राथमिक सिद्धांत माना जाता है।

42. (A) अमर्त्य सेन
प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने विकास को मुख्य रूप से स्वतंत्रता में वृद्धि के रूप में देखा है। उनका मानना है कि स्वतंत्रता में होने वाली वृद्धि ही विकास को लाने वाला सबसे प्रभावशाली माध्यम है। जब लोगों के पास अपने विकल्प चुनने की अधिक स्वतंत्रता होती है, तभी वे अपनी क्षमताओं का पूर्ण विकास कर सकते हैं। स्वतंत्रता और क्षमता निर्माण ही वास्तविक मानवीय प्रगति का आधार हैं।

43. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
वृद्धि मात्रात्मक परिवर्तन है जबकि विकास गुणात्मक परिवर्तन को दर्शाता है। सार्थक जीवन का अर्थ उद्देश्यपूर्ण और स्वस्थ जीवन जीना है, और सशक्तीकरण लोगों को अपने विकल्प स्वयं चुनने हेतु शक्ति प्रदान करता है। यह सुमेलित वर्गीकरण विकास के विभिन्न तकनीकी शब्दों और उनके वास्तविक अर्थों के बीच के बारीक अंतर को स्पष्ट करता है, जो मानव विकास को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

44. (B) मानव विकास का अति उच्च स्तर
मानव विकास सूचकांक का 0.983 स्कोर विकास के 'अति उच्च' स्तर को दर्शाता है। 0.800 से ऊपर के सभी स्कोर इसी श्रेणी में आते हैं, जहाँ जीवन प्रत्याशा, शिक्षा और प्रति व्यक्ति आय के मानक अत्यंत उत्कृष्ट होते हैं। स्विट्ज़रलैंड और नॉर्वे जैसे विकसित राष्ट्र प्रायः इसी श्रेणी में शीर्ष स्थान प्राप्त करते हैं, जो उनके नागरिकों के उच्च जीवन स्तर का परिचायक है।

45. (C) एडम स्मिथ
डॉ. महबूब-उल-हक और अमर्त्य सेन दक्षिण एशियाई अर्थशास्त्री हैं जिन्होंने मानव विकास की अवधारणा को स्थापित करने में मुख्य भूमिका निभाई है। एडम स्मिथ को शास्त्रीय अर्थशास्त्र का

जनक माना जाता है, जिनका कार्य मुख्य रूप से धन के विज्ञान और बाजार अर्थव्यवस्था पर केंद्रित था। मानव विकास की आधुनिक और सामाजिक कल्याणकारी अवधारणा से उनका प्रत्यक्ष और प्राथमिक संबंध अन्य दो विद्वानों जैसा नहीं है।

46. (C) केवल 1, 2 और 3
मध्यम मानव विकास वाले देशों का वर्ग वर्तमान में सबसे विशाल है और इनमें से अधिकांश का विकास द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हुआ है। इन देशों में उच्च श्रेणी के देशों की तुलना में अधिक सामाजिक विविधता पाई जाती है। चौथा कथन गलत है क्योंकि इस वर्ग के कई देश अक्सर राजनीतिक अस्थिरता और सामाजिक चुनौतियों का सामना करते रहे हैं, जो उनकी प्रगति को प्रभावित करता है।

47. (A) अपने विकल्प चुनने के लिए शक्ति प्राप्त करना
सशक्तीकरण का वास्तविक अर्थ अपने जीवन के महत्वपूर्ण विकल्प चुनने के लिए आर्थिक और सामाजिक शक्ति प्राप्त करना है। यह शक्ति केवल धन से नहीं, बल्कि शिक्षा, सुशासन और स्वतंत्रता के माध्यम से आती है। जब लोग सक्षम होते हैं और उनके पास निर्णय लेने की स्वतंत्रता होती है, तभी वे समाज में सशक्त माने जाते हैं। यह मानव विकास की प्रक्रिया का एक अपरिहार्य और मजबूत स्तंभ है।

48. (B) अति उच्च
मानव विकास प्रतिवेदन 2023-24 के अनुसार जिन देशों का सूचकांक स्कोर 0.800 से ऊपर होता है, उन्हें 'अति उच्च' मानव विकास की श्रेणी में वर्गीकृत किया जाता है। इस समूह में मुख्य रूप से वे औद्योगिकृत राष्ट्र शामिल हैं जिन्होंने सामाजिक कल्याण, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में निवेश को अपनी राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाया है। यह श्रेणी वैश्विक स्तर पर विकास के उच्चतम मानकों का प्रतिनिधित्व करती है।

49. (B) सामाजिक भेदभाव
सामाजिक भेदभाव एक प्रमुख कारक है जो लोगों के विकल्पों को अत्यंत सीमित कर देता है। जब किसी व्यक्ति के साथ उसकी जाति, लिंग या धर्म के आधार पर भेदभाव किया जाता है, तो उसे शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के समान अवसर प्राप्त नहीं होते। अवसरों की यह कमी उसकी क्षमता निर्माण को रोकती है और उसे विकास की मुख्यधारा से अलग कर देती है, जो मानव विकास के विरुद्ध है।

50. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
शिक्षा के अभाव में व्यक्ति के पास उपलब्ध विकल्पों की संख्या स्वतः ही कम हो जाती है, जैसे एक अशिक्षित व्यक्ति डॉक्टर बनने की योग्यता प्राप्त नहीं कर सकता। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं। शिक्षा न केवल ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि व्यक्ति को अपने जीवन के लक्ष्य चुनने के लिए सक्षम भी बनाती है। शिक्षा की कमी प्रत्यक्ष रूप से मानवीय स्वतंत्रता और विकल्पों को सीमित करती है।

51. (A) केवल 5
मानव विकास प्रतिवेदन संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा प्रकाशित किया जाता है, न कि विश्व बैंक द्वारा। अन्य सभी कथन ऐतिहासिक रूप से सही हैं क्योंकि महबूब-उल-हक और अमर्त्य सेन ने 1990 में इस अवधारणा को विश्व के सम्मुख प्रस्तुत किया था। पाँचवाँ कथन एक सामान्य भ्रम है, जबकि वास्तविकता यह है कि यह प्रतिवेदन यूएनडीपी की एक वार्षिक और अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक वैश्विक पहल का हिस्सा है।

52. (D) राजनीतिक उपद्रव और सामाजिक अस्थिरता
राजनीतिक उपद्रव, गृहयुद्ध और सामाजिक अस्थिरता ऐसे कारक हैं जो किसी देश में मानव विकास के स्तर को निम्न बनाए रखते हैं। ऐसी परिस्थितियों में सरकारें जन कल्याणकारी योजनाओं के बजाय रक्षा और सुरक्षा पर अधिक व्यय करने को विवश होती हैं। अस्थिर वातावरण में निवेश कम होता है और शिक्षा तथा स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सेवाएँ चरमरा जाती हैं, जिससे नागरिकों के विकल्पों और क्षमताओं का विकास रुक जाता है।

53. (C) सुशासन एवं लोकोन्मुखी नीतियाँ
लोगों के सशक्तीकरण के लिए सुशासन और लोकोन्मुखी सरकारी नीतियों की उपस्थिति अनिवार्य है। जब शासन व्यवस्था पारदर्शी होती है और नीतियां जनता के लाभ के लिए बनाई जाती हैं, तभी आम नागरिकों को अवसरों तक समान पहुँच प्राप्त होती है। सूचना तक सरल पहुँच और लोकतांत्रिक वातावरण लोगों को शिक्षित होने और बेहतर विकल्प चुनने के लिए प्रेरित करता है, जिससे समाज का समग्र सशक्तिकरण संभव हो पाता है।

54. (A) 1, 2, 3
ऐतिहासिक दृष्टि से पहले पश्चिमी देशों में औद्योगीकरण के कारण उच्च मानव विकास हुआ। इसके बाद द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात कई विकासशील देशों ने मध्यम श्रेणी में अपनी जगह बनाई। अंत में 1991 में सोवियत संघ के विघटन से कई नए राष्ट्र अस्तित्व में आए जिन्होंने अपनी स्वतंत्र विकास यात्रा प्रारंभ की। यह कालानुक्रमिक विकास विश्व के राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य में आए व्यापक परिवर्तनों को दर्शाता है।

55. (D) क्योंकि यह लोगों को 'निष्क्रिय प्राप्तकर्ता' के रूप में देखता है।
कल्याण उपागम की मुख्य आलोचना इस आधार पर की जाती है कि यह लोगों को विकास की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार नहीं मानता। इसमें जनता को सरकार द्वारा प्रदान किए जाने वाले लाभों का केवल एक 'निष्क्रिय प्राप्तकर्ता' समझा जाता है। यह उपागम लोगों की अपनी क्षमताओं के निर्माण और उनकी स्वयं की निर्णय लेने की शक्ति के बजाय केवल बाहरी सुख-सुविधाओं और सरकारी वितरण प्रणाली पर अधिक बल देता है।

56. (B) P-3, Q-1, R-2, S-4
स्वास्थ्य को जन्म के समय जीवन-प्रत्याशा से और शिक्षा को साक्षरता तथा नामांकन दर से मापा जाता है। संसाधनों तक पहुँच का मापन अमेरिकी डॉलर में क्रय शक्ति द्वारा किया जाता है, जबकि एचडीआई स्कोर शून्य से एक के बीच होता है। यह सुमेलित वर्गीकरण मानव विकास सूचकांक की गणना में प्रयुक्त विभिन्न सांख्यिकीय संकेतकों और उनकी विशिष्ट माप प्रणालियों को सटीक रूप से प्रस्तुत करता है।

57. (B) केवल 1, 2 और 3
वृद्धि मात्रात्मक होती है और यह धनात्मक या ऋणात्मक हो सकती है, जैसा कि सुनामी प्रभावित नगरों में देखा जाता है। विकास के लिए वर्तमान परिस्थितियों में गुणात्मक सुधार और सकारात्मक वृद्धि का होना आवश्यक है। चौथा कथन गलत है क्योंकि जनसंख्या वृद्धि स्वतः विकास का सूचक नहीं है; विकास तभी माना जाता है जब वह जनसंख्या के जीवन स्तर में गुणात्मक सकारात्मक परिवर्तन लेकर आता है।

58. (A) यह वितरण के संबंध में मौन है।
मानव विकास सूचकांक की एक बड़ी सीमा यह है कि यह किसी देश के भीतर संसाधनों और उपलब्धियों के वितरण की असमानता को उजागर नहीं करता है। यह केवल एक औसत मान प्रदान करता है जिससे समाज के विभिन्न वर्गों के बीच व्याप्त खाई का पता नहीं चलता। उदाहरण के लिए, एक उच्च औसत स्कोर वाले देश में भी जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा मूलभूत सुविधाओं से वंचित हो सकता है।

59. (D) लोगों के विकल्पों में बढ़ोतरी से
डॉ. महबूब-उल-हक ने विकास की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए कहा था कि विकास का वास्तविक अर्थ लोगों के विकल्पों में निरंतर वृद्धि करना है। उनके अनुसार, यदि विकास लोगों के जीवन में नए अवसर नहीं लाता और उन्हें अपनी क्षमताओं के अनुरूप जीने की स्वतंत्रता नहीं देता, तो वह व्यर्थ है। विकल्पों में यह बढ़ोतरी ही मानवीय जीवन को अधिक सार्थक, गरिमापूर्ण और उद्देश्यपूर्ण बनाने में सहायक होती है।

60. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों की शिक्षा तक पहुँच अक्सर सीमित होती है, जिससे उनके जीवन के विकल्प कम हो जाते हैं। यह स्थिति समता के सिद्धांत के विरुद्ध है क्योंकि समता सभी के लिए समान अवसरों की वकालत करती है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं, क्योंकि शिक्षा का अभाव सीधे तौर पर व्यक्ति के विकास और सशक्तिकरण की संभावनाओं को बाधित करता है।

61. (C) संसाधन, स्वास्थ्य और शिक्षा
मानव विकास के केंद्र बिंदु स्वास्थ्य, शिक्षा और संसाधनों तक पहुँच हैं। ये तीन आयाम किसी भी व्यक्ति की जीवन गुणवत्ता को निर्धारित करने में प्राथमिक भूमिका निभाते हैं। शिक्षा ज्ञान प्रदान करती है, स्वास्थ्य कार्यक्षमता और दीर्घायु सुनिश्चित करता है, और संसाधनों तक पहुँच व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु क्रय शक्ति प्रदान करती है। इन तीनों का संतुलित विकास ही वास्तविक मानवीय प्रगति को सुनिश्चित करता है।

62. (D) निम्न
मानव विकास प्रतिवेदन 2023-24 के मानकों के अनुसार, 0.550 से कम सूचकांक स्कोर वाले देशों को 'निम्न' मानव विकास श्रेणी में रखा जाता है। इस श्रेणी के देशों में प्रायः बुनियादी ढांचे की कमी, उच्च मृत्यु दर और निम्न साक्षरता दर जैसी गम्भीर समस्याएँ पाई जाती हैं। इन राष्ट्रों को अपने नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार करने के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य में भारी निवेश की तत्काल आवश्यकता होती है।

63. (A) केवल 1, 2 और 4
आय उपागम आय को स्वतंत्रता का द्योतक मानता है और कल्याण उपागम शिक्षा तथा स्वास्थ्य पर सरकारी व्यय पर बल देता है। क्षमता उपागम अमर्त्य सेन की महत्वपूर्ण देन है। तीसरा और पाँचवाँ कथन भी वैसे सत्य हैं क्योंकि छः आवश्यकताओं वाला मॉडल आईएलओ ने दिया था। दिए गए विकल्पों के अनुसार 1, 2 और 4 सही हैं जो विकास को समझने के विभिन्न ऐतिहासिक और आधुनिक दृष्टिकोणों को दर्शाते हैं।

64. (B) उच्च सामाजिक विविधता
उच्च मानव विकास वाले देशों की एक प्रमुख विशेषता यह है कि उनमें अक्सर सामाजिक विविधता बहुत अधिक नहीं होती है। ये देश अधिकांशतः यूरोप में स्थित हैं और पूर्व साम्राज्य शक्तियां रहे हैं, जिन्होंने अपने नागरिकों और सुशासन में भारी निवेश किया है। इसके विपरीत, मध्यम मानव विकास वाले देशों में सामाजिक विविधता का स्तर उच्च एचडीआई वाले देशों की तुलना में सामान्यतः अधिक पाया जाता है।

65. (B) गुणात्मक सुधार के बिना केवल मात्रात्मक वृद्धि
विकासहीन वृद्धि उस स्थिति को कहते हैं जहाँ अर्थव्यवस्था के आकार या जनसंख्या में संख्यात्मक वृद्धि तो होती है, किंतु लोगों के जीवन स्तर या सुविधाओं में कोई गुणात्मक सुधार नहीं होता। उदाहरण के लिए, यदि किसी नगर की आबादी दोगुनी हो जाए पर वहाँ स्कूल और अस्पताल पहले जैसे ही रहें, तो यह विकासहीन वृद्धि है। वास्तविक विकास के लिए वृद्धि के साथ सकारात्मक गुणात्मक परिवर्तन होना अनिवार्य है।

66. (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
भूटान प्रसन्नता को मापता है और केरल कम आय के बावजूद उच्च मानव विकास का उदाहरण है। श्रीलंका का एचडीआई भारत से अधिक है और स्विट्ज़रलैंड वैश्विक स्तर पर सर्वोच्च स्थान पर है। यह मिलान दर्शाता है कि किस प्रकार भौगोलिक और आर्थिक विविधताओं के बावजूद अलग-अलग क्षेत्र और देश मानव विकास के मानकों पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में सफल रहे हैं, जो अध्ययन हेतु महत्वपूर्ण है।

67. (C) गुण में धनात्मक परिवर्तन
विकास का सबसे सटीक वर्णन 'गुण में धनात्मक परिवर्तन' है। जब तक किसी स्थिति में गुणवत्तापूर्ण सुधार नहीं होता,

तब तक उसे विकास नहीं कहा जा सकता। वृद्धि मात्रात्मक हो सकती है, लेकिन विकास सदैव मूल्य सापेक्ष होता है। इसका अर्थ है कि विकास तभी माना जाएगा जब वर्तमान दशाओं में सकारात्मक सुधार हो और लोगों के जीवन स्तर तथा विकल्पों में गुणवत्ता के स्तर पर बढ़ोत्तरी दर्ज की जाए।

68. (D) 33
मानव विकास प्रतिवेदन 2023-24 के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, विश्व में कुल 33 देश 'निम्न' मानव विकास की श्रेणी में आते हैं। इन देशों का एचडीआई स्कोर 0.550 से कम है। यह संख्या उन वैश्विक क्षेत्रों को इंगित करती है जहाँ मानवीय विकास की चुनौतियां सबसे अधिक हैं और जहाँ त्वरित अंतरराष्ट्रीय सहयोग तथा प्रभावी आंतरिक सामाजिक-आर्थिक नीतियों की व्यापक आवश्यकता निरंतर बनी हुई है।

69. (C) अपने उद्देश्यों को पूरा करने में स्वतंत्र होना
सार्थक जीवन का एक अनिवार्य घटक व्यक्ति का अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा करने के लिए स्वतंत्र होना है। इसमें केवल दीर्घायु होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि व्यक्ति के पास वह विवेक, कौशल और अवसर होने चाहिए जिनसे वह समाज में योगदान दे सके। स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता मानवीय गरिमा को बढ़ाते हैं और व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का पूर्ण उपयोग करने में सक्षम बनाकर विकास को चरितार्थ करते हैं।

70. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
मानव गरीबी सूचकांक आय पर आधारित न होकर विकास की कमियों जैसे निरक्षरता और अल्पायु को मापता है, इसलिए यह अक्सर एचडीआई की तुलना में अधिक अभावों को उजागर करता है। यह सूचकांक स्पष्ट करता है कि केवल औसत आय का उच्च होना विकास का पूर्ण प्रमाण नहीं है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही हैं, क्योंकि गरीबी सूचकांक विकास के नकारात्मक पहलुओं को अधिक गहराई से प्रदर्शित करता है।

71. (D) यह वर्ग विशालतम है और इसमें विकास द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हुआ।
मध्यम मानव विकास वाले देशों का समूह वर्तमान में विश्व का सबसे बड़ा वर्ग है। इनमें से अधिकांश देशों ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद स्वतंत्र होकर अपनी विकास यात्रा शुरु की थी। इस वर्ग के कई देश पूर्वकालीन उपनिवेश रहे हैं और वर्तमान में लोकोन्मुखी नीतियों के माध्यम से अपने सामाजिक और आर्थिक मानकों में सुधार कर रहे हैं। इन देशों में उच्च सामाजिक विविधता भी पाई जाती है।

72. (D) उपरोक्त सभी
मानव विकास के मापन की विधियाँ समय के साथ निरंतर अधिक सटीक और परिष्कृत हो रही हैं। शोधकर्ताओं ने भ्रष्टाचार के स्तर और राजनीतिक स्वतंत्रता के बीच गहरे संबंध पाए हैं। भूटान का सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता का विचार यह स्पष्ट करता है कि भौतिक प्रगति आध्यात्मिक सुख की कीमत पर नहीं होनी चाहिए। ये सभी बिंदु मानव विकास के व्यापक और आधुनिक आयामों को सही ढंग से परिभाषित करते हैं।

73. (C) सामाजिक सेक्टर पर सरकारी व्यय का प्रतिरुप
किसी देश के मानव विकास स्तर को समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण यह जानना है कि वहां की सरकार शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे सामाजिक क्षेत्रों पर कितना खर्च करती है। सैन्य शक्ति या कुल क्षेत्रफल विकास के वास्तविक सूचक नहीं हैं। सामाजिक क्षेत्र में किया गया निवेश सीधे तौर पर नागरिकों की क्षमताओं को बढ़ाता है, जिससे उस देश का मानव विकास सूचकांक स्कोर बेहतर और स्थायी बनता है।

74. (A) उत्पादकता - मानव श्रम उत्पादकता
उत्पादकता का सीधा संबंध मानव श्रम की कार्यक्षमता और कौशल से है। यह मानव विकास का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है जो इस विचार पर आधारित है कि स्वस्थ और शिक्षित लोग अधिक उत्पादक होते हैं। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि विकास गुणात्मक होता है, वृद्धि मात्रात्मक होती है और समता का अर्थ अवसरों तक समान पहुँच होता है, न कि असमान पहुँच। अतः केवल पहला युग्म सही सुमेलित है।

75. (A) 1, 2, 3
ऐतिहासिक क्रम के अनुसार, सर्वप्रथम 1945 में द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हुआ। इसके काफी समय बाद अस्सी के दशक के अंत में डॉ. हक और अमर्त्य सेन ने मानव विकास के विचारों को स्पष्ट किया। अंततः 1990 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा पहला मानव विकास प्रतिवेदन प्रकाशित किया गया। यह क्रम दर्शाता है कि कैसे वैश्विक शांति के पश्चात मानवीय कल्याण और विकास के नए दृष्टिकोण विकसित होकर वैश्विक मंच पर आए।

76. (A) केवल 4 और 5
अमर्त्य सेन ने विकास को स्वतंत्रता के रूप में देखा, जबकि डॉ. हक ने विकल्पों में वृद्धि पर जोर दिया। दिए गए कथनों में इन दोनों के विचारों को आपस में बदल दिया गया है, जिससे चौथा और पाँचवाँ कथन गलत हो जाते हैं। डॉ. हक ने ही 1990 में एचडीआई निर्मित किया था और वे अमर्त्य सेन के घनिष्ठ मित्र थे, जो मानव विकास की अवधारणा के शुरुआती दौर के तथ्य हैं।

77. (C) आय का स्तर स्वतंत्रता के स्तर को परिलक्षित करता है।
आय उपागम मानव विकास के सबसे पुराने दृष्टिकोणों में से एक है। इसकी मुख्य धारणा यह है कि किसी व्यक्ति की आय जितनी अधिक होगी, उसके पास जीवन की सुख-सुविधाओं और स्वतंत्रता का स्तर भी उतना ही ऊंचा होगा। इसमें आय के स्तर को ही मानवीय विकास और कल्याण का एकमात्र प्रमुख पैमाना माना जाता है, हालांकि आधुनिक सिद्धांतों में अब इसे विकास के कई कारकों में से केवल एक माना जाता है।

78. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ भारत सरकार की पहल है, जबकि एचडीआई और एचपीआई संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) के सूचकांक हैं। सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता का विचार भूटान से संबंधित है। यह सुमेलित वर्गीकरण विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रयासों तथा विकास मापन के उपकरणों को उनके सही प्रवर्तकों के साथ जोड़ता है, जो सामाजिक विकास

के वैश्विक ढांचे को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी जानकारी है।

79. (A) क्योंकि जीवन का कोई उद्देश्य होना भी आवश्यक है।
मानव विकास की अवधारणा के अनुसार, केवल लंबी आयु प्राप्त करना विकास का पूर्ण प्रमाण नहीं है। एक सार्थक जीवन के लिए व्यक्ति का स्वस्थ होना और उसके जीवन का कोई निश्चित उद्देश्य होना अत्यंत आवश्यक है। व्यक्ति के पास अपनी बुद्धि और कौशल का विकास करने तथा समाज में सहभागी बनने के अवसर होने चाहिए। उद्देश्यविहीन लंबा जीवन वास्तविक मानवीय उन्नति और आत्म-संतुष्टि के मानकों को पूरा नहीं करता है।

80. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
विकास के निम्न स्तर के लिए किसी समाज की संस्कृति को जिम्मेदार ठहराना एक भ्रांति है। वास्तव में, विकास का स्तर सामाजिक क्षेत्रों पर सरकारी निवेश और राजनीतिक स्थिरता जैसे कारकों पर अधिक निर्भर करता है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही हैं, क्योंकि उचित नीतियों और संसाधनों के अभाव में कोई भी समुदाय अपनी क्षमताओं का पूर्ण विकास नहीं कर पाता, चाहे उसकी सांस्कृतिक विरासत कितनी भी समृद्ध क्यों न हो।

81. (B) वृद्धि मात्रात्मक है, जबकि विकास गुणात्मक है।
वृद्धि और विकास के बीच मौलिक अंतर उनके स्वरूप में निहित है। वृद्धि केवल संख्यात्मक या मात्रात्मक परिवर्तन को दर्शाती है, जो धनात्मक या ऋणात्मक हो सकती है। इसके विपरीत, विकास एक गुणात्मक परिवर्तन है जिसका संबंध जीवन की गुणवत्ता में आने वाले सकारात्मक सुधारों से है। विकास तभी संभव है जब मात्रात्मक वृद्धि के साथ-साथ वर्तमान स्थितियों में मूल्य सापेक्ष और गुणात्मक उन्नति भी दर्ज की जाए।

82. (A) स्वास्थ्य, शिक्षा, संसाधनों तक पहुँच
मानव विकास सूचकांक के तीन आधारभूत स्तंभ स्वास्थ्य, शिक्षा और संसाधनों तक पहुँच हैं। स्वास्थ्य दीर्घायु और कार्यक्षमता को दर्शाता है, शिक्षा ज्ञान के स्तर और साक्षरता को प्रकट करती है, और संसाधनों तक पहुँच व्यक्ति की आर्थिक क्रय शक्ति को प्रदर्शित करती है। ये तीनों आयाम मिलकर किसी देश के नागरिकों के समग्र विकास और उनके जीवन की गुणवत्ता का एक संतुलित और व्यापक चित्र प्रस्तुत करते हैं।

83. (B) केवल 1, 2 और 3
मानव विकास प्रतिवेदन 2023-24 के अनुसार भारत मध्यम श्रेणी में है और इसका एचडीआई मान 0.644 तथा रैंक 134 है। चौथा कथन गलत है क्योंकि भारत का प्रदर्शन अपने सभी पड़ोसी देशों से बेहतर नहीं है; उदाहरण के तौर पर श्रीलंका और भूटान जैसे देशों का सूचकांक मान भारत से ऊँचा है। अतः केवल पहले तीन कथन ही वर्तमान अंतरराष्ट्रीय आंकड़ों के अनुसार सत्य और तर्कसंगत हैं।

84. (D) समता, सतत पोषणीयता, उत्पादकता, और सशक्तीकरण
मानव विकास की अवधारणा मुख्य रूप से चार स्तंभों पर टिकी है जो समता, सतत पोषणीयता, उत्पादकता और सशक्तीकरण हैं। समता अवसरों की समानता पर, सतत पोषणीयता भविष्य की निरंतरता पर, उत्पादकता मानवीय क्षमता पर और सशक्तीकरण निर्णय लेने की शक्ति पर बल देता है। ये चारों स्तंभ मिलकर एक ऐसा ढांचा तैयार करते हैं जो मानव कल्याण और सतत विकास को सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत अनिवार्य माना जाता है।

85. (C) मानव विकास का अत्यंत निम्न स्तर
0.268 का एचडीआई स्कोर मानव विकास के 'अत्यंत निम्न' स्तर का सूचक है। चूंकि यह मान 0.550 की न्यूनतम सीमा से काफी नीचे है, इसलिए यह दर्शाता है कि उस क्षेत्र में स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर के बुनियादी मानकों की स्थिति अत्यंत दयनीय है। ऐसे कम स्कोर वाले क्षेत्रों में गरीबी, बीमारी और निरक्षरता जैसी चुनौतियों का सामना करने के लिए व्यापक और प्रभावी सुधारात्मक नीतियों की आवश्यकता होती है।

86. (B) केवल 3 और 4
मानव विकास का स्तर देश के राजनीतिक परिवेश और लोगों को प्राप्त स्वतंत्रताओं से गहरा संबंध रखता है। उच्च एचडीआई वाले देशों में प्रायः संसाधनों का वितरण समाज के विभिन्न वर्गों के बीच अपेक्षाकृत अधिक समान पाया जाता है। पहला और दूसरा कथन गलत है क्योंकि निम्न एचडीआई वाले देश रक्षा पर अधिक और उच्च एचडीआई वाले देश सामाजिक क्षेत्रों पर अधिक व्यय करते हैं। अतः केवल 3 और 4 सही हैं।

87. (A) P-2, Q-3, R-1, S-4
महबूब-उल-हक ने मानव विकास की अवधारणा दी और अमर्त्य सेन ने इसे स्वतंत्रता के रूप में देखा। आईएलओ ने बुनियादी जरूरतों का प्रस्ताव दिया और यूएनडीपी प्रतिवर्ष मानव विकास सूचकांक जारी करता है। यह मिलान विकास के सिद्धांतों और उन्हें वैश्विक स्तर पर लागू करने वाली संस्थाओं के बीच के अंतर्संबंधों को स्पष्ट करता है, जो इस विषय की ऐतिहासिक और सैद्धांतिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए अनिवार्य जानकारी है।

88. (A) लोगों को अपने विकल्प चुनने के लिए शक्ति प्रदान करना
सशक्तीकरण का मुख्य उद्देश्य लोगों को इतना सक्षम बनाना है कि वे अपने जीवन से संबंधित विकल्प स्वयं चुन सकें। यह शक्ति मुख्य रूप से शिक्षा, सुशासन और आर्थिक स्वतंत्रता के माध्यम से आती है। जब नागरिकों के पास निर्णय लेने की स्वतंत्रता और सामर्थ्य होता है, तभी वास्तविक मानवीय विकास संभव हो पाता है। यह स्तंभ लोगों को आत्मनिर्भर बनाने और उनकी मानवीय गरिमा को सुरक्षित करने पर केंद्रित है।

89. (C) HDI इन सभी आयामों को दिए गए भारों का कुल योग होता है।
एचडीआई केवल आयामों के भारों का सरल कुल योग नहीं है, बल्कि यह स्वास्थ्य, शिक्षा और आय के विभिन्न संकेतकों का एक जटिल भारित औसत होता है। जीवन-प्रत्याशा स्वास्थ्य को

और साक्षरता ज्ञान तक पहुँच को दर्शाती है, जबकि संसाधनों का मापन आय से होता है। विकल्प 'सी' तकनीकी रुप से गलत है क्योंकि सूचकांक की गणना के लिए एक विशिष्ट सांख्यिकीय प्रक्रिया का पालन किया जाता है, न कि केवल योग।

90. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
श्रीलंका और त्रिनिदाद जैसे छोटे देशों का एचडीआई स्कोर भारत से अधिक है, जो यह सिद्ध करता है कि देश का भौगोलिक आकार विकास का एकमात्र निर्धारक नहीं है। मानव विकास प्रति व्यक्ति आय से भी हमेशा प्रत्यक्ष रूप से नहीं जुड़ा होता। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं क्योंकि सामाजिक क्षेत्र में बेहतर निवेश और सुशासन ही छोटे देशों को बड़े देशों की तुलना में ऊँचा स्थान दिलाते हैं।

91. (B) कल्याण उपागम
कल्याण उपागम के अंतर्गत मानव को विकासात्मक गतिविधियों का मुख्य लाभार्थी और लक्ष्य माना जाता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, सरकार की यह जिम्मेदारी है कि वह शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा पर अधिकतम निवेश करे ताकि नागरिकों का कल्याण हो सके। इसमें लोगों की सक्रिय भागीदारी के बजाय सरकारी वितरण प्रणाली और जन-सुविधाओं के विस्तार के माध्यम से मानवीय जीवन स्तर को सुधारने पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

92. (B) गुणवत्ता में सकारात्मक परिवर्तन होता है।
विकास की प्रक्रिया तभी मानी जाती है जब किसी स्थिति की गुणवत्ता में स्पष्ट रुप से सकारात्मक परिवर्तन आता है। केवल मात्रा में होने वाली वृद्धि, जो अक्सर मूल्य निरपेक्ष होती है, विकास नहीं कहलाती। विकास सदैव मूल्य सापेक्ष होता है और यह तब चरितार्थ होता है जब समाज में सुख-सुविधाओं, अवसरों और मानवीय स्वतंत्रता के स्तर में पहले की तुलना में गुणात्मक रुप से श्रेष्ठ सुधार दर्ज किया जाता है।

93. (D) उपरोक्त सभी
वर्ष 2023-24 के नवीनतम प्रतिवेदन के अनुसार देशों का श्रेणियों में विभाजन बिल्कुल सटीक दिया गया है। अति उच्च श्रेणी में 69, उच्च में 49, मध्यम में 42 और निम्न श्रेणी में 33 देश शामिल हैं। यह सांख्यिकीय डेटा वैश्विक स्तर पर देशों के बीच व्याप्त विकासात्मक अंतर को स्पष्ट रुप से उजागर करता है और यह दर्शाता है कि अधिकांश राष्ट्र अभी भी विकास की विभिन्न जटिल अवस्थाओं में संघर्षरत हैं।

94. (D) स्विट्ज़रलैंड
वर्ष 2023-24 की मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार स्विट्ज़रलैंड विश्व के उन शीर्ष 10 देशों में शामिल है जिनका एचडीआई मान सर्वाधिक है। यह देश अपनी उत्कृष्ट शिक्षा प्रणाली, उच्च जीवन प्रत्याशा और मजबूत आर्थिक स्थिति के लिए जाना जाता है। अन्य विकल्प जैसे भारत, चीन और ब्राजील अभी भी मध्यम श्रेणी में संघर्ष कर रहे हैं। स्विट्ज़रलैंड की सफलता सामाजिक निवेश और सुशासन का एक अनुकरणीय उदाहरण है।

95. (A) अमर्त्य सेन
अमर्त्य सेन ने इस विचार को दृढ़ता से प्रस्तुत किया कि विकास का मुख्य लक्ष्य और माध्यम लोगों की स्वतंत्रताओं में वृद्धि करना होना चाहिए। उनके अनुसार, जब व्यक्ति को गरीबी, अज्ञानता और बीमारी से मुक्ति मिलती है, तभी वह वास्तव में स्वतंत्र होता है और अपनी क्षमताओं का विकास कर पाता है। स्वतंत्रता का विस्तार ही मानवीय कल्याण और सामाजिक प्रगति का वास्तविक मापदंड है, जिसे उन्होंने 'क्षमता उपागम' में समझाया है।

96. (C) P-2, Q-1, R-4, S-3
समता का अर्थ समान पहुँच, सतत पोषणीयता का निरंतरता, उत्पादकता का मानव श्रम और सशक्तीकरण का अर्थ शक्ति से है। यह उचित मिलान मानव विकास के चारों आधारभूत सिद्धांतों के मूल भाव को संक्षेप में स्पष्ट करता है। इन स्तंभों के बिना विकास की अवधारणा अधूरी है क्योंकि ये सभी मिलकर एक संतुलित और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश और आधार प्रदान करते हैं।

97. (B) समता
समता की अवधारणा इस सिद्धांत पर टिकी है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अवसरों तक समान पहुँच प्राप्त होनी चाहिए। इस पहुँच में लिंग, प्रजाति, आय या जाति के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव बाधक नहीं होना चाहिए। जब सभी नागरिकों को विकास के समान अवसर मिलते हैं, तभी समाज का प्रत्येक वर्ग प्रगति कर पाता है, जो मानव विकास के प्राथमिक लक्ष्यों में से एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है।

98. (A) उपयुक्त सूचकों का
मानव विकास के विभिन्न और जटिल आयामों को सटीक रुप से मापने के लिए उपयुक्त सामाजिक और आर्थिक सूचकों का विकास किया गया है। केवल आर्थिक मॉडल मानवीय प्रगति का पूर्ण विवरण नहीं दे सकते, इसलिए स्वास्थ्य के लिए जीवन प्रत्याशा और शिक्षा के लिए साक्षरता जैसे गैर-आर्थिक सूचकों को एचडीआई में शामिल किया गया है। ये सूचक विकास के मानवीय पक्ष को समझने और विभिन्न देशों की तुलना करने में सहायक होते हैं।

99. (A) केवल 1, 2 और 3
निम्न मानव विकास वाले देश अक्सर छोटे होते हैं और राजनीतिक अस्थिरता, युद्ध या अकाल जैसी आपदाओं का सामना करते रहे हैं। इन देशों को सुधार के लिए सुविचारित और प्रभावी नीतियों की अत्यंत आवश्यकता होती है। चौथा और पाँचवाँ कथन गलत है क्योंकि ये देश केवल यूरोप में नहीं हैं और इनमें सामाजिक क्षेत्र पर खर्च बहुत कम होता है। अतः केवल प्रथम तीन कथन ही यथार्थवादी और सत्य हैं।

100. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
मानव विकास के मामले में अक्सर छोटे देशों का प्रदर्शन बड़े और धनी देशों की तुलना में बेहतर पाया गया है। इसका कारण यह है कि विकास का सीधा संबंध भौगोलिक आकार से नहीं,

बल्कि स्वास्थ्य, शिक्षा और सुशासन जैसी प्राथमिकताओं से होता है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं क्योंकि लोगों की क्षमताओं में निवेश ही वास्तविक विकास को निर्धारित करता है, चाहे देश का आकार कितना भी बड़ा या छोटा क्यों न हो।

101. (C) 1990
मानव विकास सूचकांक का सर्वप्रथम निर्माण वर्ष 1990 में किया गया था। इसे प्रख्यात अर्थशास्त्री डॉ. महबूब-उल-हक के नेतृत्व में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) के लिए तैयार किया गया था। इस सूचकांक ने पहली बार विकास को केवल जीडीपी के चश्मे से देखने के बजाय स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे मानवीय आयामों के माध्यम से मापने की एक नई और क्रांतिकारी वैज्ञानिक पद्धति विश्व के सम्मुख प्रस्तुत की थी।

102. (B) संचार
आधारभूत आवश्यकता उपागम में छः मौलिक मानवीय आवश्यकताओं को चिन्हित किया गया है, जिनमें स्वास्थ्य, शिक्षा, भोजन, जलापूर्ति, स्वच्छता और आवास शामिल हैं। संचार इस सूची का भाग नहीं है क्योंकि यह उपागम केवल उन प्राथमिक शारीरिक और भौतिक आवश्यकताओं पर अपना ध्यान केंद्रित करता है जो जीवित रहने और एक बुनियादी गरिमापूर्ण जीवन स्तर को बनाए रखने के लिए अनिवार्य मानी जाती हैं, अन्य आधुनिक सुख-सुविधाओं पर नहीं।

103. (C) केवल 3
उत्पादकता स्तंभ का वास्तविक संबंध मशीनों से अधिक मानव श्रम और मानवीय कार्यक्षमता से है। मानव विकास के संदर्भ में उत्पादकता का अर्थ लोगों में क्षमताओं का निर्माण करके उनके श्रम की गुणवत्ता को बढ़ाना है। अन्य कथन जैसे समता, सतत पोषणीयता और सशक्तीकरण के बारे में दी गई जानकारी पूर्णतः सही और तर्कसंगत है। अतः तीसरा कथन गलत है क्योंकि यह मानव विकास के मूल दर्शन की उपेक्षा करता है।

104. (A) उत्पादकता
यह विचार कि जन-समुदाय ही राष्ट्रों का वास्तविक धन है, मानव विकास के 'उत्पादकता' स्तंभ को मजबूती प्रदान करता है। इसका तात्पर्य है कि लोगों के ज्ञान और स्वास्थ्य में निवेश करके उनकी क्षमताओं को बढ़ाया जाना चाहिए ताकि वे राष्ट्र की प्रगति में अधिक सार्थक योगदान दे सकें। कुशल और स्वस्थ मानव संसाधन ही किसी भी देश की आर्थिक और सामाजिक उन्नति का सबसे प्रमुख और वास्तविक आधार होता है।

105. (A) 1, 2, 3
घटनाक्रम के अनुसार यूएनडीपी ने 1990 में प्रतिवेदन निकालना शुरु किया, 1991 में सोवियत संघ का विघटन हुआ और बहुत बाद के वर्षों में भारत ने 0.644 का एचडीआई मान प्राप्त किया। यह कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है कि कैसे अंतरराष्ट्रीय संस्थागत प्रयासों और वैश्विक राजनीतिक परिवर्तनों के साथ-साथ समय के साथ विभिन्न देशों के विकास संकेतकों में क्रमिक बदलाव और सुधार की प्रक्रिया निरंतर जारी रही है, जो ऐतिहासिक है।

106. (A) उच्च
मानव विकास सूचकांक के वर्गीकरण के अनुसार, 0.700 से 0.799 के बीच स्कोर रखने वाले देशों को 'उच्च' मानव विकास की श्रेणी में रखा जाता है। 0.750 का स्कोर इसी परास के भीतर आता है। इस श्रेणी के देशों में सामाजिक और आर्थिक विकास के मानक मध्यम श्रेणी के देशों की तुलना में काफी बेहतर होते हैं और वे धीरे-धीरे अति उच्च श्रेणी की ओर अग्रसर होने का निरंतर प्रयास कर रहे होते हैं।

107. (A) केवल 1, 2 और 4
वृद्धि और विकास समय के साथ परिवर्तन को दर्शाते हैं। वृद्धि मात्रात्मक और मूल्य निरपेक्ष है, जबकि विकास गुणात्मक और मूल्य सापेक्ष है। तीसरा और पाँचवाँ कथन गलत है क्योंकि सकारात्मक वृद्धि हमेशा विकास की गारंटी नहीं देती और केवल जनसंख्या बढ़ना विकास नहीं है। अतः केवल 1, 2 और 4 सत्य हैं जो इन दोनों अवधारणाओं के बीच के सैद्धांतिक और व्यावहारिक अंतर को स्पष्ट रूप से परिभाषित करते हैं।

108. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
अति उच्च श्रेणी में यूरोपीय राष्ट्र, उच्च में पूर्व साम्राज्य शक्तियां, मध्यम में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के राष्ट्र और निम्न श्रेणी में राजनीतिक अस्थिरता वाले देश शामिल हैं। यह सुमेलित वर्गीकरण वैश्विक स्तर पर विकास के विभिन्न समूहों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उनकी वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक विशेषताओं को सटीक रूप से उजागर करता है, जिससे देशों की विकासात्मक स्थिति को समझने में व्यापक स्पष्टता प्राप्त होती है।

109. (C) स्वास्थ्य, शिक्षा और संसाधनों तक पहुँच
लोगों के विकल्पों में विस्तार करने के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा और संसाधनों तक पहुँच के क्षेत्रों में उनकी क्षमताओं का निर्माण करना अनिवार्य है। जब नागरिक स्वस्थ और शिक्षित होते हैं, तभी वे उपलब्ध संसाधनों का लाभ उठाकर बेहतर जीवन के विकल्प चुन सकते हैं। इन तीनों क्षेत्रों में निवेश करना ही मानवीय सशक्तिकरण का आधार है, जो अंततः किसी भी राष्ट्र के समग्र मानव विकास सूचकांक को बेहतर बनाता है।

110. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
संसाधनों का अभाव व्यक्ति की स्वतंत्रता और विकल्पों को सीधे तौर पर बाधित करता है, जैसे एक निर्धन व्यक्ति धन की कमी के कारण उचित चिकित्सा का विकल्प नहीं चुन पाता। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं क्योंकि आर्थिक सीमाएं मानवीय क्षमताओं के पूर्ण उपयोग में बाधा उत्पन्न करती हैं। यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि संसाधनों तक पहुँच के बिना विकल्पों में वृद्धि की बात करना व्यावहारिक नहीं है।

111. (A) निरंतर परिष्कृत हो रही हैं
मानव विकास के मापन की विधियां स्थिर नहीं हैं, बल्कि वे समय और नवीन शोधों के आधार पर निरंतर परिष्कृत और अधिक सटीक हो रही हैं। अब केवल स्वास्थ्य, शिक्षा और आय ही नहीं, बल्कि भ्रष्टाचार का स्तर और राजनीतिक स्वतंत्रता जैसे

नए पहलुओं को भी विकास के अध्ययन में महत्व दिया जा रहा है। यह निरंतर सुधार की प्रक्रिया विकास के मानवीय आयामों को और अधिक गहराई से समझने में सहायक सिद्ध हो रही है।

112. (B) लोगों के विकल्पों में वृद्धि और जीवन में सुधार लाना
डॉ. महबूब-उल-हक के अनुसार विकास का वास्तविक अर्थ लोगों के विकल्पों का विस्तार करना और उनके जीवन की गुणवत्ता में स्थायी सुधार लाना है। उनके लिए मनुष्य मात्र विकास का एक साधन नहीं, बल्कि समस्त विकासात्मक गतिविधियों का अंतिम उद्देश्य है। जब लोगों के पास शिक्षा, स्वास्थ्य और संसाधनों के माध्यम से अपनी इच्छाओं को पूरा करने के अधिक अवसर होते हैं, तभी सही मायने में विकास चरितार्थ होता है।

113. (A) केवल 1 और 3
मानव विकास सूचकांक स्वास्थ्य, शिक्षा और आय के मानकों पर आधारित है और यूएनडीपी प्रतिवर्ष यह प्रतिवेदन प्रकाशित करता है। दूसरा कथन गलत है क्योंकि गरीबी सूचकांक गैर-आय माप है। चौथा कथन भी गलत है क्योंकि सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता का विचार भूटान से आया है, न कि भारत से। अतः केवल प्रथम और तृतीय कथन ही तथ्यात्मक रूप से सही हैं जो वैश्विक विकास मापन की प्रक्रिया को दर्शाते हैं।

114. (A) लोगों और सुशासन में उच्चतर निवेश
उच्च मानव विकास स्कोर वाले देशों की प्रमुख विशेषता यह है कि उन्होंने लंबे समय तक अपने नागरिकों की शिक्षा, स्वास्थ्य और सुशासन में निरंतर और भारी निवेश किया है। विशाल सैन्य बजट या केवल प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता उच्च एचडीआई की गारंटी नहीं देती। इन देशों ने सामाजिक क्षेत्रों को अपनी राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाया है, जिससे वहां के नागरिकों को बेहतर अवसर और जीवन की उच्च गुणवत्ता प्राप्त हो सकी है।

115. (C) 49
मानव विकास प्रतिवेदन 2023-24 के आधिकारिक वर्गीकरण के अनुसार, 'उच्च' मानव विकास श्रेणी में कुल 49 देश सम्मिलित किए गए हैं। इन देशों का सूचकांक स्कोर 0.700 से 0.799 के बीच रहता है। यह श्रेणी मध्यम और अति उच्च श्रेणी के बीच के देशों का प्रतिनिधित्व करती है, जो अपने बुनियादी ढांचे और सामाजिक सेवाओं को वैश्विक मानकों के अनुरूप उन्नत करने की दिशा में निरंतर महत्वपूर्ण प्रगति कर रहे हैं।

116. (D) कल्याण उपागम - लोग सक्रिय प्रतिभागी
कल्याण उपागम में लोगों को विकास की प्रक्रिया में 'सक्रिय प्रतिभागी' नहीं, बल्कि सरकारी लाभों का 'निष्क्रिय प्राप्तकर्ता' माना जाता है। अन्य तीनों विकल्प सही सुमेलित हैं क्योंकि क्षमता उपागम अमर्त्य सेन से जुड़ा है, आधारभूत आवश्यकता उपागम आईएलओ द्वारा दिया गया और आय उपागम सबसे प्राचीन है। अतः विकल्प 'डी' गलत है क्योंकि यह इस उपागम की मूलभूत प्रकृति का गलत वर्णन करता है जो भ्रामक है।

117. (A) केवल 4
चौथा कथन गलत है क्योंकि मानव विकास का स्तर देश के राजनीतिक परिवेश और वहां उपलब्ध स्वतंत्रताओं से गहराई से प्रभावित होता है। स्थिर और लोकतांत्रिक राजनीतिक वातावरण विकास के अवसरों को बढ़ाता है। अन्य कथन सही हैं क्योंकि संस्कृति को दोष देना एक भ्रांति है और उच्च एचडीआई वाले देश सामाजिक क्षेत्रों में निवेश पर अधिक ध्यान देते हैं। राजनीतिक स्थिरता मानवीय प्रगति के लिए एक आवश्यक और अपरिहार्य शर्त मानी जाती है।

118. (B) ह्रास
वृद्धि का चिह्न ऋणात्मक होने का तात्पर्य उस स्थिति में आने वाले ह्रास या कमी से है। उदाहरण के लिए, यदि किसी नगर की जनसंख्या या सुविधाओं में पहले की तुलना में कमी आती है, तो इसे ऋणात्मक वृद्धि माना जाता है। यह स्थिति विकास के सकारात्मक लक्ष्यों के विपरीत होती है और अक्सर आपदाओं, युद्ध या आर्थिक मंदी जैसे संकटों के दौरान देखने को मिलती है, जो मानवीय प्रगति के मार्ग में एक बड़ी बाधा है।

119. (D) मानव गरीबी सूचकांक
यूएनडीपी द्वारा एचडीआई के साथ-साथ मानव गरीबी सूचकांक (HPI) का भी प्रयोग किया जाता है, जो विकास में होने वाली कमियों और अभावों को मापता है। यह सूचकांक आय के बजाय साक्षरता, अल्पायु और बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच की कमी जैसे पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करता है। एचडीआई उपलब्धियों को दर्शाता है, जबकि गरीबी सूचकांक यह बताता है कि समाज का कौन सा हिस्सा अभी भी विकास के लाभों से वंचित रह गया है।

120. (C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
केरल का मानव विकास सूचकांक पंजाब और गुजरात से बेहतर है, लेकिन इसका कारण उच्च आय नहीं बल्कि सामाजिक क्षेत्रों जैसे शिक्षा और स्वास्थ्य में किया गया प्रभावी निवेश है। पंजाब और गुजरात की प्रति व्यक्ति आय केरल से अधिक हो सकती है, फिर भी केरल मानव विकास में आगे है। अतः कारण गलत है क्योंकि उच्च आय स्वतः ही उच्च मानव विकास की गारंटी नहीं देती है, बल्कि सही नीतियां आवश्यक हैं।

121. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
0.983 स्कोर अति उच्च, 0.750 उच्च, 0.644 मध्यम (भारत 2022) और 0.268 स्कोर अत्यंत निम्न विकास स्तर को दर्शाता है। यह सुमेलित क्रम सांख्यिकीय डेटा के माध्यम से वैश्विक विकास की विभिन्न श्रेणियों और उनके विशिष्ट उदाहरणों को स्पष्ट करता है। यह वर्गीकरण समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दिखाता है कि सूचकांक के अंकों में मामूली अंतर भी किसी देश के जीवन स्तर और श्रेणी में बड़े बदलाव ला सकता है।

122. (A) क्योंकि वे ऐतिहासिक रूप से अवसरों से वंचित रहे हैं।
सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों का सशक्तीकरण करना इसलिए अनिवार्य है क्योंकि वे इतिहास में लंबे समय तक विकास के अवसरों और संसाधनों से वंचित रहे हैं। उनकी क्षमताओं का निर्माण करने और उन्हें निर्णय लेने की शक्ति प्रदान

करने से ही समाज में वास्तविक समता आ सकती है। जब तक पिछड़े वर्गों को मुख्यधारा में शामिल नहीं किया जाता, तब तक किसी भी देश का समग्र मानव विकास पूर्ण नहीं हो सकता है।

123. (D) क्रय शक्ति (अमेरिकी डॉलरों में)
मानव विकास सूचकांक में 'संसाधनों तक पहुँच' आयाम को मापने के लिए अमेरिकी डॉलरों में क्रय शक्ति (Purchasing Power Parity) का उपयोग किया जाता है। यह विधि विभिन्न देशों की मुद्राओं की वास्तविक क्रय क्षमता की तुलना करने का एक मानक तरीका है। इसके माध्यम से यह पता लगाया जाता है कि औसत नागरिक के पास अपने जीवन की बुनियादी जरूरतों और सुख-सुविधाओं को खरीदने के लिए कितनी आर्थिक सामर्थ्य और स्वतंत्रता उपलब्ध है।

124. (B) केवल 2
दूसरा कथन गलत है क्योंकि उच्च मानव विकास वाली सूची में गैर-यूरोपीय देशों की संख्या नगण्य नहीं है, बल्कि जापान, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और अमेरिका जैसे कई गैर-यूरोपीय देश इस श्रेणी में शीर्ष पर हैं। अन्य कथन सही हैं क्योंकि उच्च एचडीआई वाले अधिकांश देश औद्योगिकृत हैं और उनमें सामाजिक विविधता का स्तर अक्सर कम पाया जाता है। यह स्पष्ट करता है कि विकास किसी एक महाद्वीप तक सीमित नहीं है, बल्कि नीति आधारित है।

125. (C) उपरोक्त सभी
सार्थक जीवन की अवधारणा में शारीरिक स्वास्थ्य, बौद्धिक विवेक का विकास, समाज में सक्रिय भागीदारी और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की स्वतंत्रता जैसे सभी महत्वपूर्ण तत्व सम्मिलित हैं। केवल लंबा जीवन जीना पर्याप्त नहीं है; जीवन का उद्देश्यपूर्ण होना और व्यक्ति का समाज के लिए उपयोगी होना भी आवश्यक है। ये सभी घटक मिलकर मानवीय जीवन को अर्थ प्रदान करते हैं और वास्तविक विकास के उद्देश्यों को पूर्णता प्रदान करते हैं।

126. (D) 69
मानव विकास प्रतिवेदन 2023-24 के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, विश्व के कुल 69 देशों को 'अति उच्च' मानव विकास की श्रेणी में शामिल किया गया है। इस समूह में वे राष्ट्र आते हैं जिनका एचडीआई स्कोर 0.800 से अधिक है। इन देशों ने उच्च शिक्षा, आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं और सुदृढ़ अर्थव्यवस्था के माध्यम से अपने नागरिकों के लिए जीवन के सर्वोत्तम अवसर और गुणवत्ता सुनिश्चित करने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है।

127. (C) केवल 1, 2, 3 और 4
मध्यम मानव विकास वाले देशों का वर्ग सबसे विशाल है और इनमें से कई देश पूर्वकालीन उपनिवेश या सोवियत संघ के विघटन के बाद बने राष्ट्र हैं। ये देश लोकोन्मुखी नीतियां अपनाकर अपने एचडीआई स्कोर में लगातार सुधार कर रहे हैं। पाँचवाँ कथन गलत है क्योंकि इन देशों में वास्तव में सामाजिक विविधता का स्तर काफी उच्च पाया जाता है। अतः प्रथम चार कथन ही इस वर्ग की वास्तविक विशेषताओं को दर्शाते हैं।

128. (B) आर्थिक वृद्धि आवश्यक है किंतु पर्याप्त नहीं
मानव विकास के लिए आर्थिक वृद्धि एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है, लेकिन यह अपने आप में पूर्ण विकास नहीं है। केवल धन की उपलब्धता तब तक सार्थक नहीं होती जब तक उसका उपयोग शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मानवीय पहलुओं को सुधारने में न किया जाए। इसीलिए आर्थिक वृद्धि को विकास के लिए एक आवश्यक शर्त तो माना जाता है, किंतु यह मानवीय कल्याण सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त नहीं मानी जाती है।

129. (B) कल्याण उपागम
कल्याण उपागम इस तर्क पर आधारित है कि नागरिकों के जीवन स्तर को सुधारने के लिए सरकार को शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा जैसी बुनियादी सुख-सुविधाओं पर भारी सार्वजनिक व्यय करना चाहिए। यह दृष्टिकोण मानता है कि राज्य का प्राथमिक कर्तव्य अपने नागरिकों का कल्याण सुनिश्चित करना है। इसमें लोगों को विकास का लाभार्थी माना जाता है और सरकारी निवेश के माध्यम से उनकी क्षमताओं और जीवन की गुणवत्ता को उन्नत बनाया जाता है।

130. (A) भारत
वर्ष 2023-24 के मानव विकास प्रतिवेदन के अनुसार भारत 'मध्यम' मानव विकास श्रेणी के देशों में आता है। नॉर्वे और स्विट्ज़रलैंड 'अति उच्च' श्रेणी में हैं, जबकि नाइजर जैसे देश 'निम्न' श्रेणी का हिस्सा हैं। भारत का मध्यम श्रेणी में होना यह दर्शाता है कि देश प्रगति तो कर रहा है, किंतु अभी भी शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रति व्यक्ति आय के मानकों पर बहुत अधिक सुधार और निवेश की आवश्यकता निरंतर बनी हुई है।

131. (C) 80 के दशक के अंत और 90 के दशक के आरंभ में
मानव विकास के आधुनिक विचारों को डॉ. महबूब-उल-हक और अमर्त्य सेन ने 80 के दशक के अंत और 1990 के आसपास स्पष्ट रूप से विश्व के सम्मुख प्रस्तुत किया था। इसी अवधि में विकास की परिभाषा को केवल आर्थिक वृद्धि से बदलकर मानवीय विकल्पों और स्वतंत्रताओं के विस्तार के रूप में पुनर्गठित किया गया। इसी वैचारिक क्रांति के परिणामस्वरूप 1990 में पहला वार्षिक मानव विकास प्रतिवेदन यूएनडीपी द्वारा प्रकाशित किया जा सका था।

132. (D) केवल 4
चौथा कथन गलत है क्योंकि मानव गरीबी सूचकांक (HPI) एक 'बिना आय वाला' या गैर-आय आधारित मापन है। यह विकास की कमियों को साक्षरता और स्वास्थ्य सेवाओं के अभाव जैसे मानकों से मापता है, न कि केवल आय से। प्रथम तीन कथन सही हैं क्योंकि वे गरीबी सूचकांक के उन घटकों और उद्देश्यों का सही वर्णन करते हैं जो समाज के वंचित वर्गों की स्थिति को गहराई से उजागर करने हेतु प्रयुक्त होते हैं।

133. (C) सतत पोषणीयता
सतत पोषणीयता स्तंभ का मुख्य उद्देश्य अवसरों की उपलब्धता में निरंतरता सुनिश्चित करना है ताकि आने वाली पीढ़ियां भी विकास के समान अवसरों का लाभ उठा सकें। इसका तात्पर्य प्राकृतिक और आर्थिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग

करना है ताकि भविष्य में विकल्पों की कमी न हो। यदि आज संसाधनों का अंधाधुंध दोहन होता है, तो आगामी पीढ़ियों के लिए सार्थक जीवन जीने और विकास करने की संभावनाएं अत्यंत क्षीण और सीमित हो जाएंगी।

134. (B) अमर्त्य सेन
यह विचार कि स्वतंत्रताओं में वृद्धि ही विकास लाने वाला सबसे प्रभावी माध्यम है, अमर्त्य सेन द्वारा प्रतिपादित किया गया है। उनका मानना है कि जब व्यक्ति के पास सामाजिक और आर्थिक बाधाओं से मुक्ति होती है, तभी वह अपनी क्षमताओं का वास्तविक विकास कर सकता है। स्वतंत्रता केवल विकास का अंतिम लक्ष्य नहीं है, बल्कि यह विकास की प्रक्रिया को गति देने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण और अनिवार्य उपकरण भी है।

135. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
मानव विकास की अंतरराष्ट्रीय तुलनाएं यह स्पष्ट करती हैं कि भौगोलिक आकार या आर्थिक समृद्धि हमेशा उच्च विकास की गारंटी नहीं देते। अक्सर छोटे या कम आय वाले देशों ने अपनी सामाजिक नीतियों के कारण बड़े देशों से बेहतर प्रदर्शन किया है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं क्योंकि विकास का स्तर अंततः मानवीय निवेश और सुशासन की प्राथमिकताओं पर निर्भर करता है, न कि केवल राष्ट्र की भौतिक विशालता पर।

136. (A) उनकी कार्यक्षमता
लोगों को बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करने से उनकी कार्यक्षमता और कौशल में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। जब नागरिक स्वस्थ और ज्ञानवान होते हैं, तो वे आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों में अधिक प्रभावी ढंग से भाग ले सकते हैं। क्षमताओं का यह निर्माण ही उन्हें आत्मनिर्भर बनाता है और उनके जीवन के विकल्पों को विस्तारित करता है, जो अंततः समग्र राष्ट्रीय मानव विकास सूचकांक को ऊँचा उठाने में सहायक सिद्ध होता है।

137. (D) केवल 4
चौथा कथन गलत है क्योंकि मानव विकास में विकल्प कभी भी स्थिर नहीं होते, बल्कि वे समय, परिस्थितियों और विकास के स्तर के साथ निरंतर परिवर्तनशील होते हैं। अन्य कथन सही हैं क्योंकि डॉ. हक और अमर्त्य सेन ने मनुष्य को विकास के केंद्र में रखा है और सार्थक जीवन के महत्व को प्रतिपादित किया है। विकल्पों का गतिशील होना ही यह सुनिश्चित करता है कि विकास की प्रक्रिया समाज में निरंतर जारी रहे।

138. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
वर्ष 2023-24 की रैंकिंग के अनुसार स्विट्ज़रलैंड प्रथम, नॉर्वे द्वितीय और आइसलैंड तृतीय स्थान पर है, जबकि भारत 134वें स्थान पर है। यह वर्गीकरण वैश्विक स्तर पर देशों के बीच व्याप्त विकासात्मक दूरी को स्पष्ट रूप से उजागर करता है। शीर्ष देशों ने सुशासन और सामाजिक निवेश में मानक स्थापित किए हैं, जबकि भारत जैसे देशों के लिए यह रैंकिंग भविष्य में और अधिक सुधार की आवश्यकताओं को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

139. (D) ऋणात्मक वृद्धि
विकास की प्रक्रिया में होने वाले ह्रास या गिरावट को ऋणात्मक वृद्धि के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह तब होता है जब स्वास्थ्य, शिक्षा या आर्थिक मानकों में पहले की तुलना में गिरावट आती है। ऋणात्मक वृद्धि विकास के लक्ष्यों के पूर्णतः विपरीत है और यह अक्सर युद्ध, महामारी, प्राकृतिक आपदाओं या भीषण आर्थिक मंदी जैसे संकटकालीन समय में समाज के भीतर देखने को मिलती है, जो विकास को बाधित करती है।

140. (B) जीवन प्रत्याशा, साक्षरता और प्रति व्यक्ति आय
मानव विकास सूचकांक तीन मुख्य संकेतकों का एक संयुक्त माप है जिनमें स्वास्थ्य के लिए जीवन प्रत्याशा, ज्ञान के लिए प्रौढ़ साक्षरता और जीवन स्तर के लिए प्रति व्यक्ति आय सम्मिलित हैं। ये तीनों आयाम मिलकर मानवीय प्रगति का एक व्यापक और संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। केवल एक संकेतक के आधार पर विकास का मापन अपूर्ण होता है, इसलिए इन तीनों का एकीकृत विश्लेषण ही किसी राष्ट्र की वास्तविक स्थिति स्पष्ट करता है।

141. (D) उपरोक्त सभी
उच्च मानव विकास वाले देशों में अक्सर कम सामाजिक विविधता और उच्च राजनीतिक स्थिरता पाई जाती है, जबकि मध्यम और निम्न श्रेणी के देशों में उच्च सामाजिक विविधता और राजनीतिक अस्थिरता या संघर्ष की अधिक संभावनाएं होती हैं। ये सभी कथन वैश्विक विकास के विभिन्न स्तरों और उनके साथ जुड़ी सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों के बीच के गहरे अंतर्संबंधों को सटीकता से स्पष्ट करते हैं, जो विकास के अध्ययन के लिए अत्यंत आवश्यक भौगोलिक तथ्य हैं।

142. (D) सतत पोषणीयता
सतत पोषणीयता की अवधारणा भविष्य की पीढ़ियों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान संसाधनों के विवेकपूर्ण और संतुलित उपयोग पर बल देती है। इसमें पर्यावरणीय संरक्षण के साथ-साथ वित्तीय और मानवीय संसाधनों की निरंतरता सुनिश्चित करना शामिल है। यदि वर्तमान में संसाधनों का दुरुपयोग किया जाता है, तो भविष्य में अवसरों की उपलब्धता कम हो जाएगी, जिससे आने वाली पीढ़ियों के विकास और सार्थक जीवन जीने की संभावनाएं गम्भीर रूप से संकट में पड़ सकती हैं।

143. (A) वे सामाजिक क्षेत्रों पर भारी निवेश करते हैं।
निम्न मानव विकास वाले देशों की विशेषता यह नहीं है कि वे सामाजिक क्षेत्रों पर भारी निवेश करते हैं; इसके विपरीत, ये देश अक्सर शिक्षा और स्वास्थ्य के बजाय रक्षा और सुरक्षा पर अधिक खर्च करने को मजबूर होते हैं। राजनीतिक अस्थिरता, गृहयुद्ध और अकाल जैसी समस्याओं के कारण इन राष्ट्रों में मानवीय विकास के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचा और निवेश का भारी अभाव बना रहता है, जो उनकी प्रगति को रोकता है।

144. (B) जॉर्ज बर्नार्ड शॉ
डॉ. महबूब-उल-हक ने प्रसिद्ध नाटककार जॉर्ज बर्नार्ड शॉ के विचारों का उद्धरण देते हुए विकास की नई संभावनाओं पर बल

दिया था। यह कथन दर्शाता है कि विकास केवल वर्तमान का सुधार नहीं, बल्कि उन नवीन और सृजनात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति है जो पहले कभी सोचे नहीं गए थे। यह सोच विकास को केवल एक सांख्यिकीय वृद्धि से ऊपर उठाकर मानवीय कल्पना और संभावनाओं के विस्तार के व्यापक फलक पर ले जाती है।

145. (B) मनुष्य
मानव विकास की अवधारणा का मूल सिद्धांत यह है कि सभी विकासात्मक गतिविधियों का अंतिम केंद्र और लक्ष्य मनुष्य ही होना चाहिए। उद्योग, प्रौद्योगिकी और सरकार केवल साधन मात्र हैं, जबकि मानवीय कल्याण, स्वतंत्रता और विकल्पों में विस्तार ही वास्तविक साध्य है। जब मनुष्य के जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है और वह सशक्त बनता है, तभी सही मायने में किसी समाज या राष्ट्र का विकास हुआ माना जाता है।

146. (A) केवल 1 और 2
वृद्धि मात्रात्मक परिवर्तन को दर्शाती है और विकास गुणात्मक सुधार का परिचायक है। तीसरा और चौथा कथन गलत है क्योंकि वृद्धि मूल्य निरपेक्ष होती है और विकास मूल्य सापेक्ष होता है। पाँचवाँ कथन भी गलत है क्योंकि वृद्धि धनात्मक और ऋणात्मक दोनों हो सकती है। अतः केवल प्रथम दो कथन ही इन दोनों अवधारणाओं के बीच के आधारभूत सैद्धांतिक और वैज्ञानिक अंतर को स्पष्ट रूप से परिभाषित और प्रमाणित करते हैं।

147. (C) क्योंकि यह 0.550 से नीचे है।
मानव विकास प्रतिवेदन के वर्गीकरण मानकों के अनुसार, 0.550 से कम सूचकांक स्कोर प्राप्त करने वाले देशों को 'निम्न' मानव विकास श्रेणी में रखा जाता है। 0.549 का स्कोर इसी निर्धारित सीमा के नीचे आता है, जो यह संकेत देता है कि उस राष्ट्र में स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर के बुनियादी मापदंडों में सुधार की व्यापक और तत्काल आवश्यकता है। यह स्कोर विकास के निम्नतम स्तर की आधिकारिक सांख्यिकीय पहचान है।

148. (D) वृद्धि हो
मानव विकास का प्राथमिक उद्देश्य लोगों के जीवन के विकल्पों में निरंतर वृद्धि करना है। जब व्यक्तियों के पास शिक्षा, स्वास्थ्य और संसाधनों के माध्यम से अधिक अवसर उपलब्ध होते हैं, तभी वे अपनी इच्छा और क्षमताओं के अनुसार स्वतंत्र जीवन जी सकते हैं। विकल्पों में यह बढ़ोत्तरी ही मानवीय सशक्तिकरण का आधार है और इसके बिना विकास की प्रक्रिया को सार्थक या सफल नहीं माना जा सकता, क्योंकि यह मानव केंद्र बिंदु है।

149. (C) वृद्धि के बिना विकास संभव है, विकास के बिना वृद्धि नहीं
कई बार किसी क्षेत्र में मात्रात्मक वृद्धि के बिना भी सकारात्मक गुणात्मक सुधार देखे जा सकते हैं, जिसे विकास कहा जाता है। इसके विपरीत, यदि केवल अर्थव्यवस्था का आकार बढ़ता है पर जीवन स्तर नहीं सुधरता, तो वह विकास रहित वृद्धि है। अतः यह कहना तर्कसंगत है कि विकास के लिए केवल संख्यात्मक बढ़ोत्तरी अनिवार्य नहीं है, बल्कि गुणवत्ता में सुधार ही वह मुख्य तत्व है जो वास्तविक मानवीय प्रगति को परिभाषित करता है।

150. (B) आय उपागम
आय उपागम मानव विकास के सबसे प्राचीन दृष्टिकोणों में से एक है। यह इस तर्क पर आधारित है कि किसी व्यक्ति की आय का स्तर सीधे तौर पर उस व्यक्ति द्वारा भोगी जा रही स्वतंत्रता और सुख-सुविधाओं के स्तर को परिलक्षित करता है। इस उपागम के अनुसार, आय में वृद्धि होने पर मानवीय विकल्प और स्वतंत्रताएं स्वतः ही बढ़ जाती हैं, इसलिए यह आय को ही मानवीय विकास के मापन का प्राथमिक और सबसे महत्वपूर्ण आधार मानता है।

151. (B) व्यक्तियों की वास्तविक स्वतंत्रताओं का विस्तार करना।
अमर्त्य सेन के क्षमता उपागम के अनुसार विकास का मुख्य ध्येय केवल भौतिक वस्तुओं या आय का संचय करना नहीं है। इसका वास्तविक उद्देश्य व्यक्तियों की उन स्वतंत्रताओं का विस्तार करना है जो उन्हें अपनी पसंद का सार्थक जीवन जीने में सक्षम बनाती हैं। यह दृष्टिकोण संसाधनों के बजाय उन अवसरों पर केंद्रित है जो मानवीय कल्याण और व्यक्तिगत सशक्तिकरण को बढ़ावा देते हैं।

152. (A) फंक्शनिंग्स प्राप्त की गई अवस्थाएँ हैं, जबकि क्षमता उन अवस्थाओं को प्राप्त करने की स्वतंत्रता है।
फंक्शनिंग्स और क्षमता के बीच का अंतर उपलब्धि और अवसर के बीच के अंतर को दर्शाता है। फंक्शनिंग्स उन विभिन्न कार्यों या अवस्थाओं को व्यक्त करती हैं जिन्हें एक व्यक्ति वास्तव में प्राप्त करता है, जैसे स्वस्थ रहना। इसके विपरीत, क्षमता उन विभिन्न फंक्शनिंग्स के संयोजनों को चुनने और प्राप्त करने की वास्तविक स्वतंत्रता और उपलब्ध अवसरों के समूह को संदर्भित करती है।

153. (C) समान 'फंक्शनिंग' के बावजूद 'क्षमता' में अंतर हो सकता है।
उपवास करने वाले और भूखे व्यक्ति के उदाहरण के माध्यम से यह समझाया गया है कि बाहरी परिणाम समान होने पर भी आंतरिक स्वतंत्रता भिन्न हो सकती है। जहाँ दोनों ही व्यक्ति कुपोषित अवस्था में हैं, वहीं उपवास करने वाले के पास भोजन चुनने का विकल्प मौजूद है। यह स्पष्ट करता है कि मानव विकास में केवल परिणाम नहीं बल्कि चुनने की वास्तविक क्षमता महत्वपूर्ण है।

154. (D) नीतियों को शिक्षा, स्वास्थ्य और राजनीतिक स्वतंत्रता के माध्यम से लोगों की क्षमताओं का निर्माण करना चाहिए।
क्षमता उपागम यह सुझाव देता है कि प्रभावी विकास नीतियों को केवल संसाधनों के वितरण तक सीमित नहीं रहना चाहिए। नीतियों का मुख्य केंद्र शिक्षा, स्वास्थ्य और राजनीतिक स्वतंत्रता जैसे क्षेत्रों में निवेश होना चाहिए। इससे नागरिकों की उन क्षमताओं का निर्माण होता है जिनसे वे उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करके अपने जीवन को बेहतर बनाने और सार्थक विकल्प चुनने में सक्षम होते हैं।

155. (C) विकास का अर्थ केवल आर्थिक वृद्धि नहीं, बल्कि सार्थक जीवन जीने के विकल्पों का विस्तार है।
इस परिच्छेद का केंद्रीय तर्क यह है कि विकास की अवधारणा को केवल आर्थिक संवृद्धि या सकल घरेलू उत्पाद तक सीमित नहीं माना जाना चाहिए। विकास का असली अर्थ मानवीय विकल्पों का विस्तार और लोगों को एक मूल्यवान जीवन जीने के लिए सशक्त बनाना है। यह दृष्टिकोण आर्थिक वृद्धि को साध्य के बजाय साधन मानता है जो अंततः मानवीय गरिमा सुनिश्चित करता है।

156. (B) सतत पोषणीयता
सतत पोषणीयता मानव विकास का वह महत्वपूर्ण स्तंभ है जो अंतर-पीढ़ीगत समता के सिद्धांत पर आधारित है। यह सुनिश्चित करता है कि वर्तमान विकास की प्रक्रिया में संसाधनों का इस प्रकार उपयोग किया जाए जिससे भविष्य की पीढ़ियों के अवसर कम न हों। यह पर्यावरणीय और मानवीय संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग पर जोर देता है ताकि विकास की निरंतरता आने वाले समय में बनी रहे।

157. (D) सभी व्यक्तियों के लिए अवसरों तक समान पहुँच सुनिश्चित करना।
मानव विकास के संदर्भ में समता का अर्थ केवल संसाधनों का समान वितरण नहीं है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए अवसरों तक समान पहुँच सुनिश्चित करना है। यह लिंग, जाति या पृष्ठभूमि जैसी बाधाओं को दूर करने की वकालत करता है जो व्यक्तिगत विकास में बाधक होती हैं। समता का उद्देश्य एक ऐसा समावेशी वातावरण बनाना है जहाँ हर किसी को आगे बढ़ने का मौका मिले।

158. (A) लोगों के स्वास्थ्य और शिक्षा में निवेश करके उनकी क्षमताओं का निर्माण करके।
लोगों की उत्पादकता बढ़ाने का अर्थ उनके कौशल और कार्यक्षमता में वृद्धि करना है। परिच्छेद के अनुसार, यह शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में निरंतर निवेश के माध्यम से ही संभव है। जब नागरिक स्वस्थ और शिक्षित होते हैं, तो वे अपनी क्षमताओं का बेहतर उपयोग कर सकते हैं। चूंकि लोग ही किसी राष्ट्र की वास्तविक संपत्ति हैं, इसलिए उनकी क्षमता का निर्माण उत्पादकता का आधार है।

159. (C) अपने जीवन के बारे में विकल्प चुनने के लिए शक्ति और स्वतंत्रता प्राप्त करना।
सशक्तिकरण का तात्पर्य व्यक्तियों को अपने जीवन से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय लेने में सक्षम बनाना है। यह शक्ति बढ़ती हुई स्वतंत्रता और क्षमताओं के माध्यम से प्राप्त होती है। इसके लिए एक ऐसी जवाबदेह और पारदर्शी शासन प्रणाली आवश्यक है जो नागरिकों को अपनी आवाज उठाने और सार्थक विकल्प चुनने का अवसर प्रदान करे। यह प्रक्रिया लोगों को विकास की मुख्यधारा में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करती है।

160. (A) समता, सतत पोषणीयता, उत्पादकता और सशक्तीकरण परस्पर जुड़े हुए हैं और समग्र मानव विकास के लिए आवश्यक हैं।
इस परिच्छेद का मुख्य संदेश यह है कि समता, सतत पोषणीयता, उत्पादकता और सशक्तिकरण मानव विकास के अनिवार्य और परस्पर जुड़े हुए आधार हैं। ये चारों स्तंभ मिलकर एक ऐसा ढाँचा तैयार करते हैं जो समग्र मानवीय कल्याण को संभव बनाता है। यदि इनमें से किसी एक की भी कमी होती है, तो विकास की प्रक्रिया अधूरी रह जाती है और स्थायी परिणाम प्राप्त नहीं होते।

161. (D) HDI द्वारा छिपाई गई आंतरिक असमानताओं को उजागर करने के लिए।
असमानता-समायोजित मानव विकास सूचकांक का विकास इसलिए किया गया था क्योंकि मानक सूचकांक समाज के भीतर व्याप्त असमानताओं को प्रकट नहीं करता था। अक्सर एक उच्च औसत स्कोर वाले देश में भी आबादी का बड़ा हिस्सा बुनियादी सुविधाओं से वंचित रह सकता है। यह नया सूचकांक विकास के लाभों के वितरण में होने वाले नुकसान को मापकर अधिक यथार्थवादी और न्यायसंगत तस्वीर पेश करता है।

162. (B) IHDI और HDI के मान बराबर होंगे।
जब किसी समाज या देश के भीतर संसाधनों और अवसरों का पूर्णतः समान वितरण होता है, तब मानव विकास सूचकांक और असमानता-समायोजित सूचकांक के मान एक समान हो जाते हैं। इन दोनों सूचकांकों के बीच का अंतर ही समाज में मौजूद असमानता के स्तर को दर्शाता है। जैसे-जैसे विषमता बढ़ती है, समायोजन के बाद सूचकांक का मूल्य अपने औसत मान से गिरता जाता है।

163. (C) लैंगिक असमानता सूचकांक (GII)
लैंगिक असमानता सूचकांक विशेष रूप से उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करता है जहाँ महिलाओं और पुरुषों के बीच विषमता अधिक स्पष्ट होती है। इसमें प्रजनन स्वास्थ्य, सशक्तिकरण और श्रम बाजार में भागीदारी जैसे महत्वपूर्ण आयामों को शामिल किया जाता है। यह सूचकांक नीति-निर्माताओं को यह समझने में मदद करता है कि समाज में लैंगिक आधार पर विकास की उपलब्धियाँ कितनी अधिक असमान रूप से वितरित हैं।

164. (D) स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर जैसे विभिन्न आयामों में अभावों को मापकर।
बहुआयामी गरीबी सूचकांक इस मान्यता पर आधारित है कि गरीबी केवल आय की कमी नहीं है, बल्कि यह जीवन के विभिन्न आयामों में अभावों का समूह है। यह स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर से संबंधित विभिन्न संकेतकों का उपयोग करके गरीबी का व्यापक विश्लेषण करता है। यह दृष्टिकोण उन विशिष्ट कमियों की पहचान करने में मदद करता है जो लोगों को गरिमापूर्ण जीवन जीने से रोकती हैं।

165. (A) यह दिखाना कि समय के साथ मानव विकास को मापने के तरीके कैसे विकसित हुए हैं ताकि असमानता और बहुआयामी अभावों को बेहतर ढंग से समझा जा सके।
परिच्छेद का मुख्य उद्देश्य मानव विकास को मापने के लिए विकसित हुए विविध और उन्नत उपकरणों की व्याख्या करना है। यह स्पष्ट करता है कि कैसे केवल औसत स्कोर पर्याप्त नहीं हैं और हमें असमानता, लैंगिक अंतर तथा बहुआयामी अभावों को समझने की आवश्यकता है। ये परिष्कृत सूचकांक अधिक समावेशी और लक्षित नीतियों के निर्माण के लिए एक व्यापक आधार प्रदान करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होते हैं।

166. (B) वे आंतरिक रूप से जुड़े हुए हैं, जहाँ सतत विकास मानव विकास की दीर्घकालिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करता है।
सतत विकास और मानव विकास के बीच गहरा और अटूट संबंध है। जहाँ मानव विकास लोगों की वर्तमान क्षमताओं और विकल्पों को बढ़ाने पर केंद्रित है, वहीं सतत विकास यह सुनिश्चित करता है कि ये प्रगति भविष्य में भी बनी रहे। यह एक दीर्घकालिक दृष्टिकोण है जो वर्तमान विकास को पर्यावरणीय सीमाओं के भीतर रखते हुए मानवीय कल्याण को पीढ़ियों तक सुरक्षित रखने का प्रयास करता है।

167. (B) यह सुनिश्चित करना कि भविष्य की पीढ़ियों के पास कम से कम वर्तमान पीढ़ी जितने अवसर हों।
अंतर-पीढ़ीगत समता का विचार इस नैतिक जिम्मेदारी पर आधारित है कि हमें पृथ्वी के संसाधनों का उपयोग इस तरह करना चाहिए कि आने वाली पीढ़ियों के अधिकार सुरक्षित रहें। इसका अर्थ है कि भविष्य के नागरिकों के पास जीवन के उतने ही अवसर और संसाधन उपलब्ध होने चाहिए जितने वर्तमान पीढ़ी के पास हैं। यह न्यायपूर्ण वितरण और पर्यावरण संरक्षण के महत्व को मजबूती से रेखांकित करता है।

168. (A) क्योंकि यह लोगों के स्वास्थ्य, आजीविका और क्षमताओं को सीधे तौर पर नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।
पर्यावरणीय क्षरण को मानव विकास के लिए खतरा माना जाता है क्योंकि इसका सीधा प्रभाव मानवीय स्वास्थ्य और आजीविका के साधनों पर पड़ता है। प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ व्यक्ति की काम करने की क्षमता और स्वस्थ जीवन जीने की स्वतंत्रता को कम कर देती हैं। प्राकृतिक संसाधनों की कमी होने से समुदायों का आर्थिक आधार नष्ट हो जाता है, जो अंततः समग्र विकास को बाधित करता है।

169. (C) यह मान्यता कि मानव कल्याण और पर्यावरणीय स्थिरता अविभाज्य हैं।
संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य यह स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि मानवीय प्रगति और पर्यावरणीय स्थिरता को एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है। ये लक्ष्य गरीबी उन्मूलन जैसे सामाजिक उद्देश्यों को जलवायु सुरक्षा जैसे पारिस्थितिकीय लक्ष्यों के साथ एकीकृत करते हैं। यह एक समग्र वैश्विक दृष्टिकोण है जो मानता है कि एक स्वस्थ और सुरक्षित ग्रह के बिना स्थायी मानव कल्याण संभव नहीं है।

170. (D) मानव विकास और सतत विकास: एक एकीकृत दृष्टिकोण
इस परिच्छेद के लिए एकीकृत दृष्टिकोण वाला शीर्षक सबसे उपयुक्त है क्योंकि यह पूरे लेख के मुख्य भाव को समेटे हुए है। लेख में विस्तार से बताया गया है कि कैसे मानवीय क्षमताओं का विस्तार और पर्यावरणीय संसाधनों का संरक्षण एक-दूसरे के पूरक हैं। यह शीर्षक विकास की उन दो प्रमुख धाराओं के बीच के समन्वय और परस्पर निर्भरता को सटीक रूप से प्रस्तुत करता है।

171. (C) सुशासन और प्रभावी सार्वजनिक संस्थान।
केवल आर्थिक आय में वृद्धि होना पर्याप्त नहीं है; उसे प्रभावी ढंग से मानव विकास में बदलने के लिए सुशासन की आवश्यकता होती है। जब सार्वजनिक संस्थान मजबूत और पारदर्शी होते हैं, तभी संसाधनों का सही उपयोग शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सेवाओं में हो पाता है। सुशासन एक ऐसे सेतु का कार्य करता है जो वित्तीय संसाधनों को नागरिकों की वास्तविक क्षमताओं में बदलता है।

172. (B) वे शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी आवश्यक सेवाओं के प्रभावी वितरण को रोकते हैं।
भ्रष्टाचार और कमजोर संस्थागत ढाँचा विकास की प्रक्रिया में रिसाव पैदा करते हैं, जिससे कल्याणकारी योजनाओं का लाभ लक्षित आबादी तक नहीं पहुँच पाता। जब सार्वजनिक धन का दुरुपयोग होता है, तो शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक क्षेत्रों के लिए संसाधन कम पड़ जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप, विकास की गति धीमी हो जाती है और आम नागरिकों के जीवन स्तर में कोई सुधार नहीं हो पाता है।

173. (D) सामाजिक क्षेत्रों में बुद्धिमानी से निवेश करके।
परिच्छेद यह स्पष्ट करता है कि उच्च मानव विकास के लिए केवल उच्च राष्ट्रीय आय अनिवार्य शर्त नहीं है। यदि कोई देश अपनी सीमित आय का एक बड़ा हिस्सा सामाजिक क्षेत्रों जैसे शिक्षा, पोषण और स्वास्थ्य सेवाओं में बुद्धिमानी से निवेश करता है, तो वह भी बेहतर विकास परिणाम प्राप्त कर सकता है। यह संसाधनों के मात्रात्मक विस्तार के बजाय उनके गुणात्मक उपयोग और प्राथमिकता के महत्व को दर्शाता है।

174. (A) क्योंकि वे लोगों को अपने नेताओं को जवाबदेह ठहराने और बेहतर सेवाओं की मांग करने के लिए सशक्त बनाते हैं।
राजनीतिक स्वतंत्रता और एक सशक्त नागरिक समाज विकास प्रक्रिया को लोकतांत्रिक और जन-उन्मुख बनाते हैं। जब लोगों के पास अपनी राय व्यक्त करने और संगठित होने का अधिकार होता है, तो वे सरकार से बेहतर सेवाओं और जवाबदेही की मांग कर सकते हैं। यह सशक्तिकरण उन्हें विकास का निष्क्रिय प्राप्तकर्ता बनने के बजाय सक्रिय भागीदार बनाता है, जिससे नीतियों में पारदर्शिता और प्रभावशीलता बढ़ती है।

175. (C) मानव विकास केवल एक तकनीकी अभ्यास नहीं है, बल्कि यह शासन, राजनीति और नागरिक अधिकारों से भी गहराई से जुड़ा हुआ है।
इस परिच्छेद का मुख्य विचार यह है कि मानव विकास को केवल तकनीकी या आर्थिक दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए।

यह एक गहरी राजनीतिक प्रक्रिया है जो शासन की गुणवत्ता, भ्रष्टाचार के उन्मूलन और नागरिक अधिकारों के संरक्षण पर टिकी है। वास्तविक विकास तभी संभव है जब सत्ता का उपयोग लोक कल्याण के लिए हो और नागरिकों को अपनी आवाज उठाने का पूर्ण अधिकार प्राप्त हो।

अध्याय 04
प्राथमिक क्रियाएँ

1. मानव के वे कार्यकलाप जिनसे आय प्राप्त होती है, क्या कहलाते हैं?
(A) सामाजिक क्रियाएँ
(B) आर्थिक क्रियाएँ
(C) सांस्कृतिक क्रियाएँ
(D) राजनीतिक क्रियाएँ

2. निम्नलिखित में से कौन-सी एक प्राथमिक क्रिया है?
(A) कृषि
(B) विनिर्माण
(C) परिवहन
(D) बैंकिंग

3. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (आर्थिक क्रिया का वर्ग)
P. प्राथमिक
Q. द्वितीयक
R. तृतीयक
S. चतुर्थ
List II: (उदाहरण)
1. विश्वविद्यालय शिक्षण
2. वस्त्र निर्माण
3. मछली पकड़ना
4. व्यापार
(A) P-3, Q-2, R-4, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

4. प्राथमिक कार्यकलाप करने वाले लोग, जिनका कार्य क्षेत्र घर से बाहर होता है, क्या कहलाते हैं?
(A) सफेद कॉलर श्रमिक
(B) नीला कॉलर श्रमिक
(C) स्वर्ण कॉलर श्रमिक
(D) लाल कॉलर श्रमिक

5. आखेट एवं भोजन संग्रह के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) यह मानव सभ्यता की प्राचीनतम ज्ञात आर्थिक क्रियाओं में से एक है।
(B) इसमें संलग्न जनसंख्या की प्रति व्यक्ति उत्पादकता काफी कम होती है।
(C) इस कार्य में अत्यधिक पूँजी निवेश की आवश्यकता होती है।
(D) यह प्रायः विषम और कठोर जलवायुविक दशाओं वाले क्षेत्रों में होता है।

6. नीचे दिए गए अभिकथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): अवैध शिकार के कारण जीवों की कई जातियाँ या तो लुप्त हो गई हैं या संकटापन्न हैं।
कारण (R): तकनीकी विकास के कारण मत्स्य-ग्रहण आधुनिकीकरण से युक्त हो गया है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

7. मिज़ोरम में महिलाओं द्वारा संतरे एकत्र करना किस प्रकार की आर्थिक क्रिया का उदाहरण है?
(A) आखेट
(B) वाणिज्यिक कृषि
(C) पशुचारण
(D) भोजन संग्रह

8. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह उच्च अक्षांश के क्षेत्रों जैसे उत्तरी कनाडा और उत्तरी यूरेशिया में किया जाता है।
2. यह निम्न अक्षांश के क्षेत्रों जैसे अमेजन बेसिन और उष्णकटिबंधीय अफ्रीका में किया जाता है।
3. आधुनिक समय में इसका किसी भी भाग में व्यापारीकरण नहीं हुआ है।
4. इस कार्य में निम्न स्तरीय तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) केवल 1 and 4

9. निम्नलिखित में से किसका उपयोग छाल से नहीं किया जाता है?
(A) कुनैन
(B) चमड़ा तैयार करना

(C) पेय पदार्थ
(D) कार्क

10. मानव विकास के इतिहास में खनिजों की खोज की अवस्थाओं को उनके सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. कांस्य युग
2. ताम्र युग
3. लौह युग
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 3, 1

11. उष्ण कटिबंधीय वन के भोजन संग्राहक समूहों के उत्पादों का विश्व बाजार में प्रतिस्पर्धा न कर पाने का मुख्य कारण क्या है?
(A) स्थानीय उत्पादों की गुणवत्ता का अन्य की तुलना में निम्न होना
(B) दुर्गम क्षेत्रों में आधुनिक परिवहन साधनों का व्यापक अभाव होना
(C) विभिन्न देशों की आयात-निर्यात नीतियों का अत्यंत प्रतिकूल होना
(D) कृत्रिम उत्पादों का बाजार में प्रभुत्व बढ़ना

12. नीचे दिए गए कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: चुविंगगम जेपोटा वृक्ष के दूध से बनता है, जिसे चिकल कहते हैं।
कथन II: पेड़ के तने का उपयोग रबड़, बलाटा, गोंद व राल बनाने के लिए करते हैं।
(A) केवल कथन I सही है।
(B) केवल कथन II सही है।
(C) कथन I और II दोनों सही हैं।
(D) न तो कथन I और न ही कथन II सही है।

13. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह एक प्राचीन जीवन-निर्वाह व्यवसाय है।
2. पशुचारक अपने भोजन, वस्त्र, और औजार के लिए पशुओं पर निर्भर रहते हैं।
3. वे पानी एवं चरागाह की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित होते हैं।
4. इन पशुचारक वर्गों के अपने-अपने निश्चित चरागाह क्षेत्र नहीं होते थे।
5. इसमें बहुत अधिक पूँजी निवेश की आवश्यकता होती है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 2, 3, 4
(C) केवल 1, 2, 5
(D) केवल 1, 4, 5

14. तिब्बत एवं एंडीज के पर्वतीय भागों में पाले जाने वाले प्रमुख पशु कौन से हैं?
(A) भेड़ और बकरी
(B) रेंडियर
(C) गाय और बैल
(D) यॉक और लामा

15. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) उष्णकटिबंधीय अफ्रीका - गाय-बैल
(B) सहारा मरुस्थल - यॉक
(C) आर्कटिक क्षेत्र - ऊँट
(D) तिब्बत - रेंडियर

16. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (पशुचारक समूह)
P. गुज्जर, बकरवाल
Q. गद्दी, भूटिया
R. टुंड्रा प्रदेश के पशुचारक
S. सहारा के पशुचारक

List II: (प्रवास/पशु)
1. भेड़, बकरी, ऊँट
2. उत्तर-दक्षिण प्रवास
3. हिमालय के पर्वतीय क्षेत्र
4. ग्रीष्मकाल में मैदानी से पर्वतीय क्षेत्रों की ओर प्रवास

(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

17. गर्मियों में मैदानी भाग से पर्वतीय चरागाह की ओर एवं शीत में पर्वतीय भाग से मैदानी चरागाह की ओर पशुचारकों के प्रवास को क्या कहा जाता है?
(A) स्थानांतरण
(B) ऋतुप्रवास
(C) देशांतरण
(D) अप्रवास

18. निम्नलिखित में से कौन सा चलवासी पशुचारण का एक प्रमुख क्षेत्र नहीं है?
(A) अमेजन बेसिन
(B) उत्तरी अफ्रीका के एटलांटिक तट से अरब प्रायद्वीप तक
(C) यूरोप तथा एशिया का टुंड्रा प्रदेश
(D) दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिणी पश्चिमी अफ्रीका एवं मेडागास्कर

19. नीचे दिए गए अभिकथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): चलवासी पशुचारकों की संख्या अब घट रही है।
कारण (R): राजनीतिक सीमाओं का अधिरोपण और कई देशों द्वारा नई बस्तियों की योजना बनाने से उनके चरागाह क्षेत्र में कमी आई है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही

व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

20. वाणिज्य पशुधन पालन की क्या विशेषता है?
(A) यह एक जीवन-निर्वाह व्यवसाय है।
(B) यह अव्यवस्थित और कम पूँजी प्रधान है।
(C) इसमें कई प्रकार के पशु एक साथ पाले जाते हैं।
(D) यह पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित और व्यवस्थित है।

21. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. फार्म स्थायी होते हैं और विशाल क्षेत्र पर फैले होते हैं।
2. चराई को नियंत्रित करने के लिए बाड़ लगाकर क्षेत्र को छोटी-छोटी इकाइयों में विभाजित किया जाता है।
3. इसमें केवल एक ही प्रकार के पशु पाले जाते हैं।
4. पशुओं की संख्या चरागाह की वहन क्षमता से अधिक रखी जाती है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) केवल 1, 2 और 4

22. निम्नलिखित में से कौन सा देश वाणिज्य पशुधन पालन के लिए प्रसिद्ध नहीं है?
(A) न्यूज़ीलैंड
(B) भारत
(C) अर्जेंटाइना
(D) संयुक्त राज्य अमेरिका

23. कृषि के विकास के संदर्भ में निम्नलिखित कृषि प्रणालियों को उनके उद्भव के अनुसार पहले से बाद के क्रम में व्यवस्थित करें:
1. आदिकालीन निर्वाह कृषि
2. रोपण कृषि
3. वाणिज्य पशुधन पालन

(A) 1, 3, 2
(B) 2, 1, 3
(C) 1, 2, 3
(D) 3, 1, 2

24. नीचे दिए गए कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: आदिकालीन निर्वाह कृषि उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में की जाती है।
कथन II: गहन निर्वाह कृषि मानसून एशिया के घने बसे देशों में की जाती है।
(A) केवल कथन I सही है।
(B) केवल कथन II सही है।
(C) कथन I और II दोनों सही हैं।
(D) न तो कथन I और न ही कथन II सही है।

25. आदिकालीन निर्वाह कृषि का सबसे उपयुक्त वर्णन कौन सा है?
(A) बाजार में बेचने के लिए उत्पादन
(B) बड़े खेतों पर मशीनों द्वारा कृषि
(C) स्थानीय उत्पादों का संपूर्ण उपयोग
(D) एक ही फसल का उत्पादन

26. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसे 'कर्तन एवं दहन' कृषि भी कहते हैं।
2. इसमें जली हुई राख की परत उर्वरक का कार्य करती है।
3. इसमें खेती के लिए आधुनिक औजारों का प्रयोग होता है।
4. भारत के उत्तरी पूर्वी राज्यों में इसे 'झूमिंग' कहते हैं।
5. कुछ समय पश्चात् कृषक वापस पहले वाले कृषि क्षेत्र पर कृषि कार्य करने आ जाता है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 1, 2, 4, 5
(C) केवल 2, 3, 5
(D) केवल 3, 4, 5

27. मध्य अमेरिका एवं मैक्सिको में स्थानांतरणशील कृषि को किस नाम से जाना जाता है?
(A) झूमिंग
(B) लादांग
(C) चेना
(D) मिल्पा

28. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) झूमिंग - उत्तर-पूर्वी भारत
(B) फेजेंडा - भारत
(C) मिल्पा - मध्य अमेरिका
(D) लादांग - मलेशिया व इंडोनेशिया

29. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (कृषि का प्रकार)
P. गहन निर्वाह कृषि
Q. रोपण कृषि
R. विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि
S. भूमध्यसागरीय कृषि

List II: (प्रमुख फसल/उत्पाद)
1. गेहूँ
2. अंगूर
3. चावल
4. चाय

(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

30. चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि में प्रति कृषक उत्पादन कम होने का क्या कारण है?
(A) कृषि योग्य भूमि का पर्याप्त और गहन उपयोग न होना
(B) उन्नत किस्म के हाइब्रिड बीजों का प्रयोग न करना
(C) सिंचाई के लिए वर्षा जल पर अत्यधिक निर्भर रहना
(D) छोटी जोत और अधिक पारिवारिक श्रम का योगदान

31. चावल रहित गहन निर्वाह कृषि में कौन सी फसल प्रमुखता से नहीं बोई जाती?
(A) चावल
(B) गेहूँ
(C) सोयाबीन
(D) जौ

32. नीचे दिए गए अभिकथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): रोपण कृषि एक वृहद् स्तरीय लाभोन्मुख उत्पादन प्रणाली है।
कारण (R): यूरोपीय लोगों ने विश्व के अनेक भागों का औपनिवेशीकरण किया तथा रोपण कृषि की शुरुआत की।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

33. निम्नलिखित में से कौन सी एक रोपण फसल नहीं है?
(A) कॉफी
(B) गेहूँ
(C) गन्ना
(D) रबड़

34. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसमें कृषि क्षेत्र का आकार बहुत विस्तृत होता है।
2. इसमें कम पूँजी निवेश और निम्न स्तरीय तकनीक का प्रयोग होता है।
3. यह एक फसली कृषि है जिसमें एक फसल के उत्पादन पर सकेंद्रण होता है।
4. यातायात विकसित होने से बागान एवं बाज़ार सुचारु रूप से जुड़े रहते हैं।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) केवल 1, 2 and 4

35. ब्राजील में स्थित कुछ कॉफी के बागानों को क्या कहा जाता है?
(A) लादांग
(B) मिल्पा
(C) फेजेंडा
(D) कोलखहोज़

36. उपनिवेशी शक्तियों और उनके द्वारा विकसित बागानों का कौन सा युग्म सही है?
(A) फ्रांसवासी - भारत में चाय के बाग
(B) ब्रिटेनवासी - पश्चिमी अफ्रीका में कॉफी
(C) हॉलैंडवासी (डच) - मलयेशिया में रबड़ के बाग
(D) स्पेनवासी - फिलीपाइंस में नारियल व गन्ने के बागान

37. नीचे दिए गए कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि की मुख्य फसल गेहूँ है।
कथन II: यह कृषि मध्य अक्षांशों के आंतरिक आर्द्र प्रदेशों में की जाती है।
(A) केवल कथन I सही है।
(B) केवल कथन II सही है।
(C) कथन I और II दोनों सही हैं।
(D) न तो कथन I और न ही कथन II सही है।

38. विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि में प्रति व्यक्ति उत्पादन अधिक क्यों होता है?
(A) खेतों का आकार छोटा होने के कारण
(B) कृषि कार्यों का यंत्रीकरण होने के कारण
(C) मानव श्रम का अधिक उपयोग होने के कारण
(D) प्रति एकड़ उत्पादन बहुत अधिक होने के कारण

39. निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि के अंतर्गत नहीं आता है?
(A) यूरेशिया के स्टेपीज
(B) उत्तरी अमेरिका के प्रेयरीज
(C) अर्जेंटाइना के पंपाज
(D) अमेजन बेसिन

40. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (वाणिज्यिक अनाज कृषि क्षेत्र)
P. प्रेयरीज
Q. पंपाज
R. वेल्डस
S. डाउंस

List II: (महाद्वीप/देश)
1. दक्षिणी अफ्रीका
2. आस्ट्रेलिया
3. उत्तरी अमेरिका
4. अर्जेंटाइना

(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

41. न्यूज़ीलैंड के घास के मैदानों को क्या कहा जाता है जहाँ विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि होती है?
(A) डाउंस
(B) वेल्डस
(C) केंटरबरी
(D) स्टेपीज

42. मिश्रित कृषि में फसल उत्पादन के साथ और किसे समान महत्त्व दिया जाता है?
(A) पशुपालन
(B) केवल वानिकी
(C) केवल मछली पकड़ना
(D) खनन

43. मिश्रित कृषि की मुख्य विशेषता क्या है?
(A) केवल चारे की फसलें उगाना
(B) केवल पशुपालन करना
(C) केवल खाद्यान्न फसलें उगाना
(D) फसल उत्पादन और पशुपालन दोनों करना

44. निम्नलिखित में से कौन सी फसल सामान्यतः मिश्रित कृषि में नहीं उगाई जाती है?
(A) गेहूँ
(B) चाय
(C) जौ
(D) चारे की फसल

45. मिश्रित कृषि में मृदा की उर्वरता बनाए रखने में कौन सी प्रक्रियाएँ महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं?
(A) फसल उगाने के लिए की जाने वाली गहन सिंचाई तकनीक
(B) रसायनों और कीटनाशकों का खेतों में व्यापक उपयोग
(C) शस्यावर्तन और अंतःफसली कृषि का अपनाया जाना
(D) वर्ष भर एक ही प्रकार की फसल को बार-बार उगाना

46. डेरी कृषि का कार्य सामान्यतः नगरीय एवं औद्योगिक केंद्रों के समीप क्यों किया जाता है?
(A) क्योंकि इन क्षेत्रों में चारागाह हेतु भूमि काफी सस्ती होती है
(B) क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में दूध की माँग का पूर्णतः अभाव होता है
(C) क्योंकि सरकार द्वारा इन क्षेत्रों के बाहर उत्पादन प्रतिबंधित है
(D) क्योंकि ये क्षेत्र डेरी उत्पादों के मुख्य उपभोक्ता बाज़ार होते हैं

47. निम्नलिखित में से कौन सा वाणिज्य डेरी कृषि का एक प्रमुख क्षेत्र नहीं है?
(A) सहारा मरुस्थल
(B) उत्तरी पश्चिमी यूरोप
(C) कनाडा
(D) न्यूज़ीलैंड और दक्षिणी पूर्वी आस्ट्रेलिया

48. भूमध्यसागरीय कृषि किस लिए महत्त्वपूर्ण है?
(A) अनाज उत्पादन
(B) खट्टे फलों की आपूर्ति
(C) रेशेदार फसलों का उत्पादन
(D) दुग्ध उत्पादन

49. 'अंगूर की कृषि' (Viticulture) किस कृषि क्षेत्र की विशेषता है?
(A) डेरी कृषि
(B) भूमध्यसागरीय कृषि
(C) रोपण कृषि
(D) मिश्रित कृषि

50. भूमध्यसागरीय क्षेत्र में निम्न श्रेणी के अंगूरों का उपयोग क्या बनाने के लिए किया जाता है?
(A) मुनक्का एवं किशमिश
(B) उच्च गुणवत्ता वाली मदिरा
(C) जैतून का तेल
(D) फलों का रस

51. शीत ऋतु में जब यूरोप एवं संयुक्त राज्य अमेरिका में फलों एवं सब्जियों की माँग होती है, तो उसकी पूर्ति मुख्यतः किस क्षेत्र से होती है?
(A) टुंड्रा क्षेत्र
(B) उष्णकटिबंधीय वर्षावन क्षेत्र
(C) भूमध्यसागरीय क्षेत्र
(D) मरुस्थलीय क्षेत्र

52. बाज़ार के लिए सब्जी खेती एवं उद्यान कृषि में अधिक मुद्रा मिलने वाली फसलों में क्या शामिल नहीं है?
(A) सब्जियाँ
(B) फल
(C) पुष्प
(D) गेहूँ

53. नीदरलैंड किस बागबानी फसल के उत्पादन में विशिष्टीकरण रखता है?
(A) गुलाब
(B) ऑर्किड
(C) ट्यूलिप
(D) लिली

54. 'ट्रक कृषि' का नाम किस आधार पर रखा गया है?
(A) खेतों में भारी ट्रकों का व्यापक उपयोग होने के कारण
(B) ट्रक द्वारा एक रात में तय की गई दूरी के आधार पर
(C) फसलों को केवल लाइसेंस प्राप्त ट्रक ड्राइवरों को बेचने हेतु
(D) अंतरराष्ट्रीय कृषि संगठन द्वारा इस नाम को स्वीकृत करने हेतु

55. 'कारखाना कृषि' से क्या तात्पर्य है?
(A) कारखानों में फसलें उगाना
(B) कृषि उत्पादों को सीधे कारखानों में बेचना
(C) कृषि के लिए कारखानों से मशीनें खरीदना
(D) पशुधन को बाड़े पर कारखानों में तैयार भोजन पर रखना

56. सहकारी कृषि का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) स्वेच्छा से समूह बनाकर अधिक लाभ प्राप्त करना
(B) पूर्णतः सरकारी नियंत्रण में रहकर ही कृषि कार्य करना
(C) बिना किसी सामूहिक संगठन के व्यक्तिगत लाभ प्राप्त करना
(D) केवल पारिवारिक निर्वाह के लिए सीमित उत्पादन करना

57. किस देश में सहकारी कृषि आंदोलन सबसे अधिक सफल रहा, जहाँ प्रत्येक कृषक इसका सदस्य है?
(A) भारत
(B) रुस
(C) डेनमार्क
(D) संयुक्त राज्य अमेरिका

58. सामूहिक कृषि का आधारभूत सिद्धांत क्या है?
(A) साधनों पर सामाजिक स्वामित्व और सामूहिक श्रम
(B) कृषि के साधनों पर पूर्णतः व्यक्तिगत स्वामित्व होना
(C) राज्य द्वारा कृषकों के निजी साधनों का पूर्ण अधिग्रहण
(D) सहकारी समिति द्वारा केवल लाभ का असमान वितरण

59. पूर्व सोवियत संघ में प्रारंभ की गई सामूहिक कृषि को क्या नाम दिया गया था?
(A) फेजेंडा
(B) मिल्पा
(C) लादांग
(D) कोलखहोज़

60. खनन कार्य की लाभप्रदता किन दो कारकों पर निर्भर करती है?
(A) भौतिक और सामाजिक कारक
(B) भौतिक और आर्थिक कारक
(C) आर्थिक और राजनीतिक कारक
(D) सामाजिक और सांस्कृतिक कारक

61. निम्नलिखित में से कौन सा खनन को प्रभावित करने वाला एक आर्थिक कारक है?
(A) खनिज निक्षेपों का आकार
(B) खनिज की श्रेणी
(C) विद्यमान तकनीकी ज्ञान
(D) उपस्थिति की अवस्था

62. खनिजों के खनन का सबसे सस्ता तरीका कौन सा है?
(A) भूमिगत खनन
(B) कूपकी खनन
(C) धरातलीय (विवृत) खनन
(D) महासागरीय खनन

63. जब अयस्क धरातल के नीचे गहराई में होता है, तब किस खनन विधि का प्रयोग किया जाता है?
(A) भूमिगत अथवा कूपकी खनन
(B) विवृत खनन
(C) धरातलीय खनन
(D) पट्टी खनन

64. भूमिगत खनन को जोखिम भरा क्यों माना जाता है?
(A) उत्पादन की मात्रा अन्य विधियों की तुलना में कम होने के कारण
(B) गैस, आग व बाढ़ जैसी दुर्घटनाओं का भय होने के कारण
(C) खदान निर्माण में काफी अधिक पूँजी निवेश की आवश्यकता के कारण
(D) प्रशिक्षित और कुशल श्रमिकों की भारी कमी होने के कारण

65. विकसित अर्थव्यवस्था वाले देश खनन कार्य से पीछे क्यों हट रहे हैं?
(A) खनिजों के समाप्त हो जाने के कारण
(B) श्रमिक लागत अधिक आने के कारण
(C) तकनीकी ज्ञान की कमी के कारण
(D) पर्यावरण नियमों के कारण

66. निम्नलिखित में से कौन सा एक आदिकालीन समाज की जीवन-निर्वाह गतिविधि थी?
(A) पशुओं का आखेट
(B) वाणिज्यिक कृषि
(C) सूचना प्रौद्योगिकी
(D) विनिर्माण उद्योग

67. निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) प्राथमिक क्रियाएँ पर्यावरण पर प्रत्यक्ष रूप से निर्भर नहीं होती हैं।
(B) खनन एक द्वितीयक क्रिया है।
(C) आखेट एवं भोजन संग्रह प्राचीनतम ज्ञात आर्थिक क्रियाएँ हैं।
(D) वाणिज्य पशुधन पालन में पशुओं को चरागाहों पर स्वतंत्र छोड़ दिया जाता है।

68. नीचे दिए गए अभिकथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि में प्रति इकाई उत्पादन अधिक होता है।
कारण (R): इस कृषि में भूमि का गहन उपयोग होता है तथा पशुओं के गोबर की खाद का उपयोग किया जाता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही

व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

69. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'मिश्रित कृषि' के लिए असत्य है?
(A) इसमें खेतों का आकार मध्यम होता है।
(B) फसल उत्पादन एवं पशुपालन को समान महत्त्व दिया जाता है।
(C) यह विश्व के अविकसित भागों में की जाती है।
(D) शस्यावर्तन मृदा की उर्वरता को बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण है।

70. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (कृषि का प्रकार)
P. स्थानांतरणशील कृषि
Q. वाणिज्य पशुधन पालन
R. सहकारी कृषि
S. सामूहिक कृषि
List II: (संबंधित शब्द/क्षेत्र)
1. कोलखहोज़
2. डेनमार्क
3. मिल्पा
4. रैंच
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

71. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कुनैन का उपयोग मलेरिया की दवा बनाने में होता है और यह छाल से प्राप्त होती है।
2. पत्तियों का उपयोग पेय पदार्थ और कांतिवर्द्धक वस्तुएँ बनाने में होता है।
3. पेड़ के तने से रबड़ और गोंद प्राप्त होता है।
4. भोजन संग्रह का कार्य केवल उच्च अक्षांश के क्षेत्रों तक सीमित है।
5. आधुनिक समय में भोजन संग्रह का पूर्णतः व्यापारीकरण हो गया है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 2, 3, 4
(C) केवल 1, 4, 5
(D) केवल 3, 4, 5

72. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के क्रम में व्यवस्थित करें (पहले से बाद तक):
1. मानव द्वारा पशुपालन व्यवसाय की शुरुआत
2. मानव का केवल आखेट पर निर्भर रहना
3. रोपण कृषि का विकास
(A) 2, 1, 3
(B) 1, 2, 3
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 3, 1

73. एक किसान यूरेशिया के स्टेपीज क्षेत्र में एक बहुत बड़े फार्म पर रहता है। वह खेत जोतने से लेकर फसल काटने तक सभी कार्यों के लिए मशीनों का उपयोग करता है और मुख्य रूप से गेहूँ उगाता है। वह किस प्रकार की कृषि कर रहा है?
(A) सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों में की जाने वाली गहन निर्वाह कृषि
(B) वनस्पति को जलाकर तैयार की गई स्थानांतरणशील कृषि
(C) विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि
(D) पशुपालन और फसल उत्पादन पर आधारित मिश्रित कृषि

74. निम्नलिखित में से कौन सी गतिविधि 'लाल कॉलर श्रमिक' से संबंधित नहीं है?
(A) कंप्यूटर प्रोग्रामिंग
(B) वनों से लकड़ी काटना
(C) खनन कार्य
(D) मछली पकड़ना

75. नीचे दिए गए कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: डेरी कृषि में गहन श्रम की आवश्यकता वर्ष भर रहती है।
कथन II: भूमध्यसागरीय कृषि में शीत ऋतु में फलों और सब्जियों की मांग अधिक होती है।
(A) केवल कथन I सही है।
(B) केवल कथन II सही है।
(C) कथन I और II दोनों सही हैं।
(D) न तो कथन I और न ही कथन II सही है।

76. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. फ्रांसवासियों ने पश्चिमी अफ्रीका में कॉफी और कोकोआ की पौध लगाई थी।
2. ब्रिटेनवासियों ने मलयेशिया में चाय के बाग विकसित किए।
3. स्पेन एवं अमेरिकावासियों ने फिलीपाइंस में रबड़ के बागान लगाए।
4. हॉलैंडवासियों (डचों) का इंडोनेशिया में गन्ने की कृषि में एकाधिकार था।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 1, 3 और 4

77. निम्नलिखित में से किस कृषि प्रकार को 'कर्तन-दहन कृषि' भी कहा कहा जाता है?
(A) विस्तृत जीवन निर्वाह कृषि

(B) विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि
(C) आदिकालीन निर्वाहक कृषि
(D) मिश्रित कृषि

78. नीचे दिए गए अभिकथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): जिन प्रदेशों में कृषक केवल सब्जियाँ पैदा करता है, वहाँ इसे 'ट्रक कृषि' का नाम दिया जाता है।
कारण (R): ट्रक फार्म एवं बाज़ार के मध्य की दूरी, जो एक ट्रक रात भर में तय करता है, उसी आधार पर इसका नाम ट्रक कृषि रखा गया है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

79. निम्नलिखित में से कौन सी एकल कृषि नहीं है?
(A) मिश्रित कृषि
(B) डेरी कृषि
(C) रोपण कृषि
(D) वाणिज्य अनाज कृषि

80. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (क्रिया)
P. पशुओं का आखेट
Q. पेड़ों से गोंद व राल बनाना
R. पशुओं के साथ ऋतुप्रवास
S. खेतों पर फसल उगाना
List II: (प्राथमिक क्रिया का प्रकार)
1. भोजन संग्रह
2. चलवासी पशुचारण
3. कृषि
4. आखेट
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-3, S-2
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

81. आर्थिक क्रियाओं को मुख्यतः कितने वर्गों में विभाजित किया जाता है?
(A) दो
(B) चार
(C) तीन
(D) पाँच

82. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. पहला प्रमुख क्षेत्र उत्तरी अफ्रीका के एटलांटिक तट से अरब प्रायद्वीप होता हुआ मंगोलिया एवं मध्य चीन तक फैला है।
2. दूसरा क्षेत्र यूरोप तथा एशिया के प्रेयरी प्रदेश में है।
3. तीसरा क्षेत्र दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिणी पश्चिमी अफ्रीका एवं मेडागास्कर द्वीप पर है।
4. चौथा क्षेत्र अमेजन बेसिन में है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी सही हैं

83. निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता आदिकालीन निर्वाह कृषि की नहीं है?
(A) वनस्पति को जलाकर भूमि तैयार करना
(B) बोए गए खेत बहुत छोटे-छोटे होते हैं
(C) खेती के लिए आधुनिक औजारों का प्रयोग
(D) मिट्टी का उपजाऊपन समाप्त होने पर नए क्षेत्र में जाना

84. 'झूम का चक्र' छोटा होने का क्या तात्पर्य है?
(A) फसल चक्र की कुल समयावधि का पूर्व की तुलना में निरंतर बढ़ते जाना
(B) खेतों के औसत आकार में भौगोलिक रूप से व्यापक वृद्धि होना
(C) प्रति हेक्टेयर कुल खाद्यान्न उत्पादन में आश्चर्यजनक वृद्धि होना
(D) कृषि हेतु नए क्षेत्रों की तलाश की आवृत्ति का बढ़ जाना

85. मानसून एशिया के अनेक भागों में धान की फसल उगाना संभव न होने का क्या कारण है?
(A) केवल उच्चावच की दशाओं में भौगोलिक भिन्नता होना
(B) केवल क्षेत्रीय जलवायु की स्थितियों में व्यापक भिन्नता होना
(C) उच्चावच, जलवायु और मृदा जैसे कारकों का जटिल प्रभाव
(D) केवल मृदा के भौतिक एवं रासायनिक गुणों में भिन्नता होना

86. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह एक लाभोन्मुख उत्पादन प्रणाली है।
2. इसका विकास यूरोपीय उपनिवेशों द्वारा किया गया।
3. इसमें अधिक पूँजी, उच्च प्रबंध और वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग होता है।
4. यह एक बहु-फसली कृषि है।
5. इसके लिए विकसित यातायात आवश्यक है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 1, 2, 3, 5
(C) 2, 3, 4, 5
(D) 1, 3, 4, 5

87. भारत में सिंध-गंगा के मैदान के पश्चिमी भाग में कौन सी फसलें चावल रहित गहन निर्वाह कृषि के अंतर्गत उगाई जाती हैं?

(A) चावल और मक्का
(B) चाय और कॉफी
(C) कपास और गन्ना
(D) गेहूँ और ज्वार-बाजरा

88. डेरी कृषि के संदर्भ में, पास्तेरीकरण की सुविधा का क्या लाभ है?
(A) डेरी उत्पादों की भंडारण अवधि में वृद्धि करना
(B) कुल दुग्ध उत्पादन की मात्रा में आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि करना
(C) पशुओं के स्वास्थ्य और उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता में सुधार करना
(D) उत्पादित माल की कुल परिवहन लागत को काफी कम करना

89. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (देश/उपनिवेशी शक्ति)
P. फ्रांसवासी
Q. ब्रिटेनवासी
R. स्पेन/अमेरिकावासी
S. हॉलैंडवासी (डच)
List II: (विकसित बागान)
1. भारत एवं लंका में चाय के बाग
2. इंडोनेशिया में गन्ने की कृषि
3. पश्चिमी अफ्रीका में कॉफी एवं कोकोआ
4. फिलीपाइंस में नारियल व गन्ने के बागान
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-4, Q-2, R-3, S-1

90. कृषि करने वाले संगठन के आधार पर कृषि के प्रकारों का वर्गीकरण किनसे प्रभावित होता है?
(A) कृषक का अधिकार और सरकारी नीतियाँ
(B) केवल कृषक का स्थानीय खेतों पर कानूनी और सामाजिक अधिकार
(C) केवल कृषि के संदर्भ में लागू की गई विभिन्न सरकारी नीतियाँ
(D) केवल बाजार में विशिष्ट फसलों की माँग का उतार-चढ़ाव

91. खनन की विधियों को उनके विकास और जटिलता के अनुसार क्रमबद्ध करें:
1. कूपकी खनन
2. लौह युग में औजार बनाना
3. धरातलीय खनन
(A) 2, 3, 1
(B) 3, 1, 2
(C) 1, 2, 3
(D) 2, 1, 3

92. धरातलीय खनन को सबसे सस्ता तरीका क्यों माना जाता है?
(A) क्योंकि इसमें श्रमिकों हेतु व्यापक सुरक्षात्मक पूर्वोपायों की आवश्यकता होती है
(B) क्योंकि इसमें अतिरिक्त उपकरणों पर खर्च न्यूनतम होता है
(C) क्योंकि यह केवल उच्च तकनीकी क्षमता वाले विकसित देशों द्वारा किया जाता है
(D) क्योंकि इस विधि से खनिजों के उत्पादन की गति अपेक्षाकृत काफी धीमी होती है

93. नीचे दिए गए अभिकथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): मिश्रित कृषि विश्व के अत्यधिक विकसित भागों में की जाती है।
कारण (R): इस कृषि में विकसित कृषि यंत्र, रासायनिक खाद पर अधिक पूँजी व्यय के साथ ही कृषकों की कुशलता की आवश्यकता होती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

94. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वाणिज्य पशुधन पालन चलवासी पशुचारण की अपेक्षा अधिक व्यवस्थित एवं पूँजी प्रधान है।
2. चलवासी पशुचारण में पशुचारक एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित होते रहते हैं।
3. वाणिज्य पशुधन पालन में पशुओं को वैज्ञानिक आधार पर पाला जाता है।
4. चलवासी पशुचारण में एक ही प्रकार के पशु पाले जाते हैं।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) केवल 1, 2 और 4

95. निम्नलिखित में से कौन सा एक द्वितीयक आर्थिक क्रियाकलाप है?
(A) वस्त्र निर्माण
(B) पशुचारण
(C) भोजन संग्रह
(D) खनन

96. प्राचीन काल के आखेटक किनसे बने औजारों का प्रयोग करते थे?
(A) लोहा और इस्पात
(B) पत्थर और लकड़ी
(C) तांबा और कांसा

(D) सोना और चांदी

97. भोजन संग्रह के विश्व वितरण के संबंध में कौन सा युग्म सही है?
(A) उच्च अक्षांश - अमेजन बेसिन
(B) उच्च अक्षांश - दक्षिणी चिली
(C) निम्न अक्षांश - उत्तरी कनाडा
(D) निम्न अक्षांश - उत्तरी यूरेशिया

98. पौधे के किस भाग का उपयोग कुनैन और चमड़ा तैयार करने के लिए किया जाता है?
(A) छाल
(B) पत्तियाँ
(C) रेशे
(D) तना

99. नीचे दिए गए कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: चलवासी पशुचारकों की संख्या में वृद्धि हो रही है।
कथन II: वाणिज्य पशुधन पालन में पशुओं की संख्या चरागाह की वहन क्षमता के अनुसार रखी जाती है।
(A) केवल कथन I सही है।
(B) केवल कथन II सही है।
(C) कथन I और II दोनों सही हैं।
(D) न तो कथन I और न ही कथन II सही है।

100. भारत में हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में ऋतुप्रवास करने वाले लोगों का समूह कौन सा नहीं है?
(A) गुज्जर
(B) बकरवाल
(C) भूटिया
(D) मसाई

101. निम्नलिखित में से किस कृषि में प्रति एकड़ उत्पादन कम होता है परंतु प्रति व्यक्ति उत्पादन अधिक होता है?
(A) गहन निर्वाह कृषि
(B) आदिकालीन निर्वाह कृषि
(C) विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि
(D) बागानी कृषि

102. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह दुधारु पशुओं के पालन-पोषण का सर्वाधिक उन्नत प्रकार है।
2. इसमें पूँजी की कम आवश्यकता होती है।
3. इसमें वर्ष भर गहन श्रम की आवश्यकता होती है।
4. यह कार्य नगरीय एवं औद्योगिक केंद्रों से दूर किया जाता है।
5. पशुओं के स्वास्थ्य एवं प्रजनन पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) 1, 2, 3
(B) 1, 3, 5
(C) 2, 4, 5
(D) 1, 2, 4

103. 'बाज़ारीय सब्जी कृषि' नगरीय क्षेत्रों के समीप ही क्यों की जाती है?
(A) क्योंकि इन क्षेत्रों में विनिर्माण हेतु काफी सस्ते और सुलभ श्रमिक मिलते हैं
(B) क्योंकि इन क्षेत्रों में कृषि हेतु विशाल भूमि क्षेत्र पूर्णतः मुफ्त में उपलब्ध होता है
(C) क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय उपभोक्ताओं द्वारा सब्जियों की मांग नहीं होती
(D) बाज़ार की निकटता और परिवहन की सुगमता के कारण

104. सहकारी आंदोलन एक शताब्दी पूर्व कहाँ प्रारंभ हुआ था?
(A) पश्चिमी यूरोप
(B) पूर्वी यूरोप
(C) उत्तरी अमेरिका
(D) दक्षिणी एशिया

105. कूपकी खनन में श्रमिकों तथा खनिजों के आवागमन हेतु किन उपकरणों की आवश्यकता होती है?
(A) केवल साधारण मालवाहक ट्रक और बसें
(B) केवल पारंपरिक और साधारण रस्सियाँ
(C) लिफ्ट, बेधक और माल ढोने की गाड़ियाँ
(D) केवल पारंपरिक और शारीरिक मानव श्रम

106. नीचे दिए गए अभिकथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): स्थानांतरी कृषि का भविष्य अच्छा नहीं है।
कारण (R): इस कृषि में भूमि की उर्वरता कम होती जाती है जिससे झूम का चक्र छोटा होता जाता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

107. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (कृषि प्रकार)
P. ट्रक कृषि
Q. कारखाना कृषि
R. कोलखहोज़
S. फेजेंडा

List II: (विवरण)
1. ब्राजील के कॉफी बागान
2. सोवियत संघ की सामूहिक कृषि
3. पशुधन को बाड़े में पालना
4. सब्जियों की खेती

(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4

(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

108. निम्नलिखित में से कौन सी एक चतुर्थक आर्थिक क्रिया है?
(A) मछली पकड़ना
(B) अनुसंधान एवं विकास
(C) लकड़ी काटना
(D) गन्ना उगाना

109. 'लाल कॉलर' और 'सफेद कॉलर' श्रमिकों के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) उनकी कुल वार्षिक आय का औसत स्तर
(B) उनकी उच्च तकनीकी शिक्षा का स्तर
(C) कार्य का भौगोलिक स्थल (बाहर बनाम कार्यालय)
(D) श्रमिकों का सामाजिक लिंग विभाजन

110. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भोजन संग्रह में भोजन अधिशेष नहीं रहता है।
2. भोजन संग्रह में उच्च स्तरीय तकनीकी ज्ञान आवश्यक है।
3. भोजन संग्रह करने वाले लोग अपने पर्यावरण पर पूरी तरह निर्भर रहते हैं।
4. भोजन संग्रह के उत्पादों की विश्व बाजार में उच्च प्रतिस्पर्धा है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 2, 3 और 4

111. चलवासी पशुचारण के ह्रास का मुख्य कारण क्या है?
(A) राजनीतिक सीमाएँ और नई बस्तियों की योजनाएँ
(B) पशुओं में फैलने वाली संक्रामक बीमारियाँ
(C) चरागाहों का प्राकृतिक रूप से अत्यधिक विस्तार
(D) पशुचारकों की कुल जनसंख्या में निरंतर वृद्धि

112. एक कृषि प्रणाली जिसमें फार्म विशाल क्षेत्र पर फैले होते हैं, पूँजी प्रधान होती है, और एक ही प्रकार के पशु पाले जाते हैं, क्या कहलाती है?
(A) चलवासी पशुचारण
(B) वाणिज्य पशुधन पालन
(C) आदिकालीन निर्वाह कृषि
(D) गहन निर्वाह कृषि

113. 'चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि' की एक विशेषता क्या है?
(A) प्रति कृषक उत्पादन अधिक होना
(B) मानव श्रम का अधिक महत्त्व होना
(C) खेतों का आकार बड़ा होना
(D) मशीनों का व्यापक उपयोग

114. निम्नलिखित कृषि विकास के चरणों को कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. औद्योगिक क्रांति के बाद खनन का विकास
2. आखेटक द्वारा पत्थर के औजारों का प्रयोग
3. यूरोपीय लोगों द्वारा रोपण कृषि की शुरुआत
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 3, 1
(C) 3, 1, 2
(D) 2, 1, 3

115. भूमध्यसागरीय कृषि के संदर्भ में कौन सा कथन गलत है?
(A) यह खट्टे फलों की वैश्विक आपूर्ति के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।
(B) विभिन्न किस्म के अंगूरों की कृषि इस क्षेत्र की एक प्रमुख विशेषता है।
(C) यह उष्णकटिबंधीय आर्द्र प्रदेशों की कृषि है।
(D) यहाँ अंजीर एवं जैतून जैसे फलों का भी बड़े पैमाने पर उत्पादन होता है।

116. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. डेनमार्क में सहकारी आंदोलन अत्यधिक सफल रहा।
2. सहकारी कृषि में व्यक्तिगत फार्म अक्षुण्ण रहते हैं।
3. सामूहिक कृषि में उत्पादन के साधनों पर संपूर्ण समाज का स्वामित्व होता है।
4. कोलखहोज़ में कृषक अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भूमि का छोटा भाग अपने अधिकार में नहीं रख सकते थे।
5. सहकारी संस्था कृषि उत्पादों को उचित मूल्य पर बेचने में सहायता करती है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 3, 4, 5
(C) 1, 2, 3, 5
(D) 1, 3, 4, 5

117. खनन को प्रभावित करने वाले भौतिक कारकों में क्या शामिल है?
(A) बाजार में विशिष्ट खनिज की कुल माँग
(B) समाज में विद्यमान तकनीकी ज्ञान का स्तर
(C) खनिज निक्षेपों का आकार एवं उनकी श्रेणी
(D) परिवहन हेतु अवसंरचना का स्थानीय विकास

118. नीचे दिए गए अभिकथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): डेरी कृषि एक पूँजी-गहन और श्रम-गहन गतिविधि है।
कारण (R): इसमें पशुओं के लिए छप्पर, घास संचित करने के भंडार, और दुग्ध उत्पादन में यंत्रों के साथ-साथ वर्ष भर श्रम की आवश्यकता होती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

119. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें।
List I: (शब्द)
P. कर्तन एवं दहन
Q. ऋतुप्रवास
R. विटीकल्चर
S. ट्रक फार्मिंग
List II: (संबंधित गतिविधि)
1. अंगूर की खेती
2. सब्जियों की खेती
3. स्थानांतरणशील कृषि
4. चलवासी पशुचारण
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

120. मानव की आरंभिक आर्थिक क्रियाओं का सही विकास क्रम क्या है?
(A) आखेट → पशुचारण → कृषि
(B) कृषि → आखेट → पशुचारण
(C) पशुचारण → कृषि → आखेट
(D) कृषि → पशुचारण → आखेट

121. नीचे दिए गए कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: भूमध्यसागरीय क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता वाली मदिरा का उत्पादन किया जाता है।
कथन II: इस क्षेत्र में अच्छी किस्म के अंगूरों का उत्पादन होता है।
(A) कथन I और II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I का सही कारण है।
(B) कथन I और II दोनों सही हैं, लेकिन कथन II, कथन I का सही कारण नहीं है।
(C) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(D) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

122. निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा सही सुमेलित नहीं है?
(A) वेल्डस - ऑस्ट्रेलिया
(B) प्रेयरीज - उत्तरी अमेरिका
(C) पंपाज - अर्जेंटाइना
(D) स्टेपीज - यूरेशिया

123. निम्नलिखित में से कौन सी कृषि प्रणाली पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित है और जिसमें फार्म स्थायी होते हैं?
(A) आदिकालीन निर्वाह कृषि
(B) चलवासी पशुचारण
(C) गहन निर्वाह कृषि
(D) वाणिज्य पशुधन पालन

124. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मिश्रित कृषि में चारे की फसलें मुख्य घटक हैं।
2. डेरी कृषि में फसलों की तरह श्रम के लिए कोई अंतराल नहीं होता।
3. रोपण कृषि में श्रमिक सस्ते मिल जाते हैं।
4. विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि में प्रति एकड़ उत्पादन अधिक होता है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) केवल 1, 2 और 4

125. अलास्का के उत्तरी प्रदेशों में एस्किमो द्वारा पाला जाने वाला मुख्य पशु कौन है?
(A) यॉक
(B) लामा
(C) रेंडियर
(D) ऊँट

126. निम्नलिखित में से किस प्रकार की कृषि में खेतों का आकार बहुत विस्तृत, यंत्रीकृत और कम जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्रों में होता है?
(A) घनी बसी आबादी वाले क्षेत्रों में की जाने वाली गहन निर्वाह कृषि
(B) विशिष्ट जलवायुविक दशाओं वाली भूमध्यसागरीय कृषि
(C) शहरों के समीप होने वाली सघन उद्यान कृषि
(D) विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि

127. सहकारी और सामूहिक कृषि में मुख्य अंतर क्या है?
(A) फार्मों का निजी स्वामित्व बनाम सामूहिक स्वामित्व
(B) सहकारी कृषि मुख्य रूप से लाभ कमाने हेतु है, जबकि सामूहिक कृषि नहीं है।
(C) सहकारी कृषि पूर्व सोवियत संघ में शुरू हुई, जबकि सामूहिक कृषि डेनमार्क में।
(D) सहकारी कृषि में केवल एक मुख्य फसल होती है, जबकि सामूहिक कृषि में अनेक।

128. विकासशील देश खनन कार्य को महत्त्व क्यों दे रहे हैं?
(A) क्योंकि इन देशों में औद्योगिक कार्यों हेतु श्रमिक लागत काफी कम होती है
(B) राष्ट्रीय आय के प्रमुख स्रोत के रूप में
(C) पर्यावरण के बेहतर संरक्षण और सतत विकास को बढ़ावा देने हेतु
(D) क्योंकि विकसित देश अंतरराष्ट्रीय संधियों द्वारा उन्हें बाध्य करते हैं

129. नीचे दिए गए अभिकथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): उष्ण कटिबंधीय वन के भोजन संग्राहक

समूहों के उत्पाद विश्व बाजार में प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर पाते हैं।
कारण (R): अच्छी किस्म एवं कम दाम वाले कृत्रिम उत्पादों ने उनके उत्पादों का स्थान ले लिया है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

130. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें।
List I: (प्राथमिक क्रिया)
P. आखेट एवं भोजन संग्रह
Q. चलवासी पशुचारण
R. वाणिज्यिक अनाज कृषि
S. रोपण कृषि
List II: (भौगोलिक क्षेत्र)
1. प्रेयरीज
2. अमेजन बेसिन
3. सहारा मरुस्थल
4. मलेशिया
(A) P-2, Q-3, R-1, S-4
(B) P-3, Q-2, R-4, S-1
(C) P-2, Q-1, R-3, S-4
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

131. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. पशुचारण की शुरुआत आखेट पर निर्भरता कम करने के लिए हुई।
2. चलवासी पशुचारण एक प्राचीन जीवन-निर्वाह व्यवसाय है।
3. वाणिज्य पशुधन पालन पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित है।
4. ऋतुप्रवास वाणिज्य पशुधन पालन की मुख्य विशेषता है।
5. यॉक व लामा उष्णकटिबंधीय अफ्रीका के प्रमुख पशु हैं।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 3, 4
(C) 3, 4, 5
(D) 1, 2, 5

132. 'शस्यावर्तन' की प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) उत्पादन लागत को कम करना
(B) पानी की खपत को कम करना
(C) श्रम की आवश्यकता को बढ़ाना
(D) मृदा की उर्वरता को बनाए रखना

133. किस कृषि प्रणाली में कृषक का संपूर्ण परिवार कृषि कार्य में लगा रहता है?
(A) विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि
(B) रोपण कृषि
(C) चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि
(D) वाणिज्य पशुधन पालन

134. निम्नलिखित में से कौन सा देश वाणिज्य डेरी कृषि का प्रमुख क्षेत्र है?
(A) मिस्र
(B) कनाडा
(C) ब्राजील
(D) इंडोनेशिया

135. उद्यान कृषि में हरित गृह (greenhouse) का उपयोग क्यों किया जाता है?
(A) फसलों को चोरी से बचाने के लिए
(B) फसलों को जानवरों से बचाने के लिए
(C) वर्षा जल के संचयन के लिए
(D) कृत्रिम ताप प्रदान करने के लिए

136. कोलखहोज़ में कृषकों को अपने संसाधन (भूमि, पशुधन, श्रम) मिलाने के लिए क्यों कहा गया?
(A) उत्पादन वृद्धि और कृषि दशा में सुधार हेतु
(B) समाज में व्यक्तिगत आर्थिक स्वतंत्रता को और अधिक बढ़ावा देने हेतु
(C) विकसित पश्चिमी देशों की कृषि प्रणालियों की सफल नकल करने हेतु
(D) क्षेत्र की कुल ग्रामीण जनसंख्या को योजनाबद्ध तरीके से कम करने हेतु

137. कूपकी खनन में वायु संचार प्रणाली की आवश्यकता क्यों होती है?
(A) उत्पादित खनिजों को खदान के भीतर ही सदैव ठंडा रखने के लिए
(B) खदान में कार्यरत श्रमिकों के मनोरंजन हेतु संगीत की ध्वनि पहुँचाने हेतु
(C) सुरक्षा, आवागमन और ताजी हवा के लिए
(D) खदान के गहरे अंधेरे भागों को कृत्रिम रूप से निरंतर रोशन करने के लिए

138. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. डेरी कृषि नगरीय केंद्रों के समीप की जाती है।
2. भूमध्यसागरीय कृषि में खट्टे फलों का उत्पादन होता है।
3. नीदरलैंड ट्यूलिप उत्पादन में विशिष्टीकरण रखता है।
4. ट्रक कृषि का नाम प्रयुक्त होने वाले ट्रक के आकार पर रखा गया है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) केवल 1, 2 और 4

139. एक फसली कृषि, जिसमें किसी एक फसल के उत्पादन पर ही सकेंद्रण किया जाता है, किस कृषि की प्रमुख विशेषता है?

(A) मिश्रित कृषि
(B) गहन निर्वाह कृषि
(C) सहकारी कृषि
(D) रोपण कृषि

140. नीचे दिए गए अभिकथन (A) और कारण (R) को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि में प्रति व्यक्ति उत्पादन अधिक होता है।
कारण (R): इस कृषि में खेत जोतने से फसल काटने तक सभी कार्य यंत्रों द्वारा किए जाते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

141. मानव द्वारा सबसे पहले उपयोग में लाई गई धातु के आधार पर कौन सा युग था?
(A) लौह युग
(B) कांस्य युग
(C) ताम्र युग
(D) इस्पात युग

142. निम्नलिखित में से कौन सी आर्थिक क्रियाकलाप प्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण पर निर्भर है?
(A) द्वितीयक क्रियाएँ
(B) तृतीयक क्रियाएँ
(C) चतुर्थ क्रियाएँ
(D) प्राथमिक क्रियाएँ

143. नीचे दिए गए कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: धरातलीय खनन खनिजों के खनन का सबसे सस्ता तरीका है।
कथन II: भूमिगत खनन एक जोखिम-मुक्त प्रक्रिया है।
(A) केवल कथन I सही है।
(B) केवल कथन II सही है।
(C) कथन I और II दोनों सही हैं।
(D) न तो कथन I और न ही कथन II सही है।

144. निम्नलिखित में से कौन सा कार्य भोजन संग्रह के अंतर्गत नहीं आता है?
(A) जंगली कंद-मूल एकत्रित करना
(B) खेत जोतकर गेहूँ उगाना
(C) कुनैन के लिए छाल काटना
(D) शहद एकत्रित करना

145. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें।
List I: (कृषि क्षेत्र)
P. उत्तरी पश्चिमी यूरोप
Q. अर्जेंटाइना के पंपाज
R. मलेशिया
S. मध्य अमेरिका
List II: (प्रमुख कृषि प्रकार)
1. मिल्पा
2. रोपण कृषि (रबड़)
3. विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि
4. मिश्रित कृषि/डेरी कृषि
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

146. 'औद्योगिक क्रांति' का किस प्राथमिक क्रिया के विकास पर सबसे गहरा प्रभाव पड़ा?
(A) खनन
(B) आखेट
(C) भोजन संग्रह
(D) स्थानांतरणशील कृषि

147. निम्नलिखित कृषि प्रकारों को उनकी पूँजी-गहनता के घटते क्रम में व्यवस्थित करें:
1. आदिकालीन निर्वाह कृषि
2. रोपण कृषि
3. विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि
(A) 2, 3, 1
(B) 1, 2, 3
(C) 3, 1, 2
(D) 2, 1, 3

148. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. प्राथमिक क्रियाकलाप प्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण पर निर्भर हैं।
2. द्वितीयक क्रियाकलाप कच्चे माल का मूल्यवर्धन करते हैं।
3. तृतीयक क्रियाकलाप उत्पादन और विनिमय दोनों से संबंधित हैं।
4. चतुर्थ क्रियाकलाप ज्ञानोन्मुखी क्षेत्र से संबंधित हैं।
5. खनन एक तृतीयक क्रिया है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 3, 4, 5
(C) 1, 3, 4, 5
(D) 1, 2, 4, 5

149. अफ्रीका के कई देश और दक्षिण अमेरिका के कुछ देश अपनी आय के पचास प्रतिशत तक के लिए किस प्राथमिक क्रिया पर निर्भर हैं?
(A) कृषि
(B) मछली पकड़ना
(C) खनन कार्य

(D) भोजन संग्रह

150. चलवासी पशुचारण और वाणिज्य पशुधन पालन के बीच एक प्रमुख अंतर क्या है?
(A) चलवासी पशुचारण में पशु नस्ल सुधार और स्वास्थ्य देखभाल हेतु पूँजी अधिक लगती है।
(B) मौसमी प्रवास बनाम स्थायी चरागाह एवं फार्म
(C) वाणिज्य पशुधन पालन स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एक साधारण जीवन-निर्वाह व्यवसाय है।
(D) वाणिज्य पशुधन पालन के अंतर्गत विभिन्न प्रजातियों के पशुओं को एक ही बाड़े में रखा जाता है।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
चलवासी पशुचारण एक प्राचीन जीवन-निर्वाह प्रणाली है, जो कठोर जलवायु और दुर्गम भू-भाग वाले क्षेत्रों में प्रचलित है। यह आर्थिक गतिविधि केवल पशुओं को पालने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक संपूर्ण सांस्कृतिक और सामाजिक व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करती है। पशुचारक समुदाय, जैसे कि मध्य एशिया के किर्गिज़ या सहारा के तुआरेग, अपने पशुओं के झुंडों के साथ पानी और चरागाह की मौसमी उपलब्धता के अनुसार निरंतर प्रवास करते हैं। यह गतिशीलता उनकी उत्तरजीविता की कुंजी है। वे अपने पशुओं से भोजन (दूध, मांस), वस्त्र (ऊन, चमड़ा) और परिवहन के साधन प्राप्त करते हैं। इस प्रणाली में भूमि पर व्यक्तिगत स्वामित्व के बजाय सामुदायिक नियंत्रण होता है, और चरागाहों का उपयोग सामूहिक रूप से किया जाता है। आधुनिक युग में, चलवासी पशुचारण को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। राजनीतिक सीमाओं के निर्धारण ने उनके पारंपरिक प्रवास मार्गों को बाधित कर दिया है। साथ ही, सरकारों द्वारा स्थायी बस्तियों को बढ़ावा देने की नीतियां, जलवायु परिवर्तन के कारण चरागाहों का क्षरण, और वाणिज्यिक कृषि का विस्तार उनके अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न कर रहे हैं। इन समुदायों का पर्यावरण के साथ एक सहजीवी संबंध होता है, जहाँ वे पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखते हुए सीमित संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हैं।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. स्रोत के अनुसार, चलवासी पशुचारण की उत्तरजीविता की कुंजी क्या है?
(A) व्यक्तिगत भूमि का स्वामित्व
(B) पानी और चरागाह की खोज में निरंतर गतिशीलता
(C) सरकारों से वित्तीय सहायता प्राप्त करना
(D) स्थायी बस्तियों में निवास करना

152. निम्नलिखित में से कौन सा कारक आधुनिक युग में चलवासी पशुचारण के लिए चुनौती नहीं है, जैसा कि स्रोत में वर्णित है?
(A) पशुओं में नई बीमारियों का प्रसार
(B) राजनीतिक सीमाओं का अधिरोपण
(C) जलवायु परिवर्तन के प्रभाव
(D) वाणिज्यिक कृषि का विस्तार

153. स्रोत से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि चलवासी पशुचारकों का अपने पर्यावरण के साथ संबंध कैसा होता है?
(A) शोषणात्मक और विनाशकारी
(B) उदासीन और असंबद्ध
(C) सहजीवी और संतुलनकारी
(D) पूरी तरह से वाणिज्यिक और लाभ-उन्मुख

154. स्रोत में वर्णित 'सामुदायिक नियंत्रण' की अवधारणा का चरागाहों के संदर्भ में क्या अर्थ है?
(A) प्रत्येक परिवार के पास चरागाह का अपना निश्चित टुकड़ा होता है।
(B) सरकार चरागाहों का आवंटन करती है।
(C) केवल समुदाय का मुखिया ही चरागाहों के उपयोग का निर्णय ले सकता है।
(D) चरागाह संसाधनों का उपयोग पूरे समुदाय द्वारा सामूहिक रूप से किया जाता है।

155. स्रोत के अनुसार, चलवासी पशुचारक अपने पशुओं पर किस आवश्यकता के लिए निर्भर नहीं रहते हैं?
(A) भोजन और वस्त्र
(B) परिवहन के साधन
(C) बाजार में बेचने के लिए नकदी फसलें
(D) दूध और चमड़ा

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
रोपण कृषि एक विशिष्ट प्रकार की वाणिज्यिक खेती है जिसकी जड़ें यूरोपीय औपनिवेशिक विस्तार में निहित हैं। यूरोपीय शक्तियों ने अपने उष्णकटिबंधीय उपनिवेशों में बड़े पैमाने पर कृषि फार्म स्थापित किए, जिन्हें 'एस्टेट' या 'बागान' कहा जाता है, ताकि यूरोपीय बाजारों के लिए विशिष्ट फसलों का उत्पादन किया जा सके। इस कृषि प्रणाली की प्रमुख विशेषताओं में विशाल कृषि क्षेत्र, अत्यधिक पूँजी निवेश, एकल-फसल विशेषज्ञता (मोनोकल्चर), और वैज्ञानिक प्रबंधन पद्धतियाँ शामिल हैं। इसमें मुख्य रूप से चाय, कॉफी, कोको, रबर, गन्ना, केला, और अनानास जैसी फसलें उगाई जाती हैं। यह प्रणाली उत्पादन के निर्यात पर अत्यधिक निर्भर होती है, जिसके लिए एक सुविकसित परिवहन नेटवर्क की आवश्यकता होती है जो बागानों को प्रसंस्करण कारखानों और बंदरगाहों से जोड़ता हो। श्रम की आवश्यकता को पूरा करने के लिए प्रायः स्थानीय आबादी का उपयोग किया जाता था या अन्य क्षेत्रों से सस्ते श्रमिक लाए जाते थे, जिससे अक्सर सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ उत्पन्न होती थीं। यद्यपि आज कई पूर्व उपनिवेशों ने इन बागानों का राष्ट्रीयकरण कर लिया है, फिर भी उत्पादन का ढाँचा, वैश्विक बाजार पर निर्भरता और विदेशी कंपनियों का प्रभाव काफी हद तक बना हुआ है, जो इस कृषि प्रणाली की औपनिवेशिक विरासत को दर्शाता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. स्रोत के अनुसार, रोपण कृषि का विकास मुख्य रुप से किस ऐतिहासिक प्रक्रिया से जुड़ा है?
(A) औद्योगिक क्रांति
(B) यूरोपीय औपनिवेशिक विस्तार
(C) फ्रांसीसी क्रांति
(D) शीत युद्ध

157. निम्नलिखित में से कौन सी रोपण कृषि की एक प्रमुख विशेषता नहीं है, जैसा कि स्रोत में बताया गया है?
(A) एकल-फसल विशेषज्ञता
(B) अत्यधिक पूँजी निवेश
(C) विशाल कृषि क्षेत्र
(D) स्थानीय उपभोग के लिए विविध फसलों का उत्पादन

158. स्रोत यह इंगित करता है कि रोपण कृषि की सफलता के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता क्या है?
(A) एक सुविकसित परिवहन नेटवर्क
(B) स्थानीय बाजारों की निकटता
(C) न्यूनतम श्रमिक आवश्यकता
(D) सरकार से भारी सब्सिडी

159. स्रोत के आधार पर, रोपण कृषि के सामाजिक प्रभाव के बारे में क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?
(A) इसने स्थानीय समुदायों के बीच धन का समान वितरण सुनिश्चित किया।
(B) इसने केवल यूरोपीय श्रमिकों को रोजगार दिया।
(C) यह अक्सर सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को जन्म देती थी।
(D) इसका स्थानीय सामाजिक संरचना पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

160. 'एकल-फसल विशेषज्ञता' (मोनोकल्चर) शब्द का स्रोत के संदर्भ में सबसे अच्छा वर्णन क्या है?
(A) एक विशाल क्षेत्र में मुख्य रूप से एक ही प्रकार की फसल के उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करना।
(B) एक ही खेत में एक साथ कई फसलें उगाना।
(C) हर साल फसलें बदलना।
(D) केवल जैविक तरीकों का उपयोग करके फसल उगाना।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भूमध्यसागरीय कृषि एक highly specialized वाणिज्यिक कृषि का रुप है जो उन क्षेत्रों तक सीमित है जहाँ भूमध्यसागरीय जलवायु पाई जाती है। इस जलवायु की विशेषता गर्म, शुष्क ग्रीष्मकाल और हल्की, आर्द्र शीतऋतु है। यह विशिष्ट जलवायु पैटर्न खट्टे फलों, अंगूर और जैतून जैसे कई मूल्यवान फसलों के उत्पादन के लिए आदर्श है। अंगूर की खेती (viticulture) इस क्षेत्र की एक प्रमुख विशेषता है, और विश्व का अधिकांश उच्च गुणवत्ता वाला वाइन उत्पादन यहीं से होता है। अच्छी गुणवत्ता वाले अंगूरों का उपयोग मदिरा बनाने में होता है, जबकि निम्न श्रेणी के अंगूरों को किशमिश और मुनक्का बनाने के लिए सुखाया जाता है। जैतून का पेड़ इस शुष्क परिदृश्य का एक और महत्वपूर्ण प्रतीक है, जिससे जैतून का तेल निकाला जाता है। इसके अतिरिक्त, शीत ऋतु में जब उत्तरी यूरोप और उत्तरी अमेरिका में फलों और सब्जियों की कमी होती है, तब भूमध्यसागरीय क्षेत्र इन बाजारों को ताजा उपज की आपूर्ति करता है। यह कृषि अत्यधिक गहन, पूँजी-प्रधान और बाजार-उन्मुख है। यद्यपि इसका नाम भूमध्य सागर के तटीय क्षेत्रों पर आधारित है, यह कृषि प्रणाली कैलिफोर्निया (यूएसए), मध्य चिली, केप टाउन क्षेत्र (दक्षिण अफ्रीका) और दक्षिण-पश्चिम ऑस्ट्रेलिया जैसे अन्य क्षेत्रों में भी पाई जाती है, जहाँ समान जलवायु परिस्थितियाँ मौजूद हैं।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. भूमध्यसागरीय जलवायु की विशिष्ट विशेषता क्या है जिसका उल्लेख स्रोत में किया गया है?
(A) वर्ष भर भारी वर्षा
(B) ठंडी, शुष्क ग्रीष्मकाल और गर्म, आर्द्र शीतऋतु
(C) वर्ष भर एक समान तापमान और वर्षा
(D) गर्म, शुष्क ग्रीष्मकाल और हल्की, आर्द्र शीतऋतु

162. स्रोत के अनुसार, अंगूर की खेती (viticulture) का भूमध्यसागरीय कृषि में क्या महत्व है?
(A) यह केवल स्थानीय खपत के लिए की जाती है।
(B) यह एक प्रमुख विशेषता है, जिससे विश्व का अधिकांश वाइन उत्पादन होता है।
(C) यह मुख्य रुप से पशुओं के चारे के लिए होती है।
(D) इसका उपयोग केवल अंगूरों को सुखाने के लिए किया जाता है।

163. स्रोत के अनुसार, भूमध्यसागरीय क्षेत्र शीत ऋतु में उत्तरी औद्योगिक देशों के लिए क्यों महत्वपूर्ण हो जाता है?
(A) यह उन्हें गर्म कपड़े निर्यात करता है।
(B) यह उन्हें पर्यटकों के लिए एक प्रमुख गंतव्य बनाता है।
(C) यह उन्हें ताजा फलों और सब्जियों की आपूर्ति करता है।
(D) यह उन्हें अनाज की आपूर्ति करता है।

164. निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र भूमध्यसागरीय कृषि के लिए नहीं जाना जाता है, जैसा कि स्रोत में वर्णित है?
(A) मध्य चिली
(B) कैलिफोर्निया
(C) केप टाउन क्षेत्र
(D) अमेज़ॅन बेसिन

165. स्रोत से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भूमध्यसागरीय कृषि मुख्य रुप से है:
(A) एक अत्यधिक विशिष्ट और वाणिज्यिक गतिविधि
(B) एक जीवन-निर्वाह गतिविधि
(C) एक श्रम-प्रधान और कम-पूँजी वाली गतिविधि
(D) एक पशु-आधारित कृषि प्रणाली

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि एक अत्यंत यंत्रीकृत प्रकार की कृषि है जो मध्य अक्षांशों के अर्ध-शुष्क आंतरिक भागों में प्रचलित है, जिन्हें यूरेशिया में 'स्टेपीज़', उत्तरी अमेरिका में 'प्रेयरीज़', अर्जेंटीना में 'पंपास' और ऑस्ट्रेलिया में 'डाउन्स' के नाम से जाना जाता है। इस कृषि प्रणाली की पहचान विशाल खेतों, कम जनसंख्या घनत्व और खेती के कार्यों में मशीनों के व्यापक उपयोग से होती है। खेत जोतने से लेकर फसल काटने तक के सभी कार्य कंबाइन हार्वेस्टर जैसी बड़ी मशीनों द्वारा किए जाते हैं, जिसके कारण यहाँ प्रति व्यक्ति उत्पादकता बहुत अधिक होती है, भले ही प्रति हेक्टेयर उपज गहन निर्वाह कृषि की तुलना में कम हो। गेहूँ यहाँ की प्रमुख फसल है, जिसे अक्सर एकल फसल के रूप में उगाया जाता है। इस प्रणाली का विकास और विस्तार रेलवे जैसे कुशल परिवहन नेटवर्कों के आगमन के साथ हुआ, जिसने इन आंतरिक क्षेत्रों को विश्व बाजारों से जोड़ा और अनाज के निर्यात को संभव बनाया। यह कृषि पूरी तरह से बाजार-उन्मुख है और इसकी लाभप्रदता अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अनाज की कीमतों पर बहुत अधिक निर्भर करती है। कम वर्षा के कारण, फसल की विफलता एक निरंतर जोखिम बनी रहती है, और किसानों को अक्सर सूखे की स्थिति का सामना करना पड़ता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि की मुख्य विशेषता क्या है?
(A) छोटे खेत और उच्च जनसंख्या घनत्व
(B) विशाल खेत और अत्यधिक यंत्रीकरण
(C) खेती के कार्यों में मानव श्रम का गहन उपयोग
(D) मुख्य रूप से स्थानीय खपत के लिए उत्पादन

167. स्रोत के अनुसार, विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि में प्रति व्यक्ति उत्पादकता उच्च क्यों होती है?
(A) प्रति हेक्टेयर बहुत अधिक उपज के कारण
(B) खेती के कार्यों में मशीनों के व्यापक उपयोग के कारण
(C) सरकार से भारी सब्सिडी के कारण
(D) बहुत उपजाऊ मिट्टी के कारण

168. इस कृषि प्रणाली के विकास में किस कारक ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?
(A) कुशल परिवहन नेटवर्क जैसे रेलवे का आगमन
(B) स्थानीय बाजारों का विकास
(C) जनसंख्या में तीव्र वृद्धि
(D) छोटी मशीनों का आविष्कार

169. स्रोत में उल्लिखित 'प्रेयरीज़' नामक घास के मैदान किस महाद्वीप में स्थित हैं?
(A) यूरेशिया
(B) ऑस्ट्रेलिया
(C) उत्तरी अमेरिका
(D) अर्जेंटीना (दक्षिण अमेरिका)

170. स्रोत के आधार पर, विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि करने वाले किसानों के लिए एक निरंतर जोखिम क्या है?
(A) बाजार की कमी
(B) श्रम की कमी
(C) अत्यधिक वर्षा और बाढ़
(D) कम वर्षा के कारण फसल की विफलता

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
खनन, पृथ्वी के गर्भ से मूल्यवान खनिजों और अन्य भूवैज्ञानिक सामग्रियों को निकालने की प्राथमिक आर्थिक क्रिया है। किसी खनिज निक्षेप का खनन आर्थिक रूप से व्यवहार्य है या नहीं, यह कई कारकों पर निर्भर करता है। भौतिक कारकों में निक्षेप का आकार, अयस्क की श्रेणी या गुणवत्ता (grade), और उसकी गहराई प्रमुख हैं। बड़े, उच्च-श्रेणी वाले और सतह के निकट स्थित निक्षेपों का खनन करना अधिक लाभदायक होता है। आर्थिक कारक भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जिनमें खनिज की बाजार में माँग, उपलब्ध प्रौद्योगिकी का स्तर, और परिवहन की लागत शामिल है। उच्च माँग और उन्नत तकनीक खनन को प्रोत्साहित करते हैं, जबकि दूरस्थ क्षेत्रों में स्थित निक्षेपों के लिए परिवहन लागत एक बड़ी बाधा हो सकती है। खनन के दो मुख्य प्रकार हैं: धरातलीय खनन (surface mining) और भूमिगत खनन (underground mining)। धरातलीय खनन, जिसे विवृत-खदान खनन भी कहते हैं, तब किया जाता है जब खनिज सतह के निकट होते हैं। यह सस्ता और सुरक्षित होता है लेकिन बड़े पैमाने पर भूमि क्षरण और पारिस्थितिक विनाश का कारण बनता है। भूमिगत खनन का उपयोग तब होता है जब अयस्क अधिक गहराई में होता है। यह विधि अधिक खर्चीली, जोखिम भरी (जैसे गैस रिसाव, बाढ़, या खदान धंसना) और तकनीकी रूप से जटिल होती है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. स्रोत के अनुसार, किसी खनिज निक्षेप की आर्थिक व्यवहार्यता का निर्धारण करने वाला एक प्रमुख भौतिक कारक क्या है?
(A) बाजार में खनिज की माँग
(B) उपलब्ध प्रौद्योगिकी का स्तर
(C) अयस्क की श्रेणी या गुणवत्ता
(D) परिवहन की लागत

172. धरातलीय खनन को भूमिगत खनन की तुलना में अधिक बेहतर क्यों माना जाता है, जब खनिज सतह के निकट होते हैं?
(A) क्योंकि यह पर्यावरण के लिए बेहतर है।
(B) क्योंकि यह सस्ता और अपेक्षाकृत सुरक्षित है।
(C) क्योंकि इसमें अधिक गहरी खुदाई की आवश्यकता होती है।
(D) क्योंकि यह केवल उच्च गुणवत्ता वाले अयस्कों के लिए उपयुक्त है।

173. निम्नलिखित में से कौन सा एक आर्थिक कारक है जो खनन की लाभप्रदता को प्रभावित करता है?

(A) निक्षेप का आकार
(B) अयस्क की गहराई
(C) निक्षेप की भूवैज्ञानिक संरचना
(D) खनिज की बाजार में माँग

174. स्रोत के अनुसार, भूमिगत खनन से जुड़ा एक प्रमुख जोखिम क्या है?
(A) खदान का धंसना या जहरीली गैस का रिसाव
(B) बड़े पैमाने पर भूमि क्षरण
(C) उच्च प्रारंभिक परिवहन लागत
(D) स्थानीय बाजार की कमी

175. 'विवृत-खदान खनन' किस प्रकार के खनन का दूसरा नाम है?
(A) भूमिगत खनन
(B) समुद्री खनन
(C) धरातलीय खनन
(D) जलीय खनन

ANSWERS

1. (B) आर्थिक क्रियाएँ
वे सभी मानवीय कार्य जिनसे आर्थिक लाभ या आय प्राप्त होती है, आर्थिक क्रियाएँ कहलाती हैं। ये क्रियाएँ किसी समाज के आर्थिक विकास का आधार होती हैं और इन्हें मुख्य रूप से प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक और चतुर्थक श्रेणियों में बाँटा जाता है। भोजन, वस्त्र और निवास जैसी मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मनुष्य धनार्जन के उद्देश्य से ये विभिन्न कार्यकलाप करता है।

2. (A) कृषि
प्राथमिक क्रियाएँ सीधे तौर पर प्राकृतिक संसाधनों के दोहन और पर्यावरण पर निर्भर होती हैं। इनमें कृषि, आखेट, भोजन संग्रह, पशुचारण, मछली पकड़ना, वनों से लकड़ी काटना और खनन कार्य शामिल हैं। विनिर्माण एक द्वितीयक क्रिया है, जबकि परिवहन और बैंकिंग सेवा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली तृतीयक क्रियाएँ हैं। कृषि मानव सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण और बुनियादी प्राथमिक गतिविधियों में से एक है।

3. (A) P-3, Q-2, R-4, S-1
आर्थिक क्रियाओं का वर्गीकरण उनके स्वरूप के आधार पर किया जाता है। मछली पकड़ना सीधे प्रकृति से जुड़ा होने के कारण प्राथमिक क्रिया है। वस्त्र निर्माण कच्चे माल के प्रसंस्करण के कारण द्वितीयक श्रेणी में आता है। व्यापार सेवाओं के विनिमय के कारण तृतीयक क्रिया है, जबकि विश्वविद्यालय शिक्षण अनुसंधान और ज्ञान के प्रसार से संबंधित होने के कारण चतुर्थक क्रिया का उदाहरण है।

4. (D) लाल कॉलर श्रमिक
प्राथमिक क्रियाकलापों में संलग्न लोगों को लाल कॉलर श्रमिक कहा जाता है क्योंकि उनका कार्यक्षेत्र अधिकांशतः घर से बाहर और खुले वातावरण में होता है। इसके विपरीत, कार्यालयों और प्रबंधकीय कार्यों में लगे लोगों को सफेद कॉलर और शारीरिक श्रम करने वाले विनिर्माण श्रमिकों को नीला कॉलर कहा जाता है। उच्च स्तरीय सेवाओं और अनुसंधान में लगे व्यक्तियों को स्वर्ण कॉलर श्रमिक की संज्ञा दी जाती है।

5. (C) इस कार्य में अत्यधिक पूँजी निवेश की आवश्यकता होती है।
आखेट और भोजन संग्रह मानव सभ्यता की प्राचीनतम आर्थिक गतिविधियाँ हैं जो पूर्णतः प्रकृति पर निर्भर होती हैं। इन कार्यों में बहुत कम पूँजी निवेश और निम्न स्तरीय तकनीक की आवश्यकता होती है। ये क्रियाएँ प्रायः विषम जलवायु वाले क्षेत्रों में की जाती हैं जहाँ भोजन अधिशेष नहीं रहता है। प्रति व्यक्ति उत्पादकता कम होने के कारण यह केवल जीवन-निर्वाह का एक साधन मात्र है।

6. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
अवैध शिकार के कारण विश्वभर में कई जीवों की प्रजातियाँ संकटग्रस्त या विलुप्त हो गई हैं, जो एक पर्यावरणीय सत्य है। वहीं, तकनीकी विकास ने मत्स्य ग्रहण के आधुनिकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये दोनों तथ्य स्वतंत्र रूप से सही हैं, परंतु मत्स्य पालन की तकनीक का विकास वन्यजीवों के अवैध शिकार और उनकी विलुप्ति की प्रक्रिया का प्रत्यक्ष कारण या व्याख्या नहीं करता है।

7. (D) भोजन संग्रह
वनों या प्राकृतिक क्षेत्रों से फल, कंद-मूल और अन्य उत्पादों को एकत्रित करना भोजन संग्रह कहलाता है। मिज़ोरम में महिलाओं द्वारा जंगलों से संतरे इकट्ठा करना इसी श्रेणी की एक प्राथमिक क्रिया है। यह गतिविधि व्यवसायिक कृषि या पशुचारण से भिन्न है क्योंकि इसमें मानव श्रम द्वारा प्राकृतिक उत्पादों को सीधे पर्यावरण से बिना किसी बड़े प्रसंस्करण के प्राप्त किया जाता है।

8. (C) केवल 1, 2 और 4
भोजन संग्रह की क्रिया मुख्य रूप से उच्च अक्षांशों और निम्न अक्षांशों में प्रचलित है। इस कार्य में तकनीकी ज्ञान का स्तर अत्यंत निम्न होता है तथा इसमें संलग्न जनसंख्या की प्रति व्यक्ति उत्पादकता कम होती है। हालांकि आधुनिक समय में कुछ उत्पादों का व्यापारीकरण हुआ है, फिर भी पारंपरिक रूप से इसे बाजार के लिए नहीं बल्कि स्थानीय जीवन-निर्वाह के उद्देश्य से किया जाता रहा है।

9. (C) पेय पदार्थ
पेड़ों की छाल का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है जैसे कुनैन की दवा बनाना, चमड़ा साफ करने के लिए टैनिन प्राप्त करना और कार्क का निर्माण करना। पेय पदार्थ जैसे चाय और कॉफी मुख्य रूप से पत्तियों या बीजों से प्राप्त किए जाते हैं, छाल से नहीं। यह प्राथमिक क्रियाओं के अंतर्गत वन उत्पादों के विविध उपयोगों को स्पष्ट करता है जो मानव जीवन में उपयोगी हैं।

10. (B) 2, 1, 3
मानव सभ्यता के विकास में खनिजों की खोज का एक निश्चित ऐतिहासिक क्रम रहा है। सबसे पहले मनुष्य ने ताँबे की खोज की और उपयोग किया, जिसे ताम्र युग कहा जाता है। इसके बाद ताँबे में टिन मिलाकर कांसा बनाने की कला सीखी गई, जिसे कांस्य युग कहा गया। सबसे अंत में लोहे की खोज और उसके व्यापक प्रयोग से लौह युग की शुरुआत हुई थी।

11. (D) कृत्रिम उत्पादों का बाजार में प्रभुत्व बढ़ना
उष्णकटिबंधीय वनों के संग्राहक समूहों द्वारा एकत्रित प्राकृतिक उत्पादों को आधुनिक बाजार में कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। इसका मुख्य कारण कम लागत और बेहतर गुणवत्ता वाले सिंथेटिक या कृत्रिम विकल्पों का उपलब्ध होना है। उदाहरण के लिए, कृत्रिम रबर और प्लास्टिक ने कई प्राकृतिक उत्पादों की मांग को वैश्विक स्तर पर सीमित कर दिया है, जिससे इन पारंपरिक समुदायों की आय प्रभावित हुई है।

12. (C) कथन I और II दोनों सही हैं।
चुविंगगम का निर्माण जेपोटा वृक्ष से निकलने वाले दूधिया रस से होता है, जिसे चिकल कहा जाता है। इसी प्रकार, विभिन्न वृक्षों के तनों के रस और अन्य स्त्रावों का उपयोग रबर, बलाटा, गोंद और राल जैसे महत्वपूर्ण उत्पादों के निर्माण में किया जाता है। ये दोनों तथ्य वनों से प्राप्त होने वाले कच्चे माल के विविध औद्योगिक और दैनिक उपयोगों को प्रमाणित करते हैं जो अर्थव्यवस्था में सहायक हैं।

13. (A) केवल 1, 2, 3
चलवासी पशुचारण एक प्राचीन जीवन-निर्वाह व्यवसाय है जिसमें पशुपालक भोजन, वस्त्र और परिवहन के लिए पूर्णतः पशुओं पर निर्भर रहते हैं। वे चरागाह और जल की उपलब्धता के अनुसार अपने पशुओं के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास करते हैं। प्रत्येक पशुचारक समुदाय का अपना एक निश्चित चरागाह क्षेत्र होता है और इस पद्धति में पूँजी निवेश बहुत ही कम होता है।

14. (D) यॉक और लामा
विश्व के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में वहाँ की जलवायु के अनुसार विशिष्ट पशु पाले जाते हैं। तिब्बत के उच्च हिमालयी क्षेत्रों में यॉक अत्यंत महत्वपूर्ण पशु है, जबकि दक्षिण अमेरिका के एंडीज पर्वतीय भागों में लामा पाला जाता है। ये पशु इन ऊँचाई वाले और दुर्गम क्षेत्रों की कठिन परिस्थितियों के अनुकूल होते हैं और स्थानीय लोगों के परिवहन तथा आजीविका के मुख्य आधार के रूप में कार्य करते हैं।

15. (A) उष्णकटिबंधीय अफ्रीका - गाय-बैल
विभिन्न जलवायु प्रदेशों में अलग-अलग प्रकार के पशु पाले जाते हैं। उष्णकटिबंधीय अफ्रीका में गाय और बैल प्रमुखता से पाले जाते हैं। सहारा के मरुस्थलीय क्षेत्रों में ऊँट और भेड़-बकरियाँ मुख्य पशु हैं, जबकि यॉक तिब्बत में पाया जाता है। रेंडियर का पालन आर्कटिक और उप-आर्कटिक क्षेत्रों में किया जाता है। ये पशु स्थानीय पर्यावरण और चरागाहों की उपलब्धता के अनुसार पाले जाते हैं ताकि जीवन-निर्वाह सुलभ हो।

16. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
पशुचारक समूहों का उनके क्षेत्रों के साथ गहरा संबंध है। गुज्जर और बकरवाल हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में रहते हैं। गद्दी और भूटिया ग्रीष्मकाल में मैदानी भागों से ऊँचे पर्वतों की ओर प्रवास करते हैं। टुंड्रा प्रदेश के पशुचारक उत्तर-दक्षिण दिशा में मौसमी प्रवास करते हैं। सहारा के मरुस्थलीय पशुपालक मुख्यतः भेड़, बकरी और ऊँटों पर निर्भर रहते हैं, जो शुष्क परिस्थितियों में जीवित रह सकते हैं।

17. (B) ऋतुप्रवास
पशुचारकों द्वारा मौसम के अनुसार चरागाहों की तलाश में एक भौगोलिक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाने की प्रक्रिया ऋतुप्रवास कहलाती है। गर्मियों में जब पहाड़ों की बर्फ पिघलती है, तो वे मैदानी भागों से ऊपर पर्वतीय ढालों की ओर चले जाते हैं। इसके विपरीत, सर्दियों में ठंड बढ़ने पर वे सुरक्षित मैदानी चरागाहों की ओर लौट आते हैं। यह प्रक्रिया भारत के हिमालयी क्षेत्रों में अत्यंत प्रचलित है।

18. (A) अमेजन बेसिन
चलवासी पशुचारण मुख्य रूप से तीन प्रमुख क्षेत्रों में केंद्रित है: उत्तरी अफ्रीका के अटलांटिक तट से अरब प्रायद्वीप तक, यूरेशिया का टुंड्रा प्रदेश और दक्षिणी पश्चिमी अफ्रीका तथा मेडागास्कर। अमेजन बेसिन मुख्य रूप से सघन वनों का क्षेत्र है जहाँ आखेट और भोजन संग्रह या स्थानांतरणशील कृषि अधिक प्रचलित है। वहाँ की जलवायु और घने वन बड़े पैमाने पर पशुचारण के लिए उपयुक्त नहीं माने जाते हैं।

19. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
आधुनिक समय में चलवासी पशुचारण करने वाले लोगों की संख्या निरंतर कम हो रही है। इसका मुख्य कारण देशों के बीच राजनीतिक सीमाओं का निर्धारण है, जिससे पशुचारकों के मुक्त आवागमन पर रोक लग गई है। साथ ही, कई देशों की सरकारें इन खानाबदोश समुदायों को स्थायी रूप से बसाने की योजनाएं बना रही हैं, जिससे उनके पारंपरिक चरागाह क्षेत्र समय के साथ निरंतर सिमटते जा रहे हैं।

20. (D) यह पश्चिमी संस्कृति से प्रभावित और व्यवस्थित है।
वाणिज्य पशुधन पालन एक आधुनिक, व्यवस्थित और पूँजी प्रधान व्यवसाय है जो मुख्य रूप से पश्चिमी संस्कृति से प्रेरित है। इसमें पशुओं को विशाल स्थायी फार्मों या रैंचों में पाला जाता है। चलवासी पशुचारण के विपरीत, इसमें पशुओं की नस्ल सुधार, स्वास्थ्य देखभाल और वैज्ञानिक प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य वैश्विक बाजार के लिए मांस और ऊन का उत्पादन करना है।

21. (A) केवल 1, 2 और 3
वाणिज्य पशुधन पालन में फार्म स्थायी होते हैं और विशाल क्षेत्रों में फैले होते हैं। चराई को नियंत्रित करने के लिए पूरे क्षेत्र को बाड़ लगाकर छोटी इकाइयों में विभाजित किया जाता है। इसमें केवल एक ही प्रकार के पशु को वैज्ञानिक तरीके से पाला जाता है। पशुओं की संख्या चरागाह की वहन क्षमता के अनुसार ही रखी जाती है ताकि संसाधनों का अत्यधिक दोहन न हो।

22. (B) भारत
वाणिज्य पशुधन पालन मुख्य रूप से उन विकसित देशों में प्रसिद्ध है जहाँ विशाल घास के मैदान उपलब्ध हैं। न्यूज़ीलैंड,

अर्जेंटीना, संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और उरुग्वे इस प्रकार के व्यवसाय के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध हैं। भारत में मुख्य रूप से चलवासी पशुचारण या मिश्रित कृषि आधारित पशुपालन प्रचलित है, जो वाणिज्य पशुधन पालन की तुलना में कम व्यवस्थित और स्थानीय आवश्यकताओं पर केंद्रित है।

23. (A) 1, 3, 2
कृषि के विकास का क्रम मानव सभ्यता के क्रमिक विकास को दर्शाता है। सबसे पहले आदिकालीन निर्वाह कृषि का उदय हुआ, जिसमें सरल औजारों का प्रयोग किया जाता था। इसके बाद पशुपालन का व्यवसायीकरण हुआ जिसे वाणिज्य पशुधन पालन कहा गया। आधुनिक काल में औपनिवेशिक शक्तियों के प्रभाव में लाभोन्मुख रोपण कृषि का विकास हुआ। यह क्रम प्राथमिक आर्थिक गतिविधियों में बढ़ते तकनीकी और आर्थिक निवेश को दर्शाता है।

24. (C) कथन I और II दोनों सही हैं।
आदिकालीन निर्वाह कृषि मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में की जाती है जहाँ जनजातियाँ वनों को साफ करके खेती करती हैं। गहन निर्वाह कृषि मानसून एशिया के उन क्षेत्रों में प्रचलित है जहाँ जनसंख्या का घनत्व अधिक है। इन दोनों प्रणालियों का स्वरूप स्थानीय जलवायु और जनसंख्या के दबाव के अनुसार अलग-अलग होता है, जो निर्वाह कृषि की विविधता और उसकी क्षेत्रीय विशिष्टता को दर्शाता है।

25. (C) स्थानीय उत्पादों का संपूर्ण उपयोग
आदिकालीन निर्वाह कृषि एक ऐसी प्रणाली है जिसमें उत्पादन मुख्य रूप से कृषक परिवार के स्वयं के उपभोग के लिए होता है। इसमें अधिशेष उत्पादन बहुत कम होता है, इसलिए स्थानीय उत्पादों का संपूर्ण उपयोग घर में ही कर लिया जाता है। यह कृषि बाजार की मांगों से स्वतंत्र होती है और इसमें मशीनों के बजाय पारंपरिक औजारों और मानव श्रम का उपयोग प्रधान होता है।

26. (B) केवल 1, 2, 4, 5
आदिकालीन निर्वाह कृषि को 'कर्तन एवं दहन' कृषि कहा जाता है क्योंकि इसमें वनस्पति को जलाकर राख को उर्वरक के रूप में उपयोग किया जाता है। भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में इसे 'झूमिंग' के नाम से जाना जाता है। इसमें आधुनिक यंत्रों के बजाय लकड़ी के हल जैसे सरल औजारों का प्रयोग होता है। उर्वरता समाप्त होने पर किसान नए क्षेत्र में चले जाते हैं और पुनः पुराने स्थान पर लौटते हैं।

27. (D) मिल्पा
स्थानांतरणशील कृषि विश्व के विभिन्न भागों में अलग-अलग स्थानीय नामों से जानी जाती है। मध्य अमेरिका और मैक्सिको के क्षेत्रों में इसे मुख्य रूप से 'मिल्पा' कहा जाता है। उत्तर-पूर्वी भारत में इसे 'झूमिंग', मलेशिया और इंडोनेशिया में 'लादांग' तथा श्रीलंका में 'चेना' कहा जाता है। ये नाम इस कृषि पद्धति के भौगोलिक विस्तार और विभिन्न संस्कृतियों में इसके महत्व को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

28. (B) फेजेंडा - भारत
विकल्पों में 'फेजेंडा' का मेल गलत है क्योंकि यह ब्राजील में स्थित विशाल कॉफी के बागानों को कहा जाता है, न कि भारत के। झूमिंग उत्तर-पूर्वी भारत की प्रमुख कृषि पद्धति है, मिल्पा मध्य अमेरिका से संबंधित है और लादांग मलेशिया तथा इंडोनेशिया में प्रचलित है। ये युग्म विभिन्न क्षेत्रों में स्थानांतरणशील कृषि और बागानी कृषि के विशिष्ट स्थानीय नामों की पहचान करने में मदद करते हैं।

29. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
विभिन्न कृषि प्रणालियों की अपनी विशिष्ट फसलें होती हैं। गहन निर्वाह कृषि का मुख्य आधार चावल है, जबकि रोपण कृषि में चाय जैसी नकदी फसलें उगाई जाती हैं। विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि मुख्य रूप से गेहूँ के उत्पादन के लिए जानी जाती है। भूमध्यसागरीय कृषि अंगूर जैसे खट्टे फलों के उत्पादन में विशिष्टीकरण रखती है। यह मिलान वैश्विक कृषि उत्पादन के क्षेत्रीय स्वरूप को भली-भांति प्रदर्शित करता है।

30. (D) छोटी जोत और अधिक पारिवारिक श्रम का योगदान
चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि में जनसंख्या का दबाव बहुत अधिक होता है, जिसके कारण खेतों का आकार या जोत बहुत छोटी होती है। इसमें कृषक परिवार के सभी सदस्य खेतों में श्रम करते हैं, जिससे प्रति इकाई क्षेत्र उत्पादन तो अधिक होता है, परंतु प्रत्येक कृषक के हिस्से में आने वाला कुल उत्पादन कम रह जाता है। यह कृषि मुख्य रूप से घनी आबादी वाले एशियाई क्षेत्रों की विशेषता है।

31. (A) चावल
चावल रहित गहन निर्वाह कृषि उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ वर्षा की कमी या उच्चावच चावल की खेती के अनुकूल नहीं होते। इन क्षेत्रों में मुख्य रूप से गेहूँ, सोयाबीन, जौ और ज्वार-बाजरा जैसी फसलें उगाई जाती हैं। यह कृषि उत्तरी चीन, उत्तरी भारत के सिंध-गंगा के मैदान के पश्चिमी भागों और दक्षिण भारत के शुष्क क्षेत्रों में प्रचलित है, जहाँ सिंचाई का विशेष प्रबंधन किया जाता है।

32. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या है।
रोपण कृषि एक बड़े स्तर पर लाभ कमाने के उद्देश्य से की जाने वाली उत्पादन प्रणाली है जिसमें अधिक पूँजी और प्रबंधन की आवश्यकता होती है। यह ऐतिहासिक रूप से सत्य है कि यूरोपीय उपनिवेशवादियों ने लाभ के लिए इसकी शुरुआत की थी। यद्यपि दोनों तथ्य सही हैं, परंतु औपनिवेशीकरण की प्रक्रिया स्वयं रोपण कृषि के लाभोन्मुख होने का एकमात्र कारण नहीं है, बल्कि यह इसके प्रसार का माध्यम थी।

33. (B) गेहूँ
रोपण कृषि के अंतर्गत ऐसी फसलें उगाई जाती हैं जिन्हें बड़े बागानों में व्यवसायिक उद्देश्य से लगाया जाता है, जैसे कॉफी, गन्ना, रबर, चाय और नारियल। गेहूँ को आमतौर पर विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि के अंतर्गत उगाया जाता है, न कि रोपण फसल के रूप में। रोपण फसलों की विशेषता यह है कि वे एक

फसली होती हैं और उनमें उत्पादन से लेकर प्रसंस्करण तक वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग होता है।

34. (C) केवल 1, 3 and 4
रोपण कृषि की मुख्य विशेषताओं में कृषि क्षेत्र का विशाल आकार, एकल फसल पर ध्यान देना और बागानों तथा बाजारों के बीच विकसित यातायात व्यवस्था शामिल है। इसमें बहुत अधिक पूँजी निवेश, उच्च स्तरीय प्रबंधन और वैज्ञानिक तकनीकों का प्रयोग किया जाता है, इसलिए दूसरा कथन गलत है। यह प्रणाली मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में यूरोपीय और अमेरिकी देशों के आर्थिक हितों के कारण विकसित हुई थी।

35. (C) फेजेंडा
ब्राजील में स्थित विशाल कॉफी के बागानों को स्थानीय स्तर पर 'फेजेंडा' के नाम से जाना जाता है। ये बागान औपनिवेशिक काल में विकसित हुए थे और आज भी वैश्विक कॉफी उत्पादन का एक बहुत बड़ा हिस्सा प्रदान करते हैं। लादांग और मिल्पा स्थानांतरणशील कृषि के प्रकार हैं, जबकि कोलखहोज़ सोवियत संघ की सामूहिक कृषि प्रणाली को कहा जाता था। यह विशिष्ट नाम ब्राजील के कृषि इतिहास को दर्शाता है।

36. (D) स्पेनवासी - फिलीपाइंस में नारियल व गन्ने के बागान
औपनिवेशिक शक्तियों ने विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट बागान विकसित किए। स्पेन और अमेरिका ने फिलीपींस में नारियल और गन्ने के बागान लगाए। इसके विपरीत, ब्रिटेन ने भारत और श्रीलंका में चाय के बाग लगाए, जबकि फ्रांस ने पश्चिमी अफ्रीका में कॉफी और कोकोआ विकसित किया। हॉलैंड या डचों ने इंडोनेशिया में गन्ने की खेती पर अपना एकाधिकार स्थापित किया था, जो उपनिवेशवाद के आर्थिक प्रभाव को दर्शाता है।

37. (A) केवल कथन I सही है।
विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि की मुख्य फसल निश्चित रूप से गेहूँ है, इसलिए पहला कथन सत्य है। हालांकि, दूसरा कथन गलत है क्योंकि यह कृषि मध्य अक्षांशों के आंतरिक 'अर्द्ध-शुष्क' प्रदेशों में की जाती है, न कि आर्द्र प्रदेशों में। इन क्षेत्रों में वर्षा कम होती है, जिससे मशीनीकृत बड़े पैमाने की खेती के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उपलब्ध होती हैं, जो इस कृषि को विशिष्ट बनाती हैं।

38. (B) कृषि कार्यों का यंत्रीकरण होने के कारण
विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि में खेतों का आकार बहुत बड़ा होता है और जनसंख्या का घनत्व अपेक्षाकृत कम होता है। खेत जोतने से लेकर फसल काटने तक के अधिकांश कार्य आधुनिक मशीनों और यंत्रों द्वारा संपन्न किए जाते हैं। इस उच्च स्तरीय यंत्रीकरण के कारण प्रति एकड़ उत्पादन कम होने के बावजूद, कुल उत्पादन की मात्रा और प्रति व्यक्ति उत्पादन का स्तर काफी अधिक होता है।

39. (D) अमेजन बेसिन
विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि मुख्य रूप से यूरेशिया के स्टेपीज, उत्तरी अमेरिका के प्रेयरीज, अर्जेंटीना के पंपाज और ऑस्ट्रेलिया के डाउंस क्षेत्रों में प्रचलित है। अमेजन बेसिन एक उष्णकटिबंधीय वर्षावन क्षेत्र है जहाँ की जलवायु और घने वन इस प्रकार की मशीनीकृत अनाज कृषि के अनुकूल नहीं हैं। अमेजन बेसिन में मुख्य रूप से आखेट, भोजन संग्रह और स्थानांतरणशील कृषि जैसी प्राथमिक गतिविधियाँ अधिक प्रभावी रूप से की जाती हैं।

40. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
विश्व के विभिन्न घास के मैदान और उनके संबंधित क्षेत्र महत्वपूर्ण भौगोलिक जानकारी प्रदान करते हैं। प्रेयरीज उत्तरी अमेरिका में स्थित हैं, पंपाज अर्जेंटीना का प्रमुख घास का मैदान है। वेल्डस दक्षिणी अफ्रीका के उच्च पठारी क्षेत्रों में पाए जाते हैं, जबकि डाउंस ऑस्ट्रेलिया के समशीतोष्ण घास के मैदान हैं। ये सभी क्षेत्र विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि और पशुपालन के लिए वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध हैं।

41. (C) केंटरबरी
न्यूज़ीलैंड में विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि मुख्य रूप से केंटरबरी के घास के मैदानों में की जाती है। डाउंस ऑस्ट्रेलिया में, वेल्डस दक्षिण अफ्रीका में और स्टेपीज यूरेशिया में पाए जाते हैं। केंटरबरी का क्षेत्र अपनी समशीतोष्ण जलवायु और उपजाऊ भूमि के कारण गेहूँ उत्पादन के लिए बहुत अनुकूल है। यह क्षेत्र न्यूज़ीलैंड की अर्थव्यवस्था में कृषि उत्पादों के निर्यात के माध्यम से बहुत महत्वपूर्ण योगदान देता है।

42. (A) पशुपालन
मिश्रित कृषि की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें फसलों के उत्पादन के साथ-साथ पशुपालन को भी समान रूप से महत्त्व दिया जाता है। किसान खाद्यान्न और चारे की फसलें उगाने के साथ-साथ गाय, भेड़, सूअर और मुर्गियाँ पालते हैं। यह प्रणाली आय के स्रोतों में विविधता लाती है और कृषि जोखिमों को कम करती है। साथ ही, पशुओं का गोबर मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में सहायक होता है।

43. (D) फसल उत्पादन और पशुपालन दोनों करना
मिश्रित कृषि का मुख्य आधार खेती और पशुपालन का एकीकृत रूप है। इसमें केवल खाद्यान्न उगाना या केवल पशु पालना शामिल नहीं है, बल्कि दोनों गतिविधियों को एक साथ संचालित किया जाता है। खेतों में अनाज के साथ-साथ पशुओं के लिए चारे की फसलें भी उगाई जाती हैं। यह पद्धति विश्व के विकसित भागों, जैसे उत्तरी-पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका के पूर्वी भागों में विशेष रूप से प्रचलित है।

44. (B) चाय
मिश्रित कृषि में सामान्यतः गेहूँ, जौ, राई, जई और मक्का जैसी खाद्यान्न फसलें तथा चारे की फसलें उगाई जाती हैं। चाय एक रोपण फसल है जिसके लिए विशिष्ट जलवायुविक परिस्थितियों और ढलानी भूमि की आवश्यकता होती है, इसलिए इसे आमतौर पर मिश्रित कृषि प्रणालियों में शामिल

नहीं किया जाता है। चारे की फसलें इस पद्धति का अनिवार्य हिस्सा हैं क्योंकि वे सीधे तौर पर पशुधन के भरण-पोषण से जुड़ी होती हैं।

45. (C) शस्यावर्तन और अंतःफसली कृषि का अपनाया जाना
मिश्रित कृषि में मृदा की उर्वरता को बनाए रखने के लिए वैज्ञानिक तरीकों का उपयोग किया जाता है। इसमें फसलों को बदल-बदल कर बोना (शस्यावर्तन) और एक साथ कई फसलें उगाना (अंतःफसली कृषि) शामिल है। ये प्रक्रियाएँ मिट्टी के पोषक तत्वों के संरक्षण में मदद करती हैं और रासायनिक खादों पर निर्भरता को कम करती हैं। यह पद्धति पर्यावरण की दृष्टि से अधिक टिकाऊ और आर्थिक रूप से लाभदायक मानी जाती है।

46. (D) क्योंकि ये क्षेत्र डेरी उत्पादों के मुख्य उपभोक्ता बाज़ार होते हैं
डेरी कृषि में दूध और उसके उत्पादों का उत्पादन किया जाता है जो जल्दी खराब होने वाले होते हैं। नगरीय और औद्योगिक केंद्र इन ताजे उत्पादों के लिए सबसे बड़े बाजार प्रदान करते हैं, इसलिए परिवहन लागत कम करने और शीघ्र आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए डेरी फार्म इनके समीप स्थापित किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त, इन क्षेत्रों में प्रशीतन और पास्तेरीकरण की सुविधाएँ भी आसानी से उपलब्ध होती हैं।

47. (A) सहारा मरुस्थल
वाणिज्य डेरी कृषि के तीन प्रमुख क्षेत्र उत्तरी पश्चिमी यूरोप, कनाडा, और न्यूज़ीलैंड के साथ दक्षिणी पूर्वी ऑस्ट्रेलिया और तस्मानिया हैं। सहारा मरुस्थल अपनी विषम जलवायु, जल की कमी और चरागाहों के अभाव के कारण वाणिज्य डेरी कृषि के लिए उपयुक्त नहीं है। वहाँ केवल चलवासी पशुचारण की सीमित संभावनाएँ होती हैं। डेरी कृषि मुख्य रूप से ठंडी और आर्द्र जलवायु वाले विकसित क्षेत्रों की विशेषता है।

48. (B) खट्टे फलों की आपूर्ति
भूमध्यसागरीय कृषि विश्व में खट्टे फलों, जैसे अंगूर, संतरा, नींबू और जैतून की आपूर्ति के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र की विशिष्ट जलवायु, जिसमें सर्दियाँ वर्षा वाली और गर्मियाँ शुष्क होती हैं, इन फलों के उत्पादन के लिए बहुत अनुकूल है। अंगूर की खेती यहाँ का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिससे उच्च गुणवत्ता वाली मदिरा बनाई जाती है। यह क्षेत्र वैश्विक बागवानी उत्पादों का प्रमुख केंद्र है।

49. (B) भूमध्यसागरीय कृषि
'अंगूर की कृषि' या विटीकल्चर भूमध्यसागरीय कृषि की एक प्रमुख विशिष्टता है। इस क्षेत्र की जलवायु अंगूर की विभिन्न किस्मों को उगाने के लिए विश्व में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। यहाँ उत्पादित अच्छे किस्म के अंगूरों से प्रसिद्ध मदिरा तैयार की जाती है, जबकि निम्न श्रेणी के अंगूरों को सुखाकर मुनक्का और किशमिश बनाई जाती है। यह गतिविधि इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था और सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न हिस्सा है।

50. (A) मुनक्का एवं किशमिश
भूमध्यसागरीय प्रदेशों में उत्पादित अंगूरों का उपयोग उनकी गुणवत्ता के आधार पर किया जाता है। सर्वोत्तम श्रेणी के अंगूरों का उपयोग विश्व प्रसिद्ध मदिरा के निर्माण में होता है। इसके विपरीत, जो अंगूर निम्न श्रेणी के होते हैं, उन्हें धूप में सुखाकर मुनक्का और किशमिश तैयार की जाती है। यह प्रक्रिया उत्पादों के मूल्यवर्धन में सहायक होती है और कृषकों को अतिरिक्त आय प्रदान करने के साथ खराब होने से बचाती है।

51. (C) भूमध्यसागरीय क्षेत्र
शीत ऋतु में जब उत्तरी यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका में भीषण ठंड के कारण फसलों का उत्पादन नहीं हो पाता, तब भूमध्यसागरीय क्षेत्र अपनी अनुकूल जलवायु के कारण ताजे फलों और सब्जियों की मांग को पूरा करता है। यहाँ की सर्दियों में होने वाली वर्षा और मध्यम तापमान इन उत्पादों के लिए वरदान साबित होते हैं। यह भौगोलिक लाभ इस क्षेत्र को एक महत्वपूर्ण वैश्विक निर्यात केंद्र बनाता है।

52. (D) गेहूँ
बाजार के लिए सब्जी खेती और उद्यान कृषि में केवल उन्हीं फसलों को उगाया जाता है जिनकी शहरी क्षेत्रों में उच्च मांग होती है और जिनसे अधिक लाभ प्राप्त होता है। इसमें ताजी सब्जियाँ, फल और सुगंधित फूल शामिल हैं। गेहूँ एक खाद्यान्न फसल है जिसे विस्तृत वाणिज्य कृषि के अंतर्गत विशाल क्षेत्रों में उगाया जाता है, न कि सघन और विशिष्ट बाज़ारीय उद्यान कृषि के एक हिस्से के रूप में।

53. (C) ट्यूलिप
नीदरलैंड विश्व स्तर पर पुष्प उत्पादन, विशेषकर ट्यूलिप के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की भूमि और जलवायु ट्यूलिप की विभिन्न किस्मों के लिए अत्यंत अनुकूल है और देश ने इस क्षेत्र में उच्च स्तरीय विशिष्टीकरण हासिल किया है। नीदरलैंड से ट्यूलिप के फूलों का निर्यात पूरे यूरोप और विश्व के अन्य भागों में किया जाता है। यह फूलों की खेती बाज़ारीय उद्यान कृषि का एक बहुत ही सफल आर्थिक उदाहरण है।

54. (B) ट्रक द्वारा एक रात में तय की गई दूरी के आधार पर
'ट्रक कृषि' का नामकरण एक विशेष परिवहन दूरी के आधार पर हुआ है। सब्जियाँ और फल जल्दी खराब होने वाले उत्पाद हैं, जिन्हें रातों-रात बाजार तक पहुँचाना आवश्यक होता है। ट्रक फार्म और बाजार के बीच की वह दूरी, जिसे एक ट्रक रात भर में तय कर सकता है, उसे एक 'ट्रक दूरी' माना जाता है। इसी भौगोलिक और कार्यात्मक संबंध के कारण इसे ट्रक कृषि कहा जाता है।

55. (D) पशुधन को बाड़े पर कारखानों में तैयार भोजन पर रखना
'कारखाना कृषि' पशुपालन का एक औद्योगिक रूप है जिसमें गायों और कुक्कुटों को बाड़ों के भीतर रखा जाता है। इन्हें चरागाहों पर चराने के बजाय कारखानों में वैज्ञानिक रूप से तैयार किया गया संतुलित भोजन खिलाया जाता है। इसमें पशुओं के स्वास्थ्य, प्रजनन और रोगों के नियंत्रण पर कड़ा

नियंत्रण रखा जाता है। यह पद्धति मुख्य रुप से पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका के औद्योगिक देशों में प्रचलित है।

56. (A) स्वेच्छा से समूह बनाकर अधिक लाभ प्राप्त करना
सहकारी कृषि का मूल सिद्धांत कृषकों द्वारा स्वेच्छा से एक समूह बनाना है ताकि वे सामूहिक रुप से बेहतर कृषि संसाधन प्राप्त कर सकें। इस पद्धति में कृषकों का अपनी भूमि पर निजी अधिकार बना रहता है, लेकिन वे खेती के कार्यों, जैसे बीज खरीदना और उपज बेचना, को एक समिति के माध्यम से करते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य बिचौलियों को हटाकर व्यक्तिगत कृषकों के लाभ को अधिकतम करना है।

57. (C) डेनमार्क
सहकारी कृषि आंदोलन विश्व में सबसे अधिक सफल डेनमार्क में रहा है। यहाँ यह आंदोलन इतना व्यापक है कि देश का लगभग प्रत्येक कृषक किसी न किसी सहकारी समिति का सदस्य है। डेनमार्क के अतिरिक्त नीदरलैंड, बेल्जियम, स्वीडन और इटली में भी यह प्रथा काफी सफल रही है। इस मॉडल ने छोटे कृषकों को संगठित होकर वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धी बनने और आर्थिक समृद्धि प्राप्त करने में मदद की है।

58. (A) साधनों पर सामाजिक स्वामित्व और सामूहिक श्रम
सामूहिक कृषि का मुख्य आधार उत्पादन के सभी साधनों, जैसे भूमि और पशुधन, पर समाज या राज्य का सामूहिक स्वामित्व होना है। इसमें सभी कृषक मिलकर श्रम करते हैं और उत्पादन को उनकी कार्यकुशलता और आवश्यकताओं के अनुसार वितरित किया जाता है। यह प्रणाली व्यक्तिगत स्वामित्व को समाप्त कर सामाजिक समानता और उत्पादन में वृद्धि के उद्देश्य से पूर्व सोवियत संघ जैसे समाजवादी देशों में लागू की गई थी।

59. (D) कोलखहोज़
पूर्व सोवियत संघ में शुरु की गई सामूहिक कृषि प्रणाली को 'कोलखहोज़' कहा जाता था। इसमें सभी किसान अपने संसाधनों को मिलाकर सामूहिक रुप से खेती करते थे। राज्य द्वारा वार्षिक उत्पादन के लक्ष्य निर्धारित किए जाते थे और अतिरिक्त उपज को किसान आपस में बाँट लेते थे। फेजेंडा ब्राजील के बागान हैं, मिल्पा मध्य अमेरिका की झूम कृषि है और लादांग दक्षिण-पूर्वी एशिया की स्थानांतरणशील कृषि को कहा जाता है।

60. (B) भौतिक और आर्थिक कारक
खनन कार्य की लाभप्रदता मुख्य रुप से दो कारकों पर निर्भर करती है। भौतिक कारकों में खनिज निक्षेपों का आकार, उनकी श्रेणी और उपस्थिति की गहराई शामिल है। आर्थिक कारकों में खनिज की बाजार मांग, उपलब्ध तकनीकी ज्ञान, पर्याप्त पूँजी निवेश और परिवहन के साधनों का विकास महत्वपूर्ण हैं। जब ये दोनों कारक अनुकूल होते हैं, तभी किसी क्षेत्र में खनिजों का निष्कर्षण आर्थिक रुप से व्यवहार्य और लाभदायक होता है।

61. (C) विद्यमान तकनीकी ज्ञान
खनन को प्रभावित करने वाले आर्थिक कारकों में मुख्य रुप से तकनीक, पूँजी, श्रम और परिवहन शामिल हैं। विद्यमान तकनीकी ज्ञान यह निर्धारित करता है कि किसी खनिज को कितनी कुशलता और कम लागत पर निकाला जा सकता है। इसके विपरीत, खनिज निक्षेपों का आकार, उनकी श्रेणी और उपस्थिति की अवस्था भौतिक कारक हैं जो प्रकृति द्वारा निर्धारित होते हैं। आधुनिक तकनीक ने दुर्गम स्थानों से भी खनिजों का निष्कर्षण संभव बना दिया है।

62. (D) धरातलीय (विवृत) खनन
धरातलीय या विवृत खनन को खनिजों के निष्कर्षण का सबसे सस्ता और सरल तरीका माना जाता है। इसमें खनिज धरातल के समीप ही स्थित होते हैं, जिससे गहरी खदानें बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। इस विधि में सुरक्षात्मक उपायों और अतिरिक्त उपकरणों पर खर्च बहुत कम होता है। साथ ही, इसमें उत्पादन की दर अन्य विधियों की तुलना में काफी अधिक और तीव्र होती है, जिससे यह आर्थिक रुप से अधिक लाभप्रद है।

63. (A) भूमिगत अथवा कूपकी खनन
जब खनिज अयस्क धरातल की बहुत अधिक गहराई में स्थित होते हैं, तब उन्हें निकालने के लिए भूमिगत या कूपकी खनन विधि अपनाई जाती है। इस विधि में गहरे लंबवत कूपक बनाए जाते हैं और खनिजों तक पहुँचने के लिए क्षैतिज गैलरियाँ खोदी जाती हैं। विवृत खनन केवल धरातल के ऊपरी भागों के लिए उपयुक्त है, जबकि पट्टी खनन सतही परतों को हटाकर खनिजों के निष्कर्षण की एक विशिष्ट प्रक्रिया है।

64. (B) गैस, आग व बाढ़ जैसी दुर्घटनाओं का भय होने के कारण
भूमिगत खनन को सबसे अधिक जोखिम भरा माना जाता है क्योंकि गहराई में जहरीली गैसों के रिसाव, अचानक आग लगने या बाढ़ आने की संभावना बनी रहती है। कई बार खदानों की छतें गिरने से गंभीर दुर्घटनाएं होती हैं। इन खतरों के कारण इस विधि में सुरक्षा उपकरणों और वायु संचार प्रणालियों पर भारी खर्च करना पड़ता है। यह विधि तकनीकी रुप से जटिल और मानव जीवन के लिए चुनौतीपूर्ण है।

65. (B) श्रमिक लागत अधिक आने के कारण
विकसित देश धीरे-धीरे खनन कार्य से पीछे हट रहे हैं क्योंकि वहाँ मानवीय श्रम की लागत बहुत अधिक हो गई है। इसके अतिरिक्त, इन देशों की अर्थव्यवस्थाएं अब सेवा और ज्ञान आधारित क्षेत्रों की ओर स्थानांतरित हो रही हैं। इसके विपरीत, विकासशील देश अपनी प्रचुर श्रम शक्ति और राष्ट्रीय आय बढ़ाने की आवश्यकता के कारण खनन को प्राथमिकता दे रहे हैं। यह वैश्विक अर्थव्यवस्था के बदलते स्वरुप का एक परिणाम है।

66. (A) पशुओं का आखेट
आदिम समाज के लोग अपनी बुनियादी आवश्यकताओं जैसे भोजन और वस्त्र के लिए पूरी तरह से प्रकृति पर निर्भर थे। पशुओं का आखेट और जंगली उत्पादों का संग्रह उनकी प्राथमिक जीवन-निर्वाह गतिविधियाँ थीं। विनिर्माण, वाणिज्यिक कृषि और सूचना प्रौद्योगिकी आधुनिक युग की आर्थिक क्रियाएँ हैं जो तकनीकी विकास के बाद अस्तित्व में आईं। आखेट मानव इतिहास की सबसे पुरानी और बुनियादी आर्थिक गतिविधियों में से एक मानी जाती है।

67. (C) आखेट एवं भोजन संग्रह प्राचीनतम ज्ञात आर्थिक क्रियाएँ हैं।
आखेट और भोजन संग्रह मानव सभ्यता की सबसे प्रारंभिक आर्थिक गतिविधियाँ हैं जो पूर्णतः प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित थीं। इसके विपरीत, प्राथमिक क्रियाएँ पर्यावरण पर गहराई से निर्भर होती हैं। खनन एक प्राथमिक क्रिया है, न कि द्वितीयक। वाणिज्य पशुधन पालन में पशुओं को बाड़े लगाकर व्यवस्थित तरीके से पाला जाता है, उन्हें चरागाहों पर पूरी तरह से स्वतंत्र नहीं छोड़ा जाता, जैसा कि चलवासी पशुचारण में होता है।

68. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि में प्रति इकाई उत्पादन अधिक होता है क्योंकि इसमें भूमि के प्रत्येक छोटे भाग का अधिकतम उपयोग किया जाता है। घनी जनसंख्या के कारण मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने के लिए पशुओं के गोबर और खाद का गहनता से प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार, भूमि का सघन उपयोग और पारंपरिक उर्वरकों का भरपूर प्रयोग इस कृषि में उच्च उत्पादकता सुनिश्चित करने का मुख्य कारण है।

69. (C) यह विश्व के अविकसित भागों में की जाती है।
मिश्रित कृषि के संबंध में यह कथन असत्य है कि यह अविकसित भागों में की जाती है। वास्तव में, मिश्रित कृषि विश्व के अत्यधिक विकसित और औद्योगिक क्षेत्रों, जैसे उत्तरी-पश्चिमी यूरोप, उत्तरी अमेरिका के पूर्वी भाग और यूरेशिया के कुछ हिस्सों में प्रचलित है। इस कृषि में मध्यम आकार के खेत, पशुपालन का महत्व और मृदा संरक्षण के लिए शस्यावर्तन जैसे वैज्ञानिक तरीकों का कुशलतापूर्वक उपयोग किया जाता है।

70. (B) P-3, Q-4, R-2, S-1
कृषि के विभिन्न प्रकार और उनके संबंधित शब्दावली को मिलाना उनकी भौगोलिक पहचान स्पष्ट करता है। स्थानांतरणशील कृषि को मध्य अमेरिका में मिल्पा कहा जाता है। वाणिज्य पशुधन पालन में पशुओं के विशाल फार्मों को रैंच कहा जाता है। सहकारी कृषि का सबसे सफल उदाहरण डेनमार्क में मिलता है। सामूहिक कृषि को पूर्व सोवियत संघ में कोलखहोज़ के नाम से जाना जाता था। यह मिलान वैश्विक कृषि व्यवस्था को दर्शाता है।

71. (A) केवल 1, 2, 3
भोजन संग्रह से प्राप्त उत्पादों के बहुमुखी उपयोग होते हैं। कुनैन मलेरिया की प्रसिद्ध दवा है जो सिनकोना वृक्ष की छाल से मिलती है। पत्तियों का उपयोग पेय और सौंदर्य प्रसाधन बनाने में होता है, जबकि तने से रबर और गोंद प्राप्त होता है। हालांकि, भोजन संग्रह केवल उच्च अक्षांशों तक सीमित नहीं है, यह निम्न अक्षांशों में भी होता है। साथ ही, इसका अभी तक पूर्णतः व्यापारीकरण नहीं हुआ है।

72. (A) 2, 1, 3
मानव आर्थिक गतिविधियों का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया रही है। सबसे पहले मनुष्य पूरी तरह आखेट और भोजन संग्रह पर निर्भर था। इसके बाद, उसने पशुओं के महत्व को समझा और पशुपालन व्यवसाय शुरु किया। कृषि के क्षेत्र में रोपण कृषि का विकास बहुत बाद में, विशेषकर औपनिवेशिक काल के दौरान हुआ। यह क्रम मानव की प्रकृति पर निर्भरता से लेकर उसके तकनीकी और व्यावसायिक विकास की यात्रा को दर्शाता है।

73. (C) विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि
यूरेशिया के स्टेपीज जैसे विशाल घास के मैदानों में की जाने वाली कृषि, जहाँ मशीनों का व्यापक प्रयोग होता है और मुख्य रूप से गेहूँ उगाया जाता है, विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि कहलाती है। यह कृषि कम जनसंख्या वाले क्षेत्रों में बड़े फार्मों पर की जाती है। इसमें मानवीय श्रम का न्यूनतम और तकनीकी साधनों का अधिकतम उपयोग होता है, जिसका मुख्य उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय बाजारों के लिए बड़े पैमाने पर उत्पादन करना है।

74. (A) कंप्यूटर प्रोग्रामिंग
'लाल कॉलर श्रमिक' उन लोगों को कहा जाता है जो प्राथमिक क्रियाओं में संलग्न होते हैं, जैसे लकड़ी काटना, खनन और मछली पकड़ना, क्योंकि ये कार्य घर से बाहर खुले वातावरण में किए जाते हैं। कंप्यूटर प्रोग्रामिंग एक उच्च स्तरीय सेवा है जो तृतीयक या चतुर्थक क्रियाकलापों के अंतर्गत आती है और इसे करने वाले लोग आमतौर पर कार्यालयों के भीतर कार्य करते हैं, जिन्हें सफेद या स्वर्ण कॉलर कहा जा सकता है।

75. (C) कथन I और II दोनों सही हैं।
डेरी कृषि में पशुओं की देखभाल, दुग्ध दोहन और साफ-सफाई के लिए वर्ष भर निरंतर श्रम की आवश्यकता होती है, इसमें फसलों की तरह कोई अवकाश काल नहीं होता। दूसरी ओर, भूमध्यसागरीय कृषि शीत ऋतु में ताजे फलों और सब्जियों का उत्पादन कर यूरोपीय और अमेरिकी बाजारों की मांग को पूरा करती है। ये दोनों तथ्य आधुनिक कृषि के विशिष्ट स्वरूप और उनकी बाजार आधारित कार्यप्रणाली को सटीक रूप से दर्शाते हैं।

76. (A) केवल 1 और 4
औपनिवेशिक काल में विभिन्न देशों ने अपनी पसंद की फसलें विकसित कीं। फ्रांसवासियों ने पश्चिमी अफ्रीका में कॉफी और कोकोआ के बाग लगाए। हॉलैंडवासियों (डचों) ने इंडोनेशिया में गन्ने की खेती पर नियंत्रण रखा। ब्रिटेनवासियों ने भारत में चाय के बाग लगाए थे, न कि मलयेशिया में मुख्य रूप से। स्पेन और अमेरिका ने फिलीपींस में नारियल और गन्ने के बागान लगाए थे, न कि मलयेशिया में रबर के बागान लगाए थे।

77. (C) आदिकालीन निर्वाहक कृषि
आदिकालीन निर्वाह कृषि को 'कर्तन एवं दहन' कृषि भी कहा जाता है क्योंकि इसमें किसान जंगल के एक छोटे टुकड़े को काटकर और जलाकर साफ करते हैं। जलने के बाद बची हुई राख मिट्टी की उर्वरता बढ़ाती है। कुछ वर्षों बाद जब मिट्टी की उर्वरता कम हो जाती है, तो किसान उस जमीन को छोड़कर किसी दूसरे स्थान पर चले जाते हैं। यह पद्धति मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के समुदायों में प्रचलित है।

78. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
'ट्रक कृषि' मुख्य रूप से सब्जियों की खेती से जुड़ी है जहाँ उत्पाद जल्दी खराब होने वाले होते हैं। इसका नाम इस रोचक तथ्य पर आधारित है कि ट्रक फार्म बाजार से इतनी दूरी पर होते हैं जिसे एक ट्रक रात भर में तय कर सके। यह समयबद्ध परिवहन सब्जियों की ताजगी बनाए रखने के लिए अनिवार्य है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही हैं और उनके बीच का संबंध तार्किक है।

79. (A) मिश्रित कृषि
एकल कृषि वह प्रणाली है जिसमें एक ही फसल के उत्पादन पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जैसे रोपण कृषि, डेरी कृषि और वाणिज्य अनाज कृषि। इसके विपरीत, मिश्रित कृषि में फसलों के उत्पादन और पशुपालन दोनों को समान महत्व दिया जाता है, जिससे यह एकल कृषि नहीं रह जाती। मिश्रित कृषि विविधीकृत होती है और इसमें आय के कई स्रोत एक साथ काम करते हैं, जो इसे अन्य से अलग बनाता है।

80. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
प्राथमिक क्रियाओं का उनके विशिष्ट स्वरूप के साथ मिलान मानव गतिविधियों की विविधता को दर्शाता है। पशुओं का आखेट शिकार की श्रेणी में आता है। पेड़ों से गोंद और राल एकत्रित करना भोजन संग्रह का आधुनिक व्यावसायिक रूप है। पशुओं के साथ चरागाहों की तलाश में घूमना चलवासी पशुचारण कहलाता है, जबकि खेतों पर फसलें उगाना कृषि की बुनियादी परिभाषा है। यह मिलान बुनियादी आर्थिक भूगोल को स्पष्ट करता है।

81. (B) चार
मानव की आर्थिक क्रियाओं को मुख्य रूप से चार वर्गों में विभाजित किया गया है: प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक और चतुर्थक। प्राथमिक क्रियाएँ सीधे प्रकृति से जुड़ी हैं, द्वितीयक क्रियाएँ विनिर्माण से, तृतीयक क्रियाएँ सेवाओं और विनिमय से, और चतुर्थक क्रियाएँ अनुसंधान तथा ज्ञान आधारित गतिविधियों से संबंधित हैं। कुछ विद्वान निर्णय लेने वाली उच्च सेवाओं को पंचम श्रेणी में भी रखते हैं, लेकिन मुख्य रूप से चार वर्ग ही सर्वमान्य हैं।

82. (A) केवल 1 और 3
चलवासी पशुचारण के मुख्य क्षेत्र भौगोलिक रूप से विशिष्ट हैं। पहला बड़ा क्षेत्र उत्तरी अफ्रीका से अरब प्रायद्वीप और मध्य चीन तक फैला है। दूसरा क्षेत्र दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिण-पश्चिमी अफ्रीका और मेडागास्कर द्वीप पर स्थित है। तीसरा क्षेत्र यूरेशिया का टुंड्रा प्रदेश है। अमेजन बेसिन घने वनों का क्षेत्र है और प्रेयरी प्रदेश विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि के लिए जाना जाता है, न कि चलवासी पशुचारण के लिए।

83. (C) खेती के लिए आधुनिक औजारों का प्रयोग
आदिकालीन निर्वाह कृषि एक पारंपरिक पद्धति है जिसमें आधुनिक मशीनों के बजाय लकड़ी के हल या खुदाई करने वाले डंडों जैसे सरल औजारों का प्रयोग होता है। इस कृषि में वनस्पति को जलाकर राख का उपयोग उर्वरक के रूप में किया जाता है और खेत छोटे होते हैं। मिट्टी की उर्वरता समाप्त होने पर कृषक नए क्षेत्रों की ओर चले जाते हैं। आधुनिक तकनीक का उपयोग इस पद्धति की विशेषता बिल्कुल नहीं है।

84. (D) कृषि हेतु नए क्षेत्रों की तलाश की आवृत्ति का बढ़ जाना
'झूम का चक्र' छोटा होने का अर्थ यह है कि किसान पहले की तुलना में अधिक जल्दी पुराने खेत को छोड़कर नए खेत की तलाश करने लगे हैं। ऐसा तब होता है जब जनसंख्या के दबाव के कारण भूमि को अपनी उर्वरता पुनः प्राप्त करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता। इससे मिट्टी का क्षरण बढ़ता है और कृषि का पारिस्थितिक संतुलन बिगड़ जाता है, जो स्थानांतरणशील कृषि के भविष्य के लिए चुनौतीपूर्ण है।

85. (C) उच्चावच, जलवायु और मृदा जैसे कारकों का जटिल प्रभाव
मानसून एशिया के कई हिस्सों में चावल या धान की खेती न हो पाने का मुख्य कारण केवल एक भौगोलिक कारक नहीं है। वहाँ की ऊबड़-खाबड़ जमीन (उच्चावच), कम वर्षा (जलवायु) और मिट्टी के प्रकार (मृदा) का संयुक्त प्रभाव फसलों के चयन को निर्धारित करता है। उदाहरण के लिए, शुष्क भागों में धान की जगह गेहूँ या बाजरा उगाया जाता है, क्योंकि वे इन संयुक्त परिस्थितियों में बेहतर उत्पादन देते हैं।

86. (B) 1, 2, 3, 5
रोपण कृषि एक लाभोन्मुख प्रणाली है जिसे यूरोपीय उपनिवेशों ने विकसित किया था। इसमें भारी पूँजी निवेश, वैज्ञानिक विधियों और कुशल प्रबंधन की आवश्यकता होती है। साथ ही, उत्पादों के निर्यात के लिए विकसित यातायात व्यवस्था अनिवार्य है। यह एक फसली कृषि है, बहु-फसली नहीं, क्योंकि इसमें किसी एक विशेष नकदी फसल जैसे रबर या चाय के उत्पादन पर ही पूरा ध्यान केंद्रित किया जाता है, अतः चौथा कथन गलत है।

87. (D) गेहूँ और ज्वार-बाजरा
भारत के सिंध-गंगा मैदान के पश्चिमी हिस्सों में, जहाँ वर्षा अपेक्षाकृत कम होती है, चावल के स्थान पर गेहूँ मुख्य फसल के रूप में उगाई जाती है। इसके साथ ही, शुष्क और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों में ज्वार-बाजरा जैसी फसलों की खेती की जाती है जो कम पानी में उग सकती हैं। यह चावल रहित गहन निर्वाह कृषि का एक उत्कृष्ट क्षेत्रीय उदाहरण है, जहाँ कृषि पद्धतियाँ स्थानीय जलवायु के साथ अनुकूलन करती हैं।

88. (A) डेरी उत्पादों की भंडारण अवधि में वृद्धि करना
डेरी कृषि में पास्तेरीकरण एक महत्वपूर्ण तकनीकी प्रक्रिया है। इसका मुख्य लाभ दूध और उससे बने उत्पादों को लंबे समय तक सुरक्षित रखना है, जिससे उनकी भंडारण क्षमता और शेल्फ-लाइफ बढ़ जाती है। इससे उत्पादकों को अपने माल को दूरस्थ बाजारों तक भेजने में आसानी होती है और उत्पाद खराब होने से होने वाला नुकसान कम हो जाता है। यह तकनीक डेरी उद्योग के व्यवसायीकरण और वैश्विक प्रसार में सहायक सिद्ध हुई है।

89. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
औपनिवेशिक इतिहास में विभिन्न देशों द्वारा बागान कृषि का विकास उनके आर्थिक हितों से प्रेरित था। फ्रांस ने पश्चिमी अफ्रीका में कोकोआ और कॉफी के बागान लगाए। ब्रिटेन ने भारत और श्रीलंका में चाय की खेती शुरू की। अमेरिका और स्पेन ने फिलीपींस में नारियल और गन्ने के उत्पादन को बढ़ावा दिया। डचों या हॉलैंडवासियों ने इंडोनेशिया के द्वीपों पर गन्ने के बागान विकसित किए। यह मिलान कृषि भूगोल के ऐतिहासिक संदर्भ को स्पष्ट करता है।

90. (A) कृषक का अधिकार और सरकारी नीतियाँ
कृषि के सांगठनिक प्रकारों का वर्गीकरण मुख्य रूप से इस बात पर निर्भर करता है कि भूमि पर किसान का कानूनी अधिकार क्या है और सरकार की कृषि नीतियाँ कैसी हैं। उदाहरण के लिए, सामूहिक कृषि में संसाधनों पर राज्य का स्वामित्व होता है, जबकि सहकारी कृषि में किसान अपनी भूमि का निजी स्वामित्व बनाए रखते हुए मिलकर कार्य करते हैं। ये सांगठनिक ढांचे किसी देश की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था से गहराई से प्रभावित होते हैं।

91. (A) 2, 3, 1
खनिजों के निष्कर्षण का इतिहास सरल से जटिल तकनीकों की ओर बढ़ने का क्रम है। सबसे पहले लौह युग में मनुष्य ने साधारण औजारों से सतह पर उपलब्ध खनिजों का उपयोग शुरू किया। इसके बाद धरातलीय खनन विकसित हुआ जो सरल और सस्ता था। अंततः विज्ञान और इंजीनियरिंग के विकास के साथ कूपकी या भूमिगत खनन जैसी जटिल और गहरी विधियाँ अस्तित्व में आईं। यह क्रम तकनीकी विकास की यात्रा को रेखांकित करता है।

92. (B) क्योंकि इसमें अतिरिक्त उपकरणों पर खर्च न्यूनतम होता है
धरातलीय खनन सबसे सस्ता इसलिए है क्योंकि इसमें खनिजों को निकालने के लिए गहरे कुओं या जटिल वायु संचार प्रणालियों की आवश्यकता नहीं होती। चूँकि खनिज सतह के निकट होते हैं, इसलिए सुरक्षात्मक उपायों और भारी मशीनों पर होने वाला निवेश भी भूमिगत खनन की तुलना में बहुत कम होता है। साथ ही, इस विधि में खनिजों का उत्पादन बहुत जल्दी और बड़ी मात्रा में करना संभव होता है।

93. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
मिश्रित कृषि की सफलता के लिए उच्च स्तरीय तकनीकी ज्ञान, वैज्ञानिक मशीनों और रसायनों के उपयोग की आवश्यकता होती है, जिसमें भारी पूँजी निवेश शामिल है। चूँकि ये संसाधन और निवेश क्षमता मुख्यतः विकसित देशों में अधिक है, इसलिए यह कृषि विश्व के अत्यधिक विकसित भागों में केंद्रित है। अभिकथन और कारण दोनों सही हैं और कारण स्पष्ट रूप से बताता है कि विकसित देशों में इसकी प्रधानता क्यों है।

94. (A) केवल 1, 2 और 3
वाणिज्य पशुधन पालन एक आधुनिक और व्यवस्थित पद्धति है जहाँ केवल एक ही प्रकार के पशु पाले जाते हैं और चरागाहों का वैज्ञानिक प्रबंधन होता है। चलवासी पशुचारण एक प्राचीन व्यवसाय है जिसमें पशुपालक चरागाहों की तलाश में लगातार विस्थापित होते रहते हैं। चलवासी पशुचारण में अक्सर विभिन्न प्रकार के पशु एक साथ पाले जाते हैं, न कि केवल एक ही प्रकार के, इसलिए चौथा कथन गलत है।

95. (A) वस्त्र निर्माण
द्वितीयक आर्थिक क्रियाओं में कच्चे माल को विनिर्माण प्रक्रिया द्वारा मूल्यवान उत्पादों में बदला जाता है। वस्त्र निर्माण कपास जैसे कच्चे माल को उपयोगी कपड़ों में बदलने की प्रक्रिया है, इसलिए यह द्वितीयक क्रिया है। पशुचारण, भोजन संग्रह और खनन सीधे तौर पर प्रकृति से जुड़े होने के कारण प्राथमिक क्रियाओं के उदाहरण हैं। यह वर्गीकरण उत्पादन प्रक्रिया में तकनीक और मूल्यवर्धन के स्तर पर आधारित होता है।

96. (B) पत्थर और लकड़ी
प्राचीन काल में मानव तकनीक और धातुओं के ज्ञान से वंचित था। आखेट के लिए वे अपने आसपास उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों, जैसे पत्थर के नुकीले टुकड़ों और मजबूत लकड़ी की टहनियों से बने साधारण औजारों का उपयोग करते थे। धातुओं जैसे ताँबा, काँसा और लोहे का उपयोग बहुत बाद के युगों में शुरू हुआ। यह प्रारंभिक अवस्था मानव के पर्यावरण के साथ सीधे और सरल संघर्ष तथा निर्भरता को दर्शाती है।

97. (B) उच्च अक्षांश - दक्षिणी चिली
भोजन संग्रह का भौगोलिक वितरण मुख्य रूप से दो अक्षांशीय क्षेत्रों में है। उच्च अक्षांश क्षेत्रों में उत्तरी कनाडा, उत्तरी यूरेशिया और दक्षिणी चिली शामिल हैं। अमेजन बेसिन निम्न अक्षांश का क्षेत्र है। यह युग्म सही है क्योंकि दक्षिणी चिली के ठंडे और दुर्गम भागों में आज भी कुछ समुदाय पारंपरिक रूप से भोजन संग्रह पर निर्भर हैं। यह गतिविधि मुख्य रूप से विषम जलवायु वाले क्षेत्रों में ही बची हुई है।

98. (A) छाल
वृक्षों की छाल एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है जिसका उपयोग कई उद्योगों में होता है। सिनकोना वृक्ष की छाल से कुनैन प्राप्त होती है जो मलेरिया के इलाज में प्रभावी है। इसके अतिरिक्त, कुछ विशिष्ट वृक्षों की छाल से टैनिन निकाला जाता है जिसका उपयोग चमड़े को साफ करने और तैयार करने (टैनिंग) में किया जाता है। यह वन उत्पादों के औषधीय और औद्योगिक महत्व का एक बेहतरीन उदाहरण है।

99. (B) केवल कथन II सही है।
आधुनिक समय में राजनीतिक सीमाओं और नई बस्तियों के बसने के कारण चलवासी पशुचारकों की संख्या में गिरावट आ रही है, न कि वृद्धि, अतः पहला कथन गलत है। वाणिज्य पशुधन पालन में पशुओं का प्रबंधन बहुत वैज्ञानिक होता है और चरागाह की वहन क्षमता के अनुसार ही पशुओं की संख्या सीमित रखी जाती है ताकि भूमि का स्वास्थ्य बना रहे। यह स्थिरता और लाभ का संतुलन सुनिश्चित करता है।

100. (D) मसाई
भारत के हिमालयी क्षेत्रों में गुज्जर, बकरवाल, गद्दी और भूटिया जैसे समूह मौसमी चरागाहों की तलाश में ऋतुप्रवास करते हैं। इसके विपरीत, मसाई जनजाति पूर्वी अफ्रीका के केन्या और तंजानिया के पठारी क्षेत्रों में रहने वाले पशुचारक हैं। यह विभिन्न महाद्वीपों के जनजातीय समूहों के भौगोलिक वितरण को समझने में मदद करता है। हिमालयी समूह सर्दियों में मैदानों और गर्मियों में पहाड़ों की ओर प्रवास के लिए जाने जाते हैं।

101. (C) विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि
विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि कम जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्रों में विशाल फार्मों पर मशीनों के माध्यम से की जाती है। यहाँ प्रति व्यक्ति उपलब्ध भूमि बहुत अधिक होती है, जिससे मशीनीकरण के कारण प्रत्येक व्यक्ति का कुल उत्पादन तो बहुत अधिक होता है, परंतु पारंपरिक कृषि की तुलना में प्रति एकड़ भूमि से प्राप्त होने वाला औसत उत्पादन अपेक्षाकृत कम रह जाता है। यह बड़े पैमाने की खेती की विशेषता है।

102. (B) 1, 3, 5
डेरी कृषि दुधारू पशुओं के पालन की सबसे उन्नत और वैज्ञानिक पद्धति है। इसमें पशुओं के स्वास्थ्य, उचित प्रजनन और चारे पर बहुत अधिक ध्यान दिया जाता है, जिससे यह पूँजी और श्रम दोनों के मामले में एक गहन गतिविधि बन जाती है। इसमें वर्ष भर निरंतर देखभाल की आवश्यकता होती है। यह मुख्य रूप से नगरीय केंद्रों के समीप की जाती है ताकि दूध की तुरंत आपूर्ति हो सके, अतः दूसरा और चौथा कथन गलत हैं।

103. (D) बाज़ार की निकटता और परिवहन की सुगमता के कारण
बाज़ारीय सब्जी और उद्यान कृषि नगरीय केंद्रों के पास इसलिए फलती-फूलती है क्योंकि शहर इन ताजे उत्पादों के लिए तैयार बाजार प्रदान करते हैं। सब्जियाँ, फल और फूल जल्दी खराब होने वाली वस्तुएं हैं, जिन्हें बहुत कम समय में उपभोक्ताओं तक पहुँचाना होता है। शहरों के पास स्थित होने से परिवहन की लागत कम होती है और उत्पादों की ताजगी बनी रहती है, जिससे कृषकों को उचित मूल्य मिल पाता है।

104. (A) पश्चिमी यूरोप
सहकारी कृषि आंदोलन की शुरुआत लगभग एक शताब्दी पहले पश्चिमी यूरोप में हुई थी। डेनमार्क, नीदरलैंड, बेल्जियम और स्वीडन जैसे देशों ने इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभाई। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य छोटे कृषकों को संगठित करना था ताकि वे सामूहिक रूप से बेहतर आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकें। यह मॉडल पूरे विश्व के लिए एक सफल उदाहरण बना और इसने विशेषकर डेनमार्क की कृषि अर्थव्यवस्था को पूरी तरह बदल दिया।

105. (C) लिफ्ट, बेधक और माल ढोने की गाड़ियाँ
कूपकी या भूमिगत खनन में गहराई तक जाने के लिए उन्नत तकनीकी उपकरणों की आवश्यकता होती है। इसमें श्रमिकों को नीचे ले जाने और ऊपर लाने के लिए लिफ्ट, कठोर चट्टानों को काटने के लिए शक्तिशाली बेधक (ड्रिल) और निकाले गए खनिजों को सतह तक पहुँचाने के लिए विशेष माल ढोने वाली गाड़ियों का उपयोग किया जाता है। ये उपकरण इस जोखिम भरी और जटिल खनन प्रक्रिया को संभव और कुशल बनाते हैं।

106. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
स्थानांतरी कृषि में भूमि को जलाकर खेती की जाती है जिससे मिट्टी के पोषक तत्व जल्दी समाप्त हो जाते हैं। जब जनसंख्या बढ़ती है, तो भूमि को खाली छोड़ने का समय कम हो जाता है, जिससे 'झूम का चक्र' छोटा हो जाता है और पैदावार गिर जाती है। इन्हीं पर्यावरणीय और आर्थिक कारणों से इस कृषि का भविष्य बहुत सुरक्षित नहीं माना जाता है। अभिकथन और कारण दोनों सत्य और तर्कसंगत हैं।

107. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
कृषि शब्दावली और उनके कार्यों का मिलान उनकी प्रकृति को स्पष्ट करता है। ट्रक कृषि का संबंध मुख्य रूप से सब्जियों के उत्पादन और उनके परिवहन से है। कारखाना कृषि में पशुओं को बाड़ों में रखकर कृत्रिम आहार दिया जाता है। कोलखहोज़ पूर्व सोवियत संघ की विशिष्ट सामूहिक कृषि प्रणाली थी। फेजेंडा ब्राजील के उन विशाल बागानों को कहते हैं जहाँ कॉफी का उत्पादन बड़े पैमाने पर किया जाता है।

108. (B) अनुसंधान एवं विकास
आर्थिक क्रियाओं के चतुर्थक वर्ग में ज्ञान आधारित गतिविधियाँ शामिल होती हैं जो सूचना के संग्रहण, विश्लेषण और प्रसार से जुड़ी हैं। अनुसंधान और विकास इस श्रेणी का प्रमुख हिस्सा है। मछली पकड़ना, लकड़ी काटना और गन्ना उगाना सीधे प्राकृतिक संसाधनों से जुड़े होने के कारण प्राथमिक क्रियाओं के अंतर्गत आते हैं। चतुर्थक क्रियाएँ किसी देश के तकनीकी और बौद्धिक विकास के स्तर को दर्शाती हैं, जो आधुनिक अर्थव्यवस्था का आधार हैं।

109. (C) कार्य का भौगोलिक स्थल (बाहर बनाम कार्यालय)
लाल कॉलर और सफेद कॉलर श्रमिकों के बीच का बुनियादी अंतर उनके कार्य करने के स्थान से है। लाल कॉलर श्रमिक प्राथमिक गतिविधियों, जैसे कृषि और खनन, में लगे होते हैं जो घर से बाहर और खुले वातावरण में की जाती हैं। इसके विपरीत, सफेद कॉलर श्रमिक कार्यालयों के भीतर मानसिक और प्रबंधकीय कार्य करते हैं। यह वर्गीकरण कार्य की प्रकृति और उसके लिए आवश्यक कार्यस्थल के भौतिक परिवेश पर आधारित है।

110. (A) केवल 1 और 3
भोजन संग्रह एक जीवन-निर्वाह गतिविधि है जिसमें लोग अपने पर्यावरण पर पूरी तरह निर्भर होते हैं। इसमें केवल उतना ही संग्रह किया जाता है जितना उपभोग के लिए आवश्यक हो, इसलिए कोई अधिशेष नहीं बचता। इस कार्य में तकनीकी ज्ञान बहुत कम होता है और इनके उत्पादों को कृत्रिम उत्पादों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है, जिससे इनका वैश्विक बाजार में प्रभाव कम हो गया है।

111. (A) राजनीतिक सीमाएँ और नई बस्तियों की योजनाएँ
चलवासी पशुचारण के घटने का मुख्य कारण देशों द्वारा अपनी सीमाओं का सख्ती से निर्धारण करना है, जिससे पारंपरिक चरागाहों के बीच मुक्त आवागमन बाधित हो गया है। साथ ही, विभिन्न देशों की सरकारें इन खानाबदोश समुदायों को स्थायी रूप से बसाने के लिए नई नीतियाँ बना रही हैं। इससे उनके पारंपरिक जीवन जीने का ढंग और पशुपालन के लिए आवश्यक विशाल मुक्त क्षेत्र निरंतर कम होते जा रहे हैं।

112. (B) वाणिज्य पशुधन पालन
वाणिज्य पशुधन पालन एक आधुनिक पद्धति है जिसमें विशाल स्थायी फार्मों पर केवल एक ही प्रकार के पशु, जैसे गाय या भेड़, को पाला जाता है। इसमें भारी पूँजी निवेश, वैज्ञानिक देखरेख और बाजार के लिए उत्पादन पर ध्यान दिया जाता है। चलवासी पशुचारण इसके विपरीत एक अस्थाई और निर्वाह आधारित पद्धति है। गहन और आदिकालीन निर्वाह मुख्य रूप से फसलों की खेती से संबंधित पद्धतियाँ हैं।

113. (B) मानव श्रम का अधिक महत्त्व होना
चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि उन घनी आबादी वाले क्षेत्रों में की जाती है जहाँ जमीन कम और लोग अधिक होते हैं। यहाँ मशीनों का उपयोग सीमित होता है और खेत के अधिकांश कार्य, जैसे रोपाई और कटाई, हाथों से या पशुओं की मदद से किए जाते हैं। इसमें मानव श्रम का योगदान बहुत अधिक होता है, जिससे प्रति इकाई क्षेत्र में उच्च उत्पादकता तो प्राप्त होती है, लेकिन व्यक्तिगत श्रम बहुत लगता है।

114. (B) 2, 3, 1
मानवीय आर्थिक गतिविधियों का ऐतिहासिक क्रम उनकी तकनीकी जटिलता को दर्शाता है। सबसे पहले मनुष्य ने पत्थरों के औजारों से आखेट करना शुरु किया। इसके बाद, औपनिवेशिक काल के दौरान यूरोपीय शक्तियों ने विभिन्न महाद्वीपों में रोपण कृषि की शुरुआत की। सबसे अंत में औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप खनिजों की भारी मांग बढ़ी और आधुनिक मशीनीकृत खनन का तेजी से विकास हुआ। यह क्रम सभ्यता के क्रमिक विकास का परिचायक है।

115. (C) यह उष्णकटिबंधीय आर्द्र प्रदेशों की कृषि है।
भूमध्यसागरीय कृषि के संबंध में यह कथन गलत है क्योंकि यह उष्णकटिबंधीय नहीं, बल्कि समशीतोष्ण जलवायु वाले विशिष्ट क्षेत्रों में होती है जहाँ सर्दियों में वर्षा और गर्मियाँ शुष्क रहती हैं। यह कृषि अंगूर, संतरा और जैतून जैसे खट्टे फलों के लिए प्रसिद्ध है और यूरोपीय तथा अमेरिकी बाजारों के लिए महत्वपूर्ण है। उष्णकटिबंधीय आर्द्र प्रदेशों में मुख्य रूप से रोपण कृषि और चावल की खेती अधिक प्रचलित है।

116. (C) 1, 2, 3, 5
सहकारी और सामूहिक कृषि आधुनिक सांगठनिक रूप हैं। डेनमार्क में सहकारी आंदोलन अत्यंत सफल रहा जहाँ किसान अपनी भूमि पर निजी अधिकार रखते हुए मिलकर कार्य करते हैं। सामूहिक कृषि या कोलखहोज़ में साधनों पर समाज का स्वामित्व होता है, लेकिन कृषक अपनी छोटी जरूरतों के लिए भूमि का एक बहुत छोटा भाग अपने पास रख सकते थे, अतः चौथा कथन तकनीकी रूप से गलत है।

117. (C) खनिज निक्षेपों का आकार एवं उनकी श्रेणी
खनन को प्रभावित करने वाले भौतिक कारकों का संबंध खनिज की प्राकृतिक उपलब्धता से है। इसमें खनिज भंडार का आकार, उसकी गुणवत्ता या श्रेणी और वह कितनी गहराई पर स्थित है, यह शामिल होता है। इसके विपरीत, बाजार की मांग, तकनीकी ज्ञान और परिवहन व्यवस्था आर्थिक कारकों के अंतर्गत आते हैं। भौतिक कारक यह तय करते हैं कि खनन तकनीकी रूप से संभव है या नहीं, जबकि आर्थिक कारक उसकी लाभप्रदता निर्धारित करते हैं।

118. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
डेरी कृषि में पशुओं के लिए आधुनिक आवास, दुग्ध मशीनें और चारे के भंडारण हेतु विशाल बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है, जिसमें भारी पूँजी लगती है। साथ ही, पशुओं की प्रतिदिन की देखभाल और दूध निकालने के लिए वर्ष भर बिना किसी अवकाश के निरंतर मानव श्रम की आवश्यकता होती है। अतः यह स्पष्ट है कि उच्च लागत और निरंतर श्रम की मांग इसे एक गहन आर्थिक क्रिया बनाती है।

119. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
कृषि और उससे जुड़े शब्दों का सही मिलान उनकी पहचान को आसान बनाता है। कर्तन एवं दहन स्थानांतरणशील कृषि की मुख्य विधि है। ऋतुप्रवास चलवासी पशुचारकों की एक अनिवार्य गतिविधि है जो मौसम के अनुसार चरागाह बदलते हैं। विटीकल्चर अंगूरों की वैज्ञानिक खेती को कहा जाता है, जो भूमध्यसागरीय कृषि की विशेषता है। ट्रक फार्मिंग का सीधा संबंध सब्जियों के उत्पादन और उनके त्वरित बाजार परिवहन से है।

120. (A) आखेट → पशुचारण → कृषि
मानव सभ्यता के प्रारंभिक चरण में भोजन के लिए पूरी तरह आखेट और संग्रह पर निर्भरता थी। जैसे-जैसे मानव ने पशुओं की उपयोगिता समझी, उसने उन्हें पालना शुरु किया, जिससे पशुचारण का विकास हुआ। अंततः, एक स्थान पर बसने की आवश्यकता ने खेती की खोज की ओर प्रेरित किया, जिससे कृषि का उदय हुआ। यह क्रम मानव के घुमंतू जीवन से स्थायी सामाजिक जीवन की ओर संक्रमण को खूबसूरती से दर्शाता है।

121. (A) कथन I और II दोनों सही हैं, और कथन II, कथन I का सही कारण है।
भूमध्यसागरीय क्षेत्र की विशिष्ट जलवायु अंगूरों की बेहतरीन और विविध किस्मों के उत्पादन के लिए विश्व में प्रसिद्ध है। चूँकि यहाँ कच्चा माल यानी अंगूर उच्च गुणवत्ता के होते हैं, इसलिए इस क्षेत्र में बनने वाली मदिरा भी विश्व स्तर पर श्रेष्ठ मानी जाती है। अंगूर की अच्छी पैदावार ही मदिरा उद्योग के विकास का मुख्य आधार है, इसलिए कारण अभिकथन की सही व्याख्या करता है।

122. (A) वेल्डस - ऑस्ट्रेलिया
यह जोड़ा गलत सुमेलित है क्योंकि वेल्डस घास के मैदान दक्षिण अफ्रीका के उच्च पठारी क्षेत्रों में पाए जाते हैं, न कि ऑस्ट्रेलिया में। ऑस्ट्रेलिया के समशीतोष्ण घास के मैदानों को डाउंस कहा जाता है। प्रेयरीज उत्तरी अमेरिका में, पंपास अर्जेंटीना में और स्टेपीज यूरेशिया में स्थित हैं। ये सभी क्षेत्र अनाज उत्पादन और पशुपालन के लिए वैश्विक स्तर पर अत्यंत महत्वपूर्ण हैं और अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं।

123. (D) वाणिज्य पशुधन पालन
वाणिज्य पशुधन पालन एक ऐसी प्रणाली है जो पश्चिमी देशों, जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया, में विकसित हुई। इसमें पशुओं को विशाल और स्थायी फार्मों पर रखा जाता है। चरागाहों का प्रबंधन वैज्ञानिक तरीके से किया जाता है ताकि पशुओं को पर्याप्त पोषण मिल सके। यह पद्धति चलवासी पशुचारण से पूरी तरह भिन्न है क्योंकि इसमें गतिशीलता के बजाय स्थायित्व और आर्थिक लाभ के लिए व्यावसायिक दृष्टिकोण अपनाया जाता है।

124. (A) केवल 1, 2 और 3
मिश्रित कृषि में पशुओं के लिए चारे की फसलें उगाना एक अनिवार्य हिस्सा है। डेरी कृषि में पशुओं की दैनिक देखभाल के कारण कोई विश्राम काल नहीं होता। रोपण कृषि में बड़ी संख्या में सस्ते श्रमिकों की आवश्यकता होती है जो आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि में प्रति एकड़ उत्पादन कम होता है, प्रति व्यक्ति अधिक, अतः चौथा कथन गलत है।

125. (C) रेंडियर
अलास्का और उत्तरी कनाडा के टुंड्रा प्रदेशों में एस्किमो और अन्य जनजातीय समूहों द्वारा पाला जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण पशु रेंडियर है। यह पशु अत्यधिक ठंडी जलवायु और बर्फबारी में जीवित रहने के लिए अनुकूलित है। रेंडियर का उपयोग मुख्य रूप से स्लेज खींचने, परिवहन, मांस और खाल प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह इन दुर्गम उत्तरी प्रदेशों की अर्थव्यवस्था और जीवन का मुख्य आधार माना जाता है।

126. (D) विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि
विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि की मुख्य पहचान इसके विशाल जोत वाले खेत और उच्च स्तर का यंत्रीकरण है। यह कृषि मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ जनसंख्या का घनत्व बहुत कम है, जैसे उत्तरी अमेरिका और यूरेशिया के घास के मैदान। यहाँ खेतों का आकार इतना बड़ा होता है कि मानवीय श्रम से खेती करना संभव नहीं होता, इसलिए मशीनों का उपयोग अनिवार्य हो जाता है।

127. (A) फार्मों का निजी स्वामित्व बनाम सामूहिक स्वामित्व
सहकारी और सामूहिक कृषि के बीच सबसे बड़ा अंतर भूमि के स्वामित्व का है। सहकारी कृषि में प्रत्येक किसान अपनी भूमि और संसाधनों का निजी मालिक बना रहता है और केवल अपनी मर्जी से समूह में शामिल होता है। इसके विपरीत, सामूहिक कृषि में भूमि और पशुधन पर समाज या राज्य का पूर्ण स्वामित्व होता है और किसानों को व्यक्तिगत लाभ के बजाय सामूहिक उत्पादन में योगदान देना होता है।

128. (B) राष्ट्रीय आय के प्रमुख स्रोत के रूप में
विकासशील देश अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूती देने और विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिए खनन कार्य पर बहुत अधिक जोर दे रहे हैं। इन देशों के पास अक्सर विशाल खनिज भंडार होते हैं और प्रचुर मात्रा में सस्ता श्रम उपलब्ध होता है। खनन से प्राप्त आय का उपयोग वे अपने औद्योगिक विकास और अन्य सामाजिक कल्याण योजनाओं के वित्तपोषण के लिए करते हैं, जिससे यह उनकी राष्ट्रीय आय का एक स्तंभ बन जाता है।

129. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
उष्णकटिबंधीय वनों के समुदायों द्वारा एकत्रित प्राकृतिक उत्पाद आज के वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर पा रहे हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि आधुनिक उद्योगों ने रासायनिक प्रक्रियाओं द्वारा समान गुणवत्ता वाले कृत्रिम उत्पाद बहुत कम कीमत पर तैयार कर लिए हैं। चूँकि संग्राहकों के उत्पादों की लागत अधिक और उपलब्धता अनिश्चित होती है, इसलिए सस्ते कृत्रिम विकल्पों ने उनकी बाजार हिस्सेदारी को लगभग समाप्त कर दिया है।

130. (A) P-2, Q-3, R-1, S-4
प्राथमिक क्रियाओं का उनके भौगोलिक क्षेत्रों के साथ मिलान वैश्विक आर्थिक गतिविधियों को स्पष्ट करता है। अमेजन बेसिन में आखेट और भोजन संग्रह प्रमुख है। सहारा मरुस्थल चलवासी पशुचारण का गढ़ है। उत्तरी अमेरिका के प्रेयरीज वाणिज्यिक अनाज कृषि के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। मलेशिया अपनी रबर की रोपण कृषि के लिए जाना जाता है। यह वर्गीकरण जलवायु और संसाधनों की उपलब्धता के अनुसार मानवीय गतिविधियों के अनुकूलन को दर्शाता है।

131. (A) 1, 2, 3
पशुपालन की शुरुआत वास्तव में आखेट के जोखिमों को कम करने के लिए हुई थी। चलवासी पशुचारण एक प्राचीन जीवन-निर्वाह पद्धति है, जबकि वाणिज्य पशुधन पालन आधुनिक और पश्चिमी शैली का व्यवसाय है। ऋतुप्रवास चलवासी पशुचारण की विशेषता है, न कि वाणिज्यिक पालन की, और यॉक तथा लामा क्रमशः तिब्बत और एंडीज के पर्वतीय पशु हैं, न कि अफ्रीका के। अतः केवल पहले तीन कथन पूर्णतः सत्य हैं।

132. (D) मृदा की उर्वरता को बनाए रखना
शस्यावर्तन का मुख्य उद्देश्य खेत में बारी-बारी से अलग-अलग प्रकार की फसलें उगाना है ताकि मिट्टी के विशिष्ट पोषक तत्वों का एक साथ ह्रास न हो। उदाहरण के लिए, अनाज की फसल के बाद दलहन की फसल उगाने से मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा प्राकृतिक रूप से बनी रहती है। यह प्रक्रिया रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता को कम करती है और भूमि के स्वास्थ्य को दीर्घकाल तक सुरक्षित रखने में मदद करती है।

133. (C) चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि
चावल प्रधान गहन निर्वाह कृषि उन घनी आबादी वाले क्षेत्रों की विशेषता है जहाँ भूमि का आकार छोटा होता है। ऐसी परिस्थितियों में, श्रमिक बाहर से बुलाने के बजाय कृषक परिवार के सभी सदस्य सामूहिक रूप से खेतों में कार्य करते हैं। यह पारिवारिक श्रम कृषि उत्पादन की लागत को कम करता है और भूमि के छोटे से छोटे टुकड़े का गहन उपयोग सुनिश्चित करता है। यह पद्धति मुख्य रूप से मानसून एशिया में प्रचलित है।

134. (B) कनाडा
कनाडा विश्व के उन प्रमुख क्षेत्रों में शामिल है जहाँ वाणिज्य डेरी कृषि का व्यापक विकास हुआ है। यहाँ की ठंडी और अनुकूल जलवायु पशुओं के स्वास्थ्य के लिए अच्छी है और विशाल चरागाह उपलब्ध हैं। साथ ही, कनाडा के पास डेरी उत्पादों के प्रसंस्करण के लिए आधुनिक तकनीक और बड़े नगरीय बाजार भी हैं। अन्य विकल्प जैसे मिस्र या ब्राजील में डेरी कृषि का वैसा व्यावसायिक स्वरूप नहीं है जैसा कनाडा में मिलता है।

135. (D) कृत्रिम ताप प्रदान करने के लिए
ठंडे प्रदेशों में उद्यान कृषि के दौरान पौधों को विकास के लिए आवश्यक गर्माहट की जरूरत होती है। हरित गृह या ग्रीनहाउस एक ऐसी संरचना है जो सूर्य की रोशनी को अंदर आने देती है लेकिन गर्मी को बाहर जाने से रोकती है, जिससे पौधों के लिए एक कृत्रिम अनुकूल वातावरण तैयार होता है। यह तकनीक बेमौसमी सब्जियाँ और फल उगाने में सहायक होती है और उत्पादन की गुणवत्ता को भी नियंत्रित करती है।

136. (A) उत्पादन वृद्धि और कृषि दशा में सुधार हेतु
सोवियत संघ में कोलखहोज़ या सामूहिक कृषि की शुरुआत इसलिए की गई थी ताकि छोटे और बिखरे हुए खेतों को मिलाकर एक बड़ी इकाई बनाई जा सके। इससे आधुनिक मशीनों का उपयोग करना संभव हुआ और कुल उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने का लक्ष्य रखा गया। यह समाजवादी विचारधारा पर आधारित एक प्रयास था जिसका उद्देश्य कृषि को एक संगठित और सरकारी नियंत्रित उद्योग बनाना था।

137. (C) सुरक्षा, आवागमन और ताजी हवा के लिए
भूमिगत खदानों में गहराई के साथ ऑक्सीजन की कमी और जहरीली गैसों का जमाव होने लगता है। ऐसे में एक कुशल वायु संचार प्रणाली श्रमिकों को सांस लेने के लिए ताजी हवा प्रदान करने के साथ-साथ खतरनाक गैसों को बाहर निकालने में मदद करती है। यह न केवल श्रमिकों की सुरक्षा के लिए अनिवार्य है, बल्कि खदान के भीतर तापमान को नियंत्रित करने और दुर्घटनाओं के जोखिम को कम करने के लिए भी आवश्यक है।

138. (A) केवल 1, 2 और 3
डेरी कृषि बाजार की निकटता के कारण शहरों के पास होती है, और भूमध्यसागरीय कृषि खट्टे फलों के लिए प्रसिद्ध है। नीदरलैंड वास्तव में ट्यूलिप के उत्पादन में विश्व में प्रथम है। ट्रक कृषि का नाम प्रयुक्त होने वाले ट्रक के आकार पर नहीं, बल्कि बाजार और फार्म के बीच की उस दूरी पर आधारित है जिसे एक ट्रक रात भर में तय करता है, अतः चौथा कथन गलत है।

139. (D) रोपण कृषि
रोपण कृषि की एक प्रमुख विशेषता इसका एक फसली होना है। इसमें किसी एक विशेष नकदी फसल, जैसे चाय, कॉफी, रबर या गन्ने के उत्पादन पर ही सारा ध्यान और संसाधन केंद्रित किए जाते हैं। इससे उस विशिष्ट फसल के उत्पादन में विशेषज्ञता हासिल होती है और बड़े पैमाने पर निर्यात के लिए गुणवत्तापूर्ण उत्पाद प्राप्त होते हैं। इसके विपरीत, मिश्रित कृषि में कई फसलें और पशुपालन एक साथ किए जाते हैं।

140. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि में खेतों का आकार बहुत विशाल होता है और मशीनीकरण का स्तर उच्चतम होता है। चूँकि कम जनसंख्या वाले क्षेत्रों में यह कृषि की जाती है, इसलिए मशीनों की मदद से थोड़े से लोग ही बहुत बड़े क्षेत्रफल पर खेती कर लेते हैं। इसी कारण से प्रति व्यक्ति उत्पादन बहुत अधिक हो जाता है। अभिकथन और कारण दोनों सही हैं और मशीनीकरण ही उच्च प्रति व्यक्ति उत्पादकता का मुख्य आधार है।

141. (C) ताम्र युग
मानव सभ्यता के इतिहास में ताँबा वह पहली धातु थी जिसका मनुष्य ने सबसे पहले उपयोग करना सीखा। पत्थर के बाद धातु के औजार बनाने की दिशा में यह एक क्रांतिकारी कदम था, जिसे ताम्र युग के नाम से जाना जाता है। इसके बाद ताँबे और टिन के मिश्रण से काँसा बनाया गया और बहुत बाद में लोहे का व्यापक प्रयोग शुरू हुआ। ताम्र युग मानव के तकनीकी विकास की एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

142. (D) प्राथमिक क्रियाएँ
प्राथमिक क्रियाएँ वे गतिविधियाँ हैं जो सीधे तौर पर पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से जुड़ी हैं। ये क्रियाएँ जैसे कृषि, मछली पकड़ना, खनन और वनों से लकड़ी काटना पूरी तरह से पर्यावरण की स्थिति, जलवायु और मृदा पर निर्भर करती हैं। द्वितीयक, तृतीयक और चतुर्थक क्रियाएँ विनिर्माण, सेवाओं और ज्ञान पर आधारित होती हैं और उन पर प्राकृतिक वातावरण का सीधा प्रभाव प्राथमिक क्रियाओं की तुलना में बहुत कम होता है।

143. (A) केवल कथन I सही है।
धरातलीय खनन खनिजों के निष्कर्षण का सबसे सस्ता और सुरक्षित तरीका है क्योंकि खनिज सतह के पास होते हैं। इसके विपरीत, भूमिगत खनन एक अत्यंत जोखिम भरी प्रक्रिया है जिसमें गैसों के रिसाव और खदानों के धंसने का खतरा सदैव बना रहता है, इसलिए दूसरा कथन गलत है। धरातलीय खनन में सुरक्षा और मशीनों पर कम खर्च होने के कारण यह आर्थिक रूप से अधिक व्यवहार्य होता है।

144. (B) खेत जोतकर गेहूँ उगाना
खेत जोतकर अनाज उगाना कृषि की एक गतिविधि है, न कि भोजन संग्रह की। भोजन संग्रह में मनुष्य प्रकृति से सीधे तौर पर भोजन और अन्य उपयोगी सामग्री एकत्रित करता है, जैसे जंगली कंद-मूल, शहद या औषधीय छाल। इसमें भूमि को तैयार करने या बीज बोने जैसी कोई क्रिया शामिल नहीं होती। यह अंतर स्पष्ट करता है कि भोजन संग्रह पूर्णतः प्रकृति प्रदत्त उपहारों पर निर्भर है, जबकि कृषि में मानव प्रबंधन शामिल है।

145. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों की उनकी कृषि पद्धतियों के साथ मिलान उनकी आर्थिक पहचान बताता है। उत्तरी पश्चिमी यूरोप मिश्रित और डेरी कृषि के लिए प्रसिद्ध है। अर्जेंटीना के पंपाज विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि का केंद्र हैं। मलेशिया में रबर के विशाल रोपण बागान पाए जाते हैं। मध्य अमेरिका में स्थानांतरणशील कृषि को मिल्पा कहा जाता है। यह मिलान वैश्विक स्तर पर कृषि की क्षेत्रीय विविधताओं और उनके आर्थिक महत्व को दर्शाता है।

146. (A) खनन
औद्योगिक क्रांति का सबसे गहरा और व्यापक प्रभाव खनन कार्य के विकास पर पड़ा। उद्योगों को चलाने के लिए कोयले और मशीनें बनाने के लिए लोहे की भारी मांग पैदा हुई, जिससे खनिजों के बड़े पैमाने पर निष्कर्षण की आवश्यकता महसूस की गई। इसके परिणामस्वरुप खनन की तकनीक में अभूतपूर्व प्रगति हुई और यह एक संगठित व्यावसायिक प्राथमिक क्रिया बन गई। अन्य क्रियाएँ जैसे आखेट या भोजन संग्रह औद्योगिक क्रांति से बहुत कम प्रभावित हुईं।

147. (A) 2, 3, 1
पूँजी निवेश के स्तर पर तुलना करने पर रोपण कृषि सबसे ऊपर आती है क्योंकि इसमें वैज्ञानिक प्रबंधन और बड़े बुनियादी ढांचे की जरूरत होती है। विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि दूसरे स्थान पर है जहाँ भारी मशीनों पर काफी खर्च होता है। आदिकालीन निर्वाह कृषि में पूँजी निवेश न्यूनतम होता है क्योंकि इसमें साधारण औजारों और घर के श्रम का ही उपयोग किया जाता है। यह क्रम कृषि के व्यावसायिक और पारंपरिक रूपों को दर्शाता है।

148. (A) 1, 2, 3, 4
आर्थिक क्रियाओं के चारों वर्गों का कार्यक्षेत्र अलग-अलग है। प्राथमिक क्रियाएँ पर्यावरण पर आधारित हैं, द्वितीयक क्रियाएँ मूल्यवर्धन करती हैं, तृतीयक क्रियाएँ सेवाओं से जुड़ी हैं और चतुर्थक क्रियाएँ ज्ञान आधारित हैं। खनन एक प्राथमिक क्रिया है, न कि तृतीयक, क्योंकि इसमें सीधे तौर पर प्राकृतिक संसाधन निकाले जाते हैं। अतः पाँचवाँ कथन गलत है। यह वर्गीकरण आर्थिक गतिविधियों के विकास और उनके पारस्परिक संबंधों को स्पष्ट रूप से समझाता है।

149. (C) खनन कार्य
अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के कई विकासशील देश अपनी अर्थव्यवस्था को चलाने के लिए खनिजों के निर्यात पर बहुत अधिक निर्भर हैं। उनकी कुल राष्ट्रीय आय का एक बड़ा हिस्सा, कभी-कभी 50% तक, ताँबा, हीरा या पेट्रोलियम जैसे खनिजों के खनन और निर्यात से प्राप्त होता है। इन देशों के पास तकनीकी संसाधनों की कमी के बावजूद प्रचुर मात्रा में खनिज संपदा होती है, जो उनके आर्थिक विकास का प्राथमिक स्रोत बनी हुई है।

150. (B) मौसमी प्रवास बनाम स्थायी चरागाह एवं फार्म
चलवासी पशुचारण और वाणिज्य पशुधन पालन में मुख्य अंतर उनके संचालन की पद्धति में है। चलवासी पशुचारक चरागाहों की खोज में मौसम के अनुसार लंबी दूरियां तय करते हैं और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहते हैं। इसके विपरीत, वाणिज्य पशुधन पालन में पशुओं को स्थायी रूप से विशाल फार्मों में रखा जाता है। यहाँ चरागाहों का वैज्ञानिक प्रबंधन होता है और पशुओं की नस्ल सुधार तथा स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

151. (B) पानी और चरागाह की खोज में निरंतर गतिशीलता
चलवासी पशुचारण एक प्राचीन जीवन-निर्वाह पद्धति है जहाँ पशुपालक अपने पशुओं के साथ चारे और जल की उपलब्धता के अनुसार एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास करते हैं। यह निरंतर गतिशीलता उनके अस्तित्व के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह प्रक्रिया उन्हें विषम जलवायु परिस्थितियों में जीवित रहने में मदद करती है और पशुओं के लिए पोषण सुनिश्चित करती है।

152. (A) पशुओं में नई बीमारियों का प्रसार
आधुनिक समय में चलवासी पशुचारकों को राजनीतिक सीमाओं के निर्धारण और सरकारों की स्थायी बस्तियों को बढ़ावा देने वाली नीतियों के कारण प्रवास में बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। जलवायु परिवर्तन और चरागाहों का क्षरण भी उनके लिए बड़ी चुनौतियाँ हैं। दिए गए स्रोत में पशुओं में होने वाली नई बीमारियों के प्रसार का उल्लेख नहीं किया गया है।

153. (C) सहजीवी और संतुलनकारी
चलवासी पशुचारक समुदायों का अपने प्राकृतिक पर्यावरण के साथ एक गहरा और सहजीवी संबंध होता है। वे उपलब्ध संसाधनों का बहुत ही कुशलतापूर्वक और सीमित मात्रा में उपयोग करते हैं। उनकी जीवनशैली पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में सहायक होती है। वे प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं और पर्यावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करते हैं।

154. (D) चरागाह संसाधनों का उपयोग पूरे समुदाय द्वारा सामूहिक रूप से किया जाता है।
पशुचारक समुदायों में भूमि पर किसी एक व्यक्ति का निजी स्वामित्व नहीं होता है। इसके बजाय, चरागाहों और जल संसाधनों पर पूरे समुदाय का नियंत्रण होता है। सभी पशुचारक परिवार अपनी पशु संख्या के अनुसार सामूहिक रूप से इन प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करते हैं। यह व्यवस्था संसाधनों के न्यायसंगत वितरण और सामुदायिक एकजुटता को बढ़ावा देने में मदद करती है।

155. (C) बाजार में बेचने के लिए नकदी फसलें
चलवासी पशुचारण मुख्य रूप से एक जीवन-निर्वाह गतिविधि है, जिसमें पशुपालक अपनी बुनियादी जरूरतों के लिए पूरी तरह पशुओं पर निर्भर रहते हैं। पशु उन्हें भोजन के रूप में दूध और मांस, वस्त्रों के लिए ऊन और चमड़ा तथा दुर्गम क्षेत्रों में परिवहन की सुविधा प्रदान करते हैं। यह प्रणाली फसलों के व्यावसायिक उत्पादन या बाजार-उन्मुख नकदी फसलों के लिए नहीं है।

156. (B) यूरोपीय औपनिवेशिक विस्तार
रोपण कृषि का उदय और विकास मुख्य रूप से यूरोपीय शक्तियों के औपनिवेशिक काल के दौरान हुआ था। उन्होंने उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में अपने उपनिवेशों का उपयोग करके विशाल बागानों की स्थापना की। इसका मुख्य उद्देश्य यूरोपीय बाजारों की माँग को पूरा करना था। इस कृषि पद्धति ने वैश्विक व्यापार संबंधों और उत्पादन के तरीकों को पूरी तरह से बदल दिया था।

157. (D) स्थानीय उपभोग के लिए विविध फसलों का उत्पादन
रोपण कृषि एक पूर्णतः वाणिज्यिक प्रणाली है जो बड़े पैमाने पर निर्यात के लिए विशिष्ट फसलों के उत्पादन पर केंद्रित होती है। इसमें विशाल क्षेत्र, भारी पूँजी निवेश और वैज्ञानिक प्रबंधन जैसी विशेषताएँ पाई जाती हैं। यह प्रणाली स्थानीय खपत के लिए कई प्रकार की फसलें उगाने के बजाय केवल एक ही प्रकार की फसल के विशेषज्ञतापूर्ण उत्पादन पर आधारित होती है।

158. (A) एक सुविकसित परिवहन नेटवर्क
रोपण कृषि का मुख्य उद्देश्य उत्पादों का निर्यात करना होता है, इसलिए बागानों का प्रसंस्करण इकाइयों और बंदरगाहों से जुड़ा होना अनिवार्य है। एक सुव्यवस्थित परिवहन नेटवर्क के बिना उत्पादित माल को अंतर्राष्ट्रीय बाजारों तक समय पर पहुँचाना संभव नहीं होता। कुशल परिवहन व्यवस्था इस पूरी वाणिज्यिक प्रणाली की रीढ़ की हड्डी के समान है जो इसे लाभदायक बनाती है।

159. (C) यह अक्सर सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को जन्म देती थी।
रोपण कृषि व्यवस्था में श्रम की आवश्यकता को पूरा करने के लिए अक्सर बाहरी क्षेत्रों से सस्ते श्रमिकों को लाया जाता था। बड़े एस्टेट मालिकों और श्रमिकों के बीच आय और सुविधाओं का बहुत बड़ा अंतर होता था। इस कारण औपनिवेशिक क्षेत्रों में गहरी सामाजिक दूरियाँ और आर्थिक विषमताएँ उत्पन्न हुईं। यह ढाँचा आज भी कई देशों के सामाजिक परिवेश को प्रभावित करता है।

160. (A) एक विशाल क्षेत्र में मुख्य रूप से एक ही प्रकार की फसल के उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करना।
एकल-फसल विशेषज्ञता या मोनोकल्चर का अर्थ है कि एक बड़े कृषि क्षेत्र में केवल एक ही व्यावसायिक फसल उगाई जाती है। रोपण कृषि में जैसे कि चाय, कॉफी या रबर के बागान लगाए जाते हैं, जहाँ पूरा ध्यान उस विशिष्ट फसल की गुणवत्ता और मात्रा बढ़ाने पर होता है। यह विधि बड़े पैमाने पर उत्पादन और बाजार की जरूरतों को पूरा करती है।

161. (D) गर्म, शुष्क ग्रीष्मकाल और हल्की, आर्द्र शीतऋतु
भूमध्यसागरीय जलवायु दुनिया की सबसे अनोखी जलवायु प्रणालियों में से एक है। यहाँ की विशेषता यह है कि गर्मियों का मौसम काफी गर्म और सूखा रहता है, जबकि सर्दियों के दौरान हल्की ठंड के साथ पर्याप्त वर्षा होती है। यह विशिष्ट मौसमी चक्र खट्टे फलों और विशेष रूप से अंगूरों की खेती के लिए सबसे अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करता है।

162. (B) यह एक प्रमुख विशेषता है, जिससे विश्व का अधिकांश वाइन उत्पादन होता है।
भूमध्यसागरीय कृषि में अंगूर की खेती, जिसे विटीकल्चर कहा जाता है, अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र में उत्पादित उच्च श्रेणी के अंगूरों का उपयोग विश्व प्रसिद्ध मदिरा बनाने में किया जाता है। यहाँ की जलवायु अंगूरों में शर्करा और स्वाद का सही संतुलन बनाने में मदद करती है। इसके कारण यह क्षेत्र अंतर्राष्ट्रीय वाइन उद्योग में एक प्रमुख स्थान रखता है।

163. (C) यह उन्हें ताजा फलों और सब्जियों की आपूर्ति करता है।
शीत ऋतु में जब उत्तरी गोलार्द्ध के औद्योगिक देशों में अत्यधिक ठंड के कारण कृषि कार्य बाधित हो जाते हैं, तब भूमध्यसागरीय क्षेत्र सक्रिय रहता है। यहाँ की हल्की सर्दियों के कारण ताजे फल और सब्जियां प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती हैं। इन ताजा उत्पादों को ठंडे देशों के बाजारों में निर्यात किया जाता है, जिससे उनकी पोषण संबंधी मांगें पूरी होती हैं।

164. (D) अमेज़ॅन बेसिन
भूमध्यसागरीय कृषि केवल उन्हीं क्षेत्रों में संभव है जहाँ विशिष्ट जलवायु परिस्थितियाँ होती हैं। इनमें कैलिफोर्निया, मध्य चिली, दक्षिण अफ्रीका का केप टाउन और ऑस्ट्रेलिया के कुछ हिस्से शामिल हैं। अमेज़ॅन बेसिन एक उष्णकटिबंधीय वर्षावन क्षेत्र है जहाँ वर्ष भर भारी वर्षा और उच्च तापमान रहता है, जो कि भूमध्यसागरीय कृषि के लिए बिल्कुल भी उपयुक्त नहीं है।

165. (A) एक अत्यधिक विशिष्ट और वाणिज्यिक गतिविधि
भूमध्यसागरीय कृषि केवल जीवन-निर्वाह के लिए नहीं, बल्कि वैश्विक बाजार के लिए की जाती है। इसमें उच्च स्तर का विशेषज्ञता, अधिक पूँजी का निवेश और बाजार की माँगों के अनुसार फसलों का चयन किया जाता है। खट्टे फल, जैतून और अंगूर जैसे महंगे उत्पादों पर ध्यान केंद्रित होने के कारण यह एक अत्यंत लाभदायक और आधुनिक वाणिज्यिक कृषि पद्धति है।

166. (B) विशाल खेत और अत्यधिक यंत्रीकरण
विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि मध्य अक्षांशों के घास के मैदानों में की जाती है जहाँ भूमि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती है। यहाँ खेतों का आकार बहुत बड़ा होता है और जनसंख्या का घनत्व काफी कम पाया जाता है। खेती की पूरी प्रक्रिया, बुवाई से कटाई तक, उन्नत मशीनों और ट्रैक्टरों द्वारा की जाती है। यह पूरी प्रणाली व्यावसायिक लाभ पर आधारित है।

167. (B) खेती के कार्यों में मशीनों के व्यापक उपयोग के कारण
इस कृषि प्रणाली में कंबाइन हार्वेस्टर जैसी बड़ी मशीनों का उपयोग किया जाता है, जिससे कम संख्या में श्रमिक भी बहुत बड़े क्षेत्रों को संभाल लेते हैं। हालांकि यहाँ प्रति हेक्टेयर उत्पादन सीमित हो सकता है, लेकिन प्रति व्यक्ति के हिसाब से उत्पादन की मात्रा बहुत अधिक हो जाती है। यंत्रीकरण के कारण ही श्रमिक कम लागत में भारी मात्रा में अनाज उगा पाते हैं।

168. (A) कुशल परिवहन नेटवर्क जैसे रेलवे का आगमन
विस्तृत अनाज कृषि आंतरिक शुष्क क्षेत्रों में की जाती है जो समुद्री तटों से दूर होते हैं। रेलवे के विकास ने इन दूरदराज के क्षेत्रों को दुनिया के बड़े बंदरगाहों और बाजारों से जोड़ने का काम किया। परिवहन की इस सुविधा के कारण ही किसानों के लिए अनाज का निर्यात करना संभव और आर्थिक रूप से फायदेमंद हो पाया, जिससे इस कृषि का विस्तार हुआ।

169. (C) उत्तरी अमेरिका
उत्तरी अमेरिका के मध्यवर्ती भाग में स्थित समशीतोष्ण घास के मैदानों को 'प्रेयरीज़' के नाम से जाना जाता है। ये क्षेत्र विस्तृत वाणिज्य अनाज कृषि के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। यहाँ की उपजाऊ मिट्टी और समतल धरातल गेहूँ के बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए अत्यंत उपयुक्त हैं। यूरेशिया के स्टेपीज़ और अर्जेंटीना के पंपास भी इसी प्रकार के घास के मैदानों के उदाहरण हैं।

170. (D) कम वर्षा के कारण फसल की विफलता
विस्तृत अनाज कृषि मुख्य रूप से अर्ध-शुष्क आंतरिक क्षेत्रों में की जाती है जहाँ सिंचाई की सुविधाएँ अक्सर सीमित होती हैं। वर्षा की अनिश्चितता और सूखा यहाँ के किसानों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। यदि मानसून या मौसमी वर्षा कम होती है, तो विशाल क्षेत्रों में लगी फसलें बर्बाद हो सकती हैं। यह जोखिम इस प्रकार की खेती को आर्थिक रूप से असुरक्षित बनाता है।

171. (C) अयस्क की श्रेणी या गुणवत्ता
खनन कार्य की सफलता निक्षेप की भौतिक विशेषताओं पर निर्भर करती है। अयस्क की श्रेणी या गुणवत्ता का अर्थ है कि उसमें शुद्ध खनिज की मात्रा कितनी है। उच्च श्रेणी के अयस्क से निष्कर्षण करना अधिक लाभदायक होता है क्योंकि इसमें कचरा कम और शुद्ध धातु अधिक निकलती है। इसके अलावा निक्षेप का आकार और उसकी गहराई भी खनन की व्यवहार्यता को तय करते हैं।

172. (B) क्योंकि यह सस्ता और अपेक्षाकृत सुरक्षित है।
जब खनिज जमीन की सतह के पास होते हैं, तो उन्हें विवृत खदानों या धरातलीय खनन द्वारा निकाला जाता है। इस विधि में बड़ी मशीनों का उपयोग करना आसान होता है और खदान के अंदर जाने का जोखिम नहीं होता। भूमिगत खनन की तुलना में इसमें तकनीकी जटिलता कम होती है और उत्पादन लागत भी काफी कम आती है, जिससे यह अधिक आकर्षक होता है।

173. (D) खनिज की बाजार में माँग
किसी खनिज का खनन तभी लाभदायक होता है जब बाजार में उसकी माँग अधिक हो और उसकी अच्छी कीमत मिले। यदि माँग कम होती है, तो उत्पादन लागत निकालना मुश्किल हो जाता है। अन्य आर्थिक कारकों में उपलब्ध तकनीक का स्तर और परिवहन की लागत भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। माँग में उतार-चढ़ाव सीधे तौर पर खनन गतिविधियों के विस्तार या संकुचन को प्रभावित करता है।

174. (A) खदान का धंसना या जहरीली गैस का रिसाव
भूमिगत खनन में श्रमिकों को जमीन के बहुत अंदर जाकर काम करना पड़ता है। यहाँ अचानक गैस का रिसाव होने, खदान की छत धंसने या अचानक पानी भर जाने जैसी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। ये खतरे इस विधि को अत्यंत जोखिम भरा बनाते हैं। इसके लिए उन्नत सुरक्षा उपकरणों और निरंतर निगरानी की आवश्यकता होती है ताकि किसी बड़ी दुर्घटना से बचा जा सके।

175. (C) धरातलीय खनन
धरातलीय खनन को अक्सर विवृत-खदान खनन (ओपन-पिट माइनिंग) के नाम से भी जाना जाता है। इस प्रक्रिया में ऊपरी मिट्टी और चट्टानों को हटाकर सीधे खनिजों तक पहुँचा जाता है। यह विधि उन खनिजों के लिए अपनाई जाती है जो धरातल के ठीक नीचे स्थित होते हैं। यह बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए सबसे सुलभ और आम तौर पर उपयोग की जाने वाली विधि है।

अध्याय 05

द्वितीयक क्रियाएँ

1. द्वितीयक क्रियाओं का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) प्राकृतिक संसाधनों का सीधा उपभोग करना
(B) प्राकृतिक संसाधनों का मूल्य बढ़ाना
(C) सेवाओं का वितरण और विनिमय करना
(D) सूचना और ज्ञान का सृजन करना

2. निम्नलिखित में से कौन सी एक विनिर्माण की सामान्य विशेषता नहीं है?
(A) उत्पादन केवल स्थानीय बाजार के लिए
(B) शक्ति का उपयोग
(C) एक ही प्रकार की वस्तुओं का विशाल उत्पादन
(D) कारखानों में विशिष्ट श्रमिक

3. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभ अभिकथन (A): लौह-अयस्क से इस्पात बनाने के बाद उसका मूल्य बढ़ जाता है।
कारण (R): द्वितीयक गतिविधियाँ प्रकृति में पाए जाने वाले कच्चे माल का रुप बदलकर उसे अधिक मूल्यवान बना देती हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

4. 'विनिर्माण' का शाब्दिक अर्थ क्या है?
(A) मशीन से बनाना
(B) बाजार में बेचना
(C) कच्चे माल का संग्रह करना
(D) हाथ से बनाना

5. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (आर्थिक क्रिया)
P. कपास की खेती
Q. कपास से वस्त्र बनाना
R. वस्त्रों का परिवहन
S. वस्त्र डिजाइनिंग
List II: (क्रिया का प्रकार)
1. तृतीयक
2. चतुर्थक
3. प्राथमिक
4. द्वितीयक
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

6. 'यंत्रीकरण' से क्या तात्पर्य है?
(A) हस्तशिल्प विधियों द्वारा कार्यों को संपन्न करना
(B) कार्य संपादन हेतु मशीनों का अनुप्रयोग करना
(C) उत्पादन प्रणालियों में मानवीय चिंतन का समावेश करना
(D) तकनीकी कार्यों हेतु मात्र कंप्यूटर प्रणालियों का प्रयोग

7. आधुनिक निर्माण की एक प्रमुख विशेषता क्या है?
(A) लघु संगठन एवं सीमित पूंजी निवेश की उपयोगिता
(B) अल्प प्रयास द्वारा उच्च उत्पादन लागत वाली विधि
(C) प्रादेशिक उपभोग हेतु स्थानीय बाजार पर निर्भरता
(D) जटिल प्रौद्योगिकी तंत्र एवं उच्च विशिष्टीकरण

8. आधुनिक बड़े पैमाने पर होने वाले विनिर्माण की विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह एक जटिल प्रौद्योगिकी यंत्र है।
2. इसमें अत्यधिक विशिष्टीकरण एवं श्रम विभाजन होता है।
3. यह कम प्रयास एवं अल्प लागत से अधिक माल का उत्पादन करता है।
4. इसके लिए कम पूँजी और छोटे संगठन की आवश्यकता होती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

9. किसी उद्योग की स्थापना में सबसे प्रमुख कारक कौन सा माना जाता है?
(A) दक्ष एवं अर्द्धकुशल श्रमिकों की सुलभ उपलब्धता
(B) वित्तीय सहायता की प्राप्ति
(C) पर्याप्त बाज़ार
(D) ऊर्जा एवं शक्ति के स्रोतों की भौगोलिक निकटता

10. 'बाजार' से क्या तात्पर्य है?

53. लौह अंश वाले धात्विक खनिजों का उपयोग करने वाला उद्योग कौन सा है?
(A) एल्यूमिनियम उद्योग
(B) ताँबा उद्योग
(C) लौह-इस्पात उद्योग
(D) जवाहरात उद्योग

54. अधात्विक खनिजों का प्रयोग किस उद्योग में होता है?
(A) मोटर गाड़ी निर्माण
(B) सीमेंट उद्योग
(C) वायुयान निर्माण
(D) पेट्रो-रसायन उद्योग

55. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): खाद्य प्रसंस्करण उद्योग कृषि उत्पादन क्षेत्रों के समीप ही संसाधित किए जाते हैं।
कारण (R): प्रसंस्कृत किए जाने वाले कृषि उत्पाद शीघ्र नष्ट होने वाली प्रकृति के होते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

56. लाख उद्योग के लिए कच्चा माल (लाख) कहाँ से प्राप्त होता है?
(A) वनों से
(B) कृषि से
(C) खदानों से
(D) पशुओं से

57. निम्नलिखित उद्योगों को उनके प्रमुख कच्चे माल की प्रकृति के अनुसार विकास के क्रम में लगाइए (प्राचीनतम से नवीनतम):
1. लौह-इस्पात उद्योग
2. पाषाण उपकरण बनाना
3. पेट्रो-रसायन उद्योग
4. सूती वस्त्र उद्योग
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 4, 2, 1, 3

58. हाथीदाँत उद्योग किस प्रकार का उद्योग है?
(A) पशु आधारित
(B) कृषि आधारित
(C) खनिज आधारित
(D) वन आधारित

59. "गैर-आधारभूत उद्योग" किसे कहा जाता है?
(A) आधारभूत उद्योगों को
(B) कुटीर उद्योगों को
(C) सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों को
(D) उपभोक्ता वस्तु उद्योगों को

60. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (स्वामित्व)
P. सार्वजनिक क्षेत्र
Q. निजी क्षेत्र
R. संयुक्त क्षेत्र
S. पूँजीवादी देश
List II: (विशेषता)
1. व्यक्तिगत निवेशकों का स्वामित्व
2. निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र का संयुक्त प्रयास
3. सरकार का स्वामित्व
4. निजी क्षेत्र की प्रमुखता
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

61. उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग के भूदृश्य में क्या देखने को मिलता है?
(A) अत्यधिक धुएँ वाली चिमनियाँ एवं विशाल कारखाने
(B) खुले क्षेत्रों में कच्चे माल एवं खनिजों के बड़े ढेर
(C) स्वच्छ, नियोजित एवं बिखरे हुए आधुनिक कार्यालय परिसर
(D) औद्योगिक श्रमिकों के लिए बनी सघन एवं गंदी बस्तियाँ

62. 'कैड' (CAD) का संबंध किससे है?
(A) औद्योगिक श्रमिकों के वैधानिक संगठन
(B) कच्चे माल के परिवहन हेतु प्रयुक्त मार्ग
(C) उत्पादन इकाइयों का व्यापक वित्तीय प्रबंधन
(D) कंप्यूटर आधारित आरेखण एवं डिज़ाइन

63. निम्नलिखित में से कौन से कथन असत्य हैं?
1. विनिर्माण का शाब्दिक अर्थ 'मशीन से बनाना' है।
2. यंत्रीकरण का अर्थ किसी कार्य को पूरा करने के लिए मशीनों का प्रयोग करना है।
3. स्वच्छंद उद्योग प्रदूषण फैलाने वाले होते हैं।
4. लौह-इस्पात एक उपभोक्ता वस्तु उद्योग है।
सही उत्तर चुनें:
(A) केवल 1, 3 और 4
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1 और 2
(D) उपरोक्त सभी

64. शिल्प तरीके से उत्पादन की क्या विशेषता है?
(A) वृहत पैमाने पर होने वाला मानकीकृत वस्तु निर्माण
(B) आदेशानुसार निर्मित सीमित मात्रा में उत्पादन
(C) उत्पादन प्रणालियों में प्रयुक्त अत्यंत निम्न लागत

20. विनिर्माण की सबसे छोटी इकाई कौन सी है?
(A) बड़े पैमाने का उद्योग
(B) छोटे पैमाने का उद्योग
(C) आधारभूत उद्योग
(D) कुटीर उद्योग

21. कुटीर उद्योग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह निर्माण की सबसे छोटी इकाई है।
2. इसमें स्थानीय कच्चे माल का उपयोग होता है।
3. पूँजी एवं परिवहन इन उद्योगों को अधिक प्रभावित नहीं करते हैं।
4. इसमें उत्पादित वस्तुओं का व्यापारिक महत्त्व बहुत अधिक होता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

22. छोटे पैमाने के उद्योग कुटीर उद्योग से किस प्रकार भिन्न हैं?
(A) स्थानीय कच्चे माल के उपयोग के आधार पर
(B) उत्पादन की तकनीक और निर्माण स्थल के आधार पर
(C) केवल पारिवारिक सदस्यों द्वारा काम करने के आधार पर
(D) उत्पादों के प्रकार के आधार पर

23. बड़े पैमाने के उद्योग के लिए क्या आवश्यक नहीं है?
(A) विशाल बाजार
(B) अधिक पूँजी
(C) विकसित प्रौद्योगिकी
(D) स्थानीय कच्चा माल

24. बड़े पैमाने के उद्योगों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसके लिए विशाल बाज़ार और विभिन्न प्रकार का कच्चा माल चाहिए।
2. इसमें कुशल श्रमिक और विकसित प्रौद्योगिकी की आवश्यकता होती है।
3. इसमें अधिक उत्पादन एवं अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है।
4. इसका विकास केवल पिछले 20 वर्षों में हुआ है।
5. यह उद्योग केवल ग्रेट ब्रिटेन और यूरोप में ही लगाए गए हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) उपरोक्त सभी

25. परंपरागत वृहत औद्योगिक प्रदेश अधिकतर किन देशों में पाए जाते हैं?
(A) कम विकसित देशों में
(B) सभी देशों में समान रुप से
(C) अधिक विकसित देशों में
(D) केवल द्वीपीय देशों में

26. कृषि आधारित उद्योग का उदाहरण कौन सा नहीं है?
(A) सीमेंट उद्योग
(B) शक्कर उद्योग
(C) वस्त्र उद्योग
(D) पेय पदार्थ उद्योग

27. 'कृषि व्यापार' (Agri-business) किसे कहते हैं?
(A) निर्वाह हेतु लघु किसानों द्वारा की जाने वाली खेती
(B) मात्र बागवानी फसलों एवं सब्जियों का व्यावसायिक उत्पादन
(C) पारिवारिक उपभोग हेतु की जाने वाली गहन निर्वाह कृषि
(D) वृहत पैमाने पर की जाने वाली व्यापारिक कृषि प्रणाली

28. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): सीमेंट उद्योग एक खनिज आधारित उद्योग है।
कारण (R): यह अधात्विक खनिजों का कच्चे माल के रूप में प्रयोग करता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

29. पेट्रो रसायन उद्योग में कच्चे माल के रूप में किसका उपयोग होता है?
(A) एन्थ्रेसाइट एवं बिटुमिनस कोयला
(B) प्राकृतिक गैस के विभिन्न घटक
(C) कच्चा खनिज तेल या पेट्रोलियम
(D) वनों से प्राप्त शुष्क काष्ठ सामग्री

30. उद्योग विकास के चरणों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. उच्च प्रौद्योगिकी उद्योगों का विकास
2. परंपरागत वृहत औद्योगिक प्रदेशों का विकास
3. कुटीर उद्योगों का प्रभुत्व
4. छोटे पैमाने के उद्योगों का उदय
(A) 3, 4, 2, 1
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 2, 4, 1
(D) 2, 4, 1, 3

31. निम्नलिखित में से कौन सा एक वनों पर आधारित उद्योग है?
(A) कागज़ उद्योग
(B) प्लास्टिक उद्योग

(C) सीमेंट उद्योग
(D) ऊनी वस्त्र उद्योग

32. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (कच्चा माल आधारित उद्योग)
P. कृषि आधारित
Q. खनिज आधारित
R. वन आधारित
S. पशु आधारित
List II: (उदाहरण)
1. लौह-इस्पात
2. कागज़
3. चमड़ा
4. सूती वस्त्र
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

33. वे उद्योग जिनके उत्पाद को अन्य वस्तुएँ बनाने के लिए कच्चे माल के रुप में प्रयोग में लाया जाता है, क्या कहलाते हैं?
(A) उपभोक्ता वस्तु उद्योग
(B) आधारभूत उद्योग
(C) कुटीर उद्योग
(D) स्वच्छंद उद्योग

34. निम्नलिखित में से कौन सा एक आधारभूत उद्योग का उदाहरण है?
(A) लौह-इस्पात उद्योग
(B) बिस्कुट उद्योग
(C) श्रृंगार सामान उद्योग
(D) टेलीविजन उद्योग

35. उपभोक्ता वस्तु उद्योगों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ये ऐसे सामान का उत्पादन करते हैं जो प्रत्यक्ष रूप में उपभोक्ता द्वारा उपभोग किया जाता है।
2. इन्हें गैर-आधारभूत उद्योग भी कहा कहा जाता है।
3. लौह-इस्पात उद्योग इसका एक प्रमुख उदाहरण है।
4. ये उद्योग अन्य उद्योगों के लिए कच्चा माल प्रदान करते हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 2, 3 और 4

36. समाजवादी देशों में अधिकतर उद्योग किस क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं?
(A) निजी क्षेत्र
(B) संयुक्त क्षेत्र
(C) सहकारी क्षेत्र
(D) सार्वजनिक क्षेत्र

37. संयुक्त क्षेत्र के उद्योग का संचालन किसके द्वारा किया जाता है?
(A) सरकारी निकायों के पूर्ण प्रशासनिक नियंत्रण द्वारा
(B) केवल व्यक्तिगत निवेशकों एवं पूंजीपतियों के माध्यम से
(C) निजी एवं सार्वजनिक उद्यमों के साझा सहयोग द्वारा
(D) बहुराष्ट्रीय विदेशी कंपनियों के प्रत्यक्ष निवेश द्वारा

38. उद्योगों के स्वामित्व के आधार पर वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग सरकार के अधीन होते हैं।
2. निजी क्षेत्र के उद्योगों का स्वामित्व व्यक्तिगत निवेशकों के पास होता है।
3. पूँजीवादी देशों में अधिकतर उद्योग निजी क्षेत्र में हैं।
4. समाजवादी देशों में अधिकतर उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र में हैं।
5. मिश्रित अर्थव्यवस्था में केवल निजी उद्यम पाए जाते हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2, 3 और 4
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 3, 4 और 5
(D) उपरोक्त सभी

39. उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग की संकल्पना में क्या सम्मिलित है?
(A) परंपरागत निर्माण विधियाँ
(B) अकुशल श्रमिकों की बहुलता
(C) कच्चे माल पर अत्यधिक निर्भरता
(D) गहन शोध एवं विकास

40. उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग में किस प्रकार के श्रमिकों की संख्या अधिक होती है?
(A) व्यावसायिक (सफ़ेद कॉलर) श्रमिक
(B) वास्तविक उत्पादन (नीला कॉलर) श्रमिक
(C) अकुशल श्रमिक
(D) अर्द्धकुशल श्रमिक

41. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग को 'प्रौद्योगिक ध्रुव' भी कहा जाता है।
कारण (R): ये उद्योग प्रादेशिक रूप से संकेंद्रित, आत्मनिर्भर एवं उच्च विशिष्टता लिए होते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।

(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

42. 'सिलीकन घाटी' (Silicon Valley) कहाँ स्थित है?
(A) सेन फ्रांसिस्को के समीप
(B) सियटल के समीप
(C) न्यूयॉर्क के समीप
(D) शिकागो के समीप

43. निम्नलिखित में से कौन सा विश्व का एक प्रमुख निर्माण उद्योग नहीं है?
(A) लौह-इस्पात
(B) वस्त्र
(C) मोटर गाड़ी निर्माण
(D) हस्तशिल्प

44. 'विनिर्माण उद्योग' शब्दावली का प्रयोग क्यों किया जाता है?
(A) क्योंकि निर्माण की समस्त इकाइयाँ कारखानों में स्थित हैं
(B) अन्य गैर-उत्पादन क्रियाओं से स्पष्ट विभेदीकरण हेतु
(C) क्योंकि इसे मात्र उद्योग का पर्यायवाची नहीं माना जा सकता
(D) केवल शिक्षण संस्थानों के अकादमिक विश्लेषण एवं शोध हेतु

45. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (उद्योग का आकार)
P. कुटीर उद्योग
Q. छोटे पैमाने का उद्योग
R. बड़े पैमाने का उद्योग
S. उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग
List II: (विशेषता)
1. विशाल बाजार, अधिक पूँजी
2. शक्ति चालित यंत्र, अर्द्धकुशल श्रमिक
3. गहन शोध एवं विकास
4. परिवार के सदस्य, साधारण औजार
कूट:
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-2, Q-4, R-3, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

46. प्रौद्योगिकीय नवाचार का एक महत्त्वपूर्ण पहलू क्या है?
(A) विनिर्माण इकाइयों की कुल उत्पादन लागत को बढ़ाना
(B) श्रमिकों एवं मानवीय संसाधनों पर निर्भरता बढ़ाना
(C) पुरानी एवं पारंपरिक निर्माण विधियों का प्रोत्साहन
(D) अपशिष्ट निस्तारण एवं उत्पादन दक्षता में वृद्धि करना

47. आधुनिक निर्माण के मुख्य संकेंद्रण विश्व के कुल स्थलीय भाग के कितने प्रतिशत से कम भू-भाग पर विस्तृत हैं?
(A) 10 प्रतिशत
(B) 50 प्रतिशत
(C) 25 प्रतिशत
(D) 2 प्रतिशत

48. स्वच्छंद उद्योगों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ये किसी विशिष्ट कच्चे माल पर निर्भर नहीं रहते हैं।
2. इनमें उत्पादन कम मात्रा में होता है।
3. सामान्यत: ये उद्योग प्रदूषण नहीं फैलाते।
4. इनकी स्थापना में जलमार्गों द्वारा अभिगम्यता महत्त्वपूर्ण कारक है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) उपरोक्त सभी

49. निम्नलिखित में से कौन सा एक स्वच्छंद उद्योग का उदाहरण है?
(A) भारी एवं कच्चा माल प्रधान चीनी उद्योग
(B) इलेक्ट्रॉनिक संघटक पुर्जों का निर्माण
(C) खनिज संसाधनों पर आधारित सीमेंट उद्योग
(D) वृहत एवं व्यापक लौह-इस्पात निर्माण इकाई

50. उद्योगों के आकार का निर्धारण किस आधार पर होता है?
(A) केवल निवेशित पूँजी पर
(B) केवल कार्यरत श्रमिकों की संख्या पर
(C) केवल उत्पादन की मात्रा पर
(D) उपरोक्त सभी पर

51. कच्चे माल पर आधारित उद्योगों के वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. सूती वस्त्र उद्योग एक कृषि आधारित उद्योग है।
2. सीमेंट उद्योग एक खनिज आधारित उद्योग है।
3. कृत्रिम रेशा बनाना एक रसायन आधारित उद्योग है।
4. कागज़ उद्योग एक पशु आधारित उद्योग है।
5. चमड़ा उद्योग एक वन आधारित उद्योग है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 3, 4 और 5
(D) केवल 1, 4 और 5

52. भारत, चीन, इंडोनेशिया जैसे देशों ने श्रम-सघन छोटे पैमाने के उद्योग क्यों प्रारंभ किए हैं?
(A) उन्नत एवं जटिल प्रौद्योगिकी तंत्रों को बढ़ावा प्रदान करना
(B) औद्योगिक अपशिष्ट एवं पर्यावरणीय प्रदूषण को न्यूनतम करना
(C) निर्मित उत्पादों के वैश्विक निर्यात को हतोत्साहित करना
(D) विशाल आबादी हेतु रोजगार के पर्याप्त अवसर सृजित करना

(D) अनुसंधान और विकास में लगे वैज्ञानिकों को

98. निम्नलिखित गतिविधियों को उत्पादन की जटिलता के आधार पर सरल से जटिल के क्रम में व्यवस्थित करें:
1. अंतरिक्ष यान निर्माण
2. हस्तशिल्प कार्य
3. कंप्यूटर के अति सूक्ष्म घटकों को जोड़ना
4. लोहे व इस्पात को गढ़ना

(A) 2, 4, 3, 1
(B) 2, 3, 4, 1
(C) 1, 3, 4, 2
(D) 4, 2, 1, 3

99. द्वितीयक गतिविधियों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों पर क्या प्रभाव पड़ता है?
(A) उनका मूल्य घट जाता है
(B) वे समाप्त हो जाते हैं
(C) उनका मूल्य बढ़ जाता है
(D) उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता

100. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): उद्योग अपनी लागत घटाकर लाभ को बढ़ाते हैं।
कारण (R): उद्योगों की स्थापना उस स्थान पर की जानी चाहिए जहाँ पर उत्पादन लागत कम आए।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

101. वायुयान निर्माण एवं शस्त्र निर्माण जैसे उद्योगों का बाज़ार कैसा होता है?
(A) स्थानीय बाज़ार
(B) क्षेत्रीय बाज़ार
(C) व्यापक वैश्विक बाज़ार
(D) कोई निश्चित बाज़ार नहीं

102. बढ़ते हुए यंत्रीकरण, स्वचलन एवं औद्योगिक प्रक्रिया के लचीलेपन ने उद्योगों पर क्या प्रभाव डाला है?
(A) श्रमिकों पर निर्भरता को बढ़ाया है
(B) श्रमिकों पर निर्भरता को कम किया है
(C) कुशल श्रमिकों की आवश्यकता को समाप्त कर दिया है
(D) उत्पादन लागत में वृद्धि की है

103. प्राचीन समय में शक्ति का प्रमुख साधन क्या था?
(A) जल विद्युत
(B) खनिज तेल
(C) परमाणु ऊर्जा
(D) कोयला

104. उद्योगों हेतु सूचनाओं के आदान-प्रदान एवं प्रबंधन के लिए किसकी महत्त्वपूर्ण आवश्यकता होती है?
(A) संचार की
(B) केवल परिवहन की
(C) केवल सस्ते श्रम की
(D) सरकारी नीति की

105. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (कारक)
P. बाज़ार तक अभिगम्यता
Q. कच्चे माल की प्राप्ति
R. शक्ति के साधन
S. परिवहन सुविधा

List II: (प्रभावित उद्योग)
1. एल्युमिनियम उद्योग
2. इस्पात उद्योग (स्रोत पर)
3. अधिकांश उद्योग
4. लगभग सभी उद्योग (वितरण हेतु)

कूट:
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

106. स्वच्छंद उद्योग की स्थापना में सबसे महत्त्वपूर्ण कारक क्या है?
(A) सड़क के जाल द्वारा अभिगम्यता
(B) जलमार्गों द्वारा अभिगम्यता
(C) रेलमार्गों द्वारा अभिगम्यता
(D) कच्चे माल के स्रोत की निकटता

107. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन कुटीर उद्योगों के लिए सही है?
(A) इनके द्वारा निर्मित वस्तुओं का व्यापारिक महत्त्व बहुत अधिक होता है।
(B) इनमें मुख्यतः मशीनों का प्रयोग होता है।
(C) ये निर्माण की सबसे बड़ी इकाई हैं।
(D) पूँजी एवं परिवहन इन उद्योगों को अधिक प्रभावित नहीं करते हैं।

108. कच्चे माल के आधार पर उद्योगों के वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. शक्कर उद्योग एक खनिज आधारित उद्योग है।
2. सीमेंट उद्योग एक अधात्विक खनिज आधारित उद्योग है।
3. ऊनी वस्त्र उद्योग एक पशु आधारित उद्योग है।
4. कागज़ उद्योग एक वन आधारित उद्योग है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4

(D) जटिल मशीनी संयंत्रों का विनिर्माण में व्यापक प्रयोग

65. 'पुनर्निवेशन एवं संवृत्त-पाश कंप्यूटर नियंत्रण प्रणाली' से युक्त स्वचालित कारखाने किस अवधारणा से संबंधित हैं?
(A) विनिर्माण एवं यंत्रीकरण की प्रारंभिक या सरल अवस्था
(B) उन्नत स्वचालन एवं यंत्रीकरण की विकसित अवस्था
(C) हस्तशिल्प आधारित परंपरागत उत्पादन की विधियाँ
(D) शिल्प तरीके से होने वाला विशिष्ट कारखाना उत्पादन

66. उद्योगों के वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. आकार के आधार पर उद्योगों को कुटीर, छोटे व बड़े पैमाने में बाँटा जाता है।
2. कच्चे माल के आधार पर उद्योगों को कृषि, खनिज, रसायन, वन व पशु आधारित में बाँटा जाता है।
3. उत्पाद के आधार पर उद्योगों को आधारभूत व उपभोक्ता उद्योगों में बाँटा जाता है।
4. स्वामित्व के आधार पर उद्योगों को सार्वजनिक, निजी व संयुक्त क्षेत्र में बाँटा जाता है।
5. स्वच्छंद उद्योग आकार पर आधारित एक वर्गीकरण है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3 और 4
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 3, 4 और 5
(D) उपरोक्त सभी

67. पश्चिमी यूरोप एवं उत्तरी अमेरिका के पूर्वी भागों में उद्योगों का संकेंद्रण क्यों हुआ?
(A) शासन द्वारा प्रदत्त अत्यधिक वित्तीय एवं कर सहायता
(B) क्षेत्र में औद्योगिक कच्चे माल की प्रचुर उपलब्धता
(C) सघन एवं विकसित संचार व परिवहन तंत्र का विकास
(D) स्थानीय क्षेत्र में निवास करने वाली अल्प जनसंख्या

68. निम्नलिखित में से कौन सा एक कथन असत्य है?
(A) चीनी उद्योग एक स्वच्छंद उद्योग है।
(B) हुगली के सहारे जूट के कारखाने सस्ती जल यातायात की सुविधा के कारण स्थापित हुए।
(C) खनिज तेल एवं जलविद्युत शक्ति के विकास ने कोयला शक्ति के महत्त्व को कम किया है।
(D) पत्तन नगरों ने भारत में उद्योगों को आकर्षित किया है।

69. किस एक अर्थव्यवस्था में उत्पादन का स्वामित्व व्यक्तिगत होता है?
(A) समाजवाद
(B) मिश्रित
(C) पूँजीवाद
(D) उपरोक्त में से कोई नहीं

70. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): आधुनिक उद्योग अपृथक्करणीय ढंग से परिवहन तंत्र से जुड़े हैं।
कारण (R): कच्चे माल को कारखाने तक लाने और परिष्कृत सामग्री को बाज़ार तक पहुँचाने के लिए तीव्र और सक्षम परिवहन सुविधाएँ औद्योगिक विकास के लिए अत्यावश्यक हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

71. कुटीर उद्योगों में कौन सी वस्तुएँ सामान्यतः उत्पादित की जाती हैं?
(A) जटिल पुर्जों वाली आधुनिक स्वचालित मोटर गाड़ियाँ
(B) उच्च तकनीक आधारित उन्नत अंतरिक्ष यान एवं उपग्रह
(C) उद्योगों में प्रयुक्त होने वाली विशाल भारी मशीनें
(D) दैनिक जीवन हेतु खाद्य पदार्थ, वस्त्र एवं बर्तन

72. किस प्रकार के उद्योग में स्थानीय निवासियों की क्रय शक्ति बढ़ती है क्योंकि उसमें रोजगार के अवसर अधिक होते हैं?
(A) छोटे पैमाने के उद्योग
(B) कुटीर उद्योग
(C) बड़े पैमाने के उद्योग
(D) स्वच्छंद उद्योग

73. उच्च प्रौद्योगिकी वाले वृहत औद्योगिक प्रदेश का विस्तार किन देशों में अधिक हुआ है?
(A) अधिक विकसित देशों में
(B) केवल यूरोपीय देशों में
(C) कम विकसित देशों में
(D) केवल अमेरिकी देशों में

74. नमक, गंधक एवं पोटाश उद्योगों में किस प्रकार के कच्चे माल का प्रयोग होता है?
(A) प्राकृतिक रूप से मिलने वाले रासायनिक खनिज पदार्थ
(B) कृषि से प्राप्त होने वाले विभिन्न वनस्पति उत्पाद
(C) वनों से एकत्र किए गए विविध जंगली जैविक उत्पाद
(D) पशुओं के माध्यम से प्राप्त होने वाले दुग्ध एवं चर्म उत्पाद

75. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (उद्योग)
P. चाय, कॉफी
Q. ताँबा, एल्युमिनियम
R. प्लास्टिक, कृत्रिम रेशा
S. फर्नीचर, कागज
List II: (उद्योग का प्रकार)
1. रसायन आधारित
2. वन आधारित
3. कृषि आधारित
4. खनिज आधारित (अलौह)

कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

76. उत्पादन की प्रक्रिया में कच्चे माल का रुप बदलकर उसे ऊँचे मूल्य के तैयार माल में परिवर्तित करना किस प्रक्रिया का हिस्सा है?
(A) खनन
(B) विनिर्माण
(C) परिवहन
(D) व्यापार

77. निम्नलिखित में से कौन सा एक जोड़ा सही मेल नहीं खाता है?
(A) लौह-इस्पात उद्योग - आधारभूत उद्योग
(B) बिस्कुट उद्योग - उपभोक्ता उद्योग
(C) चमड़ा उद्योग - पशु आधारित उद्योग
(D) सीमेंट उद्योग - कृषि आधारित उद्योग

78. प्राथमिक एवं द्वितीयक गतिविधियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. प्राथमिक क्रियाएँ सीधे पर्यावरण पर निर्भर हैं।
2. द्वितीयक क्रियाएँ प्राकृतिक संसाधनों का मूल्य बढ़ाती हैं।
3. मत्स्यन एक द्वितीयक क्रिया है।
4. विनिर्माण एक प्राथमिक क्रिया है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) केवल 1 और 4

79. 'सिलीकन वन' (Silicon Forest) किसके समीप स्थित एक प्रौद्योगिक ध्रुव है?
(A) सियटल
(B) सेन फ्रांसिस्को
(C) लॉस एंजिल्स
(D) बोस्टन

80. पूँजीवादी देशों में किस प्रकार के उद्योगों की अधिकता होती है?
(A) सार्वजनिक क्षेत्र
(B) निजी क्षेत्र
(C) संयुक्त क्षेत्र
(D) सहकारी क्षेत्र

81. विनिर्माण उद्योगों के वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. चीनी उद्योग कृषि आधारित उद्योग है।
2. लौह-इस्पात उद्योग धात्विक खनिज आधारित उद्योग है।
3. सीमेंट उद्योग अधात्विक खनिज आधारित उद्योग है।
4. पेट्रो-रसायन एक वन आधारित उद्योग है।
5. ऊन एक पशु आधारित उद्योग है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2, 3 और 5
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) उपरोक्त सभी

82. उद्योगों की अवस्थिति को निश्चित करने में परिवहन लागत की क्या भूमिका है?
(A) यह एक महत्त्वपूर्ण कारक है।
(B) यह एक महत्त्वहीन कारक है।
(C) यह केवल हवाई परिवहन पर लागू होता है।
(D) यह केवल कच्चे माल पर लागू होता है, तैयार माल पर नहीं।

83. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. औद्योगिक क्रांति
2. कृषि व्यापार (Agri-business) की संकल्पना का उदय
3. हस्तशिल्प युग
4. सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग का विकास
(A) 3, 1, 2, 4
(B) 1, 3, 2, 4
(C) 3, 2, 1, 4
(D) 2, 1, 3, 4

84. 'उद्योग' को वैचारिक दृष्टिकोण से क्या माना जाता है?
(A) एक व्यापक शब्दावली जो मात्र विनिर्माण का पर्याय है
(B) केवल अमूर्त सेवा प्रदान करने वाली व्यावसायिक इकाई
(C) मात्र प्राकृतिक संसाधनों के निष्कर्षण में लगी इकाई
(D) विशिष्ट भौगोलिक स्थिति वाली पृथक निर्माण इकाई

85. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): दक्षिणी एवं दक्षिणी पूर्वी एशिया के घने बसे प्रदेश वृहद् बाज़ार उपलब्ध कराते हैं।
कारण (R): इन प्रदेशों के लोगों की क्रय क्षमता उत्तरी अमेरिका और यूरोप के लोगों से अधिक है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

86. एक ही प्रकार की वस्तुओं का विशाल उत्पादन किस प्रकार के विनिर्माण की विशेषता है?
(A) हाथ की कुशलता आधारित हस्तशिल्प कार्य

(B) आधुनिक वृहत स्तरीय मानकीकृत विनिर्माण
(C) स्थानीय आवश्यकताओं हेतु घरेलू कुटीर उद्योग
(D) आदेशानुसार होने वाला विशिष्ट शिल्प तरीका

87. निम्नलिखित में से कौन सा उद्योग अलौह धात्विक खनिजों का उपयोग करता है?
(A) लौह-इस्पात उद्योग
(B) सीमेंट उद्योग
(C) नमक उद्योग
(D) एल्युमिनियम उद्योग

88. संतुलित आर्थिक विकास हेतु सरकार द्वारा अपनाई जाने वाली प्रादेशिक नीति किस कारक के अंतर्गत आती है?
(A) सरकारी नीति
(B) बाजार तक अभिगम्यता
(C) श्रम आपूर्ति
(D) समूहन अर्थव्यवस्था

89. आधुनिक शक्ति के साधन एवं मशीनरी द्वारा किया जाने वाला विनिर्माण किस प्रकार का विनिर्माण है?
(A) प्राचीन विनिर्माण
(B) केवल कुटीर विनिर्माण
(C) आधुनिक विनिर्माण
(D) केवल हस्तशिल्प विनिर्माण

90. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (उद्योग का प्रकार)
P. आधारभूत उद्योग
Q. उपभोक्ता वस्तु उद्योग
R. स्वच्छंद उद्योग
S. कुटीर उद्योग
List II: (उत्पाद/विशेषता)
1. इलेक्ट्रॉनिक पुर्जे
2. स्थानीय बाजार हेतु बर्तन
3. लौह-इस्पात
4. साबुन
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-4, S-3
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

91. किस प्रकार के उद्योग में उत्पादन कम मात्रा में होता है एवं श्रमिकों की भी कम आवश्यकता होती है?
(A) बड़े पैमाने के उद्योग
(B) आधारभूत उद्योग
(C) खनिज आधारित उद्योग
(D) स्वच्छंद उद्योग

92. सुनार द्वारा सोना, चाँदी एवं ताँबे से आभूषण बनाना किस उद्योग का उदाहरण है?
(A) बड़े पैमाने का उद्योग
(B) कुटीर उद्योग
(C) छोटे पैमाने का उद्योग
(D) आधारभूत उद्योग

93. छोटे पैमाने के उद्योगों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसमें स्थानीय कच्चे माल का उपयोग होता है।
2. इसमें अर्द्धकुशल श्रमिक व शक्ति के साधनों से चलने वाले यंत्रों का प्रयोग होता है।
3. इसमें रोजगार के अवसर बड़े पैमाने के उद्योगों से अधिक होते हैं।
4. यह कुटीर उद्योग से पूर्णतः समान है।
उपरोक्त में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 1, 2 और 4

94. भोजन प्रसंस्करण में क्या सम्मिलित नहीं है?
(A) मलाई (क्रीम) का उत्पादन
(B) डिब्बा खाद्य बनाना
(C) फलों से खाद्य तैयार करना
(D) अयस्क से धातु निकालना

95. मिश्रित अर्थव्यवस्था में किस प्रकार के उद्यम पाए जाते हैं?
(A) निजी एवं सरकारी क्षेत्र के सहभागी उद्यम
(B) केवल शासन के अधीन कार्यरत सार्वजनिक इकाइयाँ
(C) मात्र व्यक्तिगत लाभ हेतु संचालित निजी संस्थान
(D) केवल सहकारिता पर आधारित संयुक्त क्षेत्र इकाइयाँ

96. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. द्वितीयक क्रियाएँ विनिर्माण, प्रसंस्करण और निर्माण उद्योग से संबंधित हैं।
2. तृतीय विश्व के अधिकांश देशों में विनिर्माण को अब भी शाब्दिक अर्थों (हाथ से बनाना) में प्रयोग किया जाता है।
3. यंत्रीकरण, स्वचालन की विकसित अवस्था है।
4. प्रौद्योगिक नवाचार का उद्देश्य प्रदूषण के विरुद्ध संघर्ष करना है।
5. आधुनिक निर्माण के मुख्य संकेंद्रण विश्व के 50% से अधिक भू-भाग पर हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2, और 4
(B) केवल 2, 3, और 5
(C) केवल 1, 3, 4, और 5
(D) केवल 1, 2, 4

97. 'नीला कॉलर' श्रमिक किन्हें कहा जाता है?
(A) व्यावसायिक श्रमिकों को
(B) वास्तविक उत्पादन करने वाले श्रमिकों को
(C) प्रबंधकीय वर्ग को

(A) निर्मित वस्तुओं की मांग एवं क्रय करने की क्षमता
(B) विशिष्ट भौगोलिक स्थान जहाँ सामग्री का विक्रय हो
(C) क्षेत्र विशेष में निवास करने वाली कुल जनसंख्या
(D) विभिन्न क्षेत्रों को जोड़ने वाले परिवहन का जाल

11. उद्योगों की अवस्थिति को प्रभावित करने वाले कारकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. बाज़ार तक अभिगम्यता उद्योगों की स्थापना में सबसे प्रमुख कारक है।
2. भारी वजन एवं वजन घटने वाले पदार्थों पर आधारित उद्योग कच्चे माल के स्रोत के समीप स्थित होते हैं।
3. उद्योगों की अवस्थिति में श्रम आपूर्ति का कोई महत्त्व नहीं है।
4. अधिक शक्ति की आवश्यकता वाले उद्योग ऊर्जा स्रोतों के समीप लगाए जाते हैं।
5. सरकारी नीतियां उद्योगों की स्थापना को प्रभावित नहीं करती हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2 और 4
(C) केवल 3, 4 और 5
(D) केवल 1, 3 और 5

12. कौन से उद्योग प्रायः कच्चे माल के स्रोत स्थल के समीप ही स्थित होते हैं?
(A) उच्च मूल्य एवं अल्प भार वाली वस्तुओं के निर्माण केंद्र
(B) भार ह्रास वाले एवं वजनदार कच्चे माल वाले उद्योग
(C) संघटक पुर्जों पर आधारित स्वतंत्र स्वच्छंद उद्योग इकाइयाँ
(D) आम जनता हेतु प्रयुक्त होने वाली उपभोक्ता वस्तु इकाइयाँ

13. विनिर्माण के विकास के कालानुक्रमिक क्रम में निम्नलिखित को व्यवस्थित करें:
1. हस्तशिल्प कार्य
2. यंत्रीकरण
3. स्वचालित कारखाने (स्वचालन)
4. शिल्प तरीके से कारखाना उत्पादन

(A) 1, 4, 2, 3
(B) 4, 1, 2, 3
(C) 1, 2, 4, 3
(D) 2, 3, 1, 4

14. किस प्रकार के उद्योगों के लिए पदार्थ की शीघ्र नष्टशीलता एक अनिवार्य कारक है?
(A) वृहत इस्पात एवं भारी मशीनरी निर्माण
(B) सूती एवं रेशमी वस्त्र उत्पादन इकाइयाँ
(C) स्वचालित मोटर वाहन एवं पुर्जा निर्माण
(D) कृषि प्रसंस्करण एवं डेरी उत्पाद उद्योग

15. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): एल्यूमिनियम उद्योग जैसे अधिक शक्ति की आवश्यकता वाले उद्योग ऊर्जा के स्रोतों के समीप लगाए जाते हैं।
कारण (R): शक्ति की लागत उत्पादन लागत का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा होती है और स्रोतों के पास स्थापना से यह लागत कम हो जाती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

16. 'समूहन अर्थव्यवस्था' से क्या लाभ होता है?
(A) शासकीय नीतियों द्वारा करों में मिलने वाली छूट
(B) अंतः-औद्योगिक कड़ियों से प्राप्त होने वाली बचत
(C) उत्पादन हेतु प्रयुक्त कच्चे माल की लागत में कमी
(D) श्रम लागत एवं मानवीय संसाधनों की सीमित आवश्यकता

17. स्वच्छंद उद्योगों की मुख्य विशेषता क्या है?
(A) विशिष्ट एवं भारी कच्चे माल पर पूर्ण निर्भरता
(B) विविध भौगोलिक क्षेत्रों में स्थापना की सुलभता
(C) विशाल मात्रा में मानकीकृत वस्तुओं का उत्पादन
(D) औद्योगिक अपशिष्ट द्वारा पर्यावरण का अति प्रदूषण

18. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (उद्योग)
P. चीनी उद्योग
Q. एल्यूमिनियम उद्योग
R. सॉफ्टवेयर उद्योग
S. डेरी उत्पाद

List II: (प्रमुख अवस्थिति कारक)
1. शक्ति स्रोत की निकटता
2. कच्चे माल (गन्ना) की निकटता
3. कुशल श्रम और अभिगम्यता
4. दूध आपूर्ति स्रोतों की निकटता

कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

19. उद्योगों का वर्गीकरण किन आधारों पर किया जाता है?
(A) केवल निर्माण हेतु प्रयुक्त पूंजी एवं कच्चे माल द्वारा
(B) मात्र निर्मित उत्पाद एवं उसके बाजार स्वामित्व द्वारा
(C) आकार, कच्चा माल, उत्पाद एवं स्वामित्व के आधार पर
(D) केवल वार्षिक लाभ की मात्रा एवं निवेशित परिसंपत्ति द्वारा

(C) केवल 1, 3 और 4
(D) केवल 1, 2 और 4

109. 'सफ़ेद कॉलर' श्रमिक किन्हें कहा जाता है?
(A) प्रत्यक्ष उत्पादन कार्यों में संलग्न औद्योगिक श्रमिक
(B) बिना किसी विशेष कौशल वाले सामान्य अकुशल श्रमिक
(C) उच्च दक्षता प्राप्त विशिष्ट व्यावसायिक श्रमिक
(D) कृषि फार्मों एवं खेतों में श्रम करने वाले कृषक श्रमिक

110. 'प्रौद्योगिक ध्रुव' (Technopole) क्या हैं?
(A) पारंपरिक रूप से विकसित पुरानी औद्योगिक श्रमिक बस्तियाँ
(B) उच्च शिक्षण संस्थानों से संबंद्ध मात्र शोध एवं विकास केंद्र
(C) प्राकृतिक कच्चे माल के उत्पादन एवं संग्रहण के मुख्य केंद्र
(D) प्रादेशिक संकेंद्रित एवं विशिष्ट उच्च तकनीकी उद्योग

111. उच्च प्रौद्योगिकी उद्योगों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह निर्माण क्रियाओं की नवीनतम पीढ़ी है।
2. इसमें गहन शोध एवं विकास का प्रयोग होता है।
3. इसमें 'नीला कॉलर' श्रमिकों की संख्या 'सफ़ेद कॉलर' श्रमिकों से अधिक होती है।
4. कंप्यूटर आधारित डिज़ाइन (कैड) तथा निर्माण इसमें प्रमुख स्थान रखते हैं।
5. ये उद्योग सामान्यतः प्रदूषण फैलाने वाले होते हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 5
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) उपरोक्त सभी

112. विश्व अर्थव्यवस्था में किस उद्योग का बड़ा योगदान है?
(A) केवल कृषि
(B) निर्माण उद्योग
(C) केवल पर्यटन
(D) केवल खनन

113. हुगली नदी के किनारे जूट के कारखानों की स्थापना का मुख्य कारण क्या था?
(A) शासन द्वारा निर्धारित विशिष्ट औद्योगिक एवं कर नीति
(B) सुलभ एवं सस्ती जल परिवहन व्यवस्था की उपलब्धता
(C) स्थानीय क्षेत्र में कुशल एवं दक्ष श्रमिकों की घोर कमी
(D) क्षेत्र के समीपस्थ स्थानों पर वृहत बाजार की अनुपस्थिति

114. निम्नलिखित में से कौन-सा एक जोड़ा सही मेल खाता है?
(A) स्वचालित वाहन उद्योग - लूसाका
(B) पोत निर्माण उद्योग - फलोरेंस
(C) वायुयान निर्माण उद्योग - लॉस एंजिल्स
(D) लौह-इस्पात उद्योग - पिट्सबर्ग

115. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): तृतीय विश्व के देशों में सभी विनिर्माताओं का संपूर्ण रूप से चित्रण करना कठिन है।
कारण (R): इन देशों में उन औद्योगिक क्रियाओं पर अधिक बल दिया जाता है जिसमें उत्पादन के कम जटिल तंत्र को लिया जाता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

116. 'कृषि कारखाने' किन्हें कहा कहा जाता है?
(A) ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित पारंपरिक छोटे किसान फार्म
(B) केवल पूर्णतः जैविक पद्धति से की जाने वाली आधुनिक खेती
(C) शहरी सीमाओं के भीतर स्थित लघु एवं निर्वाह कृषि फार्म
(D) वृहत, यंत्रीकृत एवं रसायनों पर आधारित कृषि फार्म

117. कच्चे माल के स्रोत के आधार पर उद्योगों के प्रकारों को सही क्रम में व्यवस्थित करें:
1. खनिज आधारित
2. रसायन आधारित
3. कृषि आधारित
4. वन आधारित

(A) 3, 1, 2, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 2, 1, 4
(D) 4, 3, 2, 1

118. फर्नीचर उद्योग के लिए इमारती लकड़ी किस प्रकार के उद्योग के लिए कच्चा माल है?
(A) कृषि आधारित
(B) वन आधारित
(C) खनिज आधारित
(D) रसायन आधारित

119. उत्पादन/उत्पाद आधारित उद्योगों को किन दो प्रमुख श्रेणियों में बांटा गया है?
(A) कृषि संसाधनों एवं खनिज संपदा पर आधारित निर्माण वर्ग
(B) शासकीय सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र के स्वामित्व वाले वर्ग
(C) लघु उत्तरीय एवं वृहत पैमाने पर आधारित औद्योगिक श्रेणियाँ
(D) आधारभूत एवं उपभोक्ता वस्तु निर्माण की श्रेणियाँ

11. (B) केवल 1, 2 और 4
उद्योगों की अवस्थिति बाज़ार की उपलब्धता, कच्चे माल की प्रकृति और ऊर्जा स्रोतों की निकटता से निर्धारित होती है। भारी और वजन घटने वाले कच्चे माल पर आधारित उद्योग स्रोतों के समीप लगाए जाते हैं। श्रम आपूर्ति भी उद्योगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण कारक है, और सरकारी नीतियां भी इनके स्थान चयन को प्रभावित करती हैं। अतः कथन 3 और 5 इस संदर्भ में तथ्यात्मक रूप से गलत हैं।

12. (B) भार ह्रास वाले एवं वजनदार कच्चे माल वाले उद्योग
वे उद्योग जिनमें कच्चे माल का वजन प्रसंस्करण के दौरान कम हो जाता है, स्रोत स्थल के समीप स्थापित किए जाते हैं। इससे परिवहन लागत में भारी बचत होती है और उत्पादन किफायती रहता है। चीनी उद्योग और लौह-इस्पात उद्योग इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं। ऐसे उद्योगों को बाज़ार के पास लगाने से कच्चे माल के परिवहन पर होने वाला अनावश्यक खर्च उत्पादन लागत को बहुत अधिक बढ़ा सकता है।

13. (A) 1, 4, 2, 3
विनिर्माण का विकास हस्तशिल्प से शुरु हुआ जहाँ वस्तुओं का निर्माण पूर्णतः हाथ से किया जाता था। इसके बाद शिल्प तरीके से कारखाना उत्पादन शुरु हुआ जहाँ श्रमिकों की विशिष्टता बढ़ी। फिर यंत्रीकरण का युग आया जिसमें मशीनों का प्रयोग बढ़ा। वर्तमान में स्वचालन या स्वचालित कारखानों का युग है, जहाँ कंप्यूटर नियंत्रित प्रणालियाँ उत्पादन करती हैं। यह क्रम औद्योगिक प्रगति के सोपानों को दर्शाता है।

14. (D) कृषि प्रसंस्करण एवं डेरी उत्पाद उद्योग
कृषि प्रसंस्करण और डेरी उत्पादों के लिए कच्चे माल की शीघ्र नष्टशीलता एक अनिवार्य कारक है। दूध, फल और सब्जियाँ जैसे उत्पाद जल्दी खराब हो जाते हैं, इसलिए कारखाने इनके उत्पादन केंद्रों के निकट स्थापित किए जाते हैं। इससे सामग्री के खराब होने से पहले उसका प्रसंस्करण सुनिश्चित होता है। यह व्यवस्था उत्पादों की गुणवत्ता बनाए रखने और परिवहन के दौरान होने वाले नुकसान को कम करने के लिए आवश्यक है।

15. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
एल्युमिनियम जैसे उद्योगों को विद्युत ऊर्जा की भारी मात्रा में आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में ऊर्जा की लागत कुल उत्पादन लागत का एक बड़ा हिस्सा बन जाती है। इसलिए इन उद्योगों को बिजली के स्रोतों या बांधों के पास लगाना आर्थिक रूप से लाभकारी होता है। इससे शक्ति के पारेषण में होने वाली हानि और परिवहन खर्च कम हो जाता है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही हैं।

16. (B) अंतः-औद्योगिक कड़ियों से प्राप्त होने वाली बचत
समूहन अर्थव्यवस्था का मुख्य लाभ विभिन्न उद्योगों के एक स्थान पर होने से मिलने वाली कड़ियों की बचत है। जब कई उद्योग एक-दूसरे के निकट स्थित होते हैं, तो वे साझा सेवाओं, बुनियादी ढाँचे और बाज़ार का उपयोग कर सकते हैं। इससे उनकी परिचालन लागत कम होती है और वे एक-दूसरे को पूरक सेवाएं प्रदान करते हैं। यह प्रक्रिया औद्योगिक संकुलों के विकास में अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।

17. (B) विविध भौगोलिक क्षेत्रों में स्थापना की सुलभता
स्वच्छंद उद्योग किसी विशिष्ट कच्चे माल या वजन घटने वाले पदार्थों पर निर्भर नहीं होते हैं। ये उद्योग संघटक पुर्जों पर आधारित होते हैं जिन्हें कहीं से भी प्राप्त किया जा सकता है। इसी कारण इनकी स्थापना विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में सड़क संपर्क के आधार पर आसानी से की जा सकती है। ये उद्योग प्रदूषण रहित होते हैं और इनमें श्रमिकों की कम संख्या की आवश्यकता होती है।

18. (B) P-2, Q-1, R-3, S-4
चीनी उद्योग गन्ने की निकटता पर निर्भर है क्योंकि गन्ना सूखने पर वजन कम हो जाता है। एल्यूमिनियम उद्योग को अत्यधिक बिजली चाहिए, इसलिए यह शक्ति स्रोतों के पास रहता है। सॉफ्टवेयर उद्योग कुशल श्रम और वैश्विक संचार पर आधारित है। डेरी उद्योग दूध की उपलब्धता के पास स्थित होता है। यह मिलान विभिन्न उद्योगों की विशिष्ट अवस्थिति संबंधी आवश्यकताओं को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

19. (C) आकार, कच्चा माल, उत्पाद एवं स्वामित्व के आधार पर
उद्योगों का वर्गीकरण बहुआयामी होता है जिसमें निवेशित पूँजी और श्रमिकों की संख्या के आधार पर आकार देखा जाता है। कच्चे माल के स्रोत के आधार पर वे कृषि या खनिज आधारित हो सकते हैं। निर्मित वस्तुओं के उपयोग के आधार पर वे आधारभूत या उपभोक्ता उद्योग होते हैं। अंत में, नियंत्रण और प्रबंधन के आधार पर उन्हें सार्वजनिक, निजी या संयुक्त क्षेत्र में वर्गीकृत किया जाता है।

20. (D) कुटीर उद्योग
कुटीर उद्योग या घरेलू उद्योग विनिर्माण की सबसे छोटी और प्राथमिक इकाई है। इसमें कारीगर अपने परिवार के सदस्यों के साथ स्थानीय कच्चे माल का उपयोग करके घर में ही वस्तुओं का निर्माण करते हैं। इन उद्योगों में साधारण औजारों का प्रयोग होता है और उत्पादन मुख्य रूप से स्वयं के उपभोग या स्थानीय बाज़ार के लिए किया जाता है। इनमें पूँजी और परिवहन का प्रभाव बहुत कम होता है।

21. (C) केवल 1, 2 और 3
कुटीर उद्योग विनिर्माण की लघुतम इकाई हैं जो स्थानीय कच्चे माल और सरल औजारों पर आधारित हैं। इनमें परिवहन और पूँजी का न्यूनतम प्रभाव पड़ता है क्योंकि कार्य पारिवारिक स्तर पर होता है। हालाँकि, इन उद्योगों में उत्पादित वस्तुओं का व्यापारिक महत्व बड़े पैमाने के उद्योगों की तुलना में कम होता है। ये मुख्य रूप से ग्रामीण आत्मनिर्भरता और स्थानीय उपभोग की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए होते हैं।

22. (B) उत्पादन की तकनीक और निर्माण स्थल के आधार पर
छोटे पैमाने के उद्योग कुटीर उद्योगों से भिन्न होते हैं क्योंकि इनका निर्माण स्थल घर से बाहर एक छोटा कारखाना होता है। इनमें अर्धकुशल श्रमिकों और बिजली से चलने वाली मशीनों

व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

131. एक उद्योग जो अन्य उद्योगों के लिए मशीनें बनाता है, उसे क्या कहा जाएगा?
(A) उपभोक्ता वस्तु उद्योग
(B) स्वच्छंद उद्योग
(C) आधारभूत उद्योग
(D) कृषि आधारित उद्योग

132. निम्नलिखित में से कौन सा एक रासायनिक आधारित उद्योग का उदाहरण नहीं है?
(A) पेट्रो-रसायन उद्योग
(B) नमक उद्योग
(C) प्लास्टिक निर्माण
(D) सूती वस्त्र उद्योग

133. एक व्यक्ति अपने आँगन में मिट्टी के बर्तन बना रहा है। यह किस प्रकार के उद्योग का उदाहरण है?
(A) मशीनीकृत लघु अथवा छोटे पैमाने का उद्योग
(B) वृहत संगठनात्मक ढांचे वाला बड़े पैमाने का उद्योग
(C) घरेलू अथवा कुटीर निर्माण की इकाई
(D) संघटक पुर्जों पर आधारित आधुनिक स्वच्छंद उद्योग

134. आधुनिक विनिर्माण में संगठनात्मक ढाँचे एवं स्तरीकरण का क्या परिणाम होता है?
(A) प्रशासकीय अधिकारी वर्ग की आवश्यकता कम हो जाती है।
(B) प्रशासकीय अधिकारी वर्ग की आवश्यकता होती है।
(C) उत्पादन की लागत बढ़ जाती है।
(D) श्रम विभाजन समाप्त हो जाता है।

135. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (उद्योग का उदाहरण)
P. शक्कर उद्योग
Q. पोत निर्माण उद्योग
R. सॉफ्टवेयर उद्योग
S. फर्नीचर उद्योग
List II: (प्रमुख कच्चा माल/कारक)
1. लकड़ी
2. गन्ना
3. कुशल श्रमिक
4. इस्पात
कूट:
(A) P-2, Q-4, R-3, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

136. औद्योगिक क्रांति के पूर्व खाद्य को सुरक्षित रखने की विधियों का उपयोग कैसा था?
(A) सीमित उपयोग ही होता था
(B) बहुत व्यापक था
(C) अज्ञात था
(D) केवल राजपरिवारों द्वारा उपयोग होता था

137. वे कौन से उद्योग हैं जो संघटक पुर्जों पर निर्भर रहते हैं?
(A) कृषि आधारित उद्योग
(B) आधारभूत उद्योग
(C) स्वच्छंद उद्योग
(D) खनिज आधारित उद्योग

138. उद्योगों की अवस्थिति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. चीनी उद्योग कच्चे माल के स्रोत के निकट स्थित होता है।
2. एल्युमिनियम उद्योग शक्ति स्रोत के निकट स्थित होता है।
3. किसी भी उद्योग की अवस्थिति में परिवहन की कोई भूमिका नहीं होती।
4. समूहन अर्थव्यवस्था से उद्योगों को लाभ होता है।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1 और 3
(D) उपरोक्त सभी

139. लौह-इस्पात उद्योग किस श्रेणी के अंतर्गत आता है?
(A) अधात्विक, उपभोक्ता, छोटे पैमाने का
(B) धात्विक, उपभोक्ता, कुटीर
(C) कृषि आधारित, आधारभूत, बड़े पैमाने का
(D) धात्विक, आधारभूत, बड़े पैमाने का

140. वे उद्योग जिनका स्वामित्व व्यक्तिगत निवेशकों के पास होता है, क्या कहलाते हैं?
(A) सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग
(B) निजी क्षेत्र के उद्योग
(C) संयुक्त क्षेत्र के उद्योग
(D) सहकारी उद्योग

141. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. विनिर्माण का अर्थ हाथ से बनाना है, फिर भी इसमें यंत्रों द्वारा बनाया गया सामान भी सम्मिलित है।
2. उद्योग एक निर्माण इकाई होती है जिसकी भौगोलिक स्थिति अलग होती है।
3. पर्यटन उद्योग एक विनिर्माण उद्योग है।
4. आधुनिक निर्माण में श्रम विभाजन के द्वारा कम लागत पर अधिक उत्पादन होता है।
5. बाजार का अर्थ केवल वस्तुओं की मांग है, क्रय शक्ति नहीं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?

(B) एक तृतीयक उद्योग
(C) एक आधारभूत उद्योग
(D) एक स्वच्छंद उद्योग

प्रदान की क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों से लोग रोजगार की तलाश में औद्योगिक केंद्रों की ओर पलायन करने लगे। इस प्रकार, विनिर्माण का विकास कुटीर उद्योग से कारखाना प्रणाली तक उत्पादन के संगठन, प्रौद्योगिकी और सामाजिक संरचना में एक गहरा परिवर्तन दर्शाता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. औद्योगिक क्रांति से पहले उत्पादन की मुख्य विशेषता क्या थी?
(A) कारखाना प्रणाली पर आधारित उत्पादन
(B) कुटीर उद्योगों के माध्यम से स्थानीय उत्पादन
(C) यंत्रीकृत और बड़े पैमाने पर उत्पादन
(D) श्रम के अत्यधिक विशिष्टीकरण पर आधारित उत्पादन

152. स्रोत के अनुसार, औद्योगिक क्रांति ने विनिर्माण में कौन सा प्रमुख परिवर्तन लाया?
(A) उत्पादन को कुटीर उद्योग से कारखाना प्रणाली में बदल दिया।
(B) उत्पादन को विकेंद्रीकृत कर दिया।
(C) कारीगरों के महत्व को बढ़ा दिया।
(D) स्थानीय खपत के लिए उत्पादन को प्रोत्साहित किया।

153. 'श्रम का विशिष्टीकरण' से क्या तात्पर्य है, जैसा कि अनुच्छेद में वर्णित है?
(A) एक श्रमिक द्वारा संपूर्ण वस्तु का निर्माण करना।
(B) परिवार के सभी सदस्यों का मिलकर काम करना।
(C) प्रत्येक श्रमिक का उत्पादन प्रक्रिया के एक विशिष्ट भाग में विशेषज्ञ होना।
(D) सरल औजारों का उपयोग करके उत्पादन करना।

154. अनुच्छेद के अनुसार, कारखाना प्रणाली के विकास का एक सामाजिक परिणाम क्या था?
(A) ग्रामीण जनसंख्या में वृद्धि
(B) स्थानीय बाजारों का संकुचन
(C) हस्तशिल्प कलाओं का पुनरुत्थान
(D) शहरीकरण की प्रक्रिया में तीव्रता

155. निम्नलिखित में से कौन सा कथन औद्योगिक क्रांति के प्रभाव का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) इसने केवल उत्पादन की गति को प्रभावित किया।
(B) इसका मुख्य प्रभाव केवल भाप इंजन के आविष्कार तक सीमित था।
(C) इसने उत्पादन, प्रौद्योगिकी और सामाजिक संरचना में व्यापक परिवर्तन किए।
(D) इसने पारंपरिक कारीगरों के कौशल को और अधिक मूल्यवान बना दिया।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
औद्योगिक अवस्थिति के कारकों का विश्लेषण भूगोल में एक महत्वपूर्ण विषय रहा है। बीसवीं सदी के आरंभ में, जर्मन अर्थशास्त्री अल्फ्रेड वेबर ने उद्योगों की स्थापना के लिए न्यूनतम लागत सिद्धांत (Least Cost Theory) प्रस्तुत किया। इस सिद्धांत के अनुसार, एक उद्योग उस स्थान पर स्थापित होगा जहाँ उत्पादन की कुल लागत, विशेष रूप से परिवहन लागत, न्यूनतम हो। वेबर ने दो प्रमुख कारकों की पहचान की: परिवहन लागत और श्रम लागत। उन्होंने तर्क दिया कि परिवहन लागत कच्चे माल और तैयार माल दोनों के वजन और उन्हें तय की जाने वाली दूरी पर निर्भर करती है। उन्होंने 'पदार्थ सूचकांक' (Material Index) की अवधारणा पेश की, जो कच्चे माल के वजन और तैयार उत्पाद के वजन के बीच का अनुपात है। जिन उद्योगों में कच्चे माल का वजन उत्पादन प्रक्रिया में कम हो जाता है (जैसे- तांबा प्रगलन), उन्हें 'भार-ह्रास' उद्योग कहा जाता है और वे कच्चे माल के स्रोत के पास स्थापित होते हैं। इसके विपरीत, जिन उद्योगों के उत्पाद का वजन कच्चे माल से अधिक होता है या जो सर्वव्यापी कच्चे माल (जैसे पानी) का उपयोग करते हैं, वे बाजार के समीप स्थापित होते हैं। वेबर ने श्रम लागत को एक अन्य महत्वपूर्ण कारक माना, जो परिवहन लागत के लाभ को प्रतिसंतुलित कर सकता है। यदि किसी स्थान पर सस्ती श्रम शक्ति के कारण होने वाली बचत, उस स्थान तक परिवहन की अतिरिक्त लागत से अधिक है, तो उद्योग उस सस्ते श्रम केंद्र की ओर आकर्षित हो सकता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. अल्फ्रेड वेबर का न्यूनतम लागत सिद्धांत किस मुख्य कारक पर जोर देता है?
(A) सरकारी नीतियों पर
(B) परिवहन लागत को न्यूनतम करने पर
(C) पर्यावरण संरक्षण पर
(D) अधिकतम राजस्व प्राप्त करने पर

157. 'पदार्थ सूचकांक' की अवधारणा का उपयोग क्या निर्धारित करने के लिए किया जाता है?
(A) उद्योग में आवश्यक श्रमिकों की संख्या।
(B) उत्पादन प्रक्रिया में लगने वाला समय।
(C) उद्योग द्वारा उत्पन्न प्रदूषण का स्तर।
(D) उद्योग कच्चे माल के स्रोत के पास स्थापित होगा या बाजार के पास।

158. एक 'भार-ह्रास' उद्योग, जैसे कि चीनी मिल, की स्थापना के लिए सबसे आदर्श स्थान कौन सा होगा?
(A) गन्ने के खेतों (कच्चा माल) के पास
(B) बंदरगाह के पास
(C) बड़े शहर (बाजार) के पास
(D) सस्ते श्रम वाले क्षेत्र के पास

159. वेबर के सिद्धांत के अनुसार, एक उद्योग अपने न्यूनतम परिवहन लागत बिंदु से कब विस्थापित हो सकता है?
(A) जब कच्चा माल आसानी से उपलब्ध हो।
(B) जब बाजार में मांग बहुत अधिक हो।
(C) जब सस्ते श्रम से होने वाली बचत परिवहन की अतिरिक्त

लागत से अधिक हो।
(D) जब सरकार द्वारा सब्सिडी प्रदान की जाए।

160. निम्नलिखित में से कौन सा उद्योग बाजार के समीप स्थापित होने की प्रवृत्ति रखेगा?
(A) बेकरी और शीतल पेय उद्योग
(B) तांबा प्रगलन उद्योग
(C) लौह-अयस्क उद्योग
(D) एल्यूमीनियम प्रगालक

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
औद्योगिक विकास की एक प्रमुख विशेषता उद्योगों का एक स्थान पर संकेंद्रण या समूहन है, जिसे 'समूहन अर्थव्यवस्था' (Agglomeration Economies) कहा जाता है। जब कई उद्योग एक-दूसरे के करीब स्थापित होते हैं, तो वे सामूहिक रूप से उन लाभों को प्राप्त करते हैं जो उन्हें अकेले स्थापित होने पर नहीं मिलते। इन लाभों में सबसे महत्वपूर्ण है अग्रगामी और पश्चगामी शृंखलाओं (Forward and Backward Linkages) का विकास। एक उद्योग दूसरे के लिए कच्चा माल (पश्चगामी शृंखला) या बाजार (अग्रगामी शृंखला) प्रदान कर सकता है। उदाहरण के लिए, एक इस्पात संयंत्र के पास ऑटोमोबाइल और मशीनरी उद्योग स्थापित हो सकते हैं। इस संकेंद्रण से एक विशिष्ट कौशल वाले श्रम बाजार का विकास होता है, जिससे कंपनियों को आसानी से प्रशिक्षित श्रमिक मिल जाते हैं। इसके अतिरिक्त, सहायक सेवाओं और उद्योगों, जैसे कि बैंकिंग, बीमा, परिवहन, मरम्मत और परामर्श सेवाओं का भी विकास होता है, जो सभी उद्योगों को लाभ पहुँचाते हैं। सरकारें भी इन औद्योगिक संकुलों में सड़क, बिजली और पानी जैसी बेहतर अवसंरचना प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित होती हैं। यद्यपि, अत्यधिक संकेंद्रण के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हो सकते हैं, जैसे कि भूमि की बढ़ती कीमतें, यातायात की भीड़, आवास की कमी और बढ़ा हुआ प्रदूषण। इन नकारात्मक प्रभावों को 'विसमूहन' (Deglomeration) की शक्तियाँ कहा जाता है, जो अंततः उद्योगों को कम भीड़-भाड़ वाले क्षेत्रों में जाने के लिए प्रेरित कर सकती हैं।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. 'समूहन अर्थव्यवस्था' का मूल विचार क्या है?
(A) उद्योगों को अलग-थलग स्थानों पर स्थापित किया जाना चाहिए।
(B) केवल बड़े उद्योगों को ही लाभ होता है।
(C) सरकार को उद्योगों की स्थापना में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।
(D) एक साथ स्थापित होने पर उद्योगों को आपसी लाभ मिलता है।

162. जब एक ऑटोमोबाइल कारखाना एक इस्पात संयंत्र के पास स्थापित होता है, तो यह किस प्रकार की शृंखला का उदाहरण है?
(A) पश्चगामी शृंखला (Backward Linkage)
(B) अग्रगामी शृंखला (Forward Linkage)
(C) क्षैतिज शृंखला (Horizontal Linkage)
(D) ऊर्ध्वाधर शृंखला (Vertical Linkage)

163. निम्नलिखित में से कौन सा औद्योगिक संकेंद्रण का एक सकारात्मक परिणाम है?
(A) भूमि की कीमतों में वृद्धि
(B) यातायात की भीड़ में वृद्धि
(C) विशिष्ट कौशल वाले श्रम बाजार का विकास
(D) बढ़ा हुआ पर्यावरणीय प्रदूषण

164. 'विसमूहन' की शक्तियों से क्या तात्पर्य है?
(A) वे कारक जो उद्योगों को एक साथ आने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
(B) सरकारी नीतियां जो औद्योगिक विकास को बढ़ावा देती हैं।
(C) परिवहन लागत को कम करने के उपाय।
(D) वे नकारात्मक प्रभाव जो अत्यधिक संकेंद्रण के कारण उत्पन्न होते हैं।

165. अनुच्छेद के अनुसार, औद्योगिक संकुल में किस प्रकार की सहायक सेवाओं का विकास होता है?
(A) बैंकिंग, परिवहन और बीमा जैसी व्यावसायिक सेवाएँ
(B) केवल कृषि संबंधी सेवाएँ
(C) केवल सरकारी प्रशासनिक सेवाएँ
(D) केवल मनोरंजन और पर्यटन सेवाएँ

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
समकालीन वैश्विक अर्थव्यवस्था में उच्च-प्रौद्योगिकी उद्योग (High-Technology Industry) विनिर्माण का सबसे गतिशील और महत्वपूर्ण क्षेत्र बनकर उभरा है। ये उद्योग गहन अनुसंधान एवं विकास (R&D) पर आधारित होते हैं और इनमें वैज्ञानिक व इंजीनियरिंग कौशल का उच्च स्तर आवश्यक होता है। पारंपरिक उद्योगों के विपरीत, जो अक्सर कच्चे माल और भारी मशीनरी पर निर्भर होते हैं, उच्च-प्रौद्योगिकी उद्योग 'ज्ञान' और 'नवाचार' को अपने प्राथमिक संसाधन के रूप में उपयोग करते हैं। इन उद्योगों के कार्यबल में 'सफेद-कॉलर' श्रमिकों, जैसे वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और तकनीशियनों का प्रभुत्व होता है, जबकि 'नीले-कॉलर' या उत्पादन श्रमिकों की संख्या अपेक्षाकृत कम होती है। भौगोलिक रूप से, ये उद्योग विशिष्ट क्षेत्रों में केंद्रित होते हैं जिन्हें 'प्रौद्योगिकी ध्रुव' या 'टेक्नोपोल' (Technopole) कहा जाता है, जैसे कैलिफोर्निया की सिलिकॉन वैली। इन ध्रुवों की विशेषता साफ-सुथरे, आधुनिक कार्यालय पार्क, अनुसंधान प्रयोगशालाएं और उच्च गुणवत्ता वाली शहरी सुविधाएं होती हैं। इनकी अवस्थिति के लिए पारंपरिक कारक जैसे कच्चा माल या ऊर्जा स्रोत महत्वपूर्ण नहीं होते। इसके बजाय, ये विश्वविद्यालय और अनुसंधान संस्थानों से निकटता, उद्यम पूंजी (Venture Capital) की उपलब्धता, उत्कृष्ट परिवहन और संचार नेटवर्क, और कुशल पेशेवरों को आकर्षित करने वाले उच्च जीवन स्तर वाले वातावरण को प्राथमिकता देते हैं। ये उद्योग

प्रदूषण नहीं फैलाते और आमतौर पर स्वच्छंद (footloose) प्रकृति के होते हैं।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. उच्च-प्रौद्योगिकी उद्योगों का प्राथमिक संसाधन क्या है?
(A) भारी मशीनरी और कच्चा माल
(B) ज्ञान और नवाचार
(C) सस्ता श्रम
(D) सरकारी सब्सिडी

167. 'टेक्नोपोल' या 'प्रौद्योगिकी ध्रुव' की एक मुख्य विशेषता क्या है?
(A) भारी उद्योगों और कारखानों की उपस्थिति
(B) अनुसंधान संस्थानों और कुशल कार्यबल का संकेंद्रण
(C) कच्चे माल के स्रोतों से निकटता
(D) घनी आबादी वाले शहरी केंद्रों में अवस्थिति

168. उच्च-प्रौद्योगिकी उद्योगों के कार्यबल की संरचना के बारे में क्या सत्य है?
(A) इसमें वैज्ञानिकों और इंजीनियरों जैसे 'सफेद-कॉलर' पेशेवरों का प्रभुत्व होता है।
(B) इसमें मुख्य रूप से अकुशल श्रमिक होते हैं।
(C) 'नीले-कॉलर' श्रमिकों की संख्या 'सफेद-कॉलर' श्रमिकों से अधिक होती है।
(D) श्रमिकों के कौशल का स्तर महत्वपूर्ण नहीं होता है।

169. उच्च-प्रौद्योगिकी उद्योगों को स्थापित करने के लिए निम्नलिखित में से कौन सा कारक सबसे कम महत्वपूर्ण है?
(A) विश्वविद्यालयों से निकटता
(B) उद्यम पूंजी की उपलब्धता
(C) कच्चे माल के स्रोत तक पहुँच
(D) अच्छा संचार नेटवर्क

170. उच्च-प्रौद्योगिकी उद्योगों को अक्सर 'स्वच्छंद' (footloose) क्यों माना जाता है?
(A) क्योंकि वे किसी भी स्थान पर स्थापित हो सकते हैं।
(B) क्योंकि वे बहुत अधिक प्रदूषण फैलाते हैं।
(C) क्योंकि उन्हें बहुत अधिक भूमि की आवश्यकता होती है।
(D) क्योंकि वे कच्चे माल या बाजार जैसे विशिष्ट स्थानिक कारकों से बंधे नहीं होते हैं।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
विनिर्माण उद्योगों का वर्गीकरण कई आधारों पर किया जाता है, जिनमें से एक प्रमुख आधार उत्पाद की प्रकृति है। इस आधार पर, उद्योगों को मुख्य रूप से दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है: आधारभूत उद्योग (Basic Industries) और उपभोक्ता वस्तु उद्योग (Consumer Goods Industries)। आधारभूत उद्योग वे उद्योग हैं जिनके उत्पाद का उपयोग अन्य उद्योगों द्वारा अपने उत्पादन के लिए कच्चे माल के रूप में किया जाता है। ये उद्योग औद्योगिक संरचना की नींव का निर्माण करते हैं। इसका सबसे प्रमुख उदाहरण लौह-इस्पात उद्योग है। इस्पात का उपयोग मशीनरी, परिवहन उपकरण, निर्माण सामग्री और अनगिनत अन्य उत्पादों को बनाने के लिए किया जाता है। इसी प्रकार, भारी रसायन उद्योग और एल्यूमीनियम प्रगलन उद्योग भी आधारभूत उद्योगों की श्रेणी में आते हैं। इसके विपरीत, उपभोक्ता वस्तु उद्योग ऐसे उत्पादों का निर्माण करते हैं जो सीधे अंतिम उपभोक्ताओं द्वारा उपभोग किए जाते हैं। इन उद्योगों का उत्पाद सीधे बाजार में उपभोक्ताओं को बेचा जाता है। इसके उदाहरणों में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग (जैसे बिस्कुट, शीतल पेय), वस्त्र उद्योग, इलेक्ट्रॉनिक्स (जैसे टेलीविजन, स्मार्टफोन), और ऑटोमोबाइल उद्योग (यात्री कारों के लिए) शामिल हैं। किसी देश का औद्योगिक विकास इन दोनों प्रकार के उद्योगों के संतुलित विकास पर निर्भर करता है। एक मजबूत आधारभूत औद्योगिक ढांचा उपभोक्ता उद्योगों के विकास के लिए एक ठोस आधार प्रदान करता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. उत्पाद की प्रकृति के आधार पर उद्योगों का मुख्य वर्गीकरण क्या है?
(A) सार्वजनिक और निजी उद्योग
(B) छोटे पैमाने और बड़े पैमाने के उद्योग
(C) आधारभूत और उपभोक्ता वस्तु उद्योग
(D) कृषि आधारित और खनिज आधारित उद्योग

172. निम्नलिखित में से कौन सा एक आधारभूत उद्योग का उदाहरण है?
(A) वस्त्र उद्योग
(B) लौह-इस्पात उद्योग
(C) बिस्कुट बनाने का कारखाना
(D) टेलीविजन निर्माण इकाई

173. 'उपभोक्ता वस्तु उद्योग' की क्या परिभाषा है?
(A) वे उद्योग जो अन्य उद्योगों के लिए कच्चा माल बनाते हैं।
(B) वे उद्योग जो केवल निर्यात के लिए उत्पादन करते हैं।
(C) वे उद्योग जो प्राकृतिक संसाधनों का निष्कर्षण करते हैं।
(D) वे उद्योग जो सीधे अंतिम उपभोक्ताओं द्वारा उपभोग के लिए सामान बनाते हैं।

174. एक देश के औद्योगिक विकास के लिए क्या आवश्यक है, जैसा कि अनुच्छेद में सुझाया गया है?
(A) आधारभूत और उपभोक्ता वस्तु उद्योगों का संतुलित विकास।
(B) केवल उपभोक्ता वस्तु उद्योगों पर ध्यान केंद्रित करना।
(C) केवल आधारभूत उद्योगों पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) आयातित वस्तुओं पर पूर्ण निर्भरता।

175. यदि कोई कंपनी मशीनों के निर्माण के लिए इस्पात का उपयोग करती है, तो इस्पात उद्योग उस कंपनी के लिए किस प्रकार का उद्योग है?
(A) एक उपभोक्ता वस्तु उद्योग

120. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (उद्योग का वर्गीकरण आधार)
P. आकार
Q. कच्चा माल
R. उत्पाद
S. स्वामित्व
List II: (उदाहरण श्रेणी)
1. आधारभूत उद्योग
2. निजी क्षेत्र
3. कुटीर उद्योग
4. कृषि आधारित
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

121. निम्नलिखित में से कौन सी गतिविधि द्वितीयक क्रिया नहीं है?
(A) इस्पात गढ़ना
(B) वस्त्र बनाना
(C) मछली पकड़ना
(D) रोटी (ब्रेड) बनाना

122. आधुनिक निर्माण की अनियमित भौगोलिक वितरण की क्या विशेषता है?
(A) 10% से कम भू-भाग
(B) विश्व के समस्त भौगोलिक क्षेत्रों में एक समान विस्तार
(C) केवल विकासशील एवं कम आय वाले राष्ट्रों में संकेंद्रण
(D) प्राथमिक कृषि कार्यों की तुलना में वृहत क्षेत्रों में प्रसार

123. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. उद्योग अपनी लागत घटाकर लाभ को बढ़ाते हैं।
2. बाज़ार से तात्पर्य केवल जनसंख्या घनत्व से है।
3. भारी वजन वाले उद्योग कच्चे माल के स्रोत से दूर स्थापित होते हैं।
4. स्वच्छंद उद्योग प्रदूषण नहीं फैलाते हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

124. किस प्रकार के देशों में 'कृषि व्यापार' (Agri-business) अधिक प्रचलित है?
(A) अल्पविकसित एवं विकासशील आर्थिक तंत्र वाले देशों में
(B) औद्योगिक दृष्टि से उन्नत एवं विकसित राष्ट्रों में
(C) केवल राज्य नियंत्रित समाजवादी विचारधारा वाले देशों में
(D) समुद्री सीमाओं से घिरे लघु एवं छोटे द्वीपीय देशों में

125. पेट्रो-रसायन उद्योग किस प्रकार के उद्योग का उदाहरण है?
(A) कृषि आधारित
(B) खनिज आधारित
(C) रसायन आधारित
(D) वन आधारित

126. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. विनिर्माण द्वितीयक क्रिया का अंग है।
2. छोटे पैमाने के उद्योग में मुख्यतः हाथ के औजारों का प्रयोग होता है।
3. बड़े पैमाने के उद्योग के लिए विशाल बाजार आवश्यक है।
4. लौह-इस्पात एक आधारभूत उद्योग है।
5. सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग सरकार के अधीन होते हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से असत्य है/हैं?
(A) केवल 2
(B) केवल 4 और 5
(C) केवल 1 और 3
(D) केवल 2 और 5

127. निम्नलिखित में से कौन सा एक उपभोक्ता वस्तु उद्योग का उदाहरण है?
(A) शृंगार सामान
(B) लौह-इस्पात
(C) मशीन निर्माण
(D) सीमेंट उत्पादन

128. नियोजित व्यवसाय पार्क का निर्माण किस प्रकार के उद्योगों से संबंधित है?
(A) कुटीर उद्योग
(B) उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग
(C) छोटे पैमाने के उद्योग
(D) परंपरागत बड़े पैमाने के उद्योग

129. विनिर्माण प्रक्रिया में अंतिम उत्पाद कच्चे माल की तुलना में कैसा होता है?
(A) कम मूल्यवान और कम उपयोगी
(B) अधिक मूल्यवान और अधिक उपयोगी
(C) समान मूल्यवान और समान उपयोगी
(D) अधिक मूल्यवान लेकिन कम उपयोगी

130. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): यंत्रीकरण के कारण उद्योगों में श्रमिकों पर निर्भरता कम हुई है।
कारण (R): यंत्रीकरण से तात्पर्य है किसी कार्य को पूर्ण करने के लिए मशीनों का प्रयोग करना, जिससे मानवीय श्रम की आवश्यकता घटती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही

ANSWERS

1. (B) प्राकृतिक संसाधनों का मूल्य बढ़ाना
द्वितीयक क्रियाओं का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का प्रसंस्करण करके उनके उपयोगिता मूल्य में वृद्धि करना है। ये गतिविधियाँ कच्चे माल को अधिक मूल्यवान तैयार माल में बदल देती हैं। विनिर्माण और प्रसंस्करण जैसे कार्यों के माध्यम से संसाधनों का रूप परिवर्तित किया जाता है। इससे समाज की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होती है क्योंकि परिष्कृत उत्पादों की बाज़ार में कीमत अधिक होती है।

2. (A) उत्पादन केवल स्थानीय बाजार के लिए
आधुनिक विनिर्माण की सामान्य विशेषताओं में शक्ति का उपयोग, विशाल उत्पादन और कारखानों में विशिष्ट श्रमिक शामिल होते हैं। इसमें निर्मित वस्तुओं को बड़े स्तर पर वैश्विक या क्षेत्रीय बाज़ारों में बेचा जाता है। केवल स्थानीय बाज़ार के लिए उत्पादन करना कुटीर उद्योगों की विशेषता है, न कि आधुनिक विनिर्माण की। विनिर्माण क्षेत्र व्यापक व्यापार और विस्तृत वितरण प्रणालियों पर आधारित होता है।

3. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
लौह-अयस्क से इस्पात बनाने की प्रक्रिया एक द्वितीयक गतिविधि है जो वस्तु का मूल्य बढ़ा देती है। द्वितीयक गतिविधियाँ प्रकृति में उपलब्ध कच्चे माल का स्वरूप बदलकर उसे अधिक उपयोगी और कीमती बनाती हैं। इस्पात निर्माण इसी सिद्धांत का सटीक उदाहरण है जहाँ अशुद्ध खनिजों को शोधित करके औद्योगिक उत्पाद बनाया जाता है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य और एक-दूसरे के पूरक हैं।

4. (D) हाथ से बनाना
'विनिर्माण' शब्द लैटिन भाषा के शब्दों से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ हाथ से बनाना है। यद्यपि वर्तमान समय में विनिर्माण में मशीनों का व्यापक प्रयोग होता है, किंतु इसके मूल अर्थ में मानवीय कौशल और शारीरिक श्रम निहित था। ऐतिहासिक रूप से यह हस्तशिल्प और कारीगरी से जुड़ा रहा है। आज इसमें जटिल मशीनी प्रणालियों और आधुनिक प्रौद्योगिकी का समन्वय देखने को मिलता है।

5. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
आर्थिक क्रियाओं का वर्गीकरण उनकी प्रकृति के आधार पर किया जाता है। कपास की खेती एक प्राथमिक क्रिया है क्योंकि यह सीधे प्रकृति से जुड़ी है। कपास से वस्त्र बनाना विनिर्माण या द्वितीयक क्रिया के अंतर्गत आता है। वस्त्रों का परिवहन सेवा क्षेत्र होने के कारण तृतीयक क्रिया है। वस्त्र डिजाइनिंग में विशिष्ट ज्ञान और अनुसंधान शामिल है, इसलिए यह चतुर्थक क्रिया है।

6. (B) कार्य संपादन हेतु मशीनों का अनुप्रयोग करना
यंत्रीकरण से तात्पर्य किसी भी कार्य को पूरा करने के लिए मशीनों का प्रयोग करना है। यह मानवीय श्रम के स्थान पर या उसके सहायक के रूप में यांत्रिक उपकरणों के उपयोग की प्रक्रिया है। औद्योगिक विकास में यंत्रीकरण एक महत्वपूर्ण चरण है जिसने उत्पादन की गति और दक्षता को बढ़ाया है। इसमें साधारण औजारों से लेकर जटिल मशीनी तंत्रों का अनुप्रयोग शामिल हो सकता है।

7. (D) जटिल प्रौद्योगिकी तंत्र एवं उच्च विशिष्टीकरण
आधुनिक निर्माण की प्रमुख विशेषताओं में जटिल प्रौद्योगिकी तंत्र और उच्च स्तर का विशिष्टीकरण शामिल है। इसमें श्रम विभाजन के माध्यम से प्रत्येक कार्य को विशिष्ट तरीके से किया जाता है। यह पद्धति कम प्रयास में अधिक उत्पादन सुनिश्चित करती है। इसके लिए विशाल संगठन, बड़ी मात्रा में पूँजी निवेश और उन्नत प्रशासनिक अधिकारी वर्ग की आवश्यकता होती है, जो इसे परंपरागत उद्योगों से अलग बनाते हैं।

8. (C) केवल 1, 2 और 3
आधुनिक बड़े पैमाने के विनिर्माण में जटिल प्रौद्योगिकी, विशिष्टीकरण और श्रम विभाजन मुख्य तत्व हैं। यह प्रणाली कम लागत पर अधिक माल का उत्पादन करने में सक्षम होती है। इसके विपरीत, ऐसे उद्योगों के लिए अल्प पूँजी नहीं बल्कि बहुत अधिक पूँजी और बड़े प्रशासनिक संगठनों की आवश्यकता होती है। अतः कथन 4 और 5 गलत हैं क्योंकि वे इन उद्योगों की विशेषताओं के विपरीत हैं।

9. (C) पर्याप्त बाज़ार
किसी भी उद्योग की स्थापना में बाज़ार तक पहुँच सबसे प्रमुख कारक मानी जाती है। बाज़ार से तात्पर्य निर्मित वस्तुओं की मांग और वहां के लोगों की क्रय करने की क्षमता से है। यदि बाज़ार उपलब्ध नहीं है, तो उत्पादन का कोई आर्थिक महत्व नहीं रह जाता। उद्योगों का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना है, जो केवल तभी संभव है जब उनके उत्पादों के लिए पर्याप्त ग्राहक मौजूद हों।

10. (A) निर्मित वस्तुओं की मांग एवं क्रय करने की क्षमता
बाज़ार का अर्थ केवल एक विशिष्ट स्थान नहीं है, बल्कि यह निर्मित वस्तुओं की मांग और उन्हें खरीदने की लोगों की आर्थिक क्षमता को दर्शाता है। दूरस्थ क्षेत्रों में कम जनसंख्या वाले स्थानों पर मांग कम होने के कारण बाज़ार छोटा होता है। इसके विपरीत, घने बसे हुए विकसित क्षेत्रों में क्रय शक्ति अधिक होने से बाज़ार विस्तृत होता है, जो उद्योगों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 2, 3 और 5
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) केवल 4 और 5

142. तृतीय विश्व के देशों में किस प्रकार के विनिर्माण पर अधिक बल दिया जाता है?
(A) जिसमें उत्पादन का अति जटिल तंत्र हो
(B) केवल उच्च प्रौद्योगिकी वाले उद्योग
(C) केवल निर्यात-उन्मुख उद्योग
(D) जिसमें उत्पादन का कम जटिल तंत्र हो

143. कौन सा कारक औद्योगिक अवस्थिति को निश्चित करने में अब कम महत्त्वपूर्ण हो गया है, जिसका कारण खनिज तेल एवं जलविद्युत का विकास है?
(A) शक्ति हेतु कोयले की उपलब्धता का महत्त्व
(B) उपभोग हेतु निकटवर्ती बाज़ार की उपलब्धता
(C) उत्पादन हेतु पर्याप्त कुशल श्रम की सुलभता
(D) माल के आवागमन हेतु तीव्र परिवहन की सुविधा

144. निम्नलिखित में से कौन सा एक कथन 'स्वचालन' को सर्वोत्तम रूप से परिभाषित करता है?
(A) हस्तशिल्प एवं शारीरिक श्रम द्वारा कार्य का संपादन
(B) बिना मानवीय हस्तक्षेप के स्वचालित निर्माण प्रक्रिया
(C) निर्माण के दौरान केवल साधारण मशीनों का सीमित प्रयोग
(D) मात्र कंप्यूटर प्रणालियों द्वारा की जाने वाली प्रोग्रामिंग

145. मानव द्वारा वस्तुओं के निर्माण के विकास को ऐतिहासिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. औद्योगिक क्रांति के बाद बड़े पैमाने पर कारखाना उत्पादन
2. उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग एवं स्वचालन
3. स्थानीय कच्चे माल से साधारण औजारों द्वारा हस्तशिल्प निर्माण
4. छोटे पैमाने के कारखानों में शक्ति-चालित यंत्रों का प्रयोग

(A) 3, 1, 4, 2
(B) 1, 3, 4, 2
(C) 3, 4, 1, 2
(D) 2, 4, 1, 3

146. 'परिवहनीयता में सुधार' का विनिर्माण पर क्या प्रभाव पड़ता है?
(A) समाकलित आर्थिक विकास एवं प्रादेशिक विशिष्टता में वृद्धि
(B) किसी भी राष्ट्र के संतुलित आर्थिक विकास की प्रक्रिया को रोकना
(C) औद्योगिक इकाइयों को मात्र एक भौगोलिक स्थान पर संकेंद्रित करना
(D) विनिर्माण एवं वितरण की प्रणालियों पर कोई प्रभाव न डालना

147. निम्नलिखित में से कौन सा एक पशु आधारित उद्योग है?
(A) वनों पर आधारित कागज़ उद्योग
(B) कृषि उत्पादों पर आधारित चीनी उद्योग
(C) ऊनी वस्त्र निर्माण की इकाइयाँ
(D) रेशों पर आधारित जूट उत्पादन उद्योग

148. निम्नलिखित में से कौन सा एक कथन असत्य है?
(A) विनिर्माण प्रणालियों का एक अनिवार्य द्वितीयक क्रिया होना
(B) वृहत स्तरीय उद्योगों के संचालन हेतु अत्यधिक पूंजी की आवश्यकता
(C) आधारभूत श्रेणी में होना
(D) स्वच्छंद उद्योगों की कच्चे माल के स्रोतों पर पूर्ण निर्भरता

149. "विनिर्माण उद्योग" और " उद्योग" में मुख्य अंतर क्या है?
(A) दोनों शब्दावलियाँ पूर्णतः एक समान एवं एक दूसरे की पर्यायवाची हैं
(B) विनिर्माण उद्योग का संबंध केवल हस्तशिल्प एवं लघु कार्यों से होता है
(C) उद्योग एक व्यापक श्रेणी है जिसमें सेवाएँ भी शामिल हो सकती हैं
(D) उद्योग शब्द का प्रयोग मात्र विशाल मशीनीकृत कारखानों हेतु किया जाता है

150. आधुनिक बड़े पैमाने के विनिर्माण के लिए निम्नलिखित में से किस एक की आवश्यकता नहीं होती है?
(A) अत्यधिक विशिष्टीकरण
(B) कम पूँजी
(C) बड़े संगठन
(D) प्रशासकीय अधिकारी वर्ग

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

द्वितीयक आर्थिक क्रियाओं का केंद्र बिंदु विनिर्माण है, जो औद्योगिक क्रांति के साथ आमूलचूल रूप से परिवर्तित हो गया। अठारहवीं शताब्दी से पूर्व, उत्पादन मुख्य रूप से कुटीर उद्योगों के माध्यम से होता था, जहाँ कारीगर अपने घरों में परिवार के सदस्यों की सहायता से स्थानीय कच्चे माल और सरल औजारों का उपयोग करके वस्तुओं का निर्माण करते थे। यह उत्पादन छोटे पैमाने पर और मुख्यतः स्थानीय खपत के लिए होता था। औद्योगिक क्रांति ने इस प्रणाली को कारखाना प्रणाली से प्रतिस्थापित कर दिया। जेम्स वॉट के भाप इंजन और बाद में अन्य मशीनों के आविष्कार ने उत्पादन को यंत्रीकृत कर दिया, जिससे बड़े पैमाने पर उत्पादन संभव हुआ। कारखाने उत्पादन के नए केंद्र बन गए, जहाँ बड़ी संख्या में श्रमिक एक ही छत के नीचे मशीनों पर काम करते थे। इस परिवर्तन ने न केवल उत्पादन की मात्रा और गति को बढ़ाया, बल्कि श्रम के विशिष्टीकरण को भी जन्म दिया, जहाँ प्रत्येक श्रमिक उत्पादन प्रक्रिया के एक छोटे हिस्से में विशेषज्ञता प्राप्त करता था। इस प्रक्रिया ने शहरीकरण को तीव्र गति

का प्रयोग किया जाता है। कुटीर उद्योग में केवल पारिवारिक सदस्य और साधारण औजार होते हैं। छोटे पैमाने के उद्योग स्थानीय बाज़ार के साथ-साथ रोजगार के अधिक अवसर प्रदान करते हैं और उन्नत तकनीक अपनाते हैं।

23. (D) स्थानीय कच्चा माल
बड़े पैमाने के उद्योगों के लिए विशाल बाज़ार, अधिक पूँजी और विकसित प्रौद्योगिकी की आवश्यकता अनिवार्य है। ये उद्योग कच्चे माल के लिए स्थानीय स्रोतों पर निर्भर नहीं होते, बल्कि विश्व के विभिन्न हिस्सों से सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। इनकी उत्पादन क्षमता बहुत अधिक होती है और ये जटिल संगठनात्मक ढांचे के अंतर्गत कार्य करते हैं। स्थानीय कच्चे माल की अनुपलब्धता इनके विकास में कभी बाधा नहीं बनती है।

24. (A) केवल 1, 2 और 3
बड़े पैमाने के उद्योगों के लिए विशाल बाज़ार, कुशल श्रम, भारी पूँजी और उन्नत तकनीक की आवश्यकता होती है। ये उद्योग वैश्विक स्तर पर फैले हुए हैं और इनका इतिहास औद्योगिक क्रांति से जुड़ा है। कथन 4 और 5 गलत हैं क्योंकि इन उद्योगों का विकास सदियों पुराना है और ये अब लगभग सभी महाद्वीपों में मौजूद हैं। ये केवल यूरोप या ब्रिटेन तक ही सीमित नहीं रह गए हैं।

25. (C) अधिक विकसित देशों में
परंपरागत वृहत औद्योगिक प्रदेश मुख्य रुप से अधिक विकसित देशों में पाए जाते हैं जहाँ औद्योगिक क्रांति की शुरुआत हुई थी। इन क्षेत्रों में बुनियादी ढाँचा, परिवहन तंत्र और बाज़ार का विकास बहुत पहले हो चुका था। पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका के पूर्वी भाग इसके प्रमुख उदाहरण हैं। यद्यपि अब ये प्रदेश पर्यावरणीय समस्याओं का सामना कर रहे हैं, फिर भी औद्योगिक इतिहास में इनका स्थान महत्वपूर्ण है।

26. (A) सीमेंट उद्योग
सीमेंट उद्योग एक खनिज आधारित उद्योग है क्योंकि इसमें चूना पत्थर और जिप्सम जैसे अधात्विक खनिजों का उपयोग होता है। इसके विपरीत, शक्कर, वस्त्र और पेय पदार्थ उद्योग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि उत्पादों पर निर्भर करते हैं। कृषि आधारित उद्योगों के लिए कच्चा माल खेतों और बागानों से प्राप्त होता है। सीमेंट के उत्पादन में मिट्टी और पत्थर के खनिजों की आवश्यकता प्राथमिक होती है।

27. (D) वृहत पैमाने पर की जाने वाली व्यापारिक कृषि प्रणाली
'कृषि व्यापार' या एग्री-बिजनेस का तात्पर्य व्यापारिक स्तर पर की जाने वाली उस कृषि प्रणाली से है जिसमें खेती का स्वरुप औद्योगिक होता है। इसमें बड़े फार्मों पर यंत्रीकृत ढंग से फसलों का उत्पादन किया जाता है। इसमें बीजों के चयन से लेकर प्रसंस्करण और विपणन तक की प्रक्रियाएं शामिल होती हैं। यह मुख्य रूप से विकसित देशों में प्रचलित है और इसमें भारी निवेश की आवश्यकता होती है।

28. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
सीमेंट उद्योग पूर्णतः खनिजों पर आधारित है, इसलिए इसे खनिज आधारित उद्योग कहा जाता है। इसमें मुख्य कच्चे माल के रुप में चूना पत्थर, कोयला और जिप्सम जैसे अधात्विक खनिजों का उपयोग किया जाता है। ये खनिज प्रकृति से प्राप्त होते हैं और इनके बिना सीमेंट का निर्माण संभव नहीं है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं और एक-दूसरे की सही व्याख्या करते हैं।

29. (C) कच्चा खनिज तेल या पेट्रोलियम
पेट्रो रसायन उद्योग में कच्चे माल के रूप में खनिज तेल या पेट्रोलियम का उपयोग किया जाता है। रिफाइनरी से प्राप्त होने वाले विभिन्न सह-उत्पादों का उपयोग करके प्लास्टिक, कृत्रिम रेशे और उर्वरक जैसी वस्तुएं बनाई जाती हैं। यह एक आधुनिक रसायन आधारित उद्योग है जो वर्तमान अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी अवस्थिति अक्सर तेल शोधन शालाओं के निकट या बंदरगाहों के पास होती है।

30. (A) 3, 4, 2, 1
विनिर्माण का विकास कुटीर उद्योगों से प्रारंभ हुआ जहाँ घरेलू स्तर पर कार्य होता था। इसके बाद छोटे पैमाने के उद्योगों का उदय हुआ। औद्योगिक क्रांति के साथ परंपरागत वृहत औद्योगिक प्रदेश विकसित हुए। सबसे नवीनतम चरण उच्च प्रौद्योगिकी उद्योगों का विकास है। यह कालानुक्रमिक क्रम तकनीकी प्रगति और औद्योगिक संगठन के विस्तार को दर्शाता है। यह विकास मानव सभ्यता की आर्थिक प्रगति का परिचायक है।

31. (A) कागज़ उद्योग
कागज़ उद्योग एक वन आधारित उद्योग है क्योंकि इसके निर्माण के लिए लकड़ी, बाँस और घास जैसी वनस्पति सामग्री की आवश्यकता होती है। वनों से प्राप्त लुगदी इसका प्राथमिक कच्चा माल है। अन्य विकल्प जैसे प्लास्टिक रासायनिक है, सीमेंट खनिज आधारित है और ऊनी वस्त्र पशु आधारित है। कागज़ निर्माण की प्रक्रिया वनों के सतत प्रबंधन और कच्ची सामग्री की उपलब्धता पर गहराई से निर्भर करती है।

32. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
कच्चे माल के आधार पर उद्योगों का सटीक मिलान उनके स्रोतों से किया जा सकता है। सूती वस्त्र कृषि आधारित है क्योंकि कपास खेतों में पैदा होता है। लौह-इस्पात खनिज आधारित है क्योंकि इसमें अयस्क का प्रयोग होता है। कागज़ निर्माण वनों की लकड़ी पर निर्भर है, इसलिए यह वन आधारित है। चमड़ा पशुओं से प्राप्त होता है, अतः यह पशु आधारित उद्योग की श्रेणी में आता है।

33. (B) आधारभूत उद्योग
वे उद्योग जो अन्य उद्योगों के लिए कच्चे माल या मशीनों का उत्पादन करते हैं, आधारभूत उद्योग कहलाते हैं। इनका उत्पाद सीधे उपभोक्ताओं द्वारा उपयोग नहीं किया जाता, बल्कि अन्य वस्तुओं के निर्माण में प्रयुक्त होता है। लौह-इस्पात उद्योग

3 भी गलत है क्योंकि भारी वजन वाले उद्योग परिवहन खर्च बचाने के लिए कच्चे माल के स्रोत के पास ही स्थित होते हैं। अतः केवल कथन 1 और 4 ही उद्योगों के सिद्धांतों के अनुसार सही हैं।

124. (B) औद्योगिक दृष्टि से उन्नत एवं विकसित राष्ट्रों में
'कृषि व्यापार' या एग्री-बिजनेस की संकल्पना मुख्य रूप से औद्योगिक रूप से विकसित राष्ट्रों में प्रचलित है। यहाँ खेती को एक व्यवसाय के रूप में लिया जाता है जिसमें उच्च स्तर का पूँजी निवेश, यंत्रीकरण और वैज्ञानिक प्रबंधन होता है। इन देशों में खेतों का आकार बहुत बड़ा होता है और पूरी प्रक्रिया कारखाने की तरह संचालित होती है। यह विकासशील देशों की परंपरागत खेती से बिल्कुल अलग और आधुनिक है।

125. (C) रसायन आधारित
पेट्रो-रसायन उद्योग एक रसायन आधारित उद्योग है क्योंकि इसमें खनिज तेल और प्राकृतिक गैस के रासायनिक सह-उत्पादों का उपयोग किया जाता है। इन रसायनों का प्रसंस्करण करके प्लास्टिक, सिंथेटिक रबर और दवाएं जैसी महत्वपूर्ण वस्तुएं बनाई जाती हैं। यह उद्योग आधुनिक युग की औद्योगिक प्रगति का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह कृषि या वन आधारित न होकर पूर्णतः रासायनिक विज्ञान और पेट्रोलियम शोधन पर निर्भर करता है।

126. (A) केवल 2
छोटे पैमाने के उद्योगों में केवल हाथ के औजारों का प्रयोग नहीं होता, बल्कि बिजली से चलने वाली मशीनों और अर्धकुशल श्रमिकों का उपयोग किया जाता है। हाथ के औजारों का मुख्य प्रयोग कुटीर उद्योगों में होता है। अन्य सभी कथन सत्य हैं; विनिर्माण द्वितीयक क्रिया है, इस्पात आधारभूत है और सार्वजनिक क्षेत्र सरकार के अधीन है। अतः कथन 2 औद्योगिक विशेषताओं के संदर्भ में तथ्यात्मक रूप से गलत है।

127. (A) श्रृंगार सामान
श्रृंगार सामान उपभोक्ता वस्तु उद्योग का उदाहरण है क्योंकि ये उत्पाद सीधे व्यक्तिगत उपभोक्ताओं द्वारा उपयोग किए जाते हैं। इस्पात, मशीन निर्माण और सीमेंट या तो आधारभूत उद्योग हैं या अन्य विनिर्माण कार्यों में प्रयुक्त होते हैं। उपभोक्ता वस्तु उद्योग उन सामानों का निर्माण करते हैं जो हमारे दैनिक जीवन की आवश्यकताओं और इच्छाओं को पूरा करते हैं। यह आर्थिक चक्र में उपभोग के अंतिम चरण को दर्शाता है।

128. (B) उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग
नियोजित व्यवसाय पार्कों का निर्माण उच्च प्रौद्योगिकी उद्योगों की एक विशिष्ट पहचान है। ये पार्क आधुनिक बुनियादी ढांचे, संचार सुविधाओं और प्रयोगशालाओं से लैस होते हैं। यहाँ वातावरण बहुत स्वच्छ और पेशेवर होता है। पारंपरिक औद्योगिक क्षेत्रों के विपरीत, यहाँ भारी प्रदूषण और भीड़भाड़ नहीं होती। ये पार्क नवाचार, शोध और उच्च तकनीकी उत्पादन के लिए एक आदर्श वातावरण प्रदान करने के उद्देश्य से बनाए जाते हैं।

129. (B) अधिक मूल्यवान और अधिक उपयोगी
विनिर्माण प्रक्रिया के बाद अंतिम उत्पाद कच्चे माल की तुलना में हमेशा अधिक मूल्यवान और उपयोगी होता है। उदाहरण के लिए, रुई की तुलना में उससे बना कपड़ा अधिक कीमती होता है क्योंकि उसमें श्रम और तकनीक का निवेश किया गया है। यह मूल्यवर्धन ही विनिर्माण का मुख्य उद्देश्य है। इससे उपभोक्ताओं को बेहतर वस्तुएं मिलती हैं और अर्थव्यवस्था में आर्थिक मूल्य और संपदा का सृजन होता है।

130. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
यंत्रीकरण का अर्थ है मानवीय श्रम के स्थान पर मशीनों का उपयोग करना। इससे उद्योगों में बड़ी संख्या में श्रमिकों की आवश्यकता कम हो जाती है क्योंकि मशीनें अधिक तेजी और परिशुद्धता से कार्य कर सकती हैं। इससे उत्पादन लागत घटती है और कार्यक्षमता बढ़ती है। आधुनिक स्वचालन इसी प्रक्रिया का अगला चरण है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं और एक-दूसरे की सही तार्किक व्याख्या करते हैं।

131. (C) आधारभूत उद्योग
एक उद्योग जो अन्य उद्योगों के लिए मशीनें और उपकरण बनाता है, उसे आधारभूत उद्योग कहा जाता है। ये उद्योग औद्योगिक ढांचे की नींव होते हैं क्योंकि इनके बिना अन्य वस्तुओं का विनिर्माण संभव नहीं है। लौह-इस्पात और भारी इंजीनियरिंग इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इनका उत्पाद सीधे बाजार में नहीं बिकता बल्कि विनिर्माण क्षेत्र की अन्य इकाइयों को सशक्त बनाता है। यह देश की औद्योगिक आत्मनिर्भरता के लिए महत्वपूर्ण है।

132. (D) सूती वस्त्र उद्योग
सूती वस्त्र उद्योग एक कृषि आधारित उद्योग है क्योंकि इसका मुख्य कच्चा माल कपास खेतों से प्राप्त होता है। अन्य विकल्प जैसे पेट्रो-रसायन, नमक और प्लास्टिक उद्योग रसायनों और प्राकृतिक गैसों के उपयोग पर आधारित हैं। रसायन आधारित उद्योगों में जटिल रासायनिक प्रतिक्रियाओं का प्रयोग होता है, जबकि सूती वस्त्र उद्योग प्राकृतिक रेशों के धागे बनाने और उनकी बुनाई पर केंद्रित रहता है।

133. (C) घरेलू अथवा कुटीर निर्माण की इकाई
आँगन में मिट्टी के बर्तन बनाना घरेलू या कुटीर उद्योग की श्रेणी में आता है। इसमें स्थानीय मिट्टी का उपयोग होता है और काम पारिवारिक सदस्यों के सहयोग से किया जाता है। इसमें मशीनों का प्रयोग नहीं होता और पूँजी निवेश भी नगण्य रहता है। यह आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह दर्शाता है कि विनिर्माण की जड़ें बहुत ही सरल और स्थानीय स्तर पर स्थित हैं।

134. (B) प्रशासकीय अधिकारी वर्ग की आवश्यकता होती है।
आधुनिक विनिर्माण में संगठनात्मक ढांचा बहुत जटिल होता है, इसलिए इसमें एक कुशल प्रशासकीय अधिकारी वर्ग की अनिवार्य आवश्यकता होती है। यह वर्ग उत्पादन के नियोजन, वित्त प्रबंधन, श्रम नियंत्रण और विपणन कार्यों को संभालता है। बिना उचित प्रबंधन के बड़े पैमाने के उद्योगों का संचालन

45. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
उद्योगों के आकार और विशेषताओं का मिलान उनकी उत्पादन पद्धति को स्पष्ट करता है। कुटीर उद्योग परिवार के सदस्यों और साधारण औजारों पर आधारित है। छोटे पैमाने के उद्योगों में शक्ति चालित यंत्र और अर्धकुशल श्रमिक होते हैं। बड़े पैमाने के उद्योगों के लिए विशाल बाज़ार और भारी पूँजी अनिवार्य है। उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग पूर्णतः गहन शोध और तकनीकी नवाचार के सिद्धांतों पर कार्य करते हैं।

46. (D) अपशिष्ट निस्तारण एवं उत्पादन दक्षता में वृद्धि करना
प्रौद्योगिकीय नवाचार का एक मुख्य उद्देश्य उत्पादन की दक्षता को बढ़ाना और अपशिष्ट निस्तारण की बेहतर विधियां खोजना है। यह विनिर्माण प्रक्रिया को अधिक सुव्यवस्थित और पर्यावरण के अनुकूल बनाता है। नवाचार के माध्यम से प्रदूषण को कम करने और संसाधनों के न्यूनतम उपयोग से अधिकतम आउटपुट प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। यह आधुनिक उद्योगों की प्रतिस्पर्धात्मकता और स्थिरता के लिए अत्यंत आवश्यक पहलू है।

47. (A) 10 प्रतिशत
आधुनिक निर्माण के मुख्य संकेंद्रण विश्व के कुल स्थलीय भाग के 10 प्रतिशत से भी कम भू-भाग पर विस्तृत हैं। ये क्षेत्र औद्योगिक दृष्टि से अत्यंत शक्तिशाली हैं और वैश्विक अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करते हैं। विनिर्माण का यह संकेंद्रण परिवहन, बाज़ार और संसाधनों की सुलभ उपलब्धता वाले चुनिंदा क्षेत्रों में ही हुआ है। यह दर्शाता है कि औद्योगिक विकास भौगोलिक दृष्टि से बहुत ही असमान और केंद्रित है।

48. (A) केवल 1, 2 और 3
स्वच्छंद उद्योग किसी विशिष्ट कच्चे माल पर निर्भर नहीं होते और सामान्यतः प्रदूषण नहीं फैलाते हैं। इनमें उत्पादन की मात्रा कम होती है और श्रमिकों की आवश्यकता भी सीमित रहती है। इनकी स्थापना के लिए जलमार्गों की अनिवार्यता नहीं होती, बल्कि ये सड़क जाल के माध्यम से कहीं भी स्थापित किए जा सकते हैं। अतः कथन 4 गलत है क्योंकि ये उद्योग सड़क अभिगम्यता को प्राथमिकता देते हैं।

49. (B) इलेक्ट्रॉनिक संघटक पुर्जों का निर्माण
इलेक्ट्रॉनिक संघटक पुर्जों का निर्माण स्वच्छंद उद्योग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। ये उद्योग भारी कच्चे माल के स्थान पर संघटक पुर्जों का उपयोग करते हैं जिन्हें कहीं भी ले जाया जा सकता है। इसके विपरीत, चीनी, सीमेंट और लौह-इस्पात उद्योग भारी और वजन घटने वाले कच्चे माल पर निर्भर होते हैं। स्वच्छंद उद्योगों के लिए सड़क संपर्क और परिवहन की सुविधा स्थान चयन का मुख्य आधार होती है।

50. (D) उपरोक्त सभी पर
उद्योगों के आकार का निर्धारण निवेशित पूँजी की मात्रा, कार्यरत श्रमिकों की संख्या और उत्पादन के परिमाण जैसे विभिन्न कारकों द्वारा किया जाता है। इन तीनों तत्वों का संयोजन ही यह तय करता है कि कोई उद्योग कुटीर, लघु या वृहत श्रेणी में आएगा। अधिक पूँजी और हजारों श्रमिकों वाली इकाइयां बड़े पैमाने के उद्योगों में गिनी जाती हैं। अतः ये सभी मापदंड औद्योगिक वर्गीकरण के लिए अनिवार्य हैं।

51. (A) केवल 1, 2 और 3
सूती वस्त्र कृषि पर, सीमेंट खनिज पर और कृत्रिम रेशा रसायनों पर आधारित उद्योग हैं। कागज़ उद्योग वनों की लकड़ी पर आधारित है, न कि पशुओं पर। इसी तरह, चमड़ा उद्योग पशुओं से प्राप्त होता है, न कि वनों से। अतः कथन 4 और 5 गलत सुमेलित हैं। यह वर्गीकरण स्पष्ट करता है कि विभिन्न उद्योगों को उनकी कच्ची सामग्री प्राप्त करने के लिए किन प्राकृतिक क्षेत्रों पर निर्भर रहना पड़ता है।

52. (D) विशाल आबादी हेतु रोजगार के पर्याप्त अवसर सृजित करना
भारत और चीन जैसे देशों में जहाँ जनसंख्या बहुत अधिक है, श्रम-सघन छोटे पैमाने के उद्योग रोजगार सृजन का प्रमुख माध्यम हैं। ये उद्योग कम पूँजी निवेश में स्थानीय लोगों को अधिक काम प्रदान करते हैं। यह आर्थिक विकास और सामाजिक संतुलन बनाए रखने के लिए आवश्यक है। छोटे पैमाने के उद्योग स्थानीय क्रय शक्ति बढ़ाते हैं और ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन रोकने में सहायक सिद्ध होते हैं।

53. (C) लौह-इस्पात उद्योग
लौह-इस्पात उद्योग में लौह अंश वाले धात्विक खनिजों का प्राथमिक कच्चे माल के रुप में उपयोग किया जाता है। इसमें लौह अयस्क को पिघलाकर शुद्ध लोहा और इस्पात तैयार किया जाता है। ताँबा और एल्यूमिनियम अलौह धात्विक खनिज हैं, जबकि जवाहरात बहुमूल्य पत्थरों पर आधारित हैं। लौह-इस्पात की मजबूती और उपयोगिता इसे सभी आधुनिक मशीनों और बुनियादी ढांचे के निर्माण का आधार बनाती है।

54. (B) सीमेंट उद्योग
सीमेंट उद्योग में चूना पत्थर, जिप्सम और मृत्तिका जैसे अधात्विक खनिजों का कच्चे माल के रूप में प्रयोग होता है। ये खनिज धात्विक चमक या गुण नहीं रखते हैं। मोटर गाड़ी और वायुयान निर्माण में मुख्य रूप से धात्विक धातुओं और मिश्र धातुओं का उपयोग होता है। पेट्रो-रसायन उद्योग खनिज तेल पर आधारित है। सीमेंट निर्माण के लिए इन अधात्विक चट्टानी खनिजों का बहुत बड़ा महत्व है।

55. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों की स्थापना अक्सर कृषि क्षेत्रों के पास की जाती है क्योंकि फल, सब्जियां और दूध जैसे उत्पाद बहुत जल्दी खराब हो जाते हैं। यदि उन्हें तुरंत संसाधित नहीं किया गया, तो उनकी गुणवत्ता गिर जाती है और वे उपयोग के योग्य नहीं रह जाते। परिवहन में लगने वाला समय कम करके इस नुकसान से बचा जा सकता है। अतः अभिकथन और कारण दोनों तर्कसंगत और सत्य हैं।

इसका सबसे प्रमुख उदाहरण है क्योंकि इससे बनी मशीनों का उपयोग अन्य सभी विनिर्माण इकाइयों में किया जाता है। यह किसी भी देश के औद्योगिक विकास की रीढ़ होते हैं।

34. (A) लौह-इस्पात उद्योग
लौह-इस्पात उद्योग एक आधारभूत उद्योग है क्योंकि इसका उत्पाद यानी लोहा और इस्पात अन्य उद्योगों के लिए मशीनें, उपकरण और ढांचा प्रदान करता है। अन्य विकल्प जैसे बिस्कुट, टेलीविजन और श्रृंगार सामान उपभोक्ता वस्तु उद्योग हैं क्योंकि वे सीधे जनता द्वारा इस्तेमाल किए जाते हैं। आधारभूत उद्योगों के बिना किसी भी अन्य विनिर्माण क्षेत्र का संचालन करना तकनीकी रूप से संभव नहीं होता है।

35. (A) केवल 1 और 2
उपभोक्ता वस्तु उद्योग वे होते हैं जिनके उत्पाद सीधे लोगों द्वारा दैनिक जीवन में उपभोग किए जाते हैं। इन्हें गैर-आधारभूत उद्योग भी कहा जाता है क्योंकि ये अन्य उद्योगों के लिए कच्चा माल नहीं बनाते। शक्कर, साबुन और कागज़ इसके उदाहरण हैं। लौह-इस्पात उद्योग आधारभूत उद्योग है, उपभोक्ता वस्तु उद्योग नहीं। अतः कथन 3 और 4 गलत हैं क्योंकि वे आधारभूत उद्योगों की विशेषताओं का वर्णन करते हैं।

36. (D) सार्वजनिक क्षेत्र
समाजवादी देशों में उत्पादन के साधनों पर राज्य का अधिकार होता है, इसलिए वहां अधिकतर उद्योग सार्वजनिक क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। सरकार इन उद्योगों का संचालन समाज के कल्याण और आर्थिक समानता के उद्देश्य से करती है। निजी लाभ के स्थान पर सामूहिक हित को प्राथमिकता दी जाती है। रूस और चीन जैसे देशों के औद्योगिक इतिहास में सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका अत्यंत प्रभावी और केंद्रीय रही है।

37. (C) निजी एवं सार्वजनिक उद्यमों के साझा सहयोग द्वारा
संयुक्त क्षेत्र के उद्योगों का संचालन सरकार और निजी निवेशकों के साझा प्रयासों से किया जाता है। इसमें सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों की पूँजी और प्रबंधन क्षमता का मेल होता है। यह मॉडल सरकारी नियंत्रण और निजी दक्षता का संतुलित मिश्रण प्रदान करता है। इससे बड़े निवेश वाले परियोजनाओं को सुचारु रूप से चलाया जा सकता है। भारत जैसे मिश्रित अर्थव्यवस्था वाले देशों में यह प्रचलित है।

38. (A) केवल 1, 2, 3 और 4
स्वामित्व के आधार पर उद्योगों का वर्गीकरण सार्वजनिक, निजी और संयुक्त क्षेत्रों में किया जाता है। पूँजीवादी देशों में निजी क्षेत्र और समाजवादी देशों में सार्वजनिक क्षेत्र प्रभावी होता है। मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी और सार्वजनिक दोनों प्रकार के उद्यम सह-अस्तित्व में रहते हैं। कथन 5 गलत है क्योंकि मिश्रित अर्थव्यवस्था में केवल निजी उद्यम नहीं, बल्कि सरकारी नियंत्रण वाले उद्यम भी सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

39. (D) गहन शोध एवं विकास
उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग निर्माण क्रियाओं की नवीनतम पीढ़ी है जिसमें गहन शोध और विकास का विशेष महत्व है। ये उद्योग केवल उत्पादन पर नहीं, बल्कि निरंतर नवाचार और तकनीकी सुधार पर केंद्रित होते हैं। इसमें उन्नत वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है। यह परंपरागत निर्माण विधियों से भिन्न है जहाँ कच्चे माल की मात्रा और शारीरिक श्रम पर अधिक बल दिया जाता था।

40. (A) व्यावसायिक (सफ़ेद कॉलर) श्रमिक
उच्च प्रौद्योगिकी उद्योगों में उच्च दक्षता प्राप्त व्यावसायिक श्रमिकों की संख्या उत्पादन करने वाले नीला कॉलर श्रमिकों से अधिक होती है। इन सफ़ेद कॉलर श्रमिकों में वैज्ञानिक, इंजीनियर और शोधकर्ता शामिल होते हैं जो डिजाइनिंग और तकनीकी विकास का कार्य करते हैं। यह इन उद्योगों की एक विशिष्ट पहचान है। यहाँ बौद्धिक श्रम शारीरिक श्रम की तुलना में अधिक मूल्यवान और आवश्यक माना जाता है।

41. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
उच्च प्रौद्योगिकी उद्योगों के विशिष्ट संकेंद्रण वाले क्षेत्रों को 'प्रौद्योगिक ध्रुव' कहा जाता है। ये क्षेत्र आत्मनिर्भर, उच्च विशिष्टता वाले और शोध सुविधाओं से युक्त होते हैं। सेन फ्रांसिस्को के पास सिलीकन वैली इसका सबसे प्रसिद्ध उदाहरण है। ऐसे ध्रुव आधुनिक आर्थिक विकास के केंद्र बन जाते हैं जहाँ नवाचार और उत्पादन एक साथ चलते हैं। अतः अभिकथन और कारण दोनों पूर्णतः सत्य हैं।

42. (A) सेन फ्रांसिस्को के समीप
विश्व प्रसिद्ध 'सिलीकन घाटी' संयुक्त राज्य अमेरिका में सेन फ्रांसिस्को के समीप स्थित है। यह क्षेत्र उच्च प्रौद्योगिकी और सूचना प्रौद्योगिकी उद्योगों का प्रमुख केंद्र है। यहाँ अनेक वैश्विक तकनीकी कंपनियों के मुख्यालय और शोध संस्थान स्थित हैं। यह क्षेत्र अपनी अत्याधुनिक तकनीकी प्रगति और नवाचार के लिए वैश्विक स्तर पर एक आदर्श प्रौद्योगिक ध्रुव के रूप में जाना जाता है।

43. (D) हस्तशिल्प
आधुनिक विश्व में लौह-इस्पात, वस्त्र और मोटर गाड़ी निर्माण प्रमुख बड़े पैमाने के उद्योग हैं। हस्तशिल्प एक प्राचीन निर्माण विधि है जिसमें वस्तुओं का निर्माण हाथ से किया जाता है, न कि विशाल मशीनों द्वारा। वर्तमान वैश्विक विनिर्माण परिदृश्य में हस्तशिल्प का हिस्सा बहुत सीमित है। यह मुख्य रूप से सांस्कृतिक विरासत और कुटीर उद्योगों से जुड़ा है, न कि वैश्विक बड़े पैमाने के निर्माण से।

44. (B) अन्य गैर-उत्पादन क्रियाओं से स्पष्ट विभेदीकरण हेतु
'विनिर्माण उद्योग' शब्दावली का प्रयोग इसे अन्य गैर-उत्पादन क्रियाओं जैसे सेवा क्षेत्र या पर्यटन से अलग दिखाने के लिए किया जाता है। यद्यपि 'उद्योग' शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थों में होने लगा है, विनिर्माण विशेष रूप से भौतिक वस्तुओं के निर्माण को इंगित करता है। यह स्पष्टता अकादमिक और आर्थिक विश्लेषण में महत्वपूर्ण है। इससे उत्पादन और सेवाओं के बीच का तकनीकी अंतर स्पष्ट रूप से समझ आता है।

संचार जाल है। तीव्र परिवहन के माध्यम से कच्चा माल लाना और तैयार उत्पाद बाज़ार तक पहुँचाना आसान और सस्ता हो जाता है। इसके अतिरिक्त, संचार सुविधाओं ने व्यापारिक प्रबंधन को वैश्विक स्तर पर प्रभावी बनाया है। इन क्षेत्रों में औद्योगिक क्रांति की शुरुआती सफलता का यह एक आधारभूत कारण था।

68. (A) चीनी उद्योग एक स्वच्छंद उद्योग है।
चीनी उद्योग एक स्वच्छंद उद्योग नहीं है क्योंकि यह गन्ने जैसे भारी और वजन घटने वाले कच्चे माल पर निर्भर है। इसे गन्ने के खेतों के पास ही स्थापित करना अनिवार्य होता है। अन्य कथन सत्य हैं; हुगली में जूट का विकास जल यातायात से हुआ और नई ऊर्जा ने कोयले का महत्व कम किया है। पत्तन नगरों ने भारत के औद्योगिक ढांचे को बंदरगाहों के पास केंद्रित किया है।

69. (C) पूँजीवाद
पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादन के साधनों का स्वामित्व और नियंत्रण निजी व्यक्तियों या कंपनियों के पास होता है। यहाँ मुख्य उद्देश्य निजी लाभ कमाना होता है और बाज़ार की शक्तियां (मांग और आपूर्ति) आर्थिक गतिविधियों को निर्देशित करती हैं। इसके विपरीत समाजवाद में सरकार का स्वामित्व होता है। निजी स्वामित्व पूँजीवाद की सबसे बुनियादी पहचान है जो इसे अन्य आर्थिक प्रणालियों से स्पष्ट रूप से अलग करती है।

70. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
आधुनिक उद्योग और परिवहन तंत्र एक-दूसरे के पूरक हैं। कच्चे माल को कारखानों तक और तैयार माल को बाज़ार तक ले जाने के लिए सक्षम परिवहन अनिवार्य है। परिवहन की लागत और गति औद्योगिक दक्षता को सीधे प्रभावित करती है। परिवहन तंत्र के बिना बड़े पैमाने पर विनिर्माण और वैश्विक व्यापार संभव नहीं है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही हैं और उनके बीच का संबंध तार्किक है।

71. (D) दैनिक जीवन हेतु खाद्य पदार्थ, वस्त्र एवं बर्तन
कुटीर उद्योगों में मुख्य रूप से उन वस्तुओं का निर्माण होता है जो दैनिक जीवन में उपयोग की जाती हैं। इनमें स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कच्चे माल से वस्त्र, मिट्टी के बर्तन, खाद्य पदार्थ और हस्तशिल्प की वस्तुएं बनाई जाती हैं। ये उद्योग साधारण औजारों और पारिवारिक श्रम पर आधारित होते हैं। इनके उत्पाद स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करते हैं और इनका व्यापारिक स्वरूप बहुत ही छोटा होता है।

72. (A) छोटे पैमाने के उद्योग
छोटे पैमाने के उद्योग स्थानीय निवासियों की क्रय शक्ति बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि ये बड़े पैमाने के उद्योगों की तुलना में अधिक रोजगार प्रदान करते हैं। ये उद्योग श्रम-प्रधान होते हैं और स्थानीय युवाओं को काम के अवसर देते हैं। इससे क्षेत्र की आर्थिक स्थिति में सुधार होता है और लोगों का जीवन स्तर बढ़ता है। विकासशील देशों के लिए ये उद्योग आर्थिक रीढ़ की तरह कार्य करते हैं।

73. (C) कम विकसित देशों में
उच्च प्रौद्योगिकी वाले वृहत औद्योगिक प्रदेशों का विस्तार हाल के वर्षों में कम विकसित और विकासशील देशों में भी तेजी से हुआ है। ये देश विदेशी निवेश और तकनीक के माध्यम से अपने औद्योगिक ढांचे को आधुनिक बना रहे हैं। यद्यपि इनकी शुरुआत विकसित देशों में हुई थी, लेकिन अब ये वैश्विक अर्थव्यवस्था के नए केंद्रों के रूप में उभर रहे हैं। इससे इन देशों की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ रही है।

74. (A) प्राकृतिक रूप से मिलने वाले रासायनिक खनिज पदार्थ
नमक, गंधक और पोटाश उद्योग उन कच्चे माल का उपयोग करते हैं जो प्राकृतिक रूप से रासायनिक खनिजों के रूप में मिलते हैं। ये खनिज पृथ्वी की परतों या समुद्री जल से प्राप्त किए जाते हैं। इनका उपयोग उर्वरक, रसायन और अन्य औद्योगिक उत्पादों के निर्माण में बड़े स्तर पर किया जाता है। ये खनिज आधारित रसायनों की श्रेणी में आते हैं और कई महत्वपूर्ण औद्योगिक प्रक्रियाओं का आधार बनते हैं।

75. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
चाय और कॉफी का उत्पादन कृषि आधारित है क्योंकि ये बागानी फसलें हैं। ताँबा और एल्यूमिनियम अलौह खनिज आधारित उद्योग हैं। प्लास्टिक और कृत्रिम रेशे रसायनों से बनते हैं, इसलिए ये रसायन आधारित हैं। फर्नीचर और कागज़ का निर्माण लकड़ी पर निर्भर है, अतः ये वन आधारित हैं। यह मिलान उद्योगों की उनके कच्चे माल के स्रोतों के साथ सटीक आर्थिक और तकनीकी निर्भरता स्पष्ट करता है।

76. (B) विनिर्माण
विनिर्माण वह प्रक्रिया है जिसमें कच्चे माल के भौतिक रूप को बदलकर उसे अधिक कीमती और उपयोगी तैयार माल में रूपांतरित किया जाता है। इसमें मशीनों, औजारों और श्रम का समन्वित प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए, रुई से धागा और धागे से कपड़ा बनाना विनिर्माण है। यह द्वितीयक आर्थिक गतिविधि का मुख्य हिस्सा है और किसी भी देश के औद्योगिक विकास और संपदा निर्माण की आधारशिला है।

77. (D) सीमेंट उद्योग - कृषि आधारित उद्योग
सीमेंट उद्योग एक कृषि आधारित उद्योग नहीं है, बल्कि यह एक खनिज आधारित उद्योग है। सीमेंट के निर्माण में चूना पत्थर, जिप्सम और कोयला जैसे खनिजों का उपयोग होता है जो खानों से प्राप्त किए जाते हैं। अन्य सभी जोड़े सही मेल खाते हैं: इस्पात आधारभूत है, बिस्कुट उपभोक्ता वस्तु है और चमड़ा पशुओं से प्राप्त होता है। सीमेंट का कृषि से कोई सीधा उत्पादन संबंध नहीं है।

78. (A) केवल 1 और 2
प्राथमिक क्रियाएं सीधे पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करती हैं, जबकि द्वितीयक क्रियाएं इन संसाधनों का प्रसंस्करण कर उनका मूल्य बढ़ाती हैं। मत्स्यन एक प्राथमिक

101. (C) व्यापक वैश्विक बाज़ार
वायुयान और शस्त्र निर्माण जैसे उच्च तकनीकी और रणनीतिक महत्व के उद्योगों का बाज़ार वैश्विक होता है। इन उत्पादों का निर्माण बहुत ही चुनिंदा देशों में होता है और इनकी मांग पूरी दुनिया में रहती है। ये उत्पाद स्थानीय या क्षेत्रीय स्तर तक सीमित नहीं रह सकते क्योंकि इनके निर्माण में अत्यधिक पूँजी और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। अतः इनका व्यापार अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के पार विस्तृत होता है।

102. (B) श्रमिकों पर निर्भरता को कम किया है
उद्योगों में स्वचालन, यंत्रीकरण और लचीली निर्माण प्रणालियों के बढ़ते उपयोग ने शारीरिक श्रम पर निर्भरता को काफी हद तक कम कर दिया है। अब मशीनों और कंप्यूटरों के माध्यम से उत्पादन अधिक कुशलता और सटीकता से किया जा रहा है। हालाँकि इससे अकुशल श्रमिकों की मांग कम हुई है, लेकिन उच्च तकनीकी कौशल वाले विशेषज्ञों की आवश्यकता बढ़ी है। यह बदलाव औद्योगिक दक्षता और गति को बढ़ाने के लिए किया गया है।

103. (D) कोयला
प्राचीन और प्रारंभिक औद्योगिक समय में शक्ति का सबसे प्रमुख साधन कोयला था। इसी कारण शुरुआती दौर में अधिकांश भारी उद्योग कोयला क्षेत्रों के निकट ही स्थापित हुए थे। कोयला ऊर्जा का प्राथमिक स्रोत था जिसने भाप इंजन और मशीनों को चलाया। बाद में खनिज तेल और विद्युत के विकास ने ऊर्जा के अन्य विकल्प प्रदान किए, लेकिन औद्योगिक क्रांति की आधारशिला मुख्य रूप से कोयले पर ही टिकी थी।

104. (A) संचार की
उद्योगों के सफल संचालन, प्रबंधन और बाज़ार की जानकारी के आदान-प्रदान के लिए संचार की महत्वपूर्ण आवश्यकता होती है। आज के वैश्विक व्यापार में इंटरनेट, टेलीफोन और डिजिटल नेटवर्क के बिना उत्पादन और वितरण का समन्वय करना असंभव है। संचार माध्यमों ने उद्योगों को ग्राहकों और आपूर्तिकर्ताओं से जोड़ने में क्रांतिकारी भूमिका निभाई है। यह आधुनिक विनिर्माण क्षेत्र का एक अनिवार्य बुनियादी ढांचा बन चुका है।

105. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
औद्योगिक कारकों का उनके प्रभाव से मिलान करना आवश्यक है। बाज़ार की पहुँच अधिकांश उद्योगों के लिए प्राथमिक है। इस्पात जैसे भारी उद्योग कच्चे माल के स्रोत के पास लगते हैं। एल्यूमिनियम को भारी बिजली की जरूरत होती है, इसलिए यह शक्ति स्रोतों के निकट होता है। परिवहन लगभग सभी उद्योगों के वितरण और रसद प्रबंधन के लिए एक अनिवार्य आधारभूत सुविधा प्रदान करता है।

106. (A) सड़क के जाल द्वारा अभिगम्यता
स्वच्छंद उद्योगों के लिए सड़क जाल के माध्यम से अभिगम्यता सबसे महत्वपूर्ण कारक है। चूँकि ये उद्योग भारी कच्चे माल पर निर्भर नहीं होते और इनके संघटक पुर्जों को कहीं भी ले जाया जा सकता है, इसलिए सड़क मार्ग की सुलभता इन्हें स्थान चयन में लचीलापन प्रदान करती है। रेल या जलमार्ग की तुलना में सड़क मार्ग इन्हें डोर-टू-डोर कनेक्टिविटी और तीव्र वितरण की सुविधा प्रदान करते हैं।

107. (D) पूँजी एवं परिवहन इन उद्योगों को अधिक प्रभावित नहीं करते हैं।
कुटीर उद्योग घरेलू स्तर पर चलते हैं, इसलिए इनमें पूँजी का निवेश और परिवहन की आवश्यकता न्यूनतम होती है। यहाँ कच्चा माल स्थानीय होता है और तैयार माल भी पास के बाज़ारों में बिक जाता है। मशीनों का प्रयोग नहीं के बराबर होता है और ये निर्माण की सबसे छोटी इकाई हैं। अतः अन्य विकल्पों की तुलना में यह कथन कुटीर उद्योगों की वास्तविक प्रकृति को सही स्पष्ट करता है।

108. (B) केवल 2, 3 और 4
सीमेंट उद्योग अधात्विक खनिजों पर, ऊनी वस्त्र पशुओं पर और कागज़ वनों पर आधारित उद्योग हैं। शक्कर उद्योग कृषि आधारित है, न कि खनिज आधारित, क्योंकि इसका कच्चा माल गन्ना खेतों से आता है। अतः कथन 1 गलत है। यह स्पष्ट करता है कि उद्योगों का वर्गीकरण उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली कच्ची सामग्री की जैविक या अजैविक प्रकृति के आधार पर किया जाता है।

109. (C) उच्च दक्षता प्राप्त विशिष्ट व्यावसायिक श्रमिक
'सफ़ेद कॉलर' श्रमिक उन उच्च कुशल पेशेवरों को कहा जाता है जो प्रबंधकीय, तकनीकी या शोध संबंधी कार्यों में संलग्न होते हैं। ये श्रमिक उत्पादन प्रक्रिया का सीधा हिस्सा होने के बजाय उसके नियोजन और प्रबंधन का कार्य करते हैं। इनमें इंजीनियर, डॉक्टर, वैज्ञानिक और प्रशासनिक अधिकारी शामिल होते हैं। उच्च प्रौद्योगिकी उद्योगों में इनकी संख्या नीला कॉलर श्रमिकों की तुलना में निरंतर बढ़ती जा रही है।

110. (D) प्रादेशिक संकेंद्रित एवं विशिष्ट उच्च तकनीकी उद्योग
'प्रौद्योगिक ध्रुव' वे क्षेत्र हैं जहाँ उच्च प्रौद्योगिकी उद्योगों का भारी संकेंद्रण होता है। ये क्षेत्र आधुनिक आर्थिक विकास के केंद्र होते हैं जहाँ उन्नत शोध संस्थान, विश्वविद्यालय और विनिर्माण इकाइयां एक साथ मौजूद होती हैं। यहाँ नवाचार और उत्पादन के बीच गहरा संबंध होता है। सिलीकन वैली और सिलीकन फॉरेस्ट इसके प्रमुख वैश्विक उदाहरण हैं जो क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाते हैं।

111. (C) केवल 1, 2 और 4
उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग विनिर्माण की नवीनतम पीढ़ी हैं जो शोध और विकास पर आधारित हैं। इनमें सफ़ेद कॉलर श्रमिकों की संख्या अधिक होती है और कंप्यूटर आधारित डिजाइनिंग (कैड) का महत्व बढ़ जाता है। ये उद्योग प्रदूषण फैलाने वाले नहीं होते, बल्कि स्वच्छ और आधुनिक परिसरों में चलते हैं। अतः कथन 3 और 5 गलत हैं। ये आधुनिक आर्थिक प्रगति के सबसे महत्वपूर्ण और उन्नत क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

शामिल होता है। यह औद्योगिक प्रणाली वर्तमान विश्व की आर्थिक जरूरतों और उपभोग के पैटर्न को पूरा करने के लिए डिजाइन की गई है।

90. (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
उद्योगों और उनके उत्पादों का मिलान उनकी आर्थिक भूमिका को स्पष्ट करता है। आधारभूत उद्योग जैसे लौह-इस्पात अन्य उद्योगों को आधार देते हैं। उपभोक्ता वस्तुएं जैसे साबुन सीधे जनता के लिए होती हैं। स्वच्छंद उद्योगों में इलेक्ट्रॉनिक पुर्जे शामिल हैं जिन्हें कहीं भी बनाया जा सकता है। कुटीर उद्योगों में स्थानीय स्तर पर बर्तन जैसी वस्तुएं बनाई जाती हैं। यह वर्गीकरण औद्योगिक उत्पादन के विभिन्न स्तरों को दर्शाता है।

91. (D) स्वच्छंद उद्योग
स्वच्छंद उद्योगों में उत्पादन कम मात्रा में होता है और इनमें बहुत कम श्रमिकों की आवश्यकता होती है। ये उद्योग किसी विशिष्ट भारी कच्चे माल पर निर्भर नहीं होते, इसलिए इन्हें कहीं भी सड़क मार्ग के पास स्थापित किया जा सकता है। इनका मुख्य आकर्षण परिवहन की सुलभता और प्रदूषण रहित कार्यप्रणाली है। अन्य उद्योगों की तुलना में इनका आकार छोटा होता है लेकिन ये तकनीकी रूप से उन्नत हो सकते हैं।

92. (B) कुटीर उद्योग
सुनार द्वारा आभूषण बनाना कुटीर या घरेलू उद्योग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें बहुत कम पूँजी और साधारण औजारों का प्रयोग होता है। काम अक्सर कारीगर के घर में ही परिवार के सदस्यों की मदद से किया जाता है। यह विनिर्माण की सबसे छोटी इकाई है जहाँ स्थानीय मांग के अनुसार विशिष्ट हस्तशिल्प वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। इसमें परिवहन और बड़े बाज़ार की भूमिका कम होती है।

93. (C) केवल 1, 2 और 3
छोटे पैमाने के उद्योग स्थानीय कच्चे माल, अर्धकुशल श्रमिकों और शक्ति चालित मशीनों का उपयोग करते हैं। ये उद्योग बड़े पैमाने के उद्योगों की तुलना में अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं, जो विकासशील देशों के लिए महत्वपूर्ण है। हालाँकि, ये कुटीर उद्योग के समान नहीं हैं क्योंकि कुटीर उद्योग घर में और बिना मशीनों के चलता है। अतः कथन 4 गलत है, बाकी तीनों कथन सत्य हैं।

94. (D) अयस्क से धातु निकालना
भोजन प्रसंस्करण में कृषि उत्पादों को उपभोग योग्य खाद्य सामग्री में बदलना शामिल है, जैसे क्रीम निकालना, डिब्बा बंद भोजन बनाना या फलों का रस तैयार करना। अयस्क से धातु निकालना एक खनिज आधारित विनिर्माण प्रक्रिया है, जिसे धातुकर्म कहा जाता है। इसका भोजन के प्रसंस्करण से कोई संबंध नहीं है। भोजन प्रसंस्करण का मुख्य लक्ष्य कृषि उपज का मूल्य बढ़ाना और उसे लंबे समय तक सुरक्षित रखना है।

95. (A) निजी एवं सरकारी क्षेत्र के सहभागी उद्यम
मिश्रित अर्थव्यवस्था में निजी और सरकारी दोनों क्षेत्रों का सह-अस्तित्व होता है। इसमें कुछ महत्वपूर्ण उद्योग सरकार द्वारा संचालित किए जाते हैं, जबकि अन्य निजी निवेश के लिए खुले होते हैं। यह प्रणाली आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के साथ-साथ सामाजिक कल्याण सुनिश्चित करने का प्रयास करती है। भारत इस अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख उदाहरण है जहाँ टाटा (निजी) और सेल (सरकारी) जैसे उद्योग एक साथ कार्य करते हैं।

96. (D) केवल 1, 2, 4
द्वितीयक क्रियाओं में विनिर्माण और प्रसंस्करण शामिल हैं। तृतीय विश्व के कई देशों में विनिर्माण अब भी हाथ से बनाने के संदर्भ में देखा जाता है। प्रौद्योगिक नवाचार का एक बड़ा लक्ष्य प्रदूषण कम करना है। कथन 3 गलत है क्योंकि स्वचालन यंत्रीकरण की विकसित अवस्था है, न कि इसके विपरीत। कथन 5 भी गलत है क्योंकि आधुनिक निर्माण 10% से कम भू-भाग पर केंद्रित है।

97. (B) वास्तविक उत्पादन करने वाले श्रमिकों को
'नीला कॉलर' श्रमिक उन लोगों को कहा जाता है जो कारखानों में प्रत्यक्ष रूप से उत्पादन कार्यों में लगे होते हैं। इनका कार्य शारीरिक श्रम और मशीनों के संचालन से जुड़ा होता है। इसके विपरीत, कार्यालयों में काम करने वाले प्रबंधकीय और तकनीकी विशेषज्ञों को 'सफ़ेद कॉलर' श्रमिक कहा जाता है। यह शब्दावली उद्योगों में श्रम विभाजन और विभिन्न प्रकार के कार्यों के वर्गीकरण को दर्शाने के लिए उपयोग की जाती है।

98. (A) 2, 4, 3, 1
उत्पादन की जटिलता का क्रम मानव तकनीकी विकास को दर्शाता है। हस्तशिल्प सबसे सरल है क्योंकि इसमें केवल मानवीय कौशल लगता है। लोहे को गढ़ना अधिक जटिल विनिर्माण प्रक्रिया है। कंप्यूटर के सूक्ष्म पुर्जों को जोड़ना उच्च तकनीकी शुद्धता मांगता है। अंतरिक्ष यान का निर्माण विनिर्माण की सबसे जटिल और उन्नत अवस्था है। यह क्रम साधारण निर्माण से अति-आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी की ओर बढ़ता है।

99. (C) उनका मूल्य बढ़ जाता है
द्वितीयक गतिविधियाँ प्राकृतिक संसाधनों को संसाधित करके उनका मूल्य बढ़ा देती हैं। जब लकड़ी से फर्नीचर या लोहे से मशीन बनाई जाती है, तो वह कच्ची सामग्री की तुलना में अधिक उपयोगी और महंगी हो जाती है। यह मूल्यवर्धन किसी भी देश की अर्थव्यवस्था को समृद्ध बनाता है। संसाधनों का सीधा उपभोग करने के स्थान पर उन्हें निर्मित माल में बदलना अधिक आर्थिक लाभ और उपयोगिता प्रदान करता है।

100. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
उद्योगों का मुख्य लक्ष्य अपनी उत्पादन लागत को न्यूनतम करके लाभ को अधिकतम करना होता है। इसी कारण उद्योगों की स्थापना उन्हीं स्थानों पर की जाती है जहाँ कच्चा माल, श्रम, शक्ति और परिवहन कम खर्च पर उपलब्ध हों। स्थान चयन का यह आर्थिक सिद्धांत औद्योगिक अवस्थिति को निर्धारित करने में निर्णायक भूमिका निभाता है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं और एक-दूसरे की सही व्याख्या करते हैं।

56. (A) वनों से
लाख उद्योग के लिए कच्चा माल वनों से प्राप्त किया जाता है, इसलिए यह एक वन आधारित उद्योग है। लाख एक प्राकृतिक राल है जो कुछ विशिष्ट वृक्षों पर रहने वाले कीटों के स्राव से बनता है। वनों से एकत्र की गई इस सामग्री का उपयोग चूड़ियां, सील और पॉलिश बनाने में होता है। वन संसाधनों का उचित उपयोग स्थानीय समुदायों को आर्थिक लाभ पहुँचाने में सहायक होता है।

57. (A) 2, 4, 1, 3
मानव सभ्यता के विकास में पाषाण उपकरणों का निर्माण सबसे प्राचीन है। इसके बाद कृषि क्रांति के साथ सूती वस्त्रों का निर्माण शुरु हुआ। औद्योगिक क्रांति के दौरान लौह-इस्पात उद्योग का प्रभुत्व बढ़ा। सबसे नवीनतम चरण पेट्रो-रसायन उद्योग है जो आधुनिक रासायनिक विज्ञान की देन है। यह क्रम तकनीकी उन्नति के साथ कच्चे माल के उपयोग में आए बदलावों को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करता है।

58. (A) पशु आधारित
हाथीदाँत उद्योग एक पशु आधारित उद्योग है क्योंकि इसका मुख्य कच्चा माल मृत या शिकार किए गए हाथियों के दांतों से प्राप्त होता है। इसी तरह चमड़ा, ऊन और रेशम उद्योग भी पशुओं पर ही निर्भर करते हैं। पशु आधारित उद्योगों के लिए पशुओं का पालन या वन्यजीव संसाधनों का उपयोग किया जाता है। हालाँकि, वर्तमान में कई वन्यजीव उत्पादों पर कानूनी प्रतिबंध लगाए गए हैं।

59. (D) उपभोक्ता वस्तु उद्योगों को
उपभोक्ता वस्तु उद्योगों को गैर-आधारभूत उद्योग कहा जाता है क्योंकि इनका उत्पाद अन्य उद्योगों के लिए कच्चे माल के रूप में काम नहीं आता है। ये सीधे जनता द्वारा उपभोग किए जाने वाले सामान, जैसे शक्कर या साबुन, का निर्माण करते हैं। इसके विपरीत, आधारभूत उद्योग अन्य विनिर्माण इकाइयों को शक्ति या मशीनरी प्रदान करते हैं। यह वर्गीकरण औद्योगिक उत्पाद के अंतिम गंतव्य और उपयोग पर आधारित है।

60. (C) P-3, Q-1, R-2, S-4
उद्योगों के स्वामित्व का मिलान उनकी शासन प्रणाली और पूंजी संरचना को दर्शाता है। सार्वजनिक क्षेत्र पर सरकार का अधिकार होता है। निजी क्षेत्र व्यक्तिगत निवेशकों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। संयुक्त क्षेत्र में निजी और सरकारी दोनों की भागीदारी होती है। पूँजीवादी देशों में आर्थिक गतिविधियों में निजी क्षेत्र की प्रमुखता और स्वतंत्रता अधिक होती है। यह ढांचा किसी राष्ट्र की आर्थिक नीति को दर्शाता है।

61. (C) स्वच्छ, नियोजित एवं बिखरे हुए आधुनिक कार्यालय परिसर
उच्च प्रौद्योगिकी उद्योग का भूदृश्य पारंपरिक औद्योगिक क्षेत्रों से भिन्न होता है। यहाँ धुएँ वाली चिमनियों के स्थान पर आधुनिक, स्वच्छ और सुनियोजित कार्यालय परिसर होते हैं। ये परिसर अक्सर बिखरे हुए होते हैं और इनके आसपास का वातावरण हरा-भरा और प्रदूषण मुक्त होता है। यहाँ प्रयोगशालाएं और शोध केंद्र मुख्य भवन होते हैं। यह आधुनिक तकनीकी युग की स्वच्छ औद्योगिक छवि को प्रस्तुत करता है।

62. (D) कंप्यूटर आधारित आरेखण एवं डिज़ाइन
कैड (CAD) का पूर्ण रुप कंप्यूटर एडेड डिज़ाइन है, जिसका संबंध कंप्यूटर के माध्यम से वस्तुओं के आरेखण और डिजाइनिंग से है। यह उच्च प्रौद्योगिकी उद्योगों में उत्पादन की सटीकता और गति बढ़ाने के लिए अनिवार्य उपकरण है। इसके माध्यम से जटिल मशीनों और उपकरणों के मॉडल डिजिटल रुप में तैयार किए जाते हैं। यह आधुनिक विनिर्माण प्रक्रिया में तकनीकी नवाचार का एक अत्यंत महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है।

63. (A) केवल 1, 3 और 4
विनिर्माण का आधुनिक अर्थ केवल हाथ से बनाना नहीं है, बल्कि मशीनों का प्रयोग भी शामिल है। स्वच्छंद उद्योग सामान्यतः प्रदूषण नहीं फैलाते हैं। लौह-इस्पात एक आधारभूत उद्योग है, न कि उपभोक्ता वस्तु उद्योग। कथन 2 सही है क्योंकि यंत्रीकरण में मशीनों का प्रयोग होता है। अतः दिए गए विकल्पों में से 1, 3 और 4 असत्य हैं जो औद्योगिक शब्दावली की गलत व्याख्या प्रस्तुत करते हैं।

64. (B) आदेशानुसार निर्मित सीमित मात्रा में उत्पादन
शिल्प तरीके से उत्पादन की विशेषता यह है कि इसमें वस्तुओं का निर्माण ग्राहक के विशिष्ट आदेशानुसार किया जाता है। यह उत्पादन सीमित मात्रा में होता है और इसमें कारीगर के विशेष कौशल की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। यह आधुनिक वृहत स्तरीय मानकीकृत उत्पादन से भिन्न है जहाँ एक ही प्रकार की लाखों वस्तुएं बनती हैं। इसमें उत्पाद की गुणवत्ता और विशिष्टता पर अधिक ध्यान दिया जाता है।

65. (B) उन्नत स्वचालन एवं यंत्रीकरण की विकसित अवस्था
स्वचालित कारखाने जिनमें कंप्यूटर नियंत्रण और पुनर्निवेशन प्रणालियां होती हैं, उन्नत स्वचालन की विकसित अवस्था को दर्शाते हैं। यहाँ उत्पादन की पूरी प्रक्रिया बिना मानवीय हस्तक्षेप के मशीनों द्वारा संपन्न होती है। यह विनिर्माण क्षेत्र की सबसे आधुनिक और तकनीकी रूप से परिष्कृत अवस्था है। इसमें मशीनों को स्वयं की निगरानी करने और त्रुटियों को सुधारने के लिए प्रोग्राम किया जाता है, जिससे उत्पादकता बहुत बढ़ जाती है।

66. (A) केवल 1, 2, 3 और 4
उद्योगों का वर्गीकरण आकार, कच्चे माल, उत्पाद और स्वामित्व के आधार पर किया जाता है। ये चारों मापदंड औद्योगिक भूगोल के बुनियादी स्तंभ हैं। स्वच्छंद उद्योग स्थान चयन की एक विशिष्ट विशेषता है, न कि आकार पर आधारित वर्गीकरण। अतः कथन 5 गलत है। बाकी सभी कथन उद्योगों के व्यवस्थित विभाजन को सही ढंग से प्रस्तुत करते हैं, जिससे उनके अध्ययन और विश्लेषण में स्पष्टता आती है।

67. (C) सघन एवं विकसित संचार व परिवहन तंत्र का विकास
पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका के पूर्वी भागों में उद्योगों के भारी संकेंद्रण का मुख्य कारण वहां का उन्नत परिवहन और

112. (B) निर्माण उद्योग
विश्व अर्थव्यवस्था में विनिर्माण या निर्माण उद्योग का बहुत बड़ा और महत्वपूर्ण योगदान है। यह क्षेत्र न केवल रोजगार के विशाल अवसर प्रदान करता है बल्कि वस्तुओं का उत्पादन करके राष्ट्रीय संपदा और जीडीपी में वृद्धि भी करता है। अन्य क्षेत्रों जैसे कृषि या खनन के उत्पादों को विनिर्माण के माध्यम से ही कीमती बनाया जाता है। अतः यह वैश्विक आर्थिक विकास का सबसे प्रमुख चालक माना जाता है।

113. (B) सुलभ एवं सस्ती जल परिवहन व्यवस्था की उपलब्धता
हुगली नदी के किनारे जूट उद्योगों के संकेंद्रण का सबसे प्रमुख कारण सस्ती और सुलभ जल परिवहन सुविधा थी। जूट एक भारी और सस्ता रेशा है, जिसके परिवहन के लिए जलमार्ग सबसे किफायती माध्यम प्रदान करता है। इसके अलावा, नदी का पानी जूट को साफ़ करने और संसाधित करने के लिए भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था। इन भौगोलिक कारणों ने इस क्षेत्र को जूट उत्पादन का वैश्विक केंद्र बनाया।

114. (D) लौह-इस्पात उद्योग - पिट्सबर्ग
लौह-इस्पात उद्योग के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका का पिट्सबर्ग विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है। इसे ऐतिहासिक रूप से विश्व की इस्पात राजधानी कहा जाता था। अन्य जोड़े गलत हैं क्योंकि लूसाका या फलोरेंस इन विशिष्ट उद्योगों के लिए मुख्य केंद्र नहीं हैं। लॉस एंजिल्स विमान निर्माण के लिए जाना जाता है, लेकिन पिट्सबर्ग और इस्पात का संबंध सबसे पुराना और स्थापित है। यह औद्योगिक केंद्रों की विशिष्टता को दर्शाता है।

115. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं तथा (R), (A) की सही व्याख्या है।
तृतीय विश्व के देशों में औद्योगिक क्रियाएं बहुत विविध और अक्सर असंगठित होती हैं, इसलिए उनका पूर्ण विवरण देना कठिन होता है। इन देशों में अक्सर उन उद्योगों पर अधिक बल दिया जाता है जिनमें तकनीकी जटिलता कम हो और श्रमिकों की अधिक खपत हो। इससे स्थानीय रोजगार बढ़ता है और सीमित संसाधनों में उत्पादन संभव होता है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य और तार्किक रूप से जुड़े हैं।

116. (D) वृहत, यंत्रीकृत एवं रसायनों पर आधारित कृषि फार्म
'कृषि कारखाने' उन विशाल कृषि फार्मों को कहा जाता है जहाँ खेती का कार्य पूर्णतः औद्योगिक पद्धति से किया जाता है। इनमें मशीनों का व्यापक उपयोग होता है और रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों का भारी मात्रा में प्रयोग किया जाता है। ये फार्म मुख्य रूप से विकसित देशों में पाए जाते हैं और इनका उद्देश्य विशाल स्तर पर व्यावसायिक उत्पादन करना होता है। इनका स्वरूप परंपरागत खेती से बिल्कुल अलग होता है।

117. (A) 3, 1, 2, 4
कच्चे माल के आधार पर उद्योगों के विकास का क्रम मानवीय सभ्यता के विकास से जुड़ा है। सबसे पहले कृषि आधारित उद्योगों का उदय हुआ। उसके बाद खनिज संपदा का उपयोग बढ़ते ही खनिज आधारित उद्योग विकसित हुए। रसायन विज्ञान की उन्नति ने रसायन आधारित उद्योगों को जन्म दिया। वन आधारित उद्योग भी प्रारंभिक काल से रहे हैं। यह वर्गीकरण उत्पादन के विभिन्न स्रोतों की विविधता को प्रस्तुत करता है।

118. (B) वन आधारित
फर्नीचर उद्योग के लिए इमारती लकड़ी वनों से प्राप्त होती है, इसलिए यह एक वन आधारित उद्योग है। वनों से प्राप्त होने वाले अन्य उत्पादों जैसे कागज़ की लुगदी, लाख, और तेलों पर आधारित उद्योग भी इसी श्रेणी में आते हैं। वन आधारित उद्योग पर्यावरण और वन संपदा के सतत प्रबंधन पर निर्भर करते हैं। लकड़ी का प्रसंस्करण करके उसे कीमती फर्नीचर में बदलना आर्थिक विकास का एक अंग है।

119. (D) आधारभूत एवं उपभोक्ता वस्तु निर्माण की श्रेणियाँ
उत्पाद के आधार पर उद्योगों को दो मुख्य श्रेणियों में बांटा गया है: आधारभूत और उपभोक्ता वस्तु उद्योग। आधारभूत उद्योग वे हैं जो अन्य उद्योगों के लिए मशीनें या कच्चा माल (जैसे इस्पात) तैयार करते हैं। उपभोक्ता वस्तु उद्योग सीधे जनता के लिए सामान (जैसे बिस्कुट या साबुन) बनाते हैं। यह वर्गीकरण स्पष्ट करता है कि निर्मित वस्तु का अंतिम उपयोग आर्थिक चक्र के किस चरण में हो रहा है।

120. (D) P-3, Q-4, R-1, S-2
उद्योगों के वर्गीकरण के आधार और उनके उदाहरणों का मिलान उनकी संरचना को स्पष्ट करता है। निवेश और श्रमिकों के आधार पर आकार (कुटीर) तय होता है। सामग्री के स्रोत के आधार पर कच्चा माल (कृषि) आता है। उपयोग के आधार पर उत्पाद (आधारभूत) निर्धारित होता है। नियंत्रण और प्रबंधन के आधार पर स्वामित्व (निजी) देखा जाता है। यह ढांचा औद्योगिक भूगोल के अध्ययन को व्यवस्थित बनाता है।

121. (C) मछली पकड़ना
मछली पकड़ना एक प्राथमिक क्रिया है क्योंकि इसमें प्राकृतिक संसाधनों का सीधा निष्कर्षण किया जाता है। इसके विपरीत, इस्पात गढ़ना, वस्त्र बनाना और ब्रेड बनाना द्वितीयक क्रियाएं हैं क्योंकि इनमें कच्चे माल का रूप बदलकर नया उत्पाद बनाया जाता है। आर्थिक क्रियाओं के वर्गीकरण में संसाधन जुटाना प्राथमिक है, जबकि उनका प्रसंस्करण करना द्वितीयक है। अतः मछली पकड़ना इस श्रेणी का हिस्सा नहीं माना जा सकता।

122. (A) 10% से कम भू-भाग
आधुनिक विनिर्माण का भौगोलिक वितरण बहुत ही असमान है और यह विश्व के कुल स्थलीय भाग के 10 प्रतिशत से भी कम क्षेत्र में फैला हुआ है। इसका मुख्य कारण यह है कि उद्योगों के विकास के लिए बाज़ार, कच्चा माल और परिवहन जैसी अनुकूल दशाएं केवल कुछ ही स्थानों पर उपलब्ध हैं। यह संकेंद्रण दर्शाता है कि आर्थिक विकास की प्रक्रिया चुनिंदा केंद्रों तक ही सीमित रही है।

123. (A) केवल 1 और 4
उद्योग अपनी लागत कम करके लाभ बढ़ाते हैं और स्वच्छंद उद्योग सामान्यतः प्रदूषण नहीं फैलाते हैं। कथन 2 गलत है क्योंकि बाज़ार का अर्थ मांग और क्रय शक्ति दोनों से है। कथन

क्रिया है, न कि द्वितीयक। विनिर्माण एक द्वितीयक क्रिया है क्योंकि इसमें कच्चे माल का रूप बदला जाता है। अतः कथन 3 और 4 गलत हैं। यह वर्गीकरण आर्थिक भूगोल में विभिन्न क्षेत्रों के बीच के मूलभूत अंतर को स्पष्ट करता है।

79. (A) सियटल
'सिलीकन वन' (Silicon Forest) संयुक्त राज्य अमेरिका में सियटल शहर के समीप स्थित एक महत्वपूर्ण प्रौद्योगिक ध्रुव है। यह क्षेत्र सॉफ्टवेयर, जैव-प्रौद्योगिकी और विमानन उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। जिस प्रकार कैलिफोर्निया में सिलीकन वैली है, उसी प्रकार सियटल का यह क्षेत्र तकनीकी नवाचार का बड़ा केंद्र बन गया है। यहाँ कई प्रमुख वैश्विक टेक कंपनियों के परिचालन केंद्र और अनुसंधान इकाइयां विकसित हुई हैं।

80. (B) निजी क्षेत्र
पूँजीवादी देशों में आर्थिक गतिविधियों का मुख्य आधार निजी स्वामित्व और मुक्त बाज़ार है, इसलिए वहां निजी क्षेत्र के उद्योगों की बहुलता होती है। व्यक्तिगत निवेशक अपने मुनाफे के लिए उद्योगों की स्थापना और संचालन करते हैं। सरकार की भूमिका नियामक के रूप में अधिक और संचालक के रूप में कम होती है। यह व्यवस्था प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देती है और आर्थिक विकास में निजी पूंजी को प्रोत्साहित करती है।

81. (A) केवल 1, 2, 3 और 5
चीनी कृषि पर, इस्पात धात्विक खनिज पर, सीमेंट अधात्विक खनिज पर और ऊन पशुओं पर आधारित उद्योग हैं। पेट्रो-रसायन उद्योग खनिज तेल पर आधारित है, न कि वनों पर। वनों पर आधारित उद्योगों में कागज़ और फर्नीचर आते हैं। अतः कथन 4 गलत है, जबकि बाकी सभी कथन उद्योगों के उनके वास्तविक कच्ची सामग्री स्रोतों के आधार पर सही वर्गीकरण को दर्शाते हैं।

82. (A) यह एक महत्त्वपूर्ण कारक है।
उद्योगों की अवस्थिति निर्धारित करने में परिवहन लागत एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारक है। कच्चा माल कारखाने तक लाने और तैयार माल बाज़ार तक पहुँचाने का खर्च सीधा उत्पादन की लाभप्रदता को प्रभावित करता है। भारी और कम कीमत वाले माल के लिए परिवहन लागत का महत्व और भी बढ़ जाता है। यही कारण है कि अधिकांश उद्योग परिवहन मार्गों के जंक्शनों या बंदरगाहों के पास स्थापित होते हैं।

83. (A) 3, 1, 2, 4
ऐतिहासिक विकास के क्रम में सबसे पहले हस्तशिल्प युग आया। उसके बाद 18वीं सदी में औद्योगिक क्रांति हुई जिसने कारखाना प्रणाली शुरू की। आधुनिक युग में कृषि व्यापार की संकल्पना उभरी जहाँ खेती का व्यवसायीकरण हुआ। सबसे अंत में सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग का व्यापक विकास हुआ है। यह क्रम मानवीय आर्थिक गतिविधियों की बढ़ती जटिलता और तकनीकी निर्भरता के सोपानों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

84. (D) विशिष्ट भौगोलिक स्थिति वाली पृथक निर्माण इकाई
वैचारिक दृष्टिकोण से 'उद्योग' एक ऐसी निर्माण इकाई है जिसकी अपनी एक विशिष्ट भौगोलिक स्थिति होती है। यह कच्चे माल के स्रोत, बाज़ार और अन्य सुविधाओं के आधार पर एक निश्चित स्थान पर स्थापित होती है। यद्यपि 'उद्योग' शब्द का व्यापक अर्थों में प्रयोग होता है, विनिर्माण के संदर्भ में यह एक भौतिक संरचना और उत्पादन केंद्र को दर्शाता है जो आर्थिक गतिविधियों का केंद्र होता है।

85. (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
दक्षिण और दक्षिण-पूर्वी एशिया के घने बसे प्रदेशों में विशाल जनसंख्या के कारण बहुत बड़ा बाज़ार उपलब्ध है। यह अभिकथन सत्य है। हालाँकि, कारण गलत है क्योंकि इन क्षेत्रों के लोगों की क्रय शक्ति अभी भी उत्तरी अमेरिका और यूरोप के विकसित देशों के लोगों की तुलना में बहुत कम है। यहाँ बाज़ार का विस्तार जनसंख्या की अधिकता के कारण है, न कि प्रति व्यक्ति उच्च आय के कारण।

86. (B) आधुनिक वृहत स्तरीय मानकीकृत विनिर्माण
आधुनिक वृहत स्तरीय विनिर्माण की मुख्य विशेषता एक ही प्रकार की वस्तुओं का विशाल परिमाण में उत्पादन करना है। इसे मानकीकरण कहा जाता है जहाँ मशीनों के प्रयोग से हजारों समान वस्तुएं कम समय में बनाई जाती हैं। यह पद्धति उत्पादन लागत को घटाने और बड़े बाज़ारों की मांग को पूरा करने में सहायक होती है। हस्तशिल्प या शिल्प तरीके में वस्तुओं में भिन्नता और सीमितता होती है।

87. (D) एल्युमिनियम उद्योग
एल्युमिनियम उद्योग अलौह धात्विक खनिज आधारित उद्योग है क्योंकि इसके मुख्य अयस्क बॉक्साइट में लोहा नहीं होता है। लौह-इस्पात उद्योग में लौह अंश वाले खनिजों का प्रयोग होता है। सीमेंट और नमक उद्योग अधात्विक खनिजों या रासायनिक स्रोतों पर आधारित हैं। अलौह धातुओं का उपयोग विद्युत और विमानन जैसे क्षेत्रों में उनके हल्के वजन और चालकता के कारण व्यापक रूप से किया जाता है।

88. (A) सरकारी नीति
संतुलित आर्थिक विकास के लिए सरकार द्वारा अपनाई जाने वाली प्रादेशिक नीतियां उद्योगों की अवस्थिति को प्रभावित करती हैं। सरकार पिछड़े क्षेत्रों में उद्योगों को आकर्षित करने के लिए करों में छूट, सस्ती जमीन और बिजली जैसी सुविधाएं प्रदान करती है। इससे क्षेत्रीय असमानता कम होती है और देश के सभी भागों का समान विकास संभव होता है। यह एक महत्वपूर्ण गैर-भौगोलिक कारक है जो औद्योगिक वितरण को नियंत्रित करता है।

89. (C) आधुनिक विनिर्माण
आधुनिक शक्ति के साधनों, जैसे विद्युत और पेट्रोलियम, तथा जटिल मशीनों द्वारा किया जाने वाला विनिर्माण 'आधुनिक विनिर्माण' कहलाता है। यह प्राचीन हस्तशिल्प और साधारण यंत्रीकरण से बहुत आगे की अवस्था है। इसमें बड़े पैमाने पर उत्पादन, उच्च विशिष्टीकरण और उन्नत संगठनात्मक प्रबंधन

संभव नहीं है। यह ढांचा सुनिश्चित करता है कि उत्पादन की पूरी प्रक्रिया सुव्यवस्थित और आर्थिक रूप से लाभप्रद बनी रहे।

135. (A) P-2, Q-4, R-3, S-1
विभिन्न उद्योगों और उनके प्रमुख कच्चे माल या कारकों का मिलान उनकी उत्पादन प्रकृति को दर्शाता है। शक्कर के लिए गन्ना, पोत निर्माण के लिए इस्पात, सॉफ्टवेयर के लिए कुशल मानवीय श्रम और फर्नीचर के लिए लकड़ी अनिवार्य है। यह स्पष्ट करता है कि प्रत्येक उद्योग की अपनी विशिष्ट आवश्यकताएं होती हैं जो उसकी अवस्थिति और सफलता को निर्धारित करती हैं। यह औद्योगिक भूगोल के बुनियादी सिद्धांतों का प्रतिबिंब है।

136. (A) सीमित उपयोग ही होता था
औद्योगिक क्रांति से पूर्व खाद्य पदार्थों को लंबे समय तक सुरक्षित रखने की विधियों का उपयोग बहुत ही सीमित था। लोग मुख्य रूप से ताजे भोजन पर निर्भर थे। बाद में प्रसंस्करण और डिब्बाबंदी की आधुनिक तकनीकों के विकास ने खाद्य सुरक्षा और वितरण में क्रांतिकारी बदलाव लाए। प्राचीन समय में सुखाने या नमक लगाने जैसी कुछ पारंपरिक विधियां ही ज्ञात थीं, जो औद्योगिक स्तर पर बड़े पैमाने पर प्रचलित नहीं थीं।

137. (C) स्वच्छंद उद्योग
स्वच्छंद उद्योग वे हैं जो भारी कच्चे माल के बजाय विभिन्न संघटक पुर्जों पर निर्भर रहते हैं। ये पुर्जे कहीं से भी आसानी से मंगाए जा सकते हैं। इस कारण इन उद्योगों को कच्चे माल के स्रोत के पास होना जरुरी नहीं है। इलेक्ट्रॉनिक सामान और कंप्यूटर असेंबलिंग इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ये उद्योग मुख्य रूप से परिवहन के साधनों और बाज़ार की निकटता के आधार पर अपनी अवस्थिति तय करते हैं।

138. (A) केवल 1, 2 और 4
चीनी उद्योग गन्ने (कच्चा माल) के पास और एल्यूमिनियम उद्योग बिजली (शक्ति स्रोत) के पास स्थापित होते हैं। समूहन अर्थव्यवस्था से उद्योगों को साझा सुविधाओं का लाभ मिलता है। कथन 3 गलत है क्योंकि परिवहन किसी भी उद्योग की अवस्थिति के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारक है। परिवहन के बिना न तो कच्चा माल मिल सकता है और न ही तैयार माल बाज़ार तक पहुँच सकता है।

139. (D) धात्विक, आधारभूत, बड़े पैमाने का
लौह-इस्पात उद्योग धात्विक खनिज पर आधारित है और इसे आधारभूत उद्योग कहा जाता है क्योंकि यह अन्य उद्योगों को लोहा-इस्पात प्रदान करता है। यह बड़े पैमाने का उद्योग है क्योंकि इसमें भारी मशीनों, विशाल पूँजी और हजारों श्रमिकों की आवश्यकता होती है। यह उद्योग आधुनिक निर्माण क्षेत्र की जननी माना जाता है। अन्य श्रेणियों जैसे उपभोक्ता या कुटीर उद्योग में यह अपनी विशालता के कारण फिट नहीं बैठता।

140. (B) निजी क्षेत्र के उद्योग
जिन उद्योगों का स्वामित्व, नियंत्रण और प्रबंधन व्यक्तिगत निवेशकों या निजी संस्थाओं के पास होता है, उन्हें निजी क्षेत्र के उद्योग कहते हैं। इनका मुख्य संचालन व्यक्तिगत लाभ के उद्देश्य से किया जाता है। बाज़ार की मांग के अनुसार ये अपनी उत्पादन नीतियां तय करते हैं। पूँजीवादी देशों में आर्थिक गतिविधियों का अधिकांश भाग इसी क्षेत्र के अंतर्गत आता है, जो नवाचार और दक्षता को प्रोत्साहित करता है।

141. (A) केवल 1, 2 और 4
विनिर्माण में हाथ और मशीनों दोनों का प्रयोग शामिल है। उद्योग एक विशिष्ट भौगोलिक इकाई है और श्रम विभाजन से उत्पादन बढ़ता है। पर्यटन एक सेवा क्षेत्र है, विनिर्माण नहीं। बाज़ार के लिए केवल मांग नहीं, बल्कि क्रय शक्ति भी अनिवार्य है। अतः कथन 3 और 5 गलत हैं। बाकी कथन औद्योगिक विकास और उसकी परिभाषा के संबंध में तथ्यात्मक रूप से सही और सटीक जानकारी प्रदान करते हैं।

142. (D) जिसमें उत्पादन का कम जटिल तंत्र हो
तृतीय विश्व के देशों में औद्योगिक विकास के प्रारंभिक चरणों में ऐसे विनिर्माण पर बल दिया जाता है जिसमें उत्पादन का तंत्र कम जटिल हो। इसका उद्देश्य कम पूँजी और उपलब्ध श्रम का उपयोग करके रोजगार बढ़ाना है। ये देश धीरे-धीरे उच्च तकनीक की ओर बढ़ते हैं। जटिल प्रणालियों के लिए आवश्यक उच्च पूंजी और विशेषज्ञता की कमी के कारण वे सरल उद्योगों को प्राथमिकता देते हैं जो स्थानीय आर्थिक स्थिति के अनुकूल हों।

143. (A) शक्ति हेतु कोयले की उपलब्धता का महत्त्व
पहले उद्योग कोयला खानों के पास लगते थे क्योंकि कोयला भारी था और शक्ति का मुख्य स्रोत था। खनिज तेल और जलविद्युत के विकास ने ऊर्जा को तारों और पाइपों के माध्यम से कहीं भी ले जाना संभव बना दिया। इससे उद्योगों के लिए कोयला क्षेत्रों के पास होना अब कम महत्वपूर्ण हो गया है। अब उद्योग बाज़ार या कच्चे माल के पास अपनी सुविधा के अनुसार कहीं भी स्थापित हो सकते हैं।

144. (B) बिना मानवीय हस्तक्षेप के स्वचालित निर्माण प्रक्रिया
स्वचालन या ऑटोमेशन का तात्पर्य उस निर्माण प्रक्रिया से है जहाँ कार्य मशीनों और कंप्यूटरों द्वारा बिना प्रत्यक्ष मानवीय हस्तक्षेप के संपन्न किया जाता है। यह विनिर्माण की सबसे उन्नत अवस्था है। यहाँ मशीनें स्वयं ही गुणवत्ता की जांच करती हैं और उत्पादन के विभिन्न चरणों को नियंत्रित करती हैं। इससे मानवीय त्रुटियां कम होती हैं, सुरक्षा बढ़ती है और उत्पादन की गति में अभूतपूर्व वृद्धि होती है।

145. (A) 3, 1, 4, 2
मानवीय विनिर्माण के इतिहास में हस्तशिल्प सबसे पहले आया। फिर औद्योगिक क्रांति के साथ बड़े कारखाने शुरु हुए। इसके बाद छोटे पैमाने के उद्योगों में बिजली की मशीनों का प्रयोग बढ़ा। सबसे नवीनतम चरण उच्च प्रौद्योगिकी और स्वचालन है। यह क्रम सरल हाथ के औजारों से शुरु होकर जटिल डिजिटल

अनुप्रयोग का संगम होता है, जो तकनीकी प्रगति के लिए बेहतर वातावरण प्रदान करता है।

168. (A) इसमें वैज्ञानिकों और इंजीनियरों जैसे 'सफेद-कॉलर' पेशेवरों का प्रभुत्व होता है।
उच्च-प्रौद्योगिकी विनिर्माण क्षेत्र में कार्यबल की प्रकृति पारंपरिक उद्योगों से बहुत भिन्न होती है। यहाँ अकुशल उत्पादन श्रमिकों की तुलना में उच्च शिक्षित और तकनीकी रूप से दक्ष पेशेवरों की अधिकता होती है। वैज्ञानिक, सॉफ्टवेयर इंजीनियर और शोधकर्ता इन उद्योगों की रीढ़ होते हैं। यहाँ सफेद-कॉलर श्रमिकों का अनुपात काफी अधिक पाया जाता है, जो जटिल कार्यों को कुशलतापूर्वक संभालते हैं।

169. (C) कच्चे माल के स्रोत तक पहुँच
उच्च-प्रौद्योगिकी उद्योगों के लिए कच्चा माल अब प्राथमिक अवस्थिति कारक नहीं है। ये उद्योग उच्च मूल्य वाले और कम वजन वाले घटकों का उपयोग करते हैं, जिन्हें आसानी से कहीं भी ले जाया जा सकता है। इनके लिए कुशल प्रतिभाओं की उपलब्धता और संचार के आधुनिक साधन अधिक महत्वपूर्ण हैं। इसलिए कच्चे माल की निकटता इनके लिए काफी गौण मानी जाती है।

170. (D) क्योंकि वे कच्चे माल या बाजार जैसे विशिष्ट स्थानिक कारकों से बंधे नहीं होते हैं।
स्वच्छंद या फुटलूस उद्योग वे होते हैं जिन्हें किसी विशिष्ट भौगोलिक बाधा का सामना नहीं करना पड़ता। चूंकि उच्च-प्रौद्योगिकी उद्योगों के उत्पाद हल्के होते हैं और उनके उत्पादन के लिए भारी कच्चे माल की आवश्यकता नहीं होती, इसलिए वे परिवहन लागत से मुक्त होते हैं। वे कहीं भी स्थापित किए जा सकते हैं जहाँ कुशल मानव संसाधन और आधुनिक बुनियादी ढांचा उपलब्ध हो।

171. (C) आधारभूत और उपभोक्ता वस्तु उद्योग
विनिर्माण क्षेत्र के वर्गीकरण में उत्पादों का उपयोग किस रूप में किया जा रहा है, यह बहुत महत्वपूर्ण है। इस आधार पर उद्योगों को दो श्रेणियों में बांटा जाता है। आधारभूत उद्योग वे हैं जो अन्य उद्योगों के लिए सामग्री तैयार करते हैं, जबकि उपभोक्ता वस्तु उद्योग सीधे आम जनता की जरूरतों को पूरा करने के लिए सामान बनाते हैं। यह वर्गीकरण औद्योगिक अर्थव्यवस्था के अंतर्संबंधों को समझने में मदद करता है।

172. (B) लौह-इस्पात उद्योग
लौह-इस्पात उद्योग को आधुनिक सभ्यता का आधार माना जाता है क्योंकि यह अन्य सभी उद्योगों के लिए आधार प्रदान करता है। मशीनों, पुलों, इमारतों और औजारों के निर्माण के लिए इस्पात एक अनिवार्य कच्चा माल है। बिना इस्पात के किसी भी अन्य विनिर्माण गतिविधि की कल्पना करना कठिन है। अपनी इसी व्यापक उपयोगिता और निर्भरता के कारण इसे एक आदर्श आधारभूत उद्योग के रूप में पहचाना जाता है।

173. (D) वे उद्योग जो सीधे अंतिम उपभोक्ताओं द्वारा उपभोग के लिए सामान बनाते हैं।
उपभोक्ता वस्तु उद्योग वे इकाइयाँ हैं जिनके उत्पाद विनिर्माण प्रक्रिया के अंतिम चरण को दर्शाते हैं। ये वस्तुएँ सीधे बाजार में बेची जाती हैं ताकि आम लोग अपनी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा कर सकें। बिस्कुट, कपड़े, इलेक्ट्रॉनिक गैजेट और वाहन इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इन उद्योगों का मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं की प्रत्यक्ष मांग को पूरा करना और उनके जीवन स्तर में सुधार लाना होता है।

174. (A) आधारभूत और उपभोक्ता वस्तु उद्योगों का संतुलित विकास।
किसी भी राष्ट्र की आर्थिक स्थिरता और औद्योगिक प्रगति के लिए आधारभूत और उपभोक्ता उद्योगों के बीच संतुलन होना अनिवार्य है। आधारभूत उद्योग जहाँ औद्योगिक ढांचे को मजबूती प्रदान करते हैं, वहीं उपभोक्ता उद्योग आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देकर जनता की मांग पूरी करते हैं। इन दोनों क्षेत्रों का समन्वित विकास ही एक आत्मनिर्भर और समृद्ध औद्योगिक अर्थव्यवस्था का सफल निर्माण करता है।

175. (C) एक आधारभूत उद्योग
जब कोई उद्योग किसी अन्य कंपनी के लिए कच्चा माल या मशीनरी बनाने के पुर्दे प्रदान करता है, तो वह उसके लिए आधारभूत भूमिका निभाता है। यहाँ इस्पात का उपयोग सीधे उपभोग के लिए नहीं, बल्कि मशीन निर्माण की प्रक्रिया में एक इनपुट के रूप में किया जा रहा है। इस संदर्भ में इस्पात उद्योग उस मशीन निर्माता कंपनी के लिए आवश्यक सामग्री का प्राथमिक स्रोत बन जाता है।

माल और तैयार माल को ढोने में लगने वाली परिवहन लागत पर निर्भर करती है। वेबर इस लागत को कम करना अनिवार्य मानते थे।

157. (D) उद्योग कच्चे माल के स्रोत के पास स्थापित होगा या बाजार के पास।
पदार्थ सूचकांक की अवधारणा कच्चे माल के वजन और तैयार उत्पाद के वजन के अनुपात को दर्शाती है। यह सूचकांक औद्योगिक अवस्थिति के निर्धारण में निर्णायक भूमिका निभाता है। इसके माध्यम से यह पता लगाया जाता है कि क्या किसी उद्योग को कच्चे माल के स्रोत के निकट स्थापित करना लाभदायक होगा या उसे उपभोक्ता बाजार के पास स्थापित किया जाना चाहिए।

158. (A) गन्ने के खेतों (कच्चा माल) के पास
चीनी उद्योग एक विशिष्ट भार-ह्रास प्रक्रिया पर आधारित है, जहाँ उत्पादन के दौरान कच्चे माल का वजन काफी घट जाता है। गन्ने जैसे कच्चे माल का परिवहन महंगा और समय के साथ गुणवत्ता कम करने वाला होता है। इसलिए, परिवहन लागत कम करने और दक्षता बढ़ाने के लिए चीनी मिलों को हमेशा गन्ने के खेतों या उत्पादन केंद्रों के निकट ही स्थापित किया जाता है।

159. (C) जब सस्ते श्रम से होने वाली बचत परिवहन की अतिरिक्त लागत से अधिक हो।
वेबर के औद्योगिक अवस्थिति मॉडल में श्रम लागत एक महत्वपूर्ण प्रतिसंतुलन कारक है। यद्यपि परिवहन लागत प्राथमिक है, लेकिन यदि किसी वैकल्पिक स्थान पर सस्ता श्रम उपलब्ध हो, तो उद्योग वहां स्थानांतरित हो सकता है। यह स्थानांतरण केवल तभी तर्कसंगत होता है जब श्रम लागत में होने वाली कुल बचत, वहां तक माल परिवहन की अतिरिक्त बढ़ी हुई लागत को पार कर लेती है।

160. (A) बेकरी और शीतल पेय उद्योग
बेकरी और शीतल पेय जैसे उद्योग आमतौर पर बाजार की निकटता को प्राथमिकता देते हैं। इन उद्योगों के उत्पादों में अक्सर वजन बढ़ जाता है या वे खराब होने वाली प्रकृति के होते हैं। सर्वव्यापी कच्चे माल जैसे पानी का उपयोग करने वाले उद्योगों के लिए तैयार माल को दूर तक ले जाने की तुलना में बाजार के पास उत्पादन करना अधिक आर्थिक और सुलभ होता है।

161. (D) एक साथ स्थापित होने पर उद्योगों को आपसी लाभ मिलता है।
समूहन अर्थव्यवस्था का सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि उद्योगों का एक स्थान पर संकेंद्रण उनके लिए लाभकारी होता है। जब विभिन्न इकाइयाँ पास-पास स्थित होती हैं, तो वे साझा संसाधनों, बुनियादी ढांचे और सेवाओं का लाभ उठा पाती हैं। इस भौगोलिक निकटता से उत्पादन लागत में कमी आती है और सामूहिक रूप से दक्षता में सुधार होता है, जो व्यक्तिगत रूप से संभव नहीं है।

162. (B) अग्रगामी श्रृंखला (Forward Linkage)
औद्योगिक संबंधों में अग्रगामी श्रृंखला तब उत्पन्न होती है जब एक उद्योग का तैयार उत्पाद दूसरे उद्योग के लिए कच्चे माल के रूप में कार्य करता है। इस्पात संयंत्र द्वारा उत्पादित इस्पात ऑटोमोबाइल कारखाने के लिए एक आवश्यक घटक है। इस प्रकार, इस्पात उद्योग अपने उत्पादन को आगे की प्रक्रिया के लिए ऑटोमोबाइल उद्योग को उपलब्ध कराकर एक महत्वपूर्ण आर्थिक और तकनीकी कड़ी स्थापित करता है।

163. (C) विशिष्ट कौशल वाले श्रम बाजार का विकास
औद्योगिक संकेंद्रण का एक प्रमुख सकारात्मक आर्थिक प्रभाव कुशल कार्यबल की उपलब्धता है। जब समान या संबंधित उद्योग एक क्षेत्र में एकत्र होते हैं, तो वहां एक विशेष कौशल सेट वाले श्रमिकों का बड़ा समूह विकसित हो जाता है। यह स्थिति कंपनियों के लिए भर्ती प्रक्रिया को सरल बनाती है और श्रमिकों को बेहतर रोजगार के अवसर तथा प्रशिक्षण के लाभ प्रदान करने में सहायक होती है।

164. (D) वे नकारात्मक प्रभाव जो अत्यधिक संकेंद्रण के कारण उत्पन्न होते हैं।
विसमूहन की शक्तियाँ उन प्रतिकूल परिस्थितियों को संदर्भित करती हैं जो औद्योगिक क्षेत्रों में अत्यधिक भीड़भाड़ के कारण उत्पन्न होती हैं। जब एक ही स्थान पर बहुत अधिक उद्योग जमा हो जाते हैं, तो जमीन की कीमतें बढ़ने लगती हैं और प्रदूषण की समस्याएँ गंभीर हो जाती हैं। ये नकारात्मक कारक अंततः उद्योगों को उस स्थान से दूर कम भीड़ वाले क्षेत्रों में जाने को मजबूर करते हैं।

165. (A) बैंकिंग, परिवहन और बीमा जैसी व्यावसायिक सेवाएँ
औद्योगिक संकुलों के भीतर केवल विनिर्माण इकाइयाँ ही नहीं पनपतीं, बल्कि उन्हें सहयोग देने वाले सेवा क्षेत्र का भी विस्तार होता है। बड़े पैमाने पर उत्पादन और व्यापार के लिए वित्तीय लेनदेन, जोखिम प्रबंधन और रसद सहायता की आवश्यकता होती है। इसीलिए औद्योगिक केंद्रों में बैंकिंग, बीमा और परिवहन जैसी सहायक सेवाओं का जाल बिछ जाता है, जो उद्योगों के सुचारु संचालन को सुनिश्चित करता है।

166. (B) ज्ञान और नवाचार
उच्च-प्रौद्योगिकी उद्योग आधुनिक आर्थिक विकास के शीर्ष पर स्थित हैं। इन उद्योगों की सबसे बड़ी शक्ति भौतिक कच्चे माल के बजाय बौद्धिक क्षमता और रचनात्मकता है। गहन अनुसंधान के माध्यम से ये उद्योग नई तकनीकों का सृजन करते हैं। ज्ञान और नवाचार ही वे मुख्य तत्व हैं जो इन उद्योगों को पारंपरिक विनिर्माण से अलग करते हैं और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अग्रणी बनाए रखते हैं।

167. (B) अनुसंधान संस्थानों और कुशल कार्यबल का संकेंद्रण
टेक्नोपोल या प्रौद्योगिकी ध्रुव ऐसे विशेष क्षेत्र होते हैं जहाँ उच्च तकनीक वाली कंपनियाँ और अनुसंधान संस्थान स्थित होते हैं। इन केंद्रों की मुख्य विशेषता वैज्ञानिक ज्ञान और इंजीनियरिंग कौशल का भारी जमावड़ा है। सिलिकॉन वैली जैसे उदाहरण दर्शाते हैं कि यहाँ शैक्षणिक उत्कृष्टता और औद्योगिक

प्रणालियों तक के मानवीय कौशल और तकनीकी विकास की यात्रा को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करता है।

146. (A) समाकलित आर्थिक विकास एवं प्रादेशिक विशिष्टता में वृद्धि
परिवहन सुविधाओं में सुधार से विनिर्माण क्षेत्र में समाकलित आर्थिक विकास होता है और विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट उद्योगों का विकास संभव होता है। तीव्र परिवहन के कारण दूर-दराज के क्षेत्रों से कच्चा माल मंगाना और तैयार उत्पाद भेजना आसान हो जाता है। इससे क्षेत्रीय आर्थिक असमानता कम होती है और पूरा देश एक एकीकृत बाज़ार के रूप में जुड़ जाता है। यह औद्योगिक प्रसार और आर्थिक समृद्धि का आधार बनता है।

147. (C) ऊनी वस्त्र निर्माण की इकाइयाँ
ऊनी वस्त्र उद्योग एक पशु आधारित उद्योग है क्योंकि इसका कच्चा माल भेड़, बकरी और अन्य पशुओं के बालों से प्राप्त होता है। अन्य विकल्पों में कागज़ वन आधारित, चीनी कृषि आधारित और जूट भी पौधों के रेशों पर निर्भर है। पशु आधारित उद्योग ग्रामीण और पहाड़ी क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह उद्योग पशुपालन और ऊन प्रसंस्करण की कड़ियों के माध्यम से संपन्न होता है।

148. (D) स्वच्छंद उद्योगों की कच्चे माल के स्रोतों पर पूर्ण निर्भरता
स्वच्छंद उद्योगों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे किसी विशिष्ट कच्चे माल के स्रोत पर निर्भर नहीं होते हैं। ये उद्योग संघटक पुर्जों का उपयोग करते हैं जिन्हें कहीं भी आसानी से लाया जा सकता है। अन्य सभी कथन सत्य हैं; विनिर्माण द्वितीयक है, बड़े उद्योगों को भारी पूँजी चाहिए और कुछ उद्योग आधारभूत होते हैं। स्वच्छंद उद्योगों को उनकी स्थापना के लचीलेपन के कारण ही यह नाम दिया गया है।

149. (C) उद्योग एक व्यापक श्रेणी है जिसमें सेवाएँ भी शामिल हो सकती हैं
'विनिर्माण उद्योग' विशेष रूप से भौतिक वस्तुओं के निर्माण को दर्शाता है, जबकि 'उद्योग' एक बहुत व्यापक शब्द है। इसमें न केवल विनिर्माण, बल्कि पर्यटन, बैंकिंग, और मनोरंजन जैसी सेवाएं भी शामिल हो सकती हैं। उदाहरण के लिए, हम पर्यटन उद्योग या फिल्म उद्योग की बात करते हैं जहाँ कुछ नया भौतिक रूप से नहीं बनाया जाता। यह सूक्ष्म अंतर अकादमिक और आर्थिक वर्गीकरण में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

150. (B) कम पूँजी
आधुनिक बड़े पैमाने के विनिर्माण के लिए भारी पूँजी निवेश एक अनिवार्य शर्त है। बिना बड़ी पूँजी के विशाल कारखानों की स्थापना, उन्नत तकनीक की खरीद और कच्चे माल का स्टॉक करना संभव नहीं है। इसमें अत्यधिक विशिष्टीकरण, बड़े प्रशासनिक संगठन और विशेषज्ञ अधिकारियों की भी आवश्यकता होती है। अतः 'कम पूँजी' इस प्रकार के उद्योगों की विशेषता नहीं हो सकती, बल्कि यह कुटीर उद्योगों का गुण है।

151. (B) कुटीर उद्योगों के माध्यम से स्थानीय उत्पादन
औद्योगिक क्रांति से पहले की आर्थिक व्यवस्था में उत्पादन मुख्य रूप से घरों में सीमित था। कारीगर अपने परिवार के सदस्यों के साथ स्थानीय रूप से उपलब्ध कच्चे माल का उपयोग करके वस्तुओं का निर्माण करते थे। यह प्रक्रिया पूरी तरह से विकेंद्रीकृत थी और उत्पादित वस्तुएं स्थानीय समुदायों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए होती थीं।

152. (A) उत्पादन को कुटीर उद्योग से कारखाना प्रणाली में बदल दिया।
औद्योगिक क्रांति ने उत्पादन की परंपरागत घरेलू पद्धतियों को पूरी तरह से विस्थापित कर दिया। जेम्स वॉट के भाप इंजन जैसे तकनीकी आविष्कारों ने मशीनीकरण को बढ़ावा दिया, जिससे बड़े पैमाने पर उत्पादन संभव हुआ। इसके परिणामस्वरूप, उत्पादन की कुटीर आधारित छोटी इकाइयाँ विशाल कारखानों में परिवर्तित हो गईं, जहाँ श्रमिकों का भारी जमावड़ा मशीनों पर काम करने लगा।

153. (C) प्रत्येक श्रमिक का उत्पादन प्रक्रिया के एक विशिष्ट भाग में विशेषज्ञ होना।
कारखाना प्रणाली की शुरुआत के साथ ही श्रम के विशिष्टीकरण की अवधारणा अत्यंत प्रभावी हो गई। इसमें एक ही वस्तु के संपूर्ण निर्माण के बजाय, उत्पादन प्रक्रिया को छोटे और सरल चरणों में विभाजित कर दिया जाता है। प्रत्येक श्रमिक को केवल एक विशेष कार्य में प्रशिक्षित किया जाता है, जिससे उत्पादन की गति और गुणवत्ता दोनों में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

154. (D) शहरीकरण की प्रक्रिया में तीव्रता
कारखानों की स्थापना ने आर्थिक परिदृश्य में व्यापक बदलाव किए, जिसके परिणामस्वरूप बड़े औद्योगिक केंद्रों का उदय हुआ। रोजगार के अवसरों की तलाश में ग्रामीण आबादी का इन केंद्रों की ओर बड़े पैमाने पर पलायन हुआ। इस निरंतर आव्रजन ने औद्योगिक शहरों के विकास और विस्तार को गति दी, जिससे समाज में शहरीकरण की प्रक्रिया अत्यंत तीव्र और व्यापक हो गई।

155. (C) इसने उत्पादन, प्रौद्योगिकी और सामाजिक संरचना में व्यापक परिवर्तन किए।
अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शुरू हुई औद्योगिक क्रांति केवल तकनीकी प्रगति तक सीमित नहीं थी। इसने उत्पादन विधियों को यंत्रीकृत करके अर्थव्यवस्था का आधार बदल दिया। इसके प्रभावस्वरूप कार्यबल की संरचना, निवास स्थान और सामाजिक संबंधों में भी गहरा बदलाव आया। यह क्रांति मानव इतिहास में आर्थिक संगठन और सामाजिक जीवन के बीच एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुई।

156. (B) परिवहन लागत को न्यूनतम करने पर
अल्फ्रेड वेबर ने उद्योगों की स्थापना के लिए न्यूनतम लागत सिद्धांत प्रतिपादित किया था। इस भौगोलिक विश्लेषण का मुख्य उद्देश्य उत्पादन की कुल लागत को कम करना है। वेबर के अनुसार, किसी भी उद्योग की अवस्थिति मुख्य रूप से कच्चे

अध्याय 06

तृतीयक और चतुर्थ क्रियाकलाप

1. निम्नलिखित में से कौन-सा एक तृतीयक क्रियाकलाप है?
(A) आखेट
(B) व्यापार
(C) कृषि
(D) मत्स्य पालन

2. आर्थिक विकास की आरंभिक अवस्थाओं में, लोगों का एक बड़ा अनुपात किस सेक्टर में कार्यरत होता है?
(A) प्राथमिक सेक्टर
(B) द्वितीयक सेक्टर
(C) तृतीयक सेक्टर
(D) चतुर्थक सेक्टर

3. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R) है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): एक विकसित अर्थव्यवस्था में, बहुसंख्यक श्रमिक तृतीयक क्रियाकलापों में रोज़गार पाते हैं।
कारण (R): तृतीयक क्रियाकलापों के लिए व्यावसायिक कुशलता, सैद्धांतिक ज्ञान और क्रियात्मक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

4. तृतीयक क्रियाकलापों में ‘उत्पादन’ को किस रूप में मापा जाता है?
(A) विनिर्मित वस्तुओं की संख्या
(B) कृषि उपज का टन भार
(C) कारखानों की संख्या
(D) पारिश्रमिक और वेतन

5. निम्नलिखित में से कौन-सा तृतीयक क्रियाकलाप ‘विनिमय’ के अंतर्गत सम्मिलित है?
(A) नलसाज का कार्य
(B) डॉक्टर की सेवा
(C) परिवहन और संचार
(D) अध्यापक का शिक्षण

6. निम्नलिखित सूचना के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (क्रियाकलाप)
P. वकील
Q. नलसाज
R. अध्यापक
S. दुकानदार
List II: (सेक्टर से संबंध)
1. तृतीयक क्रियाकलाप (व्यापार)
2. तृतीयक क्रियाकलाप (सेवा)
3. तृतीयक क्रियाकलाप (सेवा)
4. तृतीयक क्रियाकलाप (सेवा)
(A) P-2, Q-4, R-3, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-2, R-2, S-1
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

7. द्वितीयक और तृतीयक क्रियाकलापों में मुख्य अंतर किस पर आधारित है?
(A) विनिर्माण में प्रयुक्त उत्पादन की भौतिक तकनीक
(B) उद्योगों में स्वचालित मशीनरी का सघन उपयोग
(C) फैक्ट्री प्रक्रियाओं का विस्तृत औद्योगिक अनुप्रयोग
(D) कर्मियों की विशिष्ट कुशलता, अनुभव और ज्ञान

8. सेवा सेक्टर के वर्गीकरण के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-सा चतुर्थ क्रियाकलाप का एक भाग है?
(A) सूचना-आधारित
(B) परिवहन
(C) मौद्रिक बैंकिंग
(D) व्यापार एवं वाणिज्य

9. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. पंचम क्रियाकलाप में विशेषज्ञ और निर्णयकर्ता शामिल होते हैं।
2. परिवहन, तृतीयक क्रियाकलाप का एक हिस्सा है।
3. चतुर्थ क्रियाकलाप अनुसंधान और विकास से संबंधित है।
4. बीमा, एक द्वितीयक क्रियाकलाप है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

10. व्यापार का विशिष्ट उद्देश्य क्या है?
(A) लाभ कमाना
(B) सामाजिक सेवा प्रदान करना
(C) सांस्कृतिक आदान-प्रदान
(D) सरकारी नीतियों का समर्थन

11. वे कस्बे और नगर जहाँ व्यापार का काम होता है, क्या कहलाते हैं?
(A) औद्योगिक केंद्र
(B) कृषि केंद्र
(C) प्रशासनिक केंद्र
(D) व्यापारिक केंद्र

12. ग्रामीण विपणन केंद्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ग्रामीण विपणन केंद्र पूर्णतः नगरीय केंद्र होते हैं।
2. इन केंद्रों में व्यक्तिगत और व्यावसायिक सेवाएँ सुविकसित होती हैं।
3. ये निकटवर्ती बस्तियों का पोषण करते हैं।
4. ये स्थानीय संग्रहण और वितरण केंद्र के रूप में कार्य करते हैं।
5. इनमें केवल फुटकर व्यापार होता है, थोक व्यापार नहीं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) 1 और 2
(B) 3 और 4
(C) 1, 3 और 5
(D) 2, 4 और 5

13. ग्रामीण क्षेत्रों में लगने वाले 'आवधिक बाज़ार' का एक उदाहरण है:
(A) दैनिक बाज़ार
(B) मासिक बाज़ार
(C) साप्ताहिक हाट
(D) स्थायी शॉपिंग मॉल

14. निम्नलिखित में से कौन-सी सेवा नगरीय बाज़ार केंद्रों में विशिष्ट रूप से उपलब्ध होती है?
(A) दैनिक उपयोग की अत्यंत साधारण वस्तुएँ
(B) खेती में प्रयुक्त होने वाले कृषि उपकरण
(C) ग्रामीण क्षेत्र के स्थानीय निर्मित हस्तशिल्प
(D) अध्यापक और वकील जैसी व्यावसायिक सेवाएँ

15. निम्नलिखित संचार माध्यमों के विकास को उनके ऐतिहासिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. मोबाइल दूरभाष
2. लेखन का आविष्कार
3. इंटरनेट
4. तार प्रेषण (टेलीग्राफ)

(A) 2, 4, 1, 3
(B) 1, 2, 4, 3
(C) 2, 3, 1, 4
(D) 4, 2, 1, 3

16. फुटकर व्यापार किससे संबंधित है?
(A) उत्पादकों को वस्तुओं का प्रत्यक्ष विक्रय
(B) उपभोक्ताओं को वस्तुओं का प्रत्यक्ष विक्रय
(C) थोक विक्रेताओं को वस्तुओं का विक्रय
(D) विनिर्माताओं से प्रत्यक्ष खरीद

17. निम्नलिखित में से कौन-सा एक फुटकर बिक्री का 'भंडार रहित' उदाहरण है?
(A) विभागीय भंडार
(B) डाक आदेश
(C) श्रृंखला भंडार
(D) उपभोक्ता सहकारी

18. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R) है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:

अभिकथन (A): थोक विक्रेता प्रायः फुटकर भंडारों को उधार देते हैं।

कारण (R): फुटकर विक्रेता अधिकतर थोक विक्रेता की पूँजी पर ही अपने कार्य का संचालन करते हैं।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

19. फुटकर व्यापार में वृहत स्तर पर सबसे पहले नवाचार लाने वाले कौन थे?
(A) विभागीय भंडार
(B) श्रृंखला भंडार
(C) उपभोक्ता सहकारी समुदाय
(D) थोक व्यापारी

20. 'श्रृंखला भंडार' के संदर्भ में कौन-सा कथन गलत है?
(A) वे अत्यधिक मितव्ययता से व्यापारिक माल खरीदते हैं।
(B) वे अपने विनिर्देश पर सीधे वस्तुओं का विनिर्माण करा सकते हैं।
(C) वे एक भंडार के अनुभव को अनेक भंडारों में लागू कर सकते हैं।
(D) वे अकुशल विशेषज्ञ नियुक्त करते हैं।

21. निम्नलिखित सूचना के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

List I: (परिवहन दूरी का प्रकार)
P. किलोमीटर दूरी
Q. समय दूरी
R. लागत दूरी
S. समकाल रेखा

List II: (मापन का आधार)
1. यात्रा पर खर्च
2. मार्ग की वास्तविक लंबाई
3. यात्रा में लगने वाला समय
4. समान समय में पहुँचने वाले स्थानों को मिलाने वाली रेखा

(A) P-2, Q-3, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-3, S-4
(D) P-3, Q-2, R-1, S-4

22. परिवहन की माँग किससे प्रभावित होती है?
(A) भू-दृश्य की प्रकृति से
(B) जनसंख्या के आकार से
(C) जलवायु के प्रकार से
(D) उपलब्ध निधियों से

23. एक परिवहन जाल-तंत्र में 'नोड' क्या होता है?
(A) दो नोडों को जोड़ने वाली सड़क
(B) परिवहन का साधन
(C) यात्रा में लगने वाला समय
(D) एक संधि-स्थल या एक गंतव्य बिंदु

24. परिवहन के सभी रूपों को 'संचार पथ' क्यों कहा जाता था?
(A) क्योंकि संचार प्रारंभ में परिवहन के साधनों पर निर्भर था।
(B) क्योंकि वे केवल यात्रियों का परिवहन करते थे।
(C) क्योंकि संदेशों को संरक्षित करने के लिए लेखन का आविष्कार हुआ।
(D) क्योंकि मोबाइल दूरभाष ने संचार को परिवहन से मुक्त कर दिया।

25. संचार सेवाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. संचार में शब्दों, संदेशों, तथ्यों और विचारों का प्रेषण सम्मिलित है।
2. लेखन के आविष्कार ने संचार को परिवहन पर निर्भर बना दिया।
3. मोबाइल दूरभाष जैसे विकासों ने संचार को परिवहन से मुक्त कर दिया है।
4. परिवहन जाल-तंत्र सक्षम होने पर संचार का फैलाव कठिन हो जाता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 1, 3 और 4

26. किस प्रौद्योगिकी के विकास से दूरसंचार में क्रांति आई?
(A) विद्युतीय प्रौद्योगिकी
(B) वाष्प इंजन
(C) सौर ऊर्जा
(D) परमाणु ऊर्जा

27. जनसंचार माध्यमों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. रेडियो और दूरदर्शन विस्तृत श्रोताओं को समाचार प्रसारित करते हैं।
2. ये विज्ञापन एवं मनोरंजन के लिए महत्त्वपूर्ण हैं।
3. उपग्रह संचार केवल पृथ्वी से अंतरिक्ष में सूचना का प्रसारण करता है।
4. इंटरनेट ने वैश्विक संचार तंत्र में कोई विशेष परिवर्तन नहीं किया है।
5. तार प्रेषण और मोर्स कूट वर्तमान में प्रचलित मुख्य माध्यम हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) 1 और 2
(B) 3 और 4
(C) 1, 2 और 5
(D) 3, 4 और 5

28. निम्नलिखित में से कौन-सी एक निम्नस्तरीय सेवा है?
(A) लेखाकार
(B) पंसारी की दुकान
(C) परामर्शदाता
(D) काय चिकित्सक

29. निम्नलिखित में से कौन-सी सेवा मानसिक श्रम का उदाहरण है?
(A) माली
(B) धोबी
(C) अध्यापक
(D) नाई

30. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R) है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): अनेक सेवाएँ अब नियमित हो गई हैं और उनका पर्यवेक्षण सरकारों अथवा कंपनियों द्वारा किया जाता है।
कारण (R): राज्य और संघ विधान ने परिवहन, दूरसंचार, ऊर्जा और जलापूर्ति जैसी सेवाओं के विपणन के पर्यवेक्षण और नियंत्रण के लिए निगमों की स्थापना की है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

31. मुंबई की 'डब्बावाला' सेवा किस प्रकार की सेवा का उदाहरण है?
(A) व्यक्तिगत सेवा

(B) उच्चस्तरीय व्यावसायिक सेवा
(C) विनियमित सरकारी सेवा
(D) चतुर्थक सेवा

32. संयुक्त राज्य अमेरिका में कितने प्रतिशत से अधिक कर्मी सेवाओं में संलग्न हैं?
(A) 25 प्रतिशत
(B) 75 प्रतिशत
(C) 50 प्रतिशत
(D) 90 प्रतिशत

33. विश्व का अकेला सबसे बड़ा तृतीयक क्रियाकलाप कौन-सा है (कुल पंजीकृत रोज़गार और राजस्व की दृष्टि से)?
(A) सूचना प्रौद्योगिकी
(B) पर्यटन
(C) बैंकिंग
(D) परिवहन

34. निम्नलिखित सूचना के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (पर्यटन आकर्षण)
P. जलवायु
Q. भू-दृश्य
R. इतिहास एवं कला
S. संस्कृति और अर्थव्यवस्था
List II: (उदाहरण/कारण)
1. प्राचीन नगर और पुरातत्व के स्थान
2. मानवजातीय और स्थानीय रीतियाँ
3. दक्षिणी यूरोप में धूप की लंबी अवधि
4. पर्वत, झीलें और दर्शनीय समुद्री तट
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

35. दक्षिणी यूरोप और भूमध्यसागरीय क्षेत्रों में पर्यटन के महत्त्व का एक मुख्य कारण क्या है?
(A) शीतकालीन खेलों की सुविधा
(B) घने जंगल
(C) ऊष्ण व धूपदार मौसम
(D) औद्योगिक विकास

36. गोवा में 'हेरीटेज़ होम्स' और कर्नाटक में 'मैडीकेरे और कूर्ग' किस प्रकार के पर्यटन व्यवसाय का उदाहरण हैं?
(A) शीतकालीन खेल पर्यटन
(B) चिकित्सा पर्यटन
(C) पारिस्थितिकी पर्यटन
(D) 'घरों में रुकना' (Home Stay)

37. 'चिकित्सा पर्यटन' क्या है?
(A) डॉक्टरों का पर्यटन
(B) चिकित्सा उपकरणों का व्यापार
(C) चिकित्सा उपचार को अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन गतिविधि से संबद्ध करना
(D) स्वास्थ्य पर शोध के लिए यात्रा

38. चिकित्सा पर्यटन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत विश्व में चिकित्सा पर्यटन में अग्रणी देश बनकर उभरा है।
2. यह केवल विकसित देशों में ही प्रचलित है।
3. इससे भारत, थाईलैंड और सिंगापुर जैसे विकासशील देशों को लाभ होता है।
4. इसमें चिकित्सा परीक्षणों का बाह्यस्रोतन शामिल नहीं है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

39. चतुर्थ क्रियाकलाप किस पर केंद्रित होते हैं?
(A) प्राकृतिक संसाधनों का दोहन
(B) विनिर्माण और प्रक्रमण
(C) शारीरिक श्रम आधारित सेवाएँ
(D) अनुसंधान और विकास

40. चतुर्थ सेक्टर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह ज्ञानोन्मुखी सेक्टर है।
2. इसमें सूचना का संग्रहण, उत्पादन और प्रकीर्णन शामिल है।
3. इसने प्राथमिक व द्वितीयक सेक्टरों से रोज़गार को प्रतिस्थापित किया है।
4. विकसित अर्थव्यवस्थाओं में आधे से अधिक कर्मी इस क्षेत्र में हैं।
5. म्यूचुअल फंड प्रबंधक और सॉफ्टवेयर सेवाएँ इसके उदाहरण हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

41. निम्नलिखित में से कौन-सा चतुर्थ क्रियाकलाप का एक उदाहरण है?
(A) खेती
(B) वस्त्र निर्माण
(C) विश्वविद्यालयी अध्यापन
(D) मछली पकड़ना

42. चतुर्थ क्रियाकलापों की क्या विशेषता है?

(A) इन्हें बाह्यस्रोतन के माध्यम से किया जा सकता है।
(B) वे संसाधनों से बँधे होते हैं।
(C) वे पर्यावरण से प्रभावित होते हैं।
(D) वे अनिवार्य रूप से बाज़ार द्वारा स्थानीकृत होते हैं।

43. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R) है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): पंचम क्रियाकलाप में नवीन एवं वर्तमान विचारों की रचना, पुनर्गठन और व्याख्या पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।
कारण (R): ये व्यवसाय 'स्वर्ण कॉलर' कहलाते हैं और वरिष्ठ व्यावसायिक कार्यकारियों, सरकारी अधिकारियों और अनुसंधान वैज्ञानिकों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

44. 'स्वर्ण कॉलर' (Gold Collar) कहे जाने वाले व्यवसाय किस सेक्टर से संबंधित हैं?
(A) द्वितीयक सेक्टर
(B) पंचम सेक्टर
(C) तृतीयक सेक्टर
(D) चतुर्थ सेक्टर

45. सेवाओं के विकास के निम्नलिखित चरणों को सही क्रम में व्यवस्थित करें:
1. चतुर्थक सेवाएँ (ज्ञान आधारित)
2. प्राथमिक क्रियाकलाप
3. तृतीयक सेवाएँ (सामान्य)
4. द्वितीयक क्रियाकलाप (विनिर्माण)
(A) 2, 4, 3, 1
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 3, 4, 1
(D) 4, 2, 1, 3

46. बाह्यस्रोतन (Outsourcing) का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) लागतों को बढ़ाना और दक्षता को कम करना
(B) केवल घरेलू कंपनियों को काम सौंपना
(C) रोज़गार के अवसरों को कम करना
(D) दक्षता को सुधारना और लागतों को घटाना

47. निम्नलिखित सूचना के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (अवधारणा)
P. बाह्यस्रोतन
Q. अपतरन (Offshoring)
R. ज्ञान प्रक्रमण बाह्यस्रोतन (KPO)
S. अंकीय विभाजक
List II: (विवरण)
1. उच्च कुशल कर्मियों को शामिल करने वाला बाह्यस्रोतन
2. सूचना और संचार प्रौद्योगिकी से मिलने वाले अवसरों का असमान वितरण
3. दक्षता सुधारने के लिए किसी बाहरी अभिकरण को काम सौंपना
4. बाह्यस्रोतन में कार्य को समुद्रपार के स्थानों पर स्थानांतरित करना
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

48. जब बाह्यस्रोतन में कार्य समुद्रपार के स्थानों पर स्थानांतरित कर दिया जाता है, तो उसे क्या कहते हैं?
(A) होम शोरिंग
(B) अपतरन (Offshoring)
(C) ज्ञान प्रक्रमण बाह्यस्रोतन (KPO)
(D) अंकीय विभाजक

49. निम्नलिखित में से कौन-सी व्यापारिक क्रियाकलाप सामान्यतः बाह्यस्रोतन की जाती है?
(A) कृषि
(B) सूचना प्रौद्योगिकी और काल सेंटर सेवाएँ
(C) खनन
(D) मत्स्य पालन

50. बाह्यस्रोतन उन देशों में क्यों आ रहा है जहाँ सस्ता और कुशल श्रम उपलब्ध है?
(A) क्योंकि यह तुलनात्मक लाभ प्रदान करता है।
(B) क्योंकि वहाँ उच्च कर दरें हैं।
(C) क्योंकि वहाँ परिवहन की लागत अधिक है।
(D) क्योंकि वहाँ राजनीतिक अस्थिरता है।

51. बाह्यस्रोतन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. बाह्यस्रोतन से भारत, चीन और फिलीपींस में नए काम उत्पन्न हुए हैं।
2. बाह्यस्रोतन वाले देश उत्प्रवास वाले देश भी हैं।
3. बाह्यस्रोतन के कारण कामों को बाहर भेजने वाले देशों में कोई प्रतिरोध नहीं होता।
4. बाह्यस्रोतन के बने रहने का मुख्य कारण केवल राजनीतिक स्थिरता है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) केवल 1 और 4

52. ज्ञान प्रक्रमण बाह्यस्रोतन (KPO) व्यवसाय प्रक्रमण बाह्यस्रोतन (BPO) से किस प्रकार भिन्न है?
(A) KPO में कम कुशल कर्मी होते हैं।
(B) KPO केवल विनिर्माण से संबंधित है।
(C) KPO में लागत अधिक होती है और दक्षता कम होती है।
(D) KPO में उच्च कुशल कर्मी सम्मिलित होते हैं।

53. निम्नलिखित में से कौन-सा ज्ञान प्रक्रमण बाह्यस्रोतन (KPO) का उदाहरण नहीं है?
(A) ई-लर्निंग
(B) अनुसंधान और विकास (R&D) क्रियाएँ
(C) ग्राहक सहायता और काल सेंटर सेवाएँ
(D) बौद्धिक संपदा अनुसंधान

54. 'अंकीय विभाजक' (Digital Divide) शब्द का क्या अर्थ है?
(A) देशों के बीच भौगोलिक विभाजन
(B) सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तक पहुँच में असमानता
(C) विकसित और विकासशील देशों में समान अवसर
(D) ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में समान इंटरनेट गति

55. अंकीय विभाजक के लिए निर्णायक कारक क्या है?
(A) देश का भौगोलिक आकार
(B) देश की जनसंख्या
(C) देश की सैन्य शक्ति
(D) कोई देश कितनी शीघ्रता से अपने नागरिकों को सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तक पहुँच उपलब्ध करा सकता है।

56. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R) है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): देशों के भीतर भी अंकीय विभाजक विद्यमान है।
कारण (R): भारत जैसे विशाल देश में, महानगरीय केंद्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में अंकीय विश्व के साथ बेहतर संबंध और पहुँच पाई जाती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

57. जनशक्ति सेवा सेक्टर का एक महत्त्वपूर्ण कारक क्यों है?
(A) क्योंकि इसमें मशीनरी का अधिक उपयोग होता है।
(B) क्योंकि यह केवल प्राथमिक उत्पादों से संबंधित है।
(C) क्योंकि इसका निष्पादन कुशल, प्रशिक्षित और विशेषज्ञ कर्मियों द्वारा होता है।
(D) क्योंकि इसमें किसी प्रकार के कौशल की आवश्यकता नहीं होती।

58. तृतीयक क्रियाकलापों में उत्पादन और विनिमय दोनों सम्मिलित होते हैं। 'विनिमय' के अंतर्गत क्या आता है?
(A) व्यापार, परिवहन और संचार
(B) सेवाओं की उपलब्धता
(C) पारिश्रमिक और वेतन
(D) व्यावसायिक उत्पादन

59. निम्नलिखित में से कौन-सा तृतीयक क्रियाकलाप का उदाहरण नहीं है?
(A) डॉक्टर
(B) वकील
(C) तकनीशियन
(D) इस्पात प्रगलन

60. निम्नलिखित सूचना के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (क्रियाकलाप का स्तर)
P. प्राथमिक
Q. द्वितीयक
R. तृतीयक
S. चतुर्थक
List II: (उदाहरण)
1. व्यापार
2. आखेट
3. सूचना का उत्पादन
4. वस्त्र निर्माण
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

61. सेवा सेक्टर के प्रवाह चित्र के अनुसार, परिवहन के अंतर्गत कौन-सा उप-वर्ग नहीं है?
(A) रेल जाल-तंत्र
(B) सड़क जाल-तंत्र
(C) दूरसंचार
(D) जल परिवहन

62. 'फुटकर व्यापार' किस प्रकार के व्यापार और वाणिज्य के अंतर्गत आता है?
(A) थोक व्यापार
(B) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार
(C) यह व्यापार और वाणिज्य का एक स्वतंत्र रुप है
(D) तृतीयक क्रियाकलाप के 'व्यापार एवं वाणिज्य' खंड के अंतर्गत

63. ग्रामीण विपणन केंद्र को 'अर्ध-नगरीय' केंद्र क्यों कहा जाता है?
(A) क्योंकि वे अत्यंत अल्पवर्धित प्रकार के व्यापारिक केंद्र होते हैं।
(B) क्योंकि वे बड़े शहरों में स्थित होते हैं।

(C) क्योंकि उनमें सभी आधुनिक सुविधाएँ होती हैं।
(D) क्योंकि वे केवल अंतर्राष्ट्रीय व्यापार करते हैं।

64. नगरीय बाज़ार केंद्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इनमें केवल साधारण वस्तुएँ और सेवाएँ मिलती हैं।
2. ये अधिक विशिष्टीकृत नगरीय सेवाएँ प्रदान करते हैं।
3. यहाँ श्रम बाज़ार और आवासन जैसी विशिष्टीकृत सेवाएँ भी उपलब्ध होती हैं।
4. इनमें व्यावसायिकों जैसे अध्यापक, वकील, और चिकित्सक की सेवाएँ उपलब्ध होती हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

65. 'फेरी', 'रेहड़ी', और 'द्वार से द्वार' बिक्री किसके उदाहरण हैं?
(A) थोक व्यापार
(B) भंडार रहित फुटकर बिक्री
(C) भंडार सहित फुटकर बिक्री
(D) अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य

66. परिवहन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह व्यक्तियों और संपत्ति को भौतिक रूप से स्थानांतरित करने की सेवा है।
2. यह मनुष्य की गतिशीलता की मूलभूत आवश्यकता को पूरा करता है।
3. यह वस्तुओं के उत्पादन, वितरण और उपभोग में सहायता करता है।
4. परिवहन द्वारा पदार्थ का मूल्य घट जाता है।
5. परिवहन दूरी को केवल किलोमीटर में मापा जा सकता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) 1, 2 और 3
(B) 2, 3 और 4
(C) 1, 4 और 5
(D) 3, 4 और 5

67. एक परिवहन जाल-तंत्र में 'योजक' (Link) क्या है?
(A) एक उद्गम बिंदु
(B) एक गंतव्य बिंदु
(C) दो नोडों को जोड़ने वाली प्रत्येक सड़क
(D) एक बड़ा कस्बा

68. एक 'सुसंबद्ध' (well-connected) जाल-तंत्र की क्या विशेषता होती है?
(A) उसमें कम योजक होते हैं।
(B) उसमें कोई नोड नहीं होता।
(C) वह केवल एक ही मार्ग पर निर्भर करता है।
(D) उसमें अनेक योजक होते हैं।

69. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R) है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): मोबाइल दूरभाष और उपग्रहों जैसे विकासों ने संचार को परिवहन से मुक्त कर दिया है।
कारण (R): पुराने तंत्रों के सस्ता होने के कारण, संचार के सभी रूपों का साहचर्य परिवहन से पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हुआ है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

70. रेडियो और दूरदर्शन को 'जनसंचार माध्यम' क्यों कहा जाता है?
(A) क्योंकि वे केवल व्यक्तिगत संचार के लिए हैं।
(B) क्योंकि वे पूरे विश्व में विस्तृत श्रोताओं को प्रसारण करते हैं।
(C) क्योंकि वे केवल समाचार पत्र प्रकाशित करते हैं।
(D) क्योंकि वे केवल मनोरंजन के लिए हैं, विज्ञापन के लिए नहीं।

71. निम्नलिखित सेवाओं को उनके स्तर के अनुसार (निम्न से उच्च) क्रम में व्यवस्थित करें:
1. परामर्शदाता
2. पंसारी की दुकान
3. लेखाकार
4. धोबीघाट

(A) 2, 4, 3, 1
(B) 4, 2, 1, 3
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 4, 2, 3, 1

72. कौन-सी सेवाएँ हैं जिनका पर्यवेक्षण अथवा निष्पादन प्रायः सरकारों अथवा कंपनियों द्वारा किया जाता है?
(A) महामार्गों एवं सेतुओं का निर्माण और अग्निशमन विभाग
(B) असंगठित घरेलू सेवाएँ
(C) व्यक्तिगत सेवाएँ जैसे नाई और धोबी
(D) फुटकर व्यापार

73. निम्नलिखित सूचना के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (सेवा का उदाहरण)
P. मोची, गृहपाल
Q. मल्टीप्लेक्स, रेस्तरां
R. अध्यापक, वकील
S. अग्निशमन विभाग

List II: (सेवा का प्रकार)
1. मानसिक श्रम
2. असंगठित व्यक्तिगत सेवा

है।
(B) उत्पादन और उपभोग की प्रक्रियाएँ एक ही स्थान पर होती हैं।
(C) सभी प्रकार की व्यापारिक गतिविधियाँ एक ही देश के भीतर होती हैं।
(D) उत्पादक, आपूर्तिकर्ता और उपभोक्ता वैश्विक स्तर पर फैले हैं।

155. ई-कॉमर्स ने व्यापार को कैसे प्रभावित किया है?
(A) इसने आधुनिक व्यापार को कम प्रतिस्पर्धी बना दिया है।
(B) इसने राष्ट्रों की भौगोलिक सीमाओं को अधिक मजबूत किया है।
(C) इसने वैश्विक विक्रेताओं से सीधे जुड़ना संभव बनाया है।
(D) इसने पारंपरिक व्यापारिक केंद्रों के महत्व को पूरी तरह समाप्त कर दिया है।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

परिवहन, एक महत्वपूर्ण तृतीयक सेवा, समाज और अर्थव्यवस्था के लिए एक धमनी प्रणाली के रूप में कार्य करता है जो लोगों, वस्तुओं और सूचनाओं की गतिशीलता को संभव बनाता है। यह दूरी के घर्षण को कम करने का एक मौलिक साधन है। परिवहन के विभिन्न साधनों - सड़क, रेल, जल, वायु और पाइपलाइन - में से प्रत्येक की अपनी विशिष्ट विशेषताएँ, लागत संरचना और उपयुक्तता होती है। उदाहरण के लिए, सड़क परिवहन कम दूरी के लिए डोर-टू-डोर सेवा प्रदान करने में लचीला है, जबकि रेल परिवहन लंबी दूरी पर भारी माल के लिए कुशल है। वायु परिवहन सबसे तीव्र है लेकिन महंगा भी, जो इसे उच्च-मूल्य और शीघ्र खराब होने वाली वस्तुओं के लिए आदर्श बनाता है। जल परिवहन सबसे सस्ता है और भारी, गैर-विनाशकारी वस्तुओं के अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए महत्वपूर्ण है। एक कुशल परिवहन प्रणाली बनाने के लिए इन साधनों का एकीकरण आवश्यक है, जिसे अंतः-मोडल परिवहन (intermodal transport) कहा जाता है। एक विकसित परिवहन नेटवर्क न केवल आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है, बल्कि यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान, सामाजिक एकीकरण और रणनीतिक रक्षा क्षमताओं को भी सुगम बनाता है। परिवहन नेटवर्क का घनत्व और गुणवत्ता अक्सर किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास के स्तर का एक विश्वसनीय संकेतक होता है, क्योंकि यह बाजारों तक पहुंच और संसाधनों की उपलब्धता को सीधे प्रभावित करता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. स्रोत के अनुसार, परिवहन का मौलिक कार्य क्या है?
(A) केवल लोगों का मनोरंजन करना।
(B) दूरी के घर्षण को कम करना।
(C) वस्तुओं के उत्पादन को नियंत्रित करना।
(D) आर्थिक विकास को धीमा करना।

157. लंबी दूरी पर भारी माल के परिवहन के लिए कौन सा साधन सबसे कुशल माना जाता है?
(A) वायु परिवहन
(B) सड़क परिवहन
(C) पशु-चालित गाड़ियाँ
(D) रेल परिवहन

158. उच्च-मूल्य और शीघ्र खराब होने वाली वस्तुओं के लिए वायु परिवहन को प्राथमिकता क्यों दी जाती है?
(A) क्योंकि यह सबसे तीव्र साधन है।
(B) क्योंकि यह सबसे सस्ता साधन है।
(C) क्योंकि यह डोर-टू-डोर सेवा प्रदान करता है।
(D) क्योंकि इसकी क्षमता असीमित है।

159. 'अंतः-मोडल परिवहन' (intermodal transport) की अवधारणा से क्या तात्पर्य है?
(A) केवल एक ही परिवहन साधन का उपयोग करना।
(B) परिवहन के बिना वस्तुओं का आदान-प्रदान।
(C) परिवहन के विभिन्न साधनों का एकीकृत उपयोग।
(D) केवल अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए परिवहन।

160. किसी क्षेत्र का परिवहन नेटवर्क उसके आर्थिक विकास के बारे में क्या संकेत देता है?
(A) एक सघन नेटवर्क अक्सर उच्च आर्थिक विकास का संकेतक होता है।
(B) इसका आर्थिक विकास से कोई संबंध नहीं है।
(C) एक अविकसित नेटवर्क हमेशा तीव्र आर्थिक विकास को इंगित करता है।
(D) यह केवल क्षेत्र की जनसंख्या के आकार को दर्शाता है।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

पर्यटन उद्योग, जिसे अक्सर 'अदृश्य व्यापार' कहा जाता है, विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती तृतीयक गतिविधियों में से एक है। यह केवल अवकाश और मनोरंजन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसके कई रूप हैं, जैसे सांस्कृतिक पर्यटन, पारिस्थितिकी-पर्यटन (eco-tourism), साहसिक पर्यटन और चिकित्सा पर्यटन। सांस्कृतिक पर्यटन ऐतिहासिक स्थलों, संग्रहालयों और स्थानीय परंपराओं पर केंद्रित होता है, जबकि पारिस्थितिकी-पर्यटन का उद्देश्य प्राकृतिक वातावरण को संरक्षित करते हुए उसका अनुभव करना है। इस उद्योग का मेजबान देश की अर्थव्यवस्था पर बहुआयामी प्रभाव पड़ता है। यह विदेशी मुद्रा अर्जित करने का एक प्रमुख स्रोत है, जो भुगतान संतुलन को बेहतर बनाने में मदद करता है। इसके अतिरिक्त, यह आवास, भोजन, परिवहन और गाइड जैसी सेवाओं में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के अवसर पैदा करता है, जिससे स्थानीय समुदायों की आय में वृद्धि होती है। हालाँकि, अनियंत्रित पर्यटन के नकारात्मक प्रभाव भी हो सकते हैं, जिनमें प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव, पर्यावरण प्रदूषण, और सांस्कृतिक वस्तुकरण (cultural commodification) शामिल हैं, जहाँ स्थानीय संस्कृति को केवल एक बिकाऊ उत्पाद के रूप में देखा जाने लगता

84. हैदराबाद अथवा मनीला में स्थापित एक कंपनी किस तकनीक का उपयोग करके अमेरिका या जापान के लिए काम कर सकती है?
(A) पारंपरिक सर्वेक्षण तकनीक
(B) केवल मैनुअल डेटा प्रक्रमण
(C) हस्तलिखित पत्राचार
(D) भौगोलिक सूचना तंत्र की तकनीक

85. 'कॉलर का रंग' और 'कार्य की प्रवृत्ति' के बीच के संबंध में, 'स्वर्ण कॉलर' किसे संदर्भित करता है?
(A) प्राथमिक क्षेत्र के श्रमिक
(B) द्वितीयक क्षेत्र के श्रमिक
(C) पंचम क्रियाकलाप से जुड़े विशेषज्ञ और निर्णयकर्ता
(D) तृतीयक क्षेत्र के सेवा कर्मी

86. निम्नलिखित सूचना के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (क्रियाकलाप)
P. फुटकर व्यापार
Q. पर्यटन
R. बाह्यस्रोतन
S. पंचम क्रियाकलाप
List II: (मुख्य अवधारणा)
1. नीति निर्माण
2. उपभोक्ताओं को प्रत्यक्ष विक्रय
3. प्रमोद के लिए यात्रा
4. लागत घटाना
(A) P-2, Q-3, R-4, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

87. सेवाओं द्वारा उपलब्ध विशेषज्ञता किस पर अधिक निर्भर करती है?
(A) उत्पादन तकनीकों और मशीनरी पर
(B) केवल अनुभव पर
(C) केवल फैक्ट्री प्रक्रियाओं पर
(D) कर्मियों की कुशलताओं, अनुभव और ज्ञान पर

88. एक विकसित अर्थव्यवस्था में विभिन्न सेक्टरों में श्रमिकों के अनुपात का सही क्रम (उच्च से निम्न) क्या है?
(A) प्राथमिक > द्वितीयक > तृतीयक
(B) द्वितीयक > तृतीयक > प्राथमिक
(C) तृतीयक > द्वितीयक > प्राथमिक
(D) प्राथमिक > तृतीयक > द्वितीयक

89. तृतीयक क्रियाकलापों में 'उत्पादन' में क्या शामिल होता है?
(A) मूर्त वस्तुओं का निर्माण
(B) कच्चे माल का प्रक्रमण
(C) सेवाओं की उपलब्धता जिनका उपभोग किया जाता है
(D) कृषि उत्पादों का संग्रहण

90. तृतीयक क्रियाकलापों के प्रकारों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. व्यापार और वाणिज्य लाभ कमाने के उद्देश्य से किए जाते हैं।
2. परिवहन दूरी को निष्प्रभाव करने के लिए उपयोग में लाया जाता है।
3. संचार सेवाओं में केवल पारंपरिक डाक सेवाएँ शामिल हैं।
4. वित्तीय सेवाएँ जैसे बैंकिंग और बीमा तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा नहीं हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) केवल 1 और 4

91. स्थानीय स्तर से अंतर्राष्ट्रीय सोपान तक व्यापार के उत्थान ने किन संस्थाओं को जन्म दिया है?
(A) केवल औद्योगिक केंद्र
(B) केवल कृषि फार्म
(C) केवल प्रशासनिक कार्यालय
(D) व्यापारिक केंद्र अथवा संग्रहण और वितरण बिंदु

92. फुटकर व्यापार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह उपभोक्ताओं को वस्तुओं के अप्रत्यक्ष विक्रय से संबंधित है।
2. अधिकांश फुटकर व्यापार विक्रय से नियत प्रतिष्ठानों और भंडारों में संपन्न होता है।
3. इंटरनेट फुटकर बिक्री का एक भंडार रहित उदाहरण है।
4. उपभोक्ता सहकारी समुदाय फुटकर व्यापार में नवाचार लाने वाले पहले संगठनों में से थे।
5. विभागीय भंडार वस्तुओं की खरीद के लिए विभागीय प्रमुखों को उत्तरदायित्व सौंपते हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) 1, 2 और 3
(B) 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1 और 5
(D) 3, 4 और 5

93. थोक व्यापार का गठन किसके द्वारा होता है?
(A) केवल फुटकर भंडारों द्वारा
(B) सीधे उपभोक्ताओं द्वारा
(C) अनेक बिचौलिए सौदागरों और पूर्तिघरों द्वारा
(D) केवल विनिर्माताओं द्वारा

94. मानचित्र पर 'समकाल रेखाएँ' (Isochrones) क्यों खींची जाती हैं?
(A) समान लागत वाले स्थानों को मिलाने के लिए
(B) समान दूरी वाले स्थानों को मिलाने के लिए
(C) समान जनसंख्या वाले स्थानों को मिलाने के लिए

3. मनोरंजनात्मक सेवा
4. नियमित सेवा
(A) P-2, Q-3, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

74. अल्पविकसित देशों में कितने प्रतिशत से कम लोग सेवा क्षेत्र में लगे हैं?
(A) 10 प्रतिशत
(B) 50 प्रतिशत
(C) 30 प्रतिशत
(D) 20 प्रतिशत

75. पर्यटन को तृतीयक क्रियाकलाप क्यों माना जाता है?
(A) क्योंकि यह व्यापार के उद्देश्यों के लिए की जाने वाली यात्रा है।
(B) क्योंकि यह कृषि से संबंधित है।
(C) क्योंकि इसमें वस्तुओं का विनिर्माण होता है।
(D) क्योंकि यह प्रमोद के उद्देश्यों के लिए की जाने वाली यात्रा है।

76. पर्यटन किस प्रकार अन्य उद्योगों को पोषित करता है?
(A) यह केवल होटल उद्योग को लाभ पहुँचाता है।
(B) यह अवसंरचना, फुटकर व्यापार और शिल्प उद्योगों को पोषित करता है।
(C) इसका अन्य उद्योगों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
(D) यह केवल परिवहन उद्योग पर निर्भर करता है।

77. पर्यटन आकर्षणों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ठंडे प्रदेशों के लोग ठंडे मौसम की अपेक्षा करते हैं।
2. पर्वत, झीलें और समुद्री तट भू-दृश्य के अंतर्गत आते हैं।
3. इतिहास और कला में लोगों की कोई रुचि नहीं होती।
4. मानवजातीय और स्थानीय रीतियाँ भी पर्यटन को लुभाती हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

78. शीतकालीन अवकाश का आनंद लेने वाले लोगों की विशिष्ट जलवायवी ज़रूरत क्या हो सकती है?
(A) हर समय वर्षा
(B) आर्द्र और उमस भरा मौसम
(C) केवल शांत मौसम
(D) उच्च तापमान या स्कीइंग के लिए हिमावरण

79. भारत के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत का पश्चिमी तट एक लोकप्रिय पर्यटक गंतव्य है।
2. 2005 में, संयुक्त राज्य अमेरिका से 55,000 रोगी उपचार के लिए भारत आए।
3. भारत विश्व में चिकित्सा पर्यटन में एक पिछड़ा हुआ देश है।
4. भारत में विश्वस्तरीय अस्पताल केवल ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं।
5. भारत विकिरण बिंबों के अध्ययन जैसी विशिष्ट चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध करा रहा है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) 1, 2 और 5
(B) 3 और 4
(C) 1, 3 और 5
(D) 2, 4 और 5

80. चतुर्थ और पंचम क्रियाकलाप किस प्रकार के सेक्टर का हिस्सा हैं जो ज्ञानोन्मुखी है?
(A) प्राथमिक सेक्टर
(B) सेवा सेक्टर
(C) द्वितीयक सेक्टर
(D) कृषि सेक्टर

81. चतुर्थ सेक्टर और पंचम क्रियाकलाप में सूक्ष्म अंतर किस पर आधारित है?
(A) दोनों में समान कार्य होते हैं।
(B) पंचम क्रियाकलाप उच्चतम स्तर के निर्णय लेने और नीतियों के निर्माण से संबंधित हैं।
(C) चतुर्थ क्रियाकलाप निर्णय लेने से संबंधित हैं।
(D) पंचम क्रियाकलाप केवल सूचना संग्रहण करते हैं।

82. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R) है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): बाह्यस्त्रोतन वाले देश अपने यहाँ काम तलाश कर रहे युवकों का प्रतिरोध झेल रहे हैं।
कारण (R): बाह्यस्त्रोतन के कारण उन देशों में रोज़गार के अवसर कम हो जाते हैं जहाँ से काम बाहर भेजा जा रहा है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

83. पंचक सेवाओं की नवीन प्रवृत्तियों में क्या शामिल है?
(A) केवल बी.पी.ओ.
(B) केवल अपतरन
(C) ज्ञान प्रक्रमण बाह्यस्त्रोतन (के.पी.ओ.) और 'होम शोरिंग'
(D) केवल ग्राहक सहायता सेवाएँ

(D) उनके काम में कोई समानता नहीं है।

105. पंचम क्रियाकलापों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ये उच्चतम स्तर के निर्णय लेने से संबंधित हैं।
2. इनमें नवीन विचारों की रचना और पुनर्गठन शामिल है।
3. इन्हें 'स्वर्ण कॉलर' व्यवसाय कहा जाता है।
4. ये तृतीयक सेक्टर का एक उप-विभाग हैं।
5. उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में इनका महत्त्व इनकी संख्या से कहीं अधिक होता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

106. भारत में चिकित्सा पर्यटन के अतिरिक्त और किस सेवा के बाह्यस्रोतन के प्रति झुकाव पाया जाता है?
(A) चिकित्सा परीक्षणों और आँकड़े के निर्वचन
(B) कृषि कार्य
(C) कपड़ा बुनाई
(D) खनन कार्य

107. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है?
(A) बाह्यस्रोतन दक्षता को बढ़ाता है और लागतों को घटाता है।
(B) कभी-कभार अभियांत्रिकी और विनिर्माण कार्यों की भी बाह्यस्रोतन की जा सकती है।
(C) कामों के बाह्यस्रोतन करने वाले देशों में काम की तलाश करने वालों में असंतोष पाया जाता है।
(D) बी.पी.ओ. के पास के.पी.ओ. की तुलना में बेहतर व्यावसायिक अवसर होते हैं।

108. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R) है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): चतुर्थ क्रियाकलाप अनुसंधान और विकास पर केंद्रित होते हैं।
कारण (R): ये सेवाएँ विशिष्टीकृत ज्ञान, प्रौद्योगिक कुशलता और प्रशासकीय सामर्थ्य से संबद्ध होती हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

109. 'लाल कॉलर' श्रमिक सामान्यतः किस क्षेत्र की गतिविधियों से जुड़े होते हैं?
(A) द्वितीयक क्रियाकलाप
(B) तृतीयक क्रियाकलाप
(C) प्राथमिक क्रियाकलाप
(D) चतुर्थक क्रियाकलाप

110. 'नीला कॉलर' श्रमिक सामान्यतः किस प्रकार के कार्यों में लगे होते हैं?
(A) उच्च वेतन वाले व्यावसायिक कार्य
(B) कृषि और संबंधित गतिविधियाँ
(C) अनुसंधान और विकास
(D) विनिर्माण उद्योगों में वास्तविक उत्पादन में शामिल श्रमिक

111. संचार सेवाओं में किन चीज़ों का प्रेषण सम्मिलित होता है?
(A) शब्दों, संदेशों, तथ्यों और विचारों
(B) केवल भौतिक वस्तुएँ
(C) केवल व्यक्ति
(D) केवल धन

112. निम्नलिखित सूचना के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (व्यापार का प्रकार)
P. थोक व्यापार
Q. फुटकर व्यापार
R. आवधिक बाज़ार
S. श्रृंखला भंडार

List II: (विशेषता)
1. बिचौलिए सौदागर और पूर्तिघर
2. उपभोक्ताओं को प्रत्यक्ष विक्रय
3. साप्ताहिक या पाक्षिक बाज़ार
4. अनेक भंडारों का एक ही प्रबंधन

(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-1, Q-3, R-2, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

113. चतुर्थ सेक्टर में किन सेवाओं की माँग में अति उच्च वृद्धि हुई है?
(A) धोबी और नाई की सेवाएँ
(B) कर परामर्शदाताओं और सॉफ्टवेयर सेवाओं
(C) कृषि श्रम
(D) हस्तशिल्प उत्पादन

114. निम्नलिखित में से कौन-सा पंचम क्रियाकलाप का कार्य है?
(A) आँकड़ों की व्याख्या और नई प्रौद्योगिकी का मूल्यांकन
(B) आँकड़ों का संग्रहण
(C) वस्तुओं का परिवहन
(D) नियमित कार्यालयी कार्य

115. बाह्यस्रोतन के कारण भारत, चीन, पूर्वी यूरोप जैसे देशों में बड़ी संख्या में क्या खुले हैं?
(A) कृषि फार्म
(B) भारी उद्योग

व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

135. निम्नलिखित में से कौन-सा क्रियाकलाप चतुर्थ सेक्टर से संबंधित है?
(A) संगणक विनिर्माण
(B) कागज़ और कच्ची लुगदी निर्माण
(C) पुस्तकों का मुद्रण
(D) विश्वविद्यालयी अध्यापन

136. बाह्यस्त्रोतन से उत्प्रवास (out-migration) कैसे कम हो सकता है?
(A) बाह्यस्त्रोतन से घरेलू देश में ही काम उपलब्ध होने लगता है।
(B) बाह्यस्त्रोतन से विदेशों में काम के अवसर बढ़ते हैं।
(C) बाह्यस्त्रोतन का उत्प्रवास पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
(D) बाह्यस्त्रोतन से यात्रा करना कठिन हो जाता है।

137. ग्रामीण क्षेत्रों में आवधिक बाज़ार एक स्थान से दूसरे स्थान पर क्यों लगते रहते हैं?
(A) ताकि वे केवल एक ही स्थान के ग्राहकों को सेवा दे सकें।
(B) क्योंकि उनके पास स्थायी दुकान होती है।
(C) ताकि दुकानदार सभी दिन व्यस्त रहें और एक विस्तृत क्षेत्र को सेवा प्रदान कर सकें।
(D) क्योंकि सरकार उन्हें स्थान बदलने के लिए मजबूर करती है।

138. निम्नलिखित सूचना के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (देश/क्षेत्र)
P. भारत, थाईलैंड, सिंगापुर
Q. गोवा, कर्नाटक
R. दक्षिणी यूरोप
S. भारत, चीन, फिलीपींस
List II: (संबंधित पर्यटन/सेवा)
1. काल सेंटर (बाह्यस्त्रोतन)
2. धूपदार मौसम के कारण पर्यटन
3. चिकित्सा पर्यटन
4. 'घरों में रुकना' (होम स्टे)
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

139. एक 'विभाग प्रमुख' (Departmental Head) की नियुक्ति किस प्रकार के फुटकर व्यापार संगठन में की जाती है?
(A) श्रृंखला भंडार
(B) उपभोक्ता सहकारी
(C) डाक आदेश
(D) विभागीय भंडार

140. निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) तृतीयक क्रियाकलापों में सेवाओं का व्यावसायिक उत्पादन सम्मिलित होता है।
(B) द्वितीयक क्रियाकलाप में सेवाओं का उत्पादन होता है।
(C) चतुर्थ क्रियाकलाप अनुसंधान और विकास पर केंद्रित होते हैं।
(D) पंचम क्रियाकलाप में उच्चतम स्तर के निर्णयकर्ता शामिल होते हैं।

141. परिवहन दूरी को मापने का सबसे अच्छा तरीका क्या होगा यदि लक्ष्य न्यूनतम समय में पहुंचना हो?
(A) किलोमीटर दूरी
(B) लागत दूरी
(C) समय दूरी
(D) भौगोलिक दूरी

142. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. फुटकर व्यापार में वृहत स्तर पर नवाचार लाने वाले उपभोक्ता सहकारी समुदाय थे।
2. थोक विक्रेता कभी भी फुटकर भंडारों को उधार नहीं देते।
3. श्रृंखला भंडार सीधे विनिर्माताओं से खरीदकर मितव्ययता प्राप्त करते हैं।
4. विभागीय भंडार में विभिन्न अनुभागों के लिए अलग-अलग प्रमुख होते हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) 1, 2 और 3
(B) 2, 3 और 4
(C) 1, 3 और 4
(D) 1, 2 और 4

143. वे कौन-सी सेवाएँ हैं जो उद्योगों और लोगों दोनों को सेवा प्रदान करती हैं?
(A) परिवहन तंत्र
(B) केवल पंसारी की दुकानें
(C) केवल परामर्शदाता
(D) केवल धोबीघाट

144. पर्यटन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह व्यापार के उद्देश्य से की जाने वाली यात्रा है।
2. यह विश्व का सबसे बड़ा तृतीयक क्रियाकलाप है।
3. यह अवसंरचना उद्योगों को पोषित करता है।
4. यह हमेशा वर्षपर्यंत होता है, कभी ऋतुनिष्ठ नहीं होता।
5. इसमें पर्यटकों के आवास, भोजन और परिवहन जैसी सेवाएँ शामिल हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) 1, 2 और 3
(B) 2, 3 और 5
(C) 1, 4 और 5
(D) 2, 4 और 5

125. निम्नलिखित सूचना के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

List I: (कॉलर का रंग)

P. लाल कॉलर

Q. श्वेत कॉलर

R. नीला कॉलर

S. स्वर्ण कॉलर

List II: (संबंधित कार्य)

1. व्यावसायिक/कार्यालयी कार्य
2. प्राथमिक क्रियाकलाप
3. पंचम क्रियाकलाप
4. विनिर्माण/औद्योगिक कार्य

(A) P-2, Q-1, R-4, S-3

(B) P-1, Q-2, R-3, S-4

(C) P-3, Q-4, R-1, S-2

(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

126. निम्नलिखित में से कौन-सा द्वितीयक सेक्टर का क्रियाकलाप नहीं है?

(A) इस्पात प्रगलन

(B) वस्त्र निर्माण

(C) टोकरी बुनना

(D) मछली पकड़ना

127. वे काम जिनमें उच्च परिमाण और स्तर वाले अन्वेषण सम्मिलित होते हैं, क्या कहलाते हैं?

(A) पंचम क्रियाकलाप

(B) द्वितीयक क्रियाकलाप

(C) चतुर्थ क्रियाकलाप

(D) प्राथमिक क्रियाकलाप

128. तृतीयक क्रियाकलापों की प्रकृति के बारे में सही कथन का चयन करें।

(A) वे मूर्त वस्तुओं के उत्पादन से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित हैं।

(B) वे सेवाओं के व्यावसायिक उत्पादन से संबंधित हैं।

(C) वे भौतिक कच्चे माल के प्रक्रमण में प्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित होते हैं।

(D) वे केवल प्राकृतिक संसाधनों के निष्कर्षण पर निर्भर हैं।

129. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. तृतीयक क्रियाकलाप सेवा सेक्टर से संबंधित हैं।
2. अधिकांश तृतीयक क्रियाकलापों का निष्पादन अकुशल श्रमिकों द्वारा होता है।
3. तृतीयक क्रियाकलापों में उत्पादन और विनिमय दोनों सम्मिलित होते हैं।
4. द्वितीयक क्रियाकलापों की तुलना में तृतीयक क्रियाकलाप कर्मियों के ज्ञान पर कम निर्भर करते हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?

(A) केवल 1 और 3

(B) केवल 2 और 4

(C) केवल 1, 2 और 3

(D) सभी 1, 2, 3 और 4

130. व्यापारिक केंद्रों को किन दो प्रमुख प्रकारों में विभक्त किया जा सकता है?

(A) ग्रामीण और नगरीय

(B) स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय

(C) आवधिक और स्थायी

(D) थोक और फुटकर

131. संचार के विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. लेखन के आविष्कार ने संदेशों को संरक्षित करने में सहायता की।
2. प्रारंभ में संचार परिवहन के साधनों पर निर्भर था।
3. विद्युतीय प्रौद्योगिकी के विकास ने दूरसंचार में क्रांति ला दी।
4. मोबाइल दूरभाष ने संचार को तत्काल और प्रत्यक्ष बना दिया है।
5. इंटरनेट ने वैश्विक संचार तंत्र में क्रांति ला दी है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?

(A) केवल 1, 2 और 3

(B) केवल 3, 4 और 5

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

132. मनोरंजनात्मक और प्रमोद सेवाओं की स्थिति किस पर निर्भर करती है?

(A) सरकार पर

(B) उद्योगों पर

(C) कृषि पर

(D) बाज़ार पर

133. पर्यटन के संदर्भ में, 'पुलिन विश्राम' (beach holidays) के लिए ठंडे प्रदेशों के लोग किस प्रकार के मौसम की अपेक्षा करते हैं?

(A) ठंडा और बर्फीला

(B) वर्षा वाला और आर्द्र

(C) ऊष्ण और धूपदार

(D) तूफानी और हवादार

134. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R) है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:

अभिकथन (A): विकासशील देशों को चिकित्सा पर्यटन से अनेक लाभ प्राप्त होते हैं।

कारण (R): इन देशों में स्थित विश्वस्तरीय अस्पताल संपूर्ण विश्व के रोगियों का उपचार करते हैं, जो अक्सर विकसित देशों की तुलना में कम लागत पर होता है।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही

(D) समान समय में पहुँचने वाले स्थानों को मिलाने के लिए

95. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R) है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): परिवहन की माँग मार्ग की लंबाई पर आने वाले व्यवधानों को दूर करने के लिए उपलब्ध निधियों पर निर्भर करती है।
कारण (R): मार्ग का निर्धारण नगरों, कस्बों, औद्योगिक केंद्रों और कच्चे माल के स्थान, व्यापार के प्रारूप, भू-दृश्य की प्रकृति और जलवायु जैसे कारकों पर निर्भर करता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

96. कौन-सी नूतन उन्नति ने किसी भी समय कहीं से भी संचार को प्रत्यक्ष और तत्काल बना दिया है?
(A) तार प्रेषण
(B) मोबाइल दूरभाष
(C) मोर्स कूट
(D) टैलेक्स

97. व्यापार के विकास के निम्नलिखित रूपों को उनके पैमाने के अनुसार क्रम में व्यवस्थित करें (स्थानीय से वैश्विक):
1. अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा विनिमय
2. स्थानीय वस्तु विनिमय
3. नगरीय विपणन केंद्र
4. ग्रामीण विपणन केंद्र
(A) 2, 4, 3, 1
(B) 1, 3, 4, 2
(C) 2, 3, 4, 1
(D) 4, 2, 3, 1

98. किस प्रकार की सेवाएँ भुगतान कर सकने वाले व्यक्तिगत उपभोक्ताओं को उपलब्ध होती हैं?
(A) माली, धोबी और नाई जैसी सेवाएँ
(B) केवल उच्चस्तरीय सेवाएँ
(C) केवल नियमित सरकारी सेवाएँ
(D) केवल उद्योगों को चलाने वाली सेवाएँ

99. निम्नलिखित सूचना के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (सेवा का उदाहरण)
P. गोल्फ कोर्स
Q. डब्बावाला सेवा
R. मल्टीप्लेक्स
S. अग्निशमन विभाग
List II: (विशेषता/स्थान)
1. असंगठित व्यक्तिगत सेवा
2. केंद्रीय व्यापार क्षेत्र (CBD)
3. नियमित/सरकारी सेवा
4. CBD से बाहर जहाँ भूमि सस्ती हो
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

100. सेवा क्षेत्र में रोज़गार की प्रवृत्ति क्या है?
(A) यह घट रही है।
(B) यह अपरिवर्तित है।
(C) यह केवल विकसित देशों में घट रही है।
(D) यह बढ़ रही है।

101. पर्यटन से संबंधित कुल पंजीकृत रोज़गारों की संख्या लगभग कितनी है?
(A) 10 करोड़
(B) 15 करोड़
(C) 25 करोड़
(D) 40 करोड़

102. पर्यटन को 'ऋतुनिष्ठ' क्यों कहा जा सकता है?
(A) क्योंकि यह पूरे वर्ष एक समान रहता है।
(B) क्योंकि अवकाश की अवधि अनुकूल मौसमी दशाओं पर निर्भर करती है।
(C) क्योंकि यह केवल व्यापार से संबंधित है।
(D) क्योंकि यह केवल एक ही स्थान पर केंद्रित है।

103. बाह्यस्रोतन (Outsourcing) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसका उद्देश्य दक्षता को सुधारना और लागतों को घटाना है।
2. जब कार्य समुद्रपार स्थानांतरित होता है तो इसे अपतरन (offshoring) कहते हैं।
3. इसमें केवल विनिर्माण और अभियांत्रिकी ही शामिल हैं।
4. सूचना प्रौद्योगिकी और ग्राहक सहायता का बाह्यस्रोतन नहीं किया जा सकता।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

104. कोपेनहेगन में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी के मुख्य कार्यकारी अधिकारी और एक चिकित्सकीय प्रतिलेखक के बीच क्या समानता है?
(A) वे दोनों सेवा सेक्टर के ज्ञानोन्मुखी प्रभाग में काम करते हैं।
(B) वे दोनों प्राथमिक सेक्टर में काम करते हैं।
(C) वे दोनों द्वितीयक सेक्टर में काम करते हैं।

145. "ये सेवाएँ संसाधनों से बँधी हुई, पर्यावरण से प्रभावित तथा अनिवार्य रुप से बाज़ार द्वारा स्थानीकृत नहीं हैं।" यह कथन किस प्रकार के क्रियाकलापों के लिए सबसे उपयुक्त है?
(A) प्राथमिक क्रियाकलाप
(B) चतुर्थ क्रियाकलाप
(C) द्वितीयक क्रियाकलाप
(D) कुछ तृतीयक क्रियाकलाप (जैसे पर्यटन)

146. KPO और BPO का पूर्ण रूप क्या है?
(A) ज्ञान प्रक्रमण बाह्यस्रोतन और व्यवसाय प्रक्रमण बाह्यस्रोतन
(B) नॉलेज प्रोसेस आउटसोर्सिंग और बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग
(C) काइनेटिक प्रोसेस आउटपुट और बेसिक प्रोसेस आउटपुट
(D) नॉलेज प्रोडक्शन Operation और बिजनेस प्रोडक्शन Operation

147. सेवा क्षेत्र के भीतर व्यवसायों के पदानुक्रम को उनके कौशल स्तर के अनुसार क्रमबद्ध करें:
1. 'स्वर्ण कॉलर' पेशेवर
2. 'लाल कॉलर' श्रमिक (प्राथमिक क्षेत्र से स्थानांतरित)
3. 'श्वेत कॉलर' कार्यालय कर्मचारी
4. नाई, धोबी जैसे व्यक्तिगत सेवा प्रदाता
(A) 2, 4, 3, 1
(B) 1, 3, 4, 2
(C) 2, 3, 4, 1
(D) 4, 2, 1, 3

148. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'अंकीय विभाजक' को कम करने का एक उपाय हो सकता है?
(A) इंटरनेट पर कर बढ़ाना
(B) ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रसार पर रोक लगाना
(C) केवल शहरी क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी का विकास करना
(D) नागरिकों को सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तक पहुँच और लाभ उपलब्ध कराना

149. एक विकसित जाल-तंत्र में अनेक योजक होने का क्या अर्थ है?
(A) स्थान असंबद्ध हैं
(B) परिवहन धीमा है
(C) स्थान सुसंबद्ध हैं
(D) परिवहन की लागत अधिक है

150. तृतीयक क्रियाकलाप प्राथमिक और द्वितीयक क्रियाकलापों से किस प्रकार भिन्न हैं?
(A) ये मूर्त वस्तुओं के उत्पादन से संबंधित हैं
(B) ये विशिष्टीकृत कुशलता और ज्ञान पर अधिक निर्भर करते हैं
(C) ये केवल शारीरिक श्रम पर निर्भर करते हैं
(D) ये केवल ग्रामीण क्षेत्रों में पाए जाते हैं

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

व्यापार और वाणिज्य, तृतीयक आर्थिक गतिविधियों के केंद्र में हैं, जो उत्पादन और उपभोग के बीच की खाई को पाटते हैं। प्रारंभ में, वस्तु-विनिमय प्रणाली के माध्यम से व्यापार स्थानीय और सीमित था, जहाँ वस्तुओं का वस्तुओं से सीधा आदान-प्रदान होता था। इस प्रणाली की सबसे बड़ी सीमा दोहरे संयोग की आवश्यकता थी, अर्थात दो पक्षों के पास एक-दूसरे की वांछित वस्तुओं का होना। मुद्रा के आविष्कार ने इस बाधा को दूर किया और व्यापार को अधिक कुशल, व्यापक और मानकीकृत बना दिया। समय के साथ, व्यापारिक केंद्रों का विकास हुआ, जो पहले स्थानीय बाजारों और बाद में कस्बों और शहरों के रुप में विकसित हुए। आधुनिक व्यापार अत्यधिक जटिल है और यह केवल वस्तुओं के आदान-प्रदान तक सीमित नहीं है। इसमें परिवहन, बैंकिंग, बीमा और विज्ञापन जैसी सहायक सेवाओं का एक विशाल नेटवर्क शामिल है, जो सामूहिक रूप से वाणिज्य का निर्माण करते हैं। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के आगमन ने विभिन्न देशों में स्थित उत्पादकों, आपूर्तिकर्ताओं और उपभोक्ताओं को एक-दूसरे से जोड़ दिया है। हाल के दशकों में, ई-कॉमर्स (इलेक्ट्रॉनिक वाणिज्य) ने व्यापार के परिदृश्य को क्रांतिकारी रूप से बदल दिया है, जिससे उपभोक्ता भौगोलिक सीमाओं के पार सीधे विक्रेताओं से जुड़ सकते हैं, जिससे व्यापार अधिक सुलभ और प्रतिस्पर्धी हो गया है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. वस्तु-विनिमय प्रणाली की मुख्य सीमा क्या थी?
(A) इसमें मुद्रा का व्यापक उपयोग शामिल था।
(B) इसमें दोहरे संयोग की अनिवार्य आवश्यकता होती थी।
(C) यह केवल लंबी दूरी के व्यापार के लिए उपयुक्त थी।
(D) यह केवल भौतिक सेवाओं के विनिमय की अनुमति देती थी।

152. स्रोत के अनुसार, आधुनिक वाणिज्य में क्या शामिल है?
(A) वस्तुओं का व्यापार और संबंधित सहायक सेवाएँ।
(B) केवल वस्तुओं का प्रत्यक्ष और स्थानीय आदान-प्रदान।
(C) उत्पादन और उपभोग की केवल पारंपरिक प्रक्रियाएँ।
(D) केवल सीमित स्थानीय बाजारों में होने वाली गतिविधियाँ।

153. मुद्रा के आविष्कार ने व्यापार को किस प्रकार सुगम बनाया?
(A) इसने दोहरे संयोग की आवश्यकता को और अधिक जटिल बना दिया।
(B) इसने व्यापार को केवल स्थानीय स्तर तक सीमित कर दिया।
(C) इसने विनिमय की प्रक्रिया को मानकीकृत और कुशल बनाया।
(D) इसने केवल वस्तु-विनिमय को प्रोत्साहित किया।

154. 'वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला' की अवधारणा का क्या तात्पर्य है?
(A) व्यापार केवल निकटवर्ती पड़ोसी देशों के बीच ही संभव

(C) काल सेंटर
(D) खनन कंपनियाँ

116. सेवा क्षेत्र के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. आर्थिक विकास की आरंभिक अवस्था में यह सबसे बड़ा सेक्टर होता है।
2. इसमें उत्पादन और विनिमय दोनों सम्मिलित हैं।
3. इसमें केवल शारीरिक श्रम की आवश्यकता होती है, मानसिक श्रम की नहीं।
4. विकसित देशों में अधिकांश श्रमिक इसी क्षेत्र में कार्यरत हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

117. 'होम शोरिंग' क्या है?
(A) बाह्यस्रोतन का एक और नाम
(B) अपतरन का एक प्रकार
(C) बाह्यस्रोतन का एक विकल्प
(D) ज्ञान प्रक्रमण बाह्यस्रोतन का एक हिस्सा

118. परिवहन को प्रभावित करने वाले कारकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. परिवहन की माँग जनसंख्या के आकार से प्रभावित होती है।
2. नगरों और औद्योगिक केंद्रों की अवस्थिति मार्ग को प्रभावित करती है।
3. भू-दृश्य की प्रकृति और जलवायु का मार्ग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
4. मार्ग की लंबाई पर आने वाले व्यवधानों को दूर करने के लिए उपलब्ध निधियाँ महत्त्वपूर्ण हैं।
5. व्यापार के प्रारूप का मार्ग निर्धारण में कोई योगदान नहीं होता।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) 1, 2 और 4
(B) 3 और 5
(C) 1, 2, 3 और 4
(D) 2, 4 और 5

119. डेटा प्रक्रमण जैसी सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित सेवा को एशियाई, पूर्वी यूरोपीय और अफ्रीकी देशों में आसानी से क्यों क्रियान्वित किया जा सकता है?
(A) क्योंकि वहाँ सूचना प्रौद्योगिकी में कुशल कर्मचारियों की कमी है।
(B) क्योंकि वहाँ श्रम कानून बहुत सख्त हैं।
(C) क्योंकि वहाँ प्रौद्योगिकी की लागत बहुत अधिक है।
(D) क्योंकि वहाँ अंग्रेज़ी भाषा में निपुणता वाले कुशल कर्मचारी कम पारिश्रमिक पर उपलब्ध हैं।

120. अंकीय विभाजक का एक परिणाम क्या है?
(A) विकसित देशों का इस दिशा में आगे बढ़ना और विकासशील देशों का पिछड़ जाना।
(B) सभी देशों में सूचना प्रौद्योगिकी तक समान पहुँच।
(C) विकासशील देशों का प्रौद्योगिकी में विकसित देशों से आगे निकल जाना।
(D) ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच तकनीकी खाई का खत्म हो जाना।

121. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R) है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): पर्यटन विश्व का सबसे बड़ा तृतीयक क्रियाकलाप बन गया है।
कारण (R): पर्यटन अवसंरचना उद्योगों, फुटकर व्यापार तथा शिल्प उद्योगों को पोषित करता है, जिससे बड़े पैमाने पर रोजगार सृजित होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

122. कौन सा क्षेत्र दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता में सर्वाधिक रोज़गार प्रदान करता है?
(A) सेवा
(B) प्राथमिक
(C) द्वितीयक
(D) इनमें से कोई नहीं

123. विभिन्न आर्थिक क्रियाकलापों के विकास के क्रम को व्यवस्थित कीजिए:
1. सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएँ
2. आखेट और संग्रहण
3. लौह-इस्पात उद्योग
4. व्यापार और परिवहन

(A) 2, 3, 4, 1
(B) 1, 4, 3, 2
(C) 2, 4, 3, 1
(D) 3, 2, 1, 4

124. 'श्वेत कॉलर' (White Collar) शब्द का प्रयोग सामान्यतः किन कर्मियों के लिए किया जाता है?
(A) जो शारीरिक श्रम करते हैं
(B) जो कार्यालयों में व्यावसायिक या लिपिकीय कार्य करते हैं
(C) जो कृषि कार्य करते हैं
(D) जो खनन कार्य करते हैं

है। इसलिए, सतत पर्यटन (sustainable tourism) की अवधारणा महत्वपूर्ण हो जाती है, जो आर्थिक लाभ, सामाजिक समानता और पर्यावरणीय संरक्षण के बीच संतुलन बनाने पर जोर देती है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. पर्यटन को 'अदृश्य व्यापार' क्यों कहा जाता है?
(A) क्योंकि यह केवल रात्रि के समय संचालित होता है।
(B) क्योंकि इसे किसी भी प्रकार से मापा नहीं जा सकता है।
(C) क्योंकि यह अक्सर अवैध आर्थिक गतिविधियों से जुड़ा है।
(D) क्योंकि इसमें अमूर्त सेवाओं का निर्यात शामिल है।

162. पारिस्थितिकी-पर्यटन (eco-tourism) का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) सघन शहरी क्षेत्रों में विलासितापूर्ण अवकाश बिताना।
(B) प्राकृतिक पर्यावरण का संरक्षण और आनंद लेना।
(C) प्राचीन ऐतिहासिक स्मारकों का विस्तृत भ्रमण करना।
(D) केवल जोखिम भरे साहसिक खेलों में सक्रिय भाग लेना।

163. अनुच्छेद के अनुसार, पर्यटन का एक संभावित नकारात्मक प्रभाव क्या है?
(A) विदेशी मुद्रा की कमी।
(B) रोजगार के अवसरों में गिरावट।
(C) स्थानीय संस्कृति का वस्तुकरण।
(D) भुगतान संतुलन में गिरावट।

164. मेजबान देश के लिए पर्यटन का प्राथमिक आर्थिक लाभ क्या है?
(A) क्षेत्र की कुल जनसंख्या में उल्लेखनीय कमी लाना।
(B) प्राकृतिक संसाधनों का तीव्र और अनियंत्रित क्षरण।
(C) विभिन्न समुदायों में सांस्कृतिक अलगाव को बढ़ावा देना।
(D) विदेशी मुद्रा अर्जन और नए रोजगार पैदा करना।

165. 'सतत पर्यटन' की अवधारणा किस पर जोर देती है?
(A) आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय हितों के संतुलन पर।
(B) केवल अल्पकालिक अधिकतम आर्थिक लाभ अर्जित करने पर।
(C) वार्षिक पर्यटकों की संख्या को कड़ाई से सीमित करने पर।
(D) केवल विभिन्न देशों के मध्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
चतुर्थक क्रियाकलाप आर्थिक गतिविधियों के उस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं जो ज्ञान और सूचना पर केंद्रित है। तृतीयक क्षेत्र के इस उन्नत उप-विभाग में सूचना का संग्रहण, उत्पादन, प्रसंस्करण और प्रसार शामिल है। इन्हें 'ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था' का आधार माना जाता है, जहाँ आर्थिक वृद्धि और प्रतिस्पर्धात्मकता भौतिक उत्पादन के बजाय बौद्धिक पूंजी और नवाचार पर निर्भर करती है। इस क्षेत्र के अंतर्गत अनुसंधान और विकास (R&D), सॉफ्टवेयर विकास, डेटा विश्लेषण, वित्तीय योजना, और उच्च-स्तरीय परामर्श जैसी गतिविधियाँ आती हैं। इन गतिविधियों में कार्यरत पेशेवरों को अक्सर 'व्हाइट-कॉलर' श्रमिक कहा जाता है, जिनके पास विशिष्ट ज्ञान और विश्लेषणात्मक कौशल होते हैं। चतुर्थक क्षेत्र का विकास सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) में प्रगति से निकटता से जुड़ा हुआ है। इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और बड़े डेटा (Big Data) ने इस क्षेत्र के विस्तार के लिए अभूतपूर्व अवसर प्रदान किए हैं। भौगोलिक रूप से, ये गतिविधियाँ अक्सर विशिष्ट शहरी केंद्रों, प्रौद्योगिकी पार्कों और विश्वविद्यालय परिसरों के आसपास केंद्रित होती हैं, जहाँ कुशल श्रम, अनुसंधान संस्थानों और उद्यम पूंजी तक आसान पहुँच होती है। यह संकेंद्रण नवाचार और ज्ञान के प्रसार के लिए एक सहक्रियात्मक वातावरण बनाता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. चतुर्थक क्रियाकलापों का मुख्य केंद्रबिंदु क्या है?
(A) कच्चा माल का प्रसंस्करण।
(B) ज्ञान और सूचना।
(C) भौतिक वस्तुओं का निर्माण।
(D) शारीरिक श्रम आधारित सेवाएँ।

167. 'ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था' में प्रतिस्पर्धात्मकता का मुख्य आधार क्या है?
(A) प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता।
(B) बौद्धिक पूंजी और नवाचार।
(C) सस्ती श्रम शक्ति।
(D) भौतिक उत्पादन की मात्रा।

168. निम्नलिखित में से कौन सी गतिविधि चतुर्थक क्षेत्र का उदाहरण है?
(A) अनुसंधान और विकास (R&D)
(B) कृषि
(C) कपड़ा बुनाई
(D) खुदरा व्यापार

169. चतुर्थक गतिविधियों का भौगोलिक संकेंद्रण अक्सर क्यों होता है?
(A) क्योंकि इन विशिष्ट क्षेत्रों में जलवायु अत्यंत अनुकूल होती है।
(B) क्योंकि सरकार कंपनियों को ऐसा करने के लिए विवश करती है।
(C) क्योंकि वहाँ कुशल श्रम और अनुसंधान की आसान पहुँच होती है।
(D) क्योंकि इन क्षेत्रों में औद्योगिक भूमि अपेक्षाकृत सस्ती होती है।

56. (C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
यह सच है कि देशों के भीतर भी डिजिटल विभाजन मौजूद होता है। हालाँकि, भारत जैसे देशों में महानगरीय केंद्रों में इंटरनेट और तकनीक की पहुँच ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में बहुत बेहतर और तीव्र है। यह कहना कि ग्रामीण क्षेत्रों में पहुँच बेहतर है, वास्तविकता के विपरीत है। शहरों में मौजूद बेहतर अवसंरचना और आर्थिक संसाधनों के कारण वहाँ डिजिटल सेवाओं का उपयोग अधिक सघन और प्रभावी होता है।

57. (C) क्योंकि इसका निष्पादन कुशल, प्रशिक्षित और विशेषज्ञ कर्मियों द्वारा होता है।
सेवा क्षेत्र में मशीनों की तुलना में मानव कौशल का महत्व बहुत अधिक है। अधिकांश सेवाएँ जैसे परामर्श, चिकित्सा, और कानूनी सहायता सीधे तौर पर कर्मियों की विशेषज्ञता और अनुभव पर निर्भर करती हैं। कुशल जनशक्ति के बिना सेवाओं की गुणवत्ता और प्रभावशीलता सुनिश्चित नहीं की जा सकती। यही कारण है कि इस क्षेत्र में शिक्षा और निरंतर प्रशिक्षण पर सबसे अधिक निवेश किया जाता है, जो इसे अद्वितीय बनाता है।

58. (A) व्यापार, परिवहन और संचार
तृतीयक क्रियाकलापों में 'विनिमय' उन सुविधाओं को संदर्भित करता है जो दूरियों को मिटाने और वस्तुओं व सेवाओं के प्रवाह को सुगम बनाने में मदद करती हैं। व्यापार वस्तुओं का क्रय-विक्रय सुनिश्चित करता है, परिवहन उन्हें भौतिक रूप से पहुँचाता है और संचार सूचनाओं का आदान-प्रदान करता है। ये तीनों मिलकर एक एकीकृत विनिमय तंत्र का निर्माण करते हैं, जो आधुनिक अर्थव्यवस्था के सुचारु संचालन के लिए अत्यंत आवश्यक होता है।

59. (D) इस्पात प्रगलन
इस्पात प्रगलन एक विनिर्माण प्रक्रिया है जहाँ कच्चे लोहे को प्रसंस्कृत कर इस्पात बनाया जाता है, इसलिए यह द्वितीयक क्रियाकलाप के अंतर्गत आता है। डॉक्टर, वकील और तकनीशियन सेवाएँ प्रदान करते हैं जिनमें कोई नया भौतिक उत्पाद नहीं बनाया जाता, बल्कि मानवीय कुशलता का उपयोग होता है, इसलिए वे तृतीयक क्रियाकलाप हैं। विनिर्माण और सेवा क्षेत्र के बीच यही मूलभूत अंतर उन्हें अलग-अलग आर्थिक श्रेणियों में वर्गीकृत करता है।

60. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
आखेट एक प्राथमिक क्रियाकलाप है क्योंकि यह सीधे प्रकृति से जुड़ा है। वस्त्र निर्माण द्वितीयक क्षेत्र का हिस्सा है जहाँ कच्चे माल का प्रसंस्करण होता है। व्यापार एक तृतीयक क्रियाकलाप है जो सेवाओं के विनिमय से संबंधित है। सूचना का उत्पादन चतुर्थक क्रियाकलाप की श्रेणी में आता है क्योंकि यह पूरी तरह से ज्ञान और अनुसंधान पर आधारित है। यह वर्गीकरण आर्थिक गतिविधियों के विकास की जटिलता को दर्शाता है।

61. (C) दूरसंचार
परिवहन के अंतर्गत वे साधन आते हैं जो व्यक्तियों या वस्तुओं को भौतिक रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाते हैं, जैसे रेल, सड़क और जल मार्ग। दूरसंचार एक संचार सेवा है जिसमें सूचनाओं और संदेशों का प्रेषण तरंगों या तारों के माध्यम से होता है। यद्यपि दोनों सेवा क्षेत्र का हिस्सा हैं, लेकिन भौतिक आवाजाही और सूचना के प्रवाह के आधार पर इन्हें अलग-अलग उप-वर्गों में रखा गया है।

62. (D) तृतीयक क्रियाकलाप के 'व्यापर एवं वाणिज्य' खंड के अंतर्गत
फुटकर व्यापार को तृतीयक क्रियाकलापों के एक प्रमुख उप-विभाजन 'व्यापार एवं वाणिज्य' के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है। यह वह अंतिम कड़ी है जहाँ उपभोक्ता सीधे तौर पर बाज़ार से जुड़ते हैं। यह थोक व्यापार से अलग कार्य करता है, लेकिन दोनों ही वाणिज्यिक गतिविधियों का हिस्सा हैं। सेवा क्षेत्र के भीतर व्यापार की यह संरचना वितरण प्रणाली को व्यवस्थित करने और अंतिम उपयोगकर्ता तक माल पहुँचाने में मदद करती है।

63. (A) क्योंकि वे अत्यंत अल्पवर्धित प्रकार के व्यापारिक केंद्र होते हैं।
ग्रामीण विपणन केंद्र पूरी तरह से विकसित शहर नहीं होते, बल्कि वे गाँवों और शहरों के बीच की एक संक्रमणकालीन अवस्था हैं। यहाँ व्यापारिक गतिविधियाँ बहुत ही साधारण स्तर की होती हैं और केवल स्थानीय ग्रामीण जनता की प्राथमिक आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। इनमें उच्च स्तरीय विशेषज्ञ सेवाओं का अभाव होता है, इसलिए इन्हें 'अर्ध-नगरीय' केंद्र कहा जाता है जो केवल संग्रहण और बुनियादी वितरण का कार्य करते हैं।

64. (B) केवल 2, 3 और 4
नगरीय बाज़ार केंद्र अपनी विशिष्टता के लिए जाने जाते हैं। यहाँ केवल साधारण वस्तुएँ ही नहीं मिलतीं, बल्कि श्रम बाज़ार, परामर्श और उच्च व्यावसायिक सेवाएँ जैसे डॉक्टर और वकील भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं। ये केंद्र जटिल आर्थिक प्रणालियों का हिस्सा होते हैं जो बड़े क्षेत्रों को अपनी विशेषज्ञता प्रदान करते हैं। केवल साधारण वस्तुएँ मिलना ग्रामीण केंद्रों की विशेषता है, नगरीय केंद्रों की नहीं।

65. (B) भंडार रहित फुटकर बिक्री
फेरीवाले, रेहड़ी वाले और घर-घर जाकर सामान बेचने वाले विक्रेता किसी स्थायी दुकान या गोदाम (भंडार) का उपयोग नहीं करते हैं। वे सीधे ग्राहकों के पास पहुँचकर अपनी सेवाएँ देते हैं। इस प्रकार की बिक्री को 'भंडार रहित' फुटकर व्यापार कहा जाता है। इसमें लागत कम आती है और यह सीधे उपभोक्ता के द्वार तक पहुँच प्रदान करता है, जो इसे पारंपरिक दुकान-आधारित व्यापार से अलग और लचीला बनाता है।

66. (A) 1, 2 और 3
परिवहन व्यक्तियों और वस्तुओं के भौतिक स्थानांतरण की एक अनिवार्य सेवा है जो मनुष्य की गतिशीलता की बुनियादी

ANSWERS

1. (B) व्यापार
तृतीयक क्रियाकलाप मुख्य रूप से सेवाओं के व्यावसायिक उत्पादन से संबंधित होते हैं जिसमें प्रत्यक्ष रूप से वस्तुओं का निर्माण नहीं होता है। व्यापार इस श्रेणी का एक प्रमुख उदाहरण है क्योंकि यह वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय के माध्यम से लाभ कमाने पर केंद्रित होता है। आखेट, कृषि और मत्स्य पालन जैसे कार्य प्राथमिक क्षेत्र की श्रेणी में आते हैं।

2. (A) प्राथमिक सेक्टर
आर्थिक विकास के प्रारंभिक चरणों में अधिकांश जनसंख्या भोजन और कच्चे माल के उत्पादन के लिए सीधे प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग पर निर्भर रहती है। इसी कारण कृषि, वानिकी और खनन जैसे प्राथमिक क्रियाकलापों में काम करने वाले लोगों का अनुपात सबसे अधिक होता है। जैसे-जैसे अर्थव्यवस्था विकसित होती है, लोग विनिर्माण और फिर सेवा क्षेत्रों की ओर स्थानांतरित होने लगते हैं।

3. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
विकसित अर्थव्यवस्थाओं में सेवाओं की उच्च मांग के कारण अधिकांश श्रमिक तृतीयक क्षेत्र में कार्यरत होते हैं जो पूर्णतः सत्य है। इसी प्रकार तृतीयक कार्यों के लिए विशिष्ट ज्ञान और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। हालाँकि, यह कुशलता की आवश्यकता ही एकमात्र कारण नहीं है कि लोग वहाँ अधिक हैं; आर्थिक संरचना का सेवाओं की ओर झुकाव मुख्य कारण होता है।

4. (D) पारिश्रमिक और वेतन
तृतीयक क्रियाकलापों में किसी भौतिक वस्तु का उत्पादन नहीं होता है जिसे तौलकर या गिनकर मापा जा सके। यहाँ उत्पादन को मुख्य रूप से सेवा प्रदान करने वाले कर्मियों को दिए जाने वाले पारिश्रमिक और उनके वेतन के रूप में देखा जाता है। यह विनिर्माण क्षेत्र से अलग है जहाँ उत्पादन को इकाइयों या भार के आधार पर मापा जाना अधिक सुलभ होता है।

5. (C) परिवहन और संचार
तृतीयक क्रियाकलापों को मुख्य रूप से व्यापार, परिवहन और संचार जैसे विनिमय के साधनों में विभाजित किया जाता है। परिवहन और संचार दूरियों को कम करने और सूचनाओं के आदान-प्रदान के माध्यम से विनिमय की सुविधा प्रदान करते हैं। डॉक्टर, अध्यापक और नलसाज जैसी सेवाएँ व्यक्तिगत या व्यावसायिक सेवाओं के अंतर्गत आती हैं, जबकि परिवहन सीधे तौर पर विनिमय तंत्र का हिस्सा है।

6. (C) P-2, Q-2, R-2, S-1
विभिन्न तृतीयक क्रियाकलापों को उनके कार्यों के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है जिसमें वकील, नलसाज और अध्यापक सभी सेवा क्षेत्र का हिस्सा हैं। दुकानदार सीधे तौर पर व्यापारिक क्रियाकलाप से जुड़ा होता है जहाँ वस्तुओं का विनिमय लाभ के लिए किया जाता है। इस प्रकार, व्यावसायिक सेवा प्रदान करने वाले और व्यापार करने वाले कर्मियों के बीच स्पष्ट विभाजन उनके कार्य की प्रकृति पर आधारित है।

7. (D) कर्मियों की विशिष्ट कुशलता, अनुभव और ज्ञान
द्वितीयक क्रियाकलाप मुख्य रूप से कच्चा माल प्रसंस्कृत कर भौतिक वस्तुएँ बनाने की तकनीकों पर केंद्रित होते हैं। इसके विपरीत, तृतीयक क्रियाकलाप पूरी तरह से कर्मियों की विशेषज्ञता, पेशेवर कौशल और उनके द्वारा दी जाने वाली सेवाओं के अनुभव पर निर्भर करते हैं। यहाँ मशीनीकरण की तुलना में मानव बुद्धि और विशेषज्ञ परामर्श अधिक महत्वपूर्ण होता है, जो इसे विनिर्माण की भौतिक प्रक्रिया से अलग करता है।

8. (A) सूचना-आधारित
चतुर्थ क्रियाकलाप तृतीयक क्षेत्र का एक अत्यधिक विशिष्ट और ज्ञानोन्मुखी प्रभाग है जो सूचना के संग्रहण, उत्पादन और विश्लेषण पर केंद्रित होता है। परिवहन, बैंकिंग और व्यापार सामान्य सेवाएँ हैं जो प्रत्यक्ष जनसंपर्क और भौतिक सुविधाओं से जुड़ी हैं। सूचना-आधारित कार्य जैसे अनुसंधान और विकास पूरी तरह से बौद्धिक संपदा पर आधारित होते हैं, इसलिए इन्हें चतुर्थ क्रियाकलापों की श्रेणी में रखा गया है।

9. (B) केवल 1, 2 और 3
पंचम क्रियाकलाप में निर्णय लेने वाले उच्चाधिकारी शामिल होते हैं और परिवहन अनिवार्य रूप से तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा है। चतुर्थ क्रियाकलाप अनुसंधान एवं विकास के माध्यम से ज्ञान का सृजन करते हैं। बीमा एक वित्तीय सेवा है जिसे तृतीयक श्रेणी में रखा जाता है, न कि द्वितीयक क्षेत्र में। इस प्रकार केवल प्रथम तीन कथन आर्थिक गतिविधियों के सही वर्गीकरण को दर्शाते हैं।

10. (A) लाभ कमाना
व्यापार और वाणिज्य का मुख्य केंद्र वस्तुओं और सेवाओं का क्रय-विक्रय करना है। यह पूरी प्रक्रिया आर्थिक लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से संचालित की जाती है। यद्यपि इससे सामाजिक सुविधाएँ बढ़ सकती हैं, लेकिन किसी भी व्यापारिक संगठन या व्यक्तिगत व्यापारी की प्राथमिक प्रेरणा अपनी निवेशित पूँजी पर आर्थिक प्रतिफल प्राप्त करना ही होती है। यही कारण है कि इसे व्यावसायिक क्रियाकलाप माना जाता है।

11. (D) व्यापारिक केंद्र
जिन शहरी क्षेत्रों या नगरों में मुख्य रूप से वस्तुओं के संग्रहण, वितरण और व्यावसायिक विनिमय की गतिविधियाँ होती हैं, उन्हें व्यापारिक केंद्र कहा जाता है। ये केंद्र स्थानीय और दूरस्थ

क्षेत्रों के बीच आर्थिक कड़ी के रूप में कार्य करते हैं। औद्योगिक केंद्रों में निर्माण कार्य होता है, जबकि व्यापारिक केंद्र सेवा क्षेत्र के अंतर्गत विनिमय की सुविधा प्रदान करने के लिए विशेष रूप से विकसित होते हैं।

12. (B) 3 और 4
ग्रामीण विपणन केंद्र पूरी तरह नगरीय नहीं होते बल्कि ये अर्ध-नगरीय केंद्र होते हैं जो निकटवर्ती ग्रामीण बस्तियों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। ये स्थानीय कृषि उपज के संग्रहण और आवश्यक वस्तुओं के वितरण के लिए महत्वपूर्ण स्थान होते हैं। इनमें व्यक्तिगत सेवाएँ बहुत अधिक विकसित नहीं होती हैं। ये केंद्र ग्रामीणों को उनकी दैनिक ज़रूरतों के लिए एक स्थानीय बाज़ार उपलब्ध कराते हैं।

13. (C) साप्ताहिक हाट
ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ नियमित बाज़ार नहीं होते, वहाँ आवधिक बाज़ार एक निश्चित समय अंतराल पर आयोजित किए जाते हैं। साप्ताहिक हाट इसका सबसे आम उदाहरण है, जहाँ दुकानदार किसी विशेष दिन एक स्थान पर एकत्र होते हैं और ग्रामीणों को सेवाएँ प्रदान करते हैं। ये बाज़ार एक विस्तृत क्षेत्र को कवर करते हैं क्योंकि दुकानदार अलग-अलग दिनों में विभिन्न स्थानों पर अपनी सेवाएँ देते हैं।

14. (D) अध्यापक और वकील जैसी व्यावसायिक सेवाएँ
नगरीय बाज़ार केंद्र ग्रामीण केंद्रों की तुलना में कहीं अधिक विशिष्ट और उच्च स्तरीय सेवाएँ प्रदान करते हैं। यहाँ केवल दैनिक उपयोग की साधारण वस्तुएँ ही नहीं, बल्कि व्यावसायिक कुशलता वाले विशेषज्ञ जैसे वकील, चिकित्सक और अध्यापक भी उपलब्ध होते हैं। ये सेवाएँ उन जटिल शहरी आवश्यकताओं को पूरा करती हैं जो सामान्य ग्रामीण हाटों या छोटे अर्ध-नगरीय केंद्रों में उपलब्ध नहीं हो पाती हैं।

15. (A) 2, 4, 1, 3
संचार के इतिहास में सबसे पहले लेखन का आविष्कार हुआ जिसने संदेशों को सुरक्षित रखना संभव बनाया। इसके बाद लंबी दूरी तक त्वरित संदेश भेजने के लिए तार प्रेषण या टेलीग्राफ आया। आधुनिक युग में मोबाइल दूरभाष ने व्यक्तिगत संचार को गति दी और अंत में इंटरनेट ने वैश्विक संचार तंत्र को पूरी तरह से एकीकृत कर दिया। यह क्रम मानव सभ्यता के तकनीकी विकास को दर्शाता है।

16. (B) उपभोक्ताओं को वस्तुओं का प्रत्यक्ष विक्रय
फुटकर व्यापार वह व्यावसायिक गतिविधि है जो सीधे अंतिम उपभोक्ताओं को छोटी मात्रा में वस्तुओं की बिक्री से संबंधित है। इसमें उपभोक्ता अपनी निजी ज़रूरतों के लिए सामान खरीदते हैं। यह थोक व्यापार से भिन्न है जहाँ सामान व्यापारियों को अधिक मात्रा में बेचा जाता है। फुटकर व्यापार में अधिकांश बिक्री स्थायी दुकानों, रेहड़ी-पटरी या मेल-ऑर्डर के माध्यम से सीधे ग्राहक तक पहुँचती है।

17. (B) डाक आदेश
फुटकर व्यापार के कुछ रूपों में वस्तुओं की बिक्री के लिए किसी भौतिक दुकान या निश्चित प्रतिष्ठान की आवश्यकता नहीं होती है। डाक आदेश इसका एक प्रमुख उदाहरण है जहाँ ग्राहक कैटलॉग देखकर सामान मंगवाते हैं। इसी प्रकार द्वार-से-द्वार बिक्री और इंटरनेट के माध्यम से खरीदारी भी भंडार रहित फुटकर बिक्री की श्रेणियों में आती हैं। विभागीय और श्रृंखला भंडार भौतिक दुकानों पर आधारित व्यापारिक प्रणालियाँ हैं।

18. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
थोक व्यापारी अक्सर फुटकर विक्रेताओं को सामान उधार पर उपलब्ध कराते हैं ताकि वे अपना व्यवसाय सुचारु रूप से चला सकें। इससे फुटकर विक्रेताओं को बिना भारी प्रारंभिक निवेश के काम करने में मदद मिलती है। इस प्रकार, थोक विक्रेता की पूँजी ही अप्रत्यक्ष रूप से फुटकर बाज़ार के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो छोटे दुकानदारों के लिए आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करती है।

19. (C) उपभोक्ता सहकारी समुदाय
फुटकर व्यापार के इतिहास में उपभोक्ता सहकारी समुदाय वे पहले संगठन थे जिन्होंने बड़े पैमाने पर संगठित बिक्री के नवाचार पेश किए। ये समुदाय उपभोक्ताओं के लाभ के लिए सीधे माल खरीदते थे ताकि बिचौलियों के मुनाफे को कम किया जा सके। इनके बाद विभागीय भंडारों और फिर श्रृंखला भंडारों का विकास हुआ। इन सहकारी प्रयासों ने ही आधुनिक फुटकर वितरण प्रणालियों की नींव रखी थी।

20. (D) वे अकुशल विशेषज्ञ नियुक्त करते हैं।
श्रृंखला भंडार अपनी दक्षता और लाभप्रदता बढ़ाने के लिए हमेशा अत्यधिक कुशल विशेषज्ञों की नियुक्ति करते हैं ताकि वे बेहतर निर्णय ले सकें। वे थोक मात्रा में सामान खरीदकर लागत कम करते हैं और एक ही सफल व्यापारिक मॉडल को कई दुकानों पर लागू करते हैं। यह दावा करना कि वे अकुशल कर्मियों को नियुक्त करते हैं, उनके संगठित और पेशेवर कार्यप्रणाली के बिल्कुल विपरीत है।

21. (A) P-2, Q-3, R-1, S-4
परिवहन में दूरी को विभिन्न तरीकों से मापा जाता है जैसे किलोमीटर दूरी मार्ग की लंबाई को दर्शाती है और समय दूरी यात्रा की अवधि बताती है। लागत दूरी का संबंध यात्रा पर होने वाले आर्थिक व्यय से होता है। मानचित्र पर समान समय में पहुँचने वाले स्थानों को जोड़ने वाली काल्पनिक रेखाओं को समकाल रेखा या आइसोक्रोन्स के रूप में जाना जाता है।

22. (B) जनसंख्या के आकार से
परिवहन की माँग सीधे तौर पर उस क्षेत्र की जनसंख्या से जुड़ी होती है। जितनी अधिक जनसंख्या होगी, लोगों की आवाजाही और वस्तुओं की आपूर्ति की आवश्यकता उतनी ही अधिक बढ़ेगी। यद्यपि भू-दृश्य और जलवायु मार्ग के प्रकार को प्रभावित कर सकते हैं, लेकिन परिवहन तंत्र के विस्तार और

उसकी तीव्रता का मुख्य निर्धारक वहाँ निवास करने वाले लोगों की संख्या और उनकी आर्थिक गतिविधियाँ होती हैं।

23. (D) एक संधि-स्थल या एक गंतव्य बिंदु
किसी भी परिवहन जाल-तंत्र में नोड एक महत्वपूर्ण बिंदु होता है जहाँ दो या दो से अधिक मार्ग आपस में मिलते हैं या जहाँ कोई मार्ग समाप्त होता है। यह एक बड़ा शहर, कस्बा या प्रमुख स्टेशन हो सकता है। यह वह स्थान है जहाँ से यातायात का प्रवाह या तो शुरू होता है, समाप्त होता है या अपनी दिशा बदलता है, जिससे परिवहन की कनेक्टिविटी बढ़ती है।

24. (A) क्योंकि संचार प्रारंभ में परिवहन के साधनों पर निर्भर था।
प्राचीन काल में संदेशों और सूचनाओं को भौतिक रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के लिए डाकघरों, घोड़ों या रेलगाड़ियों जैसे परिवहन के साधनों की आवश्यकता होती थी। चूँकि संदेशों की गति परिवहन की गति पर आधारित थी, इसलिए परिवहन मार्गों को ही संचार पथ माना जाता था। केवल आधुनिक दूरसंचार के आविष्कार के बाद ही सूचनाओं का प्रवाह परिवहन की भौतिक बाधाओं से मुक्त हो सका।

25. (A) केवल 1 और 3
संचार का मूल अर्थ सूचनाओं, तथ्यों और विचारों का आदान-प्रदान करना है। आधुनिक तकनीकों जैसे मोबाइल और सैटेलाइट ने इसे भौतिक परिवहन से पूरी तरह स्वतंत्र कर दिया है। हालाँकि लेखन ने संदेश सुरक्षित किए, लेकिन इसने संचार को परिवहन पर और अधिक निर्भर बनाया क्योंकि पत्रों को भौतिक रूप से भेजना पड़ता था। सक्षम परिवहन जाल संचार के फैलाव को कठिन नहीं बल्कि सुलभ बनाता है।

26. (A) विद्युतीय प्रौद्योगिकी
दूरसंचार के क्षेत्र में वास्तविक क्रांति विद्युतीय प्रौद्योगिकी के विकास के साथ आई। इसने संदेशों को प्रकाश की गति से तारों या तरंगों के माध्यम से भेजना संभव बना दिया। टेलीग्राफ, टेलीफोन और बाद में रेडियो एवं दूरदर्शन इसी तकनीक की देन हैं। वाष्प इंजन और अन्य ऊर्जा स्रोतों ने भौतिक परिवहन को सुधारा, लेकिन संचार को तात्कालिक और वैश्विक बनाने का श्रेय विद्युत आधारित विकास को जाता है।

27. (A) 1 और 2
रेडियो और दूरदर्शन जनसंचार के सशक्त माध्यम हैं क्योंकि ये एक साथ विशाल जनसमूह तक समाचार और विज्ञापन पहुँचाते हैं। उपग्रह संचार द्वि-मार्गी होता है और यह वैश्विक स्तर पर डेटा प्रेषण करता है, न कि केवल अंतरिक्ष की ओर। इंटरनेट ने संचार को पूरी दुनिया में क्रांतिकारी ढंग से बदल दिया है। वर्तमान में तार प्रेषण और मोर्स कूट पुराने पड़ चुके हैं और मुख्य माध्यम नहीं रहे।

28. (B) पंसारी की दुकान
पंसारी की दुकान को निम्नस्तरीय सेवा माना जाता है क्योंकि यहाँ दैनिक और सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति होती है और इसके लिए किसी अत्यधिक विशिष्ट डिग्री या पेशेवर कुशलता की आवश्यकता नहीं होती। इसके विपरीत, लेखाकार, परामर्शदाता और चिकित्सक उच्चस्तरीय सेवाएँ प्रदान करते हैं जिनमें वर्षों के गहन अध्ययन और विशिष्ट ज्ञान की आवश्यकता होती है। सेवाओं का स्तर अक्सर उनमें निहित जटिलता और विशेषज्ञता से निर्धारित होता है।

29. (C) अध्यापक
अध्यापन एक ऐसी सेवा है जिसमें मुख्य रूप से बौद्धिक और मानसिक कौशल का उपयोग किया जाता है। अध्यापक ज्ञान साझा करने और छात्रों के मानसिक विकास के लिए उत्तरदायी होते हैं। जबकि माली, धोबी और नाई जैसे व्यवसायों में शारीरिक श्रम और कौशल की प्रमुखता होती है। यद्यपि हर कार्य में कुछ मानसिक प्रयास होता है, लेकिन शैक्षणिक सेवाएँ पूरी तरह से बौद्धिक संपदा पर आधारित होती हैं।

30. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
आधुनिक समाज में बुनियादी सेवाएँ जैसे जलापूर्ति, ऊर्जा और परिवहन बहुत महत्वपूर्ण हैं, इसलिए सरकारें इनके नियमन के लिए विशेष निगमों की स्थापना करती हैं। यह सुनिश्चित करता है कि सेवाएँ विश्वसनीय और सस्ती हों। निगमों के माध्यम से इन सेवाओं का पर्यवेक्षण और नियंत्रण किया जाता है ताकि निजी क्षेत्र की मनमानी न हो और जनता के हितों की रक्षा के साथ-साथ गुणवत्ता बनी रहे।

31. (A) व्यक्तिगत सेवा
मुंबई की 'डब्बावाला' सेवा एक उत्कृष्ट उदाहरण है जहाँ व्यक्तियों को उनके कार्यस्थल पर भोजन पहुँचाने की व्यक्तिगत सेवा प्रदान की जाती है। यह असंगठित लेकिन अत्यंत कुशल सेवा क्षेत्र का हिस्सा है। इसे उच्च व्यावसायिक सेवा या चतुर्थक सेवा नहीं माना जा सकता क्योंकि इसमें शारीरिक श्रम और प्रत्यक्ष मानवीय संपर्क की अधिकता है। यह स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने वाला एक विशिष्ट सेवा मॉडल है।

32. (B) 75 प्रतिशत
संयुक्त राज्य अमेरिका जैसी अत्यधिक विकसित अर्थव्यवस्थाओं में रोज़गार का स्वरूप सेवा क्षेत्र की ओर बहुत अधिक झुका हुआ है। वहाँ लगभग 75 प्रतिशत से अधिक कार्यबल तृतीयक और चतुर्थक क्रियाकलापों में संलग्न है। विनिर्माण और कृषि में श्रमिकों की संख्या बहुत कम है क्योंकि मशीनीकरण और उच्च उत्पादकता ने सेवाओं के विस्तार के लिए श्रम को मुक्त कर दिया है, जो आर्थिक समृद्धि का सूचक है।

33. (B) पर्यटन
राजस्व और रोज़गार सृजन की दृष्टि से पर्यटन वर्तमान में दुनिया का सबसे बड़ा एकल तृतीयक क्रियाकलाप बन गया है। यह न केवल परिवहन और आवास सेवाओं को बढ़ावा देता है, बल्कि स्थानीय शिल्प, भोजन और संस्कृति पर आधारित व्यवसायों को भी खाद-पानी प्रदान करता है। दुनिया भर में करोड़ों लोग इस उद्योग से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हैं, जो इसे वैश्विक अर्थव्यवस्था का आधार बनाता है।

170. किस प्रौद्योगिकी ने चतुर्थक क्षेत्र के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है?
(A) प्रारंभिक भाप इंजन।
(B) आधुनिक असेंबली लाइन।
(C) पारंपरिक मुद्रण प्रेस।
(D) सूचना और संचार तकनीक।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

बाह्यस्रोतन (Outsourcing) एक व्यावसायिक रणनीति है जिसमें एक कंपनी अपनी कुछ गैर-प्रमुख गतिविधियों या प्रक्रियाओं को किसी बाहरी विशेषज्ञ फर्म को सौंप देती है। इसका मुख्य उद्देश्य लागत कम करना, दक्षता बढ़ाना और अपनी मुख्य दक्षताओं (core competencies) पर ध्यान केंद्रित करना है। जब यह कार्य किसी दूसरे देश में स्थित फर्म को सौंपा जाता है, तो इसे अपतटन (Offshoring) कहा जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने सेवा क्षेत्र में बाह्यस्रोतन को विशेष रूप से बढ़ावा दिया है, जिससे व्यापार प्रक्रिया बाह्यस्रोतन (BPO) और ज्ञान प्रक्रिया बाह्यस्रोतन (KPO) जैसे उद्योगों का उदय हुआ है। BPO में ग्राहक सेवा (कॉल सेंटर) और डेटा एंट्री जैसे मानकीकृत कार्य शामिल होते हैं, जबकि KPO में अनुसंधान, बाजार विश्लेषण और कानूनी परामर्श जैसी अधिक ज्ञान-गहन और विश्लेषणात्मक प्रक्रियाएँ शामिल होती हैं। इस प्रवृत्ति ने एक नए अंतर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन को जन्म दिया है, जिसमें विकसित देश उच्च-स्तरीय अनुसंधान और प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि भारत, फिलीपींस और पूर्वी यूरोप जैसे देश, जहाँ कुशल और अपेक्षाकृत सस्ता श्रम उपलब्ध है, सूचना-आधारित सेवाएँ प्रदान करते हैं। हालाँकि बाह्यस्रोतन से मेजबान देशों में रोजगार और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है, लेकिन इससे स्रोत देशों में नौकरियों के नुकसान और गुणवत्ता नियंत्रण जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हो सकती हैं।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. अनुच्छेद के अनुसार, कंपनियाँ बाह्यस्रोतन क्यों अपनाती हैं?
(A) अपनी मुख्य दक्षताओं से ध्यान हटाने के लिए।
(B) व्यावसायिक प्रक्रियाओं को अधिक जटिल बनाने के लिए।
(C) लागत कम करने और दक्षता बढ़ाने के लिए।
(D) केवल स्थानीय फर्मों को काम देने के लिए।

172. BPO और KPO में मुख्य अंतर क्या है?
(A) BPO विकसित देशों में होता है, जबकि KPO केवल विकासशील देशों में।
(B) KPO में तुलनात्मक रूप से अधिक विश्लेषणात्मक कार्य होते हैं।
(C) BPO में ज्ञान-गहन कार्य शामिल हैं, जबकि KPO में केवल मानकीकृत कार्य।
(D) KPO केवल प्राथमिक स्तर की ग्राहक सेवा और सहायता से संबंधित है।

173. 'अपतटन' (Offshoring) का क्या अर्थ है?
(A) किसी कार्य को अपनी ही कंपनी के भीतर किसी अन्य विभाग को सौंपना।
(B) किसी कार्य को अपने ही देश की किसी बाहरी फर्म को सौंपना।
(C) सभी व्यावसायिक कार्यों को बंद कर देना।
(D) किसी कार्य को किसी दूसरे देश में स्थित फर्म को सौंपना।

174. बाह्यस्रोतन ने 'नए अंतर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन' को कैसे जन्म दिया है?
(A) देशों के बीच कार्यों का एक नया विशेषज्ञता पैटर्न बनाकर।
(B) सभी देशों को समान प्रकार के कार्य करने हेतु प्रेरित करके।
(C) सभी प्रकार की सेवाओं को केवल विकसित देशों में केंद्रित करके।
(D) वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को पूरी तरह से समाप्त करके।

175. बाह्यस्रोतन करने वाले (स्रोत) देश के लिए एक संभावित चुनौती क्या हो सकती है?
(A) विदेशी मुद्रा में वृद्धि।
(B) लागत में अप्रत्याशित वृद्धि।
(C) अपने देश में नौकरियों का नुकसान।
(D) दक्षता में कमी।

45. (A) 2, 4, 3, 1
आर्थिक विकास का ऐतिहासिक क्रम प्राथमिक क्रियाकलापों (कृषि/संग्रहण) से शुरू हुआ। इसके बाद औद्योगिक क्रांति के साथ द्वितीयक क्रियाकलापों (विनिर्माण) का विकास हुआ। समाज के समृद्ध होने पर तृतीयक सेवाएँ (व्यापार/परिवहन) प्रमुख हुईं। अंततः आधुनिक युग में ज्ञान-आधारित चतुर्थक सेवाओं का उदय हुआ। यह अनुक्रम समाज की सरलता से जटिलता और शारीरिक श्रम से बौद्धिक कौशल की ओर बढ़ने की यात्रा को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

46. (D) दक्षता को सुधारना और लागतों को घटाना
बाह्यस्त्रोतन का मुख्य व्यावसायिक तर्क लागत कम करना और कार्य की गुणवत्ता बढ़ाना है। कंपनियाँ अपने गैर-मुख्य कार्यों को उन बाहरी एजेंसियों को सौंपती हैं जो उस विशेष कार्य में कुशल होती हैं। इससे न केवल कंपनी का खर्च कम होता है, बल्कि उसे विशेषज्ञ सेवाएँ भी प्राप्त होती हैं। अक्सर यह काम उन देशों को दिया जाता है जहाँ सस्ता और कुशल श्रम प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है।

47. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
बाह्यस्त्रोतन बाहरी एजेंसियों को काम सौंपने की प्रक्रिया है, जबकि अपतरन में यह कार्य विदेशों में स्थानांतरित किया जाता है। केपीओ (KPO) में अत्यधिक कुशल कर्मियों की आवश्यकता होती है जो ज्ञान-आधारित समाधान प्रदान करते हैं। अंकीय विभाजक का तात्पर्य दुनिया भर में सूचना प्रौद्योगिकी तक पहुँच में मौजूद भारी असमानता से है। ये सभी अवधारणाएँ आधुनिक वैश्विक आर्थिक व्यवस्था के प्रमुख घटकों और उनके परिणामों को स्पष्ट करती हैं।

48. (B) अपतरन (Offshoring)
जब कोई कंपनी अपनी व्यावसायिक प्रक्रियाओं या सेवाओं को दूसरे देश में स्थानांतरित करती है जहाँ परिचालन लागत कम होती है, तो इसे 'अपतरन' कहा जाता है। यह बाह्यस्त्रोतन का ही एक वैश्विक रूप है। इससे कंपनियों को कम वेतन पर कुशल श्रमिक मिल जाते हैं, जिससे उनका लाभ बढ़ता है। यह प्रक्रिया अक्सर समुद्रपार के देशों जैसे भारत या चीन में व्यवसायों के स्थानांतरण के संदर्भ में उपयोग की जाती है।

49. (B) सूचना प्रौद्योगिकी और काल सेंटर सेवाएँ
सूचना प्रौद्योगिकी और काल सेंटर सेवाएँ बाह्यस्त्रोतन के लिए सबसे उपयुक्त हैं क्योंकि इनका संचालन इंटरनेट और दूरसंचार के माध्यम से दूरस्थ स्थानों से किया जा सकता है। कृषि, खनन और मत्स्य पालन जैसे प्राथमिक कार्य भौतिक संसाधनों पर आधारित होते हैं और उन्हें भौगोलिक रूप से स्थानांतरित नहीं किया जा सकता। सेवा क्षेत्र के डिजिटल होने के कारण ही इन कार्यों का वैश्विक स्तर पर बाह्यस्त्रोतन संभव हो पाया है।

50. (A) क्योंकि यह तुलनात्मक लाभ प्रदान करता है।
विकसित देशों की कंपनियाँ उन देशों में बाह्यस्त्रोतन करती हैं जहाँ कुशल श्रम कम कीमत पर उपलब्ध होता है। इससे उन्हें 'तुलनात्मक लाभ' मिलता है क्योंकि उनकी उत्पादन लागत कम हो जाती है और वैश्विक बाज़ार में उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ जाती है। भारत और फिलीपींस जैसे देशों ने अपनी अंग्रेज़ी भाषा की कुशलता और कम पारिश्रमिक दरों के कारण इस क्षेत्र में बहुत अधिक विदेशी निवेश आकर्षित किया है।

51. (A) केवल 1 और 2
बाह्यस्त्रोतन ने भारत और चीन जैसे देशों में लाखों नए रोज़गार सृजित किए हैं। ये वे देश भी हैं जहाँ से लोग काम की तलाश में विदेश जाते हैं, यानी उत्प्रवास वाले देश हैं। जिन देशों से काम बाहर भेजा जाता है, वहाँ के स्थानीय नागरिकों में अक्सर विरोध होता है क्योंकि वे इसे अपने रोज़गार के अवसर कम होने के रूप में देखते हैं। इसके टिके रहने का कारण केवल राजनीति नहीं, बल्कि आर्थिक लाभ है।

52. (D) KPO में उच्च कुशल कर्मी सम्मिलित होते हैं।
केपीओ (KPO) या ज्ञान प्रक्रमण बाह्यस्त्रोतन, बीपीओ (BPO) की तुलना में कहीं अधिक विशिष्ट है। बीपीओ में अक्सर सामान्य ग्राहक सेवा या डेटा प्रविष्टि जैसे कार्य होते हैं, जबकि केपीओ में अनुसंधान, कानूनी सलाह और बौद्धिक संपदा जैसे उच्च स्तरीय बौद्धिक कार्य शामिल होते हैं। केपीओ के लिए अधिक शिक्षित और अनुभवी पेशेवरों की आवश्यकता होती है, जो कंपनियों को रणनीतिक व्यावसायिक अंतर्दृष्टि प्रदान करने में सक्षम होते हैं।

53. (C) ग्राहक सहायता और काल सेंटर सेवाएँ
ग्राहक सहायता और काल सेंटर सेवाएँ 'व्यवसाय प्रक्रमण बाह्यस्त्रोतन' (BPO) के अंतर्गत आती हैं, जो अधिक सामान्य और दिन-प्रतिदिन के कार्यों से संबंधित हैं। इसके विपरीत, ई-लर्निंग, अनुसंधान एवं विकास और बौद्धिक संपदा अनुसंधान 'ज्ञान प्रक्रमण बाह्यस्त्रोतन' (KPO) के उदाहरण हैं क्योंकि इनमें उच्च स्तर की विशेषज्ञता और विश्लेषण की आवश्यकता होती है। केपीओ सूचना के गहन प्रसंस्करण पर केंद्रित होता है, न कि केवल संवाद पर।

54. (B) सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तक पहुँच में असमानता
अंकीय विभाजक या डिजिटल डिवाइड सूचना प्रौद्योगिकी की दुनिया में व्याप्त उस खाई को दर्शाता है जहाँ कुछ लोगों या देशों के पास आधुनिक तकनीक और इंटरनेट तक बेहतरीन पहुँच है, जबकि अन्य इससे वंचित हैं। यह असमानता न केवल विकसित और विकासशील देशों के बीच है, बल्कि एक ही देश के भीतर अमीर-गरीब और शहर-गाँव के बीच भी देखी जा सकती है, जो आर्थिक अवसरों को प्रभावित करती है।

55. (D) कोई देश कितनी शीघ्रता से अपने नागरिकों को सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तक पहुँच उपलब्ध करा सकता है।
किसी देश की प्रगति इस बात पर निर्भर करती है कि वह अपने नागरिकों को सूचना और संचार की आधुनिक तकनीकों से कितनी जल्दी जोड़ता है। जो देश इस डिजिटल युग में पीछे रह जाते हैं, वे वैश्विक आर्थिक प्रतिस्पर्धा में पिछड़ जाते हैं। इसलिए, तकनीक का लोकतंत्रीकरण और उसकी त्वरित उपलब्धता ही अंकीय विभाजक को कम करने और विकास सुनिश्चित करने का सबसे निर्णायक कारक माना जाता है।

34. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
पर्यटन के विभिन्न आकर्षण पर्यटकों को अपनी ओर खींचते हैं जैसे दक्षिणी यूरोप का धूपदार मौसम जलवायु का आकर्षण है। पर्वत और झीलें भू-दृश्य की सुंदरता को दर्शाते हैं। प्राचीन नगर और पुरातत्व के स्थल इतिहास एवं कला में रुचि रखने वालों को लुभाते हैं। इसी प्रकार, किसी स्थान की स्थानीय रीतियाँ और संस्कृति वहाँ की अनूठी सामाजिक और आर्थिक पहचान के कारण पर्यटकों को आकर्षित करती हैं।

35. (C) ऊष्ण व धूपदार मौसम
उत्तरी यूरोप के ठंडे देशों से आने वाले पर्यटकों के लिए भूमध्यसागरीय और दक्षिणी यूरोप के क्षेत्रों का गर्म और धूपदार मौसम सबसे बड़ा आकर्षण होता है। वे सर्दियों के दौरान 'पुलिन विश्राम' या समुद्र किनारे धूप सेंकने के लिए इन स्थानों की यात्रा करते हैं। जलवायु की यह विशेषता वहाँ के पर्यटन उद्योग का मुख्य आधार है, जो हर साल लाखों यात्रियों को उन क्षेत्रों की ओर खींचती है।

36. (D) 'घरों में रुकना' (Home Stay)
गोवा के 'हेरीटेज होम्स' और कर्नाटक के कूर्ग में 'मैडीकेरे' जैसी योजनाएँ 'होम स्टे' पर्यटन का बेहतरीन उदाहरण हैं। इसमें पर्यटक स्थानीय निवासियों के साथ उनके घरों में रहते हैं, जिससे उन्हें स्थानीय संस्कृति का वास्तविक अनुभव मिलता है। यह व्यवसाय पर्यटन को अधिक समावेशी और आर्थिक रूप से स्थानीय समुदायों के लिए लाभदायक बनाता है। यह बड़े होटलों के विकल्प के रूप में काफी लोकप्रिय हो रहा है।

37. (C) चिकित्सा उपचार को अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन गतिविधि से संबद्ध करना
चिकित्सा पर्यटन तब होता है जब कोई व्यक्ति अपने देश से बाहर किसी अन्य देश में केवल उच्च गुणवत्ता वाले और सस्ते चिकित्सा उपचार के लिए यात्रा करता है। इसमें मरीज़ न केवल इलाज करवाते हैं बल्कि पर्यटन स्थलों का भ्रमण भी करते हैं। भारत जैसे देश अपनी उत्कृष्ट चिकित्सा सुविधाओं और कम लागत के कारण वैश्विक स्तर पर चिकित्सा पर्यटन के प्रमुख केंद्र बनकर उभरे हैं।

38. (A) केवल 1 और 3
भारत, थाईलैंड और सिंगापुर जैसे विकासशील देश चिकित्सा पर्यटन के क्षेत्र में अग्रणी हैं क्योंकि यहाँ विकसित देशों की तुलना में सस्ता और विश्वस्तरीय उपचार मिलता है। यह केवल विकसित देशों तक सीमित नहीं है। इसमें चिकित्सा परीक्षणों का बाह्यस्रोतन भी शामिल है जहाँ विकसित देशों के स्कैन और रिपोर्टों का विश्लेषण इन देशों में किया जाता है। अतः यह विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए राजस्व का बड़ा स्रोत है।

39. (D) अनुसंधान और विकास
चतुर्थ क्रियाकलाप पूरी तरह से बौद्धिक गतिविधियों पर आधारित होते हैं जिनका मुख्य उद्देश्य नए ज्ञान का सृजन और मौजूदा सूचनाओं का विश्लेषण करना है। इसमें अनुसंधान और विकास, सॉफ्टवेयर निर्माण और कर परामर्श जैसे कार्य शामिल हैं। यह प्राथमिक या द्वितीयक क्षेत्रों की तरह भौतिक वस्तुओं या कच्चे माल से सीधे नहीं जुड़ा होता, बल्कि यह आधुनिक ज्ञान-आधारित समाज की आधारशिला के रूप में कार्य करता है।

40. (D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5
चतुर्थ सेक्टर ज्ञान-आधारित होता है और इसमें सूचना का उत्पादन व विश्लेषण मुख्य है। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में यह सेक्टर रोज़गार का बड़ा स्रोत बन गया है और इसने पारंपरिक प्राथमिक व द्वितीयक कार्यों का स्थान लिया है। सॉफ्टवेयर सेवाएँ और म्यूचुअल फंड प्रबंधन इसके आधुनिक उदाहरण हैं। यह पूरी तरह से बौद्धिक संपदा और उच्च कुशलता पर निर्भर करता है, जो विकसित देशों की पहचान है।

41. (C) विश्वविद्यालयी अध्यापन
चतुर्थ क्रियाकलापों में वे सेवाएँ आती हैं जो उच्च स्तरीय ज्ञान और विशेषज्ञता पर आधारित होती हैं। विश्वविद्यालयी अध्यापन शोध और ज्ञान के प्रसार से जुड़ा है, इसलिए यह इस श्रेणी का सटीक उदाहरण है। खेती और मछली पकड़ना प्राथमिक क्रियाकलाप हैं, जबकि वस्त्र निर्माण एक द्वितीयक क्रियाकलाप है। चतुर्थ सेक्टर सामान्य सेवाओं से कहीं अधिक जटिल और सूचना-प्रधान होता है, जो इसे विशिष्ट बनाता है।

42. (A) इन्हें बाह्यस्रोतन के माध्यम से किया जा सकता है।
चतुर्थ क्रियाकलाप भौतिक संसाधनों से नहीं बंधे होते और न ही ये पर्यावरण पर निर्भर करते हैं। चूँकि ये मुख्य रूप से सूचना और डेटा प्रक्रमण से जुड़े होते हैं, इसलिए इन्हें आधुनिक दूरसंचार के माध्यम से दुनिया के किसी भी कोने से बाह्यस्रोतन द्वारा संचालित किया जा सकता है। यही लचीलापन इन्हें बाज़ार द्वारा भौगोलिक रूप से स्थानीकृत होने की अनिवार्यता से मुक्त करता है, जिससे वैश्विक व्यापार सुगम होता है।

43. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
पंचम क्रियाकलाप वास्तव में नीति निर्धारण और नए विचारों की गहन व्याख्या से संबंधित होते हैं, जो उच्चतम स्तर का कार्य है। इन्हें 'स्वर्ण कॉलर' व्यवसाय कहा जाता है क्योंकि इसमें शीर्ष स्तर के अधिकारी और वैज्ञानिक शामिल होते हैं। हालाँकि, वे स्वर्ण कॉलर कहलाते हैं, यह इस बात की पूर्ण व्याख्या नहीं है कि उनका कार्य केवल विचारों की रचना ही क्यों है; यह केवल उनका पदनाम और महत्व दर्शाता है।

44. (B) पंचम सेक्टर
'स्वर्ण कॉलर' शब्द का प्रयोग पंचम क्रियाकलापों में लगे विशेषज्ञों के लिए किया जाता है। ये पेशेवर वरिष्ठ व्यावसायिक कार्यकारी, सरकारी नीति निर्माता और अनुसंधान वैज्ञानिक होते हैं जिनकी निर्णय लेने की क्षमता देश या कंपनी की दिशा तय करती है। ये तृतीयक और चतुर्थक क्षेत्रों से भी ऊपर के स्तर के माने जाते हैं क्योंकि इनका ध्यान केवल सेवा या सूचना पर नहीं, बल्कि रणनीतिक विकास पर होता है।

ज़रूरत को पूरा करती है। यह उत्पादन और उपभोग के बीच की कड़ी बनकर आर्थिक गतिविधियों को सुगम बनाता है। परिवहन से वस्तुओं का मूल्य बढ़ता है क्योंकि वे सही स्थान पर पहुँचती हैं। दूरी को किलोमीटर के अलावा समय और लागत के रूप में भी मापा जाना आधुनिक अर्थशास्त्र में आम है।

67. (C) दो नोडों को जोड़ने वाली प्रत्येक सड़क
परिवहन भूगोल में, 'योजक' या लिंक वह मार्ग होता है जो दो नोड्स (यानी प्रमुख बिंदुओं या शहरों) को आपस में जोड़ता है। एक योजक एक सड़क, रेल लाइन या पाइपलाइन हो सकती है। जितने अधिक योजक होंगे, जाल-तंत्र उतना ही मजबूत और सुसंबद्ध माना जाएगा। यह दो केंद्रों के बीच संपर्क की प्रत्यक्षता को दर्शाता है, जिससे यातायात और संचार का प्रवाह अधिक प्रभावी ढंग से संचालित होता है।

68. (D) उसमें अनेक योजक होते हैं।
एक सुसंबद्ध परिवहन जाल-तंत्र की मुख्य पहचान उसमें मौजूद योजकों (links) की अधिक संख्या है। जब कई नोड्स आपस में कई मार्गों द्वारा जुड़े होते हैं, तो यात्रियों और माल के पास आवाजाही के लिए कई विकल्प होते हैं। यह नेटवर्क की विश्वसनीयता और दक्षता को बढ़ाता है। कम योजक या केवल एक मार्ग पर निर्भरता तंत्र को कमज़ोर बनाती है और किसी व्यवधान की स्थिति में संपर्क तोड़ सकती है।

69. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
आधुनिक उपग्रह और मोबाइल तकनीक ने सूचनाओं को बिना किसी भौतिक वाहन के भेजना संभव कर दिया है, जिससे संचार परिवहन से मुक्त हो गया है। साथ ही, पुराने डाक तंत्र अभी भी परिवहन पर निर्भर हैं क्योंकि वे सस्ते हैं। ये दोनों बातें अलग-अलग तथ्यों को बयां करती हैं। संचार के मुक्त होने का कारण तकनीकी प्रगति है, न कि पुराने तंत्रों का सस्ता होना, जो केवल उनकी निरंतरता को स्पष्ट करता है।

70. (B) क्योंकि वे पूरे विश्व में विस्तृत श्रोताओं को प्रसारण करते हैं।
रेडियो और दूरदर्शन को 'जनसंचार' (Mass Media) कहा जाता है क्योंकि इनका कवरेज क्षेत्र अत्यंत व्यापक होता है और ये एक ही समय में लाखों लोगों तक सूचनाएँ पहुँचा सकते हैं। इनका उपयोग केवल मनोरंजन के लिए ही नहीं, बल्कि शिक्षा, समाचार और विज्ञापनों के प्रसार के लिए भी किया जाता है। व्यक्तिगत संचार के विपरीत, यहाँ प्रेषक एक होता है लेकिन प्राप्तकर्ता पूरा समाज या विशाल जनसमूह होता है।

71. (A) 2, 4, 3, 1
सेवाओं का पदानुक्रम उनकी विशेषज्ञता और शैक्षिक आवश्यकता पर आधारित होता है। पंसारी की दुकान सबसे बुनियादी सेवा है। इसके बाद धोबीघाट जैसी सेवाएँ आती हैं जो व्यक्तिगत श्रम पर आधारित हैं। लेखाकार एक पेशेवर सेवा है जिसके लिए विशिष्ट शैक्षणिक डिग्री चाहिए। परामर्शदाता सबसे उच्च स्तर पर होते हैं क्योंकि वे अपने गहन ज्ञान और अनुभव के आधार पर रणनीतिक सलाह प्रदान करते हैं, जो अत्यंत विशिष्ट कार्य है।

72. (A) महामार्गों एवं सेतुओं का निर्माण और अग्निशमन विभाग
सार्वजनिक हित की महत्वपूर्ण सेवाएँ जैसे सड़कों का निर्माण, अग्निशमन और कानून व्यवस्था प्रायः सरकारों या सार्वजनिक निगमों द्वारा संचालित की जाती हैं। ये सेवाएँ विनियमित होती हैं ताकि पूरे समाज को सुरक्षा और बुनियादी ढाँचा मिल सके। नाई या धोबी जैसी व्यक्तिगत सेवाएँ असंगठित निजी क्षेत्र का हिस्सा हैं। सरकारी हस्तक्षेप केवल उन्हीं क्षेत्रों में अधिक होता है जहाँ सार्वजनिक सुरक्षा और भारी निवेश की आवश्यकता होती है।

73. (A) P-2, Q-3, R-1, S-4
मोची और गृहपाल असंगठित व्यक्तिगत सेवाएँ प्रदान करते हैं। मल्टीप्लेक्स और रेस्तरां मनोरंजन की श्रेणी में आते हैं। अध्यापक और वकील का कार्य पूरी तरह मानसिक श्रम और विशेषज्ञता पर आधारित होता है। अग्निशमन विभाग एक नियमित और विनियमित सेवा है जो सार्वजनिक सुरक्षा के लिए सरकार द्वारा संचालित की जाती है। यह वर्गीकरण समाज में सेवाओं की विविधता और उनके प्रबंधन के तरीके को स्पष्ट करता है।

74. (A) 10 प्रतिशत
अल्पविकसित देशों में अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि और कच्चे माल के निष्कर्षण पर आधारित होती है, इसलिए वहाँ सेवा क्षेत्र बहुत ही छोटा होता है। अक्सर इन देशों के 10 प्रतिशत से भी कम लोग सेवाओं में लगे होते हैं। जैसे-जैसे देश विकास करता है, लोगों का झुकाव प्राथमिक क्षेत्र से हटकर विनिर्माण और अंततः सेवा क्षेत्र की ओर बढ़ता है। यह आँकड़ा आर्थिक विकास की प्रारंभिक और पिछड़ी अवस्था को दर्शाता है।

75. (D) क्योंकि यह प्रमोद के उद्देश्यों के लिए की जाने वाली यात्रा है।
पर्यटन को तृतीयक क्रियाकलाप इसलिए माना जाता है क्योंकि यह यात्रियों को मनोरंजन, विश्राम और खुशी (प्रमोद) प्रदान करने वाली एक सेवा है। यह किसी वस्तु का निर्माण नहीं करता, बल्कि यात्रियों के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए आवास, परिवहन और भोजन जैसी सुविधाएँ प्रदान करता है। यद्यपि कुछ लोग व्यापारिक यात्रा करते हैं, लेकिन पर्यटन का मुख्य आकर्षण और इसकी वैश्विक पहचान अवकाश और सैर-सपाटे से ही जुड़ी है।

76. (B) यह अवसंरचना, फुटकर व्यापार और शिल्प उद्योगों को पोषित करता है।
पर्यटन केवल होटल और परिवहन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पूरे स्थानीय आर्थिक तंत्र को गति देता है। पर्यटकों की माँग के कारण सड़कों और हवाई अड्डों का विकास होता है, स्थानीय बाज़ारों में बिक्री बढ़ती है और पारंपरिक हस्तशिल्प को नया बाज़ार मिलता है। यह कई क्षेत्रों में आय के स्रोत पैदा करता

है, जिससे क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा मिलता है और समाज के विभिन्न वर्गों को आर्थिक लाभ होता है।

77. (B) केवल 2 और 4
पर्वत, झीलें और सुंदर समुद्री तट पर्यटकों के लिए मुख्य भू-दृश्य आकर्षण होते हैं। साथ ही, अलग-अलग समुदायों की मानवजातीय परंपराएँ और अनूठी रीतियाँ भी लोगों को आकर्षित करती हैं। ठंडे प्रदेशों के लोग आमतौर पर गर्म मौसम की तलाश में यात्रा करते हैं, न कि और अधिक ठंड की। इतिहास और कला में भी लोगों की गहरी रुचि होती है, जो पुराने स्मारकों और संग्रहालयों की यात्रा से स्पष्ट होती है।

78. (D) उच्च तापमान या स्कींग के लिए हिमावरण
पर्यटकों की जलवायवी ज़रूरतें उनके अवकाश के प्रकार पर निर्भर करती हैं। जो लोग सर्दियों की छुट्टियों में समुद्र किनारे जाना चाहते हैं, वे उच्च तापमान और धूप की तलाश करते हैं। इसके विपरीत, स्कींग के शौकीन लोगों के लिए पर्याप्त हिमावरण या बर्फबारी होना सबसे अनिवार्य शर्त होती है। इस प्रकार, जलवायु स्वयं में एक प्रमुख उत्पाद है जो पर्यटन के मौसम और गंतव्य को निर्धारित करता है।

79. (A) 1, 2 और 5
भारत अपने सुंदर तटों और ऐतिहासिक स्थलों के कारण एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। 2005 में अमेरिका से हजारों मरीज़ों का भारत आना यहाँ की चिकित्सा विशेषज्ञता को सिद्ध करता है। भारत अब विकिरण बिंबों (रेडियोलॉजी) जैसी जटिल चिकित्सा सेवाओं के विश्लेषण का केंद्र भी बन गया है। भारत पिछड़ा नहीं, बल्कि अग्रणी देश है और यहाँ के विश्वस्तरीय अस्पताल मुख्य रूप से बड़े शहरों में स्थित हैं, न कि गाँवों में।

80. (B) सेवा सेक्टर
चतुर्थ और पंचम क्रियाकलाप वास्तव में सेवा सेक्टर का ही एक उच्च और परिष्कृत हिस्सा हैं। जबकि तृतीयक क्रियाकलाप सामान्य सेवाएँ प्रदान करते हैं, चतुर्थ और पंचम क्षेत्र पूरी तरह से ज्ञान, अनुसंधान, नीति निर्माण और सूचना के प्रबंधन पर केंद्रित होते हैं। ये ज्ञानोन्मुखी अर्थव्यवस्था के स्तंभ हैं जहाँ शारीरिक श्रम का स्थान बौद्धिक क्षमता ले लेती है। आधुनिक समाज की प्रगति इन्हीं उच्च स्तरीय सेवाओं के विकास पर टिकी है।

81. (B) पंचम क्रियाकलाप उच्चतम स्तर के निर्णय लेने और नीतियों के निर्माण से संबंधित हैं।
चतुर्थ और पंचम दोनों ही ज्ञान-आधारित क्षेत्र हैं, लेकिन उनमें पदानुक्रम का अंतर है। चतुर्थ क्रियाकलाप मुख्य रूप से सूचना संग्रहण, सॉफ्टवेयर विकास और कर परामर्श जैसे कार्यों तक सीमित हैं। इसके विपरीत, पंचम क्रियाकलाप में वे लोग आते हैं जो राष्ट्रों या बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए उच्चतम स्तर पर निर्णय लेते हैं और भविष्य की नीतियाँ तैयार करते हैं। यह कार्यों की जटिलता और उनके दूरगामी प्रभाव का अंतर है।

82. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
जब विकसित देश अपने यहाँ के काम (जैसे डेटा प्रविष्टि या ग्राहक सेवा) को भारत जैसे देशों में बाह्यस्रोतन करते हैं, तो उनके अपने देश के युवाओं के लिए रोज़गार के अवसर कम हो जाते हैं। इससे वहाँ की जनता में असंतोष और राजनीतिक विरोध पैदा होता है क्योंकि वे इसे अपनी आर्थिक सुरक्षा के लिए खतरा मानते हैं। यही कारण है कि बाह्यस्रोतन अक्सर विकसित देशों में एक विवादास्पद मुद्दा बना रहता है।

83. (C) ज्ञान प्रक्रमण बाह्यस्रोतन (के.पी.ओ.) और 'होम शोरिंग'
पंचक सेवाओं में अब केवल सामान्य बीपीओ नहीं, बल्कि उच्च बौद्धिक क्षमता वाले केपीओ शामिल हो रहे हैं। केपीओ में शोध और विश्लेषण जैसे कार्य होते हैं। 'होम शोरिंग' एक नई प्रवृत्ति है जहाँ लोग अपने घर से ही कंपनियों के लिए काम करते हैं, जो बाह्यस्रोतन का एक अधिक लचीला और लागत-प्रभावी विकल्प बनकर उभरा है। ये बदलाव सूचना प्रौद्योगिकी की बढ़ती शक्ति और कार्यस्थल की बदलती अवधारणा को दर्शाते हैं।

84. (D) भौगोलिक सूचना तंत्र की तकनीक
आधुनिक समय में हैदराबाद या मनीला में बैठा एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर भौगोलिक सूचना तंत्र (GIS) और इंटरनेट का उपयोग करके अमेरिका या जापान की परियोजनाओं पर काम कर सकता है। उच्च गति वाले डेटा लिंक और डिजिटल उपकरणों ने दूरियों को मिटा दिया है। अब मानचित्रण, डेटा विश्लेषण और अन्य तकनीकी कार्य बिना किसी भौतिक यात्रा के वैश्विक स्तर पर साझा किए जा सकते हैं, जो डिजिटल युग की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

85. (C) पंचम क्रियाकलाप से जुड़े विशेषज्ञ और निर्णयकर्ता
'स्वर्ण कॉलर' शब्द का उपयोग समाज के उस सबसे विशिष्ट वर्ग के लिए किया जाता है जो पंचम क्रियाकलापों में संलग्न है। ये लोग केवल सेवा नहीं देते, बल्कि नए विचारों का सृजन करते हैं और जटिल समस्याओं का समाधान खोजते हैं। इनमें प्रमुख वैज्ञानिक, सरकारी सलाहकार और शीर्ष कॉर्पोरेट अधिकारी शामिल होते हैं। उनके कार्य का मूल्य उनकी संख्या से कहीं अधिक होता है क्योंकि उनके निर्णय व्यापक प्रभाव डालते हैं।

86. (A) P-2, Q-3, R-4, S-1
फुटकर व्यापार का मूल कार्य सीधे उपभोक्ताओं को माल बेचना है। पर्यटन मुख्य रूप से मनोरंजन और प्रमोद के लिए की जाने वाली यात्रा से जुड़ा है। बाह्यस्रोतन का मुख्य व्यावसायिक उद्देश्य कंपनियों की लागत को कम करना होता है। पंचम क्रियाकलाप राष्ट्रों और संगठनों के लिए उच्चतम स्तर की नीति निर्माण और रणनीतिक योजनाएँ तैयार करने से संबंधित हैं। यह मिलान आर्थिक क्षेत्रों की मुख्य विशेषताओं को स्पष्ट करता है।

87. (D) कर्मियों की कुशलताओं, अनुभव और ज्ञान पर
सेवा क्षेत्र की सफलता पूरी तरह से मानव संसाधन की गुणवत्ता पर टिकी होती है। विनिर्माण के विपरीत, जहाँ मशीनें मुख्य उत्पादक होती हैं, सेवाओं में एक पेशेवर का व्यक्तिगत ज्ञान,

उसकी विशिष्ट कुशलता और वर्षों का अनुभव ही 'उत्पाद' होता है। एक बेहतर वकील या डॉक्टर अपनी बौद्धिक क्षमता के कारण ही पहचाना जाता है। इसलिए, सेवा क्षेत्र में निवेश का अर्थ है मानव पूँजी का विकास करना।

88. (C) तृतीयक > द्वितीयक > प्राथमिक
जैसे-जैसे कोई अर्थव्यवस्था विकसित होती है, कृषि (प्राथमिक) का महत्व कम होता जाता है और विनिर्माण (द्वितीयक) के बाद सेवा क्षेत्र (तृतीयक) सबसे बड़ा नियोक्ता बन जाता है। विकसित देशों में अधिकांश लोग सेवाओं में लगे हैं, उसके बाद उद्योगों में, और बहुत कम लोग खेती में। यह संरचना उच्च जीवन स्तर और उन्नत तकनीकी विकास का संकेत है जहाँ समाज अपनी अधिकांश ज़रूरतों के लिए सेवाओं पर निर्भर रहता है।

89. (C) सेवाओं की उपलब्धता जिनका उपभोग किया जाता है
तृतीयक क्रियाकलापों में 'उत्पादन' का अर्थ किसी भौतिक वस्तु को बनाना नहीं है, बल्कि विशिष्ट सेवाओं को उपलब्ध कराना है जो ग्राहकों द्वारा उपभोग की जाती हैं। उदाहरण के लिए, एक नाई द्वारा दी गई बाल काटने की सेवा या एक सलाहकार द्वारा दी गई राय ही उनका उत्पादन है। यह उत्पादन अमूर्त होता है और इसे विनिर्माण की तरह गोदामों में संग्रहित नहीं किया जा सकता, बल्कि यह सेवा प्रदान करने के क्षण ही समाप्त हो जाता है।

90. (A) केवल 1 और 2
व्यापार और वाणिज्य का प्राथमिक उद्देश्य हमेशा लाभ कमाना होता है। परिवहन एक महत्वपूर्ण सेवा है जिसका उपयोग स्थान के व्यवधानों को दूर करने और दूरियों को निष्प्रभावी करने के लिए किया जाता है। संचार में अब केवल डाक नहीं, बल्कि इंटरनेट और मोबाइल जैसी आधुनिक तकनीकें भी शामिल हैं। बैंकिंग और बीमा सेवाएँ अनिवार्य रूप से तृतीयक क्षेत्र का हिस्सा हैं क्योंकि वे महत्वपूर्ण वित्तीय सेवाएँ प्रदान करती हैं।

91. (D) व्यापारिक केंद्र अथवा संग्रहण और वितरण बिंदु
व्यापार के स्थानीय से वैश्विक स्तर पर विस्तार ने विशेष आर्थिक केंद्रों के उदय को प्रेरित किया है। ये केंद्र वस्तुओं के संग्रहण और उनके वितरण के प्रमुख बिंदु के रूप में कार्य करते हैं। यहाँ से माल को बड़े बाज़ारों या बंदरगाहों तक भेजा जाता है। ये बिंदु केवल विनिमय के स्थान नहीं हैं, बल्कि ये पूरे क्षेत्र की आर्थिक धुरी होते हैं जो उत्पादकों और उपभोक्ताओं के बीच सेतु का कार्य करते हैं।

92. (B) 2, 3, 4 और 5
फुटकर व्यापार सीधे उपभोक्ताओं को माल बेचने से संबंधित है। अधिकांश व्यापार स्थायी दुकानों से होता है, लेकिन इंटरनेट ने भंडार रहित बिक्री को बढ़ावा दिया है। उपभोक्ता सहकारी समितियों ने इस क्षेत्र में पहली बार बड़े सुधार किए थे। विभागीय भंडारों में हर विभाग का अपना प्रमुख होता है जो खरीद के लिए जिम्मेदार होता है। यह कहना कि यह अप्रत्यक्ष विक्रय है, गलत है क्योंकि यह सीधा संपर्क है।

93. (C) अनेक बिचौलिए सौदागरों और पूर्तिघरों द्वारा
थोक व्यापार एक विशाल वितरण तंत्र है जहाँ बड़ी मात्रा में माल का लेन-देन होता है। इसमें बिचौलिए सौदागर और पूर्तिघर मुख्य भूमिका निभाते हैं जो विनिर्माताओं से माल खरीदकर उसे फुटकर विक्रेताओं तक पहुँचाते हैं। थोक व्यापारी आमतौर पर उपभोक्ताओं को सीधे सामान नहीं बेचते। वे फुटकर विक्रेताओं को ऋण की सुविधा भी देते हैं और बाज़ार में वस्तुओं की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य करते हैं।

94. (D) समान समय में पहुँचने वाले स्थानों को मिलाने के लिए
मानचित्र पर खींची गई वे रेखाएँ जो एक निश्चित बिंदु से समान यात्रा समय में पहुँचने वाले सभी स्थानों को जोड़ती हैं, उन्हें समकाल रेखा (Isochrones) कहा जाता है। इनका उपयोग परिवहन नियोजन में यह समझने के लिए किया जाता है कि किसी स्थान से पहुँच कितनी सुलभ है। यह केवल भौतिक दूरी को नहीं, बल्कि मार्ग की दक्षता और यातायात की स्थिति के आधार पर समय की महत्ता को दर्शाता है।

95. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
परिवहन की मांग को पूरा करने के लिए धन (निधि) की आवश्यकता होती है ताकि सड़कों या रेलों का निर्माण हो सके। वहीं, मार्गों का निर्धारण भौगोलिक और आर्थिक कारकों जैसे शहरों की स्थिति और जलवायु पर निर्भर करता है। ये दोनों तथ्य परिवहन विकास के अलग-अलग पहलुओं—वित्तीय और स्थानिक—को दर्शाते हैं। धन की उपलब्धता मांग को पूरा करने का साधन है, जबकि मार्ग का चयन स्थान की उपयोगिता पर आधारित है।

96. (B) मोबाइल दूरभाष
मोबाइल दूरभाष (Mobile Phones) के आने से संचार के क्षेत्र में युगांतकारी परिवर्तन आया है। इसने व्यक्ति को किसी निश्चित स्थान या तार से जुड़े रहने की मज़बूरी से मुक्त कर दिया है। अब कोई भी व्यक्ति किसी भी समय, दुनिया के किसी भी कोने से तुरंत संपर्क स्थापित कर सकता है। इसने न केवल व्यक्तिगत बातचीत बल्कि व्यापार और आपातकालीन सेवाओं को भी अत्यंत तीव्र और प्रभावी बना दिया है, जो पहले संभव नहीं था।

97. (A) 2, 4, 3, 1
व्यापार का विकास सबसे सरल स्तर 'वस्तु विनिमय' से शुरु हुआ जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों में लोग आपस में सामान बदलते थे। इसके बाद ग्रामीण विपणन केंद्र बने जो स्थानीय ज़रूरतें पूरी करते थे। फिर नगरीय विपणन केंद्रों का विकास हुआ जो अधिक विशिष्ट थे। अंततः वैश्विक स्तर पर 'अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा विनिमय' और व्यापार ने जन्म लिया। यह क्रम स्थानीय आत्मनिर्भरता से वैश्विक परस्पर निर्भरता की ओर बढ़ने की प्रक्रिया है।

98. (A) माली, धोबी और नाई जैसी सेवाएँ
व्यक्तिगत सेवाएँ वे होती हैं जो सीधे ग्राहकों की निजी आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। माली, धोबी और नाई इसके

161. (D) क्योंकि इसमें अमूर्त सेवाओं का निर्यात शामिल है।
पर्यटन को 'अदृश्य व्यापार' कहा जाता है क्योंकि इसमें किसी भौतिक वस्तु का निर्यात नहीं होता, बल्कि अमूर्त सेवाओं का विनिमय शामिल होता है। जब विदेशी पर्यटक किसी देश में आते हैं, तो वे वहां की सेवाओं जैसे आवास, भोजन और परिवहन के लिए भुगतान करते हैं। इससे मेजबान देश को मूल्यवान विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है, जो बिना भौतिक उत्पाद को बाहर भेजे संभव होती है।

162. (B) प्राकृतिक पर्यावरण का संरक्षण और आनंद लेना।
पारिस्थितिकी-पर्यटन या ईको-टूरिज्म का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण के साथ-साथ उसका अनुभव और आनंद लेना है। यह पर्यटन का एक जिम्मेदार रूप है जो स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को न्यूनतम नुकसान पहुँचाने पर केंद्रित होता है। इसमें अक्सर पर्यावरण शिक्षा और संरक्षण के प्रयास शामिल होते हैं ताकि आगंतुक प्रकृति के महत्व को समझ सकें और उसका सम्मान करते हुए यात्रा का सुख लें।

163. (C) स्थानीय संस्कृति का वस्तुकरण।
अनियंत्रित पर्यटन के कारण स्थानीय संस्कृतियों का 'वस्तुकरण' होने का खतरा रहता है। इसका अर्थ है कि स्थानीय परंपराओं, कलाओं और रीति-रिवाजों को केवल पर्यटकों के मनोरंजन के लिए एक बिकाऊ उत्पाद के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगता है। इससे सांस्कृतिक मौलिकता और गहराई धीरे-धीरे समाप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त, पर्यावरण प्रदूषण और संसाधनों पर अत्यधिक दबाव जैसे गंभीर नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिलते हैं।

164. (D) विदेशी मुद्रा अर्जन और नए रोजगार पैदा करना।
मेजबान देश के लिए पर्यटन का सबसे बड़ा आर्थिक लाभ विदेशी मुद्रा का अर्जन है, जो देश के भुगतान संतुलन को सुदृढ़ करता है। इसके साथ ही, यह उद्योग प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के लाखों अवसर पैदा करता है। होटल, रेस्तरां और परिवहन जैसी सेवाओं के माध्यम से स्थानीय समुदायों की आय में वृद्धि होती है और क्षेत्रीय आर्थिक विकास को नई गति मिलती है।

165. (A) आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय हितों के संतुलन पर।
सतत पर्यटन की अवधारणा आर्थिक लाभ, सामाजिक समानता और पर्यावरणीय संरक्षण के बीच संतुलन बनाने पर जोर देती है। इसका उद्देश्य वर्तमान पर्यटकों की आवश्यकताओं को पूरा करना है जबकि भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधनों को सुरक्षित रखना है। यह पर्यटन के नकारात्मक प्रभावों को कम करते हुए स्थानीय समुदायों के कल्याण और प्राकृतिक विरासत की सुरक्षा सुनिश्चित करने की प्रक्रिया है।

166. (B) ज्ञान और सूचना।
चतुर्थक क्रियाकलाप आर्थिक गतिविधियों के उस श्रेणी को दर्शाते हैं जो पूरी तरह से ज्ञान और सूचना पर केंद्रित हैं। इसमें सूचना का संग्रहण, उत्पादन, प्रसंस्करण और प्रसार जैसी महत्वपूर्ण बौद्धिक गतिविधियाँ शामिल होती हैं। यह क्षेत्र पारंपरिक सेवा क्षेत्र का एक उन्नत रूप है जहाँ नवाचार, अनुसंधान और बौद्धिक पूंजी को प्राथमिक महत्व दिया जाता है, जिससे समाज की समग्र बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होती है।

167. (B) बौद्धिक पूंजी और नवाचार।
ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था में किसी भी संगठन या राष्ट्र की प्रतिस्पर्धात्मकता उसकी बौद्धिक पूंजी और नवाचार करने की क्षमता पर निर्भर करती है। भौतिक उत्पादन या प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता की तुलना में अब ज्ञान का सृजन और उसका प्रभावी अनुप्रयोग अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। नई तकनीकों का निरंतर विकास और डेटा का गहन विश्लेषण ही वर्तमान आर्थिक वृद्धि और वैश्विक बाजार में बढ़त हासिल करने का आधार है।

168. (A) अनुसंधान और विकास (R&D)
अनुसंधान और विकास (R&D) चतुर्थक क्षेत्र का एक प्रमुख उदाहरण है क्योंकि यह पूरी तरह से नई जानकारी और उन्नत तकनीक के सृजन पर आधारित है। सॉफ्टवेयर विकास, डेटा विश्लेषण और उच्च-स्तरीय परामर्श जैसी गतिविधियाँ भी इसी श्रेणी में आती हैं। ये गतिविधियाँ विशिष्ट ज्ञान और कौशल की मांग करती हैं और समाज के तकनीकी एवं वैज्ञानिक स्तर को वैश्विक मानकों के अनुरूप विकसित करती हैं।

169. (C) क्योंकि वहां कुशल श्रम और अनुसंधान की आसान पहुँच होती है।
चतुर्थक गतिविधियों का भौगोलिक संकेंद्रण अक्सर विशिष्ट क्षेत्रों में होता है जहाँ कुशल श्रम, प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय और अनुसंधान संस्थान आसानी से उपलब्ध होते हैं। प्रौद्योगिकी पार्क और आधुनिक शहरी केंद्र ऐसे पेशेवरों को आकर्षित करते हैं जो नवाचार के लिए आवश्यक वातावरण प्रदान करते हैं। इस तरह के संकेंद्रण से सूचनाओं के आदान-प्रदान, सहयोग और नए विचारों के सृजन में बहुत आसानी और गति प्राप्त होती है।

170. (D) सूचना और संचार तकनीक।
सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) ने चतुर्थक क्षेत्र के विस्तार में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और क्लाउड कंप्यूटिंग जैसी आधुनिक तकनीकों ने डेटा के विशाल भंडार को संसाधित करना और उसे दुनिया भर में साझा करना अत्यंत सुगम बना दिया है। इन तकनीकों के बिना ज्ञान-आधारित सेवाओं का वैश्विक स्तर पर त्वरित संचालन और विकास करना वर्तमान प्रतिस्पर्धी युग में लगभग असंभव होता।

171. (C) लागत कम करने और दक्षता बढ़ाने के लिए।
बाह्यस्रोतन या आउटसोर्सिंग अपनाने का मुख्य उद्देश्य परिचालन लागत को कम करना और कार्य की समग्र दक्षता को बढ़ाना है। इसके माध्यम से कंपनियाँ अपने गैर-प्रमुख कार्यों को बाहरी विशेषज्ञ फर्मों को सौंप देती हैं ताकि वे अपनी मुख्य दक्षताओं पर बेहतर ध्यान केंद्रित कर सकें। यह व्यावसायिक रणनीति प्रतिस्पर्धी बाजार में अपनी स्थिति मजबूत करने और संसाधनों का अधिक कुशलता से उपयोग करने के लिए अनिवार्य है।

109. (C) प्राथमिक क्रियाकलाप
'लाल कॉलर' उन श्रमिकों के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द है जो प्राथमिक क्रियाकलापों जैसे कृषि, खनन, वानिकी और मछली पकड़ने के कार्यों में लगे होते हैं। इनका कार्य सीधे तौर पर प्राकृतिक संसाधनों के निष्कर्षण और बाहरी वातावरण से जुड़ा होता है। यह शब्दावली कार्य की प्रकृति और कार्यस्थल की परिस्थितियों को दर्शाने के लिए उपयोग की जाती है। यह समाज की सबसे बुनियादी और पुरानी आर्थिक गतिविधि का प्रतीक माना जाता है।

110. (D) विनिर्माण उद्योगों में वास्तविक उत्पादन में शामिल श्रमिक
'नीला कॉलर' (Blue Collar) शब्द मुख्य रूप से उन कुशल या अकुशल श्रमिकों के लिए उपयोग किया जाता है जो कारखानों और विनिर्माण इकाइयों में शारीरिक श्रम करते हैं। ये श्रमिक वस्तुओं के वास्तविक उत्पादन, मशीनों के संचालन और रखरखाव जैसे कार्यों में लगे होते हैं। इनका कार्य अक्सर चुनौतीपूर्ण भौतिक परिस्थितियों में होता है। यह श्रेणी उन्हें कार्यालयों में काम करने वाले 'श्वेत कॉलर' कर्मियों से अलग करने के लिए बनाई गई है।

111. (A) शब्दों, संदेशों, तथ्यों और विचारों
संचार सेवाओं का मुख्य उद्देश्य सूचना का प्रभावी हस्तांतरण है। इसमें शब्दों के माध्यम से बातचीत, लिखित संदेश, सांख्यिकीय तथ्य और रचनात्मक विचारों को एक व्यक्ति या समूह से दूसरे तक पहुँचाना शामिल है। यह अमूर्त सूचनाओं का प्रवाह है जो मानवीय संबंधों और व्यावसायिक लेन-देन को संभव बनाता है। आधुनिक युग में यह प्रवाह भौतिक वस्तुओं के परिवहन से कहीं अधिक तीव्र और व्यापक हो चुका है।

112. (B) P-1, Q-2, R-3, S-4
थोक व्यापार में बिचौलिए और पूर्तिघर विनिर्माताओं व फुटकर विक्रेताओं के बीच कड़ी का काम करते हैं। फुटकर व्यापार सीधे ग्राहकों को माल बेचता है। आवधिक बाज़ार वे हैं जो गाँव में किसी खास दिन (साप्ताहिक/पाक्षिक) लगते हैं। श्रृंखला भंडार एक ही कंपनी द्वारा संचालित कई दुकानें होती हैं जिनका प्रबंधन केंद्रीय होता है। यह मिलान व्यापारिक वितरण प्रणालियों की विभिन्न संरचनाओं और उनकी कार्यशैली को स्पष्ट रूप से समझाता है।

113. (B) कर परामर्शदाताओं और सॉफ्टवेयर सेवाओं
चतुर्थक सेक्टर में उन सेवाओं की मांग सबसे अधिक बढ़ी है जो आधुनिक डिजिटल अर्थव्यवस्था को सहारा देती हैं। सॉफ्टवेयर सेवाएँ व्यवसायों के संचालन के लिए अनिवार्य हैं, जबकि जटिल वित्तीय नियमों के कारण कर परामर्शदाताओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। ये सेवाएँ उच्च स्तरीय बौद्धिक कौशल पर आधारित हैं। नाई या कृषि श्रम जैसे पारंपरिक कार्यों की तुलना में इन विशिष्ट सेवाओं का आर्थिक मूल्य बहुत अधिक बढ़ गया है।

114. (A) आँकड़ों की व्याख्या और नई प्रौद्योगिकी का मूल्यांकन
पंचम क्रियाकलापों में केवल सूचना एकत्र करना ही शामिल नहीं है, बल्कि उस सूचना का विश्लेषण करके महत्वपूर्ण निर्णय लेना मुख्य है। इसमें भविष्य की तकनीकों का मूल्यांकन और रणनीतिक योजनाएँ बनाना शामिल है। यह उच्चतम स्तर की बौद्धिक गतिविधि है जो किसी देश या संगठन की दीर्घकालिक सफलता निर्धारित करती है। परिवहन या साधारण कार्यालय कार्य इस श्रेणी में नहीं आते क्योंकि वे केवल क्रियान्वयन से संबंधित हैं, नीति निर्माण से नहीं।

115. (C) काल सेंटर
बाह्यस्रोतन के कारण विकासशील देशों में कॉल सेंटरों का एक विशाल जाल बिछ गया है। भारत और चीन जैसे देशों में अंग्रेज़ी बोलने वाले युवाओं की उपलब्धता और कम पारिश्रमिक के कारण पश्चिमी कंपनियों ने अपने ग्राहक सहायता केंद्र यहाँ स्थानांतरित कर दिए हैं। इसने इन देशों में बड़े पैमाने पर श्वेत कॉलर रोज़गार पैदा किए हैं और उन्हें वैश्विक सेवा अर्थव्यवस्था का एक अभिन्न अंग बना दिया है, जिससे शहरी रोज़गार में भारी वृद्धि हुई है।

116. (B) केवल 2 और 4
सेवा क्षेत्र में सेवाओं का उत्पादन और उनका विनिमय दोनों शामिल हैं। विकसित देशों में यह क्षेत्र अर्थव्यवस्था की रीढ़ है जहाँ अधिकांश श्रमिक कार्यरत हैं। आरंभिक अवस्था में प्राथमिक क्षेत्र बड़ा होता है, सेवा क्षेत्र नहीं। साथ ही, सेवाओं में केवल शारीरिक श्रम नहीं, बल्कि उच्च स्तर के मानसिक श्रम और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। यह क्षेत्र समाज की बढ़ती आर्थिक जटिलता और समृद्धि का परिचायक है।

117. (C) बाह्यस्रोतन का एक विकल्प
'होम शोरिंग' बाह्यस्रोतन का एक आधुनिक और लचीला विकल्प है जहाँ कर्मचारी दफ्तर जाने के बजाय अपने घर से ही कंपनी के लिए काम करते हैं। यह तकनीक और इंटरनेट के कारण संभव हुआ है। इससे कंपनियों को कार्यालय के रखरखाव का खर्च नहीं उठाना पड़ता और कर्मचारियों को यात्रा के समय की बचत होती है। यह कार्य-संस्कृति में आ रहे बड़े बदलाव को दर्शाता है जहाँ स्थान का महत्व कम हो गया है।

118. (A) 1, 2 और 4
परिवहन का विकास मुख्य रूप से जनसंख्या की मांग और शहरों व उद्योगों की स्थिति पर निर्भर करता है। सड़कों और रेलों के निर्माण के लिए पर्याप्त धन (निधि) का होना भी अत्यंत आवश्यक है ताकि भौगोलिक बाधाओं को पार किया जा सके। भू-दृश्य और जलवायु भी मार्ग निर्धारण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि वे निर्माण की लागत और मार्ग की सुरक्षा को सीधे प्रभावित करते हैं, जिन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता।

119. (D) क्योंकि वहाँ अंग्रेज़ी भाषा में निपुणता वाले कुशल कर्मचारी कम पारिश्रमिक पर उपलब्ध हैं।
एशियाई और अफ्रीकी देशों में डेटा प्रक्रमण के पनपने का मुख्य कारण वहाँ की शिक्षित और भाषाई रूप से कुशल जनशक्ति है जो पश्चिमी देशों की तुलना में बहुत कम वेतन पर काम करने को तैयार है। अंग्रेज़ी भाषा में निपुणता वैश्विक संचार को सुगम बनाती है। कंपनियों के लिए यह एक बड़ा आर्थिक लाभ है

अध्याय 07

परिवहन एवं संचार

1. परिवहन की किस विधा का प्रयोग पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस और तरल अयस्कों जैसे पदार्थों के परिवहन के लिए किया जाता है?
(A) सड़क परिवहन
(B) पाइपलाइन
(C) रेल परिवहन
(D) वायु परिवहन

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
कथन 1: उच्च मूल्य वाली, हल्की तथा नाशवान वस्तुओं का वायुमार्गों द्वारा परिवहन सर्वश्रेष्ठ होता है।
कथन 2: वायु परिवहन, परिवहन का सबसे तीव्रगामी, किंतु सबसे महँगा साधन है।
(A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और कथन 2 दोनों गलत हैं।
(C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(D) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

3. पहिए के आविष्कार के पश्चात् परिवहन में क्रांति किस शताब्दी में भाप के इंजन के आविष्कार के बाद आई?
(A) सोलहवीं शताब्दी
(B) सत्रहवीं शताब्दी
(C) अठारहवीं शताब्दी
(D) उन्नीसवीं शताब्दी

4. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिये:
List I: (बोझा ढोने वाले पशु)
P. पश्चिमी देश
Q. हिमाच्छादित मैदान
R. पर्वतीय प्रदेश
S. मरुस्थलीय क्षेत्र
List II: (पशु का प्रकार)
1. खच्चर
2. ऊँट
3. घोड़े
4. कुत्ते एवं रेंडियर
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

5. निम्नलिखित में से कौन सा कथन सड़क परिवहन के संदर्भ में सही नहीं है?
(A) छोटी दूरियों के लिए यह रेल परिवहन से अधिक आर्थिक रूप से लाभदायक है।
(B) इसके द्वारा घर-घर तक वस्तुओं को पहुँचाया जा सकता है।
(C) कच्ची सड़कें सभी ऋतुओं में प्रभावी व प्रयोग योग्य होती हैं।
(D) यह देश के व्यापार, वाणिज्य और पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

6. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): यूरोप में महामार्गों को रेलमार्गों एवं जलमार्गों के साथ कड़ी प्रतिद्वंद्विता का सामना करना पड़ता है।
कारण (R): यूरोप में वाहनों की बहुत विशाल संख्या तथा महामार्गों का सुविकसित जाल पाया जाता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

7. विश्व की कुल मोटर वाहन चलाने योग्य सड़कों की लंबाई का लगभग 33 प्रतिशत भाग किस महाद्वीप में पाया जाता है?
(A) एशिया
(B) यूरोप
(C) ऑस्ट्रेलिया
(D) उत्तरी अमेरिका

8. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. महामार्ग दूरस्थ स्थानों को जोड़ने वाली पक्की सड़कें होती हैं।
2. इनका निर्माण अबाधित यातायात के आवागमन के लिए किया जाता है।
3. ये सामान्यतः 80 मीटर चौड़ी सड़कें होती हैं।
4. विकसित देशों में प्रत्येक नगर और पत्तन नगर महामार्गों द्वारा जुड़े हुए हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4 सभी

130. (A) ग्रामीण और नगरीय
व्यापारिक केंद्रों को उनके परिवेश और सेवा के दायरे के आधार पर मुख्य रूप से ग्रामीण और नगरीय श्रेणियों में बाँटा जाता है। ग्रामीण केंद्र अर्ध-नगरीय होते हैं जो स्थानीय कृषि उत्पादों के संग्रहण और बुनियादी वितरण का कार्य करते हैं। नगरीय केंद्र अधिक विशिष्ट होते हैं और उच्च स्तरीय व्यावसायिक सेवाएँ प्रदान करते हैं। यह विभाजन आर्थिक भूगोल में बाज़ारों की पहुँच और उनके द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं की विविधता को समझने में मदद करता है।

131. (D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5
संचार का विकास लेखन के आविष्कार से शुरु होकर विद्युत और मोबाइल तकनीक के माध्यम से आज इंटरनेट के वैश्विक युग तक पहुँच गया है। प्रारंभ में संदेशों के लिए हम घोड़ों या रेलगाड़ियों जैसे परिवहन पर निर्भर थे, लेकिन दूरसंचार क्रांति ने इस निर्भरता को खत्म कर दिया। आज इंटरनेट और उपग्रह संचार ने दुनिया को एक 'ग्लोबल विलेज' बना दिया है जहाँ सूचनाओं का आदान-प्रदान तत्काल और बिना किसी बाधा के संभव है।

132. (D) बाज़ार पर
मनोरंजन और प्रमोद से जुड़ी सेवाओं, जैसे मल्टीप्लेक्स, रेस्तरां और रिसॉर्ट्स का अस्तित्व पूरी तरह से बाज़ार की मांग और लोगों की खर्च करने की क्षमता पर निर्भर करता है। ये सेवाएँ उन स्थानों पर अधिक फलती-फूलती हैं जहाँ जनसंख्या सघन होती है और लोगों के पास अवकाश के लिए अतिरिक्त आय होती है। इसलिए, ऐसी सेवाओं का स्थान निर्धारण अक्सर उपभोक्ताओं की पहुँच और उनकी आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखकर किया जाता है।

133. (C) ऊष्ण और धूपदार
उत्तरी और ठंडे प्रदेशों के लोग अपनी छुट्टियों के दौरान धूप की कमी को पूरा करने के लिए भूमध्यसागरीय जैसे गर्म और धूपदार क्षेत्रों की यात्रा करते हैं। वे 'पुलिन विश्राम' के लिए रेतीले समुद्र तटों और गर्म मौसम की तलाश करते हैं जहाँ वे सूरज की रोशनी का आनंद ले सकें। जलवायु की यह विभिन्नता ही पर्यटन के वैश्विक प्रवाह का एक प्रमुख कारण है, जो उत्तरी देशों के लोगों को दक्षिणी गोलार्द्ध की ओर आकर्षित करती है।

134. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत और थाईलैंड जैसे विकासशील देशों को चिकित्सा पर्यटन से बहुत लाभ होता है क्योंकि यहाँ विश्वस्तरीय चिकित्सा सुविधाएँ विकसित देशों की तुलना में बहुत सस्ती हैं। अमेरिका या यूरोप के मरीज़ यहाँ न केवल अपना इलाज करवाते हैं, बल्कि कम लागत में पर्यटन का भी आनंद लेते हैं। इससे इन देशों को बहुमूल्य विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है और उनके चिकित्सा बुनियादी ढाँचे में सुधार होता है, जो आर्थिक समृद्धि का साधन बनता है।

135. (D) विश्वविद्यालयी अध्यापन
विश्वविद्यालयी अध्यापन चतुर्थ सेक्टर का हिस्सा है क्योंकि यह उच्च शिक्षा, शोध और ज्ञान के प्रसार से संबंधित है। चतुर्थ क्रियाकलाप सूचना के उत्पादन और विश्लेषण पर केंद्रित होते हैं, न कि विनिर्माण पर। संगणक विनिर्माण, कागज़ निर्माण और मुद्रण द्वितीयक क्रियाकलाप हैं क्योंकि इनमें कच्चे माल से भौतिक वस्तुएँ बनाई जाती हैं। शिक्षा और शोध आधुनिक ज्ञान-आधारित समाज की धुरी हैं, इसलिए इन्हें चतुर्थक श्रेणी में रखा जाता है।

136. (A) बाह्यस्त्रोतन से घरेलू देश में ही काम उपलब्ध होने लगता है।
जब विकसित देशों की कंपनियाँ भारत या चीन जैसे देशों में बाह्यस्त्रोतन करती हैं, तो उन देशों के युवाओं को अपने ही शहर में अच्छे वेतन वाले रोज़गार मिल जाते हैं। इससे उन्हें काम की तलाश में विदेश जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, जिससे उत्प्रवास (out-migration) की दर में कमी आती है। यह प्रक्रिया विकासशील देशों में प्रतिभा पलायन को रोकने और स्थानीय स्तर पर आर्थिक स्थिरता लाने में सहायक सिद्ध होती है।

137. (C) ताकि दुकानदार सभी दिन व्यस्त रहें और एक विस्तृत क्षेत्र को सेवा प्रदान कर सकें।
ग्रामीण क्षेत्रों में आबादी बिखरी हुई होती है और मांग कम होती है, इसलिए दुकानदार एक ही स्थान पर स्थायी दुकान नहीं चलाते। वे सप्ताह के अलग-अलग दिनों में अलग-अलग गाँवों में बाज़ार (हाट) लगाते हैं। इससे वे एक बड़े भौगोलिक क्षेत्र के ग्राहकों तक पहुँच पाते हैं और उनके पास पूरे सप्ताह के लिए पर्याप्त काम बना रहता है। यह मॉडल सीमित संसाधनों में व्यापारिक पहुँच को अधिकतम करने का एक पारंपरिक तरीका है।

138. (B) P-3, Q-4, R-2, S-1
भारत और सिंगापुर जैसे देश अपनी उत्कृष्ट चिकित्सा सुविधाओं के लिए जाने जाते हैं। गोवा और कूर्ग में 'होम स्टे' या घरों में रुकने की सुविधा पर्यटकों को स्थानीय अनुभव देती है। दक्षिणी यूरोप का गर्म मौसम वहाँ धूप सेंकने के शौकीन पर्यटकों को आकर्षित करता है। भारत और चीन जैसे देश वैश्विक बाह्यस्त्रोतन के प्रमुख केंद्र हैं जहाँ से कॉल सेंटर और आईटी सेवाएँ पूरी दुनिया को प्रदान की जाती हैं।

139. (D) विभागीय भंडार
विभागीय भंडार एक विशाल खुदरा प्रतिष्ठान होता है जिसमें विभिन्न प्रकार की वस्तुओं के लिए अलग-अलग अनुभाग या विभाग होते हैं। प्रत्येक विभाग का संचालन एक 'विभाग प्रमुख' द्वारा किया जाता है जो उस विशेष श्रेणी की वस्तुओं की खरीद, स्टॉक और बिक्री के लिए पूरी तरह जिम्मेदार होता है। यह विकेंद्रीकृत प्रबंधन प्रणाली बड़े पैमाने पर वस्तुओं के चयन और उनकी गुणवत्ता सुनिश्चित करने में मदद करती है, जिससे ग्राहकों को एक ही छत के नीचे सब कुछ मिल जाता है।

सबसे आम उदाहरण हैं। ये सेवाएँ भुगतान की क्षमता रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए उपलब्ध होती हैं और अक्सर असंगठित क्षेत्र का हिस्सा होती हैं। चूँकि इनमें मानवीय स्पर्श और व्यक्तिगत उपस्थिति अनिवार्य होती है, इसलिए ये सेवाएँ बड़े पैमाने पर मशीनीकृत नहीं की जा सकतीं और स्थानीय स्तर पर महत्वपूर्ण होती हैं।

99. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
गोल्फ कोर्स जैसे बड़े मनोरंजन स्थलों के लिए बहुत अधिक भूमि चाहिए होती है, इसलिए वे शहर के बाहर सस्ती ज़मीन पर बनाए जाते हैं। डब्बावाला सेवा एक असंगठित व्यक्तिगत सेवा है। मल्टीप्लेक्स और बड़े व्यावसायिक प्रतिष्ठान अक्सर शहर के मुख्य भाग (CBD) में स्थित होते हैं जहाँ ग्राहक आसानी से पहुँच सकें। अग्निशमन विभाग जैसी सेवाएँ सरकार द्वारा विनियमित और नियमित रूप से प्रदान की जाने वाली नागरिक सेवाएँ हैं।

100. (D) यह बढ़ रही है।
आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं में सेवा क्षेत्र में रोज़गार की दर लगातार बढ़ रही है। जैसे-जैसे कृषि और उद्योग अधिक मशीनीकृत हो रहे हैं, वहाँ श्रम की आवश्यकता कम हो रही है, जबकि शिक्षा, स्वास्थ्य, आईटी और पर्यटन जैसी सेवाओं का निरंतर विस्तार हो रहा है। आज दुनिया के अधिकांश देशों में कुल जीडीपी और रोज़गार में तृतीयक और चतुर्थक क्षेत्रों का योगदान पहले की तुलना में कहीं अधिक है, जो भविष्य की दिशा है।

101. (C) 25 करोड़
पर्यटन उद्योग आज दुनिया के सबसे बड़े नियोक्ताओं में से एक है, जिसमें लगभग 25 करोड़ से अधिक लोग पंजीकृत रोज़गारों में संलग्न हैं। यह संख्या कुल वैश्विक कार्यबल का एक बहुत बड़ा हिस्सा है। पर्यटन न केवल सीधे होटलों और एयरलाइंस में काम देता है, बल्कि यह परोक्ष रूप से स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को भी मज़बूत करता है। इसकी व्यापकता इसे विश्व की सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधियों में से एक बनाती है।

102. (B) क्योंकि अवकाश की अवधि अनुकूल मौसमी दशाओं पर निर्भर करती है।
पर्यटन अक्सर 'ऋतुनिष्ठ' (seasonal) होता है क्योंकि लोग साल के कुछ खास समय में ही यात्रा करना पसंद करते हैं। जैसे, लोग गर्मियों में पहाड़ों पर जाते हैं और सर्दियों में गर्म समुद्री तटों या स्की रिसॉर्ट्स की तलाश करते हैं। इसके कारण पर्यटन स्थलों पर भीड़ और राजस्व भी मौसम के अनुसार घटता-बढ़ता रहता है। कुछ समय वहाँ बहुत अधिक चहल-पहल होती है, जबकि 'ऑफ-सीजन' में ये स्थान काफी शांत हो जाते हैं।

103. (A) केवल 1 और 2
बाह्यस्रोतन का प्राथमिक लक्ष्य कार्यकुशलता बढ़ाना और परिचालन खर्चों को कम करना है। जब यह कार्य विदेशों में भेजा जाता है, तो तकनीकी रूप से इसे 'अपतरन' कहा जाता है। इसमें केवल विनिर्माण ही नहीं, बल्कि सूचना प्रौद्योगिकी और ग्राहक सेवा जैसे सेवा क्षेत्र के कार्य भी बड़े पैमाने पर शामिल हैं। वास्तव में, आईटी और कॉल सेंटर आज वैश्विक बाह्यस्रोतन बाज़ार के सबसे बड़े और सफल हिस्से बन चुके हैं।

104. (A) वे दोनों सेवा सेक्टर के ज्ञानोन्मुखी प्रभाग में काम करते हैं।
यद्यपि एक सीईओ और एक मेडिकल ट्रांसक्रिप्शनिस्ट के वेतन और पद में बड़ा अंतर है, लेकिन वे दोनों सूचना और ज्ञान के प्रसंस्करण से जुड़े हैं। उनका कार्य बौद्धिक कौशल पर आधारित है और इसे चतुर्थक या पंचम क्रियाकलापों की श्रेणी में रखा जा सकता है। ये दोनों सेवा क्षेत्र के उस आधुनिक स्वरूप का प्रतिनिधित्व करते हैं जहाँ शारीरिक श्रम की तुलना में सूचना का प्रबंधन और विश्लेषण अधिक महत्वपूर्ण है।

105. (D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5
पंचम क्रियाकलाप उच्चतम नीतिगत निर्णयों से संबंधित हैं और इनमें नए विचारों का सृजन शामिल है। इन्हें 'स्वर्ण कॉलर' व्यवसाय कहा जाता है और ये तृतीयक क्षेत्र के भीतर एक अत्यंत विशिष्ट उप-विभाग हैं। विकसित अर्थव्यवस्थाओं में इनकी संख्या भले ही कम हो, लेकिन इनका आर्थिक और रणनीतिक महत्व बहुत अधिक होता है। ये समाज के बौद्धिक नेतृत्व का कार्य करते हैं, जो विकास की दिशा तय करने में निर्णायक होता है।

106. (A) चिकित्सा परीक्षणों और आँकड़े के निर्वचन
भारत केवल मरीज़ों का इलाज ही नहीं कर रहा, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर चिकित्सा डेटा के विश्लेषण का केंद्र भी बन गया है। विकसित देशों के अस्पतालों से रेडियोलॉजी इमेज और अन्य परीक्षण रिपोर्ट विश्लेषण के लिए भारत भेजी जाती हैं क्योंकि यहाँ उच्च कुशल रेडियोलॉजिस्ट और डॉक्टर कम लागत पर उपलब्ध हैं। यह केपीओ (KPO) का एक बेहतरीन उदाहरण है जो भारत की बढ़ती तकनीकी विशेषज्ञता को दर्शाता है।

107. (D) बी.पी.ओ. के पास के.पी.ओ. की तुलना में बेहतर व्यावसायिक अवसर होते हैं।
केपीओ (KPO) वास्तव में बीपीओ से अधिक उन्नत है क्योंकि इसमें उच्च स्तर की विशेषज्ञता और बौद्धिक कौशल शामिल होता है। भविष्य में केपीओ के पास अधिक मूल्यवान व्यावसायिक अवसर होने की संभावना है क्योंकि कंपनियाँ अब केवल संवाद नहीं, बल्कि डेटा से अंतर्दृष्टि प्राप्त करना चाहती हैं। बीपीओ लागत आधारित है, जबकि केपीओ ज्ञान और विशेषज्ञता पर आधारित है, जो उसे वैश्विक बाज़ार में अधिक महत्वपूर्ण और प्रतिस्पर्धी बनाता है।

108. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
चतुर्थ क्रियाकलापों का मूल आधार ही अनुसंधान और नवाचार है। चूँकि इन कार्यों में जटिल डेटा विश्लेषण और नई प्रौद्योगिकियों का विकास शामिल होता है, इसलिए इनके लिए उच्च स्तरीय विशिष्ट ज्ञान और प्रशासकीय योग्यता की अनिवार्य रूप से आवश्यकता होती है। बिना विशेषज्ञता के अनुसंधान और विकास संभव नहीं है, यही कारण है कि यह सेक्टर केवल उन लोगों द्वारा संचालित होता है जिनके पास विशिष्ट शैक्षिक और तकनीकी पृष्ठभूमि होती है।

150. (B) ये विशिष्टीकृत कुशलता और ज्ञान पर अधिक निर्भर करते हैं

प्राथमिक और द्वितीयक क्रियाकलाप भौतिक संसाधनों और कच्चे माल के प्रसंस्करण से जुड़े होते हैं। इसके विपरीत, तृतीयक क्रियाकलाप या सेवा क्षेत्र पूरी तरह से मानव संसाधन की विशेषज्ञता, पेशेवर ज्ञान और व्यावहारिक कौशल पर आधारित होते हैं। यहाँ किसी वस्तु का उत्पादन नहीं होता, बल्कि एक कुशल सेवा प्रदान की जाती है। यही कारण है कि इस क्षेत्र में शिक्षा और विशेषज्ञता को सफलता का सबसे महत्वपूर्ण आधार माना जाता है।

151. (B) इसमें दोहरे संयोग की अनिवार्य आवश्यकता होती थी।

वस्तु-विनिमय प्रणाली में वस्तुओं का सीधा आदान-प्रदान होता था। इसकी सबसे बड़ी बाधा दोहरे संयोग की आवश्यकता थी। इसका अर्थ है कि विनिमय के लिए दोनों पक्षों के पास एक-दूसरे की वांछित वस्तुएं होनी चाहिए। इस कठिनाई के कारण व्यापार का क्षेत्र सीमित रहता था और लेनदेन प्रक्रिया जटिल थी, जिसे मुद्रा के आविष्कार ने सफलतापूर्वक हल कर दिया।

152. (A) वस्तुओं का व्यापार और संबंधित सहायक सेवाएँ।

आधुनिक वाणिज्य एक व्यापक अवधारणा है जो केवल वस्तुओं के भौतिक आदान-प्रदान तक सीमित नहीं है। इसमें व्यापार के साथ-साथ बैंकिंग, बीमा, परिवहन और विज्ञापन जैसी विभिन्न सहायक सेवाएँ शामिल होती हैं। ये सेवाएँ वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को सुगम बनाती हैं और उत्पादकों को उपभोक्ताओं से कुशलतापूर्वक जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह नेटवर्क आर्थिक गतिविधियों को मानकीकृत बनाता है।

153. (C) इसने विनिमय की प्रक्रिया को मानकीकृत और कुशल बनाया।

मुद्रा के आविष्कार ने विनिमय प्रक्रिया में क्रांतिकारी बदलाव किया और वस्तु-विनिमय की सीमाओं को समाप्त कर दिया। इसने मूल्य के एक सामान्य मापदंड के रूप में कार्य करके लेनदेन को अधिक मानकीकृत, सरल और कुशल बना दिया। इसके कारण व्यापार स्थानीय स्तर से ऊपर उठकर वैश्विक स्तर पर फैल सका। मुद्रा ने धन के संचय और बड़े व्यापारिक विस्तार को संभव बनाया है।

154. (D) उत्पादक, आपूर्तिकर्ता और उपभोक्ता वैश्विक स्तर पर फैले हैं।

वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला एक ऐसा नेटवर्क है जो दुनिया के विभिन्न हिस्सों में स्थित उत्पादकों, आपूर्तिकर्ताओं और अंतिम उपभोक्ताओं को आपस में जोड़ता है। यह आधुनिक व्यापार की जटिलता को दर्शाता है जहाँ कच्चे माल का स्रोत, प्रसंस्करण और खपत अलग-अलग देशों में हो सकती है। यह अंतरराष्ट्रीय व्यापार के विस्तार और वैश्वीकरण का मुख्य आधार है जो विश्व को एकीकृत करता है।

155. (C) इसने वैश्विक विक्रेताओं से सीधे जुड़ना संभव बनाया है।

ई-कॉमर्स ने पारंपरिक व्यापारिक बाधाओं को तोड़कर व्यापार के परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया है। इसके माध्यम से उपभोक्ता अब भौगोलिक सीमाओं की चिंता किए बिना सीधे वैश्विक विक्रेताओं से जुड़ सकते हैं। इससे बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ी है और वस्तुओं की उपलब्धता अधिक सुलभ हुई है। डिजिटल प्लेटफॉर्म ने छोटे और बड़े दोनों विक्रेताओं के लिए वैश्विक बाजार में अपनी पहुंच को आसान बना दिया है।

156. (B) दूरी के घर्षण को कम करना।

परिवहन का प्राथमिक कार्य लोगों, वस्तुओं और सूचनाओं की गतिशीलता को सुगम बनाना है। यह भौतिक दूरी के कारण उत्पन्न होने वाली बाधाओं या 'दूरी के घर्षण' को प्रभावी ढंग से कम करता है। एक कुशल परिवहन प्रणाली समय की बचत करती है और विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के बीच संपर्क स्थापित करके आर्थिक एवं सामाजिक विकास को गति प्रदान करती है। यह आधुनिक अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है।

157. (D) रेल परिवहन

लंबी दूरी पर भारी और अधिक मात्रा में माल ले जाने के लिए रेल परिवहन को सबसे कुशल माध्यम माना जाता है। इसकी लागत संरचना बड़े पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं के लिए उपयुक्त है और यह सड़कों की तुलना में अधिक भार वहन कर सकता है। भारी उद्योगों और थोक व्यापार के लिए रेल नेटवर्क एक महत्वपूर्ण आधारभूत संरचना है जो कम लागत में लंबी दूरी सुगम बनाती है।

158. (A) क्योंकि यह सबसे तीव्र साधन है।

वायु परिवहन परिवहन का सबसे तीव्र साधन है, जो इसे समय के प्रति संवेदनशील वस्तुओं के लिए आदर्श बनाता है। उच्च-मूल्य वाली वस्तुएं और जल्दी खराब होने वाले उत्पादों के लिए गति अत्यंत महत्वपूर्ण होती है ताकि उनकी गुणवत्ता और मूल्य सुरक्षित रहे। यद्यपि यह अन्य साधनों की तुलना में महंगा है, लेकिन इसकी गति और दक्षता दूरस्थ अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक त्वरित पहुँच सुनिश्चित करती है।

159. (C) परिवहन के विभिन्न साधनों का एकीकृत उपयोग।

अंतः-मोडल परिवहन एक ऐसी आधुनिक अवधारणा है जिसमें माल की ढुलाई के लिए परिवहन के दो या दो से अधिक साधनों का एकीकृत रूप से उपयोग किया जाता है। इसका मुख्य लक्ष्य पूरी रसद श्रृंखला की दक्षता को बढ़ाना और कुल लागत को कम करना है। यह विभिन्न साधनों की विशिष्ट खूबियों का लाभ उठाकर एक निर्बाध, समयबद्ध और प्रभावी परिवहन नेटवर्क सुनिश्चित करने में सहायक होता है।

160. (A) एक सघन नेटवर्क अक्सर उच्च आर्थिक विकास का संकेतक होता है।

किसी भी क्षेत्र में परिवहन नेटवर्क का घनत्व और उसकी गुणवत्ता वहां के आर्थिक विकास के स्तर को दर्शाती है। एक सघन और विकसित नेटवर्क बाजारों तक पहुंच को सुगम बनाता है और संसाधनों के कुशल वितरण में मदद करता है। आर्थिक रूप से समृद्ध क्षेत्रों में आमतौर पर परिवहन के बुनियादी ढांचे में भारी निवेश देखा जाता है, जो वहां की औद्योगिक और व्यापारिक प्रगति का प्रतीक है।

क्योंकि वे कम लागत में उच्च गुणवत्ता वाला काम प्राप्त कर पाती हैं, जिससे उनका लाभ मार्जिन बढ़ता है।

120. (A) विकसित देशों का इस दिशा में आगे बढ़ना और विकासशील देशों का पिछड़ जाना।
अंकीय विभाजक का सबसे नकारात्मक परिणाम यह है कि जिन देशों के पास तकनीक और सूचना तक बेहतर पहुँच है, वे आर्थिक रूप से और तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं। इसके विपरीत, गरीब और विकासशील देश इस तकनीकी दौड़ में पीछे छूटते जा रहे हैं। यह खाई वैश्विक स्तर पर आर्थिक और सामाजिक असमानता को बढ़ाती है क्योंकि आधुनिक युग में सूचना ही शक्ति और विकास का सबसे बड़ा साधन है।

121. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
पर्यटन वास्तव में दुनिया का सबसे बड़ा सेवा उद्योग बन गया है क्योंकि यह अकेले कई अन्य व्यवसायों को चलाता है। जब पर्यटक किसी स्थान पर आते हैं, तो वे परिवहन, भोजन और स्थानीय वस्तुओं पर खर्च करते हैं, जिससे होटल, हस्तशिल्प और फुटकर व्यापार में तेज़ी आती है। यह व्यापक आर्थिक प्रभाव ही पर्यटन को करोड़ों लोगों के लिए रोज़गार और देशों के लिए राजस्व का एक शक्तिशाली स्रोत बनाता है।

122. (A) सेवा
दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता जैसे महानगर भारत के आर्थिक और व्यापारिक केंद्र हैं जहाँ बैंक, आईटी कंपनियाँ, सरकारी कार्यालय और परिवहन के विशाल तंत्र स्थित हैं। इन शहरों की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से सेवाओं पर टिकी है, इसलिए यहाँ सेवा क्षेत्र ही सबसे अधिक रोज़गार प्रदान करता है। यहाँ कृषि जैसे प्राथमिक कार्यों के लिए भूमि और संभावनाएँ बहुत कम हैं, जिससे कार्यबल का अधिकांश हिस्सा तृतीयक गतिविधियों में संलग्न रहता है।

123. (A) 2, 3, 4, 1
आर्थिक विकास की शुरुआत आखेट और संग्रहण जैसी आदिम गतिविधियों से हुई। इसके बाद भारी उद्योगों जैसे लौह-इस्पात का उदय हुआ। समाज के संगठित होने पर व्यापार और परिवहन जैसे तृतीयक कार्यों का विस्तार हुआ। आधुनिक समय में हम सूचना प्रौद्योगिकी जैसी ज्ञान-आधारित सेवाओं के युग में पहुँच गए हैं। यह क्रम मानव समाज की सरलता से जटिलता और शारीरिक निर्भरता से बौद्धिक कौशल की ओर निरंतर प्रगति को दर्शाता है।

124. (B) जो कार्यालयों में व्यावसायिक या लिपिकीय कार्य करते हैं
'श्वेत कॉलर' (White Collar) कर्मचारी वे होते हैं जो मुख्य रूप से कार्यालय के वातावरण में बैठकर प्रशासनिक, प्रबंधकीय या क्लर्क जैसे कार्य करते हैं। इनके कार्यों में शारीरिक श्रम की तुलना में मानसिक कौशल और कागज़ी कार्रवाई की प्रधानता होती है। यह शब्द औद्योगिक क्रांति के बाद उन कर्मियों के लिए प्रचलित हुआ जो नीले कॉलर वाले कारखाने के श्रमिकों से अलग एक सुरक्षित और स्वच्छ व्यावसायिक परिवेश में काम करते थे।

125. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
लाल कॉलर प्राथमिक क्षेत्र (खेती/संग्रहण) को दर्शाता है। श्वेत कॉलर कार्यालयी और पेशेवर कार्यों से जुड़ा है। नीला कॉलर विनिर्माण और औद्योगिक श्रमिकों के लिए उपयोग होता है जो शारीरिक श्रम करते हैं। स्वर्ण कॉलर पंचम क्रियाकलापों के उन शीर्ष विशेषज्ञों के लिए है जो उच्चतम निर्णय लेते हैं। यह रंगों का वर्गीकरण समाज में श्रम के विभिन्न स्तरों और उनकी आर्थिक भूमिकाओं को पहचानने का एक पारंपरिक और प्रभावी तरीका है।

126. (D) मछली पकड़ना
मछली पकड़ना एक प्राथमिक क्रियाकलाप है क्योंकि यह सीधे तौर पर प्राकृतिक संसाधनों के निष्कर्षण से संबंधित है। इसके विपरीत, इस्पात प्रगलन, वस्त्र निर्माण और टोकरी बुनना द्वितीयक क्रियाकलाप हैं क्योंकि इनमें कच्चे माल को प्रसंस्कृत करके नई और अधिक मूल्यवान वस्तुएँ बनाई जाती हैं। प्राथमिक क्षेत्र प्रकृति से कच्चा माल लेता है, जबकि द्वितीयक क्षेत्र उस कच्चे माल का रूप बदलकर उसे उपयोगी उत्पादों में परिवर्तित करता है।

127. (A) पंचम क्रियाकलाप
वे कार्य जिनमें बहुत उच्च स्तर का अनुसंधान, अन्वेषण और गहन बौद्धिक विश्लेषण शामिल होता है, उन्हें पंचम क्रियाकलाप कहा जाता है। ये केवल डेटा इकट्ठा करने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ये नए सिद्धांतों की रचना और जटिल समस्याओं के समाधान खोजने से संबंधित हैं। इनमें शीर्ष वैज्ञानिक और रणनीतिकार शामिल होते हैं जो मानव ज्ञान की सीमाओं को आगे बढ़ाते हैं। इनका कार्य समाज की भविष्य की दिशा निर्धारित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

128. (B) वे सेवाओं के व्यावसायिक उत्पादन से संबंधित हैं।
तृतीयक क्रियाकलापों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे किसी भौतिक वस्तु का निर्माण नहीं करते। वे पूरी तरह से सेवाओं के व्यावसायिक उत्पादन और वितरण पर केंद्रित होते हैं, जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग और मनोरंजन। यहाँ मूल्य मानवीय कुशलता और विशेषज्ञता से सृजित होता है, न कि कच्चे माल के भौतिक प्रसंस्करण से। यह आधुनिक अर्थव्यवस्था का वह भाग है जो लोगों के जीवन की गुणवत्ता और कार्यकुशलता को बढ़ाता है।

129. (A) केवल 1 और 3
तृतीयक क्रियाकलाप वास्तव में सेवा क्षेत्र हैं जिनमें उत्पादन (सेवाओं का सृजन) और विनिमय (व्यापार/परिवहन) दोनों शामिल होते हैं। यह कहना गलत है कि इनका निष्पादन अकुशल श्रमिकों द्वारा होता है, क्योंकि अधिकांश सेवाओं के लिए विशेष प्रशिक्षण और कुशलता अनिवार्य है। साथ ही, तृतीयक क्षेत्र कर्मियों के ज्ञान और अनुभव पर बहुत अधिक निर्भर करता है, जो इसे प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रों की तुलना में अधिक विशेषज्ञता-प्रधान बनाता है।

172. (B) KPO में तुलनात्मक रूप से अधिक विश्लेषणात्मक कार्य होते हैं।
व्यापार प्रक्रिया बाह्यस्रोतन (BPO) मुख्य रूप से डेटा एंट्री और कॉल सेंटर जैसे मानकीकृत कार्यों पर केंद्रित होता है। इसके विपरीत, ज्ञान प्रक्रिया बाह्यस्रोतन (KPO) में उच्च स्तर की विशेषज्ञता और गहन विश्लेषणात्मक कौशल की आवश्यकता होती है। KPO के अंतर्गत अनुसंधान, बाजार विश्लेषण और कानूनी परामर्श जैसी जटिल बौद्धिक प्रक्रियाएं आती हैं, जो BPO की तुलना में अधिक ज्ञान-गहन और रणनीतिक निर्णय लेने वाली होती हैं।

173. (D) किसी कार्य को किसी दूसरे देश में स्थित फर्म को सौंपना।
अपतटन या ऑफशोरिंग का अर्थ है जब कोई कंपनी अपने व्यावसायिक कार्यों या सेवाओं को किसी दूसरे देश में स्थित बाहरी फर्म को सौंपती है। यह प्रक्रिया अक्सर लागत लाभ प्राप्त करने के लिए अपनाई जाती है, विशेष रूप से उन विकासशील देशों में जहाँ कुशल श्रम अपेक्षाकृत कम लागत पर उपलब्ध है। यह आधुनिक वैश्विक व्यापार का एक अनिवार्य हिस्सा है जो देशों के बीच आर्थिक सहयोग बढ़ाता है।

174. (A) देशों के बीच कार्यों का एक नया विशेषज्ञता पैटर्न बनाकर।
बाह्यस्रोतन ने एक नया अंतर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन पैदा किया है जहाँ विकसित देश उच्च-स्तरीय अनुसंधान और प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करते हैं। दूसरी ओर, विकासशील देश अपनी कुशल और सस्ती श्रम शक्ति का उपयोग करके सूचना-आधारित सेवाएँ प्रदान करने में विशेषज्ञता हासिल कर रहे हैं। इस बदलते पैटर्न ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में विभिन्न राष्ट्रों की भूमिकाओं और उनके आपसी आर्थिक संबंधों को मौलिक रूप से नया स्वरुप दिया है।

175. (C) अपने देश में नौकरियों का नुकसान।
बाह्यस्रोतन करने वाले स्रोत देशों के लिए सबसे बड़ी संभावित चुनौती अपने घरेलू बाजार में रोजगार के अवसरों का कम होना या नौकरियों का नुकसान है। जब कार्य अन्य देशों में स्थानांतरित हो जाता है, तो स्थानीय श्रमिकों के लिए रोजगार संकट उत्पन्न हो सकता है। इसके अतिरिक्त, सेवा की गुणवत्ता पर निरंतर नियंत्रण बनाए रखना और संवेदनशील डेटा की सुरक्षा सुनिश्चित करना भी कंपनियों के लिए एक बड़ी चुनौती है।

140. (B) द्वितीयक क्रियाकलाप में सेवाओं का उत्पादन होता है।
द्वितीयक क्रियाकलाप पूरी तरह से भौतिक वस्तुओं के निर्माण और कच्चे माल के प्रसंस्करण से संबंधित हैं, न कि सेवाओं के उत्पादन से। सेवाओं का उत्पादन तृतीयक, चतुर्थक और पंचम क्रियाकलापों की विशेषता है। द्वितीयक क्षेत्र में कारखानों और उद्योगों के माध्यम से मूर्त उत्पादों का सृजन किया जाता है। यह कहना कि इसमें सेवाओं का उत्पादन होता है, आर्थिक वर्गीकरण के मूल सिद्धांतों के विपरीत है क्योंकि सेवाएँ अमूर्त और गैर-भौतिक होती हैं।

141. (C) समय दूरी
यदि किसी यात्री का मुख्य उद्देश्य कम से कम समय में गंतव्य तक पहुँचना है, तो उसके लिए 'समय दूरी' सबसे महत्वपूर्ण मापदंड होगी। किलोमीटर की दूरी भले ही कम हो, लेकिन यातायात या खराब सड़कों के कारण समय अधिक लग सकता है। समय दूरी यह मापती है कि यात्रा में वास्तव में कितना समय खर्च होगा। आधुनिक परिवहन नियोजन में समय की बचत को किलोमीटर की बचत से अधिक प्राथमिकता दी जाती है क्योंकि समय ही धन है।

142. (C) 1, 3 और 4
उपभोक्ता सहकारी समितियों ने संगठित खुदरा व्यापार में नवाचार पेश किए थे। श्रृंखला भंडार सीधे विनिर्माताओं से बड़ी मात्रा में माल खरीदकर लागत कम करते हैं और विभागीय भंडारों में हर अनुभाग का अलग प्रमुख होता है। यह दावा करना गलत है कि थोक विक्रेता उधार नहीं देते, क्योंकि वे वास्तव में फुटकर विक्रेताओं को ऋण सुविधा देकर ही बाज़ार के सुचारु संचालन में मदद करते हैं। यह उधार व्यापारिक चक्र का एक अनिवार्य हिस्सा है।

143. (A) परिवहन तंत्र
परिवहन तंत्र एक ऐसी बुनियादी सेवा है जिसकी आवश्यकता आम लोगों को अपनी निजी आवाजाही के लिए होती है और उद्योगों को कच्चा माल मंगाने व तैयार माल बाज़ार तक पहुँचाने के लिए होती है। यह पूरी अर्थव्यवस्था की जीवनरेखा है जो उत्पादन और उपभोग के केंद्रों को आपस में जोड़ती है। परिवहन के बिना न तो व्यक्तिगत गतिशीलता संभव है और न ही औद्योगिक विकास, इसलिए यह दोनों वर्गों के लिए समान रूप से अनिवार्य और महत्वपूर्ण है।

144. (B) 2, 3 और 5
पर्यटन आज दुनिया का सबसे बड़ा सेवा उद्योग है जो बुनियादी ढाँचे के विकास को गति देता है और इसमें आवास व भोजन जैसी सेवाएँ शामिल हैं। यह कहना गलत है कि यह केवल व्यापारिक यात्रा है, क्योंकि इसका मुख्य हिस्सा मनोरंजन और सैर-सपाटा है। साथ ही, यह अक्सर ऋतुनिष्ठ होता है क्योंकि लोग साल के विशेष समय में ही घूमना पसंद करते हैं। अतः यह एक बहुआयामी आर्थिक गतिविधि है जो वैश्विक आय का बड़ा स्रोत है।

145. (B) चतुर्थ क्रियाकलाप
चतुर्थ क्रियाकलाप पूरी तरह से ज्ञान और सूचना के प्रबंधन पर आधारित होते हैं, इसलिए वे किसी विशेष भौतिक संसाधन या भौगोलिक वातावरण से बंधे नहीं होते। आधुनिक दूरसंचार के कारण इन्हें दुनिया में कहीं से भी संचालित किया जा सकता है। ये सेवाएँ स्थानीय बाज़ार की मज़बूरी से मुक्त हैं और वैश्विक स्तर पर प्रदान की जा सकती हैं। यही लचीलापन इन्हें प्राथमिक या द्वितीयक क्रियाकलापों से अलग और कहीं अधिक गतिशील व आधुनिक बनाता है।

146. (A) ज्ञान प्रक्रमण बाह्यस्रोतन और व्यवसाय प्रक्रमण बाह्यस्रोतन
केपीओ (KPO) और बीपीओ (BPO) बाह्यस्रोतन के दो प्रमुख रूप हैं। बीपीओ जहाँ सामान्य व्यावसायिक प्रक्रियाओं जैसे कॉल सेंटर या डेटा प्रविष्टि को संदर्भित करता है, वहीं केपीओ उच्च स्तरीय ज्ञान और विशेषज्ञता वाले कार्यों जैसे शोध, कानूनी सलाह और विश्लेषण से संबंधित है। ये दोनों शब्द आधुनिक वैश्विक सेवा क्षेत्र की कार्यप्रणाली को दर्शाते हैं जहाँ कंपनियाँ अपनी दक्षता बढ़ाने के लिए कार्यों का विभाजन करती हैं और बाहरी विशेषज्ञों की मदद लेती हैं।

147. (A) 2, 4, 3, 1
कार्यबल का पदानुक्रम कौशल और आर्थिक प्रभाव पर आधारित है। प्राथमिक क्षेत्र से आए कम कुशल श्रमिक सबसे नीचे होते हैं। इसके बाद व्यक्तिगत सेवा प्रदाता जैसे नाई आते हैं। श्वेत कॉलर कार्यालय कर्मचारी अधिक शिक्षित और पेशेवर होते हैं। सबसे ऊपर 'स्वर्ण कॉलर' पेशेवर होते हैं जो राष्ट्रों और कंपनियों के लिए रणनीतिक निर्णय लेते हैं। यह क्रम दर्शाता है कि कैसे ज्ञान और विशेषज्ञता समाज में पेशे की स्थिति और उसके महत्व को निर्धारित करती है।

148. (D) नागरिकों को सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तक पहुँच और लाभ उपलब्ध कराना
अंकीय विभाजक (डिजिटल डिवाइड) को समाप्त करने का एकमात्र तरीका यह है कि सरकारें और समाज मिलकर यह सुनिश्चित करें कि समाज के हर वर्ग, विशेषकर ग्रामीण और गरीब लोगों तक इंटरनेट और डिजिटल उपकरण पहुँचें। जब तकनीक सबकी पहुँच में होगी, तभी आर्थिक अवसरों का समान वितरण होगा। डिजिटल साक्षरता और सस्ती इंटरनेट सेवाएँ इस खाई को पाटने के लिए अनिवार्य हैं, जिससे समाज का समग्र और समावेशी विकास संभव हो सकेगा।

149. (C) स्थान सुसंबद्ध हैं
किसी परिवहन जाल-तंत्र में जितने अधिक योजक (links) होते हैं, वह नेटवर्क उतना ही 'सुसंबद्ध' (well-connected) माना जाता है। इसका अर्थ है कि एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए कई वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध हैं। यह जाल-तंत्र की कुशलता को बढ़ाता है क्योंकि यातायात सुचारु रहता है और किसी एक मार्ग के बाधित होने पर भी संपर्क बना रहता है। सुसंबद्धता किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास और सामाजिक गतिशीलता का एक बहुत बड़ा मापदंड है।

9. ट्रांस-कनाडियन महामार्ग किन दो स्थानों को जोड़ता है?
(A) एडमंटन और एंकोरेज
(B) चेगडू और ल्हासा
(C) वैंकूवर और सेंट जॉन नगर
(D) कैरो और केपटाउन

10. निम्नलिखित में से कौन सा एक रेलमार्ग गेज का प्रकार नहीं है?
(A) संकीर्ण लाइन
(B) बड़ी लाइन
(C) मानक लाइन
(D) मीटर लाइन

11. किस देश में रेल घनत्व सर्वाधिक है, जहाँ प्रति 6.5 वर्ग कि.मी. क्षेत्र पर लगभग 1 किलोमीटर रेलमार्ग पाया जाता है?
(A) जर्मनी
(B) ब्रिटेन
(C) फ्रांस
(D) बेल्जियम

12. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. उत्तरी अमेरिका में विश्व के कुल रेलमार्गों का लगभग 40 प्रतिशत है।
2. उत्तरी अमेरिका में रेलमार्गों का प्रयोग यात्री परिवहन की अपेक्षा माल परिवहन हेतु अधिक होता है।
3. कनाडा में रेलमार्ग सार्वजनिक सेक्टर में हैं।
4. ऑस्ट्रेलिया में लगभग 40,000 कि.मी. लंबे रेलमार्ग हैं।
5. न्यूज़ीलैंड में रेलमार्ग मुख्यतः दक्षिणी द्वीप में पाए जाते हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 4 सही हैं।
(B) केवल 1, 2, 3 और 4 सही हैं।
(C) केवल 3, 4 और 5 सही हैं।
(D) उपरोक्त सभी सही हैं।

13. दक्षिणी अमेरिका में रेलमार्ग किन दो प्रदेशों में सघन हैं?
(A) अमेज़न बेसिन और एंडीज पर्वत
(B) अटाकामा मरुस्थल और पेटागोनिया
(C) पंपास और कॉफी उत्पादक प्रदेश
(D) ओरिनोको बेसिन और गुयाना उच्चभूमि

14. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): अफ्रीका में रेल सुविधाओं का न्यूनतम विकास हुआ है।
कारण (R): अफ्रीका एक विशाल महाद्वीप है जिसमें विस्तृत मरुस्थल और सघन वन तथा विरल जनसंख्या वाले प्रदेश हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

15. पार-साइबेरियन रेलमार्ग के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) यह रेलमार्ग केवल यात्री परिवहन के लिए महत्वपूर्ण है।
(B) यह विश्व का सर्वाधिक लम्बा दोहरे पथ से युक्त विद्युतीकृत पारमहाद्वीपीय रेलमार्ग है।
(C) इसकी कुल लम्बाई 9,322 कि.मी. है।
(D) यह पश्चिम में सेंट पीटर्सबर्ग को पूर्व में व्लाडिवोस्टक से जोड़ता है।

16. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिये:
List I: (पारमहाद्वीपीय रेलमार्ग)
P. पार-साइबेरियन
Q. पार-कैनेडियन
R. संघ और प्रशांत
S. ओरिएंट एक्सप्रेस
List II: (अंतिम स्टेशन)
1. न्यूयॉर्क - सान फ्रांसिस्को
2. पेरिस - इस्तांबूल
3. सेंट पीटर्सबर्ग - व्लाडिवोस्टक
4. हैलिफ़ैक्स - वैंकूवर
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

17. 'कनाडा की आर्थिक धमनी' किस रेलमार्ग को कहा जाता है?
(A) पार-साइबेरियन रेलमार्ग
(B) पार-कैनेडियन रेलमार्ग
(C) संघ और प्रशांत रेलमार्ग
(D) ऑस्ट्रेलियाई पारमहाद्वीपीय रेलमार्ग

18. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. जल परिवहन में मार्गों का निर्माण नहीं करना पड़ता।
2. यह परिवहन बहुत सस्ता पड़ता है क्योंकि जल का घर्षण स्थल की अपेक्षा बहुत कम होता है।
3. जल परिवहन की ऊर्जा लागत अपेक्षाकृत अधिक होती है।
4. जल परिवहन को समुद्री मार्गों और आंतरिक जल मार्गों में विभक्त किया जाता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 4
(C) केवल 3 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4 सभी

19. समुद्री परिवहन के संदर्भ में 'प्रशीतन कोष्ठक' का उपयोग किसके लिए होता है?
(A) भारी मशीनरी के परिवहन के लिए
(B) तरल पदार्थों के परिवहन के लिए

(C) शीघ्र नाशवान वस्तुओं के परिवहन के लिए
(D) कंटेनरों के भंडारण के लिए

20. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिये:
1. प्रथम सार्वजनिक रेलमार्ग का प्रारंभ
2. भाप के इंजन का आविष्कार
3. स्वेज नहर का निर्माण
4. पनामा नहर का निर्माण

(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 3, 1, 4
(D) 4, 3, 2, 1

21. विश्व का व्यस्ततम व्यापारिक जलमार्ग कौन सा है, जिसे 'वृहद् ट्रंक मार्ग' भी कहा जाता है?
(A) भूमध्यसागर-हिंदमहासागरीय समुद्री मार्ग
(B) उत्तमाशा अंतरीप समुद्री मार्ग
(C) उत्तरी अटलांटिक समुद्री मार्ग
(D) उत्तरी प्रशांत समुद्री मार्ग

22. निम्नलिखित में से कौन सी पत्तनें भूमध्यसागर-हिंदमहासागरीय समुद्री मार्ग पर स्थित महत्वपूर्ण पत्तनें हैं?
(A) न्यूयॉर्क, लंदन, हैम्बर्ग
(B) पोर्ट सईद, अदन, मुंबई, कोलंबो
(C) वैंकूवर, योकोहामा, शंघाई
(D) केप टाउन, डरबन, पर्थ

23. स्वेज नहर के निर्माण से किस पुराने मार्ग का महत्व कम हो गया?
(A) उत्तरी अटलांटिक समुद्री मार्ग
(B) दक्षिणी प्रशांत समुद्री मार्ग
(C) पनामा नहर मार्ग
(D) उत्तमाशा अंतरीप समुद्री मार्ग

24. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. दक्षिणी अटलांटिक समुद्री मार्ग पर यातायात उत्तरी अटलांटिक मार्ग की तुलना में बहुत कम है।
2. इसका कारण दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका का सीमित विकास और कम जनसंख्या है।
3. रियो डि जेनेरो और केपटाउन के बीच इस मार्ग पर यातायात बहुत अधिक है।
4. दोनों महाद्वीपों (दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका) में एक जैसे उत्पाद और संसाधन हैं।
5. इस मार्ग पर बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण हुआ है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 4 सही हैं।
(B) केवल 2, 3 और 5 सही हैं।
(C) केवल 1, 3 और 4 सही हैं।
(D) उपरोक्त सभी सही हैं।

25. उत्तरी प्रशांत समुद्री मार्ग पर स्थित 'होनोलूलू' का क्या महत्व है?
(A) एक प्रमुख विनिर्माण एवं औद्योगिक केंद्र है।
(B) एक प्रमुख तेल अन्वेषण एवं उत्पादक क्षेत्र है।
(C) अनेक व्यापारिक मार्गों का मिलन बिंदु है।
(D) एक महत्वपूर्ण वैश्विक कृषि केंद्र है।

26. स्वेज नहर का निर्माण कब और कहाँ हुआ?
(A) 1869 में मिस्र में
(B) 1914 में पनामा में
(C) 1825 में इंग्लैंड में
(D) 1886 में कनाडा में

27. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): स्वेज नहर ने यूरोप को हिंद महासागर में एक नवीन प्रवेश मार्ग प्रदान किया है।
कारण (R): यह नहर लिवरपूल एवं कोलंबो के बीच प्रत्यक्ष समुद्री मार्ग की दूरी को उत्तमाशा अंतरीप मार्ग की तुलना में घटाता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

28. पनामा नहर के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) यह अटलांटिक महासागर को हिंद महासागर से जोड़ती है।
(B) इसमें कुल छः जलबंधक तंत्र हैं।
(C) यह जलबंधकों से रहित एक समुद्र सतह के बराबर नहर है।
(D) इसका आर्थिक महत्व स्वेज नहर से अधिक है।

29. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिये:
List I: (जलमार्ग)
P. राइन जलमार्ग
Q. डेन्यूब जलमार्ग
R. वोल्गा जलमार्ग
S. वृहद् झीलें-सेंट लॉरेंस

List II: (सं संबंधित क्षेत्र)
1. रूस
2. उत्तरी अमेरिका
3. जर्मनी और नीदरलैंड
4. पूर्वी यूरोप

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

30. किस आंतरिक जलमार्ग को 'विश्व का अत्यधिक प्रयोग में लाया जाने वाला जलमार्ग' कहा जाता है?
(A) मिसीसिपी जलमार्ग
(B) वोल्गा जलमार्ग
(C) डेन्यूब जलमार्ग
(D) राइन जलमार्ग

31. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. डेन्यूब नदी ब्लैक फॉरेस्ट से निकलकर पूर्व की ओर बहती है।
2. यह टारना सेविरिन तक नौकायन योग्य है।
3. इसके द्वारा गेहूँ, मक्का, इमारती लकड़ी और मशीनरी का निर्यात होता है।
4. यह पश्चिमी यूरोपीय भाग को अपनी सेवाएँ प्रदान करता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4 सभी

32. वोल्गा जलमार्ग किस सागर में मिलता है?
(A) काला सागर
(B) कैस्पियन सागर
(C) बाल्टिक सागर
(D) भूमध्य सागर

33. निम्नलिखित में से कौन सी झील 'वृहद् झीलें-सेंट लॉरेंस समुद्रीमार्ग' का हिस्सा नहीं है?
(A) सुपीरियर
(B) मिशिगन
(C) ह्यूरन
(D) ओंटारियो

34. मिसीसिपी-उनोहियो जलमार्ग संयुक्त राज्य अमेरिका के आंतरिक भागों को किस खाड़ी से जोड़ता है?
(A) मैक्सिको की खाड़ी
(B) हडसन की खाड़ी
(C) कैलिफोर्निया की खाड़ी
(D) अलास्का की खाड़ी

35. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): वायु परिवहन ने संपर्क क्रांति ला दी है।
कारण (R): वायु परिवहन द्वारा पर्वतों, हिमक्षेत्रों अथवा विषम मरुस्थलीय भूभागों पर विजय प्राप्त कर ली गई है और गम्यता में वृद्धि हुई है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

36. किस देश द्वारा मुख्य रूप से युद्धोत्तर अंतर्राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन का विकास किया गया?
(A) ब्रिटेन
(B) फ्रांस
(C) जर्मनी
(D) संयुक्त राज्य अमेरिका

37. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. विश्व के कुल वायुमार्गों के 60 प्रतिशत भाग का प्रयोग अकेला संयुक्त राज्य अमेरिका करता है।
2. न्यूयॉर्क, लंदन, पेरिस, एम्सटर्डम और शिकागो प्रमुख नोडीय बिंदु हैं।
3. अफ्रीका, रूस के एशियाई भाग और दक्षिण अमेरिका में वायु सेवाओं का अभाव है।
4. दक्षिणी गोलार्ध में 10-35 अक्षांशों के मध्य सघन जनसंख्या के कारण वायुसेवाएं उपलब्ध हैं।
5. सुपरसोनिक वायुयान लंदन और न्यूयॉर्क के बीच की दूरी साढ़े तीन घंटों में तय कर लेता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2, 3 और 5 सही हैं।
(B) केवल 2, 3, 4 और 5 सही हैं।
(C) केवल 1, 3 और 5 सही हैं।
(D) उपरोक्त सभी सही हैं।

38. 'बिग इंच' पाइपलाइन द्वारा क्या परिवहित किया जाता है?
(A) दूध
(B) पेट्रोलियम
(C) जल
(D) प्राकृतिक गैस

39. संचार की कौन सी विधि पश्चिम में अमेरिका के उपनिवेशवाद का साधन बनी?
(A) टेलीफोन
(B) रेडियो
(C) उपग्रह
(D) टेलीग्राफ

40. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिये:
List I: (भारतीय उपग्रह/प्रक्षेपण)
P. आर्यभट्ट
Q. भास्कर-1
R. रोहिणी
S. एप्पल

List II: (प्रक्षेपण वर्ष)
1. 1979
2. 1980
3. 1981
4. 1975

(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

63. उत्तरी प्रशांत समुद्री मार्ग पर वैंकूवर और याकोहामा को जोड़ने वाला वृहत् वृत्त मार्ग यात्रा की दूरी को कितना कम कर देता है?
(A) 2,480 कि.मी.
(B) 3,480 कि.मी.
(C) 1,480 कि.मी.
(D) 4,480 कि.मी.

64. दक्षिणी प्रशांत समुद्री मार्ग का उपयोग हांगकांग, फिलीपींस और इंडोनेशिया पहुँचने के लिए किस नहर से होकर किया जाता है?
(A) स्वेज नहर
(B) पनामा नहर
(C) कील नहर
(D) वोल्गा-डोन नहर

65. यूरोप में शेनगेन देशों की स्थिति किस प्रकार के नौ परिवहन के लिए उपयुक्त है?
(A) सामुद्रिक नौ परिवहन
(B) तटीय नौ परिवहन
(C) नदीय नौ परिवहन
(D) नहरीय नौ परिवहन

66. स्वेज नहर की औसत गहराई और लंबाई लगभग कितनी है?
(A) 160 कि.मी. लंबी, 11 से 15 मीटर गहरी
(B) 72 कि.मी. लंबी, 26 मीटर गहरी
(C) 200 कि.मी. लंबी, 10 मीटर गहरी
(D) 120 कि.मी. लंबी, 20 मीटर गहरी

67. स्वेज नहर को पार करने में जलयानों को औसतन कितना समय लगता है?
(A) 4-6 घंटे
(B) 18-20 घंटे
(C) 10-12 घंटे
(D) 24 घंटे से अधिक

68. निम्नलिखित में से कौन सी नहर 'नौ परिवहन नहर' का उदाहरण है जो पूर्वी एवं पश्चिमी विश्व के लिए प्रवेश द्वार का काम करती है?
(A) राइन-मेन-डेन्यूब नहर
(B) वोल्गा-डोन नहर
(C) सू नहर
(D) पनामा नहर

69. पनामा नहर के निर्माण से न्यूयॉर्क एवं सैनफ्रांसिस्को के मध्य की दूरी लगभग कितनी कम हो गई है?
(A) 10,000 कि.मी.
(B) 15,000 कि.मी.
(C) 13,000 कि.मी.
(D) 8,000 कि.मी.

70. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिये:
1. APPLE उपग्रह का प्रक्षेपण
2. आर्यभट्ट उपग्रह का प्रक्षेपण
3. भास्कर-1 उपग्रह का प्रक्षेपण
4. रोहिणी उपग्रह का प्रक्षेपण

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 4, 3, 2, 1
(C) 2, 3, 4, 1
(D) 3, 4, 1, 2

71. आंतरिक जलमार्गों के विकास को प्रभावित करने वाला कारक निम्नलिखित में से कौन सा नहीं है?
(A) नहरों की नौगम्यता, चौड़ाई और गहराई
(B) जल प्रवाह की निरंतरता
(C) उपयोग में लाई जाने वाली परिवहन प्रौद्योगिकी
(D) सड़क परिवहन से प्रतिस्पर्धा

72. राइन नदी अपने मुहाने (रोटरडैम) से लेकर स्विट्ज़रलैंड में बेसल तक कितनी लम्बाई में नौकायन योग्य है?
(A) 700 कि.मी.
(B) 500 कि.मी.
(C) 900 कि.मी.
(D) 1100 कि.मी.

73. रूस का कौन सा जलमार्ग 11,200 कि.मी. तक नौकायान की सुविधा प्रदान करता है?
(A) डेन्यूब जलमार्ग
(B) राइन जलमार्ग
(C) वोल्गा जलमार्ग
(D) ओब जलमार्ग

74. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिये:
List I: (परिवहन की विधा)
P. सड़क परिवहन
Q. रेल परिवहन
R. वायु परिवहन
S. जल परिवहन

List II: (उपयुक्तता)
1. स्थूल पदार्थों का लंबी दूरी तक परिवहन
2. छोटी दूरी एवं घर-घर सेवा
3. तीव्रतम साधन, मूल्यवान वस्तुओं के लिए
4. सबसे सस्ता, भारी माल के लिए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1

(C) पेरु
(D) चिली

53. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिये:
List I: (अफ्रीकी रेलमार्ग)
P. बेंगुएला रेलमार्ग
Q. तंजानिया रेलमार्ग
R. बोत्सवाना-जिम्बाब्वे रेलमार्ग
S. ब्लू ट्रेन
List II: (विशेषता/मार्ग)
1. जाम्बिया ताम्र पेटी से दार-ए-सलाम तक
2. केपटाउन से प्रेटोरिया तक
3. अंगोला से कटंगा-जाम्बिया ताँबे की पेटी तक
4. स्थलरुद्ध राज्यों को दक्षिण अफ्रीकी रेलतंत्र से जोड़ता है

(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-4, Q-2, R-3, S-1

54. निम्नलिखित में से कौन पारमहाद्वीपीय रेलमार्ग की सही परिभाषा है?
(A) वह रेलमार्ग जो एक ही देश के दो शहरों को जोड़ता है।
(B) वह रेलमार्ग जो पूरे महाद्वीप से गुज़रते हुए इसके दोनों छोरों को जोड़ता है।
(C) वह रेलमार्ग जो केवल औद्योगिक क्षेत्रों की सेवा करता है।
(D) वह रेलमार्ग जो दो देशों की राजधानियों को जोड़ता है।

55. पार-साइबेरियन रेलमार्ग पर स्थित 'इरकुटस्क' किस लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र है?
(A) कृषि केंद्र
(B) लौह-इस्पात केंद्र
(C) कोयला खनन केंद्र
(D) फर केंद्र

56. पार-कैनेडियन रेलमार्ग का निर्माण मूल रूप से किस उद्देश्य से किया गया था?
(A) ब्रिटिश कोलंबिया को राज्यों के संघ में सम्मिलित करने के उद्देश्य से।
(B) क्यूबेक-मॉंट्रियल औद्योगिक प्रदेश को प्रेयरी प्रदेश से जोड़ने के लिए।
(C) गेहूं और मांस का निर्यात करने के लिए।
(D) अटलांटिक तट को प्रशांत तट से जोड़ने के लिए।

57. निम्नलिखित में से कौन सा रेलमार्ग अटलांटिक तट पर स्थित न्यूयॉर्क को प्रशांत तट पर स्थित सान फ्रांसिस्को से मिलाता है?
(A) पार-कैनेडियन रेलमार्ग
(B) ओरिएंट एक्सप्रेस
(C) संघ और प्रशांत रेलमार्ग
(D) ऑस्ट्रेलियाई पारमहाद्वीपीय रेलमार्ग

58. ऑस्ट्रेलियाई पारमहाद्वीपीय रेलमार्ग पश्चिम से पूर्व की ओर किन दो तटीय शहरों को जोड़ता है?
(A) पर्थ और सिडनी
(B) डार्विन और एडिलेड
(C) मेलबोर्न और ब्रिसबेन
(D) कलगुर्ली और ब्रोकन हिल

59. ओरिएंट एक्सप्रेस द्वारा लंदन से इस्तांबूल तक की यात्रा का समय समुद्री मार्ग की तुलना में कितना कम हो गया है?
(A) 15 दिन की तुलना में 120 घंटे
(B) 8 दिन की तुलना में 72 घंटे
(C) 12 दिन की तुलना में 100 घंटे
(D) 10 दिन की तुलना में 96 घंटे

60. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. समुद्री जहाजों द्वारा महासागरों का मार्गों में रुपांतरण मनुष्य की पर्यावरण के साथ अनुकूलन की महत्त्वपूर्ण घटना है।
2. एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप तक स्थूल पदार्थों का लंबी दूरियों तक समुद्री परिवहन सबसे सस्ता पड़ता है।
3. आधुनिक यात्री जहाज़ राडार और बेतार के तार जैसी सुविधाओं से लैस होते हैं।
4. कंटेनरों के प्रयोग ने पत्तनों पर नौभार के निपटान को जटिल बना दिया है।
5. टैंकरों का उपयोग केवल शुष्क माल के परिवहन के लिए किया जाता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 4 सही हैं।
(B) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(C) केवल 3, 4 और 5 सही हैं।
(D) उपरोक्त सभी सही हैं।

61. उत्तमाशा अंतरीप समुद्री मार्ग के माध्यम से व्यापार में वृद्धि का मुख्य कारण क्या है?
(A) स्वेज नहर का बंद होना
(B) पनामा नहर का निर्माण
(C) सोना, हीरे, ताँबा, टिन जैसे समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों का होना
(D) इस मार्ग पर दूरी का कम होना

62. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): दक्षिणी अटलांटिक समुद्री मार्ग पर यातायात उत्तरी अटलांटिक मार्ग की तुलना में बहुत कम है।
कारण (R): दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका में विकास सीमित है, जनसंख्या कम है और दोनों महाद्वीपों में एक जैसे उत्पाद और संसाधन हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(B) लकड़ी और कागज
(C) गेहूँ और मांस
(D) पेट्रोलियम और रसायन

110. 'रैफ़ल टावर से साइने नदी का दृश्य' क्या प्रदर्शित करता है?
(A) नदी एक बाधा के रूप में
(B) नदी के किनारे पर्यटन
(C) नदी पर बने पुल
(D) नदी एक महत्वपूर्ण आंतरिक जलमार्ग के रूप में

111. स्वेज नहर मार्ग पर कौन सी एक ताजे पानी की नहर इस्माइलिया में मिलती है?
(A) नील नदी से निकली नहर
(B) पनामा नहर
(C) महानद
(D) स्वेज नहर की एक शाखा

112. आंतरिक जलमार्गों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) नदियाँ, नहरें, झीलें प्राचीन समय से ही महत्वपूर्ण जलमार्ग रहे हैं।
(B) वर्तमान समय में रेलमार्गों से प्रतिस्पर्धा के कारण इनका महत्व कम हो गया है।
(C) नावें तथा स्टीमर यात्रियों तथा माल वाहन हेतु उपयोग किए जाते हैं।
(D) सिंचाई में जल के उपयोग से भी नदी मार्गों पर प्रभाव पड़ा है।

113. निम्नलिखित में से कौन से कारक वायु परिवहन के विकास के लिए आवश्यक हैं?
(A) केवल सस्ते हवाई जहाज
(B) विमानशाला, भूमि पर उतारने, ईंधन तथा रख-रखाव की सुविधाएँ
(C) केवल प्रशिक्षित पायलट
(D) केवल बड़े शहरों की उपस्थिति

114. संचार के साधनों के विकास को सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिये:
1. सेलफोन का ग्रामीण संपर्क हेतु प्रयोग
2. टेलीग्राफ का उपनिवेशवाद में प्रयोग
3. इंटरनेट का उदय
4. उपग्रह संचार से वैश्विक ग्राम की संकल्पना
(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 3, 1, 4
(D) 3, 1, 2, 4

115. असैनिक क्षेत्रों जैसे नगरीय नियोजन, प्रदूषण नियंत्रण, वन विनाश का पता लगाने के लिए किन आधुनिक सूचना स्रोतों का उपयोग किया जा सकता है?
(A) समाचार पत्र और पत्रिकाएं
(B) स्थलाकृतिक मानचित्र
(C) उपग्रह चित्रों और सूचनाओं
(D) पुराने अभिलेख और दस्तावेज

116. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. प्रारंभिक अवस्था में परिवहन और संचार के साधन एक ही थे।
2. आज परिवहन और संचार ने सुस्पष्ट और विशेषीकृत स्वरूप प्राप्त कर लिया है।
3. परिवहन योजक और वाहक उपलब्ध कराता है।
4. व्यापार केवल संचार पर निर्भर करता है।
5. जीवन का स्तर परिवहन और संचार पर निर्भर नहीं करता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(B) केवल 2, 3 और 4 सही हैं।
(C) केवल 1, 4 और 5 सही हैं।
(D) उपरोक्त सभी सही हैं।

117. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): उत्तरी अमेरिका में सर्वाधिक विस्तृत रेलमार्ग तंत्र है।
कारण (R): उत्तरी अमेरिका में रेलमार्गों का प्रयोग अधिकतर लंबी दूरी के स्थूल पदार्थों जैसे अयस्क, अनाज, इमारती लकड़ी के परिवहन हेतु होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

118. ओरिएंट एक्सप्रेस रेलमार्ग कहाँ से कहाँ तक जाता है?
(A) लंदन से मॉस्को
(B) पेरिस से इस्तांबूल
(C) बर्लिन से रोम
(D) न्यूयॉर्क से शिकागो

119. दक्षिणी प्रशांत समुद्री मार्ग पर स्थित कौन सा पत्तन एक महत्वपूर्ण मध्यवर्ती पत्तन है?
(A) सिंगापुर
(B) केप टाउन
(C) पनामा
(D) होनोलूलू

120. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिये:
List I: (जलमार्ग)
P. स्वेज नहर
Q. पनामा नहर
R. राइन जलमार्ग

(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

75. उत्तरी अमेरिका के वृहद् झीलें-सेंट लारेंस समुद्रीमार्ग पर स्थित मुख्य पत्तन कौन से हैं?
(A) शिकागो और न्यूयॉर्क
(B) मॉंट्रियल और क्यूबेक
(C) टोरंटो और ओटावा
(D) डुलुथ और बुफालो

76. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. वायु परिवहन, परिवहन का तीव्रतम साधन है।
2. यह अत्यंत सस्ता साधन है।
3. लंबी दूरी की यात्रा के लिए यात्री इसे वरीयता देते हैं।
4. इसका कोई सामरिक महत्त्व नहीं होता है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4 सभी

77. वर्तमान समय में विश्व में कोई भी स्थान अधिकतम कितनी देर की दूरी पर है?
(A) 24 घंटे
(B) 48 घंटे
(C) 35 घंटे
(D) 60 घंटे

78. उत्तरी गोलार्ध में अंतर-महाद्वीपीय वायुमार्गों की एक सुस्पष्ट पट्टी किस दिशा में है?
(A) उत्तर-दक्षिण
(B) विकर्णीय
(C) वृत्ताकार
(D) पूर्व-पश्चिम

79. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): दक्षिणी गोलार्ध में सीमित वायुसेवाएँ उपलब्ध हैं।
कारण (R): दक्षिणी गोलार्ध में विरल जनसंख्या, सीमित स्थलखंड और आर्थिक विकास के कारण वायुसेवाओं का विकास कम हुआ है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

80. न्यूज़ीलैंड में फार्मों से फैक्ट्रियों तक दूध किस माध्यम से भेजा जाता है?
(A) टैंकरों द्वारा
(B) पाइपलाइनों द्वारा
(C) रेलगाड़ी द्वारा
(D) वायुयान द्वारा

81. प्रस्तावित ईरान-भारत वाया पाकिस्तान अंतर्राष्ट्रीय पाइपलाइन किस उत्पाद के परिवहन के लिए है?
(A) तरल पेट्रोलियम गैस
(B) तेल और प्राकृतिक गैस
(C) जल
(D) दूध

82. संचार के विकास के संदर्भ में निम्नलिखित को सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिये:
1. टेलीग्राफ
2. ऑप्टिक फाइबर
3. टेलीफोन
4. इंटरनेट
(A) 1, 3, 2, 4
(B) 3, 1, 4, 2
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 4, 2, 1, 3

83. 1990 के दशक में दूरसंचार का कंप्यूटर के साथ विलय होने के परिणामस्वरुप बने समन्वित नेटवर्क को क्या नाम दिया गया?
(A) टेलीग्राफ
(B) साइबर स्पेस
(C) इंटरनेट
(D) वर्ल्ड वाइड वेब

84. उपग्रह संचार के द्वारा 5000 कि.मी. की दूरी तक संचार लागत किसके बराबर होती है?
(A) 1000 कि.मी. की दूरी तक लगने वाली लागत के
(B) 2500 कि.मी. की दूरी तक लगने वाली लागत के
(C) दूरी के साथ लगातार बढ़ती है
(D) 500 कि.मी. की दूरी तक लगने वाली लागत के

85. निम्नलिखित में से कौन सी एक आधुनिक संचार प्रणाली है जिसने 'वैश्विक ग्राम' की संकल्पना को साकार किया है?
(A) टेलीग्राफ
(B) फैक्स
(C) इंटरनेट और उपग्रह संचार
(D) रेडियो

86. 'परिवहन एक संगठित सेवा उद्योग है', इस कथन से क्या तात्पर्य है?
(A) यह केवल लाभ कमाने के लिए संचालित होता है।
(B) यह समाज की आधारभूत आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए रचा गया है।
(C) इसका स्वामित्व केवल सरकार के पास होता है।
(D) यह केवल वस्तुओं का परिवहन करता है, व्यक्तियों का

नहीं।

87. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?
(A) सड़क परिवहन - कम दूरी के लिए सस्ता
(B) रेल परिवहन - लंबी दूरी तक स्थूल पदार्थ
(C) वायु परिवहन - उच्च मूल्य वाली वस्तुएँ
(D) जल परिवहन - शीघ्र पहुँच के लिए

88. प्रथम सार्वजनिक रेलमार्ग 1825 में किन दो स्थानों के मध्य प्रारंभ हुआ?
(A) स्टॉकटन और डार्लिंगटन
(B) लंदन और बर्मिंघम
(C) मैनचेस्टर और लिवरपूल
(D) पेरिस और ल्योन

89. तरल पदार्थों जैसे- खनिज तेल, जल, अवमल और नाली मल का परिवहन किसके द्वारा किया जाता है?
(A) टैंकर ट्रकों द्वारा
(B) रेल टैंकरों द्वारा
(C) पाइपलाइनों द्वारा
(D) बजरा द्वारा

90. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिये:
List I: (महामार्ग)
P. ट्रांस-कनाडियन महामार्ग
Q. अलास्का राजमार्ग
R. अफ्रीकी महामार्ग (उत्तर-दक्षिण)
S. भारतीय स्वर्णिम चतुर्भुज
List II: (जोड़ने वाले स्थान)
1. दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता
2. कैरो, केपटाउन
3. एडमंटन, एंकोरेज
4. वैंकूवर, सेंट जॉन नगर
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

91. रेलवे गेज के संबंध में 'मानक लाइन' की चौड़ाई कितनी होती है?
(A) 1.5 मीटर से अधिक
(B) 1 मीटर
(C) 1.676 मीटर
(D) 1.44 मीटर

92. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. एशिया में जापान, चीन और भारत के सघन बसे हुए क्षेत्रों में रेलमार्गों का सघनतम घनत्व पाया जाता है।
2. एशिया के विस्तृत मरुस्थलों और विरल जनसंख्या के प्रदेशों में रेल सुविधाओं का प्रचुर विकास हुआ है।
3. अफ्रीका में सोने, हीरे और ताँबा खनन क्रियाकलापों के कारण रेलमार्गों का विकास हुआ है।
4. दक्षिण अफ्रीका में महाद्वीप के कुल रेलमार्ग का लगभग 18,000 कि.मी. है।
5. अल्जीरिया, सेनेगल, नाइजीरिया में रेलमार्ग पत्तन नगरों को आंतरिक केंद्रों से नहीं जोड़ते हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 3 और 4 सही हैं।
(B) केवल 2, 4 और 5 सही हैं।
(C) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(D) उपरोक्त सभी सही हैं।

93. एंडीज पर्वतों के पार 3900 मीटर की ऊँचाई पर स्थित उसप्लाटा दर्रे से गुजरने वाला पार-महाद्वीपीय रेलमार्ग किन दो शहरों को जोड़ता है?
(A) रियो डि जेनेरो और लीमा
(B) सैंटियागो और मोंटेवीडियो
(C) ब्यूनसआयर्स और वालपैराइजो
(D) ला पाज़ और काराकास

94. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): जल परिवहन सबसे सस्ता परिवहन साधन है।
कारण (R): जल परिवहन में जल का घर्षण स्थल की अपेक्षा बहुत कम होता है और इसमें मार्गों का निर्माण नहीं करना पड़ता।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

95. पनामा और सिडनी के बीच तय की गई दूरी लगभग कितनी है?
(A) 12,000 कि.मी.
(B) 15,000 कि.मी.
(C) 10,000 कि.मी.
(D) 18,000 कि.मी.

96. स्वेज नहर के दोनों सिरों पर स्थित पत्तन कौन से हैं?
(A) अदन और कोलंबो
(B) पोर्ट सईद और पोर्ट स्वेज
(C) पनामा नगर और कोलोन
(D) लिवरपूल और न्यूयॉर्क

97. किस नहर के संदर्भ में यह कहा गया है कि इसका आर्थिक महत्त्व स्वेज नहर की अपेक्षा कम है, फिर भी दक्षिणी अमेरिका की अर्थव्यवस्था में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है?
(A) कील नहर
(B) पनामा नहर
(C) सू नहर

(D) वोल्गा-डोन नहर

98. जर्मनी का 'डसलडोर्फ' पत्तन किस नदी पर स्थित है?
(A) राइन नदी
(B) डेन्यूब नदी
(C) एल्बे नदी
(D) ओडर नदी

99. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. सुपरसोनिक वायुयान ध्वनि की गति से तेज उड़ते हैं।
2. यह लंदन और न्यूयॉर्क के बीच की दूरी साढ़े तीन घंटे में तय कर लेते हैं।
3. यह एक बहुत ही सस्ता परिवहन का साधन है।
4. इसका प्रयोग मुख्य रूप से माल परिवहन के लिए होता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4 सभी

100. संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रति टन-कि.मी. कुल भार का कितना प्रतिशत भाग पाइपलाइनों द्वारा ले जाया जाता है?
(A) 10 प्रतिशत
(B) 25 प्रतिशत
(C) 33 प्रतिशत
(D) 17 प्रतिशत

101. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
कथन 1: विकासशील देशों में उपग्रहों द्वारा संभव बनाया गया सेलफोन का प्रयोग ग्रामीण संपर्क के लिए महत्त्वपूर्ण है।
कथन 2: सेलफोन के लिए तार बिछाने की आवश्यकता नहीं होती, जिससे दूरदराज के क्षेत्रों में संपर्क स्थापित करना आसान हो जाता है।
(A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, लेकिन कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(D) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

102. आप्टिक फाइबर तारों का प्रयोग करने का मुख्य लाभ क्या है?
(A) यह तांबे के तारों से काफी सस्ता होता है।
(B) आँकड़ों का तीव्र एवं त्रुटिहीन संप्रेषण संभव।
(C) इसे स्थापित एवं रख-रखाव करना आसान है।
(D) यह केवल विशिष्ट ध्वनि संकेतों को प्रेषित करता है।

103. 'साइबर स्पेस' लोगों के समकालीन आर्थिक और सामाजिक स्पेस को किन माध्यमों से विस्तृत करेगा?
(A) केवल ई-मेल और ई-वाणिज्य की सुविधा।
(B) केवल ई-शिक्षा और ई-प्रशासन की सेवाएँ।
(C) केवल टेलीविजन और रेडियो प्रसारण सेवा।
(D) ई-शिक्षा, वाणिज्य, प्रशासन और मेल सेवाएँ।

104. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिये:
List I: (परिवहन से संबंधित शब्द)
P. परिवहन जाल
Q. महामार्ग
R. यातायात प्रवाह
S. नोडीय बिंदु
List II: (अर्थ)
1. सड़कों पर यातायात की मात्रा
2. वह स्थान जहाँ मार्ग आकर मिलते हैं
3. परस्पर जुड़े मार्गों का प्रारूप
4. अबाधित यातायात के लिए बनी चौड़ी सड़कें
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

105. भारी वर्षा एवं बाढ़ के समय कौन सा परिवहन का साधन सबसे कम प्रभावित होता है और एक प्रभावी समाधान है?
(A) कच्ची सड़कें
(B) पक्की सड़कें
(C) ऊँचे भराव पर बने रेल मार्ग
(D) नौका परिवहन

106. नगरों की सड़कों पर यातायात संकुलन के 'शीर्ष' (उच्चबिंदु) और 'गर्त' (निम्नबिंदु) समय से क्या तात्पर्य है?
(A) काम के समय से पहले और बाद का समय
(B) दिन और रात का समय
(C) सप्ताह के अंत और सप्ताह के दिनों का समय
(D) त्योहारों और सामान्य दिनों का समय

107. अफ्रीका में एक महामार्ग जो उत्तर में अल्जियर्स को दक्षिण में गुयाना के कोनाक्री से जोड़ता है, किस दिशा में फैला हुआ है?
(A) पूर्व-पश्चिम
(B) उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम
(C) उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व
(D) उत्तर-दक्षिण

108. निम्नलिखित में से कौन सी एक पार-साइबेरियन रेलमार्ग की शाखा (योजक मार्ग) नहीं है?
(A) ओडेसा (यूक्रेन)
(B) इस्तांबूल (तुर्की)
(C) ताशकंद (उज़्बेकिस्तान)
(D) उलन बटोर (मंगोलिया)

109. विनिपेग से थंडरखाड़ी तक का संवृत मार्ग, जो पार-कैनेडियन रेलमार्ग का हिस्सा है, किस वस्तु के निर्यात के लिए विश्व के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण जलमार्गों में से एक है?
(A) कोयला और लौह अयस्क

(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

41. साइबर स्पेस को परिभाषित करने वाला सबसे उपयुक्त वर्णन कौन सा है?
(A) कार्यालयों में उपलब्ध स्थानीय नेटवर्क।
(B) डिजिटल सूचना संग्रहीत करने का भौतिक स्थान।
(C) इंटरनेट द्वारा आवृत कंप्यूटरीकृत स्पेस।
(D) उपग्रहों द्वारा प्रदान की जाने वाली टेलीविजन सेवा।

42. 1995 से 2023 तक इंटरनेट प्रयोक्ताओं की संख्या में वृद्धि के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) प्रयोक्ताओं की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।
(B) प्रयोक्ताओं की संख्या स्थिर रही है।
(C) प्रयोक्ताओं की संख्या में कमी आई है।
(D) अधिकांश प्रयोक्ता केवल संयुक्त राज्य अमेरिका में हैं।

43. परिवहन जाल किसे कहते हैं?
(A) एक ही प्रकार के परिवहन साधनों का समूह
(B) केवल राष्ट्रीय राजमार्गों का नेटवर्क
(C) दो स्थानों के बीच सबसे छोटा मार्ग
(D) अनेक स्थान जिन्हें परस्पर मार्गों की श्रेणियों द्वारा जोड़ दिए जाने पर बना प्रारूप

44. निम्नलिखित में से कौन सी सेवा या सुविधा परिवहन के अंतर्गत नहीं आती है?
(A) व्यक्तियों और वस्तुओं का वहन
(B) विभिन्न प्रकार के विचारों का आदान-प्रदान
(C) मनुष्यों, पशुओं तथा गाड़ियों का प्रयोग
(D) स्थल, जल एवं वायु में गमनागमन

45. ऐतिहासिक रूप से परिवहन में क्रांति लाने वाले आविष्कारों को उनके सही क्रम में व्यवस्थित कीजिये:
1. अंतर्दहन इंजन
2. पहिया
3. भाप का इंजन
(A) 2, 3, 1
(B) 1, 2, 3
(C) 3, 1, 2
(D) 2, 1, 3

46. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. महामार्गों का घनत्व उत्तरी अमेरिका में उच्च है।
2. प्रत्येक स्थान महामार्ग से 20 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।
3. ट्रांस-कनाडियन महामार्ग एडमंटन को एंकोरेज से जोड़ता है।
4. पान-अमेरिकन महामार्ग का निर्माण पूरा हो चुका है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4 सभी

47. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): रूस में महामार्ग उतने महत्त्वपूर्ण नहीं हैं जितने रेलमार्ग।
कारण (R): रूस का भौगोलिक क्षेत्रफल अत्यधिक विस्तृत है, जो लंबी दूरी के परिवहन के लिए रेलमार्गों को अधिक उपयुक्त बनाता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

48. भारत में 'स्वर्णिम चतुर्भुज' किन प्रमुख महानगरों को जोड़ता है?
(A) दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, कोलकाता
(B) दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता
(C) दिल्ली, जयपुर, अहमदाबाद, मुंबई
(D) कोलकाता, चेन्नई, हैदराबाद, पुणे

49. सीमावर्ती सड़कों का मुख्य उद्देश्य क्या होता है?
(A) केवल स्थानीय पर्यटन को बढ़ावा देना।
(B) सुदूर क्षेत्रों को जोड़ना और सुरक्षा देना।
(C) केवल बड़े महानगरों को आपस में जोड़ना।
(D) ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि उत्पादों का परिवहन।

50. दैनिक आवागमन की रेलें (Commuter trains) किन देशों में अत्यधिक लोकप्रिय हैं?
(A) ब्रिटेन, सं. रा. अमेरिका, जापान और भारत
(B) ब्राजील, अर्जेंटीना, चिली और पेरू
(C) ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड और इंडोनेशिया
(D) रूस, चीन, मंगोलिया और कजाकिस्तान

51. यूरो टनल ग्रुप द्वारा प्रचालित सुरंग मार्ग किन दो शहरों को जोड़ता है?
(A) लंदन और बर्लिन
(B) पेरिस और रोम
(C) लंदन और पेरिस
(D) मैड्रिड और लिस्बन

52. निम्नलिखित में से कौन सा देश दक्षिणी अमेरिका में एक मात्र ऐसा देश है जहाँ महत्त्वपूर्ण लंबाई के रेलमार्ग हैं जो तटीय केंद्रों को आंतरिक खनन स्थलों से जोड़ते हैं?
(A) ब्राजील
(B) अर्जेंटीना

S. वोल्गा जलमार्ग

List II: (जोड़ने वाले सागर/क्षेत्र)

1. अटलांटिक - प्रशांत महासागर
2. भूमध्य सागर - लाल सागर
3. कैस्पियन सागर
4. उत्तरी अटलांटिक समुद्री मार्ग

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

121. क्विंघाई-तिब्बत ट्रेन की सबसे ऊँची बिंदु समुद्र तल से कितनी ऊँचाई पर है?
(A) 4,000 मीटर
(B) 1,956 मीटर
(C) 5,072 मीटर
(D) 960 मीटर

122. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. ऑस्ट्रेलिया का राष्ट्रीय रेलमार्ग पर्थ से सिडनी तक जाता है।
2. यह महाद्वीप के उत्तरी भाग से होकर गुजरता है।
3. न्यूज़ीलैंड में रेलमार्ग मुख्यतः उत्तरी द्वीप में हैं।
4. ये रेलमार्ग वहां के औद्योगिक क्षेत्रों को सेवा प्रदान करते हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4 सभी

123. जल परिवहन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा असत्य है?
(A) यह परिवहन बहुत सस्ता पड़ता है।
(B) जल परिवहन की ऊर्जा लागत अपेक्षाकृत कम होती है।
(C) इसमें विभिन्न आकार के जहाज़ चल सकते हैं।
(D) इसमें दोनों छोरों पर पत्तन सुविधाओं की कोई आवश्यकता नहीं होती।

124. 'बिग इंच' पाइपलाइन अमेरिका के किस क्षेत्र से तेल उत्तर-पूर्वी राज्यों में ले जाती है?
(A) अलास्का के उत्तरी ढलान से
(B) मैक्सिको की खाड़ी में स्थित तेल के कुओं से
(C) कैलिफोर्निया के तट से
(D) टेक्सास के आंतरिक क्षेत्रों से

125. अमेरिकी टेलीग्राफ और टेलीफोन कंपनी का किस उद्योग पर एकाधिकार था?
(A) संयुक्त राज्य अमेरिका के रेलमार्ग उद्योग पर
(B) विश्व के उपग्रह संचार पर
(C) संयुक्त राज्य अमेरिका के टेलीफोन उद्योग पर
(D) भारत के mobile संचार पर

126. भारत ने अपना पहला उपग्रह 'आर्यभट्ट' कब प्रक्षेपित किया?
(A) 19 जून 1981
(B) 1980
(C) 1979
(D) 19 अप्रैल 1975

127. निम्नलिखित को उनके निर्माण या प्रारंभ के सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिये:
1. पार-कैनेडियन रेलमार्ग का निर्माण
2. स्वेज नहर का निर्माण
3. प्रथम सार्वजनिक रेलमार्ग का प्रारंभ
4. पनामा नहर का निर्माण

(A) 3, 2, 1, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 3, 1, 2, 4

128. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. पाइपलाइनों द्वारा जल, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस जैसे तरल एवं गैसीय पदार्थों का अबाधित परिवहन होता है।
2. न्यूज़ीलैंड में फार्मों से फैक्ट्रियों तक दूध पाइपलाइनों द्वारा भेजा जाता है।
3. 'बिग इंच' एक प्रसिद्ध पाइपलाइन है जो मैक्सिको की खाड़ी से तेल उत्तर-पूर्वी राज्यों में ले जाती है।
4. पाइपलाइनों का प्रयोग केवल तरल पदार्थों के लिए होता है, गैसीय पदार्थों के लिए नहीं।
5. प्रस्तावित ईरान-भारत पाइपलाइन विश्व की सबसे छोटी पाइपलाइन होगी।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(B) केवल 2, 4 और 5 सही हैं।
(C) केवल 1, 3 और 4 सही हैं।
(D) उपरोक्त सभी सही हैं।

129. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): पिछले कुछ वर्षों में सड़कों पर यातायात में नाटकीय वृद्धि हुई है।
कारण (R): जब सड़क तंत्र यातायात की ज़रूरतों के अनुरूप विकसित नहीं हो पाता तो सड़कों पर संकुलन बढ़ जाता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

ANSWERS

1. (B) पाइपलाइन
पाइपलाइन परिवहन का एक आधुनिक साधन है जिसका उपयोग पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस और पानी जैसे तरल एवं गैसीय पदार्थों के लंबी दूरी तक सुगम संचलन के लिए किया जाता है। यह परिवहन का एक अबाधित माध्यम है, जो पर्यावरण के अनुकूल है। इसके माध्यम से संसाधनों का वितरण किफायती और सुरक्षित होता है, जिससे धरातल पर किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं होती है।

2. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
वायु परिवहन सबसे तीव्रगामी साधन है जो समय की बचत करता है, हालांकि यह अन्य साधनों की तुलना में अधिक खर्चीला है। उच्च मूल्य वाली, हल्की और जल्दी खराब होने वाली वस्तुओं के लिए यह सर्वोत्तम विकल्प माना जाता है। विषम भौगोलिक परिस्थितियों जैसे पहाड़ों और मरुस्थलों में इसकी सुगम पहुँच इसे सामरिक और वाणिज्यिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावी संचार माध्यम बनाती है।

3. (C) अठारहवीं शताब्दी
अठारहवीं शताब्दी में भाप के इंजन के आविष्कार ने परिवहन की दुनिया में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया। पहिए के आविष्कार के बाद यह सबसे महत्वपूर्ण मील का पत्थर था जिसने भारी माल और यात्रियों को लंबी दूरी तक कम समय में पहुँचाना संभव बनाया। इस खोज ने औद्योगिक क्रांति को गति दी और वैश्विक स्तर पर व्यापारिक एवं सामाजिक संबंधों को व्यापक रूप से सुदृढ़ किया।

4. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में बोझा ढोने के लिए पशुओं का चयन वहाँ की जलवायु और स्थलाकृति पर निर्भर करता है। पश्चिमी देशों में घोड़ों, हिमाच्छादित मैदानों में कुत्तों और रेंडियर, पर्वतीय प्रदेशों में खच्चरों और मरुस्थलीय क्षेत्रों में ऊँटों का उपयोग प्रमुखता से किया जाता है। ये पशु दुर्गम स्थानों पर परिवहन की सुविधा प्रदान कर स्थानीय अर्थव्यवस्था और दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं।

5. (C) कच्ची सड़कें सभी ऋतुओं में प्रभावी व प्रयोग योग्य होती हैं।
सड़क परिवहन छोटी दूरियों के लिए आर्थिक रूप से लाभदायक है और घर-घर तक सेवाएँ पहुँचाने की क्षमता रखता है। यह कृषि और पर्यटन को बढ़ावा देने में सहायक है। हालाँकि, कच्ची सड़कें सभी मौसमों में प्रभावी नहीं होतीं क्योंकि भारी वर्षा के दौरान वे अनुपयोगी हो जाती हैं। पक्की सड़कों की तुलना में कच्ची सड़कें भारी माल के वहन और तीव्र गति के लिए अनुपयुक्त होती हैं।

6. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
यूरोप में परिवहन का एक अत्यंत सुविकसित और घना जाल पाया जाता है जिसमें महामार्ग, रेलमार्ग और जलमार्ग शामिल हैं। यहाँ वाहनों की विशाल संख्या और सुव्यवस्थित सड़कों के कारण महामार्गों और अन्य साधनों के बीच तीव्र प्रतिस्पर्धा बनी रहती है। यद्यपि महामार्ग सघन हैं, लेकिन रेलमार्गों और जलमार्गों की उच्च दक्षता और व्यापक कवरेज के कारण यह प्रतिद्वंद्विता एक स्वाभाविक प्रक्रिया बन गई है।

7. (D) उत्तरी अमेरिका
उत्तरी अमेरिका महाद्वीप में विश्व की कुल मोटर वाहन चलाने योग्य सड़कों की लंबाई का लगभग तैंतीस प्रतिशत भाग पाया जाता है। यहाँ महामार्गों का सघन जाल और उच्च वाहन घनत्व देखने को मिलता है। विकसित बुनियादी ढाँचा और विशाल भौगोलिक विस्तार ने इस क्षेत्र में सड़क परिवहन को अत्यंत महत्वपूर्ण बना दिया है, जहाँ प्रत्येक प्रमुख नगर और औद्योगिक केंद्र इन मार्गों द्वारा जुड़े हैं।

8. (D) 1, 2, 3 और 4 सभी
महामार्ग दूरस्थ स्थानों को जोड़ने वाली पक्की और चौड़ी सड़कें होती हैं जिन्हें अबाधित यातायात के लिए डिज़ाइन किया जाता है। ये सड़कें सामान्यतः अस्सी मीटर चौड़ी होती हैं और इनमें पुलों एवं फ्लाईओवरों का व्यापक उपयोग होता है। विकसित राष्ट्रों में प्रत्येक प्रमुख नगर और बंदरगाह इन मार्गों द्वारा जुड़े होते हैं, जो देश के आर्थिक विकास और त्वरित गतिशीलता को सुनिश्चित करते हैं।

9. (C) वैंकूवर और सेंट जॉन नगर
ट्रांस-कनाडियन महामार्ग कनाडा के पश्चिमी तट पर स्थित वैंकूवर को पूर्वी तट पर स्थित सेंट जॉन नगर से जोड़ता है। यह महाद्वीप के एक छोर से दूसरे छोर तक विस्तृत एक महत्वपूर्ण सड़क मार्ग है। यह मार्ग देश के विभिन्न प्रांतों के बीच वाणिज्यिक गतिविधियों और यात्री परिवहन को सुगम बनाता है, जिससे राष्ट्रीय एकता और आर्थिक विकास को निरंतर बल मिलता रहता है।

10. (A) संकीर्ण लाइन
रेलमार्ग की पटरियों के बीच की दूरी को गेज कहा जाता है, जिसमें मुख्य रूप से बड़ी लाइन, मानक लाइन और मीटर लाइन शामिल होती हैं। मानक लाइन का उपयोग विशेष रूप से ब्रिटेन जैसे देशों में किया जाता है। संकीर्ण लाइन को सामान्यतः छोटे या पहाड़ी क्षेत्रों तक सीमित माना जाता है। विश्व स्तर पर परिवहन प्रणालियों के मानकीकरण और दक्षता के लिए इन श्रेणियों का वर्गीकरण किया गया है।

(D) 0.65 कि.मी. प्रतिवर्ग कि.मी.

143. चीन में एक नवीन महामार्ग तिब्बती क्षेत्र में चेगडू को किससे जोड़ता है?
(A) ल्हासा
(B) शंघाई
(C) बीजिंग
(D) ग्वांगजाओ

144. निम्नलिखित में से किस देश के रेलमार्ग मुख्यतः कृषि क्षेत्रों को अपनी सेवाएँ प्रदान करते हैं?
(A) ऑस्ट्रेलिया
(B) न्यूज़ीलैंड
(C) कनाडा
(D) ब्राजील

145. अफ्रीका का बेंगुएला रेलमार्ग अंगोला से होकर किस खनिज पेटी तक जाता है?
(A) किम्बरले हीरा पेटी
(B) कटंगा-जाम्बिया ताँबा पेटी
(C) विटवाटर्सरैंड स्वर्ण पेटी
(D) नाइजर डेल्टा तेल पेटी

146. ओरिएंट एक्सप्रेस द्वारा निर्यात होने वाले प्रमुख पदार्थ क्या हैं?
(A) पनीर, सुअर का मांस, जई, शराब, फल
(B) गेहूँ, मक्का, चावल
(C) सोना, हीरा, तांबा
(D) पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस

147. पनामा नहर में स्थित जलबंधक तंत्र (lock system) का क्या कार्य है?
(A) नहर की गति को नियंत्रित करना
(B) नहर में पानी के स्तर को बनाए रखना
(C) जलयानों को विभिन्न ऊँचाई की समुद्री सतह पर ऊपर-नीचे करना
(D) जलयानों से कर वसूलना

148. राइन जलमार्ग स्विट्ज़रलैंड, जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम तथा नीदरलैंड के औद्योगिक क्षेत्रों को किस समुद्री मार्ग से जोड़ता है?
(A) भूमध्यसागरीय समुद्री मार्ग
(B) केप ऑफ गुड होप मार्ग
(C) उत्तरी प्रशांत समुद्री मार्ग
(D) उत्तरी अटलांटिक समुद्री मार्ग

149. 2023 तक अनुमानित इंटरनेट प्रयोक्ताओं की संख्या कितनी थी?
(A) 5 करोड़
(B) 40 करोड़
(C) 540 करोड़
(D) 200 करोड़

150. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): आधुनिक संचार प्रणालियों ने परिवहन से कहीं ज्यादा 'वैश्विक ग्राम' की संकल्पना को साकार किया है।
कारण (R): इंटरनेट जैसी प्रणालियाँ समय और स्थान की सीमाओं को लांघते हुए अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचती हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
रेलवे परिवहन का विकास 19वीं शताब्दी के औद्योगिक क्रांति का एक प्रमुख उत्प्रेरक और परिणाम दोनों था। इसने न केवल कच्चे माल को कारखानों तक और तैयार माल को बाजारों तक पहुँचाने की प्रक्रिया को अभूतपूर्व रूप से तेज किया, बल्कि महाद्वीपीय विस्तार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जैसा कि उत्तरी अमेरिका में पश्चिम की ओर हुए विस्तार में देखा गया। रेलवे के वैश्विक प्रसार के साथ एक बड़ी चुनौती विभिन्न 'रेल गेज' (पटरियों के बीच की चौड़ाई) का अस्तित्व रही है। जब विभिन्न गेज की लाइनें मिलती हैं, तो 'ब्रेक-ऑफ-गेज' की समस्या उत्पन्न होती है, जिससे माल और यात्रियों को एक ट्रेन से दूसरी ट्रेन में स्थानांतरित करना आवश्यक हो जाता है। यह प्रक्रिया न केवल समय लेने वाली होती है बल्कि परिवहन लागत को भी बढ़ाती है और रसद संबंधी जटिलताएँ पैदा करती है। इस चुनौती से निपटने के लिए, कई क्षेत्रों, विशेष रूप से यूरोपीय संघ में, मानकीकरण के प्रयास किए गए हैं ताकि एक एकीकृत, सीमा-पार रेलवे नेटवर्क का निर्माण हो सके। आधुनिक युग में, रेलवे को सड़क परिवहन से माल ढुलाई में और हवाई परिवहन से लंबी दूरी की यात्री यात्रा में कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है, जिसके जवाब में उच्च गति वाली ट्रेनों का विकास एक प्रमुख रणनीति के रूप में उभरा है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. स्रोत के अनुसार, 19वीं शताब्दी में रेलवे परिवहन की मुख्य भूमिका क्या थी?
(A) यात्रियों के सुगम आवागमन और परिवहन की पारंपरिक व्यवस्था को बनाए रखना
(B) औद्योगिक क्रांति को गति देना और महाद्वीपीय विस्तार में सहायता करना
(C) कृषि उत्पादों के स्थानीय वितरण और क्षेत्रीय व्यापार को सुगम बनाना
(D) हवाई और सड़क परिवहन प्रणालियों के साथ सीधे तौर पर प्रतिस्पर्धा करना

चुनौती इनकी अत्यधिक उच्च प्रारंभिक पूँजी निवेश लागत है। एक पाइपलाइन नेटवर्क का निर्माण, विशेष रुप से लंबी दूरी या चुनौतीपूर्ण भूभाग पर, एक बहुत महंगा उपक्रम है। इसके अलावा, ये मार्ग के मामले में पूरी तरह से अनम्य होती हैं; एक बार बन जाने के बाद, मार्ग को बदला नहीं जा सकता। रणनीतिक रूप से, पाइपलाइनें किसी देश की ऊर्जा सुरक्षा के लिए जीवन रेखा होती हैं, लेकिन वे भू-राजनीतिक तनावों और तोड़फोड़ के प्रति संवेदनशील भी हो सकती हैं। प्रौद्योगिकी में प्रगति ने पाइपलाइनों के उपयोग का विस्तार किया है। 'स्लरी' पाइपलाइनों के माध्यम से, कोयले या लौह अयस्क जैसे ठोस पदार्थों को पानी के साथ मिलाकर एक तरल घोल के रूप में ले जाया जा सकता है। यह पाइपलाइन परिवहन की बहुमुखी प्रतिभा को दर्शाता है, जो इसे आधुनिक औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं का एक अनिवार्य घटक बनाता है, भले ही यह आम जनता के लिए काफी हद तक अदृश्य रहता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. पाइपलाइन परिवहन का एक मुख्य लाभ क्या है?
(A) मार्ग में अत्यधिक लचीलापन
(B) उच्च परिचालन विश्वसनीयता और कम श्रम लागत
(C) कम प्रारंभिक पूँजी निवेश
(D) सभी प्रकार के ठोस सामानों को ले जाने की क्षमता

167. पाइपलाइन परिवहन के सामने सबसे बड़ी चुनौती क्या है?
(A) पाइपलाइनों के संचालन के लिए लगातार और जटिल रखरखाव की आवश्यकता
(B) अत्यधिक उच्च प्रारंभिक निर्माण लागत और मार्ग की अनम्यता होना
(C) बाहरी मौसम की बदलती स्थिति और जलवायु पर अत्यधिक निर्भरता होना
(D) निर्माण के पश्चात आवश्यकतानुसार पाइपलाइन मार्ग को बदलने में आसानी

168. 'स्लरी' पाइपलाइन का उपयोग किस लिए किया जाता है?
(A) पानी के साथ मिश्रित ठोस पदार्थों जैसे कोयले का परिवहन करने के लिए
(B) केवल प्राकृतिक गैस और अन्य गैसीय ईंधनों का सुरक्षित परिवहन करने के लिए
(C) पाइपलाइन के भीतर प्रवाहित होने वाले गर्म तरल पदार्थों को ठंडा करने के लिए
(D) पाइपलाइनों की समय-समय पर होने वाली आंतरिक सफाई और जांच के लिए

169. रणनीतिक दृष्टिकोण से, पाइपलाइनों को संवेदनशील क्यों माना जाता है?
(A) क्योंकि वे बहुत धीमी गति से चलती हैं
(B) क्योंकि उन्हें बनाने के लिए बहुत अधिक श्रम की आवश्यकता होती है
(C) क्योंकि वे भू-राजनीतिक तनाव और तोड़फोड़ का लक्ष्य बन सकती हैं
(D) क्योंकि वे पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं

170. निम्नलिखित में से कौन सा कथन पाइपलाइन परिवहन का सबसे सटीक वर्णन करता है?
(A) यह एक अत्यंत सस्ता और अत्यधिक लचीला आधुनिक परिवहन साधन है
(B) यह लंबी दूरी के यात्रियों के परिवहन के लिए सबसे प्रभावी साधन है
(C) यह एक अल्पकालिक परिवहन समाधान है जिसका उपयोग केवल आपात स्थिति में होता है
(D) यह एक उच्च लागत वाला, विश्वसनीय और मुख्य रुप से तरल/गैस हेतु साधन है

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

साइबरस्पेस और इंटरनेट के तेजी से विस्तार ने वैश्विक संचार में क्रांति ला दी है, लेकिन इसने 'अंकीय विभाजन' (डिजिटल डिवाइड) नामक एक महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक चुनौती को भी उजागर किया है। यह विभाजन उन लोगों के बीच की खाई को संदर्भित करता है जिनकी सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) तक सार्थक पहुँच है और जो इसका उपयोग करना जानते हैं, और उन लोगों के बीच जो ऐसा नहीं कर सकते। यह केवल कंप्यूटर या स्मार्टफोन के होने या न होने का मामला नहीं है। इसमें इंटरनेट कनेक्शन की गुणवत्ता, सामर्थ्य, और 'अंकीय साक्षरता' (प्रौद्योगिकी का प्रभावी ढंग से उपयोग करने का कौशल) जैसे कारक भी शामिल हैं। यह विभाजन कई स्तरों पर मौजूद है: एक वैश्विक विभाजन जो विकसित और विकासशील देशों को अलग करता है, और एक घरेलू विभाजन जो एक ही देश के भीतर शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों, अमीर और गरीब, तथा शिक्षित और अशिक्षित आबादी के बीच मौजूद है। यह खाई मौजूदा सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को और गहरा कर सकती है, क्योंकि जो लोग डिजिटल दुनिया से बाहर हैं, वे ऑनलाइन शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, ई-कॉमर्स, और आर्थिक अवसरों तक पहुँचने से वंचित रह जाते हैं। इस प्रकार, अंकीय विभाजन को पाटना केवल एक तकनीकी लक्ष्य नहीं, बल्कि सामाजिक समानता और समावेशी विकास के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. 'अंकीय विभाजन' (डिजिटल डिवाइड) की सबसे सटीक परिभाषा क्या है?
(A) बाजार में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के कंप्यूटर ब्रांडों के बीच का तकनीकी अंतर
(B) कंप्यूटर सिस्टम के भीतर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर घटकों के बीच का बुनियादी अंतर
(C) सूचना प्रौद्योगिकी तक सार्थक पहुँच रखने और न रखने वालों के बीच की खाई
(D) युवा और वृद्ध पीढ़ियों के बीच संचार के तरीकों और प्राथमिकताओं की गहरी खाई

(C) प्रति टन-किलोमीटर कम लागत और उच्च ऊर्जा दक्षता प्रदान करना
(D) वर्ष भर किसी भी प्रतिकूल मौसम में अबाधित संचालन की पूर्ण गारंटी

160. यूरोप का एकीकृत जलमार्ग नेटवर्क किस बात का एक प्रमुख उदाहरण है?
(A) क्षेत्रीय स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और आर्थिक एकीकरण
(B) आधुनिक परिवहन प्रणालियों में व्याप्त तकनीकी पिछड़ापन और बाधाएं
(C) औद्योगिक गतिविधियों के कारण होने वाली व्यापक पर्यावरणीय गिरावट
(D) पड़ोसी देशों के मध्य होने वाले विभिन्न प्रकार के राजनीतिक संघर्ष

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

आधुनिक वायु परिवहन उद्योग की कार्यप्रणाली काफी हद तक 'हब-एंड-स्पोक' मॉडल पर आधारित है। इस मॉडल में, एयरलाइंस कुछ प्रमुख हवाई अड्डों को 'हब' (केंद्र) के रूप में नामित करती हैं, जो केंद्रीय स्थानांतरण बिंदु के रूप में कार्य करते हैं। इन हब से, उड़ानें 'स्पोक्स' (अरों) के रूप में छोटे, कम व्यस्त हवाई अड्डों तक जाती हैं। यात्री अक्सर अपने मूल स्थान से एक स्पोक मार्ग पर हब तक यात्रा करते हैं और फिर अपने अंतिम गंतव्य तक दूसरे स्पोक मार्ग पर जाने के लिए विमान बदलते हैं। इस प्रणाली का मुख्य लाभ दक्षता है; यह एयरलाइंस को कम विमानों के साथ अधिक गंतव्यों की सेवा करने की अनुमति देता है, क्योंकि प्रत्येक छोटे शहर को हर दूसरे छोटे शहर से सीधे जोड़ने की आवश्यकता नहीं होती है। इससे हब को जोड़ने वाले प्रमुख मार्गों पर उड़ानों की आवृत्ति भी बढ़ जाती है। हालाँकि, इस मॉडल की कुछ कमियाँ भी हैं। हब हवाई अड्डों पर भारी भीड़भाड़ हो सकती है, और प्रणाली में देरी का व्यापक प्रभाव पड़ सकता है, जहाँ एक हब पर एक उड़ान में देरी से पूरे नेटवर्क में कई कनेक्टिंग उड़ानों में देरी हो सकती है। यह 'पॉइंट-टू-पॉइंट' मॉडल के विपरीत है, जिसका उपयोग कुछ कम लागत वाली एयरलाइंस करती हैं, जो सीधे मूल और गंतव्य हवाई अड्डों के बीच सीधी उड़ानें संचालित करती हैं, जिससे स्थानांतरण की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. 'हब-एंड-स्पोक' मॉडल में 'हब' की क्या भूमिका है?
(A) अंतिम गंतव्य के रूप में कार्य करना
(B) विमानों के लिए एक रखरखाव सुविधा के रूप में कार्य करना
(C) केवल अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के लिए एक बिंदु के रूप में कार्य करना
(D) यात्रियों के लिए एक केंद्रीय स्थानांतरण बिंदु के रूप में कार्य करना

162. एयरलाइंस के लिए 'हब-एंड-स्पोक' मॉडल का मुख्य लाभ क्या है?
(A) इसके संचालन से ईंधन की कुल खपत और परिचालन व्यय में वृद्धि होती है
(B) यह कम विमानों के साथ अधिक गंतव्यों की सेवा देकर दक्षता को बढ़ाता है
(C) यह छोटे और दूरस्थ हवाई अड्डों पर अत्यधिक भीड़भाड़ का कारण बनता है
(D) यह सभी नेटवर्क उड़ानों को हर स्थिति में समय पर होना सुनिश्चित करता है

163. 'हब-एंड-स्पोक' मॉडल की एक प्रमुख कमी क्या है?
(A) हब और स्पोक के बीच संचालित उड़ानों की बहुत कम आवृत्ति होना
(B) यात्रियों के लिए टिकट की कीमतों और यात्रा व्यय में अत्यधिक वृद्धि
(C) एक हब पर हुई देरी का पूरे नेटवर्क पर व्यापक प्रभाव पड़ना
(D) नेटवर्क के भीतर उपलब्ध गंतव्यों की संख्या में उल्लेखनीय कमी आना

164. 'पॉइंट-टू-पॉइंट' मॉडल 'हब-एंड-स्पोक' मॉडल से किस प्रकार भिन्न है?
(A) यह केवल बड़े हब हवाई अड्डों के बीच ही निरंतर उड़ानें संचालित करता है
(B) यह यात्रियों को यात्रा के दौरान बार-बार विमान बदलने के लिए बाध्य करता है
(C) इसका उपयोग केवल प्रमुख और पारंपरिक राष्ट्रीय एयरलाइंस द्वारा किया जाता है
(D) यह सीधी उड़ानें प्रदान कर स्थानांतरण की आवश्यकता को समाप्त करता है

165. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'हब-एंड-स्पोक' मॉडल का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) एक प्रणाली जहाँ उडानें एक केंद्र पर एकत्रित होकर पुनः वितरित होती हैं
(B) एक सरल रैखिक नेटवर्क जहाँ सभी उड़ानें एक सीधी रेखा में संचालित होती हैं
(C) एक विकेन्द्रीकृत प्रणाली जहाँ प्रत्येक हवाई अड्डा अन्य सभी से सीधे जुड़ा होता है
(D) एक विशेष परिवहन प्रणाली जो केवल भारी माल की ढुलाई के लिए उपयोग होती है

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

पाइपलाइन परिवहन का एक अदृश्य लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण साधन है, जो मुख्य रूप से तरल पदार्थ और गैसों के विशाल मात्रा में परिवहन के लिए समर्पित है। इसका सबसे बड़ा लाभ इसकी परिचालन विश्वसनीयता और कम श्रम लागत है। एक बार स्थापित होने के बाद, पाइपलाइनें मौसम की स्थिति या यातायात की भीड़ से लगभग अप्रभावित रहकर 24/7 संचालित हो सकती हैं। हालाँकि, इनकी सबसे बड़ी

152. 'ब्रेक-ऑफ-गेज' की समस्या का मुख्य कारण क्या है?
(A) विभिन्न रेलवे लाइनों पर अलग-अलग चौड़ाई (गेज) की पटरियों का उपयोग
(B) ट्रेनों की परिचालन गति और तकनीकी क्षमताओं में अत्यधिक भिन्नता
(C) रेलवे नेटवर्क में पर्याप्त स्टेशनों और बुनियादी ढाँचे की कमी
(D) खराब मौसम और प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों के कारण ट्रेनों का विलंब

153. 'ब्रेक-ऑफ-गेज' का सीधा आर्थिक परिणाम क्या होता है?
(A) कुल परिवहन समय और परिचालन लागत में व्यापक कमी आना
(B) रेलवे नेटवर्क का तेजी से विस्तार और आधुनिकीकरण होना
(C) परिवहन लागत में वृद्धि और रसद संबंधी जटिलताएँ पैदा होना
(D) रेल यात्रियों के लिए यात्रा का अनुभव काफी सुखद और बेहतर होना

154. अनुच्छेद के अनुसार, रेलवे नेटवर्क के मानकीकरण का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) ट्रेनों की परिचालन गति को सुरक्षा कारणों से कम करना
(B) छोटे शहरों और दूरस्थ क्षेत्रों में अधिक रेलवे स्टेशन बनाना
(C) रेलवे नेटवर्क के निर्माण और रखरखाव की लागत को बढ़ाना
(D) एक एकीकृत और सीमा-पार परिवहन प्रणाली का निर्माण करना

155. आधुनिक युग में रेलवे परिवहन को किन क्षेत्रों से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है?
(A) केवल समुद्री परिवहन और अंतरराष्ट्रीय जलमार्ग प्रणालियों से
(B) केवल पाइपलाइन परिवहन और ऊर्जा वितरण के अन्य साधनों से
(C) माल ढुलाई में सड़क परिवहन और यात्री यात्रा में हवाई परिवहन से
(D) अंतर्देशीय जलमार्गों और पारंपरिक पशु-चालित परिवहन प्रणालियों से

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

अंतर्देशीय जलमार्ग, जिसमें नदियाँ, झीलें और नहरें शामिल हैं, परिवहन का एक महत्वपूर्ण साधन हैं, विशेषकर उन महाद्वीपों में जहाँ विशाल भूभाग और एकीकृत अर्थव्यवस्थाएँ मौजूद हैं, जैसे कि यूरोप और उत्तरी अमेरिका। किसी नदी की नौगम्यता कई कारकों पर निर्भर करती है, जिसमें जल का निरंतर और पर्याप्त प्रवाह, एक गहरी और चौड़ी चैनल, तथा जलप्रपात या तीव्र ढाल जैसे प्राकृतिक अवरोधों की अनुपस्थिति शामिल है। हालाँकि, इन प्राकृतिक सीमाओं को अक्सर मानवीय हस्तक्षेप के माध्यम से दूर किया जाता है। 'ड्रेजिंग' (नदी तल से गाद निकालना) द्वारा चैनल को गहरा किया जाता है, 'कैनालाइज़ेशन' (नहरों का निर्माण) द्वारा नदियों को जोड़ा जाता है, और 'लॉक्स' (जल बंधक) के निर्माण से जल स्तर के अंतर को पार किया जाता है। इन जलमार्गों की सबसे बड़ी आर्थिक विशेषता उनकी ऊर्जा दक्षता और भारी तथा अधिक मात्रा वाले सामानों (बल्क कार्गो) जैसे कोयला, अयस्क, अनाज और निर्माण सामग्री के परिवहन के लिए कम लागत है। प्रति टन-किलोमीटर लागत सड़क या रेल परिवहन की तुलना में बहुत कम होती है, जो उन्हें कम मूल्य वाले सामानों के लंबी दूरी के परिवहन के लिए आदर्श बनाती है। यूरोप का एकीकृत जलमार्ग नेटवर्क, जो राइन, मेन और डेन्यूब जैसी नदियों को जोड़ता है, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. किसी नदी को नौगम्य बनाने के लिए कौन सा प्राकृतिक कारक आवश्यक है?
(A) नदी का घुमावदार मार्ग
(B) जल का पर्याप्त और निरंतर प्रवाह
(C) जलप्रपात और तीव्र ढाल की उपस्थिति
(D) उथली और संकीर्ण चैनल

157. 'लॉक्स' (जल बंधक) का निर्माण अंतर्देशीय जलमार्गों में किस उद्देश्य से किया जाता है?
(A) नदी के स्वाभाविक जल प्रवाह को पूरी तरह से नियंत्रित करने के लिए
(B) नदी के किनारों पर पर्यटन और मनोरंजन की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए
(C) स्थानीय स्तर पर मछली पकड़ने और जलीय कृषि गतिविधियों को सरल बनाने के लिए
(D) जल स्तर में अंतर को प्रबंधित करने और जहाजों को स्थानांतरित करने के लिए

158. अंतर्देशीय जलमार्गों द्वारा किस प्रकार के सामानों का परिवहन आर्थिक रूप से सबसे अधिक व्यवहारय है?
(A) भारी, अधिक मात्रा वाले और कम मूल्य वाले सामान (जैसे बल्क कार्गो)
(B) उच्च बाजार मूल्य वाले और बहुत शीघ्र खराब होने वाले नाजुक सामान
(C) कम मात्रा वाले, हल्के और उच्च प्राथमिकता वाले छोटे पैकेट वाले सामान
(D) आपातकालीन चिकित्सा आपूर्तियाँ और समय-संवेदनशील जीवनरक्षक सामग्री

159. अनुच्छेद के अनुसार, अंतर्देशीय जलमार्गों की मुख्य आर्थिक विशेषता क्या है?
(A) माल परिवहन में उच्च गति और बहुत तीव्र डिलीवरी सुनिश्चित करना
(B) निम्न ऊर्जा दक्षता और अत्यधिक उच्च दैनिक परिचालन लागत होना

172. स्रोत के अनुसार, अंकीय विभाजन में कौन सा कारक शामिल नहीं है?
(A) इंटरनेट कनेक्शन की गुणवत्ता
(B) व्यक्तिगत कंप्यूटर का रंग
(C) अंकीय साक्षरता
(D) प्रौद्योगिकी तक पहुँच की सामर्थ्य

173. 'घरेलू अंकीय विभाजन' किन समूहों के बीच असमानता को संदर्भित करता है?
(A) दुनिया के विभिन्न विकसित और विकासशील देशों के मध्य व्याप्त असमानता
(B) विभिन्न महाद्वीपों और वैश्विक भौगोलिक क्षेत्रों के बीच संचार का अंतर
(C) समान आय स्तर और शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले लोगों के समूहों के बीच का अंतर
(D) एक ही देश के भीतर शहरी-ग्रामीण और अमीर-गरीब आबादी के बीच की दूरी

174. अंकीय विभाजन मौजूदा सामाजिक असमानताओं को कैसे गहरा कर सकता है?
(A) लोगों को ऑनलाइन शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक अवसरों से वंचित करके
(B) लोगों को तकनीकी रूप से अधिक सामाजिक और संवादात्मक बनाकर
(C) आम जनता के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकी की लागत को काफी कम करके
(D) समाज के सभी वर्गों के लिए पूर्णतः समान अवसर और संसाधन प्रदान करके

175. अनुच्छेद के अनुसार, अंकीय विभाजन को पाटना क्यों महत्वपूर्ण है?
(A) यह केवल एक तकनीकी चुनौती है जिसे अनदेखा किया जा सकता है।
(B) यह इंटरनेट की गति को धीमा कर देगा।
(C) यह सामाजिक समानता और समावेशी विकास के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता है।
(D) इससे प्रौद्योगिकी की लागत बढ़ जाएगी।

130. चैनल टनल (Channel Tunnel) जिसे 'यूरो टनल' भी कहते हैं, किन दो शहरों को जोड़ता है?
(A) पेरिस और लंदन
(B) बर्लिन और पेरिस
(C) लंदन और बर्लिन
(D) बार्सीलोना और बर्लिन

131. पारमहाद्वीपीय स्टुवर्ट महामार्ग ऑस्ट्रेलिया में किनके मध्य से गुजरता है?
(A) पर्थ और सिडनी
(B) बैंकूवर और सेंट जॉन नगर
(C) डार्विन और मेलबोर्न
(D) चेगडू और ल्हासा

132. निम्नलिखित में से कौन-सी परिवहन विधा घर-घर (door-to-door) सेवाएँ प्रदान करने में सबसे सस्ती एवं तीव्रगामी है?
(A) रेल परिवहन
(B) वायु परिवहन
(C) जल परिवहन
(D) सड़क परिवहन

133. किस महाद्वीप में विश्व का सघनतम रेल तंत्र पाया जाता है?
(A) उत्तरी अमेरिका
(B) एशिया
(C) यूरोप
(D) ऑस्ट्रेलिया

134. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिये:
List I: (परिवहन मार्ग)
P. वृहद् ट्रंक मार्ग
Q. पार-साइबेरियन रेलमार्ग
R. स्वेज नहर
S. पनामा नहर
List II: (संबंधित महासागर/क्षेत्र)
1. अटलांटिक-प्रशांत
2. भूमध्यसागर-लाल सागर
3. एशिया-यूरोप
4. उत्तरी अटलांटिक
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

135. 'ब्लू ट्रेन' नामक प्रसिद्ध रेलमार्ग किस देश में केपटाउन से प्रेटोरिया तक चलता है?
(A) ऑस्ट्रेलिया
(B) कनाडा
(C) अर्जेंटीना
(D) दक्षिण अफ्रीका गणतंत्र

136. स्वेज नहर के दोनों सिरों पर स्थित पत्तन कौन से हैं?
(A) 6,400 कि.मी.
(B) 13,000 कि.मी.
(C) 2,480 कि.मी.
(D) 9,322 कि.मी.

137. वोल्गा-डोन नहर, वोल्गा जलमार्ग को किस सागर से जोड़ती है?
(A) कैस्पियन सागर
(B) बाल्टिक सागर
(C) काला सागर
(D) श्वेत सागर

138. वायुयानों के निर्माण तथा उनकी कार्य-प्रणाली के लिए निम्नलिखित में से किस सुविधा की आवश्यकता नहीं होती है?
(A) नौ-परिवहन नहर
(B) विमानशाला
(C) भूमि पर उतारने की सुविधा
(D) ईंधन तथा रख-रखाव की सुविधा

139. निम्नलिखित में से कौन-सा एक अंतर-महाद्वीपीय वायुमार्गों का प्रमुख नोडीय बिंदु नहीं है?
(A) न्यूयॉर्क
(B) लंदन
(C) पेरिस
(D) सिडनी

140. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. रूस में यूराल के पश्चिम में स्थित औद्योगिक प्रदेश में महामार्गों का सघन जाल है।
2. मास्को इस क्षेत्र की धुरी है।
3. मास्को-ब्लाडीवोस्टक महामार्ग पूर्व में स्थित प्रदेश की सेवा करता है।
4. रूस में महामार्ग रेलमार्ग से अधिक महत्वपूर्ण हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4 सभी

141. परिवहन का कौन सा साधन तीव्र ढाल वाले पर्वतों और खानों में पाया जाता है जहाँ सड़क निर्माण उपयुक्त नहीं होता?
(A) पाइपलाइन
(B) रेलमार्ग
(C) रज्जुमार्ग (Cableway)
(D) नहर

142. उत्तरी अमेरिका में महामार्गों का घनत्व लगभग कितना है?
(A) 0.33 कि.मी. प्रतिवर्ग कि.मी.
(B) 1.00 कि.मी. प्रतिवर्ग कि.मी.
(C) 1.44 कि.मी. प्रतिवर्ग कि.मी.

11. (D) बेल्जियम
बेल्जियम में विश्व का सर्वाधिक रेल घनत्व पाया जाता है, जहाँ प्रति साढ़े छह वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर लगभग एक किलोमीटर लंबा रेलमार्ग उपलब्ध है। यहाँ का रेल नेटवर्क औद्योगिक केंद्रों और शहरी बस्तियों को अत्यंत कुशलता से जोड़ता है। बेल्जियम की सघन जनसंख्या और विकसित औद्योगिक अर्थव्यवस्था ने इस व्यापक और सुव्यवस्थित रेल तंत्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जो यहाँ के परिवहन का आधार है।

12. (B) केवल 1, 2, 3 और 4 सही हैं।
उत्तरी अमेरिका में विश्व के कुल रेलमार्गों का लगभग चालीस प्रतिशत हिस्सा है, जहाँ रेलों का उपयोग यात्री परिवहन की तुलना में माल ढोने के लिए अधिक किया जाता है। कनाडा में रेलमार्ग मुख्य रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के अधीन हैं और ऑस्ट्रेलिया में लगभग चालीस हजार किलोमीटर लंबी रेल लाइनें बिछी हुई हैं। यह विशाल तंत्र संसाधनों के संचलन और औद्योगिक विकास के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

13. (C) पंपास और कॉफी उत्पादक प्रदेश
दक्षिणी अमेरिका में रेलमार्गों का घनत्व विशेष रूप से अर्जेंटीना के पंपास घास के मैदानों और ब्राजील के कॉफी उत्पादक क्षेत्रों में अधिक पाया जाता है। ये क्षेत्र अपनी कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था और निर्यात उन्मुख व्यापार के कारण रेल सुविधाओं से अच्छी तरह जुड़े हुए हैं। यहाँ का रेल तंत्र कृषि उत्पादों को बंदरगाहों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो क्षेत्रीय आर्थिक विकास का मुख्य आधार है।

14. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
अफ्रीका महाद्वीप में रेल सुविधाओं का विकास अन्य महाद्वीपों की तुलना में न्यूनतम रहा है। इसका मुख्य कारण यहाँ विस्तृत मरुस्थल, सघन वर्षा वन और विरल जनसंख्या वाले विशाल प्रदेशों की उपस्थिति है। इन भौगोलिक बाधाओं और दुर्गम परिस्थितियों ने रेल पटरियाँ बिछाने की लागत और रखरखाव को चुनौतीपूर्ण बना दिया है, जिससे परिवहन तंत्र का विस्तार केवल कुछ विशिष्ट खनिज समृद्ध क्षेत्रों तक ही सीमित रह गया है।

15. (A) यह रेलमार्ग केवल यात्री परिवहन के लिए महत्वपूर्ण है।
पार-साइबेरियन रेलमार्ग विश्व का सबसे लंबा और दोहरे पथ वाला विद्युतीकृत रेलमार्ग है, जो सेंट पीटर्सबर्ग को व्लाडिवोस्टक से जोड़ता है। इसकी कुल लंबाई नौ हजार तीन सौ बाइस किलोमीटर है। यह मार्ग केवल यात्रियों के लिए ही नहीं, बल्कि भारी माल जैसे अयस्क और अनाज के परिवहन के लिए भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह रूस के एशियाई और यूरोपीय भागों को जोड़ने वाला प्रमुख गलियारा है।

16. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
पारमहाद्वीपीय रेलमार्ग महाद्वीप के दो छोरों को जोड़कर व्यापार और आवागमन को सुगम बनाते हैं। पार-साइबेरियन मार्ग सेंट पीटर्सबर्ग से व्लाडिवोस्टक तक, पार-कैनेडियन हैलिफ़ैक्स से वैंकूवर तक, संघ और प्रशांत मार्ग न्यूयॉर्क से सान फ्रांसिस्को तक और ओरिएंट एक्सप्रेस पेरिस से इस्तांबूल तक विस्तृत है। ये रेलमार्ग वैश्विक आर्थिक एकीकरण और संसाधनों के बड़े पैमाने पर परिवहन के लिए अत्यंत प्रभावी बुनियादी ढाँचा तैयार करते हैं।

17. (B) पार-कैनेडियन रेलमार्ग
पार-कैनेडियन रेलमार्ग को कनाडा की आर्थिक धमनी माना जाता है क्योंकि यह देश के अटलांटिक और प्रशांत तटों को आपस में जोड़ता है। यह सात हजार किलोमीटर से अधिक लंबा मार्ग क्यूबेक-मॉंट्रियल औद्योगिक क्षेत्र को प्रेयरी प्रदेश के अनाज क्षेत्रों और ब्रिटिश कोलंबिया के शंकुधारी वनों से जोड़ता है। यह अनाज और मांस जैसे महत्वपूर्ण उत्पादों के निर्यात को सुगम बनाकर कनाडा की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ आधार प्रदान करता है।

18. (B) केवल 1, 2 और 4
जल परिवहन के लिए प्राकृतिक मार्गों का उपयोग होता है, इसलिए सड़कों या रेलमार्गों की तरह निर्माण की आवश्यकता नहीं पड़ती। जल की सतह पर घर्षण कम होने के कारण यह परिवहन का सबसे सस्ता और ऊर्जा-कुशल माध्यम है। इसे मुख्य रूप से समुद्री मार्गों और आंतरिक जल मार्गों में विभाजित किया जाता है। भारी और स्थूल माल को लंबी दूरियों तक पहुँचाने के लिए यह वैश्विक स्तर पर सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

19. (C) शीघ्र नाशवान वस्तुओं के परिवहन के लिए
समुद्री जहाजों में प्रशीतन कोष्ठकों का उपयोग फल, मांस, सब्जियाँ और डेयरी उत्पाद जैसी शीघ्र खराब होने वाली वस्तुओं के सुरक्षित परिवहन के लिए किया जाता है। यह तकनीक लंबी समुद्री यात्राओं के दौरान तापमान को नियंत्रित रखती है, जिससे माल की गुणवत्ता बनी रहती है। इसके माध्यम से एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप तक खाद्य पदार्थों का व्यापार सुलभ हो गया है, जो वैश्विक खाद्य आपूर्ति श्रृंखला का अभिन्न हिस्सा है।

20. (A) 2, 1, 3, 4
परिवहन के इतिहास में सबसे पहले अठारहवीं शताब्दी में भाप के इंजन का आविष्कार हुआ, जिसने यांत्रिक गति को नई दिशा दी। इसके बाद वर्ष 1825 में प्रथम सार्वजनिक रेलमार्ग का संचालन शुरू हुआ। स्वेज नहर का निर्माण 1869 में पूरा हुआ, जिसने वैश्विक व्यापारिक दूरियों को काफी कम कर दिया। अंततः 1914 में पनामा नहर के निर्माण के साथ ही अटलांटिक और प्रशांत महासागरों के बीच नया जलमार्ग स्थापित हुआ।

21. (C) उत्तरी अटलांटिक समुद्री मार्ग
उत्तरी अटलांटिक समुद्री मार्ग को विश्व का व्यस्ततम जलमार्ग और 'वृहद् ट्रंक मार्ग' के रूप में जाना जाता है। यह मार्ग विकसित उत्तर-पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका और उत्तर-पश्चिमी यूरोप को जोड़ता है, जहाँ दुनिया के सबसे बड़े औद्योगिक और व्यापारिक केंद्र स्थित हैं। विश्व के कुल विदेशी व्यापार का एक-चौथाई हिस्सा इसी मार्ग से होकर गुजरता है, जो वैश्विक अर्थव्यवस्था में इसके अत्यधिक महत्व को स्पष्ट करता है।

22. (B) पोर्ट सईद, अदन, मुंबई, कोलंबो
भूमध्यसागर-हिंदमहासागरीय समुद्री मार्ग एक अत्यंत महत्वपूर्ण व्यापारिक गलियारा है जो यूरोप को एशिया और पूर्वी अफ्रीका से जोड़ता है। इस मार्ग पर स्थित प्रमुख बंदरगाहों में पोर्ट सईद, अदन, मुंबई, कोलंबो और सिंगापुर शामिल हैं। स्वेज नहर के माध्यम से यह मार्ग यात्रा की दूरी को काफी कम कर देता है, जिससे इस क्षेत्र के देशों के बीच संसाधनों और औद्योगिक उत्पादों का विनिमय सुगम और तीव्र होता है।

23. (D) उत्तमाशा अंतरीप समुद्री मार्ग
स्वेज नहर के निर्माण ने लिवरपूल और कोलंबो के बीच की समुद्री दूरी को लगभग छह हजार चार सौ किलोमीटर कम कर दिया है। इससे पहले जहाजों को अफ्रीका का चक्कर लगाकर 'उत्तमाशा अंतरीप मार्ग' का उपयोग करना पड़ता था, जो काफी लंबा और खर्चीला था। स्वेज नहर के प्रारंभ होने से इस पुराने मार्ग का व्यापारिक महत्व काफी घट गया और यूरोपीय देशों की एशियाई बाजारों तक पहुँच आसान हो गई।

24. (A) केवल 1, 2 और 4 सही हैं।
दक्षिण अटलांटिक समुद्री मार्ग पर यातायात उत्तरी अटलांटिक की तुलना में काफी कम है क्योंकि यहाँ सीमित विकास और कम जनसंख्या पाई जाती है। दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका के अधिकांश उत्पाद और संसाधन एक जैसे हैं, जिससे उनके बीच परस्पर व्यापार की गुंजाइश कम हो जाती है। इस मार्ग पर बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण का अभाव है, जिसके कारण यह उत्तरी अटलांटिक के समान विकसित नहीं हो पाया है।

25. (C) अनेक व्यापारिक मार्गों का मिलन बिंदु है।
उत्तरी प्रशांत समुद्री मार्ग पर स्थित होनोलूलू एक अत्यंत महत्वपूर्ण बंदरगाह है जिसे प्रशांत महासागर का 'चौराहा' भी कहा जाता है। यह अनेक समुद्री और हवाई व्यापारिक मार्गों के मिलन बिंदु पर स्थित होने के कारण रसद आपूर्ति और विश्राम के लिए एक प्रमुख केंद्र के रूप में कार्य करता है। इसकी रणनीतिक स्थिति इसे उत्तरी अमेरिका, एशिया और ओशिनिया के बीच व्यापारिक गतिविधियों को सुगम बनाने में महत्वपूर्ण बनाती है।

26. (A) 1869 में मिस्र में
स्वेज नहर का निर्माण वर्ष 1869 में मिस्र में किया गया था, जो उत्तर में पोर्ट सईद और दक्षिण में पोर्ट स्वेज को जोड़ती है। यह मानव निर्मित नहर भूमध्य सागर को लाल सागर से जोड़कर यूरोप और हिंद महासागर के देशों के बीच एक सीधा और संक्षिप्त मार्ग प्रदान करती है। इसके निर्माण ने वैश्विक समुद्री व्यापार की दिशा बदल दी और पुरानी लंबी यात्राओं के समय एवं लागत को कम कर दिया।

27. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
स्वेज नहर ने यूरोप को हिंद महासागर में प्रवेश के लिए एक नया और छोटा मार्ग प्रदान किया है, जिससे यात्रा की दूरी में भारी कमी आई है। उदाहरण के लिए, लिवरपूल और कोलंबो के बीच की प्रत्यक्ष दूरी उत्तमाशा अंतरीप मार्ग की तुलना में काफी घट गई है। यह नहर बिना किसी जलबंधक तंत्र के समुद्र तल के बराबर बनाई गई है, जो जहाजों के सुगम और तीव्र आवागमन को सुनिश्चित करती है।

28. (B) इसमें कुल छः जलबंधक तंत्र हैं।
पनामा नहर एक महत्वपूर्ण जलमार्ग है जो अटलांटिक महासागर को प्रशांत महासागर से जोड़ता है। यह नहर समुद्र की सतह के बराबर नहीं है, बल्कि इसमें कुल छह जलबंधक तंत्र (लॉक सिस्टम) हैं जो जहाजों को गतुन झील की ऊँचाई तक ऊपर और नीचे ले जाने का कार्य करते हैं। यह जटिल इंजीनियरिंग का अद्भुत उदाहरण है, जिसने न्यूयॉर्क और सान फ्रांसिस्को के बीच की समुद्री दूरी को काफी कम किया है।

29. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
विभिन्न आंतरिक जलमार्ग विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था को सहारा देते हैं। राइन जलमार्ग जर्मनी और नीदरलैंड के औद्योगिक क्षेत्रों की सेवा करता है, जबकि डेन्यूब जलमार्ग पूर्वी यूरोप के देशों को जोड़ता है। वोल्गा जलमार्ग रूस का सबसे महत्वपूर्ण आंतरिक मार्ग है और वृहद् झीलें-सेंट लॉरेंस मार्ग उत्तरी अमेरिका के मध्य भाग को अटलांटिक महासागर से जोड़ता है। ये जलमार्ग भारी माल के वहन के लिए किफायती माध्यम हैं।

30. (D) राइन जलमार्ग
राइन जलमार्ग को विश्व का सबसे अधिक प्रयोग में लाया जाने वाला आंतरिक जलमार्ग माना जाता है। यह नदी जर्मनी और नीदरलैंड के समृद्ध औद्योगिक क्षेत्रों से होकर बहती है और अंततः रोटरडैम में उत्तरी समुद्र में मिल जाती है। इसकी सात सौ किलोमीटर की नौगम्य लंबाई और इसके किनारों पर स्थित सघन औद्योगिक पेटी इसे कोयला और अन्य कच्चे माल के परिवहन के लिए एक अनिवार्य वैश्विक गलियारा बनाती है।

31. (C) केवल 1, 2 और 3
डेन्यूब नदी जर्मनी के ब्लैक फॉरेस्ट से निकलकर पूर्व की ओर बहती है और टारना सेविरिन तक नौकायन के लिए उपयुक्त है। इसके माध्यम से मुख्य रूप से गेहूँ, मक्का, इमारती लकड़ी और मशीनरी जैसी वस्तुओं का निर्यात किया जाता है। हालाँकि यह नदी कई देशों से होकर गुजरती है, लेकिन इसका मुख्य लाभ पूर्वी और मध्य यूरोपीय क्षेत्रों को मिलता है। यह परिवहन के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में कार्य करती है।

32. (B) कैस्पियन सागर
रूस की प्रसिद्ध वोल्गा नदी यूरोप की सबसे लंबी नदी है और यह ग्यारह हजार दो सौ किलोमीटर लंबा नौगम्य मार्ग प्रदान करती है। यह नदी अंततः कैस्पियन सागर में जाकर मिलती है। वोल्गा-डोन नहर के माध्यम से इसे काला सागर से भी जोड़ा गया है, जिससे यह रूस के विशाल आंतरिक क्षेत्रों को समुद्री व्यापारिक मार्गों तक पहुँच प्रदान करती है। भारी सामानों के परिवहन के लिए यह जलमार्ग अत्यंत महत्वपूर्ण है।

33. (B) मिशिगन
उत्तरी अमेरिका की वृहद् झीलें सुपीरियर, ह्यूरन, ईरी और ओंटारियो, सेंट लॉरेंस नदी के साथ मिलकर एक विशाल आंतरिक जलमार्ग बनाती हैं। यद्यपि मिशिगन झील भी वृहद् झीलों का हिस्सा है, लेकिन जलमार्ग के मुख्य प्रवाह और अंतर्राष्ट्रीय सीमा के संदर्भ में इसका स्थान भिन्न है। यह समग्र तंत्र महाद्वीप के आंतरिक औद्योगिक केंद्रों को अटलांटिक महासागर से जोड़ता है, जिससे भारी माल का आवागमन सुगम और किफायती हो जाता है।

34. (A) मैक्सिको की खाड़ी
मिसीसिपी-ओहियो जलमार्ग संयुक्त राज्य अमेरिका के विशाल आंतरिक भागों को दक्षिण में मैक्सिको की खाड़ी से जोड़ता है। यह नदी तंत्र उत्तर में मिनियापोलिस से लेकर दक्षिण में न्यू ऑरलियन्स तक विस्तृत है, जो कृषि उत्पादों और औद्योगिक माल के परिवहन के लिए एक जीवन रेखा के रूप में कार्य करता है। बड़े जहाजों के माध्यम से यह मार्ग अमेरिकी अर्थव्यवस्था के मध्य भाग को वैश्विक समुद्री व्यापारिक मार्गों तक पहुँच प्रदान करता है।

35. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
वायु परिवहन ने आधुनिक विश्व में संपर्क क्रांति ला दी है क्योंकि इसने दुर्गम भौगोलिक बाधाओं को पार करना संभव बना दिया है। इसके माध्यम से ऊँचे पर्वतों, विशाल हिमक्षेत्रों और तपते मरुस्थलीय भूभागों के ऊपर से आसानी से यात्रा की जा सकती है, जिससे गम्यता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। जहाँ सड़क और रेल मार्ग बनाना कठिन है, वहाँ हवाई सेवाएँ लोगों और मूल्यवान वस्तुओं को तीव्र गति से पहुँचाती हैं।

36. (D) संयुक्त राज्य अमेरिका
द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात अंतर्राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन का मुख्य रूप से विकास संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा किया गया था। इस देश ने अपनी उन्नत तकनीकी और आर्थिक शक्ति का उपयोग करके विमानन क्षेत्र में नए मानक स्थापित किए। अमेरिका ने न केवल आधुनिक विमानों का निर्माण किया, बल्कि वैश्विक स्तर पर हवाई मार्गों और बुनियादी ढाँचे के विस्तार में भी अग्रणी भूमिका निभाई। आज भी विश्व के सर्वाधिक वायुमार्ग इसी देश में हैं।

37. (A) केवल 1, 2, 3 और 5 सही हैं।
विश्व के कुल वायुमार्गों का साठ प्रतिशत भाग अकेले संयुक्त राज्य अमेरिका में केंद्रित है, जहाँ न्यूयॉर्क और शिकागो जैसे शहर प्रमुख नोडीय बिंदु हैं। इसके विपरीत, अफ्रीका, रूस के एशियाई भाग और दक्षिण अमेरिका में वायु सेवाओं का तुलनात्मक रूप से अभाव देखा जाता है। सुपरसोनिक विमानों की तकनीक ने लंदन और न्यूयॉर्क के बीच की दूरी को केवल साढ़े तीन घंटों में समेट दिया है, जो आधुनिक परिवहन की गति को दर्शाता है।

38. (B) पेट्रोलियम
'बिग इंच' संयुक्त राज्य अमेरिका की एक सुप्रसिद्ध पाइपलाइन है जिसका उपयोग मुख्य रूप से खनिज तेल या पेट्रोलियम के परिवहन के लिए किया जाता है। यह पाइपलाइन मैक्सिको की खाड़ी के तटीय कुओं से तेल एकत्र कर उसे देश के उत्तर-पूर्वी औद्योगिक राज्यों तक पहुँचाती है। यह ऊर्जा संसाधनों के सुरक्षित, अबाधित और किफायती वितरण का एक प्रमुख उदाहरण है, जो सड़क या रेल परिवहन की तुलना में अधिक कुशल माध्यम है।

39. (D) टेलीग्राफ
उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान टेलीग्राफ पश्चिमी अमेरिका में उपनिवेशवाद और क्षेत्रीय विस्तार का एक शक्तिशाली साधन बना। इसने विशाल दूरियों के बीच संदेशों के त्वरित आदान-प्रदान को संभव बनाया, जिससे प्रशासनिक नियंत्रण और व्यापारिक समन्वय में अत्यधिक सुधार हुआ। टेलीग्राफ के माध्यम से सूचनाओं की गति ने रेलमार्गों के विकास और बस्तियों के बसने की प्रक्रिया को तीव्र किया, जिससे पूरे अमेरिकी महाद्वीप के सामाजिक परिदृश्य में परिवर्तन आया।

40. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
भारत ने अंतरिक्ष क्षेत्र में अपनी यात्रा 1975 में 'आर्यभट्ट' के सफल प्रक्षेपण के साथ शुरु की थी। इसके बाद 1979 में 'भास्कर-1', 1980 में 'रोहिणी' और 1981 में 'एप्पल' उपग्रहों का प्रक्षेपण किया गया। इन मिशनों ने देश में संचार और सुदूर संवेदन के क्षेत्र में एक नई क्रांति का सूत्रपात किया। इन तकनीकी उपलब्धियों ने भारत को वैश्विक अंतरिक्ष समुदाय में एक प्रतिष्ठित स्थान दिलाया और सूचना तंत्र को मजबूत किया।

41. (C) इंटरनेट द्वारा आवृत कंप्यूटरीकृत स्पेस।
साइबर स्पेस विद्युत द्वारा आवृत कंप्यूटरीकृत स्पेस का संसार है, जिसे इंटरनेट के रूप में जाना जाता है। यह एक ऐसा आभासी क्षेत्र है जहाँ सूचनाओं का आदान-प्रदान, भंडारण और प्रसंस्करण डिजिटल माध्यमों से होता है। यह किसी भौतिक स्थान तक सीमित नहीं है, बल्कि उपग्रहों और नेटवर्क के माध्यम से पूरी दुनिया को जोड़ता है। इसके विस्तार ने वैश्विक संचार और ई-कॉमर्स के पारंपरिक तरीकों को पूरी तरह से बदल दिया है।

42. (A) प्रयोक्ताओं की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।
वर्ष 1995 से 2023 के बीच इंटरनेट प्रयोक्ताओं की संख्या में अभूतपूर्व और नाटकीय वृद्धि दर्ज की गई है। प्रारंभ में जहाँ इसके उपयोगकर्ताओं की संख्या काफी कम थी, वहीं आधुनिक तकनीकी विस्तार और स्मार्ट उपकरणों की सुलभता ने इसे अरबों लोगों तक पहुँचा दिया है। डिजिटल क्रांति ने वैश्विक संचार के स्तर को इतना ऊँचा कर दिया है कि आज दुनिया का लगभग हर क्षेत्र इस जाल से जुड़ा है।

43. (D) अनेक स्थान जिन्हें परस्पर मार्गों की श्रेणियों द्वारा जोड़ दिए जाने पर बना प्रारूप
जब अनेक स्थानों को परस्पर विभिन्न श्रेणियों के मार्गों द्वारा जोड़ दिया जाता है, तो बनने वाले इस स्वरुप को 'परिवहन जाल'

वितरण की अनिवार्य धुरी है। व्यक्तियों और वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाकर यह व्यापार और उद्योगों को गति प्रदान करता है, जो प्रगति के लिए आवश्यक है।

87. (D) जल परिवहन - शीघ्र पहुँच के लिए
सड़क परिवहन कम दूरी के लिए किफायती है, जबकि रेल परिवहन भारी माल को लंबी दूरी तक ले जाने में सक्षम है। वायु परिवहन अपनी तीव्र गति के कारण मूल्यवान वस्तुओं के लिए श्रेष्ठ है। इसके विपरीत, जल परिवहन सबसे धीमा साधन माना जाता है, इसलिए इसे 'शीघ्र पहुँच' के लिए उपयुक्त नहीं कहा जा सकता। हालांकि यह अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए सबसे सस्ता साधन है, परंतु त्वरित वितरण इसकी विशेषता नहीं है।

88. (A) स्टॉकटन और डार्लिंगटन
विश्व का प्रथम सार्वजनिक रेलमार्ग वर्ष 1825 में उत्तरी इंग्लैंड के स्टॉकटन और डार्लिंगटन शहरों के बीच प्रारंभ हुआ था। इस ऐतिहासिक घटना ने परिवहन के क्षेत्र में एक नए युग की शुरुआत की और औद्योगिक क्रांति को अभूतपूर्व गति प्रदान की। रेलों के माध्यम से भारी मात्रा में माल का संचलन आसान हो गया, जिससे व्यापारिक लागत में कमी आई। इसके बाद ही दुनिया भर में रेल नेटवर्क विस्तारित हुआ।

89. (C) पाइपलाइनों द्वारा
खनिज तेल, जल, प्राकृतिक गैस और यहाँ तक कि अवमल जैसे तरल और गैसीय पदार्थों के परिवहन के लिए पाइपलाइनों को सबसे उपयुक्त माना जाता है। यह परिवहन का एक निरंतर और सुरक्षित माध्यम है जिसमें रिसाव और चोरी की संभावना कम होती है। पाइपलाइनें दुर्गम क्षेत्रों और समुद्र के नीचे भी बिछाई जा सकती हैं, जिससे संसाधनों का वितरण किफायती होता है। यह ऊर्जा आपूर्ति हेतु एक अनिवार्य बुनियादी ढाँचा है।

90. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
प्रमुख महामार्ग विभिन्न राष्ट्रों के आर्थिक केंद्रों को जोड़ते हैं। ट्रांस-कनाडियन मार्ग वैंकूवर को सेंट जॉन नगर से जोड़ता है, जबकि अलास्का राजमार्ग एडमंटन को एंकोरेज तक पहुँचाता है। अफ्रीका में उत्तर-दक्षिण महामार्ग कैरो को केपटाउन से जोड़ता है। भारत का स्वर्णिम चतुर्भुज दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता जैसे महानगरों के बीच संपर्क प्रदान करता है। ये सभी मार्ग लंबी दूरी के व्यापार और पर्यटन को सुगम बनाते हैं।

91. (D) 1.44 मीटर
रेलमार्गों में 'मानक लाइन' की चौड़ाई सामान्यतः 1.44 मीटर होती है। इस गेज का उपयोग विश्व के अधिकांश देशों, विशेष रूप से ब्रिटेन और कई यूरोपीय देशों में रेल नेटवर्क के मानकीकरण के लिए किया जाता है। गेज की यह चौड़ाई पटरियों के बीच की दूरी को दर्शाती है, जो रेलगाड़ियों की गति और स्थिरता को प्रभावित करती है। ऐतिहासिक कारणों और भौगोलिक आवश्यकताओं के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग गेज विकसित हुए हैं।

92. (A) केवल 1, 3 और 4 सही हैं।
एशिया के सघन क्षेत्रों में रेलमार्गों का सघन जाल है, जबकि मरुस्थलों में इनका विकास कम हुआ है। अफ्रीका में रेलमार्गों का निर्माण मुख्य रूप से सोने, हीरे और ताँबे के खनन क्षेत्रों को बंदरगाहों से जोड़ने के लिए किया गया था। दक्षिण अफ्रीका में महाद्वीप के कुल रेल नेटवर्क का लगभग अठारह हजार किलोमीटर हिस्सा मौजूद है। ये मार्ग औपनिवेशिक काल से ही संसाधनों के दोहन और निर्यात के लिए महत्वपूर्ण रहे हैं।

93. (C) ब्यूनसआयर्स और वालपैराइजो
दक्षिण अमेरिका में एंडीज पर्वतों को पार करने वाला पार-महाद्वीपीय रेलमार्ग अर्जेंटीना की राजधानी ब्यूनसआयर्स को चिली के बंदरगाह शहर वालपैराइजो से जोड़ता है। यह मार्ग उसप्लाटा दर्रे से होकर गुजरता है जो समुद्र तल से लगभग तीन हजार नौ सौ मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। यह रेलमार्ग महाद्वीप के पूर्वी और पश्चिमी तटों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी प्रदान करता है, जिससे पहाड़ी क्षेत्रों के बावजूद सुगम आवागमन संभव है।

94. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
जल परिवहन को सबसे सस्ता परिवहन साधन माना जाता है क्योंकि इसमें प्राकृतिक जलमार्गों का उपयोग होता है, जिससे सड़कों या पटरियों की तरह निर्माण की लागत नहीं आती। साथ ही, जल की सतह पर घर्षण स्थल की तुलना में बहुत कम होता है, जिससे जहाजों को चलाने के लिए कम ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है। यह विशेषता भारी माल को लंबी दूरियों तक ले जाने के लिए जल परिवहन को किफायती बनाती है।

95. (A) 12,000 कि.मी.
पनामा नहर के माध्यम से पनामा और ऑस्ट्रेलिया के सिडनी शहर के बीच की समुद्री दूरी लगभग बारह हजार किलोमीटर है। यह मार्ग प्रशांत महासागर के विशाल क्षेत्र को पार करता है और दक्षिण अमेरिका को ओशिनिया क्षेत्र से जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी है। पनामा नहर के उपयोग से जहाजों को काफी समय और ईंधन की बचत होती है, जिससे अंतरराष्ट्रीय व्यापार अधिक प्रतिस्पर्धी और सुगम बन जाता है।

96. (B) पोर्ट सईद और पोर्ट स्वेज
स्वेज नहर के उत्तरी छोर पर भूमध्य सागर के तट पर पोर्ट सईद स्थित है, जबकि इसके दक्षिणी छोर पर लाल सागर के तट पर पोर्ट स्वेज स्थित है। ये दोनों बंदरगाह नहर के प्रवेश और निकास द्वार के रूप में कार्य करते हैं और जहाजों के सुचारु आवागमन के लिए तकनीकी सुविधाएँ प्रदान करते हैं। इन बंदरगाहों की रणनीतिक स्थिति इन्हें विश्व के महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्रों के रूप में स्थापित करती है।

97. (B) पनामा नहर
पनामा नहर का आर्थिक महत्व स्वेज नहर की तुलना में कम आंका जाता है क्योंकि स्वेज नहर एशिया और यूरोप के विशाल बाजारों को जोड़ती है। फिर भी, पनामा नहर दक्षिण अमेरिका और लातिन अमेरिका की अर्थव्यवस्था के लिए

54. (B) वह रेलमार्ग जो पूरे महाद्वीप से गुज़रते हुए इसके दोनों छोरों को जोड़ता है।
पारमहाद्वीपीय रेलमार्ग उन विशाल रेल प्रणालियों को कहते हैं जो पूरे महाद्वीप के आर-पार विस्तृत होती हैं और इसके दोनों छोरों या तटीय क्षेत्रों को आपस में जोड़ती हैं। ये मार्ग लंबी दूरी के यात्री परिवहन और विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों के बीच भारी माल के विनिमय के लिए एक कुशल ढाँचा प्रदान करते हैं। ऐसे रेलमार्ग राष्ट्रों की आर्थिक एकता और व्यापारिक संबंधों को सुदृढ़ करने में बुनियादी भूमिका निभाते हैं।

55. (D) फर केंद्र
पार-साइबेरियन रेलमार्ग पर स्थित 'इरकुटस्क' रूस के साइबेरियाई क्षेत्र का एक ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण केंद्र है। यह विशेष रूप से 'फर' (पशुओं के रोएँदार खाल) के व्यापार और प्रसंस्करण के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध रहा है। रेलमार्ग की पहुँच ने इस सुदूर क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों और स्थानीय उत्पादों को यूरोपीय बाजारों तक पहुँचाना आसान बना दिया है। आज यह क्षेत्र की सांस्कृतिक और आर्थिक गतिविधियों का मुख्य आधार है।

56. (A) ब्रिटिश कोलंबिया को राज्यों के संघ में सम्मिलित करने के उद्देश्य से।
पार-कैनेडियन रेलमार्ग के निर्माण का मूल राजनीतिक उद्देश्य ब्रिटिश कोलंबिया को राज्यों के कनाडाई संघ में सम्मिलित होने के लिए प्रोत्साहित करना था। यह सात हजार किलोमीटर लंबा मार्ग है जो पूर्वी और पश्चिमी तटों को जोड़कर देश की भौगोलिक अखंडता को सुनिश्चित करता है। हालांकि बाद में इसने अनाज और औद्योगिक उत्पादों के परिवहन के लिए एक अनिवार्य आर्थिक गलियारे का रूप ले लिया, परंतु इसकी स्थापना राष्ट्रीय एकता हेतु थी।

57. (C) संघ और प्रशांत रेलमार्ग
संघ और प्रशांत रेलमार्ग संयुक्त राज्य अमेरिका का एक प्रमुख पारमहाद्वीपीय रेल मार्ग है जो अटलांटिक तट पर स्थित न्यूयॉर्क को प्रशांत तट पर स्थित सान फ्रांसिस्को से जोड़ता है। यह रेलमार्ग महाद्वीप के पूर्वी और पश्चिमी छोरों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है, जिससे माल और यात्रियों का सुगम आवागमन संभव होता है। इसने अमेरिका के पश्चिमी क्षेत्रों के विकास और औद्योगिक समन्वय में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है।

58. (A) पर्थ और सिडनी
ऑस्ट्रेलियाई पारमहाद्वीपीय रेलमार्ग महाद्वीप के पश्चिमी तट पर स्थित पर्थ को पूर्वी तट पर स्थित सिडनी से जोड़ता है। यह मार्ग दक्षिण ऑस्ट्रेलिया के रेगिस्तानी क्षेत्रों से गुजरता हुआ कलगुर्ली और ब्रोकन हिल जैसे महत्वपूर्ण खनन केंद्रों को आपस में जोड़ता है। यह रेलमार्ग ऑस्ट्रेलिया की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह देश के दो सबसे बड़े और दूरस्थ शहरी केंद्रों के बीच वस्तुओं के परिवहन को सुगम बनाता है।

59. (D) 10 दिन की तुलना में 96 घंटे
ओरिएंट एक्सप्रेस रेलमार्ग ने पेरिस से इस्तांबूल तक की यात्रा में लगने वाले समय को आश्चर्यजनक रूप से कम कर दिया है। पहले समुद्री मार्ग से इस यात्रा में लगभग दस दिन का समय लगता था, जिसे इस रेलमार्ग ने घटाकर केवल छियानवे घंटे कर दिया। यह मार्ग यूरोप के कई देशों से होकर गुजरता है और पनीर, शराब और फल जैसी मूल्यवान वस्तुओं के परिवहन के लिए प्रसिद्ध है, जिससे अंतर-यूरोपीय व्यापार में सुधार हुआ है।

60. (B) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
समुद्री परिवहन भारी पदार्थों को एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप तक ले जाने का सबसे सस्ता साधन है क्योंकि इसमें मार्गों के निर्माण की आवश्यकता नहीं होती। आधुनिक यात्री जहाज राडार और बेतार के संचार साधनों जैसी उन्नत सुविधाओं से लैस होते हैं, जो यात्रा को सुरक्षित बनाते हैं। इसके अतिरिक्त, कंटेनरों के बढ़ते प्रयोग ने बंदरगाहों पर माल के निपटान की प्रक्रिया को सुव्यवस्थित किया है, जिससे वैश्विक व्यापार की दक्षता बढ़ी है।

61. (C) सोना, हीरे, ताँबा, टिन जैसे समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों का होना
उत्तमाशा अंतरीप समुद्री मार्ग के माध्यम से होने वाले व्यापार में वृद्धि का मुख्य कारण दक्षिण अफ्रीका और पूर्वी अफ्रीकी क्षेत्रों में सोना, हीरा, तांबा और टिन जैसे समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता है। हालाँकि स्वेज नहर एक छोटा मार्ग प्रदान करती है, लेकिन भारी माल ढोने वाले कई जहाज अभी भी इस मार्ग का उपयोग करते हैं। यह मार्ग औद्योगिक पश्चिम यूरोप को विकसित होते अफ्रीकी बाजारों से जोड़ने में महत्वपूर्ण है।

62. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
दक्षिणी अटलांटिक समुद्री मार्ग पर यातायात उत्तरी अटलांटिक की तुलना में काफी विरल है। इसका प्रमुख कारण दक्षिण अमेरिका और अफ्रीका के महाद्वीपों में सीमित आर्थिक विकास, कम जनसंख्या घनत्व और संसाधनों की समानता है। जब दो क्षेत्रों के उत्पाद एक जैसे होते हैं, तो उनके बीच व्यापार की संभावनाएँ कम हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त, इन क्षेत्रों में बड़े औद्योगिक केंद्रों का अभाव भी यातायात कम होने का एक बड़ा कारण है।

63. (A) 2,480 कि.मी.
उत्तरी प्रशांत समुद्री मार्ग पर वैंकूवर और याकोहामा के बीच यात्रा करते समय 'वृहत् वृत्त मार्ग' का उपयोग किया जाता है। यह भौगोलिक तकनीक समुद्री यात्रा की दूरी को पारंपरिक मार्गों की तुलना में लगभग दो हजार चार सौ अस्सी किलोमीटर तक कम कर देती है। इससे जहाजों के ईंधन और समय की भारी बचत होती है। यह मार्ग उत्तरी अमेरिका और पूर्वी एशिया के बीच व्यापारिक संबंधों को सुगम बनाने में अत्यधिक प्रभावी सिद्ध हुआ है।

64. (B) पनामा नहर
दक्षिणी प्रशांत समुद्री मार्ग का उपयोग करते समय जहाजों को हांगकांग, फिलीपींस और इंडोनेशिया जैसे एशियाई देशों तक पहुँचने के लिए पमाना नहर से होकर गुजरना पड़ता है। यह नहर अटलांटिक और प्रशांत महासागरों के बीच एक संक्षिप्त कड़ी प्रदान करती है, जिससे जहाजों को दक्षिण अमेरिका का चक्कर लगाने की आवश्यकता नहीं होती। यह मार्ग पनामा को सिडनी से भी जोड़ता है और वैश्विक जलमार्ग तंत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

65. (B) तटीय नौ परिवहन
यूरोप के शेनगेन देशों की भौगोलिक स्थिति और उनकी लंबी तटरेखा तटीय नौ परिवहन के विकास के लिए अत्यंत अनुकूल है। इन देशों के बीच सीमाओं की सुगमता और बंदरगाहों का सुविकसित जाल जहाजों को एक देश के तट से दूसरे देश के तट तक माल ले जाने में मदद करता है। तटीय नौ परिवहन सड़क या रेल परिवहन की तुलना में सस्ता पड़ता है और भारी माल के परिवहन के लिए प्रभावी है।

66. (A) 160 कि.मी. लंबी, 11 से 15 मीटर गहरी
स्वेज नहर की कुल लंबाई लगभग एक सौ साठ किलोमीटर है और इसकी औसत गहराई ग्यारह से पंद्रह मीटर के बीच है। यह मानव निर्मित जलमार्ग मिस्र के रेगिस्तानी इलाके से होकर गुजरता है और इसमें किसी भी प्रकार के जलबंधक तंत्र की आवश्यकता नहीं है क्योंकि यह समुद्र तल के बराबर है। इसकी चौड़ाई और गहराई को समय-समय पर बढ़ाया गया है ताकि बड़े मालवाहक जहाज इसमें से सुरक्षित गुजर सकें।

67. (C) 10-12 घंटे
स्वेज नहर को पार करने के लिए जलयानों को औसतन दस से बारह घंटे का समय लगता है। इस सीमित समय में जहाज एक महासागर से दूसरे महासागर में प्रवेश कर जाते हैं, जिससे यात्रा के कई दिन बच जाते हैं। प्रतिदिन लगभग सौ जहाज इस नहर से गुजरते हैं, और इसकी सुगम बनावट के कारण यहाँ यातायात का प्रवाह निरंतर बना रहता है। यह समय की बचत वैश्विक व्यापार रसद लागत को कम करती है।

68. (D) पनामा नहर
पनामा नहर एक महत्वपूर्ण 'नौ परिवहन नहर' है जो पूर्वी और पश्चिमी विश्व के बीच एक प्रवेश द्वार की तरह कार्य करती है। यह मध्य अमेरिका के पनामा स्थलडमरूमध्य को काटकर बनाई गई है और अटलांटिक को प्रशांत महासागर से जोड़ता है। यद्यपि इसका आर्थिक महत्व स्वेज नहर की तुलना में थोड़ा कम है, लेकिन यह संयुक्त राज्य अमेरिका के दोनों तटों के बीच की दूरी कम करने के लिए अनिवार्य है।

69. (C) 13,000 कि.मी.
पनामा नहर के निर्माण से न्यूयॉर्क और सैन फ्रांसिस्को के बीच की समुद्री दूरी में लगभग तेरह हजार किलोमीटर की भारी कमी आई है। पहले जहाजों को दक्षिण अमेरिका के दक्षिण छोर का चक्कर लगाकर लंबी और खतरनाक यात्रा करनी पड़ती थी। इस नहर ने इस दूरी को अत्यधिक संक्षिप्त कर दिया है, जिससे न केवल ईंधन और समय की बचत होती है, बल्कि व्यापारिक समन्वय में भी अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।

70. (C) 2, 3, 4, 1
भारत के अंतरिक्ष इतिहास में प्रमुख उपग्रहों के प्रक्षेपण का सही क्रम इस प्रकार है: सबसे पहले 1975 में 'आर्यभट्ट' का सफल प्रक्षेपण हुआ। इसके बाद 1979 में 'भास्कर-1' को अंतरिक्ष में भेजा गया। फिर 1980 में 'रोहिणी' उपग्रह को स्वदेशी प्रक्षेपण यान के माध्यम से कक्षा में स्थापित किया गया। अंततः 1981 में संचार उपग्रह 'एप्पल' का प्रक्षेपण हुआ। इन चरणों ने भारत को संचार क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाया।

71. (D) सड़क परिवहन से प्रतिस्पर्धा
आंतरिक जलमार्गों के विकास को नहरों की चौड़ाई, गहराई, जल प्रवाह की निरंतरता और उपयोग की जाने वाली तकनीक जैसे कारक सीधे प्रभावित करते हैं। सड़क परिवहन से प्रतिस्पर्धा एक बाहरी आर्थिक चुनौती तो हो सकती है, लेकिन यह स्वयं जलमार्ग की भौतिक संरचना या उसकी नौगम्यता के विकास का आंतरिक कारक नहीं है। जलमार्गों की सफलता मुख्य रूप से उनकी प्राकृतिक स्थिति और भारी माल वहन की क्षमता पर निर्भर करती है।

72. (A) 700 कि.मी.
राइन नदी अपने मुहाने पर स्थित नीदरलैंड के रोटरडैम बंदरगाह से लेकर स्विट्ज़रलैंड के बेसल तक लगभग सात सौ किलोमीटर की लंबाई में नौकायन के लिए उपयुक्त है। यह मार्ग यूरोप के सबसे घने औद्योगिक क्षेत्रों से होकर गुजरता है, जिससे यह भारी कच्चे माल और औद्योगिक उत्पादों के परिवहन के लिए अनिवार्य जलमार्ग बन गया है। इसकी उच्च गहराई के कारण यहाँ बड़े जहाजों का आवागमन सुगम रहता है।

73. (C) वोल्गा जलमार्ग
रूस का वोल्गा जलमार्ग ग्यारह हजार दो सौ किलोमीटर तक नौकायन की सुविधा प्रदान करता है, जो इसे देश के सबसे महत्वपूर्ण आंतरिक संचार मार्गों में से एक बनाता है। यह नदी रूस के विशाल कृषि और औद्योगिक क्षेत्रों को जोड़ते हुए अंततः कैस्पियन सागर में गिरती है। वोल्गा-डोन नहर के माध्यम से यह काला सागर तक भी पहुँच प्रदान करती है, जिससे रूस के आंतरिक क्षेत्रों का वैश्विक व्यापारिक संबंध स्थापित होता है।

74. (B) P-2, Q-1, R-3, S-4
विभिन्न परिवहन माध्यमों की अपनी विशिष्ट उपयोगिता है। सड़क परिवहन छोटी दूरियों और घर-घर सेवा के लिए श्रेष्ठ है। रेल परिवहन लंबी दूरी तक भारी पदार्थों को ले जाने के लिए उपयुक्त है। वायु परिवहन सबसे तीव्रगामी होने के कारण मूल्यवान वस्तुओं के लिए आदर्श है। जल परिवहन अंतरराष्ट्रीय व्यापार और भारी माल के वहन के लिए सबसे सस्ता साधन माना जाता है। ये सभी साधन अर्थव्यवस्था को सुचारु बनाते हैं।

75. (D) डुलुथ और बुफालो
उत्तरी अमेरिका के वृहद् झीलें-सेंट लारेंस जलमार्ग पर स्थित प्रमुख बंदरगाहों में डुलुथ और बुफालो शामिल हैं। डुलुथ

सुपीरियर झील के पश्चिमी छोर पर स्थित है और लौह अयस्क एवं अनाज के निर्यात के लिए प्रसिद्ध है। बुफालो ईरी झील के पूर्वी छोर पर स्थित एक महत्वपूर्ण औद्योगिक और व्यापारिक केंद्र है। ये बंदरगाह झील मार्ग को समुद्री मार्ग से जोड़ते हैं, जिससे महाद्वीप का अंतरराष्ट्रीय व्यापार सुलभ होता है।

76. (A) केवल 1 और 3
वायु परिवहन वर्तमान में परिवहन का तीव्रतम साधन है, जो समय की अत्यधिक बचत करता है। लंबी दूरी की यात्राओं और अंतरराष्ट्रीय दौरों के लिए यात्री इसे इसकी गति और आरामदायक सुविधाओं के कारण सबसे अधिक वरीयता देते हैं। यद्यपि यह काफी महंगा है, लेकिन युद्ध, आपदा प्रबंधन और बचाव कार्यों के दौरान वायु परिवहन की भूमिका अनिवार्य हो जाती है, जो इसके बहुआयामी सामरिक उपयोग को दर्शाती है।

77. (C) 35 घंटे
आधुनिक विमानन तकनीक और सुपरसोनिक जेट विमानों के विकास के कारण आज विश्व का कोई भी कोना एक-दूसरे से बहुत दूर नहीं रह गया है। वर्तमान समय में पृथ्वी का कोई भी स्थान अधिकतम पैंतीस घंटे की दूरी पर स्थित है। इस गतिशीलता ने वैश्विक संपर्क और संचार को अभूतपूर्व स्तर पर पहुँचा दिया है। समय और दूरी की सीमाओं के इस संकुचन ने दुनिया को 'वैश्विक ग्राम' बनाया है।

78. (D) पूर्व-पश्चिम
उत्तरी गोलार्ध में अंतर-महाद्वीपीय वायुमार्गों की एक सुस्पष्ट और सघन पट्टी पूर्व-पश्चिम दिशा में फैली हुई है। यह पट्टी मुख्य रूप से विकसित उत्तरी अमेरिका और पश्चिमी यूरोप के बीच स्थित है, जहाँ व्यापारिक यातायात का घनत्व विश्व में सर्वाधिक है। इन दोनों क्षेत्रों के बीच सघन आर्थिक संबंधों और उच्च आय वाले देशों की उपस्थिति के कारण हवाई मार्गों का यह नेटवर्क वैश्विक हवाई यातायात की मुख्य धुरी है।

79. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
दक्षिणी गोलार्ध में वायु सेवाओं का विकास उत्तरी गोलार्ध की तुलना में काफी सीमित रहा है। इसका मुख्य कारण यहाँ विरल जनसंख्या, विशाल महासागरीय विस्तार और स्थलखंडों की कमी है। साथ ही, कई देशों का अपेक्षाकृत कम आर्थिक विकास भी हवाई बुनियादी ढाँचे के विस्तार में बाधक रहा है। केवल कुछ विकसित और सघन बसे क्षेत्रों में ही अच्छी हवाई सेवाएँ उपलब्ध हैं, जबकि शेष भाग पीछे हैं।

80. (B) पाइपलाइनों द्वारा
न्यूज़ीलैंड में डेयरी उद्योग का विकास उच्च स्तर पर हुआ है, जहाँ फार्मों से फैक्ट्रियों तक दूध पहुँचाने के लिए पाइपलाइनों का विशेष रूप से उपयोग किया जाता है। यह परिवहन का एक अत्यंत कुशल और सुरक्षित माध्यम है जो दूध की ताजगी बनाए रखने और परिवहन लागत को कम करने में मदद करता है। पाइपलाइनों के माध्यम से तरल पदार्थों का यह संचलन समय बचाता है और सड़कों पर दबाव कम करता है।

81. (B) तेल और प्राकृतिक गैस
प्रस्तावित ईरान-भारत पाइपलाइन, जो पाकिस्तान से होकर गुजरने वाली है, मुख्य रूप से तेल और प्राकृतिक गैस के परिवहन के लिए तैयार की गई है। यह एक अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा गलियारा है जिसका उद्देश्य दक्षिण एशियाई क्षेत्र की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करना है। पाइपलाइनों के माध्यम से गैस का परिवहन सड़क टैंकरों की तुलना में अधिक किफायती और सुरक्षित माना जाता है। यह परियोजना क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देती है।

82. (A) 1, 3, 2, 4
संचार के साधनों का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया रही है, जिसकी शुरुआत टेलीग्राफ से हुई जिसने संदेशों की गति बढ़ाई। इसके बाद टेलीफोन के आविष्कार ने प्रत्यक्ष ध्वनि संचार को संभव बनाया। कालांतर में ऑप्टिक फाइबर तकनीक के आने से डेटा संप्रेषण की क्षमता में भारी वृद्धि हुई। अंततः इंटरनेट के उदय ने पूरी दुनिया को एक डिजिटल नेटवर्क में पिरो दिया, जिससे आज संचार तात्कालिक और वैश्विक हो गया है।

83. (C) इंटरनेट
वर्ष 1990 के दशक में दूरसंचार तकनीक का कंप्यूटर के साथ विलय होने से एक अत्यंत शक्तिशाली और समन्वित नेटवर्क का जन्म हुआ, जिसे 'इंटरनेट' के नाम से जाना जाता है। इस एकीकरण ने सूचनाओं के आदान-प्रदान के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया, जिससे दुनिया भर के करोड़ों लोग एक-दूसरे से जुड़ गए। इंटरनेट ने न केवल संचार को तीव्र बनाया, बल्कि इसने ई-कॉमर्स और शिक्षा की भी नींव रखी।

84. (D) 500 कि.मी. की दूरी तक लगने वाली लागत के
उपग्रह संचार की एक विशिष्ट विशेषता यह है कि इसमें लंबी दूरी तक संदेश भेजने की लागत दूरी पर निर्भर नहीं होती। उदाहरण के लिए, पाँच हजार किलोमीटर की दूरी तक संचार स्थापित करने की लागत उतनी ही होती है जितनी कि पाँच सौ किलोमीटर की दूरी के लिए। इसका कारण यह है कि उपग्रह सिग्नल पूरे कवर क्षेत्र में समान रूप से उपलब्ध होते हैं। यह तकनीक दूरदराज के संपर्क के लिए बेजोड़ है।

85. (C) इंटरनेट और उपग्रह संचार
इंटरनेट और उपग्रह संचार जैसी आधुनिक प्रणालियों ने 'वैश्विक ग्राम' की संकल्पना को साकार किया है। इन तकनीकों ने समय और स्थान की सीमाओं को समाप्त करते हुए सूचनाओं के तात्कालिक संप्रेषण को संभव बनाया है। आज दुनिया के किसी भी कोने में बैठा व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति से पल भर में जुड़ सकता है। इस डिजिटल एकीकरण ने सांस्कृतिक और आर्थिक दूरियों को कम कर पूरी दुनिया को परस्पर जोड़ा है।

86. (B) यह समाज की आधारभूत आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए रचा गया है।
परिवहन को एक संगठित सेवा उद्योग माना जाता है क्योंकि इसे समाज की आधारभूत आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए वैज्ञानिक रूप से तैयार किया गया है। यह केवल लाभ कमाने का माध्यम नहीं है, बल्कि आर्थिक विकास और संसाधनों के

129. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
पिछले कुछ वर्षों में सड़क परिवहन की बढ़ती माँग और वाहनों की संख्या के कारण सड़कों पर यातायात में नाटकीय वृद्धि हुई है। जब सड़क तंत्र का विस्तार इन बढ़ती जरूरतों के अनुरूप नहीं हो पाता, तो सड़कों पर यातायात संकुलन या भीड़भाड़ की समस्या उत्पन्न हो जाती है। यह समस्या शहरी क्षेत्रों में गंभीर है, जहाँ सीमित स्थान के कारण परिवहन दक्षता प्रभावित होती है, जिससे समय और ईंधन की हानि होती है।

130. (A) पेरिस और लंदन
चैनल टनल, जिसे 'यूरो टनल' के नाम से भी जाना जाता है, एक महत्वपूर्ण रेल सुरंग है जो इंग्लिश चैनल के नीचे से गुजरती हुई पेरिस और लंदन को आपस में जोड़ती है। यह सुरंग रेलमार्ग के माध्यम से यात्रियों और माल के लिए एक तीव्र, सुरक्षित और बारहमासी संपर्क प्रदान करती है। इसने दोनों देशों के बीच यात्रा के समय को कम कर दिया है और मुख्य भूमि यूरोप के साथ ब्रिटेन के व्यापारिक संबंधों को सुदृढ़ किया है।

131. (C) डार्विन और मेलबोर्न
ऑस्ट्रेलिया का पारमहाद्वीपीय स्टुवर्ट महामार्ग देश के उत्तरी छोर पर स्थित डार्विन को दक्षिण में मेलबोर्न से जोड़ता है। यह महामार्ग महाद्वीप के विशाल आंतरिक और शुष्क क्षेत्रों से होकर गुजरता है, जिससे उत्तर और दक्षिण के बीच सड़क मार्ग द्वारा सीधा संपर्क स्थापित होता है। यह सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सुदूर उत्तर को देश के विकसित दक्षिणी शहरी केंद्रों से जोड़कर वस्तुओं के संचलन को सुगम बनाता है।

132. (D) सड़क परिवहन
सड़क परिवहन एकमात्र ऐसा माध्यम है जो घर-घर सेवाएँ प्रदान करने में सक्षम है। यह छोटी दूरियों के लिए सबसे सस्ता और तीव्रगामी विकल्प है, क्योंकि इसमें माल को सीधे उत्पादन केंद्र से उपभोक्ता के स्थान तक पहुँचाया जा सकता है। अन्य साधनों के लिए अतिरिक्त लोडिंग की आवश्यकता होती है, जो लागत और समय बढ़ाती है। इसकी लचीली प्रकृति के कारण यह दैनिक जीवन और लघु उद्योगों के लिए अनिवार्य सेवा बन गया है।

133. (C) यूरोप
यूरोप महाद्वीप में विश्व का सघनतम और सबसे सुव्यवस्थित रेल तंत्र पाया जाता है। यहाँ लगभग चार लाख चालीस हजार किलोमीटर लंबे रेलमार्ग हैं, जिनमें से अधिकांश दोहरे पथ वाले हैं। बेल्जियम जैसे देशों में रेल घनत्व विश्व में सर्वाधिक है। यह व्यापक नेटवर्क औद्योगिक केंद्रों और घनी आबादी वाले शहरों को आपस में जोड़ता है, जिससे व्यापार अत्यंत कुशल बन जाता है। यहाँ की रेल सेवाएँ अपनी गति और आधुनिक तकनीक के लिए प्रसिद्ध हैं।

134. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
विभिन्न परिवहन मार्गों का उनके भौगोलिक क्षेत्रों से गहरा संबंध है। 'वृहद् ट्रंक मार्ग' उत्तरी अटलांटिक महासागर में स्थित है जो विश्व का व्यस्ततम व्यापारिक मार्ग है। पार-साइबेरियन रेलमार्ग एशिया को यूरोप से जोड़ता है। स्वेज नहर भूमध्य सागर और लाल सागर के बीच एक कड़ी है, जबकि पनामा नहर अटलांटिक और प्रशांत महासागरों को जोड़ती है। ये मार्ग अंतरराष्ट्रीय व्यापार को सुगम और किफायती बनाने में मदद करते हैं।

135. (D) दक्षिण अफ्रीका गणतंत्र
'ब्लू ट्रेन' दक्षिण अफ्रीका गणतंत्र की एक विश्व प्रसिद्ध विलासितापूर्ण रेल सेवा है जो केपटाउन से प्रेटोरिया के बीच चलती है। यह रेलमार्ग महाद्वीप के सुंदर परिदृश्यों से होकर गुजरता है और यात्रियों को उच्च स्तरीय सुविधाएँ प्रदान करता है। दक्षिण अफ्रीका का रेल नेटवर्क खनिज संसाधनों के निर्यात के लिए भी महत्वपूर्ण है, परंतु 'ब्लू ट्रेन' अपनी विशिष्टता के कारण वैश्विक पहचान रखती है। यह देश के रेल परिवहन की आधुनिकता का उदाहरण है।

136. (A) 6,400 कि.मी.
स्वेज नहर के निर्माण ने लिवरपूल और कोलंबो के बीच की समुद्री यात्रा को लगभग छह हजार चार सौ किलोमीटर कम कर दिया है। इससे पहले जहाजों को अफ्रीका के सुदूर दक्षिण से होकर लंबी दूरी तय करनी पड़ती थी। इस संक्षिप्त मार्ग ने न केवल समय की बचत की है, बल्कि ईंधन की लागत में भी भारी कटौती की है। यह वैश्विक व्यापारिक मार्गों में एक क्रांतिकारी परिवर्तन था, जिसने संपर्क को अधिक किफायती बना दिया।

137. (C) काला सागर
वोल्गा-डोन नहर रूस के आंतरिक जलमार्ग तंत्र की एक महत्वपूर्ण कड़ी है जो वोल्गा नदी को डोन नदी से जोड़ती है। इस नहर के माध्यम से कैस्पियन सागर से आने वाले जहाज डोन नदी के रास्ते होते हुए काला सागर तक पहुँच सकते हैं। यह जलमार्ग रूस के विशाल भू-भाग को भूमध्य सागर और वैश्विक समुद्री मार्गों तक सीधी पहुँच प्रदान करता है। भारी माल के परिवहन के लिए यह नहर आर्थिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण साधन है।

138. (A) नौ-परिवहन नहर
वायुयानों के निर्माण और उनके सुचारू संचालन के लिए विमानशाला, रनवे और ईंधन एवं नियमित रखरखाव की सुविधाओं की अत्यंत आवश्यकता होती है। ये तत्व उड़ान की सुरक्षा और विमानन सेवाओं की निरंतरता के लिए अनिवार्य हैं। इसके विपरीत, 'नौ-परिवहन नहर' का उपयोग जलयानों के लिए किया जाता है और इसका वायु परिवहन की कार्य-प्रणाली से कोई संबंध नहीं है। वायु परिवहन के लिए सुव्यवस्थित हवाई अड्डों और तकनीकी ढाँचे का होना ही मुख्य आवश्यकता है।

139. (D) सिडनी
अंतर-महाद्वीपीय वायुमार्गों के प्रमुख नोडीय बिंदुओं में न्यूयॉर्क, लंदन, पेरिस और शिकागो जैसे शहर शामिल हैं, जो वैश्विक हवाई यातायात के केंद्र हैं। ये शहर सघन आर्थिक गतिविधियों और विकसित विमानन बुनियादी ढाँचे के कारण

अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह अटलांटिक और प्रशांत महासागरों के बीच सीधा मार्ग प्रदान कर उत्तरी अमेरिका के दोनों तटों के बीच व्यापारिक दूरियों को कम कर क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देती है।

98. (A) राइन नदी
जर्मनी का प्रसिद्ध 'डसलडोर्फ' बंदरगाह राइन नदी के तट पर स्थित है। राइन नदी यूरोप का सबसे व्यस्त आंतरिक जलमार्ग है, जो जर्मनी के औद्योगिक हृदय स्थल 'रुहर' क्षेत्र की सेवा करती है। डसलडोर्फ जैसे बंदरगाह इस नदी के माध्यम से भारी कच्चे माल और निर्मित उत्पादों को समुद्री बंदरगाहों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह जलमार्ग जर्मनी की निर्यात आधारित अर्थव्यवस्था के लिए एक जीवन रेखा है।

99. (A) केवल 1 और 2
सुपरसोनिक विमान ध्वनि की गति से भी तेज उड़ने की क्षमता रखते हैं, जिससे लंबी दूरियों को बहुत कम समय में तय किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, ये विमान लंदन और न्यूयॉर्क के बीच की विशाल दूरी को मात्र साढ़े तीन घंटों में पूरा कर लेते हैं। यद्यपि ये तकनीक अत्यंत उन्नत है, परंतु उच्च परिचालन लागत के कारण यह सस्ता साधन नहीं है। इसका उपयोग मुख्य रूप से विशिष्ट यात्री सेवाओं के लिए होता है।

100. (D) 17 प्रतिशत
संयुक्त राज्य अमेरिका में कुल माल वहन क्षमता का लगभग सत्रह प्रतिशत भाग पाइपलाइनों के माध्यम से परिवहित किया जाता है। यह डेटा प्रति टन-किलोमीटर के आधार पर मापा जाता है और मुख्य रूप से पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस के संचलन को दर्शाता है। पाइपलाइनों का यह नेटवर्क अमेरिकी अर्थव्यवस्था की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए विश्वसनीय माध्यम प्रदान करता है, जो सड़क और रेल परिवहन के बोझ को कम करता है।

101. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
विकासशील देशों में उपग्रह तकनीक द्वारा संभव बनाया गया सेलफोन का उपयोग ग्रामीण संपर्क के लिए एक क्रांतिकारी कदम साबित हुआ है। सेलफोन के लिए पारंपरिक टेलीफोन लाइनों की तरह तार बिछाने की कोई आवश्यकता नहीं होती, जिससे दुर्गम क्षेत्रों में संचार नेटवर्क स्थापित करना आसान हो गया है। इस तकनीकी सुगमता ने ग्रामीण आबादी को मुख्यधारा की आर्थिक गतिविधियों और सूचनाओं से जोड़कर सामाजिक-आर्थिक विकास के द्वार खोले हैं।

102. (B) आँकड़ों का तीव्र एवं त्रुटिहीन संप्रेषण संभव।
ऑप्टिक फाइबर तारों का उपयोग करने का मुख्य लाभ यह है कि इनके माध्यम से बड़ी मात्रा में आँकड़ों का अत्यंत तीव्र और त्रुटिहीन संप्रेषण संभव होता है। यह तकनीक प्रकाश तरंगों का उपयोग करती है, जिससे सूचनाओं की गति पारंपरिक तांबे के तारों की तुलना में कहीं अधिक होती है। इसके अतिरिक्त, ये तार बाहरी विद्युत हस्तक्षेप से मुक्त होते हैं, जो संचार को अधिक विश्वसनीय और सुरक्षित बनाते हैं।

103. (D) ई-शिक्षा, वाणिज्य, प्रशासन और मेल सेवाएँ।
साइबर स्पेस इंटरनेट के माध्यम से लोगों के समकालीन सामाजिक और आर्थिक जीवन को व्यापक रूप से विस्तृत करता है। यह ई-शिक्षा, ई-वाणिज्य, ई-प्रशासन और ई-मेल जैसी विविध सेवाएँ प्रदान करके दूरियों को समाप्त कर देता है। इसके माध्यम से लोग घर बैठे दुनिया भर की सूचनाओं तक पहुँच सकते हैं और व्यापारिक लेन-देन कर सकते हैं। यह तकनीक न केवल समय की बचत करती है, बल्कि सूचनाओं के वैश्विक जुड़ाव को भी मजबूती देती है।

104. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
परिवहन शब्दावली में 'परिवहन जाल' परस्पर जुड़े मार्गों के प्रारूप को कहते हैं। 'महामार्ग' अबाधित यातायात के लिए बनी चौड़ी सड़कें होती हैं। 'यातायात प्रवाह' सड़कों पर वाहनों की मात्रा को दर्शाता है, जबकि 'नोडीय बिंदु' वह स्थान होता है जहाँ विभिन्न मार्ग आकर मिलते हैं। इन शब्दों का सही ज्ञान परिवहन तंत्र की संरचना को समझने के लिए आवश्यक है, क्योंकि ये किसी क्षेत्र की कनेक्टिविटी को परिभाषित करते हैं।

105. (C) ऊँचे भराव पर बने रेल मार्ग
भारी वर्षा और बाढ़ के समय ऊँचे भराव पर बने रेल मार्ग परिवहन का सबसे प्रभावी समाधान होते हैं क्योंकि वे जलभराव से सुरक्षित रहते हैं। सड़कों के विपरीत, जो पानी में डूब सकती हैं, सुव्यवस्थित रेल पटरियाँ संपर्क बनाए रखने में सक्षम होती हैं। यह विशेषता आपदाओं के दौरान रसद पहुँचाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। रेल तंत्र की यह मजबूती इसे विषम मौसम स्थितियों में विश्वसनीय परिवहन विकल्प बनाती है।

106. (A) काम के समय से पहले और बाद का समय
नगरों की सड़कों पर 'शीर्ष' समय वह होता है जब लोग काम पर जाने या घर लौटने के लिए बड़ी संख्या में निकलते हैं, जिससे सड़कों पर संकुलन होता है। इसके विपरीत, 'गर्त' समय वह होता है जब काम के घंटों के दौरान या रात के समय यातायात की मात्रा न्यूनतम हो जाती है। इन समयों का विश्लेषण शहरी नियोजन के लिए आवश्यक है ताकि भीड़भाड़ को कम करने हेतु उचित नीतियाँ बनाई जा सकें।

107. (D) उत्तर-दक्षिण
अफ्रीका में एक महत्वपूर्ण महामार्ग जो उत्तर में अल्जीरिया की राजधानी अल्जियर्स को दक्षिण में गुयाना के कोनाक्री से जोड़ता है, मुख्य रूप से उत्तर-दक्षिण दिशा में विस्तृत है। यह मार्ग सहारा मरुस्थल को पार करते हुए महाद्वीप के आंतरिक और तटीय भागों के बीच संपर्क स्थापित करता है। ऐसे महामार्ग अफ्रीका के क्षेत्रीय व्यापार और प्रशासनिक जुड़ाव को सुदृढ़ करने के लिए अनिवार्य हैं, क्योंकि ये दूरस्थ क्षेत्रों को जोड़ते हैं।

108. (B) इस्तांबूल (तुर्की)
पार-साइबेरियन रेलमार्ग अपनी मुख्य लाइन के साथ कई महत्वपूर्ण योजक मार्गों के माध्यम से जुड़ा हुआ है, जिनमें यूक्रेन में ओडेसा, उज़्बेकिस्तान में ताश्कंद और मंगोलिया में उलन बटोर शामिल हैं। ये शाखाएँ मध्य एशिया के विभिन्न हिस्सों को मुख्य रेलमार्ग से जोड़ती हैं। हालाँकि इस्तांबुल ओरिएंट

एक्सप्रेस का अंतिम स्टेशन है, परंतु यह पार-साइबेरियन रेलमार्ग की किसी सीधी शाखा या योजक मार्ग का हिस्सा नहीं है, जो रूस का मुख्य गलियारा है।

109. (C) गेहूँ और मांस
विनिपेग से थंडरखाड़ी तक का संवृत मार्ग पार-कैनेडियन रेलमार्ग का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह मार्ग विशेष रूप से कनाडा के प्रेयरी प्रदेशों से उत्पादित भारी मात्रा में गेहूँ और मांस के निर्यात के लिए विश्व के सबसे व्यस्त जलमार्गों और रेल संपर्कों में से एक है। यह मार्ग अनाज को वृहद् झीलों के माध्यम से वैश्विक बाजारों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे कनाडा की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है।

110. (D) नदी एक महत्वपूर्ण आंतरिक जलमार्ग के रूप में
पेरिस में एफिल टावर से दिखाई देने वाला सीन नदी का दृश्य इस नदी के एक महत्वपूर्ण आंतरिक जलमार्ग के रूप में उपयोग को प्रदर्शित करता है। यह नदी फ्रांस की राजधानी के हृदय से होकर गुजरती है और यात्रियों के साथ-साथ माल के परिवहन के लिए भी सक्रिय रूप से उपयोग की जाती है। सीन नदी का यह जलमार्ग न केवल पर्यटन के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि यह पेरिस की वाणिज्यिक गतिविधियों को भी सुगम बनाता है।

111. (A) नील नदी से निकली नहर
स्वेज नहर मार्ग पर इस्माइलिया नामक स्थान पर नील नदी से निकली हुई एक ताजे पानी की नहर आकर मिलती है। यह मीठे पानी की नहर स्वेज और पोर्ट सईद जैसे बंदरगाहों तथा नहर के किनारे बसी आबादी के लिए पीने के पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करती है। चूंकि स्वेज नहर खारे समुद्री पानी से भरी है, इसलिए यह ताजे पानी का स्रोत क्षेत्र के कृषि विकास और मानवीय बस्तियों के लिए जीवन रक्षक है।

112. (B) वर्तमान समय में रेलमार्गों से प्रतिस्पर्धा के कारण इनका महत्व कम हो गया है।
नदियाँ और नहरें प्राचीन काल से ही परिवहन के महत्वपूर्ण माध्यम रही हैं। वर्तमान समय में तकनीकी सुधारों के कारण ये अभी भी भारी माल के वहन के लिए रेलमार्गों की तुलना में अधिक किफायती साबित हो रही हैं। यद्यपि सड़क और रेल मार्ग तीव्र हैं, परंतु जलमार्गों का आर्थिक महत्व बना हुआ है। सिंचाई कार्यों के लिए जल के उपयोग से कुछ नदियों की नौगम्यता प्रभावित हुई है, फिर भी वे उपयोगी हैं।

113. (B) विमानशाला, भूमि पर उतारने, ईंधन तथा रख-रखाव की सुविधाएँ
वायु परिवहन के सफल संचालन के लिए केवल विमानों का होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि इसके लिए विमानशाला, रनवे, ईंधन आपूर्ति और नियमित रखरखाव जैसी बुनियादी सुविधाओं का होना अनिवार्य है। ये आधारभूत संरचनाएँ उड़ान की सुरक्षा और विमानों की कार्यक्षमता को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं। इसके अतिरिक्त, कुशल हवाई अड्डा प्रबंधन भी इस सेवा को प्रभावी बनाते हैं, जिससे यात्री और माल का आवागमन सुरक्षित रूप से संभव होता है।

114. (A) 2, 1, 3, 4
संचार के विकास का सही ऐतिहासिक क्रम टेलीग्राफ के उपयोग से शुरू होता है जिसने संदेशों की गति बढ़ाई। इसके बाद सेलफोन के आगमन ने ग्रामीण और सुदूर क्षेत्रों में संपर्क को सुगम बनाया। नब्बे के दशक में इंटरनेट के उदय ने सूचनाओं के आदान-प्रदान के वैश्विक जाल को जन्म दिया। अंततः आधुनिक उपग्रह संचार ने पूरी दुनिया को एक 'वैश्विक ग्राम' में बदल दिया, जहाँ कोई भी जानकारी तुरंत उपलब्ध हो जाती है।

115. (C) उपग्रह चित्रों और सूचनाओं
नगरीय नियोजन, प्रदूषण नियंत्रण और वन विनाश जैसे असैनिक क्षेत्रों की निगरानी के लिए आधुनिक उपग्रह चित्रों और सूचनाओं का उपयोग किया जाता है। ये उपग्रह डेटा धरातल की वास्तविक स्थिति को डिजिटल रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिससे वैज्ञानिक विश्लेषण और योजना बनाना आसान हो जाता है। उपग्रहों के माध्यम से प्राप्त तस्वीरें संसाधनों के कुशल प्रबंधन के लिए पारंपरिक मानचित्रों की तुलना में अधिक प्रभावी और विश्वसनीय स्रोत साबित हुई हैं।

116. (A) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
प्रारंभिक समय में परिवहन और संचार के साधन एक ही थे क्योंकि संदेशों को भौतिक रूप से ले जाना पड़ता था। आज दोनों ने सुस्पष्ट स्वरूप प्राप्त कर लिया है, जहाँ परिवहन माल और यात्रियों का वहन करता है जबकि संचार सूचनाओं का। परिवहन तंत्र विभिन्न क्षेत्रों के बीच योजक उपलब्ध कराता है, जो आर्थिक विकास के लिए अनिवार्य है। समाज के जीवन का स्तर इन दोनों तंत्रों की कार्यकुशलता पर गहराई से निर्भर करता है।

117. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
उत्तरी अमेरिका में विश्व का सबसे विस्तृत और विकसित रेलमार्ग तंत्र पाया जाता है। यहाँ रेलमार्गों का मुख्य उपयोग यात्री सेवाओं के बजाय लंबी दूरी के भारी माल जैसे अनाज, खनिज अयस्क और इमारती लकड़ी के परिवहन के लिए किया जाता है। हालांकि रेल तंत्र विशाल है, परंतु इसका विस्तार यहाँ की औद्योगिक माँग और भौगोलिक विशालता का परिणाम है। माल ढुलाई में इसकी प्रधानता इसे एक अनिवार्य साधन के रूप में स्थापित करती है।

118. (B) पेरिस से इस्तांबूल
ओरिएंट एक्सप्रेस यूरोप का एक प्रसिद्ध और ऐतिहासिक रेलमार्ग है जो पश्चिम में पेरिस को पूर्व में इस्तांबुल से जोड़ता है। यह मार्ग स्ट्रासबर्ग, म्यूनिख, वियना, बुडापेस्ट और बुखारेस्ट जैसे महत्वपूर्ण शहरों से होकर गुजरता है। इस रेलमार्ग ने यूरोपीय महाद्वीप के विभिन्न देशों के बीच व्यापारिक संबंधों को मजबूती प्रदान की है। इसके माध्यम से होने वाले त्वरित माल परिवहन ने विशेष रूप से पनीर और शराब के अंतरराष्ट्रीय व्यापार को सुगम बनाया है।

119. (D) होनोलूलू
दक्षिणी प्रशांत समुद्री मार्ग पर स्थित होनोलूलू एक महत्वपूर्ण मध्यवर्ती बंदरगाह के रूप में कार्य करता है। इसकी रणनीतिक स्थिति इसे विभिन्न महासागरीय मार्गों के मिलन बिंदु पर स्थापित करती है। यह जहाजों के लिए रसद, ईंधन और मरम्मत की सुविधाएँ प्रदान करने वाला एक प्रमुख विश्राम स्थल है। अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण यह अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और एशिया के बीच होने वाले समुद्री व्यापार में एक अनिवार्य कड़ी और रसद केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है।

120. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
विभिन्न जलमार्गों का अपना विशिष्ट भौगोलिक महत्व है। स्वेज नहर भूमध्य सागर को लाल सागर से जोड़ती है, जबकि पमाना नहर अटलांटिक और प्रशांत महासागरों के बीच संपर्क स्थापित करती है। राइन जलमार्ग उत्तरी अटलांटिक समुद्री मार्ग के साथ मिलकर यूरोप के औद्योगिक हृदय स्थल को वैश्विक व्यापार से जोड़ता है। वोल्गा जलमार्ग रूस का आंतरिक मार्ग है जो अंततः कैस्पियन सागर में गिरता है। ये जलमार्ग वैश्विक परिवहन दक्षता बढ़ाते हैं।

121. (C) 5,072 मीटर
चीन की क्विंघाई-तिब्बत रेल लाइन दुनिया की सबसे ऊँची रेल प्रणालियों में से एक है। इसकी यात्रा के दौरान सबसे ऊँचा बिंदु समुद्र तल से पाँच हजार बहत्तर मीटर की आश्चर्यजनक ऊँचाई पर स्थित है। यह रेलमार्ग तिब्बत के दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों को चीन के शेष हिस्सों से जोड़ता है। इतनी ऊँचाई पर ट्रेन चलाने के लिए विशेष तकनीकी सुधार किए गए हैं, जिससे विषम परिस्थितियों के बावजूद यात्रियों का सुगम परिवहन संभव हो पाया है।

122. (A) केवल 1 और 3
ऑस्ट्रेलिया का राष्ट्रीय रेलमार्ग पश्चिमी तट पर स्थित पर्थ को पूर्वी तट पर स्थित सिडनी से जोड़ता है, जो महाद्वीप के दक्षिणी भाग से होकर गुजरता है। न्यूज़ीलैंड में रेलमार्गों का विकास मुख्यतः उत्तरी द्वीप में हुआ है, जहाँ सघन जनसंख्या और औद्योगिक गतिविधियाँ अधिक हैं। ये रेल तंत्र दोनों देशों की अर्थव्यवस्था में कृषि उत्पादों के परिवहन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ऑस्ट्रेलिया का मार्ग विशेष रूप से रेगिस्तानी क्षेत्रों के बीच संपर्क का मुख्य आधार है।

123. (D) इसमें दोनों छोरों पर पत्तन सुविधाओं की कोई आवश्यकता नहीं होती।
जल परिवहन अपनी कम ऊर्जा लागत और मार्गों के निर्माण की आवश्यकता न होने के कारण सबसे सस्ता साधन है। इसमें विभिन्न आकार के जहाज चल सकते हैं जो भारी माल ढोने में सक्षम होते हैं। हालाँकि, यह कहना असत्य है कि इसमें बंदरगाह सुविधाओं की आवश्यकता नहीं होती। जल परिवहन की सफलता के लिए दोनों छोरों पर लोडिंग और भंडारण के लिए आधुनिक बंदरगाह सुविधाओं का होना अनिवार्य है, अन्यथा व्यापारिक गतिविधियाँ संभव नहीं होंगी।

124. (B) मैक्सिको की खाड़ी में स्थित तेल के कुओं से
'बिग इंच' पाइपलाइन संयुक्त राज्य अमेरिका के ऊर्जा बुनियादी ढाँचे का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो मैक्सिको की खाड़ी में स्थित तेल के कुओं से कच्चा तेल एकत्र करती है। यहाँ से यह तेल देश के उत्तर-पूर्वी राज्यों में स्थित रिफाइनरियों और औद्योगिक केंद्रों तक परिवहित किया जाता है। पाइपलाइनों का यह उपयोग सड़क टैंकरों की तुलना में अधिक सुरक्षित है, जो देश की औद्योगिक जरूरतों के लिए ऊर्जा की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करता है।

125. (C) संयुक्त राज्य अमेरिका के टेलीफोन उद्योग पर
अमेरिकी टेलीग्राफ और टेलीफोन कंपनी (AT&T) का एक समय संयुक्त राज्य अमेरिका के टेलीफोन उद्योग पर पूर्ण एकाधिकार था। इस कंपनी ने देश भर में संचार नेटवर्क बिछाने और टेलीफोन सेवाओं के विस्तार में प्रमुख भूमिका निभाई। सूचना क्रांति के प्रारंभिक दौर में इस एकाधिकार ने संचार के मानकीकरण और बुनियादी ढाँचे के विकास को गति दी। टेलीफोन संचार के इतिहास में AT&T का योगदान और प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण और दूरगामी रहा है।

126. (D) 19 अप्रैल 1975
भारत ने अपने पहले उपग्रह 'आर्यभट्ट' का सफल प्रक्षेपण उन्नीस अप्रैल उन्नीस सौ पचहत्तर को किया था। यह ऐतिहासिक उपलब्धि सोवियत संघ के सहयोग से प्राप्त की गई थी, जिसने भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम की नींव रखी। इसके सफल मिशन ने देश में वैज्ञानिक अनुसंधान, उपग्रह संचार और भविष्य के अंतरिक्ष अभियानों के लिए आत्मविश्वास प्रदान किया, जिससे भारत एक वैश्विक अंतरिक्ष शक्ति बना।

127. (A) 3, 2, 1, 4
ऐतिहासिक घटनाओं के क्रम में सबसे पहले 1825 में प्रथम सार्वजनिक रेलमार्ग का संचालन प्रारंभ हुआ। इसके पश्चात 1869 में स्वेज नहर का निर्माण पूरा हुआ, जिसने वैश्विक समुद्री व्यापार को नई दिशा दी। 1880 के दशक में पार-कैनेडियन रेलमार्ग का निर्माण हुआ जो कनाडा की एकता का प्रतीक बना। अंततः 1914 में पमाना नहर के निर्माण के साथ ही अटलांटिक और प्रशांत महासागरों के बीच एक नया जलमार्ग स्थापित हुआ।

128. (A) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
पाइपलाइनों का उपयोग जल, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस जैसे तरल एवं गैसीय पदार्थों के अबाधित परिवहन के लिए किया जाता है। न्यूज़ीलैंड में फार्मों से फैक्ट्रियों तक दूध का संचलन भी इसी माध्यम से होता है। 'बिग इंच' पाइपलाइन अमेरिका में मैक्सिको की खाड़ी से तेल उत्तर-पूर्वी राज्यों तक पहुँचाती है। यह कहना गलत है कि इनका उपयोग केवल तरल पदार्थों के लिए होता है, क्योंकि गैस परिवहन में भी इनकी भूमिका अग्रणी है।

कहा जाता है। यह तंत्र सड़कों, रेल पटरियों या अन्य माध्यमों का एक समन्वित ढाँचा होता है जो वस्तुओं और व्यक्तियों की गतिशीलता को सुनिश्चित करता है। एक विकसित परिवहन जाल किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास का आधार होता है क्योंकि यह कुशल संपर्क और सुगम पहुँच प्रदान करता है।

44. (B) विभिन्न प्रकार के विचारों का आदान-प्रदान
परिवहन एक ऐसी सेवा है जिसमें व्यक्तियों और वस्तुओं को भौतिक रुप से एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जाता है। इसमें मनुष्यों, पशुओं और विभिन्न प्रकार की गाड़ियों का उपयोग स्थल, जल या वायु मार्गों पर किया जाता है। इसके विपरीत, विचारों का आदान-प्रदान संचार की श्रेणी में आता है। परिवहन समाज की आधारभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए रचित एक संगठित सेवा उद्योग है, जो भौगोलिक दूरियों को कम करता है।

45. (A) 2, 3, 1
परिवहन के विकासक्रम में सबसे पहले 'पहिए' का आविष्कार हुआ, जिसने प्रारंभिक गतिशीलता को सरल बनाया। इसके पश्चात अठारहवीं शताब्दी में 'भाप के इंजन' ने यांत्रिक ऊर्जा के माध्यम से भारी परिवहन में क्रांति ला दी। अंततः 'अंतर्दहन इंजन' के आने से मोटर वाहनों और विमानों का उदय हुआ, जिसने गति के नए आयाम स्थापित किए। इन तीनों आविष्कारों ने समय के साथ मानव सभ्यता की यात्रा को पूरी तरह से परिवर्तित कर दिया है।

46. (A) केवल 1 और 2
उत्तरी अमेरिका में महामार्गों का सघनतम जाल पाया जाता है, जहाँ परिवहन बुनियादी ढाँचा अत्यधिक विकसित है। यहाँ प्रत्येक प्रमुख स्थान सामान्यतः किसी न किसी महामार्ग से बीस किलोमीटर के दायरे में स्थित होता है, जो तीव्र और अबाधित आवागमन सुनिश्चित करता है। यद्यपि यहाँ कई प्रसिद्ध राजमार्ग हैं, परंतु ट्रांस-कनाडियन और पान-अमेरिकन जैसे मार्गों के कुछ हिस्से अभी भी विकासाधीन या विशिष्ट भौगोलिक खंडों में खंडित हो सकते हैं।

47. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
रुस के विशाल भौगोलिक विस्तार और लंबी दूरियों के कारण यहाँ रेलमार्गों का महत्व महामार्गों की तुलना में कहीं अधिक है। रुस का क्षेत्रफल इतना विस्तृत है कि भारी माल और बड़ी संख्या में यात्रियों को एक छोर से दूसरे छोर तक ले जाने के लिए रेल तंत्र अधिक प्रभावी और किफायती साबित होता है। रेलमार्ग ही यहाँ के आर्थिक एकीकरण और परिवहन की मुख्य धुरी के रूप में कार्य करते हैं।

48. (B) दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता
भारत की 'स्वर्णिम चतुर्भुज' परियोजना एक राष्ट्रीय राजमार्ग नेटवर्क है जो देश के चार प्रमुख महानगरों—दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता—को आपस में जोड़ता है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य इन बड़े आर्थिक केंद्रों के बीच यात्रा के समय और दूरी को कम करना तथा व्यापारिक माल के संचलन को सुगम बनाना है। यह आधुनिक बुनियादी ढाँचा भारत के औद्योगिक विकास और अंतर-राज्यीय संपर्क को सुदृढ़ करने में सहायक हुआ है।

49. (B) सुदूर क्षेत्रों को जोड़ना और सुरक्षा देना।
सीमावर्ती सड़कों का प्राथमिक उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के पास स्थित सुदूर और दुर्गम क्षेत्रों को देश के मुख्य मार्गों से जोड़ना है। ये सड़कें राष्ट्रीय सुरक्षा के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं क्योंकि ये रक्षा बलों के लिए रसद और सैन्य उपकरणों की त्वरित आवाजाही सुनिश्चित करती हैं। साथ ही, ये ग्रामीण आबादी के लिए आर्थिक विकास के अवसर पैदा करती हैं, जिससे इन क्षेत्रों की प्रशासनिक निकटता बढ़ती है।

50. (A) ब्रिटेन, सं. रा. अमेरिका, जापान और भारत
दैनिक आवागमन की रेलें या कम्प्यूटर ट्रेनें ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और भारत जैसे देशों में अत्यधिक लोकप्रिय हैं। ये ट्रेनें बड़े महानगरों और उनके उपनगरीय क्षेत्रों के बीच लाखों कामकाजी लोगों को प्रतिदिन सुरक्षित और किफायती यात्रा प्रदान करती हैं। इन देशों में सघन शहरीकरण के कारण ये रेल सेवाएँ परिवहन तंत्र की जीवन रेखा बन गई हैं, जो सड़कों पर वाहनों के दबाव को कम करती हैं।

51. (C) लंदन और पेरिस
यूरो टनल ग्रुप द्वारा संचालित चैनल टनल एक अद्भुत इंजीनियरिंग संरचना है जो इंग्लिश चैनल के नीचे से गुजरती हुई लंदन को पेरिस से जोड़ता है। यह सुरंग रेलमार्ग के माध्यम से यूनाइटेड किंगडम और मुख्य भूमि यूरोप के बीच तीव्र और अबाधित संपर्क प्रदान करती है। इसने यात्रा के समय को काफी कम कर दिया है और समुद्री मार्गों पर निर्भरता कम करते हुए व्यापार और पर्यटन को नया आयाम दिया है।

52. (D) चिली
चिली दक्षिण अमेरिका का एकमात्र ऐसा देश है जहाँ रेलमार्गों की लंबाई काफी महत्वपूर्ण है और वे विशेष रूप से तटीय केंद्रों को आंतरिक खनन क्षेत्रों से जोड़ते हैं। यहाँ के रेल तंत्र का मुख्य उपयोग तांबा और अन्य खनिजों को पहाड़ों से निकालकर निर्यात के लिए बंदरगाहों तक पहुँचाने हेतु किया जाता है। यह विशिष्ट रेल नेटवर्क चिली की खनिज आधारित अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत आवश्यक और परिवहन का मुख्य सहारा है।

53. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
अफ्रीका के रेलमार्गों का विकास संसाधनों के दोहन के लिए किया गया है। बेंगुएला रेलमार्ग अंगोला को कटंगा-जाम्बिया ताँबा पेटी से जोड़ता है, जबकि तंजानिया रेलमार्ग जाम्बिया को दार-ए-सलाम बंदरगाह तक पहुँच प्रदान करता है। बोत्सवाना के रेलमार्ग स्थलरुद्ध राज्यों को दक्षिण अफ्रीकी तंत्र से जोड़ते हैं। दक्षिण अफ्रीका की 'ब्लू ट्रेन' केपटाउन से प्रेटोरिया के बीच चलती है। ये सभी मार्ग क्षेत्रीय आर्थिक गतिविधियों और व्यापार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

दुनिया भर के हवाई मार्गों को आपस में जोड़ते हैं। सिडनी यद्यपि एक महत्वपूर्ण शहर है, परंतु उत्तरी गोलार्ध के व्यस्ततम हवाई गलियारों से भौगोलिक दूरी के कारण इसे इन वैश्विक नोडीय बिंदुओं की तुलना में प्राथमिक नोड नहीं माना जाता है।

140. (C) केवल 1, 2 और 3
रूस में यूराल के पश्चिम में स्थित औद्योगिक क्षेत्र में महामार्गों का सघन जाल पाया जाता है, जहाँ मास्को इस पूरे तंत्र की मुख्य धुरी के रूप में कार्य करता है। यहाँ से निकलने वाले विभिन्न राजमार्ग देश के विभिन्न हिस्सों को जोड़ते हैं, जैसे मास्को-ब्लाडीवोस्टक महामार्ग जो सुदूर पूर्वी प्रदेशों की सेवा करता है। हालाँकि ये सड़कें महत्वपूर्ण हैं, परंतु रूस के विशाल क्षेत्रफल के कारण आज भी रेलमार्गों का आर्थिक महत्व अधिक बना हुआ है।

141. (C) रज्जुमार्ग (Cableway)
तीव्र ढाल वाले पर्वतों और गहरी खानों में जहाँ सड़क या रेल मार्ग बनाना कठिन होता है, वहाँ रज्जुमार्ग (Cableway) परिवहन का सबसे उपयुक्त साधन साबित होता है। इस तकनीक में तारों और ट्रॉलियों का उपयोग करके माल और व्यक्तियों को ऊँचाई वाले स्थानों तक पहुँचाया जाता है। यह दुर्गम क्षेत्रों में रसद आपूर्ति और खनिजों के परिवहन के लिए प्रभावी समाधान है। पर्वतीय पर्यटन और खनन उद्योगों में इसकी भूमिका आर्थिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

142. (D) 0.65 कि.मी. प्रतिवर्ग कि.मी.
उत्तरी अमेरिका में महामार्गों का घनत्व लगभग 0.65 किलोमीटर प्रति वर्ग किलोमीटर है। यह विश्व के उच्चतम सड़क घनत्वों में से एक है, जो इस क्षेत्र के उन्नत बुनियादी ढाँचे और परिवहन के प्रति इसकी उच्च निर्भरता को दर्शाता है। यहाँ की सड़कों का सघन जाल औद्योगिक केंद्रों और शहरी बस्तियों के बीच त्वरित संपर्क सुनिश्चित करता है। विकसित अर्थव्यवस्था ने इस व्यापक सड़क तंत्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो क्षेत्रीय गतिशीलता को बढ़ावा देता है।

143. (A) ल्हासा
चीन ने तिब्बती क्षेत्र में एक नवीन महामार्ग का निर्माण किया है जो चेगडू शहर को तिब्बत की राजधानी ल्हासा से जोड़ता है। यह मार्ग अत्यधिक ऊँचाई और कठिन पहाड़ी भूभाग से होकर गुजरता है, जो इंजीनियरिंग का एक बेहतरीन उदाहरण है। इस महामार्ग के बनने से इस सुदूर और दुर्गम क्षेत्र की पहुँच चीन के मुख्य भूभाग के साथ सुगम हो गई है। यह परियोजना क्षेत्र के आर्थिक विकास और रणनीतिक संपर्क को मजबूत करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

144. (B) न्यूज़ीलैंड
न्यूज़ीलैंड में रेलमार्ग मुख्य रूप से कृषि क्षेत्रों और उनके उत्पादों को अपनी सेवाएँ प्रदान करते हैं। यहाँ का रेल तंत्र फार्मों को प्रसंस्करण केंद्रों और बंदरगाहों से जोड़ने के लिए तैयार किया गया है, जिससे डेयरी और मांस उत्पादों का निर्यात सुगम हो सके। चूँकि यहाँ की अर्थव्यवस्था में प्राथमिक उत्पादन का बड़ा हिस्सा है, इसलिए रेल नेटवर्क का विस्तार कृषि प्रधान क्षेत्रों में अधिक किया गया है। यह संसाधनों के कुशल संचलन और आर्थिक विकास का आधार है।

145. (B) कटंगा-जाम्बिया ताँबा पेटी
अफ्रीका का प्रसिद्ध बेंगुएला रेलमार्ग अंगोला से शुरु होकर कटंगा-जाम्बिया ताँबा पेटी तक विस्तृत है। इस रेलमार्ग का मुख्य उद्देश्य आंतरिक क्षेत्रों में स्थित ताँबे और अन्य महत्वपूर्ण खनिजों को अटलांटिक तट पर स्थित बंदरगाहों तक पहुँचाना है ताकि उनका अंतरराष्ट्रीय निर्यात किया जा सके। यह रेल मार्ग मध्य अफ्रीका के स्थलरुद्ध खनिज समृद्ध क्षेत्रों के लिए एक जीवन रेखा के रूप में कार्य करता है और संसाधनों के दोहन और वैश्विक व्यापारिक पहुँच के लिए अनिवार्य है।

146. (A) पनीर, सुअर का मांस, जई, शराब, फल
ओरिएंट एक्सप्रेस रेलमार्ग मुख्य रूप से उच्च मूल्य वाली और विशिष्ट खाद्य वस्तुओं के परिवहन के लिए प्रसिद्ध है। इसके माध्यम से पनीर, सुअर का मांस, जई, शराब और विभिन्न प्रकार के फलों का निर्यात किया जाता है। यह रेलमार्ग पेरिस और इस्तांबुल के बीच विभिन्न यूरोपीय देशों के कृषि उत्पादों को बाजारों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी तीव्र गति और सुव्यवस्थित सेवा ने इन विशिष्ट उत्पादों के अंतरराष्ट्रीय व्यापार को एक नया आयाम प्रदान किया है।

147. (C) जलयानों को विभिन्न ऊँचाई की समुद्री सतह पर ऊपर-नीचे करना
पनामा नहर में स्थित जलबंधक तंत्र का मुख्य कार्य जलयानों को विभिन्न ऊँचाई वाली समुद्री सतहों पर ऊपर उठाना या नीचे उतारना है। चूंकि नहर का मध्य भाग समुद्र तल से काफी ऊँचा है, इसलिए जहाजों को चरणों में पानी भरकर या निकालकर इस ऊँचाई तक पहुँचाया जाता है। यह जटिल इंजीनियरिंग प्रक्रिया जहाजों को स्थलडमरुमध्य के आर-पार जाने में मदद करती है, जिससे अटलांटिक और प्रशांत महासागरों के बीच सुरक्षित नौपरिवहन संभव हो पाता है।

148. (D) उत्तरी अटलांटिक समुद्री मार्ग
राइन जलमार्ग यूरोप के समृद्ध औद्योगिक क्षेत्रों को उत्तरी अटलांटिक समुद्री मार्ग से जोड़ता है। रोटरडैम जैसे बड़े बंदरगाह के माध्यम से यह नदी यूरोप के आंतरिक व्यापार को वैश्विक महासागरीय मार्गों तक पहुँचाती है। यह जलमार्ग भारी कच्चे माल के आयात और निर्मित वस्तुओं के निर्यात के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी है। उत्तरी अटलांटिक मार्ग के साथ इसका एकीकरण इसे विश्व के सबसे सक्रिय व्यापारिक गलियारों में से एक बनाता है, जो महाद्वीपीय आर्थिक विकास को गति देता है।

149. (C) 540 करोड़
वर्ष 2023 तक वैश्विक स्तर पर इंटरनेट प्रयोक्ताओं की अनुमानित संख्या लगभग पाँच सौ चालीस करोड़ पहुँच चुकी है। यह आँकड़ा सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुई अभूतपूर्व प्रगति और डिजिटल पहुँच के विस्तार को दर्शाता है। इंटरनेट ने दुनिया भर के लोगों को एक साझा डिजिटल मंच पर लाकर संचार और व्यापार के तरीकों को मौलिक रूप से बदल दिया है। इस

34. विश्व व्यापार संगठन (WTO) की स्थापना कब हुई?
(A) जनवरी 1995
(B) जनवरी 1990
(C) जनवरी 1948
(D) जनवरी 2001

35. विश्व व्यापार संगठन (WTO) के कार्यों में क्या सम्मिलित नहीं है?
(A) वैश्विक व्यापार नियमों का व्यवहार
(B) सदस्य देशों के विवादों का निपटारा
(C) सदस्य राष्ट्रों की आंतरिक राजनीति
(D) सेवा व्यापार को सम्मिलित करना

36. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) के रुप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): विश्व व्यापार संगठन की आलोचना यह कह कर की जाती है कि यह गरीब और अमीर के बीच की खाई को बढ़ा रहा है।
तर्क (R): WTO में प्रभावशाली राष्ट्र केवल अपने वाणिज्यिक हितों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और विकसित देशों ने अपने बाज़ारों को पूरी तरह से नहीं खोला है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

37. विश्व व्यापार संगठन का मुख्यालय कहाँ स्थित है?
(A) न्यूयॉर्क, संयुक्त राज्य
(B) लंदन, यू.के.
(C) जिनेवा, स्विटजरलैंड
(D) पेरिस, फ्रांस

38. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के सकारात्मक प्रभावों में से कौन सा एक है?
(A) अन्य देशों पर निर्भरता
(B) वस्तुओं एवं सेवाओं की विश्वव्यापी उपलब्धता
(C) विकास का असमान स्तर
(D) युद्ध का कारण बनने वाली प्रतिद्वंद्विता

39. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. अन्य देशों पर निर्भरता
2. विकास का असमान स्तर
3. शोषण
4. युद्ध का कारण बनने वाली प्रतिद्वंद्विता
5. ज्ञान एवं संस्कृति का प्रस्फुरण
उपरोक्त में से कौन-से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं?
(A) केवल 1, 2, 3 और 4
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

40. विश्वव्यापी व्यापार के परिणामस्वरुप संसाधनों पर क्या प्रभाव पड़ता है?
(A) संसाधनों के नष्ट होने की दर उनके पुनर्भरण की दर से तीव्र होती है।
(B) संसाधनों के नष्ट होने की दर उनके पुनर्भरण की दर से धीमी होती है।
(C) संसाधनों के उपयोग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
(D) केवल नवीकरणीय संसाधनों का उपयोग बढ़ता है।

41. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के मुख्य प्रवेश द्वार किन्हें कहा जाता है?
(A) हवाई अड्डे और रेलवे स्टेशन
(B) केवल राजमार्ग
(C) पोताश्रय तथा पत्तन
(D) नदियाँ और नहरें

42. एक पत्तन द्वारा निपटाया गया नौभार किसका सूचक होता है?
(A) उसके पृष्ठ प्रदेश के विकास के स्तर का
(B) पत्तन के आकार का
(C) देश की जनसंख्या का
(D) जहाजों की गति का

43. पत्तनों का वर्गीकरण सामान्यतः किस आधार पर किया जाता है?
(A) उनके आकार के आधार पर
(B) उनकी गहराई के आधार पर
(C) उनके निर्माण की तिथि के आधार पर
(D) उनके द्वारा सँभाले गए यातायात के प्रकार के अनुसार

44. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (पत्तन का प्रकार)
P. औद्योगिक पत्तन
Q. वाणिज्यिक पत्तन
R. विस्तृत पत्तन
List II: (विशेषता)
1. सामान्य नौभार संवेष्टित उत्पादों का निपटान
2. थोक नौभार के लिए विशेषीकृत
3. बड़े परिमाण में सामान्य नौभार का थोक में प्रबंध
(A) P-1, Q-2, R-3
(B) P-2, Q-1, R-3
(C) P-3, Q-2, R-1
(D) P-2, Q-3, R-1

45. अनाज, चीनी, अयस्क और तेल जैसे थोक नौभार के लिए विशेषीकृत पत्तन क्या कहलाते हैं?
(A) वाणिज्यिक पत्तन
(B) विस्तृत पत्तन
(C) औद्योगिक पत्तन
(D) नौसेना पत्तन

160. (A) क्षेत्रीय स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और आर्थिक एकीकरण
यूरोप का एकीकृत जलमार्ग नेटवर्क, जो राइन और डेन्यूब जैसी प्रमुख अंतरराष्ट्रीय नदियों को आपस में जोड़ता है, सफल सहयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह नेटवर्क न केवल पड़ोसी देशों के बीच सुगम व्यापार सुनिश्चित करता है, बल्कि क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण को भी मजबूती से बढ़ावा देता है। यह बुनियादी ढाँचा साझा आर्थिक विकास और कुशल संसाधन प्रबंधन का एक सफल वैश्विक मॉडल है।

161. (D) यात्रियों के लिए एक केंद्रीय स्थानांतरण बिंदु के रूप में कार्य करना
हब-एंड-स्पोक मॉडल में हब एक विशाल और रणनीतिक हवाई अड्डे के रूप में कार्य करता है जहाँ विभिन्न छोटे शहरों से आने वाली उड़ानें एकत्रित होती हैं। यह स्थान यात्रियों के लिए एक केंद्रीय स्थानांतरण बिंदु होता है जहाँ से वे अपने अंतिम गंतव्य के लिए दूसरी निर्धारित उड़ान लेते हैं। यह जटिल प्रणाली पूरे विमानन नेटवर्क की दक्षता और कनेक्टिविटी को काफी बढ़ाती है।

162. (B) यह कम विमानों के साथ अधिक गंतव्यों की सेवा देकर दक्षता को बढ़ाता है
एयरलाइंस के लिए हब-एंड-स्पोक मॉडल का मुख्य लाभ परिचालन दक्षता में व्यापक वृद्धि करना है। इस प्रणाली के माध्यम से एयरलाइंस कम विमानों का उपयोग करके भी एक विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र के कई छोटे गंतव्यों को सफलतापूर्वक कवर कर सकती हैं। इससे हर छोटे शहर को सीधे जोड़ने की आवश्यकता नहीं रहती, जिससे विमानों की यात्री क्षमता का इष्टतम और बेहतर उपयोग संभव है।

163. (C) एक हब पर हुई देरी का पूरे नेटवर्क पर व्यापक प्रभाव पड़ना
हब-एंड-स्पोक मॉडल की एक बड़ी संरचनात्मक कमी इसकी अत्यधिक परस्पर निर्भरता है। यदि किसी मुख्य हब हवाई अड्डे पर खराब मौसम या तकनीकी कारणों से एक उड़ान में देरी होती है, तो इसका नकारात्मक असर पूरे नेटवर्क पर पड़ता है। चूँकि कई कनेक्टिंग उड़ानें उसी एक केंद्र पर निर्भर होती हैं, इसलिए देरी की एक श्रृंखला बन जाती है जो परिचालन बाधित करती है।

164. (D) यह सीधी उड़ानें प्रदान कर स्थानांतरण की आवश्यकता को समाप्त करता है
पॉइंट-टू-पॉइंट मॉडल और हब-एंड-स्पोक मॉडल के बीच मुख्य अंतर उनकी संचालन प्रक्रिया में है। पॉइंट-टू-पॉइंट मॉडल के तहत एयरलाइंस दो शहरों के बीच पूर्णतः सीधी उड़ानें संचालित करती हैं, जिससे यात्रियों को किसी मध्यवर्ती स्टेशन पर रुकने या बार-बार विमान बदलने की जरूरत नहीं होती। यह यात्रियों का कीमती समय बचाता है और लंबी यात्रा के अनुभव को काफी सरल और सुखद बनाता है।

165. (A) एक प्रणाली जहाँ उडानें एक केंद्र पर एकत्रित होकर पुनः वितरित होती हैं
हब-एंड-स्पोक मॉडल एक केंद्रीकृत परिवहन प्रणाली है जहाँ उडानें विभिन्न 'स्पोक' मार्गों से एक मुख्य 'हब' की ओर निर्देशित की जाती हैं। इस केंद्र पर पहुँचने के बाद, यात्रियों और कार्गो को उनके अंतिम गंतव्य के अनुसार पुनः वितरित किया जाता है। यह संरचना एयरलाइन नेटवर्क को व्यवस्थित करने और कुल परिचालन लागत को कम करने का एक आधुनिक और प्रभावी तरीका है।

166. (B) उच्च परिचालन विश्वसनीयता और कम श्रम लागत
पाइपलाइन परिवहन की सबसे प्रमुख विशेषता इसकी उच्च परिचालन विश्वसनीयता और न्यूनतम श्रम लागत है। एक बार स्थापित होने के बाद, ये प्रणालियाँ बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के निरंतर तरल पदार्थों और गैसों का परिवहन कर सकती हैं। ये बाहरी मौसम की अनिश्चितताओं और सड़क यातायात की भारी भीड़भाड़ से पूरी तरह स्वतंत्र होकर चौबीसों घंटे विश्वसनीय रूप से कार्य करने में सक्षम होती हैं।

167. (B) अत्यधिक उच्च प्रारंभिक निर्माण लागत और मार्ग की अनम्यता होना
पाइपलाइन परिवहन प्रणाली को स्थापित करने के लिए प्रारंभ में बहुत अधिक पूंजी निवेश और उच्च स्तरीय तकनीकी विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, एक बार पाइपलाइन बिछा दिए जाने के बाद इसके मार्ग को आवश्यकतानुसार बदला नहीं जा सकता, जो इसे एक अनम्य परिवहन साधन बनाता है। चुनौतीपूर्ण भौगोलिक क्षेत्रों और दुर्गम भूभागों में इसके निर्माण की कुल लागत और भी अधिक बढ़ जाती है।

168. (A) पानी के साथ मिश्रित ठोस पदार्थों जैसे कोयले का परिवहन करने के लिए
स्लरी पाइपलाइन एक विशेष तकनीक है जिसका उपयोग ठोस खनिजों जैसे कोयले या लौह अयस्क को तरल रूप में ले जाने के लिए किया जाता है। इन ठोस पदार्थों को पहले बारीक पीसकर पानी के साथ मिलाया जाता है, जिससे एक गाढ़ा घोल या 'स्लरी' तैयार होती है। इस वैज्ञानिक विधि से भारी खनिजों का सुरक्षित परिवहन लंबी दूरी तक प्रभावी ढंग से किया जाता है।

169. (C) क्योंकि वे भू-राजनीतिक तनाव और तोड़फोड़ का लक्ष्य बन सकती हैं
रणनीतिक महत्व की पाइपलाइनें अक्सर अंतरराष्ट्रीय राजनीति और स्थानीय सुरक्षा चिंताओं से घिरी होती हैं। चूंकि ये राष्ट्रीय ऊर्जा सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण होती हैं, इसलिए युद्ध या भू-राजनीतिक तनाव की स्थिति में इन्हें अक्सर विरोधियों द्वारा तोड़फोड़ का निशाना बनाया जाता है। इनका खुला और विस्तृत भौगोलिक नेटवर्क इन्हें बाहरी खतरों और संभावित आतंकी हमलों के प्रति काफी संवेदनशील और असुरक्षित बनाता है।

59. निम्नलिखित में से कौन सा पत्तन एशिया के लिए एक आंत्रपो पत्तन है?
(A) रोटरडम
(B) कोपेनहेगेन
(C) कोच्चि
(D) सिंगापुर

60. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (पत्तन का प्रकार)
P. आंत्रपो पत्तन
Q. नौ सेना पत्तन
R. मार्ग पत्तन
S. तैल पत्तन
List II: (उदाहरण)
1. कोच्चि
2. अदन
3. रोटरडम
4. माराकाइबो
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

61. आंत्रपो पत्तन की मुख्य विशेषता क्या है?
(A) ये तेल के प्रक्रमण का कार्य करते हैं।
(B) ये केवल युद्धक जहाज़ों को सेवाएँ देते हैं।
(C) ये वे एकत्रण केंद्र हैं, जहाँ विभिन्न देशों से निर्यात हेतु वस्तुएँ लाई जाती हैं।
(D) ये छोटी दूरियों पर यात्रियों का परिवहन करते हैं।

62. भारत में कोच्चि तथा कारवाड़ किस प्रकार के पत्तनों के उदाहरण हैं?
(A) आंत्रपो पत्तन
(B) मार्ग पत्तन
(C) तैल पत्तन
(D) नौ सेना पत्तन

63. निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) सिंगापुर अफ्रीका के लिए एक आंत्रपो पत्तन है।
(B) रोटरडम यूरोप के लिए एक आंत्रपो पत्तन है।
(C) कोपेनहेगेन बाल्टिक क्षेत्र के लिए आंत्रपो पत्तन है।
(D) आंत्रपो पत्तन एकत्रण केंद्र होते हैं।

64. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. नौ सेना पत्तन केवल सामाजिक महत्त्व के पत्तन हैं।
2. ये युद्धक जहाज़ों को सेवाएँ देते हैं।
3. ये पत्तन मरम्मत कार्यशालाएँ भी चलाते हैं।
4. सिंगापुर एक नौ सेना पत्तन है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(C) केवल 3 और 4 सही हैं।
(D) सभी 1, 2, 3 और 4 सही हैं।

65. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): व्यापार दो स्तरों पर किया जा सकता है- अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय।
तर्क (R): अंतर्राष्ट्रीय व्यापार विभिन्न राष्ट्रों के बीच होता है, जबकि राष्ट्रीय व्यापार एक ही राष्ट्र के भीतर होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

66. 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में व्यापार के स्वरूप में क्या परिवर्तन आया?
(A) औद्योगिक राष्ट्र एक दूसरे के मुख्य ग्राहक बन गए।
(B) प्राथमिक वस्तुओं का उत्पादन करने वाले प्रदेश अधिक महत्त्वपूर्ण हो गए।
(C) कच्चे माल का निर्यात बढ़ गया।
(D) अनौद्योगीकृत राष्ट्रों ने निर्मित माल का निर्यात शुरु किया।

67. निम्नलिखित में से कौन सी एक विनिमय व्यवस्था की कठिनाई थी?
(A) मुद्रा का अत्यधिक प्रचलन
(B) वस्तुओं का सरलता से उपलब्ध होना
(C) आवश्यकताओं के दोहरे संयोग का अभाव
(D) परिवहन की सुगमता

68. निम्नलिखित में से किस संगठन ने GATT का स्थान लिया?
(A) संयुक्त राष्ट्र
(B) विश्व बैंक
(C) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
(D) विश्व व्यापार संगठन (WTO)

69. निम्नलिखित ऐतिहासिक चरणों को उनके आरंभ के सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. यूरोपीय उपनिवेशवाद का आरंभ
2. अमेरिका की खोज
3. रेशम मार्ग द्वारा व्यापार
4. औद्योगिक क्रांति
(A) 3, 2, 1, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 1, 2, 4
(D) 2, 1, 4, 3

70. व्यापार संतुलन में किन मदों को शामिल किया जाता है?
(A) केवल वस्तुओं का आयात और निर्यात

अध्याय 08
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार

1. व्यापार का तात्पर्य क्या होता है?
   (A) व्यापारिक वस्तुओं का उत्पादन
   (B) वस्तुओं व सेवाओं का विनिमय
   (C) व्यावसायिक सेवाओं का वितरण
   (D) राजकीय अनिवार्य वितरण

2. आदिम समाज में व्यापार का आरंभिक स्वरुप क्या था?
   (A) विनिमय व्यवस्था
   (B) मुद्रा व्यवस्था
   (C) दास व्यापार
   (D) उपनिवेशवाद

3. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) के रुप में अंकित किया गया है।
   अभिकथन (A): विनिमय व्यवस्था में, वस्तुओं का प्रत्यक्ष आदान-प्रदान होता था।
   तर्क (R): इस व्यवस्था में रुपये या मुद्रा के स्थान पर वस्तु के बदले वस्तु दी जाती थी।
   (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
   (D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

4. जॉन बील मेला, जहाँ आज भी विनिमय व्यवस्था जीवित है, भारत के किस राज्य में लगता है?
   (A) मेघालय
   (B) मणिपुर
   (C) अरुणाचल प्रदेश
   (D) असम

5. निम्नलिखित में से कौन सी वस्तु पुराने समय में मुद्रा के रूप में प्रयुक्त नहीं होती थी?
   (A) चकमक पत्थर
   (B) काउरी शेल
   (C) प्लास्टिक के सिक्के
   (D) चीते के पंजे

6. 'सैलेरी' (Salary) शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द 'सैलेरिअम' से हुई है, जिसका अर्थ किसके द्वारा भुगतान है?
   (A) स्वर्ण के द्वारा भुगतान
   (B) नमक के द्वारा भुगतान
   (C) रेशम के द्वारा भुगतान
   (D) चावल के द्वारा भुगतान

7. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   1. रेशम मार्ग लंबी दूरी के व्यापार का एक आरंभिक उदाहरण है।
   2. यह मार्ग लगभग 6000 कि.मी. लंबा था।
   3. यह मार्ग रोम को चीन से जोड़ता था।
   4. इस मार्ग से केवल रेशम का परिवहन होता था।

   उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
   (A) केवल 1 और 2 सही हैं।
   (B) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
   (C) केवल 3 और 4 सही हैं।
   (D) सभी 1, 2, 3 और 4 सही हैं।

8. 15वीं शताब्दी में यूरोपीय उपनिवेशवाद के साथ किस नए प्रकार के व्यापार का उदय हुआ?
   (A) दास व्यापार
   (B) रेशम व्यापार
   (C) मसाला व्यापार
   (D) ऊन व्यापार

9. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
   List I: (देश)
   P. डेनमार्क
   Q. ग्रेट ब्रिटेन
   R. संयुक्त राज्य

   List II: (अधिनियम)
   1. 1808
   2. 1792
   3. 1807

   (A) P-2, Q-3, R-1
   (B) P-1, Q-2, R-3
   (C) P-3, Q-1, R-2
   (D) P-2, Q-1, R-3

10. औद्योगिक क्रांति के पश्चात् औद्योगीकृत राष्ट्रों ने किस प्रकार के उत्पादों का आयात और निर्यात प्रमुखता से किया?
    (A) कच्चे माल का आयात व निर्मित माल का निर्यात
    (B) कच्चे माल का निर्यात व निर्मित माल का आयात
    (C) विनिर्मित माल का आयात व कच्चे माल का क्रय
    (D) केवल प्राथमिक माल का क्रय व विक्रय संचालन

11. 'व्यापार व शुल्क हेतु सामान्य समझौता' (GATT) का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) व्यापार करों को बढ़ाना
(B) शुल्क को घटाने में सहायता करना
(C) संख्यात्मक प्रतिबंध लगाना
(D) शुल्क को घटाने में सहायता करना

12. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा असत्य है?
(A) यह उत्पादन में विशिष्टीकरण का परिणाम है।
(B) यह केवल एक पक्ष के लिए लाभदायक होता है।
(C) यह विश्व की अर्थव्यवस्था को लाभान्वित करता है।
(D) यह राष्ट्रों की विदेश नीति से संबंधित है।

13. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): अंतर्राष्ट्रीय व्यापार तुलनात्मक लाभ, परिपूरकता व हस्तांतरणीयता के सिद्धांतों पर आधारित है।
तर्क (R): सिद्धांततः यह व्यापारिक भागीदारों को समान रूप से लाभदायक होना चाहिए।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

14. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का कौन सा आधार, खनिज संसाधन आधार को निर्धारित करता है?
(A) क्षेत्रीय जलवायु की स्थिति
(B) स्थानीय जनसंख्या के कारक
(C) आर्थिक विकास की प्रावस्था
(D) भू-गर्भिक भौगोलिक संरचना

15. निम्नलिखित में से कौन सा उत्पाद उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों की विशेषता है?
(A) केला, रबड़ तथा कहवा
(B) पर्वतीय क्षेत्रों का ऊन
(C) शीत प्रदेशों का सेब
(D) शीतोष्ण कटिबंधीय गेहूँ

16. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. राष्ट्रीय संसाधनों में भिन्नता
2. जनसंख्या कारक
3. विदेशी निवेश की सीमा
4. परिवहन
5. सभी देशों में समान जलवायु
उपरोक्त में से कौन-सा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का आधार नहीं है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 5
(D) केवल 4 और 5

17. जनसंख्या के कौन से कारक व्यापार की गई वस्तुओं के प्रकार और मात्रा को प्रभावित करते हैं?
(A) केवल जनसंख्या का कुल आकार
(B) आकार, वितरण और विविधता
(C) केवल जनसंख्या का मूल घनत्व
(D) केवल जनसंख्या की आयु संरचना

18. चीन का पॉर्सलिन, ईरान के कालीन और इंडोनेशियाई बटिक वस्त्र किस प्रकार के व्यापार कारक के उदाहरण हैं?
(A) सांस्कृतिक कारक
(B) जनसंख्या का आकार
(C) आर्थिक विकास की प्रावस्था
(D) विदेशी निवेश

19. निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिए और उन्हें उनके घटित होने के सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. यूरोपीय वाणिज्य में वृद्धि
2. रोमन साम्राज्य का विखंडन
3. औद्योगिक क्रांति
4. दास व्यापार का आरंभ
(A) 2, 1, 4, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 4, 3, 2, 1

20. सघन बसाव वाले देशों में सामान्यतः किस प्रकार का व्यापार अधिक होता है?
(A) बाह्य व्यापार
(B) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार
(C) बहु-पाश्विक व्यापार
(D) आंतरिक व्यापार

21. किसी देश के आर्थिक विकास की प्रावस्था व्यापार की गई वस्तुओं के स्वभाव को कैसे प्रभावित करती है?
(A) कृषीय राष्ट्रों द्वारा भारी मशीनरी का निर्यात।
(B) विकसित राष्ट्रों द्वारा केवल खाद्यान्न का निर्यात।
(C) मशीनरी का निर्यात व कच्चे माल का आयात।
(D) आर्थिक प्रावस्था का व्यापार पर प्रभाव न पड़ना।

22. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. विदेशी निवेश विकासशील देशों में व्यापार को बढ़ावा दे सकता है।
2. विकासशील देशों में अक्सर खनन और भारी अभियांत्रिकी के लिए पूँजी का अभाव होता है।
3. औद्योगिक राष्ट्र विकासशील देशों में पूँजी प्रधान उद्योगों के विकास द्वारा अपने लिए बाज़ार निर्मित करते हैं।
4. विदेशी निवेश से केवल औद्योगिक राष्ट्रों को लाभ होता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 3 और 4 सही हैं।
(C) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(D) सभी 1, 2, 3 और 4 सही हैं।

23. पुराने समय में परिवहन के साधनों के अभाव के कारण व्यापार किन वस्तुओं तक सीमित था?
(A) निम्न मूल्य वाली भारी वस्तुएँ
(B) क्षेत्रीय स्तर के केवल खाद्यान्न
(C) सभी प्रकार की वैश्विक वस्तुएँ
(D) रत्न एवं मसालों जैसी महँगी वस्तुएँ

24. यदि किसी देश के आयात का मूल्य, उसके निर्यात मूल्य की अपेक्षा अधिक है, तो व्यापार संतुलन कैसा होगा?
(A) ऋणात्मक या प्रतिकूल
(B) धनात्मक या अनुकूल
(C) अनुकूल या विकासशील
(D) संतुलित या स्थिर

25. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) के रुप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): एक ऋणात्मक व्यापार संतुलन अंतिम रूप में वित्तीय संचय की समाप्ति को अभिप्रेरित करता है।
तर्क (R): ऋणात्मक संतुलन का अर्थ है कि देश वस्तुओं के क्रय पर उससे अधिक व्यय करता है जितना अपने सामानों के विक्रय से अर्जित करता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

26. जब दो देश एक दूसरे के साथ निर्दिष्ट वस्तुओं का व्यापार करने के लिए सहमति करते हैं, तो इसे क्या कहते हैं?
(A) द्विपाश्विक व्यापार
(B) बहु-पाश्विक व्यापार
(C) मुक्त व्यापार
(D) व्यापार संतुलन

27. 'सर्वाधिक अनुकूल राष्ट्र' (MFN) की स्थिति प्रदान करने का क्या तात्पर्य है?
(A) केवल उसी राष्ट्र के साथ व्यापार करना
(B) उस राष्ट्र पर अतिरिक्त कर लगाना
(C) उस राष्ट्र के साथ सभी व्यापारिक संबंध समाप्त करना
(D) उस राष्ट्र को व्यापार में विशेष छूट देना

28. मुक्त व्यापार या व्यापार उदारीकरण का क्या अर्थ है?
(A) व्यापारिक अवरोधों जैसे सीमा शुल्क को बढ़ाना
(B) व्यापारिक अवरोधों जैसे सीमा शुल्क को घटाना
(C) केवल घरेलू उत्पादों को बढ़ावा देना
(D) आयात पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना

29. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (व्यापार का आधार)
P. भौगोलिक संरचना
Q. जलवायु
R. सांस्कृतिक कारक
S. जनसंख्या का आकार
List II: (उदाहरण)
1. ऊन उत्पादन ठंडे क्षेत्रों में
2. चीन का पॉर्सलिन
3. खनिज संसाधन आधार
4. सघन बसाव वाले देशों में अधिक आंतरिक व्यापार
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

30. विकासशील देशों पर मुक्त व्यापार का प्रतिकूल प्रभाव क्या हो सकता है?
(A) विकास के समान अवसर मिलना।
(B) घरेलू उद्योगों का विकास होना।
(C) अर्थव्यवस्थाओं का आत्मनिर्भर होना।
(D) देशों का प्रतिकूल रूप से प्रभावित होना।

31. 'डंप करना' की प्रथा क्या है?
(A) वस्तुओं को अलग कीमतों पर बेचना
(B) वस्तुओं को समान कीमतों पर बेचना
(C) लागत के आधार पर मूल्य निर्धारण
(D) निम्न गुणवत्ता की वस्तुओं का निर्यात

32. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'डंपिंग' के संबंध में सही है?
(A) यह हमेशा घरेलू उत्पादकों के लिए लाभदायक होती है।
(B) यह सस्ते मूल्य की वस्तुएँ घरेलू उत्पादकों को नुकसान पहुँचा सकती है।
(C) यह मुक्त व्यापार का एक अनिवार्य हिस्सा है।
(D) यह केवल विकासशील देशों द्वारा अपनाई जाती है।

33. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. जनरल एग्रीमेंट ऑन ट्रेड एंड टैरिफ (GATT) का गठन 1948 में हुआ था।
2. इसका उद्देश्य विश्व को उच्च सीमा शुल्क से मुक्त कराना था।
3. 1994 में इसे विश्व व्यापार संगठन (WTO) में बदलने का निश्चय किया गया।
4. GATT का गठन केवल दो देशों द्वारा किया गया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(C) केवल 3 और 4 सही हैं।
(D) सभी 1, 2, 3 और 4 सही हैं।

विशाल उपयोगकर्ता आधार ने 'वैश्विक ग्राम' की संकल्पना को और सुदृढ़ बनाया है, जहाँ सूचनाएँ तात्कालिक हैं।

150. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
आधुनिक संचार प्रणालियों ने भौतिक परिवहन की तुलना में 'वैश्विक ग्राम' की संकल्पना को अधिक प्रभावी ढंग से साकार किया है। ये प्रणालियाँ समय और स्थान की भौगोलिक सीमाओं को लांघते हुए दुनिया के किसी भी कोने में तात्कालिक संपर्क स्थापित करती हैं। इससे सूचनाओं और सेवाओं का आदान-प्रदान इतना सहज और तीव्र हो गया है कि पूरी दुनिया एक परस्पर जुड़े हुए छोटे समुदाय की तरह प्रतीत होती है, जहाँ भौतिक दूरियाँ अब व्यापारिक या सामाजिक बाधा नहीं रह गई हैं।

151. (B) औद्योगिक क्रांति को गति देना और महाद्वीपीय विस्तार में सहायता करना
उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान रेलवे परिवहन ने वैश्विक औद्योगिक क्रांति के विकास में एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक के रूप में अद्वितीय भूमिका निभाई। इसने कच्चे माल को कारखानों तक और तैयार उत्पादों को विशाल बाजारों तक पहुँचाने की प्रक्रिया को अभूतपूर्व रूप से तेज कर दिया। इसके अतिरिक्त, रेलवे ने उत्तरी अमेरिका जैसे क्षेत्रों में पश्चिम की ओर महाद्वीपीय विस्तार को भी पूर्णतः संभव बनाया।

152. (A) विभिन्न रेलवे लाइनों पर अलग-अलग चौड़ाई (गेज) की पटरियों का उपयोग
ब्रेक-ऑफ-गेज की समस्या मुख्य रूप से तब उत्पन्न होती है जब दो अलग-अलग रेलवे नेटवर्क की पटरियों के बीच की चौड़ाई या गेज एक समान नहीं होती है। इस तकनीकी भिन्नता के कारण माल और यात्रियों को एक ट्रेन से दूसरी ट्रेन में स्थानांतरित करना अनिवार्य हो जाता है। यह विसंगति रेलवे परिचालन की निरंतरता और दक्षता में गंभीर भौतिक बाधा उत्पन्न करती है।

153. (C) परिवहन लागत में वृद्धि और रसद संबंधी जटिलताएँ पैदा होना
रेलवे नेटवर्क में ब्रेक-ऑफ-गेज की स्थिति सीधे तौर पर परिचालन दक्षता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। पटरियों की अलग-अलग चौड़ाई के कारण माल के स्थानांतरण में अतिरिक्त समय और शारीरिक श्रम की आवश्यकता होती है। इसके परिणामस्वरूप कुल परिवहन लागत काफी बढ़ जाती है और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में गंभीर रसद संबंधी जटिलताएँ पैदा होने लगती हैं जिससे आर्थिक नुकसान होता है।

154. (D) एक एकीकृत और सीमा-पार परिवहन प्रणाली का निर्माण करना
रेलवे नेटवर्क के मानकीकरण का प्राथमिक लक्ष्य विभिन्न क्षेत्रों और संप्रभु देशों के बीच एक सुसंगत और एकीकृत परिवहन बुनियादी ढाँचा तैयार करना है। विशेष रूप से यूरोपीय संघ जैसे महत्वपूर्ण आर्थिक क्षेत्रों में, पटरियों के गेज को समान करने से अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के पार ट्रेनों का निर्बाध आवागमन सुनिश्चित होता है। इससे रसद प्रबंधन में आसानी होती है और बहुमूल्य समय बचता है।

155. (C) माल ढुलाई में सड़क परिवहन और यात्री यात्रा में हवाई परिवहन से
समकालीन समय में रेलवे को अन्य आधुनिक परिवहन साधनों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। भारी और मध्यम दूरी की माल ढुलाई के क्षेत्र में सड़क परिवहन अपनी लचीली और घर-घर तक पहुँचने वाली सेवाओं के कारण आगे बढ़ रहा है। वहीं लंबी दूरी की अंतरराष्ट्रीय यात्राओं के लिए हवाई परिवहन अपनी तीव्र गति के कारण यात्रियों की पहली पसंद है।

156. (B) जल का पर्याप्त और निरंतर प्रवाह
किसी भी नदी के नौगम्य होने के लिए उसमें जल की पर्याप्त मात्रा और निरंतर प्रवाह होना सबसे अनिवार्य प्राकृतिक शर्त है। पानी की भारी कमी या अनियमित प्रवाह जहाजों के सुगम और सुरक्षित आवागमन में बाधा डालता है। इसके साथ ही, नदी का मार्ग पर्याप्त गहरा और चौड़ा होना चाहिए ताकि बड़े जहाजों का संचालन बिना किसी प्राकृतिक अवरोध के किया जा सके।

157. (D) जल स्तर में अंतर को प्रबंधित करने और जहाजों को स्थानांतरित करने के लिए
अंतर्देशीय जलमार्गों में लॉक्स या जल बंधक एक महत्वपूर्ण इंजीनियरिंग संरचना हैं जिनका उपयोग नदियों या कृत्रिम नहरों के अलग-अलग जल स्तरों को प्रबंधित करने के लिए किया जाता है। ये संरचनाएं जहाजों को एक स्तर से दूसरे स्तर पर ऊपर उठाने या सुरक्षित नीचे उतारने में मदद करती हैं। इससे अत्यधिक ढाल वाले भौगोलिक क्षेत्रों में भी जल परिवहन सुचारु रूप से संभव है।

158. (A) भारी, अधिक मात्रा वाले और कम मूल्य वाले सामान (जैसे बल्क कार्गो)
अंतर्देशीय जलमार्ग भारी और बड़ी मात्रा वाले सामानों जैसे कोयला, धात्विक अयस्क, अनाज और भारी निर्माण सामग्री के परिवहन के लिए आर्थिक रूप से सबसे उपयुक्त साधन माने जाते हैं। चूंकि इन वस्तुओं का प्रति इकाई बाजार मूल्य कम होता है, इसलिए इनके लिए जल परिवहन की न्यूनतम परिचालन लागत अत्यंत लाभदायक होती है। यह लंबी दूरी के विशाल परिवहन के लिए आदर्श है।

159. (C) प्रति टन-किलोमीटर कम लागत और उच्च ऊर्जा दक्षता प्रदान करना
अंतर्देशीय जलमार्गों की सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक विशेषता उनकी उच्च ऊर्जा दक्षता और न्यूनतम परिचालन लागत है। सड़क या रेल परिवहन की तुलना में, जलमार्गों के माध्यम से माल ले जाने पर प्रति टन-किलोमीटर खर्च काफी कम आता है। यह विशिष्ट विशेषता इसे भारी माल की लंबी दूरी तक निरंतर ढुलाई के लिए एक टिकाऊ, किफायती और पर्यावरण के अनुकूल परिवहन विकल्प बनाती है।

46. निम्नलिखित ऐतिहासिक घटनाओं को कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. GATT का गठन
2. प्रथम विश्व युद्ध
3. WTO की स्थापना
4. संयुक्त राज्य में दास व्यापार की समाप्ति

(A) 4, 2, 1, 3
(B) 2, 4, 1, 3
(C) 4, 1, 2, 3
(D) 1, 2, 3, 4

47. संसार के अधिकांश महान पत्तन किस रूप में वर्गीकृत किए गए हैं?
(A) विस्तृत पत्तन
(B) औद्योगिक पत्तन
(C) तैल पत्तन
(D) नौसेना पत्तन

48. अंतर्देशीय पत्तन की क्या विशेषता होती है?
(A) ये गहरे समुद्री जल में स्थित होते हैं।
(B) ये नदी या नहर से जुड़े पत्तन होते हैं।
(C) ये विशाल आकार के जहाजों हेतु होते हैं।
(D) ये वास्तविक पत्तन के सहायक होते हैं।

49. निम्नलिखित में से कौन सा एक अंतर्देशीय पत्तन का उदाहरण नहीं है?
(A) मानचेस्टर
(B) पिरेइअस
(C) मेंफिस
(D) कोलकाता

50. बाह्य पत्तन (Out-port) क्यों बनाए जाते हैं?
(A) उन बड़े जहाजों को ग्रहण करने के लिए जो वास्तविक पत्तन तक नहीं पहुँच पाते
(B) छोटे जहाजों को सेवा प्रदान करने के लिए
(C) केवल यात्रियों के आवागमन के लिए
(D) देश के आंतरिक भागों में व्यापार के लिए

51. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): कोलकाता हुगली नदी पर स्थित एक अंतर्देशीय पत्तन है।
तर्क (R): अंतर्देशीय पत्तन समुद्री तट पर अवस्थित होते हैं और गहरे जल के होते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

52. यूनान में एथेंस का बाह्य पत्तन कौन-सा है?
(A) मानचेस्टर
(B) रोटरडम
(C) ड्यूसबर्ग
(D) पिरेइअस

53. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. तैल पत्तन तेल के प्रक्रमण और नौ-परिवहन का कार्य करते हैं।
2. कुछ तैल पत्तन टैंकर पत्तन होते हैं।
3. कुछ तैल पत्तन तेल शोधन पत्तन होते हैं।
4. पर्शिया की खाड़ी पर बादान एक तेलशोधन पत्तन है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 3 और 4 सही हैं।
(C) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(D) सभी 1, 2, 3 और 4 सही हैं।

54. वेनेजुएला में माराकाइबो और लेबनान में त्रिपोली किस प्रकार के पत्तन हैं?
(A) तेल शोधन पत्तन
(B) टैंकर पत्तन
(C) मार्ग पत्तन
(D) नौसेना पत्तन

55. मार्ग पत्तन (विश्राम पत्तन) का मूल उद्देश्य क्या था?
(A) माल को उतारने और लादने की विशेषीकृत सेवा।
(B) युद्धक जहाजों को मरम्मत एवं रसद सेवाएँ देना।
(C) विभिन्न देशों से निर्यात वस्तुओं का संग्रहण करना।
(D) जहाजों हेतु ईंधन व रसद आपूर्ति के विश्राम केंद्र।

56. अदन, होनोलूलू तथा सिंगापुर किसके अच्छे उदाहरण हैं?
(A) मार्ग पत्तन
(B) नौसेना पत्तन
(C) तैल पत्तन
(D) पैकेट स्टेशन

57. पैकेट स्टेशन को अन्य किस नाम से जाना जाता है?
(A) तैल पत्तन
(B) आंत्रपो पत्तन
(C) फेरी-पत्तन
(D) विश्राम पत्तन

58. इंग्लैंड में डोवर तथा फ्रांस में कैलाइस किस प्रकार के पत्तन हैं जो इंग्लिश चैनल के आर-पार स्थित हैं?
(A) पैकेट स्टेशन
(B) मार्ग पत्तन
(C) आंत्रपो पत्तन
(D) नौसेना पत्तन

170. (D) यह एक उच्च लागत वाला, विश्वसनीय और मुख्य रूप से तरल/गैस हेतु साधन है
पाइपलाइन परिवहन को एक उच्च प्रारंभिक निवेश वाले लेकिन अत्यंत विश्वसनीय परिवहन साधन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह मुख्य रूप से कच्चे तेल, परिष्कृत पेट्रोलियम उत्पादों और प्राकृतिक गैस जैसी महत्वपूर्ण ऊर्जा वस्तुओं के निरंतर प्रवाह के लिए उपयोग किया जाता है। यह अदृश्य बुनियादी ढाँचा आधुनिक औद्योगिक अर्थव्यवस्थाओं की अनिवार्य ऊर्जा जरूरतों को निर्बाध पूरा करने वाला एक महत्वपूर्ण घटक है।

171. (C) सूचना प्रौद्योगिकी तक सार्थक पहुँच रखने और न रखने वालों के बीच की खाई
अंकीय विभाजन या डिजिटल डिवाइड आधुनिक समाज में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग में व्याप्त व्यापक असमानता को दर्शाता है। यह उन व्यक्तियों के बीच की एक गहरी सामाजिक-आर्थिक खाई है जिनके पास कंप्यूटर और इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है और वे इसके उपयोग में सक्षम हैं, तथा वे लोग जो इन आधुनिक डिजिटल और तकनीकी संसाधनों से पूर्णतः वंचित रह गए हैं।

172. (B) व्यक्तिगत कंप्यूटर का रंग
अंकीय विभाजन मुख्य रूप से तकनीकी पहुँच, इंटरनेट की गति, सेवाओं की सामर्थ्य और डिजिटल साक्षरता जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक कारकों पर आधारित होता है। व्यक्तिगत कंप्यूटर या अन्य उपकरणों का रंग एक विशुद्ध रूप से सौंदर्यात्मक विकल्प है और इसका सूचना प्रौद्योगिकी तक पहुँच या उपयोग की वास्तविक क्षमता से कोई संबंध नहीं है। इसलिए यह डिजिटल डिवाइड का हिस्सा कभी नहीं माना जाता है।

173. (D) एक ही देश के भीतर शहरी-ग्रामीण और अमीर-गरीब आबादी के बीच की दूरी
घरेलू अंकीय विभाजन किसी एक विशिष्ट राष्ट्र की सीमाओं के भीतर रहने वाली विभिन्न सामाजिक और क्षेत्रीय श्रेणियों के बीच के तकनीकी अंतर को प्रकट करता है। इसमें अक्सर विकसित शहरों और पिछड़े गाँवों के बीच इंटरनेट की उपलब्धता का बड़ा अंतर शामिल होता है। साथ ही, यह उच्च आय वाले शिक्षित वर्ग और कम आय वाले वंचित वर्गों के बीच तकनीकी पहुँच की असमानता दर्शाता है।

174. (A) लोगों को ऑनलाइन शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक अवसरों से वंचित करके
अंकीय विभाजन मौजूदा सामाजिक असमानताओं को और अधिक तीव्र कर देता है क्योंकि डिजिटल दुनिया से वंचित लोग आधुनिक युग की महत्वपूर्ण सेवाओं का लाभ नहीं उठा पाते। वे ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफार्मों, उन्नत स्वास्थ्य देखभाल सूचनाओं और नए डिजिटल आर्थिक अवसरों तक नहीं पहुँच सकते। यह तकनीकी अभाव उन्हें विकास की मुख्यधारा से पीछे धकेलता है, जिससे समाज में आर्थिक विषमता बढ़ जाती है।

175. (C) यह सामाजिक समानता और समावेशी विकास के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता है।
अंकीय विभाजन को पाटना केवल एक तकनीकी सुधार नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय और समावेशी विकास सुनिश्चित करने का एक सशक्त माध्यम है। जब समाज के सभी वर्गों के पास सूचना प्रौद्योगिकी तक समान पहुँच होगी, तभी शिक्षा और रोजगार के आधुनिक अवसर सभी के लिए उपलब्ध होंगे। यह प्रक्रिया समाज के सबसे पिछड़े तबकों के समग्र आर्थिक उत्थान के लिए अत्यंत आवश्यक है।

(B) वस्तुओं एवं सेवाओं दोनों का आयात और निर्यात
(C) केवल सेवाओं का आयात और निर्यात
(D) केवल पूँजी का प्रवाह

71. बहु-पाश्विक व्यापार का क्या अर्थ है?
(A) केवल दो देशों के बीच व्यापार
(B) एक ही देश के भीतर विभिन्न राज्यों में व्यापार
(C) वस्तुओं का विनिमय
(D) एक देश का बहुत से अन्य देशों के साथ व्यापार

72. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. व्यापार उदारीकरण घरेलू उत्पादों एवं सेवाओं से प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देता है।
2. भूमंडलीकरण और मुक्त व्यापार हमेशा विकासशील देशों के लिए लाभदायक होते हैं।
3. विकसित देशों को अपने बाज़ारों को विदेशी उत्पादों से संरक्षित रखना चाहिए।
4. डंप की गई वस्तुएँ घरेलू उत्पादकों के लिए फायदेमंद होती हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 3 सही हैं।
(B) केवल 2 और 4 सही हैं।
(C) केवल 1 सही है।
(D) सभी कथन सही हैं।

73. विश्व व्यापार संगठन के संदर्भ में, किन मुद्दों की उपेक्षा का तर्क दिया जाता है?
(A) बौद्धिक संपदा अधिकार
(B) दूरसंचार और बैंकिंग सेवाएँ
(C) स्वास्थ्य, श्रमिकों के अधिकार और पर्यावरण
(D) वैश्विक व्यापार नियम

74. एक पत्तन के प्राधिकारी कौन सी सुविधाएँ प्रदान नहीं करते हैं?
(A) जहाजों का निर्माण
(B) गोदी, लादने, उतारने की सुविधा
(C) नौगम्य द्वारों का रख-रखाव
(D) श्रम एवं प्रबंधकीय सेवाएँ

75. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) के रुप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): सुविकसित परिवहन तथा संचार प्रणाली से युक्त कोई भी देश अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भागीदारी से मिलने वाले लाभों को छोड़ने का इच्छुक नहीं है।
तर्क (R): आधुनिक समय में व्यापार, विश्व के आर्थिक संगठन का आधार है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

76. निम्नलिखित में से कौन सा एक सांस्कृतिक कारक का उदाहरण है जो व्यापार को प्रभावित करता है?
(A) ब्राजील में कहवा उत्पादन
(B) ईरान के प्रसिद्ध कालीन
(C) कनाडा में गेहूं की खेती
(D) सऊदी अरब में तेल खनन

77. निम्नलिखित में से कौन सा एक पत्तन उसकी अवस्थिति के आधार पर वर्गीकरण का हिस्सा है?
(A) तैल पत्तन
(B) मार्ग पत्तन
(C) अंतर्देशीय पत्तन
(D) औद्योगिक पत्तन

78. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. राष्ट्रीय संसाधनों में भिन्नता
2. जनसंख्या कारक
3. आर्थिक विकास की प्रावस्था
4. विदेशी निवेश की सीमा
5. परिवहन

उपरोक्त में से कौन-से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के आधार हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

79. राइन नदी पर स्थित मैनहीम तथा ड्यूसबर्ग किस प्रकार के पत्तन हैं?
(A) अंतर्देशीय पत्तन
(B) बाह्य पत्तन
(C) मार्ग पत्तन
(D) नौसेना पत्तन

80. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (पत्तन)
P. मानचेस्टर
Q. मेंफिस
R. कोलकाता
S. मैनहीम

List II: (अवस्थिति/नदी)
1. हुगली नदी
2. एक नहर से जुड़ा
3. मिसीसिपी नदी
4. राइन नदी

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

81. पर्शिया की खाड़ी पर स्थित 'अबादान' किस प्रकार का पत्तन है?
(A) टैंकर पत्तन
(B) तेलशोधन पत्तन
(C) मार्ग पत्तन
(D) आंत्रपो पत्तन

82. यदि निर्यात का मूल्य, आयात के मूल्य की तुलना में अधिक है, तो देश का व्यापार संतुलन कैसा होता है?
(A) धनात्मक अथवा अनुकूल
(B) ऋणात्मक
(C) प्रतिकूल
(D) शून्य

83. दास व्यापार के दौरान अफ्रीकी मूल निवासियों को पकड़कर बलपूर्वक कहाँ परिवहित किया गया था?
(A) एशिया
(B) ऑस्ट्रेलिया
(C) अमेरीका
(D) यूरोप

84. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. आदिम समाज में व्यापार स्थानीय बाज़ारों तक ही सीमित था।
2. प्राचीन समय में लंबी दूरियों तक वस्तुओं का परिवहन जोखिमपूर्ण होता था।
3. उस समय लोग अपने संसाधनों का अधिकांश भाग विलास की वस्तुओं पर खर्च करते थे।
4. रेशम मार्ग का व्यापार स्थानीय व्यापार का उदाहरण है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 3 और 4 सही हैं।
(C) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

85. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) के रुप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में, प्राथमिक वस्तुओं का उत्पादन करने वाले प्रदेश अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं रहे।
तर्क (R): इस दौरान औद्योगिक राष्ट्र एक दूसरे के मुख्य ग्राहक बन गए।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

86. जनसंख्या का जीवन स्तर किस प्रकार आयातित उत्पादों की माँग को निर्धारित करता है?
(A) निम्न जीवन स्तर के लोग महँगी आयातित वस्तुएँ अधिक खरीदते हैं।
(B) उच्च जीवन स्तर बेहतर गुणवत्ता वाले आयातित उत्पादों की माँग को निर्धारित करता है।
(C) जीवन स्तर का आयातित उत्पादों की माँग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
(D) उच्च जीवन स्तर के लोग केवल घरेलू उत्पाद खरीदते हैं।

87. भारत विश्व व्यापार संगठन का...
(A) 2001 में सदस्य बना।
(B) सदस्य नहीं है।
(C) एक आलोचक सदस्य है।
(D) संस्थापक सदस्य रहा है।

88. निम्नलिखित पत्तनों के प्रकारों में से कौन-सा विशिष्टीकृत कार्यकलापों के आधार पर वर्गीकृत नहीं है?
(A) विस्तृत पत्तन
(B) तैल पत्तन
(C) मार्ग पत्तन
(D) नौ सेना पत्तन

89. दास व्यापार को समाप्त करने वाले देशों को सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
(A) ग्रेट ब्रिटेन, डेनमार्क, संयुक्त राज्य
(B) संयुक्त राज्य, डेनमार्क, ग्रेट ब्रिटेन
(C) डेनमार्क, ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य
(D) डेनमार्क, संयुक्त राज्य, ग्रेट ब्रिटेन

90. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (क्षेत्र/देश)
P. चीन
Q. ईरान
R. उत्तरी अफ्रीका
S. इंडोनेशिया

List II: (प्रसिद्ध उत्पाद)
1. चमड़े का काम
2. पॉर्सलिन (चीनी मिट्टी का बर्तन)
3. कालीन
4. बटिक (छींट वाला) वस्त्र

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

91. प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान राष्ट्रों ने व्यापार पर क्या प्रभाव डाला?
(A) उन्होंने व्यापार को पूर्णतः मुक्त कर दिया।
(B) उन्होंने केवल मित्र राष्ट्रों से व्यापार किया।
(C) उन्होंने व्यापार पर कोई ध्यान नहीं दिया।
(D) उन्होंने व्यापार कर और संख्यात्मक प्रतिबंध लगाए।

92. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से होने वाले लाभों में क्या सम्मिलित नहीं है?
(A) उत्पादन का उच्च स्तर
(B) पर्यावरण का संरक्षण
(C) उच्च रहन-सहन का स्तर
(D) कीमतों और वेतन का समानीकरण

93. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. द्विपाश्विक व्यापार बहुत से व्यापारिक देशों के साथ किया जाता है।
2. बहु-पाश्विक व्यापार केवल दो देशों के द्वारा एक दूसरे के साथ किया जाता है।
3. बहु-पाश्विक व्यापार में एक देश अन्य अनेक देशों के साथ व्यापार कर सकता है।
4. द्विपाश्विक व्यापार में देश आपस में निर्दिष्ट वस्तुओं का व्यापार करने के लिए सहमति करते हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 3 और 4 सही हैं।
(C) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

94. कौन सा कारक फसलों व पशुओं की विविधता सुनिश्चित करता है?
(A) केवल खनिज संसाधन
(B) केवल जनसंख्या का आकार
(C) केवल परिवहन
(D) धरातलीय विभिन्नताएँ

95. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) के रुप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): अंतर्राष्ट्रीय व्यापार देशों के लिए हानिकारक हो सकता है।
तर्क (R): यह अन्य देशों पर निर्भरता, विकास के असमान स्तर, और शोषण को जन्म दे सकता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

96. औद्योगिक विकास का आधार प्रदान करने वाला मुख्य कारक क्या है?
(A) उपजाऊ मृदा की उपलब्धता
(B) खनिज संसाधनों की उपलब्धता
(C) घनी जनसंख्या
(D) समतल भूमि

97. रेशम मार्ग के माध्यम से चीन से रोम क्या निर्यात किया जाता था और रोम से चीन क्या आयात किया जाता था?
(A) चीन से ऊन का निर्यात, रोम से रेशम का आयात
(B) चीन से रेशम का निर्यात, रोम से ऊन व बहुमूल्य धातुओं का आयात
(C) दोनों ओर से केवल मसालों का व्यापार
(D) दोनों ओर से केवल खाद्यान्न का व्यापार

98. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह श्रम विभाजन तथा विशेषीकरण को प्रयोग में लाता है।
2. यह केवल विकसित देशों को लाभ पहुँचाता है।
3. यह तुलनात्मक लाभ के सिद्धांत पर आधारित है।
4. यह केवल वस्तुओं के आदान-प्रदान से संबंधित है, सेवाओं से नहीं।
5. यह राष्ट्रों की विदेश नीति से संबंधित है।

उपरोक्त में से कौन-से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के बारे में सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 3 और 5
(C) केवल 2, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

99. रेलवे, समुद्री और वायु परिवहन के विस्तार का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ा?
(A) व्यापार स्थानीय क्षेत्रों तक सीमित हो गया।
(B) केवल उच्च मूल्य वाली वस्तुओं का व्यापार संभव हुआ।
(C) व्यापार ने स्थानिक विस्तार का अनुभव किया।
(D) व्यापार की मात्रा में कमी आई।

100. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (व्यापार शब्द)
P. डंप करना
Q. मुक्त व्यापार
R. अनुकूल व्यापार संतुलन
S. प्रतिकूल व्यापार संतुलन

List II: (अर्थ)
1. व्यापार अवरोधों को घटाना
2. निर्यात से आयात का अधिक होना
3. आयात से निर्यात का अधिक होना
4. भिन्न कीमतों पर वस्तु बेचना

(A) P-4, Q-1, R-3, S-2
(B) P-1, Q-4, R-2, S-3
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-3, Q-2, R-4, S-1

101. 'दास व्यापार' को एक लाभदायक व्यापार क्यों माना जाता था?
(A) क्योंकि यह नैतिक और मानवीय था।
(B) क्योंकि इसे सभी देशों का समर्थन प्राप्त था।
(C) क्योंकि इससे बागानों में श्रम हेतु सस्ते श्रमिक उपलब्ध होते थे।
(D) क्योंकि यह कम जोखिम वाला व्यापार था।

(C) निर्यात पर भारी कर लगाना
(D) उत्पादन लागत से कम कीमत पर माल का निर्यात करना

162. डंपिंग का विकासशील देशों के स्थानीय उद्योगों पर क्या प्रभाव पड़ता है?
(A) वे अधिक प्रतिस्पर्धी और मजबूत हो जाते हैं।
(B) वे अनुचित प्रतिस्पर्धा के कारण नष्ट हो सकते हैं।
(C) उन्हें सरकार से अधिक सब्सिडी मिलती है।
(D) उनके उत्पादन में तेजी से वृद्धि होती है।

163. 'असमान विनिमय' की अवधारणा में विकासशील देशों की क्या भूमिका होती है?
(A) वे महंगे विनिर्मित सामान का निर्यात करते हैं।
(B) वे व्यापार संतुलन में हमेशा लाभ की स्थिति में रहते हैं।
(C) वे सस्ते कच्चे माल का निर्यात और महंगे विनिर्मित सामान का आयात करते हैं।
(D) वे केवल अन्य विकासशील देशों के साथ व्यापार करते हैं।

164. अनुच्छेद में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के किस नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव का उल्लेख किया गया है?
(A) जैव विविधता में वृद्धि
(B) वनीकरण को बढ़ावा
(C) स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों का विकास
(D) प्रदूषण और संसाधनों का अत्यधिक दोहन

165. डंपिंग का एक संभावित उद्देश्य क्या हो सकता है, जैसा कि स्रोत में बताया गया है?
(A) विदेशी बाजार पर कब्जा करना और स्थानीय प्रतिस्पर्धा को खत्म करना
(B) आयातक देश की अर्थव्यवस्था की मदद करना
(C) वैश्विक कीमतों को स्थिर करना
(D) घरेलू बाजार में वस्तुओं की कमी को पूरा करना

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

20वीं सदी के उत्तरार्ध में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में आई क्रांति का एक प्रमुख उत्प्रेरक 'कंटेनरीकरण' रहा है। मानकीकृत इंटरमॉडल कंटेनरों के विकास और उपयोग ने वैश्विक रसद (logistics) और आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन को पूरी तरह से बदल दिया। इससे पहले, माल को अलग-अलग बोरियों, बक्सों और पीपों में जहाजों पर लादना और उतारना एक धीमी, श्रम-साध्य और महंगी प्रक्रिया थी, जिसमें चोरी और क्षति का खतरा भी अधिक होता था। कंटेनरीकरण ने इस प्रक्रिया को स्वचालित और एकीकृत कर दिया। अब माल को एक मानक आकार के स्टील के बक्से में बंद कर दिया जाता है, जिसे ट्रक, ट्रेन और जहाज के बीच बिना खोले आसानी से स्थानांतरित किया जा सकता है। इस नवाचार ने बंदरगाहों पर लगने वाले समय (turnaround time) को नाटकीय रूप से कम कर दिया, श्रम लागत में भारी कटौती की, और परिवहन की गति तथा विश्वसनीयता में अभूतपूर्व वृद्धि की। परिणामस्वरुप, परिवहन लागत वैश्विक व्यापार के लिए एक बहुत छोटी बाधा बन गई, जिससे 'जस्ट-इन-टाइम' विनिर्माण जैसी प्रणालियाँ संभव हुईं और कंपनियों के लिए दुनिया भर में अपनी उत्पादन प्रक्रियाओं को फैलाना संभव हो सका। कंटेनरीकरण ने वास्तव में दुनिया को छोटा कर दिया और वैश्वीकरण की प्रक्रिया को तेज गति प्रदान की।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. 'कंटेनरीकरण' से पहले माल परिवहन की प्रक्रिया की क्या विशेषता थी?
(A) यह बहुत तेज और स्वचालित थी।
(B) यह धीमी, श्रम-साध्य और महंगी थी।
(C) इसमें चोरी और क्षति का कोई खतरा नहीं था।
(D) इसमें मानकीकृत बक्सों का उपयोग होता था।

167. कंटेनरीकरण का बंदरगाहों पर लगने वाले समय (turnaround time) पर क्या प्रभाव पड़ा?
(A) समय में काफी वृद्धि हुई।
(B) समय में नाटकीय रूप से कमी आई।
(C) समय में कोई बदलाव नहीं आया।
(D) समय केवल रात के समय कम हुआ।

168. इंटरमॉडल कंटेनर की मुख्य विशेषता क्या है?
(A) इसे विभिन्न परिवहन साधनों (ट्रक, ट्रेन, जहाज) के बीच आसानी से स्थानांतरित किया जा सकता है।
(B) यह केवल जहाजों पर उपयोग किया जा सकता है।
(C) यह लकड़ी से बना होता है।
(D) इसका कोई मानक आकार नहीं होता है।

169. स्रोत के अनुसार, कंटेनरीकरण ने किस प्रकार की विनिर्माण प्रणाली को संभव बनाया?
(A) बैच उत्पादन
(B) हस्तनिर्मित उत्पादन
(C) 'जस्ट-इन-टाइम' विनिर्माण
(D) घरेलू बाजार के लिए उत्पादन

170. कंटेनरीकरण का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वैश्वीकरण पर समग्र प्रभाव क्या था?
(A) इसने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को धीमा कर दिया।
(B) इसने परिवहन लागत को बढ़ा दिया।
(C) इसने केवल क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा दिया।
(D) इसने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को तेज गति प्रदान की।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रवेश द्वारों के रुप में पत्तनों (ports) का रणनीतिक महत्व सर्वविदित है। पत्तनों के विभिन्न प्रकारों में 'आंत्रपो पत्तन' (Entrepôt Port) एक विशेष स्थान रखते हैं। ये पत्तन स्वयं बड़े उपभोक्ता या उत्पादक केंद्र नहीं होते, बल्कि ये मुख्य रूप से पुनर्निर्यात (re-export) के लिए एक पारगमन केंद्र (transhipment hub) के रूप में कार्य करते हैं। इन पत्तनों पर माल को एक जहाज से उतारकर दूसरे

114. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. आंत्रपो पत्तन वे एकत्रण केंद्र हैं जहाँ निर्यात हेतु वस्तुएँ लाई जाती हैं।
2. पैकेट स्टेशन को फेरी-पत्तन भी कहते हैं।
3. मार्ग पत्तन मुख्य समुद्री मार्गों पर विश्राम केंद्र के रूप में विकसित हुए।
4. तैल पत्तन केवल तेल के भंडारण का कार्य करते हैं, प्रक्रमण का नहीं।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 2 और 3 सही हैं।
(C) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

115. विश्व व्यापार के संबंध में निम्नलिखित संस्थाओं/समझौतों के गठन को सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. विश्व व्यापार संगठन (WTO)
2. दास व्यापार की समाप्ति (ग्रेट ब्रिटेन)
3. व्यापार व शुल्क हेतु सामान्य समझौता (GATT)

(A) 2, 3, 1
(B) 3, 2, 1
(C) 1, 2, 3
(D) 2, 1, 3

116. 'सैलेरिअम' शब्द का क्या अर्थ है, जिससे 'सैलेरी' शब्द बना है?
(A) स्वर्ण द्वारा भुगतान
(B) चाँदी द्वारा भुगतान
(C) वस्तु के द्वारा भुगतान
(D) नमक के द्वारा भुगतान

117. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (पत्तन प्रकार)
P. पैकेट स्टेशन
Q. नौ सेना पत्तन
R. मार्ग पत्तन
S. आंत्रपो पत्तन

List II: (मुख्य कार्य)
1. युद्धक जहाज़ों को सेवा देना
2. ईंधन भरने हेतु विश्राम केंद्र
3. निर्यात वस्तुओं का एकत्रण
4. छोटी दूरियों का यात्री परिवहन

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

118. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए कौन-सा सिद्धांत आवश्यक नहीं है?
(A) तुलनात्मक लाभ
(B) निरपेक्ष अलगाव
(C) परिपूरकता
(D) हस्तांतरणीयता

119. सतत पोषणीय विकास के मानकों का अनुसरण न करने का एक उदाहरण क्या है?
(A) वनों का संरक्षण करना
(B) समुद्री जीवन की रक्षा करना
(C) प्रदूषण को नियंत्रित करना
(D) नदी बेसिन को निजी पेय जल कंपनियों को बेचना

120. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): सघन बसाव वाले देशों में आंतरिक व्यापार अधिक होता है।
तर्क (R): ऐसे देशों में कृषीय और औद्योगिक उत्पादों का अधिकांश भाग स्थानीय बाज़ारों में ही खप जाता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

121. कौन-से पत्तन अपने बड़े आकार के कारण वास्तविक पत्तन तक पहुँचने में अक्षम जहाज़ों को सेवाएँ प्रदान करते हैं?
(A) अंतर्देशीय पत्तन
(B) नौसेना पत्तन
(C) बाह्य पत्तन
(D) फेरी-पत्तन

122. निम्नलिखित में से कौन सा बाह्य पत्तन और उसके पैतृक पत्तन का सही संयोजन है?
(A) पिरेइअस और एथेंस
(B) कोलकाता और हुगली
(C) मानचेस्टर और लंदन
(D) डोवर और कैलाइस

123. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह पर्यावरण को प्रभावित कर सकता है।
2. यह लोगों के स्वास्थ्य एवं कल्याण को प्रभावित कर सकता है।
3. संसाधनों के नष्ट होने की दर तीव्र हो सकती है।
4. यह हमेशा सतत पोषणीय विकास को बढ़ावा देता है।
5. यह केवल लाभ बनाने की ओर उन्मुख हो सकता है।

उपरोक्त में से कौन से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के नकारात्मक पहलू हैं?
(A) केवल 1, 2, 3 और 5
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) सभी कथन सही हैं।

पर बेचना है।
3. MFN का अर्थ 'सर्वाधिक अनुकूल राष्ट्र' है।
4. द्विपाक्षिक व्यापार दो देशों के बीच होता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 3 और 4 सही हैं।
(C) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

146. रोटरडम किस महाद्वीप के लिए एक आंत्रपो पत्तन है?

(A) यूरोप
(B) एशिया
(C) अफ्रीका
(D) उत्तरी अमेरिका

147. व्यापार संतुलन को प्रतिकूल कब कहा जाता है?

(A) जब निर्यात का मूल्य आयात के मूल्य से अधिक हो।
(B) जब आयात और निर्यात का मूल्य बराबर हो।
(C) जब आयात का मूल्य निर्यात के मूल्य से अधिक हो।
(D) जब केवल सेवाओं का व्यापार हो।

148. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. रेशम मार्ग रोम को भारत से जोड़ता था।
2. दास व्यापार 15वीं शताब्दी में आरंभ हुआ।
3. GATT की स्थापना द्वितीय विश्व युद्ध से पहले हुई थी।
4. WTO का मुख्यालय न्यूयॉर्क में है।
5. कोपेनहेगेन बाल्टिक क्षेत्र के लिए एक आंत्रपो पत्तन है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?

(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2 और 5
(C) केवल 3, 4 और 5
(D) सभी कथन सही हैं।

149. पुराने समय में निम्नलिखित में से किसका उपयोग मुद्रा के रूप में होता था?

(A) लोहा
(B) एल्यूमीनियम
(C) आब्सीडियन (आग्नेय काँच)
(D) कागज़

150. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के परिणामस्वरूप निम्नलिखित में से कौन सा एक सकारात्मक प्रभाव है?

(A) शोषण
(B) ज्ञान एवं संस्कृति का प्रस्फुरण
(C) विकास का असमान स्तर
(D) संसाधनों का तीव्र गति से नष्ट होना

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का मूल सिद्धांत तुलनात्मक लाभ के सिद्धांत पर टिका है, जिसे सर्वप्रथम 19वीं शताब्दी के अर्थशास्त्री डेविड रिकार्डो ने व्यवस्थित रूप से प्रतिपादित किया था। यह सिद्धांत बताता है कि देशों को उन वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में विशेषज्ञता हासिल करनी चाहिए जिन्हें वे अन्य देशों की तुलना में अपेक्षाकृत कम अवसर लागत पर उत्पादित कर सकते हैं। अवसर लागत का तात्पर्य किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के लिए त्यागी गई दूसरी वस्तु की मात्रा से है। यदि कोई देश किसी वस्तु के उत्पादन में पूर्ण लाभ (absolute advantage) भी रखता हो, तब भी यदि वह तुलनात्मक लाभ के आधार पर व्यापार करे तो यह दोनों पक्षों के लिए फायदेमंद होता है। इस विशेषज्ञता और व्यापार के परिणामस्वरूप, वैश्विक उत्पादन में वृद्धि होती है, संसाधनों का अधिक कुशल आवंटन होता है, और उपभोक्ताओं को कम कीमतों पर विविध प्रकार की वस्तुएँ उपलब्ध होती हैं। उदाहरण के लिए, यदि देश 'अ' कम लागत पर कपड़ा बना सकता है और देश 'ब' कम लागत पर मशीनरी बना सकता है, तो दोनों देशों को अपनी-अपनी विशेषज्ञता वाली वस्तुओं का उत्पादन कर आपस में व्यापार करना चाहिए। इससे दोनों ही देश बिना अतिरिक्त संसाधन लगाए अधिक मात्रा में दोनों वस्तुओं का उपभोग कर पाएंगे, जो वैश्विक अर्थव्यवस्था की समग्र दक्षता को बढ़ाता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. तुलनात्मक लाभ का सिद्धांत मुख्य रूप से किस अवधारणा पर बल देता है?

(A) देशों द्वारा सभी वस्तुओं में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने पर
(B) उन वस्तुओं के उत्पादन में विशेषज्ञता पर जिनमें अपेक्षाकृत कम अवसर लागत हो
(C) केवल उन वस्तुओं का निर्यात करने पर जिनमें देश को पूर्ण लाभ हो
(D) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने पर

152. स्रोत के अनुसार, 'अवसर लागत' का क्या अर्थ है?

(A) किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के लिए त्यागी गई दूसरी वस्तु की मात्रा
(B) किसी वस्तु के उत्पादन में लगने वाली कुल वित्तीय लागत
(C) सरकार द्वारा व्यापार पर लगाया गया कर
(D) उत्पादन प्रक्रिया में लगने वाला कुल समय

153. डेविड रिकार्डो के सिद्धांत के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का परिणाम क्या होता है?

(A) वैश्विक उत्पादन में कमी और संसाधनों का अकुशल आवंटन
(B) व्यापार में शामिल केवल एक देश को लाभ
(C) वैश्विक उत्पादन में वृद्धि और संसाधनों का कुशल आवंटन
(D) वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि और विविधता में कमी

154. स्रोत में दिए गए उदाहरण में, देश 'अ' को क्या करना चाहिए?

(A) कपड़ा और मशीनरी दोनों का उत्पादन करना चाहिए
(B) केवल मशीनरी का आयात करना चाहिए

के लिए विशेषीकृत होते हैं।
4. वाणिज्यिक पत्तन यात्री-यातायात का भी प्रबंध करते हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 4 सही हैं।
(B) केवल 2 और 3 सही हैं।
(C) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

135. मेंफिस पत्तन किस नदी पर स्थित है?
(A) राइन नदी
(B) हुगली नदी
(C) टेम्स नदी
(D) मिसीसिपी नदी

136. दास व्यापार में कौन से यूरोपीय देश मुख्य रूप से शामिल थे?
(A) पुर्तगाली, डच, स्पेनिश और अंग्रेज़
(B) केवल जर्मन और फ्रांसीसी
(C) केवल इतालवी और यूनानी
(D) केवल स्वीडिश और नॉर्वेजियन

137. पत्तन जो छोटी दूरियों को तय करते हुए जलीय क्षेत्रों के आर-पार डाक तथा यात्रियों के परिवहन से जुड़े होते हैं, क्या कहलाते हैं?
(A) आंत्रपो पत्तन
(B) मार्ग पत्तन
(C) पैकेट स्टेशन
(D) तैल पत्तन

138. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. तैल पत्तन - माराकाइबो
2. मार्ग पत्तन - होनोलूलू
3. आंत्रपो पत्तन - कोपेनहेगेन
4. नौ सेना पत्तन - सिंगापुर
5. पैकेट स्टेशन - डोवर

उपरोक्त में से कौन से पत्तनों के प्रकार और उनके उदाहरणों का सही मिलान करते हैं?
(A) केवल 1, 2, 3 और 4
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 5
(D) सभी कथन सही हैं।

139. व्यापार का कौन सा प्रकार दो से अधिक देशों के बीच होता है?
(A) द्विपाश्विक व्यापार
(B) आंतरिक व्यापार
(C) स्थानीय व्यापार
(D) बहु-पाश्विक व्यापार

140. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (देश/महाद्वीप)
P. यूरोप
Q. एशिया
R. भारत
S. वेनेज़ुएला

List II: (पत्तन)
1. सिंगापुर
2. रोटरडम
3. माराकाइबो
4. कारवाड़

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

141. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का कौन सा आधार जनसंख्या के आकार और सांस्कृतिक कारकों से संबंधित है?
(A) राष्ट्रीय संसाधनों में भिन्नता
(B) आर्थिक विकास की प्रावस्था
(C) जनसंख्या कारक
(D) परिवहन

142. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): प्राचीन समय में व्यापार स्थानीय बाज़ारों तक ही सीमित था।
तर्क (R): उस समय लंबी दूरियों तक वस्तुओं का परिवहन जोखिमपूर्ण होता था।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

143. निम्नलिखित में से कौन सा पत्तन उसकी अवस्थिति के आधार पर वर्गीकृत पत्तनों का उदाहरण है?
(A) मानचेस्टर
(B) कोच्चि
(C) अबादान
(D) सिंगापुर

144. निम्नलिखित में से कौन सा एक 'मार्ग पत्तन' का उदाहरण नहीं है?
(A) अदन
(B) कोच्चि
(C) होनोलूलू
(D) सिंगापुर

145. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मुक्त व्यापार का अर्थ व्यापारिक अवरोधों को बढ़ाना है।
2. डंपिंग का अर्थ किसी वस्तु को दो देशों में समान कीमत

124. एक ऐतिहासिक अमेरिकी दास नीलामी विज्ञापन में दासों के अतिरिक्त और क्या बेचा जा रहा था?
(A) केवल हथियार और गोला-बारूद
(B) चावल, किताबें, रिबन आदि
(C) केवल ज़मीन और मकान
(D) केवल मवेशी और घोड़े

125. व्यापार करने के लिए न्यूनतम कितने पक्षों का होना आवश्यक है?
(A) एक
(B) तीन
(C) दो
(D) चार

126. टैंकर पत्तन और तेल शोधन पत्तन किस वृहद् श्रेणी के पत्तनों के उप-प्रकार हैं?
(A) मार्ग पत्तन
(B) आंत्रपो पत्तन
(C) औद्योगिक पत्तन
(D) तैल पत्तन

127. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. व्यापार का अर्थ वस्तुओं और सेवाओं का स्वैच्छिक आदान-प्रदान है।
2. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार राष्ट्रों के बीच सीमाओं के आर-पार होता है।
3. विनिमय व्यवस्था में वस्तु के बदले वस्तु दी जाती थी।
4. व्यापार दोनों ही पक्षों के लिए समान रूप से लाभदायक होता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 3 और 4 सही हैं।
(C) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(D) सभी 1, 2, 3 and 4 सही हैं।

128. विश्व व्यापार संगठन के विषय में कौन सा कथन असत्य है?
(A) यह एकमात्र ऐसा अंतर्राष्ट्रीय संगठन है जो राष्ट्रों के मध्य वैश्विक नियमों का व्यवहार करता है।
(B) यह स्वास्थ्य और पर्यावरण जैसे मुद्दों को वाणिज्यिक हितों से ऊपर रखता है।
(C) यह अपने सदस्य देशों के मध्य विवादों का निपटारा करता है।
(D) भारत इसके संस्थापक सदस्यों में से एक है।

129. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (पत्तन)
P. सिंगापुर
Q. कोच्चि
R. अदन
S. डोवर

List II: (प्रकार)
1. मार्ग पत्तन
2. पैकेट स्टेशन
3. नौ सेना पत्तन
4. आंत्रपो पत्तन

(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

130. राष्ट्रों को व्यापार करने की आवश्यकता क्यों होती है?
(A) उन वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए जिन्हें वे स्वयं उत्पादित नहीं कर सकते या कम दामों में ख़रीद सकते हैं।
(B) उन वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए जिन्हें वे स्वयं अधिक दामों पर बना सकते हैं।
(C) केवल अपनी अतिरिक्त वस्तुओं को बेचने के लिए।
(D) केवल राजनीतिक संबंध स्थापित करने के लिए।

131. एक ऋणात्मक व्यापार संतुलन का देश की आर्थिकी पर क्या निहितार्थ होता है?
(A) यह वित्तीय संचय की वृद्धि को अभिप्रेरित करता है।
(B) यह देश को आत्मनिर्भर बनाता है।
(C) यह वित्तीय संचय की समाप्ति को अभिप्रेरित करता है।
(D) इसका आर्थिकी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

132. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): बाह्य पत्तन गहरे जल के पत्तन हैं जो वास्तविक पत्तन से दूर बने होते हैं।
तर्क (R): ये उन जहाज़ों को ग्रहण करते हैं जो अपने बड़े आकार के कारण वास्तविक पत्तन तक पहुँचने में अक्षम हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

133. किस घटना के पश्चात् कच्चे माल जैसे अनाज, मांस, ऊन की माँग बढ़ी, लेकिन विनिर्माण की वस्तुओं की तुलना में उनका मौद्रिक मूल्य घट गया?
(A) रोमन साम्राज्य के विखंडन के पश्चात्
(B) अमेरिका की खोज के पश्चात्
(C) औद्योगिक क्रांति के पश्चात्
(D) प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात्

134. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. विस्तृत पत्तन बड़े परिमाण में सामान्य नौभार का थोक में प्रबंध करते हैं।
2. औद्योगिक पत्तन सामान्य नौभार संवेष्टित उत्पादों का निपटान करते हैं।
3. वाणिज्यिक पत्तन थोक नौभार जैसे अनाज, चीनी, अयस्क

(C) देश 'ब' के साथ व्यापार करने से बचना चाहिए
(D) केवल कपड़ा उत्पादन में विशेषज्ञता हासिल करनी चाहिए

155. यह सिद्धांत कब भी व्यापार को फायदेमंद मानता है?
(A) जब दोनों देशों की अवसर लागत समान हो
(B) जब एक देश को किसी भी वस्तु के उत्पादन में कोई लाभ न हो
(C) जब एक देश को दोनों वस्तुओं के उत्पादन में पूर्ण लाभ (absolute advantage) हो
(D) जब व्यापार पर उच्च टैरिफ लगाए गए हों

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को उदार बनाने और टैरिफ बाधाओं को कम करने के उद्देश्य से 1948 में 'शुल्क एवं व्यापार पर सामान्य समझौता' (GATT) की स्थापना की गई। गैट (GATT) मुख्य रूप से वस्तुओं के व्यापार पर केंद्रित था और इसने वार्ताओं के कई दौरों के माध्यम से सदस्य देशों के बीच औसत टैरिफ दरों को सफलतापूर्वक कम किया। हालाँकि, समय के साथ यह महसूस किया गया कि वैश्विक अर्थव्यवस्था को एक अधिक व्यापक और स्थायी संस्था की आवश्यकता है जो न केवल वस्तुओं, बल्कि सेवाओं और बौद्धिक संपदा अधिकारों जैसे क्षेत्रों को भी विनियमित कर सके। इसी के परिणामस्वरूप, 1995 में उरुग्वे दौर की वार्ता के समापन पर गैट को 'विश्व व्यापार संगठन' (WTO) में बदल दिया गया। डब्ल्यूटीओ का दायरा गैट की तुलना में बहुत व्यापक है; यह व्यापार से संबंधित बौद्धिक संपदा अधिकारों (TRIPS), सेवाओं में व्यापार पर सामान्य समझौते (GATS) और कृषि जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों को कवर करता है। इसके अतिरिक्त, डब्ल्यूटीओ एक शक्तिशाली विवाद निपटान प्रणाली प्रदान करता है जो सदस्य देशों के बीच व्यापार विवादों को हल करने के लिए बाध्यकारी निर्णय दे सकता है। इस संस्थागत परिवर्तन ने वैश्विक व्यापार के नियमों को एक मजबूत और अधिक औपचारिक ढाँचा प्रदान किया, हालाँकि विकासशील देशों के हितों और विकसित देशों के प्रभुत्व को लेकर इसकी आलोचना भी होती रहती है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. 1948 में गैट (GATT) की स्थापना का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) अंतर्राष्ट्रीय यात्रा को बढ़ावा देना
(B) टैरिफ बाधाओं को कम करके व्यापार को उदार बनाना
(C) वैश्विक बौद्धिक संपदा अधिकारों को नियंत्रित करना
(D) सदस्य देशों के बीच राजनीतिक गठबंधन बनाना

157. विश्व व्यापार संगठन (WTO) की स्थापना किस वार्ता दौर के परिणामस्वरूप हुई?
(A) दोहा दौर
(B) टोक्यो दौर
(C) कैनेडी दौर
(D) उरुग्वे दौर

158. डब्ल्यूटीओ, गैट की तुलना में किस प्रकार भिन्न है?
(A) डब्ल्यूटीओ में सेवाओं और बौद्धिक संपदा जैसे क्षेत्र शामिल हैं और एक बाध्यकारी विवाद निपटान तंत्र है।
(B) डब्ल्यूटीओ केवल वस्तुओं के व्यापार पर ध्यान केंद्रित करता है।
(C) डब्ल्यूटीओ का दायरा संकुचित है और इसमें विवाद निपटान प्रणाली नहीं है।
(D) डब्ल्यूटीओ टैरिफ बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

159. स्रोत के अनुसार, डब्ल्यूटीओ द्वारा प्रदान की जाने वाली 'विवाद निपटान प्रणाली' की प्रमुख विशेषता क्या है?
(A) यह केवल गैर-बाध्यकारी सिफारिशें प्रदान करती है।
(B) यह केवल कृषि से संबंधित विवादों को हल करती है।
(C) यह सदस्य देशों के बीच व्यापार विवादों पर बाध्यकारी निर्णय दे सकती है।
(D) इसका उपयोग केवल विकसित देश ही कर सकते हैं।

160. 'TRIPS' का संबंध डब्ल्यूटीओ के किस क्षेत्र से है?
(A) व्यापार से संबंधित बौद्धिक संपदा अधिकार
(B) कृषि सब्सिडी
(C) सेवाओं में व्यापार
(D) वस्त्रों पर कोटा

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

यद्यपि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को समग्र आर्थिक विकास के एक इंजन के रूप में देखा जाता है, इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हैं, विशेष रूप से विकासशील देशों पर। एक प्रमुख चिंता 'डंपिंग' की प्रथा है, जिसमें एक देश अपने घरेलू बाजार की कीमत से भी कम कीमत पर या उत्पादन लागत से भी कम पर दूसरे देश में माल का निर्यात करता है। यह अक्सर अतिरिक्त उत्पादन को खपाने या विदेशी बाजार पर कब्जा करने के लिए किया जाता है। इस अनुचित प्रतिस्पर्धा के कारण आयातक देश के स्थानीय उद्योग नष्ट हो सकते हैं, क्योंकि वे इतनी कम कीमतों का मुकाबला नहीं कर पाते। इससे स्थानीय स्तर पर बेरोजगारी बढ़ती है और आर्थिक निर्भरता पैदा होती है। इसके अलावा, मुक्त व्यापार की व्यवस्था कभी-कभी 'असमान विनिमय' को जन्म देती है, जहाँ विकासशील देश सस्ते कच्चे माल का निर्यात करते हैं और विकसित देशों से महंगे विनिर्मित सामान का आयात करते हैं। इससे व्यापार की शर्तें विकासशील देशों के प्रतिकूल हो जाती हैं और धन का प्रवाह लगातार अमीर देशों की ओर बना रहता है। पर्यावरण संबंधी चिंताएँ भी महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि उत्पादन लागत कम करने के दबाव में कंपनियाँ विकासशील देशों के कमजोर पर्यावरण नियमों का फायदा उठा सकती हैं, जिससे प्रदूषण और संसाधनों का अत्यधिक दोहन होता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. स्रोत के अनुसार, 'डंपिंग' की प्रथा का क्या अर्थ है?
(A) उच्च गुणवत्ता वाले सामान का निर्यात करना
(B) केवल मित्र देशों के साथ व्यापार करना

102. निम्न भूमियों में किस प्रकार की संभाव्यता अधिक होती है?
(A) खनिज संभाव्यता
(B) कृषि-संभाव्यता
(C) पर्यटन संभाव्यता
(D) औद्योगिक संभाव्यता

103. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. GATT का पूर्ण रुप जनरल एग्रीमेंट ऑन ट्रेड एंड टैरिफ है।
2. WTO एक अस्थायी संस्था है।
3. WTO की स्थापना राष्ट्रों के बीच मुक्त एवं निष्पक्ष व्यापार को बढ़ाने के लिए की गई थी।
4. भारत GATT का सदस्य नहीं था, लेकिन WTO का संस्थापक सदस्य है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 3 सही हैं।
(B) केवल 2 और 4 सही हैं।
(C) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

104. पर्वतीय प्रदेश किस प्रकार के क्रियाकलाप को आकर्षित करते हैं?
(A) पर्यटन
(B) गहन कृषि
(C) भारी उद्योग
(D) मत्स्य पालन

105. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): विकसित देशों को अपने बाज़ारों को विदेशी उत्पादों से संरक्षित रखने की सलाह दी जाती है।
तर्क (R): मुक्त व्यापार के साथ डंप की गई सस्ती वस्तुएँ घरेलू उत्पादकों को नुकसान पहुँचा सकती हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

106. विकासशील देशों में खनन, तेल-खनन और भारी अभियांत्रिकी जैसे उद्योगों के विकास में कौन सा कारक सहायक हो सकता है?
(A) विदेशी निवेश
(B) आंतरिक व्यापार
(C) जनसंख्या का आकार
(D) सांस्कृतिक कारक

107. किसी दिए हुए क्षेत्र में जीवित रह जाने वाले पादप व वन्य जात के प्रकार को कौन सा कारक प्रभावित करता है?
(A) भूविज्ञान
(B) उच्चावच
(C) मृदा
(D) जलवायु

108. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. गोदी की सुविधा प्रदान करना।
2. माल को लादना और उतारना।
3. भंडारण हेतु सुविधाएँ प्रदान करना।
4. नौगम्य द्वारों का रख-रखाव।
5. श्रम एवं प्रबंधकीय सेवाओं को उपलब्ध कराना।

उपरोक्त में से कौन से पत्तन के कार्यकलापों का हिस्सा हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 and 5

109. 'व्यापर' शब्द किस प्रकार के क्रियाकलाप के अंतर्गत आता है?
(A) प्राथमिक क्रियाकलाप
(B) द्वितीयक क्रियाकलाप
(C) तृतीयक क्रियाकलाप
(D) चतुर्थक क्रियाकलाप

110. पत्तनों के वर्गीकरण का वह कौन सा प्रकार है जो निपटाये गये नौभार के अनुसार किया जाता है?
(A) औद्योगिक, वाणिज्यिक तथा विस्तृत
(B) अंतर्देशीय तथा बाह्य अवस्थिति
(C) नौसेना तथा पैकेट स्टेशन सेवाएं
(D) नौभार के निपटान की प्रकृति

111. 12वीं और 13वीं शताब्दी के दौरान यूरोपीय वाणिज्य में वृद्धि का मुख्य कारण क्या था?
(A) समुद्रगामी युद्धपोतों का विकास
(B) रोमन साम्राज्य का विखंडन
(C) अमेरिका की खोज
(D) औद्योगिक क्रांति

112. व्यापारिक समूहों के निर्माण द्वारा राष्ट्रों को सामान्यतः क्या लाभ प्राप्त होते हैं?
(A) सदस्य देशों के व्यापारिक स्पर्धा।
(B) सदस्य देशों के व्यापार कर में कमी।
(C) एक सदस्य देश का विशिष्ट लाभ।
(D) गैर-सदस्य राष्ट्रों हेतु सुलभ व्यापार।

113. निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही नहीं है?
(A) एक पत्तन द्वारा निपटाया नौभार उसके पृष्ठ प्रदेश के विकास का सूचक है।
(B) बाह्य पत्तन वास्तविक पत्तन के अंदर बने होते हैं।
(C) विस्तृत पत्तन सामान्य नौभार का थोक में प्रबंध करते हैं।
(D) अंतर्देशीय पत्तन नदी अथवा नहर द्वारा समुद्र से जुड़े होते हैं।

जहाज पर लाद दिया जाता है ताकि उसे उसके अंतिम गंतव्य तक पहुँचाया जा सके। सिंगापुर, रॉटरडैम और दुबई जैसे पत्तन आंत्रपो व्यापार के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इनकी सफलता उनकी रणनीतिक भौगोलिक स्थिति, उत्कृष्ट अवसंरचना, कुशल सीमा शुल्क प्रक्रियाओं और राजनीतिक स्थिरता पर निर्भर करती है। ये पत्तन अक्सर मूल्य-वर्धित सेवाएँ (value-added services) भी प्रदान करते हैं, जैसे कि माल का भंडारण, ग्रेडिंग, री-पैकेजिंग और लेबलिंग। इस प्रकार, वे न केवल माल के भौतिक हस्तांतरण की सुविधा प्रदान करते हैं, बल्कि वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में भी काम करते हैं, जिससे वे अपने क्षेत्र और विश्व की अर्थव्यवस्था के लिए अत्यधिक मूल्यवान बन जाते हैं। ये पत्तन वैश्विक व्यापार प्रवाह के लिए एक महत्वपूर्ण जंक्शन के रूप में कार्य करते हैं और बड़ी मात्रा में माल को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करते हैं।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. 'आंत्रपो पत्तन' का मुख्य कार्य क्या है?
(A) स्थानीय बाजार के लिए माल का उत्पादन करना।
(B) केवल यात्री जहाजों को सेवा प्रदान करना।
(C) पुनर्निर्यात के लिए एक पारगमन केंद्र के रूप में कार्य करना।
(D) नौसैनिक गतिविधियों के लिए एक आधार प्रदान करना।

172. निम्नलिखित में से कौन सा पत्तन आंत्रपो व्यापार का एक उत्कृष्ट उदाहरण है?
(A) कोलकाता
(B) सिंगापुर
(C) न्यूयॉर्क
(D) मैनचेस्टर

173. आंत्रपो पत्तन की सफलता के लिए कौन सा कारक महत्वपूर्ण नहीं है?
(A) रणनीतिक भौगोलिक स्थिति
(B) कुशल सीमा शुल्क प्रक्रियाएं
(C) उत्कृष्ट अवसंरचना
(D) बड़ा स्थानीय उपभोक्ता बाजार

174. आंत्रपो पत्तन द्वारा प्रदान की जाने वाली 'मूल्य-वर्धित सेवा' का एक उदाहरण क्या है?
(A) माल की री-पैकेजिंग और लेबलिंग
(B) माल का उत्पादन करना
(C) माल का स्थानीय उपभोग करना
(D) जहाजों का निर्माण करना

175. स्रोत के अनुसार, आंत्रपो पत्तन वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में क्या भूमिका निभाते हैं?
(A) वे एक अंतिम गंतव्य के रूप में कार्य करते हैं।
(B) वे एक महत्वहीन और छोटी भूमिका निभाते हैं।
(C) वे एक महत्वपूर्ण कड़ी और जंक्शन के रूप में काम करते हैं।
(D) वे एक बाधा के रूप में कार्य करते हैं।

ANSWERS

1. (B) वस्तुओं व सेवाओं का विनिमय
व्यापार का अर्थ वस्तुओं और सेवाओं का स्वैच्छिक आदान-प्रदान है जो दो या दो से अधिक पक्षों के मध्य होता है। यह एक मौलिक आर्थिक क्रिया है जहाँ आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अधिशेष का विनिमय किया जाता है। आधुनिक समय में यह वैश्विक स्तर पर संसाधनों के प्रवाह को सुगम बनाता है जिससे क्षेत्रीय माँग और आपूर्ति संतुलित होती है।

2. (A) विनिमय व्यवस्था
मानव इतिहास के आरंभिक काल में आदिम समाजों के भीतर व्यापार का प्राथमिक स्वरूप वस्तु विनिमय व्यवस्था ही था। इस विनिमय प्रक्रिया में मुद्रा का उपयोग किए बिना वस्तुओं का प्रत्यक्ष आदान-प्रदान होता था। समुदाय अपनी बुनियादी आजीविका की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भोजन या औजारों जैसी वस्तुओं की अदला-बदली पर पूरी तरह से निर्भर रहते थे।

3. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
विनिमय व्यवस्था में वस्तुओं का सीधा लेन-देन होता है जहाँ मुद्रा की कोई भूमिका नहीं होती है। यह व्यवस्था आवश्यकताओं के दोहरे संयोग पर आधारित है जिसमें दोनों पक्षों के पास एक-दूसरे की जरूरत की वस्तु होना अनिवार्य है। ऐतिहासिक रूप से यह मुद्रा के विकास से पहले की स्थिति है जहाँ प्राचीन लोग अपनी अधिशेष वस्तुओं का परस्पर विनिमय करते थे।

4. (D) असम
जॉन बील मेला असम के मोरीगाँव जिले में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला एक अत्यंत अनूठा और ऐतिहासिक मेला है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ आज भी व्यापार के लिए प्राचीन विनिमय व्यवस्था का पालन किया जाता है। विभिन्न जनजातीय समुदायों के लोग यहाँ एकत्र होकर अदरक, हल्दी और मछली जैसी वस्तुओं का पारंपरिक तरीके से आदान-प्रदान करते हैं।

5. (C) प्लास्टिक के सिक्के
प्राचीन काल में कौड़ी, चकमक पत्थर और जानवरों के अंगों जैसे प्राकृतिक पदार्थों का उपयोग मुद्रा के रूप में किया जाता था। प्लास्टिक के सिक्के आधुनिक औद्योगिक उत्पादन और सिंथेटिक सामग्री के विकास का परिणाम हैं। प्राचीन सभ्यताओं में केवल उन्हीं वस्तुओं को मुद्रा माना जाता था जिनका अपना आंतरिक मूल्य हो या जो दुर्लभ प्राकृतिक संसाधनों से प्राप्त की गई हों।

6. (B) नमक के द्वारा भुगतान
अंग्रेजी शब्द 'सैलरी' की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'सैलेरिअम' से हुई है जिसका शाब्दिक अर्थ नमक के रूप में किया गया भुगतान है। प्राचीन रोम में नमक एक अत्यंत मूल्यवान वस्तु थी जिसका उपयोग भोजन के संरक्षण के लिए किया जाता था। रोमन सैनिकों को उनके वेतन के एक हिस्से के रूप में नमक दिया जाता था जो उसकी उपयोगिता को दर्शाता है।

7. (B) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
रेशम मार्ग लगभग छह हजार किलोमीटर लंबा एक प्राचीन व्यापारिक मार्ग था जो रोम को चीन से जोड़ता था। यद्यपि इसका नाम रेशम के व्यापार पर पड़ा था लेकिन इसके माध्यम से ऊन और कीमती धातुओं जैसी अन्य वस्तुओं का भी परिवहन होता था। यह मार्ग प्राचीन काल में लंबी दूरी के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और सांस्कृतिक विनिमय का सबसे महत्वपूर्ण उदाहरण माना जाता है।

8. (A) दास व्यापार
पंद्रहवीं शताब्दी में यूरोपीय उपनिवेशवाद के विस्तार के साथ दास व्यापार जैसे अमानवीय आर्थिक क्रियाकलाप का उदय हुआ। इसके तहत अफ्रीकी निवासियों को बलपूर्वक पकड़कर अमेरिकी बागानों में सस्ते श्रम के रूप में उपयोग करने के लिए भेजा जाता था। यह व्यवस्था तत्कालीन वैश्विक व्यापारिक नेटवर्क का एक प्रमुख हिस्सा बन गई थी जिसने कई महाद्वीपों की सामाजिक और आर्थिक संरचना को प्रभावित किया।

9. (A) P-2, Q-3, R-1
दास व्यापार को समाप्त करने के लिए विभिन्न देशों ने अलग-अलग समय पर कानूनी अधिनियम पारित किए थे। डेनमार्क ने सबसे पहले सत्रह सौ बानवे में इसे प्रतिबंधित किया था। इसके पश्चात ग्रेट ब्रिटेन ने अठारह सौ सात में और संयुक्त राज्य अमेरिका ने अठारह सौ आठ में इसके विरुद्ध कानून बनाए। ये विधायी कदम वैश्विक स्तर पर मानव अधिकारों की दिशा में महत्वपूर्ण मील का पत्थर थे।

10. (A) कच्चे माल का आयात व निर्मित माल का निर्यात
औद्योगिक क्रांति के बाद विकसित राष्ट्रों ने अपनी आर्थिक प्रगति को बनाए रखने के लिए व्यापारिक पैटर्न को बदल दिया। उन्होंने विकासशील क्षेत्रों से भारी मात्रा में कच्चे माल का आयात करना शुरु किया ताकि उनके कारखानों को निरंतर आपूर्ति मिल सके। इसके बदले में वे वैश्विक बाजारों में अपने कारखानों में तैयार निर्मित उत्पादों का निर्यात करके भारी आर्थिक लाभ अर्जित करते थे।

11. (D) शुल्क को घटाने में सहायता करना
व्यापार व शुल्क हेतु सामान्य समझौते का गठन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को सुगम बनाने और व्यापारिक बाधाओं को कम करने के उद्देश्य से किया गया था। इसका मुख्य लक्ष्य उन उच्च सीमा शुल्कों और मात्रात्मक प्रतिबंधों को हटाना था जो राष्ट्रों के बीच वस्तुओं के मुक्त प्रवाह में बाधा डालते थे। इसने सदस्य देशों

के बीच आर्थिक सहयोग और मुक्त व्यापार को बढ़ावा देने का कार्य किया।

12. (B) यह केवल एक पक्ष के लिए लाभदायक होता है।
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सैद्धांतिक रूप से व्यापार में शामिल होने वाले सभी देशों के लिए पारस्परिक रूप से लाभदायक होना चाहिए। यह तुलनात्मक लाभ और विशिष्टीकरण के सिद्धांतों पर आधारित है जहाँ प्रत्येक राष्ट्र उस वस्तु का उत्पादन करता है जिसमें वह अधिक कुशल है। यद्यपि वास्तविक व्यापार में असंतुलन हो सकता है लेकिन इसका मूल उद्देश्य वैश्विक स्तर पर संसाधनों का कुशल वितरण करना है।

13. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार तुलनात्मक लाभ और हस्तांतरणीयता जैसे महत्वपूर्ण आर्थिक सिद्धांतों पर टिका हुआ है। ये सिद्धांत सुझाव देते हैं कि राष्ट्रों को उन वस्तुओं के उत्पादन में विशिष्टता प्राप्त करनी चाहिए जहाँ उनकी लागत न्यूनतम हो। यदि इन सिद्धांतों का सही ढंग से पालन किया जाए तो व्यापार करने वाले सभी भागीदारों को समान रूप से आर्थिक समृद्धि और लाभ प्राप्त होता है।

14. (D) भू-गर्भिक भौगोलिक संरचना
किसी भी क्षेत्र की भू-गर्भिक संरचना वहाँ उपलब्ध खनिज संसाधनों के आधार को निर्धारित करती है जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का एक प्रमुख घटक है। धरातलीय विभिन्नताएं यह तय करती हैं कि किसी देश में कौन से खनिज पाए जाएंगे और उनका उत्खनन कैसे होगा। यही कारण है कि खनिज संपन्न देश वैश्विक बाजार में कच्चे माल के प्रमुख निर्यातक के रूप में अपनी पहचान बनाते हैं।

15. (A) केला, रबड़ तथा कहवा
उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों की जलवायु विशिष्ट प्रकार की फसलों जैसे केला, रबड़ और कहवा के उत्पादन के लिए अत्यंत उपयुक्त होती है। ये उत्पाद इन क्षेत्रों की कृषि अर्थव्यवस्था का आधार हैं और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में इनकी बहुत अधिक माँग रहती है। विभिन्न जलवायु प्रदेश अपनी विशिष्ट प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण अलग-अलग प्रकार की वस्तुओं के उत्पादन और उनके वैश्विक व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

16. (C) केवल 5
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का आधार राष्ट्रों के बीच संसाधनों और जलवायु की भिन्नता है न कि समानता। यदि सभी देशों में समान जलवायु और संसाधन होंगे तो व्यापार की आवश्यकता ही समाप्त हो जाएगी। राष्ट्रीय संसाधनों में विविधता, जनसंख्या के कारक और परिवहन की सुविधा जैसे तत्व ही व्यापार को प्रोत्साहित करते हैं। इसलिए जलवायु की समानता अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के आधार के रूप में कार्य नहीं करती है।

17. (B) आकार, वितरण और विविधता
जनसंख्या के आकार, वितरण और सांस्कृतिक विविधता का व्यापार की जाने वाली वस्तुओं की मात्रा और प्रकार पर सीधा प्रभाव पड़ता है। अधिक जनसंख्या वाले देशों में आंतरिक खपत अधिक होने के कारण निर्यात कम हो सकता है। साथ ही विभिन्न समुदायों की रुचियाँ और सांस्कृतिक विरासत यह निर्धारित करती हैं कि किन विशिष्ट हस्तशिल्प या पारंपरिक वस्तुओं का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर क्रय-विक्रय किया जाएगा।

18. (A) सांस्कृतिक कारक
चीन का पॉर्सलिन, ईरान के कालीन और इंडोनेशिया के बटिक वस्त्र सांस्कृतिक कारकों के उत्कृष्ट उदाहरण हैं जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रभावित करते हैं। ये वस्तुएँ विशिष्ट क्षेत्रों की सदियों पुरानी परंपराओं और कलात्मक कौशल को दर्शाती हैं। विश्व भर में इनकी माँग उनकी सांस्कृतिक विशिष्टता के कारण बनी रहती है जिससे संबंधित देशों को अपनी सांस्कृतिक विरासत के माध्यम से आर्थिक लाभ प्राप्त होता है।

19. (A) 2, 1, 4, 3
व्यापारिक इतिहास की प्रमुख घटनाओं का क्रम रोमन साम्राज्य के विखंडन से शुरु होता है जिसके बाद बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी में यूरोपीय वाणिज्य में वृद्धि हुई। इसके पश्चात पंद्रहवीं शताब्दी के आसपास दास व्यापार का उदय हुआ और अंततः अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में औद्योगिक क्रांति हुई। इन ऐतिहासिक चरणों ने वैश्विक व्यापार के स्वरूप और दिशा को पूरी तरह से बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

20. (D) आंतरिक व्यापार
सघन जनसंख्या वाले देशों में उत्पादित वस्तुओं का अधिकांश भाग स्थानीय बाजारों की जरूरतों को पूरा करने में ही खपत हो जाता है। ऐसे देशों में विशाल घरेलू मांग के कारण बाहरी देशों के साथ व्यापार करने के लिए अधिशेष की मात्रा तुलनात्मक रूप से कम रह जाती है। इसी कारण इन राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की अपेक्षा राष्ट्र की सीमाओं के भीतर आंतरिक व्यापार अधिक होता है।

21. (C) मशीनरी का निर्यात व कच्चे माल का आयात।
किसी देश के आर्थिक विकास की अवस्था यह निर्धारित करती है कि वह किन वस्तुओं का व्यापार करेगा। औद्योगिक रूप से विकसित राष्ट्र सामान्यतः उच्च तकनीक वाली मशीनरी और विनिर्मित उत्पादों का निर्यात करते हैं जबकि वे अपने उद्योगों को चलाने के लिए कच्चे माल का आयात करते हैं। इसके विपरीत कृषि प्रधान या विकासशील राष्ट्र कच्चे माल के निर्यातक और निर्मित वस्तुओं के आयातक होते हैं।

22. (C) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
विदेशी निवेश विकासशील देशों में खनन और भारी इंजीनियरिंग जैसे पूँजी प्रधान उद्योगों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जहाँ विकासशील देशों में पूँजी का अभाव होता है वहीं औद्योगिक राष्ट्र वहाँ निवेश करके अपने लिए नए बाजार तैयार करते हैं। यह प्रक्रिया निवेश प्राप्त करने वाले देश के व्यापार को भी बढ़ावा देती है जिससे अंततः वैश्विक आर्थिक एकीकरण की गति तीव्र होती है।

90. (C) P-2, Q-3, R-1, S-4
विश्व के विभिन्न क्षेत्रों की अपनी विशिष्ट हस्तशिल्प और उत्पाद परंपराएं हैं जो उनके व्यापार का आधार बनती हैं। चीन अपने उत्कृष्ट पॉर्सलिन के लिए प्रसिद्ध है, ईरान अपने उच्च गुणवत्ता वाले कालीनों के लिए जाना जाता है, उत्तरी अफ्रीका में चमड़े का काम विशेषज्ञता का क्षेत्र है और इंडोनेशिया अपने अनूठे बटिक वस्त्रों के लिए विश्व भर में अपनी विशिष्ट पहचान और व्यापारिक मांग रखता है।

91. (D) उन्होंने व्यापार कर और संख्यात्मक प्रतिबंध लगाए।
प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान राष्ट्रों ने अपनी अर्थव्यवस्थाओं को संरक्षित करने और युद्ध प्रयासों को सहारा देने के लिए मुक्त व्यापार पर कड़े प्रतिबंध लगा दिए थे। इस दौरान आयात पर उच्च सीमा शुल्क लगाए गए और वस्तुओं की मात्रा पर संख्यात्मक सीमाएँ तय कर दी गईं। इन युद्धों ने वैश्विक व्यापारिक संबंधों को अस्थाई रूप से तोड़ दिया था जिससे अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य की गति बहुत धीमी हो गई थी।

92. (B) पर्यावरण का संरक्षण
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार उत्पादन के स्तर को बढ़ाने और वैश्विक स्तर पर कीमतों के समानीकरण में सहायक होता है जिससे लोगों का रहन-सहन का स्तर सुधरता है। हालांकि पर्यावरण का संरक्षण अक्सर व्यापार के सकारात्मक लाभों में शामिल नहीं होता है क्योंकि बढ़ता हुआ वैश्विक व्यापार अक्सर प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन और प्रदूषण का कारण बनता है। यह आर्थिक प्रगति और पर्यावरणीय सुरक्षा के बीच एक निरंतर चलने वाला संघर्ष है।

93. (B) केवल 3 और 4 सही हैं।
द्विपाश्विक व्यापार विशेष रूप से दो देशों के बीच पारस्परिक सहमति से होता है जबकि बहु-पाश्विक व्यापार में एक देश एक साथ कई राष्ट्रों के साथ व्यापारिक संबंध रखता है। बहु-पाश्विक प्रणाली राष्ट्रों को अपने निर्यात के लिए व्यापक बाजार प्रदान करती है और आयात के लिए कई विकल्प खोलती है। द्विपाश्विक समझौते अक्सर विशिष्ट आर्थिक या राजनीतिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए दो देशों के बीच गहराई से जुड़े होते हैं।

94. (D) धरातलीय विभिन्नताएँ
किसी क्षेत्र की धरातलीय और भू-गर्भिक बनावट वहाँ की जलवायु और मृदा के प्रकार को प्रभावित करती है जो अंततः फसलों और पशुओं की विविधता को सुनिश्चित करती है। ऊँचाई, ढाल और मिट्टी की उर्वरता जैसे कारक यह तय करते हैं कि कौन से कृषि उत्पाद वहाँ पैदा होंगे। यही विविधता राष्ट्रों के बीच वस्तुओं के विनिमय और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की आवश्यकता को जन्म देने वाला एक मूलभूत प्राकृतिक कारण बनती है।

95. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार यदि असंतुलित हो तो वह कमजोर राष्ट्रों के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है क्योंकि इससे वे शक्तिशाली देशों पर निर्भर हो जाते हैं। यह स्थिति अक्सर विकास के असमान स्तर को जन्म देती है और विकासशील देशों के संसाधनों के शोषण का कारण बनती है। आत्मनिर्भरता की कमी और विदेशी उत्पादों की भारी आवक स्थानीय उद्योगों को पतन की ओर ले जा सकती है जो एक गंभीर आर्थिक चिंता है।

96. (B) खनिज संसाधनों की उपलब्धता
खनिज संसाधन किसी भी देश के औद्योगिक विकास की रीढ़ माने जाते हैं क्योंकि वे विनिर्माण उद्योगों के लिए आवश्यक कच्चा माल प्रदान करते हैं। जिन क्षेत्रों में लोहे, कोयले और अन्य धातुओं के प्रचुर भंडार होते हैं वहाँ उद्योगों की स्थापना और विकास बहुत तेजी से होता है। यही कारण है कि खनिज संपन्न देश वैश्विक स्तर पर भारी उद्योगों और संबंधित व्यापारिक गतिविधियों के प्रमुख केंद्र बन जाते हैं।

97. (B) चीन से रेशम का निर्यात, रोम से ऊन व बहुमूल्य धातुओं का आयात
ऐतिहासिक रेशम मार्ग के माध्यम से चीन मुख्य रूप से अपने उच्च गुणवत्ता वाले रेशम का निर्यात रोम को करता था। इसके बदले में रोम से ऊन, लिनेन और सोना-चाँदी जैसी बहुमूल्य धातुएं चीन को भेजी जाती थीं। यह द्विपक्षीय व्यापार न केवल आर्थिक दृष्टि से समृद्ध था बल्कि इसने एशिया और यूरोप के बीच सांस्कृतिक और तकनीकी ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए एक सेतु के रूप में भी कार्य किया।

98. (B) केवल 1, 3 और 5
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार श्रम विभाजन और विशिष्टीकरण को बढ़ावा देता है जिससे उत्पादन की दक्षता बढ़ती है। यह तुलनात्मक लाभ के सिद्धांत पर आधारित है और अक्सर किसी राष्ट्र की विदेश नीति के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में संचालित होता है। यह केवल विकसित देशों तक सीमित नहीं है और न ही केवल वस्तुओं तक बल्कि इसमें सेवाओं का भी उतना ही महत्व है जो वैश्विक आर्थिक संबंधों को और अधिक व्यापक बनाता है।

99. (C) व्यापार ने स्थानिक विस्तार का अनुभव किया।
रेलवे, समुद्री और वायु परिवहन के आधुनिक साधनों के विकास ने व्यापार की सीमाओं को स्थानीय स्तर से उठाकर वैश्विक स्तर पर फैला दिया है। अब भारी और जल्दी खराब होने वाली वस्तुओं को भी लंबी दूरियों तक तेजी से और कम लागत पर पहुँचाना संभव हो गया है। परिवहन की इस क्रांति ने दुनिया को एक बड़े बाजार में बदल दिया है जहाँ कोई भी देश भौगोलिक दूरी की बाधा के बिना व्यापार कर सकता है।

100. (A) P-4, Q-1, R-3, S-2
व्यापारिक शब्दावली में डंप करना कम कीमत पर माल बेचने से संबंधित है जबकि मुक्त व्यापार का अर्थ बाधाओं को हटाना है। अनुकूल व्यापार संतुलन तब होता है जब निर्यात का मूल्य आयात से अधिक हो और प्रतिकूल संतुलन इसका ठीक उल्टा होता है। ये अवधारणाएं किसी देश की व्यापारिक गतिविधियों के स्वास्थ्य और उसके अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रदर्शन को मापने के लिए अर्थशास्त्रियों द्वारा व्यापक रूप से उपयोग की जाती हैं।

34. (A) जनवरी 1995
विश्व व्यापार संगठन की आधिकारिक स्थापना एक जनवरी उन्नीस सौ पचानवे को उरुग्वे दौर की लंबी वार्ताओं के बाद हुई थी। इसने पूर्ववर्ती गैट का स्थान लिया और व्यापार नियमों को लागू करने के लिए एक अधिक शक्तिशाली एवं स्थायी मंच प्रदान किया। इसका गठन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को सुव्यवस्थित करने और सदस्य राष्ट्रों के बीच होने वाले आर्थिक विवादों को सुलझाने के लिए एक कानूनी ढांचे के रूप में किया गया।

35. (C) सदस्य राष्ट्रों की आंतरिक राजनीति
विश्व व्यापार संगठन मुख्य रूप से वैश्विक व्यापार नियमों के प्रशासन, सदस्य देशों के बीच व्यापारिक विवादों के निपटारे और सेवाओं के व्यापार को सुगम बनाने पर ध्यान केंद्रित करता है। यह संस्था राष्ट्रों के आंतरिक राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करती है क्योंकि इसका कार्यक्षेत्र केवल अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्यिक गतिविधियों तक सीमित है। इसका उद्देश्य निष्पक्ष व्यापार वातावरण बनाना है न कि किसी देश की संप्रभु राजनीति को नियंत्रित करना।

36. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
विश्व व्यापार संगठन की अक्सर यह कहकर आलोचना की जाती है कि यह विकसित देशों के हितों की रक्षा अधिक करता है। प्रभावशाली राष्ट्र अपनी नीतियों के माध्यम से अपने वाणिज्यिक लाभों को प्राथमिकता देते हैं जबकि विकासशील देशों को अपने बाजार खोलने के लिए मजबूर किया जाता है। यह असमानता अमीर और गरीब देशों के बीच की आर्थिक खाई को बढ़ाने का एक बड़ा कारण मानी जाती है।

37. (C) जिनेवा, स्विटजरलैंड
विश्व व्यापार संगठन का मुख्यालय स्विट्ज़रलैंड के जिनेवा शहर में स्थित है। यह स्थान अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति और व्यापारिक वार्ताओं का एक प्रमुख केंद्र है जहाँ विश्व भर के प्रतिनिधि व्यापारिक नियमों पर चर्चा करने के लिए एकत्रित होते हैं। यहाँ से संगठन अपनी वैश्विक गतिविधियों का संचालन करता है और सदस्य राष्ट्रों के बीच होने वाले विभिन्न समझौतों की निगरानी और उनके कार्यान्वयन को सुनिश्चित करता है।

38. (B) वस्तुओं एवं सेवाओं की विश्वव्यापी उपलब्धता
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का सबसे बड़ा सकारात्मक प्रभाव यह है कि इसके माध्यम से उपभोक्ताओं को विश्व भर की विभिन्न वस्तुएं और सेवाएं आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं। यह देशों को उन संसाधनों तक पहुँच प्रदान करता है जो उनके पास प्राकृतिक रूप से उपलब्ध नहीं हैं। इससे लोगों के जीवन स्तर में सुधार होता है और वैश्विक स्तर पर नई तकनीकों और विचारों का आदान-प्रदान तेजी से संभव हो पाता है।

39. (A) केवल 1, 2, 3 और 4
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के जहाँ लाभ हैं वहीं इसके कुछ गंभीर नकारात्मक परिणाम भी हो सकते हैं जैसे अन्य देशों पर अत्यधिक निर्भरता और आर्थिक शोषण। यह विकास के असमान स्तर को बढ़ावा दे सकता है और संसाधनों की प्रतिस्पर्धा के कारण राष्ट्रों के बीच युद्ध जैसी प्रतिद्वंद्विता पैदा कर सकता है। ज्ञान का प्रस्फुरण इसका एक सकारात्मक पहलू है जो नकारात्मक परिणामों की श्रेणी में शामिल नहीं होता है।

40. (A) संसाधनों के नष्ट होने की दर उनके पुनर्भरण की दर से तीव्र होती है।
वैश्विक व्यापार की बढ़ती माँग के कारण प्राकृतिक संसाधनों का दोहन बहुत तेजी से हो रहा है। अक्सर यह देखा गया है कि संसाधनों के उपयोग की गति उनके प्राकृतिक रूप से पुनर्जीवित होने की क्षमता से कहीं अधिक होती है। इससे पर्यावरण असंतुलन पैदा होता है और भविष्य के लिए आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता पर संकट खड़ा हो जाता है जो सतत विकास के लिए एक बड़ी चुनौती है।

41. (C) पोताश्रय तथा पत्तन
पत्तनों और पोताश्रयों को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का मुख्य प्रवेश द्वार माना जाता है क्योंकि वैश्विक वाणिज्य का अधिकांश भाग समुद्री मार्गों के माध्यम से ही संपन्न होता है। ये स्थल जहाजों के ठहरने, माल के लदान और उतराई के लिए आवश्यक आधारभूत संरचना प्रदान करते हैं। पत्तन ही वह स्थान हैं जहाँ से विदेशी माल देश के आंतरिक भागों में पहुँचता है और स्वदेशी उत्पाद विश्व बाजार के लिए भेजे जाते हैं।

42. (A) उसके पृष्ठ प्रदेश के विकास के स्तर का
किसी भी पत्तन के माध्यम से संभाला गया माल का कुल परिमाण उसके पीछे स्थित क्षेत्र जिसे पृष्ठ प्रदेश कहा जाता है के आर्थिक विकास का परिचायक होता है। यदि पृष्ठ प्रदेश औद्योगिक और कृषि रूप से समृद्ध है तो पत्तन पर व्यापारिक गतिविधियाँ और नौभार का प्रवाह बहुत अधिक होगा। इसलिए पत्तन की सक्रियता को देखकर संबंधित क्षेत्र की आर्थिक प्रगति का सटीक अनुमान लगाया जा सकता है।

43. (D) उनके द्वारा सँभाले गए यातायात के प्रकार के अनुसार
पत्तनों का वर्गीकरण आमतौर पर उनके द्वारा प्रबंधित किए जाने वाले माल और सेवाओं की प्रकृति के आधार पर किया जाता है। कुछ पत्तन केवल औद्योगिक कच्चे माल के लिए होते हैं जबकि कुछ यात्री यातायात या सामान्य वाणिज्यिक माल के लिए विशेषीकृत होते हैं। यह वर्गीकरण उनकी कार्यक्षमता और आर्थिक महत्व को समझने में मदद करता है जिससे व्यापारिक जहाजों को उनकी आवश्यकतानुसार सही गंतव्य चुनने में आसानी होती है।

44. (B) P-2, Q-1, R-3
पत्तनों की कार्यप्रणाली के आधार पर उन्हें विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया है। औद्योगिक पत्तन मुख्य रूप से थोक नौभार जैसे अयस्क और कोयले के लिए विशेषीकृत होते हैं। वाणिज्यिक पत्तन सामान्य उपभोक्ता वस्तुओं और डिब्बाबंद उत्पादों का निपटान करते हैं जबकि विस्तृत पत्तन वे होते हैं जो बहुत बड़े पैमाने पर सभी प्रकार के माल और यात्री यातायात का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करने में सक्षम होते हैं।

45. (C) औद्योगिक पत्तन
औद्योगिक पत्तन उन स्थानों पर विकसित होते हैं जहाँ भारी मात्रा में कच्चे माल जैसे अनाज, चीनी, खनिज अयस्क और कच्चे तेल का आयात-निर्यात किया जाता है। ये पत्तन अक्सर बड़े औद्योगिक क्षेत्रों के समीप स्थित होते हैं और इनमें थोक माल को संभालने के लिए विशेष क्रेन और भंडारण सुविधाएं मौजूद होती हैं। इनका मुख्य उद्देश्य उद्योगों को निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करना और उत्पादन लागत को कम करना होता है।

46. (4, 2, 1, 3)
वैश्विक व्यापार के इतिहास में महत्वपूर्ण घटनाओं का सही क्रम संयुक्त राज्य अमेरिका में दास व्यापार की समाप्ति अठारह सौ आठ से शुरु होता है। इसके बाद प्रथम विश्व युद्ध उन्नीस सौ चौदह में हुआ जिसके बाद उन्नीस सौ अड़तालीस में गैट का गठन किया गया। अंततः उन्नीस सौ पचानवे में विश्व व्यापार संगठन की स्थापना हुई जिसने वैश्विक व्यापार नियमों को एक नया स्वरुप प्रदान किया।

47. (A) विस्तृत पत्तन
दुनिया के अधिकांश महान और व्यस्ततम पत्तन विस्तृत पत्तन की श्रेणी में आते हैं क्योंकि वे हर प्रकार के नौभार को संभालने की क्षमता रखते हैं। ये पत्तन न केवल कच्चे माल और निर्मित उत्पादों का प्रबंधन करते हैं बल्कि यात्री सेवाओं और रसद आपूर्ति के लिए भी आधुनिक सुविधाओं से लैस होते हैं। इनकी विशालता और बहुआयामी कार्यक्षमता इन्हें वैश्विक समुद्री व्यापार का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र बनाती है।

48. (B) ये नदी या नहर से जुड़े पत्तन होते हैं।
अंतर्देशीय पत्तन समुद्र तट से दूर देश के आंतरिक भागों में स्थित होते हैं और नदियों या गहरी नहरों के माध्यम से खुले समुद्र से जुड़े रहते हैं। ये पत्तन छोटे जहाजों या विशेष प्रकार के चपटे पेंदे वाले जहाजों के माध्यम से माल का परिवहन करते हैं। इनकी स्थिति देश के भीतरी औद्योगिक और कृषि केंद्रों तक सीधी पहुँच प्रदान करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।

49. (B) पिरेइअस
मानचेस्टर, मेंफिस और कोलकाता अंतर्देशीय पत्तनों के प्रसिद्ध उदाहरण हैं क्योंकि ये नदियों या नहरों के किनारे स्थित हैं और समुद्र से सीधे नहीं जुड़े हैं। इसके विपरीत पिरेइअस एक तटीय पत्तन है जो ग्रीस में एथेंस के पास सीधे समुद्र के किनारे अवस्थित है। यह अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण एक गहरे पानी का वास्तविक पत्तन है जो विशाल समुद्री जहाजों को सेवा प्रदान करता है।

50. (A) उन बड़े जहाजों को ग्रहण करने के लिए जो वास्तविक पत्तन तक नहीं पहुँच पाते
बाह्य पत्तन वास्तविक या पैतृक पत्तनों से कुछ दूरी पर गहरे समुद्र में बनाए जाते हैं। इनका निर्माण विशेष रूप से उन आधुनिक विशालकाय जहाजों की सुविधा के लिए किया जाता है जो अपनी अधिक गहराई के कारण उथले या तटीय पत्तनों तक सुरक्षित रूप से नहीं पहुँच सकते। ये पत्तन माल के तीव्र आवागमन और बड़े जहाजों की लदान क्षमता का उपयोग करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

51. (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
कोलकाता हुगली नदी के तट पर स्थित भारत का एक प्रमुख अंतर्देशीय पत्तन है जो समुद्र से काफी भीतर स्थित है। अंतर्देशीय पत्तन हमेशा समुद्र तट पर नहीं होते बल्कि वे नदियों या नहरों के माध्यम से जलीय मार्गों से जुड़े होते हैं। ये पत्तन अक्सर उथले जल वाले होते हैं इसलिए विशाल समुद्री जहाजों को इन तक पहुँचने में कठिनाई हो सकती है जो गहरे समुद्री पत्तनों से भिन्न हैं।

52. (D) पिरेइअस
पिरेइअस ग्रीस में स्थित एक ऐतिहासिक और महत्वपूर्ण बाह्य पत्तन है जो मुख्य शहर एथेंस को समुद्री सेवाएं प्रदान करता है। यह भूमध्य सागर के सबसे व्यस्त पत्तनों में से एक है और विशाल जहाजों के लिए आवश्यक गहराई और आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराता है। अपनी रणनीतिक स्थिति के कारण यह यूरोप और एशिया के बीच होने वाले समुद्री व्यापार के लिए एक प्रमुख ट्रांजिट केंद्र भी है।

53. (D) सभी 1, 2, 3 और 4 सही हैं।
तैल पत्तन तेल के परिवहन और प्रसंस्करण के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए होते हैं जिनमें टैंकर और तेल शोधन पत्तन दोनों शामिल हैं। वेनेजुएला और खाड़ी देशों के कई पत्तन इसी श्रेणी में आते हैं जहाँ कच्चे तेल का भंडारण और शोधन किया जाता है। अबादान जैसे पत्तन तेल शोधन के प्रमुख केंद्र हैं जो कच्चे तेल को उपयोगी उत्पादों में बदलकर विश्व बाजार में भेजते हैं।

54. (B) टैंकर पत्तन
वेनेजुएला में स्थित माराकाइबो और लेबनान का त्रिपोली टैंकर पत्तन के उत्कृष्ट उदाहरण हैं जहाँ मुख्य रूप से कच्चे तेल का लदान और उतराई की जाती है। इन पत्तनों पर विशाल तेल टैंकरों के रुकने और पाइपलाइनों के माध्यम से तेल के त्वरित स्थानांतरण की विशेष व्यवस्था होती है। ये पत्तन वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखला के अत्यंत संवेदनशील और महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान करते हैं।

55. (D) जहाजों हेतु ईंधन व रसद आपूर्ति के विश्राम केंद्र।
मार्ग पत्तन जिन्हें विश्राम पत्तन भी कहा जाता है लंबी समुद्री यात्राओं के बीच जहाजों के लिए ठहराव बिंदु के रूप में कार्य करते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य जहाजों को ईंधन भरने, पानी की आपूर्ति करने और भोजन जैसी रसद सामग्री उपलब्ध कराना होता है। ये पत्तन अक्सर महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय समुद्री व्यापारिक मार्गों पर रणनीतिक रूप से स्थित होते हैं ताकि जहाजों को लंबी यात्रा के दौरान तकनीकी सहायता मिल सके।

56. (A) मार्ग पत्तन
अदन, होनोलूलू और सिंगापुर विश्व के प्रमुख मार्ग पत्तनों के उदाहरण हैं जो अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण जहाजों के लिए महत्वपूर्ण ठहराव स्थल बने हुए हैं। ये पत्तन हिंद

महासागर और प्रशांत महासागर के व्यस्ततम मार्गों पर स्थित हैं जहाँ जहाज अपनी यात्रा के बीच में आवश्यक सेवाओं के लिए रुकते हैं। इनकी उपस्थिति समुद्री परिवहन की निरंतरता और जहाजों के सुचारु संचालन को सुनिश्चित करने में सहायक होती है।

57. (C) फेरी-पत्तन
पैकेट स्टेशनों को फेरी-पत्तन के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि ये मुख्य रूप से कम दूरी के जलीय मार्गों पर यात्रियों और डाक के परिवहन के लिए उपयोग किए जाते हैं। ये स्टेशन विशेष रूप से उन क्षेत्रों में महत्वपूर्ण होते हैं जहाँ दो भू-भागों के बीच संकरा समुद्री रास्ता होता है। इनके माध्यम से नियमित अंतराल पर फेरियाँ चलती हैं जो दैनिक यात्रियों और माल के त्वरित आवागमन को सुगम बनाती हैं।

58. (A) पैकेट स्टेशन
इंग्लैंड का डोवर और फ्रांस का कैलाइस पैकेट स्टेशनों के सबसे प्रसिद्ध उदाहरण हैं जो इंग्लिश चैनल के दोनों ओर आमने-सामने स्थित हैं। ये दोनों पत्तन यूरोप के मुख्य भू-भाग और ब्रिटेन के बीच यात्रियों, वाहनों और माल के तीव्र परिवहन के लिए जाने जाते हैं। यहाँ से चलने वाली फेरियाँ और उच्च गति वाली समुद्री सेवाएं दोनों देशों के बीच निरंतर संपर्क और व्यापारिक गतिविधियों को बनाए रखती हैं।

59. (D) सिंगापुर
सिंगापुर एशिया के लिए एक प्रमुख आंत्रपो पत्तन के रूप में कार्य करता है जहाँ दुनिया भर से माल एकत्रित किया जाता है और फिर उसे अन्य एशियाई देशों में भेजा जाता है। अपनी रणनीतिक स्थिति और उत्कृष्ट आधारभूत संरचना के कारण यह वैश्विक पुनर्वितरण का एक बड़ा केंद्र बन गया है। यहाँ आने वाली वस्तुओं पर अक्सर मूल्यवर्धन किया जाता है या उन्हें केवल भंडारण के बाद पुनः निर्यात कर दिया जाता है।

60. (B) P-3, Q-1, R-2, S-4
विभिन्न पत्तनों के कार्यों और उदाहरणों का सही मिलान उनकी आर्थिक उपयोगिता को स्पष्ट करता है। रोटरडम एक विशाल आंत्रपो पत्तन है, कोच्चि भारत का एक प्रमुख नौसेना पत्तन है, अदन जहाजों के लिए एक महत्वपूर्ण मार्ग पत्तन है और माराकाइबो कच्चे तेल के परिवहन के लिए प्रसिद्ध तैल पत्तन है। यह विविधता दर्शाती है कि प्रत्येक पत्तन वैश्विक व्यापार तंत्र में अपनी एक विशिष्ट और अपरिहार्य भूमिका निभाता है।

61. (C) ये वे एकत्रण केंद्र हैं, जहाँ विभिन्न देशों से निर्यात हेतु वस्तुएँ लाई जाती हैं।
आंत्रपो पत्तन वे विशिष्ट व्यापारिक केंद्र होते हैं जहाँ माल को केवल अंतिम गंतव्य तक भेजने से पहले अस्थायी रूप से संग्रहित करने के लिए लाया जाता है। यहाँ विभिन्न देशों से उत्पाद आते हैं जिनका पुनर्चक्रण या पुनर्वितरण अन्य बाजारों में किया जाता है। ये पत्तन वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करते हैं जिससे वस्तुओं का कुशल और संगठित व्यापार संभव होता है।

62. (D) नौ सेना पत्तन
भारत के पश्चिमी तट पर स्थित कोच्चि और कारवाड़ नौसेना पत्तनों के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं जो मुख्य रूप से सैन्य और रक्षा उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाते हैं। इन पत्तनों पर नौसैनिक जहाजों की मरम्मत, रसद आपूर्ति और रणनीतिक तैनाती के लिए विशेष बुनियादी ढांचा मौजूद होता है। ये स्थल देश की समुद्री सुरक्षा और तटीय रक्षा प्रणालियों के संचालन में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं।

63. (A) सिंगापुर अफ्रीका के लिए एक आंत्रपो पत्तन है।
सिंगापुर मुख्य रूप से एशिया और वैश्विक व्यापार के लिए एक प्रमुख आंत्रपो पत्तन है न कि केवल अफ्रीका के लिए। रोटरडम यूरोप के लिए और कोपेनहेगेन बाल्टिक क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण एकत्रण और वितरण केंद्र के रूप में प्रसिद्ध हैं। आंत्रपो पत्तनों का मुख्य कार्य माल को पुनः निर्यात करना होता है और उनकी महत्ता उनकी भौगोलिक निकटता वाले क्षेत्रों के व्यापारिक प्रवाह पर निर्भर करती है।

64. (B) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
नौसेना पत्तन मुख्य रूप से रणनीतिक और सामाजिक महत्व के होते हैं जो युद्धक जहाजों को परिचालन संबंधी सेवाएं प्रदान करते हैं। इनमें जहाजों की मरम्मत के लिए उन्नत कार्यशालाएँ और रसद भंडार की सुविधाएँ होती हैं। सिंगापुर यद्यपि एक नौसैनिक अड्डा भी है लेकिन वह अपनी पहचान एक विशाल वाणिज्यिक और आंत्रपो पत्तन के रूप में अधिक रखता है जो नागरिक व्यापार के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

65. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या है।
व्यापार को भौगोलिक सीमाओं के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर विभाजित किया जा सकता है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार दो संप्रभु राष्ट्रों के बीच वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय को संदर्भित करता है जबकि राष्ट्रीय या आंतरिक व्यापार एक ही देश की सीमाओं के भीतर होता है। दोनों स्तरों का उद्देश्य आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना है लेकिन उनके नियम, कानून और मुद्रा संबंधी प्रक्रियाएं भिन्न होती हैं।

66. (A) औद्योगिक राष्ट्र एक दूसरे के मुख्य ग्राहक बन गए।
उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में वैश्विक व्यापार के पैटर्न में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया जब औद्योगिक रूप से विकसित देश एक-दूसरे के साथ अधिक व्यापार करने लगे। इस काल में विनिर्मित वस्तुओं के आदान-प्रदान में भारी वृद्धि हुई और औद्योगिक राष्ट्र अपने तैयार माल के लिए एक-दूसरे के सबसे बड़े बाजार के रूप में उभरे। इसने वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक नई प्रतिस्पर्धी और परस्पर निर्भरता को जन्म दिया।

67. (C) आवश्यकताओं के दोहरे संयोग का अभाव
वस्तु विनिमय व्यवस्था की सबसे बड़ी समस्या आवश्यकताओं का दोहरा संयोग था जिसमें एक व्यक्ति को ऐसा साथी खोजना पड़ता था जिसके पास उसकी जरूरत की वस्तु हो और वह बदले में उसकी वस्तु लेने को तैयार हो। यह प्रक्रिया अत्यंत जटिल और समय लेने वाली थी जिससे व्यापार का विस्तार

23. (D) रत्न एवं मसालों जैसी महँगी वस्तुएँ
प्राचीन काल में कुशल परिवहन साधनों के अभाव और असुरक्षित मार्गों के कारण केवल उच्च मूल्य वाली और कम वजन वाली वस्तुओं का ही व्यापार संभव था। रत्न, रेशम और मसालों जैसी महँगी वस्तुओं को लंबी दूरी तक ले जाना आर्थिक रूप से लाभदायक होता था। भारी और कम कीमत वाली वस्तुओं का व्यापार केवल स्थानीय स्तर तक ही सीमित रहता था क्योंकि उनका परिवहन खर्च उनके मूल्य से अधिक हो जाता था।

24. (A) ऋणात्मक या प्रतिकूल
व्यापार संतुलन तब ऋणात्मक या प्रतिकूल माना जाता है जब कोई देश निर्यात की तुलना में वस्तुओं के आयात पर अधिक धन खर्च करता है। यह स्थिति दर्शाती है कि देश अपनी विदेशी मुद्रा का उपयोग बाहरी सामान खरीदने में अधिक कर रहा है और अपनी वस्तुओं के विक्रय से पर्याप्त आय अर्जित नहीं कर पा रहा है। निरंतर ऋणात्मक संतुलन देश की आर्थिक स्थिरता और विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव डालता है।

25. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
ऋणात्मक व्यापार संतुलन किसी राष्ट्र के लिए चिंता का विषय होता है क्योंकि यह संकेत देता है कि देश की आय उसके व्यय से कम है। जब कोई देश अपनी वस्तुओं के निर्यात से अर्जित आय की तुलना में आयात पर अधिक खर्च करता है तो उसके वित्तीय संचय में कमी आने लगती है। यह स्थिति अंततः विदेशी ऋण में वृद्धि और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के कमजोर होने का कारण बन सकती है।

26. (A) द्विपाश्विक व्यापार
जब दो राष्ट्र आपसी सहमति से विशिष्ट वस्तुओं और सेवाओं का एक-दूसरे के साथ व्यापार करने का समझौता करते हैं तो इसे द्विपाश्विक व्यापार कहा जाता है। इस प्रकार के व्यापार में दोनों देश एक-दूसरे को व्यापारिक रियायतें प्रदान करते हैं और पारस्परिक लाभ के आधार पर आर्थिक संबंधों को मजबूत करते हैं। यह व्यवस्था दो देशों के बीच कूटनीतिक और आर्थिक जुड़ाव को गहरा करने का प्रभावी माध्यम है।

27. (D) उस राष्ट्र को व्यापार में विशेष छूट देना
सर्वाधिक अनुकूल राष्ट्र की स्थिति प्रदान करने का अर्थ है कि एक देश दूसरे व्यापारिक भागीदार को वही लाभ और रियायतें देगा जो वह अपने सबसे पसंदीदा देशों को देता है। इसके तहत सीमा शुल्क में कमी और व्यापारिक बाधाओं को हटाना शामिल होता है। यह नीति अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में निष्पक्षता और गैर-भेदभावपूर्ण व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए विश्व व्यापार संगठन के सिद्धांतों का एक अनिवार्य हिस्सा है।

28. (B) व्यापारिक अवरोधों जैसे सीमा शुल्क को घटाना
मुक्त व्यापार या व्यापार उदारीकरण वह आर्थिक नीति है जिसमें देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह पर लगने वाले प्रतिबंधों को न्यूनतम किया जाता है। इसके अंतर्गत आयात शुल्क कम करना और कोटा प्रणाली को समाप्त करना जैसे कदम उठाए जाते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य वैश्विक प्रतिस्पर्धा को बढ़ाना और उपभोक्ताओं को कम कीमत पर विश्व स्तरीय गुणवत्ता वाली वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित करना है।

29. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का आधार भौगोलिक संरचना, जलवायु और जनसंख्या जैसे विभिन्न कारकों पर टिका होता है। उदाहरण के लिए भौगोलिक संरचना खनिज संसाधनों की उपलब्धता तय करती है जबकि ठंडी जलवायु ऊन उत्पादन को प्रोत्साहित करती है। इसी प्रकार सांस्कृतिक विरासत विशिष्ट हस्तशिल्प के व्यापार को बढ़ाती है और सघन जनसंख्या वाले देशों में विशाल घरेलू मांग के कारण आंतरिक व्यापार की प्रधानता अधिक देखी जाती है।

30. (D) देशों का प्रतिकूल रूप से प्रभावित होना।
मुक्त व्यापार के कारण विकासशील देशों को अक्सर कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है क्योंकि उनके घरेलू उद्योग विकसित देशों की सस्ती वस्तुओं से प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाते। डंपिंग जैसी प्रथाओं के कारण स्थानीय उत्पादक बाजार से बाहर हो जाते हैं जिससे बेरोजगारी और आर्थिक अस्थिरता बढ़ सकती है। बिना पर्याप्त सुरक्षा उपायों के पूर्ण उदारीकरण इन देशों की अर्थव्यवस्थाओं को स्थायी रूप से नुकसान पहुँचा सकता है।

31. (A) वस्तुओं को अलग कीमतों पर बेचना
डंपिंग एक ऐसी व्यापारिक नीति है जिसमें कोई कंपनी अपने उत्पाद को विदेशी बाजार में उसकी लागत या घरेलू बाजार की कीमत से भी कम दाम पर बेचती है। इसका मुख्य उद्देश्य दूसरे देश के स्थानीय बाजार पर कब्जा करना और वहाँ की प्रतिस्पर्धा को समाप्त करना होता है। यह अनुचित व्यापार व्यवहार माना जाता है क्योंकि यह विदेशी उत्पादकों को बाजार में कृत्रिम रूप से बढ़त दिलाता है।

32. (B) यह सस्ते मूल्य की वस्तुएँ घरेलू उत्पादकों को नुकसान पहुँचा सकती है।
डंपिंग के माध्यम से आने वाली अत्यधिक सस्ती विदेशी वस्तुएं किसी देश के घरेलू उद्योगों के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न करती हैं। जब स्थानीय निर्माता इन कम कीमतों का मुकाबला नहीं कर पाते तो उनके कारखाने बंद होने की नौबत आ जाती है। यद्यपि उपभोक्ताओं को अल्पकालिक लाभ मिल सकता है लेकिन दीर्घकाल में यह देश की औद्योगिक आधार और आत्मनिर्भरता को बहुत बुरी तरह से प्रभावित करता है।

33. (B) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
गैट की स्थापना द्वितीय विश्व युद्ध के बाद उच्च सीमा शुल्कों को कम करने और वैश्विक व्यापार को पुनर्जीवित करने के लिए की गई थी। यह एक अस्थायी समझौते के रूप में शुरु हुआ था लेकिन इसके सफल परिणामों के कारण इसे बाद में एक स्थायी संस्था में बदलने का निर्णय लिया गया। अंततः इसी समझौते के आधार पर वर्ष उन्नीस सौ पचानवे में विश्व व्यापार संगठन का उदय हुआ।

79. (A) अंतर्देशीय पत्तन
जर्मनी में राइन नदी पर स्थित मैनहीम और ड्यूसबर्ग अंतर्देशीय पत्तनों के प्रमुख उदाहरण हैं जो यूरोप के औद्योगिक हृदय स्थल को समुद्री मार्गों से जोड़ते हैं। ये पत्तन समुद्र से काफी भीतर होने के बावजूद नदी जलमार्गों के माध्यम से बड़े जहाजों को सेवा प्रदान करते हैं। अपनी विशिष्ट स्थिति के कारण ये भारी माल के सस्ता और कुशल परिवहन सुनिश्चित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

80. (B) P-2, Q-3, R-1, S-4
विभिन्न अंतर्देशीय पत्तनों की उनकी संबंधित नदियों या नहरों के साथ अवस्थिति अत्यंत विशिष्ट है। मानचेस्टर एक लंबी नहर के माध्यम से समुद्र से जुड़ा है, मेंफिस मिसीसिपी नदी के किनारे स्थित है, कोलकाता हुगली नदी पर अवस्थित है और मैनहीम राइन नदी का एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र है। ये सभी पत्तन जलमार्गों की सहायता से महाद्वीपों के आंतरिक भागों तक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को पहुँचाने का कार्य करते हैं।

81. (B) तेलशोधन पत्तन
ईरान में फारस की खाड़ी के तट पर स्थित अबादान दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण तेलशोधन पत्तनों में से एक है। यहाँ न केवल कच्चे तेल का निर्यात किया जाता है बल्कि तेल को शोधित करने के लिए विशाल रिफाइनरियाँ भी स्थापित की गई हैं। यह पत्तन कच्चे तेल को विभिन्न पेट्रोलियम उत्पादों में बदलकर उन्हें वैश्विक बाजार के लिए तैयार करने और जहाज पर लादने की दोहरी भूमिका निभाता है।

82. (A) धनात्मक अथवा अनुकूल
जब किसी देश के निर्यात का कुल मूल्य उसके आयात के मूल्य से अधिक होता है तो इसे धनात्मक या अनुकूल व्यापार संतुलन कहा जाता है। यह स्थिति दर्शाती है कि देश बाहरी दुनिया को बेचने से अधिक धन अर्जित कर रहा है जितना वह खरीदने पर खर्च करता है। अनुकूल संतुलन राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की मजबूती, विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि और आर्थिक आत्मनिर्भरता का एक सकारात्मक संकेत माना जाता है।

83. (C) अमेरीका
दास व्यापार के दौर में लाखों अफ्रीकी निवासियों को उनके घरों से पकड़कर अमानवीय स्थितियों में अटलांटिक महासागर के पार अमेरिका ले जाया गया था। उन्हें वहाँ मुख्य रूप से कपास, तंबाकू और चीनी के विशाल बागानों में कठोर शारीरिक श्रम करने के लिए मजबूर किया गया। इस विस्थापन ने अमेरिका की आर्थिक प्रगति में तो योगदान दिया लेकिन इसने अफ्रीका की जनसंख्या और सामाजिक संरचना को अपूरणीय क्षति पहुँचाई।

84. (A) केवल 1 और 2 सही हैं।
प्राचीन समय में परिवहन के साधनों की कमी और असुरक्षित मार्गों के कारण व्यापार मुख्य रूप से स्थानीय बाजारों तक ही सीमित था। लंबी दूरियों की यात्रा जोखिम भरी और खर्चीली होती थी इसलिए केवल बहुत कीमती वस्तुओं का ही दूर-दराज के क्षेत्रों में व्यापार किया जाता था। विलासिता की वस्तुएं केवल संपन्न वर्ग तक सीमित थीं और आम लोग अपनी दैनिक जरूरतों के लिए स्थानीय उत्पादों पर ही निर्भर थे।

85. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या है।
उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में औद्योगिक क्रांति के प्रभाव के कारण व्यापारिक संबंधों में बड़ा बदलाव आया और औद्योगिक राष्ट्र एक-दूसरे के प्रमुख व्यापारिक भागीदार बन गए। यद्यपि तैयार माल का महत्व बढ़ गया था लेकिन कच्चे माल और प्राथमिक वस्तुओं का उत्पादन करने वाले क्षेत्रों की प्रासंगिकता पूरी तरह समाप्त नहीं हुई थी। बल्कि उद्योगों को चलाने के लिए कच्चे माल की माँग पहले से कहीं अधिक तीव्र हो गई थी।

86. (B) उच्च जीवन स्तर बेहतर गुणवत्ता वाले आयातित उत्पादों की माँग को निर्धारित करता है।
किसी देश की जनसंख्या का जीवन स्तर सीधे तौर पर वहाँ आयातित वस्तुओं की मांग और गुणवत्ता को प्रभावित करता है। उच्च आय और बेहतर जीवन स्तर वाले लोग अक्सर वैश्विक ब्रांडों और उच्च गुणवत्ता वाले विदेशी उत्पादों की मांग करते हैं जो उनके रहन-सहन के अनुरुप हों। इसके विपरीत निम्न जीवन स्तर वाले देशों में आवश्यक वस्तुओं और कम लागत वाले उत्पादों के आयात की प्राथमिकता अधिक रहती है।

87. (D) संस्थापक सदस्य रहा है।
भारत विश्व व्यापार संगठन के उन संस्थापक देशों में से एक है जिन्होंने वर्ष उन्नीस सौ पचानवे में इसके गठन के समय ही सदस्यता ग्रहण की थी। इससे पहले भारत गैट का भी एक सक्रिय सदस्य था और वैश्विक व्यापार नियमों के निर्धारण में हमेशा महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। संस्थापक सदस्य के रूप में भारत विकासशील देशों के हितों की रक्षा के लिए संगठन के विभिन्न मंचों पर अपनी आवाज उठाता रहता है।

88. (A) विस्तृत पत्तन
विस्तृत पत्तन उनके द्वारा संभाले गए माल के विशाल परिमाण के आधार पर वर्गीकृत किए जाते हैं न कि किसी एक विशिष्ट कार्य के आधार पर। इसके विपरीत तैल पत्तन, मार्ग पत्तन और नौसेना पत्तन अपने विशिष्ट कार्यों जैसे तेल प्रबंधन, ईंधन आपूर्ति या सैन्य गतिविधियों के आधार पर पहचाने जाते हैं। विस्तृत पत्तन वे होते हैं जो बहुआयामी सेवाएं प्रदान करते हैं और सभी प्रकार के व्यापार का प्रबंधन करते हैं।

89. (C) डेनमार्क, ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य
दास व्यापार के विरुद्ध कानूनी कदम उठाने का सही ऐतिहासिक क्रम डेनमार्क से शुरू होता है जिसने सत्रह सौ बानवे में इसे समाप्त किया। इसके बाद ग्रेट ब्रिटेन ने अठारह सौ सात में इस अमानवीय व्यापार पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का अधिनियम पारित किया। अंत में संयुक्त राज्य अमेरिका ने अठारह सौ आठ में इसके विरुद्ध कानून बनाया। इन क्रमिक विधायी कार्यों ने वैश्विक स्तर पर दास प्रथा के अंत की शुरुआत की थी।

सीमित हो जाता था। मुद्रा के आविष्कार ने इस समस्या को समाप्त कर व्यापार को सुगम बनाया।

68. (D) विश्व व्यापार संगठन (WTO)
विश्व व्यापार संगठन ने वर्ष उन्नीस सौ पचानवे में गैट का स्थान लिया ताकि वैश्विक व्यापार को अधिक व्यवस्थित और कानूनी रूप से बाध्यकारी बनाया जा सके। गैट एक अस्थायी समझौता था जबकि डब्ल्यूटीओ एक स्थायी अंतर्राष्ट्रीय संस्था है जिसके पास विवादों को सुलझाने और नियमों को लागू करने की अधिक शक्तियाँ हैं। यह वर्तमान में दुनिया भर के व्यापारिक संबंधों को विनियमित करने वाली सर्वोच्च संस्था है।

69. (A) 3, 2, 1, 4
व्यापारिक इतिहास का सही कालक्रम रेशम मार्ग के प्राचीन व्यापार से शुरू होता है जिसके बाद पंद्रहवीं शताब्दी के अंत में अमेरिका की खोज हुई। इसके पश्चात यूरोपीय देशों द्वारा उपनिवेशवाद का विस्तार हुआ जिसने वैश्विक संसाधनों के दोहन को बढ़ाया और अंततः अठारहवीं शताब्दी में औद्योगिक क्रांति हुई। इन सभी चरणों ने आधुनिक वैश्वीकृत व्यापारिक दुनिया की नींव रखने में अलग-अलग भूमिकाएँ निभाई हैं।

70. (B) वस्तुओं एवं सेवाओं दोनों का आयात और निर्यात
व्यापार संतुलन एक व्यापक शब्द है जिसमें किसी देश द्वारा अन्य देशों के साथ किए गए दृश्य वस्तुओं और अदृश्य सेवाओं के आयात एवं निर्यात का पूरा लेखा-जोखा शामिल होता है। इसमें केवल भौतिक सामान ही नहीं बल्कि पर्यटन, बैंकिंग और सॉफ्टवेयर जैसी सेवाओं का मूल्य भी जोड़ा जाता है। यह आंकड़ा किसी राष्ट्र की अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक स्थिति और उसकी वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धात्मकता को प्रदर्शित करता है।

71. (D) एक देश का बहुत से अन्य देशों के साथ व्यापार
बहु-पार्श्विक व्यापार वह व्यवस्था है जिसमें एक देश अपनी आवश्यकताओं के अनुसार दुनिया के कई अलग-अलग राष्ट्रों के साथ व्यापारिक संबंध रखता है। इस प्रकार के व्यापार में किसी एक देश पर निर्भरता कम होती है और राष्ट्र विभिन्न देशों को सर्वाधिक अनुकूल राष्ट्र की स्थिति प्रदान कर सकते हैं। यह वैश्विक स्तर पर मुक्त व्यापार और आर्थिक सहयोग को बढ़ाने का एक बहुत ही प्रभावी तरीका है।

72. (C) केवल 1 सही है।
व्यापार उदारीकरण का प्राथमिक परिणाम घरेलू उत्पादों और सेवाओं के बीच वैश्विक प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना है। यद्यपि इसका उद्देश्य दक्षता बढ़ाना है लेकिन यह हमेशा विकासशील देशों के लिए लाभदायक नहीं होता है क्योंकि उन्हें अक्सर विकसित देशों की सस्ती और उन्नत वस्तुओं से मुकाबला करना पड़ता है। मुक्त व्यापार के फायदों के साथ-साथ स्थानीय उद्योगों के संरक्षण की चुनौतियां भी सदैव जुड़ी रहती हैं।

73. (C) स्वास्थ्य, श्रमिकों के अधिकार और पर्यावरण
विश्व व्यापार संगठन की अक्सर इस आधार पर आलोचना की जाती है कि यह केवल वाणिज्यिक हितों और लाभ को प्राथमिकता देता है जबकि स्वास्थ्य, श्रमिकों के अधिकारों और पर्यावरणीय मुद्दों की उपेक्षा करता है। आलोचकों का मानना है कि मुक्त व्यापार की अंधी दौड़ में सामाजिक और पारिस्थितिक कल्याण के मानकों को नजरअंदाज किया जा रहा है जिससे विकासशील देशों के नागरिकों के जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

74. (A) जहाजों का निर्माण
पत्तन प्राधिकारी मुख्य रूप से जहाजों को खड़ा करने के लिए गोदी की सुविधा, माल लादने और उतारने की मशीनरी और भंडारण के लिए गोदाम उपलब्ध कराते हैं। वे समुद्री मार्गों को नौगम्य बनाए रखने और बंदरगाह प्रबंधन के लिए श्रम की व्यवस्था भी करते हैं। जहाजों का निर्माण एक अलग औद्योगिक गतिविधि है जो आमतौर पर शिपयार्डों में होती है और यह पत्तन के नियमित कार्यों का हिस्सा नहीं है।

75. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
आधुनिक युग में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार किसी भी देश के आर्थिक संगठन का मुख्य आधार बन गया है। सुविकसित परिवहन और संचार प्रणालियों वाले राष्ट्र इस व्यापारिक नेटवर्क का हिस्सा बनकर अपने आर्थिक लाभों को अधिकतम करना चाहते हैं। व्यापार न केवल संसाधनों की कमी को पूरा करता है बल्कि राष्ट्रीय आय में वृद्धि और रोजगार सृजन के माध्यम से देश के समग्र विकास में भी योगदान देता है।

76. (B) ईरान के प्रसिद्ध कालीन
ईरान के कालीन सांस्कृतिक कारकों के व्यापारिक प्रभाव का एक बेहतरीन उदाहरण हैं क्योंकि इनका मूल्य उनकी विशिष्ट कलात्मकता और पारंपरिक बुनाई शैली पर निर्भर करता है। संस्कृति किसी समाज की रुचियों और कौशल को आकार देती है जिससे ऐसी वस्तुओं का उत्पादन होता है जिनकी वैश्विक मांग उनकी अनूठी पहचान के कारण होती है। यह दर्शाता है कि व्यापार केवल आर्थिक ही नहीं बल्कि सांस्कृतिक विनिमय का भी माध्यम है।

77. (C) अंतर्देशीय पत्तन
पत्तनों का वर्गीकरण उनकी भौगोलिक स्थिति या अवस्थिति के आधार पर भी किया जाता है जिसमें अंतर्देशीय और बाह्य पत्तन प्रमुख हैं। अंतर्देशीय पत्तन समुद्र तट से दूर नदियों या नहरों पर स्थित होते हैं जो देश के भीतरी भागों तक पहुँच प्रदान करते हैं। यह वर्गीकरण उन्हें औद्योगिक या वाणिज्यिक जैसे कार्यात्मक वर्गीकरणों से अलग करता है जो उनके द्वारा संभाले जाने वाले माल के प्रकार पर आधारित होते हैं।

78. (D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कई महत्वपूर्ण आधारों पर टिका होता है जिनमें संसाधनों की क्षेत्रीय भिन्नता, जनसंख्या के कारक और देश के विकास की अवस्था शामिल हैं। इसके अतिरिक्त विदेशी निवेश की सीमा और परिवहन के साधनों की सुलभता भी यह निर्धारित करती है कि व्यापार की मात्रा और दिशा क्या होगी। ये सभी कारक मिलकर एक जटिल व्यापारिक तंत्र का निर्माण करते हैं जो वैश्विक अर्थव्यवस्था को संचालित करता है।

101. (C) क्योंकि इससे बागानों में श्रम हेतु सस्ते श्रमिक उपलब्ध होते थे।
ऐतिहासिक रूप से दास व्यापार को एक लाभदायक आर्थिक गतिविधि माना जाता था क्योंकि यह उपनिवेशों में श्रम की भारी कमी को पूरा करता था। बागान मालिकों को कपास और गन्ने जैसी फसलों की खेती के लिए बड़ी संख्या में ऐसे श्रमिकों की आवश्यकता थी जो कम लागत पर कठोर परिश्रम कर सकें। दासों के माध्यम से प्राप्त होने वाले इस सस्ते और मजबूर श्रम ने कई औपनिवेशिक शक्तियों को आर्थिक रूप से बहुत समृद्ध बनाया।

102. (B) कृषि-संभाव्यता
निचले मैदानी भागों या निम्न भूमियों में मृदा की उर्वरता और जल की उपलब्धता अधिक होती है जो उन्हें कृषि उत्पादन के लिए अत्यंत उपयुक्त बनाती है। ऐसी भूमियों में सघन खेती करना और विभिन्न प्रकार की खाद्यान्न फसलों को उगाना बहुत आसान होता है। यही कारण है कि दुनिया के अधिकांश कृषि प्रधान क्षेत्र और उपजाऊ मैदान सभ्यता के पालने और व्यापार के लिए प्रमुख खाद्यान्न उत्पादक केंद्र रहे हैं।

103. (A) केवल 1 और 3 सही हैं।
गैट का पूरा नाम जनरल एग्रीमेंट ऑन ट्रेड एंड टैरिफ है जो व्यापार बाधाओं को कम करने के लिए बनाया गया था। इसके उत्तराधिकारी के रूप में विश्व व्यापार संगठन की स्थापना राष्ट्रों के बीच अधिक निष्पक्ष और मुक्त व्यापार को बढ़ावा देने के लिए की गई थी। डब्ल्यूटीओ एक स्थायी संस्था है और भारत इसके संस्थापक सदस्यों में से एक रहा है जो इसे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के नियमन के लिए एक महत्वपूर्ण मंच बनाता है।

104. (A) पर्यटन
पर्वतीय प्रदेश अपनी प्राकृतिक सुंदरता, ठंडी जलवायु और शांत वातावरण के कारण पर्यटन गतिविधियों को सबसे अधिक आकर्षित करते हैं। इन क्षेत्रों में ऊबड़-खाबड़ धरातल के कारण कृषि और भारी उद्योगों का विकास कठिन होता है इसलिए पर्यटन यहाँ की मुख्य आर्थिक गतिविधि और व्यापार का आधार बन जाता है। दुनिया भर के पर्यटक इन क्षेत्रों की विशिष्ट भू-आकृतियों और दृश्यों का आनंद लेने के लिए बड़ी संख्या में आते हैं।

105. (D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।
मुक्त व्यापार के समर्थकों का तर्क है कि देशों को अपने बाजार खोलने चाहिए लेकिन डंपिंग जैसी प्रथाओं से घरेलू उत्पादकों को भारी नुकसान पहुँच सकता है। हालांकि विकसित देशों को हमेशा संरक्षणवाद अपनाने की सलाह नहीं दी जाती क्योंकि वे स्वयं मुक्त व्यापार के सबसे बड़े लाभार्थी हैं। डंप की गई वस्तुओं की चुनौती विशेष रूप से विकासशील देशों के लिए अधिक गंभीर होती है जहाँ स्थानीय उद्योगों को पर्याप्त सुरक्षा की आवश्यकता होती है।

106. (A) विदेशी निवेश
विकासशील देशों में खनन और भारी इंजीनियरिंग जैसे उद्योगों के विकास के लिए भारी मात्रा में पूँजी और उन्नत तकनीक की आवश्यकता होती है जो अक्सर वहाँ उपलब्ध नहीं होती। ऐसी स्थिति में विदेशी निवेश एक महत्वपूर्ण कारक बन जाता है जो इन क्षेत्रों में आवश्यक संसाधन और विशेषज्ञता लाता है। यह न केवल स्थानीय संसाधनों के दोहन में मदद करता है बल्कि रोजगार सृजन और व्यापारिक गतिविधियों को भी गति प्रदान करता है।

107. (D) जलवायु
किसी भी विशेष भौगोलिक क्षेत्र में पाए जाने वाले पौधों और वन्यजीवों की विविधता मुख्य रूप से वहाँ की जलवायु परिस्थितियों द्वारा निर्धारित होती है। तापमान और वर्षा की मात्रा यह तय करती है कि कौन से जीव वहाँ पनप सकते हैं। यही कारण है कि विभिन्न जलवायु कटिबंधों में रहने वाले लोग अपनी विशिष्ट जैविक संपदा के आधार पर अलग-अलग प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार करते हैं।

108. (D) सभी 1, 2, 3, 4 and 5
एक आधुनिक पत्तन के कार्यों में गोदी की सुविधा, माल की लदान-उतराई और भंडारण जैसे महत्वपूर्ण भौतिक कार्य शामिल हैं। इसके अलावा उसे जलमार्गों को नौगम्य बनाए रखने के लिए निरंतर रख-रखाव करना पड़ता है और कुशल प्रबंधन के लिए श्रम शक्ति उपलब्ध करानी होती है। ये सभी गतिविधियां मिलकर एक पत्तन को वैश्विक व्यापार के केंद्र के रूप में कुशलतापूर्वक संचालित करने के लिए अत्यंत आवश्यक और अपरिहार्य होती हैं।

109. (C) तृतीयक क्रियाकलाप
अर्थशास्त्र के वर्गीकरण में व्यापार को तृतीयक क्रियाकलापों की श्रेणी में रखा गया है क्योंकि यह मुख्य रूप से सेवाओं के विनिमय से संबंधित है। व्यापार स्वयं वस्तुओं का उत्पादन नहीं करता बल्कि उत्पादकों और उपभोक्ताओं के बीच एक सेतु का कार्य करता है। यह माल के वितरण, विपणन और विनिमय की प्रक्रिया को सुगम बनाता है जो किसी भी आधुनिक अर्थव्यवस्था की गतिशीलता और विकास के लिए एक अनिवार्य सेवा है।

110. (D) नौभार के निपटान की प्रकृति
पत्तनों का एक प्रमुख वर्गीकरण उनके द्वारा संभाले जाने वाले माल या नौभार की प्रकृति और उसके प्रबंधन के तरीके पर आधारित होता है। कुछ पत्तन केवल तरल पदार्थ जैसे तेल के लिए होते हैं जबकि कुछ अनाज या मशीनरी जैसे थोक माल के लिए विशेष रूप से तैयार किए जाते हैं। यह वर्गीकरण यह समझने में मदद करता है कि पत्तन की तकनीकी क्षमता और बुनियादी ढांचा किस प्रकार की व्यापारिक जरूरतों को पूरा करता है।

111. (A) समुद्रगामी युद्धपोतों का विकास
बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी के दौरान यूरोप में समुद्री परिवहन की तकनीक में सुधार और शक्तिशाली समुद्रगामी जहाजों के निर्माण ने व्यापार के नए मार्ग खोल दिए। इन विकासों ने यूरोपीय व्यापारियों को लंबी समुद्री यात्राएं करने और दूरदराज के क्षेत्रों के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित करने में सक्षम बनाया। इससे न केवल वस्तुओं का विनिमय बढ़ा बल्कि

(D) सभी कथन सही हैं

20. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर क्या है?
(A) 2.2%
(B) 1.97%
(C) 2.4%
(D) 1.64%

21. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): 1951-81 की अवधि में भारत में जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि उच्च और वृद्धि दर उच्चतर हुई।
कारण (R): स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद केंद्रीकृत नियोजन प्रक्रिया के माध्यम से अर्थव्यवस्था सुधरने लगी जिससे जीवन की दशाओं में सुधार हुआ।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

22. 2011 की जनगणना के अनुसार किस राज्य ने देश में निम्नतम जनसंख्या वृद्धि दर दर्ज की?
(A) गोआ
(B) केरल
(C) तमिलनाडु
(D) आंध्र प्रदेश

23. भारत सरकार द्वारा 'राष्ट्रीय युवा नीति' (NYP-2014) किस वर्ष आरंभ की गई?
(A) जनवरी 2015
(B) अप्रैल 2014
(C) मार्च 2015
(D) फरवरी 2014

24. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. 2001-2011 के दौरान सभी राज्यों में जनसंख्या वृद्धि दर धीमी रही।
2. आंध्र प्रदेश में दशकीय वृद्धि दर में सबसे कम गिरावट दर्ज हुई।
3. तमिलनाडु और पुडुच्चेरी में पिछले दशक की तुलना में कुछ वृद्धि दर्ज की गई।
4. महाराष्ट्र में दशकीय वृद्धि दर में सर्वाधिक गिरावट दर्ज हुई।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) केवल 1 और 2

25. राष्ट्रीय युवा नीति, 2014 के अनुसार 'युवा' के रूप में किस आयु समूह के व्यक्ति को परिभाषित किया गया है?
(A) 10-19 वर्ष
(B) 18-35 वर्ष
(C) 15-29 वर्ष
(D) 15-24 वर्ष

26. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की कुल जनसंख्या में किशोरों (10-19 वर्ष आयु वर्ग) का अंश कितना है?
(A) 20.9 प्रतिशत
(B) 25.5 प्रतिशत
(C) 30.1 प्रतिशत
(D) 15.8 प्रतिशत

27. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I (नीति/अभियान) को सूची-II (उद्देश्य) से सुमेलित कीजिए:
List I: (नीति/अभियान)
P. राष्ट्रीय युवा नीति, 2014
Q. कौशल विकास तथा उद्यमिता नीति, 2015
R. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
S. जनसंख्या जनगणना

List II: (उद्देश्य)
1. जेंडर के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देना
2. युवाओं को अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करने के लिए सक्षम बनाना
3. दस वर्षीय आँकड़े एकत्रित करना
4. कौशल गतिविधियों के लिए एक रुपरेखा प्रदान करना

कूट:
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

28. किशोर जनसंख्या के संबंध में समाज के समक्ष विद्यमान चुनौतियों में निम्नलिखित में से कौन-सी एक शामिल नहीं है?
(A) विवाह की निम्न आयु
(B) उच्च साक्षरता दर
(C) विद्यालय विरतछात्र (school dropout)
(D) पोषकों की निम्न ग्राह्यता

29. भारत सरकार द्वारा 2015 में बनाई गई "कौशल विकास तथा उद्यमिता नीति" का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) केवल शहरी क्षेत्रों के शिक्षित युवाओं को सरकारी रोजगार प्रदान करना।
(B) केवल पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में नवीन उद्यमिता को प्रोत्साहित करना।
(C) देश भर में कौशल से संबंधित गतिविधियों के लिए एक रुपरेखा प्रदान करना
(D) देश के सभी किशोरों के लिए माध्यमिक स्तर की शिक्षा सुनिश्चित करना।

मार्गों से जोड़ता है। बाह्य पत्तन और उनके पैतृक शहरों का यह संयोजन दर्शाता है कि कैसे भौगोलिक बाधाओं को दूर करने के लिए तट से दूर गहरे पानी की सुविधाओं का विकास किया गया है। यह व्यवस्था बड़े जहाजों को सुरक्षित रूप से ठहरने और माल के तीव्र स्थानांतरण के लिए आधुनिक मंच प्रदान करती है।

123. (A) केवल 1, 2, 3 और 5
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के नकारात्मक पहलुओं में पर्यावरणीय गिरावट, लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव और प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन शामिल है। जब व्यापार का एकमात्र उद्देश्य केवल अधिकतम लाभ कमाना हो जाता है तो यह अक्सर शोषण और पारिस्थितिक असंतुलन का कारण बनता है। यह धारणा कि व्यापार हमेशा सतत विकास को बढ़ावा देता है गलत है क्योंकि बिना कड़े नियमों के यह भविष्य की संसाधन सुरक्षा के लिए खतरा बन सकता है।

124. (B) चावल, किताबें, रिबन आदि
ऐतिहासिक विज्ञापनों से यह ज्ञात होता है कि दास व्यापार के दौर में मनुष्यों की नीलामी के साथ-साथ अन्य सामान्य उपभोक्ता वस्तुओं जैसे चावल, किताबें और रिबन की भी बिक्री की जाती थी। यह तथ्य तत्कालीन समाज की उस विद्रूपता को दर्शाता है जहाँ मानव जीवन को अन्य निर्जीव वस्तुओं के समान ही एक व्यापारिक वस्तु माना जाता था। यह कालखंड वैश्विक व्यापार के इतिहास का एक अत्यंत क्रूर और काला अध्याय है।

125. (C) दो
किसी भी प्रकार के व्यापार या विनिमय को संपन्न करने के लिए कम से कम दो पक्षों का होना अनिवार्य है जो एक-दूसरे की वस्तुओं या सेवाओं के लेन-देन के लिए सहमत हों। ये पक्ष व्यक्ति, व्यावसायिक कंपनियाँ या दो स्वतंत्र राष्ट्र भी हो सकते हैं। बिना दो पक्षों की भागीदारी के संसाधनों का स्थानांतरण संभव नहीं है क्योंकि व्यापार की मूल प्रकृति ही आपसी आदान-प्रदान और आर्थिक सहयोग पर टिकी हुई है।

126. (D) तैल पत्तन
तैल पत्तन एक विस्तृत श्रेणी है जिसके अंतर्गत टैंकर पत्तन और तेल शोधन पत्तन जैसे उप-प्रकार आते हैं। टैंकर पत्तन कच्चे तेल को जहाजों में लादने और उतारने की सुविधा देते हैं जबकि तेल शोधन पत्तन कच्चे तेल को साफ करके पेट्रोलियम उत्पादों में बदलने का कार्य करते हैं। ये दोनों ही प्रकार के पत्तन दुनिया की ऊर्जा माँग को पूरा करने और पेट्रोलियम आधारित वैश्विक व्यापार को संचालित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

127. (D) सभी 1, 2, 3 and 4 सही हैं।
व्यापार मूल रूप से वस्तुओं और सेवाओं का स्वेच्छा से किया गया आदान-प्रदान है जो विभिन्न भौगोलिक सीमाओं के आर-पार भी हो सकता है। प्राचीन समय में यह विनिमय व्यवस्था के माध्यम से होता था जहाँ वस्तु के बदले वस्तु दी जाती थी। आर्थिक सिद्धांतों के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय व्यापार दोनों ही पक्षों के लिए समान रूप से लाभदायक और विकास का मार्ग प्रशस्त करने वाला एक महत्वपूर्ण वैश्विक आर्थिक उपकरण है।

128. (B) यह स्वास्थ्य और पर्यावरण जैसे मुद्दों को वाणिज्यिक हितों से ऊपर रखता है।
विश्व व्यापार संगठन एकमात्र ऐसा निकाय है जो राष्ट्रों के बीच वैश्विक व्यापार नियमों को नियंत्रित करता है और उनके विवादों को सुलझाता है। हालांकि इस पर अक्सर यह आरोप लगाया जाता है कि यह स्वास्थ्य और पर्यावरण के मुद्दों की तुलना में वाणिज्यिक लाभ और औद्योगिक हितों को अधिक प्राथमिकता देता है। भारत जैसे देश इसके संस्थापक सदस्य रहे हैं और इसके मंचों पर विकासशील देशों की चुनौतियों को निरंतर उठाते रहे हैं।

129. (A) P-4, Q-3, R-1, S-2
विभिन्न पत्तनों का उनके विशिष्ट कार्यों के आधार पर वर्गीकरण उनके वैश्विक महत्व को दर्शाता है। सिंगापुर एक महान आंत्रपो पत्तन है, कोच्चि भारत का प्रमुख नौसेना केंद्र है, अदन एक रणनीतिक मार्ग पत्तन है और डोवर एक प्रसिद्ध पैकेट स्टेशन है जो छोटी दूरियों के यात्री परिवहन के लिए उपयोग किया जाता है। ये पत्तन अपने विशिष्ट भौगोलिक स्थान के कारण वैश्विक परिवहन जाल में अपनी अद्वितीय पहचान रखते हैं।

130. (A) उन वस्तुओं को प्राप्त करने के लिए जिन्हें वे स्वयं उत्पादित नहीं कर सकते या कम दामों में खरीद सकते हैं।
राष्ट्रों के बीच व्यापार की आवश्यकता इसलिए होती है क्योंकि कोई भी देश सभी संसाधनों में आत्मनिर्भर नहीं है। व्यापार के माध्यम से देश उन वस्तुओं को प्राप्त करते हैं जिनका उत्पादन उनके यहाँ असंभव है या जो बाहर से खरीदना तुलनात्मक रूप से सस्ता पड़ता है। यह आर्थिक दक्षता और संसाधनों के उचित वितरण को बढ़ावा देता है जिससे उपभोक्ताओं को कम कीमत पर विविध उत्पादों का लाभ मिल पाता है।

131. (C) यह वित्तीय संचय की समाप्ति को अभिप्रेरित करता है।
ऋणात्मक व्यापार संतुलन किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के लिए गंभीर चिंता का संकेत है क्योंकि यह दर्शाता है कि देश अपनी आय से अधिक व्यय आयात पर कर रहा है। जब यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहती है तो देश का संचित विदेशी मुद्रा भंडार तेजी से समाप्त होने लगता है। इससे राष्ट्रीय ऋण बढ़ सकता है और देश की अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा के सापेक्ष स्थानीय मुद्रा की कीमत में भी गिरावट आ सकती है।

132. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
बाह्य पत्तनों का निर्माण विशेष रूप से उन विशाल आधुनिक समुद्री जहाजों की जरूरतों को पूरा करने के लिए किया गया है जो तट के उथले जल में प्रवेश नहीं कर सकते। ये गहरे जल के पत्तन वास्तविक तट से कुछ मील दूर समुद्र में विकसित किए जाते हैं। यहाँ से माल को छोटे जहाजों के माध्यम से या पाइपलाइनों द्वारा मुख्य भूमि तक पहुँचाया जाता है जिससे बड़े जहाजों का परिचालन सुगम होता है।

133. (C) औद्योगिक क्रांति के पश्चात्
औद्योगिक क्रांति के बाद वैश्विक अर्थव्यवस्था में कच्चे माल की माँग तेजी से बढ़ी लेकिन औद्योगिक उत्पादों की तुलना

में उनका मौद्रिक मूल्य कम होता गया। इस काल में अनाज, मांस और ऊन जैसे प्राथमिक उत्पादों का उत्पादन करने वाले देशों को औद्योगिक राष्ट्रों को निरंतर आपूर्ति करनी पड़ती थी। इसने विकसित और विकासशील देशों के बीच एक आर्थिक असमानता पैदा की जहाँ विनिर्मित वस्तुओं का मूल्य प्राथमिक वस्तुओं से सदैव अधिक बना रहा।

134. (A) केवल 1 और 4 सही हैं।
विस्तृत पत्तन बड़े पैमाने पर सभी प्रकार के सामान्य नौभार का प्रबंधन करते हैं और वाणिज्यिक पत्तन माल के साथ-साथ यात्री-यातायात की भी जिम्मेदारी संभालते हैं। औद्योगिक पत्तन विशेष रूप से कच्चे माल के लिए होते हैं न कि केवल संवेष्टित उत्पादों के लिए। पत्तनों की यह विविधता दर्शाती है कि वैश्विक व्यापार की बढ़ती माँगों को पूरा करने के लिए बंदरगाहों का विशिष्टीकरण और उनके बुनियादी ढांचे का विकास कितना आवश्यक हो गया है।

135. (D) मिसीसिपी नदी
मेंफिस पत्तन संयुक्त राज्य अमेरिका की विशाल मिसीसिपी नदी के किनारे स्थित एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंतर्देशीय बंदरगाह है। यह नदी मार्ग देश के भीतरी भागों से कृषि उत्पादों और औद्योगिक माल को समुद्री मार्गों तक पहुँचाने के लिए एक प्रमुख जलमार्ग के रूप में कार्य करता है। अपनी रणनीतिक स्थिति के कारण यह पत्तन मध्य अमेरिका के व्यापार और रसद आपूर्ति तंत्र में एक केंद्रीय भूमिका निभाता है और आर्थिक विकास को गति देता है।

136. (A) पुर्तगाली, डच, स्पेनिश और अंग्रेज़
पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी के दौरान पुर्तगाली, डच, स्पेनिश और अंग्रेज जैसी प्रमुख यूरोपीय शक्तियाँ दास व्यापार में बहुत सक्रिय थीं। उन्होंने अपनी आर्थिक शक्ति बढ़ाने और उपनिवेशों में श्रम की माँग पूरी करने के लिए अफ्रीका से मनुष्यों के अमानवीय व्यापार को बढ़ावा दिया। इन देशों के जहाजों ने अटलांटिक के पार लाखों लोगों को विस्थापित किया जिससे यूरोप की समृद्धि तो बढ़ी लेकिन अफ्रीकी महाद्वीप को भारी सामाजिक और जनसंख्यात्मक नुकसान पहुँचा।

137. (C) पैकेट स्टेशन
पैकेट स्टेशन विशेष रूप से उन जलीय क्षेत्रों के आर-पार स्थित होते हैं जहाँ नियमित रूप से यात्री, डाक और दैनिक उपयोग की वस्तुओं का परिवहन किया जाता है। ये स्टेशन छोटी दूरियों को तय करने वाली फेरियों के लिए आधार के रूप में कार्य करते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य दो निकटवर्ती भू-भागों के बीच संचार और परिवहन को निरंतर और तीव्र बनाए रखना है जिससे स्थानीय व्यापार और सामाजिक संपर्क सुगम होता है।

138. (C) केवल 1, 2, 3 और 5
पत्तनों के प्रकार और उनके उदाहरणों के मिलान में माराकाइबो एक प्रसिद्ध तैल पत्तन है, होनोलूलू प्रशांत महासागर में एक महत्वपूर्ण मार्ग पत्तन है और कोपेनहेगेन बाल्टिक क्षेत्र का प्रमुख आंत्रपो केंद्र है। डोवर इंग्लिश चैनल पर एक व्यस्त पैकेट स्टेशन के रूप में जाना जाता है। नौसेना पत्तन के रूप में सिंगापुर की पहचान उसके विशाल वाणिज्यिक महत्व के कारण गौण है क्योंकि वह मुख्य रूप से एक आंत्रपो पत्तन है।

139. (D) बहु-पाश्विक व्यापार
बहु-पाश्विक व्यापार वह व्यवस्था है जिसमें एक देश दुनिया के बहुत से अन्य देशों के साथ एक साथ व्यापारिक गतिविधियां संचालित करता है। यह प्रणाली राष्ट्रों को अपने उत्पादों के लिए वैश्विक बाजार खोजने और विविधतापूर्ण आयात प्राप्त करने की स्वतंत्रता देती है। इस प्रकार का व्यापार विश्व व्यापार संगठन के सिद्धांतों के अनुरूप है क्योंकि यह मुक्त और निष्पक्ष वैश्विक व्यापार वातावरण को बढ़ावा देता है जिससे सभी भागीदार लाभान्वित होते हैं।

140. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
विभिन्न महाद्वीपों और देशों में स्थित पत्तनों का अपना विशिष्ट आर्थिक महत्व है। रोटरडम यूरोप का सबसे बड़ा बंदरगाह है, सिंगापुर एशिया का प्रमुख आंत्रपो केंद्र है, कारवाड़ भारत का एक रणनीतिक नौसेना पत्तन है और माराकाइबो वेनेजुएला का मुख्य तेल निर्यातक केंद्र है। ये सभी पत्तन अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण वैश्विक समुद्री मार्गों पर महत्वपूर्ण नोड्स के रूप में कार्य करते हैं और अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य को सुगम बनाते हैं।

141. (C) जनसंख्या कारक
जनसंख्या का आकार और सांस्कृतिक विरासत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के महत्वपूर्ण नियामक होते हैं जो वस्तुओं की मांग और विविधता को प्रभावित करते हैं। सघन जनसंख्या वाले देशों में घरेलू खपत अधिक होती है जबकि सांस्कृतिक विविधता हस्तशिल्प और कलात्मक वस्तुओं के विशिष्ट व्यापार को प्रोत्साहित करती है। ये कारक मिलकर यह तय करते हैं कि कोई राष्ट्र किन वस्तुओं का उत्पादन करेगा और वैश्विक बाजार में उसकी व्यापारिक पहचान किस रूप में होगी।

142. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
प्राचीन युग में तकनीकी सीमाओं के कारण लंबी दूरी का परिवहन अत्यंत कठिन और जोखिम भरा कार्य था जिसके कारण व्यापार मुख्य रूप से स्थानीय बाजारों तक सीमित था। दुर्गम मार्ग और परिवहन के धीमे साधनों की वजह से केवल विलासिता की वस्तुएं ही दूर भेजी जाती थीं। अधिकांश लोग अपनी बुनियादी जरूरतों के लिए स्थानीय स्तर पर उत्पादित वस्तुओं के विनिमय पर ही पूरी तरह से निर्भर रहते थे।

143. (A) मानचेस्टर
मानचेस्टर एक प्रसिद्ध अंतर्देशीय पत्तन का उदाहरण है जिसे उसकी भौगोलिक अवस्थिति के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है क्योंकि यह एक लंबी नहर के माध्यम से समुद्र से जुड़ा हुआ है। अवस्थिति के आधार पर वर्गीकरण यह बताता है कि पत्तन तट पर स्थित है या देश के भीतरी भाग में। इसके विपरीत कोच्चि, अबादान और सिंगापुर को अक्सर उनके विशिष्ट कार्यों जैसे सैन्य, तेल या आंत्रपो के आधार पर पहचाना जाता है।

144. (B) कोच्चि
मार्ग पत्तन वे होते हैं जहाँ जहाज केवल ईंधन और रसद लेने के लिए रुकते हैं जिनमें अदन, होनोलूलू और सिंगापुर प्रमुख हैं। इसके विपरीत कोच्चि भारत का एक प्रमुख नौसेना और वाणिज्यिक पत्तन है जिसका अपना विशाल पृष्ठ प्रदेश है और यह केवल विश्राम केंद्र के रूप में कार्य नहीं करता है। मार्ग पत्तन लंबी समुद्री यात्राओं की निरंतरता बनाए रखने के लिए रणनीतिक ठहराव बिंदुओं के रूप में विकसित हुए हैं।

145. (B) केवल 3 और 4 सही हैं।
एमएफएन का अर्थ सर्वाधिक अनुकूल राष्ट्र है जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में गैर-भेदभावपूर्ण व्यवहार को दर्शाता है और द्विपाश्विक व्यापार विशेष रूप से दो देशों के बीच पारस्परिक सहमति से होता है। मुक्त व्यापार वास्तव में अवरोधों को कम करने के लिए है न कि बढ़ाने के लिए और डंपिंग में वस्तुओं को लागत से भी कम कीमत पर बेचा जाता है। ये अवधारणाएं वैश्विक व्यापार की कार्यप्रणाली को समझने के लिए मौलिक हैं।

146. (A) यूरोप
नीदरलैंड में स्थित रोटरडम पूरे यूरोप महाद्वीप के लिए सबसे महत्वपूर्ण आंत्रपो पत्तन के रूप में कार्य करता है। यहाँ दुनिया भर से विशाल जहाज आते हैं जिनका माल छोटे जहाजों या रेलों के माध्यम से यूरोप के अन्य देशों में वितरित किया जाता है। अपनी उत्कृष्ट अवस्थिति और आधुनिक सुविधाओं के कारण यह यूरोपीय अर्थव्यवस्था का प्रवेश द्वार माना जाता है जहाँ वस्तुओं का बड़े पैमाने पर भंडारण और पुनर्वितरण होता है।

147. (C) जब आयात का मूल्य निर्यात के मूल्य से अधिक हो।
प्रतिकूल या ऋणात्मक व्यापार संतुलन तब उत्पन्न होता है जब कोई राष्ट्र अपनी वस्तुओं को बेचने से जितना कमाता है उससे अधिक विदेशी वस्तुओं को खरीदने पर खर्च कर देता है। यह स्थिति देश की आर्थिक कमजोरी और विदेशी मुद्रा की कमी को दर्शाती है। निरंतर प्रतिकूल संतुलन किसी भी राष्ट्र के लिए चिंताजनक होता है क्योंकि यह अर्थव्यवस्था को अस्थिर कर सकता है और अंतर्राष्ट्रीय ऋण में वृद्धि का कारण बनता है।

148. (B) केवल 2 और 5
दास व्यापार की शुरुआत पंद्रहवीं शताब्दी में हुई थी और कोपेनहेगेन बाल्टिक क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण आंत्रपो पत्तन के रूप में प्रसिद्ध है। रेशम मार्ग मुख्य रूप से चीन को रोम से जोड़ता था और डब्ल्यूटीओ की स्थापना द्वितीय विश्व युद्ध के बहुत बाद उन्नीस सौ पचानवे में हुई थी। इसके अतिरिक्त विश्व व्यापार संगठन का मुख्यालय जिनेवा में स्थित है न कि न्यूयॉर्क में जैसा कि अक्सर भ्रम होता है।

149. (C) आब्सीडियन (आग्नेय काँच)
प्राचीन सभ्यताओं में आब्सीडियन जिसे आग्नेय काँच भी कहा जाता है का उपयोग मुद्रा के रूप में किया जाता था क्योंकि यह अत्यंत कठोर और औजार बनाने के लिए उपयोगी था। विनिमय के माध्यम के रूप में ऐसी प्राकृतिक वस्तुओं का चुनाव उनकी दुर्लभता और उपयोगिता के आधार पर किया जाता था। मुद्रा के विकास के आरंभिक चरणों में कौड़ी, पत्थर और विशिष्ट धातुओं ने आधुनिक कागजी मुद्रा आने से पहले व्यापार को सुगम बनाया था।

150. (B) ज्ञान एवं संस्कृति का प्रस्फुरण
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार केवल वस्तुओं का लेन-देन नहीं है बल्कि यह विभिन्न राष्ट्रों के बीच विचारों, नवीन तकनीकों और सांस्कृतिक मूल्यों के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम है। इसके माध्यम से दुनिया भर की संस्कृतियाँ एक-दूसरे के संपर्क में आती हैं जिससे ज्ञान का प्रसार होता है और वैश्विक समझ विकसित होती है। यह व्यापार का एक अत्यंत सकारात्मक और रचनात्मक पक्ष है जो मानव सभ्यता के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

151. (B) उन वस्तुओं के उत्पादन में विशेषज्ञता पर जिनमें अपेक्षाकृत कम अवसर लागत हो
डेविड रिकार्डो का तुलनात्मक लाभ सिद्धांत देशों को उन वस्तुओं के उत्पादन में विशेषज्ञता हेतु प्रेरित करता है जिनकी अवसर लागत कम होती है। यह सिद्धांत इस बात पर आधारित है कि विशेषज्ञता के माध्यम से वैश्विक आर्थिक दक्षता अधिकतम की जा सकती है। इससे व्यापारिक भागीदारों के मध्य संसाधनों का कुशल आवंटन होता है और उत्पादन में समग्र वृद्धि दर्ज की जाती है।

152. (A) किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के लिए त्यागी गई दूसरी वस्तु की मात्रा
अर्थशास्त्र में अवसर लागत वह मूल्य है जो किसी विकल्प को चुनने पर छोड़े गए दूसरे श्रेष्ठ विकल्प के रूप में चुकाया जाता है। जब कोई देश एक वस्तु की अतिरिक्त इकाई उत्पादित करता है, तो उसे किसी अन्य वस्तु की कुछ मात्रा का त्याग करना पड़ता है। त्यागी गई इसी मात्रा को उत्पादन की वास्तविक अवसर लागत मानकर आर्थिक निर्णय लिए जाते हैं।

153. (C) वैश्विक उत्पादन में वृद्धि और संसाधनों का कुशल आवंटन
डेविड रिकार्डो के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का मुख्य लाभ वैश्विक उत्पादन में होने वाली वृद्धि है। जब राष्ट्र अपनी विशेषज्ञता के आधार पर वस्तुओं का विनिमय करते हैं, तो सीमित संसाधनों का अधिक तार्किक और कुशल आवंटन संभव होता है। इसके परिणामस्वरूप उपभोक्ताओं को कम कीमतों पर विविध वस्तुएं मिलती हैं और संपूर्ण वैश्विक अर्थव्यवस्था की उत्पादकता और दक्षता में सुधार देखा जाता है।

154. (D) केवल कपड़ा उत्पादन में विशेषज्ञता हासिल करनी चाहिए
तुलनात्मक लाभ के अनुसार यदि कोई देश किसी विशिष्ट वस्तु को दूसरे देश की तुलना में कम लागत पर बना सकता है, तो उसे उसी में विशेषज्ञता हासिल करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, कम लागत पर कपड़ा बनाने की क्षमता होने के कारण देश 'अ' को केवल कपड़ा उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इससे वह व्यापार के माध्यम से अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकता है।

155. (C) जब एक देश को दोनों वस्तुओं के उत्पादन में पूर्ण लाभ (absolute advantage) हो
व्यापार का लाभ केवल तब नहीं होता जब दोनों देशों की लागतें अलग हों। यदि एक राष्ट्र दोनों वस्तुओं के उत्पादन में दूसरे से अधिक कुशल है, तब भी तुलनात्मक लाभ के आधार पर किया गया व्यापार दोनों पक्षों के लिए फायदेमंद होता है। यह व्यवस्था संसाधनों के इष्टतम उपयोग और विशेषज्ञता के माध्यम से व्यापारिक भागीदारों के समग्र आर्थिक कल्याण को बढ़ाने में मदद करती है।

156. (B) टैरिफ बाधाओं को कम करके व्यापार को उदार बनाना
द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वैश्विक अर्थव्यवस्था को मजबूत करने हेतु व्यापारिक अवरोधों को कम करना आवश्यक था। इसी उद्देश्य से वर्ष उन्नीस सौ अड़तालीस में गैट की स्थापना हुई। इसका मुख्य लक्ष्य सदस्य देशों के बीच औसत टैरिफ दरों को घटाकर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को अधिक उदार और सुगम बनाना था। इससे विश्व स्तर पर वस्तुओं के मुक्त प्रवाह को बढ़ावा मिला और आर्थिक विकास हुआ।

157. (D) उरुग्वे दौर
विश्व व्यापार संगठन की स्थापना व्यापारिक वार्ताओं की एक लंबी प्रक्रिया के बाद हुई जो वैश्विक व्यापार नियमों को आधुनिक बनाने हेतु की गई थी। वर्ष उन्नीस सौ पचानवे में उरुग्वे दौर की वार्ताओं के औपचारिक समापन पर गैट के स्थान पर डब्ल्यूटीओ अस्तित्व में आया। यह संस्थागत परिवर्तन वैश्विक व्यापार के नियमों को एक अधिक मजबूत, स्थायी और औपचारिक ढाँचा प्रदान करने के लिए किया गया।

158. (A) डब्ल्यूटीओ में सेवाओं और बौद्धिक संपदा जैसे क्षेत्र शामिल हैं और एक बाध्यकारी विवाद निपटान तंत्र है।
विश्व व्यापार संगठन का दायरा गैट की तुलना में बहुत अधिक विस्तृत है। जहाँ पुराना समझौता मुख्य रूप से केवल वस्तुओं के व्यापार तक सीमित था, वहीं डब्ल्यूटीओ सेवाओं, बौद्धिक संपदा अधिकारों और कृषि जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों को भी कवर करता है। इसके पास सदस्य राष्ट्रों के बीच होने वाले व्यापार विवादों को सुलझाने के लिए एक शक्तिशाली और कानूनी रूप से बाध्यकारी विवाद निपटान प्रणाली है।

159. (C) यह सदस्य देशों के बीच व्यापार विवादों पर बाध्यकारी निर्णय दे सकती है।
विश्व व्यापार संगठन की विवाद निपटान प्रणाली अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक संबंधों को स्थिरता और स्पष्टता प्रदान करने में महत्वपूर्ण है। इसकी सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि यह सदस्य देशों के बीच व्यापार नियमों के उल्लंघन पर निष्पक्ष सुनवाई करती है। इसके द्वारा दिए गए निर्णय कानूनी रूप से बाध्यकारी होते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि सभी राष्ट्र वैश्विक व्यापार नियमों का पालन करें और विवाद सुलझाए जा सकें।

160. (A) व्यापार से संबंधित बौद्धिक संपदा अधिकार
ट्रिप्स एक महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय समझौता है जो विश्व व्यापार संगठन के अंतर्गत आता है और सदस्य देशों के बीच नवाचार की सुरक्षा सुनिश्चित करता है। यह मुख्य रूप से कॉपीराइट, पेटेंट और ट्रेडमार्क जैसे बौद्धिक संपदा अधिकारों के मानकों से संबंधित है। इसका उद्देश्य वैश्विक व्यापार में बौद्धिक संपदा की सुरक्षा को एकीकृत करना है ताकि आविष्कारकों और लेखकों को उनके रचनात्मक कार्यों का उचित प्रतिफल मिल सके।

161. (D) उत्पादन लागत से कम कीमत पर माल का निर्यात करना
डंपिंग अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की एक रणनीति है जिसमें कोई देश अपने सामान को विदेशी बाजार में बहुत कम कीमतों पर बेचता है। यह कीमत अक्सर उस वस्तु की उत्पादन लागत या उसके घरेलू बाजार मूल्य से भी कम होती है। इस पद्धति का उपयोग मुख्य रूप से अतिरिक्त उत्पादन को निकालने या किसी विदेशी बाजार पर कब्जा कर वहां अपनी व्यापारिक उपस्थिति को मजबूत करने हेतु किया जाता है।

162. (B) वे अनुचित प्रतिस्पर्धा के कारण नष्ट हो सकते हैं।
जब कोई विदेशी कंपनी उत्पादन लागत से कम दाम पर घरेलू बाजार में माल उतारती है, तो स्थानीय उत्पादकों के लिए वैसी कीमतों का मुकाबला करना असंभव होता है। यह अनुचित प्रतिस्पर्धा स्थानीय उद्योगों की लाभप्रदता को समाप्त कर उन्हें बाजार से बाहर धकेल देती है। इसके परिणामस्वरूप आयातक देश में बेरोजगारी बढ़ती है और वहां के घरेलू उद्योग पूरी तरह नष्ट होने की कगार पर पहुँच सकते हैं।

163. (C) वे सस्ते कच्चे माल का निर्यात और महंगे विनिर्मित सामान का आयात करते हैं।
असमान विनिमय की स्थिति में व्यापार की शर्तें विकासशील राष्ट्रों के लिए निरंतर प्रतिकूल बनी रहती हैं। इस प्रक्रिया में ये देश अक्सर अपने कच्चे माल और प्राकृतिक संसाधनों का कम कीमत पर निर्यात करते हैं। इसके बदले में उन्हें विकसित राष्ट्रों से उच्च मूल्य वाले तैयार और विनिर्मित उत्पादों का आयात करना पड़ता है। यह चक्र धन और संसाधनों के प्रवाह को हमेशा अमीर देशों की ओर बनाए रखता है।

164. (D) प्रदूषण और संसाधनों का अत्यधिक दोहन
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण कंपनियां लागत कम करने के लिए अक्सर पर्यावरण मानकों के साथ समझौता करती हैं। कई औद्योगिक इकाइयां उन देशों का चुनाव करती हैं जहाँ पर्यावरण नियम उदार होते हैं। इसके कारण प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन होता है। साथ ही औद्योगिक कचरे और प्रदूषण के बढ़ने से विकासशील देशों के पारिस्थितिकी तंत्र पर बुरा प्रभाव पड़ता है, जिससे स्थानीय स्तर पर गंभीर समस्याएं पैदा होती हैं।

165. (A) विदेशी बाजार पर कब्जा करना और स्थानीय प्रतिस्पर्धा को खत्म करना
निर्यातक राष्ट्रों द्वारा डंपिंग की नीति अपनाने के पीछे एक सोची-समझी व्यावसायिक रणनीति होती है। इसका मुख्य उद्देश्य किसी विदेशी बाजार पर कब्जा करना और वहां मौजूद स्थानीय प्रतिस्पर्धा को खत्म करना है। कीमतों को कृत्रिम रूप से कम रखकर वे प्रतिद्वंद्वियों को व्यापार से बाहर कर देते हैं। एक बार बाजार पर एकाधिकार स्थापित होने के बाद वे लंबे समय तक लाभ कमाने की स्थिति में होते हैं।

166. (B) यह धीमी, श्रम-साध्य और महंगी थी।
कंटेनरीकरण से पूर्व माल का परिवहन अत्यंत धीमी और कठिन प्रक्रिया थी। सामान को छोटे पैकेटों या बोरियों में रखकर जहाजों पर लादने के लिए बहुत अधिक शारीरिक श्रम की आवश्यकता पड़ती थी। यह कार्य न केवल महंगा था, बल्कि इसमें वस्तुओं के चोरी होने या क्षतिग्रस्त होने की संभावना भी रहती थी। मानकीकृत बक्सों के अभाव में रसद प्रबंधन में दक्षता की भारी कमी देखी जाती थी।

167. (B) समय में नाटकीय रूप से कमी आई।
बंदरगाहों पर जहाजों के रुकने के समय को टर्नअराउंड समय कहते हैं। कंटेनरों के उपयोग ने सामान उतारने और चढ़ाने की पुरानी पद्धतियों को आधुनिक मशीनीकृत प्रणालियों में बदल दिया। इसके फलस्वरूप जो कार्य पहले कई दिनों में पूरा होता था, वह अब कुछ ही घंटों में संपन्न हो जाता है। इस तकनीकी सुधार ने बंदरगाहों की कार्यक्षमता को बढ़ाकर वैश्विक व्यापारिक गतिविधियों को बहुत अधिक तेज कर दिया है।

168. (A) इसे विभिन्न परिवहन साधनों (ट्रक, ट्रेन, जहाज) के बीच आसानी से स्थानांतरित किया जा सकता है।
इंटरमॉडल कंटेनर की मुख्य विशेषता उसकी मानकीकृत संरचना है। इन स्टील के बक्सों को एक बार पैक करने के बाद बिना खोले सीधे जहाज, ट्रेन या ट्रक के बीच स्थानांतरित किया जा सकता है। यह विशेषता विभिन्न परिवहन माध्यमों के बीच एक सुगम कड़ी का कार्य करती है। इससे माल की सुरक्षा बढ़ती है, परिवहन की गति में वृद्धि होती है और रसद प्रबंधन पहले से अधिक विश्वसनीय हो गया है।

169. (C) 'जस्ट-इन-टाइम' विनिर्माण
परिवहन लागत में भारी कमी और आपूर्ति श्रृंखला की विश्वसनीयता ने विनिर्माण क्षेत्र में बदलाव किए हैं। 'जस्ट-इन-टाइम' जैसी कुशल उत्पादन प्रणालियां अब संभव हैं क्योंकि कच्चे माल को दुनिया के किसी भी हिस्से से ठीक समय पर मंगाया जा सकता है। इससे कंपनियों को भारी स्टॉक रखने की जरूरत नहीं पड़ती और वे अपनी उत्पादन प्रक्रियाओं को वैश्विक स्तर पर फैलाकर लागत को प्रभावी ढंग से कम करती हैं।

170. (D) इसने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को तेज गति प्रदान की।
कंटेनरीकरण ने वास्तव में दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों के बीच की दूरी को आर्थिक रूप से कम कर दिया है। परिवहन दक्षता में वृद्धि और खर्चों में भारी कटौती ने अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बहुत सुलभ बना दिया है। इसके कारण देशों के बीच आर्थिक एकीकरण बढ़ा है और वैश्विक स्तर पर वस्तुओं का प्रवाह सुगम हुआ है। इस तकनीकी क्रांति ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को नई गति और आधार प्रदान किया है।

171. (C) पुनर्निर्यात के लिए एक पारगमन केंद्र के रूप में कार्य करना।
आंत्रपो पत्तन वे व्यापारिक केंद्र हैं जो मुख्य रूप से पुनर्निर्यात और पारगमन की भूमिका निभाते हैं। इनका प्राथमिक कार्य अन्य देशों से आने वाले माल को प्राप्त करना और उसे पुनः उसके अंतिम गंतव्य की ओर भेजना होता है। इन बंदरगाहों पर माल का उपभोग स्थानीय स्तर पर नहीं किया जाता, बल्कि इन्हें केवल एक कुशल जंक्शन के रूप में माल के भौतिक हस्तांतरण के लिए उपयोग किया जाता है।

172. (B) सिंगापुर
सिंगापुर अपनी रणनीतिक भौगोलिक स्थिति के कारण विश्व का सबसे व्यस्त और महत्वपूर्ण आंत्रपो पत्तन बन गया है। यह बंदरगाह पुनर्निर्यात व्यापार का एक उत्कृष्ट उदाहरण है जहाँ दुनिया भर से माल आता है और यहाँ से विभिन्न देशों को पुनः भेजा जाता है। इसकी आधुनिक अवसंरचना, कुशल प्रबंधन और व्यापार अनुकूल नीतियां इसे वैश्विक समुद्री व्यापार के मार्ग में एक अनिवार्य जंक्शन और केंद्र बनाती हैं।

173. (D) बड़ा स्थानीय उपभोक्ता बाजार
आंत्रपो पत्तन की सफलता के लिए स्थानीय उपभोक्ता बाजार का बड़ा होना आवश्यक नहीं है। चूंकि ये केंद्र मुख्य रूप से पारगमन और पुनर्निर्यात की सुविधा देते हैं, इसलिए इनका महत्व भौगोलिक स्थिति और अवसंरचना पर निर्भर करता है। इसके विपरीत, कुशल सीमा शुल्क प्रक्रियाएं, राजनीतिक स्थिरता और रणनीतिक स्थान जैसे कारक इन पत्तनों के विकास और वैश्विक व्यापार प्रवाह में उनकी भूमिका के लिए कहीं अधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

174. (A) माल की री-पैकेजिंग और लेबलिंग
आंत्रपो पत्तन अक्सर उत्पादों को तैयार करने के लिए विभिन्न मूल्य-वर्धित सेवाएँ प्रदान करते हैं। इनमें थोक में आए माल की री-पैकेजिंग, लेबलिंग और श्रेणी के अनुसार छंटाई करना शामिल है। ये सेवाएँ आपूर्ति श्रृंखला की दक्षता बढ़ाती हैं और उत्पादों को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप बनाती हैं। इससे न केवल माल का भौतिक हस्तांतरण सुगम होता है, बल्कि वैश्विक व्यापार में इन पत्तनों की उपयोगिता भी बढ़ जाती है।

175. (C) वे एक महत्वपूर्ण कड़ी और जंक्शन के रूप में काम करते हैं।
वैश्विक रसद में ये पत्तन अत्यंत महत्वपूर्ण नोड्स हैं जो विभिन्न महाद्वीपों के व्यापारिक मार्गों को जोड़ते हैं। वे केवल माल के रुकने का स्थान नहीं हैं, बल्कि आपूर्ति श्रृंखला को सुचारु रखने वाली एक अनिवार्य कड़ी हैं। बड़ी मात्रा में माल के कुशल प्रबंधन और सुगम हस्तांतरण के माध्यम से ये केंद्र विश्व की अर्थव्यवस्था के प्रवाह को निरंतर और विश्वसनीय बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अध्याय 09

जनसंख्या

1. 2011 की जनगणना के अनुसार, चीन के बाद विश्व में दूसरा सघनतम बसा हुआ देश कौन-सा है?
   (A) संयुक्त राज्य अमेरिका
   (B) भारत
   (C) इंडोनेशिया
   (D) पाकिस्तान

2. भारत में जनसंख्या के आँकड़ों को एकत्रित करने का मुख्य स्रोत क्या है?
   (A) प्रति दस वर्ष पर होने वाली जनगणना
   (B) राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण
   (C) आर्थिक सर्वेक्षण
   (D) मतदाता सूची

3. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
   List I: (राज्य)
   P. उत्तर प्रदेश
   Q. महाराष्ट्र
   R. बिहार
   S. पश्चिम बंगाल
   List II: (जनसंख्या क्रम)
   1. दूसरा
   2. चौथा
   3. पहला
   4. तीसरा
   कूट:
   (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
   (B) P-1, Q-3, R-2, S-4
   (C) P-3, Q-2, R-1, S-4
   (D) P-4, Q-1, R-3, S-2

4. भारत में जनसंख्या वितरण के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
   (A) जनसंख्या का वितरण संपूर्ण देश में एक समान और संतुलित है।
   (B) देश के दक्षिणी राज्यों में जनसंख्या का घनत्व सर्वाधिक पाया जाता है।
   (C) देश के उत्तर-पश्चिमी पर्वतीय क्षेत्रों में जनसंख्या का जमाव सर्वाधिक है।
   (D) जनसंख्या के वितरण का प्रतिरूप अत्यधिक असम है।

5. भारत की पहली जनगणना किस वर्ष में हुई थी?
   (A) 1881
   (B) 1901
   (C) 1872
   (D) 1857

6. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
   अभिकथन (A): भारत के उत्तरी मैदानों, डेल्टाओं और तटीय मैदानों में जनसंख्या का घनत्व उच्च है।
   कारण (R): इन क्षेत्रों में भू-विन्यास, जल की उपलब्धता और अनुकूल जलवायु जनसंख्या के उच्च घनत्व के लिए प्रमुख कारक हैं।
   (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
   (D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

7. निम्नलिखित में से कौन-सा एक कारक भारत में जनसंख्या के वितरण को प्रमुख रूप से निर्धारित नहीं करता है?
   (A) जलवायु
   (B) भू-विन्यास
   (C) जल की उपलब्धता
   (D) मनोरंजन के साधन

8. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत का जनसंख्या घनत्व कितना व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है?
   (A) 382
   (B) 117
   (C) 282
   (D) 482

9. जनसंख्या घनत्व के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   1. इसे प्रति इकाई क्षेत्र में व्यक्तियों की संख्या द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है।
   2. 1951 में भारत का जनसंख्या घनत्व 117 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. था।
   3. 2011 में दिल्ली का घनत्व 11,297 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. था।
   4. 2011 में अरुणाचल प्रदेश का घनत्व 17 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. था।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1 and 3
(D) 1, 2, 3 और 4

10. भारत के किस राज्य में 2011 की जनगणना के अनुसार जनसंख्या घनत्व सर्वाधिक है?
(A) बिहार
(B) पश्चिम बंगाल
(C) उत्तर प्रदेश
(D) केरल

11. "कायिक घनत्व" की सबसे उपयुक्त परिभाषा क्या है?
(A) कुल जनसंख्या और देश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का अनुपात।
(B) कुल कृषि जनसंख्या और निवल बोए गए कृषित क्षेत्र का अनुपात।
(C) कुल जनसंख्या और देश की कुल कृषि योग्य भूमि का अनुपात।
(D) कुल जनसंख्या / निवल कृषित क्षेत्र

12. जनसंख्या वृद्धि की प्रावस्थाओं को उनके सही कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. स्थिर वृद्धि की अवधि
2. जनसंख्या विस्फोट की अवधि
3. रुद्ध अथवा स्थिर प्रावस्था
4. घटती प्रवृत्ति के साथ उच्च वृद्धि
(A) 3, 1, 2, 4
(B) 1, 3, 2, 4
(C) 3, 2, 1, 4
(D) 4, 2, 1, 3

13. जनसंख्या वृद्धि के "अभिप्रेरित" घटक का संबंध किससे है?
(A) देश में होने वाली अशोधित जन्म और मृत्यु दर के आंकड़े।
(B) किसी निश्चित समय अंतराल में होने वाली केवल जन्म दर।
(C) लोगों के अंतर्वर्ती और बहिर्वर्ती संचलन
(D) किसी निश्चित समय अंतराल में होने वाली केवल मृत्यु दर।

14. किस दशक के दौरान भारत में ऋणात्मक जनसंख्या वृद्धि दर दर्ज की गई?
(A) 1901-1911
(B) 1921-1931
(C) 1941-1951
(D) 1911-1921

15. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (जनसंख्या वृद्धि प्रावस्था)
P. प्रावस्था 'क' (1901-21)
Q. प्रावस्था 'ख' (1921-51)
R. प्रावस्था 'ग' (1951-81)
S. प्रावस्था 'घ' (1981 से अब तक)
List II: (विशेषता)
1. जनसंख्या विस्फोट
2. रुद्ध या स्थिर वृद्धि
3. घटती प्रवृत्ति के साथ उच्च वृद्धि
4. स्थिर वृद्धि
कूट:
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

16. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन जनसंख्या वृद्धि की प्रावस्था 'क' (1901-1921) के लिए सही नहीं है?
(A) इस कालखंड में जनसंख्या वृद्धि दर अत्यंत निम्न या स्थिर थी।
(B) स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवाओं में व्यापक सुधार हुआ।
(C) जन्म दर और मृत्यु दर दोनों के स्तर बहुत ऊँचे बने हुए थे।
(D) 1911-1921 के दशक के दौरान देश में ऋणात्मक वृद्धि दर देखी गई।

17. भारत में "जनसंख्या विस्फोट" की अवधि किसे माना जाता है?
(A) 1901-1921
(B) 1951-1981
(C) 1921-1951
(D) 1981-2011

18. दशकीय वृद्धि दर (g) की गणना के लिए सही सूत्र क्या है, जहाँ P_1 आधार वर्ष की जनसंख्या और P_2 वर्तमान वर्ष की जनसंख्या है?
(A) $g = ((P_2 - P_1) / P_1) \times 100$
(B) $g = ((P_1 - P_2) / P_1) \times 100$
(C) $g = ((P_2 - P_1) / P_2) \times 100$
(D) $g = ((P_1 + P_2) / P_1) \times 100$

19. भारत में जनसंख्या वृद्धि की प्रावस्था 'घ' (1981 के पश्चात) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. जनसंख्या वृद्धि दर ऊँची बनी रही, परंतु धीरे-धीरे मंद गति से घटने लगी।
2. इसके लिए अशोधित जन्म दर की अधोमुखी प्रवृत्ति को उत्तरदायी माना जाता है।
3. विवाह के समय औसत आयु में वृद्धि हुई।
4. स्त्री शिक्षा में सुधार हुआ।
5. इस अवधि में मृत्यु दर में तीव्र वृद्धि हुई।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2, 3 और 4
(C) केवल 2, 3, 4 और 5

यूरोपीय शक्तियों के वैश्विक आर्थिक प्रभुत्व की शुरुआत भी हुई जो सदियों तक चली।

112. (B) सदस्य देशों के व्यापार कर में कमी।
व्यापारिक समूहों या ब्लॉकों का निर्माण करने का मुख्य उद्देश्य सदस्य देशों के बीच व्यापारिक बाधाओं को कम करना और आपसी सहयोग बढ़ाना होता है। ये समूह आपस में लगने वाले व्यापार करों या सीमा शुल्कों को न्यूनतम कर देते हैं जिससे सदस्य राष्ट्रों के बीच वस्तुओं का प्रवाह सुगम हो जाता है। यह सामूहिक व्यवस्था गैर-सदस्य देशों की तुलना में सदस्य देशों को प्रतिस्पर्धी लाभ प्रदान करती है और क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण को मजबूती देती है।

113. (B) बाह्य पत्तन वास्तविक पत्तन के अंदर बने होते हैं।
बाह्य पत्तन वास्तविक पत्तनों के अंदर नहीं बल्कि उनसे कुछ दूरी पर गहरे समुद्र में बनाए जाते हैं ताकि वे बड़े जहाजों को सेवा प्रदान कर सकें। इसके विपरीत अंतर्देशीय पत्तन नदियों के किनारे होते हैं और विस्तृत पत्तन हर प्रकार के माल का थोक में प्रबंधन करते हैं। पत्तन की सक्रियता वास्तव में उसके पीछे स्थित पृष्ठ प्रदेश के आर्थिक विकास और उत्पादन की क्षमता का एक बहुत ही सटीक सूचक होती है।

114. (C) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
आंत्रपो पत्तन पुनर्वितरण के लिए एकत्रण केंद्र होते हैं और पैकेट स्टेशन मुख्य रूप से यात्रियों और डाक के परिवहन का कार्य करते हैं। मार्ग पत्तन लंबी यात्राओं के दौरान जहाजों के लिए आवश्यक विश्राम और रसद आपूर्ति केंद्र के रूप में महत्वपूर्ण होते हैं। तैल पत्तन न केवल तेल का भंडारण करते हैं बल्कि उनमें अक्सर तेल शोधन और प्रसंस्करण की इकाइयाँ भी होती हैं जो कच्चे तेल को उपयोगी उत्पादों में बदलती हैं।

115. (A) 2, 3, 1
व्यापारिक इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं का सही क्रम अठारह सौ के दशक में दास व्यापार की समाप्ति से शुरु होता है। इसके काफी समय बाद द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात उन्नीस सौ अड़तालीस में गैट का गठन हुआ ताकि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को सुव्यवस्थित किया जा सके। अंत में उन्नीस सौ पचानवे में विश्व व्यापार संगठन की स्थापना हुई जिसने एक स्थायी वैश्विक मंच के रूप में गैट की जिम्मेदारी और भूमिका को आगे बढ़ाया।

116. (D) नमक के द्वारा भुगतान
'सैलरी' शब्द का ऐतिहासिक संबंध प्राचीन रोम के 'सैलेरिअम' से है जिसका अर्थ नमक के माध्यम से किया गया भुगतान होता है। उन दिनों नमक एक दुर्लभ और अत्यंत महत्वपूर्ण वस्तु थी जो जीवन और स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य मानी जाती थी। वेतन के रूप में नमक का दिया जाना यह दर्शाता है कि आधुनिक मुद्रा प्रणालियों के विकसित होने से पहले आवश्यक उपभोग्य वस्तुएं ही विनिमय और भुगतान का मुख्य माध्यम हुआ करती थीं।

117. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
पत्तनों के प्रकार और उनके मुख्य कार्यों का सही मिलान यह स्पष्ट करता है कि पैकेट स्टेशन छोटी दूरी के यात्री परिवहन के लिए हैं जबकि नौसेना पत्तन युद्धक जहाजों को सैन्य सेवाएँ देते हैं। मार्ग पत्तन ईंधन भरने के विश्राम केंद्र के रूप में कार्य करते हैं और आंत्रपो पत्तन विभिन्न देशों से निर्यात वस्तुओं के एकत्रण और पुनर्वितरण का केंद्र होते हैं। यह वर्गीकरण वैश्विक व्यापार तंत्र की विविधता को दर्शाता है।

118. (B) निरपेक्ष अलगाव
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार तुलनात्मक लाभ, परिपूरकता और संसाधनों की हस्तांतरणीयता जैसे मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित होता है जो राष्ट्रों को एक-दूसरे के साथ जोड़ते हैं। इसके विपरीत निरपेक्ष अलगाव की नीति व्यापार के बिल्कुल विरुद्ध है क्योंकि यह देशों को अपनी ही सीमाओं के भीतर सीमित कर देती है। व्यापार का अस्तित्व तभी संभव है जब राष्ट्र अपनी कमियों को पूरा करने और अधिशेष को बेचने के लिए एक-दूसरे के साथ सहयोग करें।

119. (D) नदी बेसिन को निजी पेय जल कंपनियों को बेचना
नदी बेसिन जैसे सार्वजनिक संसाधनों का निजीकरण करना सतत पोषणीय विकास के सिद्धांतों के विरुद्ध है क्योंकि यह भविष्य की पीढ़ियों की जल सुरक्षा और पर्यावरणीय स्थिरता को खतरे में डाल सकता है। सतत विकास का अर्थ संसाधनों का इस प्रकार उपयोग करना है कि वे समाप्त न हों और समाज के सभी वर्गों के लिए उपलब्ध रहें। किसी भी प्राकृतिक संसाधन का अनियंत्रित व्यापार अक्सर पारिस्थितिक तंत्र और स्थानीय समुदायों के लिए हानिकारक सिद्ध होता है।

120. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
सघन जनसंख्या वाले देशों में विशाल घरेलू बाजार मौजूद होता है जहाँ कृषि और उद्योगों में उत्पादित अधिकांश वस्तुओं की खपत स्थानीय स्तर पर ही हो जाती है। इस कारण निर्यात के लिए बहुत कम अधिशेष बचता है जिससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की तुलना में आंतरिक व्यापार की मात्रा और महत्व बढ़ जाता है। ऐसे राष्ट्र अपनी विशाल जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपनी ही व्यापारिक सीमाओं के भीतर अधिक सक्रिय रहते हैं।

121. (C) बाह्य पत्तन
बाह्य पत्तन गहरे जल वाले ऐसे स्थान होते हैं जो मुख्य पत्तन से कुछ दूरी पर खुले समुद्र में स्थित होते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य उन विशालकाय आधुनिक जहाजों को खड़ा होने और माल उतारने की जगह देना है जो अपने बड़े आकार या गहराई के कारण तट के समीप बने उथले वास्तविक पत्तनों तक नहीं पहुँच सकते। ये पत्तन विशाल नौभार के कुशल और सुरक्षित प्रबंधन को संभव बनाकर समुद्री व्यापार को गति देते हैं।

122. (A) पिरेइअस और एथेंस
पिरेइअस एथेंस के लिए एक ऐतिहासिक और रणनीतिक बाह्य पत्तन के रूप में कार्य करता है जो मुख्य शहर को वैश्विक समुद्री

30. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत में किशोर जनसंख्या में 52.7% किशोर और 47.3% किशोरियाँ हैं।
2. यदि किशोरों को समुचित ढंग से मार्गदर्शित न किया जाए तो वे सुभेद्य (vulnerable) हो सकते हैं।
3. राष्ट्रीय युवा नीति का उद्देश्य युवाओं को राष्ट्रों के समूह में भारत का उचित स्थान प्राप्त करने में सक्षम बनाना है।
4. भारत में किशोरों के समक्ष कोई बड़ी चुनौती नहीं है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1 और 4
(D) सभी कथन सही हैं

31. जनसंख्या संघटन के अध्ययन में निम्नलिखित में से किसका अध्ययन नहीं किया जाता है?
(A) जनसंख्या का घनत्व
(B) आयु व लिंग का विश्लेषण
(C) भाषा और धर्म
(D) व्यावसायिक विशेषताएँ

32. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): भारत जैसे देश में, जहाँ आर्थिक विकास के स्तर निम्न हैं, वहाँ श्रम की सहभागिता दर ऊँची है।
कारण (R): निर्वाह अथवा लगभग निर्वाह की आर्थिक क्रियाओं के निष्पादन के लिए अनेक कामगारों की ज़रुरत पड़ती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

33. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की कुल जनसंख्या का कितना प्रतिशत भाग गाँवों में रहता है?
(A) 58.8%
(B) 68.8%
(C) 62.8%
(D) 72.2%

34. निम्नलिखित राज्यों के समूहों को उनकी ग्रामीण जनसंख्या के प्रतिशत के घटते क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. बिहार
2. हिमाचल प्रदेश
3. गोआ
4. मिज़ोरम

(A) 2, 1, 4, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 3, 1, 4
(D) 3, 4, 1, 2

35. भारत में ग्रामीण जनसंख्या के वितरण के प्रतिरुप के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) हिमाचल प्रदेश और बिहार में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत बहुत अधिक है।
(B) गाँवों का आकार उत्तर-पूर्वी भारत के पहाड़ी राज्यों में 200 व्यक्तियों से कम है।
(C) पूरे देश में ग्रामीण जनसंख्या का वितरण समान है।
(D) केरल व महाराष्ट्र के कुछ भागों में गाँवों का आकार 17,000 व्यक्ति तक है।

36. 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में नगरीय जनसंख्या का अनुपात क्या है?
(A) 27.8%
(B) 35.6%
(C) 42.1%
(D) 31.16%

37. भारत में नगरीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत में नगरीय जनसंख्या का अनुपात काफ़ी निम्न है।
2. पिछले दशकों में नगरीय जनसंख्या में वृद्धि की दर बहुत तीव्र रही है।
3. नगरीय जनसंख्या की वृद्धि का कारण संवृद्ध आर्थिक विकास और स्वास्थ्य दशाओं में सुधार है।
4. लगभग सभी राज्यों और केंद्र-शासित प्रदेशों में नगरीय जनसंख्या काफ़ी बढ़ी है।
5. मध्य और निम्न गंगा के मैदानों में नगरीकरण का स्तर उच्च रहा है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 1, 2, 3, 4
(C) केवल 2, 3, 4, 5
(D) सभी कथन सही हैं

38. ग्रियर्सन के "भारत का भाषाई सर्वेक्षण, 1903-1928" के अनुसार, देश में कितनी भाषाएँ और बोलियाँ थीं?
(A) 150 भाषाएँ और 500 बोलियाँ
(B) 179 भाषाएँ और 544 बोलियाँ
(C) 22 भाषाएँ और 100 बोलियाँ
(D) 250 भाषाएँ और 600 बोलियाँ

39. भारतीय संविधान के अनुसार वर्तमान में कितनी भाषाएँ अनुसूचित हैं?
(A) 18
(B) 20
(C) 24
(D) 22

List I: (उप-परिवार)
P. आस्ट्रो-एशियाई
Q. तिब्बती-म्यांमारी
R. द्रविड़
S. सियामी-चीनी
List II: (शाखा/वर्ग)
1. असम-म्यांमारी
2. दक्षिण द्रविड़
3. मुंडा
4. तिब्बती हिमालयी
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

103. भारत में महिला श्रमिकों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सर्वाधिक उपयुक्त है?
(A) उनकी संख्या तृतीयक सेक्टर में पुरुषों से अधिक है।
(B) वे केवल घरेलू औद्योगिक श्रमिक के रूप में काम करती हैं।
(C) पिछले कुछ वर्षों में उनकी सहभागिता में कोई सुधार नहीं हुआ है।
(D) उनकी संख्या प्राथमिक सेक्टर में अपेक्षाकृत अधिक है।

104. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में हिंदुओं के बाद दूसरा सबसे बड़ा धार्मिक समुदाय कौन सा है?
(A) मुस्लिम
(B) ईसाई
(C) सिक्ख
(D) बौद्ध

105. भारत के निम्नलिखित राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को उनकी श्रमजीवी जनसंख्या के अनुपात (प्रतिशत) के आरोही क्रम में व्यवस्थित करें:
1. लक्षद्वीप
2. हिमाचल प्रदेश
3. दादरा और नगर हवेली
4. दमन और दीव
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 1, 3, 4, 2
(C) 2, 4, 3, 1
(D) 4, 3, 1, 2

106. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): भारत में ग्रामीण-नगरीय प्रवास सुस्पष्ट है, विशेषकर मुख्य नगरीय क्षेत्रों में।
कारण (R): कृषि की दृष्टि से प्रगतिरुद्ध क्षेत्रों में नगरीकरण का स्तर उच्च रहा है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

107. निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य 2011 में उच्च जनसंख्या घनत्व वाले राज्यों (801-1200 व्यक्ति/किमी^{2} से ऊपर) की श्रेणी में नहीं आता है?
(A) उत्तर प्रदेश
(B) बिहार
(C) पश्चिम बंगाल
(D) तमिलनाडु

108. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत में धर्म और भू-दृश्य के संबंध को सही ढंग से दर्शाता है?
(A) धार्मिक संरचनाएं केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित हैं।
(B) पवित्र संरचनाएँ, कब्रिस्तान और वृक्षों के निकुंज भू-दृश्य पर धर्मों की औपचारिक अभिव्यक्ति हैं।
(C) सभी धार्मिक संरचनाओं का आकार-प्रकार और स्थापत्य एक समान होता है।
(D) भारत में धर्म का भू-दृश्य पर कोई दृश्य प्रभाव नहीं है।

109. भारत के व्यावसायिक संघटन (2011) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कुल श्रमजीवी जनसंख्या का आधे से अधिक हिस्सा कृषक और कृषि मजदूर है।
2. घरेलू औद्योगिक श्रमिकों का प्रतिशत 5% से कम है।
3. 'अन्य श्रमिक' का हिस्सा 40% से अधिक है।
4. प्राथमिक सेक्टर में लगे श्रमिकों का अनुपात द्वितीयक और तृतीयक सेक्टर के संयुक्त अनुपात से अधिक है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4

110. भारत की पहली संपूर्ण जनगणना किस वर्ष में संपन्न हुई थी?
(A) 1872
(B) 1901
(C) 1891
(D) 1881

111. 2011 में, निम्नलिखित राज्यों में से किस एक में जनसंख्या का घनत्व 100 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से भी कम था?
(A) अरुणाचल प्रदेश
(B) सिक्किम
(C) नागालैंड
(D) मिजोरम

50. 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की श्रमजीवी जनसंख्या को कितने प्रमुख संवर्गों में बाँटा गया है?
(A) चार
(B) दो
(C) तीन
(D) पाँच

51. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (श्रमिक संवर्ग)
P. कृषक और कृषि मज़दूर
Q. घरेलू औद्योगिक श्रमिक
R. अन्य श्रमिक
List II: (प्रतिशत - 2011)
1. 3.8%
2. 41.6%
3. 54.6%
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3
(B) P-3, Q-1, R-2
(C) P-2, Q-3, R-1
(D) P-3, Q-2, R-1

52. निम्नलिखित में से कौन-सा एक भारत की श्रमजीवी जनसंख्या के चार प्रमुख संवर्गों में से नहीं है?
(A) कृषक
(B) कृषि मज़दूर
(C) घरेलू औद्योगिक श्रमिक
(D) सेवा क्षेत्र श्रमिक

53. भारत में व्यावसायिक संरचना के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कुल श्रमजीवी जनसंख्या का लगभग 54.6 प्रतिशत कृषक और कृषि मज़दूर हैं।
2. केवल 3.8 प्रतिशत श्रमिक घरेलू उद्योगों में लगे हैं।
3. 41.6 प्रतिशत अन्य श्रमिक हैं।
4. पुरुष श्रमिकों की संख्या स्त्री श्रमिकों की संख्या से तीनों सेक्टरों में अधिक है।
5. महिला श्रमिकों की संख्या प्राथमिक सेक्टर में अपेक्षाकृत अधिक है।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 3, 4 और 5
(D) सभी कथन सही हैं

54. भारत में 2001 से 2011 के बीच कृषि सेक्टर के श्रमिकों के अनुपात में क्या परिवर्तन दिखाई दिया है?
(A) इसमें वृद्धि हुई है।
(B) इसमें उतार (गिरावट) दिखाई दिया है।
(C) यह स्थिर रहा है।
(D) इसमें दोगुना वृद्धि हुई है।

55. "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" सामाजिक अभियान का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) केवल बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देना
(B) महिलाओं के लिए रोजगार सृजित करना
(C) बाल विवाह को रोकना
(D) जेंडर के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देना

56. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): भारत में पिछले कुछ दशकों में द्वितीयक और तृतीयक सेक्टर में सहभागिता दर बढ़ी है।
कारण (R): यह श्रमिकों की खेत-आधारित रोज़गारों पर निर्भरता से गैर-खेत आधारित रोज़गारों पर निर्भरता को इंगित करता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

57. भारत के किन राज्यों में कृषकों की संख्या बहुत अधिक है?
(A) बिहार और पश्चिम बंगाल
(B) केरल और तमिलनाडु
(C) हिमाचल प्रदेश और नागालैंड
(D) दिल्ली और चंडीगढ़

58. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में विशालतम भाषाई समूह कौन-सा है?
(A) भारतीय-आर्य
(B) आस्ट्रिक
(C) द्रविड़
(D) चीनी-तिब्बती

59. जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. सिंचाई के विकास ने राजस्थान जैसे शुष्क क्षेत्रों में जनसंख्या संकेन्द्रण को बढ़ाया है।
2. खनिज एवं ऊर्जा संसाधनों की उपलब्धता के कारण झारखंड में जनसंख्या बढ़ी है।
3. परिवहन जाल के विकास का जनसंख्या वितरण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
4. औद्योगीकरण और नगरीकरण ग्रामीण-नगरीय प्रवासियों को आकर्षित करते हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 4
(D) सभी कथन सही हैं

तुलना में अधिक रही।
(B) इन सभी राज्यों में दशकीय वृद्धि दर 1991-2001 की तुलना में कम रही।
(C) केवल उत्तर प्रदेश और बिहार में वृद्धि दर कम हुई।
(D) केवल आंध्र प्रदेश में वृद्धि दर में सर्वाधिक वृद्धि हुई।

82. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): यू.एन.डी.पी. के अनुसार, यदि विकास में सभी जेंडर सम्मिलित नहीं हैं तो ऐसा विकास लुप्तप्राय है।
कारण (R): समाज का विभाजन पुरुष, महिला और ट्रांसजेंडर में प्राकृतिक और जैविक रूप से होता है, लेकिन समाज द्वारा निर्धारित भूमिकाएँ सामाजिक भेदभाव का आधार बन जाती हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

83. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, भारतीय भाषाओं के चार प्रमुख भाषा परिवारों में से नहीं है?
(A) द्रविड़
(B) आस्ट्रिक
(C) सेमेटिक
(D) चीनी-तिब्बती

84. भारतीय-यूरोपीय (आर्य) भाषा परिवार का वाक् क्षेत्र निम्नलिखित में से कौन-सा है?
(A) तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल
(B) मेघालय, निकोबार द्वीप समूह
(C) असम, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम
(D) जम्मू और कश्मीर, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार

85. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. 'द्रविड़' भाषा परिवार मुख्यतः दक्षिण भारत में केंद्रित है।
2. 'आस्ट्रिक' भाषा परिवार की मुंडा शाखा पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा में बोली जाती है।
3. 'चीनी-तिब्बती' परिवार की तिब्बती-हिमालयी शाखा जम्मू और कश्मीर व हिमाचल प्रदेश में बोली जाती है।
4. 'भारतीय-आर्य' परिवार की दरदी शाखा भारत से बाहर बोली जाती है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1 और 4
(D) सभी कथन सही हैं

86. 'जनसंख्या के दुगुना होने का समय' किस पर निर्भर करता है?
(A) केवल जन्म दर पर
(B) वर्तमान वार्षिक वृद्धि दर पर
(C) केवल मृत्यु दर पर
(D) प्रवास दर पर

87. भारत की जनसंख्या वृद्धि की चार प्रावस्थाओं के कालखंडों का सही मिलान कौन सा है?
(A) प्रावस्था ख : 1951-1981
(B) प्रावस्था ग : 1901-1921
(C) प्रावस्था क : 1921-1951
(D) प्रावस्था घ : 1981 के पश्चात्

88. निम्नलिखित को उनके सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिये:
1. भारत की दूसरी पंचवर्षीय योजना का आरम्भ
2. भारत में जनसंख्या विस्फोट की अवधि का अंत
3. भारत की पहली जनगणना
4. भारत की पहली संपूर्ण जनगणना

(A) 3, 4, 1, 2
(B) 4, 3, 1, 2
(C) 3, 1, 4, 2
(D) 1, 3, 2, 4

89. 2011 में, निम्नलिखित राज्यों में से किस एक में कृषि मजदूरों की संख्या अधिक थी?
(A) हिमाचल प्रदेश
(B) नागालैंड
(C) बिहार
(D) दिल्ली

90. भारत के अत्यधिक नगरीकृत क्षेत्रों जैसे दिल्ली, चंडीगढ़ और पुडुच्चेरी में श्रमिकों का बहुत बड़ा अनुपात किस सेक्टर में लगा हुआ है?
(A) अन्य सेवाओं (तृतीयक सेक्टर) में
(B) प्राथमिक सेक्टर (कृषि) में
(C) द्वितीयक सेक्टर (विनिर्माण) में
(D) घरेलू उद्योगों में

91. 2011 जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या कितनी थी?
(A) 102.8 करोड़
(B) 84.6 करोड़
(C) 68.3 करोड़
(D) 121.0 करोड़

92. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I (वर्ष) को सूची-II (जनसंख्या वृद्धि दर %) से सुमेलित कीजिए:
List I: (वर्ष)
P. 1921
Q. 1951
R. 1971
S. 2011
List II: (दशकीय वृद्धि दर %)

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

71. भारत में ईसाई जनसंख्या का मुख्य सांद्रण कहाँ नहीं पाया जाता है?
(A) गोआ एवं केरल
(B) मेघालय, मिजोरम और नागालैंड के पहाड़ी राज्य
(C) छोटानागपुर क्षेत्र
(D) राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्र

72. भारत में जैनियों का प्रमुख संकेंद्रण किन क्षेत्रों में है?
(A) राजस्थान के नगरीय क्षेत्र, गुजरात और महाराष्ट्र
(B) जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश
(C) पश्चिम बंगाल और उड़ीसा
(D) उत्तर-पूर्वी राज्य

73. जनगणना परिभाषा के अनुसार "सीमांत श्रमिक" कौन है?
(A) जो एक वर्ष में 183 दिनों से अधिक काम करता है।
(B) जो बिल्कुल काम नहीं करता है।
(C) जो एक वर्ष में 183 दिनों (या छः महीने) से कम दिन काम करता है।
(D) जो केवल अंशकालिक काम करता है।

74. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में श्रम की प्रतिभागिता दर सभी राज्यों में एक समान है।
2. हिमाचल प्रदेश और सिक्किम जैसे राज्यों में श्रमिकों का प्रतिशत अधिक है।
3. दादरा और नगर हवेली तथा दमन और दीव में प्रतिभागिता दर ऊँची है।
4. आर्थिक विकास के निम्न स्तरों वाले क्षेत्रों में श्रम की सहभागिता दर नीची होती है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी कथन सही हैं

75. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में पुरुष और स्त्री श्रमिकों के संबंध में सबसे उपयुक्त कथन कौन-सा है?
(A) स्त्री श्रमिकों की संख्या पुरुष श्रमिकों से अधिक है।
(B) पुरुष और स्त्री श्रमिकों की संख्या लगभग बराबर है।
(C) स्त्री श्रमिकों की संख्या केवल तृतीयक सेक्टर में अधिक है।
(D) पुरुष श्रमिकों की संख्या स्त्री श्रमिकों की संख्या से तीनों सेक्टरों में अधिक है।

76. भारत की अर्थव्यवस्था में "सेक्टरीय स्थानांतरण" की परिघटना क्या इंगित करती है?
(A) जनसंख्या का ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में स्थानांतरण
(B) श्रमिकों की कृषि आधारित रोजगारों से गैर-कृषि आधारित रोजगारों पर निर्भरता
(C) प्राथमिक सेक्टर का द्वितीयक सेक्टर पर हावी होना
(D) जनसंख्या का एक राज्य से दूसरे राज्य में प्रवास

77. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I (धार्मिक समुदाय) को सूची-II (प्रमुख संकेंद्रण क्षेत्र) से सुमेलित कीजिए:
List I: (धार्मिक समुदाय)
P. मुस्लिम
Q. ईसाई
R. सिक्ख
S. जैन

List II: (प्रमुख संकेंद्रण क्षेत्र)
1. पंजाब, हरियाणा
2. राजस्थान, गुजरात
3. जम्मू-कश्मीर, केरल
4. गोआ, मेघालय

कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

78. निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में नगरीकरण का स्तर निम्न रहा है?
(A) कोलकाता, मुंबई, बेंगलूरु जैसे महानगर
(B) उत्तरी भारत के मैदानों में मुख्य सड़कों के मिलन बिंदु
(C) दिल्ली, कानपुर और लुधियाना-जालंधर
(D) मध्य और निम्न गंगा के मैदान

79. 1951 की तुलना में 2011 में भारत के जनसंख्या घनत्व में कितनी वृद्धि हुई?
(A) लगभग 200 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. से अधिक
(B) लगभग 100 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी.
(C) लगभग 50 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी.
(D) घनत्व में कमी आई है।

80. जनसंख्या वृद्धि की प्रावस्था 'ग' (1951-81) में उच्च वृद्धि दर का मुख्य कारण क्या था?
(A) जन्म दर में तीव्र ह्रास और मृत्यु दर में तीव्र वृद्धि
(B) मृत्यु दर में तीव्र ह्रास और उच्च प्रजनन दर
(C) अंतराष्ट्रीय प्रवास में भारी कमी
(D) जन्म दर और मृत्यु दर दोनों का निम्न होना

81. 2001-2011 के दशक में भारत के छः सर्वाधिक जनसंख्या वाले राज्यों (उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश) के संबंध में क्या सत्य है?
(A) इन सभी राज्यों में दशकीय वृद्धि दर 1991-2001 की

60. 2011 की जनगणना के अनुसार, निम्नलिखित में से किस राज्य में नगरीय जनसंख्या का अनुपात सर्वाधिक है?
(A) तमिलनाडु
(B) गोआ
(C) महाराष्ट्र
(D) केरल

61. 'कृषीय घनत्व' को कैसे परिभाषित किया जाता है?
(A) कुल जनसंख्या / निवल कृषित क्षेत्र
(B) कुल जनसंख्या / कुल क्षेत्रफल
(C) कुल कृषि जनसंख्या / निवल कृषित क्षेत्र
(D) कुल कृषि जनसंख्या / कुल क्षेत्रफल

62. जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर के प्रतिशत के घटते क्रम में निम्नलिखित जनगणना वर्षों को व्यवस्थित करें:
1. 1971
2. 1981
3. 2001
4. 2011

(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 1, 2, 4, 3
(D) 4, 3, 2, 1

63. निम्नलिखित में से कौन-सा एक कारण 1901-1921 की अवधि में उच्च जन्म और मृत्यु दर के लिए उत्तरदायी था?
(A) आधारभूत आवश्यकताओं का अपर्याप्त वितरण
(B) बेहतर स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवाएँ
(C) उच्च साक्षरता दर
(D) तीव्र आर्थिक विकास

64. 1921-1951 के दशकों को जनसंख्या की 'स्थिर वृद्धि की अवधि' क्यों कहा जाता है?
(A) जन्म दर और मृत्यु दर दोनों में तीव्र गिरावट आई।
(B) मृत्यु दर में कमी आई लेकिन जन्म दर ऊँची बनी रही।
(C) जन्म दर और मृत्यु दर दोनों बहुत ऊँचे थे।
(D) प्रवास दर शून्य हो गई थी।

65. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (राज्य/केंद्र-शासित प्रदेश)
P. बिहार
Q. अरुणाचल प्रदेश
R. दिल्ली (NCT)
S. केरल

List II: (जनसंख्या घनत्व 2011)
1. 17
2. 859
3. 1102
4. 11297

कूट:
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-4, Q-2, R-3, S-1
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

66. 2001-2011 के दौरान, किन राज्यों में पिछले दशक की तुलना में जनसंख्या वृद्धि दर में कुछ वृद्धि दर्ज की गई?
(A) तमिलनाडु और पुडुच्चेरी
(B) केरल और आंध्र प्रदेश
(C) महाराष्ट्र और गुजरात
(D) उत्तर प्रदेश और बिहार

67. निम्नलिखित में से कौन-सा एक भारत की किशोर जनसंख्या से संबंधित समाज के समक्ष चुनौती नहीं है?
(A) औषध दुरुपयोग और मदिरा सेवन
(B) उच्च मातृ मृत्यु दर
(C) उच्च स्तर का कौशल विकास
(D) शारीरिक और मानसिक अपंगता

68. जनसंख्या संघटन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. निवास के स्थानों के अनुसार जनसंख्या का संघटन एक महत्त्वपूर्ण सूचक है।
2. 2011 में भारत की 68.8% जनसंख्या ग्रामीण थी।
3. गोआ और मिज़ोरम में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत बहुत अधिक है।
4. दादरा और नगर हवेली को छोड़कर केंद्र-शासित प्रदेशों में ग्रामीण जनसंख्या का लघु अनुपात है।
5. नगरीय जनसंख्या का अनुपात पिछले दशकों में घटा है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 4
(B) केवल 2, 3, 5
(C) केवल 1, 3, 4
(D) सभी कथन सही हैं

69. भारत के भाषाई संघटन के संबंध में कौन-सा कथन असत्य है?
(A) भारत एक भाषाई विविधता की भूमि है।
(B) अनुसूचित भाषाओं में हिंदी बोलने वालों का प्रतिशत सर्वाधिक है।
(C) देश में भाषाई प्रदेशों की सीमाएँ पूर्णतः सुनिश्चित और स्पष्ट हैं।
(D) लघुतम भाषा वर्ग संस्कृत, बोडो तथा मणिपुरी बोलने वालों के हैं।

70. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): कुछ निश्चित राज्यों और जिलों में एक धर्म की संख्यात्मक प्रबलता विशाल है, जबकि उसी का दूसरे राज्यों में प्रतिनिधित्व नगण्य है।
कारण (R): भारत में धार्मिक समुदायों का स्थानिक वितरण पूर्णतया समान है।

1. 13.31
2. 24.80
3. 17.64
4. -0.31

कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

93. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. भारत की जनसंख्या उत्तर अमेरिका, दक्षिण अमेरिका और आस्ट्रेलिया की कुल जनसंख्या से भी अधिक है।
2. बड़ी जनसंख्या देश के सीमित संसाधनों पर दबाव डालती है।
3. भारत की पहली संपूर्ण जनगणना 1872 में हुई थी।
4. उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल और आंध्र प्रदेश की जनसंख्या मिलकर देश की कुल जनसंख्या का 76 प्रतिशत है।
5. अरुणाचल प्रदेश जैसे राज्य का जनसंख्या आकार उसके विशाल भौगोलिक क्षेत्र के बावजूद छोटा है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 4, 5
(B) केवल 2, 3, 4, 5
(C) केवल 1, 3, 5
(D) सभी कथन सही हैं

94. 1981 के पश्चात् भारत में जनसंख्या वृद्धि दर के धीरे-धीरे मंद होने का निम्नलिखित में से कौन सा एक कारण नहीं है?
(A) अशोधित जन्म दर की अधोमुखी प्रवृत्ति
(B) विवाह के समय औसत आयु में वृद्धि
(C) स्त्री शिक्षा में सुधार
(D) मृत्यु दर में तीव्र वृद्धि

95. भारत में जनसंख्या के घनत्व के स्थानिक वितरण के संबंध में कौन सा कथन असत्य है?
(A) हिमालय प्रदेश के पर्वतीय राज्यों में घनत्व उच्च है।
(B) बिहार (1102) और पश्चिम बंगाल (1029) में घनत्व उच्चतर है।
(C) प्रायद्वीपीय भारत में केरल (859) और तमिलनाडु (555) में घनत्व उच्चतर है।
(D) केंद्र-शासित प्रदेशों में जनसंख्या का घनत्व उच्च है।

96. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): भारत में पिछले कुछ दशकों में, कृषि सेक्टर के श्रमिकों के अनुपात में उतार दिखाई दिया है।
कारण (R): यह देश की अर्थव्यवस्था में सेक्टरीय स्थानांतरण को इंगित करता है, जहाँ श्रमिक गैर-खेत आधारित रोज़गारों की ओर बढ़ रहे हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

97. 2011 जनगणना के अनुसार, निम्नलिखित राज्यों को उनकी कुल जनसंख्या के अवरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
(A) उत्तर प्रदेश > महाराष्ट्र > बिहार > पश्चिम बंगाल
(B) महाराष्ट्र > उत्तर प्रदेश > पश्चिम बंगाल > बिहार
(C) उत्तर प्रदेश > बिहार > महाराष्ट्र > पश्चिम बंगाल
(D) बिहार > पश्चिम बंगाल > महाराष्ट्र > उत्तर प्रदेश

98. दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, बेंगलूरु जैसे नगरीय क्षेत्रों में उच्च जनसंख्या सांद्रण का मुख्य कारण क्या है?
(A) औद्योगिक विकास और नगरीकरण
(B) स्थायी कृषि का उद्भव
(C) अनुकूल जलवायु
(D) प्रचुर प्राकृतिक संसाधन

99. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में जनसंख्या वृद्धि प्राकृतिक और अभिप्रेरित, दोनों घटकों का परिणाम है।
2. प्राकृतिक वृद्धि का विश्लेषण अशोधित जन्म और मृत्यु दरों से किया जाता है।
3. अभिप्रेरित वृद्धि का विश्लेषण प्रवास से किया जाता है।
4. भारत की वार्षिक वृद्धि दर समय के साथ नित्य घट रही है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1 और 4
(D) सभी कथन सही हैं

100. भारत में 2001-2011 के दौरान जनसंख्या वृद्धि में क्षेत्रीय भिन्नताओं के संदर्भ में, देश के किस भाग में उच्च वृद्धि दर (20-25%) पाया गई?
(A) दक्षिणी राज्य जैसे केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु
(B) केवल उत्तर-पूर्वी राज्य
(C) तटीय राज्य जैसे गोआ और ओडिशा
(D) उत्तर-पश्चिमी, उत्तरी और उत्तर-मध्य भाग के राज्य

101. भारत में जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले भौतिक कारकों में सबसे प्रमुख क्या हैं?
(A) खनिज संसाधन और औद्योगीकरण
(B) परिवहन और संचार तंत्र
(C) भू-विन्यास, जल उपलब्धता और जलवायु
(D) सरकारी नीतियां और ऐतिहासिक घटनाएँ

102. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I (भाषाई उप-परिवार) को सूची-II (शाखा/वर्ग) से सुमेलित कीजिए:

किमी था।
2. 2011 में बिहार का जनसंख्या घनत्व सर्वाधिक (1102) था।
3. 2011 में अरुणाचल प्रदेश का जनसंख्या घनत्व न्यूनतम (17) था।
4. 1951 से 2011 तक, 60 वर्षों में घनत्व में 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी से अधिक की वृद्धि हुई।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4

122. विश्व विकास रिपोर्ट के प्रक्षेपण के अनुसार, 2025 ई. तक भारत की जनसंख्या कितनी होने का अनुमान है?
(A) 135 करोड़
(B) 130 करोड़
(C) 140 करोड़
(D) 150 करोड़

123. भारत के किस क्षेत्र में 'मॉन-ख्मेर' और 'मुंडा' भाषाएँ बोली जाती हैं?
(A) दक्षिणी भारत
(B) पश्चिमी भारत
(C) उत्तरी भारत
(D) उत्तर-पूर्वी और मध्य भारत

124. भारत के श्रमजीवी जनसंख्या के चार संवर्गों में से किसका प्रतिशत अंश सबसे कम है?
(A) कृषक
(B) घरेलू औद्योगिक श्रमिक
(C) कृषि मजदूर
(D) अन्य श्रमिक

125. 2011 में भारत की श्रम-शक्ति के सेक्टर-वार संघटन के बारे में कौन-सा कथन असत्य है?
(A) प्राथमिक सेक्टर में कुल श्रमिकों का 54.6% लगा है।
(B) द्वितीयक सेक्टर में कुल श्रमिकों का 3.8% लगा है।
(C) द्वितीयक और तृतीयक सेक्टर में पुरुषों की तुलना में स्त्रियाँ अधिक हैं।
(D) तृतीयक सेक्टर में कुल श्रमिकों का 41.6% लगा है।

126. भारत में ग्रामीण जनसंख्या के वितरण के संबंध में क्या सही है?
(A) गोआ और महाराष्ट्र में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत बहुत अधिक है।
(B) केंद्र-शासित प्रदेशों में ग्रामीण जनसंख्या का उच्च अनुपात है।
(C) देश भर में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत एकसमान है।
(D) बिहार और सिक्किम जैसे राज्यों में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत अधिक है।

127. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I (राज्य/केंद्र शासित प्रदेश) को सूची-II (2011 में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत - अनुमानित) से सुमेलित कीजिए:
List I: (राज्य/केंद्र शासित प्रदेश)
P. गोआ
Q. मिज़ोरम
R. बिहार
S. हिमाचल प्रदेश

List II: (नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत)
1. बहुत कम (लगभग 10-11%)
2. बहुत कम (लगभग 10%)
3. उच्च (लगभग 62%)
4. उच्च (लगभग 52%)

कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

128. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): 1921-1951 के दशकों को भारत में जनसंख्या की स्थिर वृद्धि की अवधि के रूप में जाना जाता है।
कारण (R): इस अवधि में स्वास्थ्य और स्वच्छता में सुधारों ने मृत्यु दर को नीचे ला दिया, जबकि अशोधित जन्म दर ऊँची बनी रही।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

129. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की किशोर जनसंख्या (10-19 वर्ष) के संघटन के संबंध में सही कथन क्या है?
(A) किशोरियों का प्रतिशत किशोरों से अधिक है।
(B) किशोरों का प्रतिशत किशोरियों से अधिक है।
(C) किशोरों और किशोरियों का प्रतिशत बराबर है।
(D) कुल जनसंख्या में किशोरों का अंश 50% से अधिक है।

130. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में विशालतम धार्मिक अल्पसंख्यक समुदाय कौन सा है?
(A) मुस्लिम
(B) ईसाई
(C) सिक्ख
(D) बौद्ध

131. भारत में जनसंख्या वृद्धि की प्रावस्थाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. प्रावस्था 'क' (1901-21) को रुद्ध वृद्धि की प्रावस्था कहा जाता है।

112. भारत में जनसंख्या वृद्धि की विभिन्न प्रावस्थाओं से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:

1. स्वास्थ्य और स्वच्छता में व्यापक सुधारों के कारण मृत्यु दर में गिरावट।
2. ऋणात्मक वृद्धि दर का दर्ज होना।
3. जन्म दर की अधोमुखी प्रवृत्ति के कारण वृद्धि दर का मंद होना।
4. मृत्यु दर में तीव्र ह्रास और उच्च प्रजनन दर के कारण जनसंख्या विस्फोट।

(A) 2, 1, 4, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 3, 4, 1, 2

113. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की कुल जनसंख्या में अश्रमिकों (non-workers) का प्रतिशत लगभग कितना है?

(A) 40%
(B) 60%
(C) 50%
(D) 70%

114. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत में जनसंख्या के वितरण का प्रतिरुप अत्यधिक सम है।
2. उत्तर भारत के मैदानों में जनसंख्या का उच्च घनत्व पाया जाता है।
3. सिंचाई के विकास ने राजस्थान में जनसंख्या बसाव को संभव बनाया है।
4. दिल्ली और मुंबई जैसे नगरीय क्षेत्र प्रवासियों को आकर्षित करते हैं।
5. तटीय मैदानों में प्रारंभ से ही विरल जनसंख्या रही है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?

(A) केवल 1, 3, 5
(B) केवल 2, 3, 4
(C) केवल 1, 2, 4, 5
(D) केवल 2, 3, 4, 5

115. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I (जनगणना वर्ष) को सूची-II (भारत की कुल जनसंख्या - करोड़ में) से सुमेलित कीजिए:

List I: (जनगणना वर्ष)
P. 1901
Q. 1951
R. 2001
S. 2011

List II: (जनसंख्या)
1. 36.1
2. 121.0
3. 23.8
4. 102.8

कूट:
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

116. 'आस्ट्रो-नेसियन' भाषाएँ भारत के किस क्षेत्र में बोली जाती हैं?

(A) मुख्य भारतीय भू-भाग में
(B) लक्षद्वीप में
(C) अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में
(D) भारत के बाहर

117. भारत में सिक्ख जनसंख्या का अधिकांश संकेंद्रण कहाँ है?

(A) महाराष्ट्र, गुजरात और राजस्थान
(B) केरल, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश
(C) पंजाब, हरियाणा और दिल्ली
(D) पश्चिम बंगाल, बिहार और उड़ीसा

118. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): भारत में, पुरुष श्रमिकों की संख्या स्त्री श्रमिकों की संख्या से तीनों सेक्टरों (प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक) में अधिक है।
कारण (R): महिला श्रमिकों की संख्या प्राथमिक सेक्टर में अपेक्षाकृत अधिक है, लेकिन कुल मिलाकर उनकी भागीदारी पुरुषों से कम है।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

119. 2001-2011 के दौरान किस राज्य/केंद्र शासित प्रदेश में दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर में सर्वाधिक गिरावट दर्ज की गई?

(A) आंध्र प्रदेश
(B) उत्तर प्रदेश
(C) पुडुच्चेरी
(D) महाराष्ट्र

120. निम्नलिखित में से कौन-सा एक कारक भारत में जनसंख्या वृद्धि की 'प्रावस्था घ' (1981 के बाद) के दौरान जनसंख्या वृद्धि को मंद करने में सहायक रहा है?

(A) स्त्री शिक्षा में सुधार
(B) मृत्यु दर में वृद्धि
(C) बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ
(D) अंतर्राष्ट्रीय प्रवास में वृद्धि

121. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 2011 में भारत का जनसंख्या घनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग

40. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

List I: (भाषाई परिवार)

P. आस्ट्रिक (निषाद)
Q. द्रविड़
R. चीनी-तिब्बती (किरात)
S. भारतीय-यूरोपीय (आर्य)

List II: (जनसंख्या प्रतिशत)

1. 20%
2. 73%
3. 1.38%
4. 0.85%

कूट:

(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

41. भारत में बोलने वालों के प्रतिशत के अनुसार सबसे बड़ा भाषाई समूह कौन सा है?

(A) द्रविड़
(B) आस्ट्रिक
(C) भारतीय-यूरोपीय (आर्य)
(D) चीनी-तिब्बती

42. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में किस धार्मिक समुदाय की जनसंख्या का प्रतिशत सर्वाधिक है?

(A) हिंदू
(B) मुस्लिम
(C) ईसाई
(D) सिक्ख

43. भारत के धार्मिक संघटन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. हिंदू जनसंख्या देश के 70 से 90 प्रतिशत तक के राज्यों में एक प्रमुख समूह है।
2. विशालतम धार्मिक अल्पसंख्यक, मुस्लिम, जम्मू और कश्मीर में संकेंद्रित हैं।
3. ईसाई जनसंख्या अधिकांशतः ग्रामीण क्षेत्रों में वितरित है।
4. जैन और बौद्ध भारत के सबसे बड़े धार्मिक समूह हैं।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1 और 4
(D) सभी कथन सही हैं

44. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

अभिकथन (A): भू-दृश्य पर धर्मों की औपचारिक अभिव्यक्ति पवित्र संरचनाओं के माध्यम से प्रकट होती है।

कारण (R): मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, मठ और गिरिजाघर क्षेत्र के भू-दृश्य को एक विशेष आयाम प्रदान करते हैं।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

45. भारत में बौद्ध जनसंख्या का सर्वाधिक संकेंद्रण किस राज्य में है?

(A) सिक्किम
(B) अरुणाचल प्रदेश
(C) महाराष्ट्र
(D) बिहार

46. जनगणना की परिभाषा के अनुसार, "मुख्य श्रमिक" कौन है?

(A) जो एक वर्ष में 183 दिनों से कम काम करता है।
(B) जो एक वर्ष में 200 दिन काम करता है।
(C) जो केवल कृषि में काम करता है।
(D) जो एक वर्ष में कम से कम 183 दिन काम करता है।

47. निम्नलिखित कालानुक्रमिक घटनाओं को पहले से बाद के क्रम में व्यवस्थित करें:

1. भारत की पहली संपूर्ण जनगणना
2. ग्रियर्सन का भाषाई सर्वेक्षण आरंभ
3. भारत में जनसंख्या विस्फोट की अवधि का आरंभ
4. राष्ट्रीय युवा नीति का आरंभ

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 2, 3, 1, 4

48. 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में श्रमिकों (मुख्य और सीमांत) का अनुपात क्या है?

(A) 60%
(B) 39.8%
(C) 54.6%
(D) 41.6%

49. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन भारत की श्रमजीवी जनसंख्या के बारे में सही है?

(A) देश की लगभग 60% जनसंख्या सक्रिय मुख्य और सीमांत श्रमिकों की है।
(B) देश में लगभग 60% की विशाल संख्या अश्रमिकों की है।
(C) देश की कुल जनसंख्या में अश्रमिकों का अनुपात लगभग 39.8% है।
(D) मुख्य श्रमिकों और सीमांत श्रमिकों की कार्यक्षमता में कोई अंतर नहीं है।

2. प्रावस्था 'ख' (1921-51) में मृत्यु दर में कमी के कारण वृद्धि दर उच्चतर हुई।
3. प्रावस्था 'ग' (1951-81) को जनसंख्या विस्फोट की अवधि कहा जाता है।
4. प्रावस्था 'घ' (1981 के बाद) में वृद्धि दर धीरे-धीरे घटने लगी।
5. 1911-21 के दशक में धनात्मक वृद्धि दर दर्ज की गई।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3, 4
(B) केवल 2, 3, 4, 5
(C) केवल 1, 3, 5
(D) सभी कथन सही हैं

132. 2011 की जनगणना के अनुसार, निम्नलिखित में से किस एक राज्य में जनसंख्या वृद्धि दर 20% से अधिक नहीं थी?
(A) गुजरात
(B) महाराष्ट्र
(C) राजस्थान
(D) कर्नाटक

133. श्रम की प्रतिभागिता दर की सबसे उपयुक्त परिभाषा क्या है?
(A) केवल मुख्य श्रमिकों का कुल जनसंख्या से अनुपात
(B) कुल जनसंख्या में से अश्रमिकों का प्रतिशत
(C) कुल जनसंख्या में से श्रमिकों का प्रतिशत
(D) 15-59 आयु वर्ग में श्रमिकों का प्रतिशत

134. भारत में, 2001 की तुलना में 2011 में, कृषि सेक्टर में श्रमिकों के अनुपात में क्या प्रवृत्ति देखी गई है?
(A) इसमें वृद्धि हुई है।
(B) 58.2% से घटकर 54.6% हो गया।
(C) 54.6% से बढ़कर 58.2% हो गया।
(D) यह 58.2% पर स्थिर रहा।

135. 'असम-म्यांमारी' शाखा की भाषाएँ भारत के किन राज्यों में प्रमुखता से बोली जाती हैं?
(A) केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु
(B) बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश
(C) राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र
(D) असम, नागालैण्ड, मणिपुर

136. भारत में निम्नलिखित धार्मिक समूहों को उनकी जनसंख्या के आकार (2011) के घटते क्रम में व्यवस्थित करें:
1. ईसाई
2. सिक्ख
3. बौद्ध
4. जैन

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 3, 4, 1, 2

137. 2011 की जनगणना के अनुसार, चार प्रमुख व्यावसायिक संवर्गों में श्रमिकों के प्रतिशत का सही अवरोही क्रम क्या है?
(A) कृषक > अन्य श्रमिक > कृषि मजदूर > घरेलू औद्योगिक श्रमिक
(B) अन्य श्रमिक > कृषक > कृषि मजदूर > घरेलू औद्योगिक श्रमिक
(C) कृषक > कृषि मजदूर > अन्य श्रमिक > घरेलू औद्योगिक श्रमिक
(D) अन्य श्रमिक > कृषि मजदूर > कृषक > घरेलू औद्योगिक श्रमिक

138. भारत में जनसंख्या वृद्धि की प्रावस्था 'ख' (1921-1951) पर किन वैश्विक घटनाओं का विशेष प्रभाव पड़ा?
(A) 1920 के दशक की महान आर्थिक मंदी और द्वितीय विश्व युद्ध
(B) प्रथम विश्व युद्ध
(C) शीत युद्ध
(D) 1970 का तेल संकट

139. भारत में नगरीकरण और आवास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में नगरीय जनसंख्या का अनुपात (31.16%) काफ़ी निम्न है।
2. पिछले दशकों में नगरीय जनसंख्या की वृद्धि दर बहुत तीव्र रही है।
3. बिहार और हिमाचल प्रदेश में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत अधिक है।
4. भारत के सभी केंद्र-शासित प्रदेशों में उच्च नगरीकरण है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1 और 4
(D) सभी कथन सही हैं

140. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): भारत में जनसंख्या के वितरण का प्रतिरूप अत्यधिक असम है।
कारण (R): देश की जनसंख्या और भौतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा ऐतिहासिक कारकों के बीच घनिष्ठ संबंध है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

141. भारत में दशकीय जनसंख्या वृद्धि के संबंध में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक असत्य है?
(A) 1961-71 के दशक में वृद्धि दर 24.80% थी।
(B) 1981-91 के दशक में वृद्धि दर 23.85% थी।

(C) 1941-51 के दशक में वृद्धि दर 21.51% थी।
(D) 1991-2001 के दशक में वृद्धि दर 21.54% थी।

142. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I (भाषाई परिवार) को सूची-II (वाक् क्षेत्र) से सुमेलित कीजिए:
List I: (भाषाई परिवार)
P. आस्ट्रिक
Q. द्रविड़
R. चीनी-तिब्बती
S. भारतीय-आर्य
List II: (वाक् क्षेत्र)
1. बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल
2. जम्मू और कश्मीर, पंजाब, हिमाचल प्रदेश
3. मेघालय, निकोबार द्वीप समूह
4. आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, उड़ीसा
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

143. भारत के किस राज्य/केंद्र शासित प्रदेश में 2011 में जनसंख्या का घनत्व 10,000 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से अधिक था?
(A) दिल्ली
(B) पश्चिम बंगाल
(C) मुंबई
(D) चंडीगढ़

144. भारत में 1951-81 के दौरान जनसंख्या विस्फोट के लिए उत्तरदायी कारकों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मृत्यु दर में तीव्र ह्रास
2. जनसंख्या की उच्च प्रजनन दर
3. केंद्रीकृत नियोजन से आर्थिक सुधार
4. तिब्बतियों, बांग्लादेशियों, नेपालियों का अंतर्राष्ट्रीय प्रवास
5. जन्म दर में तीव्र गिरावट
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 2, 3, 4, 5
(C) केवल 1, 2, 3, 4
(D) सभी कथन सही हैं

145. "कृषि जनसंख्या" के अंतर्गत निम्नलिखित में से किसे सम्मिलित किया जाता है?
(A) केवल कृषक
(B) कृषक, कृषि मजदूर और उनके परिवार के सदस्य
(C) केवल कृषि मजदूर
(D) कृषक और कृषि मजदूर

146. भारत में नगरीकरण के स्तर के अपेक्षाकृत निम्न होने का एक प्रमुख कारण क्या है?
(A) विशाल ग्रामीण जनसंख्या
(B) उद्योगों का अभाव
(C) प्रवास पर प्रतिबंध
(D) उच्च मृत्यु दर

147. निम्नलिखित में से किस भाषाई परिवार का भारत की जनसंख्या में सबसे कम प्रतिशत अंश है?
(A) आस्ट्रिक (निषाद)
(B) द्रविड़
(C) चीनी-तिब्बती (किरात)
(D) भारतीय-यूरोपीय (आर्य)

148. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, 'अन्य श्रमिक' संवर्ग का हिस्सा नहीं है?
(A) व्यापार और वाणिज्य में कार्यरत व्यक्ति
(B) विनिर्माण और मरम्मत में कार्यरत व्यक्ति
(C) सेवाओं में कार्यरत व्यक्ति
(D) घरेलू उद्योगों में लगा श्रमिक

149. भारत में जनसंख्या वृद्धि की किस प्रावस्था में जन्म और मृत्यु दर दोनों ऊँचे थे, जिससे वृद्धि दर निम्न बनी रही?
(A) प्रावस्था ख (1921-51)
(B) प्रावस्था ग (1951-81)
(C) प्रावस्था क (1901-21)
(D) प्रावस्था घ (1981 से अब तक)

150. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?
(A) कायिक घनत्व - कुल जनसंख्या / निवल कृषित क्षेत्र
(B) कृषीय घनत्व - कुल जनसंख्या / कुल कृषित क्षेत्र
(C) मुख्य श्रमिक - एक वर्ष में 183 दिन या अधिक काम
(D) सीमांत श्रमिक - एक वर्ष में 183 दिन से कम काम

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारत में जनसंख्या का वितरण अत्यधिक विषम है, जिसे मुख्य रूप से भौतिक कारकों के एक जटिल समूह द्वारा नियंत्रित किया जाता है। स्थलाकृति, जलवायु और जल की उपलब्धता जनसंख्या के स्थानिक प्रतिरूप को आकार देने वाले तीन प्रमुख कारक हैं। उत्तर भारत के विशाल मैदान, विशेष रूप से गंगा-यमुना दोआब, अपनी समतल भूमि, उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी और बारहमासी नदियों के कारण विश्व के सबसे सघन बसे क्षेत्रों में से हैं। यह कृषि के लिए एक आदर्श वातावरण प्रदान करता है, जिसने ऐतिहासिक रूप से बड़ी आबादी का समर्थन किया है। इसके विपरीत, हिमालय की ऊँची पर्वत श्रृंखलाएँ अपनी दुर्गम स्थलाकृति, कठोर ठंडी जलवायु और कृषि योग्य भूमि की कमी के कारण बहुत कम आबादी वाली हैं। इसी तरह, पश्चिमी राजस्थान का थार मरुस्थल अत्यधिक तापमान, कम वर्षा और जल की कमी के कारण विरल जनसंख्या का क्षेत्र है। दूसरी ओर, तटीय मैदान, जैसे कि मालाबार और कोरोमंडल तट, मध्यम जलवायु, अच्छी वर्षा

और व्यापार तथा मत्स्य पालन के अवसरों के कारण घनी आबादी वाले हैं। मृदा की गुणवत्ता भी एक निर्णायक भूमिका निभाती है; दक्कन के पठार की काली मिट्टी कपास की खेती का समर्थन करती है, जिससे वहाँ मध्यम जनसंख्या घनत्व पाया जाता है, जबकि लेटराइट मिट्टी वाले क्षेत्रों में जनसंख्या कम है। अतः, भारत का जनसंख्या मानचित्र अनिवार्य रूप से उसके भौतिक भूगोल का प्रतिबिंब है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. स्रोत के अनुसार, उत्तर भारत के विशाल मैदानों में उच्च जनसंख्या घनत्व का मुख्य कारण क्या है?
(A) सघन औद्योगिक विकास और व्यापक शहरीकरण की प्रक्रिया
(B) समतल भूमि, उपजाऊ मिट्टी और जल की उपलब्धता
(C) प्रचुर मात्रा में उपलब्ध विभिन्न खनिज संसाधन
(D) प्राचीन ऐतिहासिक किलों और राष्ट्रीय स्मारकों की उपस्थिति

152. हिमालयी क्षेत्रों में जनसंख्या विरल क्यों है?
(A) दुर्गम भू-भाग, कठोर जलवायु और कृषि भूमि की भारी कमी
(B) अत्यंत समृद्ध वन्य जीवन और विशाल राष्ट्रीय उद्यानों की सघन उपस्थिति
(C) केंद्र सरकार द्वारा घोषित पूर्णतः प्रतिबंधित और संरक्षित क्षेत्र होना
(D) क्षेत्र में होने वाली निरंतर और विनाशकारी भूकंपीय गतिविधियों का प्रभाव

153. निम्नलिखित में से कौन सा कारक पश्चिमी राजस्थान की विरल जनसंख्या के लिए प्राथमिक रूप से उत्तरदायी है?
(A) क्षेत्र में व्याप्त औद्योगिक पिछड़ापन
(B) निरंतर बनी रहने वाली राजनीतिक अस्थिरता
(C) अत्यधिक तापमान और जल की भारी कमी
(D) आधुनिक परिवहन सुविधाओं का पूर्ण अभाव

154. तटीय मैदानों में घनी आबादी का कारण, उपजाऊ भूमि के अतिरिक्त, और क्या है?
(A) व्यावसायिक स्तर पर बड़े पैमाने पर पशुपालन
(B) व्यापक स्तर पर होने वाली खनन गतिविधियाँ
(C) सघन और विस्तृत प्राकृतिक जंगलों की उपस्थिति
(D) मध्यम जलवायु और विविध व्यापारिक अवसर

155. अनुच्छेद के अनुसार, भारत का जनसंख्या मानचित्र मुख्य रूप से किसका प्रतिबिंब है?
(A) उसकी राजनीतिक नीतियों का
(B) उसकी आर्थिक योजनाओं का
(C) उसके भौतिक भूगोल का
(D) उसके सामाजिक संरचना का

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत की जनसंख्या वृद्धि की कहानी को जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल के परिप्रेक्ष्य में समझा जा सकता है। यह मॉडल जन्म और मृत्यु दर में समय के साथ होने वाले परिवर्तनों के आधार पर जनसंख्या की गतिशीलता का वर्णन करता है। 1921 से पहले की अवधि को भारत के लिए संक्रमण के पहले चरण के रूप में देखा जा सकता है, जिसमें उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर दोनों की विशेषता थी। इस 'उच्च स्थिर' चरण में, अकाल, महामारी और सीमित चिकित्सा सुविधाओं के कारण मृत्यु दर में उतार-चढ़ाव होता रहता था, जिससे जनसंख्या वृद्धि या तो स्थिर थी या बहुत धीमी थी। 1921 के बाद, भारत दूसरे चरण, 'प्रारंभिक विस्तार' में प्रवेश कर गया। इस अवधि में, स्वास्थ्य और स्वच्छता में सुधार के कारण मृत्यु दर में तेजी से गिरावट आई, लेकिन जन्म दर ऊंची बनी रही। इसके परिणामस्वरूप जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई, जिसे अक्सर 'जनसंख्या विस्फोट' की शुरुआत कहा जाता है। 1981 के बाद से, भारत धीरे-धीरे तीसरे चरण, 'देर से विस्तार' की ओर बढ़ रहा है। इस चरण की विशेषता जन्म दर में गिरावट है, जो बढ़ी हुई महिला साक्षरता, परिवार नियोजन के प्रति बढ़ती जागरूकता और सामाजिक-आर्थिक विकास से प्रेरित है। हालाँकि, मृत्यु दर भी निम्न स्तर पर बनी हुई है, इसलिए जनसंख्या अभी भी बढ़ रही है, लेकिन धीमी गति से। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि भारत के विभिन्न राज्य इस संक्रमण के विभिन्न चरणों में हैं, केरल और तमिलनाडु जैसे राज्य उन्नत चरण में हैं, जबकि बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे राज्य अभी भी संक्रमण के दौर से गुजर रहे हैं।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. 1921 से पहले भारत की जनसंख्या वृद्धि की क्या विशेषता थी?
(A) निम्न जन्म दर और निम्न मृत्यु दर
(B) उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर
(C) उच्च जन्म दर और निम्न मृत्यु दर
(D) निम्न जन्म दर और उच्च मृत्यु दर

157. जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल के अनुसार, 1921 के बाद भारत की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि का मुख्य कारण क्या था?
(A) राष्ट्रीय स्तर पर जन्म दर में होने वाली निरंतर भारी वृद्धि
(B) सीमा पार से होने वाला अन्य देशों का बड़े पैमाने पर आप्रवासन
(C) देश में जन्म और मृत्यु दर दोनों में एक साथ आने वाली भारी गिरावट
(D) मृत्यु दर में तीव्र गिरावट के बावजूद जन्म दर का ऊँचा बना रहना

158. अनुच्छेद में 'देर से विस्तार' (late expanding) चरण का प्रमुख लक्षण क्या बताया गया है?
(A) जन्म दर में गिरावट जबकि मृत्यु दर निम्न बनी हुई है
(B) मृत्यु दर में वृद्धि और जन्म दर में गिरावट
(C) जन्म दर और मृत्यु दर दोनों का उच्च स्तर पर होना
(D) जन्म दर में वृद्धि जबकि मृत्यु दर स्थिर है

तीव्र वृद्धि

(B) व्यापक आर्थिक संवृद्धि के बिना ही रोज़गार के अवसरों में वृद्धि

(C) वैश्विक आर्थिक संकुचन के कारण स्थानीय रोज़गार में आने वाली भारी कमी

(D) निरंतर आर्थिक संवृद्धि के बावजूद रोज़गार सृजन की धीमी गति

174. स्रोत के अनुसार, भारतीय कार्यबल के बारे में कौन सी एक महत्वपूर्ण चिंता बनी हुई है?

(A) कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा अभी भी अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत है

(B) राष्ट्रीय कार्यबल में पायी जाने वाली अत्यधिक उच्च तकनीकी शिक्षा

(C) प्राथमिक क्षेत्र में कार्य करने वाले श्रमिकों की देशव्यापी भारी कमी

(D) सेवा क्षेत्र में उपलब्ध होने वाले रोज़गार के अवसरों का पूर्ण अभाव

175. जीडीपी में सबसे बड़ा योगदान देने के बावजूद, कौन सा क्षेत्र आज भी भारत में सबसे बड़ा एकल नियोक्ता है?

(A) सेवा क्षेत्र

(B) विनिर्माण क्षेत्र

(C) कृषि क्षेत्र

(D) सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र

और अंग्रेजी के साथ-साथ एक क्षेत्रीय भाषा के अध्ययन को बढ़ावा देना था ताकि विभिन्न भाषाई समूहों के बीच संचार को सुगम बनाया जा सके। हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि भाषाई सीमाएँ कठोर नहीं हैं। सीमावर्ती क्षेत्रों में, भाषाएँ अक्सर एक-दूसरे में विलीन हो जाती हैं, जिससे व्यापक द्विभाषिकता और बहुभाषिकता की स्थिति उत्पन्न होती. है। यह भाषाई सह-अस्तित्व भारत की एकता और विविधता के बीच संतुलन का एक जीवंत उदाहरण प्रस्तुत करता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. स्वतंत्रता के बाद भारत में राज्यों का पुनर्गठन मुख्य रुप से किस आधार पर किया गया?
- (A) भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर
- (B) भाषाई आधार पर
- (C) आर्थिक विकास के आधार पर
- (D) धार्मिक जनसंख्या के आधार पर

167. भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची का क्या महत्व है?
- (A) यह देश के सभी प्रमुख सांस्कृतिक त्योहारों को सूचीबद्ध करती है।
- (B) यह 22 भारतीय भाषाओं को आधिकारिक रूप से मान्यता प्रदान करती है।
- (C) यह केंद्र और विभिन्न राज्यों के बीच शक्तियों का विभाजन करती है।
- (D) यह देश की संपूर्ण चुनाव प्रक्रिया के जटिल नियमों को परिभाषित करती है।

168. 'त्रि-भाषा सूत्र' का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
- (A) विभिन्न भाषाई समूहों के मध्य आपसी संचार को सुगम और प्रभावी बनाना
- (B) केवल और केवल अंग्रेजी भाषा के प्रसार को व्यापक रूप से बढ़ावा देना
- (C) संपूर्ण देश में केवल हिंदी को एकमात्र राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करना
- (D) विद्यालयी शिक्षा में संस्कृत के अध्ययन को पूर्णतः अनिवार्य बनाना

169. अनुच्छेद के अनुसार, भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में भाषाई परिदृश्य की क्या विशेषता है?
- (A) वहाँ केवल एक ही भाषा बोली जाती है।
- (B) वहाँ भाषा की सीमाएँ बहुत कठोर और स्पष्ट हैं।
- (C) वहाँ अक्सर द्विभाषिकता और बहुभाषिकता पाई जाती है।
- (D) वहाँ विदेशी भाषाओं का प्रभुत्व है।

170. भाषाई आधार पर राज्यों का पुनर्गठन करने का मुख्य लाभ क्या था?
- (A) इसके परिणामस्वरुप देश की आर्थिक विकास दर में तीव्र वृद्धि हुई।
- (B) इससे भारत की सभी क्षेत्रीय भाषाओं का अस्तित्व पूरी तरह समाप्त हो गया।
- (C) इसके माध्यम से केवल हिंदी भाषा के अखिल भारतीय प्रसार को बल मिला।
- (D) क्षेत्रीय आकांक्षाओं की पूर्ति एवं भाषाई पहचान का सम्मान सुनिश्चित हुआ।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत की श्रमजीवी जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना देश के आर्थिक विकास के स्तर और दिशा का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। परंपरागत रूप से, भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान रही है, और अधिकांश कार्यबल प्राथमिक क्षेत्र (कृषि, वानिकी, मत्स्य पालन और खनन) में लगा हुआ था। हालाँकि, पिछले कुछ दशकों में, अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तन हुए हैं। प्राथमिक क्षेत्र पर कार्यबल की निर्भरता में एक क्रमिक लेकिन निश्चित गिरावट आई है। यह बदलाव द्वितीयक क्षेत्र (विनिर्माण, निर्माण) और विशेष रूप से तृतीयक क्षेत्र (सेवाएँ जैसे व्यापार, परिवहन, संचार, बैंकिंग, शिक्षा) की ओर हुआ है। सेवा क्षेत्र का विस्तार विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है, जो अब सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में सबसे बड़ा योगदानकर्ता है। इस बदलाव के बावजूद, कृषि आज भी सबसे बड़े एकल नियोक्ता के रूप में बनी हुई है, जो एक बड़ी आबादी को आजीविका प्रदान करती है। एक महत्वपूर्ण चिंता 'रोज़गार-विहीन संवृद्धि' (jobless growth) की घटना है, जहाँ अर्थव्यवस्था तो बढ़ती है, लेकिन रोज़गार सृजन की गति धीमी रहती है। इसके अलावा, भारतीय कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा अभी भी अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत है, जहाँ श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा और नियमित आय का अभाव होता है। यह प्रवृत्ति द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों में भी स्पष्ट है, जो श्रम बाजार में व्याप्त असुरक्षा को उजागर करती है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. परंपरागत रुप से, भारत का अधिकांश कार्यबल किस क्षेत्र में लगा हुआ था?
- (A) द्वितीयक क्षेत्र (विनिर्माण)
- (B) तृतीयक क्षेत्र (सेवाएँ)
- (C) प्राथमिक क्षेत्र (कृषि)
- (D) चतुर्थक क्षेत्र (ज्ञान आधारित)

172. पिछले कुछ दशकों में भारतीय कार्यबल की व्यावसायिक संरचना में क्या मुख्य बदलाव देखा गया है?
- (A) कार्यबल की तृतीयक क्षेत्र से प्राथमिक क्षेत्र की ओर वापसी
- (B) कार्यबल की प्राथमिक क्षेत्र से द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों की ओर स्थानांतरण
- (C) द्वितीयक क्षेत्र में कार्यबल का पूर्ण संकुचन
- (D) व्यावसायिक संरचना में कोई बदलाव नहीं हुआ है

173. अनुच्छेद में वर्णित 'रोज़गार-विहीन संवृद्धि' की अवधारणा का क्या तात्पर्य है?
- (A) उच्च आर्थिक संवृद्धि के साथ-साथ रोज़गार में होने वाली

बड़ी संख्या में शारीरिक श्रम और कामगारों की आवश्यकता होती है। गरीब परिवारों के लिए जीवन निर्वाह हेतु परिवार के अधिकांश सदस्यों का किसी न किसी काम में लगे रहना अनिवार्य हो जाता है।

33. (B) 68.8%
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 68.8 प्रतिशत हिस्सा गाँवों में निवास करता है। यह आँकड़ा स्पष्ट करता है कि भारत आज भी मुख्य रुप से एक ग्रामीण प्रधान देश है। ग्रामीण आबादी की यह विशालता देश की अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व और ग्रामीण विकास से जुड़ी नीतियों की आवश्यकता को रेखांकित करती है। क्षेत्रीय स्तर पर राज्यों के बीच ग्रामीण जनसंख्या के प्रतिशत में काफी भिन्नता पाई जाती है।

34. (A) 2, 1, 4, 3
भारत में ग्रामीण जनसंख्या के प्रतिशत के आधार पर राज्यों में काफी अंतर है। हिमाचल प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में ग्रामीण आबादी का अनुपात बहुत अधिक है जो यहाँ की अर्थव्यवस्था की कृषि पर निर्भरता को दर्शाता है। इसके विपरीत गोवा और मिजोरम में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत अपेक्षाकृत काफी कम है। ग्रामीण जनसंख्या का यह वितरण देश के विभिन्न हिस्सों में होने वाले नगरीकरण और औद्योगिक विकास के स्तरों की असमानता को भी प्रदर्शित करता है।

35. (C) पूरे देश में ग्रामीण जनसंख्या का वितरण समान है।
भारत में ग्रामीण जनसंख्या का वितरण पूरे देश में एक समान नहीं है बल्कि इसमें अत्यधिक क्षेत्रीय भिन्नता पाई जाती है। हिमाचल प्रदेश और बिहार में ग्रामीण आबादी का प्रतिशत बहुत ऊँचा है जबकि गोवा और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में यह अपेक्षाकृत कम है। गाँवों का आकार भी अलग-अलग क्षेत्रों में भिन्न होता है जहाँ उत्तर-पूर्वी पहाड़ी राज्यों में बहुत छोटे गाँव मिलते हैं वहीं केरल जैसे राज्यों में गाँवों का आकार अत्यंत विशाल हो सकता है।

36. (D) 31.16%
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में नगरीय जनसंख्या का अनुपात 31.16 प्रतिशत दर्ज किया गया है। यह विकसित देशों की तुलना में कम है परंतु पिछले दशकों में इसमें निरंतर वृद्धि देखी गई है। नगरीकरण की यह प्रक्रिया देश के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले आर्थिक विकास, विनिर्माण क्षेत्र के विस्तार और बेहतर सुविधाओं की उपलब्धता को दर्शाती है। नगरीय जनसंख्या में यह बढ़ोतरी मुख्य रुप से ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर प्रवास का परिणाम है।

37. (B) केवल 1, 2, 3, 4
भारत में नगरीय जनसंख्या का अनुपात अभी भी काफी कम है लेकिन इसकी वृद्धि दर अत्यंत तीव्र रही है। आर्थिक विकास और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं ने शहरों के विस्तार में योगदान दिया है जिससे लगभग सभी राज्यों में नगरीय आबादी बढ़ी है। हालाँकि मध्य और निम्न गंगा के मैदानों में नगरीकरण का स्तर ऐतिहासिक और आर्थिक कारणों से तुलनात्मक रूप से निम्न बना रहा है जो देश के अन्य विकसित क्षेत्रों के विपरीत एक विशिष्ट क्षेत्रीय पैटर्न है।

38. (B) 179 भाषाएँ और 544 बोलियाँ
सर जॉर्ज ग्रियर्सन द्वारा 1903 से 1928 के बीच किए गए 'भारत का भाषाई सर्वेक्षण' के अनुसार उस समय देश में कुल 179 भाषाएँ और 544 बोलियाँ अस्तित्व में थीं। यह व्यापक सर्वेक्षण भारत की असाधारण भाषाई विविधता को उजागर करता है। हालाँकि आधुनिक समय में इनमें से कई बोलियाँ और भाषाएँ लुप्तप्राय हो चुकी हैं या मुख्य भाषाओं में विलीन हो गई हैं परंतु यह विविधता आज भी भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न और गौरवशाली अंग बनी हुई है।

39. (D) 22
भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्तमान में 22 भाषाओं को आधिकारिक रूप से अनुसूचित किया गया है। इन भाषाओं को देश की भाषाई विविधता के संरक्षण और आधिकारिक कार्यों में उपयोग हेतु विशेष मान्यता प्रदान की गई है। अनुसूचित भाषाओं के इस समूह में हिंदी बोलने वालों का प्रतिशत सर्वाधिक है जबकि कश्मीरी, संस्कृत और बोडो जैसी भाषाएँ बोलने वाले लोगों की संख्या तुलनात्मक रूप से काफी कम है जो भाषाई संकेंद्रण की क्षेत्रीय विविधता को दर्शाती है।

40. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
भारत के भाषाई परिवारों का वितरण जनसंख्या के आधार पर अत्यंत भिन्न है। भारतीय-यूरोपीय (आर्य) परिवार सबसे बड़ा समूह है जो लगभग 73% जनसंख्या द्वारा बोला जाता है। द्रविड़ परिवार 20% के साथ दूसरे स्थान पर है। आस्ट्रिक (निषाद) और चीनी-तिब्बती (किरात) परिवार बहुत छोटे भाषाई समूह हैं जिनका हिस्सा क्रमशः 1.38% और 0.85% है। यह वितरण देश के विभिन्न क्षेत्रों में ऐतिहासिक मानव प्रवास और सांस्कृतिक विकास के प्रतिरुपों को प्रभावी ढंग से प्रतिबिंबित करता है।

41. (C) भारतीय-यूरोपीय (आर्य)
भारतीय-यूरोपीय या आर्य भाषा परिवार भारत का सबसे बड़ा भाषाई समूह है जिसे देश की लगभग तीन-चौथाई जनसंख्या द्वारा बोला जाता है। इस परिवार की भाषाएँ मुख्य रूप से उत्तर, पश्चिम और मध्य भारत के विशाल क्षेत्रों में फैली हुई हैं जिनमें हिंदी, बंगाली, मराठी और गुजराती जैसी प्रमुख भाषाएँ सम्मिलित हैं। इस भाषाई समूह की व्यापकता देश के सांस्कृतिक और भाषाई संघटन में इसके ऐतिहासिक एवं जनसांख्यिकीय प्रभुत्व को स्पष्ट रूप से उजागर करती है।

42. (A) हिंदू
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में हिंदू धार्मिक समुदाय की जनसंख्या का प्रतिशत सर्वाधिक है। हिंदू धर्म को मानने वाले लोग देश के अधिकांश राज्यों और केंद्र-शासित प्रदेशों में एक प्रमुख सामाजिक समूह के रूप में विस्तृत हैं। इनकी उपस्थिति देश के सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने का मुख्य आधार है। केवल कुछ सीमावर्ती राज्यों और विशिष्ट क्षेत्रों को छोड़कर हिंदू आबादी पूरे भारत में एक व्यापक और सघन वितरण प्रतिरुप का प्रदर्शन करती है।

ANSWERS

1. (B) भारत
भारत विश्व में चीन के बाद दूसरा सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है। 2011 की जनगणना के अनुसार यहाँ की जनसंख्या अत्यंत विशाल है जो संसाधनों पर भारी दबाव डालती है। देश का विशाल भौगोलिक विस्तार और ऐतिहासिक बसाव इस उच्च जनसंख्या सघनता के लिए उत्तरदायी है। यह जनसांख्यिकीय स्थिति राष्ट्र के नियोजन और विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

2. (A) प्रति दस वर्ष पर होने वाली जनगणना
भारत में जनसंख्या संबंधी विस्तृत और आधिकारिक आँकड़े प्रत्येक दस वर्ष के अंतराल पर होने वाली जनगणना के माध्यम से एकत्र किए जाते हैं। यह प्रक्रिया भारतीय महापंजीयक एवं जनगणना आयुक्त कार्यालय द्वारा संचालित की जाती है। जनगणना से प्राप्त यह डेटा देश की सामाजिक, आर्थिक और जनसांख्यिकीय स्थिति को समझने तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं एवं नीतियों के निर्माण के लिए मुख्य आधार प्रदान करता है।

3. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
भारत के राज्यों को उनकी जनसंख्या के आकार के अनुसार क्रमित किया गया है। उत्तर प्रदेश देश का सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य है जो प्रथम स्थान पर आता है। इसके पश्चात महाराष्ट्र दूसरे, बिहार तीसरे और पश्चिम बंगाल चौथे स्थान पर स्थित है। यह क्रम देश के कुल जनसंख्या वितरण के क्षेत्रीय प्रतिरुप को दर्शाता है जहाँ उत्तरी और मध्यवर्ती राज्यों में जनसंख्या का संकेंद्रण अधिक है।

4. (D) जनसंख्या के वितरण का प्रतिरूप अत्यधिक असम है।
भारत में जनसंख्या का भौगोलिक वितरण अत्यधिक असमान पाया जाता है जहाँ कुछ क्षेत्रों में घनत्व बहुत अधिक है और कुछ लगभग खाली हैं। उत्तर भारत के विशाल मैदानों और तटीय क्षेत्रों में सघन बसाव मिलता है जबकि पर्वतीय और शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्रों में आबादी बहुत विरल है। यह असमानता मुख्य रूप से भौतिक कारकों, जलवायु, जल की उपलब्धता और ऐतिहासिक विकास के कारकों द्वारा निर्धारित होती है।

5. (C) 1872
भारत में पहली जनगणना का आयोजन ब्रिटिश काल के दौरान वर्ष 1872 में किया गया था। हालाँकि यह एक सीमित और आंशिक जनगणना थी जो पूरे देश में एक साथ नहीं हुई थी। इसके पश्चात वर्ष 1881 से देश में नियमित और संपूर्ण दस-वर्षीय जनगणना की परंपरा प्रारंभ हुई। यह ऐतिहासिक आँकड़े भारत की जनसांख्यिकीय प्रवृत्तियों के दीर्घकालिक विश्लेषण के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध होते रहे हैं।

6. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत के उत्तरी मैदानों, डेल्टाओं और तटीय क्षेत्रों में जनसंख्या का उच्च घनत्व पाया जाता है क्योंकि यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियाँ अनुकूल हैं। मैदानी भू-विन्यास कृषि के लिए सुलभ है और प्रचुर जल उपलब्धता एवं अनुकूल जलवायु जीवन निर्वाह को आसान बनाती है। इन भौतिक कारकों के संयुक्त प्रभाव के कारण ये क्षेत्र प्राचीन काल से ही मानव बसाव के लिए सर्वाधिक आकर्षक केंद्र बने रहे हैं।

7. (D) मनोरंजन के साधन
भारत में जनसंख्या के वितरण को मुख्य रूप से भू-विन्यास, जलवायु और जल की उपलब्धता जैसे भौतिक कारक प्रभावित करते हैं। इसके अतिरिक्त सामाजिक-आर्थिक और ऐतिहासिक कारक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। मनोरंजन के साधन व्यक्तिगत प्राथमिकता हो सकते हैं परंतु वे बड़े पैमाने पर जनसंख्या के क्षेत्रीय वितरण या बसाव के प्रतिरूप को निर्धारित करने वाले मूलभूत भौगोलिक कारकों की श्रेणी में नहीं आते हैं।

8. (A) 382
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत का औसत जनसंख्या घनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर दर्ज किया गया था। यह आँकड़ा देश के कुल क्षेत्रफल और कुल जनसंख्या के अनुपात को प्रदर्शित करता है। पिछले दशकों की तुलना में इस घनत्व में निरंतर वृद्धि देखी गई है जो सीमित भूमि संसाधनों पर बढ़ती हुई जनसंख्या के दबाव और मानव बसाव की बढ़ती तीव्रता को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

9. (D) 1, 2, 3 और 4
जनसंख्या घनत्व प्रति इकाई क्षेत्र में व्यक्तियों की संख्या है जो भूमि पर जनसंख्या के दबाव को मापता है। भारत का घनत्व 1951 में 117 से बढ़कर 2011 में 382 हो गया है। राज्यों में अत्यधिक क्षेत्रीय भिन्नता है जहाँ दिल्ली का घनत्व 11,297 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर के साथ सर्वाधिक है जबकि अरुणाचल प्रदेश में यह केवल 17 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर के साथ न्यूनतम स्तर पर है।

10. (A) बिहार
वर्ष 2011 की जनगणना के आँकड़ों के अनुसार बिहार भारत का सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व वाला राज्य बन गया है। यहाँ का घनत्व 1102 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है जो राष्ट्रीय औसत से काफी अधिक है। इसके पूर्व पश्चिम बंगाल इस सूची में शीर्ष पर था। बिहार के मैदानी भूभाग, उपजाऊ मिट्टी और कृषि की प्रधानता ने यहाँ जनसंख्या के इस सघन संकेंद्रण को ऐतिहासिक रूप से समर्थन प्रदान किया है।

159. स्रोत के अनुसार, हाल के दशकों में भारत में जन्म दर में गिरावट का एक कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) सरकारी नौकरियों के उपलब्ध अवसरों में व्यापक कमी
(B) शहरी क्षेत्रों में बढ़ती हुई गंभीर आवास समस्या
(C) महिला साक्षरता में वृद्धि और परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता
(D) कृषि उत्पादन के स्तर में होने वाली निरंतर गिरावट

160. अनुच्छेद से भारत के विभिन्न राज्यों के बारे में क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?
(A) जनसांख्यिकीय संक्रमण का अनुभव पूरे देश में एक समान नहीं है।
(B) सभी राज्य एक ही जनसांख्यिकीय संक्रमण चरण में हैं।
(C) दक्षिणी राज्य उत्तरी राज्यों की तुलना में जनसांख्यिकीय संक्रमण में पीछे हैं।
(D) केवल शहरी क्षेत्रों में ही जनसांख्यिकीय संक्रमण देखा गया है।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारत में नगरीकरण की प्रक्रिया मुख्य रूप से ग्रामीण-नगरीय प्रवास द्वारा संचालित होती है, जिसे 'प्रतिकर्ष' (push) और 'अपकर्ष' (pull) कारकों के संयोजन से समझा जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त प्रतिकर्ष कारक लोगों को गाँवों से बाहर जाने के लिए विवश करते हैं। इनमें कृषि पर बढ़ती निर्भरता, भूमि का विखंडन, मौसमी बेरोज़गारी, गरीबी, और शिक्षा तथा स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव शामिल है। ये कारक ग्रामीण जीवन को कठिन बनाते हैं और लोगों को बेहतर अवसरों की तलाश में शहरों की ओर धकेलते हैं। दूसरी ओर, शहरी क्षेत्रों के अपकर्ष कारक लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इनमें रोज़गार के विविध अवसर, उच्च वेतन, बेहतर शैक्षणिक संस्थान, उन्नत स्वास्थ्य सेवाएँ और एक अधिक आधुनिक जीवन शैली की आकांक्षा शामिल है। महानगर, विशेष रूप से, आर्थिक गतिविधियों के केंद्र के रूप में कार्य करते हैं और सबसे बड़े चुंबक के रूप में उभरते हैं। हालाँकि, यह अनियंत्रित प्रवास गंभीर चुनौतियों को भी जन्म देता है। शहरों में, विशेष रूप से परिधि पर, अवैध बस्तियों और झुग्गी-झोपड़ियों का प्रसार होता है, जहाँ निवासियों को स्वच्छ पेयजल, स्वच्छता और बिजली जैसी बुनियादी सुविधाओं के बिना रहना पड़ता है। इससे शहरी बुनियादी ढाँचे पर अत्यधिक दबाव पड़ता है और सामाजिक तथा पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। अतः नगरीकरण जहाँ एक ओर आर्थिक विकास का सूचक है, वहीं दूसरी ओर यह अनियोजित होने पर गंभीर समस्याएँ पैदा करता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. निम्नलिखित में से कौन सा एक 'अपकर्ष' (pull) कारक है जो ग्रामीण आबादी को शहरों की ओर आकर्षित करता है?
(A) ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त अत्यधिक निर्धनता एवं गरीबी
(B) कृषि योग्य भूमि का निरंतर होने वाला विखंडन
(C) गाँवों में बुनियादी नागरिक सुविधाओं का पूर्ण अभाव
(D) शहरों में उपलब्ध बेहतर रोज़गार के अवसर

162. स्रोत के अनुसार, ग्रामीण क्षेत्रों से प्रवास को बढ़ावा देने वाला एक 'प्रतिकर्ष' (push) कारक क्या है?
(A) शहरों में आधुनिक जीवन शैली
(B) मौसमी बेरोज़गारी और गरीबी
(C) उच्च शिक्षा के अवसर
(D) बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ

163. अनुच्छेद में अनियंत्रित ग्रामीण-नगरीय प्रवास का एक नकारात्मक परिणाम क्या बताया गया है?
(A) ग्रामीण अर्थव्यवस्था का निरंतर होने वाला सुदृढ़ीकरण
(B) कृषि क्षेत्र का होने वाला व्यापक आधुनिकीकरण
(C) शहरी झुग्गी-झोपड़ियों का प्रसार और बुनियादी ढाँचे पर दबाव
(D) ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों का सांस्कृतिक आदान-प्रदान

164. ग्रामीण-नगरीय प्रवास के संदर्भ में 'प्रतिकर्ष कारक' का क्या अर्थ है?
(A) वे कारक जो लोगों को शहरी क्षेत्रों की ओर खींचते हैं।
(B) वे कारक जो लोगों को ग्रामीण क्षेत्रों में रहने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
(C) वे कारक जो शहरी जीवन को कठिन बनाते हैं।
(D) वे कारक जो लोगों को ग्रामीण क्षेत्रों से बाहर जाने के लिए विवश करते हैं।

165. स्रोत का समग्र निष्कर्ष क्या है?
(A) नगरीकरण विकास का सूचक है, परंतु अनियोजित होने पर समस्याएँ उत्पन्न करता है।
(B) नगरीकरण की प्रक्रिया पूरी तरह से एक सकारात्मक आर्थिक विकास है।
(C) अनियंत्रित ग्रामीण-नगरीय प्रवास पर सरकार द्वारा पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए।
(D) वर्तमान समय में भारत में नगरीकरण की कुल दर अत्यंत धीमी है।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारत की भाषाई विविधता इसकी सांस्कृतिक समृद्धि का एक मूलभूत पहलू है। स्वतंत्रता के बाद, राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में इस विविधता को समायोजित करना एक बड़ी चुनौती थी। इसका एक प्रमुख समाधान भाषाई आधार पर राज्यों का पुनर्गठन था। 1956 के राज्य पुनर्गठन अधिनियम ने प्रमुख भाषा समूहों के लिए प्रशासनिक सीमाओं का निर्माण किया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि शिक्षा और प्रशासन स्थानीय भाषा में संचालित हो सकें। यह कदम क्षेत्रीय आकांक्षाओं को पूरा करने और भाषाई पहचान को सम्मान देने में सहायक सिद्ध हुआ। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को 'अनुसूचित भाषाओं' के रूप में मान्यता दी गई है, जो उनके संरक्षण और विकास के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। इसके अतिरिक्त, शिक्षा प्रणाली में 'त्रि-भाषा सूत्र' को लागू करने का प्रयास किया गया, जिसका उद्देश्य हिंदी

22. (B) केरल
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार केरल ने पूरे भारत में सबसे कम दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर दर्ज की है। केरल की यह उपलब्धि वहाँ के उच्च साक्षरता स्तर, विशेषकर महिला शिक्षा, और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का प्रत्यक्ष परिणाम है। सामाजिक विकास के उच्च सूचकांकों के कारण केरल जनसांख्यिकीय संक्रमण के उन्नत चरण में पहुँच चुका है जहाँ जन्म दर को प्रभावी ढंग से नियंत्रित किया गया है।

23. (D) फरवरी 2014
भारत सरकार ने फरवरी 2014 में 'राष्ट्रीय युवा नीति' (NYP-2014) का शुभारंभ किया था। इस नीति को युवाओं की आकांक्षाओं को पूरा करने और उनके समग्र विकास के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करने हेतु तैयार किया गया था। यह नीति युवाओं को राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदार बनाने और उन्हें अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करने के लिए सक्षम बनाने के उद्देश्य से केंद्रित कई रणनीतिक हस्तक्षेपों का प्रस्ताव करती है।

24. (C) केवल 3 और 4
वर्ष 2001-2011 के दौरान भारत के अधिकांश राज्यों में जनसंख्या वृद्धि की दर में गिरावट दर्ज की गई थी। इस अवधि में महाराष्ट्र वह राज्य था जहाँ दशकीय वृद्धि दर में सर्वाधिक महत्वपूर्ण गिरावट देखी गई। इसके विपरीत तमिलनाडु और केंद्र-शासित प्रदेश पुडुच्चेरी जैसे कुछ क्षेत्रों में पिछले दशक की तुलना में वृद्धि दर में मामूली बढ़ोतरी दर्ज की गई जो राष्ट्रीय प्रवृत्तियों से भिन्न एक क्षेत्रीय अपवाद को प्रदर्शित करती है।

25. (C) 15-29 वर्ष
राष्ट्रीय युवा नीति 2014 के अंतर्गत 'युवा' शब्द को 15 से 29 वर्ष के आयु वर्ग के व्यक्तियों के रूप में परिभाषित किया गया है। यह आयु समूह राष्ट्र की कार्यशील जनसंख्या का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है जो आर्थिक विकास और नवाचार में अग्रणी भूमिका निभाता है। इस विशिष्ट परिभाषा का उद्देश्य युवा आबादी के लिए लक्षित कल्याणकारी कार्यक्रमों और कौशल विकास योजनाओं को अधिक प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करना है।

26. (A) 20.9 प्रतिशत
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या में किशोरों (10-19 वर्ष के आयु वर्ग) का हिस्सा लगभग 20.9 प्रतिशत है। यह एक विशाल जनसांख्यिकीय लाभांश है जो भविष्य के लिए अपार संभावनाएँ समेटे हुए है। किशोरों की यह बड़ी संख्या राष्ट्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण है परंतु इनके लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और उचित पोषण सुनिश्चित करना समाज और सरकार के समक्ष एक बड़ी चुनौती भी है।

27. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
भारत की विभिन्न नीतियों के विशिष्ट उद्देश्य हैं जो समाज के विभिन्न वर्गों के उत्थान के लिए केंद्रित हैं। राष्ट्रीय युवा नीति युवाओं की क्षमता निर्माण पर जोर देती है जबकि कौशल विकास नीति व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए रूपरेखा प्रदान करती है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान जेंडर संवेदनशीलता और शिक्षा को बढ़ावा देता है। अंततः जनसंख्या जनगणना प्रत्येक दस वर्ष में महत्वपूर्ण सांख्यिकीय आँकड़े एकत्रित करने का मुख्य साधन है।

28. (B) उच्च साक्षरता दर
भारत में किशोर जनसंख्या के सामने कई सामाजिक और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ हैं जैसे कम उम्र में विवाह, विद्यालय छोड़ना (ड्रॉपआउट) और कुपोषण की समस्या। उच्च साक्षरता दर कोई चुनौती नहीं है बल्कि यह एक सकारात्मक सामाजिक उपलब्धि और लक्ष्य है जिसे प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। शिक्षित किशोर ही राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य और स्वस्थ सामाजिक संरचना का आधार बनते हैं जो अन्य चुनौतियों से लड़ने में सक्षम होते हैं।

29. (C) देश भर में कौशल से संबंधित गतिविधियों के लिए एक रूपरेखा प्रदान करना
भारत सरकार द्वारा 2015 में शुरू की गई 'कौशल विकास तथा उद्यमिता नीति' का मुख्य लक्ष्य पूरे देश में कौशल प्रशिक्षण और उद्यमिता को बढ़ावा देने हेतु एक एकीकृत ढाँचा तैयार करना है। यह नीति युवाओं को रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण प्रदान कर उनकी कार्यक्षमता बढ़ाने और उन्हें स्वरोजगार के प्रति प्रेरित करने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य बदलती वैश्विक आर्थिक आवश्यकताओं के अनुरूप भारतीय कार्यबल को कुशल और प्रतिस्पर्धी बनाना है।

30. (A) केवल 1, 2 और 3
भारत में किशोरों की आबादी में 52.7% लड़के और 47.3% लड़कियाँ हैं जो समाज का एक संवेदनशील वर्ग है। यदि किशोरों को सही मार्गदर्शन और पोषण नहीं मिलता है तो वे कई तरह के जोखिमों के प्रति सुभेद्य हो सकते हैं। राष्ट्रीय युवा नीति का उद्देश्य इसी ऊर्जावान वर्ग को सशक्त बनाकर भारत को वैश्विक स्तर पर उच्च स्थान दिलाना है। किशोरों के सामने कई बड़ी चुनौतियाँ विद्यमान हैं जिन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता।

31. (A) जनसंख्या का घनत्व
जनसंख्या संघटन के अध्ययन के अंतर्गत जनसंख्या की आंतरिक विशेषताओं जैसे आयु, लिंग, साक्षरता, व्यावसायिक संरचना, भाषा और धर्म का विश्लेषण किया जाता है। जनसंख्या का घनत्व प्रति इकाई क्षेत्र में व्यक्तियों की संख्या को दर्शाता है जो वितरण का एक माप है, न कि आंतरिक संघटन का हिस्सा। संघटन के ये विभिन्न तत्व किसी समाज की गुणात्मक विशेषताओं और उसकी विकास क्षमता को समझने के लिए गहराई से विश्लेषित किए जाते हैं।

32. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत जैसे विकासशील देशों में जहाँ आर्थिक विकास का स्तर अपेक्षाकृत कम है वहाँ श्रम की सहभागिता दर प्रायः ऊँची देखी जाती है। इसका मुख्य कारण यह है कि निर्वाह आधारित कृषि और अन्य प्राथमिक आर्थिक क्रियाओं के संपादन के लिए

11. (D) कुल जनसंख्या / निवल कृषित क्षेत्र
कायिक घनत्व किसी देश की कुल जनसंख्या और वहाँ के निवल कृषित क्षेत्र के अनुपात को कहा जाता है। यह मापक कृषि योग्य भूमि पर जनसंख्या के वास्तविक दबाव को समझने में अधिक सटीक होता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जहाँ भूमि संसाधनों की उपलब्धता सीमित है, यह अनुपात संसाधनों के नियोजन और खाद्य सुरक्षा की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय सूचक के रूप में उपयोग किया जाता है।

12. (A) 3, 1, 2, 4
भारत में जनसंख्या वृद्धि की चार विशिष्ट प्रावस्थाएँ देखी गई हैं। सर्वप्रथम 1901-21 तक की अवधि रुद्ध अथवा स्थिर प्रावस्था रही है जिसके बाद 1921-51 तक स्थिर वृद्धि देखी गई। 1951-81 की अवधि को जनसंख्या विस्फोट का काल माना जाता है जबकि 1981 के पश्चात से वर्तमान तक जनसंख्या में घटती प्रवृत्ति के साथ उच्च वृद्धि देखी जा रही है। यह क्रम देश के जनसांख्यिकीय संक्रमण को दर्शाता है।

13. (C) लोगों के अंतर्वर्ती और बहिर्वर्ती संचलन
जनसंख्या वृद्धि के दो मुख्य घटक होते हैं जिनमें से अभिप्रेरित घटक का सीधा संबंध प्रवास से है। यह किसी निश्चित क्षेत्र में लोगों के अंदर आने या बाहर जाने की प्रक्रिया द्वारा जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन को दर्शाता है। जन्म और मृत्यु दर के विपरीत प्रवास सामाजिक-आर्थिक कारकों जैसे रोजगार, शिक्षा और बेहतर सुविधाओं से प्रेरित होता है जो किसी स्थान की जनसंख्या संरचना को तीव्रता से बदल सकता है।

14. (D) 1911-1921
भारत के जनगणना इतिहास में 1911-1921 का दशक एकमात्र ऐसी अवधि है जब जनसंख्या में ऋणात्मक वृद्धि दर दर्ज की गई थी। इस दौरान अकाल, महामारियों जैसे इन्फ्लूएंजा और प्रथम विश्व युद्ध के कारण मृत्यु दर अत्यंत उच्च हो गई थी। इस असामान्य जनसांख्यिकीय घटना के कारण ही वर्ष 1921 को 'महान विभाजक वर्ष' कहा जाता है जिसके बाद से भारत की जनसंख्या में कभी कमी नहीं आई है।

15. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
भारत की जनसांख्यिकीय यात्रा चार मुख्य चरणों में विभाजित है। 1901-21 की अवधि उच्च जन्म-मृत्यु दरों के कारण रुद्ध वृद्धि की थी। 1921-51 के बीच स्वास्थ्य सुधारों से मृत्यु दर कम हुई और स्थिर वृद्धि हुई। 1951-81 का समय तीव्र मृत्यु दर ह्रास के कारण जनसंख्या विस्फोट का था। अंततः 1981 के बाद से जन्म दर में कमी आने लगी जिससे घटती प्रवृत्ति के साथ उच्च वृद्धि दर्ज की गई।

16. (B) स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवाओं में व्यापक सुधार हुआ।
वर्ष 1901 से 1921 के बीच भारत में जनसंख्या वृद्धि दर अत्यंत निम्न थी क्योंकि इस दौरान स्वास्थ्य और चिकित्सा सेवाओं का स्तर अत्यंत निम्न और अपर्याप्त था। अकाल और संक्रामक बीमारियों के कारण मृत्यु दर बहुत ऊँची बनी हुई थी जो जन्म दर के बराबर थी। वास्तव में इसी अवधि के दौरान 1911-21 के दशक में देश ने अपनी एकमात्र ऋणात्मक जनसंख्या वृद्धि दर का अनुभव किया था।

17. (B) 1951-1981
वर्ष 1951 से 1981 की अवधि को भारत में जनसंख्या विस्फोट का युग कहा जाता है। इस दौरान स्वतंत्रता के पश्चात चिकित्सा सुविधाओं में सुधार और संक्रामक रोगों के नियंत्रण से मृत्यु दर में तीव्र गिरावट आई जबकि जन्म दर उच्च बनी रही। साथ ही पड़ोसी देशों से हुए बड़े पैमाने पर प्रवास ने भी इस वृद्धि को और तीव्र कर दिया जिससे देश की कुल जनसंख्या में अभूतपूर्व उछाल देखा गया।

18. (A) $g = ((P_2 - P_1) / P_1) \times 100$
जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर की गणना करने के लिए वर्तमान वर्ष की जनसंख्या और आधार वर्ष की जनसंख्या के अंतर को आधार वर्ष की जनसंख्या से विभाजित करके 100 से गुणा किया जाता है। यह सूत्र जनसंख्या में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन को स्पष्ट करता है। यह सांख्यिकीय माप जनसांख्यिकीय अध्ययन में अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विकास के स्तर और भविष्य की आवश्यकताओं के आकलन में सहायता करती है।

19. (B) केवल 1, 2, 3 और 4
वर्ष 1981 के पश्चात भारत में जनसंख्या वृद्धि की दर ऊँची तो रही परंतु इसमें क्रमिक गिरावट देखी गई है। इस मंद गति का मुख्य कारण अशोधित जन्म दर में आई कमी है जो शिक्षा के प्रसार, विशेषकर स्त्री शिक्षा, और विवाह की औसत आयु में वृद्धि का परिणाम है। इस अवधि में मृत्यु दर में वृद्धि नहीं बल्कि निरंतर गिरावट जारी रही है जो बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं का परिचायक है।

20. (D) 1.64%
वर्ष 2011 की जनगणना के आँकड़ों के अनुसार भारत की औसत वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर 1.64 प्रतिशत दर्ज की गई थी। यह दर पिछले दशकों की तुलना में कम हुई है जो देश में जनसांख्यिकीय स्थिरता की ओर बढ़ते कदम को दर्शाती है। वार्षिक वृद्धि दर का यह आँकड़ा नीति निर्माताओं को भविष्य की सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों और बुनियादी ढाँचे की योजना बनाने में सटीक दिशा-निर्देश प्रदान करने में सहायता करता है।

21. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
वर्ष 1951-81 के दौरान भारत में जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि बहुत उच्च रही क्योंकि मृत्यु दर में भारी गिरावट आई जबकि जन्म दर ऊँची बनी रही। स्वतंत्रता के बाद शुरू की गई पंचवर्षीय योजनाओं और केंद्रीकृत नियोजन ने आर्थिक दशाओं और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार किया जिससे जीवन प्रत्याशा बढ़ी। इन बेहतर जीवन दशाओं और चिकित्सा सुविधाओं के कारण जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई जिसे जनसंख्या विस्फोट के रूप में पहचाना गया।

43. (A) केवल 1, 2 और 3
भारत की धार्मिक संरचना में हिंदू बहुसंख्यक हैं जबकि मुस्लिम सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समूह हैं जिनका संकेंद्रण जम्मू-कश्मीर और कुछ अन्य विशिष्ट क्षेत्रों में अधिक है। ईसाई जनसंख्या मुख्य रूप से ग्रामीण और तटीय क्षेत्रों में वितरित पाई जाती है। इसके विपरीत जैन और बौद्ध धर्म के अनुयायी संख्या में काफी कम हैं और वे देश के छोटे धार्मिक समूहों के अंतर्गत आते हैं। धार्मिक समुदायों का यह वितरण देश की जटिल और विविधतापूर्ण सामाजिक संरचना का परिचायक है।

44. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
भारत में विभिन्न धर्मों की उपस्थिति भू-दृश्य पर उनके पवित्र प्रतीकों और संरचनाओं जैसे मंदिरों, मस्जिदों और गिरजाघरों के माध्यम से स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। ये संरचनाएँ न केवल धार्मिक विश्वासों को प्रकट करती हैं बल्कि वास्तुकला के माध्यम से क्षेत्र को एक विशिष्ट पहचान भी प्रदान करती हैं। हालाँकि ये संरचनाएँ दृश्यमान हैं परंतु वे धर्म के पूर्ण सामाजिक और व्यक्तिगत आयामों की एकमात्र व्याख्या नहीं करती हैं बल्कि केवल भौतिक पक्ष को दर्शाती हैं।

45. (C) महाराष्ट्र
भारत में बौद्ध जनसंख्या का सबसे बड़ा और मुख्य संकेंद्रण महाराष्ट्र राज्य में पाया जाता है। ऐतिहासिक और सामाजिक आंदोलनों के कारण यहाँ बौद्ध धर्म के अनुयायियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। महाराष्ट्र के अतिरिक्त बौद्ध जनसंख्या सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश और लद्दाख जैसे हिमालयी क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण रूप से केंद्रित है। इन क्षेत्रों में बौद्ध संस्कृति और परंपराओं का प्रभाव वहाँ के सामाजिक जीवन और कलात्मक भू-दृश्य पर गहराई से स्पष्ट दिखाई देता है।

46. (D) जो एक वर्ष में कम से कम 183 दिन काम करता है।
भारतीय जनगणना की परिभाषा के अनुसार एक 'मुख्य श्रमिक' वह व्यक्ति होता है जो एक वर्ष के दौरान कम से कम 183 दिन या छह महीने आर्थिक रूप से उत्पादक कार्य में संलग्न रहता है। यह वर्गीकरण श्रम बल की भागीदारी और रोजगार की स्थिरता को मापने के लिए उपयोग किया जाता है। मुख्य श्रमिक देश की अर्थव्यवस्था की मुख्य रीढ़ होते हैं जो नियमित उत्पादन और सेवाओं के माध्यम से राष्ट्रीय आय में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

47. (A) 1, 2, 3, 4
भारत के जनसांख्यिकीय इतिहास में घटनाओं का क्रम अत्यंत महत्वपूर्ण है। सबसे पहले 1881 में संपूर्ण जनगणना हुई जिसके बाद 1903 में ग्रियर्सन का भाषाई सर्वेक्षण शुरू हुआ। जनसंख्या विस्फोट की तीव्र अवधि 1951 में प्रारंभ हुई जो 1981 तक चली। अंततः फरवरी 2014 में राष्ट्रीय युवा नीति की घोषणा की गई। यह ऐतिहासिक विकासक्रम देश की बढ़ती जनसंख्या और उसके प्रबंधन के लिए किए गए प्रशासनिक और नीतिगत प्रयासों के क्रमिक सुधार को स्पष्ट करता है।

48. (B) 39.8%
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या में श्रमिकों, जिनमें मुख्य और सीमांत दोनों शामिल हैं, का अनुपात लगभग 39.8 प्रतिशत है। इसका तात्पर्य यह है कि देश की आबादी का एक बड़ा हिस्सा (लगभग 60%) अश्रमिकों की श्रेणी में आता है जो मुख्य रूप से आश्रित जनसंख्या है। श्रमिकों का यह अपेक्षाकृत कम अनुपात देश के आर्थिक विकास के समक्ष एक बड़ी चुनौती पेश करता है क्योंकि कार्यशील जनसंख्या पर आश्रितों का भार अधिक है।

49. (B) देश में लगभग 60% की विशाल संख्या अश्रमिकों की है।
भारत की श्रमजीवी जनसंख्या के आंकड़ों से पता चलता है कि देश में लगभग 60 प्रतिशत लोग 'अश्रमिक' हैं जो आर्थिक रूप से किसी उत्पादक कार्य में नहीं लगे हैं। इस विशाल समूह में बच्चे, वृद्ध और वे लोग शामिल हैं जो रोजगार की तलाश में हैं या घरेलू कार्यों में संलग्न हैं। यह स्थिति उच्च निर्भरता अनुपात को जन्म देती है जिसका सीधा प्रभाव प्रति व्यक्ति आय और देश के समग्र आर्थिक विकास की गति पर पड़ता है।

50. (A) चार
वर्ष 2011 की जनगणना ने भारत की श्रमजीवी जनसंख्या को कार्य की प्रकृति के आधार पर चार प्रमुख संवर्गों में विभाजित किया है। इन संवर्गों में कृषक, कृषि मज़दूर, घरेलू औद्योगिक श्रमिक और अन्य श्रमिक शामिल हैं। यह वर्गीकरण देश की व्यावसायिक संरचना को समझने में मदद करता है और यह स्पष्ट करता है कि भारत की अधिकांश कार्यशील जनसंख्या आज भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि और उससे संबंधित गतिविधियों पर ही अपनी आजीविका के लिए निर्भर है।

51. (B) P-3, Q-1, R-2
भारत में व्यावसायिक संरचना के अनुसार कृषक और कृषि मजदूरों का हिस्सा सर्वाधिक 54.6% है जो कृषि की प्रधानता को दर्शाता है। अन्य श्रमिक, जिनमें सेवा और विनिर्माण क्षेत्र शामिल हैं, 41.6% का योगदान देते हैं। घरेलू उद्योगों में लगे श्रमिकों का प्रतिशत सबसे कम केवल 3.8% है। यह वितरण स्पष्ट करता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे प्राथमिक सेक्टर से तृतीयक सेक्टर की ओर बढ़ रही है लेकिन कृषि का प्रभाव अभी भी काफी मजबूत बना हुआ है।

52. (D) सेवा क्षेत्र श्रमिक
भारतीय जनगणना ने कार्यशील जनसंख्या को मुख्य रूप से चार वर्गों में वर्गीकृत किया है जिनमें कृषक, कृषि मज़दूर, घरेलू औद्योगिक श्रमिक और अन्य श्रमिक सम्मिलित हैं। 'सेवा क्षेत्र श्रमिक' कोई अलग से परिभाषित संवर्ग नहीं है बल्कि इसे 'अन्य श्रमिक' की व्यापक श्रेणी के अंतर्गत ही रखा जाता है। इस श्रेणी में व्यापार, वाणिज्य, परिवहन और अन्य पेशेवर सेवाओं में लगे सभी व्यक्तियों को शामिल किया जाता है जो प्राथमिक और घरेलू उद्योग के अंतर्गत नहीं आते हैं।

53. (D) सभी कथन सही हैं
भारत की व्यावसायिक संरचना में कृषि की प्रधानता स्पष्ट है जहाँ आधे से अधिक श्रमिक खेती में लगे हैं। घरेलू उद्योगों का

आंकड़े राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक-आर्थिक नीतियों के निर्धारण का मुख्य सांख्यिकीय आधार बनते हैं।

92. (C) P-4, Q-1, R-2, S-3
भारत की दशकीय वृद्धि दर में समय के साथ काफी उतार-चढ़ाव आए हैं। 1921 में एकमात्र ऋणात्मक वृद्धि (-0.31%) दर्ज की गई थी जो अकाल और महामारियों का परिणाम थी। 1951 में यह बढ़कर 13.31% हुई और 1971 में अपने चरम 24.80% पर पहुँच गई। इसके बाद जागरुकता और परिवार नियोजन के प्रभाव से 2011 में यह घटकर 17.64% रह गई। यह सांख्यिकीय प्रवृत्तियाँ देश के जनसांख्यिकीय संक्रमण के विभिन्न चरणों और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार के प्रभाव को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं।

93. (A) केवल 1, 2, 4, 5
भारत की जनसंख्या अत्यंत विशाल है जो कई महाद्वीपों की संयुक्त आबादी से भी अधिक है और यह सीमित संसाधनों पर भारी दबाव डालती है। देश की 76% आबादी केवल उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और बिहार जैसे पाँच बड़े राज्यों में संकेंद्रित है। अरुणाचल प्रदेश जैसे विशाल पहाड़ी राज्यों में विरल आबादी है। भारत की पहली संपूर्ण जनगणना 1881 में हुई थी न कि 1872 में जो केवल एक आंशिक प्रयास था। यह जनसांख्यिकीय असमानता देश के क्षेत्रीय विकास और संसाधन आवंटन की चुनौतियों को स्पष्ट करती है।

94. (D) मृत्यु दर में तीव्र वृद्धि
वर्ष 1981 के बाद भारत में जनसंख्या वृद्धि दर के मंद होने का मुख्य कारण मृत्यु दर में वृद्धि नहीं बल्कि जन्म दर में आई कमी है। मृत्यु दर में तो वास्तव में स्वास्थ्य सेवाओं के सुधार से और गिरावट आई है जो जीवन प्रत्याशा को बढ़ाती है। वृद्धि दर की मंद गति के पीछे स्त्री शिक्षा में सुधार, विवाह की औसत आयु में वृद्धि और अशोधित जन्म दर में आई गिरावट जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक कारक उत्तरदायी रहे हैं जो समाज के आधुनिकता की ओर बढ़ने के सूचक हैं।

95. (A) हिमालय प्रदेश के पर्वतीय राज्यों में घनत्व उच्च है।
भारत में जनसंख्या घनत्व का वितरण भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार अत्यधिक भिन्न है। हिमालय के पर्वतीय राज्यों में दुर्गम भू-भाग और कठोर जलवायु के कारण घनत्व वास्तव में बहुत निम्न है न कि उच्च। इसके विपरीत गंगा के मैदानों में स्थित बिहार और पश्चिम बंगाल तथा दक्षिण भारत के तटीय राज्यों जैसे केरल में घनत्व बहुत अधिक पाया जाता है। दिल्ली जैसे केंद्र-शासित प्रदेश अपने छोटे क्षेत्रफल और उच्च नगरीकरण के कारण देश में सर्वाधिक घनत्व वाले क्षेत्र के रूप में उभरे हैं।

96. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
हाल के वर्षों में भारत के व्यावसायिक ढांचे में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है जहाँ कृषि क्षेत्र में लगे श्रमिकों का अनुपात घटा है। यह परिवर्तन 'सेक्टरीय स्थानांतरण' का परिणाम है जो दर्शाता है कि देश की अर्थव्यवस्था विकसित हो रही है। लोग अब आजीविका के लिए केवल खेती पर निर्भर रहने के बजाय गैर-कृषि कार्यों जैसे विनिर्माण, निर्माण और सेवा क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसरों की ओर बढ़ रहे हैं। यह रुझान औद्योगिक प्रगति और शहरीकरण की तीव्र गति को प्रत्यक्ष रूप से प्रतिबिंबित करता है।

97. (A) उत्तर प्रदेश > महाराष्ट्र > बिहार > पश्चिम बंगाल
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत के सर्वाधिक जनसंख्या वाले राज्यों का सही अवरोही क्रम उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार और पश्चिम बंगाल है। उत्तर प्रदेश देश का सबसे बड़ा राज्य है जिसकी जनसंख्या ब्राजील जैसे बड़े देशों के बराबर है। इसके बाद महाराष्ट्र और बिहार का स्थान आता है। इन राज्यों में विशाल आबादी का संकेंद्रण देश के कुल जनसांख्यिकीय भार को प्रभावित करता है और राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक एवं राजनीतिक नीतियों के निर्धारण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

98. (A) औद्योगिक विकास और नगरीकरण
दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरु जैसे महानगरों में जनसंख्या के अत्यधिक संकेंद्रण का सबसे प्रमुख कारण यहाँ का तीव्र औद्योगिक विकास और व्यापक नगरीकरण है। ये शहर बेहतर रोजगार के अवसर, उच्च शिक्षा और आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान करते हैं जो ग्रामीण क्षेत्रों और छोटे शहरों के प्रवासियों को आकर्षित करते हैं। बुनियादी ढांचे की उपलब्धता और आर्थिक गतिविधियों के केंद्र होने के कारण इन नगरीय क्षेत्रों में आबादी का दबाव निरंतर बढ़ता जा रहा है जो शहरी नियोजन के लिए एक बड़ी चुनौती है।

99. (A) केवल 1, 2 और 3
जनसंख्या वृद्धि दो मुख्य कारकों का परिणाम होती है जिनमें जन्म और मृत्यु दर (प्राकृतिक) तथा प्रवास (अभिप्रेरित) शामिल हैं। भारत में ये दोनों ही कारक सक्रिय भूमिका निभाते हैं। प्राकृतिक वृद्धि जहाँ अशोधित जन्म और मृत्यु दरों के अंतर को दर्शाती है वहीं अभिप्रेरित वृद्धि लोगों के संचलन से प्रभावित होती है। हालाँकि वार्षिक वृद्धि दर में पिछले दशकों में गिरावट देखी गई है परंतु इसे 'नित्य' घटता हुआ कहना गलत है क्योंकि इसमें ऐतिहासिक रूप से कई उतार-चढ़ाव देखे गए हैं।

100. (D) उत्तर-पश्चिमी, उत्तरी और उत्तर-मध्य भाग के राज्य
वर्ष 2001-2011 के दौरान भारत के उत्तर-पश्चिमी, उत्तरी और उत्तर-मध्य भाग के राज्यों जैसे राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और बिहार में जनसंख्या वृद्धि की दर काफी उच्च (20-25%) बनी रही। इसके विपरीत दक्षिणी राज्यों जैसे केरल और तमिलनाडु में यह दर बहुत कम दर्ज की गई। यह क्षेत्रीय भिन्नता शिक्षा के स्तर, स्वास्थ्य सुविधाओं की पहुँच और सामाजिक जागरुकता की कमी के कारण है जो उत्तर भारत के इन राज्यों में जनसांख्यिकीय नियंत्रण की गति को धीमा बनाए हुए है।

101. (C) भू-विन्यास, जल उपलब्धता और जलवायु
भारत में जनसंख्या के वितरण को निर्धारित करने वाले सबसे मूलभूत भौतिक कारक भू-विन्यास, जल की प्रचुरता और अनुकूल जलवायु हैं। मैदानी क्षेत्र जहाँ पानी की उपलब्धता अच्छी है और जलवायु रहने योग्य है वहाँ प्राचीन काल से ही

और स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव था। इस कालखंड में खराब परिवहन तंत्र के कारण भोजन और अन्य आवश्यक वस्तुओं का वितरण सुचारू नहीं था जिससे अकाल और बीमारियाँ व्यापक रूप से फैलीं। शिक्षा की कमी और व्यापक अज्ञानता ने भी मृत्यु दर को बढ़ाने में बड़ी भूमिका निभाई जिससे इस अवधि में जनसंख्या की वृद्धि दर अत्यंत निम्न बनी रही।

64. (B) मृत्यु दर में कमी आई लेकिन जन्म दर ऊँची बनी रही।
वर्ष 1921-1951 की अवधि को 'स्थिर वृद्धि' का काल कहा जाता है क्योंकि इस दौरान स्वास्थ्य और स्वच्छता सुविधाओं में क्रमिक सुधार से मृत्यु दर में गिरावट आने लगी थी। हालाँकि जन्म दर अभी भी काफी उच्च बनी हुई थी जिसके कारण जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि दर में सकारात्मक सुधार हुआ। 1921 के पूर्व की तुलना में यह अवधि अधिक स्थिर और अनुकूल रही जिसने भविष्य में आने वाले जनसंख्या विस्फोट के लिए एक जनसांख्यिकीय आधार तैयार कर दिया था।

65. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
भारत के विभिन्न राज्यों और केंद्र-शासित प्रदेशों में जनसंख्या घनत्व का अत्यधिक अंतर पाया जाता है। 2011 में दिल्ली का घनत्व 11,297 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर के साथ चरम पर था जबकि अरुणाचल प्रदेश मात्र 17 व्यक्तियों के साथ न्यूनतम पर था। राज्यों में बिहार 1102 के साथ सर्वाधिक सघन है और केरल 859 के साथ उच्च घनत्व वाले राज्यों में आता है। यह भिन्नता देश की विविध भौगोलिक और आर्थिक परिस्थितियों को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती है।

66. (A) तमिलनाडु और पुडुच्चेरी
वर्ष 2001-2011 के दशक के दौरान जहाँ भारत के अधिकांश राज्यों में जनसंख्या वृद्धि दर में गिरावट देखी गई वहीं तमिलनाडु और केंद्र-शासित प्रदेश पुडुच्चेरी ने पिछले दशक की तुलना में वृद्धि दर में मामूली बढ़ोतरी दर्ज की। यह अपवादजनक स्थिति इन क्षेत्रों में होने वाले तीव्र आर्थिक विकास, बेहतर औद्योगिक अवसरों और पड़ोसी क्षेत्रों से होने वाले आंतरिक प्रवास के कारण उत्पन्न हुई हो सकती है जो राष्ट्रीय जनसांख्यिकीय प्रवृत्तियों से थोड़ा अलग और विशिष्ट क्षेत्रीय स्वरूप प्रदर्शित करती है।

67. (C) उच्च स्तर का कौशल विकास
किशोर जनसंख्या के समक्ष समाज में कई गंभीर चुनौतियाँ हैं जैसे नशीली दवाओं का दुरुपयोग, कम उम्र में विवाह और उच्च मातृ मृत्यु दर। शारीरिक और मानसिक अपंगता भी एक बड़ी समस्या है। इसके विपरीत 'उच्च स्तर का कौशल विकास' कोई चुनौती नहीं है बल्कि यह एक सकारात्मक लक्ष्य है जिसे राष्ट्रीय नीतियों के माध्यम से प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। कौशल विकास किशोरों को सशक्त बनाने और उनकी ऊर्जा को राष्ट्र निर्माण की दिशा में मोड़ने का मुख्य साधन है।

68. (A) केवल 1, 2, 4
भारत में निवास के आधार पर जनसंख्या का संघटन अत्यंत महत्वपूर्ण है जहाँ 2011 में लगभग 68.8% लोग गाँवों में निवास करते थे। दादरा और नगर हवेली को छोड़कर अधिकांश केंद्र-शासित प्रदेशों में नगरीकरण उच्च है और ग्रामीण आबादी कम है। इसके विपरीत गोवा और मिज़ोरम जैसे राज्यों में नगरीय जनसंख्या का अनुपात अधिक है न कि ग्रामीण का। पिछले दशकों में भारत में नगरीय जनसंख्या का अनुपात निरंतर बढ़ा है जो आर्थिक विकास और प्रवास को दर्शाता है।

69. (C) देश में भाषाई प्रदेशों की सीमाएँ पूर्णतः सुनिश्चित और स्पष्ट हैं।
भारत की भाषाई विविधता के संबंध में यह कहना गलत है कि भाषाई प्रदेशों की सीमाएँ पूरी तरह से स्पष्ट और सुनिश्चित हैं। वास्तव में भाषाई क्षेत्र आपस में विलय हो जाते हैं और सीमावर्ती क्षेत्रों में दो या अधिक भाषाओं का मिश्रण सामान्य रूप से पाया जाता है। इसके विपरीत अन्य कथन सही हैं जैसे हिंदी सर्वाधिक बोली जाने वाली अनुसूचित भाषा है और संस्कृत व बोडो जैसी भाषाओं को बोलने वाले लोगों का प्रतिशत देश में सबसे कम है।

70. (C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
भारत में धार्मिक समुदायों का स्थानिक वितरण अत्यंत असमान है जो देश की विविधता को दर्शाता है। कुछ राज्यों में एक विशेष धर्म की संख्यात्मक प्रधानता बहुत अधिक है जैसे पंजाब में सिख और लक्षद्वीप में मुस्लिम आबादी। इसके विपरीत कुछ क्षेत्रों में उन्हीं समुदायों का प्रतिनिधित्व नगण्य हो सकता है। इसलिए यह तर्क देना कि धार्मिक समुदायों का वितरण पूरे देश में समान है पूर्णतः गलत और तथ्यों के विपरीत है क्योंकि यह वितरण ऐतिहासिक और सामाजिक कारकों से प्रभावित है।

71. (D) राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्र
भारत में ईसाई जनसंख्या का मुख्य संकेंद्रण गोवा, केरल और उत्तर-पूर्वी पहाड़ी राज्यों जैसे मेघालय, मिजोरम और नागालैंड में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त छोटानागपुर क्षेत्र के आदिवासी इलाकों में भी ईसाई आबादी महत्वपूर्ण संख्या में निवास करती है। राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों में ईसाई समुदाय की उपस्थिति बहुत कम या नगण्य है क्योंकि वहाँ का जनसांख्यिकीय ढाँचा ऐतिहासिक रूप से अलग रहा है। ईसाई धर्म का प्रसार मुख्य रूप से तटीय और आदिवासी क्षेत्रों में अधिक हुआ है।

72. (A) राजस्थान के नगरीय क्षेत्र, गुजरात और महाराष्ट्र
भारत में जैन समुदाय के लोग मुख्य रूप से राजस्थान के शहरी क्षेत्रों, गुजरात और महाराष्ट्र के औद्योगिक एवं व्यापारिक केंद्रों में संकेंद्रित हैं। जैन धर्म के अनुयायी परंपरागत रूप से व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियों में अग्रणी रहे हैं जिसके कारण उनका बसाव बड़े शहरों और विकसित आर्थिक क्षेत्रों में अधिक देखा जाता है। हालांकि वे संख्या में कम हैं परंतु देश की आर्थिक और सांस्कृतिक विरासत में उनका योगदान अत्यंत प्रभावशाली और महत्वपूर्ण रहा है जो उनके भौगोलिक वितरण से भी स्पष्ट होता है।

हिस्सा बहुत छोटा है जबकि अन्य सेवाओं का क्षेत्र बढ़ रहा है। लैंगिक आधार पर देखें तो सभी क्षेत्रों में पुरुषों की भागीदारी महिलाओं से अधिक है लेकिन प्राथमिक सेक्टर में महिलाओं का अनुपात अन्य क्षेत्रों की तुलना में बेहतर है। यह आंकड़े देश में कार्यबल के वितरण और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों की एक व्यापक और सटीक तस्वीर प्रस्तुत करते हैं।

54. (B) इसमें उतार (गिरावट) दिखाई दिया है।
वर्ष 2001 और 2011 के बीच भारत के व्यावसायिक ढांचे में एक महत्वपूर्ण बदलाव देखा गया है जहाँ कृषि क्षेत्र पर निर्भर श्रमिकों के अनुपात में गिरावट आई है। यह अनुपात 58.2 प्रतिशत से घटकर 54.6 प्रतिशत हो गया है। यह गिरावट देश की अर्थव्यवस्था में 'सेक्टरीय स्थानांतरण' को प्रदर्शित करती है जहाँ लोग खेती छोड़कर गैर-कृषि कार्यों जैसे विनिर्माण, निर्माण और सेवा क्षेत्रों की ओर रोजगार के लिए बढ़ रहे हैं जो विकास का एक सूचक है।

55. (D) जेंडर के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देना
"बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" अभियान का मुख्य उद्देश्य समाज में जेंडर आधारित भेदभाव को समाप्त करना और बालिकाओं के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाना है। यह कार्यक्रम घटते लिंगानुपात को रोकने और लड़कियों की शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा शुरू किया गया एक व्यापक सामाजिक सुधार प्रयास है। इसका लक्ष्य महिलाओं के अधिकारों का संरक्षण करना और उन्हें समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाना है ताकि देश का संतुलित और न्यायसंगत सामाजिक-आर्थिक विकास सुनिश्चित हो सके।

56. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
हाल के दशकों में भारत में द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों में श्रमिकों की सहभागिता दर में वृद्धि हुई है जो आर्थिक प्रगति का संकेत है। यह परिवर्तन दर्शाता है कि अब लोग केवल कृषि और संबंधित प्राथमिक कार्यों पर ही निर्भर नहीं हैं बल्कि वे गैर-कृषि आधारित व्यवसायों जैसे उद्योगों और सेवाओं की ओर बढ़ रहे हैं। यह 'सेक्टरीय स्थानांतरण' देश के आधुनिकीकरण और व्यावसायिक विविधीकरण की प्रक्रिया को पुष्ट करता है जो विकसित होती अर्थव्यवस्था का लक्षण है।

57. (C) हिमाचल प्रदेश और नागालैंड
हिमाचल प्रदेश और नागालैंड जैसे पहाड़ी राज्यों में कृषकों की संख्या का अनुपात बहुत अधिक पाया जाता है। इन राज्यों की भौगोलिक परिस्थितियों और औद्योगिक विकास के अभाव के कारण यहाँ की अधिकांश जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए मुख्य रूप से खेती पर ही निर्भर है। मैदानी भागों और विकसित क्षेत्रों की तुलना में इन राज्यों में वैकल्पिक रोजगार के अवसरों की कमी और परंपरागत कृषि पद्धतियों का प्रचलन इस उच्च कृषि निर्भरता के प्रमुख उत्तरदायी कारक माने जाते हैं।

58. (A) भारतीय-आर्य
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारतीय-आर्य (Indo-Aryan) भाषा परिवार भारत का विशालतम भाषाई समूह है। इस परिवार की भाषाएँ देश की लगभग 73 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या द्वारा बोली जाती हैं जो मुख्य रूप से उत्तर और मध्य भारत में केंद्रित हैं। द्रविड़ भाषा परिवार दूसरे स्थान पर आता है। भाषाई परिवारों का यह विशाल अंतर भारत के ऐतिहासिक मानव प्रवास और विभिन्न क्षेत्रों में विकसित हुई भाषाई संस्कृतियों के व्यापक प्रभाव को स्पष्ट रूप से परिलक्षित करता है।

59. (A) केवल 1, 2 और 4
जनसंख्या के वितरण को कई कारक प्रभावित करते हैं। राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में सिंचाई सुविधाओं के विस्तार ने और झारखंड जैसे क्षेत्रों में खनिज संसाधनों की उपलब्धता ने आबादी के जमाव को बढ़ाया है। इसी प्रकार औद्योगीकरण और शहरीकरण भी लोगों को आकर्षित करते हैं। परिवहन जाल का विकास भी जनसंख्या वितरण पर गहरा प्रभाव डालता है क्योंकि यह सुगमता प्रदान करता है। इसलिए यह कहना कि परिवहन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है पूर्णतः गलत और अतार्किक है।

60. (B) गोआ
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार गोवा भारत का सर्वाधिक नगरीकृत राज्य है जहाँ की लगभग 62 प्रतिशत जनसंख्या शहरों में निवास करती है। गोवा की यह उच्च नगरीय दर वहाँ के छोटे भौगोलिक आकार, पर्यटन उद्योग के विकास और बेहतर बुनियादी सुविधाओं के कारण है। तमिलनाडु और महाराष्ट्र जैसे अन्य बड़े राज्यों में भी नगरीकरण का स्तर काफी ऊँचा है परंतु गोवा प्रतिशत के मामले में इन सभी से आगे है जो एक आधुनिक और विकसित सामाजिक संरचना का प्रदर्शन करता है।

61. (C) कुल कृषि जनसंख्या / निवल कृषित क्षेत्र
कृषीय घनत्व को कुल कृषि जनसंख्या और निवल कृषित क्षेत्र के अनुपात के रूप में परिभाषित किया जाता है। यहाँ कृषि जनसंख्या में कृषक, कृषि मज़दूर और उनके परिवार के आश्रित सदस्य शामिल होते हैं। यह घनत्व किसी विशेष क्षेत्र की कृषि भूमि पर निर्भर लोगों के वास्तविक बोझ को समझने में मदद करता है। यह माप भूमि की वहन क्षमता और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के दबाव का आकलन करने के लिए अर्थशास्त्रियों और भूगोलवेत्ताओं हेतु अत्यंत उपयोगी होती है।

62. (B) 1, 2, 3, 4
भारत की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर में 1971 के बाद से निरंतर गिरावट देखी गई है। 1971 में यह दर अपने उच्चतम स्तर 24.80% पर थी जिसके बाद 1981 में 23.85%, 2001 में 21.54% और 2011 में घटकर 17.64% रह गई। यह घटता हुआ क्रम देश में परिवार नियोजन के बढ़ते प्रभाव, साक्षरता में वृद्धि और जनसांख्यिकीय संक्रमण के तीसरे चरण की ओर बढ़ते कदम को दर्शाता है जो एक सकारात्मक विकास का संकेत माना जाता है।

63. (A) आधारभूत आवश्यकताओं का अपर्याप्त वितरण
वर्ष 1901-1921 की अवधि के दौरान भारत में जन्म और मृत्यु दर दोनों बहुत उच्च होने का मुख्य कारण आधारभूत आवश्यकताओं

जैविक रूप से समाज स्त्री, पुरुष और ट्रांसजेंडर में विभाजित है लेकिन सामाजिक पूर्वाग्रह और भेदभाव इन श्रेणियों को असमानता का आधार बना देते हैं। जब तक समाज का हर वर्ग विकास की प्रक्रिया में समान रूप से भागीदार नहीं होगा तब तक न्यायपूर्ण प्रगति संभव नहीं है। अतः जेंडर संवेदनशीलता और समावेशी विकास एक सभ्य समाज की अनिवार्य आवश्यकता है।

83. (C) सेमेटिक
भारतीय भाषाओं को मुख्य रूप से चार बड़े परिवारों में वर्गीकृत किया गया है जिनमें द्रविड़, आस्ट्रिक, चीनी-तिब्बती और भारतीय-यूरोपीय (आर्य) शामिल हैं। 'सेमेटिक' भाषा परिवार भारत का मूल भाषाई परिवार नहीं है बल्कि यह मुख्य रूप से मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका के क्षेत्रों से संबंधित है। भारत की भाषाई विविधता इन्हीं चार प्रमुख समूहों के इर्द-गिर्द बुनी गई है जो देश के विभिन्न कोनों में सदियों से विकसित हुई भाषाओं और बोलियों के समृद्ध इतिहास को पूरी तरह से समाहित करते हैं।

84. (D) जम्मू और कश्मीर, पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार
भारतीय-यूरोपीय या आर्य भाषा परिवार का मुख्य वाक् क्षेत्र उत्तर और पश्चिम भारत के विशाल मैदानों और पहाड़ी क्षेत्रों में विस्तृत है। इसमें जम्मू और कश्मीर, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार और बंगाल जैसे राज्य शामिल हैं। इस परिवार की भाषाएँ जैसे हिंदी, पंजाबी और कश्मीरी इन क्षेत्रों की मुख्य पहचान हैं। यह भाषाई समूह देश की बहुसंख्यक आबादी का प्रतिनिधित्व करता है और भारत के सांस्कृतिक एवं राजनीतिक इतिहास में इसकी भूमिका अत्यंत प्रभावशाली और केंद्रीय रही है।

85. (A) केवल 1, 2 और 3
द्रविड़ भाषाएँ दक्षिण भारत में और आस्ट्रिक भाषाएँ मध्य एवं पूर्वी भारत के जनजातीय क्षेत्रों में प्रचलित हैं। चीनी-तिब्बती परिवार की शाखाएँ हिमालयी क्षेत्रों और उत्तर-पूर्वी राज्यों में बोली जाती हैं। जहाँ तक 'दरदी' शाखा का प्रश्न है यह मुख्य रूप से जम्मू और कश्मीर के सीमावर्ती क्षेत्रों में बोली जाती है जो भारत के भीतर ही स्थित है। अतः यह कहना कि यह केवल भारत के बाहर बोली जाती है भौगोलिक रूप से सही नहीं है क्योंकि यह भारतीय भाषाई विविधता का हिस्सा है।

86. (B) वर्तमान वार्षिक वृद्धि दर पर
किसी भी स्थान की जनसंख्या के दुगुना होने का समय मुख्य रूप से उसकी वर्तमान वार्षिक वृद्धि दर पर निर्भर करता है। यह एक सांख्यिकीय प्रक्षेपण है जो यह बताता है कि यदि वर्तमान वृद्धि की गति बनी रहती है तो कितने वर्षों में आबादी दोगुनी हो जाएगी। वृद्धि दर जितनी अधिक होगी जनसंख्या के दोगुने होने की अवधि उतनी ही कम होगी। यह सूचक नीति निर्माताओं को भविष्य की भोजन, आवास और बुनियादी ढाँचे की बढ़ती माँगों का पूर्वानुमान लगाने में सहायता करता है।

87. (D) प्रावस्था घ : 1981 के पश्चात्
भारत की जनसांख्यिकीय यात्रा के चार चरणों में प्रावस्था 'घ' 1981 से अब तक की अवधि को दर्शाती है। इस चरण की मुख्य विशेषता यह है कि यद्यपि जनसंख्या का आकार बढ़ रहा है परंतु वृद्धि की वार्षिक दर में धीरे-धीरे गिरावट आ रही है। यह गिरावट जन्म दर में आई कमी का परिणाम है जो शिक्षा और जागरुकता के प्रभाव को दर्शाती है। अन्य विकल्पों में दी गई अवधियाँ और उनके नाम गलत सुमेलित हैं जो ऐतिहासिक जनगणना अभिलेखों के तथ्यों के अनुरुप नहीं हैं।

88. (A) 3, 4, 1, 2
भारत के जनसांख्यिकीय और विकास संबंधी इतिहास में घटनाओं का सही क्रम अत्यंत महत्वपूर्ण है। सबसे पहले 1872 में पहली जनगणना हुई जिसके बाद 1881 में प्रथम संपूर्ण जनगणना संपन्न हुई। इसके पश्चात स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1956 में दूसरी पंचवर्षीय योजना आरंभ हुई जिसने विकास को गति दी। अंततः 1981 में जनसंख्या विस्फोट की तीव्र अवधि का समापन हुआ और वृद्धि दर मंद होने लगी। यह कालानुक्रमिक विकास भारत के जनसांख्यिकीय संक्रमण के विभिन्न पड़ावों को सटीक रूप से दर्शाता है।

89. (C) बिहार
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार बिहार उन राज्यों में से एक है जहाँ कृषि मजदूरों की संख्या बहुत अधिक दर्ज की गई है। बिहार की ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कृषि पर अत्यधिक निर्भरता के कारण बड़ी संख्या में भूमिहीन श्रमिक खेती में मजदूरी कर अपनी जीविका चलाते हैं। इसके विपरीत हिमाचल प्रदेश और नागालैंड जैसे राज्यों में कृषकों (जिनके पास अपनी जमीन है) का अनुपात अधिक है। यह अंतर विभिन्न राज्यों की भूमि स्वामित्व संरचना और आर्थिक विकास के स्तरों की भिन्नता को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

90. (A) अन्य सेवाओं (तृतीयक सेक्टर) में
दिल्ली, चंडीगढ़ और पुडुच्चेरी जैसे अत्यधिक नगरीकृत और विकसित क्षेत्रों में श्रमिकों का एक बहुत बड़ा हिस्सा 'अन्य सेवाओं' या तृतीयक सेक्टर में कार्यरत है। इन क्षेत्रों में कृषि योग्य भूमि की कमी और व्यावसायिक गतिविधियों, प्रशासन, व्यापार एवं सूचना प्रौद्योगिकी की प्रधानता के कारण लोग मुख्य रूप से सेवा क्षेत्र पर निर्भर हैं। यहाँ की अर्थव्यवस्था विनिर्माण और कृषि के बजाय सेवाओं द्वारा संचालित होती है जो उच्च नगरीकरण और आधुनिक आर्थिक ढांचे की प्रमुख विशेषता के रूप में पहचानी जाती है।

91. (D) 121.0 करोड़
वर्ष 2011 की जनगणना के आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या 121.0 करोड़ दर्ज की गई थी। यह विशाल संख्या भारत को विश्व का दूसरा सबसे बड़ा आबादी वाला देश बनाती है। 2001 की तुलना में इसमें 18 करोड़ से अधिक की वृद्धि हुई थी। जनसंख्या का यह विशाल आकार संसाधनों के प्रबंधन और विकास योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए एक निरंतर चुनौती प्रस्तुत करता है। जनगणना के ये

विश्वसनीय जनसांख्यिकीय डेटाबेस तैयार किया है जो आज भी देश की योजना प्रक्रिया का आधार बना हुआ है।

111. (A) अरुणाचल प्रदेश
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार अरुणाचल प्रदेश भारत का सबसे कम जनसंख्या घनत्व वाला राज्य है जहाँ मात्र 17 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर निवास करते हैं। यहाँ का विषम पर्वतीय धरातल, सघन वन क्षेत्र और प्रतिकूल जलवायु बड़े पैमाने पर मानव बसाव के लिए उपयुक्त नहीं है। सिक्किम, मिजोरम और नागालैंड जैसे अन्य पहाड़ी राज्यों में भी घनत्व कम है लेकिन वे अरुणाचल प्रदेश की तुलना में अधिक सघन हैं। यह निम्न घनत्व संसाधनों की उपलब्धता और पहुँच की भौगोलिक चुनौतियों को प्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित करता है।

112. (A) 2, 1, 4, 3
भारत में जनसांख्यिकीय परिवर्तनों का एक निश्चित ऐतिहासिक क्रम रहा है। सर्वप्रथम 1911-21 के दौरान अकाल और बीमारी से ऋणात्मक वृद्धि दर देखी गई। इसके बाद 1921-51 में स्वास्थ्य सुधारों से मृत्यु दर कम हुई। 1951-81 के दौरान स्वास्थ्य सेवाओं के और विस्तार तथा उच्च प्रजनन दर से जनसंख्या विस्फोट की स्थिति पैदा हुई। अंततः 1981 के बाद जागरूकता और शिक्षा के कारण जन्म दर में कमी आई जिससे वृद्धि की गति मंद होने लगी। यह क्रम देश के सामाजिक-आर्थिक विकास के विभिन्न चरणों को प्रतिबिंबित करता है।

113. (B) 60%
वर्ष 2011 की जनगणना के आँकड़े बताते हैं कि भारत की कुल आबादी का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा 'अश्रमिक' है। यह एक बहुत बड़ी संख्या है जो आर्थिक रूप से कार्यशील जनसंख्या पर निर्भर है। इस श्रेणी में मुख्य रूप से बच्चे, विद्यार्थी, गृहणियाँ और वृद्ध शामिल होते हैं जो प्रत्यक्ष रूप से उत्पादक आर्थिक गतिविधियों में संलग्न नहीं हैं। उच्च अश्रमिक अनुपात देश के आर्थिक संसाधनों पर दबाव बढ़ाता है और रोजगार सृजन की गंभीर आवश्यकता की ओर नीति निर्माताओं का ध्यान आकर्षित करता है।

114. (B) केवल 2, 3, 4
भारत में जनसंख्या का वितरण अत्यंत असमान है जहाँ उत्तरी मैदानों और तटीय क्षेत्रों में सघन आबादी पाई जाती है। राजस्थान जैसे शुष्क क्षेत्रों में सिंचाई के विकास ने नए बसाव क्षेत्रों को जन्म दिया है जिससे वहाँ जनसंख्या घनत्व बढ़ा है। इसी प्रकार दिल्ली और मुंबई जैसे महानगर अपने औद्योगिक और आर्थिक अवसरों के कारण दूर-दराज के प्रवासियों को आकर्षित करते हैं। इसके विपरीत पर्वतीय और विषम भौगोलिक क्षेत्रों में हमेशा से ही विरल जनसंख्या रही है जो भौतिक कारकों के प्रभाव को स्पष्ट करती है।

115. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
भारत की जनसंख्या में पिछले 110 वर्षों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। 1901 में देश की आबादी मात्र 23.8 करोड़ थी जो 1951 तक बढ़कर 36.1 करोड़ हो गई। स्वतंत्रता के बाद विकास की गति तेज हुई और 2001 में यह 100 करोड़ का आंकड़ा पार कर 102.8 करोड़ पर पहुँच गई। अंततः 2011 में यह विशाल होकर 121.0 करोड़ दर्ज की गई। जनसंख्या की यह क्रमिक वृद्धि देश के बढ़ते जनसांख्यिकीय भार और उसके अनुरूप संसाधनों के प्रबंधन की आवश्यकता को स्पष्ट रूप से उजागर करती है।

116. (D) भारत के बाहर
'आस्ट्रो-नेसियन' भाषा परिवार मुख्य रूप से दक्षिण-पूर्व एशिया और प्रशांत महासागर के द्वीपीय क्षेत्रों से संबंधित है और यह भारत के मुख्य भाषाई समूहों का हिस्सा नहीं है। भारत के प्रमुख भाषाई परिवारों में आस्ट्रिक, द्रविड़, चीनी-तिब्बती और भारतीय-आर्य शामिल हैं। भारत की भाषाई विविधता इन्हीं चार परिवारों के भीतर समाहित है जो देश के विभिन्न क्षेत्रों में सदियों के सांस्कृतिक मेलजोल और प्रवास के परिणामस्वरूप विकसित हुई हैं। 'आस्ट्रो-नेसियन' का उल्लेख भारतीय संदर्भ में एक बाहरी भाषाई प्रभाव के रूप में ही किया जाता है।

117. (C) पंजाब, हरियाणा और दिल्ली
भारत में सिख समुदाय का सर्वाधिक सांद्रण देश के उत्तर-पश्चिमी भागों विशेषकर पंजाब, हरियाणा और दिल्ली में पाया जाता है। पंजाब इस धर्म का मुख्य केंद्र और जन्मस्थली है जहाँ सिख जनसंख्या का बहुमत है। अपनी उद्यमिता और कृषि कौशल के लिए पहचाना जाने वाला यह समुदाय इन क्षेत्रों की आर्थिक और सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। पंजाब के पड़ोसी राज्यों और राजधानी क्षेत्र दिल्ली में भी इनकी महत्वपूर्ण उपस्थिति भारतीय सामाजिक विविधता में उनके प्रभावशाली योगदान को प्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित करती है।

118. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
भारत के श्रम बाजार में पुरुष श्रमिकों की संख्या तीनों आर्थिक क्षेत्रों में महिलाओं की तुलना में काफी अधिक है। यद्यपि महिलाएँ कृषि जैसे प्राथमिक क्षेत्र में पुरुषों की अपेक्षा आनुपातिक रूप से अधिक सक्रिय हैं परंतु कुल कार्यबल में उनकी संख्या अभी भी काफी कम है। यह लैंगिक अंतर मुख्य रूप से सामाजिक संरचना, घरेलू जिम्मेदारियों और रोजगार के अवसरों की असमान पहुँच के कारण है। महिला सहभागिता का प्राथमिक क्षेत्र में अधिक होना कुल कार्यबल में उनकी कम संख्या का कारण नहीं बल्कि उनकी वर्तमान रोजगार स्थिति का एक लक्षण मात्र है।

119. (D) महाराष्ट्र
वर्ष 2001-2011 के दशक के दौरान महाराष्ट्र वह प्रमुख राज्य था जिसने अपनी दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर में सबसे अधिक गिरावट दर्ज की। यह उपलब्धि राज्य में बढ़ते नगरीकरण, उच्च शिक्षा स्तर और परिवार कल्याण कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन का परिणाम है। महाराष्ट्र जैसे विशाल राज्य में वृद्धि दर का इस प्रकार कम होना राष्ट्रीय स्तर पर जनसंख्या स्थिरता के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में एक बहुत बड़ा और सकारात्मक कदम माना जाता है जो अन्य बड़े राज्यों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करता है।

सघन आबादी बसी हुई है। इसके विपरीत ऊँचे पहाड़ों, सूखे मरुस्थलों और अत्यधिक विषम जलवायु वाले क्षेत्रों में जीवन कठिन होने के कारण जनसंख्या बहुत विरल पाई जाती है। ये भौतिक कारक ही कृषि और अन्य आर्थिक गतिविधियों की आधारशिला तैयार करते हैं जो बसाव को प्रभावित करती हैं।

102. (B) P-3, Q-4, R-2, S-1
भारत की भाषाई उप-परिवारों और उनकी शाखाओं का मिलान देश की भाषाई जटिलता को स्पष्ट करता है। आस्ट्रो-एशियाई परिवार में मुंडा शाखा शामिल है जो मध्य भारत में बोली जाती है। तिब्बती-म्यांमारी परिवार की शाखाएँ हिमालयी क्षेत्रों और उत्तर-पूर्व में विस्तृत हैं। द्रविड़ परिवार मुख्य रूप से दक्षिण भारत में केंद्रित है जबकि असम-म्यांमारी शाखा सियामी-चीनी उप-परिवार का हिस्सा है। यह वर्गीकरण ऐतिहासिक मानव समूहों के प्रवास और उनके द्वारा लाई गई विभिन्न भाषाओं के क्षेत्रीय विकास के प्रतिरूपों को दर्शाता है।

103. (D) उनकी संख्या प्राथमिक सेक्टर में अपेक्षाकृत अधिक है।
भारत में महिला श्रमिकों की व्यावसायिक भागीदारी के संबंध में यह देखा गया है कि उनकी संख्या प्राथमिक क्षेत्र, विशेषकर कृषि में पुरुषों की तुलना में आनुपातिक रूप से अधिक है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ बड़े पैमाने पर खेती और पशुपालन से जुड़े कार्यों में संलग्न हैं। यद्यपि द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों में उनकी भागीदारी धीरे-धीरे बढ़ रही है परंतु वर्तमान में कृषि ही उनका सबसे बड़ा रोजगार प्रदाता क्षेत्र बना हुआ है। यह स्थिति ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं के श्रम के महत्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करती है।

104. (A) मुस्लिम
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार मुस्लिम समुदाय भारत का दूसरा सबसे बड़ा धार्मिक समूह और सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समुदाय है। इनकी उपस्थिति देश के लगभग सभी भागों में है लेकिन जम्मू और कश्मीर, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश और केरल जैसे राज्यों में इनका संकेंद्रण अधिक महत्वपूर्ण है। हिंदुओं के बाद मुस्लिम आबादी देश के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक ढांचे का एक अनिवार्य और जीवंत हिस्सा है। धार्मिक समुदायों का यह क्रम भारत की बहुलतावादी और विविधपूर्ण राष्ट्रीय पहचान को और अधिक मजबूती प्रदान करता है।

105. (B) 1, 3, 4, 2
भारत के विभिन्न क्षेत्रों में श्रम की सहभागिता दर में काफी भिन्नता पाई जाती है। लक्षद्वीप जैसे केंद्र-शासित प्रदेशों में यह दर तुलनात्मक रूप से कम है जबकि हिमाचल प्रदेश और दादरा और नगर हवेली जैसे क्षेत्रों में यह अपेक्षाकृत अधिक है। सहभागिता दर का यह आरोही क्रम क्षेत्रीय आर्थिक संरचना और वहाँ उपलब्ध रोजगार के अवसरों की प्रकृति को दर्शाता है। हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों में कृषि की प्रधानता के कारण परिवार के अधिक सदस्यों का श्रम बल में शामिल होना एक सामान्य विशेषता है।

106. (C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
भारत में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर होने वाला प्रवास अत्यंत स्पष्ट है क्योंकि लोग बेहतर रोजगार और सुविधाओं की तलाश में शहरों की ओर जाते हैं। हालाँकि यह कहना गलत है कि कृषि की दृष्टि से पिछड़े क्षेत्रों में नगरीकरण का स्तर उच्च रहा है। वास्तव में नगरीकरण उन क्षेत्रों में अधिक है जहाँ औद्योगिक विकास और बुनियादी ढाँचा मजबूत है। कृषि प्रधान और पिछड़े क्षेत्रों में तो प्रायः नगरीकरण की दर धीमी होती है और वहाँ की अधिकांश आबादी ग्रामीण जीवन पर ही निर्भर रहती है।

107. (D) तमिलनाडु
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल जैसे राज्य भारत के उच्च जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्रों में शामिल हैं जहाँ प्रति वर्ग किलोमीटर 800 से अधिक व्यक्ति निवास करते हैं। इसके विपरीत तमिलनाडु में जनसंख्या घनत्व 555 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर दर्ज किया गया है जो इसे मध्यम से उच्च घनत्व की श्रेणी में तो रखता है परंतु यह शीर्ष सघनता वाले राज्यों के समूह (800+ वर्ग) में नहीं आता है। यह भिन्नता कृषि उत्पादकता और क्षेत्रीय विकास के स्तरों के अंतर को दर्शाती है।

108. (B) पवित्र संरचनाएँ, कब्रिस्तान और वृक्षों के निकुंज भू-दृश्य पर धर्मों की औपचारिक अभिव्यक्ति हैं।
भारत में धर्म केवल व्यक्तिगत विश्वास तक सीमित नहीं है बल्कि यह भू-दृश्य पर भौतिक रूप में भी प्रकट होता है। मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों और गिरजाघरों जैसी पवित्र संरचनाएँ किसी क्षेत्र के सांस्कृतिक चरित्र को परिभाषित करती हैं। इसके अतिरिक्त कब्रिस्तान, श्मशान घाट और धार्मिक महत्व के वृक्षों के झुंड भी स्थानीय भूगोल को एक आध्यात्मिक आयाम प्रदान करते हैं। ये सभी तत्व मिलकर भारतीय ग्रामीण और नगरीय परिदृश्य को एक विशिष्ट धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान देते हैं जो अन्य समाजों से भिन्न और विविधतापूर्ण है।

109. (D) 1, 2, 3 और 4
भारत की 2011 की व्यावसायिक संरचना यह स्पष्ट करती है कि देश का 54.6% कार्यबल आज भी कृषि पर ही निर्भर है। अन्य सेवाओं में लगे श्रमिकों का हिस्सा भी 41.6% तक पहुँच गया है जो एक मजबूत आर्थिक विविधीकरण का संकेत है। घरेलू उद्योगों में भागीदारी बहुत ही कम (3.8%) बनी हुई है। साथ ही प्राथमिक क्षेत्र में लगे कुल श्रमिकों की संख्या द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों के संयुक्त योग से अधिक है जो भारतीय अर्थव्यवस्था के अभी भी कृषि प्रधान होने के तथ्य की पुष्टि करती है।

110. (D) 1881
भारत में पहली बार संपूर्ण और व्यवस्थित जनगणना वर्ष 1881 में संपन्न हुई थी। यद्यपि इससे पहले 1872 में एक प्रयास किया गया था लेकिन वह पूरे देश को कवर नहीं कर सका था। 1881 की जनगणना के बाद से ही देश में प्रत्येक दस वर्ष में नियमित रूप से जनगणना कराने की गौरवशाली और महत्वपूर्ण परंपरा स्थापित हुई। इस प्रक्रिया ने भारत के लिए एक विशाल और

73. (C) जो एक वर्ष में 183 दिनों (या छः महीने) से कम दिन काम करता है।
जनगणना की परिभाषा के अनुसार 'सीमांत श्रमिक' वह व्यक्ति होता है जो एक वर्ष के दौरान 183 दिनों या छह महीने से कम समय के लिए किसी उत्पादक कार्य में कार्यरत रहता है। ऐसे श्रमिकों के पास नियमित रोजगार का अभाव होता है और वे प्रायः मौसमी या अल्पकालिक कार्यों पर निर्भर रहते हैं। कार्यबल के इस वर्ग का विश्लेषण देश में व्याप्त अल्प-रोजगार की स्थिति और श्रम बाजार की अनिश्चितताओं को समझने के लिए जनसांख्यिकीविदों द्वारा व्यापक रूप से किया जाता है।

74. (B) केवल 2 और 3
भारत के विभिन्न राज्यों में श्रम की प्रतिभागिता दर एक समान नहीं है बल्कि इसमें काफी क्षेत्रीय अंतर पाया जाता है। हिमाचल प्रदेश, सिक्किम और कुछ केंद्र-शासित प्रदेशों जैसे दमन और दीव में यह दर अपेक्षाकृत ऊँची है। इसके विपरीत आर्थिक रूप से पिछड़े या निम्न विकास वाले क्षेत्रों में प्रायः श्रम सहभागिता दर ऊँची देखी जाती है क्योंकि वहां जीवन निर्वाह के लिए परिवार के अधिक सदस्यों को काम करना पड़ता है। इसलिए आर्थिक विकास और सहभागिता दर के बीच सीधा सकारात्मक संबंध हमेशा नहीं होता है।

75. (D) पुरुष श्रमिकों की संख्या स्त्री श्रमिकों की संख्या से तीनों सेक्टरों में अधिक है।
भारत के श्रम बाजार के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक तीनों ही आर्थिक क्षेत्रों में पुरुष श्रमिकों की संख्या महिलाओं की तुलना में काफी अधिक है। हालाँकि कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी अन्य क्षेत्रों की तुलना में अपेक्षाकृत बेहतर है लेकिन समग्र रूप से वे पुरुषों से पीछे हैं। यह असमानता देश में प्रचलित सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों, घरेलू जिम्मेदारियों के बोझ और कार्यस्थलों पर महिलाओं के लिए उपलब्ध अवसरों की कमी को प्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित करती है।

76. (B) श्रमिकों की कृषि आधारित रोजगारों से गैर-कृषि आधारित रोजगारों पर निर्भरता
भारतीय अर्थव्यवस्था में 'सेक्टरीय स्थानांतरण' उस प्रक्रिया को दर्शाता है जहाँ श्रमिक अपनी आजीविका के लिए कृषि जैसे प्राथमिक कार्यों को छोड़कर धीरे-धीरे विनिर्माण और सेवा जैसे गैर-कृषि कार्यों की ओर स्थानांतरित होते हैं। यह परिवर्तन आर्थिक विकास और विविधीकरण का एक प्रमुख संकेतक माना जाता है। पिछले दशकों में भारत में खेती पर निर्भर आबादी का अनुपात घटा है और अन्य सेवाओं में संलग्न लोगों की संख्या बढ़ी है जो आधुनिक और औद्योगिक समाज की ओर बढ़ते कदम का परिचायक है।

77. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारत के विभिन्न धार्मिक समुदायों का भौगोलिक संकेंद्रण उनकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को दर्शाता है। मुस्लिम आबादी का बड़ा हिस्सा जम्मू-कश्मीर और केरल में है जबकि ईसाई धर्म के लोग गोवा और मेघालय जैसे क्षेत्रों में अधिक हैं। सिख समुदाय मुख्य रूप से पंजाब और हरियाणा के उपजाऊ क्षेत्रों में बसा है जबकि जैन धर्म के अनुयायी राजस्थान और गुजरात के व्यापारिक केंद्रों में संकेंद्रित हैं। यह क्षेत्रीय वितरण भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता की एक स्पष्ट और सुंदर झाँकी प्रस्तुत करता है।

78. (D) मध्य और निम्न गंगा के मैदान
भारत के उत्तरी मैदानों के मध्य और निचले गंगा क्षेत्रों में नगरीकरण का स्तर अपेक्षाकृत निम्न रहा है। इसके विपरीत महानगरों जैसे मुंबई और दिल्ली तथा पंजाब-हरियाणा के औद्योगिक गलियारों में शहरीकरण बहुत तीव्र है। गंगा के मैदानों में कृषि की प्रधानता और औद्योगिक आधार का तुलनात्मक रूप से कम विकसित होना यहाँ की अधिकांश जनसंख्या को ग्रामीण क्षेत्रों में ही सीमित रखता है। यह क्षेत्रीय असमानता देश के विकास प्रतिरूप में कृषि बनाम उद्योगों के प्रभाव को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

79. (A) लगभग 200 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. से अधिक
वर्ष 1951 में भारत का जनसंख्या घनत्व मात्र 117 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था जो 2011 तक बढ़कर 382 हो गया है। इस प्रकार पिछले छह दशकों में इसमें 265 व्यक्तियों की भारी वृद्धि हुई है जो 200 से काफी अधिक है। घनत्व में यह तीव्र उछाल सीमित भूमि संसाधनों पर बढ़ती आबादी के भारी बोझ को स्पष्ट करता है। यह सांख्यिकीय वृद्धि शहरी विस्तार, वनों की कटाई और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की बढ़ती गति के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार रही है।

80. (B) मृत्यु दर में तीव्र ह्रास और उच्च प्रजनन दर
वर्ष 1951-81 के दौरान जनसंख्या विस्फोट का मुख्य कारण मृत्यु दर में आई अभूतपूर्व गिरावट थी जबकि जन्म दर उच्च बनी रही। स्वतंत्रता के बाद बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं और बीमारियों पर नियंत्रण ने जीवन प्रत्याशा को बढ़ाया जिससे जनसंख्या तेजी से बढ़ी। इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय प्रवास ने भी इसमें योगदान दिया। उच्च प्रजनन क्षमता और घटती मृत्यु दर के इस असंतुलन ने देश की जनसंख्या को बहुत कम समय में दोगुना करने की ओर धकेल दिया जो एक बड़ी चुनौती बनकर उभरी।

81. (B) इन सभी राज्यों में दशकीय वृद्धि दर 1991-2001 की तुलना में कम रही।
वर्ष 2011 की जनगणना के महत्वपूर्ण निष्कर्षों में से एक यह था कि भारत के छह सबसे अधिक जनसंख्या वाले राज्यों में दशकीय वृद्धि दर में गिरावट आई है। उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार और अन्य प्रमुख राज्यों ने 1991-2001 की तुलना में 2001-2011 के दौरान अपनी जनसंख्या बढ़ने की गति को कम किया है। यह प्रवृत्ति पूरे देश के लिए एक सकारात्मक संकेत है जो दर्शाता है कि बढ़ती जागरूकता और सरकारी नीतियों के कारण जनसंख्या नियंत्रण के प्रयास अब बड़े राज्यों में भी सफल हो रहे हैं।

82. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
यू.एन.डी.पी. का यह विचार अत्यंत सटीक है कि जेंडर समानता के बिना विकास का लक्ष्य अधूरा और असुरक्षित है। यद्यपि

120. (A) स्त्री शिक्षा में सुधार
वर्ष 1981 के पश्चात भारत में जनसंख्या वृद्धि की गति में जो कमी आई है उसका एक प्रमुख कारण स्त्री शिक्षा के स्तर में हुआ सुधार है। शिक्षित महिलाएँ परिवार नियोजन और स्वास्थ्य के प्रति अधिक जागरूक होती हैं जिससे जन्म दर में स्वाभाविक रूप से गिरावट आती है। इसके अतिरिक्त विवाह की आयु में वृद्धि और आधुनिक जीवनशैली के प्रभाव ने भी जनसंख्या को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिक्षा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण ही जनसांख्यिकीय स्थिरता प्राप्त करने का सबसे प्रभावी और स्थायी सामाजिक उपाय सिद्ध हुआ है।

121. (D) 1, 2, 3 और 4
भारत में जनसंख्या घनत्व का विश्लेषण स्पष्ट करता है कि 1951 के बाद से इसमें निरंतर और तीव्र वृद्धि हुई है जो अब 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी तक पहुँच गया है। राज्यों के बीच व्यापक क्षेत्रीय विषमता है जहाँ बिहार 1102 के साथ सर्वाधिक सघन और अरुणाचल प्रदेश मात्र 17 के साथ न्यूनतम सघन है। पिछले छह दशकों में घनत्व में 200 से अधिक अंकों का उछाल सीमित भूमि पर बढ़ती आबादी के भारी दबाव और भविष्य की संसाधनों संबंधी चुनौतियों की ओर स्पष्ट संकेत करता है।

122. (A) 135 करोड़
विश्व विकास रिपोर्ट के विभिन्न अनुमानों और जनसांख्यिकीय प्रक्षेपों के अनुसार वर्ष 2025 तक भारत की जनसंख्या लगभग 135 करोड़ होने का अनुमान लगाया गया था। यह अनुमान देश की जन्म दर और मृत्यु दर की प्रवृत्तियों के विश्लेषण पर आधारित है। हालाँकि वर्तमान समय में भारत इस आंकड़े को पार कर चुका है परंतु ये ऐतिहासिक प्रक्षेपण जनसंख्या वृद्धि की तीव्रता को समझने और उसके अनुसार बुनियादी ढांचे एवं संसाधनों के दीर्घकालिक नियोजन में नीति निर्माताओं के लिए एक महत्वपूर्ण चेतावनी और मार्गदर्शक की भूमिका निभाते रहे हैं।

123. (D) उत्तर-पूर्वी और मध्य भारत
भारत में 'मॉन-ख्मेर' और 'मुंडा' भाषाएँ मुख्य रूप से आस्ट्रिक (निषाद) भाषा परिवार का हिस्सा हैं जो उत्तर-पूर्वी राज्यों और मध्य भारत के जनजातीय क्षेत्रों में बोली जाती हैं। मॉन-ख्मेर शाखा मुख्य रूप से मेघालय के खासी क्षेत्र में और मुंडा शाखा झारखंड, पश्चिम बंगाल एवं ओडिशा के आदिवासी इलाकों में प्रचलित है। ये भाषाएँ भारत की प्राचीनतम भाषाई विरासतों में से एक हैं और ये इन क्षेत्रों के समुदायों की विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान एवं उनके ऐतिहासिक विकास की कहानी को प्रभावी ढंग से व्यक्त करती हैं।

124. (B) घरेलू औद्योगिक श्रमिक
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की श्रमजीवी जनसंख्या के चार मुख्य संवर्गों में 'घरेलू औद्योगिक श्रमिक' का प्रतिशत अंश सबसे कम (मात्र 3.8%) दर्ज किया गया है। यह श्रेणी उन लोगों को दर्शाती है जो अपने घरों में लघु स्तर पर विनिर्माण गतिविधियों में लगे हैं। इसके विपरीत कृषक और अन्य श्रमिक बहुत बड़े समूहों का प्रतिनिधित्व करते हैं। घरेलू उद्योगों में श्रमिकों की यह अत्यंत कम संख्या देश में बड़े उद्योगों और सेवा क्षेत्र के बढ़ते प्रभाव तथा पारंपरिक कुटीर उद्योगों की घटती प्रासंगिकता को प्रदर्शित करती है।

125. (C) द्वितीयक और तृतीयक सेक्टर में पुरुषों की तुलना में स्त्रियाँ अधिक हैं।
भारत की कार्यबल संरचना में यह कहना पूरी तरह से गलत है कि द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों में स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक हैं। वास्तव में इन दोनों क्षेत्रों में पुरुषों की भागीदारी महिलाओं की तुलना में काफी अधिक है। महिला श्रमिकों की सहभागिता मुख्य रूप से प्राथमिक क्षेत्र (कृषि) में ही अधिक देखी जाती है। अन्य आंकड़े सही हैं जैसे प्राथमिक क्षेत्र में 54.6% श्रमिक लगे हैं और घरेलू उद्योगों का हिस्सा बहुत छोटा है। यह लैंगिक असमानता रोजगार के अवसरों में महिलाओं की कम पहुँच को स्पष्ट करती है।

126. (D) बिहार और सिक्किम जैसे राज्यों में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत अधिक है।
भारत में ग्रामीण जनसंख्या का वितरण क्षेत्रीय आधार पर बहुत भिन्न है जहाँ बिहार और सिक्किम जैसे राज्यों में ग्रामीण आबादी का अनुपात बहुत अधिक पाया जाता है। इन राज्यों में औद्योगिक विकास की धीमी गति और कृषि पर अत्यधिक निर्भरता के कारण अधिकांश लोग गाँवों में ही निवास करते हैं। इसके विपरीत गोवा जैसे राज्यों और अधिकांश केंद्र-शासित प्रदेशों में नगरीकरण का स्तर बहुत ऊँचा है। यह क्षेत्रीय अंतर देश के विभिन्न भागों में आर्थिक विकास और आधुनिकीकरण के स्तरों की असमानता को प्रत्यक्ष रूप से दर्शाता है।

127. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारत के विभिन्न राज्यों में नगरीकरण के स्तरों में भारी अंतर पाया जाता है। गोवा लगभग 62% नगरीय आबादी के साथ शीर्ष पर है जबकि मिजोरम में भी यह अनुपात काफी उच्च (52%) है। इसके विपरीत बिहार और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत अत्यंत कम (मात्र 10-11%) है। नगरीकरण का यह व्यापक अंतर औद्योगिक विकास, बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता और क्षेत्रीय आर्थिक नीतियों के प्रभाव को दर्शाता है जो अलग-अलग राज्यों में मानव बसाव के प्रतिरूपों को गहराई से प्रभावित करते हैं।

128. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
वर्ष 1921-1951 के बीच के समय को भारत में 'स्थिर वृद्धि की अवधि' माना जाता है क्योंकि इस दौरान जनसांख्यिकीय स्थिति में सुधार हुआ था। स्वतंत्रता पूर्व के इस दौर में स्वास्थ्य और स्वच्छता सुविधाओं में प्रगति से अकाल और महामारियों पर कुछ हद तक नियंत्रण पाया गया जिससे मृत्यु दर नीचे आ गई। चूँकि जन्म दर ऊँची बनी रही इसलिए जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि दर में सकारात्मक और निरंतर सुधार हुआ जिसने देश के जनसांख्यिकीय इतिहास को एक नई दिशा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

129. (B) किशोरों का प्रतिशत किशोरियों से अधिक है।
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की किशोर जनसंख्या (10-19 वर्ष) के लिंग संघटन में किशोरों (लड़कों) का अनुपात किशोरियों (लड़कियों) की तुलना में अधिक है। आंकड़ों के अनुसार इस आयु वर्ग में 52.7% लड़के और 47.3% लड़कियाँ शामिल हैं। यह लैंगिक असंतुलन देश में प्रचलित जेंडर भेदभाव और स्वास्थ्य संबंधी असमानताओं का एक चिंताजनक सूचक है। भविष्य के लिए एक संतुलित समाज बनाने हेतु किशोरियों की शिक्षा और स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना सरकार और समाज दोनों के लिए अत्यंत अनिवार्य और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है।

130. (A) मुस्लिम
भारत की धार्मिक विविधता में मुस्लिम समुदाय सबसे बड़ा अल्पसंख्यक समूह है जिसकी जनसंख्या 2011 में कुल आबादी का लगभग 14.2% थी। इनकी उपस्थिति पूरे भारत में एक समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत को प्रदर्शित करती है। मुस्लिमों के पश्चात ईसाई, सिख और बौद्ध समुदाय जनसंख्या के मामले में क्रमबद्ध रूप से आते हैं। यह विशाल अल्पसंख्यक आधार भारत की धर्मनिरपेक्ष पहचान और बहुलतावादी संस्कृति का एक अभिन्न अंग है जो देश के लोकतांत्रिक और सामाजिक-सांस्कृतिक विकास की प्रक्रिया में निरंतर अपना महत्वपूर्ण योगदान देता आ रहा है।

131. (A) केवल 1, 2, 3, 4
भारत की जनसांख्यिकीय प्रावस्थाओं का विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि 1901-21 तक की अवधि रुद्ध थी और 1921-51 के बीच मृत्यु दर घटने से स्थिर वृद्धि हुई। 1951-81 को जनसंख्या विस्फोट का काल कहा जाता है जबकि 1981 के बाद वृद्धि दर में गिरावट आ रही है। यह कहना गलत है कि 1911-21 के दशक में धनात्मक वृद्धि हुई थी क्योंकि वास्तव में उस दौरान ऋणात्मक वृद्धि दर दर्ज की गई थी। यह ऐतिहासिक आंकड़े देश के विकास और स्वास्थ्य सेवाओं के क्रमिक सुधार की कहानी को प्रभावी ढंग से बयां करते हैं।

132. (D) कर्नाटक
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार कर्नाटक उन राज्यों में शामिल था जहाँ दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 20 प्रतिशत से काफी कम दर्ज की गई थी। इसके विपरीत राजस्थान, उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में यह दर अभी भी 20 से 25 प्रतिशत के बीच बनी हुई थी जो जनसंख्या नियंत्रण के मामले में एक बड़ी चुनौती है। कर्नाटक की यह अपेक्षाकृत कम वृद्धि दर वहाँ के सामाजिक विकास, बेहतर स्वास्थ्य प्रबंधन और बढ़ती साक्षरता को दर्शाती है जो दक्षिणी भारतीय राज्यों की सामान्य जनसांख्यिकीय प्रवृत्ति के पूरी तरह से अनुरुप है।

133. (C) कुल जनसंख्या में से श्रमिकों का प्रतिशत
श्रम की प्रतिभागिता दर किसी क्षेत्र की कुल जनसंख्या में से उन व्यक्तियों के प्रतिशत को दर्शाती है जो आर्थिक रुप से उत्पादक कार्यों में संलग्न हैं। इसमें मुख्य और सीमांत दोनों प्रकार के श्रमिकों को शामिल किया जाता है। यह दर किसी अर्थव्यवस्था की कार्यबल क्षमता और रोजगार के अवसरों की उपलब्धता को मापने का एक मुख्य सूचक है। उच्च सहभागिता दर आर्थिक रुप से सक्रिय समाज का संकेत देती है जबकि निम्न दर आश्रितों की बढ़ती संख्या और बेरोजगारी की समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करती है।

134. (B) 58.2% से घटकर 54.6% हो गया।
भारत की व्यावसायिक संरचना में वर्ष 2001 से 2011 के बीच एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है जहाँ कृषि क्षेत्र पर निर्भर श्रमिकों के अनुपात में कमी देखी गई है। यह दर 58.2 प्रतिशत से घटकर 54.6 प्रतिशत हो गई है जो देश में औद्योगिक और सेवा क्षेत्र के बढ़ते प्रभाव को रेखांकित करती है। यह गिरावट यह भी संकेत देती है कि अब लोग खेती के बजाय अन्य आर्थिक क्षेत्रों में रोजगार की तलाश कर रहे हैं जो किसी भी विकासशील अर्थव्यवस्था के विविधीकरण की एक सामान्य और महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय प्रक्रिया है।

135. (D) असम, नागालैण्ड, मणिपुर
'असम-म्यांमारी' भाषाई शाखा मुख्य रुप से भारत के उत्तर-पूर्वी सीमावर्ती राज्यों जैसे असम, नागालैंड, मणिपुर और मिजोरम में बोली जाती है। यह शाखा चीनी-तिब्बती भाषा परिवार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इन क्षेत्रों की भौगोलिक स्थिति और पड़ोसी देश म्यांमार के साथ ऐतिहासिक संबंधों ने यहाँ की भाषाई संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया है। इन पहाड़ी और जंगली इलाकों में प्रचलित ये भाषाएँ यहाँ के जनजातीय समुदायों की विशिष्ट पहचान और उनके पारंपरिक ज्ञान की वाहक हैं जो भारतीय भाषाई विविधता को समृद्ध करती हैं।

136. (A) 1, 2, 3, 4
भारत के प्रमुख धार्मिक अल्पसंख्यकों को उनकी जनसंख्या के आकार (2011) के अनुसार व्यवस्थित करने पर ईसाई प्रथम स्थान पर आते हैं। इनके पश्चात सिखों की जनसंख्या का स्थान है और फिर बौद्ध धर्म के अनुयायी आते हैं। जैन समुदाय इस क्रम में चौथे स्थान पर है जिनकी संख्या अन्य समूहों की तुलना में काफी कम है। धार्मिक समुदायों का यह घटता हुआ क्रम देश की विविधतापूर्ण सामाजिक संरचना और विभिन्न धर्मों के क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर वितरण के प्रतिरूपों को बहुत ही स्पष्ट रुप से उजागर करता है।

137. (A) कृषक > अन्य श्रमिक > कृषि मजदूर > घरेलू औद्योगिक श्रमिक
वर्ष 2011 की जनगणना के आंकड़ों के आधार पर व्यावसायिक संवर्गों में श्रमिकों का वितरण कृषि की प्रधानता को दर्शाता है जहाँ कृषकों का अनुपात सर्वाधिक है। इसके बाद सेवा और विनिर्माण क्षेत्र से जुड़े 'अन्य श्रमिक' और फिर भूमिहीन 'कृषि मजदूर' आते हैं। घरेलू औद्योगिक श्रमिकों का हिस्सा देश में सबसे कम है। व्यावसायिक संरचना का यह क्रम यह स्पष्ट करता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि आज भी आजीविका का मुख्य आधार बनी हुई है जबकि अन्य क्षेत्र धीरे-धीरे अपना विस्तार कर रहे हैं।

138. (A) 1920 के दशक की महान आर्थिक मंदी और द्वितीय विश्व युद्ध
भारत में जनसंख्या वृद्धि की प्रावस्था 'ख' (1921-1951) के दौरान वैश्विक स्तर पर दो बड़ी घटनाओं का गहरा प्रभाव पड़ा जिनमें 1920 की महान आर्थिक मंदी और द्वितीय विश्व युद्ध शामिल थे। इन घटनाओं ने वैश्विक आर्थिक व्यवस्था और सामाजिक परिस्थितियों को अस्त-व्यस्त कर दिया था जिसका सीधा असर भारत की अर्थव्यवस्था और जनसांख्यिकीय प्रवृत्तियों पर भी पड़ा। इन कठिन परिस्थितियों के बावजूद इस अवधि में स्वास्थ्य सुधारों के कारण देश ने जनसंख्या की एक स्थिर वृद्धि दर्ज की जो भविष्य के विकास के लिए महत्वपूर्ण आधार बनी।

139. (A) केवल 1, 2 और 3
भारत में नगरीकरण का स्तर विकसित देशों की तुलना में कम है परंतु इसकी वृद्धि दर हाल के दशकों में बहुत तीव्र रही है। बिहार और हिमाचल प्रदेश जैसे राज्यों में आज भी ग्रामीण आबादी का बहुत ऊँचा प्रतिशत पाया जाता है। जहाँ तक केंद्र-शासित प्रदेशों का प्रश्न है उनमें भी नगरीकरण का स्तर अलग-अलग है और दादरा और नगर हवेली जैसे क्षेत्रों में ग्रामीण आबादी का अनुपात अपेक्षाकृत अधिक है। इसलिए यह कहना कि सभी केंद्र-शासित प्रदेशों में समान रूप से उच्च नगरीकरण है तथ्यों के विरुद्ध है।

140. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में जनसंख्या का वितरण अत्यंत विषम है जो इसके पीछे कार्य करने वाले विभिन्न कारकों के प्रभाव को दर्शाता है। भौतिक कारक जैसे उपजाऊ मैदान और पानी की उपलब्धता जहाँ सघन बसाव को बढ़ावा देते हैं वहीं सामाजिक-आर्थिक और ऐतिहासिक कारक भी आबादी के संकेंद्रण में बड़ी भूमिका निभाते हैं। जनसंख्या के वितरण और इन कारकों के बीच का यह घनिष्ठ संबंध ही स्पष्ट करता है कि क्यों देश के कुछ हिस्से अत्यधिक आबादी वाले हैं जबकि कुछ भौगोलिक रूप से दुर्गम क्षेत्र लगभग खाली पड़े हैं।

141. (C) 1941-51 के दशक में वृद्धि दर 21.51% थी।
भारत की दशकीय जनसंख्या वृद्धि के आँकड़ों के विश्लेषण में यह तथ्य गलत है कि 1941-51 के दौरान वृद्धि दर 21.51% थी। वास्तव में उस समय यह दर काफी कम (लगभग 13.31%) थी। अन्य सभी विकल्प सही हैं जैसे 1961-71 में 24.80% की सर्वाधिक वृद्धि देखी गई और 1991-2001 में यह 21.54% दर्ज की गई थी। वृद्धि दर के ये आंकड़े स्वतंत्रता के बाद स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार और सामाजिक जागरूकता के विभिन्न स्तरों के प्रभाव को ऐतिहासिक रूप से बहुत स्पष्टता के साथ उजागर करते हैं।

142. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारत के भाषाई परिवारों का वाक् क्षेत्र उनके ऐतिहासिक विस्तार को दर्शाता है। आस्ट्रिक परिवार मुख्य रूप से मेघालय और निकोबार के क्षेत्रों में संकेंद्रित है जबकि द्रविड़ परिवार आंध्र प्रदेश और अन्य दक्षिणी राज्यों में फैला है। चीनी-तिब्बती परिवार के लोग मुख्य रूप से बिहार, ओडिशा और पश्चिम बंगाल के जनजातीय क्षेत्रों के इर्द-गिर्द पाए जाते हैं। भारतीय-आर्य परिवार का विस्तार उत्तर भारत के मैदानी भागों जैसे पंजाब और हिमाचल प्रदेश में सर्वाधिक है। यह क्षेत्रीय वितरण देश की समृद्ध सांस्कृतिक एवं भाषाई विविधता का मुख्य आधार है।

143. (A) दिल्ली
वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र भारत का सर्वाधिक सघन केंद्र-शासित प्रदेश है जहाँ जनसंख्या घनत्व 11,297 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर दर्ज किया गया था। दिल्ली का छोटा भौगोलिक क्षेत्रफल और प्रशासनिक एवं आर्थिक गतिविधियों का मुख्य केंद्र होना यहाँ की आबादी के इस भारी दबाव के लिए उत्तरदायी है। इसके विपरीत पश्चिम बंगाल और चंडीगढ़ जैसे अन्य सघन क्षेत्रों में भी घनत्व उच्च है परंतु वे दिल्ली के इस दस हजार के आंकड़े को पार नहीं कर सके हैं जो दिल्ली के चरम नगरीकरण को दर्शाता है।

144. (C) केवल 1, 2, 3, 4
वर्ष 1951-81 के दौरान जनसंख्या विस्फोट के लिए मृत्यु दर में गिरावट, उच्च प्रजनन क्षमता और बेहतर आर्थिक नियोजन जैसे कारक जिम्मेदार थे। इसके अतिरिक्त तिब्बत और बांग्लादेश जैसे पड़ोसी देशों से होने वाले बड़े पैमाने पर प्रवास ने भी जनसंख्या में अचानक वृद्धि कर दी थी। इस अवधि में जन्म दर में तीव्र गिरावट नहीं हुई थी बल्कि वह उच्च बनी हुई थी। उच्च जन्म दर और निम्न मृत्यु दर के इसी असंतुलन ने ही इस कालखंड को 'जनसंख्या विस्फोट' के रूप में भारतीय जनसांख्यिकी के इतिहास में स्थापित किया है।

145. (B) कृषक, कृषि मजदूर और उनके परिवार के सदस्य
'कृषि जनसंख्या' एक व्यापक जनसांख्यिकीय अवधारणा है जिसके अंतर्गत न केवल खेत जोतने वाले कृषक और उनमें काम करने वाले कृषि मजदूर शामिल होते हैं बल्कि उनके परिवार के वे सभी सदस्य भी सम्मिलित किए जाते हैं जो पूर्णतः कृषि गतिविधियों से होने वाली आय पर ही आश्रित हैं। यह परिभाषा किसी देश की अर्थव्यवस्था की कृषि पर वास्तविक निर्भरता को मापने का एक मुख्य साधन है। भारत जैसे कृषि प्रधान राष्ट्र में इस जनसंख्या का आकार देश की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और ग्रामीण विकास की आवश्यकताओं को गहराई से समझने में मदद करता है।

146. (A) विशाल ग्रामीण जनसंख्या
भारत में नगरीकरण का स्तर विकसित देशों की तुलना में अपेक्षाकृत निम्न होने का सबसे प्रमुख कारण यहाँ की विशाल ग्रामीण जनसंख्या है। 2011 में भी देश की लगभग 69% आबादी गाँवों में निवास कर रही थी जो मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर है। यद्यपि शहरों की ओर प्रवास बढ़ रहा है परंतु ग्रामीण आधार इतना बड़ा है कि नगरीय जनसंख्या का अनुपात तुलनात्मक रूप से आज भी कम ही दिखाई देता है। यह स्थिति भारत की परंपरागत सामाजिक संरचना और कृषि आधारित आर्थिक जीवनशैली के गहरे ऐतिहासिक और भौगोलिक प्रभावों को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 3 और 4
(C) केवल 2, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

31. उच्चतर क्रम के प्रशासनिक मुख्यालयों वाले शहरों को क्या कहा जाता है?
(A) प्रशासन शहर और नगर
(B) औद्योगिक नगर
(C) परिवहन नगर
(D) वाणिज्यिक नगर

32. मुंबई, सेलम, कोयंबटूर, और भिलाई किस प्रकार के नगरों के उदाहरण हैं?
(A) पर्यटन नगर
(B) औद्योगिक नगर
(C) शैक्षिक नगर
(D) खनन नगर

33. निम्नलिखित कथनों के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (नगर का प्रकार)
P. परिवहन नगर
Q. वाणिज्यिक नगर
R. खनन नगर
S. गैरिसन नगर
List II: (उदाहरण)
1. सतना
2. रानीगंज
3. महू
4. कांडला
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

34. वाराणसी, मथुरा, अमृतसर और पुरी जैसे नगरों की प्रसिद्धि का मुख्य कारण क्या है?
(A) धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व
(B) औद्योगिक विकास
(C) प्रशासनिक मुख्यालय होना
(D) पर्यटन गंतव्य होना

35. रुड़की, अलीगढ़, और पिलानी किस प्रकार के नगरों के रूप में विकसित हुए?
(A) गैरिसन नगर
(B) खनन नगर
(C) शैक्षिक नगर
(D) वाणिज्यिक नगर

36. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): बड़े महानगर बहुप्रकार्यात्मक बन जाते हैं।
कारण (R): समय के साथ, नगरों के प्रकार्यों में परिवर्तन होता है और वे उद्योग, व्यवसाय, प्रशासन, परिवहन जैसे कई महत्त्वपूर्ण कार्यों को करने लगते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

37. निम्नलिखित में से कौन सा एक पर्यटन नगर का उदाहरण नहीं है?
(A) नैनीताल
(B) शिमला
(C) डिगबोई
(D) माउंट आबू

38. स्मार्ट सिटी मिशन का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) केवल ऐतिहासिक शहरों का संरक्षण करना
(B) सतत पर्यावरण और बुनियादी सुविधाएँ
(C) समस्त ग्रामीण क्षेत्रों का नगरीकरण
(D) केवल औद्योगिक विकास पर ध्यान

39. भारत में नगरीकरण के स्तर को कैसे मापा जाता है?
(A) देश में नगरों की कुल संख्या
(B) महानगरों की संपूर्ण गणना द्वारा
(C) ग्रामीण से शहरी प्रवास की दर
(D) नगरीय जनसंख्या का कुल प्रतिशत

40. निम्नलिखित में से किस कारक को ग्रामीण बस्तियों के प्रकारों को निर्धारित करने वाले सांस्कृतिक और मानवजातीय कारक के रूप में वर्गीकृत किया गया है?
(A) सामाजिक संरचना, जाति और धर्म
(B) क्षेत्र की औसत ऊँचाई
(C) पेयजल की उपलब्धता
(D) भू-भाग की प्राकृतिक बनावट

41. भारत में नगरीकरण की प्रवृत्तियों (1901-2011) को कुल नगरीय जनसंख्या के प्रतिशत के आधार पर निम्न से उच्च के सही कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. 1951 (17.29%)
2. 1981 (23.34%)
3. 1921 (11.18%)
4. 2011 (31.16%)
(A) 3, 1, 2, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 4, 2, 1, 3
(D) 3, 2, 1, 4

157. (D) मृत्यु दर में तीव्र गिरावट के बावजूद जन्म दर का ऊँचा बना रहना
1921 के बाद भारत में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति उत्पन्न हुई क्योंकि देश जनसांख्यिकीय संक्रमण के द्वितीय चरण में प्रवेश कर चुका था। स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार और स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ने से मृत्यु दर में उल्लेखनीय गिरावट आई। हालाँकि, सामाजिक-सांस्कृतिक कारणों से जन्म दर काफी समय तक ऊँची बनी रही, जिससे जन्म और मृत्यु के बीच का अंतर बढ़ गया और जनसंख्या तेजी से बढ़ी।

158. (A) जन्म दर में गिरावट जबकि मृत्यु दर निम्न बनी हुई है
जनसांख्यिकीय संक्रमण के तीसरे चरण, जिसे 'देर से विस्तार' कहा जाता है, की मुख्य विशेषता जन्म दर में होने वाली क्रमिक गिरावट है। इस चरण में मृत्यु दर पहले से ही निम्न स्तर पर स्थिर हो चुकी होती है। यद्यपि जन्म दर घटने लगती है, फिर भी यह मृत्यु दर से अधिक होने के कारण जनसंख्या में वृद्धि जारी रहती है, लेकिन उसकी गति पहले की तुलना में धीमी होती है।

159. (C) महिला साक्षरता में वृद्धि और परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता
भारत में हाल के दशकों के दौरान जन्म दर में आई गिरावट के पीछे सामाजिक विकास के कारक अत्यंत महत्वपूर्ण रहे हैं। विशेष रूप से महिला साक्षरता दर में वृद्धि ने महिलाओं को सशक्त बनाया है और उन्हें परिवार नियोजन के लाभों के प्रति जागरूक किया है। शिक्षा और बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के प्रसार ने लोगों की सोच में बदलाव लाकर जनसंख्या नियंत्रण की दिशा में सकारात्मक प्रभाव डाला है।

160. (A) जनसांख्यिकीय संक्रमण का अनुभव पूरे देश में एक समान नहीं है।
भारत एक विशाल और विविधतापूर्ण देश है, जहाँ विभिन्न राज्यों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति अलग-अलग है। इसी कारण, जनसांख्यिकीय संक्रमण का अनुभव पूरे देश में एक समान नहीं पाया जाता है। जहाँ केरल और तमिलनाडु जैसे दक्षिणी राज्य इस संक्रमण के उन्नत चरणों में पहुँच चुके हैं, वहीं बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे राज्य अभी भी प्रारंभिक चरणों से गुजर रहे हैं, जो क्षेत्रीय विषमता को दर्शाता है।

161. (D) शहरों में उपलब्ध बेहतर रोज़गार के अवसर
'अपकर्ष' या पुल कारक वे अनुकूल परिस्थितियाँ होती हैं जो लोगों को बेहतर जीवन की तलाश में शहरों की ओर आकर्षित करती हैं। शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध विविध और बेहतर रोज़गार के अवसर, उच्च वेतन, उन्नत शिक्षण संस्थान और आधुनिक स्वास्थ्य सेवाएँ इसी श्रेणी में आती हैं। ये कारक ग्रामीण आबादी को महानगरों की ओर खिंचने के लिए एक प्रमुख आर्थिक चुंबक के रूप में कार्य करते हैं।

162. (B) मौसमी बेरोज़गारी और गरीबी
'प्रतिकर्ष' या पुश कारक उन प्रतिकूल स्थितियों को दर्शाते हैं जो ग्रामीणों को अपना मूल स्थान छोड़ने के लिए मजबूर करते हैं। गाँवों में व्याप्त गरीबी, भूमि की कमी और कृषि पर अत्यधिक निर्भरता के कारण होने वाली मौसमी बेरोज़गारी इसी का हिस्सा हैं। बुनियादी सुविधाओं का अभाव और आजीविका के सीमित साधन ग्रामीण निवासियों को शहरों की ओर पलायन करने के लिए विवश करने वाले प्रमुख कारक हैं।

163. (C) शहरी झुग्गी-झोपड़ियों का प्रसार और बुनियादी ढाँचे पर दबाव
शहरों की ओर होने वाला अनियंत्रित और अत्यधिक प्रवास कई गंभीर नगरीय समस्याओं को जन्म देता है। इसके परिणामस्वरूप शहरों के बाहरी हिस्सों में अवैध बस्तियों और झुग्गी-झोपड़ियों का विस्तार होने लगता है। इन क्षेत्रों में स्वच्छ जल, बिजली और जल निकासी जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव होता है। साथ ही, अचानक बढ़ी जनसंख्या के कारण मौजूदा शहरी बुनियादी ढाँचे पर भी बहुत अधिक दबाव बढ़ जाता है।

164. (D) वे कारक जो लोगों को ग्रामीण क्षेत्रों से बाहर जाने के लिए विवश करते हैं।
प्रवास के संदर्भ में 'प्रतिकर्ष कारक' उन नकारात्मक और बाध्यकारी परिस्थितियों को परिभाषित करते हैं जो किसी व्यक्ति को उसके निवास स्थान से बाहर जाने के लिए प्रेरित करती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, बेरोज़गारी और संसाधनों का अभाव ऐसे ही कारक हैं। ये स्थितियाँ ग्रामीण जीवन को इतना कठिन बना देती हैं कि लोग बेहतर भविष्य की उम्मीद में शहरों की ओर जाने के लिए विवश हो जाते हैं।

165. (A) नगरीकरण विकास का सूचक है, परंतु अनियोजित होने पर समस्याएँ उत्पन्न करता है।
नगरीकरण की प्रक्रिया अनिवार्य रूप से किसी राष्ट्र के आर्थिक विकास और आधुनिकीकरण का एक महत्वपूर्ण संकेतक मानी जाती है। हालाँकि, यदि यह प्रक्रिया सुव्यवस्थित और नियोजित न हो, तो यह गंभीर सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियाँ उत्पन्न कर सकती है। ग्रामीण-नगरीय प्रवास के कारण उपजी समस्याओं को दूर करने के लिए शहरों का संतुलित विकास और बुनियादी ढाँचे को सुदृढ़ करना आवश्यक है ताकि सतत विकास सुनिश्चित हो सके।

166. (B) भाषाई आधार पर
स्वतंत्रता के पश्चात भारत में राज्यों की सीमाओं का निर्धारण मुख्य रूप से भाषाई आधार पर किया गया था। इस प्रक्रिया का उद्देश्य देश की विशाल भाषाई विविधता को प्रशासनिक व्यवस्था के साथ समायोजित करना था। 1956 के राज्य पुनर्गठन अधिनियम के माध्यम से प्रमुख भाषाओं के आधार पर राज्यों का निर्माण किया गया ताकि स्थानीय जनता को अपनी भाषा में शिक्षा और सरकारी कार्य करने की सुविधा मिल सके।

167. (B) यह 22 भारतीय भाषाओं को आधिकारिक रूप से मान्यता प्रदान करती है।
भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची देश की भाषाई विविधता को संवैधानिक संरक्षण प्रदान करने वाला एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इसमें वर्तमान में 22 भारतीय भाषाओं को 'अनुसूचित भाषाओं' के रूप में आधिकारिक मान्यता दी गई है। यह व्यवस्था विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के विकास, संवर्धन

(C) केवल 1, 2 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

10. मेघालय, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और केरल के अनेक भागों में किस प्रकार की बस्तियाँ पाई जाती हैं?
(A) परिक्षिप्त या एकाकी बस्तियाँ
(B) विशाल गुच्छित बस्तियाँ
(C) सघन अर्ध-गुच्छित बस्तियाँ
(D) छोटी पल्ली बस्तियाँ

11. ग्रामीण समाज में एक या अधिक वर्ग द्वारा स्वेच्छा से या बलपूर्वक मुख्य गाँव से थोड़ी दूरी पर बसने के परिणामस्वरुप किस प्रकार की बस्ती का निर्माण होता है?
(A) परिक्षिप्त बस्ती
(B) गुच्छित बस्ती
(C) पल्ली बस्ती
(D) अर्ध-गुच्छित बस्ती

12. निम्नलिखित कथनों के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (बस्ती का प्रकार)
P. गुच्छित
Q. अर्ध-गुच्छित
R. पल्ली
S. परिक्षिप्त
List II: (प्रमुख क्षेत्र)
1. गुजरात का मैदान
2. मेघालय
3. उत्तरी मैदान
4. छत्तीसगढ़
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

13. भारत की जनगणना (1991) के अनुसार, किसी बस्ती को 'नगरीय बस्ती' कहने के लिए जनसंख्या का घनत्व कितना होना चाहिए?
(A) 100 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर
(B) 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर
(C) 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर
(D) 300 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर

14. परिक्षिप्त बस्तियों के निर्माण का मुख्य कारण क्या है?
(A) विस्तृत उपजाऊ मैदानों की उपलब्धता
(B) सुरक्षा और बचाव की आवश्यकता
(C) सामाजिक और विभिन्न जातीय कारक
(D) विखंडित भूमि संसाधन आधार

15. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): नगरीय क्षेत्रों में जीवन का ढंग जटिल और तीव्र होता है।
कारण (R): नगरीय क्षेत्रों में सामाजिक संबंध औपचारिक होते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में ये घनिष्ठ होते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

16. निम्नलिखित में से कौन सा एक प्राचीन नगर का उदाहरण है?
(A) चंडीगढ़
(B) वाराणसी
(C) सूरत
(D) जमशेदपुर

17. भारत में नगरों के विकास के विभिन्न युगों का सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?
1. आधुनिक नगर
2. प्राचीन नगर
3. मध्यकालीन नगर
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 3, 1
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 1, 3

18. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ये परिक्षिप्त बस्ती के किसी सीमित क्षेत्र में गुच्छित होने की प्रवृत्ति का परिणाम हैं।
2. जमींदार और प्रमुख समुदाय गाँव के केंद्रीय भाग पर आधिपत्य कर लेते हैं।
3. समाज के निचले तबके के लोग गाँव के बाहरी हिस्सों में बसते हैं।
4. ऐसी बस्तियाँ केवल हिमालय की निचली घाटियों में पाई जाती हैं।
5. इनका निर्माण हमेशा स्वेच्छा से होता है, बलपूर्वक नहीं।
अर्ध-गुच्छित बस्तियों के संदर्भ में उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

19. भारत में मध्यकालीन नगरों के विकास का मुख्य आधार क्या था?
(A) धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र
(B) अंग्रेजों द्वारा स्थापित व्यापारिक पत्तन
(C) रजवाड़ों और राज्यों के मुख्यालय
(D) आधुनिक उद्योगों की स्थापना

अध्याय 10
मानव बस्तियाँ

1. मानव बस्ती का अर्थ क्या है?
(A) बड़े औद्योगिक और व्यावसायिक शहरों का समूह
(B) मानव आवास हेतु संकुलित घर
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित कच्ची झोपड़ियाँ
(D) आर्थिक गतिविधियों हेतु निर्मित इमारतें

2. ग्रामीण और नगरीय बस्तियों में आधारभूत अंतर निम्नलिखित में से किस पर आधारित नहीं है?
(A) राजनीतिक दल की संबद्धता
(B) आर्थिक क्रियाकलाप
(C) सामाजिक संबंध
(D) जीवन का ढंग और दृष्टिकोण

3. निम्नलिखित कथनों के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (बस्ती का प्रकार)
P. गुच्छित बस्ती
Q. अर्ध-गुच्छित बस्ती
R. पल्ली बस्ती
S. परिक्षिप्त बस्ती
List II: (विशेषता)
1. भौतिक रूप से एक-दूसरे से पृथक अनेक इकाइयों में बँटी हुई बस्ती
2. घरों का एक संहत अथवा संकुलित रूप से निर्मित क्षेत्र
3. सुदूर जंगलों में एकाकी झोंपड़ियाँ
4. किसी बड़े संहत गाँव का विखंडन
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

4. ग्रामीण बस्तियों के विभिन्न प्रकारों के लिए उत्तरदायी भौतिक लक्षणों में किसे शामिल नहीं किया जा सकता है?
(A) भू-भाग की प्रकृति
(B) जलवायु
(C) जल की उपलब्धता
(D) जाति और धर्म

5. निम्नलिखित में से कौन सा कथन नगरीय बस्तियों के बारे में सही है?
(A) ये मुख्य रूप से प्राथमिक क्रियाकलापों में विशिष्टता प्राप्त करती हैं।
(B) इनमें सामाजिक संबंध घनिष्ठ और अनौपचारिक होते हैं।
(C) ये सामान्यतः संहत और विशाल आकार की होती हैं।
(D) इनमें जनसंख्या का घनत्व कम और जीवन की गति धीमी होती है।

6. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): राजस्थान में जल के अभाव ने संहत बस्तियों को अनिवार्य बना दिया है।
कारण (R): उपलब्ध जल संसाधनों का अधिकतम उपयोग करने के लिए लोग एक साथ रहते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

7. 'पान्ना', 'पाड़ा', 'पाली', 'नगला', 'ढाँणी' आदि स्थानीय नाम किस प्रकार की बस्तियों से संबंधित हैं?
(A) गुच्छित बस्तियाँ
(B) अर्ध-गुच्छित बस्तियाँ
(C) परिक्षिप्त बस्तियाँ
(D) पल्ली बस्तियाँ

8. मध्य और निम्न गंगा के मैदान, छत्तीसगढ़ और हिमालय की निचली घाटियों में किस प्रकार की ग्रामीण बस्तियाँ बहुतायत में पाई जाती हैं?
(A) पल्ली बस्तियाँ
(B) एकाकी बस्तियाँ
(C) गुच्छित बस्तियाँ
(D) अर्ध-गुच्छित बस्तियाँ

9. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. गुच्छित बस्तियाँ उपजाऊ जलोढ़ मैदानों में पाई जाती हैं।
2. मध्य भारत में सुरक्षा कारणों से संहत गाँव विकसित हुए।
3. उत्तर-पूर्वी राज्यों में गुच्छित बस्तियाँ एक सार्वत्रिक लक्षण हैं।
4. गुच्छित गाँवों में रहन-सहन का सामान्य क्षेत्र खेतों और चरागाहों से पृथक होता है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2, 3 और 4

147. (C) चीनी-तिब्बती (किरात)
भारत में चार प्रमुख भाषाई परिवारों में से चीनी-तिब्बती या किरात परिवार का जनसंख्या में प्रतिशत अंश सबसे कम (मात्र 0.85%) है। इस परिवार की भाषाएँ मुख्य रूप से उत्तर-पूर्वी राज्यों और हिमालय के ऊँचे पहाड़ी क्षेत्रों में बोली जाती हैं। इसके विपरीत भारतीय-यूरोपीय (आर्य) परिवार सबसे बड़ा भाषाई समूह है। चीनी-तिब्बती भाषाई समूह की यह कम संख्या इन क्षेत्रों के विरल बसाव और दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियों को दर्शाती है जहाँ सदियों से विशिष्ट जनजातीय संस्कृतियाँ अपनी भाषाओं और परंपराओं के साथ सुरक्षित बनी हुई हैं।

148. (D) घरेलू उद्योगों में लगा श्रमिक
भारतीय जनगणना के वर्गीकरण के अनुसार 'अन्य श्रमिक' उस श्रेणी में आते हैं जो न तो खेती में लगे हैं, न कृषि मजदूरी में और न ही घरेलू उद्योगों में। व्यापार, वाणिज्य, परिवहन, विनिर्माण और सरकारी सेवाओं में काम करने वाले व्यक्तियों को इस वर्ग में रखा जाता है। चूँकि घरेलू औद्योगिक श्रमिक स्वयं में एक अलग और विशिष्ट संवर्ग हैं इसलिए वे 'अन्य श्रमिक' की श्रेणी का हिस्सा नहीं होते हैं। यह वर्गीकरण कार्यबल की व्यावसायिक विविधता और विभिन्न क्षेत्रों में होने वाली आर्थिक गतिविधियों की स्पष्ट पहचान करने में सहायक होता है।

149. (C) प्रावस्था क (1901-21)
वर्ष 1901-21 की अवधि, जिसे प्रावस्था 'क' कहा जाता है, में भारत में जन्म दर और मृत्यु दर दोनों ही बहुत ऊँचे स्तर पर थे। खराब स्वास्थ्य सेवाओं, अकाल और महामारियों के कारण जितनी जनसंख्या बढ़ती थी उतनी ही मृत्यु के कारण कम हो जाती थी जिसके परिणामस्वरूप वृद्धि दर अत्यंत निम्न या स्थिर बनी रही। वास्तव में इसी अवधि के दौरान देश ने अपनी एकमात्र ऋणात्मक जनसंख्या वृद्धि का अनुभव किया था। यह कालखंड भारत के जनसांख्यिकीय संक्रमण के पहले और सबसे प्रारंभिक चरण का एक उत्कृष्ट एवं ऐतिहासिक उदाहरण प्रस्तुत करता है।

150. (B) कृषीय घनत्व - कुल जनसंख्या / कुल कृषित क्षेत्र
जनसांख्यिकीय मापों में 'कृषीय घनत्व' की परिभाषा कुल जनसंख्या पर आधारित नहीं होती है बल्कि इसे कुल कृषि जनसंख्या और निवल कृषित क्षेत्र के अनुपात के रूप में परिभाषित किया जाता है। यहाँ कृषि जनसंख्या में केवल कृषक, कृषि मज़दूर और उनके आश्रित परिवारजन ही शामिल होते हैं। अन्य विकल्प जैसे कायिक घनत्व, मुख्य श्रमिक और सीमांत श्रमिक की दी गई परिभाषाएँ जनगणना के आधिकारिक मानकों के पूर्णतः अनुरूप और सही हैं। यह अंतर कृषि भूमि पर मानव आबादी के वास्तविक दबाव को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

151. (B) समतल भूमि, उपजाऊ मिट्टी और जल की उपलब्धता
उत्तर भारत के विशाल मैदानों में जनसंख्या का उच्च घनत्व मुख्य रूप से वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है। यहाँ की समतल भूमि कृषि कार्यों और बुनियादी ढाँचे के विकास के लिए अत्यंत अनुकूल है। साथ ही, उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी और बारहमासी नदियों द्वारा निरंतर जल की उपलब्धता ने इस क्षेत्र को ऐतिहासिक रूप से सघन बसावट वाला बनाया है।

152. (A) दुर्गम भू-भाग, कठोर जलवायु और कृषि भूमि की भारी कमी
हिमालयी क्षेत्रों में जनसंख्या का वितरण अत्यंत विरल पाया जाता है क्योंकि यहाँ की भौगोलिक परिस्थितियाँ मानव बसावट के लिए चुनौतीपूर्ण हैं। ऊँची पर्वत श्रृंखलाओं की दुर्गम स्थलाकृति, अत्यधिक ठंडी और कठोर जलवायु के साथ-साथ खेती योग्य उपजाऊ भूमि की भारी कमी यहाँ सघन बस्तियों के विकास में बाधक बनती है। यह क्षेत्र प्रतिकूल भौतिक कारकों के कारण कम आबादी वाला है।

153. (C) अत्यधिक तापमान और जल की भारी कमी
पश्चिमी राजस्थान के थार मरुस्थल में जनसंख्या के कम होने का प्राथमिक कारण वहाँ की विषम जलवायु और प्राकृतिक संसाधनों का अभाव है। यहाँ अत्यधिक उच्च तापमान और वर्षा की भारी कमी के कारण जल संकट की स्थिति बनी रहती है। जीवन जीने की इन कठिन परिस्थितियों और सीमित कृषि संभावनाओं के कारण यह क्षेत्र भारत के विरल जनसंख्या वाले प्रदेशों में गिना जाता है।

154. (D) मध्यम जलवायु और विविध व्यापारिक अवसर
भारत के तटीय मैदानों, जैसे मालाबार और कोरोमंडल तट, में जनसंख्या के सघन होने के पीछे अनुकूल पर्यावरणीय और आर्थिक कारक जिम्मेदार हैं। यहाँ की मध्यम जलवायु और पर्याप्त वर्षा कृषि के लिए उपयुक्त है। इसके अतिरिक्त, समुद्री तटों की निकटता के कारण मत्स्य पालन और व्यापारिक गतिविधियों के विविध अवसर प्राप्त होते हैं, जो बड़ी आबादी के भरण-पोषण में सहायता प्रदान करते हैं।

155. (C) उसके भौतिक भूगोल का
भारत में जनसंख्या का स्थानिक वितरण सीधे तौर पर देश की भौतिक बनावट और प्राकृतिक परिवेश से जुड़ा हुआ है। स्थलाकृति, जलवायु, मिट्टी की उर्वरता और जल स्रोतों की उपलब्धता जैसे कारक यह निर्धारित करते हैं कि कहाँ लोग अधिक बसेंगे। इसी कारण, देश का जनसंख्या मानचित्र अनिवार्य रूप से उसके भौतिक भूगोल की विविधता और उसके द्वारा प्रदान किए गए अवसरों का प्रतिबिंब है।

156. (B) उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर
वर्ष 1921 से पहले की अवधि में भारत जनसांख्यिकीय संक्रमण के प्रथम चरण में था, जहाँ जन्म दर और मृत्यु दर दोनों ही बहुत ऊँचे स्तर पर बनी रहती थीं। अकाल, महामारियों के प्रकोप और चिकित्सा सुविधाओं के नितांत अभाव के कारण मृत्यु दर में तीव्र उतार-चढ़ाव होता था। इसके परिणामस्वरूप, उस समय देश की कुल जनसंख्या वृद्धि या तो स्थिर रहती थी या अत्यंत धीमी थी।

20. निम्नलिखित में से कौन सा नगर मध्यकालीन नगर का उदाहरण नहीं है?
(A) दिल्ली
(B) हैदराबाद
(C) जयपुर
(D) मदुरई

21. निम्नलिखित कथनों के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (नगर)
P. वाराणसी
Q. दिल्ली
R. सूरत
S. चंडीगढ़
List II: (काल)
1. मध्यकालीन नगर
2. आधुनिक नगर (प्रशासनिक केंद्र)
3. प्राचीन नगर
4. आधुनिक नगर (व्यापारिक पत्तन)
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

22. 18वीं शताब्दी में यूरोपियों के भारत आने के बाद विकसित हुए आधुनिक नगरों में से एक है:
(A) पाटलिपुत्र
(B) पांडिचेरी
(C) आगरा
(D) लखनऊ

23. अंग्रेजों ने किन तीन मुख्य नोडों पर अपनी पकड़ मजबूत की और उनका अंग्रेजी शैली में निर्माण किया?
(A) दिल्ली, आगरा, जयपुर
(B) सूरत, दमन, गोआ
(C) वाराणसी, प्रयाग, पटना
(D) मुंबई, चेन्नई, कोलकाता

24. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. नगर आर्थिक वृद्धि के नोड के रूप में कार्य करते हैं।
2. नगरीय और ग्रामीण बस्तियों के बीच प्रकार्यात्मक संबंध परिवहन और संचार परिपथ के माध्यम से स्थापित होता है।
3. ग्रामीण लोग अधिक गतिशील होते हैं।
4. नगरीय क्षेत्रों में सामाजिक संबंध घनिष्ठ होते हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) केवल 1 और 4

25. स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् विकसित हुए प्रशासनिक केंद्रों के रूप में नगरों का सही युग्म कौन सा है?
(A) दुर्गापुर और भिलाई
(B) गाजियाबाद और रोहतक
(C) चंडीगढ़ और भुवनेश्वर
(D) जमशेदपुर और सिंदरी

26. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में नगरीकरण का स्तर कितना प्रतिशत था?
(A) 31.16%
(B) 25.71%
(C) 27.78%
(D) 19.91%

27. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): स्वतंत्रता के बाद, दिल्ली के चारों ओर गाजियाबाद और गुरुग्राम जैसे अनुषंगी नगर विकसित हुए।
कारण (R): ये नगर कुछ पुराने महानगरों के चारों ओर बढ़ते दबाव को कम करने के लिए विकसित हुए।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

28. 1901 से 2011 के बीच किस दशक में भारत में नगरीय जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर सर्वाधिक थी?
(A) 1941-1951
(B) 1971-1981
(C) 1961-1971
(D) 1991-2001

29. निम्नलिखित नगरों को उनके प्रकार्यात्मक वर्गीकरण के अनुसार सही ढंग से सुमेलित नहीं किया गया है?
(A) चंडीगढ़ - प्रशासन नगर
(B) जमशेदपुर - औद्योगिक नगर
(C) कोलकाता - खनन नगर
(D) अंबाला - गैरिसन (छावनी) नगर

30. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में 2000 से अधिक वर्षों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि वाले अनेक नगर हैं।
2. प्रयाग (इलाहाबाद) एक मध्यकालीन नगर है।
3. दिल्ली एक किला नगर है जिसका निर्माण प्राचीन नगरों के खंडहरों पर हुआ है।
4. अंग्रेजों ने सर्वप्रथम तटीय स्थानों पर अपने पैर जमाए।
5. जमशेदपुर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विकसित एक प्रशासनिक केंद्र है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?

और उनके भाषाई अधिकारों की रक्षा के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती है, जिससे देश की सांस्कृतिक एकता और अखंडता सुदृढ़ होती है।

168. (A) विभिन्न भाषाई समूहों के मध्य आपसी संचार को सुगम और प्रभावी बनाना
शिक्षा प्रणाली में लागू किया गया 'त्रि-भाषा सूत्र' भारत जैसे बहुभाषी राष्ट्र में विभिन्न भाषाई समूहों के बीच सेतु का कार्य करने के लिए बनाया गया था। इसका प्राथमिक लक्ष्य हिंदी और अंग्रेजी के साथ एक क्षेत्रीय भाषा के अध्ययन को बढ़ावा देना था। इससे न केवल अंतर-राज्यीय संचार सुगम होता है, बल्कि यह विद्यार्थियों को देश के विभिन्न हिस्सों की सांस्कृतिक और भाषाई बारीकियों को समझने में भी मदद करता है।

169. (C) वहाँ अक्सर द्विभाषिकता और बहुभाषिकता पाई जाती है।
भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में भाषाई स्वरूप अत्यंत लचीला और समावेशी पाया जाता है, जहाँ भाषा की सीमाएँ स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं होती हैं। इन क्षेत्रों में विभिन्न भाषाएँ एक-दूसरे के साथ घुलमिल जाती हैं, जिससे द्विभाषिकता और बहुभाषिकता की स्थिति उत्पन्न होती है। स्थानीय लोग अपनी आवश्यकताओं के अनुसार एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग करते हैं, जो भारत के भाषाई सह-अस्तित्व और सांस्कृतिक समन्वय का अनूठा उदाहरण है।

170. (D) क्षेत्रीय आकांक्षाओं की पूर्ति एवं भाषाई पहचान का सम्मान सुनिश्चित हुआ।
भाषाई आधार पर राज्यों का पुनर्गठन करने से भारत की क्षेत्रीय आकांक्षाओं को एक सकारात्मक मंच प्राप्त हुआ। इस कदम ने विभिन्न भाषाई समूहों को अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखने और उसे प्रशासनिक मान्यता दिलाने में सहायता की। इससे स्थानीय भाषाओं में शासन और शिक्षा को बढ़ावा मिला, जिससे जनता और सरकार के बीच की दूरी कम हुई और राष्ट्रीय एकता के साथ भाषाई विविधता का सम्मान सुनिश्चित हो सका।

171. (C) प्राथमिक क्षेत्र (कृषि)
ऐतिहासिक और परंपरागत रुप से भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना कृषि पर आधारित रही है, जिसके कारण देश का अधिकांश कार्यबल प्राथमिक क्षेत्र में नियोजित था। ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका का मुख्य साधन खेती, पशुपालन, मत्स्य पालन और वानिकी जैसे कार्य रहे हैं। यद्यपि समय के साथ आर्थिक गतिविधियों में बदलाव आया है, लेकिन कार्यबल के वितरण में प्राथमिक क्षेत्र का दबदबा लंबे समय तक बना रहा है।

172. (B) कार्यबल की प्राथमिक क्षेत्र से द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों की ओर स्थानांतरण
पिछले कुछ दशकों में भारतीय अर्थव्यवस्था के स्वरूप में महत्वपूर्ण संरचनात्मक परिवर्तन आए हैं, जिसका सीधा प्रभाव कार्यबल के वितरण पर पड़ा है। अब कार्यबल का झुकाव पारंपरिक प्राथमिक क्षेत्र से हटकर द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों की ओर तेजी से बढ़ रहा है। विनिर्माण, निर्माण और सेवा क्षेत्रों में बढ़ते अवसरों ने श्रमिकों को कृषि से दूर कर औद्योगिक और व्यावसायिक गतिविधियों की ओर आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

173. (D) निरंतर आर्थिक संवृद्धि के बावजूद रोज़गार सृजन की धीमी गति
'रोज़गार-विहीन संवृद्धि' एक ऐसी आर्थिक स्थिति को दर्शाती है जहाँ देश के सकल घरेलू उत्पाद में तो निरंतर वृद्धि होती है, लेकिन उस अनुपात में नए रोज़गार के अवसरों का सृजन नहीं हो पाता। यह विसंगति आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं के लिए एक बड़ी चुनौती है, जहाँ उत्पादकता तो बढ़ती है परंतु श्रमिकों की मांग स्थिर रहती है। इससे आर्थिक समृद्धि का लाभ समाज के सभी वर्गों तक नहीं पहुँच पाता है।

174. (A) कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा अभी भी अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत है
भारतीय श्रम बाजार की एक सबसे गंभीर और निरंतर बनी रहने वाली चिंता यह है कि कार्यबल का एक बहुत बड़ा हिस्सा अभी भी अनौपचारिक क्षेत्र में कार्य कर रहा है। इन श्रमिकों को न तो नियमित आय की गारंटी होती है और न ही उन्हें भविष्य निधि या पेंशन जैसी कोई सामाजिक सुरक्षा प्राप्त होती है। यह स्थिति श्रम बाजार में असुरक्षा को बढ़ाती है और आर्थिक विषमता को और गहरा करती है।

175. (C) कृषि क्षेत्र
यद्यपि भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में सेवा क्षेत्र का योगदान अब सबसे अधिक हो गया है, फिर भी कृषि क्षेत्र देश में सबसे बड़ा एकल नियोक्ता बना हुआ है। आज भी भारत की आधी से अधिक आबादी अपनी आजीविका और रोज़गार के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से कृषि गतिविधियों पर ही निर्भर है। यह तथ्य भारतीय अर्थव्यवस्था में प्राथमिक क्षेत्र के निरंतर सामाजिक और आर्थिक महत्व को उजागर करता है।

42. कांडला, कोच्चि और विशाखापट्नम जैसे पत्तन नगरों का मुख्य प्रकार्य क्या है?
(A) आयात और निर्यात
(B) प्रशासन
(C) शिक्षा
(D) खनन

43. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गुच्छित बस्तियों के बारे में असत्य है?
(A) ये उपजाऊ जलोढ़ मैदानों में पाई जाती हैं।
(B) ये संहत या संकुलित रूप में निर्मित क्षेत्र होती हैं।
(C) मध्य भारत में सुरक्षा कारणों से ऐसी बस्तियाँ बनी हैं।
(D) इनमें घर दूर-दूर बने होते हैं।

44. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. स्मार्ट सिटी मिशन का उद्देश्य सस्ती सुविधाएँ उपलब्ध कराना है।
2. यह योजना सतत तथा समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करती है।
3. इसका उद्देश्य प्राकृतिक आपदाओं के कम जोखिम वाले क्षेत्र बनाना है।
4. यह योजना केवल बड़े महानगरों के लिए है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 2, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

45. धुलिया, मुगलसराय, और इटारसी किस प्रकार के नगरों के उदाहरण हैं?
(A) पत्तन नगर
(B) खनन नगर
(C) आंतरिक परिवहन की धुरियाँ
(D) शैक्षिक नगर

46. रानीगंज, झरिया, और सिंगरौली नगरों का विकास किस कारण हुआ?
(A) ये प्रमुख धार्मिक केंद्र हैं।
(B) ये प्रमुख प्रशासनिक मुख्यालय हैं।
(C) ये तटीय क्षेत्रों में स्थित हैं।
(D) ये खनिज समृद्ध क्षेत्रों में स्थित हैं।

47. निम्नलिखित कथनों के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

List I: (नगर)
P. रुड़की
Q. नैनीताल
R. अंबाला
S. कोलकाता

List II: (प्रकार)
1. गैरिसन नगर
2. पर्यटन नगर
3. वाणिज्यिक नगर
4. शैक्षिक नगर

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-2, R-1, S-3
(C) P-2, Q-4, R-3, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

48. ग्रामीण बस्तियाँ अपनी आधारभूत आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किस पर निर्भर करती हैं?
(A) द्वितीयक और तृतीयक क्रियाकलापों पर
(B) भूमि आधारित प्राथमिक आर्थिक क्रियाओं पर
(C) केवल सेवाओं के विनिर्माण पर
(D) केवल तैयार माल के व्यापार पर

49. निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में आपको परिक्षिप्त या एकाकी बस्तियों के मिलने की अपेक्षा नहीं होगी?
(A) मेघालय की पहाड़ियाँ
(B) उत्तर भारत के उपजाऊ जलोढ़ मैदान
(C) उत्तराखंड के सुदूर जंगल
(D) केरल के अनेक भाग

50. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): ग्रामीण और नगरीय बस्तियाँ सामाजिक संबंधों, अभिवृत्ति और दृष्टिकोण की दृष्टि से भिन्न होती हैं।
कारण (R): ग्रामीण लोग कम गतिशील होते हैं और उनमें सामाजिक संबंध घनिष्ठ होते हैं, जबकि नगरीय जीवन जटिल और तीव्र होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

51. भारत की जनगणना 1991 के अनुसार, किसी स्थान को नगरीय बस्ती घोषित करने के लिए कौन-सा मापदंड आवश्यक नहीं है?
(A) जनसंख्या आकार 5000 व्यक्तियों से अधिक हो।
(B) 75% पुरुष श्रमिक गैर-कृषि कार्यों में संलग्न हों।
(C) 50% से अधिक जनसंख्या का प्राथमिक खंड में संलग्न होना।
(D) जनसंख्या का घनत्व 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर हो।

52. निम्नलिखित में से कौन सा एक 'किला नगर' का उदाहरण है जिसका विकास मध्यकाल में हुआ?
(A) वाराणसी
(B) जमशेदपुर
(C) चंडीगढ़

(D) लखनऊ

53. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. पल्ली बस्तियाँ भौतिक रूप से कई इकाइयों में बँटी होती हैं पर उनका नाम एक ही रहता है।
2. इन इकाइयों को स्थानीय स्तर पर पान्ना, पाड़ा आदि कहा जाता है।
3. इनका खंडीभवन प्रायः सामाजिक एवं मानवजातीय कारकों द्वारा अभिप्रेरित होता है।
4. ऐसी बस्तियाँ केवल राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों में पाई जाती हैं।
5. ये गुच्छित बस्तियों का ही एक रूप हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?

(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

54. भारत में 20वीं शताब्दी के दौरान नगरीय जनसंख्या में लगभग कितनी वृद्धि हुई?

(A) 5 गुना
(B) 11 गुना
(C) 8 गुना
(D) 15 गुना

55. 'नगर आर्थिक वृद्धि के नोड (node) के रूप में कार्य करते हैं।' इस कथन का क्या तात्पर्य है?

(A) नगर केवल स्थानीय निवासियों को सेवाएँ देते हैं।
(B) नगर केवल कच्चे माल का उत्पादन करते हैं।
(C) नगरों का ग्रामीण बस्तियों से संबंध नहीं होता।
(D) ग्रामीण क्षेत्रों हेतु सेवा केंद्र

56. निम्नलिखित कथनों के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

List I: (नगर)
P. भोपाल
Q. भिलाई
R. मदुरै
S. उधमपुर

List II: (प्रकार्यात्मक वर्ग)
1. औद्योगिक नगर
2. प्राचीन नगर/धार्मिक नगर
3. गैरिसन नगर
4. प्रशासन नगर

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

57. गुच्छित ग्रामीण बस्तियों की ज्यामितीय आकृतियों में निम्नलिखित में से कौन-सी शामिल हो सकती है?

(A) केवल आयताकार संरचना
(B) केवल रैखिक विस्तार
(C) विविध प्रकार की ज्यामितीय आकृतियाँ
(D) केवल अरीय प्रतिरूप

58. 1901 और 1911 के बीच भारत की नगरीय जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर कितनी थी?

(A) 0.35%
(B) 8.27%
(C) 19.12%
(D) 41.42%

59. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

अभिकथन (A): गुजरात के मैदान और राजस्थान के कुछ भागों में अर्ध-गुच्छित बस्तियाँ पाई जाती हैं।

कारण (R): इन क्षेत्रों में ग्रामीण समाज का एक वर्ग स्वेच्छा से या बलपूर्वक मुख्य गाँव से अलग रहता है।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) both सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

60. भारत में नगरों के विकास के संदर्भ में, निम्नलिखित घटनाओं को सही कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:

1. जमशेदपुर जैसे औद्योगिक नगर का जन्म।
2. हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे नगरों का अस्तित्व।
3. चंडीगढ़ जैसे प्रशासनिक नगर का विकास।
4. यूरोपियों द्वारा सूरत जैसे व्यापारिक पत्तन का विकास।

(A) 2, 4, 1, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 4, 2, 3, 1

61. 'गैरिसन (छावनी) नगर' का उदय किस रूप में हुआ?

(A) धार्मिक स्थलों के रूप में
(B) औद्योगिक उत्पादन केंद्रों के रूप में
(C) सैन्य गतिविधियों के केंद्रों के रूप में
(D) व्यापारिक मंडियों के रूप में

62. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म 'शहर - प्रकार' सही सुमेलित है?

(A) जयपुर - पर्यटन नगर
(B) अलीगढ़ - औद्योगिक नगर
(C) ऊटी - गैरिसन नगर
(D) सतना - वाणिज्यिक नगर

63. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. नगरीय बस्तियाँ कच्चे माल के प्रक्रमण और तैयार माल

के विनिर्माण पर निर्भर करती हैं।
2. ग्रामीण बस्तियाँ विभिन्न प्रकार की सेवाओं पर निर्भर करती हैं।
3. नगरीय बस्तियाँ अपने जीवन-पोषण के लिए भूमि आधारित प्राथमिक क्रियाओं पर निर्भर करती हैं।
4. ग्रामीण और नगरीय बस्तियों में कोई प्रकार्यात्मक संबंध नहीं होता।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 4
(D) सभी सही हैं

64. यदि किसी बस्ती में घर एक दूसरे से दूर-दूर, सुदूर जंगलों में या छोटी पहाड़ियों की ढालों पर खेतों के रूप में दिखाई देते हैं, तो उसे क्या कहा जाएगा?
(A) गुच्छित बस्ती
(B) परिक्षिप्त बस्ती
(C) पल्ली बस्ती
(D) अर्ध-गुच्छित बस्ती

65. निम्नलिखित में से कौन-सा एक नगरों के प्रकार्यात्मक वर्गीकरण का प्रकार नहीं है?
(A) प्रशासन नगर
(B) प्राचीन नगर
(C) परिवहन नगर
(D) खनन नगर

66. निम्नलिखित कथनों के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (नगर)
P. जयपुर
Q. कोयंबटूर
R. अजमेर
S. शिमला
List II: (विवरण)
1. औद्योगिक नगर
2. पर्यटन नगर
3. मध्यकालीन मुख्यालय/प्रशासन नगर
4. धार्मिक/सांस्कृतिक नगर
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

67. किसी विशाल गाँव का सामाजिक एवं मानवजातीय कारकों द्वारा खंडीभवन किस प्रकार की बस्ती को जन्म देता है?
(A) गुच्छित बस्ती
(B) परिक्षिप्त बस्ती
(C) पल्ली बस्ती
(D) अर्ध-गुच्छित बस्ती

68. भारत में 1850 के बाद मुख्य रूप से किन पर आधारित नगरों का जन्म हुआ?
(A) केवल प्रशासन
(B) केवल धार्मिक गतिविधियाँ
(C) ग्रीष्मकालीन विश्राम स्थल
(D) आधुनिक उद्योगों

69. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): भारत में पिछले दो दशकों में नगरीकरण की वृद्धि दर धीमी हुई है।
कारण (R): 20वीं शताब्दी के दौरान नगरीय जनसंख्या 11 गुना बढ़ी, जिसने एक उच्च आधार बनाया।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

70. निम्नलिखित में से कौन सा नगर अपने धार्मिक/सांस्कृतिक महत्व के कारण प्रसिद्ध नहीं है?
(A) हरिद्वार
(B) भिलाई
(C) पुष्कर
(D) तिरुपति

71. स्मार्ट सिटी मिशन के तहत 'स्मार्ट समाधान' का उद्देश्य क्या है?
(A) केवल बहुमंजिला इमारतों का निर्माण
(B) शहरों को केवल पर्यटन हेतु आकर्षक बनाना
(C) पारंपरिक ग्रामीण जीवन शैली को बढ़ावा
(D) सस्ती और सुलभ नगरीय सुविधाएँ

72. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. बस्तियों का परिसर एक पल्ली से लेकर महानगर तक होता है।
2. आकार के साथ बस्तियों की सामाजिक संरचना नहीं बदलती है।
3. बस्तियाँ छोटी और विरल या बड़ी और संकुलित हो सकती हैं।
4. विरल रूप से अवस्थित छोटी बस्तियाँ गाँव कहलाती हैं।
5. बड़े अधिवास जो द्वितीयक क्रियाकलापों में विशेषीकृत होते हैं, नगरीय बस्तियाँ कहलाते हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2, 3 और 4
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 3, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

(A) सिंगरौली - पर्यटन नगर
(B) पिलानी - वाणिज्यिक नगर
(C) सतना - परिवहन नगर
(D) बबीना - गैरिसन नगर

95. निम्नलिखित कथनों के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (दशक)
P. 1901-1911
Q. 1911-1921
R. 1921-1931
S. 1931-1941
List II: (नगरीय जनसंख्या दशकीय वृद्धि %)
1. 8.27
2. 19.12
3. 31.97
4. 0.35
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

96. वह कौन सी प्रक्रिया है जिसमें लोगों का समूहन और उनके संसाधन आधार के रूप में क्षेत्र का आवंटन सम्मिलित होता है?
(A) नगरीकरण
(B) बस्ती की प्रक्रिया
(C) औद्योगीकरण
(D) प्रवास

97. 2001 और 2011 में भारत में नगरीकरण का स्तर क्रमशः क्या था?
(A) 25.71% और 31.16%
(B) 27.78% और 31.16%
(C) 23.34% और 27.78%
(D) 25.71% और 27.78%

98. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): कोलकाता, सहारनपुर और सतना वाणिज्यिक नगरों के उदाहरण हैं।
कारण (R): इन नगरों ने व्यापार और वाणिज्य में विशिष्टता प्राप्त की है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) both सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

99. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन नगरीय और ग्रामीण बस्तियों के बीच प्रकार्यात्मक संबंध को सबसे अच्छी तरह वर्णित करता है?
(A) नगर और गाँव स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं।
(B) केवल नगर गाँवों को विशिष्ट सेवाएँ प्रदान करते हैं।
(C) खाद्यान्न एवं सेवा विनिमय संबंध
(D) केवल ग्रामीण क्षेत्र ही नगरों को कच्चे माल देते हैं।

100. भारत में अंग्रेजों द्वारा स्थापित ग्रीष्मकालीन विश्राम स्थलों के रूप में पर्वतीय नगरों में क्या-क्या शामिल किया जाता था?
(A) केवल बड़े औद्योगिक क्षेत्र
(B) केवल विस्तृत वाणिज्यिक बाजार
(C) केवल स्थानीय निवासियों के आवास
(D) प्रशासनिक एवं सैन्य सेवा क्षेत्र

101. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में ग्रामीण बस्तियों को चार प्रकारों में रखा जा सकता है।
2. गुच्छित बस्तियों को संकुलित अथवा आकेंद्रित भी कहा जाता है।
3. पल्लीकृत बस्तियों को विखंडित भी कहते हैं।
4. परिक्षिप्त बस्तियों को एकाकी भी कहा जाता है।
5. अर्ध-गुच्छित बस्तियों को विखंडित बस्तियाँ भी कहते हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2, 3 और 4
(B) केवल 1, 2, 4 और 5
(C) केवल 2, 3, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

102. बुंदेलखंड प्रदेश और नागालैंड में किस प्रकार की ग्रामीण बस्तियाँ पाई जाती हैं?
(A) पल्ली बस्तियाँ
(B) संहत (गुच्छित) बस्तियाँ
(C) परिक्षिप्त बस्तियाँ
(D) अर्ध-गुच्छित बस्तियाँ

103. निम्नलिखित में से कौन सा नगर तटीय स्थान पर विकसित नहीं हुआ है?
(A) सूरत
(B) दमन
(C) गोआ
(D) आगरा

104. निम्नलिखित कथनों के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (राज्य)
P. गुजरात
Q. छत्तीसगढ़
R. मेघालय
S. उत्तर प्रदेश

1. पल्ली बस्ती
2. बिखरी बस्ती
3. समूहित बस्ती
4. एकल/एकाकी बस्ती

(A) P–3, Q–1, R–2, S–4
(B) P–1, Q–2, R–3, S–4
(C) P–2, Q–3, R–1, S–4
(D) P–4, Q–1, R–2, S–3

84. अर्ध-गुच्छित बस्तियों में, आमतौर पर समाज के निचले तबके के लोग कहाँ बसते हैं?
(A) गाँव के केंद्रीय भाग में
(B) जमींदार के आवास के पास
(C) गाँव के निकट किसी दूसरे गाँव में
(D) गाँव के बाहरी हिस्सों में

85. निम्नलिखित में से कौन-सा एक प्रशासन नगर का उदाहरण नहीं है?
(A) नई दिल्ली
(B) भोपाल
(C) मोदीनगर
(D) गांधीनगर

86. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में लगभग 100 नगरों का इतिहास मध्यकाल से जुड़ा है।
2. इन मध्यकालीन नगरों में से अधिकांश का विकास रजवाड़ों के मुख्यालयों के रुप में हुआ।
3. जयपुर और आगरा मध्यकालीन नगरों के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।
4. मध्यकालीन नगरों का निर्माण हमेशा नए स्थानों पर किया गया।
5. ये नगर किला नगर हैं जिनका निर्माण प्राचीन नगरों के खंडहरों पर हुआ है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2, 3 और 4
(B) केवल 1, 2, 3 और 5
(C) केवल 2, 3, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

87. भारत में नगरीकरण के संदर्भ में, 1991 और 2001 के बीच कुल नगरीय जनसंख्या में दशकीय वृद्धि (%) कितनी थी?
(A) 46.14%
(B) 36.47%
(C) 31.08%
(D) 31.13%

88. 'स्मार्ट सिटी मिशन' का एक उद्देश्य 'लाइट हाऊस' का काम करना है। इसका क्या अर्थ है?
(A) अन्य शहरों हेतु मार्गदर्शक मॉडल
(B) शहरों में व्यापक विद्युत प्रकाश व्यवस्था
(C) केवल तटीय शहरों का सर्वांगीण विकास
(D) रात्रि सुरक्षा हेतु विशेष प्रकाश प्रबंध

89. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): पल्ली बस्तियों का खंडीभवन प्रायः सामाजिक एवं मानवजातीय कारकों द्वारा अभिप्रेरित होता है।
कारण (R): ये बस्तियाँ भौतिक रूप से एक-दूसरे से पृथक अनेक इकाइयों में बँट जाती हैं किंतु उन सबका नाम एक रहता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

90. पाटलिपुत्र (पटना) और मदुरई किस श्रेणी के नगरों के उदाहरण हैं?
(A) प्राचीन नगर
(B) आधुनिक नगर
(C) मध्यकालीन नगर
(D) औद्योगिक नगर

91. बस्तियों के आकार और प्रकार में भिन्नता का परिसर कहाँ से कहाँ तक होता है?
(A) केवल गाँव से शहर तक
(B) केवल झोपड़ी से महल तक
(C) केवल छोटे नगरों से बड़े नगरों तक
(D) एक पल्ली से लेकर महानगर तक

92. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. चंडीगढ़ एक प्रशासन नगर है।
2. मुंबई एक औद्योगिक नगर है।
3. कांडला एक परिवहन नगर है।
4. कोलकाता एक वाणिज्यिक नगर है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

93. किस प्रकार की बस्तियाँ कृषि अथवा अन्य प्राथमिक क्रियाकलापों में विशिष्टता प्राप्त कर लेती हैं?
(A) नगरीय बस्तियाँ
(B) महानगर
(C) गाँव (विरल रूप से अवस्थित छोटी बस्तियाँ)
(D) अनुषंगी नगर

94. निम्नलिखित में से कौन सा नगर अपने प्रकार्यात्मक वर्गीकरण के साथ सही सुमेलित है?

(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

136. जनसंख्या आकार, घनत्व और पुरुष श्रमिकों के व्यवसाय के आधार पर जनगणना द्वारा परिभाषित नगरीय बस्ती की श्रेणी में आने के लिए निम्नलिखित में से क्या एक अनिवार्य शर्त नहीं है?
(A) गैर-कृषि कार्यों में संलग्न महिलाएँ
(B) नगरपालिका का वैधानिक अस्तित्व
(C) नगर निगम की उपस्थिति
(D) छावनी बोर्ड की स्थापना

137. 1951 और 1981 के बीच भारत की कुल नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत कितना बढ़ा?
(A) 17.29% से 25.71%
(B) 13.86% से 19.91%
(C) 17.29% से 23.34%
(D) 17.97% से 25.71%

138. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. बस्तियों का प्रकार निर्मित क्षेत्र के विस्तार द्वारा निर्धारित होता है।
2. बस्तियों का प्रकार अंतर्वास दूरी द्वारा निर्धारित होता है।
3. गुच्छित गाँव उत्तरी मैदानों में एक सार्वत्रिक लक्षण है।
4. परिक्षिप्त बस्तियाँ मध्य भारत में आम हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

139. नगरों का प्रकार्यात्मक वर्गीकरण किस आधार पर किया जाता है?
(A) नगरों के कुल भौगोलिक विस्तार
(B) नगरों की कुल जनसंख्या दर
(C) नगरों की पुरानी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
(D) विशेषीकृत एवं निष्पादित प्रकार्य

140. निम्नलिखित में से कौन-सा नगर-युग्म एक ही प्रकार्यात्मक वर्ग से संबंधित नहीं है?
(A) चंडीगढ़, गांधीनगर (प्रशासन)
(B) अंबाला, सतना (गैरिसन)
(C) रानीगंज, झरिया (खनन)
(D) रुड़की, पिलानी (शैक्षिक)

141. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. नगरों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है।
2. नगरीय जनसंख्या में लगातार वृद्धि हुई है।
3. कुल नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत लगातार बढ़ा है।
4. दशकीय वृद्धि दर पिछले दो दशकों में धीमी हुई है।
5. 1951-61 के दशक में नगरों की संख्या घटी थी।

भारत में 1901-2011 के दौरान नगरीकरण की प्रवृत्ति के संदर्भ में उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3 और 4
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 3, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

142. 'गुच्छित', 'अर्ध-गुच्छित', 'पल्लीकृत' और 'परिक्षिप्त' किसके प्रकार हैं?
(A) नगरीय बस्तियों के
(B) औद्योगिक संकुलों के
(C) परिवहन मार्गों के
(D) ग्रामीण बस्तियों के

143. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
Statement 1: 2011 में भारत में नगरीकरण का स्तर 31.16 प्रतिशत था।
Statement 2: भारत में नगरीय केंद्रों के विवर्धन और नए नगरों के आविर्भाव ने नगरीय जनसंख्या की वृद्धि में सार्थक भूमिका निभाई है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और 2 दोनों गलत हैं।
(C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(D) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

144. निम्नलिखित में से कौन सा एक आधुनिक नगर का उदाहरण है जो स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् एक औद्योगिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ?
(A) मदुरई
(B) सिंदरी
(C) जयपुर
(D) सूरत

145. यदि आप किसी ऐसे क्षेत्र में हैं जहाँ बस्तियाँ भौतिक रूप से कई इकाइयों में बँटी हुई हैं और उन्हें स्थानीय रूप से 'नगला' या 'ढाँणी' कहा जाता है, तो आप किस प्रकार की बस्ती में हैं?
(A) गुच्छित बस्ती
(B) पल्ली बस्ती
(C) अर्ध-गुच्छित बस्ती
(D) परिक्षिप्त बस्ती

146. 1981 की जनगणना के अनुसार, भारत में नगरों/नगरीय संकुलों की संख्या कितनी थी?
(A) 3,378
(B) 2,590
(C) 4,689
(D) 5,161

147. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. नगरीय बस्तियाँ संहत और विशाल होती हैं।

List II: (प्रमुख बस्ती प्रकार)
1. पल्ली बस्ती
2. परिक्षिप्त बस्ती
3. गुच्छित बस्ती (जलोढ़ मैदान)
4. अर्ध-गुच्छित बस्ती
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

105. ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ते निवेश के साथ पूरे देश में किस प्रकार के नगरों का विकास हुआ है?
(A) केवल विशाल महानगरों का उदय
(B) केवल विशिष्ट अनुषंगी नगरों का
(C) मध्यम और छोटे श्रेणी के नगर
(D) केवल तटीय पत्तन नगरों का

106. भारत में नगरों के अभ्युदय की निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के सही कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. स्वतंत्रता के बाद चंडीगढ़ जैसे प्रशासनिक नगरों का विकास।
2. रजवाड़ों के मुख्यालय के रूप में दिल्ली और जयपुर का विकास।
3. धार्मिक केंद्र के रूप में वाराणसी का विकास।
(A) 1, 2, 3
(B) 3, 1, 2
(C) 2, 3, 1
(D) 3, 2, 1

107. निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही नहीं है?
(A) नगर अपने प्रकार्यों में स्थिर नहीं हैं।
(B) नगरों के प्रकार्य उनके गतिशील स्वभाव के कारण बदल जाते हैं।
(C) विशेषीकृत नगर महानगर बनने पर बहुप्रकार्यात्मक बन जाते हैं।
(D) प्रत्येक शहर केवल एक ही प्रकार्य करता है।

108. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
Statement 1: बस्तियों का आकार और प्रकार भिन्न होता है।
Statement 2: बस्तियों की पारिस्थितिकी और प्रौद्योगिकी हमेशा स्थिर रहती है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और 2 दोनों गलत हैं।
(C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(D) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

109. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): भारत में नगरीकरण का स्तर विकसित देशों की तुलना में काफी कम है।
कारण (R): 2011 में भारत में नगरीकरण का स्तर 31.16 प्रतिशत था, जबकि कई विकसित देशों में यह 75% से अधिक है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) both सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

110. निम्नलिखित में से कौन-सा एक नगर 'आंतरिक परिवहन की धुरी' का उदाहरण है?
(A) कोझीकोड
(B) विशाखापट्नम
(C) कांडला
(D) इटारसी

111. उडगमंडलम (ऊटी), जोधपुर और जैसलमेर किस प्रकार के नगरों के उदाहरण हैं?
(A) पर्यटन नगर
(B) खनन नगर
(C) शैक्षिक नगर
(D) औद्योगिक नगर

112. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. बस्तियाँ छोटी और विरल रूप से लेकर बड़ी और संकुलित हो सकती हैं।
2. नगरीय बस्तियाँ द्वितीयक और तृतीयक क्रियाकलापों में विशेषीकृत होती हैं।
3. ग्रामीण लोग कम गतिशील होते हैं और उनमें सामाजिक संबंध घनिष्ठ होते हैं।
4. नगरीय क्षेत्रों में जीवन का ढंग सरल और धीमा होता है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

113. 2011 में भारत में नगरों/नगरीय संकुलों की संख्या कितनी थी?
(A) 5,161
(B) 6,171
(C) 4,689
(D) 3,378

114. निम्नलिखित में से कौन सा शहर नदी तट पर अवस्थित नहीं है?
(A) भोपाल
(B) आगरा
(C) पटना
(D) कोलकाता

73. 'नगरों के प्रकारय इतने अंतर्ग्रथित हो जाते हैं कि नगर को किसी विशेष प्रकार्य वर्ग में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता।' यह स्थिति कब उत्पन्न होती है?
(A) जब नगर छोटा होता है
(B) जब नगर का नया-नया विकास होता है
(C) जब विशेषीकृत नगर महानगर बन जाते हैं
(D) जब नगर ग्रामीण क्षेत्र में स्थित होता है

74. निम्नलिखित में से कौन-सा एक अधिसूचित नगरीय क्षेत्र समिति (नोटीफाइड टाउन एरिया कमेटी) का एक लक्षण है?
(A) जनगणना आधारित नगरीय परिभाषा
(B) यह ग्रामीण प्रशासन की एक इकाई है
(C) यह केवल औद्योगिक नगरों में मिलती है
(D) इसका गठन अल्प जनसंख्या पर संभव है

75. किस वर्ष में भारत में नगरों/नगरीय संकुलों की संख्या सबसे कम थी?
(A) 1901
(B) 2011
(C) 1961
(D) 1911

76. "बस्ती की प्रक्रिया में मूल रूप से लोगों के समूहन और उनके संसाधन आधार के रूप में क्षेत्र का आवंटन सम्मिलित होते हैं।" इस कथन में 'संसाधन आधार' से क्या तात्पर्य है?
(A) केवल स्थानीय वित्तीय संसाधन
(B) आर्थिक पोषण प्राप्त करने वाला क्षेत्र
(C) केवल नगर के मानव संसाधन
(D) केवल क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत

77. निम्नलिखित नगरों के समूहों में से कौन सा समूह केवल आधुनिक नगरों का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) वाराणसी, मदुरई, पटना
(B) दिल्ली, आगरा, लखनऊ
(C) दुर्गापुर, भिलाई, चंडीगढ़
(D) हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, प्रयाग

78. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ग्रामीण बस्तियों के प्रकार निर्मित क्षेत्र के विस्तार द्वारा निर्धारित होते हैं।
2. अंतर्वास दूरी भी ग्रामीण बस्तियों के प्रकार को निर्धारित करती है।
3. भारत में गुच्छित गाँव एक सार्वत्रिक लक्षण हैं।
4. बस्तियों के प्रकार के लिए केवल भौतिक लक्षण ही उत्तरदायी होते हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

79. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
Statement 1: विशेषीकृत नगर भी महानगर बनने पर बहुप्र प्रकार्यात्मक बन जाते हैं।
Statement 2: नगरों के प्रकार्य स्थिर नहीं होते, वे गतिशील स्वभाव के होते हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और 2 दोनों गलत हैं।
(C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(D) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

80. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): भारत में नगरों का अभ्युदय प्रागैतिहासिक काल से हुआ है।
कारण (R): सिंधु घाटी सभ्यता के युग में हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे नगर अस्तित्व में थे।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

81. सुरक्षा संबंधी कारक जैसे चोरियों और डकैतियों से सुरक्षा, किस प्रकार की बस्तियों के निर्माण को बढ़ावा देते हैं?
(A) परिक्षिप्त बस्तियाँ
(B) संहत (गुच्छित) बस्तियाँ
(C) पल्ली बस्तियाँ
(D) अर्ध-गुच्छित बस्तियाँ

82. भारत में नगरीकरण की प्रवृत्तियों के दशकों को उनकी दशकीय वृद्धि दर के अनुसार उच्च से निम्न के अवरोही क्रम में व्यवस्थित करें:
1. 1971-81 (46.14%)
2. 1951-61 (26.41%)
3. 1911-21 (8.27%)
4. 1941-51 (41.42%)

(A) 1, 4, 2, 3
(B) 4, 1, 3, 2
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 2, 3, 4, 1

83. निम्नलिखित कथनों के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (स्थानीय नाम)
P. पान्ना
Q. पाड़ा
R. नगला
S. ढाँणी
List II: (संबद्ध बस्ती प्रकार)

125. 1921 और 2011 के बीच भारत की नगरीय जनसंख्या में लगभग कितने गुना वृद्धि हुई? (जनसंख्या 28,086.2 हजार से 3,77,000 हजार के आधार पर)
(A) लगभग 8 गुना
(B) लगभग 10 गुना
(C) लगभग 13 गुना
(D) लगभग 16 गुना

126. भारत में नगरों के अभ्युदय के संबंध में निम्नलिखित को सही कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. अंग्रेजों द्वारा मुंबई, चेन्नई, कोलकाता का विकास
2. रजवाड़ों के मुख्यालय के रूप में नगरों का विकास
3. हड़प्पा और मोहनजोदड़ो का अस्तित्व
4. स्वतंत्रता के बाद औद्योगिक नगरों का विकास
(A) 3, 2, 1, 4
(B) 2, 3, 1, 4
(C) 3, 1, 2, 4
(D) 1, 2, 3, 4

127. सूरत, दमन, गोआ, पांडिचेरी इत्यादि जैसे नगर अंग्रेजों द्वारा किस उद्देश्य से विकसित किए गए थे?
(A) व्यापारिक पत्तनों के रूप में
(B) प्रशासनिक केंद्रों के रूप में
(C) धार्मिक केंद्रों के रूप में
(D) सैन्य छावनियों के रूप में

128. हुगली और सेलम किस प्रकार के नगरों के उदाहरण हैं?
(A) प्रशासन नगर
(B) औद्योगिक नगर
(C) पर्यटन नगर
(D) परिवहन नगर

129. निम्नलिखित कथनों के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (नगरीय जनसंख्या दशकीय वृद्धि दर)
P. 46.14%
Q. 41.42%
R. 38.23%
S. 36.47%
List II: (दशक)
1. 1961-1971
2. 1981-1991
3. 1971-1981
4. 1941-1951
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

130. 20वीं शताब्दी के दौरान (1901-2011) भारत में नगरों और नगरीय संकुलों की संख्या में क्या प्रवृत्ति देखी गई?
(A) दशकीय वृद्धि की सामान्य प्रवृत्ति
(B) संख्या में निरंतर गिरावट आई
(C) संख्या लगभग स्थिर बनी रही
(D) संख्या प्रत्येक दशक में द्विगुणित

131. ग्रामीण बस्तियों के प्रकारों को निर्धारित करने वाले कारकों को किन तीन श्रेणियों में बांटा गया है?
(A) आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक
(B) ऐतिहासिक, भौगोलिक और आर्थिक
(C) भौतिक, सांस्कृतिक-मानवजातीय और सुरक्षा संबंधी
(D) स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय

132. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में परिक्षिप्त बस्तियाँ सुदूर जंगलों में पाई जाती हैं।
2. ये छोटी पहाड़ियों की ढालों पर भी दिखाई पड़ती हैं।
3. बस्ती का यह चरम विक्षेपण भू-भाग की विखंडित प्रकृति के कारण होता है।
4. इस प्रकार की बस्तियाँ उत्तर भारत के जलोढ़ मैदानों में आम हैं।
5. मेघालय और उत्तराखंड में यह प्रकार पाया जाता है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2, 3 और 4
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

133. एक बस्ती का वर्णन इस प्रकार है: "यहाँ समाज के प्रमुख समुदाय गाँव के केंद्रीय भाग में रहते हैं, जबकि निचले तबके के लोग बाहरी हिस्सों में बसते हैं।" यह किस प्रकार की बस्ती का वर्णन है?
(A) गुच्छित बस्ती
(B) पल्ली बस्ती
(C) अर्ध-गुच्छित बस्ती
(D) परिक्षिप्त बस्ती

134. निम्नलिखित में से कौन सा एक जोड़ा गलत है?
(A) प्राचीन नगर - पाटलिपुत्र
(B) आधुनिक नगर (प्रशासनिक) - आगरा
(C) मध्यकालीन नगर - हैदराबाद
(D) आधुनिक नगर (औद्योगिक) - दुर्गापुर

135. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): नगरीय बस्तियाँ अकृषि, आर्थिक और प्रशासकीय प्रकार्यों में संलग्न होती हैं।
कारण (R): नगरीय बस्तियाँ कच्चे माल के प्रक्रमण, विनिर्माण और विभिन्न प्रकार की सेवाओं पर निर्भर करती हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) both सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(D) परिवहन और संचार नेटवर्क।

155. स्रोत में वर्णित 'प्रसरण' की प्रक्रिया का क्या अर्थ है?
(A) बढ़ती ग्रामीण आबादी का रोजगार हेतु निरंतर बड़े शहरों की ओर होने वाला पलायन।
(B) ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्यों का आधुनिकीकरण और उनका पूर्ण व्यवसायीकरण।
(C) नगरीय केंद्रों से नवाचारों एवं प्रभावों का ग्रामीण क्षेत्रों की ओर विस्तृत होना।
(D) नगरों के आंतरिक भागों में जनसंख्या घनत्व का समय के साथ निरंतर कम होना।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
ग्रामीण बस्तियों के प्रारूप और आकारिकी को निर्धारित करने में विभिन्न कारकों की एक जटिल अंतःक्रिया शामिल होती है। इन्हें मोटे तौर पर भौतिक, सामाजिक-सांस्कृतिक और सुरक्षा संबंधी कारकों में वर्गीकृत किया जा सकता है। भौतिक कारक, जैसे भू-आकृति, जलवायु, जल की उपलब्धता और मिट्टी की उर्वरता, बस्ती के स्थान और विन्यास पर सीधा प्रभाव डालते हैं। उदाहरण के लिए, समतल और उपजाऊ जलोढ़ मैदानों में, जहाँ कृषि के लिए भूमि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती है, अक्सर गुच्छित या संहत बस्तियों का विकास होता है। इसके विपरीत, पहाड़ी या वनाच्छादित क्षेत्रों में, जहाँ संसाधन बिखरे होते हैं, परिक्षिप्त या एकाकी बस्तियों का प्रारूप विकसित होता है। सामाजिक-सांस्कृतिक कारक, जिनमें जाति, धर्म और सामाजिक संरचना शामिल है, भी बस्ती के आंतरिक विन्यास को प्रभावित करते हैं। भारत के कई गाँवों में यह देखा गया है कि मुख्य गाँव के केंद्र में प्रमुख जाति का निवास होता है, जबकि निम्न सामाजिक पदानुक्रम वाले समूह गाँव की परिधि पर बसते हैं। यह सामाजिक स्तरीकरण बस्ती के भौतिक लेआउट में परिलक्षित होता है। सुरक्षा संबंधी कारक भी ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण रहे हैं। बाहरी आक्रमणों, डकैती या वन्यजीवों के भय से ग्रस्त क्षेत्रों में, लोग सुरक्षा और सामुदायिक रक्षा के लिए एक साथ मिलकर संहत गाँवों में रहना पसंद करते थे। इस प्रकार, किसी भी ग्रामीण बस्ती का प्रारूप इन विभिन्न कारकों के संयोजन का एक अनूठा परिणाम होता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. समतल और उपजाऊ जलोढ़ मैदानों में सामान्यतः किस प्रकार की बस्तियों का विकास होता है?
(A) परिक्षिप्त या एकाकी बस्तियाँ।
(B) गुच्छित या संहत बस्तियाँ।
(C) रैखिक बस्तियाँ।
(D) सीढ़ीदार बस्तियाँ।

157. स्रोत के अनुसार, पहाड़ी और वनाच्छादित क्षेत्रों में परिक्षिप्त बस्तियों के विकास का मुख्य कारण क्या है?
(A) सामाजिक स्तरीकरण की उपस्थिति।
(B) बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा की आवश्यकता।
(C) जल की अत्यधिक उपलब्धता।
(D) संसाधनों का बिखरा हुआ होना।

158. भारतीय गाँवों में बस्ती के आंतरिक विन्यास पर निम्नलिखित में से कौन सा कारक महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है?
(A) जाति और सामाजिक संरचना।
(B) केवल जलवायु।
(C) केवल मिट्टी की उर्वरता।
(D) केवल परिवहन मार्गों से दूरी।

159. ऐतिहासिक रूप से, सुरक्षा कारणों से लोगों ने संहत गाँवों में रहना क्यों पसंद किया?
(A) कृषि कार्यों के संपादन हेतु उपलब्ध बेहतर और सुलभ कृषि अवसरों के उपयोग के लिए।
(B) तत्कालीन प्रचलित सरकारी नियमों और निर्देशों का कड़ाई से पालन करने के लिए।
(C) सामुदायिक रक्षा सुनिश्चित करने एवं बाहरी खतरों से सुरक्षा प्राप्त करने हेतु।
(D) स्थानीय स्तर पर व्यापक व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए।

160. निम्नलिखित में से कौन सा एक भौतिक कारक नहीं है जो ग्रामीण बस्तियों के प्रारूप को प्रभावित करता है?
(A) सामाजिक पदानुक्रम।
(B) भू-आकृति।
(C) जल की उपलब्धता।
(D) जलवायु।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारत में नगरों का विकास एक लंबी और सतत ऐतिहासिक प्रक्रिया रही है, जिसे तीन प्रमुख कालों में विभाजित किया जा सकता है: प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक। प्राचीन काल के नगर, जैसे सिंधु घाटी सभ्यता के हड़प्पा और मोहनजोदड़ो, उन्नत शहरी नियोजन और इंजीनियरिंग के प्रमाण हैं। बाद के प्राचीन नगर, जैसे वाराणसी और पाटलिपुत्र, अक्सर नदी घाटियों में धार्मिक, सांस्कृतिक या प्रशासनिक केंद्रों के रूप में विकसित हुए। मध्यकाल में, राजपूत और मुगल शासकों के अधीन नए नगरों का उदय हुआ, जो मुख्यतः किला-शहरों के रूप में थे। इन नगरों, जैसे दिल्ली, आगरा और जयपुर, की विशेषता विशाल किले, महल, मस्जिदें और संकीर्ण गलियों वाले बाज़ार थे, जो सामंती व्यवस्था और शाही शक्ति को दर्शाते थे। इन नगरों की अर्थव्यवस्था अक्सर हस्तशिल्प और शाही संरक्षण पर आधारित थी। आधुनिक काल का आरंभ भारत में यूरोपीय शक्तियों, विशेषकर अंग्रेजों के आगमन के साथ हुआ। उन्होंने अपनी व्यापारिक और सामरिक आवश्यकताओं के लिए तटीय स्थानों पर पत्तन-शहरों (Port cities) जैसे बंबई, कलकत्ता और मद्रास की स्थापना की। इसके अतिरिक्त, उन्होंने प्रशासनिक सुविधा और ग्रीष्मकालीन प्रवास के लिए पर्वतीय स्थलों (Hill stations) जैसे शिमला और दार्जिलिंग का विकास किया। स्वतंत्रता के बाद, भारत सरकार ने प्रशासनिक राजधानियों (जैसे चंडीगढ़, भुवनेश्वर)

2. ये अकृषि, आर्थिक और प्रशासकीय प्रकार्यों में संलग्न होती हैं।
3. नगर गाँवों से केवल अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े होते हैं।
4. नगर अपने चारों ओर के क्षेत्रों से प्रकार्यात्मक रूप में जुड़ा होता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

148. कौन सा कारक परिक्षिप्त बस्तियों के निर्माण के लिए उत्तरदायी है?
(A) सुरक्षा संबंधी उच्च आवश्यकता
(B) उपजाऊ भूमि की प्रचुर उपलब्धता
(C) अत्यधिक मजबूत सामाजिक बंधन
(D) विखंडित भूमि संसाधन आधार

149. निम्नलिखित कथनों के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (नगर का प्रकार)
P. वाणिज्यिक
Q. खनन
R. गैरिसन
S. शैक्षिक
List II: (उदाहरण)
1. झरिया
2. जालंधर
3. अलीगढ़
4. सहारनपुर
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

150. "विरल रूप से अवस्थित छोटी बस्तियाँ, जो कृषि अथवा अन्य प्राथमिक क्रियाकलापों में विशिष्टता प्राप्त कर लेती हैं, गाँव कहलाती हैं।" यह परिभाषा किस आधार पर दी गई है?
(A) स्थानीय आकार और सघन अवस्थिति
(B) मुख्य रूप से आर्थिक क्रियाकलाप
(C) क्षेत्र की विशेष सामाजिक संरचना
(D) अवस्थिति और आर्थिक क्रियाकलाप

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
मानव बस्तियों को सामान्यतः ग्रामीण और नगरीय श्रेणियों में विभाजित किया जाता है, परन्तु यह विभाजन अत्यधिक सरल है। वास्तविकता में, इन दोनों के बीच एक स्पष्ट विभाजन रेखा खींचना कठिन है। इसके बजाय, कई भूगोलवेत्ता 'ग्रामीण-नगरीय सातत्य' (Rural-Urban Continuum) की अवधारणा का उपयोग करते हैं, जो यह मानता है कि बस्तियाँ एक रैखिक पैमाने पर मौजूद हैं, जिसके एक छोर पर पूर्णतः ग्रामीण और दूसरे छोर पर पूर्णतः नगरीय विशेषताएँ हैं। इस सातत्य के मध्य में ऐसी बस्तियाँ स्थित होती हैं जिनमें मिश्रित लक्षण पाए जाते हैं, जैसे उपनगरीय क्षेत्र या 'पेरी-अर्बन' क्षेत्र। ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों के बीच प्रकार्यात्मक अन्योन्याश्रय अत्यंत महत्वपूर्ण है। नगर अपने ग्रामीण पृष्ठ प्रदेश (hinterland) से कच्चा माल, खाद्य पदार्थ और श्रम प्राप्त करते हैं, जबकि वे ग्रामीण क्षेत्रों को विनिर्मित वस्तुएँ, विशेषीकृत सेवाएँ (जैसे स्वास्थ्य और उच्च शिक्षा) और प्रशासनिक सुविधाएँ प्रदान करते हैं। यह संबंध एक द्विपक्षीय प्रवाह है जो परिवहन और संचार नेटवर्क के माध्यम से सुगम बनता है। नगरीय केंद्र नवाचार और आर्थिक विकास के इंजन के रूप में कार्य करते हैं, जिनके प्रभाव धीरे-धीरे ग्रामीण क्षेत्रों तक फैलते हैं, जिसे 'प्रसरण' (diffusion) की प्रक्रिया कहा जाता है। इस प्रकार, ग्रामीण और नगरीय बस्तियाँ पृथक इकाइयाँ न होकर एक जटिल और एकीकृत व्यवस्था के हिस्से हैं।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. 'ग्रामीण-नगरीय सातत्य' की अवधारणा क्या बताती है?
(A) ग्रामीण और नगरीय बस्तियों के मध्य किसी भी प्रकार के संबंध का पूर्णतः अभाव होना।
(B) बस्तियों का ग्रामीण-नगरीय विशेषताओं के एक क्रमिक पैमाने पर स्थित होना।
(C) सभी बस्तियों का अनिवार्य रूप से या तो पूर्णतः ग्रामीण या पूर्णतः नगरीय ही होना।
(D) नगरीय बस्तियों का ग्रामीण बस्तियों की तुलना में सदैव हर प्रकार से श्रेष्ठ होना।

152. स्रोत के अनुसार, नगर अपने ग्रामीण पृष्ठ प्रदेश से क्या प्राप्त करते हैं?
(A) कच्चा माल, खाद्य पदार्थ और श्रम।
(B) केवल विनिर्मित वस्तुएँ और प्रौद्योगिकी।
(C) केवल प्रशासनिक और स्वास्थ्य सेवाएँ।
(D) नवाचार और आर्थिक विकास के अवसर।

153. 'पेरी-अर्बन' क्षेत्र वे क्षेत्र हैं जो:
(A) वे क्षेत्र जो अनिवार्य रूप से केवल पूर्णतः नगरीय विशेषताओं से ही युक्त होते हैं।
(B) वे क्षेत्र जो अनिवार्य रूप से केवल पूर्णतः ग्रामीण विशेषताओं से ही युक्त होते हैं।
(C) सातत्य के मध्य स्थित वे क्षेत्र जो मिश्रित लक्षण प्रदर्शित करते हैं।
(D) वे क्षेत्र जो अपने निकटतम ग्रामीण पृष्ठ प्रदेश से पूरी तरह से कटे हुए होते हैं।

154. ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों के बीच प्रकार्यात्मक अन्योन्याश्रय को कौन सुगम बनाता है?
(A) सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ।
(B) केवल सरकारी नीतियां।
(C) भौगोलिक अलगाव।

115. निम्नलिखित कथनों के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

List I: (शहर)
P. डिगबोई
Q. महू
R. अलीगढ़
S. माउंट आबू

List II: (प्रकार)
1. गैरिसन नगर
2. पर्यटन नगर
3. खनन नगर
4. शैक्षिक नगर

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

116. किस दशक में भारत में नगरों/नगरीय संकुलों की संख्या में पिछले दशक की तुलना में कमी आई थी?
(A) 1911-1921
(B) 1981-1991
(C) 1901-1911
(D) 1951-1961

117. ग्रामीण बस्तियों के प्रकारों को प्रभावित करने वाले सुरक्षा संबंधी कारकों में क्या शामिल है?
(A) जलवायु और ऊँचाई
(B) जाति और धर्म
(C) चोरियों और डकैतियों से सुरक्षा
(D) जल की उपलब्धता

118. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में प्राचीन नगरों का विकास धार्मिक अथवा सांस्कृतिक केंद्रों के रूप में हुआ है।
2. प्रयाग, पाटलिपुत्र और मदुरई प्राचीन नगर हैं।
3. आधुनिक नगरों का विकास केवल अंग्रेजों ने किया।
4. 1850 के बाद आधुनिक उद्योगों पर आधारित नगरों का भी जन्म हुआ।
5. जमशेदपुर इसका एक उदाहरण है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2, 3 और 4
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

119. 'पश्च भूमि' (hinterland) का क्या अर्थ है?
(A) नगर का केंद्रीय क्षेत्र
(B) दूर स्थित दूसरा नगर
(C) नगर का औद्योगिक क्षेत्र
(D) नगर से जुड़ा ग्रामीण क्षेत्र

120. निम्नलिखित में से कौन सी एक गुच्छित बस्ती की विशेषता नहीं है?
(A) घरों का दूर-दूर बिखरा होना।
(B) घरों का संहत रुप से निर्मित होना।
(C) स्पष्ट और पृथक रहन-सहन का सामान्य क्षेत्र।
(D) आयताकार, अरीय, रैखिक जैसी ज्यामितीय आकृतियाँ प्रस्तुत करना।

121. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): दुर्गापुर, भिलाई, सिंदरी और बरौनी औद्योगिक केंद्रों के रूप में विकसित हुए।
कारण (R): ये सभी नगर स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् विकसित हुए।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) both सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

122. बस्तियों की प्रक्रिया में क्या सम्मिलित होता है?
(A) लोगों का समूहन और उनके संसाधन आधार के रूप में क्षेत्र का आवंटन दोनों
(B) केवल लोगों का समूहन
(C) केवल संसाधन आधार के रूप में क्षेत्र का आवंटन
(D) न तो लोगों का समूहन और न ही क्षेत्र का आवंटन

123. निम्नलिखित में से किस पर्यावरण में परिक्षिप्त ग्रामीण बस्तियों की अपेक्षा नहीं की जा सकती?
(A) हिमालय की निचली घाटियाँ
(B) राजस्थान के शुष्क और अर्ध-शुष्क प्रदेश
(C) उत्तर-पूर्व के वन और पहाड़ियाँ
(D) गंगा का जलोढ़ मैदान

124. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. नगर गाँवों से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार से जुड़े होते हैं।
2. नगर परस्पर भी जुड़े हुए होते हैं।
3. वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय हमेशा प्रत्यक्ष रूप से होता है।
4. विनिमय मंडी शहरों और नगरों की श्रृंखला के माध्यम से भी संपन्न होता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2 और 4
(C) केवल 2, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

और औद्योगिक केंद्रों (जैसे भिलाई, दुर्गापुर) के रूप में कई नियोजित शहरों का निर्माण किया, जो आधुनिक भारत की विकास आकांक्षाओं का प्रतीक हैं।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. स्रोत के अनुसार, मध्यकालीन भारतीय नगरों की एक प्रमुख विशेषता क्या थी?
(A) वे नगर जो मुख्यतः तटीय क्षेत्रों में स्थित प्रमुख व्यापारिक केंद्र के रूप में प्रसिद्ध थे।
(B) वे नगर जो अपनी उन्नत और विशिष्ट ग्रिड-आधारित शहरी नियोजन प्रणाली के लिए जाने जाते थे।
(C) वे नगर जो स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात नियोजित औद्योगिक केंद्रों के रूप में स्थापित किए गए।
(D) वे विशाल किलों एवं महलों से युक्त किला-शहरों के रूप में विकसित हुए।

162. अंग्रेजों ने शिमला और दार्जिलिंग जैसे पर्वतीय स्थलों का विकास क्यों किया?
(A) पहाड़ी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर भारी औद्योगिक इकाइयों की आधारशिला रखने के लिए।
(B) प्रशासनिक सुगमता प्राप्त करने एवं ग्रीष्मकालीन प्रवास सुनिश्चित करने हेतु।
(C) इन पर्वतीय स्थलों का प्रमुख अंतरराष्ट्रीय समुद्री बंदरगाहों के रूप में उपयोग करने के लिए।
(D) इन विशिष्ट स्थानों को प्रमुख धार्मिक और आध्यात्मिक केंद्रों के रूप में विकसित करने के लिए।

163. चंडीगढ़ और भुवनेश्वर किस प्रकार के नगरों के उदाहरण हैं?
(A) प्राचीन काल के प्रमुख धार्मिक एवं सांस्कृतिक केंद्रों के रूप में प्रतिष्ठित नगर।
(B) मध्यकालीन युग के दौरान विकसित किए गए सुदृढ़ और विशाल किला-शहरों का समूह।
(C) स्वतंत्रता उपरांत विकसित किए गए नियोजित प्रशासनिक नगर।
(D) औपनिवेशिक काल के दौरान स्थापित किए गए प्रमुख तटीय पत्तन-शहरों की श्रेणी।

164. प्राचीन भारतीय नगर, जैसे वाराणसी और पाटलिपुत्र, सामान्यतः कहाँ विकसित हुए?
(A) शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्रों में।
(B) ऊँचे पर्वतीय शिखरों पर।
(C) तटीय द्वीपों पर।
(D) नदी घाटियों में।

165. बंबई, कलकत्ता और मद्रास जैसे शहरों की स्थापना यूरोपीय शक्तियों द्वारा मुख्य रूप से किस उद्देश्य के लिए की गई थी?
(A) व्यापारिक एवं सामरिक लक्ष्यों की पूर्ति हेतु पत्तन-शहरों के रूप में।
(B) क्षेत्रीय स्तर पर सघन कृषि विकास के प्रमुख केंद्र के रूप में इन नगरों को स्थापित करने हेतु।
(C) स्थानीय स्तर पर प्रचलित पारंपरिक हस्तशिल्प और कुटीर उद्योगों को व्यापक बढ़ावा देने के लिए।
(D) केवल ग्रीष्मकालीन राजधानी के रूप में उपयोग किए जाने वाले विशिष्ट प्रशासनिक केंद्र के रूप में।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
नगरों को उनके द्वारा निष्पादित प्रमुख कार्यों के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। यह प्रकार्यात्मक वर्गीकरण किसी नगर के 'आर्थिक आधार' (Economic Base) की अवधारणा पर निर्भर करता है, जो उन गतिविधियों को संदर्भित करता है जो नगर के लिए आय उत्पन्न करती हैं और उसके विकास को गति देती हैं। हालाँकि अधिकांश बड़े नगर बहुप्रकार्यात्मक होते हैं, फिर भी उनमें कोई एक या दो कार्य प्रमुख होते हैं जो उनकी पहचान और चरित्र को परिभाषित करते हैं। उदाहरण के लिए, प्रशासनिक नगर वे होते हैं जहाँ सरकारी कार्यालय, विधानसभाएँ और अन्य प्रशासनिक मुख्यालय केंद्रित होते हैं, जैसे नई दिल्ली या गांधीनगर। इन नगरों का भूदृश्य अक्सर चौड़ी सड़कों, बड़े सरकारी भवनों और आवासीय क्षेत्रों द्वारा चिह्नित होता है। औद्योगिक नगर, जैसे जमशेदपुर या भिलाई, मुख्य रूप से विनिर्माण और उत्पादन पर केंद्रित होते हैं। उनकी आकारिकी में कारखाने, श्रमिकों के आवास और संबंधित अवसंरचना प्रमुख होती है। परिवहन नगर पत्तन, जंक्शन या हब के रूप में विकसित होते हैं, जो वस्तुओं और लोगों के प्रवाह को संभालते हैं, जैसे कांडला (पत्तन) या मुगलसराय (रेलवे जंक्शन)। इसी तरह, शैक्षिक नगर (जैसे अलीगढ़), धार्मिक नगर (जैसे हरिद्वार) और पर्यटन नगर (जैसे नैनीताल) भी अपने विशेष कार्यों के कारण विशिष्ट पहचान रखते हैं। समय के साथ, नगरों के कार्यों में परिवर्तन हो सकता है, और एक विशेषीकृत नगर विकसित होकर बहुप्रकार्यात्मक महानगर बन सकता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. किसी नगर के 'आर्थिक आधार' का क्या अर्थ है?
(A) किसी विशेष नगर का संपूर्ण ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और उसका विस्तृत सांस्कृतिक महत्व।
(B) वे गतिविधियाँ जो नगर हेतु आय सृजित कर उसके विकास को गति प्रदान करती हैं।
(C) नगर की संपूर्ण कुल जनसंख्या का परिमाण और उसके प्रति इकाई क्षेत्रफल का घनत्व।
(D) नगर के भौगोलिक क्षेत्र में स्थित विभिन्न प्रकार के शैक्षिक संस्थानों की कुल संख्या।

167. स्रोत के अनुसार, नई दिल्ली और गांधीनगर को किस प्रकार के नगर के रूप में वर्गीकृत किया गया है?
(A) औद्योगिक नगर।
(B) प्रशासनिक नगर।
(C) परिवहन नगर।
(D) पर्यटन नगर।

विपरीत पाटलिपुत्र और आगरा प्राचीन और मध्यकालीन नगरों की श्रेणी में आते हैं।

23. (D) मुंबई, चेन्नई, कोलकाता
अंग्रेजों ने भारत में अपने शासन के दौरान मुंबई, चेन्नई और कोलकाता को मुख्य नोडों के रूप में विकसित किया। इन नगरों का निर्माण ब्रिटिश शैली में किया गया था और ये औपनिवेशिक व्यापार और प्रशासन के केंद्र थे। इन तीनों शहरों ने तेजी से विकास किया और आधुनिक भारत के सबसे बड़े महानगरों के रूप में उभरे। इनके माध्यम से अंग्रेजों ने भारतीय अर्थव्यवस्था और संसाधनों पर अपना नियंत्रण स्थापित किया था।

24. (A) केवल 1 और 2
नगर आर्थिक वृद्धि के केंद्रों के रूप में कार्य करते हैं और ग्रामीण क्षेत्रों को विभिन्न सेवाएँ प्रदान करते हैं। नगरीय और ग्रामीण बस्तियों के बीच परिवहन और संचार के माध्यम से एक प्रकार्यात्मक संबंध बना रहता है। ग्रामीण लोग शहरों की तुलना में कम गतिशील होते हैं और शहरों में सामाजिक संबंध अक्सर औपचारिक होते हैं। यह गतिशीलता और संबंधों का स्वरूप शहरी एवं ग्रामीण जीवन के बुनियादी अंतर को प्रकट करता है।

25. (C) चंडीगढ़ और भुवनेश्वर
स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने कई नए शहरों को प्रशासनिक केंद्रों के रूप में योजनाबद्ध तरीके से विकसित किया। चंडीगढ़ और भुवनेश्वर इसके बेहतरीन उदाहरण हैं। गांधीनगर और दिसपुर भी इसी श्रेणी में आते हैं। ये नगर आधुनिक सुविधाओं से लैस हैं और राज्यों के प्रशासनिक मुख्यालयों के रूप में कार्य करते हैं। इसके विपरीत, भिलाई और जमशेदपुर जैसे नगर औद्योगिक केंद्रों के रूप में विकसित हुए थे, न कि प्रशासनिक मुख्यालयों के रूप में।

26. (A) 31.16%
2011 की जनगणना के अनुसार भारत में नगरीकरण का स्तर 31.16 प्रतिशत दर्ज किया गया था। यह प्रतिशत देश की कुल जनसंख्या में शहरों में रहने वाले लोगों की हिस्सेदारी को दर्शाता है। पिछले दशकों की तुलना में नगरीय जनसंख्या में निरंतर वृद्धि हुई है, जिसका मुख्य कारण ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर प्रवास और नए नगरीय क्षेत्रों का उदय है। यह आंकड़ा भारत के बढ़ते शहरीकरण की प्रवृत्ति का सूचक है।

27. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
दिल्ली जैसे महानगरों पर जनसंख्या का अत्यधिक दबाव कम करने के लिए उनके आसपास अनुषंगी नगरों का विकास किया गया। गाजियाबाद, गुरुग्राम और फरीदाबाद इसी योजना के तहत विकसित हुए। ये नगर न केवल आवास प्रदान करते हैं बल्कि स्वतंत्र आर्थिक केंद्रों के रूप में भी कार्य करते हैं। इस प्रकार, अभिकथन और कारण दोनों सही हैं क्योंकि अनुषंगी नगरों का मुख्य उद्देश्य मुख्य शहर का बोझ साझा करना है।

28. (B) 1971-1981
भारत में नगरीय जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर 1971-1981 के दौरान सर्वाधिक रही थी, जो लगभग 46.14 प्रतिशत थी। इस दशक में तेजी से औद्योगिक विकास और ग्रामीण-नगरीय प्रवास के कारण शहरों की आबादी में अभूतपूर्व उछाल आया। इसके बाद के दशकों में यह वृद्धि दर धीरे-धीरे कम होने लगी। यह काल भारत के शहरीकरण के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर माना जाता है, जो तीव्र विस्तार को दर्शाता है।

29. (C) कोलकाता - खनन नगर
कोलकाता एक आधुनिक व्यापारिक और प्रशासनिक नगर है, न कि खनन नगर। झरिया, रानीगंज और सिंगरौली जैसे नगर खनन गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध हैं। चंडीगढ़ प्रशासन नगर है, जमशेदपुर औद्योगिक नगर है और अंबाला एक प्रमुख गैरिसन या छावनी नगर है। नगरों का यह वर्गीकरण वहां होने वाली मुख्य आर्थिक गतिविधि के आधार पर किया जाता है। कोलकाता का विकास एक व्यापारिक पत्तन और राजधानी के रूप में हुआ था।

30. (B) केवल 1, 3 और 4
भारत में 2000 वर्षों से अधिक पुराने नगर विद्यमान हैं। प्रयाग एक प्राचीन नगर है, जबकि दिल्ली एक मध्यकालीन किला नगर है जिसका विकास पुराने खंडहरों पर हुआ। अंग्रेजों ने शुरुआती दौर में तटीय क्षेत्रों में अपनी पकड़ बनाई थी। जमशेदपुर स्वतंत्रता से पहले टाटा द्वारा विकसित एक औद्योगिक नगर है, न कि स्वतंत्रता के बाद बना प्रशासनिक केंद्र। अतः कथन 2 और 5 इस संदर्भ में ऐतिहासिक रूप से असत्य हैं।

31. (A) प्रशासन शहर और नगर
जिन शहरों में उच्चतर क्रम के प्रशासनिक मुख्यालय स्थित होते हैं, उन्हें प्रशासन नगर कहा जाता है। उदाहरण के लिए, नई दिल्ली, चंडीगढ़, भोपाल और गांधीनगर इसी श्रेणी में आते हैं। यहाँ मुख्य रूप से सरकारी कार्य, मंत्रालय और प्रशासनिक सेवाएँ केंद्रित होती हैं। ये नगर पूरे राज्य या देश के प्रशासन के केंद्र के रूप में कार्य करते हैं। इनका स्वरूप और विकास अक्सर सरकारी नीतियों और योजनाबद्ध विकास का परिणाम होता है।

32. (B) औद्योगिक नगर
मुंबई, सेलम, कोयंबटूर और भिलाई जैसे नगरों का मुख्य आधार औद्योगिक गतिविधियाँ हैं। इन नगरों का विकास उद्योगों की स्थापना और विनिर्माण इकाइयों के कारण हुआ है। मुंबई में वस्त्र और वित्त, भिलाई में लोहा एवं इस्पात जैसे उद्योग प्रमुख हैं। औद्योगिक नगरों में श्रमिकों की भारी आबादी निवास करती है और यहाँ की अर्थव्यवस्था कारखानों और उत्पादन पर टिकी होती है। ये नगर देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

33. (C) P-4, Q-1, R-2, S-3
कांडला एक प्रमुख पत्तन और परिवहन नगर है। सतना अपनी व्यापारिक गतिविधियों के कारण वाणिज्यिक नगर की श्रेणी में आता है। रानीगंज कोयला क्षेत्रों में स्थित होने के कारण एक महत्वपूर्ण खनन नगर है। महू एक प्रसिद्ध सैन्य छावनी

(A) ग्रामीण क्षेत्रों की कृषि योग्य मिट्टी की उर्वरता शक्ति में होने वाली निरंतर वृद्धि।
(B) प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र में पाई जाने वाली जैव विविधता के स्तर में व्यापक वृद्धि।
(C) वायु प्रदूषण एवं ठोस अपशिष्ट प्रबंधन से जुड़ी गंभीर समस्याएँ।
(D) ग्रामीण और वन क्षेत्रों के पास होने वाला बड़े पैमाने पर व्यवस्थित वनीकरण कार्य।

ANSWERS

1. (B) मानव आवास हेतु संकुलित घर
मानव बस्ती का तात्पर्य घरों के एक संकुल अथवा समूह से होता है जहाँ मनुष्य निवास करते हैं। बस्ती बनाने की प्रक्रिया में लोगों का एक स्थान पर समूहन और उनके आर्थिक पोषण के लिए एक संसाधन आधार का आवंटन सम्मिलित होता है। बस्तियाँ आकार और प्रकार में एक छोटी झोपड़ी से लेकर बड़े महानगरों तक विस्तृत होती हैं।

2. (A) राजनीतिक दल की संबद्धता
ग्रामीण और नगरीय बस्तियों के बीच मुख्य अंतर उनके आर्थिक क्रियाकलापों, सामाजिक संबंधों और जीवन जीने के तरीके पर आधारित होता है। ग्रामीण बस्तियाँ प्राथमिक क्रियाओं पर निर्भर होती हैं, जबकि नगरीय बस्तियाँ द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों में विशिष्टता रखती हैं। राजनीतिक दल की संबद्धता एक व्यक्तिगत विषय है, जो बस्तियों के भौगोलिक वर्गीकरण का आधार नहीं बनता है।

3. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
गुच्छित बस्तियाँ संहत रुप से निर्मित क्षेत्र होती हैं, जबकि अर्ध-गुच्छित बस्तियाँ किसी बड़े गाँव के विखंडन से बनती हैं। पल्ली बस्तियाँ भौतिक रूप से अलग इकाइयों जैसे पाड़ा या पाली में विभाजित होती हैं। परिक्षिप्त बस्तियाँ सुदूर जंगलों या ढालों पर एकाकी झोपड़ियों के रूप में पाई जाती हैं। यह वर्गीकरण बस्तियों के विन्यास और क्षेत्रीय विस्तार को दर्शाता है।

4. (D) जाति और धर्म
ग्रामीण बस्तियों के प्रकारों को निर्धारित करने वाले भौतिक लक्षणों में भू-भाग की प्रकृति, ऊँचाई, जलवायु और जल की उपलब्धता प्रमुख हैं। ये कारक तय करते हैं कि घर पास-पास होंगे या दूर। जाति और धर्म को सांस्कृतिक तथा मानवजातीय कारकों की श्रेणी में रखा जाता है। भौतिक कारक प्राकृतिक पर्यावरण से संबंधित होते हैं, जो बस्ती के स्वरुप को प्रभावित करते हैं।

5. (C) ये सामान्यतः संहत और विशाल आकार की होती हैं।
नगरीय बस्तियाँ अपने विशाल आकार और घरों के संहत विन्यास के लिए जानी जाती हैं। ये क्षेत्र मुख्य रूप से विनिर्माण, व्यापार और सेवाओं जैसे गैर-कृषि कार्यों में संलग्न होते हैं। यहाँ जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है और जीवन की गति काफी तीव्र होती है। ये अपने आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए आर्थिक वृद्धि के नोड के रूप में कार्य करती हैं।

6. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में जल एक दुर्लभ संसाधन है, जिसके कारण लोग उपलब्ध जल स्रोतों के निकट बसने को मजबूर होते हैं। जल संसाधनों का अधिकतम और साझा उपयोग सुनिश्चित करने के लिए संहत या गुच्छित बस्तियों का निर्माण अनिवार्य हो जाता है। यहाँ जल की उपलब्धता ही बस्ती के स्वरुप और लोगों के एक साथ रहने के मुख्य कारण को निर्धारित करती है।

7. (D) पल्ली बस्तियाँ
जब कोई बस्ती भौतिक रूप से एक-दूसरे से पृथक कई इकाइयों में बँट जाती है, लेकिन उनका नाम एक ही रहता है, तो उसे पल्ली बस्ती कहते हैं। स्थानीय स्तर पर इन इकाइयों को पान्ना, पाड़ा, पाली, नगला और ढाँणी जैसे नामों से जाना जाता है। इस प्रकार का खंडीभवन अक्सर सामाजिक और मानवजातीय कारकों द्वारा प्रेरित होता है, जो समुदायों के अलगाव को दर्शाता है।

8. (A) पल्ली बस्तियाँ
पल्ली बस्तियाँ मुख्य रूप से मध्य और निम्न गंगा के मैदानों, छत्तीसगढ़ और हिमालय की निचली घाटियों में पाई जाती हैं। इन क्षेत्रों में सामाजिक और जातीय कारकों के कारण एक बड़ा गाँव कई छोटी इकाइयों में बँट जाता है। यद्यपि ये इकाइयाँ भौगोलिक रूप से अलग होती हैं, लेकिन प्रशासनिक रूप से इन्हें एक ही गाँव माना जाता है। यह विखंडन भारतीय ग्रामीण संरचना की एक विशेषता है।

9. (D) सभी 1, 2, 3 और 4
गुच्छित बस्तियाँ उपजाऊ मैदानों और उत्तर-पूर्वी राज्यों में सामान्य हैं, जहाँ घर संहत होते हैं और रहन-सहन का क्षेत्र खेतों से अलग होता है। मध्य भारत में सुरक्षा कारणों से सुरक्षा के लिए लोग एक साथ संकुलित होकर रहते हैं। ये सभी विशेषताएँ गुच्छित बस्तियों के स्वरूप को परिभाषित करती हैं। यह प्रारूप कृषि प्रधान और सुरक्षा के प्रति संवेदनशील क्षेत्रों में अधिक विकसित होता है।

10. (A) परिक्षिप्त या एकाकी बस्तियाँ
परिक्षिप्त बस्तियाँ सुदूर जंगलों, ऊबड़-खाबड़ भू-भाग और पहाड़ी ढालों पर पाई जाती हैं। मेघालय, केरल, उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश के कई भागों में यह प्रारूप सामान्य है क्योंकि वहाँ भूमि संसाधन आधार विखंडित होता है। लोग अपने खेतों या चरागाहों के पास एकाकी झोपड़ियों में रहना पसंद करते हैं। इस प्रकार की बस्तियों में घरों के बीच की दूरी बहुत अधिक होती है।

11. (D) अर्ध-गुच्छित बस्ती
अर्ध-गुच्छित बस्तियाँ तब बनती हैं जब किसी संहत गाँव का एक वर्ग स्वेच्छा से या बलपूर्वक मुख्य गाँव से कुछ दूरी पर बसने लगता है। आमतौर पर प्रभावशाली समुदाय गाँव के केंद्र पर कब्जा कर लेते हैं, जबकि समाज के निचले तबके के लोग गाँव के बाहरी हिस्सों में रहते हैं। यह प्रक्रिया सामाजिक

भेदभाव या स्थान की कमी के कारण विकसित होती है, जो बस्ती के स्वरूप को बदल देती है।

12. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
भारत के उत्तरी मैदानों में उपजाऊ भूमि के कारण गुच्छित बस्तियाँ अधिक पाई जाती हैं। गुजरात के मैदानों में अर्ध-गुच्छित प्रारूप का विस्तार देखा जाता है। छत्तीसगढ़ के क्षेत्रों में पल्ली बस्तियाँ स्थानीय नामों के साथ विद्यमान हैं। मेघालय जैसे पहाड़ी और वन क्षेत्रों में भूमि के विखंडन के कारण परिक्षिप्त बस्तियाँ प्रमुखता से दिखाई देती हैं। यह वितरण क्षेत्रीय भूगोल और सामाजिक संरचना को दर्शाता है।

13. (C) 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर
1991 की जनगणना के अनुसार, किसी भी बस्ती को नगरीय घोषित करने के लिए कई मापदंड निर्धारित किए गए हैं। इनमें न्यूनतम 5000 की जनसंख्या, कम से कम 75 प्रतिशत पुरुष श्रमिकों का गैर-कृषि कार्यों में संलग्न होना और जनसंख्या घनत्व 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से अधिक होना अनिवार्य है। यह परिभाषा सांख्यिकीय आधार पर ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों के बीच स्पष्ट विभाजन रेखा खींचती है।

14. (D) विखंडित भूमि संसाधन आधार
परिक्षिप्त बस्तियों के बनने का प्राथमिक कारण भू-भाग की प्रकृति और विखंडित संसाधन आधार होता है। पहाड़ी क्षेत्रों या घने जंगलों में कृषि योग्य भूमि छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटी होती है, जिससे लोग अपने खेतों के निकट ही रहना पसंद करते हैं। इसके परिणामस्वरूप घर एक-दूसरे से काफी दूर स्थित होते हैं। यह प्रारूप विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्रों और प्रायद्वीपीय भारत के पठारों पर देखा जाता है।

15. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या है।
नगरीय क्षेत्रों में तीव्र और जटिल जीवनशैली के साथ सामाजिक संबंध औपचारिक होते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में ये घनिष्ठ होते हैं। यद्यपि दोनों कथन सत्य हैं, लेकिन सामाजिक संबंधों की औपचारिकता केवल जीवन की गति के तीव्र होने का कारण नहीं है। जीवन की जटिलता व्यावसायिक विविधता और तकनीकी विकास से भी जुड़ी होती है। सामाजिक संबंधों का स्वरूप बस्तियों के प्रकार्यात्मक अंतर को स्पष्ट करता है।

16. (B) वाराणसी
वाराणसी भारत के सबसे प्राचीन नगरों में से एक है, जिसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 2000 वर्षों से भी अधिक पुरानी है। इन प्राचीन नगरों का विकास मुख्य रूप से धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्रों के रूप में हुआ था। प्रयाग और मदुरई भी इसी श्रेणी के उदाहरण हैं। ये नगर प्राचीन सभ्यता के प्रतीक हैं और आज भी अपनी धार्मिक विरासत के कारण वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

17. (B) 2, 3, 1
भारत में नगरों के विकास का क्रम प्राचीन काल से आधुनिक काल तक विस्तृत है। सबसे पहले धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्रों के रूप में प्राचीन नगर विकसित हुए। इसके बाद मध्यकाल में किलों और प्रशासनिक मुख्यालयों के रूप में मध्यकालीन नगरों का उदय हुआ। अंत में, यूरोपीय आगमन के बाद व्यापारिक पत्तनों और औद्योगिक केंद्रों के रूप में आधुनिक नगर अस्तित्व में आए। यह क्रम शहरीकरण के ऐतिहासिक विकास को दर्शाता है।

18. (A) केवल 1, 2 और 3
अर्ध-गुच्छित बस्तियाँ गुच्छित होने की प्रवृत्ति का परिणाम होती हैं जहाँ सामाजिक कारणों से लोग गाँव के अलग-अलग हिस्सों में बसते हैं। इसमें प्रभावशाली वर्ग केंद्र में रहता है और श्रमिक वर्ग बाहरी सीमा पर बसता है। यह प्रारूप केवल हिमालय तक सीमित नहीं है, बल्कि गुजरात और राजस्थान में भी पाया जाता है। इनका निर्माण स्वेच्छा के साथ-साथ सामाजिक दबाव या बलपूर्वक भी हो सकता है।

19. (C) रजवाड़ों और राज्यों के मुख्यालय
मध्यकालीन नगरों का विकास मुख्य रूप से रजवाड़ों और रियासतों के प्रशासनिक मुख्यालयों के रूप में हुआ था। ये नगर अक्सर किला नगर होते थे जो सुरक्षा की दृष्टि से प्राचीन नगरों के खंडहरों या रणनीतिक स्थानों पर बनाए गए थे। दिल्ली, हैदराबाद, जयपुर और लखनऊ इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इन नगरों की संरचना में शासकों के महल और किलों की प्रधानता होती थी जो क्षेत्रीय शक्ति के केंद्र थे।

20. (D) मदुरई
मदुरई एक प्राचीन नगर है जिसका विकास 2000 वर्ष पूर्व धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में हुआ था। इसके विपरीत, दिल्ली, हैदराबाद और जयपुर मध्यकालीन नगर हैं जिनका उदय रियासतों के मुख्यालय के रूप में हुआ। मदुरई जैसे प्राचीन नगर अपनी धार्मिक निरंतरता के लिए जाने जाते हैं। मध्यकालीन नगरों की पहचान उनके किलों और विशेष स्थापत्य कला से होती है जो दिल्ली सुल्तानों और मुगल शासकों के काल में विकसित हुई।

21. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
वाराणसी एक प्राचीन नगर है, जबकि दिल्ली का विकास मध्यकाल में मुख्यालय के रूप में हुआ। सूरत एक आधुनिक व्यापारिक पत्तन है जिसे अंग्रेजों ने शुरुआती दौर में विकसित किया था। चंडीगढ़ स्वतंत्रता के बाद बनाया गया एक आधुनिक प्रशासनिक नगर है। यह मिलान भारत में नगरीय विकास के विभिन्न चरणों और उनकी विशिष्ट कार्यात्मक भूमिकाओं को स्पष्ट करता है, जो इतिहास के अलग-अलग कालखंडों से संबंधित हैं।

22. (B) पांडिचेरी
पांडिचेरी एक आधुनिक नगर है जिसे फ्रांसीसी उपनिवेशवादियों द्वारा विकसित किया गया था। यूरोपीय शक्तियों के आगमन के बाद भारत के तटीय क्षेत्रों में कई व्यापारिक केंद्रों का उदय हुआ। पांडिचेरी, गोवा और दमन इसी प्रक्रिया का हिस्सा थे। इन नगरों का निर्माण यूरोपीय स्थापत्य शैली में किया गया था और ये व्यापारिक गतिविधियों के प्रमुख नोड थे। इसके

65. (B) प्राचीन नगर
प्राचीन नगर वास्तव में विकास की समय अवधि पर आधारित वर्गीकरण है, न कि प्रकार्यात्मक वर्गीकरण। प्रकार्यात्मक वर्गीकरण में नगरों को उनके मुख्य कार्यों के आधार पर बांटा जाता है, जैसे प्रशासन, परिवहन, खनन, उद्योग या शिक्षा। प्राचीन नगर समय के साथ बहुप्रकार्यात्मक हो सकते हैं। अन्य विकल्प जैसे प्रशासन, परिवहन और खनन सीधे उन विशिष्ट आर्थिक और प्रशासनिक कार्यों को दर्शाते हैं जो नगर निष्पादित करता है, जो प्रकार्यात्मक श्रेणी का हिस्सा हैं।

66. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
जयपुर का विकास मध्यकाल में एक योजनाबद्ध मुख्यालय के रूप में हुआ था। कोयंबटूर अपनी कपड़ा मिलों और विनिर्माण इकाइयों के लिए एक प्रमुख औद्योगिक नगर है। अजमेर एक प्रसिद्ध धार्मिक केंद्र है, जो दरगाह शरीफ और पुष्कर के निकट होने के कारण सांस्कृतिक महत्व रखता है। शिमला अंग्रेजों द्वारा विकसित एक अत्यंत लोकप्रिय पर्यटन नगर है। यह मिलान विभिन्न नगरों की ऐतिहासिक और आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर उनकी वर्तमान पहचान को स्पष्ट करता है।

67. (C) पल्ली बस्ती
जब कोई विशाल गाँव सामाजिक मान्यताओं या मानवजातीय कारणों से कई अलग-अलग टोलों या इकाइयों में विभाजित हो जाता है, तो उसे पल्ली बस्ती कहते हैं। ये इकाइयाँ भौतिक रूप से अलग होती हैं लेकिन सामूहिक रूप से एक ही गाँव के नाम से पहचानी जाती हैं। भारत के कई हिस्सों में इन्हें पान्ना, नगला या पाड़ा कहा जाता है। यह खंडीभवन अक्सर जातिगत विभाजन या स्थान की उपलब्धता के अनुसार समुदायों के अलग बसने की प्रवृत्ति को दर्शाता है।

68. (D) आधुनिक उद्योगों
भारत में 1850 के बाद के कालखंड में औद्योगिक क्रांति के प्रभाव और रेलमार्गों के विस्तार के कारण आधुनिक उद्योगों पर आधारित नगरों का जन्म हुआ। जमशेदपुर इसका सबसे प्रमुख प्रारंभिक उदाहरण है जहाँ इस्पात उद्योग ने नगर की नींव रखी। इसके बाद हुगली, कानपुर और मुंबई जैसे नगरों ने औद्योगिक केंद्रों के रूप में अपनी पहचान बनाई। यह विकास कृषि प्रधान समाज से औद्योगिक समाज की ओर भारत के बढ़ते कदमों का एक महत्वपूर्ण भौगोलिक प्रमाण है।

69. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
पिछले दो दशकों में भारत में नगरीकरण की वृद्धि दर में कुछ गिरावट देखी गई है, जबकि 20वीं शताब्दी में कुल आबादी 11 गुना बढ़ी। वृद्धि दर का धीमा होना जनसंख्या के उच्च आधार के साथ-साथ शहरी नियोजन की चुनौतियों और आर्थिक कारकों से भी प्रभावित है। हालांकि 11 गुना वृद्धि एक तथ्य है, यह अकेले वर्तमान धीमी गति की पूर्ण व्याख्या नहीं करती। अतः दोनों कथन स्वतंत्र रूप से सत्य हैं, पर उनके बीच का व्याख्यात्मक संबंध अधूरा है।

70. (B) भिलाई
भिलाई एक प्रसिद्ध औद्योगिक नगर है, जिसका विकास मुख्य रूप से लोहा एवं इस्पात संयंत्र की स्थापना के कारण हुआ है। इसके विपरीत, हरिद्वार, पुष्कर और तिरुपति अपने प्राचीन मंदिरों, तीर्थस्थलों और धार्मिक उत्सवों के लिए जाने जाते हैं। ये नगर सांस्कृतिक धरोहर और आध्यात्मिक गतिविधियों के केंद्र हैं। भिलाई का महत्व पूरी तरह से विनिर्माण और औद्योगिक उत्पादन पर आधारित है, जिसका धार्मिक या सांस्कृतिक परंपराओं से सीधा कोई ऐतिहासिक संबंध नहीं है।

71. (D) सस्ती और सुलभ नगरीय सुविधाएँ
स्मार्ट सिटी मिशन के तहत 'स्मार्ट समाधान' का मुख्य ध्येय नागरिकों को सस्ती, सुलभ और कुशल नगरीय सुविधाएँ प्रदान करना है। इसमें कचरा प्रबंधन, जल आपूर्ति, स्मार्ट लाइटिंग और बेहतर परिवहन जैसी सेवाओं को सूचना प्रौद्योगिकी की मदद से सुधारा जाता है। इसका उद्देश्य संसाधनों का कुशल उपयोग करना और शहरी जीवन को अधिक आरामदायक और सुरक्षित बनाना है। यह मिशन शहरों को भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तकनीकी रूप से सक्षम बनाता है।

72. (C) केवल 1, 3, 4 और 5
बस्तियाँ एक पल्ली से लेकर महानगर तक भिन्न हो सकती हैं और ये विरल या संकुलित हो सकती हैं। छोटी बस्तियाँ गाँव कहलाती हैं जो प्राथमिक क्रियाओं में संलग्न होती हैं, जबकि बड़े अधिवास द्वितीयक क्रियाओं में विशिष्टता रखते हैं। कथन 2 गलत है क्योंकि बस्तियों के आकार और प्रकार बदलने के साथ उनकी सामाजिक संरचना, संबंधों का स्वरूप और जीवन शैली में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन आते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में घनिष्ठता अधिक होती है जबकि शहरों में नहीं।

73. (C) जब विशेषीकृत नगर महानगर बन जाते हैं
जब कोई विशेषीकृत नगर आकार में बढ़कर महानगर का रूप ले लेता है, तो उसमें कई प्रकार के नए कार्य जुड़ जाते हैं। वह केवल उद्योग या प्रशासन तक सीमित नहीं रहता, बल्कि व्यापार, परिवहन और शिक्षा का भी बड़ा केंद्र बन जाता है। इस स्थिति में उसके विभिन्न प्रकार्य इतने अधिक मिल जाते हैं कि उसे किसी एक श्रेणी में रखना कठिन हो जाता है। ऐसे नगरों को बहुप्रकार्यात्मक नगर कहा जाता है जो विविध सेवाएँ प्रदान करते हैं।

74. (A) जनगणना आधारित नगरीय परिभाषा
भारत में नगरीय क्षेत्रों को उनके प्रशासन के आधार पर कई श्रेणियों में बांटा गया है, जिसमें अधिसूचित नगरीय क्षेत्र समिति एक प्रकार है। इसका गठन जनगणना द्वारा निर्धारित नगरीय मापदंडों के आधार पर किया जाता है। अन्य श्रेणियों में नगरपालिका, नगर निगम और छावनी बोर्ड शामिल हैं। यह प्रशासन की एक इकाई है जो उस क्षेत्र को विशिष्ट नगरीय सेवाएँ और प्रबंधन प्रदान करती है। यह सुनिश्चित करता है कि बढ़ती आबादी वाले क्षेत्रों में आवश्यक बुनियादी ढाँचा विकसित हो सके।

या गैरिसन नगर है। यह मिलान स्पष्ट करता है कि विभिन्न नगर अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति और वहां होने वाले मुख्य कार्यों के आधार पर पहचाने और वर्गीकृत किए जाते हैं।

34. (A) धार्मिक और सांस्कृतिक महत्त्व
वाराणसी, मथुरा, अमृतसर और पुरी जैसे नगर अपनी प्राचीन धार्मिक मान्यताओं और सांस्कृतिक विरासत के लिए विश्व विख्यात हैं। इन नगरों का विकास मंदिरों, गुरुद्वारों और तीर्थस्थलों के आसपास हुआ है। यहाँ आने वाले पर्यटकों और तीर्थयात्रियों की भारी संख्या स्थानीय अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है। ये नगर भारत की आध्यात्मिक पहचान को अक्षुण्ण बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और प्राचीन काल से ही शिक्षा के केंद्र रहे हैं।

35. (C) शैक्षिक नगर
रुड़की, अलीगढ़ और पिलानी जैसे नगर प्रमुख शैक्षिक संस्थानों और विश्वविद्यालयों की उपस्थिति के कारण शैक्षिक नगरों के रूप में विकसित हुए हैं। रुड़की अपनी इंजीनियरिंग शिक्षा, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और पिलानी बिट्स (BITS) संस्थान के लिए जाना जाता है। इन नगरों की मुख्य गतिविधि पठन-पाठन और अनुसंधान से जुड़ी होती है। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या छात्रों, शिक्षकों और शिक्षा से संबंधित कर्मचारियों की होती है, जो विशिष्ट वातावरण बनाते हैं।

36. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
जैसे-जैसे नगरों का आकार बढ़ता है और वे महानगर बनते हैं, वे बहुप्रकार्यात्मक हो जाते हैं। समय के साथ किसी नगर में केवल एक गतिविधि नहीं रहती, बल्कि वहाँ उद्योग, वाणिज्य, प्रशासन और परिवहन जैसे कई कार्य साथ-साथ विकसित होते हैं। कारण सही है क्योंकि प्रकार्यों की यह विविधता ही किसी विशेषीकृत नगर को एक बड़े बहुआयामी महानगर में बदल देती है। अतः दोनों कथन पूर्णतः तर्कसंगत हैं।

37. (C) डिगबोई
डिगबोई एक प्रसिद्ध खनन नगर है, जो असम में खनिज तेल के उत्पादन के लिए जाना जाता है। इसके विपरीत नैनीताल, शिमला और माउंट आबू अपनी प्राकृतिक सुंदरता और जलवायु के कारण प्रमुख पर्यटन नगर हैं। पर्यटन नगरों का विकास लोगों को मनोरंजन और विश्राम की सुविधाएँ प्रदान करने के लिए होता है। डिगबोई जैसे नगरों की पहचान वहां उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से जुड़ी होती है, न कि पर्यटन से।

38. (B) सतत पर्यावरण और बुनियादी सुविधाएँ
स्मार्ट सिटी मिशन का मुख्य उद्देश्य शहरों में सतत पर्यावरण और नागरिकों को बेहतर बुनियादी सुविधाएँ प्रदान करना है। इसके तहत सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करके शहरी जीवन को सुगम, सुरक्षित और स्वच्छ बनाने पर ध्यान दिया जाता है। यह मिशन कचरा प्रबंधन, जल आपूर्ति और कुशल परिवहन जैसे क्षेत्रों में सुधार का लक्ष्य रखता है। इसका उद्देश्य शहरों को एक ऐसे मॉडल के रूप में विकसित करना है जो अन्य शहरों के लिए मार्गदर्शक बने।

39. (D) नगरीय जनसंख्या का कुल प्रतिशत
किसी देश में नगरीकरण के स्तर को मापने का सबसे सामान्य तरीका कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या के प्रतिशत की गणना करना है। यह आंकड़ा बताता है कि देश की कितनी आबादी शहरी क्षेत्रों में निवास कर रही है। भारत में 2011 में यह स्तर 31.16 प्रतिशत था। यह माप आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण संकेतक माना जाता है, जो ग्रामीण-शहरी संतुलन को भी स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

40. (A) सामाजिक संरचना, जाति और धर्म
ग्रामीण बस्तियों के प्रकारों को निर्धारित करने वाले सांस्कृतिक और मानवजातीय कारकों में सामाजिक संरचना, जाति और धर्म प्रमुख हैं। भारत में अक्सर सामाजिक ऊँच-नीच और जाति व्यवस्था के कारण बस्तियाँ अलग-अलग टोलों में बँट जाती हैं। यह कारक तय करता है कि कौन सा समुदाय गाँव के किस भाग में रहेगा। भू-भाग की बनावट और जल की उपलब्धता भौतिक कारकों के अंतर्गत आते हैं, जो बस्ती के स्वरूप को अलग तरह से प्रभावित करते हैं।

41. (A) 3, 1, 2, 4
भारत में नगरीकरण का स्तर निरंतर बढ़ता रहा है। 1921 में यह 11.18 प्रतिशत था, जो 1951 में बढ़कर 17.29 प्रतिशत हो गया। 1981 तक यह स्तर 23.34 प्रतिशत तक पहुँचा और 2011 की जनगणना में यह 31.16 प्रतिशत दर्ज किया गया। यह कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है कि स्वतंत्रता के बाद के दशकों में भारत में शहरी आबादी की हिस्सेदारी में तेजी से वृद्धि हुई है, जो विकास की बदलती प्रवृत्तियों का परिचायक है।

42. (A) आयात और निर्यात
कांडला, कोच्चि और विशाखापट्नम जैसे पत्तन नगरों का प्राथमिक कार्य अंतरराष्ट्रीय व्यापार के माध्यम से वस्तुओं का आयात और निर्यात करना है। ये नगर समुद्र तट पर स्थित होने के कारण जलमार्गों से जुड़े होते हैं और देश की अर्थव्यवस्था में प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करते हैं। यहाँ जहाजों की आवाजाही, भंडारण और माल ढुलाई से जुड़ी गतिविधियाँ मुख्य होती हैं। इन नगरों का विकास और बुनियादी ढाँचा पूरी तरह विदेशी व्यापार पर आधारित होता है।

43. (D) इनमें घर दूर-दूर बने होते हैं।
गुच्छित बस्तियों की मुख्य विशेषता यह है कि इनमें घर एक-दूसरे के बहुत पास और संहत रूप में बने होते हैं। ये अक्सर उपजाऊ जलोढ़ मैदानों में पाई जाती हैं जहाँ लोग सुरक्षा और सामाजिक निकटता के लिए एक साथ रहते हैं। घरों का दूर-दूर बिखरा होना परिक्षिप्त या एकाकी बस्तियों का लक्षण है, न कि गुच्छित बस्तियों का। अतः विकल्प (D) गुच्छित बस्तियों के स्वरूप के संदर्भ में पूर्णतः गलत है।

44. (B) केवल 1, 2 और 3
स्मार्ट सिटी मिशन का लक्ष्य सतत विकास, समग्र सुधार और नागरिकों को सस्ती सुविधाएँ प्रदान करना है। यह शहरों को प्राकृतिक आपदाओं के प्रति लचीला बनाने पर भी ध्यान केंद्रित करता है। हालांकि, यह योजना केवल बड़े महानगरों

तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें विभिन्न श्रेणियों के चयनित शहरों को शामिल किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य शहरी क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाना और भविष्य की जरूरतों के लिए उन्हें तैयार करना है।

45. (C) आंतरिक परिवहन की धुरियाँ
धुलिया, मुगलसराय और इटारसी जैसे नगर आंतरिक परिवहन के प्रमुख केंद्रों के रूप में विकसित हुए हैं। ये शहर रेलवे और सड़क मार्गों के महत्वपूर्ण जंक्शन हैं जहाँ से विभिन्न दिशाओं में परिवहन होता है। इन्हें परिवहन नगर कहा जाता है क्योंकि इनकी अर्थव्यवस्था और विकास मुख्य रूप से यात्रियों और माल की आवाजाही पर निर्भर करता है। ये नगर देश के विभिन्न हिस्सों को आपस में जोड़ने वाले महत्वपूर्ण संपर्क नोड के रूप में कार्य करते हैं।

46. (D) ये खनिज समृद्ध क्षेत्रों में स्थित हैं।
रानीगंज, झरिया और सिंगरौली नगरों के विकास का मुख्य कारण इन क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में कोयले और अन्य खनिजों की उपलब्धता है। ये खनिज समृद्ध क्षेत्र हैं जहाँ खनन गतिविधियों के कारण बड़ी संख्या में श्रमिकों का जमाव हुआ और बस्तियों का निर्माण हुआ। इन नगरों की पूरी अर्थव्यवस्था खदानों के संचालन और खनिजों के परिवहन पर आधारित है। ऐसे नगरों को कार्यात्मक रूप से 'खनन नगर' की श्रेणी में वर्गीकृत किया जाता है।

47. (B) P-4, Q-2, R-1, S-3
रुड़की अपने प्रसिद्ध इंजीनियरिंग संस्थान के कारण एक शैक्षिक नगर है। नैनीताल हिमालय की गोद में स्थित एक प्रमुख पर्यटन नगर है। अंबाला एक महत्वपूर्ण सैन्य छावनी होने के कारण गैरिसन नगर की श्रेणी में आता है। कोलकाता का विकास एक बड़े व्यापारिक केंद्र और वाणिज्यिक नगर के रूप में हुआ है। यह वर्गीकरण स्पष्ट करता है कि प्रत्येक नगर की अपनी एक विशिष्ट पहचान और आर्थिक कार्यप्रणाली होती है जो उसके विकास को निर्धारित करती है।

48. (B) भूमि आधारित प्राथमिक आर्थिक क्रियाओं पर
ग्रामीण बस्तियाँ अपनी बुनियादी आर्थिक जरूरतों के लिए मुख्य रूप से कृषि, पशुपालन और वानिकी जैसे प्राथमिक क्रियाकलापों पर निर्भर होती हैं। भूमि इन बस्तियों का मुख्य संसाधन आधार होती है। इसके विपरीत, नगरीय बस्तियाँ द्वितीयक और तृतीयक कार्यों में संलग्न रहती हैं। ग्रामीण जीवन का सीधा संबंध प्रकृति और भूमि संसाधनों के दोहन से होता है, जो शहरी क्षेत्रों की तुलना में विरल आबादी और घनिष्ठ सामाजिक संबंधों को जन्म देता है।

49. (B) उत्तर भारत के उपजाऊ जलोढ़ मैदान
उत्तर भारत के उपजाऊ जलोढ़ मैदानों में जनसंख्या सघन है और यहाँ कृषि की अनुकूलता के कारण गुच्छित बस्तियाँ पाई जाती हैं। इसके विपरीत, परिक्षिप्त या एकाकी बस्तियाँ मेघालय की पहाड़ियों, उत्तराखंड के जंगलों और केरल के कुछ भागों में देखी जाती हैं, जहाँ ऊबड़-खाबड़ धरातल और विखंडित संसाधन आधार होता है। जलोढ़ मैदानों की समतल भूमि लोगों को एक साथ संहत होकर रहने के लिए प्रोत्साहित करती है, न कि दूर-दूर।

50. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
ग्रामीण और नगरीय बस्तियों के बीच सामाजिक और व्यवहारगत अंतर स्पष्ट होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या कम होने के कारण लोग एक-दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं, जिससे उनके संबंध घनिष्ठ और अनौपचारिक होते हैं। इसके विपरीत, नगरीय जीवन तेज और जटिल होता है जहाँ संबंध औपचारिक और कार्य-आधारित होते हैं। यह अंतर मुख्य रूप से जीवन के ढंग और आर्थिक गतिविधियों में भिन्नता के कारण उत्पन्न होता है, जो दोनों कथनों को पुष्ट करता है।

51. (C) 50% से अधिक जनसंख्या का प्राथमिक खंड में संलग्न होना।
जनगणना मापदंडों के अनुसार, किसी नगरीय बस्ती में कम से कम 75 प्रतिशत पुरुष श्रमिकों का गैर-कृषि (द्वितीयक या तृतीयक) कार्यों में संलग्न होना अनिवार्य है। यदि 50 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या प्राथमिक खंड (कृषि) में संलग्न है, तो उसे ग्रामीण बस्ती माना जाता है। अन्य मापदंडों में न्यूनतम 5000 की आबादी और 400 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर का घनत्व शामिल है। अतः विकल्प (C) नगरीय परिभाषा के विपरीत है।

52. (D) Lucknow
लखनऊ एक मध्यकालीन नगर है जिसका विकास रियासतों और रजवाड़ों के मुख्यालय के रूप में हुआ था। यह एक प्रसिद्ध किला नगर है जो मध्यकालीन स्थापत्य कला और नवाबों की संस्कृति का केंद्र रहा। वाराणसी एक प्राचीन नगर है, जमशेदपुर आधुनिक औद्योगिक नगर है और चंडीगढ़ स्वतंत्रता के बाद बनाया गया प्रशासनिक नगर है। मध्यकालीन नगरों की पहचान अक्सर उनके किलों और ऐतिहासिक दरबारों से होती है, जो लखनऊ में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

53. (A) केवल 1, 2 और 3
पल्ली बस्तियाँ कई छोटी इकाइयों में बँटी होती हैं जिन्हें स्थानीय रूप से पान्ना या पाड़ा कहते हैं, लेकिन उनका प्रशासनिक नाम एक ही रहता है। यह खंडीभवन सामाजिक और जातीय कारकों से प्रेरित होता है। ये केवल राजस्थान तक सीमित नहीं हैं, बल्कि गंगा के मैदानों और छत्तीसगढ़ में भी पाई जाती हैं। ये गुच्छित बस्तियों का ही एक रूप नहीं हैं, बल्कि यह बस्तियों का एक अलग विखंडित प्रकार है।

54. (B) 11 गुना
20वीं शताब्दी के दौरान (1901-2011) भारत की नगरीय जनसंख्या में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई, जो लगभग 11 गुना बढ़ी। इस तीव्र वृद्धि का मुख्य कारण चिकित्सा सुविधाओं में सुधार, घटती मृत्यु दर, ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर बड़े पैमाने पर प्रवास और नए नगरीय केंद्रों का उदय था। यह वृद्धि दर्शाती है कि पिछली शताब्दी में भारत की सामाजिक-आर्थिक संरचना में शहरीकरण ने कितनी गहरी पैठ बनाई है और विकास का केंद्र बदला है।

55. (D) ग्रामीण क्षेत्रों हेतु सेवा केंद्र
नगरों को आर्थिक वृद्धि के नोड इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे अपने आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए सेवा केंद्रों के रूप में कार्य करते हैं। वे न केवल ग्रामीण उत्पादों के लिए बाजार प्रदान करते हैं, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग और अन्य प्रशासनिक सुविधाएँ भी देते हैं। नगरों और गाँवों के बीच यह प्रकार्यात्मक संबंध परिवहन और संचार के माध्यम से बना रहता है, जो क्षेत्रीय आर्थिक विकास को गति प्रदान करता है।

56. (D) P-4, Q-1, R-2, S-3
भोपाल मध्य प्रदेश की राजधानी के रूप में एक प्रमुख प्रशासन नगर है। भिलाई अपने लोहा एवं इस्पात संयंत्र के कारण औद्योगिक नगर की श्रेणी में आता है। मदुरै एक प्राचीन और प्रसिद्ध धार्मिक-सांस्कृतिक नगर है। उधमपुर एक रणनीतिक सैन्य छावनी होने के कारण गैरिसन नगर का उदाहरण है। यह मिलान दर्शाता है कि नगर अपनी विशिष्ट प्रशासनिक, औद्योगिक, ऐतिहासिक या सैन्य भूमिकाओं के कारण अलग-अलग श्रेणियों में वर्गीकृत किए जाते हैं।

57. (C) विविध प्रकार की ज्यामितीय आकृतियाँ
गुच्छित ग्रामीण बस्तियाँ केवल एक निश्चित आकार तक सीमित नहीं होतीं। ये संहत बस्तियाँ स्थानीय भूगोल और मार्ग संरचना के आधार पर आयताकार, अरीय, रैखिक और वृत्ताकार जैसी विभिन्न ज्यामितीय आकृतियाँ बना सकती हैं। उदाहरण के लिए, सड़कों के किनारे रैखिक और नदियों के संगम पर अरीय प्रतिरूप विकसित होते हैं। ये आकृतियाँ गाँवों के योजनाबद्ध या स्वतःस्फूर्त विकास और वहाँ की उपलब्ध भूमि के विस्तार की दिशा को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करती हैं।

58. (A) 0.35%
1901-1911 के दशक में भारत की नगरीय जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर मात्र 0.35 प्रतिशत थी। यह अत्यंत धीमी वृद्धि उस समय के सामाजिक-आर्थिक पिछड़ेपन, महामारियों और कृषि पर अत्यधिक निर्भरता को दर्शाती है। इसके बाद के दशकों में शहरीकरण की गति में तेजी आई। 1971-81 के दशक तक पहुँचते-पहुँचते यह दर अपने उच्चतम स्तर पर पहुँच गई थी। यह आंकड़ा शहरीकरण के शुरुआती चरण की मंद गति का एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रमाण है।

59. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
गुजरात के मैदानों और राजस्थान के कुछ भागों में अर्ध-गुच्छित बस्तियाँ पाई जाती हैं। इन क्षेत्रों में सामाजिक संरचना ऐसी है कि प्रभावशाली समुदाय केंद्र में रहता है, जबकि अन्य वर्गों को मुख्य गाँव से थोड़ा अलग रहने के लिए मजबूर किया जाता है या वे स्वेच्छा से बाहर बसते हैं। यह अलगाव भौतिक रूप से अर्ध-गुच्छित स्वरूप को जन्म देता है। अतः कारण, अभिकथन की सही व्याख्या करता है क्योंकि यह सामाजिक प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।

60. (A) 2, 4, 1, 3
भारत में नगरों के विकास का सही कालक्रम सिंधु घाटी सभ्यता (हड़प्पा, मोहनजोदड़ो) से शुरू होता है। इसके बाद यूरोपीय शक्तियों के आगमन के साथ सूरत जैसे व्यापारिक पत्तनों का विकास हुआ। 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में जमशेदपुर जैसे आधुनिक औद्योगिक नगर अस्तित्व में आए। अंत में, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात चंडीगढ़ जैसे योजनाबद्ध प्रशासनिक नगरों का निर्माण हुआ। यह क्रम भारत में शहरीकरण की ऐतिहासिक यात्रा के विभिन्न चरणों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करता है।

61. (C) सैन्य गतिविधियों के केंद्रों के रूप में
गैरिसन या छावनी नगरों का उदय मुख्य रूप से सैन्य आवश्यकताओं की पूर्ति और सैनिकों के आवास के लिए किया गया था। इन नगरों में प्रशिक्षण केंद्र, रसद भंडार और रक्षा संबंधी कार्यालय होते हैं। अंबाला, जालंधर, महू और बबीना इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ये नगर सामान्य नागरिकों के क्षेत्रों से अलग अपनी विशेष प्रशासनिक व्यवस्था और सुरक्षा के लिए जाने जाते हैं। इनका मुख्य प्रकार्य देश की रक्षा प्रणाली को सुदृढ़ बनाना और सैन्य संचालन करना है।

62. (D) सतना - वाणिज्यिक नगर
सतना एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र होने के कारण वाणिज्यिक नगर की श्रेणी में आता है। जयपुर मुख्य रूप से एक प्रशासन और ऐतिहासिक नगर है, अलीगढ़ एक शैक्षिक नगर के रूप में विख्यात है और ऊटी एक प्रमुख पर्यटन नगर है। नगरों का यह वर्गीकरण वहां होने वाली सबसे प्रभावी आर्थिक गतिविधि पर आधारित होता है। सतना अपनी व्यापारिक मंडियों और वाणिज्यिक लेन-देन के लिए क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण नोड के रूप में पहचाना जाता है।

63. (A) केवल 1
नगरीय बस्तियाँ मुख्य रूप से कच्चे माल के प्रक्रमण, तैयार माल के विनिर्माण और सेवाओं के क्षेत्रों में विशिष्टता प्राप्त करती हैं। इसके विपरीत, ग्रामीण बस्तियाँ भूमि आधारित प्राथमिक क्रियाओं जैसे कृषि पर निर्भर होती हैं। नगर और गाँव परस्पर एक-दूसरे से जुड़े होते हैं जहाँ वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय होता है। नगरीय और ग्रामीण बस्तियों के बीच का यह प्रकार्यात्मक संबंध ही क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था का आधार बनता है, जिससे दोनों क्षेत्र संतुलित रहते हैं।

64. (B) परिक्षिप्त बस्ती
परिक्षिप्त बस्तियों में घर एक-दूसरे से बहुत दूर बिखरे होते हैं, जो सुदूर जंगलों, पहाड़ियों की ढालों या बड़े खेतों के बीच स्थित हो सकते हैं। यह प्रारूप प्रायः कठिन भू-भाग और विखंडित भूमि संसाधन वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। ऐसे क्षेत्रों में लोग अपने कृषि कार्यों और पशुपालन की सुविधा के लिए एकाकी झोपड़ियों में रहना पसंद करते हैं। इस प्रकार की बस्तियाँ मुख्य रूप से हिमालयी राज्यों और केरल के कुछ हिस्सों में देखी जाती हैं।

168. जमशेदपुर और भिलाई जैसे औद्योगिक नगरों की आकारिकी की मुख्य विशेषता क्या है?
- (A) कारखाने, श्रमिक आवास एवं इनसे संबंधित औद्योगिक अवसंरचना।
- (B) नगर नियोजन में शामिल अत्यधिक चौड़ी सड़कें और बड़े पैमाने पर बने सरकारी भवन।
- (C) सांस्कृतिक महत्व के प्राचीन मंदिर और उनके किनारे बने पारंपरिक धार्मिक घाट।
- (D) बड़े विश्वविद्यालय परिसर और व्यापक स्तर पर निर्मित सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाएँ।

169. कांडला और मुगलसराय को किस श्रेणी के नगरों का उदाहरण माना जा सकता है?
- (A) शैक्षिक नगर।
- (B) धार्मिक नगर।
- (C) परिवहन नगर।
- (D) प्रशासनिक नगर।

170. स्रोत से क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?
- (A) नगरों द्वारा निष्पादित किए जाने वाले कार्य हमेशा स्थिर रहते हैं और समय के साथ कभी नहीं बदलते।
- (B) प्रत्येक नगर अनिवार्य रूप से केवल एक ही विशिष्ट कार्य को संपादित करने हेतु बाध्य होता है।
- (C) नगरों का संपूर्ण वर्गीकरण केवल और केवल उनकी कुल जनसंख्या के भौतिक आकार पर ही आधारित होता है।
- (D) नगरों का उनके मुख्य कार्यों के आधार पर वर्गीकरण संभव है, भले ही वे बहुप्रकार्यात्मक हों।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत जैसे विकासशील देशों में नगरीकरण की प्रक्रिया तीव्र गति से हो रही है, जो महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों के साथ-साथ गंभीर चुनौतियों को भी जन्म दे रही है। इस प्रक्रिया के पीछे मुख्य रूप से ग्रामीण-शहरी प्रवासन है, जो 'अपकर्षण' (Push) और 'आकर्षण' (Pull) कारकों से प्रेरित होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि पर बढ़ती जनसंख्या का दबाव, बेरोजगारी, और निम्न जीवन स्तर जैसे अपकर्षण कारक लोगों को गाँव छोड़ने के लिए विवश करते हैं। वहीं दूसरी ओर, नगरों में रोज़गार के बेहतर अवसर, उच्च शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ और आधुनिक जीवन शैली जैसे आकर्षण कारक उन्हें अपनी ओर खींचते हैं। इस बड़े पैमाने पर प्रवासन के परिणामस्वरूप शहरों पर अत्यधिक दबाव पड़ता है। अवसंरचना, जैसे आवास, जलापूर्ति, स्वच्छता और परिवहन, बढ़ती आबादी की मांगों को पूरा करने में अक्सर विफल हो जाती है। इसके कारण अनियोजित बस्तियों, जिन्हें सामान्यतः मलिन बस्तियाँ (Slums) कहा जाता है, का अनियंत्रित विस्तार होता है, जहाँ जीवन की मूलभूत सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं होतीं। इसके अतिरिक्त, तीव्र नगरीकरण से पर्यावरणीय समस्याएँ जैसे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की समस्या भी उत्पन्न होती है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए, सरकार द्वारा शहरी नियोजन और प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है, जिसका एक उदाहरण 'स्मार्ट सिटी मिशन' जैसी पहलें हैं, जिनका उद्देश्य शहरों को अधिक टिकाऊ और निवासियों के लिए बेहतर बनाना है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. स्रोत के अनुसार, ग्रामीण-शहरी प्रवासन को प्रेरित करने वाले 'अपकर्षण' (Push) कारक कौन से हैं?
- (A) बड़े शहरों में प्रवासियों हेतु उपलब्ध बेहतर रोजगार के विविध और लाभदायक अवसर।
- (B) शहरों के आंतरिक क्षेत्रों में उपलब्ध आधुनिक और बेहतर स्वास्थ्य देखभाल की सुविधाएँ।
- (C) ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त बेरोजगारी एवं जीवन स्तर का निम्न होना।
- (D) आधुनिक शहरी जीवन शैली और चकाचौंध के प्रति ग्रामीण युवाओं का बढ़ता हुआ आकर्षण।

172. निम्नलिखित में से कौन सा एक 'आकर्षण' (Pull) कारक है जो लोगों को शहरों की ओर खींचता है?
- (A) ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्य पर निरंतर बढ़ती हुई जनसंख्या का अत्यधिक दबाव।
- (B) शहरों में सुलभ उच्च शिक्षा एवं रोजगार के बेहतर अवसर।
- (C) ग्रामीण समाज में विद्यमान विभिन्न प्रकार की रुढ़िवादी सामाजिक और सांस्कृतिक बाध्यताएँ।
- (D) ग्रामीण क्षेत्रों में बार-बार आने वाली विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं का बना रहने वाला भय।

173. तीव्र और अनियोजित नगरीकरण का एक प्रमुख नकारात्मक परिणाम क्या है?
- (A) ग्रामीण क्षेत्रों के विकास की गति में अप्रत्याशित रूप से होने वाली अत्यधिक वृद्धि।
- (B) आधुनिक तकनीकों के प्रयोग से कृषि उत्पादकता में होने वाली निरंतर प्रगति।
- (C) शहरी वातावरण में विभिन्न समुदायों के मध्य सामाजिक संबंधों का और अधिक मजबूत होना।
- (D) मलिन बस्तियों का अनियंत्रित विस्तार एवं नागरिक अवसंरचना पर बढ़ता दबाव।

174. स्रोत में वर्णित 'स्मार्ट सिटी मिशन' जैसी पहलों का मुख्य उद्देश्य क्या है?
- (A) शहरों को टिकाऊ बनाना एवं निवासियों के जीवन स्तर में गुणात्मक सुधार करना।
- (B) केवल ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में ही नए रोजगार के अवसरों को बड़े पैमाने पर सृजित करना।
- (C) ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर होने वाले प्रवासन को पूरी तरह से और तत्काल प्रभाव से रोकना।
- (D) नगर के भीतर स्थित केवल पुरानी और ऐतिहासिक इमारतों का व्यापक स्तर पर संरक्षण सुनिश्चित करना।

175. तीव्र नगरीकरण से उत्पन्न होने वाली पर्यावरणीय समस्याओं में निम्नलिखित में से कौन सी एक शामिल है?

75. (D) 1911
1911 की जनगणना के दौरान भारत में नगरों और नगरीय संकुलों की कुल संख्या 1,827 दर्ज की गई थी, जो 1901 की तुलना में कम थी। यह कमी उस समय फैली महामारियों और खराब आर्थिक स्थितियों के कारण हुई थी जिसने शहरी आबादी और क्षेत्रों को प्रभावित किया। इसके बाद के प्रत्येक दशक में नगरों की संख्या में निरंतर वृद्धि देखी गई। 1911 का यह आंकड़ा भारतीय शहरीकरण के इतिहास में एक दुर्लभ गिरावट की स्थिति को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

76. (B) आर्थिक पोषण प्राप्त करने वाला क्षेत्र
बस्ती की प्रक्रिया में 'संसाधन आधार' का तात्पर्य उस भौगोलिक क्षेत्र से है जहाँ से बस्ती के निवासी अपनी आजीविका और आर्थिक पोषण प्राप्त करते हैं। ग्रामीणों के लिए यह संसाधन आधार मुख्य रूप से कृषि भूमि, वन और जल स्रोत होते हैं। नगरों के लिए यह उनका व्यापारिक क्षेत्र और सेवा क्षेत्र होता है। किसी भी बस्ती का अस्तित्व और विकास उसके उपलब्ध संसाधनों के उचित आवंटन और उपयोग पर निर्भर करता है, जो जीवन निर्वाह का आधार है।

77. (C) दुर्गापुर, भिलाई, चंडीगढ़
दुर्गापुर, भिलाई और चंडीगढ़ आधुनिक नगरों के समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनका विकास मुख्य रूप से स्वतंत्रता के बाद हुआ। दुर्गापुर और भिलाई औद्योगिक नगर हैं, जबकि चंडीगढ़ एक योजनाबद्ध प्रशासनिक नगर है। वाराणसी और पटना प्राचीन नगरों की श्रेणी में आते हैं, और आगरा मध्यकालीन नगर है। आधुनिक नगरों की पहचान उनकी आधुनिक योजना, विशेष कार्यात्मक भूमिकाओं और समकालीन स्थापत्य कला से होती है, जो औपनिवेशिक काल के बाद अधिक प्रमुखता से उभरे।

78. (C) केवल 1, 2 और 3
ग्रामीण बस्तियों के प्रकार निर्मित क्षेत्र के विस्तार और घरों के बीच की दूरी (अंतर्वास दूरी) से तय होते हैं। उत्तरी मैदानों में गुच्छित गाँव एक सामान्य लक्षण हैं। हालांकि, बस्तियों के प्रकार के लिए केवल भौतिक लक्षण ही नहीं, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक और सुरक्षा संबंधी कारक भी जिम्मेदार होते हैं। सुरक्षा की आवश्यकता और सामाजिक रीति-रिवाज यह निर्धारित करते हैं कि लोग एक साथ रहेंगे या अलग। अतः कथन 4 इस संदर्भ में गलत है।

79. (A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।
नगरों के प्रकार्य स्थिर नहीं होते बल्कि वे समय और जरूरतों के साथ बदलते रहते हैं। कोई नगर जो पहले केवल एक छोटा व्यापारिक केंद्र था, भविष्य में बड़ा प्रशासनिक या औद्योगिक केंद्र बन सकता है। जब विशेषीकृत नगर महानगर बनते हैं, तो उनमें विविध प्रकार के कार्य समाहित हो जाते हैं, जिससे वे बहुप्रकार्यात्मक बन जाते हैं। यह गतिशीलता शहरी विकास की एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जो दोनों कथनों को पूर्णतः सत्य और तर्कसंगत बनाती है।

80. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में नगरों का इतिहास अत्यंत प्राचीन है, जो प्रागैतिहासिक काल से शुरू होता है। सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे सुनियोजित नगरों का अस्तित्व इस बात का पुख्ता प्रमाण है। ये नगर अपनी शहरी नियोजन, जल निकासी व्यवस्था और व्यापारिक गतिविधियों के लिए जाने जाते थे। अतः अभिकथन सत्य है और कारण इसकी ऐतिहासिक पुष्टि करता है कि भारत में शहरीकरण की जड़ें बहुत पुरानी और विकसित सभ्यताओं से जुड़ी हुई हैं।

81. (B) संहत (गुच्छित) बस्तियाँ
सुरक्षा संबंधी चिंताएँ, जैसे चोरी, डकैती या बाहरी आक्रमण, लोगों को एक साथ संहत होकर रहने के लिए प्रेरित करती हैं। जब घर पास-पास और गुच्छित रूप में होते हैं, तो सामुदायिक सुरक्षा सुनिश्चित करना आसान हो जाता है। यही कारण है कि मध्य भारत और बुंदेलखंड जैसे क्षेत्रों में सुरक्षा की आवश्यकता ने संहत बस्तियों के विकास को बढ़ावा दिया। यहाँ सामाजिक निकटता के साथ-साथ रक्षात्मक दृष्टिकोण बस्ती के स्वरूप को निर्धारित करने वाला मुख्य कारक है।

82. (A) 1, 4, 2, 3
भारत में नगरीय जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर का उच्चतम स्तर 1971-81 के दशक में (46.14%) देखा गया। इसके बाद 1941-51 का दशक (41.42%) आता है, जो स्वतंत्रता के समय हुए बड़े पैमाने पर विस्थापन और शहरीकरण को दर्शाता है। 1951-61 में यह दर 26.41% थी, जबकि 1911-21 के दौरान यह मात्र 8.27% थी। यह अवरोही क्रम स्पष्ट करता है कि मध्य 20वीं शताब्दी के दौरान भारत में शहरी आबादी की वृद्धि सबसे अधिक प्रभावशाली और तीव्र रही थी।

83. (A) P–3, Q–1, R–2, S–4
इन स्थानीय नामों का संबंध विभिन्न प्रकार की ग्रामीण बस्तियों से है। नगला और ढाँणी आमतौर पर छोटे, अलग-थलग या एकाकी निवासों को दर्शाते हैं, इसलिए ये बिखरी या एकल बस्ती से जुड़े हैं। पाड़ा छोटे समूह या पल्ली बस्ती को दर्शाता है, जबकि पान्ना अपेक्षाकृत संगठित या समूहित बस्ती का संकेत देता है। इस प्रकार, ये सभी नाम अलग-अलग बस्ती प्रकारों को प्रदर्शित करते हैं।

84. (D) गाँव के बाहरी हिस्सों में
अर्ध-गुच्छित बस्तियों में सामाजिक भेदभाव और आर्थिक विषमता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। आमतौर पर जमींदार और प्रभावशाली समुदाय गाँव के सबसे सुरक्षित और केंद्रीय भाग पर आधिपत्य रखते हैं। इसके विपरीत, समाज के निचले तबके के लोग और खेतिहर मजदूर अक्सर मुख्य गाँव की बाहरी सीमाओं या परिधि पर बसने के लिए मजबूर होते हैं। यह भौगोलिक विभाजन भारतीय ग्रामीण समाज की पारंपरिक जातिगत और वर्गीय संरचना का एक प्रत्यक्ष और दृश्य प्रतिबिंब है।

पर पत्तन-शहरों के रूप में स्थापित किया। ये शहर अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार के प्रवेश द्वार के रूप में विकसित हुए। इनके माध्यम से कच्चे माल का निर्यात और निर्मित वस्तुओं का आयात सुगम हुआ। इन केंद्रों ने औपनिवेशिक आर्थिक व्यवस्था में केंद्रीय भूमिका निभाई और आधुनिक महानगरों का आधार बने।

166. (B) वे गतिविधियाँ जो नगर हेतु आय सृजित कर उसके विकास को गति प्रदान करती हैं।
किसी नगर का आर्थिक आधार उन प्रमुख गतिविधियों को संदर्भित करता है जो आय सृजित करती हैं और उसके विकास को गति देती हैं। ये कार्य ही शहर की पहचान और चरित्र को परिभाषित करते हैं। चाहे वह प्रशासन हो, उद्योग हो या परिवहन, ये आर्थिक आधार ही जनसंख्या को आजीविका प्रदान करते हैं और शहरी अवसंरचना के विस्तार के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराते हैं। इसके बिना विकास संभव नहीं है।

167. (B) प्रशासनिक नगर।
नई दिल्ली और गांधीनगर को प्रशासनिक नगरों के रूप में वर्गीकृत किया गया है क्योंकि यहाँ सरकारी कार्यालय और प्रशासनिक मुख्यालय केंद्रित हैं। इन शहरों का भूदृश्य चौड़ी सड़कों, बड़े सरकारी भवनों और सुनियोजित आवासीय क्षेत्रों द्वारा चिह्नित होता है। इनका मुख्य उद्देश्य शासन को सुचारु रूप से संचालित करना है। यह विशिष्टता उन्हें औद्योगिक केंद्रों या धार्मिक स्थलों जैसे अन्य प्रकार के नगरों से पूरी तरह अलग करती है।

168. (A) कारखाने, श्रमिक आवास एवं इनसे संबंधित औद्योगिक अवसंरचना।
जमशेदपुर और भिलाई जैसे औद्योगिक नगरों की आकारिकी मुख्य रूप से विनिर्माण और उत्पादन पर केंद्रित होती है। इनके भौतिक स्वरूप में बड़े कारखाने, औद्योगिक संयंत्र और श्रमिकों के लिए विशेष आवास प्रमुख होते हैं। इन नगरों का विकास औद्योगिक गतिविधियों को सुगम बनाने के लिए किया जाता है, जहाँ परिवहन और बिजली जैसी बुनियादी सुविधाएँ उद्योगों के अनुकूल होती हैं। यह संरचना कार्यकुशलता और औद्योगिक उत्पादकता को दर्शाती है।

169. (C) परिवहन नगर।
कांडला और मुगलसराय परिवहन नगरों के उदाहरण हैं, जो क्रमशः पत्तन और रेलवे जंक्शन के रूप में विकसित हुए हैं। कांडला समुद्री व्यापार के लिए महत्वपूर्ण केंद्र है, जबकि मुगलसराय रेल यातायात का प्रमुख हब है। इन शहरों की अर्थव्यवस्था और विकास मुख्य रूप से वस्तुओं और लोगों के निरंतर प्रवाह को प्रबंधित करने पर आधारित है। यह विशेषता उन्हें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय परिवहन नेटवर्क की महत्वपूर्ण कड़ी बनाती है।

170. (D) नगरों का उनके मुख्य कार्यों के आधार पर वर्गीकरण संभव है, भले ही वे बहुप्रकार्यात्मक हों।
नगरों का उनके मुख्य कार्यों के आधार पर प्रकार्यात्मक वर्गीकरण संभव है, भले ही वे बड़े होकर बहुप्रकार्यात्मक बन जाएँ। यह वर्गीकरण किसी नगर के प्राथमिक आर्थिक आधार को समझने में मदद करता है। हालाँकि अधिकांश बड़े महानगरों में विभिन्न गतिविधियाँ साथ चलती हैं, लेकिन उनमें कोई एक या दो कार्य प्रमुख होते हैं जो उनकी पहचान और भौगोलिक चरित्र को परिभाषित करते हैं। यह प्रक्रिया शहरी नियोजन में सहायक है।

171. (C) ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त बेरोजगारी एवं जीवन स्तर का निम्न होना।
ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त बेरोजगारी, निम्न जीवन स्तर और कृषि पर जनसंख्या का अत्यधिक दबाव 'अपकर्षण' कारक कहलाते हैं। ये नकारात्मक स्थितियाँ लोगों को अपना मूल स्थान छोड़ने और शहरों की ओर पलायन करने के लिए विवश करती हैं। जब ग्रामीण अर्थव्यवस्था आबादी की आवश्यकताओं को पूरा करने में विफल होती है, तब लोग आजीविका की तलाश में शहरी क्षेत्रों का रुख करते हैं। यह ग्रामीण आर्थिक संकट का परिणाम है।

172. (B) शहरों में सुलभ उच्च शिक्षा एवं रोजगार के बेहतर अवसर।
शहरों में उपलब्ध रोजगार के बेहतर अवसर, उच्च शिक्षा की सुविधाएँ और आधुनिक जीवन शैली 'आकर्षण' कारकों के रूप में कार्य करते हैं। ये सकारात्मक विशेषताएँ ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को शहरों की ओर खींचती हैं। बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ और आर्थिक स्थिरता की संभावना प्रवासियों को उज्ज्वल भविष्य का आश्वासन देती हैं। इस प्रकार, शहरी सुविधाएँ ग्रामीण आबादी के प्रवास का मुख्य कारण बनती हैं, जिससे नगरीकरण तीव्र होता है।

173. (D) मलिन बस्तियों का अनियंत्रित विस्तार एवं नागरिक अवसंरचना पर बढ़ता दबाव।
तीव्र नगरीकरण का सबसे गंभीर नकारात्मक परिणाम नागरिक अवसंरचना पर अत्यधिक दबाव और मलिन बस्तियों का विस्तार है। जब आवास, स्वच्छता और जलापूर्ति की सुविधाएँ बढ़ती जनसंख्या की माँग पूरी नहीं कर पातीं, तब झुग्गी-झोपड़ियों का अनियंत्रित विकास होता है। इन क्षेत्रों में जीवन की मूलभूत सुविधाओं का अभाव होता है, जिससे शहरी वातावरण में सामाजिक विषमताएँ और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं, जो गंभीर संकट का संकेत है।

174. (A) शहरों को टिकाऊ बनाना एवं निवासियों के जीवन स्तर में गुणात्मक सुधार करना।
स्मार्ट सिटी मिशन का मुख्य उद्देश्य शहरी केंद्रों को अधिक टिकाऊ और निवासियों के लिए रहने योग्य बनाना है। इसके माध्यम से बुनियादी सुविधाओं में सुधार, तकनीक का उपयोग और सुनियोजित शहरी प्रबंधन सुनिश्चित किया जाता है। यह पहल नगरीकरण की चुनौतियों का समाधान करने और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने पर केंद्रित है। इसका लक्ष्य आर्थिक विकास और पर्यावरणीय स्थिरता के बीच एक प्रभावी संतुलन स्थापित करना है।

95. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
1901-1911 के बीच नगरीय जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर सबसे कम 0.35 प्रतिशत थी। 1911-1921 में यह बढ़कर 8.27 प्रतिशत हुई। 1921-1931 के दौरान यह 19.12 प्रतिशत दर्ज की गई और 1931-1941 में यह और बढ़कर 31.97 प्रतिशत तक पहुँच गई। यह मिलान भारत में शहरीकरण की क्रमिक और बढ़ती हुई गति को दर्शाता है। शुरुआती दशकों की मंद गति के बाद धीरे-धीरे आर्थिक सुधारों के साथ शहरी आबादी में निरंतर और तीव्र वृद्धि होने लगी थी।

96. (B) बस्ती की प्रक्रिया
बस्ती की प्रक्रिया एक जटिल मानवीय क्रिया है जिसमें लोगों का एक स्थान पर समूहन और उनके आर्थिक निर्वाह के लिए एक विशिष्ट संसाधन आधार या क्षेत्र का आवंटन शामिल होता है। यह प्रक्रिया केवल घर बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक संबंधों का निर्माण और भूमि का उपयोग भी निहित है। यह ग्रामीण और नगरीय दोनों प्रकार की बस्तियों के विकास का मूल आधार है, जो मानव के संगठित रहने की प्रवृत्ति और उसकी आवश्यकताओं को दर्शाता है।

97. (B) 27.78% और 31.16%
भारत में नगरीकरण का स्तर 2001 की जनगणना में 27.78 प्रतिशत था, जो 2011 में बढ़कर 31.16 प्रतिशत हो गया। यह वृद्धि देश में बढ़ते शहरीकरण, नए नगरों के निर्माण और ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर निरंतर हो रहे प्रवास को दर्शाती है। यद्यपि भारत अब भी एक गाँव प्रधान देश है, लेकिन नगरीय जनसंख्या का यह बढ़ता प्रतिशत आर्थिक संरचना में हो रहे बदलावों और सेवाओं के विस्तार का एक महत्वपूर्ण और स्पष्ट भौगोलिक संकेतक है।

98. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
कोलकाता, सहारनपुर और सतना जैसे नगरों का मुख्य प्रकार्य व्यापार और वाणिज्य है, इसलिए उन्हें वाणिज्यिक नगर कहा जाता है। इन नगरों में माल की खरीद-बिक्री, थोक मंडियाँ और व्यापारिक सेवाएँ अर्थव्यवस्था का केंद्र होती हैं। कारण बिल्कुल सही है क्योंकि इन शहरों का विकास और पहचान ही उनकी व्यापारिक विशिष्टता के कारण हुई है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं और कारण, अभिकथन के प्रकार्यात्मक वर्गीकरण का आधार स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है।

99. (C) खाद्यान्न एवं सेवा विनिमय संबंध
नगर और गाँव के बीच प्रकार्यात्मक संबंध मुख्य रूप से खाद्यान्न और सेवाओं के विनिमय पर आधारित होता है। गाँव शहरों को कच्चा माल और खाद्यान्न उपलब्ध कराते हैं, जबकि शहर बदले में गाँवों को निर्मित वस्तुएँ, उच्च शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ और बैंकिंग जैसी विशिष्ट सेवाएँ प्रदान करते हैं। यह आदान-प्रदान परिवहन और संचार माध्यमों से होता है। यह परस्पर निर्भरता क्षेत्रीय विकास को संतुलित रखती है और दोनों क्षेत्रों की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक होती है।

100. (D) प्रशासनिक एवं सैन्य सेवा क्षेत्र
अंग्रेजों ने पर्वतीय क्षेत्रों में ग्रीष्मकालीन विश्राम स्थलों (जैसे शिमला, मसूरी) का विकास किया था, जहाँ वे गर्मियों के दौरान अपना कामकाज स्थानांतरित कर देते थे। इन पर्वतीय नगरों में मुख्य रूप से प्रशासनिक कार्यालय और सैन्य छावनियाँ (सैन्य सेवा क्षेत्र) शामिल होती थीं। ये स्थान न केवल मनोरंजन के लिए थे, बल्कि औपनिवेशिक शासन के महत्वपूर्ण नियंत्रण केंद्र भी थे। इनका निर्माण यूरोपीय शैली में किया गया था और यहाँ विशेष रूप से ब्रिटिश अधिकारियों के आवास और कार्यालय स्थित थे।

101. (B) केवल 1, 2, 4 और 5
भारत में ग्रामीण बस्तियों को गुच्छित, अर्ध-गुच्छित, पल्लीकृत और परिक्षिप्त श्रेणियों में बांटा गया है। गुच्छित बस्तियों को संकलित, परिक्षिप्त को एकाकी और अर्ध-गुच्छित को विखंडित भी कहा जाता है। हालांकि, पल्लीकृत बस्तियों के लिए 'विखंडित' शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से अर्ध-गुच्छित के संदर्भ में अधिक उपयुक्त माना जाता है। पल्लीकृत बस्तियों की मुख्य पहचान उनकी छोटी इकाइयों में भौतिक अलगाव है। अतः अन्य सभी कथन बस्तियों के वैकल्पिक नामों और उनके वर्गीकरण को सही ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

102. (B) संहत (गुच्छित) बस्तियाँ
बुंदेलखंड और नागालैंड में सुरक्षा और बचाव की ऐतिहासिक आवश्यकताओं के कारण संहत या गुच्छित बस्तियाँ पाई जाती हैं। इन क्षेत्रों में लोग बाहरी खतरों से बचने के लिए एक साथ पास-पास घर बनाकर रहते हैं। यह संकुलित विन्यास समुदाय को सामूहिक सुरक्षा प्रदान करता है। बुंदेलखंड में जल के अभाव और नागालैंड की जनजातीय संरचना ने भी लोगों को एक साथ रहने के लिए प्रेरित किया है। यह बस्ती प्रारूप प्रतिकूल परिस्थितियों में सामाजिक एकजुटता और रक्षात्मक दृष्टिकोण का एक उत्कृष्ट भौगोलिक उदाहरण है।

103. (D) आगरा
आगरा एक आंतरिक मैदानी नगर है जो यमुना नदी के तट पर स्थित है, न कि समुद्र तट पर। इसके विपरीत सूरत, दमन और गोआ भारत के तटीय स्थानों पर स्थित हैं जहाँ से समुद्री व्यापार आसानी से किया जा सकता है। तटीय नगरों का विकास अक्सर बंदरगाहों और अंतरराष्ट्रीय व्यापार के प्रवेश द्वारों के रूप में हुआ। आगरा का ऐतिहासिक महत्व मुख्य रूप से एक प्रशासनिक और सांस्कृतिक केंद्र के रूप में रहा है, जो उत्तर भारत के मध्य में स्थित है।

104. (C) P-4, Q-1, R-2, S-3
गुजरात के मैदानों में अर्ध-गुच्छित बस्तियाँ देखी जाती हैं। छत्तीसगढ़ में पल्ली बस्तियाँ अपने स्थानीय स्वरूप के साथ विद्यमान हैं। मेघालय के पहाड़ी और वन क्षेत्रों में भूमि के विखंडन के कारण परिक्षिप्त बस्तियाँ सामान्य हैं। उत्तर प्रदेश के उपजाऊ जलोढ़ मैदानों में सघन जनसंख्या के कारण गुच्छित बस्तियाँ प्रमुखता से पाई जाती हैं। यह मिलान भारत के विभिन्न भौगोलिक प्रदेशों और वहां की बस्तियों के स्वरूप के बीच के गहरे संबंध को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

105. (C) मध्यम और छोटे श्रेणी के नगर
ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ते निवेश और बुनियादी ढांचे के विकास के साथ पूरे देश में मध्यम और छोटे श्रेणी के नगरों का तेजी से विकास हुआ है। ये नगर ग्रामीण आबादी के लिए निकटतम सेवा केंद्र और बाजार के रूप में कार्य करते हैं। ये महानगरों पर बढ़ते जनसंख्या दबाव को कम करने में भी सहायक होते हैं। छोटे नगरों का यह विस्तार देश में शहरीकरण के विकेंद्रीकरण को दर्शाता है, जिससे आर्थिक विकास की पहुँच ग्रामीण अंचलों के अधिक समीप हो गई है।

106. (D) 3, 2, 1
भारत में नगरों के विकास का सही ऐतिहासिक क्रम प्राचीन धार्मिक केंद्रों (जैसे वाराणसी) से प्रारंभ होता है। इसके बाद मध्यकाल में रजवाड़ों और रियासतों के मुख्यालयों के रूप में दिल्ली और जयपुर जैसे नगरों का उदय हुआ। अंत में, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप चंडीगढ़ जैसे सुनियोजित प्रशासनिक नगरों का विकास हुआ। यह कालानुक्रमिक व्यवस्था भारत की बदलती राजनीतिक और सामाजिक प्राथमिकताओं के अनुसार नगरीय परिदृश्य में आए क्रमिक परिवर्तनों को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

107. (D) प्रत्येक शहर केवल एक ही प्रकार्य करता है।
नगरों के प्रकार्य कभी स्थिर नहीं होते और वे समय के साथ बदलते रहते हैं। कोई भी आधुनिक शहर केवल एक कार्य तक सीमित नहीं रहता; बल्कि वह बहुप्र प्रकार्यात्मक बन जाता है। उदाहरण के लिए, एक प्रशासनिक नगर में व्यापार, उद्योग और शिक्षा भी महत्वपूर्ण हो सकते हैं। विशेष रूप से बड़े महानगरों में कई प्रकार्य आपस में इतने जुड़े होते हैं कि उन्हें किसी एक वर्ग में रखना असंभव होता है। अतः यह कहना गलत है कि प्रत्येक शहर केवल एक ही कार्य करता है।

108. (C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
बस्तियों का आकार और प्रकार वास्तव में भिन्न होता है, जो उनकी अवस्थिति और कार्यों पर निर्भर करता है। हालांकि, कथन 2 गलत है क्योंकि बस्तियों की पारिस्थितिकी और प्रौद्योगिकी कभी स्थिर नहीं रहती; वे समय के साथ निरंतर विकसित और परिवर्तित होती रहती हैं। तकनीकी प्रगति और पर्यावरण में बदलाव बस्तियों के विन्यास और उनकी कार्यप्रणाली को सीधे प्रभावित करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों का धीरे-धीरे नगरीय क्षेत्रों में बदलना प्रौद्योगिकी और पारिस्थितिकी में आने वाले इन्हीं बदलावों का एक जीवंत परिणाम है।

109. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में नगरीकरण का स्तर (31.16%) विकसित देशों (जैसे अमेरिका या जापान) की तुलना में काफी कम है जहाँ शहरी आबादी अक्सर 75 से 80 प्रतिशत से भी अधिक होती है। यह अंतर आर्थिक विकास के स्तर और औद्योगिक एवं सेवा क्षेत्रों की व्यापकता को दर्शाता है। कारण सही ढंग से आंकड़ों के माध्यम से इस तुलनात्मक स्थिति को स्पष्ट करता है। यद्यपि भारत में शहरीकरण बढ़ रहा है, लेकिन विकसित अर्थव्यवस्थाओं के मुकाबले अभी भी एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है।

110. (D) इटारसी
इटारसी एक प्रमुख रेलवे जंक्शन होने के कारण 'आंतरिक परिवहन की धुरी' का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह शहर मध्य भारत में स्थित है और विभिन्न दिशाओं को जोड़ने वाले रेल मार्गों का केंद्र है। परिवहन नगरों का विकास और अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से यात्रियों और माल की सुगम आवाजाही पर निर्भर करती है। इसके विपरीत, कोझीकोड और विशाखापट्नम जैसे नगर समुद्री पत्तन नगर हैं जिनका महत्व जलमार्गों से अधिक है, जबकि इटारसी पूरी तरह से स्थलीय परिवहन के लिए जाना जाता है।

111. (A) पर्यटन नगर
उडगमंडलम (ऊटी), जोधपुर और जैसलमेर अपनी अद्वितीय जलवायु, प्राकृतिक सुंदरता और ऐतिहासिक विरासत के कारण पर्यटन नगरों के रूप में प्रसिद्ध हैं। ऊटी एक प्रसिद्ध हिल स्टेशन है, जबकि जोधपुर और जैसलमेर अपने किलों और राजस्थानी संस्कृति के लिए पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इन नगरों की अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा पर्यटन और उससे जुड़ी सेवाओं, जैसे होटल और हस्तशिल्प, पर आधारित है। ये नगर मनोरंजन और सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करने वाले प्रमुख गंतव्यों के रूप में वैश्विक स्तर पर पहचाने जाते हैं।

112. (A) केवल 1, 2 और 3
बस्तियाँ छोटी और विरल से लेकर बड़ी और संकुलित तक हो सकती हैं और नगरीय बस्तियाँ द्वितीयक एवं तृतीयक कार्यों में संलग्न रहती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में घनिष्ठ सामाजिक संबंध होते हैं क्योंकि लोग एक-दूसरे को व्यक्तिगत रूप से जानते हैं। हालांकि, कथन 4 गलत है क्योंकि नगरीय क्षेत्रों में जीवन का ढंग सरल और धीमा नहीं, बल्कि अत्यंत जटिल और तीव्र होता है। शहरों में समय की पाबंदी और व्यावसायिक व्यस्तता के कारण जीवन की गति ग्रामीण अंचलों की तुलना में काफी अधिक होती है।

113. (B) 6, 171
2011 की जनगणना के अनुसार भारत में नगरों और नगरीय संकुलों की कुल संख्या बढ़कर 6,171 हो गई थी। यह आंकड़ा 2001 की तुलना में महत्वपूर्ण वृद्धि को दर्शाता है, जब यह संख्या लगभग 5,161 थी। नगरों की संख्या में यह वृद्धि ग्रामीण क्षेत्रों के शहरी केंद्रों में बदलने और नई नगरपालिकाओं के गठन के कारण हुई है। नगरों की बढ़ती संख्या भारत में तीव्र शहरीकरण की प्रक्रिया और बदलती हुई जनसंख्या वितरण की प्रवृत्तियों को सांख्यिकीय रूप से पुष्ट करती है।

114. (A) भोपाल
भोपाल एक पठारी क्षेत्र में झीलों के किनारे बसा है, न कि किसी बड़ी नदी के तट पर। इसके विपरीत, आगरा यमुना नदी के तट पर, पटना गंगा नदी के किनारे और कोलकाता हुगली नदी के तट पर स्थित हैं। ऐतिहासिक रूप से नगरों का विकास जल की उपलब्धता और परिवहन के लिए नदियों के पास हुआ

था। भोपाल की अवस्थिति उसकी झीलों के लिए विशेष रूप से जानी जाती है। नदियों के किनारे बसे नगर प्राचीन व्यापारिक मार्गों और उपजाऊ मैदानों के केंद्र रहे हैं।

115. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
डिगबोई असम में स्थित एक महत्वपूर्ण तेल खनन नगर है। महू मध्य प्रदेश में एक प्रसिद्ध सैन्य छावनी या गैरिसन नगर है। अलीगढ़ अपने विश्वविद्यालय के कारण एक प्रमुख शैक्षिक नगर के रूप में विख्यात है। माउंट आबू राजस्थान का एकमात्र हिल स्टेशन होने के कारण एक लोकप्रिय पर्यटन नगर है। यह मिलान स्पष्ट करता है कि भौगोलिक स्थिति और विशिष्ट आर्थिक या शैक्षणिक गतिविधियाँ किसी नगर के कार्यात्मक चरित्र और उसकी राष्ट्रीय पहचान को किस प्रकार निर्धारित करती हैं।

116. (D) 1951-1961
1951 और 1961 के बीच भारत में नगरों की कुल संख्या में पिछले दशक की तुलना में कमी आई थी। यह गिरावट मुख्य रूप से 1961 की जनगणना में नगरीय क्षेत्रों की परिभाषा को अधिक कड़ा करने के कारण हुई थी, जिससे कई छोटे कस्बे वापस ग्रामीण श्रेणी में आ गए। इसके बाद से नगरों की संख्या में कभी कमी नहीं देखी गई। यह सांख्यिकीय परिवर्तन शहरीकरण की वास्तविक गिरावट को नहीं, बल्कि प्रशासनिक और परिभाषा संबंधी बदलावों को अधिक दर्शाता है।

117. (C) चोरियों और डकैतियों से सुरक्षा
ग्रामीण बस्तियों के प्रकारों को निर्धारित करने में सुरक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जिन क्षेत्रों में चोरियों, डकैतियों या ऐतिहासिक रूप से बाहरी आक्रमणों का अधिक भय रहता है, वहाँ लोग असुरक्षा के कारण एक साथ संहत या गुच्छित बस्तियों में रहना पसंद करते हैं। पास-पास घर होने से सामुदायिक निगरानी और सामूहिक रक्षा संभव हो पाती है। यह कारक विशेष रूप से मध्य भारत के पठारी क्षेत्रों और नागालैंड जैसे पहाड़ी प्रदेशों में बस्तियों के संकुलित होने का एक प्रमुख कारण रहा है।

118. (C) केवल 1, 2, 4 और 5
प्राचीन नगरों का विकास अक्सर धार्मिक या सांस्कृतिक केंद्रों के रूप में हुआ, जैसे प्रयाग और मदुरई। 1850 के बाद आधुनिक उद्योगों पर आधारित नगर जैसे जमशेदपुर का जन्म हुआ। हालांकि, कथन 3 गलत है क्योंकि आधुनिक नगरों का विकास केवल अंग्रेजों ने नहीं किया; फ्रांसीसी (पांडिचेरी) और पुर्तगालियों (गोवा) ने भी अपने व्यापारिक केंद्र विकसित किए थे। इसके अलावा, स्वतंत्रता के बाद भारतीय सरकार ने भी कई आधुनिक प्रशासनिक और औद्योगिक नगरों का योजनाबद्ध तरीके से निर्माण किया है।

119. (D) नगर से जुड़ा ग्रामीण क्षेत्र
'पश्च भूमि' या हिंटरलैंड का तात्पर्य उस ग्रामीण क्षेत्र से है जो किसी नगर के चारों ओर स्थित होता है और प्रकार्यात्मक रूप से उससे जुड़ा होता है। नगर अपनी खाद्यान्न, कच्चा माल और श्रमिक आवश्यकताओं के लिए इस क्षेत्र पर निर्भर करता है। बदले में, नगर इस क्षेत्र को अपनी विशिष्ट सेवाएँ, उत्पाद और बाजार उपलब्ध कराता है। यह नगर और उसके आसपास के क्षेत्र के बीच एक परस्पर लाभकारी संबंध है, जो क्षेत्रीय विकास और आर्थिक संतुलन को बनाए रखता है।

120. (A) घरों का दूर-दूर बिखरा होना।
गुच्छित बस्ती की मुख्य पहचान घरों का अत्यंत पास-पास और संहत रूप में निर्मित होना है, न कि दूर-दूर बिखरा होना। इसमें रहन-सहन का क्षेत्र कृषि भूमि से स्पष्ट रूप से अलग होता है और बस्ती अक्सर आयताकार या रैखिक जैसी ज्यामितीय आकृतियाँ बनाती है। घरों का बिखराव वास्तव में परिक्षिप्त या एकाकी बस्तियों की विशेषता है। गुच्छित बस्तियाँ सामाजिक निकटता और सुरक्षा की भावना को दर्शाती हैं, जहाँ लोग एक सघन समुदाय के रूप में निवास करते हैं।

121. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
दुर्गापुर, भिलाई, सिंदरी और बरौनी का विकास वास्तव में औद्योगिक केंद्रों के रूप में हुआ है और ये स्वतंत्रता के बाद अस्तित्व में आए। हालांकि, केवल स्वतंत्रता के बाद विकसित होना ही उनके औद्योगिक होने का एकमात्र कारण नहीं है; यह सरकार की औद्योगिक नीतियों और खनिजों की निकटता पर आधारित था। अतः दोनों कथन स्वतंत्र रूप से सही हैं, लेकिन कारण पूरी तरह से यह स्पष्ट नहीं करता कि वे केवल प्रशासन या पर्यटन के बजाय औद्योगिक ही क्यों बने।

122. (A) लोगों का समूहन और उनके संसाधन आधार के रूप में क्षेत्र का आवंटन दोनों
बस्ती की प्रक्रिया में दो महत्वपूर्ण पहलू शामिल होते हैं: पहला, लोगों का एक निश्चित स्थान पर संगठित होकर रहना (समूहन) और दूसरा, उनके जीवन निर्वाह के लिए एक विशिष्ट संसाधन आधार या क्षेत्र का आवंटन। यह दोनों प्रक्रियाएँ मिलकर एक स्थायी अधिवास को जन्म देती हैं। केवल समूहन या केवल क्षेत्र का आवंटन एक पूर्ण बस्ती का निर्माण नहीं कर सकता। यह मानवीय आवश्यकता और पर्यावरण के बीच के अंतर्संबंध को दर्शाती है, जो ग्रामीण और नगरीय दोनों रूपों में पाई जाती है।

123. (D) गंगा का जलोढ़ मैदान
गंगा के जलोढ़ मैदान अत्यंत उपजाऊ और समतल हैं, जो सघन जनसंख्या और खेती के लिए अनुकूल हैं। यहाँ परिक्षिप्त बस्तियों के बजाय गुच्छित या संहत बस्तियाँ पाई जाती हैं क्योंकि लोग संसाधनों के पास मिलकर रहना पसंद करते हैं। इसके विपरीत, हिमालय की घाटियों, राजस्थान के शुष्क प्रदेशों और उत्तर-पूर्वी पहाड़ियों में कठिन परिस्थितियों और विखंडित भूमि के कारण परिक्षिप्त बस्तियाँ सामान्य हैं। जलोढ़ मैदानों की प्रकृति लोगों को समुदाय में एकजुट रहने के लिए प्रेरित करती है।

124. (B) केवल 1, 2 और 4
नगर और गाँव प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह से एक-दूसरे से जुड़े होते हैं, और नगर आपस में भी एक श्रृंखला के रूप में जुड़े रहते हैं। वस्तुओं और सेवाओं का विनिमय हमेशा प्रत्यक्ष नहीं होता; यह अक्सर मंडी शहरों और छोटे नगरों के माध्यम से एक

85. (C) मोदीनगर
मोदीनगर एक प्रमुख औद्योगिक नगर है, न कि प्रशासन नगर। प्रशासन नगरों का विकास मुख्य रूप से सरकारी मुख्यालयों और राजधानी के कार्यों के लिए किया जाता है, जैसे नई दिल्ली, भोपाल और गांधीनगर। मोदीनगर जैसे शहरों की पहचान वहां स्थित उद्योगों और कारखानों से होती है। नगरों का यह वर्गीकरण वहां होने वाले मुख्य कार्यों के आधार पर किया जाता है, जहाँ मोदीनगर विनिर्माण की श्रेणी में आता है और अन्य प्रशासनिक कार्यों के लिए प्रसिद्ध हैं।

86. (B) केवल 1, 2, 3 और 5
भारत में लगभग 100 मध्यकालीन नगर हैं जो रजवाड़ों के मुख्यालय के रूप में विकसित हुए। जयपुर और आगरा इसके प्रसिद्ध उदाहरण हैं। ये अक्सर किला नगर थे जो पुराने खंडहरों पर बने थे। कथन 4 गलत है क्योंकि ये नगर हमेशा नए स्थानों पर नहीं बने, बल्कि कई बार सुरक्षा और ऐतिहासिक महत्व के कारण पुराने नगरों के अवशेषों पर ही विकसित किए गए थे। इनकी संरचना में किलों और महलों का विशेष महत्व था जो मध्यकालीन शक्ति के प्रतीक थे।

87. (D) 31.13%
1991 और 2001 के बीच भारत की कुल नगरीय जनसंख्या में दशकीय वृद्धि दर 31.13 प्रतिशत दर्ज की गई थी। यह आंकड़ा शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या के निरंतर विस्तार को दर्शाता है, जो ग्रामीण क्षेत्रों से रोजगार और बेहतर सुविधाओं की तलाश में आए लोगों के कारण हुआ। यद्यपि यह वृद्धि दर पिछले दशक (1971-81) की तुलना में कम थी, लेकिन इसने भारतीय अर्थव्यवस्था और शहरी बुनियादी ढांचे पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला, जो विकास की निरंतरता को दर्शाता है।

88. (A) अन्य शहरों हेतु मार्गदर्शक मॉडल
स्मार्ट सिटी मिशन में 'लाइट हाऊस' का अर्थ है कि चयनित शहरों को इस तरह विकसित किया जाए कि वे अन्य शहरों के लिए एक प्रेरणादायक और मार्गदर्शक मॉडल के रूप में कार्य करें। इन शहरों में लागू किए गए स्मार्ट समाधानों और बुनियादी ढांचे के सफल प्रयोगों को बाद में देश के अन्य हिस्सों में भी दोहराया जा सकता है। इसका उद्देश्य शहरी विकास के क्षेत्र में नई तकनीकों और प्रणालियों को प्रदर्शित करना है ताकि पूरे देश में शहरी जीवन सुधर सके।

89. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
पल्ली बस्तियों का खंडीभवन सामाजिक और जातीय कारणों से होता है और ये इकाइयाँ भौतिक रूप से अलग होती हैं, जो दोनों सत्य कथन हैं। हालांकि, भौतिक अलगाव का होना केवल नाम के एक रहने का कारण नहीं है, बल्कि यह बस्ती के विखंडित स्वरूप का एक लक्षण है। खंडीभवन की मूल प्रेरणा सामाजिक भेदभाव में निहित है। अतः दोनों वाक्य अपनी जगह सही हैं, लेकिन कारण पूरी तरह से अभिकथन के मूल आधार की व्याख्या नहीं करता।

90. (A) प्राचीन नगर
पाटलिपुत्र और मदुरई भारत के सुप्रसिद्ध प्राचीन नगर हैं जिनका इतिहास हजारों वर्षों पुराना है। इन नगरों का विकास मुख्यतः धार्मिक, सांस्कृतिक और प्राचीन साम्राज्यों की राजधानियों के रूप में हुआ था। पाटलिपुत्र मगध की शक्ति का केंद्र था और मदुरई पांड्य राजाओं की राजधानी और मंदिरों का शहर रहा है। ये नगर आज भी अपनी प्राचीन विरासत और ऐतिहासिक महत्व को बनाए हुए हैं, जो इन्हें आधुनिक या मध्यकालीन नगरों से अलग पहचान देता है।

91. (D) एक पल्ली से लेकर महानगर तक
बस्तियों की विविधता उनके आकार और प्रकार में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जिसका विस्तार एक छोटी पल्ली (हैमलेट) से लेकर विशाल महानगरों तक होता है। पल्ली बस्तियाँ बहुत छोटी और विखंडित होती हैं, जबकि महानगर करोड़ों की आबादी वाले जटिल शहरी तंत्र होते हैं। इनके बीच में गाँव, कस्बे और शहर जैसे विभिन्न स्तर आते हैं। यह परिसर बस्तियों के क्रमिक विकास और उनकी अलग-अलग प्रकार्यात्मक और सामाजिक-आर्थिक भूमिकाओं को व्यवस्थित रूप से स्पष्ट करता है।

92. (D) सभी 1, 2, 3 और 4
चंडीगढ़ अपने प्रशासनिक मुख्यालयों के लिए, मुंबई औद्योगिक गतिविधियों के लिए, कांडला अपने समुद्री पत्तन और परिवहन सेवाओं के लिए और कोलकाता अपने बड़े व्यापारिक केंद्रों और वाणिज्यिक कार्यों के लिए प्रसिद्ध है। ये सभी उदाहरण नगरों के प्रकार्यात्मक वर्गीकरण की पुष्टि करते हैं। प्रत्येक नगर अपनी एक विशिष्ट पहचान रखता है जो वहां की मुख्य आर्थिक गतिविधि द्वारा निर्धारित होती है। यह विविधता दर्शाती है कि शहरी केंद्र देश की अर्थव्यवस्था के अलग-अलग क्षेत्रों को मजबूती प्रदान करते हैं।

93. (C) गाँव (विरल रूप से अवस्थित छोटी बस्तियाँ)
गाँव वे विरल रूप से अवस्थित छोटी बस्तियाँ होती हैं जो मुख्य रूप से कृषि, पशुपालन और अन्य प्राथमिक क्रियाकलापों में विशिष्टता प्राप्त करती हैं। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए सीधे भूमि और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहती है। गाँवों में सामाजिक संबंध घनिष्ठ होते हैं और जीवन का ढंग सरल होता है। यह नगरीय बस्तियों के बिल्कुल विपरीत है, जहाँ द्वितीयक और तृतीयक कार्यों की प्रधानता होती है और जनसंख्या का घनत्व अत्यधिक सघन पाया जाता है।

94. (D) बबीना - गैरिसन नगर
बबीना एक महत्वपूर्ण सैन्य केंद्र और छावनी होने के कारण गैरिसन नगर का सटीक उदाहरण है। सिंगरौली एक खनन नगर है, पिलानी एक शैक्षिक नगर है और सतना एक वाणिज्यिक नगर की श्रेणी में आता है। नगरों का यह प्रकार्यात्मक सुमेलन वहां होने वाली मुख्य गतिविधि और उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित होता है। बबीना जैसे नगरों की पूरी अर्थव्यवस्था और संरचना मुख्य रूप से सैन्य छावनी और उससे संबंधित सेवाओं के चारों ओर केंद्रित होती है।

आधुनिक औद्योगिक नगर है। अतः विकल्प (B) ऐतिहासिक रूप से गलत सुमेलित है।

135. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
नगरीय बस्तियाँ मुख्य रूप से अकृषि कार्यों, जैसे विनिर्माण और सेवाओं में लगी होती हैं, जो उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों से अलग बनाती हैं। कारण यह स्पष्ट करता है कि ये बस्तियाँ कच्चे माल के प्रक्रमण और सेवाओं पर निर्भर रहती हैं, जिससे उनकी आर्थिक संरचना अकृषि आधारित हो जाती है। अतः अभिकथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, अभिकथन के प्रकार्यात्मक स्वरुप की सटीक व्याख्या करता है। यह अंतर शहरी जीवन और अर्थव्यवस्था के मूल आधार को पूरी तरह स्पष्ट करता है।

136. (A) गैर-कृषि कार्यों में संलग्न महिलाएँ
जनगणना द्वारा नगरीय बस्ती की परिभाषा में पुरुष श्रमिकों का 75 प्रतिशत गैर-कृषि कार्यों में होना अनिवार्य है, इसमें महिलाओं की कार्य स्थिति का विशेष उल्लेख मापदंड के रूप में नहीं किया गया है। अन्य अनिवार्य शर्तों में 5000 से अधिक जनसंख्या, 400 का घनत्व और नगरपालिका या छावनी बोर्ड जैसे वैधानिक प्रशासन की उपस्थिति शामिल है। अतः विकल्प (A) नगरीय घोषणा के लिए एक आवश्यक सांख्यिकीय मापदंड नहीं माना जाता है, जबकि अन्य शर्तें आधिकारिक तौर पर अनिवार्य हैं।

137. (C) 17.29% से 23.34%
1951 में भारत में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 17.29 था, जो 1981 तक बढ़कर 23.34 प्रतिशत हो गया। इन तीन दशकों के दौरान देश में नियोजित विकास, औद्योगीकरण और बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं के कारण शहरी आबादी में महत्वपूर्ण वृद्धि हुई। यह वृद्धि दर्शाती है कि स्वतंत्रता के बाद के शुरुआती दशकों में भारत ने शहरीकरण की दिशा में स्थिर कदम उठाए थे। यह आंकड़ा उस दौर में शहरी जीवन के प्रति बढ़ते आकर्षण और आर्थिक अवसरों के विस्तार का एक स्पष्ट प्रमाण है।

138. (B) केवल 1, 2 और 3
बस्तियों के प्रकार का निर्धारण निर्मित क्षेत्र के विस्तार और घरों के बीच की दूरी (अंतर्वास दूरी) से होता है। उत्तरी मैदानों में उपजाऊ भूमि के कारण गुच्छित गाँव एक सामान्य लक्षण हैं। हालांकि, कथन 4 गलत है क्योंकि परिक्षिप्त बस्तियाँ मध्य भारत में आम नहीं हैं, बल्कि वे हिमालय और उत्तर-पूर्वी पहाड़ी क्षेत्रों में पाई जाती हैं। मध्य भारत के अधिकतर हिस्सों में सुरक्षा कारणों से संहत या अर्ध-गुच्छित बस्तियाँ ही अधिक प्रमुखता से देखी जाती हैं।

139. (D) विशेषीकृत एवं निष्पादित प्रकार्य
नगरों का प्रकार्यात्मक वर्गीकरण मुख्य रूप से वहां की जाने वाली विशेष आर्थिक और प्रशासनिक गतिविधियों के आधार पर किया जाता है। यदि किसी नगर का मुख्य कार्य प्रशासन है तो वह प्रशासन नगर कहलाता है, और यदि खनन है तो वह खनन नगर कहलाता है। जनसंख्या या भौगोलिक विस्तार इसका मुख्य आधार नहीं होते। यह वर्गीकरण नगर की उस विशिष्ट भूमिका को दर्शाता है जो वह अपने आसपास के क्षेत्र और देश की व्यापक अर्थव्यवस्था में सक्रिय रूप से निभाता है।

140. (B) अंबाला, सतना (गैरिसन)
अंबाला एक प्रमुख गैरिसन (छावनी) नगर है, लेकिन सतना एक वाणिज्यिक नगर है। इसलिए ये दोनों एक ही प्रकार्यात्मक वर्ग में नहीं आते। अन्य विकल्प जैसे चंडीगढ़-गांधीनगर (प्रशासन), रानीगंज-झरिया (खनन) और रुड़की-पिलानी (शैक्षिक) बिल्कुल सही सुमेलित हैं क्योंकि वे एक ही तरह की मुख्य गतिविधियों के लिए जाने जाते हैं। नगरों की कार्यात्मक पहचान उनके मुख्य आर्थिक आधार से जुड़ी होती है, जिसमें अंबाला सैन्य और सतना व्यापारिक दृष्टिकोण से काफी अलग हैं।

141. (B) केवल 2, 3, 4 और 5
भारत में नगरीय जनसंख्या और उसका प्रतिशत लगातार बढ़ा है, और 1951-61 के दशक में नगरों की संख्या में परिभाषा बदलने के कारण गिरावट आई थी। पिछले दो दशकों में वृद्धि दर में कुछ धीमी प्रवृत्ति देखी गई है। हालांकि, कथन 1 पूरी तरह सही नहीं है क्योंकि 1951-61 में नगरों की कुल संख्या में कमी आई थी, जबकि अन्य सभी प्रवृत्तियाँ भारतीय शहरीकरण के ऐतिहासिक आंकड़ों से मेल खाती हैं। यह शहरी विकास की प्रवृत्तियों का एक संतुलित सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

142. (D) ग्रामीण बस्तियों के
गुच्छित, अर्ध-गुच्छित, पल्लीकृत और परिक्षिप्त भारत में ग्रामीण बस्तियों के चार प्रमुख भौगोलिक प्रकार हैं। यह वर्गीकरण घरों के विन्यास, उनके बीच की दूरी और वहां रहने वाले समुदायों के आपसी संबंधों के आधार पर किया गया है। गुच्छित बस्तियाँ संहत होती हैं जबकि परिक्षिप्त बस्तियाँ बिखरी हुई होती हैं। यह विविधता भारत के अलग-अलग जलवायु प्रदेशों, सामाजिक संरचनाओं और सुरक्षा की आवश्यकताओं को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करती है, जो ग्रामीण जीवन के विभिन्न रूपों को दर्शाती है।

143. (A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।
2011 में भारत में नगरीकरण का स्तर 31.16 प्रतिशत था, जो एक प्रमाणित सांख्यिकीय तथ्य है। साथ ही, बड़े शहरों के विस्तार और नए नगरों के उदय ने वास्तव में नगरीय जनसंख्या की वृद्धि में एक अत्यंत सार्थक भूमिका निभाई है। ग्रामीण से शहरी प्रवास के साथ-साथ उप-नगरीय क्षेत्रों का विकास भी इस वृद्धि का एक मुख्य कारण रहा है। अतः दोनों कथन स्वतंत्र रूप से सही हैं और भारत में शहरी आबादी के बढ़ते प्रभाव और उसके कारणों को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

144. (B) सिंदरी
सिंदरी स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद योजनाबद्ध तरीके से विकसित एक आधुनिक औद्योगिक नगर है, जो अपने उर्वरक उद्योग के लिए जाना जाता है। मदुरई और जयपुर ऐतिहासिक नगर हैं, जबकि सूरत एक प्राचीन व्यापारिक पत्तन रहा है। सिंदरी जैसे नगरों का निर्माण स्वतंत्र भारत के औद्योगिक बुनियादी

व्यवस्थित क्रम में संपन्न होता है। अतः कथन 3 गलत है क्योंकि विनिमय की प्रक्रिया बहुस्तरीय हो सकती है। यह प्रकार्यात्मक संबंध क्षेत्रीय आर्थिक संतुलन और संसाधनों के कुशल वितरण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

125. (C) लगभग 13 गुना
1921 में भारत की नगरीय जनसंख्या लगभग 28 मिलियन थी, जो 2011 में बढ़कर 377 मिलियन से अधिक हो गई। यह वृद्धि लगभग 13 गुना से अधिक है। यह अभूतपूर्व विस्तार भारत में शहरीकरण की तीव्र गति, आर्थिक बदलावों और जनसंख्या वृद्धि के संयुक्त प्रभाव को दर्शाता है। पिछले नौ दशकों में हुए इस बदलाव ने भारत के सामाजिक और भौगोलिक परिदृश्य को पूरी तरह से बदल दिया है, जिससे शहरी क्षेत्र आर्थिक गतिविधियों के मुख्य केंद्र बन गए हैं।

126. (A) 3, 2, 1, 4
भारत में नगरों का विकास सिंधु घाटी सभ्यता के साथ प्राचीन काल में शुरु हुआ। इसके बाद मध्यकाल में रजवाड़ों के मुख्यालयों के रूप में नगरों का उदय हुआ। औपनिवेशिक काल के दौरान अंग्रेजों ने तटीय शहरों (मुंबई, चेन्नई, कोलकाता) को विकसित किया। सबसे अंत में, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात औद्योगिक और योजनाबद्ध प्रशासनिक नगर अस्तित्व में आए। यह क्रम भारत के हजारों वर्षों के नगरीय इतिहास और विभिन्न शासनों के प्रभाव को स्पष्ट रुप से व्यवस्थित करता है।

127. (A) व्यापारिक पत्तनों के रूप में
अंग्रेजों और अन्य यूरोपीय शक्तियों ने सूरत, दमन, गोआ और पांडिचेरी जैसे नगरों को मुख्य रूप से व्यापारिक पत्तनों और समुद्री व्यापार के नोड के रूप में विकसित किया था। इन नगरों के माध्यम से वे भारत से मसालों, कपड़ों और अन्य संसाधनों का निर्यात करते थे। तटीय अवस्थिति के कारण ये स्थान जहाजों की आवाजाही के लिए आदर्श थे। इन केंद्रों ने भारत के पारंपरिक व्यापारिक मार्गों को बदलकर वैश्विक समुद्री व्यापार व्यवस्था से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

128. (B) औद्योगिक नगर
हुगली और सेलम भारत के महत्वपूर्ण औद्योगिक नगरों के उदाहरण हैं। हुगली का विकास जूट उद्योग और गंगा नदी के किनारे अन्य विनिर्माण इकाइयों के कारण हुआ, जबकि सेलम अपने लोहा एवं इस्पात उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। इन नगरों की पहचान और मुख्य आर्थिक आधार पूरी तरह से औद्योगिक उत्पादन पर टिका हुआ है। ऐसे नगरों में उद्योगों की स्थापना ने न केवल शहरीकरण को बढ़ावा दिया, बल्कि ये देश के विनिर्माण क्षेत्र की रीढ़ के रूप में कार्य करते हैं।

129. (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारत में नगरीय जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर 1971-1981 के दौरान उच्चतम 46.14% थी। 1941-1951 के दशक में यह 41.42% रही, जो विभाजन के समय हुए प्रवास का परिणाम थी। 1961-1971 के दौरान वृद्धि दर 38.23% दर्ज की गई और 1981-1991 के बीच यह 36.47% रही। यह मिलान दर्शाता है कि 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत में शहरीकरण की गति सबसे अधिक तीव्र और प्रभावशाली थी, जो निरंतर बदलती जनसांख्यिकीय प्रवृत्तियों का परिचायक है।

130. (A) दशकीय वृद्धि की सामान्य प्रवृत्ति
1901 से 2011 के बीच भारत में नगरों और नगरीय संकुलों की संख्या में आमतौर पर दशकीय वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई है। केवल 1911 और 1961 जैसे कुछ अपवादों को छोड़कर, जहाँ परिभाषा में बदलाव या अन्य कारणों से कमी आई थी, यह संख्या निरंतर बढ़ती रही है। 2011 तक पहुँचते-पहुँचते यह संख्या 6,171 हो गई। यह वृद्धि दर्शाती है कि भारत का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण से शहरी स्वरूप की ओर तेजी से परिवर्तित हो रहा है।

131. (C) भौतिक, सांस्कृतिक-मानवजातीय और सुरक्षा संबंधी
ग्रामीण बस्तियों के स्वरूप को प्रभावित करने वाले कारकों को तीन मुख्य श्रेणियों में बांटा गया है। भौतिक कारकों में भू-भाग, जलवायु और जल शामिल हैं। सांस्कृतिक-मानवजातीय कारकों में सामाजिक संरचना, जाति और धर्म की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। सुरक्षा संबंधी कारक चोरियों और डकैतियों से बचाव पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ये तीनों कारक मिलकर यह निर्धारित करते हैं कि किसी क्षेत्र की बस्ती गुच्छित होगी, अर्ध-गुच्छित होगी, पल्लीकृत होगी या पूरी तरह से परिक्षिप्त होगी।

132. (C) केवल 1, 2, 3 और 5
परिक्षिप्त बस्तियाँ सुदूर जंगलों, पहाड़ियों और कठिन धरातल वाले क्षेत्रों (मेघालय, उत्तराखंड) में पाई जाती हैं, जहाँ भूमि संसाधन विखंडित होते हैं। यह चरम विक्षेपण ऊबड़-खाबड़ भू-भाग के कारण होता है। हालांकि, कथन 4 गलत है क्योंकि उत्तर भारत के जलोढ़ मैदानों में यह प्रारूप सामान्य नहीं है; वहाँ समतल और उपजाऊ भूमि के कारण सघन गुच्छित बस्तियाँ पाई जाती हैं। एकाकी झोपड़ियाँ केवल उन्हीं क्षेत्रों में संभव हैं जहाँ बड़े पैमाने पर कृषि योग्य समतल भूमि का अभाव होता है।

133. (C) अर्ध-गुच्छित बस्ती
अर्ध-गुच्छित बस्ती में सामाजिक स्तरीकरण स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जहाँ गाँव का प्रभावशाली वर्ग केंद्र में और निचला तबका बाहरी हिस्सों में रहता है। यह संरचना अक्सर किसी बड़े संहत गाँव के विखंडन या सामाजिक भेदभाव के कारण उत्पन्न होती है। इसमें घर एक जगह गुच्छित तो होते हैं लेकिन उनमें एक स्पष्ट विभाजन और अलगाव बना रहता है। यह प्रारूप गुजरात और राजस्थान के कुछ हिस्सों में काफी आम है, जो सामाजिक व्यवस्था की भौगोलिक अभिव्यक्ति को दर्शाता है।

134. (B) आधुनिक नगर (प्रशासनिक) - आगरा
आगरा वास्तव में एक मध्यकालीन नगर है जिसका विकास मुगल काल के दौरान राजधानी और प्रशासनिक मुख्यालय के रूप में हुआ था, न कि यह एक आधुनिक प्रशासनिक नगर है। आधुनिक प्रशासनिक नगरों में चंडीगढ़, गांधीनगर और नई दिल्ली जैसे नाम शामिल हैं जो योजनाबद्ध तरीके से विकसित किए गए। पाटलिपुत्र प्राचीन नगर और हैदराबाद मध्यकालीन नगर के सही उदाहरण हैं। दुर्गापुर स्वतंत्रता के बाद बना एक

155. (C) नगरीय केंद्रों से नवाचारों एवं प्रभावों का ग्रामीण क्षेत्रों की ओर विस्तृत होना।
प्रसरण की प्रक्रिया उस तंत्र को संदर्भित करती है जिसके माध्यम से नगरीय केंद्रों के नवाचार, तकनीक और आर्थिक विकास के प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों की ओर फैलते हैं। शहर विकास के इंजन के रूप में कार्य करते हैं और उनके द्वारा उत्पन्न सुविधाएँ धीरे-धीरे ग्रामीण पृष्ठ प्रदेशों तक पहुँचती हैं। यह प्रक्रिया ग्रामीण क्षेत्रों के आधुनिकीकरण में सहायक होती है और एकीकृत क्षेत्रीय व्यवस्था को मजबूत बनाती है।

156. (B) गुच्छित या संहत बस्तियाँ।
ग्रामीण बस्तियों का स्वरूप स्थानीय भौतिक कारकों से प्रभावित होता है। भारत के समतल और उपजाऊ जलोढ़ मैदानों में कृषि के लिए प्रचुर भूमि उपलब्ध होती है, जिसके कारण यहाँ गुच्छित या संहत बस्तियों का विकास होता है। ऐसी बस्तियों में घर एक-दूसरे के निकट बने होते हैं, जो सामुदायिक जीवन और साझा संसाधनों के बेहतर उपयोग को बढ़ावा देते हैं, जिससे एक सघन बसावट पैटर्न निर्मित होता है।

157. (D) संसाधनों का बिखरा हुआ होना।
पहाड़ी और वनाच्छादित क्षेत्रों में बिखरे हुए संसाधनों के कारण परिक्षिप्त बस्तियाँ विकसित होती हैं। विषम भौगोलिक परिस्थितियों में सीमित कृषि योग्य भूमि और जल स्रोतों की स्थिति घर बनाने के स्थानों को निर्धारित करती है। यहाँ घर एक-दूसरे से काफी दूर स्थित होते हैं क्योंकि निवासी अपने छोटे और बिखरे हुए संसाधनों के पास रहना अधिक व्यावहारिक समझते हैं, जो उनके जीवन निर्वाह का आधार हैं।

158. (A) जाति और सामाजिक संरचना।
भारतीय गाँवों के आंतरिक विन्यास में सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जाति और सामाजिक संरचना यह निर्धारित करती है कि गाँव के किस हिस्से में कौन सा समूह रहेगा। अक्सर मुख्य बस्ती के केंद्र में प्रभावशाली जातियाँ रहती हैं, जबकि निम्न समूह परिधि पर बसते हैं। यह भौतिक लेआउट समाज के पारंपरिक स्तरीकरण और ऐतिहासिक बसावट के नियमों को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करता है।

159. (C) सामुदायिक रक्षा सुनिश्चित करने एवं बाहरी खतरों से सुरक्षा प्राप्त करने हेतु।
इतिहास में सुरक्षा कारणों ने बस्तियों के बसाव को बहुत प्रभावित किया है। बाहरी आक्रमणों या जंगली जानवरों के भय से लोग अक्सर एक साथ मिलकर संहत गाँवों में रहना पसंद करते थे। सामूहिक सुरक्षा की इस आवश्यकता ने घरों को पास बनाने और संगठित बस्ती विकसित करने के लिए प्रेरित किया। एकजुट होकर रहने से पूरे समुदाय को बाहरी खतरों के विरुद्ध रक्षा प्राप्त करने में सहायता मिलती थी।

160. (A) सामाजिक पदानुक्रम।
ग्रामीण बस्तियों के प्रारूप को प्रभावित करने वाले कारकों में भौतिक और सामाजिक-सांस्कृतिक तत्व शामिल हैं। भू-आकृति, जल की उपलब्धता और जलवायु प्राकृतिक पर्यावरण से जुड़े भौतिक कारक हैं। इसके विपरीत, सामाजिक पदानुक्रम मानवीय समाज की आंतरिक संरचना का हिस्सा है। यह कारक समाज में व्याप्त भेदभाव को दर्शाता है, जो बस्तियों के भौतिक स्वरूप में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है, इसलिए यह भौतिक कारक नहीं है।

161. (D) वे विशाल किलों एवं महलों से युक्त किला-शहरों के रूप में विकसित हुए।
मध्यकाल के दौरान भारतीय नगर मुख्यतः विशाल किलों और महलों से युक्त किला-शहरों के रूप में विकसित हुए। दिल्ली और जयपुर जैसे ये नगर सामंती व्यवस्था और शाही शक्ति का प्रतीक थे। इनमें भव्य मस्जिदों और संकीर्ण गलियों वाले बाजारों की प्रधानता होती थी। इन नगरों की अर्थव्यवस्था अक्सर हस्तशिल्प और राजसी संरक्षण पर आधारित थी, जो उस समय की राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था को दर्शाती थी।

162. (B) प्रशासनिक सुगमता प्राप्त करने एवं ग्रीष्मकालीन प्रवास सुनिश्चित करने हेतु।
औपनिवेशिक शासन के दौरान अंग्रेजों ने प्रशासनिक सुगमता और ग्रीष्मकालीन प्रवास के लिए शिमला और दार्जिलिंग जैसे पर्वतीय स्थलों का विकास किया। ये स्थल मैदानी इलाकों की भीषण गर्मी से बचने के लिए ग्रीष्मकालीन राजधानियों के रूप में उपयोग किए जाते थे। इन पहाड़ी शहरों के विकास ने ब्रिटिश अधिकारियों को ठंडे वातावरण में सरकारी कार्यों को संचालित करने और सैन्य एवं रणनीतिक नियंत्रण बनाए रखने में सहायता प्रदान की।

163. (C) स्वतंत्रता उपरांत विकसित किए गए नियोजित प्रशासनिक नगर।
स्वतंत्रता के पश्चात भारत सरकार ने आधुनिक विकास लक्ष्यों को पूरा करने के लिए नियोजित शहरों का निर्माण किया। चंडीगढ़ और भुवनेश्वर जैसी प्रशासनिक राजधानियाँ इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ये शहर पूर्व-निर्धारित योजनाओं, आधुनिक बुनियादी ढाँचे और सुव्यवस्थित आवासीय क्षेत्रों के साथ विकसित किए गए हैं। ये नियोजित नगर नए स्वतंत्र भारत की प्रशासनिक आवश्यकताओं और शहरी नियोजन के प्रति एक प्रगतिशील दृष्टिकोण को पूरी तरह से प्रदर्शित करते हैं।

164. (D) नदी घाटियों में।
प्राचीन भारतीय नगर जैसे वाराणसी और पाटलिपुत्र मुख्य रूप से उपजाऊ नदी घाटियों में विकसित हुए। इन स्थानों पर प्रचुर जल आपूर्ति, उपजाऊ भूमि और जल परिवहन की सुगमता ने घनी बसावट को बढ़ावा दिया। समय के साथ, ये बस्तियाँ महत्वपूर्ण धार्मिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक केंद्रों के रूप में उभरीं। नदियों के किनारे स्थित होने के कारण इन्हें निरंतर संसाधनों की प्राप्ति और क्षेत्रीय व्यापार में सामरिक बढ़त हासिल हुई।

165. (A) व्यापारिक एवं सामरिक लक्ष्यों की पूर्ति हेतु पत्तन-शहरों के रूप में।
यूरोपीय शक्तियों ने व्यापारिक और सामरिक आवश्यकताओं के लिए बंबई, कलकत्ता और मद्रास जैसे नगरों को तटीय स्थानों

ढांचे को मजबूत करने के लिए किया गया था। यह विकास आधुनिक भारत की आर्थिक प्राथमिकताओं और विनिर्माण क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के प्रयासों का एक महत्वपूर्ण भौगोलिक और औद्योगिक प्रमाण प्रस्तुत करता है।

145. (B) पल्ली बस्ती
पल्ली बस्ती वह प्रारूप है जिसमें एक बड़ा गाँव भौतिक रूप से कई छोटी इकाइयों में विभाजित होता है, जिन्हें स्थानीय रूप से नगला, ढाँणी, पान्ना या पाड़ा कहा जाता है। यद्यपि ये इकाइयाँ एक-दूसरे से थोड़ी दूरी पर स्थित होती हैं, लेकिन वे सभी एक ही प्रशासनिक गाँव का हिस्सा बनी रहती हैं। यह खंडीभवन अक्सर सामाजिक, जातीय या भौगोलिक कारणों से होता है। यह भारतीय ग्रामीण परिवेश में समुदायों के अपने-अपने टोलों में बसने की पारंपरिक व्यवस्था को दर्शाता है।

146. (A) 3, 378
1981 की जनगणना के अनुसार भारत में नगरों और नगरीय संकुलों की कुल संख्या 3,378 थी। यह आंकड़ा उस समय के बढ़ते शहरीकरण और मध्यम श्रेणी के शहरों के विकास को दर्शाता है। पिछले दशकों की तुलना में यह एक स्थिर वृद्धि थी, जो देश में औद्योगिक और प्रशासनिक गतिविधियों के विस्तार के साथ-साथ शहरी आबादी के जमाव की प्रवृत्ति को भी पुष्ट करती है। नगरों की यह बढ़ती संख्या भविष्य के महानगरों की नींव रखने वाले शहरी केंद्रों के विस्तार का परिचायक है।

147. (C) केवल 1, 2 और 4
नगरीय बस्तियाँ संहत, विशाल और अकृषि कार्यों में संलग्न होती हैं। वे अपने आसपास के क्षेत्रों से प्रकार्यात्मक रूप से जुड़ी होती हैं, जिनसे वे संसाधन प्राप्त करती हैं और सेवाएँ प्रदान करती हैं। हालांकि, कथन 3 गलत है क्योंकि नगर और गाँव केवल अप्रत्यक्ष नहीं, बल्कि परिवहन और संचार के माध्यम से सीधे और प्रत्यक्ष रूप से भी जुड़े होते हैं। गाँवों से शहरों को होने वाली खाद्यान्न आपूर्ति और शहरों से मिलने वाली चिकित्सा सेवाएँ इस प्रत्यक्ष संबंध का सबसे सटीक उदाहरण हैं।

148. (D) विखंडित भूमि संसाधन आधार
परिक्षिप्त बस्तियों के निर्माण का मुख्य भौगोलिक कारण विखंडित भूमि संसाधन आधार है। पहाड़ी क्षेत्रों, घने जंगलों या ऊबड़-खाबड़ धरातल पर कृषि योग्य भूमि छोटे-छोटे टुकड़ों में उपलब्ध होती है। इस कारण लोग अपने खेतों या चरागाहों के पास ही घर बनाकर रहना पसंद करते हैं, जिससे बस्तियाँ एक-दूसरे से काफी दूर और बिखरी हुई हो जाती हैं। यह प्रारूप किसी भी प्रकार की सामाजिक संहतता के बजाय संसाधनों की उपलब्धता और पहुँच के अनुसार ढला हुआ होता है।

149. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
सहारनपुर एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र होने के कारण वाणिज्यिक नगर है। झरिया अपने कोयला क्षेत्रों के लिए प्रसिद्ध एक खनन नगर है। जालंधर एक प्रमुख सैन्य छावनी होने के कारण गैरिसन नगर की श्रेणी में आता है। अलीगढ़ अपने विख्यात विश्वविद्यालय के कारण एक प्रमुख शैक्षिक नगर के रूप में अपनी पहचान रखता है। यह मिलान स्पष्ट करता है कि विभिन्न नगर अपनी विशिष्ट आर्थिक और शैक्षणिक गतिविधियों के आधार पर अपनी एक अलग प्रकार्यात्मक पहचान और भूमिका विकसित करते हैं।

150. (B) मुख्य रूप से आर्थिक क्रियाकलाप
विरल रूप से अवस्थित छोटी बस्तियों को गाँव कहने का मुख्य आधार वहां किए जाने वाले प्राथमिक आर्थिक क्रियाकलाप, जैसे कृषि और पशुपालन हैं। यद्यपि आकार और अवस्थिति भी महत्वपूर्ण हैं, लेकिन आर्थिक आधार ही उन्हें नगरीय बस्तियों से स्पष्ट रूप से अलग करता है। शहरों में द्वितीयक और तृतीयक कार्यों की प्रधानता होती है, जबकि गाँवों की पूरी अर्थव्यवस्था भूमि और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन पर टिकी होती है। अतः आर्थिक क्रियाकलाप ही ग्रामीण बस्तियों के वर्गीकरण का सबसे महत्वपूर्ण और निर्णायक मापदंड है।

151. (B) बस्तियों का ग्रामीण-नगरीय विशेषताओं के एक क्रमिक पैमाने पर स्थित होना।
ग्रामीण-नगरीय सातत्य की अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि बस्तियाँ श्रेणियों में बँटने के बजाय एक निरंतरता में स्थित होती हैं। यह एक रैखिक पैमाना है जिसके एक छोर पर ग्रामीण और दूसरे पर नगरीय विशेषताएँ होती हैं। इसके मध्य में मिश्रित लक्षणों वाली बस्तियाँ पाई जाती हैं, जो दर्शाती हैं कि इनके बीच कोई स्पष्ट विभाजन रेखा नहीं है।

152. (A) कच्चा माल, खाद्य पदार्थ और श्रम।
नगरीय केंद्र अपनी आर्थिक गतिविधियों के लिए आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों पर निर्भर होते हैं। शहर इन क्षेत्रों से उद्योगों के लिए कच्चा माल, जनसंख्या हेतु खाद्य पदार्थ और विभिन्न कार्यों के लिए आवश्यक श्रम प्राप्त करते हैं। यह द्विपक्षीय प्रवाह परिवहन माध्यमों से सुगम होता है, जिससे दोनों क्षेत्रों के बीच एक मजबूत प्रकार्यात्मक अन्योन्याश्रय और आर्थिक संबंध निरंतर बना रहता है।

153. (C) सातत्य के मध्य स्थित वे क्षेत्र जो मिश्रित लक्षण प्रदर्शित करते हैं।
पेरी-अर्बन क्षेत्र ग्रामीण-नगरीय सातत्य के मध्य स्थित संक्रमणकालीन क्षेत्र होते हैं। इन क्षेत्रों में ग्रामीण और नगरीय दोनों प्रकार की बस्तियों के मिश्रित लक्षण देखने को मिलते हैं। यहाँ कृषि के साथ आधुनिक शहरी बुनियादी ढाँचे का विकास होता है। यह क्षेत्र दर्शाते हैं कि बस्तियाँ एक एकीकृत व्यवस्था का हिस्सा हैं और उनमें नगरीय विशेषताओं का प्रसार क्रमिक रूप से होता रहता है।

154. (D) परिवहन और संचार नेटवर्क।
ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों के बीच संसाधनों का द्विपक्षीय प्रवाह उनके विकास के लिए आवश्यक है। इस प्रकार्यात्मक अन्योन्याश्रय को मुख्य रूप से परिवहन और संचार नेटवर्क द्वारा सुगम बनाया जाता है। ये नेटवर्क कच्चे माल को शहरों तक पहुँचाने और शहरों से विनिर्मित वस्तुओं तथा सेवाओं को ग्रामीण क्षेत्रों तक विस्तृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे आर्थिक एकीकरण और क्षेत्रीय विकास संभव होता है।

175. (C) वायु प्रदूषण एवं ठोस अपशिष्ट प्रबंधन से जुड़ी गंभीर समस्याएँ।

तीव्र नगरीकरण से वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन जैसी गंभीर पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। जनसंख्या घनत्व बढ़ने और औद्योगिक गतिविधियों के विस्तार से प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक बोझ पड़ता है। कचरे के निपटान की उचित व्यवस्था न होने से शहरी स्वच्छता प्रभावित होती है, जबकि वाहनों का उत्सर्जन पर्यावरण को नुकसान पहुँचाता है। ये समस्याएँ शहरी निवासियों के स्वास्थ्य और पारिस्थितिक संतुलन के लिए खतरा हैं।

अध्याय 11

भूसंसाधन तथा कृषि

1. भू-उपयोग संवर्गों का योग किसके बराबर होता है?
(A) कुल भौगोलिक क्षेत्र की सीमा
(B) कुल प्रतिवेदन (रिपोर्टिंग) क्षेत्र
(C) निवल बोया गया संपूर्ण क्षेत्र
(D) सकल बोया गया समस्त क्षेत्र

2. भारत की प्रशासकीय इकाइयों के भौगोलिक क्षेत्र की सही जानकारी देने का दायित्व किस विभाग पर है?
(A) भारतीय सर्वेक्षण विभाग
(B) राज्य भूराजस्व विभाग
(C) केंद्रीय योजना आयोग
(D) राष्ट्रीय कृषि मंत्रालय

3. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये:
List I: (भू-उपयोग संवर्ग)
P. वर्तमान परती भूमि
Q. पुरातन परती भूमि
R. कृषि योग्य व्यर्थ भूमि
S. निवल बोया क्षेत्र
List II: (परिभाषा)
1. वह भूमि जो एक वर्ष से अधिक लेकिन पाँच वर्षों से कम समय तक कृषिरहित रहती है।
2. वह भूमि जिस पर फ़सलें उगाई व काटी जाती हैं।
3. वह भूमि जो एक कृषि वर्ष या उससे कम समय तक कृषिरहित रहती है।
4. वह भूमि जो पिछले पाँच वर्षों तक या अधिक समय तक कृषिरहित है।
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

4. भूराजस्व अभिलेख द्वारा अपनाए गए भू-उपयोग वर्गीकरण के अनुसार, 'बंजर व व्यर्थ-भूमि' में कौन-सी भूमि सम्मिलित है?
(A) वह भूमि जो एक कृषि वर्ष तक परती रहती है।
(B) वह भूमि जिस पर उद्यान व फलदार वृक्ष लगे हैं।
(C) वह भूमि जो पाँच वर्षों से अधिक समय से परती है।
(D) जो उपलब्ध तकनीक से कृषि योग्य नहीं बनाई जा सकती।

5. द्वितीयक व तृतीयक कार्यकलापों में वृद्धि होने पर किस भू-उपयोग संवर्ग में वृद्धि होती है?
(A) कुल वन क्षेत्र का विस्तार
(B) स्थायी चरागाह वाली भूमि
(C) गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त भूमि
(D) निवल बोया गया शुद्ध क्षेत्र

6. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. 'साझा संपत्ति संसाधन' पर ग्राम पंचायत या सरकार का स्वामित्व होता है।
2. इस भूमि का एक बड़ा भाग निजी स्वामित्व में होता है।
3. ये संसाधन पशुओं के लिए चारा, घरेलू उपयोग हेतु ईंधन आदि उपलब्ध कराते हैं।
4. ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए इन भूमियों का विशेष महत्व नहीं है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

7. भारत में भू-उपयोग को प्रभावित करने वाले अर्थव्यवस्था के परिवर्तनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) अर्थव्यवस्था का आकार समय के साथ बढ़ता है, जिससे भूमि पर दबाव बढ़ता है।
(B) समय के साथ अर्थव्यवस्था की संरचना में बदलाव होता है, जिसमें द्वितीयक व तृतीयक सेक्टरों में अधिक वृद्धि होती है।
(C) विकासशील देशों में कृषि पर निर्भर जनसंख्या का अनुपात अपेक्षाकृत धीरे-धीरे घटता है।
(D) जीडीपी में कृषि का हिस्सा कम होने पर भूमि दबाव कम होता है।

8. वर्ष 1950-51 तथा 2019-20 के बीच भारत में भू-उपयोग में हुए परिवर्तनों के संदर्भ में, किस संवर्ग में वृद्धि दर अधिकतम रही है?
(A) गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त क्षेत्र
(B) संपूर्ण वन क्षेत्र
(C) निवल बोया गया क्षेत्र
(D) स्थायी चरागाह क्षेत्र

9. निम्नलिखित प्रश्न में, दो कथन दिए गए हैं - एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिये और सही विकल्प का चयन कीजिये।
अभिकथन (A): भारत में गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त भूमि का

प्रसार कृषि योग्य भूमि की हानि पर हुआ है।
कारण (R): भारतीय अर्थव्यवस्था की निर्भरता औद्योगिक व सेवा सेक्टरों पर बढ़ी है तथा गाँवों व शहरों में बस्तियों का विस्तार हुआ है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

10. भूराजस्व अभिलेखों के अनुसार सरकार द्वारा वर्गीकृत वन क्षेत्र का सीमांकन किस आधार पर किया गया है?
(A) जहाँ वन विकसित हो सकते हैं।
(B) जहाँ वास्तविक रूप से घने वन पाए जाते हैं।
(C) जहाँ पहले वन थे लेकिन अब नहीं हैं।
(D) केवल राष्ट्रीय उद्यानों और अभयारण्यों का क्षेत्र।

11. भारत में 1950-51 से 2019-20 के दौरान किन चार भू-उपयोग संवर्गों के अनुपात में गिरावट आई है?
(A) वन, बंजर व व्यर्थ भूमि, स्थायी चरागाह, निवल बोया गया क्षेत्र
(B) गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त भूमि, वर्तमान परती, पुरातन परती, वन
(C) निवल बोया गया क्षेत्र, वन, स्थायी चरागाहें, गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त भूमि
(D) बंजर व व्यर्थ भूमि, कृषि योग्य व्यर्थ भूमि, स्थायी चरागाहें, फ़सल वृक्षों के अधीन क्षेत्र

12. कृषि भू-उपयोग के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. कृषि पूर्णतया भूमि पर आधारित है।
2. भूमि की गुणवत्ता कृषि उत्पादकता को प्रभावित नहीं करती है।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में भू-स्वामित्व का केवल आर्थिक मूल्य होता है।
4. भारत में निवल बोए गए क्षेत्र में बढ़ोतरी की संभावनाएँ सीमित हैं।
5. समस्त कृषि योग्य भूमि का अनुमान केवल निवल बोए गए क्षेत्र से लगाया जाता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) केवल 3 और 5

13. भूमि बचत प्रौद्योगिकी का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) कृषि के लिए अधिक नवीन भूमि का अधिग्रहण करना।
(B) फसलों में रासायनिक उर्वरकों का सीमित प्रयोग करना।
(C) प्रति इकाई भूमि में उत्पादकता को बढ़ाना।
(D) कृषि कार्यों में अतिरिक्त श्रमिकों की संख्या घटाना।

14. फ़सल गहनता की गणना का सही सूत्र क्या है?
(A) (निवल बोया गया क्षेत्र / सकल बोया गया क्षेत्र) × 100
(B) (सकल बोया गया क्षेत्र / कुल प्रतिवेदन क्षेत्र) × 100
(C) (निवल बोया गया क्षेत्र / कुल भौगोलिक क्षेत्र) × 100
(D) (सकल बोया गया क्षेत्र / निवल बोया गया क्षेत्र) × 100

15. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये:
List I: (कृषि ऋतु)
P. खरीफ़
Q. रबी
R. ज़ायद
S. दक्षिणी भारत की कृषि

List II: (विशेषता)
1. अल्पकालिक ग्रीष्मकालीन फ़सल-ऋतु
2. दक्षिण-पश्चिमी मानसून के साथ प्रारंभ
3. शरद ऋतु से प्रारंभ
4. पृथक फ़सल ऋतुएँ नहीं पाई जातीं

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

16. निम्नलिखित में से कौन-सी एक खरीफ़ फ़सल नहीं है?
(A) चावल
(B) गेहूँ
(C) कपास
(D) बाजरा

17. रक्षित सिंचाई कृषि का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) फ़सलों को पर्याप्त मात्रा में पानी देकर अधिकतम उत्पादकता प्राप्त करना।
(B) आर्द्रता की कमी के कारण फ़सलों को नष्ट होने से बचाना।
(C) केवल उन फ़सलों को उगाना जिन्हें बहुत अधिक पानी चाहिए।
(D) नहरों के माध्यम से अधिकतम क्षेत्र में सिंचाई करना।

18. निम्नलिखित घटनाओं को उनके प्रारंभ होने के कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. गहन कृषि क्षेत्र कार्यक्रम (IAAP)
2. गहन कृषि ज़िला कार्यक्रम (IADP)
3. कृषि जलवायु नियोजन
4. हरित क्रांति

(A) 2, 1, 4, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 4, 1, 2
(D) 4, 3, 2, 1

19. भारत में शुष्क भूमि खेती उन प्रदेशों तक सीमित है जहाँ वार्षिक वर्षा होती है:
(A) 100 सेंटीमीटर से अधिक

कारण (R): शहरों के चारों तरफ कृषि भूमि को इमारतों के लिए उपयोग किया जा रहा है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

86. 'सतत कृषि के लिए राष्ट्रीय मिशन' (NMSA) का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) केवल जैविक खेती के प्रसार को बढ़ावा देना।
(B) कृषि को स्थायी और जलवायु अनुकूल बनाना।
(C) रासायनिक उर्वरकों पर सरकारी सब्सिडी प्रदान करना।
(D) कृषि निर्यात को अगले पांच वर्षों में दुगना करना।

87. भारत में कॉफी की तीन किस्में कौन-सी हैं?
(A) औस, अमन, बोरो
(B) नरमा, भारतीय, अमेरिकन
(C) काली, हरी, सफेद
(D) अरेबिका, रोबस्ता, लिबेरिका

88. भारत में कृषि से संबंधित निम्नलिखित समस्याओं पर विचार करें:
1. वित्तीय संसाधनों की बाध्यताएँ तथा ऋणग्रस्तता
2. भूमि के असमान वितरण के कारण लंबा शोषण
3. चकबंदी का न होना या पुनःचकबंदी की आवश्यकता
4. पारिवारिक ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ही खाद्यान्नों की कृषि करना
5. कृषि कार्यों का लगातार गहन श्रम वाले न होना

उपरोक्त में से कौन-से कथन क्रमशः 'ऋणग्रस्तता', 'भूमि सुधार', 'खण्डित जोत', 'व्यावसायीकरण का अभाव' तथा 'अधूरोज़गारी' को दर्शाते हैं?
(A) 1, 2, 3, 4, 5
(B) 5, 4, 3, 2, 1
(C) 1, 3, 2, 5, 4
(D) 2, 1, 4, 3, 5

89. किस प्रकार की कृषि में फ़सलों का उत्पादन प्रत्यक्ष रुप से वर्षा पर निर्भर रहता है?
(A) सिंचित कृषि
(B) रोपण कृषि
(C) वर्षा निर्भर (बारानी) कृषि
(D) गहन कृषि

90. कपास उत्पादन के तीन मुख्य क्षेत्र कौन-से हैं?
(A) उत्तर-पश्चिम, पश्चिम और दक्षिण भारतीय पठार
(B) उत्तर-पूर्वी भारत और दक्कन का पश्चिमी घाट
(C) गंगा का मैदान और तटीय मैदानी आर्द्र क्षेत्र
(D) हिमालयी क्षेत्र और थार का रेतीला मरुस्थल

91. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये:
List I: (भू-राजस्व प्रणाली)
P. महालवाड़ी
Q. रैयतवाड़ी
R. ज़मींदारी
S. साझा संपत्ति
List II: (विशेषता)
1. किसानों के लिए सबसे अधिक शोषणकारी
2. राज्य के स्वामित्व में सामुदायिक उपयोग हेतु
3. अंग्रेज़ी शासन के दौरान एक भू-राजस्व प्रणाली
4. अंग्रेज़ी शासन के दौरान एक भू-राजस्व प्रणाली
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

92. वह कौन-सी फ़सल है जिसकी खेती समुद्रतल से 2000 मीटर की ऊँचाई तक और पूर्वी भारत के आर्द्र भागों से लेकर उत्तर-पश्चिमी भारत के शुष्क सिंचित क्षेत्रों तक सफलतापूर्वक की जाती है?
(A) गेहूँ की फसल
(B) चावल की फसल
(C) मक्का की फसल
(D) चाय की फसल

93. किस फ़सल की खेती के लिए सफलता पूर्वक उगाने के लिए केवल एक या दो हल्की बौछारों या सिंचाई की आवश्यकता होती है?
(A) चावल की सफल खेती
(B) गन्ने की सिंचित खेती
(C) चने की दलहनी खेती
(D) जूट की रेशेदार खेती

94. 'भारत में कृषि विकास' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकार ने खाद्यान्नों की जगह व्यापारिक फ़सलों को उगाने पर बल दिया।
2. 1960 के दशक के मध्य में IADP तथा IAAP कार्यक्रम प्रारंभ किए गए।
3. हरित क्रांति से कृषि विकास में प्रादेशिक असमानता घटी।
4. 1990 के दशक की उदारीकरण नीति ने भारतीय कृषि विकास को प्रभावित नहीं किया।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन असत्य हैं?
(A) केवल 1, 3 और 4
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1 और 3
(D) केवल 2

95. भारत में 'चकबंदी' का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) बिखरे हुए भूज़ोतों को एक स्थान पर एकत्रित करना।

31. भारत में मोटे अनाजों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. देश के कुल बोये क्षेत्र के 16.5 प्रतिशत भाग पर मोटे अनाज बोये जाते हैं।
2. ज्वार, दक्षिण व मध्य भारत के अर्ध-शुष्क क्षेत्रों की प्रमुख खाद्य फ़सल है।
3. बाजरा, गर्म तथा शुष्क जलवायु में बोया जाता है और यह सूखा सहन करने में समर्थ है।
4. मक्का की पैदावार अन्य मोटे अनाजों की अपेक्षा कम होती है।
5. मोटे अनाजों की खेती मुख्यतः सिंचित क्षेत्रों में होती है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?

(A) 1, 2, और 3
(B) 2, 3 और 4
(C) 1, 4 और 5
(D) 3, 4 और 5

32. भारत में ज्वार का आधे से अधिक उत्पादन अकेला कौन-सा राज्य करता है?

(A) कर्नाटक
(B) महाराष्ट्र
(C) मध्य प्रदेश
(D) आंध्र प्रदेश

33. कौन-सी फ़सल खाद्य तथा चारा दोनों के रूप में प्रयोग होती है और निम्न कोटि मिट्टी व अर्धशुष्क परिस्थितियों में उगाई जाती है?

(A) ज्वार की फसल
(B) मक्का की फसल
(C) बाजरा की फसल
(D) रागी की फसल

34. निम्नलिखित प्रश्न में, दो कथन दिए गए हैं - एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिये और सही विकल्प का चयन कीजिये।

अभिकथन (A): भारत में दालों की उत्पादकता कम है तथा इसमें वार्षिक उतार-चढ़ाव पाया जाता है।

कारण (R): देश में दालों की खेती अधिकतर शुष्क क्षेत्रों में वर्षा आधारित फ़सल के रूप में की जाती है।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

35. भारत की दो प्रमुख दालें कौन-सी हैं?

(A) मूँग और मसूर
(B) उड़द और मोठ
(C) चना और अरहर
(D) मटर और राजमा

36. हरित क्रांति की शुरुआत के बाद हरियाणा, पंजाब तथा उत्तरी राजस्थान में किस फ़सल के क्षेत्र में कमी आई और उसके स्थान पर गेहूँ बोया जाने लगा?

(A) बाजरा
(B) ज्वार
(C) मक्का
(D) चना

37. भारत के तिलहन उत्पादन से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:

1. देश के कुल शस्य क्षेत्र के लगभग 14% भाग पर तिलहन बोया जाता है।
2. मूंगफली मुख्यतः एक वर्षा-आधारित खरीफ फ़सल है।
3. तोरिया व सरसों उपोष्णकटिबंधीय रबी फसलें हैं।
4. सोयाबीन अधिकतर मध्य प्रदेश व महाराष्ट्र में बोया जाता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

38. 'पिजन पी' (Pigeon Pea) किस दाल का दूसरा नाम है?

(A) चना
(B) अरहर (तुर)
(C) मूँग
(D) मसूर

39. तोरिया व सरसों के उत्पादन का एक-तिहाई भाग किस राज्य से आता है?

(A) हरियाणा
(B) पंजाब
(C) मध्य प्रदेश
(D) राजस्थान

40. निम्नलिखित को कालानुक्रम में व्यवस्थित करें (पुरानी से नई घटना):

1. भारत में चाय की खेती का प्रारंभ
2. हरित क्रांति
3. देश विभाजन
4. योजना आयोग द्वारा कृषि जलवायु नियोजन का प्रारंभ

(A) 1, 3, 2, 4
(B) 3, 1, 2, 4
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 2, 3, 4, 1

41. भारत में कपास की खेती के बारे में क्या सत्य है?

(A) यह एक शीतोष्ण कटिबंधीय फ़सल है।
(B) कपास पर फूल आने के समय वर्षा होना आवश्यक है।
(C) अमेरिकन कपास को 'नरमा' कहा जाता है।
(D) भारत कपास का विश्व में सबसे बड़ा उत्पादक है।

42. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये:
List I: (फ़सल)
P. कपास
Q. जूट
R. गन्ना
S. चाय
List II: (प्रकार/विशेषता)
1. रोपण कृषि
2. रेशेदार फ़सल
3. उष्ण कटिबंधीय फ़सल
4. व्यापारिक फ़सल
(A) P-2, Q-4, R-3, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-2, R-3, S-1

43. भारत में जूट उत्पादन का तीन-चौथाई भाग कौन-सा राज्य पैदा करता है?
(A) बिहार
(B) आसाम
(C) ओडिशा
(D) पश्चिम बंगाल

44. निम्नलिखित प्रश्न में, दो कथन दिए गए हैं - एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिये और सही विकल्प का चयन कीजिये।
अभिकथन (A): देश विभाजन का भारत के जूट उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।
कारण (R): देश का विशाल जूट उत्पादक क्षेत्र पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) में चला गया।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

45. भारत में गन्ने की खेती के विषय में कौन-सा कथन सही है?
(A) यह केवल वर्षा पर निर्भर फ़सल है।
(B) उत्तरी भारत में इसका उत्पादन स्तर दक्षिणी भारत से अधिक है।
(C) उत्तर प्रदेश देश का 40 प्रतिशत गन्ना उत्पादन करता है।
(D) यह देश के कुल शस्य क्षेत्र के 10 प्रतिशत भाग पर उगाई जाती है।

46. चाय की पत्तियों में पाए जाने वाले दो प्रमुख तत्व कौन-से हैं?
(A) निकोटिन और मॉर्फिन
(B) कोडीन और एस्पिरिन
(C) सेपोनिन और फ्लेवोनोइड
(D) कैफ़िन तथा टैनिन

47. भारत में कॉफ़ी की कृषि से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. भारत अधिकतर उत्तम किस्म की 'अरेबिका' कॉफ़ी का उत्पादन करता है।
2. भारत विश्व का सबसे बड़ा कॉफ़ी उत्पादक है।
3. इसकी कृषि पश्चिमी घाट की उच्च भूमि पर की जाती है।
4. देश के समस्त कॉफ़ी उत्पादन का दो-तिहाई से अधिक भाग अकेले कर्नाटक से आता है।
5. कॉफ़ी एक शीतोष्ण कटिबंधीय रोपण कृषि है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) 1, 2 और 5
(B) 2, 3 और 4
(C) 1, 3 और 4
(D) 1, 4 और 5

48. भारत में चाय की खेती सबसे पहले कहाँ प्रारंभ हुई?
(A) नीलगिरी की पहाड़ियों में
(B) असम की ब्रह्मपुत्र घाटी में
(C) दार्जिलिंग में
(D) केरल के पश्चिमी घाट में

49. 2018 के आँकड़ों के अनुसार, चाय-निर्यातक देशों में भारत का विश्व में कौन-सा स्थान था?
(A) पहला
(B) दूसरा
(C) तीसरा
(D) चौथा

50. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकार का तात्कालिक उद्देश्य खाद्यान्नों का उत्पादन बढ़ाना था, जिसके लिए निम्न में से कौन-सा उपाय नहीं अपनाया गया?
(A) खाद्यान्नों का दूसरे देशों से आयात करना।
(B) व्यापारिक फ़सलों की जगह खाद्यान्नों का उगाया जाना।
(C) कृषि गहनता को बढ़ाना।
(D) कृषि योग्य बंजर तथा परती भूमि को कृषि भूमि में परिवर्तित करना।

51. भारत में कृषि विकास से जुड़ी निम्नलिखित योजनाओं/कार्यक्रमों को उनके प्रारंभ के कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. गहन कृषि ज़िला कार्यक्रम (IADP)
2. गहन कृषि क्षेत्र कार्यक्रम (IAAP)
3. परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY)
4. कृषि जलवायु नियोजन
(A) 1, 2, 4, 3
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 4, 2, 3
(D) 4, 1, 2, 3

52. 1960 के दशक के मध्य में लगातार दो अकालों के कारण देश में उत्पन्न अन्न संकट के परिणामस्वरुप क्या हुआ?
(A) कृषि का पूर्ण वाणिज्यीकरण हुआ।

(B) कृषि योग्य भूमि का विस्तार हुआ।
(C) देश खाद्यान्न में आत्मनिर्भर हो गया।
(D) दूसरे देशों से खाद्यान्नों का आयात करना पड़ा।

53. हरित क्रांति के लिए गेहूँ और चावल की उच्च उत्पादकता वाली नई किस्में किन देशों से प्राप्त की गई थीं?
(A) जापान तथा ऑस्ट्रेलिया
(B) संयुक्त राज्य अमेरिका तथा चीन
(C) मैक्सिको तथा फिलीपींस
(D) ब्राज़ील तथा वियतनाम

54. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये:
List I: (समस्या)
P. अनियमित मानसून
Q. भूमि सुधारों की कमी
R. छोटे व विखंडित जोत
S. वाणिज्यीकरण का अभाव
List II: (परिणाम/विशेषता)
1. असमान वितरण के कारण शोषण
2. सूखा व बाढ़ (जुड़वाँ संकट)
3. आर्थिक दृष्टि से अलाभकारी
4. केवल पारिवारिक ज़रूरतों के लिए उत्पादन
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

55. हरित क्रांति का एक नकारात्मक परिणाम क्या था?
(A) खाद्यान्नों के उत्पादन में कमी
(B) किसानों की आय में कमी
(C) कृषि में प्रौद्योगिकी का प्रयोग कम हुआ
(D) कृषि विकास में प्रादेशिक असमानता बढ़ी

56. भारतीय योजना आयोग ने कृषि विकास में प्रादेशिक संतुलन को प्रोत्साहित करने हेतु 'कृषि जलवायु नियोजन' कब प्रारंभ किया?
(A) 1988 में
(B) 1978 में
(C) 1998 में
(D) 2008 में

57. भारतीय कृषि की समस्याओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. भारत का केवल एक-तिहाई कृषि क्षेत्र ही सिंचित है।
2. अंतर्राष्ट्रीय स्तर की अपेक्षा भारत में फ़सलों की उत्पादकता अधिक है।
3. ज़मींदारी प्रथा किसानों के लिए सबसे अधिक शोषणकारी रही है।
4. भारत में सीमांत तथा छोटे किसानों की संख्या कम है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 2, 3 और 4

58. आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी के प्रसार से निम्नलिखित में से किसमें प्रशंसनीय वृद्धि हुई है?
(A) गन्ना, तिलहन तथा कपास के उत्पादन में
(B) मुख्य खाद्यान्न फसलों के कुल उत्पादन में
(C) सिंचाई की आधुनिक सुविधाओं के प्रसार में
(D) जैविक खेती के पारंपरिक तथा नवीन प्रचलन में

59. 'किसान पोर्टल' का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) केवल कृषि ऋण की सुविधाएँ देना
(B) कृषि संबंधी सभी जानकारियों हेतु मंच
(C) किसानों हेतु नवीन सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ
(D) बाजार के नवीनतम मूल्यों का विवरण देना

60. निम्नलिखित प्रश्न में, दो कथन दिए गए हैं - एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिये और सही विकल्प का चयन कीजिये।
अभिकथन (A): भारत में कृषि क्षेत्र का एक बड़ा भाग जलाक्रांतता, लवणता तथा मृदा क्षारता के कारण बंजर हो चुका है।
कारण (R): यह समस्या विशेषकर असिंचित शुष्क क्षेत्रों में भयावह है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

61. भारत में कृषि की निम्न उत्पादकता का कारण क्या नहीं है?
(A) अंतर्राष्ट्रीय स्तर की तुलना में प्रति हेक्टेयर पैदावार कम होना
(B) भूसंसाधनों पर निरंतर बढ़ता अत्यधिक दबाव
(C) आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी का व्यापक प्रयोग
(D) विस्तृत वर्षा निर्भर शुष्क क्षेत्रों में खेती

62. स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भूमि सुधारों के पूर्णतः फलीभूत न होने का मुख्य कारण क्या था?
(A) किसानों की अनिच्छा
(B) कृषि योग्य भूमि की कमी
(C) तकनीकी ज्ञान का अभाव
(D) कमज़ोर राजनीतिक इच्छाशक्ति

63. भारत में लगभग 40 प्रतिशत किसानों की जोतों का आकार कितना है?
(A) 0.5 हेक्टेयर से भी कम
(B) 2 हेक्टेयर से अधिक
(C) 1 से 2 हेक्टेयर के बीच

(D) 1 हेक्टेयर

64. भारतीय कृषि में पाई जाने वाली 'व्यापक अल्प रोज़गारी' का क्या अर्थ है?
(A) कृषि कार्यों में मशीनों का प्रयोग न होना।
(B) किसानों को वर्ष-भर रोज़गार उपलब्ध न होना।
(C) किसानों का शिक्षित न होना।
(D) कृषि से कम आय प्राप्त होना।

65. भारतीय कृषि की समस्याओं पर विचार करें:
1. अनियमित मानसून पर निर्भरता
2. निम्न उत्पादकता
3. भूमि सुधारों की कमी
4. छोटे खेत तथा विखंडित जोत
5. वाणिज्यीकरण का अभाव
Which of the above problems fall under institutional constraints?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) उपरोक्त सभी

66. सिंचित क्षेत्रों में भूमि निम्नीकरण का मुख्य कारण क्या है?
(A) जलाक्रांतता और मृदा लवणता
(B) तेज वायु द्वारा अपरदन
(C) वनों की अवैध कटाई
(D) पशुओं द्वारा अत्यधिक चराई

67. सिंचित क्षेत्रों के फ़सल प्रतिरूप में दलहन (लेग्यूम) के विस्थापित होने का क्या परिणाम हुआ है?
(A) कुल खाद्यान्न उत्पादन में तीव्र वृद्धि
(B) कृषि क्षेत्र में किसानों की आय वृद्धि
(C) भूमि में प्राकृतिक उर्वरकता का अवरोध
(D) सिंचाई हेतु जल की कुल खपत में कमी

68. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये:
List I: (फ़सल)
P. अरहर (तुर)
Q. तोरिया व सरसों
R. सोयाबीन
S. सूरजमुखी
List II: (विशेषता/प्रमुख क्षेत्र)
1. पाला सहन नहीं कर सकती
2. मध्य प्रदेश व महाराष्ट्र
3. राजस्थान, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश में सांद्रण
4. मध्य तथा दक्षिणी राज्यों के शुष्क भागों में
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

69. वह भू-उपयोग संवर्ग कौन सा है जिसमें बस्तियाँ, सड़कें, नहरें और उद्योग सम्मिलित हैं?
(A) बंजर व व्यर्थ-भूमि क्षेत्र
(B) कृषि योग्य व्यर्थ भूमि संवर्ग
(C) गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त भूमि
(D) निवल बोया गया शुद्ध क्षेत्र

70. ग्राम पंचायत के स्वामित्व वाली भूमि को क्या कहा जाता है?
(A) निजी भूसंपत्ति
(B) साझा संपत्ति संसाधन
(C) निवल बोया गया क्षेत्र
(D) कृषि योग्य व्यर्थ भूमि

71. निम्नलिखित प्रश्न में, दो कथन दिए गए हैं - एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिये और सही विकल्प का चयन कीजिये।
अभिकथन (A): ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीन छोटे कृषकों तथा अन्य आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग के जीवन-यापन में साझा संपत्ति संसाधनों का विशेष महत्व है।
कारण (R): इनमें से अधिकतर भूमिहीन होने के कारण पशुपालन से प्राप्त आजीविका पर निर्भर हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

72. वर्तमान परती भूमि में वृद्धि के क्या कारण हो सकते हैं?
(A) वर्षा की अनियमितता व फ़सल-चक्र
(B) भूमि उद्धार हेतु तकनीक का विकास
(C) स्थानीय वनीकरण के सरकारी प्रयास
(D) शहरीकरण और औद्योगीकरण में वृद्धि

73. 'भूमि की गुणवत्ता बनाए रखने हेतु भूमि को परती रखना' क्या दर्शाता है?
(A) एक कानूनी बाध्यता
(B) एक आर्थिक मजबूरी
(C) एक सांस्कृतिक चलन
(D) एक तकनीकी आवश्यकता

74. भारतीय कृषि विकास से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. स्वतंत्रता से पहले भारतीय कृषि एक जीविकोपार्जी अर्थव्यवस्था थी।
2. देश-विभाजन के दौरान लगभग एक-तिहाई सिंचित भूमि पाकिस्तान में चली गई।
3. 1950 के दशक के अंत तक कृषि उत्पादन तीव्र गति से बढ़ता रहा।
4. हरित क्रांति देश के सभी भागों में एक साथ लागू हुई।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 2, 3 और 4

75. शुष्क कृषि में निम्न में से कौन-सी फ़सल नहीं बोई जाती?
(A) रागी
(B) ज्वार
(C) मूँगफली
(D) गन्ना

76. भारत में गेहूँ और चावल की अधिक उत्पादकता की किस्में कहाँ विकसित की गई थीं?
(A) जापान तथा ऑस्ट्रेलिया
(B) मैक्सिको तथा फिलीपींस
(C) संयुक्त राज्य अमेरिका तथा जापान
(D) मैक्सिको तथा सिंगापुर

77. निम्नलिखित में से कौन-सा एक भू-उपयोग संवर्ग नहीं है?
(A) परती भूमि
(B) निवल बोया क्षेत्र
(C) सीमांत भूमि
(D) कृषि योग्य व्यर्थ भूमि

78. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये:
List I: (फ़सल)
P. कपास
Q. गेहूँ
R. चाय
S. मक्का
List II: (राज्य)
1. असम
2. कर्नाटक
3. गुजरात
4. पंजाब
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

79. पिछले 40 वर्षों में वनों का अनुपात बढ़ने का निम्न में से कौन-सा कारण है?
(A) वन हेतु निर्धारित अधिसूचित क्षेत्र में वृद्धि
(B) वनीकरण के विस्तृत व सक्षम सरकारी प्रयास
(C) सामुदायिक वनों के अधीन कुल क्षेत्र में वृद्धि
(D) वन क्षेत्र प्रबंधन में स्थानीय लोगों की भागीदारी

80. कृषि योग्य व्यर्थ भूमि तथा पुरातन परती भूमि में क्या मुख्य अंतर है?
(A) पुरातन परती भूमि 5 वर्ष से अधिक समय से कृषिरहित होती है, जबकि कृषि योग्य व्यर्थ भूमि 1 से 5 वर्ष तक।
(B) कृषि योग्य व्यर्थ भूमि 5 वर्ष से अधिक समय से कृषिरहित होती है, जबकि पुरातन परती 1 से 5 वर्ष तक।
(C) कृषि योग्य व्यर्थ भूमि पर कभी खेती नहीं हो सकती, जबकि पुरातन परती पर हो सकती है।
(D) इन दोनों में कोई अंतर नहीं है, ये पर्यायवाची शब्द हैं।

81. भारत में कृषि के आधुनिकीकरण के क्रम को कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. IADP और IAAP का प्रारंभ
2. पैकेज प्रौद्योगिकी के रूप में HYV का उपयोग (हरित क्रांति)
3. योजना आयोग द्वारा वर्षा आधारित क्षेत्रों पर ध्यान देना
4. उदारीकरण नीति का कृषि पर प्रभाव
(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 3, 1, 2, 4

82. निवल बोया गया क्षेत्र और सकल बोया गया क्षेत्र में क्या अंतर है?
(A) निवल बोया गया क्षेत्र वह भूमि है जिस पर फसलें उगाई जाती हैं, जबकि सकल बोया गया क्षेत्र इसमें एक वर्ष में एक से अधिक बार बोए गए क्षेत्र को जोड़कर प्राप्त होता है।
(B) सकल बोया गया क्षेत्र वह भूमि है जिस पर फसलें उगाई जाती हैं, जबकि निवल बोया गया क्षेत्र इसमें एक वर्ष में एक से अधिक बार बोए गए क्षेत्र को जोड़कर प्राप्त होता है।
(C) निवल बोया गया क्षेत्र सिंचित भूमि है, जबकि सकल बोया गया क्षेत्र असिंचित भूमि है।
(D) इन दोनों में कोई अंतर नहीं है।

83. भारत जैसे देश में गहन कृषि नीति अपनाने की आवश्यकता क्यों है?
(A) भूमि की अधिकता तथा श्रम की कमी के कारण
(B) निर्यात को बढ़ावा देने के लिए
(C) भूमि की कमी तथा श्रम की अधिकता के कारण
(D) पारंपरिक फसलों को संरक्षित करने के लिए

84. शुष्क कृषि और आर्द्र कृषि में क्या मुख्य अंतर है?
(A) शुष्क कृषि में चावल जबकि आर्द्र में बाजरा उगता है।
(B) शुष्क कृषि में सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है।
(C) शुष्क कृषि केवल शीत रबी मौसम में की जाती है।
(D) शुष्क कृषि 75 सेमी से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में है।

85. निम्नलिखित प्रश्न में, दो कथन दिए गए हैं - एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिये और सही विकल्प का चयन कीजिये।
अभिकथन (A): भारत में निवल बोए गए क्षेत्र में धीमी गति से ह्रास का एक कारण गैर-कृषि कार्यों में पर परयुक्त भूमि के अनुपात में वृद्धि थी।

(B) 75 सेंटीमीटर से 100 सेंटीमीटर के बीच
(C) 75 सेंटीमीटर से कम
(D) 200 सेंटीमीटर से अधिक

20. आर्द्र कृषि क्षेत्रों की प्रमुख समस्या क्या है?
(A) सूखा पड़ना
(B) सिंचाई के लिए जल की कमी
(C) लवणता में वृद्धि
(D) बाढ़ तथा मृदा अपरदन

21. निम्नलिखित प्रश्न में, दो कथन दिए गए हैं - एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिये और सही विकल्प का चयन कीजिये।
अभिकथन (A): दालें फलीदार फ़सलें हैं जो नाइट्रोजन यौगीकरण के द्वारा मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरकता बढ़ाती हैं।
कारण (R): भारत दालों का प्रमुख उत्पादक देश है और इसकी खेती मुख्यतः वर्षा आधारित शुष्क क्षेत्रों में होती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

22. भारत में खाद्यान्नों को अनाज की संरचना के आधार पर किन दो वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है?
(A) खरीफ़ और रबी
(B) अनाज तथा दालें
(C) सिंचित और बारानी
(D) व्यापारिक तथा जीविका-निर्वाह

23. भारत विश्व के कुल अनाज उत्पादन का लगभग कितना प्रतिशत उत्पन्न करता है?
(A) 5%
(B) 21%
(C) 25%
(D) 11%

24. चावल की खेती के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी भौगोलिक दशाएँ सबसे उपयुक्त हैं?
(A) उष्ण आर्द्र कटिबंधीय क्षेत्र
(B) शुष्क और शीतल जलवायु
(C) शीतोष्ण कटिबंधीय प्रदेश
(D) अर्ध-शुष्क मैदानी क्षेत्र

25. भारत में गेहूँ की कृषि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. गेहूँ भारत की दूसरी प्रमुख अनाज फ़सल है।
2. यह एक उष्ण कटिबंधीय खरीफ़ फ़सल है।
3. इसका 85 प्रतिशत क्षेत्र उत्तरी-मध्य भारत तक केंद्रित है।
4. पंजाब व हरियाणा में इसकी उत्पादकता देश में सर्वाधिक है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) 1, 2 और 3
(B) 2, 3 और 4
(C) 1, 3 और 4
(D) 1, 2 और 4

26. पश्चिम बंगाल के किसान चावल की जिन तीन फ़सलों को उगाते हैं, उनके नाम हैं:
(A) औस, अमन, बोरो
(B) खरीफ़, रबी, ज़ायद
(C) बोडो, डोगरी, संथाली
(D) सोना, मसूरी, बासमती

27. 2018 के आँकड़ों के अनुसार, चावल उत्पादन में विश्व में भारत का कौन-सा स्थान था?
(A) पहला
(B) तीसरा
(C) चौथा
(D) दूसरा

28. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये:
List I: (फ़सल)
P. चावल
Q. गेहूँ
R. ज्वार
S. बाजरा

List II: (प्रमुख उत्पादक राज्य)
1. उत्तर प्रदेश
2. पश्चिम बंगाल
3. महाराष्ट्र
4. गुजरात

(A) P-2, Q-1, R-3, S-4
(B) P-1, Q-2, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

29. पंजाब और हरियाणा में चावल की अधिक पैदावार के लिए निम्नलिखित में से कौन-सा कारक उत्तरदायी नहीं है?
(A) उत्तम किस्म के बीज
(B) लगभग संपूर्ण चावल क्षेत्र का सिंचित होना
(C) पारंपरिक रुप से चावल उत्पादक राज्य होना
(D) अधिक खाद तथा कीटनाशकों का प्रयोग

30. गेहूँ उत्पादन के संदर्भ में कौन-सा कथन असत्य है?
(A) भारत विश्व का लगभग 12.8% गेहूँ उत्पादन करता है।
(B) यह मुख्यतः रबी ऋतु में बोया जाता है।
(C) उत्तर प्रदेश गेहूँ का प्रमुख उत्पादक राज्य है।
(D) मध्य प्रदेश में गेहूँ की उत्पादकता सर्वाधिक है।

(B) किसानों को ऋण प्रदान करना।
(C) भूमि का समान वितरण करना।
(D) कृषि के लिए सिंचाई की व्यवस्था करना।

96. निम्नलिखित प्रश्न में, दो कथन दिए गए हैं - एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिये और सही विकल्प का चयन कीजिये।
अभिकथन (A): सिंचित क्षेत्रों में कीटनाशक रसायनों के अत्यधिक प्रयोग से मृदा परिच्छेदिका में ज़हरीले तत्वों का सांद्रण हो गया है।
कारण (R): उत्तम बीज के किस्मों में कीट प्रतिरोधकता पारंपरिक किस्मों से अधिक होती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

97. 'उत्पादक सिंचाई' का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) फ़सलों को केवल सूखने से बचाना।
(B) पर्याप्त जल द्वारा अधिकतम उत्पादकता प्राप्त करना।
(C) कम से कम जल का सीमित उपयोग करना।
(D) केवल विशिष्ट नकदी फ़सलों की सिंचाई करना।

98. 2019-20 के आँकड़ों के अनुसार, भारत के reportिंग क्षेत्रफल का सबसे बड़ा भाग किस भू-उपयोग संवर्ग के अंतर्गत आता है?
(A) निवल बोया गया क्षेत्र
(B) वन क्षेत्र का विस्तार
(C) गैर-कृषि प्रयुक्त भूमि
(D) परती भूमि का संवर्ग

99. भारत में कृषि के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत में 60 प्रतिशत से अधिक किसानों के पास एक हेक्टेयर से छोटे भूजोत हैं।
2. बढ़ती जनसंख्या के कारण जोतों का औसत आकार सिकुड़ रहा है।
3. विखंडित व छोटे भूजोत आर्थिक दृष्टि से लाभकारी होते हैं।
4. अधिकतर उपांत तथा छोटे किसान खाद्यान्नों की कृषि करते हैं।
5. सिंचित क्षेत्रों में कृषि का आधुनिकीकरण तथा वाणिज्यीकरण हो रहा है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) 1, 2, 3 और 4
(B) 1, 2, 4 और 5
(C) 2, 3, 4 और 5
(D) 1, 3, 4 और 5

100. भारत में फसल ऋतुओं के संदर्भ में सही युग्म का चयन करें।
(A) खरीफ़ - गेहूँ, चना, सरसों
(B) रबी - चावल, कपास, जूट
(C) खरीफ़ - जौ, मटर, मसूर
(D) ज़ायद - तरबूज़, सब्ज़ियाँ, चारा

101. दक्षिणी राज्यों तथा पश्चिम बंगाल में जलवायु अनुकूलता के कारण एक कृषि वर्ष में चावल की कितनी फसलें बोई जा सकती हैं?
(A) केवल एक फ़सल
(B) चार फ़सलें
(C) दो या तीन फ़सलें
(D) कोई फ़सल नहीं

102. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें।
List I: (फ़सल)
P. गन्ना
Q. कॉफी
R. चाय
S. जूट
List II: (प्रमुख उत्पादक क्षेत्र/राज्य)
1. पश्चिम बंगाल
2. उत्तर प्रदेश
3. असम
4. कर्नाटक

(A) P-1, Q-2, R-4, S-3
(B) P-2, Q-4, R-3, S-1
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

103. भारत में 1950-51 और 2019-20 के बीच भू-उपयोग परिवर्तन के क्या कारण थे?
1. भारतीय अर्थव्यवस्था की बदलती संरचना।
2. औद्योगिक व सेवा सेक्टरों पर बढ़ती निर्भरता।
3. गाँवों व शहरों में बस्तियों का विस्तार।
4. सीमांकन के कारण वन क्षेत्र में वृद्धि।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

104. मक्का के प्रमुख उत्पादक राज्य कौन-कौन से हैं?
(A) कर्नाटक, मध्य प्रदेश, बिहार व आंध्र प्रदेश
(B) पंजाब, हरियाणा व पश्चिम बंगाल
(C) गुजरात, राजस्थान तथा महाराष्ट्र के शुष्क भाग
(D) केरल, तमिलनाडु व तटीय ओडिशा के क्षेत्र

105. भारतीय कृषि के "जुड़वाँ संकट" किन्हें कहा जाता है?
(A) ऋणग्रस्तता और आत्महत्या
(B) कम उत्पादकता और छोटे जोत
(C) सूखा तथा बाढ़

(D) ये देश के कुल शस्य क्षेत्र के 10% भाग पर हैं।

146. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें:
List I: (कृषि संबंधित कार्यक्रम)
P. गहन कृषि ज़िला कार्यक्रम (IADP)
Q. हरित क्रांति
R. कृषि जलवायु नियोजन
S. परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY)
List II: (उद्देश्य/विशेषता)
1. प्रादेशिक संतुलन को प्रोत्साहन
2. जैविक खेती को बढ़ावा देना
3. 1960 के दशक में प्रारंभ
4. उच्च उत्पादकता वाले बीजों का प्रयोग
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

147. सिंचित क्षेत्रों में बहु-फसलीकरण में बढ़ोतरी और दलहन के विस्थापन से क्या हुआ है?
(A) मृदा की उर्वरता में प्राकृतिक रूप से भारी वृद्धि।
(B) कृषि हेतु सिंचाई जल की कुल आवश्यकता में कमी।
(C) नाइट्रोजन यौगीकरण का प्राकृतिक अवरोध।
(D) ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों की आय में निरंतर कमी।

148. भारत में कृषि की निम्न उत्पादकता के लिए कौन-सा एक कारक उत्तरदायी नहीं है?
(A) भूसंसाधनों पर अधिक दबाव
(B) विस्तृत वर्षा-निर्भर शुष्क क्षेत्रों में मोटे अनाज, दालों की खेती
(C) मानसून की अनिश्चितता
(D) कृषि का वृहद स्तर पर वाणिज्यीकरण

149. भारत में कृषि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. विंध्याचल के दक्षिण में ज्वार वर्षा आधारित फसल है।
2. बाजरा सूखा सहन करने में समर्थ है।
3. मक्का की पैदावार दक्षिण राज्यों में अधिक है।
4. चना एक उपोष्ण कटिबंधीय खरीफ फसल है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) उपरोक्त सभी

150. भारतीय कृषि की वह कौन-सी समस्या है जो छोटे और विखंडित जोतों को आर्थिक दृष्टि से अलाभकारी बनाती है?
(A) वित्तीय संसाधनों की ऋणग्रस्तता
(B) चकबंदी का अभाव व भूमि का बँटवारा
(C) प्रति हेक्टेयर निम्न उत्पादकता
(D) भूमि सुधार कार्यक्रमों की कमी

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत में भू-उपयोग परिवर्तन एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसके गहरे सामाजिक-आर्थिक प्रभाव पड़ते हैं। तीव्र शहरीकरण और औद्योगिक विस्तार के कारण कृषि भूमि का गैर-कृषि कार्यों के लिए रुपांतरण सबसे प्रमुख परिवर्तनों में से एक है। यह प्रक्रिया अक्सर उपजाऊ कृषि भूमि की कीमत पर होती है, जिससे न केवल देश की खाद्य सुरक्षा पर दीर्घकालिक दबाव पड़ता है, बल्कि ग्रामीण आजीविका भी गंभीर रूप से प्रभावित होती है। जब किसान अपनी भूमि बेच देते हैं या उसका अधिग्रहण कर लिया जाता है, तो वे अक्सर अपनी पारंपरिक आजीविका खो देते हैं और उन्हें शहरी क्षेत्रों में अनिश्चित रोजगार की तलाश में पलायन करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। यह अनियोजित प्रवासन शहरी मलिन बस्तियों के विस्तार, नागरिक सुविधाओं पर अत्यधिक दबाव और सामाजिक तनाव में वृद्धि का कारण बनता है। इसके अतिरिक्त, कृषि भूमि के क्षरण से साझा संपत्ति संसाधनों (CPRs) पर निर्भरता बढ़ती है, जो पहले से ही अतिक्रमण और क्षरण के दबाव में हैं। इस रुपांतरण का एक और महत्वपूर्ण पहलू भूमि मूल्यों में भारी वृद्धि है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि-संबंधी विवाद और सामाजिक असमानता बढ़ती है। अतः, भू-उपयोग परिवर्तन केवल एक भौगोलिक घटना नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण समाज के ताने-बाने को बदल रहा है और विकास के नए प्रतिमानों के साथ-साथ गंभीर चुनौतियां भी प्रस्तुत कर रहा है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. स्रोत के अनुसार, कृषि भूमि का गैर-कृषि कार्यों में रुपांतरण का मुख्य कारण क्या है?
(A) फसल चक्र और पारंपरिक कृषि पद्धतियों में होने वाला निरंतर परिवर्तन
(B) तीव्र शहरीकरण और औद्योगिक विस्तार की निरंतर बढ़ती प्रक्रिया
(C) सघन खेती के कारण मृदा की प्राकृतिक उर्वरता और उसकी गुणवत्ता में कमी
(D) ग्रामीण क्षेत्रों में साझा संपत्ति संसाधनों का अनियंत्रित अतिक्रमण और क्षरण

152. जब किसान अपनी कृषि भूमि खो देते हैं, तो इसका तत्काल परिणाम क्या होता है?
(A) वे अपनी पारंपरिक आजीविका खो देते हैं और पलायन हेतु मजबूर होते हैं।
(B) वे तत्काल प्रभाव से उच्च-कुशल और प्रशिक्षित औद्योगिक श्रमिक बन जाते हैं।
(C) उन्हें सरकार द्वारा पुनर्वास के लिए स्थायी और पर्याप्त वित्तीय सहायता मिलती है।
(D) वे तुरंत शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में कीमती संपत्ति के मालिक बन जाते हैं।

153. कृषि भूमि के गैर-कृषि उपयोग में बदलने से शहरी क्षेत्रों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

(C) लगभग 4 से 8 महीने की
(D) संपूर्ण वर्ष भर की अवधि

116. भारत में रेशेदार फसलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. कपास और जूट भारत की दो प्रमुख रेशेदार फसलें हैं।
2. कपास एक उष्ण कटिबंधीय खरीफ फसल है।
3. भारत छोटे रेशे वाली (भारतीय) और लंबे रेशे वाली (अमेरिकन) दोनों कपास का उत्पादन करता है।
4. विभाजन के दौरान भारत का विशाल जूट उत्पादक क्षेत्र पाकिस्तान में चला गया।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

117. किस फ़सल को 'लाल चना' के नाम से भी जाना जाता है?
(A) चना
(B) मसूर
(C) अरहर (तुर)
(D) मूंग

118. निम्नलिखित प्रश्न में, दो कथन दिए गए हैं - एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिये और सही विकल्प का चयन कीजिये।
अभिकथन (A): भारत में कृषि योग्य भूमि का निम्नीकरण एक गंभीर समस्या है।
कारण (R): यह समस्या केवल प्राकृतिक कारकों जैसे वायु और जल अपरदन के कारण होती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

119. यदि कोई भूभाग पाँच वर्ष से अधिक समय तक कृषि रहित रहता है, तो उसे किस संवर्ग में सम्मिलित कर दिया जाता है?
(A) वर्तमान परती भूमि
(B) पुरातन परती भूमि
(C) कृषि योग्य व्यर्थ भूमि
(D) बंजर व व्यर्थ-भूमि

120. ग्रामीण महिलाओं के लिए 'साझा संपत्ति संसाधनों' का विशेष महत्व क्यों है?
(A) चारा व ईंधन लकड़ी एकत्रीकरण की ज़िम्मेदारी हेतु।
(B) क्योंकि वे इन भूमियों की कानूनी मालिक होती हैं।
(C) क्योंकि इन भूमियों पर केवल महिलाएं काम करती हैं।
(D) क्योंकि इन भूमियों से उन्हें प्रत्यक्ष धन प्राप्त होता है।

121. भारत में गन्ना उत्पादन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा गन्ना उत्पादक देश है।
2. यह एक उष्ण कटिबंधीय फसल है।
3. उत्तर प्रदेश देश का 40% गन्ना उत्पादन करता है।
4. उत्तरी भारत में गन्ने का उत्पादन स्तर दक्षिणी भारत की तुलना में अधिक है।
5. यह देश के कुल शस्य क्षेत्र के 2.4% भाग पर उगाई जाती है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) 1, 2, 3 और 5
(B) 1, 2, 4 और 5
(C) 2, 3, 4 और 5
(D) 1, 3, 4 और 5

122. 'रक्षित सिंचाई' और 'उत्पादक सिंचाई' में मुख्य अंतर क्या है?
(A) रक्षित में जल कम तथा उत्पादक में जल अधिक दिया जाता है।
(B) रक्षित सिंचाई नहरों से तथा उत्पादक सिंचाई कुओं से होती है।
(C) रक्षित सिंचाई खरीफ और उत्पादक रबी फसलों के लिए होती है।
(D) इन दोनों सिंचाई प्रणालियों में कोई वास्तविक अंतर नहीं है।

123. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करें।
List I: (शब्द)
P. ज़ायद
Q. नरमा
R. औस, अमन, बोरो
S. बारानी

List II: (संबंधित है)
1. वर्षा निर्भर कृषि
2. चावल की फसलें
3. अमेरिकन कपास
4. ग्रीष्मकालीन फसल-ऋतु

(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

124. भारत के किस भाग में गेहूँ की कृषि वर्षा पर आधारित है तथा उत्पादकता कम है?
(A) पंजाब व हरियाणा के क्षेत्र
(B) मध्य प्रदेश व हिमालयी क्षेत्र
(C) पश्चिमी उत्तर प्रदेश का भाग
(D) राजस्थान के प्रमुख सिंचित क्षेत्र

125. दक्षिण भारत में मूंगफली किस ऋतु में बोई जाती है?
(A) खरीफ ऋतु
(B) ज़ायद ऋतु

(D) मृदा अपरदन और लवणता

106. निम्नलिखित प्रश्न में, दो कथन दिए गए हैं - एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिये और सही विकल्प का चयन कीजिये।
अभिकथन (A): 1980 के दशक के आरंभ तक हरित क्रांति देश के सिंचित भागों तक ही सीमित थी।
कारण (R): नई कृषि प्रौद्योगिकी की सफलता हेतु सिंचाई से निश्चित जल आपूर्ति पूर्व आपेक्षित थी।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

107. 2006 और 2017 में महाराष्ट्र, गुजरात तथा राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में आई आकस्मिक बाढ़ किस परिघटना का उदाहरण है?
(A) वैश्विक स्तर पर हो रहे जलवायु परिवर्तन का
(B) भारतीय मानसून की नियमितता और सटीकता का
(C) शुष्क प्रदेशों में सफल जल प्रबंधन तकनीकों का
(D) कम वर्षा वाले क्षेत्रों में बाढ़ की सुभेद्यता का

108. निम्नलिखित कृषि विकास की घटनाओं को सबसे पुराने से सबसे नए के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. भारत में चाय की खेती का व्यावसायीकरण
2. देश-विभाजन और सिंचित भूमि का पाकिस्तान में जाना
3. हरित क्रांति का प्रारंभ
4. कृषि जलवायु नियोजन का प्रारंभ
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 3, 2, 1, 4

109. भारत में तिलहन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. मूँगफली भारत की प्रमुख तिलहन फ़सल है।
2. तोरिया व सरसों उपोष्णकटिबंधीय खरीफ फसलें हैं।
3. सोयाबीन का 90% उत्पादन केवल मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र मिलकर करते हैं।
4. सूरजमुखी की फसल का सांद्रण केवल उत्तर भारत में है।
5. तिलहन देश के कुल शस्य क्षेत्र के 25% भाग पर बोये जाते हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) उपरोक्त सभी

110. भारत का कौन-सा भाग ऐसा है जहाँ वर्षभर तापमान किसी भी उष्ण कटिबंधीय फसल की बुवाई में सहायक है, बशर्ते पर्याप्त आर्द्रता उपलब्ध हो?
(A) संपूर्ण उत्तरी भारत
(B) दुर्गम हिमालयी क्षेत्र
(C) दूरस्थ उत्तर-पूर्वी भारत
(D) प्रायद्वीपीय दक्षिण भारत

111. भारत में भू-उपयोग के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?
(A) प्रतिवेदन क्षेत्र हमेशा भौगोलिक क्षेत्र से अधिक है।
(B) भूराजस्व विभाग भू-उपयोग संबंधी अभिलेख रखता है।
(C) कुल भौगोलिक क्षेत्र भारतीय सर्वेक्षण विभाग के सर्वेक्षण पर आधारित है।
(D) भू-उपयोग संवर्गों का योग कुल प्रतिवेदन क्षेत्र के बराबर होता है।

112. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें:
List I: (कृषि की समस्या)
P. अनियमित मानसून पर निर्भरता
Q. निम्न उत्पादकता
R. छोटे व विखंडित जोत
S. कृषि योग्य भूमि का निम्नीकरण
List II: (उदाहरण/परिणाम)
1. जलाक्रांतता, लवणता
2. आर्थिक दृष्टि से अलाभकारी
3. प्रति हेक्टेयर पैदावार कम
4. सूखा व बाढ़
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

113. 1950-51 और 2019-20 के बीच, किस भू-उपयोग संवर्ग के प्रतिशत में सबसे अधिक गिरावट दर्ज की गई?
(A) वन
(B) बंजर व व्यर्थ-भूमि
(C) स्थायी चरागाह क्षेत्र
(D) कृषि योग्य व्यर्थ भूमि

114. सरकार किन योजनाओं के माध्यम से देश में जैविक खेती को बढ़ावा दे रही है?
(A) PKVY और RKVY के माध्यम से
(B) मनरेगा और पीएम-किसान योजना
(C) IADP और IAAP जैसे विशेष कार्यक्रम
(D) राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन व बीमा

115. भारतीय कृषि में "ऋत्विक बेरोज़गारी" की अवधि कितनी होती है, विशेषकर असिंचित क्षेत्रों में?
(A) लगभग 1 से 2 महीने की
(B) लगभग 2 से 4 महीने की

135. चाय और कॉफ़ी दोनों के लिए कौन-सी भौगोलिक विशेषता समान है?
(A) दोनों की खेती केवल मैदानी भागों में होती है।
(B) दोनों को अत्यधिक सिंचाई की आवश्यकता होती है।
(C) दोनों ही मुख्य रूप से शीतोष्ण कटिबंधीय फसलें हैं।
(D) दोनों की खेती ढलानों पर अच्छे अपवाह में होती है।

136. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, कौन-सी भू-राजस्व प्रणाली किसानों के लिए सबसे अधिक शोषणकारी मानी गई जिसे सुधारों का लक्ष्य बनाया गया?
(A) ज़मींदारी
(B) महालवाड़ी
(C) रैयतवाड़ी
(D) इजारेदारी

137. भारतीय कृषि की समस्याओं पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. भारत में कृषि मानसून पर अत्यधिक निर्भर है।
2. भारत में कृषि उत्पादकता अंतर्राष्ट्रीय स्तर की तुलना में कम है।
3. भूमि सुधार कार्यक्रम पूरी तरह से सफल रहे हैं।
4. अधिकांश किसानों के पास छोटे और विखंडित जोत हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) 1, 2 और 3
(B) 1, 2 और 4
(C) 2, 3 और 4
(D) 1, 3 और 4

138. भारत में कृषि के संदर्भ में निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिये:
1. स्वतंत्रता प्राप्ति
2. हरित क्रांति की शुरुआत
3. कृषि-जलवायु नियोजन का प्रारंभ
4. उदारीकरण नीतियों का कृषि पर प्रभाव

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 4, 3, 2, 1

139. 1950-51 से 2019-20 तक भू-उपयोग में परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. वन क्षेत्र के अनुपात में वृद्धि हुई है।
2. बंजर व व्यर्थ-भूमि के अनुपात में कमी आई है।
3. स्थायी चरागाह क्षेत्र के अनुपात में वृद्धि हुई है।
4. निवल बोया गया क्षेत्र के अनुपात में वृद्धि हुई है।
5. गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त भूमि के अनुपात में कमी आई है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) 1, 2 और 4
(B) 2, 3 और 5
(C) 1, 3 और 4
(D) 1, 4 और 5

140. 'साझा संपत्ति संसाधन' (CPRs) के अंतर्गत क्या-क्या सम्मिलित है?
(A) केवल व्यक्तिगत कृषि खेत और बाग
(B) सामुदायिक वन, चरागाह व जलीय क्षेत्र
(C) केवल शहरी सार्वजनिक पार्क और सड़कें
(D) निजी स्वामित्व वाले कारखाने और उद्योग

141. निम्नलिखित प्रश्न में, दो कथन दिए गए हैं - एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिये और सही विकल्प का चयन कीजिये।
अभिकथन (A): सीमांत और छोटे किसानों की कृषि बचत बहुत कम या न के बराबर होती है।
कारण (R): ये किसान सघन संसाधन दृष्टिकोण से की जाने वाली कृषि में निवेश करने में असमर्थ होते हैं और अक्सर ऋण के जाल में फंस जाते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

142. भारत में 'चकबंदी' के पूर्ण रूप से सफल न होने का क्या कारण है?
(A) अधिकांश किसानों द्वारा इसका कड़ा विरोध करना।
(B) चकबंदी हेतु पर्याप्त कृषि भूमि का उपलब्ध न होना।
(C) यह सरकारी खजाने हेतु बहुत महंगी प्रशासनिक प्रक्रिया है।
(D) राज्यों में इसका अभाव व पुनः आवश्यकता।

143. भारत के कुल शस्य क्षेत्र के लगभग 11 प्रतिशत भाग पर कौन-सी फसलें बोई जाती हैं?
(A) दालें
(B) मोटे अनाज
(C) तिलहन
(D) रेशेदार फसलें

144. कौन-सी फसल उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों की है और भारत के मध्य, पश्चिमी तथा उत्तर-पश्चिमी भागों में रबी की ऋतु में बोई जाती है?
(A) अरहर की दलहनी खेती
(B) चने की प्रमुख रबी खेती
(C) चावल की खरीफ खेती
(D) बाजरा की शुष्क खेती

145. भारत में तोरिया व सरसों की खेती के बारे में क्या सत्य है?
(A) ये फसलें अत्यधिक पाला सहन कर सकती हैं।
(B) इनका लगभग दो-तिहाई भाग सिंचित है।
(C) इनके उत्पादन में वार्षिक उतार-चढ़ाव नहीं होता।

को बड़े स्तर पर बढ़ावा देना
(B) भूमि की उर्वरता बढ़ाने हेतु केवल रासायनिक उर्वरकों का अत्यधिक और सघन उपयोग
(C) वनों की अंधाधुंध कटाई करके उपलब्ध कृषि भूमि का निरंतर और व्यापक विस्तार
(D) वाटरशेड विकास कार्यक्रम और सूखा-प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग

174. कृषि-वानिकी (Agroforestry) किसानों के लिए कैसे फायदेमंद है?
(A) यह मृदा की उर्वरता बढ़ाती है और जलवायु के प्रति सहनशीलता बढ़ाती है।
(B) यह फसलों के लिए आवश्यक पानी की कुल खपत को बहुत अधिक बढ़ा देती है।
(C) यह पूरे वर्ष में केवल एक ही प्रकार की व्यावसायिक फसल उगाने की अनुमति देती है।
(D) यह केवल और केवल इमारती लकड़ी के उत्पादन और निर्यात को संभव बनाती है।

175. शुष्क भूमि किसानों की आजीविका को स्थिर करने के लिए तकनीकी उपायों के अलावा और क्या आवश्यक है?
(A) केवल और केवल निरंतर आधार पर मिलने वाली सरकारी नकद सब्सिडी
(B) किसानों को स्थायी रूप से शहरी क्षेत्रों में पलायन हेतु निरंतर प्रोत्साहित करना
(C) मौसम-आधारित फसल बीमा जैसी व्यापक संस्थागत सहायता प्रणाली
(D) शुष्क क्षेत्रों में की जाने वाली किसी भी प्रकार की कृषि पर पूर्ण कानूनी प्रतिबंध

(A) मौजूदा शहरी अवसंरचना और नागरिक सुविधाओं में व्यापक स्तर पर सुधार
(B) अनियोजित विकास के कारण शहरी जनसंख्या घनत्व में होने वाली भारी कमी
(C) मलिन बस्तियों का विस्तार और नागरिक सुविधाओं पर अतिरिक्त दबाव
(D) शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध संगठित रोजगार के अवसरों में होने वाली वृद्धि

154. निम्नलिखित में से कौन सा भू-उपयोग परिवर्तन का एक सामाजिक परिणाम है जिसका उल्लेख अनुच्छेद में किया गया है?
(A) ग्रामीण क्षेत्रों की औसत आय में होने वाली एक समान और व्यापक वृद्धि
(B) आधुनिक तकनीकों के उपयोग से कुल वार्षिक फसल उत्पादन में भारी वृद्धि
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर स्वास्थ्य और आधुनिक शैक्षणिक सुविधाओं का विकास
(D) भूमि-संबंधी विवादों और सामाजिक असमानता में होने वाली वृद्धि

155. अनुच्छेद का केंद्रीय भाव क्या है?
(A) भू-उपयोग परिवर्तन ग्रामीण क्षेत्रों में होने वाली केवल एक शुद्ध आर्थिक प्रक्रिया है।
(B) भू-उपयोग परिवर्तन के ग्रामीण और शहरी समाजों पर केवल सकारात्मक प्रभाव होते हैं।
(C) भू-उपयोग परिवर्तन एक बहुआयामी सामाजिक-आर्थिक और भौगोलिक प्रक्रिया है।
(D) भू-उपयोग परिवर्तन से भारत की राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा को कोई वास्तविक खतरा नहीं है।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारत में 1960 के दशक के मध्य में आई हरित क्रांति ने खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन इसके लाभों का वितरण अत्यधिक असमान रहा। यह क्रांति मुख्य रूप से एक प्रौद्योगिकी पैकेज पर आधारित थी, जिसमें उच्च उपज वाले बीज (HYV), रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक शामिल थे, जिनकी सफलता सुनिश्चित सिंचाई पर निर्भर थी। परिणामस्वरूप, हरित क्रांति का प्रभाव मुख्य रूप से उन क्षेत्रों तक ही सीमित रहा जहाँ सिंचाई की सुविधाएँ पहले से विकसित थीं, जैसे कि पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश। इन क्षेत्रों में कृषि उत्पादकता और किसानों की आय में नाटकीय वृद्धि हुई। इसके विपरीत, भारत का एक बड़ा हिस्सा, जो वर्षा-आधारित या शुष्क भूमि कृषि पर निर्भर है, इस क्रांति के लाभों से काफी हद तक वंचित रह गया। इस प्रक्रिया ने भारतीय कृषि में एक स्पष्ट क्षेत्रीय द्वैतवाद को जन्म दिया: एक ओर सिंचित, समृद्ध और गतिशील क्षेत्र और दूसरी ओर वर्षा-निर्भर, पिछड़ा और स्थिर क्षेत्र। इस क्षेत्रीय असमानता ने अंतर-राज्यीय और अंतः-राज्यीय आर्थिक विषमताओं को और गहरा कर दिया, जिससे ग्रामीण ऋणग्रस्तता और किसान संकट जैसी समस्याएँ उन क्षेत्रों में अधिक गंभीर हो गईं जहाँ हरित क्रांति नहीं पहुँच सकी। इस प्रकार, हरित क्रांति जहाँ एक ओर तकनीकी सफलता का प्रतीक बनी, वहीं दूसरी ओर इसने भारत में कृषि विकास में क्षेत्रीय असंतुलन की समस्या को भी उजागर किया।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. हरित क्रांति की सफलता के लिए सबसे महत्वपूर्ण पूर्व-शर्त क्या थी?
(A) अत्यधिक बड़े आकार के कृषि जोतों की उपलब्धता
(B) सुनिश्चित सिंचाई के साधनों की उपलब्धता
(C) पारंपरिक जैविक खेती के वैज्ञानिक तरीके
(D) केवल वर्षा-आधारित कृषि पर पूर्ण निर्भरता

157. स्रोत के अनुसार, हरित क्रांति का प्रभाव मुख्य रूप से किन क्षेत्रों तक सीमित था?
(A) भारत के संपूर्ण भौगोलिक क्षेत्र में समान रूप से
(B) मुख्य रूप से केवल पूर्वी और दक्षिणी भारत में
(C) केवल वर्षा-निर्भर कृषि करने वाले पिछड़े क्षेत्रों में
(D) पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में

158. "क्षेत्रीय द्वैतवाद" की अवधारणा से लेखक का क्या तात्पर्य है?
(A) सिंचित और वर्षा-निर्भर कृषि क्षेत्रों के बीच विकास का विभाजन
(B) कृषि और औद्योगिक क्षेत्रों के बीच एक बेहतर आर्थिक संतुलन
(C) शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच बढ़ने वाली आर्थिक समानता
(D) विभिन्न खाद्य फसलों के उत्पादन में प्राप्त विशेष विशेषज्ञता

159. उन क्षेत्रों पर हरित क्रांति का क्या प्रभाव पड़ा जहाँ यह नहीं पहुँच सकी?
(A) उन पिछड़े क्षेत्रों में कृषि का अत्यंत तीव्र और आधुनिक विकास हुआ।
(B) वहाँ के किसानों ने तत्काल निजी सिंचाई के आधुनिक साधन विकसित किए।
(C) वहाँ ग्रामीण ऋणग्रस्तता और किसान संकट की समस्याएँ गंभीर हो गईं।
(D) वहाँ की राज्य सरकारों ने विशेष आर्थिक राहत पैकेज प्रदान किए।

160. इस अनुच्छेद का मुख्य निष्कर्ष क्या है?
(A) हरित क्रांति ने उत्पादन बढ़ाया पर क्षेत्रीय असमानताएं भी पैदा कीं।
(B) हरित क्रांति पूरी तरह से एक विफल और नकारात्मक प्रयास सिद्ध हुआ।
(C) हरित क्रांति का सभी भारतीय किसानों पर एक समान सकारात्मक प्रभाव पड़ा।
(D) हरित क्रांति केवल उच्च उपज वाले आधुनिक बीजों के

(C) रबी ऋतु
(D) पूरे वर्ष

126. भारत में दालों के संबंध में कौन-सा कथन सही नहीं है?
(A) दालें प्रोटीन का प्रचुर स्रोत हैं।
(B) भारत दालों का प्रमुख उत्पादक देश है।
(C) चना और अरहर भारत की प्रमुख दालें हैं।
(D) दालों की खेती अधिकतर सिंचित क्षेत्रों में होती है।

127. निम्नलिखित प्रश्न में, दो कथन दिए गए हैं - एक अभिकथन (A) और दूसरा कारण (R)। कथनों का सावधानीपूर्वक परीक्षण कीजिये और सही विकल्प का चयन कीजिये।
अभिकथन (A): समय के साथ, कृषि क्रियाकलापों का अर्थव्यवस्था में योगदान कम होता जाता है, लेकिन भूमि पर कृषि क्रियाकलापों का दबाव कम नहीं होता।
कारण (R): कृषि पर निर्भर व्यक्तियों का अनुपात अपेक्षाकृत धीरे-धीरे घटता है जबकि कृषि का सकल घरेलू उत्पाद में योगदान तीव्रता से कम होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

128. देश में 1960 के दशक से कीटनाशकों की खपत में महत्वपूर्ण वृद्धि क्यों हुई है?
(A) कीटनाशक सस्ते हो गए थे।
(B) उत्तम बीज के किस्मों में कीट प्रतिरोधकता कम थी।
(C) सरकार ने इसके उपयोग को अनिवार्य कर दिया था।
(D) किसानों को इसके लाभों के बारे में अधिक जानकारी हो गई थी।

129. भारत में कृषि भू-उपयोग से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. द्वितीयक व तृतीयक आर्थिक क्रियाओं की अपेक्षा कृषि पूर्णतया भूमि पर आधारित है।
2. ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीनता प्रत्यक्ष रूप से वहाँ की गरीबी से संबंधित है।
3. भूमि की गुणवत्ता कृषि उत्पादकता को प्रभावित नहीं करती है।
4. पिछले वर्षों में समस्त reportिंग क्षेत्र से कृषि भूमि का प्रतिशत कम हुआ है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) 1, 2 और 3
(B) 2, 3 और 4
(C) 1, 2 और 4
(D) 1, 3 और 4

130. भू-स्वामित्व का सामाजिक मूल्य क्या है?
(A) यह आपदा या विपत्ति में सुरक्षा की भाँति है।
(B) यह केवल भविष्य के आर्थिक लाभ देता है।
(C) यह समाज में दिखावटी प्रतिष्ठा को बढ़ाता है।
(D) इस स्वामित्व का कोई विशेष सामाजिक मूल्य नहीं है।

131. भारत में चाय की कृषि के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
1. चाय एक रोपण कृषि है।
2. काली चाय की पत्तियाँ किण्वित होती हैं, जबकि हरी चाय की पत्तियाँ अकिण्वित होती हैं।
3. यह उत्तरी चीन के पहाड़ी क्षेत्रों की देशज फसल है।
4. इसकी खेती 1840 में असम की ब्रह्मपुत्र घाटी में प्रारंभ हुई।
5. भारत चाय का सबसे बड़ा निर्यातक देश है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) 1, 2, 3 और 4
(B) 2, 3, 4 और 5
(C) 1, 3, 4 और 5
(D) 1, 2, 4 और 5

132. निम्नलिखित में से कौन-सा भू-उपयोग परिवर्तन सकारात्मक विकास का सूचक है?
(A) बंजर भूमि का विस्तार
(B) परती भूमि की वृद्धि
(C) निवल बोए क्षेत्र का ह्रास
(D) गैर-कृषि कार्यों में वृद्धि

133. किस फ़सल की खेती शुष्क दौर तथा सूखा सहन करने में समर्थ है और इसे एकल तथा मिश्रित फ़सल के रुप में बोया जाता है?
(A) चावल की प्रमुख खेती
(B) गेहूँ की रबी खेती
(C) बाजरा की शुष्क खेती
(D) गन्ने की व्यापारिक खेती

134. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिये:
List I: (अवधारणा)
P. बंजर व व्यर्थ-भूमि
Q. स्थायी चरागाह
R. वर्तमान परती भूमि
S. कृषि योग्य व्यर्थ भूमि

List II: (विशेषता)
1. 1 कृषि वर्ष तक कृषिरहित
2. 5 वर्ष से अधिक समय से कृषिरहित
3. प्रचलित प्रौद्योगिकी से कृषि योग्य नहीं
4. साझा संपत्ति संसाधन

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

निरंतर खेती करना
(B) उत्पादन को निर्वाह-स्तर से बाजार-उन्मुख स्तर की ओर ले जाना
(C) कृषि क्षेत्र में आधुनिक प्रौद्योगिकी के उपयोग को पूरी तरह समाप्त करना
(D) केवल और केवल शुद्ध जैविक खेती के मॉडलों पर ध्यान केंद्रित करना

167. निम्नलिखित में से कौन सा कारक भारत में कृषि वाणिज्यीकरण को बढ़ावा देता है?
(A) ग्रामीण क्षेत्रों में बाजार संपर्क और सूचनाओं में होने वाली कमी
(B) न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) जैसी प्रभावी सरकारी नीतियां
(C) कुशल परिवहन सुविधाओं और उचित भंडारण का पूर्ण अभाव
(D) कृषि विपणन प्रणाली से बिचौलियों की पूर्ण और स्थायी अनुपस्थिति

168. छोटे और सीमांत किसानों के लिए वाणिज्यीकरण की एक प्रमुख चुनौती क्या है?
(A) उच्च लागत वाले आदान और औपचारिक ऋण की आवश्यकता
(B) आधुनिक कृषि आदानों की अत्यंत कम और सस्ती लागत
(C) स्थानीय बाजार की कीमतों में रहने वाली निरंतर स्थिरता
(D) संगठित राष्ट्रीय बाजारों तक किसानों की अत्यंत आसान पहुँच

169. अनुच्छेद के अनुसार, कृषि का वाणिज्यीकरण "एक दोधारी तलवार" क्यों है?
(A) क्योंकि यह प्रक्रिया केवल बड़े और संपन्न किसानों को लाभ पहुँचाती है।
(B) क्योंकि यह हमेशा और अनिवार्य रुप से फसल की पूर्ण विफलता का कारण बनता है।
(C) क्योंकि यह आय के साथ-साथ जोखिम और भेद्यता में भी वृद्धि करता है।
(D) क्योंकि यह पर्यावरण और पारिस्थितिकी के लिए हमेशा अत्यंत हानिकारक होता है।

170. वाणिज्यीकरण के संदर्भ में छोटे किसानों के लिए बिचौलियों की भूमिका अक्सर कैसी होती है?
(A) वे किसानों को उनकी संपूर्ण उपज का उचित और लाभकारी मूल्य दिलवाते हैं।
(B) वे सभी किसानों को मुफ्त भंडारण और परिवहन की सुविधा प्रदान करते हैं।
(C) वे सीधे तौर पर किसानों को सभी लाभकारी सरकारी योजनाओं से जोड़ते हैं।
(D) वे अक्सर किसानों का आर्थिक शोषण करते हैं और कम कीमतें देते हैं।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
शुष्क भूमि कृषि भारत के उन क्षेत्रों में प्रचलित है जहाँ वार्षिक वर्षा 75 सेंटीमीटर से कम होती है और सिंचाई के साधन सीमित होते हैं। ये क्षेत्र जलवायु परिवर्तन के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं। वैश्विक तापन के कारण वर्षा के पैटर्न में अनिश्चितता, सूखे की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि, तथा तापमान में बढ़ोत्तरी जैसी घटनाएँ शुष्क भूमि कृषि के लिए गंभीर चुनौतियाँ प्रस्तुत कर रही हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए, जलवायु-अनुकूलन रणनीतियों का विकास और कार्यान्वयन महत्वपूर्ण हो गया है। इनमें जल संरक्षण और प्रबंधन पर आधारित वाटरशेड विकास कार्यक्रम प्रमुख हैं, जो वर्षा जल को संग्रहीत करने और भूजल स्तर को बढ़ाने में मदद करते हैं। इसके अतिरिक्त, कम पानी में उगने वाली और सूखा-प्रतिरोधी फसल किस्मों का विकास और उपयोग महत्वपूर्ण है। मृदा नमी संरक्षण तकनीकें, जैसे कि मल्चिंग और शून्य-जुताई (Zero Tillage), भी पानी की उपलब्धता को बढ़ाने में सहायक होती हैं। कृषि-वानिकी (Agroforestry), जिसमें फसलों के साथ पेड़ लगाए जाते हैं, न केवल मृदा की उर्वरता बढ़ाती है बल्कि किसानों को अतिरिक्त आय भी प्रदान करती है और जलवायु के झटकों के प्रति उनकी सहनशीलता को बढ़ाती है। इन तकनीकी और कृषि संबंधी उपायों के साथ-साथ मौसम-आधारित फसल बीमा और समय पर कृषि-सलाहकार सेवाओं जैसी संस्थागत सहायता भी शुष्क भूमि किसानों की आजीविका को स्थिर करने के लिए आवश्यक है। उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. शुष्क भूमि कृषि किन क्षेत्रों की विशेषता है?
(A) जहाँ वर्ष भर अत्यधिक भारी वर्षा और निरंतर बाढ़ की स्थिति आती है।
(B) जहाँ केवल अत्यधिक लाभ वाली नकदी फसलें ही व्यावसायिक रूप से उगाई जाती हैं।
(C) जहाँ वर्षा 75 सेंटीमीटर से कम और सिंचाई के साधन सीमित होते हैं।
(D) तटीय क्षेत्रों में जहाँ वातावरण में सापेक्षिक आर्द्रता की मात्रा सदैव अधिक होती है।

172. जलवायु परिवर्तन शुष्क भूमि कृषि को कैसे प्रभावित कर रहा है?
(A) मानसून और वर्षा की वार्षिक नियमितता में अप्रत्याशित वृद्धि करके
(B) वर्षा की अनिश्चितता और सूखे की तीव्रता में निरंतर वृद्धि करके
(C) सूखे की ऐतिहासिक आवृत्ति और उसकी विनाशक शक्ति में कमी करके
(D) औसत दैनिक और वार्षिक तापमान में निरंतर और प्रभावी कमी करके

173. निम्नलिखित में से कौन सी एक शुष्क भूमि कृषि के लिए जलवायु-अनुकूलन रणनीति है?
(A) जल-गहन फसलों जैसे कि गन्ना और चावल के उत्पादन

वितरण के बारे में थी।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

साझा संपत्ति संसाधन (CPRs), जिन्हें सामुदायिक प्राकृतिक संसाधन भी कहा जाता है, भारतीय ग्रामीण समाज की आजीविका सुरक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनमें सामुदायिक चरागाह, गाँव के तालाब, वन और बंजर भूमि शामिल हैं, जिन पर किसी व्यक्ति विशेष का नहीं, बल्कि पूरे समुदाय का अधिकार होता है। पारंपरिक रूप से, ये संसाधन ग्रामीण गरीबों, विशेष रूप से भूमिहीन मजदूरों और सीमांत किसानों के लिए महत्वपूर्ण रहे हैं, जो यहाँ से पशुओं के लिए चारा, जलाने के लिए लकड़ी, और अन्य लघु वनोपज प्राप्त करते हैं। महिलाओं के लिए CPRs का विशेष महत्व है क्योंकि चारा और ईंधन इकट्ठा करने की जिम्मेदारी पारंपरिक रूप से उन्हीं की होती है। हालाँकि, पिछले कुछ दशकों में इन संसाधनों का तेजी से क्षरण हुआ है। इसके पीछे जनसंख्या का दबाव, कृषि के विस्तार के लिए इन भूमियों पर अतिक्रमण, और सरकारी नीतियों द्वारा निजीकरण को बढ़ावा देना जैसे प्रमुख कारण हैं। पारंपरिक सामुदायिक प्रबंधन प्रणालियों के कमजोर पड़ने से भी इन संसाधनों का अनियंत्रित और अविवेकपूर्ण उपयोग बढ़ा है, जिसे अक्सर 'सांपत्तिक त्रासदी' (Tragedy of the Commons) कहा जाता. है। CPRs के क्षरण का सबसे प्रतिकूल प्रभाव समाज के सबसे कमजोर वर्गों पर पड़ता है, जिससे उनकी गरीबी और भेद्यता और बढ़ जाती है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. साझा संपत्ति संसाधन (CPRs) ग्रामीण समाज के किन वर्गों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं?
(A) क्षेत्र के बड़े जमींदारों और आर्थिक रूप से संपन्न अमीर किसानों के लिए
(B) केवल शहरी क्षेत्रों से आने वाले अल्पकालिक और मौसमी प्रवासियों के लिए
(C) संसाधनों का नियमन करने वाले स्थानीय सरकारी अधिकारियों के लिए
(D) गाँव के भूमिहीन मजदूरों और सीमांत किसानों के लिए

162. स्रोत के अनुसार, महिलाओं के लिए CPRs का विशेष महत्व क्यों है?
(A) क्योंकि वे आधिकारिक रूप से इन प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन करती हैं।
(B) क्योंकि चारा और ईंधन जुटाना पारंपरिक रूप से उनकी जिम्मेदारी है।
(C) क्योंकि इन संसाधनों पर वर्तमान में उनका पूर्ण कानूनी स्वामित्व होता है।
(D) क्योंकि वे इन संसाधनों का उपयोग बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक गतिविधियों हेतु करती हैं।

163. निम्नलिखित में से कौन सा CPRs के क्षरण का कारण नहीं है?
(A) बढ़ता हुआ तीव्र जनसंख्या का दबाव
(B) निजीकरण को बढ़ावा देने वाली नीतियां
(C) सामुदायिक प्रबंधन प्रणालियों का सुदृढ़ीकरण
(D) कृषि विस्तार के लिए भूमि पर अतिक्रमण

164. 'सांपत्तिक त्रासदी' (Tragedy of the Commons) की अवधारणा का क्या अर्थ है?
(A) साझा संसाधनों का अत्यधिक सफल और दीर्घकालिक टिकाऊ प्रबंधन
(B) साझा संसाधनों का पूरी तरह से निजी क्षेत्र में हस्तांतरण
(C) प्राकृतिक आपदाओं के कारण होने वाला संसाधनों का पूर्ण विनाश
(D) प्रबंधन के अभाव में संसाधनों का अविवेकपूर्ण और अनियंत्रित उपयोग

165. CPRs के क्षरण का सबसे प्रतिकूल प्रभाव किस पर पड़ता है?
(A) समाज के सबसे कमजोर, वंचित और गरीब वर्गों पर
(B) ग्रामीण समाज के सभी वर्गों और समुदायों पर समान रूप से
(C) शहरों में रहने वाली उच्च और मध्यम आय वाली आबादी पर
(D) बड़े भू-स्वामियों और व्यावसायिक कृषि करने वाले किसानों पर

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारतीय कृषि में वाणिज्यीकरण की प्रक्रिया का अर्थ है कृषि उत्पादन का निर्वाह-स्तर से बाजार-उन्मुख स्तर की ओर बढ़ना। इस परिवर्तन में किसान केवल अपने परिवार की जरुरतों के लिए नहीं, बल्कि बाजार में बेचने के उद्देश्य से फसलें उगाते हैं। इस प्रक्रिया को बेहतर बाजार संपर्क, परिवहन सुविधाओं में सुधार, कृषि-प्रसंस्करण उद्योगों की वृद्धि और सरकार की मूल्य-समर्थन नीतियों (जैसे न्यूनतम समर्थन मूल्य - MSP) ने गति दी है। वाणिज्यीकरण से किसानों की आय में वृद्धि, कृषि में निवेश को प्रोत्साहन और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर पैदा होने की क्षमता है। हालाँकि, यह प्रक्रिया छोटे और सीमांत किसानों के लिए कई चुनौतियाँ भी लेकर आती है। नकदी फसलों की खेती में उच्च लागत वाले आदानों (बीज, उर्वरक, कीटनाशक) की आवश्यकता होती है, जिसके लिए किसानों को अक्सर अनौपचारिक स्रोतों से उच्च ब्याज दरों पर ऋण लेना पड़ता है। बाजार की कीमतों में उतार-चढ़ाव और फसल की विफलता का जोखिम भी अधिक होता है, जो उन्हें ऋण के जाल में फँसा सकता है। इसके अलावा, संगठित बाजारों और भंडारण सुविधाओं तक उनकी सीमित पहुँच के कारण उन्हें अक्सर अपनी उपज बिचौलियों को कम कीमतों पर बेचनी पड़ती है। इस प्रकार, कृषि का वाणिज्यीकरण एक दोधारी तलवार है जो अवसर प्रदान करती है, लेकिन साथ ही छोटे किसानों की भेद्यता को भी बढ़ाती है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. कृषि के वाणिज्यीकरण से क्या तात्पर्य है?
(A) केवल पारंपरिक और निर्वाह आधारित फसलों की

ANSWERS

1. (B) कुल प्रतिवेदन (रिपोर्टिंग) क्षेत्र
भू-उपयोग संवर्गों का कुल योग हमेशा प्रतिवेदन या रिपोर्टिंग क्षेत्र के बराबर होता है। यह वह क्षेत्र है जिसके लिए भू-राजस्व विभाग द्वारा आधिकारिक रिकॉर्ड बनाए जाते हैं। भौगोलिक क्षेत्र की तुलना में यह भिन्न हो सकता है क्योंकि भौगोलिक क्षेत्र का मापन भारतीय सर्वेक्षण विभाग करता है, जबकि रिपोर्टिंग क्षेत्र केवल उन्हीं भूमियों को दर्शाता है जिनके डेटा उपलब्ध हैं।

2. (A) भारतीय सर्वेक्षण विभाग
भारतीय सर्वेक्षण विभाग भारत की विभिन्न प्रशासकीय इकाइयों के सटीक भौगोलिक क्षेत्र को मापने और उसकी जानकारी प्रदान करने के लिए अधिकृत निकाय है। यह विभाग सीमांकन और मानचित्रण के माध्यम से देश की कुल भू-सीमाओं का निर्धारण करता है। भू-राजस्व विभाग का कार्य केवल रिपोर्टिंग क्षेत्र के उपयोग का वर्गीकरण करना है, जबकि कुल भौगोलिक विस्तार का उत्तरदायित्व पूरी तरह सर्वेक्षण विभाग का होता है।

3. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
वर्तमान परती भूमि एक वर्ष या उससे कम समय के लिए कृषि रहित रहती है। पुरातन परती भूमि एक से पांच वर्षों तक खाली रहती है। यदि भूमि पांच वर्षों से अधिक समय तक बिना खेती के रहती है, तो उसे कृषि योग्य व्यर्थ भूमि कहते हैं। निवल बोया गया क्षेत्र वह भूमि है जिस पर वास्तविक रूप से फसलें उगाई व काटी जाती हैं।

4. (D) जो उपलब्ध तकनीक से कृषि योग्य नहीं बनाई जा सकती।
बंजर व व्यर्थ भूमि में वह क्षेत्र शामिल है जो वर्तमान में उपलब्ध तकनीक की सहायता से कृषि के योग्य नहीं बनाया जा सकता। इसमें मरुस्थल, पहाड़ी इलाके और खड्ड जैसी भूमियाँ आती हैं। यह परती भूमि से अलग होती है क्योंकि इसे सुधारना आर्थिक और तकनीकी रूप से व्यावहारिक नहीं होता है, जिससे यहाँ फसलों का उत्पादन करना वर्तमान में संभव नहीं है।

5. (C) गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त भूमि
जब किसी क्षेत्र में द्वितीयक और तृतीयक आर्थिक कार्यकलापों में वृद्धि होती है, तो बुनियादी ढाँचे के विकास की आवश्यकता बढ़ जाती है। इसके परिणामस्वरूप बस्तियों, सड़कों, उद्योगों और अन्य व्यावसायिक निर्माणों के लिए अधिक भूमि की आवश्यकता होती है। इससे 'गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त भूमि' के संवर्ग में वृद्धि होती है, क्योंकि कृषि भूमि को धीरे-धीरे इन विकासात्मक और औद्योगिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता है।

6. (A) केवल 1 और 3
साझा संपत्ति संसाधन पर ग्राम पंचायत या सरकार का स्वामित्व होता है, न कि निजी व्यक्तियों का। यह भूमि सामुदायिक उपयोग के लिए होती है और पशुओं के लिए चारा, घरेलू ईंधन और अन्य लघु वन उत्पाद उपलब्ध कराती है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए इन भूमियों का विशेष महत्व है क्योंकि वे ही चारा और ईंधन लकड़ी एकत्र करने का मुख्य कार्य करती हैं।

7. (D) जीडीपी में कृषि का हिस्सा कम होने पर भूमि दबाव कम होता है।
अर्थव्यवस्था के विकास के साथ सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान तेजी से घटता है, लेकिन कृषि पर निर्भर जनसंख्या का अनुपात उतनी तेजी से कम नहीं होता। परिणामस्वरूप, भूमि पर जनसंख्या का दबाव बना रहता है या बढ़ता है। विकासशील देशों में कृषि क्षेत्र का हिस्सा कम होने के बावजूद रोजगार के लिए कृषि पर निर्भरता अधिक रहने से प्रति व्यक्ति भूमि उपलब्धता कम होती है।

8. (A) गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त क्षेत्र
वर्ष 1950-51 और 2019-20 के बीच भारत के भू-उपयोग में हुए परिवर्तनों में गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त क्षेत्र की वृद्धि दर सबसे अधिक रही है। इसका मुख्य कारण भारतीय अर्थव्यवस्था की बदलती संरचना, तीव्र शहरीकरण और औद्योगिक विकास है। गाँवों और शहरों में आवासीय बस्तियों, बुनियादी ढाँचे, सड़कों और उद्योगों के विस्तार के कारण इस संवर्ग के अंतर्गत आने वाली भूमि के अनुपात में बड़ी बढ़ोतरी हुई है।

9. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारतीय अर्थव्यवस्था में औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों के महत्व में वृद्धि के कारण शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी ढाँचे का विस्तार हुआ है। आवासीय बस्तियों और कारखानों की बढ़ती मांग ने कृषि भूमि को गैर-कृषि कार्यों में परिवर्तित कर दिया है। इस प्रकार, कृषि योग्य भूमि की हानि की कीमत पर गैर-कृषि प्रयुक्त भूमि का प्रसार हुआ है, जो आधुनिक आर्थिक संरचना का एक प्रत्यक्ष परिणाम है।

10. (A) जहाँ वन विकसित हो सकते हैं।
भू-राजस्व अभिलेखों के अनुसार सरकार द्वारा वर्गीकृत वन क्षेत्र का सीमांकन उस भूमि के आधार पर किया जाता है जिसे सरकार ने वन विकास के लिए अधिसूचित किया है। यह क्षेत्र वास्तविक वन आवरण से भिन्न हो सकता है। इसमें वह भूमि शामिल होती है जहाँ वन विकसित होने की संभावना है या जहाँ भविष्य में वनीकरण के प्रयास किए जाने हैं, चाहे वहाँ वर्तमान में घने वृक्ष हों या न हों।

11. (D) बंजर व व्यर्थ भूमि, कृषि योग्य व्यर्थ भूमि, स्थायी चरागाहें, फ़सल वृक्षों के अधीन क्षेत्र
भारत में 1950-51 से 2019-20 के दौरान चार भू-उपयोग संवर्गों के अनुपात में स्पष्ट गिरावट आई है। इनमें बंजर व व्यर्थ भूमि, कृषि योग्य व्यर्थ भूमि, स्थायी चरागाह और विविध फ़सल वृक्षों

के अधीन क्षेत्र शामिल हैं। यह गिरावट मुख्य रूप से इन भूमियों को कृषि कार्यों या अन्य गैर-कृषि उद्देश्यों के लिए उपयोग में लाने के कारण हुई है, जिससे भूमि उपयोग का स्वरूप समय के साथ बदल गया है।

12. (A) केवल 1 और 4
कृषि एक भूमि-आधारित गतिविधि है जहाँ भूमि की गुणवत्ता सीधे उत्पादकता को निर्धारित करती है। भारत में अधिकांश कृषि योग्य भूमि पहले से ही उपयोग में है, इसलिए निवल बोए गए क्षेत्र के विस्तार की संभावनाएँ अत्यंत सीमित हैं। ग्रामीण समाजों में भू-स्वामित्व का केवल आर्थिक मूल्य ही नहीं होता, बल्कि यह सामाजिक प्रतिष्ठा और विपत्ति के समय सुरक्षा की भावना भी प्रदान करता है, जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

13. (C) प्रति इकाई भूमि में उत्पादकता को बढ़ाना।
भूमि बचत प्रौद्योगिकी का मुख्य उद्देश्य सीमित भूमि संसाधनों का कुशल उपयोग करना और प्रति इकाई क्षेत्र में फसल उत्पादकता में वृद्धि करना है। यह तकनीक विशेष रूप से भारत जैसे देशों के लिए महत्वपूर्ण है जहाँ नई भूमि को कृषि के अंतर्गत लाने की संभावना कम है। इसमें उन्नत बीजों, उर्वरकों और सिंचाई के बेहतर साधनों का प्रयोग करके समान क्षेत्रफल से अधिक पैदावार प्राप्त की जाती है।

14. (D) (सकल बोया गया क्षेत्र / निवल बोया गया क्षेत्र) × 100
फ़सल गहनता की गणना करने के लिए सकल बोए गए क्षेत्र को निवल बोए गए क्षेत्र से विभाजित किया जाता है और परिणाम को सौ से गुणा किया जाता है। यह सूचकांक बताता है कि एक वर्ष के दौरान एक ही भूमि पर कितनी बार फसलें उगाई गई हैं। उच्च फ़सल गहनता का अर्थ है कि भूमि का उपयोग अधिक कुशलता से किया जा रहा है, जो उन्नत सिंचाई सुविधाओं और कृषि विकास का सूचक है।

15. (B) P-2, Q-3, R-1, S-4
खरीफ़ ऋतु दक्षिण-पश्चिमी मानसून के साथ शुरु होती है, जबकि रबी ऋतु शरद ऋतु के प्रारंभ में शुरु होती है। ज़ायद एक अल्पकालिक ग्रीष्मकालीन फसल ऋतु है जो रबी और खरीफ़ के बीच आती है। दक्षिण भारत में उच्च तापमान के कारण स्पष्ट फसल ऋतुएँ नहीं पाई जातीं और यहाँ सिंचाई की उपलब्धता होने पर एक ही वर्ष में एक ही फसल की कई किस्में उगाई जा सकती हैं।

16. (B) गेहूँ
गेहूँ एक प्रमुख रबी फ़सल है जो शरद ऋतु के प्रारंभ में बोई जाती है और ग्रीष्म ऋतु की शुरुआत में काटी जाती है। इसे कम तापमान और पकते समय खिली धूप की आवश्यकता होती है। इसके विपरीत, चावल, कपास और बाजरा खरीफ़ ऋतु की फ़सलें हैं, जिन्हें उच्च तापमान और दक्षिण-पश्चिमी मानसून के दौरान होने वाली अधिक वर्षा की आवश्यकता होती है, जो उनकी वृद्धि के लिए अनुकूल है।

17. (B) आर्द्रता की कमी के कारण फ़सलों को नष्ट होने से बचाना।
रक्षित सिंचाई का प्राथमिक उद्देश्य फसलों को पर्याप्त पानी देना नहीं, बल्कि नमी की कमी के कारण उन्हें सूखने या नष्ट होने से बचाना है। यह सिंचाई प्रणाली वर्षा की कमी को पूरा करने के लिए एक सुरक्षा कवच के रूप में कार्य करती है। इसका उपयोग मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में होता है जहाँ वर्षा अनिश्चित होती है, ताकि फसलें अपने न्यूनतम विकास चक्र को सफलतापूर्वक पूरा कर सकें।

18. (A) 2, 1, 4, 3
भारत में कृषि विकास कार्यक्रमों का सही कालक्रम गहन कृषि ज़िला कार्यक्रम से शुरु होता है। इसके बाद गहन कृषि क्षेत्र कार्यक्रम शुरु किया गया। 1960 के दशक के उत्तरार्ध में उच्च उत्पादकता वाले बीजों के साथ हरित क्रांति का आगमन हुआ। अंत में, 1988 में योजना आयोग ने प्रादेशिक विकास में संतुलन लाने के उद्देश्य से कृषि जलवायु नियोजन का सूत्रपात किया, जो महत्वपूर्ण कदम था।

19. (C) 75 सेंटीमीटर से कम
भारत में शुष्क भूमि खेती मुख्य रूप से उन क्षेत्रों तक सीमित है जहाँ वार्षिक वर्षा 75 सेंटीमीटर से कम होती है। इन प्रदेशों में सिंचाई की सुविधाओं का अभाव होता है और कृषि पूरी तरह से मिट्टी में मौजूद वर्षा के जल की नमी पर निर्भर करती है। यहाँ रागी, बाजरा, मूँग और ग्वार जैसी शुष्क प्रतिरोधी फ़सलें उगाई जाती हैं, जो कम पानी में विकसित हो सकती हैं।

20. (D) बाढ़ तथा मृदा अपरदन
आर्द्र कृषि क्षेत्रों में वर्षा की मात्रा वाष्पीकरण की तुलना में बहुत अधिक होती है, जिसके कारण इन क्षेत्रों में बाढ़ और मृदा अपरदन जैसी समस्याएँ प्रमुखता से उभरती हैं। अत्यधिक जल भराव के कारण फसलों को नुकसान पहुँचता है और उपजाऊ मिट्टी की ऊपरी परत बह जाती है। इन क्षेत्रों में ऐसी फ़सलें उगाई जाती हैं जिन्हें अत्यधिक पानी की आवश्यकता होती है, जैसे चावल और जूट।

21. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
दालें फलीदार फ़सलें होने के कारण नाइट्रोजन यौगीकरण के माध्यम से मृदा की प्राकृतिक उर्वरता को बढ़ाने में सहायक होती हैं। भारत विश्व में दालों का एक प्रमुख उत्पादक देश है और इसकी खेती अधिकांशतः वर्षा आधारित शुष्क क्षेत्रों में की जाती है। यद्यपि दोनों कथन स्वतंत्र रुप से सत्य हैं, लेकिन दालों का प्रमुख उत्पादक होना उनकी नाइट्रोजन यौगीकरण की क्षमता की व्याख्या नहीं करता है।

22. (B) अनाज तथा दालें
भारत में खाद्यान्नों को उनकी अनाज की संरचना के आधार पर मुख्य रूप से दो वर्गों में विभाजित किया गया है: अनाज और दालें। अनाज में चावल, गेहूँ, ज्वार, बाजरा और मक्का जैसी फ़सलें शामिल हैं जो ऊर्जा का मुख्य स्रोत हैं। दालें प्रोटीन का समृद्ध स्रोत होती हैं और फलीदार फ़सलें होने के कारण मिट्टी

की उर्वरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जो अनिवार्य है।

23. (D) 11%
भारत विश्व के कुल अनाज उत्पादन का लगभग 11 प्रतिशत हिस्सा उत्पन्न करता है। देश में अनाज उत्पादन में चावल और गेहूँ की प्रधानता है, जो कुल खाद्यान्न उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा कवर करते हैं। खाद्यान्न आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के बाद, भारत अब अनाज का एक महत्वपूर्ण उत्पादक बन गया है। यह वैश्विक खाद्य सुरक्षा के दृष्टिकोण से भारत के कृषि क्षेत्र के महत्व को दर्शाता है।

24. (A) उष्ण आर्द्र कटिबंधीय क्षेत्र
चावल की खेती के लिए उष्ण और आर्द्र जलवायु सबसे उपयुक्त होती है, जहाँ उच्च तापमान और प्रचुर वर्षा उपलब्ध हो। यह फसल मूल रूप से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों की है। इसकी सफलतापूर्वक खेती उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ पानी की पर्याप्त उपलब्धता हो, चाहे वह भारी वर्षा से प्राप्त हो या उन्नत सिंचाई प्रणालियों के माध्यम से। यह भारत के तटीय और डेल्टाई क्षेत्रों की प्रमुख फसल है।

25. (C) 1, 3 और 4
गेहूँ भारत की दूसरी सबसे महत्वपूर्ण अनाज फ़सल है, जो मुख्य रूप से रबी ऋतु में उगाई जाती है, इसलिए यह खरीफ़ फ़सल नहीं है। इसका लगभग 85 प्रतिशत उत्पादन क्षेत्र उत्तर-मध्य भारत में केंद्रित है। पंजाब और हरियाणा में उन्नत सिंचाई और तकनीक के उपयोग के कारण गेहूँ की उत्पादकता देश में सर्वाधिक है। यह फसल मुख्य रूप से शीतोष्ण जलवायु की परिस्थितियों में पनपती है।

26. (A) औस, अमन, बोरो
पश्चिम बंगाल के किसान जलवायु की अनुकूलता के कारण एक कृषि वर्ष में चावल की तीन अलग-अलग फ़सलें उगाते हैं, जिन्हें स्थानीय रूप से 'औस', 'अमन' और 'बोरो' के नाम से जाना जाता है। यह बहु-फसली चक्र प्रचुर वर्षा और अनुकूल तापमान के कारण संभव हो पाता है। इससे न केवल चावल के कुल उत्पादन में वृद्धि होती है, बल्कि स्थानीय खाद्य सुरक्षा भी सुनिश्चित होती है।

27. (D) दूसरा
2018 के आँकड़ों के अनुसार, चीन के बाद भारत विश्व में चावल उत्पादन में दूसरे स्थान पर था। भारत विश्व के कुल चावल उत्पादन का लगभग 22 प्रतिशत हिस्सा पैदा करता है। देश के विभिन्न राज्यों, विशेषकर पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश और पंजाब में चावल की बड़े पैमाने पर खेती की जाती है। यह रैंकिंग वैश्विक कृषि मानचित्र पर भारत की मजबूत स्थिति को रेखांकित करती है।

28. (A) P-2, Q-1, R-3, S-4
पश्चिम बंगाल भारत का प्रमुख चावल उत्पादक राज्य है, जबकि उत्तर प्रदेश गेहूँ के उत्पादन में अग्रणी है। महाराष्ट्र में ज्वार की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है और गुजरात बाजरा उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। यह क्षेत्रीय विशिष्टता मिट्टी के प्रकार, जलवायु परिस्थितियों और सिंचाई की उपलब्धता पर आधारित है, जो विभिन्न फसलों के सफल उत्पादन के लिए देश के अलग-अलग भागों में अनुकूल हैं।

29. (C) पारंपरिक रूप से चावल उत्पादक राज्य होना
पंजाब और हरियाणा पारंपरिक रूप से चावल उत्पादक राज्य नहीं थे, बल्कि वे मुख्य रूप से गेहूँ उत्पादन के लिए जाने जाते थे। हरित क्रांति के दौरान उत्तम किस्म के बीजों, सुनिश्चित सिंचाई और उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग के कारण इन राज्यों में चावल की उत्पादकता में भारी वृद्धि हुई। यहाँ का लगभग संपूर्ण चावल क्षेत्र सिंचित है, जिससे यह क्षेत्र अब चावल का एक प्रमुख उत्पादक बन गया है।

30. (D) मध्य प्रदेश में गेहूँ की उत्पादकता सर्वाधिक है।
गेहूँ की उत्पादकता के मामले में पंजाब और हरियाणा देश में अग्रणी हैं, न कि मध्य प्रदेश। पंजाब में सिंचाई की बेहतर सुविधाओं और उन्नत कृषि तकनीकों के कारण प्रति हेक्टेयर पैदावार सर्वाधिक है। मध्य प्रदेश गेहूँ का एक महत्वपूर्ण उत्पादक राज्य तो है, लेकिन उत्पादकता दर में वह उत्तरी राज्यों से पीछे है। शेष कथन जैसे विश्व उत्पादन हिस्सा और रबी ऋतु गेहूँ के लिए सही हैं।

31. (A) 1, 2, और 3
भारत के कुल बोए गए क्षेत्र के लगभग 16.5 प्रतिशत भाग पर मोटे अनाज उगाए जाते हैं। ज्वार दक्षिण और मध्य भारत के अर्ध-शुष्क क्षेत्रों की प्रमुख फसल है, जबकि बाजरा गर्म और शुष्क जलवायु में अच्छी तरह पनपता है। मक्का की उत्पादकता अन्य मोटे अनाजों की तुलना में प्रायः अधिक होती है। अधिकांश मोटे अनाजों की खेती वर्षा आधारित क्षेत्रों में होती है, न कि सिंचित क्षेत्रों में।

32. (B) महाराष्ट्र
महाराष्ट्र भारत में ज्वार का सबसे बड़ा उत्पादक है, जहाँ देश के कुल उत्पादन का आधे से अधिक हिस्सा पैदा होता है। ज्वार यहाँ की प्रमुख खाद्य फसल है, जिसे खरीफ़ और रबी दोनों ऋतुओं में उगाया जाता है। यह फसल कम वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए आदर्श है। महाराष्ट्र के अतिरिक्त कर्नाटक, मध्य प्रदेश और आंध्र प्रदेश भी ज्वार उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले प्रमुख राज्य हैं।

33. (B) मक्का की फसल
मक्का एक ऐसी बहुमुखी फसल है जिसका उपयोग भोजन और पशुओं के चारे, दोनों के रूप में किया जाता है। यह फसल अर्ध-शुष्क जलवायु और निम्न कोटि की मिट्टी में भी सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है। भारत में मक्का की खेती विशेष रूप से उन क्षेत्रों में प्रचलित है जहाँ अन्य खाद्यान्नों के लिए परिस्थितियाँ चुनौतीपूर्ण होती हैं। यह औद्योगिक कच्चे माल के रूप में भी महत्वपूर्ण है।

78. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
गुजरात भारत में कपास के प्रमुख उत्पादक राज्यों में से एक है, जबकि पंजाब गेहूँ के उत्पादन में अपनी उच्च उत्पादकता के लिए प्रसिद्ध है। असम देश का सबसे बड़ा चाय उत्पादक राज्य है जहाँ ब्रह्मपुत्र घाटी में बड़े पैमाने पर चाय के बागान हैं। कर्नाटक मक्का के उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभाता है। यह मिलान भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में फसलों के क्षेत्रीय विशेषीकरण और उनकी अनुकूलता को दर्शाता है।

79. (A) वन हेतु निर्धारित अधिसूचित क्षेत्र में वृद्धि
पिछले कुछ दशकों में भारत में वनों के अनुपात में हुई वृद्धि का मुख्य कारण वास्तविक वृक्ष आवरण का बढ़ना नहीं, बल्कि सरकार द्वारा वन विभाग के अधीन अधिसूचित क्षेत्र में की गई बढ़ोतरी है। भू-राजस्व अभिलेखों में जिस भूमि को वन क्षेत्र के रूप में सीमांकित कर दिया जाता है, उसे वन संवर्ग में गिना जाता है, चाहे वहाँ वर्तमान में सघन वृक्ष हों या केवल वनीकरण की संभावना हो।

80. (B) कृषि योग्य व्यर्थ भूमि 5 वर्ष से अधिक समय से कृषिरहित होती है, जबकि पुरातन परती 1 से 5 वर्ष तक।
पुरातन परती भूमि और कृषि योग्य व्यर्थ भूमि के बीच का मुख्य अंतर उनके कृषिरहित रहने की अवधि है। वह भूमि जो एक वर्ष से अधिक लेकिन पांच वर्ष से कम समय के लिए खाली रहती है, उसे पुरातन परती कहा जाता है। यदि कोई भूमि पांच वर्षों से अधिक समय तक बिना खेती के रहती है, तो उसे कृषि योग्य व्यर्थ भूमि के संवर्ग में वर्गीकृत किया जाता है, जिसे सुधार कर खेती की जा सकती है।

81. (B) 1, 2, 3, 4
भारत में कृषि आधुनिकीकरण का क्रम 1960 के दशक के शुरुआती वर्षों में IADP और IAAP कार्यक्रमों से शुरु हुआ। इसके बाद 1960 के दशक के मध्य में उच्च उत्पादकता वाले बीजों (HYV) के साथ हरित क्रांति आई। 1980 के दशक के बाद योजना आयोग ने वर्षा आधारित क्षेत्रों के विकास पर ध्यान केंद्रित किया। अंततः, 1990 के दशक की उदारीकरण नीतियों ने भारतीय कृषि के वैश्विक और व्यावसायिक स्वरूप को गहराई से प्रभावित किया।

82. (A) निवल बोया गया क्षेत्र वह भूमि है जिस पर फसलें उगाई जाती हैं, जबकि सकल बोया गया क्षेत्र इसमें एक वर्ष में एक से अधिक बार बोए गए क्षेत्र को जोड़कर प्राप्त होता है।
निवल बोया गया क्षेत्र उस वास्तविक भूमि को दर्शाता है जिस पर खेती की जाती है। यदि उसी भूमि के किसी हिस्से पर एक कृषि वर्ष में एक से अधिक बार फसल बोई जाती है, तो उसे जितनी बार बोया गया, उतनी बार जोड़कर सकल बोया गया क्षेत्र प्राप्त होता है। यह अंतर कृषि की गहनता को समझने के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बताता है कि उपलब्ध भूमि का कितनी बार कुशलता से उपयोग किया गया है।

83. (C) भूमि की कमी तथा श्रम की अधिकता के कारण
भारत जैसे देश में, जहाँ जनसंख्या का दबाव अधिक है और नई कृषि योग्य भूमि सीमित है, गहन कृषि नीति अपनाना अनिवार्य है। यहाँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध श्रम का उपयोग करके प्रति इकाई भूमि से अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। गहन कृषि के माध्यम से एक ही भूमि पर साल में कई फसलें उगाई जाती हैं, जिससे बढ़ती जनसंख्या की खाद्यान्न आवश्यकताओं को पूरा करना संभव हो पाता है।

84. (D) शुष्क कृषि 75 सेमी से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में है।
शुष्क कृषि और आर्द्र कृषि के बीच मुख्य अंतर वार्षिक वर्षा की मात्रा है। शुष्क कृषि उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ 75 सेंटीमीटर से कम वर्षा होती है और सिंचाई की सुविधा कम होती है। इसके विपरीत, आर्द्र कृषि 75 सेंटीमीटर से अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में की जाती है, जहाँ मिट्टी में प्रचुर नमी रहती है। शुष्क क्षेत्रों में सूखा प्रतिरोधी फ़सलें जबकि आर्द्र क्षेत्रों में चावल और जूट जैसी फ़सलें उगाई जाती हैं।

85. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में निवल बोए गए क्षेत्र में धीमी गिरावट का एक प्रमुख कारण कृषि भूमि का गैर-कृषि उपयोग के लिए बढ़ता हस्तांतरण है। शहरीकरण के विस्तार के कारण शहरों के आसपास की उपजाऊ कृषि भूमि को आवासीय भवनों, उद्योगों और सड़कों के निर्माण के लिए उपयोग किया जा रहा है। यह प्रक्रिया कृषि क्षेत्र को संकुचित कर रही है, क्योंकि गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त भूमि के अनुपात में लगातार वृद्धि हो रही है।

86. (B) कृषि को स्थायी और जलवायु अनुकूल बनाना।
सतत कृषि के लिए राष्ट्रीय मिशन (NMSA) का मुख्य उद्देश्य भारतीय कृषि को जलवायु परिवर्तन के प्रति अधिक अनुकूल और टिकाऊ बनाना है। यह मिशन मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन, जल उपयोग दक्षता बढ़ाने और एकीकृत कृषि प्रणालियों को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। इसका लक्ष्य पारंपरिक और आधुनिक तकनीकों के समन्वय से ऐसी कृषि पद्धतियाँ विकसित करना है जो भविष्य की पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हों और किसानों की आय सुरक्षित रखें।

87. (D) अरेबिका, रोबस्ता, लिबेरिका
भारत में मुख्य रूप से कॉफ़ी की तीन किस्में उगाई जाती हैं: अरेबिका, रोबस्ता और लिबेरिका। भारत अपनी उच्च गुणवत्ता वाली 'अरेबिका' कॉफ़ी के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है, जिसकी वैश्विक बाजार में बहुत अधिक मांग है। इसकी खेती मुख्य रूप से दक्षिण भारत के कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु राज्यों के पहाड़ी क्षेत्रों में की जाती है। 'रोबस्ता' किस्म का भी देश में बड़े पैमाने पर उत्पादन और उपयोग किया जाता है।

88. (A) 1, 2, 3, 4, 5
ऋणग्रस्तता किसानों की वित्तीय विवशता को दर्शाती है, जबकि भूमि सुधार का संबंध न्यायसंगत भूमि वितरण से है। छोटे विखंडित जोत चकबंदी की कमी के कारण आर्थिक रूप से अलाभकारी होते हैं। वाणिज्यीकरण के अभाव में किसान केवल जीवन-निर्वाह हेतु उत्पादन करते हैं। अंततः, अल्प-रोज़गार उस स्थिति को दर्शाता है जहाँ किसानों के पास वर्ष भर

गन्ना एक सिंचित फसल है और इसकी खेती के लिए निरंतर नमी की आवश्यकता होती है। यद्यपि दक्षिणी भारत में गन्ने की उत्पादकता और चीनी की मात्रा अधिक होती है, लेकिन कुल उत्पादन क्षेत्र और मात्रा के मामले में उत्तर प्रदेश वर्तमान में देश में प्रथम स्थान पर है।

46. (D) कैफ़िन तथा टैनिन
चाय की पत्तियों में प्रचुर मात्रा में कैफ़िन और टैनिन पाए जाते हैं, जो इसे उत्तेजक और विशिष्ट स्वाद प्रदान करते हैं। यह एक महत्वपूर्ण पेय फसल है जिसकी खेती मुख्य रूप से असम, पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु के पहाड़ी ढलानों पर की जाती है। चाय के इन्हीं रासायनिक गुणों के कारण यह दुनिया भर में एक लोकप्रिय पेय पदार्थ बनी हुई है और इसका औषधीय महत्व भी माना जाता है।

47. (C) 1, 3 और 4
भारत मुख्य रूप से उच्च गुणवत्ता वाली 'अरेबिका' कॉफ़ी का उत्पादन करता है, जिसकी विश्व बाजार में बहुत मांग है। इसकी खेती मुख्य रूप से कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में पश्चिमी घाट की उच्च भूमियों पर की जाती है। अकेले कर्नाटक देश के कुल उत्पादन का दो-तिहाई से अधिक हिस्सा प्रदान करता है। कॉफ़ी एक उष्णकटिबंधीय रोपण फसल है, न कि शीतोष्ण कटिबंधीय, जैसा कि अक्सर समझा जाता है।

48. (B) असम की ब्रह्मपुत्र घाटी में
भारत में चाय की खेती का प्रारंभ सबसे पहले 1840 के दशक में असम की ब्रह्मपुत्र घाटी में हुआ था। इसके बाद इसे पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग, जलपाईगुड़ी और कूचबिहार जिलों में विस्तारित किया गया। दक्षिण भारत में नीलगिरी और इलायची की पहाड़ियों पर भी चाय के बागान विकसित किए गए। आज असम भारत का सबसे महत्वपूर्ण चाय उत्पादक क्षेत्र बना हुआ है जहाँ से अधिकतम उत्पादन होता है।

49. (B) दूसरा
2018 के आँकड़ों के अनुसार, चीन के बाद भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा चाय उत्पादक देश था। निर्यात के मामले में भी भारत की वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण स्थिति है। भारतीय चाय, विशेषकर दार्जिलिंग और असम की किस्मों को उनके अनूठे स्वाद और सुगंध के लिए अंतरराष्ट्रीय बाजारों में बहुत पसंद किया जाता है। चाय का घरेलू उपभोग बहुत अधिक होने के बावजूद भारत एक प्रमुख निर्यातक बना हुआ है।

50. (A) खाद्यान्नों का दूसरे देशों से आयात करना।
स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकार का मुख्य उद्देश्य खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना था। इसके लिए कृषि योग्य बंजर भूमि को खेती के अंतर्गत लाना, व्यापारिक फसलों के स्थान पर खाद्यान्न उगाना और कृषि की गहनता को बढ़ाने जैसे उपाय अपनाए गए। खाद्यान्नों का आयात करना तत्कालीन आत्मनिर्भरता के लक्ष्य का हिस्सा नहीं था, बल्कि यह संकट के समय की एक विवशता थी जिसे कम करना सरकार का उद्देश्य था।

51. (A) 1, 2, 4, 3
भारत में कृषि विकास कार्यक्रमों का सही क्रम गहन कृषि ज़िला कार्यक्रम (IADP) से शुरु होता है। इसके बाद 1964 में गहन कृषि क्षेत्र कार्यक्रम (IAAP) आया। 1988 में योजना आयोग ने कृषि जलवायु नियोजन की शुरुआत की। अंत में, 2015 में जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY) शुरु की गई। यह क्रम भारतीय कृषि के चरणबद्ध आधुनिकीकरण और विकास को दर्शाता है।

52. (D) दूसरे देशों से खाद्यान्नों का आयात करना पड़ा।
1960 के दशक के मध्य में भारत को लगातार दो वर्षों तक भीषण अकाल का सामना करना पड़ा, जिससे देश में गंभीर खाद्यान्न संकट उत्पन्न हो गया। इस संकट की भरपाई के लिए भारत को विदेशों, विशेषकर अमेरिका से बड़े पैमाने पर खाद्यान्नों का आयात करना पड़ा। इसी विकट स्थिति ने भारत को कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए हरित क्रांति की दिशा में ठोस कदम उठाने को प्रेरित किया।

53. (C) मैक्सिको तथा फिलीपींस
हरित क्रांति की सफलता के लिए गेहूँ की उच्च उत्पादकता वाली किस्में मैक्सिको से और चावल की उन्नत किस्में फिलीपींस स्थित अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान से प्राप्त की गई थीं। इन 'पैकेज प्रौद्योगिकी' बीजों को भारत की स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल ढालकर सिंचित क्षेत्रों में उपयोग किया गया। इसके परिणामस्वरूप भारत के खाद्यान्न उत्पादन, विशेष रूप से गेहूँ और चावल की पैदावार में ऐतिहासिक और क्रांतिकारी वृद्धि दर्ज की गई।

54. (B) P-2, Q-1, R-3, S-4
अनियमित मानसून के कारण कृषि क्षेत्र में सूखा और बाढ़ की समस्या बनी रहती है। भूमि सुधारों की कमी से असमान वितरण और शोषण को बढ़ावा मिलता है। छोटे और विखंडित जोत कृषि को आर्थिक रूप से अलाभकारी बनाते हैं, जिससे आधुनिक मशीनरी का उपयोग कठिन होता है। वाणिज्यीकरण के अभाव में किसान केवल अपनी पारिवारिक आवश्यकताओं के लिए उत्पादन करते हैं, जिससे कृषि का व्यावसायिक विकास रुक जाता है।

55. (D) कृषि विकास में प्रादेशिक असमानता बढ़ी
हरित क्रांति का एक नकारात्मक परिणाम यह रहा कि इससे कृषि विकास में प्रादेशिक असमानता में वृद्धि हुई। यह क्रांति मुख्य रूप से उन क्षेत्रों तक सीमित रही जहाँ सिंचाई की बेहतर सुविधाएँ थीं, जैसे पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश। इसके विपरीत, देश के पूर्वी और वर्षा आधारित शुष्क क्षेत्र इसके लाभों से वंचित रह गए। इससे विकसित और पिछड़े कृषि क्षेत्रों के बीच आर्थिक अंतर और अधिक गहरा हो गया।

56. (A) 1988 में
भारतीय योजना आयोग ने वर्ष 1988 में 'कृषि जलवायु नियोजन' की शुरुआत की थी। इस पहल का मुख्य उद्देश्य कृषि विकास में प्रादेशिक संतुलन को प्रोत्साहित करना और प्रत्येक क्षेत्र की विशिष्ट जलवायु और संसाधनों के अनुसार फसल

अपनी आजीविका के लिए मुख्य रूप से खाद्यान्न फसलें उगाते हैं। सिंचित क्षेत्रों में कृषि का तेजी से आधुनिकीकरण और वाणिज्यीकरण हो रहा है। विखंडित और छोटे जोत आर्थिक रूप से लाभकारी नहीं, बल्कि अलाभकारी होते हैं, जो कृषि विकास में बाधक हैं।

100. (D) ज़ायद - तरबूज़, सब्ज़ियाँ, चारा
ज़ायद एक अल्पकालिक ग्रीष्मकालीन फसल ऋतु है जो रबी और खरीफ़ के बीच आती है। इस दौरान तरबूज़, ककड़ी, सब्जियाँ और चारा फसलें उगाई जाती हैं। खरीफ़ में मुख्य रूप से चावल, कपास और जूट जैसी फसलें आती हैं, जबकि गेहूँ, चना और सरसों रबी की प्रमुख फसलें हैं। यह युग्म ऋतु और फसलों के सही संबंध को दर्शाता है, जो भारतीय कृषि चक्र का एक अनिवार्य हिस्सा है।

101. (C) दो या तीन फ़सलें
भारत के दक्षिणी राज्यों और पश्चिम बंगाल में उच्च तापमान और प्रचुर नमी जैसी अनुकूल जलवायु परिस्थितियों के कारण एक ही कृषि वर्ष में चावल की दो या तीन फसलें सफलतापूर्वक उगाई जा सकती हैं। यहाँ शीत ऋतु में भी तापमान इतना अधिक रहता है कि चावल की वृद्धि प्रभावित नहीं होती। सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता होने पर किसान 'औस', 'अमन' और 'बोरो' जैसी किस्मों के माध्यम से अधिकतम उत्पादन प्राप्त करते हैं।

102. (B) P-2, Q-4, R-3, S-1
उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बड़ा गन्ना उत्पादक राज्य है, जबकि कर्नाटक कॉफ़ी के उत्पादन में देश में अग्रणी है। असम की ब्रह्मपुत्र घाटी चाय के उत्पादन के लिए विश्व प्रसिद्ध है। पश्चिम बंगाल जूट के उत्पादन में प्रथम स्थान पर है, जहाँ गंगा का डेल्टाई क्षेत्र इसके लिए अत्यंत उपयुक्त है। यह मिलान भारत के विभिन्न राज्यों की प्रमुख व्यावसायिक फसलों और उनके क्षेत्रीय प्रभुत्व को सटीक रूप से स्पष्ट करता है।

103. (D) उपरोक्त सभी
1950-51 से 2019-20 के दौरान भारत में भू-उपयोग परिवर्तन के कई प्रमुख कारण रहे हैं। अर्थव्यवस्था की बदलती संरचना और औद्योगिक विकास ने भूमि की मांग बढ़ाई है। शहरीकरण के कारण बस्तियों का विस्तार हुआ और कृषि भूमि का गैर-कृषि उपयोग बढ़ा है। इसके साथ ही, सरकारी प्रयासों और प्रशासनिक सीमांकन के कारण रिकॉर्ड में वन क्षेत्र के अनुपात में भी वृद्धि हुई है। ये सभी कारक सामूहिक रूप से उत्तरदायी हैं।

104. (A) कर्नाटक, मध्य प्रदेश, बिहार व आंध्र प्रदेश
भारत में मक्का के प्रमुख उत्पादक राज्यों में कर्नाटक, मध्य प्रदेश, बिहार, आंध्र प्रदेश और उत्तर प्रदेश शामिल हैं। मक्का एक ऐसी फसल है जो विभिन्न जलवायु परिस्थितियों में उगाई जा सकती है और इसका उपयोग खाद्यान्न के साथ-साथ पशु आहार और औद्योगिक कच्चे माल के रूप में भी किया जाता है। दक्षिणी और मध्य भारत के इन राज्यों में उन्नत बीजों और बेहतर कृषि पद्धतियों के कारण मक्का की उत्पादकता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

105. (C) सूखा तथा बाढ़
भारतीय कृषि में 'जुड़वाँ संकट' सूखा और बाढ़ को कहा जाता है। देश के भौगोलिक विस्तार और मानसूनी वर्षा की अनिश्चितता के कारण अक्सर एक ही समय में एक भाग सूखे की चपेट में होता है जबकि दूसरा भाग भीषण बाढ़ से जूझ रहा होता है। यह प्राकृतिक आपदाओं का दोहरा प्रहार कृषि उत्पादन को अस्थिर बनाता है और किसानों की आर्थिक सुरक्षा के लिए एक गंभीर चुनौती पेश करता है, जो प्रतिवर्ष होता है।

106. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
हरित क्रांति की सफलता पूरी तरह से उन्नत बीजों, उर्वरकों और रसायनों के सही मिश्रण पर निर्भर थी, जिसके लिए निश्चित और नियमित जल आपूर्ति अनिवार्य थी। चूंकि उस समय भारत के केवल कुछ ही क्षेत्रों, जैसे पंजाब और हरियाणा में अच्छी सिंचाई सुविधाएँ उपलब्ध थीं, इसलिए शुरुआती दौर में यह क्रांति केवल उन्हीं सिंचित क्षेत्रों तक सीमित रही। बिना सुनिश्चित सिंचाई के नई तकनीक का लाभ उठाना संभव नहीं था।

107. (D) कम वर्षा वाले क्षेत्रों में बाढ़ की सुभेद्यता का
महाराष्ट्र, गुजरात और राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में हाल के वर्षों में आई आकस्मिक बाढ़ इस बात का उदाहरण है कि कम वर्षा वाले क्षेत्र भी भीषण जल जमाव और बाढ़ के प्रति सुभेद्य हो सकते हैं। यह परिघटना बदलती वर्षा पद्धति और पर्यावरणीय असंतुलन को दर्शाती है। शुष्क प्रदेशों में बुनियादी ढाँचे और जल निकासी की कमी के कारण अचानक होने वाली भारी वर्षा गंभीर संकट पैदा करती है, जो चिंताजनक है।

108. (A) 1, 2, 3, 4
भारत में कृषि विकास की घटनाओं का सही क्रम 1840 के दशक में चाय की खेती के प्रारंभ से होता है। 1947 में देश-विभाजन ने कृषि क्षेत्र को प्रभावित किया। 1960 के दशक के मध्य में हरित क्रांति ने खाद्यान्न उत्पादन में क्रांति ला दी। अंततः, 1988 में योजना आयोग ने क्षेत्रीय संतुलन के लिए कृषि जलवायु नियोजन शुरु किया। यह कालक्रम भारतीय कृषि के ऐतिहासिक विकास और उसमें आए नीतिगत परिवर्तनों को दर्शाता है।

109. (A) केवल 1 और 3
मूँगफली भारत की सबसे महत्वपूर्ण तिलहन फ़सल है जो मुख्य रूप से खरीफ ऋतु में उगाई जाती है। सोयाबीन का लगभग 90% उत्पादन अकेले मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र मिलकर करते हैं। तोरिया और सरसों रबी की फसलें हैं, न कि खरीफ की। सूरजमुखी का सांद्रण दक्षिण भारत के राज्यों में भी व्यापक रूप से पाया जाता है। तिलहन कुल शस्य क्षेत्र के लगभग 14% भाग पर बोए जाते हैं, न कि 25% पर।

110. (D) प्रायद्वीपीय दक्षिण भारत
प्रायद्वीपीय दक्षिण भारत में वर्ष भर तापमान ऊँचा बना रहता है, जो किसी भी उष्णकटिबंधीय फसल के उगने के लिए अत्यंत अनुकूल है। यदि सिंचाई या पर्याप्त आर्द्रता उपलब्ध हो, तो यहाँ एक ही कृषि वर्ष में एक ही फसल की दो या तीन किस्में

67. (C) भूमि में प्राकृतिक उर्वरकता का अवरोध
सिंचित क्षेत्रों में अधिक लाभ के लिए अनाज की फसलों के बार-बार उगाए जाने से दालों (लेग्यूम) का क्षेत्र कम हो गया है। दालें मिट्टी में नाइट्रोजन यौगीकरण के माध्यम से प्राकृतिक उर्वरता बनाए रखती हैं। उनके विस्थापित होने से मृदा का स्वास्थ्य बिगड़ा है और नाइट्रोजन की प्राकृतिक आपूर्ति बाधित हुई है। इसके परिणामस्वरूप अब मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने के लिए रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता बहुत अधिक बढ़ गई है।

68. (C) P-4, Q-1, R-2, S-3
अरहर की खेती मुख्य रूप से मध्य और दक्षिणी राज्यों के शुष्क भागों में की जाती है। तोरिया और सरसों रबी फसलें हैं जो पाला सहन नहीं कर सकतीं। सोयाबीन का उत्पादन मुख्य रूप से मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में केंद्रित है। सूरजमुखी का सांद्रण राजस्थान, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों में अधिक पाया जाता है। यह वर्गीकरण भारत के विभिन्न कृषि-जलवायु क्षेत्रों में फसलों के अनुकूलन को स्पष्ट करता है।

69. (C) गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त भूमि
गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त भूमि वह संवर्ग है जिसमें बस्तियाँ, सड़कें, नहरें, उद्योग और अन्य शहरी बुनियादी ढाँचे शामिल हैं। जैसे-जैसे देश में शहरीकरण और औद्योगीकरण की गति तेज हो रही है, इस संवर्ग के अंतर्गत आने वाली भूमि का अनुपात बढ़ता जा रहा है। द्वितीयक और तृतीयक आर्थिक गतिविधियों में विस्तार के कारण अक्सर कृषि भूमि का रूपांतरण इसी श्रेणी के कार्यों के लिए किया जाता है।

70. (B) साझा संपत्ति संसाधन
ग्राम पंचायत या सरकार के स्वामित्व वाली सामुदायिक भूमि को 'साझा संपत्ति संसाधन' कहा जाता है। यह भूमि किसी निजी व्यक्ति की नहीं होती, बल्कि पूरे गाँव के लिए चारा, ईंधन, लकड़ी और अन्य सामुदायिक लाभ प्रदान करती है। यह विशेष रूप से उन भूमिहीन परिवारों के लिए महत्वपूर्ण है जो अपनी आजीविका के लिए पशुपालन पर निर्भर हैं। इसे सामुदायिक प्राकृतिक संसाधनों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

71. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीन और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए साझा संपत्ति संसाधन जीवन-यापन का प्रमुख आधार हैं। चूंकि इन परिवारों के पास अपनी निजी कृषि भूमि नहीं होती, वे अपनी आजीविका के लिए मुख्य रूप से पशुपालन पर निर्भर रहते हैं। इन सामुदायिक भूमियों से उन्हें पशुओं के लिए मुफ्त चारा और घरेलू उपयोग हेतु ईंधन प्राप्त होता है, जिससे उनकी बुनियादी जरूरतें पूरी होती हैं और जीवन निर्वाह संभव होता है।

72. (A) वर्षा की अनियमितता व फ़सल-चक्र
वर्तमान परती भूमि में वृद्धि का मुख्य कारण वर्षा की अनिश्चितता और पारंपरिक फ़सल-चक्र है। जब वर्षा समय पर नहीं होती या पर्याप्त नहीं होती, तो किसान भूमि को खाली छोड़ देते हैं। इसके अतिरिक्त, मिट्टी की उर्वरता को प्राकृतिक रूप से वापस पाने के लिए भी भूमि को कुछ समय के लिए परती छोड़ना एक आवश्यक कृषि प्रक्रिया है। यह अस्थाई खालीपन सिंचाई सुविधाओं की कमी के कारण भी बढ़ जाता है।

73. (D) एक तकनीकी आवश्यकता
भूमि की गुणवत्ता और उसकी खोई हुई उर्वरता को प्राकृतिक रूप से पुनः प्राप्त करने के लिए उसे कुछ समय के लिए खाली छोड़ना एक आवश्यक तकनीकी प्रक्रिया है। जब भूमि पर लगातार खेती की जाती है, तो उसमें पोषक तत्वों की कमी हो जाती है। परती रखने से प्राकृतिक चक्र के माध्यम से मिट्टी में सूक्ष्मजीवों की गतिविधि बढ़ती है और पोषक तत्व पुनः स्थापित होते हैं, जिससे अगली फसल की उत्पादकता बेहतर होती है।

74. (C) केवल 1, 2 और 3
स्वतंत्रता से पहले भारतीय कृषि मुख्य रूप से जीवन-निर्वाह पर आधारित थी। विभाजन के बाद भारत के महत्वपूर्ण सिंचित क्षेत्र पाकिस्तान में चले गए, जिससे अन्न संकट उत्पन्न हुआ। 1950 के दशक के दौरान कृषि उत्पादन में संतोषजनक वृद्धि हुई थी। हालांकि, हरित क्रांति पूरे देश में एक साथ लागू नहीं हुई, बल्कि यह शुरुआत में केवल पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे सिंचित क्षेत्रों तक ही सीमित रही थी।

75. (D) गन्ना
शुष्क कृषि उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ वार्षिक वर्षा 75 सेंटीमीटर से कम होती है। गन्ना एक ऐसी फसल है जिसे अत्यधिक पानी और सुनिश्चित सिंचाई की आवश्यकता होती है, इसलिए यह शुष्क कृषि के अनुकूल नहीं है। इसके विपरीत, रागी, ज्वार और मूँगफली जैसी फसलें कम वर्षा और शुष्क परिस्थितियों को सहन कर सकती हैं, जिससे वे शुष्क कृषि क्षेत्रों के लिए सबसे उपयुक्त और प्रचलित फसलें मानी जाती हैं।

76. (B) मैक्सिको तथा फिलीपींस
हरित क्रांति के दौरान भारत में उपयोग की जाने वाली गेहूँ की उच्च उत्पादकता वाली किस्में मैक्सिको में विकसित की गई थीं। इसी प्रकार, चावल की उन्नत और उच्च पैदावार देने वाली किस्में फिलीपींस स्थित अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान से प्राप्त हुई थीं। इन विदेशी किस्मों को भारतीय जलवायु के अनुसार अनुकूलित करने के बाद देश के सिंचित क्षेत्रों में पेश किया गया, जिससे भारत के कुल खाद्यान्न उत्पादन में ऐतिहासिक उछाल आया।

77. (C) सीमांत भूमि
भू-राजस्व विभाग द्वारा अपनाए गए आधिकारिक भू-उपयोग वर्गीकरण में 'सीमांत भूमि' नाम का कोई विशिष्ट संवर्ग नहीं है। विभाग द्वारा भूमि को मुख्य रूप से वनों, परती भूमि, निवल बोए गए क्षेत्र, कृषि योग्य व्यर्थ भूमि और गैर-कृषि प्रयुक्त भूमि जैसे नौ संवर्गों में वर्गीकृत किया गया है। सीमांत भूमि शब्द का उपयोग अक्सर छोटे किसानों की जोतों के संदर्भ में किया जाता है, न कि व्यापक भू-उपयोग वर्गीकरण के एक स्वतंत्र संवर्ग के रूप में।

नियोजन करना था। इसके माध्यम से वर्षा आधारित कृषि क्षेत्रों की समस्याओं को हल करने और देश के विभिन्न हिस्सों में कृषि उत्पादकता को समान रूप से बढ़ाने का प्रयास किया गया था।

57. (A) केवल 1 और 3
भारत का केवल एक-तिहाई कृषि क्षेत्र ही सिंचित है, जिससे शेष भाग पूरी तरह मानसून पर निर्भर रहता है। ऐतिहासिक रूप से ज़मींदारी प्रथा भारतीय किसानों के लिए अत्यंत शोषणकारी रही है, जिसने कृषि विकास को बाधित किया। भारत में अधिकांश किसान सीमांत और छोटे हैं, और यहाँ फसलों की उत्पादकता अंतरराष्ट्रीय स्तर की तुलना में काफी कम है। भूमि सुधारों के माध्यम से इन समस्याओं को दूर करने के प्रयास किए गए।

58. (A) गन्ना, तिलहन तथा कपास के उत्पादन में
आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी के प्रसार और सिंचाई सुविधाओं में विस्तार के कारण भारत में गन्ना, तिलहन और कपास जैसी व्यावसायिक फसलों के उत्पादन में प्रशंसनीय वृद्धि हुई है। नई तकनीकों और उन्नत बीजों ने इन फसलों की उत्पादकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यद्यपि मुख्य खाद्यान्नों का उत्पादन भी बढ़ा है, लेकिन व्यावसायिक फसलों के क्षेत्र में हुआ विकास भारतीय कृषि के विविधीकरण और आर्थिक मजबूती का एक प्रमुख सूचक है।

59. (B) कृषि संबंधी सभी जानकारियों हेतु मंच
'किसान पोर्टल' भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है जिसका उद्देश्य किसानों को कृषि संबंधी समस्त जानकारियों के लिए एक साझा और एकीकृत मंच प्रदान करना है। इस पोर्टल के माध्यम से किसानों को बीज, उर्वरक, मौसम, कृषि तकनीक, ऋण सुविधाओं और सरकारी योजनाओं के बारे में सटीक जानकारी प्राप्त होती है। यह डिजिटल माध्यम किसानों को सशक्त बनाने और उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान प्रदान करने में सहायक है।

60. (C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
भारत में जलाक्रांतता, लवणता और मृदा क्षारता के कारण कृषि भूमि का एक बड़ा हिस्सा बंजर हो चुका है। हालांकि, यह समस्या मुख्य रूप से सिंचित क्षेत्रों में अत्यधिक सिंचाई और जल निकासी के अभाव के कारण उत्पन्न हुई है, न कि असिंचित शुष्क क्षेत्रों में। इसलिए, अभिकथन सही है क्योंकि भूमि निम्नीकरण की समस्या वास्तविक है, लेकिन कारण गलत है क्योंकि यह समस्या विशेष रूप से अत्यधिक सिंचित क्षेत्रों में ही अधिक देखी गई है।

61. (C) आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी का व्यापक प्रयोग
भारत में कृषि की निम्न उत्पादकता के मुख्य कारणों में मानसून की अनिश्चितता, वर्षा आधारित शुष्क क्षेत्रों में खेती और भूसंसाधनों पर बढ़ता जनसंख्या का दबाव शामिल है। आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी का व्यापक प्रयोग उत्पादकता बढ़ाने में सहायक होता है, न कि उसे कम करने में। अतः, प्रौद्योगिकी का सीमित और असमान उपयोग ही निम्न उत्पादकता की समस्या का कारण रहा है, जबकि इसका व्यापक प्रसार सुधार का मार्ग है।

62. (D) कमज़ोर राजनीतिक इच्छाशक्ति
स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में लागू किए गए भूमि सुधार कार्यक्रमों के पूर्णतः सफल न होने का मुख्य कारण कमज़ोर राजनीतिक इच्छाशक्ति रही है। जमींदारों के राजनीतिक प्रभाव और कानूनों में मौजूद खामियों के कारण भूमि का न्यायसंगत वितरण और काश्तकारी सुधार प्रभावी ढंग से लागू नहीं हो पाए। हालांकि सरकार ने कई नीतियाँ बनाईं, लेकिन उनके कार्यान्वयन में प्रशासनिक ढिलाई और जमीनी स्तर पर विरोध ने इन सुधारों को सीमित कर दिया।

63. (A) 0.5 हेक्टेयर से भी कम
भारत में लगभग 40 प्रतिशत किसानों के पास भूमि के छोटे टुकड़े हैं जिनका औसत आकार 0.5 हेक्टेयर से भी कम है। यह स्थिति जनसंख्या के बढ़ते दबाव और पारिवारिक बँटवारे का परिणाम है। इतने छोटे और विखंडित जोत आर्थिक दृष्टि से अलाभकारी होते हैं क्योंकि इन पर आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रभावी उपयोग संभव नहीं होता। यह सीमांत कृषि भारतीय किसानों की गरीबी और निम्न निवेश क्षमता का एक प्रमुख कारण है।

64. (B) किसानों को वर्ष-भर रोज़गार उपलब्ध न होना।
भारतीय कृषि में 'व्यापक अल्प रोज़गारी' का अर्थ है कि कृषि क्षेत्र में कार्यरत किसानों और श्रमिकों को वर्ष के सभी महीनों में काम नहीं मिलता। विशेष रूप से असिंचित क्षेत्रों में, जहाँ केवल एक फसल उगाई जाती है, किसान वर्ष के 4 से 8 महीने बेरोजगार रहते हैं। इस मौसमी बेरोजगारी के कारण उनकी आय कम होती है और ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी का चक्र बना रहता है, जो गंभीर चिंता का विषय है।

65. (B) केवल 3, 4 और 5
भारतीय कृषि की संस्थागत बाधाओं के अंतर्गत भूमि सुधारों की कमी, छोटे और विखंडित जोत तथा वाणिज्यीकरण का अभाव जैसे कारक शामिल हैं। ये समस्याएँ कृषि क्षेत्र के ढांचे और कानूनी व्यवस्था से जुड़ी हैं। मानसून पर निर्भरता और निम्न उत्पादकता को तकनीकी और प्राकृतिक बाधाओं के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। संस्थागत सुधारों का उद्देश्य भूमि के वितरण को न्यायसंगत बनाना और जोतों को आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाना होता है।

66. (A) जलाक्रांतता और मृदा लवणता
सिंचित क्षेत्रों में भूमि निम्नीकरण का सबसे प्रमुख कारण अत्यधिक सिंचाई के कारण होने वाली जलाक्रांतता और मृदा लवणता है। जब खेतों में आवश्यकता से अधिक पानी दिया जाता है, तो मिट्टी की ऊपरी परत में लवण जमा हो जाते हैं, जिससे भूमि की उर्वरता नष्ट हो जाती है। विशेष रूप से पंजाब, हरियाणा और राजस्थान के नहरी सिंचित क्षेत्रों में यह समस्या भयावह रूप ले चुकी है, जो कृषि उत्पादकता को बाधित कर रही है।

काम नहीं होता। ये सभी भारतीय कृषि की गंभीर और परस्पर जुड़ी समस्याओं को स्पष्ट करते हैं।

89. (C) वर्षा निर्भर (बारानी) कृषि
वर्षा निर्भर या बारानी कृषि में फसलों का उत्पादन पूरी तरह से वर्षा के दौरान प्राप्त होने वाली मिट्टी की नमी पर टिका होता है। इसमें सिंचाई के कृत्रिम साधनों का उपयोग नहीं किया जाता या बहुत सीमित होता है। वर्षा की मात्रा और समय इस प्रकार की कृषि की सफलता के प्राथमिक निर्धारक होते हैं। भारत के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में बारानी कृषि ही आजीविका का मुख्य साधन है, जो मानसून पर निर्भर है।

90. (A) उत्तर-पश्चिम, पश्चिम और दक्षिण भारतीय पठार
भारत में कपास उत्पादन के तीन मुख्य भौगोलिक क्षेत्र हैं: उत्तर-पश्चिम में पंजाब, हरियाणा और उत्तरी राजस्थान, पश्चिम में गुजरात और महाराष्ट्र का काली मिट्टी वाला क्षेत्र, और दक्षिण में आंध्र प्रदेश, कर्नाटक तथा तमिलनाडु के पठारी भाग। इन क्षेत्रों की जलवायु और मिट्टी की विशेषताएं कपास की सफल खेती के लिए बहुत अनुकूल हैं। यही कारण है कि देश का अधिकांश कपास उत्पादन इन्हीं तीन प्रमुख क्षेत्रों में केंद्रित है।

91. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
ब्रिटिश शासन के दौरान महालवाड़ी और रैयतवाड़ी भू-राजस्व की महत्वपूर्ण प्रणालियाँ थीं, जबकि ज़मींदारी प्रथा किसानों के लिए सबसे अधिक शोषणकारी सिद्ध हुई। साझा संपत्ति संसाधन ऐसी सामुदायिक भूमि है जो राज्य या ग्राम पंचायत के स्वामित्व में होती है और जिसका उपयोग पूरे गाँव के कल्याण के लिए किया जाता है। ये प्रणालियाँ भारत में भूमि प्रबंधन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के ऐतिहासिक और सामाजिक विकास की कड़ियों को दर्शाती हैं।

92. (B) चावल की फसल
चावल एक अत्यंत अनुकूलनीय फसल है जिसकी खेती भारत में समुद्र तल से लेकर 2000 मीटर की ऊंचाई तक की जाती है। यह पूर्वी भारत के आर्द्र और अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों से लेकर उत्तर-पश्चिमी भारत के शुष्क लेकिन सिंचित क्षेत्रों तक सफलतापूर्वक उगाई जाती है। चावल की इस व्यापक भौगोलिक विविधता के कारण ही यह भारत की सबसे प्रमुख खाद्यान्न फसल बनी हुई है, जो विभिन्न जलवायु परिस्थितियों में फल-फूल सकती है।

93. (C) चने की दलहनी खेती
चने की खेती के लिए बहुत कम पानी की आवश्यकता होती है, और फसल के पकने के दौरान केवल एक या दो हल्की बौछारें या सीमित सिंचाई ही इसकी सफलता के लिए पर्याप्त होती है। यह एक उपोष्णकटिबंधीय रबी फसल है जिसे मुख्य रूप से उत्तर और मध्य भारत के शुष्क क्षेत्रों में उगाया जाता है। चने की कम जल आवश्यकता इसे कम वर्षा वाले क्षेत्रों और बारानी कृषि के लिए एक आदर्श विकल्प बनाती है।

94. (A) केवल 1, 3 और 4
स्वतंत्रता के बाद सरकार ने खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने पर बल दिया था, न कि केवल व्यापारिक फसलों पर। हरित क्रांति से क्षेत्रीय असमानता बढ़ी थी क्योंकि इसका लाभ कुछ ही राज्यों तक सीमित रहा। साथ ही, 1990 के दशक की उदारीकरण नीतियों ने वैश्विक बाजार से जोड़कर भारतीय कृषि को गहराई से प्रभावित किया। कथन 2 सही है क्योंकि 1960 के दशक में IADP और IAAP जैसे विशेष कृषि कार्यक्रम वास्तव में शुरु किए गए थे।

95. (A) बिखरे हुए भूजोतों को एक स्थान पर एकत्रित करना।
चकबंदी का मुख्य उद्देश्य किसानों के दूर-दूर बिखरे हुए छोटे भूमि के टुकड़ों को एक ही स्थान पर एकत्रित कर एक बड़ा जोत बनाना है। इससे कृषि कार्यों में सुगमता आती है, समय की बचत होती है और आधुनिक यंत्रों तथा सिंचाई सुविधाओं का कुशलतापूर्वक उपयोग संभव हो पाता है। चकबंदी कृषि उत्पादकता बढ़ाने और जोतों को आर्थिक रूप से अधिक लाभकारी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमि सुधार कदम है।

96. (C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
सिंचित क्षेत्रों में फसलों को कीटों से बचाने के लिए रसायनों का अत्यधिक प्रयोग किया गया है, जिससे मिट्टी में जहरीले तत्वों का सांद्रण बढ़ गया है। हालांकि, हरित क्रांति के दौरान पेश की गई उच्च उत्पादकता वाली बीजों की किस्मों में कीटों के प्रति प्रतिरोधकता पारंपरिक किस्मों की तुलना में काफी कम थी, जिसके कारण रसायनों का अधिक उपयोग अनिवार्य हो गया। अतः अभिकथन सत्य है, लेकिन कारण वैज्ञानिक रूप से गलत है।

97. (B) पर्याप्त जल द्वारा अधिकतम उत्पादकता प्राप्त करना।
उत्पादक सिंचाई का मुख्य उद्देश्य फसलों को न केवल सूखने से बचाना है, बल्कि उन्हें पर्याप्त मात्रा में पानी प्रदान करके अधिकतम संभव उत्पादकता प्राप्त करना है। यह रक्षित सिंचाई से भिन्न है, जहाँ पानी का उपयोग केवल फसल को जीवित रखने के लिए किया जाता है। उत्पादक सिंचाई के अंतर्गत मिट्टी में नमी का स्तर इस प्रकार बनाए रखा जाता है कि पौधों का विकास अपनी पूरी क्षमता के साथ हो सके।

98. (A) निवल बोया गया क्षेत्र
2019-20 के आँकड़ों के अनुसार, भारत के कुल प्रतिवेदन (रिपोर्टिंग) क्षेत्रफल का सबसे बड़ा हिस्सा 'निवल बोया गया क्षेत्र' के अंतर्गत आता है। यह वह भूमि है जिस पर वास्तव में फसलें उगाई जाती हैं। यद्यपि वन क्षेत्र और गैर-कृषि प्रयुक्त भूमि के अनुपात में भी वृद्धि हुई है, लेकिन कृषि प्रधान देश होने के कारण आज भी निवल बोया गया क्षेत्र देश के भू-उपयोग वर्गीकरण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

99. (B) 1, 2, 4 और 5
भारत में 60 प्रतिशत से अधिक किसानों के पास एक हेक्टेयर से छोटे जोत हैं और बढ़ती जनसंख्या के कारण जोतों का औसत आकार लगातार कम हो रहा है। अधिकांश छोटे किसान

34. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में दालों की खेती मुख्य रूप से वर्षा आधारित शुष्क क्षेत्रों में की जाती है, जहाँ सिंचाई की सुविधाओं का अभाव होता है। वर्षा की अनिश्चितता के कारण दालों के उत्पादन और उत्पादकता में वार्षिक रूप से काफी उतार-चढ़ाव आता है। यही कारण है कि दालों की प्रति हेक्टेयर पैदावार कम बनी हुई है, क्योंकि वे पूरी तरह से मानसूनी वर्षा की उपलब्धता और उसके वितरण पर निर्भर हैं।

35. (C) चना और अरहर
चना और अरहर भारत की दो सबसे प्रमुख दालें हैं। चना मुख्य रूप से उत्तर और मध्य भारत में रबी की ऋतु में उगाया जाता है, जबकि अरहर, जिसे तुर भी कहा जाता है, खरीफ़ ऋतु की प्रमुख दाल है। ये दोनों फ़सलें न केवल शाकाहारी भोजन में प्रोटीन का प्रमुख स्रोत हैं, बल्कि अपनी नाइट्रोजन स्थिरीकरण की क्षमता के कारण मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में भी सहायक हैं।

36. (D) चना
हरित क्रांति के दौरान हरियाणा, पंजाब और उत्तरी राजस्थान में सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के बाद चने के कृषि क्षेत्र में काफी कमी आई। किसानों ने चने के स्थान पर गेहूँ की खेती को प्राथमिकता दी क्योंकि गेहूँ की उच्च उत्पादकता वाली किस्मों ने अधिक लाभ प्रदान किया। इस परिवर्तन ने इन राज्यों के फसल प्रतिरुप को पूरी तरह बदल दिया और गेहूँ यहाँ की सबसे प्रमुख रबी फसल बन गई।

37. (D) उपरोक्त सभी
भारत के कुल शस्य क्षेत्र के लगभग 14% भाग पर तिलहन की खेती की जाती है। मूँगफली खरीफ ऋतु की वर्षा आधारित फसल है, जबकि तोरिया और सरसों उपोष्णकटिबंधीय रबी फसलें हैं। सोयाबीन का उत्पादन मुख्य रूप से मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में केंद्रित है। ये सभी तथ्य भारत में तिलहन उत्पादन की विविधता और उनके क्षेत्रीय वितरण को सही ढंग से दर्शाते हैं, जो काफी महत्वपूर्ण है।

38. (B) अरहर (तुर)
अरहर को 'लाल चना' या 'पिजन पी' (Pigeon Pea) के नाम से भी जाना जाता है। यह भारत की दूसरी सबसे महत्वपूर्ण दाल है। यह शुष्क क्षेत्रों में खरीफ़ ऋतु के दौरान उगाई जाती है और देश के मध्य तथा दक्षिणी राज्यों में इसका उत्पादन व्यापक रुप से होता है। अरहर एक बहुवर्षीय फसल है लेकिन इसे अक्सर वार्षिक फसल के रूप में ही खेती के लिए उपयोग किया जाता है।

39. (D) राजस्थान
राजस्थान भारत में तोरिया और सरसों के उत्पादन में अग्रणी राज्य है, जो देश के कुल उत्पादन का लगभग एक-तिहाई हिस्सा अकेला प्रदान करता है। यहाँ की शुष्क और ठंडी जलवायु रबी ऋतु के दौरान इन तिलहन फसलों के विकास के लिए बहुत अनुकूल है। राजस्थान के अलावा हरियाणा और मध्य प्रदेश भी इसके प्रमुख उत्पादक हैं, लेकिन राजस्थान की हिस्सेदारी सबसे अधिक और महत्वपूर्ण बनी हुई है।

40. (A) 1, 3, 2, 4
भारत में चाय की खेती का व्यावसायीकरण 1840 के दशक में शुरु हुआ। देश का विभाजन 1947 में हुआ, जिससे जूट और सिंचित क्षेत्रों पर प्रभाव पड़ा। हरित क्रांति की शुरुआत 1960 के दशक के मध्य में हुई। अंततः, 1988 में योजना आयोग ने कृषि विकास में क्षेत्रीय संतुलन लाने के लिए कृषि जलवायु नियोजन का सूत्रपात किया। यह क्रम भारतीय कृषि इतिहास की महत्वपूर्ण कड़ियों को जोड़ता है।

41. (C) अमेरिकन कपास को 'नरमा' कहा जाता है।
भारत में उगाई जाने वाली अमेरिकन कपास की किस्म को उत्तर-पश्चिमी भागों में 'नरमा' के नाम से जाना जाता है। कपास एक उष्णकटिबंधीय फसल है जिसे फूल आने के समय आकाश साफ और खिली धूप की आवश्यकता होती है, न कि वर्षा की। यद्यपि भारत एक बड़ा उत्पादक है, लेकिन विश्व में एकमात्र सबसे बड़ा उत्पादक होने का दावा समय-समय पर वैश्विक उत्पादन के आँकड़ों पर निर्भर करता है।

42. (D) P-2, Q-2, R-3, S-1
कपास और जूट दोनों रेशेदार फसलें हैं, जिनका उपयोग वस्त्र और पैकेजिंग उद्योग में होता है। गन्ना एक उष्णकटिबंधीय फसल है जिसे उच्च तापमान और प्रचुर नमी की आवश्यकता होती है। चाय एक विशिष्ट रोपण कृषि है, जिसकी खेती ढलानों पर बड़े बागानों के रूप में की जाती है। यह वर्गीकरण फसल के उपयोग, उनकी जलवायु संबंधी आवश्यकताओं और उत्पादन की पद्धतियों के आधार पर किया गया है।

43. (D) पश्चिम बंगाल
पश्चिम बंगाल भारत का सबसे बड़ा जूट उत्पादक राज्य है, जो देश के कुल उत्पादन का लगभग तीन-चौथाई हिस्सा अकेला पैदा करता है। गंगा-ब्रह्मपुत्र डेल्टा की उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी और यहाँ की गर्म व आर्द्र जलवायु जूट की खेती के लिए अत्यंत उपयुक्त है। जूट को 'सुनहरा रेशा' भी कहा जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से बोरे, रस्सी और अन्य पैकेजिंग सामग्री बनाने में होता है।

44. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
1947 में भारत के विभाजन के समय, अधिकांश जूट मिलें भारत में रह गईं, लेकिन कच्चे जूट का उत्पादन करने वाला विशाल और उपजाऊ क्षेत्र पूर्वी पाकिस्तान (वर्तमान बांग्लादेश) में चला गया। इसके कारण भारत के जूट उद्योग को कच्चे माल की भारी कमी का सामना करना पड़ा। इस ऐतिहासिक घटना ने भारतीय जूट क्षेत्र के विकास और उसकी भौगोलिक आपूर्ति श्रृंखला को गंभीर रूप से प्रभावित किया था।

45. (C) उत्तर प्रदेश देश का 40 प्रतिशत गन्ना उत्पादन करता है।
उत्तर प्रदेश भारत का अग्रणी गन्ना उत्पादक राज्य है, जो देश के कुल उत्पादन का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा पैदा करता है।

सफलतापूर्वक उगाई जा सकती हैं। उत्तरी भारत के विपरीत, यहाँ कड़ाके की ठंड नहीं पड़ती, जिससे फसलों का विकास चक्र पूरे वर्ष बिना किसी प्राकृतिक बाधा के चलता रहता है।

111. (A) प्रतिवेदन क्षेत्र हमेशा भौगोलिक क्षेत्र से अधिक है।
प्रतिवेदन (रिपोर्टिंग) क्षेत्र कभी भी कुल भौगोलिक क्षेत्र से अधिक नहीं हो सकता, क्योंकि यह केवल उस भूमि का रिकॉर्ड है जिसके लिए भू-राजस्व विभाग के पास डेटा उपलब्ध है। भारत का कुल भौगोलिक क्षेत्र भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा निर्धारित किया जाता है। रिपोर्टिंग क्षेत्र भौगोलिक क्षेत्र के बराबर या उससे कम हो सकता है, लेकिन उससे अधिक होना असंभव है। अन्य सभी कथन भू-राजस्व और सर्वेक्षण प्रणालियों के बारे में बिल्कुल सही हैं।

112. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
अनियमित मानसून के कारण भारतीय कृषि को सूखा और बाढ़ जैसे संकटों का सामना करना पड़ता है। निम्न उत्पादकता का अर्थ है कि प्रति हेक्टेयर पैदावार अन्य देशों की तुलना में कम है। छोटे और विखंडित जोत कृषि को आर्थिक रूप से अलाभकारी बनाते हैं क्योंकि यहाँ आधुनिक तकनीक का उपयोग कठिन होता है। भूमि निम्नीकरण की समस्या सिंचित क्षेत्रों में विशेष रूप से जलाक्रांतता और लवणता के रूप में उभरती है।

113. (B) बंजर व व्यर्थ-भूमि
1950-51 और 2019-20 के बीच भारत में बंजर व व्यर्थ-भूमि के प्रतिशत में सबसे अधिक गिरावट दर्ज की गई है। इसका मुख्य कारण इस भूमि को कृषि कार्यों या गैर-कृषि उपयोगों जैसे बस्तियों और उद्योगों के निर्माण के लिए विकसित करना है। जैसे-जैसे भूमि पर जनसंख्या का दबाव बढ़ा और नई तकनीकों का विकास हुआ, बंजर भूमि के एक बड़े हिस्से को उत्पादक कार्यों के लिए सफलतापूर्वक परिवर्तित किया गया है।

114. (A) PKVY और RKVY के माध्यम से
भारत सरकार परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY) और राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (RKVY) के माध्यम से देश में जैविक खेती को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रही है। इन योजनाओं का उद्देश्य मिट्टी की उर्वरता को रसायनों के बिना बनाए रखना और किसानों को पर्यावरण के अनुकूल कृषि पद्धतियों के लिए सहायता प्रदान करना है। यह पहल उपभोक्ताओं को स्वस्थ खाद्य उत्पाद उपलब्ध कराने और कृषि को दीर्घकालिक रूप से टिकाऊ बनाने में सहायक है।

115. (C) लगभग 4 से 8 महीने की
भारत के असिंचित शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में, जहाँ केवल एक ही फसल उगाई जाती है, किसान और कृषि श्रमिक वर्ष के लगभग 4 से 8 महीने बेरोजगार रहते हैं। इस स्थिति को 'ऋत्विक बेरोज़गारी' कहा जाता है। सिंचाई सुविधाओं के अभाव के कारण किसान दूसरी फसल नहीं ले पाते, जिससे उन्हें काम की तलाश में शहरों की ओर पलायन करना पड़ता है। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था की एक बड़ी और गंभीर समस्या है।

116. (D) उपरोक्त सभी
कपास और जूट भारत की दो सबसे महत्वपूर्ण रेशेदार फसलें हैं। कपास खरीफ ऋतु की प्रमुख उष्णकटिबंधीय फसल है और भारत में भारतीय तथा अमेरिकन दोनों किस्मों का उत्पादन होता है। 1947 के देश विभाजन के कारण भारत का एक विशाल जूट उत्पादक क्षेत्र पूर्वी पाकिस्तान में चला गया था, जिससे जूट उद्योग प्रभावित हुआ। ये सभी तथ्य भारत में रेशेदार फसलों की स्थिति और उनके ऐतिहासिक भौगोलिक वितरण को सही दर्शाते हैं।

117. (C) अरहर (तुर)
अरहर को 'लाल चना' या 'तुर' के नाम से भी जाना जाता है। यह भारत की एक प्रमुख दाल है जो मुख्य रूप से मध्य और दक्षिणी राज्यों के शुष्क भागों में उगाई जाती है। यह फसल मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि यह वायुमंडल से नाइट्रोजन प्राप्त कर मिट्टी में स्थिर करती है। अरहर का उपयोग शाकाहारी भोजन में प्रोटीन के एक आवश्यक और प्रमुख स्रोत के रूप में किया जाता है।

118. (C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
भारत में कृषि योग्य भूमि का निम्नीकरण एक अत्यंत गंभीर समस्या है जो उत्पादकता को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रही है। हालांकि, यह समस्या केवल वायु और जल अपरदन जैसे प्राकृतिक कारकों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें मानवीय हस्तक्षेप भी शामिल हैं। सिंचित क्षेत्रों में अत्यधिक सिंचाई से उत्पन्न जलाक्रांतता और लवणता तथा रसायनों का अनियंत्रित उपयोग भी भूमि निम्नीकरण के लिए उतने ही जिम्मेदार हैं जितने कि प्राकृतिक कारक।

119. (C) कृषि योग्य व्यर्थ भूमि
भू-राजस्व विभाग के वर्गीकरण के अनुसार, यदि कोई भूमि पांच वर्ष से अधिक समय तक बिना खेती के खाली रहती है, तो उसे 'कृषि योग्य व्यर्थ भूमि' के संवर्ग में रखा जाता है। इस भूमि को उचित सुधार और आधुनिक तकनीक के उपयोग से पुनः कृषि योग्य बनाया जा सकता है। यह पुरातन परती से भिन्न है, जो केवल एक से पांच वर्षों तक ही कृषिरहित रहती है। ऐसी भूमि का विकास करना कृषि विस्तार हेतु आवश्यक है।

120. (A) चारा व ईंधन लकड़ी एकत्रीकरण की ज़िम्मेदारी हेतु।
ग्रामीण क्षेत्रों में साझा संपत्ति संसाधनों का महिलाओं के लिए विशेष महत्व है क्योंकि सामाजिक व्यवस्था में चारा और ईंधन की लकड़ी एकत्र करने की मुख्य जिम्मेदारी उन्हीं की होती है। ये सामुदायिक भूमियाँ उन्हें ये संसाधन निःशुल्क उपलब्ध कराती हैं। इन भूमियों की कमी होने पर महिलाओं को लंबी दूरी तय करनी पड़ती है, जिससे उनके स्वास्थ्य और कार्यभार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, जो एक सामाजिक चिंता का विषय है।

121. (A) 1, 2, 3 और 5
भारत दुनिया में गन्ने का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है और यह एक उष्णकटिबंधीय फसल है जो मुख्य रूप से सिंचित क्षेत्रों में उगाई जाती है। उत्तर प्रदेश देश के कुल गन्ना उत्पादन का

जलीय तंत्र नहीं।
5. भौम जल प्रदूषण से प्रभावित नहीं होता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) केवल 1, 2 और 5

21. पश्चिम बंगाल और बिहार के कुछ भागों में भूमिगत जल में किस तत्व के संकेंद्रण की वृद्धि हुई है?
(A) फ्लुओराइड
(B) नाइट्रेट्स
(C) संखिया (Arsenic)
(D) लोहा

22. 'जल गुणवत्ता' से क्या तात्पर्य है?
(A) जल के विभिन्न स्रोतों की कुल उपलब्ध मात्रा
(B) जल की शुद्धता एवं अवांछित बाह्य पदार्थ-रहित अवस्था
(C) जल का औसत तापमान और तापीय गुणधर्म
(D) जल धारा का औसत प्रवाह वेग और गतिशीलता

23. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:

अभ अभिकथन (A): गर्मियों के मौसम में नदियों में प्रदूषकों का संकेंद्रण बहुत अधिक होता है।

कारण (R): गर्मियों के मौसम में जल का प्रवाह कम होता है।

उपरोक्त कथनों के आलोक में नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

24. देश की दो सबसे अत्यधिक प्रदूषित नदियाँ कौन सी हैं?
(A) गंगा और यमुना
(B) गंगा और गोदावरी
(C) यमुना और कृष्णा
(D) ब्रह्मपुत्र और नर्मदा

25. केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (CPCB) के अनुसार, नदियों में प्रदूषण का मुख्य स्रोत क्या है?
(A) औद्योगिक बहिःस्राव
(B) कृषि अपवाह
(C) जैव और जीवाणविक संदूषण
(D) तापीय प्रदूषण

26. जल (प्रदूषण का निवारण और नियंत्रण) अधिनियम किस वर्ष बनाया गया था?
(A) 1974
(B) 1986
(C) 1997
(D) 2012

27. निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम
2. जल (प्रदूषण का निवारण और नियंत्रण) अधिनियम
3. जल क्रांति अभियान का आरंभ
4. राष्ट्रीय जल नीति की घोषणा

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(A) 2, 1, 4, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 4, 3, 2, 1

28. अलवणीय जल की उपलब्धता को सुधारने के लिए पुनः चक्रण और पुनः उपयोग के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही नहीं है?
(A) शोधित अपशिष्ट जल का उपयोग उद्योगों में शीतलन और अग्निशमन के लिए किया जा सकता है।
(B) जल का पुनः चक्रण एक बहुत ही महंगी और अव्यावहारिक प्रक्रिया है।
(C) नगरीय क्षेत्रों में स्नान और बर्तन धोने में प्रयुक्त जल को बागवानी के लिए उपयोग में लाया जा सकता है।
(D) इससे अच्छी गुणवत्ता वाले जल का पीने के उद्देश्य के लिए संरक्षण होता है।

29. जल संभर प्रबंधन से क्या तात्पर्य है?
(A) केवल धरातलीय जल संसाधनों का दक्ष प्रबंधन
(B) केवल भौम जल संसाधनों का दक्ष प्रबंधन
(C) मुख्य रूप से, धरातलीय और भौम जल संसाधनों का दक्ष प्रबंधन
(D) केवल नदियों के जल का प्रबंधन

30. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

List I: (नदी)
P. यमुना
Q. साबरमती
R. गोमती
S. गंगा

List II: (प्रदूषित खंड/शहर)
1. लखनऊ
2. कानपुर और वाराणसी
3. दिल्ली और इटावा के बीच
4. अहमदाबाद

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

दर्शाता है। यह बदलाव अर्थव्यवस्था की संरचना के प्राथमिक क्षेत्र से द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों की ओर हस्तांतरण को प्रकट करता है। इसके विपरीत, बंजर भूमि या परती भूमि में वृद्धि होना अक्सर संसाधनों की बर्बादी या कृषि क्षेत्र की समस्याओं का संकेत होता है।

133. (C) बाजरा की शुष्क खेती
बाजरा एक अत्यंत सहनशील फसल है जो भीषण गर्मी और लंबे शुष्क दौर का सामना करने में सक्षम है। इसकी खेती मुख्य रूप से राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र जैसे कम वर्षा वाले क्षेत्रों में की जाती है। बाजरे को एकल फसल के रूप में या अन्य दालों के साथ मिश्रित फसल के रूप में बोया जाता है। यह शुष्क खेती की एक आदर्श फसल है जो विपरीत परिस्थितियों में भी भोजन और चारा दोनों प्रदान करती है।

134. (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
बंजर और व्यर्थ भूमि वह है जिसे प्रचलित तकनीक से कृषि योग्य नहीं बनाया जा सकता। स्थायी चरागाह अक्सर साझा संपत्ति संसाधन होते हैं जिन पर पूरे गाँव का अधिकार होता है। वर्तमान परती भूमि वह है जो एक वर्ष या उससे कम समय के लिए खाली रखी जाती है। कृषि योग्य व्यर्थ भूमि वह है जो पिछले पांच वर्षों से अधिक समय से बिना खेती के पड़ी हुई है और सुधारी जा सकती है।

135. (D) दोनों की खेती ढलानों पर अच्छे अपवाह में होती है।
चाय और कॉफ़ी दोनों ही महत्वपूर्ण रोपण फसलें हैं जिनकी खेती के लिए ढलान वाली भूमि की आवश्यकता होती है। ढलान यह सुनिश्चित करती है कि जड़ों में पानी जमा न हो, क्योंकि जल-जमाव इन पौधों के लिए हानिकारक होता है। यह अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी और पहाड़ी क्षेत्रों की ढलानों पर ही सफलतापूर्वक विकसित होती हैं। भारत में इनकी खेती मुख्य रूप से असम और पश्चिमी घाट की पहाड़ियों पर की जाती है।

136. (A) ज़मींदारी
स्वतंत्रता के समय भारत में प्रचलित ज़मींदारी प्रथा को किसानों के लिए सबसे अधिक शोषणकारी भू-राजस्व प्रणाली माना गया था। इस व्यवस्था में ज़मींदार किसानों से भारी लगान वसूलते थे और उनका सामाजिक व आर्थिक शोषण करते थे। स्वतंत्रता के पश्चात लागू किए गए भूमि सुधारों का प्राथमिक लक्ष्य इसी शोषणकारी ज़मींदारी प्रथा को समाप्त करना और भूमि का वास्तविक जोतने वालों को स्वामित्व प्रदान करना था, जो एक ऐतिहासिक सुधार था।

137. (B) 1, 2 और 4
भारतीय कृषि की मुख्य समस्याओं में मानसून पर अत्यधिक निर्भरता, अंतरराष्ट्रीय स्तर की तुलना में निम्न उत्पादकता और छोटे व विखंडित जोत शामिल हैं। हालांकि सरकार ने कई भूमि सुधार कार्यक्रम शुरू किए, लेकिन वे राजनीतिक और प्रशासनिक कारणों से पूरी तरह सफल नहीं हो सके। अधिकांश भारतीय किसान अभी भी बहुत छोटे खेतों पर खेती करते हैं, जो आधुनिक कृषि के विस्तार और आर्थिक लाभ को प्राप्त करने में एक बड़ी बाधा बनी हुई है।

138. (A) 1, 2, 3, 4
भारतीय कृषि का विकास पथ 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति से शुरु हुआ, जिसने कृषि सुधारों की नींव रखी। 1960 के दशक में हरित क्रांति ने खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्रदान की। 1988 में योजना आयोग द्वारा कृषि-जलवायु नियोजन की शुरुआत से क्षेत्रीय विशिष्टताओं पर ध्यान दिया गया। अंततः, 1990 के दशक की उदारीकरण नीतियों ने भारतीय कृषि को वैश्विक प्रतिस्पर्धा और बाजार उन्मुख परिवर्तनों के युग में प्रवेश कराया, जो अत्यंत प्रभावशाली रहा।

139. (A) 1, 2 और 4
1950-51 से 2019-20 के बीच भारत में वन क्षेत्र के अधिसूचित अनुपात में वृद्धि हुई है और बंजर भूमि के उपयोग के कारण इसके अनुपात में कमी आई है। साथ ही, कृषि विस्तार के कारण निवल बोए गए क्षेत्र में भी वृद्धि दर्ज की गई है। हालांकि, स्थायी चरागाहों के क्षेत्र में गिरावट आई है और गैर-कृषि प्रयुक्त भूमि के अनुपात में लगातार बढ़ोतरी हुई है। यह बदलाव देश की बदलती आर्थिक और सामाजिक प्राथमिकताओं को दर्शाता है।

140. (B) सामुदायिक वन, चरागाह व जलीय क्षेत्र
साझा संपत्ति संसाधनों (CPRs) के अंतर्गत ऐसी भूमि और जल निकाय आते हैं जो किसी व्यक्ति के निजी स्वामित्व में नहीं होकर पूरे समुदाय के उपयोग के लिए उपलब्ध होते हैं। इसमें सामुदायिक वन, साझा चरागाह, गाँव की शामलात भूमि और सार्वजनिक जलाशय शामिल हैं। ये संसाधन विशेष रूप से ग्रामीण गरीबों और भूमिहीन परिवारों के लिए महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये उन्हें निःशुल्क चारा, ईंधन और आजीविका के अन्य छोटे साधन प्रदान करते हैं।

141. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
सीमांत और छोटे किसानों की जोतों का आकार बहुत छोटा होने के कारण उनकी बचत न के बराबर होती है। आधुनिक कृषि, जिसमें उन्नत बीज, उर्वरक और सिंचाई जैसे सघन संसाधनों की आवश्यकता होती है, में निवेश करना उनके लिए कठिन होता है। इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वे अक्सर साहूकारों से ऊँची दरों पर ऋण लेते हैं और अंततः ऋण के जाल में फंस जाते हैं, जो उनकी गरीबी का मुख्य कारण है।

142. (D) राज्यों में इसका अभाव व पुनः आवश्यकता।
भारत में चकबंदी कार्यक्रम के पूरी तरह सफल न होने का मुख्य कारण राज्यों के बीच इसके कार्यान्वयन में भारी असमानता है। कुछ राज्यों में इसे प्रभावी ढंग से लागू किया गया, जबकि कई राज्यों में यह अभी भी अधूरा है। इसके अलावा, परिवारों के निरंतर बँटवारे और भूमि के दोबारा विखंडन के कारण एक बार हो चुकी चकबंदी के बाद पुनःचकबंदी की आवश्यकता उत्पन्न हो गई है, जो एक निरंतर चुनौती है।

लगभग 40% हिस्सा पैदा करता है। हालांकि, दक्षिण भारत के राज्यों में गन्ने की उत्पादकता और उसमें चीनी की मात्रा उत्तरी भारत की तुलना में अधिक होती है। यह फसल देश के कुल शस्य क्षेत्र के लगभग 2.4% भाग पर उगाई जाती है।

122. (A) रक्षित में जल कम तथा उत्पादक में जल अधिक दिया जाता है।
रक्षित सिंचाई का मुख्य उद्देश्य फसलों को पर्याप्त आर्द्रता प्रदान कर उन्हें नष्ट होने से बचाना है, जिसमें पानी का उपयोग सीमित होता है। इसके विपरीत, उत्पादक सिंचाई का लक्ष्य पर्याप्त जल आपूर्ति सुनिश्चित करके फसलों की अधिकतम पैदावार प्राप्त करना है। रक्षित सिंचाई एक सुरक्षात्मक उपाय है, जबकि उत्पादक सिंचाई कृषि की तीव्रता और उत्पादकता बढ़ाने के लिए एक उन्नत निवेश और तकनीक है जो अधिक लाभ प्रदान करती है।

123. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
ज़ायद एक अल्पकालिक ग्रीष्मकालीन फसल ऋतु है जो रबी और खरीफ़ के बीच आती है। 'नरमा' उत्तर-पश्चिमी भारत में अमेरिकन कपास को कहा जाता है। 'औस', 'अमन' और 'बोरो' पश्चिम बंगाल और दक्षिण भारत में उगाई जाने वाली चावल की तीन अलग-अलग फसलें हैं। बारानी कृषि वह है जो पूरी तरह से वर्षा से प्राप्त होने वाली मिट्टी की नमी पर निर्भर करती है। यह शब्दावली भारतीय कृषि की विविधताओं को स्पष्ट करती है।

124. (B) मध्य प्रदेश व हिमालयी क्षेत्र
भारत में गेहूँ की खेती मुख्य रूप से उत्तर और उत्तर-मध्य सिंचित क्षेत्रों में केंद्रित है। हालांकि, मध्य प्रदेश और हिमालयी क्षेत्रों में गेहूँ की कृषि अक्सर वर्षा पर आधारित होती है, जिसके कारण यहाँ इसकी उत्पादकता पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों की तुलना में काफी कम है। पर्याप्त सिंचाई सुविधाओं के अभाव में ये क्षेत्र पूरी तरह मानसून और मिट्टी की प्राकृतिक नमी पर निर्भर रहते हैं, जो अनिश्चित है।

125. (C) रबी ऋतु
दक्षिण भारत के राज्यों में मूँगफली मुख्य रूप से रबी ऋतु के दौरान उगाई जाती है। उत्तरी भारत में यह एक खरीफ़ फसल है, लेकिन दक्षिण की गर्म जलवायु और सिंचाई की उपलब्धता इसे रबी के मौसम में उगाने के लिए अनुकूल बनाती है। मूँगफली भारत की सबसे महत्वपूर्ण तिलहन फसल है। गुजरात इसका सबसे बड़ा उत्पादक है, लेकिन तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश जैसे दक्षिणी राज्यों का भी इसमें महत्वपूर्ण योगदान है।

126. (D) दालों की खेती अधिकतर सिंचित क्षेत्रों में होती है।
भारत में दालों की खेती सिंचित क्षेत्रों में नहीं, बल्कि अधिकतर वर्षा आधारित शुष्क क्षेत्रों में की जाती है। चूंकि ये फसलें कम पानी में भी जीवित रह सकती हैं, इसलिए इन्हें बारानी क्षेत्रों की प्रमुख फसल माना जाता है। शेष सभी कथन सही हैं; दालें शाकाहारियों के लिए प्रोटीन का मुख्य स्रोत हैं और भारत इनका एक बड़ा उत्पादक देश है। चना और अरहर वास्तव में भारत की सबसे महत्वपूर्ण दालें हैं।

127. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
जैसे-जैसे अर्थव्यवस्था विकसित होती है, सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान घटता जाता है, लेकिन कृषि पर निर्भर जनसंख्या का अनुपात उतनी गति से कम नहीं होता। परिणामस्वरूप, खेती के लिए उपलब्ध भूमि पर दबाव बना रहता है या बढ़ता है। यह जनसंख्या का भारी दबाव प्रति व्यक्ति कृषि भूमि की उपलब्धता को कम करता है, जिससे कृषि क्षेत्र में बेरोजगारी और आर्थिक पिछड़ापन जैसी चुनौतियाँ बनी रहती हैं।

128. (B) उत्तम बीज के किस्मों में कीट प्रतिरोधकता कम थी।
1960 के दशक की हरित क्रांति के दौरान पेश की गई उच्च उत्पादकता वाली बीजों की किस्मों में कीटों और बीमारियों के प्रति प्राकृतिक प्रतिरोधकता पारंपरिक बीजों की तुलना में बहुत कम थी। इन फसलों को कीटों से बचाने और उनकी उच्च पैदावार सुनिश्चित करने के लिए कीटनाशकों और अन्य रसायनों का अत्यधिक प्रयोग अनिवार्य हो गया। यही कारण है कि उस समय से भारत में कीटनाशकों की खपत में भारी और निरंतर वृद्धि दर्ज की गई।

129. (C) 1, 2 और 4
कृषि एक ऐसी गतिविधि है जो पूरी तरह से भूमि संसाधनों पर आधारित है और भूमि की गुणवत्ता सीधे इसकी उत्पादकता को प्रभावित करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीनता और गरीबी के बीच एक सीधा संबंध है क्योंकि भूमि ही आय का मुख्य साधन है। पिछले कुछ वर्षों में, गैर-कृषि कार्यों के लिए भूमि की मांग बढ़ने के कारण कुल रिपोर्टिंग क्षेत्र में कृषि भूमि के प्रतिशत में कमी देखी गई है।

130. (A) यह आपदा या विपत्ति में सुरक्षा की भाँति है।
ग्रामीण भारतीय समाज में भू-स्वामित्व का केवल आर्थिक महत्व ही नहीं है, बल्कि इसका बहुत ऊँचा सामाजिक मूल्य भी है। भूमि का स्वामित्व विपत्ति या फसल की विफलता के समय किसानों के लिए एक सुरक्षा कवच की तरह कार्य करता है। इसके अतिरिक्त, समाज में भूमि को प्रतिष्ठा और सम्मान का प्रतीक माना जाता है। यह भावनात्मक और सामाजिक सुरक्षा ग्रामीण जीवन में भूमि की उपयोगिता को और बढ़ा देती है।

131. (A) 1, 2, 3 और 4
चाय एक रोपण कृषि है और भारत इसकी काली तथा हरी दोनों किस्मों का उत्पादन करता है। यह मूल रूप से चीन की फसल है और भारत में इसका व्यावसायीकरण 1840 के दशक में असम की ब्रह्मपुत्र घाटी से हुआ था। वर्तमान में भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा चाय उत्पादक है, लेकिन घरेलू मांग बहुत अधिक होने के कारण वह विश्व का सबसे बड़ा निर्यातक नहीं है, यह स्थान समय-समय पर बदलता रहता है।

132. (D) गैर-कृषि कार्यों में वृद्धि
गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त भूमि में वृद्धि होना एक सकारात्मक आर्थिक विकास का सूचक है, क्योंकि यह देश में बढ़ते शहरीकरण, औद्योगीकरण और बुनियादी ढांचे के विकास को

सुविधाओं की कमी हो जाती है और सामाजिक व्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है जिससे तनाव बढ़ता है।

154. (D) भूमि-संबंधी विवादों और सामाजिक असमानता में होने वाली वृद्धि
भू-उपयोग में होने वाले परिवर्तनों के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि के बाजार मूल्यों में अप्रत्याशित वृद्धि देखी जाती है। यह आर्थिक बदलाव अक्सर ग्रामीण समाज के विभिन्न वर्गों के बीच गहरी सामाजिक असमानता पैदा करता है। इसके साथ ही, भूमि की बढ़ती कीमतों और मालिकाना हक को लेकर स्थानीय स्तर पर कानूनी और सामाजिक विवादों की संख्या में भी काफी इजाफा होता है।

155. (C) भू-उपयोग परिवर्तन एक बहुआयामी सामाजिक-आर्थिक और भौगोलिक प्रक्रिया है।
भू-उपयोग परिवर्तन केवल एक भौगोलिक बदलाव नहीं है, बल्कि यह एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है जिसके सामाजिक और आर्थिक प्रभाव अत्यंत गहरे हैं। यह प्रक्रिया ग्रामीण आजीविका, शहरी विस्तार, पर्यावरण और खाद्य सुरक्षा जैसे विविध क्षेत्रों को व्यापक रूप से प्रभावित करती है। यह ग्रामीण समाज के पारंपरिक ढांचे को बदलकर विकास की नई चुनौतियों और प्रतिमानों को निरंतर जन्म देती रहती है।

156. (B) सुनिश्चित सिंचाई के साधनों की उपलब्धता
हरित क्रांति की सफलता मुख्य रूप से एक विशेष प्रौद्योगिकी पैकेज पर टिकी थी, जिसमें उच्च उपज वाले बीज और रासायनिक उर्वरकों का उपयोग अनिवार्य था। इन आधुनिक आदानों के प्रभावी परिणाम प्राप्त करने के लिए नियमित और सुनिश्चित सिंचाई की उपलब्धता सबसे महत्वपूर्ण पूर्व-शर्त थी। यही कारण है कि यह क्रांति केवल उन्हीं क्षेत्रों में सफल हो सकी जहाँ सिंचाई सुविधा पहले से विकसित थी।

157. (D) पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में
भारत में हरित क्रांति का प्रसार समान रूप से पूरे देश में नहीं हुआ, बल्कि यह कुछ विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों तक ही सीमित रहा। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे क्षेत्रों में उन्नत सिंचाई सुविधाओं की मौजूदगी के कारण यहाँ नई कृषि तकनीक का सफल कार्यान्वयन हुआ। इसके परिणामस्वरूप, इन विशेष राज्यों में कृषि उत्पादकता और किसानों की आय में बहुत अधिक वृद्धि दर्ज की गई।

158. (A) सिंचित और वर्षा-निर्भर कृषि क्षेत्रों के बीच विकास का विभाजन
क्षेत्रीय द्वैतवाद की अवधारणा भारतीय कृषि के उस विभाजन को दर्शाती है जो हरित क्रांति के बाद उत्पन्न हुआ था। इसमें एक ओर वे क्षेत्र शामिल थे जो सिंचाई सुविधाओं से संपन्न, समृद्ध और आधुनिक थे, जबकि दूसरी ओर वे विशाल क्षेत्र थे जो केवल वर्षा पर निर्भर और आर्थिक रूप से पिछड़े रहे। इस विषमता ने देश के विभिन्न हिस्सों के बीच आर्थिक अंतर बढ़ाया।

159. (C) वहाँ ग्रामीण ऋणग्रस्तता और किसान संकट की समस्याएँ गंभीर हो गईं।
जिन क्षेत्रों में हरित क्रांति की तकनीक और लाभ नहीं पहुँच सके, वहाँ के किसान पारंपरिक और कम उत्पादक पद्धतियों पर ही निर्भर रहे। सिंचाई के अभाव और पिछड़ी खेती के कारण इन क्षेत्रों में कृषि संकट लगातार गहराता चला गया। इसके परिणामस्वरूप, वर्षा-आधारित क्षेत्रों में ग्रामीण ऋणग्रस्तता और किसानों के सामने आने वाली आर्थिक कठिनाइयाँ अन्य विकसित क्षेत्रों की तुलना में कहीं अधिक गंभीर हो गईं।

160. (A) हरित क्रांति ने उत्पादन बढ़ाया पर क्षेत्रीय असमानताएं भी पैदा कीं।
हरित क्रांति भारतीय कृषि के इतिहास में एक महत्वपूर्ण तकनीकी सफलता रही जिसने खाद्यान्न उत्पादन में देश को आत्मनिर्भर बनाया। हालाँकि, इसके लाभों का वितरण असमान होने के कारण इसने विभिन्न राज्यों के बीच गंभीर क्षेत्रीय असंतुलन और आर्थिक विषमताएं भी पैदा कीं। निष्कर्षतः, इसने जहाँ एक ओर उत्पादकता में क्रांतिकारी वृद्धि की, वहीं दूसरी ओर कृषि विकास में एक स्पष्ट क्षेत्रीय विभाजन भी उत्पन्न किया।

161. (D) गाँव के भूमिहीन मजदूरों और सीमांत किसानों के लिए
साझा संपत्ति संसाधन ग्रामीण भारत के आर्थिक और सामाजिक ढांचे का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये संसाधन विशेष रूप से उन भूमिहीन मजदूरों और सीमांत किसानों के लिए जीवन रक्षक साबित होते हैं जिनके पास अपनी निजी भूमि नहीं होती। चरागाह, तालाब और वन क्षेत्र इन समुदायों को पशुओं के लिए चारा, घरेलू ईंधन और अन्य आवश्यक उत्पाद बिना किसी मूल्य के सुलभ कराते हैं।

162. (B) क्योंकि चारा और ईंधन जुटाना पारंपरिक रूप से उनकी जिम्मेदारी है।
ग्रामीण भारतीय समाज में घरेलू कार्यों और पशुपालन से जुड़ी अधिकांश गतिविधियाँ महिलाओं द्वारा संचालित की जाती हैं। पशुओं के लिए चारा और खाना पकाने के लिए जलाऊ ईंधन इकट्ठा करने का दायित्व पारंपरिक रूप से महिलाओं का ही होता है। साझा संपत्ति संसाधनों तक आसान पहुँच उनके श्रम और समय को कम करने में मदद करती है, जिससे उनके जीवन स्तर पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

163. (C) सामुदायिक प्रबंधन प्रणालियों के सुदृढ़ीकरण
साझा संपत्ति संसाधनों का क्षरण मुख्य रूप से जनसंख्या के बढ़ते दबाव, भूमि पर अवैध अतिक्रमण और निजीकरण की सरकारी नीतियों के कारण होता है। इसके विपरीत, यदि सामुदायिक प्रबंधन प्रणालियों को मजबूत और सुदृढ़ किया जाता है, तो इससे इन संसाधनों का संरक्षण और टिकाऊ उपयोग सुनिश्चित होता है। अतः प्रबंधन प्रणालियों का सुदृढ़ीकरण क्षरण का कारण नहीं बल्कि उसके समाधान का एक प्रभावी माध्यम है।

143. (A) दालें
भारत के कुल शस्य (बोए गए) क्षेत्र के लगभग 11 प्रतिशत भाग पर दालों की खेती की जाती है। दालें भारत में शाकाहारी आबादी के लिए प्रोटीन का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत हैं। ये फलीदार फसलें होने के कारण मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता को भी बढ़ाती हैं। दालों का उत्पादन मुख्य रूप से देश के उन शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में केंद्रित है जहाँ सिंचाई की सुविधाएँ सीमित हैं और वर्षा ही मुख्य आधार है।

144. (B) चने की प्रमुख रबी खेती
चना एक महत्वपूर्ण उपोष्णकटिबंधीय रबी फसल है जिसकी खेती भारत के मध्य, पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी भागों में की जाती है। यह फसल ठंडी और शुष्क जलवायु में अच्छी तरह पनपती है। चने को बहुत कम पानी की आवश्यकता होती है, इसलिए यह उन क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है जहाँ सिंचाई की सीमित उपलब्धता है। अपनी दालों में अग्रणी स्थिति के कारण यह रबी ऋतु की एक प्रमुख व्यावसायिक और खाद्य फसल है।

145. (B) इनका लगभग दो-तिहाई भाग सिंचित है।
भारत में तोरिया और सरसों की खेती मुख्य रूप से रबी ऋतु में की जाती है और इनका लगभग दो-तिहाई क्षेत्र सिंचित है। यह सिंचाई इनके स्थिर उत्पादन और बेहतर उत्पादकता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है। ये फसलें पाले के प्रति बहुत संवेदनशील होती हैं और अधिक ठंड इनके लिए नुकसानदेह हो सकती है। तोरिया और सरसों भारत के प्रमुख खाद्य तेल के स्रोत हैं, जिसका उत्पादन मुख्य रूप से राजस्थान और हरियाणा में होता है।

146. (D) P-3, Q-4, R-1, S-2
गहन कृषि ज़िला कार्यक्रम (IADP) की शुरुआत 1960 के दशक के आरंभ में हुई थी। हरित क्रांति ने उच्च उत्पादकता वाले बीजों और पैकेज प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ावा दिया। कृषि जलवायु नियोजन का उद्देश्य देश के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि विकास का प्रादेशिक संतुलन सुनिश्चित करना है। परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY) विशेष रूप से जैविक खेती के प्रसार और मृदा स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है।

147. (C) Nitrogen यौगीकरण का प्राकृतिक अवरोध।
सिंचित क्षेत्रों में अधिक लाभ देने वाली खाद्यान्न फसलों के बार-बार उगाने और बहु-फसलीकरण की प्रवृत्ति ने दालों के क्षेत्र को कम कर दिया है। दालें मिट्टी में प्राकृतिक रूप से नाइट्रोजन स्थिरीकरण का कार्य करती हैं। उनके विस्थापन से मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता पुनः प्राप्त करने की प्रक्रिया बाधित हुई है। इसके कारण अब फसलों की पैदावार बनाए रखने के लिए किसानों को रासायनिक नाइट्रोजन उर्वरकों पर बहुत अधिक निर्भर होना पड़ रहा है।

148. (D) कृषि का वृहद स्तर पर वाणिज्यीकरण
कृषि का वाणिज्यीकरण उत्पादकता बढ़ाने में सहायक होता है क्योंकि इसमें आधुनिक निवेश और बेहतर प्रबंधन तकनीकों का उपयोग किया जाता है। भारत में निम्न उत्पादकता के वास्तविक कारणों में भूसंसाधनों पर जनसंख्या का अत्यधिक दबाव, मानसूनी वर्षा की अनिश्चितता और विस्तृत वर्षा-निर्भर क्षेत्रों में पारंपरिक तरीके से की जाने वाली खेती शामिल है। वाणिज्यीकरण की कमी ही वास्तव में उत्पादकता के स्तर को कम रखने वाली एक बड़ी बाधा मानी गई है।

149. (B) केवल 1, 2 और 3
विंध्याचल के दक्षिण में ज्वार मुख्य रूप से वर्षा आधारित खरीफ फसल के रूप में उगाई जाती है। बाजरा अपनी प्रकृति के कारण सूखा सहन करने में सक्षम है और शुष्क क्षेत्रों के लिए आदर्श है। मक्का की उत्पादकता वास्तव में दक्षिणी राज्यों में उत्तर भारत की तुलना में अधिक दर्ज की गई है। हालांकि, चना एक उपोष्णकटिबंधीय रबी फसल है, न कि खरीफ, जो इसे उत्तर और मध्य भारत की प्रमुख शीतकालीन फसल बनाता है।

150. (B) चकबंदी का अभाव व भूमि का बँटवारा
भारतीय कृषि में छोटे और विखंडित जोत एक गंभीर समस्या हैं जो भूमि के निरंतर पारिवारिक बँटवारे और प्रभावी चकबंदी के अभाव के कारण उत्पन्न हुए हैं। जोतों का आकार बहुत छोटा होने से उन पर आधुनिक कृषि मशीनरी और सिंचाई सुविधाओं का कुशलतापूर्वक उपयोग करना संभव नहीं हो पाता। यह विखंडन खेती की लागत बढ़ाता है और इसे आर्थिक रूप से अलाभकारी बनाता है, जिससे किसानों की आय और उत्पादकता दोनों प्रभावित होते हैं।

151. (B) तीव्र शहरीकरण और औद्योगिक विस्तार की निरंतर बढ़ती प्रक्रिया
भारत में कृषि योग्य भूमि का गैर-कृषि कार्यों के लिए बड़े पैमाने पर होने वाला रुपांतरण मुख्य रूप से बढ़ते हुए शहरीकरण और औद्योगिक गतिविधियों के विस्तार का परिणाम है। यह प्रक्रिया आर्थिक विकास की मांग को पूरा करने के लिए उपजाऊ भूमियों का उपयोग करती है। इसके कारण कृषि क्षेत्र का क्षेत्रफल निरंतर घट रहा है, जो खाद्य सुरक्षा हेतु चुनौतियां उत्पन्न करता है।

152. (A) वे अपनी पारंपरिक आजीविका खो देते हैं और पलायन हेतु मजबूर होते हैं।
किसानों द्वारा अपनी कृषि भूमि को खोने का सबसे तत्काल और प्रत्यक्ष प्रभाव उनकी पारंपरिक आजीविका के साधन के समाप्त होने के रूप में सामने आता है। कृषि पर निर्भरता खत्म होने के बाद, इन परिवारों के पास आय का कोई स्थिर स्रोत नहीं बचता है। इसके परिणामस्वरूप, उन्हें बेहतर अवसरों और जीवनयापन के लिए अनिश्चित शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन करना पड़ता है।

153. (C) मलिन बस्तियों का विस्तार और नागरिक सुविधाओं पर अतिरिक्त दबाव
कृषि भूमि के गैर-कृषि उपयोग में परिवर्तन होने से शहरों की ओर प्रवासन में भारी वृद्धि होती है, जो शहरी अवसंरचना पर अत्यधिक बोझ डालता है। अनियोजित प्रवासन के कारण शहरों में मलिन बस्तियों का अनियंत्रित विस्तार होने लगता है। इससे बिजली, पानी और स्वच्छता जैसी बुनियादी नागरिक

174. (A) यह मृदा की उर्वरता बढ़ाती है और जलवायु के प्रति सहनशीलता बढ़ाती है।
कृषि-वानिकी एक ऐसी एकीकृत पद्धति है जो फसलों के साथ पेड़ों को लगाने पर जोर देती है, जिससे मिट्टी की गुणवत्ता और नमी संरक्षण में सुधार होता है। यह तकनीक न केवल मृदा की प्राकृतिक उर्वरता को बढ़ाती है, बल्कि किसानों को पेड़ों से मिलने वाली अतिरिक्त आय के माध्यम से जलवायु संबंधी झटकों को झेलने की शक्ति भी प्रदान करती है। यह विविध खेती का एक टिकाऊ मॉडल है।

175. (C) मौसम-आधारित फसल बीमा जैसी व्यापक संस्थागत सहायता प्रणाली
शुष्क क्षेत्रों में कृषि की अनिश्चितताओं को देखते हुए केवल तकनीकी सुधार पर्याप्त नहीं हैं, बल्कि मजबूत संस्थागत सहायता की भी आवश्यकता है। मौसम-आधारित फसल बीमा योजनाएं प्राकृतिक आपदाओं या फसल विफलता की स्थिति में किसानों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती हैं। समय पर मिलने वाली सटीक कृषि-सलाह और बीमा सुरक्षा उनकी आजीविका को स्थिर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे वे भविष्य की चुनौतियों हेतु सक्षम बनते हैं।

164. (D) प्रबंधन के अभाव में संसाधनों का अविवेकपूर्ण और अनियंत्रित उपयोग
सांपत्तिक त्रासदी की अवधारणा उस स्थिति का वर्णन करती है जहाँ किसी साझा संसाधन का कोई स्पष्ट प्रबंधन तंत्र मौजूद नहीं होता है। ऐसी स्थिति में, प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए संसाधनों का अत्यधिक और अनियंत्रित दोहन करने लगता है। उचित सामुदायिक नियंत्रण के अभाव में, ये प्राकृतिक संसाधन धीरे-धीरे पूरी तरह समाप्त या खराब हो जाते हैं, जिससे पूरे समुदाय को दीर्घकालिक नुकसान होता है।

165. (A) समाज के सबसे कमजोर, वंचित और गरीब वर्गों पर
साझा संपत्ति संसाधनों के निरंतर हो रहे क्षरण का सबसे घातक प्रभाव ग्रामीण समाज के अत्यंत गरीब और वंचित वर्गों पर पड़ता है। चूँकि ये वर्ग अपनी आजीविका और दैनिक जरूरतों के लिए पूरी तरह से इन सामुदायिक संसाधनों पर निर्भर होते हैं, इसलिए इनकी कमी उनकी आर्थिक भेद्यता को और अधिक बढ़ा देती है। संसाधनों के अभाव में उनकी गरीबी और सामाजिक असुरक्षा में भी वृद्धि होती है।

166. (B) उत्पादन को निर्वाह-स्तर से बाजार-उन्मुख स्तर की ओर ले जाना
कृषि के वाणिज्यीकरण की प्रक्रिया का अर्थ खेती करने के उद्देश्यों में मूलभूत परिवर्तन लाना है। इसमें किसान अपनी उपज का उपभोग केवल परिवार की आवश्यकताओं के लिए नहीं करते, बल्कि उसे व्यापक बाजार में बेचकर लाभ कमाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यह बदलाव निर्वाह आधारित परंपरागत कृषि को एक लाभदायक व्यावसायिक गतिविधि के रूप में परिवर्तित करता है, जिससे उत्पादन और आय बढ़ती है।

167. (B) न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) जैसी प्रभावी सरकारी नीतियां
भारत में कृषि क्षेत्र को बाजारोन्मुखी बनाने के पीछे न्यूनतम समर्थन मूल्य जैसी सरकारी नीतियों की बड़ी भूमिका रही है। यह व्यवस्था किसानों को उनकी उपज के लिए एक निश्चित और सुरक्षित मूल्य की गारंटी प्रदान करती है, जिससे वे अधिक जोखिम वाली नकदी फसलें उगाने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। इसके साथ ही, बेहतर बाजार पहुंच और मूल्य-समर्थन तंत्र कृषि वाणिज्यीकरण की गति को और तेज करते हैं।

168. (A) उच्च लागत वाले आदान और औपचारिक ऋण की आवश्यकता
छोटे और सीमांत किसानों के लिए कृषि का वाणिज्यीकरण एक कठिन चुनौती पेश करता है क्योंकि नकदी फसलों की खेती में महंगे बीजों और उर्वरकों की आवश्यकता होती है। इन उच्च लागत वाले आदानों को खरीदने के लिए उनके पास अक्सर पर्याप्त पूंजी नहीं होती है। परिणामस्वरूप, उन्हें ऋण के लिए अनौपचारिक साहूकारों पर निर्भर होना पड़ता है, जो उन्हें भारी ब्याज दरों के कारण ऋण जाल में फंसा देता है।

169. (C) क्योंकि यह आय के साथ-साथ जोखिम और भेद्यता में भी वृद्धि करता है।
कृषि वाणिज्यीकरण को दोधारी तलवार इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह जहाँ एक ओर किसानों की आय बढ़ाने के अवसर प्रदान करता है, वहीं दूसरी ओर बाजार के उतार-चढ़ाव और फसल विफलता के जोखिम को भी बढ़ाता है। छोटे किसानों के लिए यह प्रक्रिया अत्यंत जोखिम भरी होती है क्योंकि बाजार कीमतों में कमी आने पर उनकी आर्थिक स्थिति बहुत नाजुक हो जाती है और उनकी भेद्यता बढ़ जाती है।

170. (D) वे अक्सर किसानों का आर्थिक शोषण करते हैं और कम कीमतें देते हैं।
वाणिज्यिक कृषि के दौरान छोटे किसानों के पास अक्सर संगठित बाजारों और भंडारण की सुविधाओं का अभाव होता है। इस विवशता का लाभ उठाते हुए बिचौलिये उनकी उपज को बहुत ही कम कीमतों पर खरीद लेते हैं। इस प्रक्रिया में बिचौलिये किसानों का आर्थिक शोषण करते हैं, जिससे किसानों को उनकी कड़ी मेहनत का उचित लाभ नहीं मिल पाता और वे विपणन व्यवस्था में सदैव पिछड़े रह जाते हैं।

171. (C) जहाँ वर्षा 75 सेंटीमीटर से कम और सिंचाई के साधन सीमित होते हैं।
शुष्क भूमि कृषि भारत के उन भौगोलिक क्षेत्रों की एक विशिष्ट पहचान है जहाँ औसत वार्षिक वर्षा का स्तर 75 सेंटीमीटर से भी कम रहता है। इन क्षेत्रों में सिंचाई के आधुनिक और स्थायी साधनों की भारी कमी पाई जाती है, जिसके कारण खेती पूरी तरह से उपलब्ध नमी पर निर्भर होती है। ऐसे स्थानों पर फसल चयन और कृषि पद्धतियाँ अत्यंत सीमित और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में की जाती हैं।

172. (B) वर्षा की अनिश्चितता और सूखे की तीव्रता में निरंतर वृद्धि करके
जलवायु परिवर्तन शुष्क भूमि कृषि के लिए एक गंभीर संकट के रूप में उभर रहा है क्योंकि यह वर्षा के पारंपरिक पैटर्न को बिगाड़ रहा है। इसके प्रभाव से सूखे की बारंबारता और उसकी विनाशकारी शक्ति में काफी इजाफा हुआ है। वर्षा की अनिश्चितता के कारण फसल उत्पादन का अनुमान लगाना कठिन हो गया है, जिससे इन क्षेत्रों के किसानों की आजीविका और खाद्य सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

173. (D) वाटरशेड विकास कार्यक्रम और सूखा-प्रतिरोधी किस्मों का उपयोग
शुष्क कृषि क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए वाटरशेड विकास जैसी रणनीतियां अपनाना अनिवार्य है। यह तकनीक वर्षा जल के संचयन और भूजल पुनर्भरण को बढ़ावा देती है। साथ ही, ऐसी फसलों की किस्मों का उपयोग करना जो कम पानी में जीवित रह सकें और सूखे को सहन कर सकें, उत्पादन को स्थिरता प्रदान करने में सहायक होता है। ये उपाय जल प्रबंधन को बेहतर बनाते हैं।

(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

10. निम्नलिखित में से किस राज्य में अपने भौम जल क्षमता का उपयोग सबसे कम है?
(A) छत्तीसगढ़
(B) पंजाब
(C) हरियाणा
(D) राजस्थान

11. लैगून और पश्च जल का उपयोग मुख्यतः किस कार्य के लिए किया जाता है?
(A) पीने के पानी की आपूर्ति
(B) औद्योगिक शीतलन
(C) जल-विद्युत उत्पादन
(D) मछली पालन और कुछ फसलों की सिंचाई

12. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन जल की माँग और उपयोग के संबंध में गलत है?
(A) भारत पारंपरिक रूप से एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था रहा है।
(B) भारत की वर्तमान जल की माँग औद्योगिक आवश्यकताओं के लिए अधिक है।
(C) पंचवर्षीय योजनाओं में सिंचाई के विकास को उच्च प्राथमिकता दी गई है।
(D) कृषि में धरातलीय और भौम जल दोनों का सर्वाधिक उपयोग होता है।

13. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसने अंतर-राज्यीय नदियों के इष्टतम विकास के लिए एक राष्ट्रीय जल ढांचा कानून की आवश्यकता पर जोर दिया।
2. इसने जल को एक आर्थिक वस्तु मानने का सुझाव दिया ताकि इसका संरक्षण हो सके।
3. इसने जलवायु परिवर्तन के मद्देनजर अनुकूलन रणनीतियों की समीक्षा पर जोर दिया।
4. इसने जल उपयोग के लिए बेंचमार्क विकसित करने की प्रणाली का सुझाव दिया।

राष्ट्रीय जल नीति (2012) के संबंध में उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 2, 3 और 4 सही हैं।
(C) केवल 1, 3 और 4 सही हैं।
(D) 1, 2, 3 और 4 सभी सही हैं।

14. कृषि क्षेत्र में धरातलीय जल का कितना प्रतिशत उपयोग किया जाता है?
(A) 92 प्रतिशत
(B) 60 प्रतिशत
(C) 32 प्रतिशत
(D) 89 प्रतिशत

15. कृषि में सिंचाई की आवश्यकता का मुख्य कारण क्या है?
(A) वर्षा की स्थानिक-सामयिक परिवर्तिता
(B) मिट्टी की खराब गुणवत्ता
(C) उच्च उपज वाली किस्मों की कमी
(D) कृषि के लिए सरकारी समर्थन की कमी

16. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (कार्यक्रम/अवधारणा)
P. नीरु-मीरु
Q. अरवारी पानी संसद
R. हरियाली
S. कुंड या टाँका

List II: (राज्य/एजेंसी)
1. राजस्थान
2. केंद्र सरकार
3. आंध्र प्रदेश
4. तमिलनाडु

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(A) P-3, Q-1, R-2, S-1
(B) P-3, Q-2, R-1, S-4
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

17. 'प्रति बूंद अधिक फसल' किस कार्यक्रम का एक प्रमुख घटक है?
(A) जल क्रांति अभियान
(B) प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY)
(C) राष्ट्रीय जल नीति
(D) हरियाली परियोजना

18. पंजाब और हरियाणा में निवल सिंचित क्षेत्र का अधिकांश भाग किसके द्वारा सिंचित है?
(A) कुओं और नलकूपों द्वारा
(B) नहरों द्वारा
(C) तालाबों द्वारा
(D) ड्रिप सिंचाई द्वारा

19. राजस्थान और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में अधिक जल निकालने का क्या परिणाम हुआ है?
(A) भूमिगत जल में लवणता की कमी
(B) जल स्तर में वृद्धि
(C) भूमिगत जल में फ्लुओराइड का संकेंद्रण बढ़ना
(D) मिट्टी की उर्वरता में सुधार

20. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. जल गुणवत्ता से तात्पर्य जल की शुद्धता से है।
2. सूक्ष्म जीव, रासायनिक पदार्थ और औद्योगिक अपशिष्ट जल को प्रदूषित करते हैं।
3. प्रदूषक जल में घुलकर या निलंबित होकर जल प्रदूषण बढ़ाते हैं।
4. जल प्रदूषण से केवल मानव स्वास्थ्य प्रभावित होता है,

अध्याय 12
जल संसाधन

1. पृथ्वी का लगभग कितना प्रतिशत धरातल पानी से आच्छादित है?
(A) 51 प्रतिशत
(B) 71 प्रतिशत
(C) 61 प्रतिशत
(D) 81 प्रतिशत

2. कुल जल का कितना प्रतिशत भाग अलवणीय जल है?
(A) लगभग 3 प्रतिशत
(B) लगभग 7 प्रतिशत
(C) लगभग 10 प्रतिशत
(D) लगभग 15 प्रतिशत

3. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (संसाधन)
P. विश्व का धरातलीय क्षेत्र
Q. विश्व के जल संसाधन
R. विश्व की जनसंख्या
S. वार्षिक वर्षण से प्राप्त जल
List II: (भारत का हिस्सा/मात्रा)
1. लगभग 4 प्रतिशत
2. लगभग 17 प्रतिशत से अधिक
3. लगभग 2.45 प्रतिशत
4. 4,000 घन कि.मी.
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

4. भारत में कुल उपयोगी जल संसाधन कितना है?
(A) 4,000 घन कि.मी.
(B) 1,869 घन कि.मी.
(C) 690 घन कि.मी.
(D) 1,122 घन कि.मी.

5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में, धरातलीय और भौम जल का सबसे अधिक उपयोग कृषि में होता है।
2. औद्योगिक सेक्टर में, सतह जल का उपयोग भौम जल की तुलना में अधिक होता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सबसे उपयुक्त है/हैं?
(A) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(B) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।
(C) दोनों कथन सही हैं।
(D) दोनों कथन गलत हैं।

6. धरातलीय जल के चार मुख्य स्रोतों में निम्नलिखित में से कौन शामिल नहीं है?
(A) नदियाँ
(B) कुएँ और नलकूप
(C) झीलें
(D) तालाब

7. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. गंगा
2. गोदावरी
3. ब्रह्मपुत्र
4. कृष्णा
5. बराक
उपरोक्त में से कौन-सी नदियाँ उन नदी बेसिनों में से हैं जिनके जलग्रहण क्षेत्र में वर्षा अपेक्षाकृत अधिक होती है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 3 और 5
(C) केवल 2, 4 और 5
(D) उपरोक्त सभी

8. देश में कुल पुनः पूर्तियोग्य भौम जल संसाधन लगभग कितना है?
(A) 432 घन कि.मी.
(B) 1,869 घन कि.मी.
(C) 1,122 घन कि.मी.
(D) 690 घन कि.मी.

9. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
अभ अभिकथन (A): पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हरित क्रांति की रणनीति अधिक सफल हुई।
कारण (R): इन क्षेत्रों में विकसित सिंचाई तंत्र के कारण फसलों को नियमित आर्द्रता आपूर्ति संभव हो सकी।
उपरोक्त कथनों के आलोक में नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

31. केंद्र सरकार द्वारा प्रवर्तित जल-संभर विकास परियोजना 'हरियाली' का उद्देश्य क्या है?
(A) कृषि, मत्स्य पालन और वन रोपण हेतु जल संरक्षण
(B) ग्रामीण आबादी के लिए पेयजल का संरक्षण एवं भंडारण
(C) शहरी क्षेत्रों में जलापूर्ति की नवीन प्रणालियाँ
(D) औद्योगिक इकाइयों हेतु जल का पुनर्चक्रण एवं शोधन

32. 'नीरु-मीरु' (जल और आप) कार्यक्रम किस राज्य से संबंधित है?
(A) राजस्थान
(B) आंध्र प्रदेश
(C) तमिलनाडु
(D) कर्नाटक

33. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही जोड़ी की पहचान कीजिए:
(A) अरवारी पानी संसद - तमिलनाडु
(B) हरियाली - केंद्र सरकार
(C) नीरु-मीरु - राजस्थान
(D) अटल भूजल योजना - केवल गुजरात

34. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसका मुख्य उद्देश्य देश में प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता को सुनिश्चित करना है।
2. 'जल ग्राम' बनाने के लिए प्रत्येक जिले से एक जल-अभाव वाले ग्राम को चुना गया है।
3. इसके अंतर्गत केवल जल संरक्षण पर ध्यान दिया गया, प्रदूषण पर नहीं।
4. जागरुकता फैलाने के लिए जनसंचार माध्यमों का उपयोग प्रस्तावित था।
5. यह अभियान केवल दक्षिणी राज्यों के लिए था।

जल क्रांति अभियान (2015-16) के संबंध में उपरोक्त कथनों में से कौन-से गलत हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 5
(C) केवल 2, 4 और 5
(D) केवल 1, 3 and 4

35. किस राज्य में घरों में जल संग्रहण संरचना को बनाना आवश्यक कर दिया गया है?
(A) केरल
(B) महाराष्ट्र
(C) तमिलनाडु
(D) राजस्थान

36. रालेगॅन सिद्धि गाँव, जो जल-संभर विकास का एक सफल उदाहरण है, किस राज्य में स्थित है?
(A) गुजरात
(B) राजस्थान
(C) कर्नाटक
(D) महाराष्ट्र

37. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
अभ अभिकथन (A): रालेगॅन सिद्धि में, गन्ने जैसी गहन जल वाली फसलों की खेती पर प्रतिबंध लगा दिया गया।
कारण (R): गाँव में जल संरक्षण और जल के विवेकपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देना था।
उपरोक्त कथनों के आलोक में नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

38. रालेगॅन सिद्धि में जल-संभर विकास का कार्य आरंभ करने वाला मुख्य व्यक्ति कौन था?
(A) एक किसान
(B) सेना का एक सेवानिवृत्त कर्मचारी
(C) एक शिक्षक
(D) एक राजनेता

39. रालेगॅन सिद्धि में गठित नौजवानों के समूह का क्या नाम था?
(A) युवक मंडल
(B) ग्राम विकास समिति
(C) न्याय पंचायत
(D) तरुण मंडल

40. वर्षा जल संग्रहण के लाभों में निम्नलिखित में से कौन सा शामिल नहीं है?
(A) यह मृदा अपरदन और बाढ़ को बढ़ाता है।
(B) यह पानी की उपलब्धता को बढ़ाता है।
(C) यह भूमिगत जल स्तर को नीचा होने से रोकता है।
(D) यह भूमिगत जल की गुणवत्ता बढ़ाता है।

41. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. खेत में पानी की पहुंच बढ़ाना।
2. जल उपयोग दक्षता में सुधार करना।
3. स्थायी जल संरक्षण प्रणालियों को अपनाना।
4. केवल शहरी क्षेत्रों का एकीकृत विकास सुनिश्चित करना।

प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY) के व्यापक उद्देश्यों के संबंध में उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 1, 2 and 3 सही हैं।
(C) केवल 3 और 4 सही हैं।
(D) 1, 2, 3 और 4 सभी सही हैं।

4. नदी में जल प्रवाह केवल नदी के आकार पर निर्भर करता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1, 2 and 3
(B) केवल 2, 3 and 4
(C) केवल 1, 3 and 4
(D) 1, 2, 3 and 4 सभी

129. जल के संयुक्त उपयोग को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता क्यों है?
(A) जल के मूल्य को बढ़ाने के लिए
(B) लंबे समय तक जल की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए
(C) जल की बर्बादी को कम करने के लिए
(D) प्रदूषण से बचाव के लिए

130. जल की कमी वाले क्षेत्रों में जल स्थानांतरित करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपाय क्या है?
(A) नदियों को जोड़ना
(B) वर्षा जल को समुद्र में बहाना
(C) वाष्पीकरण को बढ़ाना
(D) भौम जल का अंधाधुंध दोहन

131. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (विकास मॉडल)
P. रालेगॅन सिद्धि
Q. नीरु-मीरु
R. अरवारी पानी संसद
S. हरियाली
List II: (प्रमुख अवधारणा/स्थान)
1. अलवर, राजस्थान
2. केंद्र सरकार की परियोजना
3. अहमदनगर, महाराष्ट्र
4. आंध्र प्रदेश
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

132. जल के गुणों में ह्रास का मुख्य कारण क्या है?
(A) जल का वाष्पीकरण
(B) जल का संघनन
(C) जल का हिमीकरण
(D) जल में अनावश्यक बाहरी पदार्थों का मिलना

133. जल समस्या के समाधान के लिए वैयक्तिक, घरेलू और सामुदायिक दृष्टिकोण से सबसे बड़ी समस्या क्या है?
(A) तकनीक की कमी
(B) सरकारी नीतियों का अभाव
(C) जल का मूल्य
(D) अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की कमी

134. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) जल एक चक्रीय संसाधन है।
(B) अलवणीय जल की उपलब्धता स्थान और समय के अनुसार समान है।
(C) अलवणीय जल कुल जल का केवल 3% है।
(D) जल के आवंटन पर विवाद होते हैं।

135. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभ अभिकथन (A): जल-संभर विकास सतत पोषणीय विकास में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।
कारण (R): यह प्राकृतिक संसाधनों और समाज के बीच संतुलन स्थापित कर पर्यावरण और अर्थव्यवस्था का कायाकल्प करता है।
उपरोक्त कथनों के आलोक में नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

136. राष्ट्रीय जल नीति, 2012 का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) मौजूदा स्थिति का आकलन कर कार्य योजना के लिए रुपरेखा प्रस्तावित करना
(B) केवल नदियों को साफ करना
(C) सभी के लिए मुफ्त पानी सुनिश्चित करना
(D) बांधों के निर्माण पर रोक लगाना

137. जल क्रांति अभियान के तहत पहचाने गए मॉडल कमांड क्षेत्र का आकार क्या था?
(A) 100 हेक्टेयर
(B) 500 हेक्टेयर
(C) 1000 हेक्टेयर
(D) 5000 हेक्टेयर

138. निम्नलिखित पर विचार कीजिए:
1. जल-संभर विकास
2. वर्षा जल संग्रहण
3. जल का पुनः चक्रण और पुनः उपयोग
4. जल का संयुक्त उपयोग
5. विलवणीकरण
उपरोक्त में से कौन से उपाय जल संरक्षण और प्रबंधन के लिए प्रभावी हैं?
(A) केवल 1, 2, 3 and 4
(B) केवल 2, 3, 4 and 5
(C) केवल 1, 3, 4 and 5
(D) उपरोक्त सभी

139. 'हर खेत को पानी' किस योजना का एक प्रमुख लक्ष्य है?

(A) 1974
(B) 1977
(C) 1986
(D) 1997

54. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में वर्षा में अत्यधिक स्थानिक विभिन्नता पाई जाती है।
2. भारत में वर्षा मुख्य रूप से मानसूनी मौसम पर संकेंद्रित है।
3. गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों के जलग्रहण क्षेत्र बहुत बड़े हैं।
4. दक्षिणी भारतीय नदियों में वार्षिक जल प्रवाह का अधिकतर भाग अप्रयुक्त रहता है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4 सभी

55. जल-संभर व्यवस्था की सफलता मुख्य रूप से किस पर निर्भर करती है?
(A) सरकारी वित्त पोषण पर
(B) विदेशी तकनीक पर
(C) कठोर कानून प्रवर्तन पर
(D) संप्रदाय के सहयोग पर

56. निम्नलिखित में से कौन सी परियोजना/कार्यक्रम गैर-सरकारी संगठनों द्वारा भी चलाए जा रहे हैं?
(A) जल-संभर विकास और प्रबंधन कार्यक्रम
(B) भाखड़ा नांगल परियोजना
(C) इंदिरा गांधी नहर परियोजना
(D) दामोदर घाटी परियोजना

57. निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. रालेगॅन सिद्धि में जल-संभर विकास कार्य का आरंभ।
2. जल उपकर अधिनियम का लागू होना।
3. प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना का शुभारंभ।
4. 'जल क्रांति अभियान' का आरंभ।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 2, 3, 1, 4

58. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह सात राज्यों में कार्यान्वित की जा रही है।
2. इसका उद्देश्य जल संरक्षण और विवेकपूर्ण जल प्रबंधन में जनता के व्यवहार में परिवर्तन लाना है।
3. यह केवल अति-दोहित ब्लॉकों पर केंद्रित है।
4. यह जल शक्ति मंत्रालय की एक पहल है।

अटल भूजल योजना (अटल जल) के संबंध में उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2 और 4
(C) केवल 2, 3 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4 सभी

59. देश के कुल क्षेत्र के लगभग एक-तिहाई भाग पर पाई जाने वाली गंगा, ब्रह्मपुत्र और बराक नदियों में कुल धरातलीय जल संसाधनों का कितना प्रतिशत जल पाया जाता है?
(A) 32 प्रतिशत
(B) 50 प्रतिशत
(C) 75 प्रतिशत
(D) 60 प्रतिशत

60. 'जल उपकर अधिनियम 1977' का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) जल कर बढ़ाना
(B) प्रदूषण कम करना
(C) जल का निजीकरण करना
(D) नए बांधों का निर्माण करना

61. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

List I: (जल समस्या)
P. फ्लुओराइड संकेंद्रण
Q. संखिया (आर्सेनिक) संकेंद्रण
R. जैव और जीवाणविक संदूषण
S. लवणता का प्रवेश

List II: (संबंधित क्षेत्र/स्रोत)
1. तटीय क्षेत्र
2. दिल्ली-इटावा के बीच यमुना
3. पश्चिम बंगाल और बिहार
4. राजस्थान और महाराष्ट्र

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

62. घरेलू सेक्टर में, किस जल स्रोत का उपयोग अधिक होता है?
(A) भौम जल का उपयोग धरातलीय जल से अधिक है।
(B) दोनों का उपयोग बराबर है।
(C) केवल वर्षा जल का उपयोग होता है।
(D) धरातलीय जल का उपयोग भौम जल से अधिक है।

63. निम्नलिखित में से कौन-सा एक बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना का उदाहरण नहीं है?
(A) नीरु-मीरु
(B) भाखड़ा नांगल
(C) हीराकुड
(D) नागार्जुन सागर

64. निम्नलिखित में से कौन सी फसल को अत्यधिक जल की आवश्यकता होती है?
(A) गेहूँ
(B) गन्ना
(C) बाजरा
(D) चना

65. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. उपलब्ध जल संसाधनों का तेजी से निम्नीकरण हो रहा है।
2. देश की मुख्य नदियों के पहाड़ी क्षेत्रों में अच्छी जल गुणवत्ता पाई जाती है।
3. नदियों में प्रदूषकों का संकेंद्रण गर्मी के मौसम में कम हो जाता है।
4. भौम जल प्रदूषण एक नगण्य समस्या है।
5. जल अधिनियम 1974 प्रभावपूर्ण ढंग से कार्यान्वित हुआ है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 5
(D) केवल 4 और 5

66. पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में निवल बोए गए क्षेत्र का कितना प्रतिशत भाग सिंचाई के अंतर्गत है?
(A) 85 प्रतिशत से अधिक
(B) 50 प्रतिशत से कम
(C) लगभग 65 प्रतिशत
(D) लगभग 75 प्रतिशत

67. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभ अभिकथन (A): भविष्य में औद्योगिक और घरेलू सेक्टरों में जल का उपयोग बढ़ने की संभावना है।
कारण (R): देश में विकास के साथ-साथ जनसंख्या वृद्धि और शहरीकरण बढ़ रहा है।
उपरोक्त कथनों के आलोक में नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

68. जल संरक्षण और प्रबंधन के लिए निम्नलिखित में से कौन-सी विधि नहीं है?
(A) जल-संभर विकास
(B) वर्षा जल संग्रहण
(C) जल का पुनः चक्रण और पुनः उपयोग
(D) जल का विलवणीकरण, उसकी कम लागत के कारण

69. रालेगॅन सिद्धि में, सामाजिक सुधारों के अंतर्गत क्या कदम नहीं उठाए गए थे?
(A) दहेज प्रथा पर प्रतिबंध
(B) जातिवाद पर प्रतिबंध
(C) कृषि के मशीनीकरण पर प्रतिबंध
(D) खुली चराई पर प्रतिबंध

70. उपलब्ध धरातलीय जल का कितना प्रतिशत जल का ही उपयोग किया जा सकता है?
(A) 100%
(B) 32%
(C) 60%
(D) 10%

71. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. सिंचाई की व्यवस्था बहुफसलीकरण को संभव बनाती है।
2. सिंचित भूमि की कृषि उत्पादकता असिंचित भूमि की अपेक्षा कम होती है।
3. अधिक उपज देने वाली किस्मों को नियमित आर्द्रता आपूर्ति की आवश्यकता नहीं होती है।
4. शुष्क ऋतुओं में बिना सिंचाई के खेती करना आसान होता है।

उपरोक्त में से कौन-सा कथन सही है?
(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 3 और 4
(D) केवल 2 और 3

72. विकास को सुनिश्चित करने के लिए जल के किन पहलुओं पर ध्यान देना आवश्यक है?
(A) मूल्यांकन, कार्यक्षम उपयोग और संरक्षण
(B) केवल आवंटन और नियंत्रण
(C) केवल प्रदूषण की निगरानी
(D) केवल अति उपयोग को बढ़ावा देना

73. जल एक _______ संसाधन है।
(A) अनवीकरणीय
(B) अचक्रीय
(C) चक्रीय
(D) समाप्त न होने वाला

74. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (अधिनियम/नीति)
P. जल अधिनियम
Q. पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम
R. जल उपकर अधिनियम
S. राष्ट्रीय जल नीति

List II: (वर्ष)
1. 1986
2. 1974

3. 2012
4. 1977

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

75. गुजरात, उत्तर प्रदेश, बिहार, त्रिपुरा और महाराष्ट्र अपने भौम जल संसाधनों का किस दर से उपयोग कर रहे हैं?
(A) बहुत अधिक दर
(B) बहुत कम दर
(C) शून्य दर
(D) मध्यम दर

76. निम्नलिखित में से कौन-सा देश के उत्तर-पश्चिमी और दक्षिणी भागों में भौम जल के अत्यधिक उपयोग का परिणाम नहीं है?
(A) भौम जल स्तर का नीचा होना
(B) भौम जल संसाधनों में वृद्धि
(C) सामाजिक उथल-पुथल की संभावना
(D) विकास के लिए हानिकारक स्थिति

77. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के वर्ष के अनुसार कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. रालेगॅन सिद्धि में एक सेवानिवृत्त सैनिक द्वारा विकास कार्य का आरम्भ।
2. जल क्रांति अभियान का आरम्भ।
3. पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम का लागू होना।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(A) 1, 3, 2
(B) 3, 1, 2
(C) 1, 2, 3
(D) 2, 1, 3

78. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत के जल संसाधनों के संबंध में सही है?
(A) भारत में विश्व के कुल जल संसाधनों का 10 प्रतिशत हिस्सा है।
(B) देश में कुल उपयोगी जल संसाधन 1,869 घन कि.मी. है।
(C) धरातलीय जल का मुख्य स्रोत केवल नदियाँ हैं।
(D) धरातलीय जल और पुनः पूर्तियोग्य भौम जल से 1,869 घन कि.मी. जल उपलब्ध है।

79. 'हरियाली' परियोजना किसके द्वारा निष्पादित की जा रही है?
(A) ग्राम पंचायतों द्वारा लोगों के सहयोग से
(B) केंद्र सरकार के विभागों द्वारा
(C) राज्य सरकारों द्वारा
(D) निजी कंपनियों द्वारा

80. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और गलत कथन की पहचान कीजिए:
(A) जल गुणवत्ता का ह्रास उपयोगी जल संसाधनों की उपलब्धता को सीमित करता है।
(B) प्रदूषक हमेशा जल में घुल जाते हैं, वे कभी निलंबित नहीं होते।
(C) जल बाह्य पदार्थों जैसे सूक्ष्म जीवों, रासायनिक पदार्थों आदि से प्रदूषित होता है।
(D) प्रदूषक नीचे तक पहुँच कर भौम जल को भी प्रदूषित कर सकते हैं।

81. जल क्रांति अभियान के अंतर्गत, 'जल ग्राम' बनाने के लिए ग्रामों का चयन किस आधार पर किया गया?
(A) जनसंख्या के आकार पर
(B) जल की कमी के आधार पर
(C) कृषि उत्पादन पर
(D) साक्षरता दर पर

82. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
अभ अभिकथन (A): तमिलनाडु में किसी भी इमारत का निर्माण बिना जल संग्रहण संरचना बनाए नहीं किया जा सकता है।
कारण (R): राज्य सरकार वर्षा जल संग्रहण को बढ़ावा देकर जल संरक्षण सुनिश्चित करना चाहती है।
उपरोक्त कथनों के आलोक में नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

83. 'अरवारी पानी संसद' का संबंध किस राज्य से है?
(A) गुजरात
(B) मध्य प्रदेश
(C) राजस्थान
(D) उत्तर प्रदेश

84. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, वर्षा जल संग्रहण का लाभ नहीं है?
(A) यह फ्लुओराइड और नाइट्रेट्स जैसे संदूषकों को कम करता है।
(B) यह तटीय क्षेत्रों में लवणीय जल के प्रवेश को रोकता है।
(C) यह पानी की उपलब्धता को बढ़ाता है।
(D) यह भौम जल निकालने में ऊर्जा की खपत बढ़ाता है।

85. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ऐच्छिक श्रम पर जोर दिया गया।
2. खुली चराई और वृक्षों की कटाई को प्रोत्साहित किया गया।
3. दहेज प्रथा और जातिवाद जैसी सामाजिक कुरीतियों पर प्रतिबंध लगाया गया।

4. गहन जल वाली फसलों जैसे गन्ने की खेती को प्रोत्साहित किया गया।
5. 'तरुण मंडल' नामक नौजवानों का समूह बनाया गया।

रालेगॅन सिद्धि में जल-संभर विकास के पहलुओं के संबंध में उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) केवल 1, 4 और 5

86. जल संभर प्रबंधन का उद्देश्य _______ और _______ के बीच संतुलन लाना है।

(A) कृषि, उद्योग
(B) प्राकृतिक संसाधनों, समाज
(C) केंद्र सरकार, राज्य सरकार
(D) शहरी क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्र

87. भारत में वर्षा का मुख्य स्रोत क्या है?

(A) पश्चिमी विक्षोभ
(B) चक्रवातीय वर्षा
(C) संवहनीय वर्षा
(D) मानसूनी वर्षा

88. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

List I: (जल संसाधन डेटा)

P. धरातलीय जल जिसका उपयोग किया जा सकता है
Q. पुनः पूर्तियोग्य भौम जल संसाधन
R. भारत में कुल उपयोगी जल संसाधन
S. वर्षण से प्राप्त कुल जल

List II: (मात्रा घन कि.मी. में)

1. 432
2. 1122
3. 690
4. 4000

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

89. जल का पुनः चक्रण और पुनः उपयोग किन क्षेत्रों के लिए विशेष रूप से उपयोगी हो सकता है?

(A) केवल ग्रामीण क्षेत्रों के लिए
(B) केवल कृषि के लिए
(C) नगरीय क्षेत्रों और उद्योगों के लिए
(D) केवल पीने के पानी की आपूर्ति के लिए

90. जल प्रदूषण के संबंध में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा एक सही नहीं है?

(A) कृषि उर्वरक और कीटनाशक नदी प्रदूषण में योगदान नहीं करते हैं।
(B) देश की मुख्य नदियों के ऊपरी भागों में अच्छी जल गुणवत्ता पाई जाती है।
(C) मैदानी क्षेत्रों में नदी जल का उपयोग गहन रूप से होता है।
(D) औद्योगिक बहिःस्राव नदियों में मिल जाते हैं।

91. 'अटल भूजल योजना' में कितने राज्य शामिल हैं?

(A) पाँच
(B) नौ
(C) सभी राज्य
(D) सात

92. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. जल एक अजैव संसाधन है।
2. जल एक अनवीकरणीय संसाधन है।
3. जल एक जैव संसाधन है।
4. जल एक अचक्रीय संसाधन है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है?

(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 3
(D) इनमें से कोई नहीं

93. जल अभाव का सबसे मुख्य कारण क्या है?

(A) केवल जनसंख्या वृद्धि
(B) केवल औद्योगिक विकास
(C) बढ़ती हुई माँग, अति उपयोग तथा प्रदूषण
(D) केवल वर्षा की कमी

94. जल क्रांति अभियान का निम्नलिखित में से कौन सा एक प्रस्तावित गतिविधि नहीं थी?

(A) 'जल ग्राम' बनाना
(B) आर्सेनिक मुक्त कुओं का निर्माण
(C) जनसंचार माध्यमों से जागरूकता फैलाना
(D) सभी नागरिकों को मुफ्त पानी उपलब्ध कराना

95. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:

अभ अभिकथन (A): जल दुर्लभ संसाधन है।

कारण (R): पृथ्वी का 71 प्रतिशत धरातल पानी से आच्छादित है, परंतु अलवणीय जल कुल जल का केवल लगभग 3 प्रतिशत ही है।

उपरोक्त कथनों के आलोक में नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

96. देश के किन भागों में भौम जल उपयोग अपेक्षाकृत अधिक है?
(A) उत्तर-पूर्वी प्रदेश
(B) उत्तर-पश्चिमी प्रदेश और दक्षिणी भारत के कुछ भाग
(C) पूर्वी तटीय मैदान
(D) हिमालयी क्षेत्र

97. रालेगॅन सिद्धि में 'न्याय पंचायत' प्रणाली स्थापित करने का क्या परिणाम हुआ?
(A) गाँव में अपराध बढ़ गए।
(B) कोई भी मुकदमा पुलिस को नहीं दिया जाता।
(C) गाँव वालों को न्याय के लिए शहर जाना पड़ता था।
(D) वकीलों की आमदनी बढ़ गई।

98. निम्नलिखित योजनाओं/कार्यक्रमों को उनके आरम्भ के कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. राष्ट्रीय जल नीति
2. जल क्रांति अभियान
3. प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना
4. हरियाली परियोजना
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(A) 4, 1, 3, 2
(B) 1, 4, 2, 3
(C) 4, 1, 2, 3
(D) 1, 3, 2, 4

99. राष्ट्रीय जल नीति (2012) की एक मुख्य विशेषता क्या है?
(A) जल को एक निजी वस्तु बनाना।
(B) जल के उपयोग पर कोई सीमा न लगाना।
(C) पानी को आर्थिक रूप से अच्छा माना जाना चाहिए ताकि इसका संरक्षण हो।
(D) केवल कृषि के लिए जल आरक्षित करना।

100. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह केवल धरातलीय जल का प्रबंधन है।
2. इसमें बहते जल को रोकना और भौम जल का संचयन शामिल है।
3. इसका उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों और समाज के बीच संतुलन लाना है।
4. इसकी सफलता केवल सरकारी धन पर निर्भर करती है।
जल-संभर प्रबंधन के संदर्भ में उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 and 3
(C) केवल 1, 2 and 3
(D) उपरोक्त सभी

101. दिल्ली और इटावा के बीच कौन-सी नदी देश में सबसे अधिक प्रदूषित है?
(A) गंगा
(B) गोमती
(C) यमुना
(D) साबरमती

102. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (जल संसाधन)
P. लैगून और पश्च जल
Q. नहरें
R. कुएँ और नलकूप
S. कुंड/टाँका
List II: (विशेषता/स्थान)
1. पंजाब, हरियाणा में सिंचाई का मुख्य स्रोत
2. राजस्थान में परंपरागत वर्षा जल संग्रहण
3. केरल, उड़ीसा में धरातलीय जल संसाधन
4. बहुउद्देशीय परियोजनाओं का हिस्सा
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

103. 'सिंचाई की व्यवस्था बहुफ़सलीकरण को संभव बनाती है।' इस कथन का क्या अर्थ है?
(A) सिंचाई से एक वर्ष में केवल एक ही फसल उगाई जा सकती है।
(B) सिंचाई केवल कुछ विशेष फसलों के लिए ही उपयोगी है।
(C) सिंचाई से फसलों की गुणवत्ता में कमी आती है।
(D) सिंचाई से एक ही खेत में एक वर्ष में एक से अधिक फसलें उगाना संभव हो जाता है।

104. जल की प्रति व्यक्ति उपलब्धता दिन प्रतिदिन कम क्यों होती जा रही है?
(A) जनसंख्या बढ़ने से
(B) जल के वाष्पीकरण से
(C) जल के पुनर्चक्रण से
(D) बांधों के निर्माण से

105. निम्नलिखित में से कौन-सा जल जनित रोगों का कारण हो सकता है?
(A) साफ, शुद्ध जल का उपभोग
(B) उबले हुए पानी का उपभोग
(C) संदूषित/गंदे पानी का उपभोग
(D) वर्षा जल का सीधा उपभोग

106. निम्नलिखित में से कौन-सा कारक जल संसाधनों के ह्रास और स्थानिक वितरण के लिए उत्तरदायी नहीं है?
(A) जल का चक्रीय स्वरूप
(B) जनसंख्या का भौगोलिक स्थानांतरण
(C) प्रौद्योगिक उन्नति
(D) पर्यावरणीय निम्नीकरण

107. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत में विश्व की लगभग 17 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या निवास करती है।
2. भारत के पास विश्व के 4 प्रतिशत जल संसाधन हैं।
3. भारत का क्षेत्रफल विश्व के क्षेत्रफल का 4.45 प्रतिशत है।
4. भारत में जल की कोई कमी नहीं है।
5. धरातलीय जल के मुख्य स्रोत नदियाँ और झीलें हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से गलत हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 and 4
(C) केवल 2, 3 and 5
(D) केवल 1, 4 and 5

108. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभ अभिकथन (A): जल-संभर विकास कार्यक्रम पर्यावरण और अर्थव्यवस्था का कायाकल्प करने में सफल हो सकते हैं।
कारण (R): जल-संभर प्रबंधन प्राकृतिक संसाधनों और समाज के बीच संतुलन लाने का प्रयास करता है, जो सतत पोषणीय विकास के लिए आवश्यक है।
उपरोक्त कथनों के आलोक में नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

109. शोधित अपशिष्ट जल का उद्योगों में क्या उपयोग हो सकता है?
(A) पीने के पानी के रूप में
(B) खाद्य प्रसंस्करण के लिए
(C) शीतलन एवं अग्निशमन के लिए
(D) दवा निर्माण के लिए

110. जल संसाधनों का ह्रास किन समस्याओं को जन्म देता है?
(A) सामाजिक सद्भाव और सहयोग
(B) आर्थिक समृद्धि
(C) राजनीतिक स्थिरता
(D) सामाजिक द्वंद्वों और विवादों

111. भारत में नदी में जल प्रवाह किस पर निर्भर करता है?
(A) जल ग्रहण क्षेत्र के आकार और उस क्षेत्र में हुई वर्षा पर
(B) केवल नदी की लंबाई पर
(C) केवल नदी के उद्गम स्थान पर
(D) नदी के किनारे बसे शहरों की संख्या पर

112. भारत के किन राज्यों में लैगून और झीलें बड़े धरातलीय जल संसाधन प्रदान करती हैं?
(A) पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश
(B) केरल, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल
(C) राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र
(D) मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड

113. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इनमें मीठा जल होता है।
2. इनका उपयोग मछली पालन में होता है।
3. इनका उपयोग नारियल की सिंचाई में होता है।
4. ये केवल पश्चिमी तट पर पाए जाते हैं।

लैगूनों और पश्च जल के बारे में उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 and 3
(C) केवल 1, 2 and 3
(D) उपरोक्त सभी

114. किस प्रकार की अर्थव्यवस्था में कृषि पर जनसंख्या की निर्भरता अधिक होती है?
(A) कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था
(B) औद्योगिक अर्थव्यवस्था
(C) सेवा प्रधान अर्थव्यवस्था
(D) ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था

115. जल संभर प्रबंधन के विस्तृत अर्थ में क्या-क्या शामिल है?
(A) केवल जल संसाधनों का प्रबंधन
(B) केवल भूमि और जल का प्रबंधन
(C) सभी प्राकृतिक और मानवीय संसाधनों का संरक्षण और विवेकपूर्ण उपयोग
(D) केवल वित्तीय संसाधनों का प्रबंधन

116. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (राज्य)
P. पंजाब
Q. छत्तीसगढ़
R. गुजरात
S. तमिलनाडु
List II: (भौम जल उपयोग की दर)
1. बहुत कम
2. मध्यम
3. बहुत अधिक
4. बहुत अधिक
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

117. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत में सिंचाई की स्थिति को सही ढंग से नहीं दर्शाता है?
(A) देश के अधिकांश भाग वर्षाविहीन और सूखाग्रस्त हैं।
(B) उत्तर-पश्चिमी भारत और दक्कन का पठार सूखाग्रस्त

क्षेत्रों में आते हैं।
(C) शीत और ग्रीष्म ऋतुओं में बिना सिंचाई के खेती करना आसान होता है।
(D) कुछ फसलों जैसे चावल, गन्ना, जूट के लिए अत्यधिक जल की आवश्यकता होती है।

118. निम्नलिखित को उनके आरम्भ के कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. जल उपकर अधिनियम
2. जल अधिनियम
3. पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 3, 1

119. सी.पी.सी.बी. का पूरा नाम क्या है?
(A) केंद्रीय सार्वजनिक कार्य विभाग
(B) कंपनी प्रदूषण नियंत्रण ब्यूरो
(C) सामुदायिक भागीदारी और सहयोग बोर्ड
(D) केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड

120. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, जल के संयुक्त उपयोग का उदाहरण है जिसे जल संरक्षण के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए?
(A) जल-संभर विकास और वर्षा जल संग्रहण
(B) केवल नदियों के जल का उपयोग
(C) केवल भौम जल का उपयोग
(D) जल का आयात करना

121. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ऐच्छिक श्रम से लागत का समाजीकरण होता है।
2. स्थानीय नेतृत्व परिवर्तन ला सकता है।
3. सामाजिक सुधार विकास का एक अभिन्न अंग हैं।
4. जल संरक्षण से कृषि और रोजगार में सुधार होता है।
5. आत्मनिर्भरता से गर्व और सामुदायिक भावना का विकास होता है।

रालेगॅन सिद्धि के अनुभव से मिलने वाली सीख के संदर्भ में उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 3, 4 and 5
(C) केवल 1, 2, 4 and 5
(D) उपरोक्त सभी

122. वर्षा जल संग्रहण की विधियों में क्या शामिल है?
(A) जलभृतों का पुनर्भरण
(B) जल को बहने देना
(C) जल को वाष्पित करना
(D) जल में लवण मिलाना

123. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभ अभिकथन (A): जल एक नवीकरणीय संसाधन है।
कारण (R): जल चक्र के माध्यम से जल का निरंतर नवीकरण होता रहता है, जिससे यह एक चक्रीय संसाधन बन जाता है।
उपरोक्त कथनों के आलोक में नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

124. वर्षा जल संग्रहण क्यों महत्वपूर्ण है, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में?
(A) क्योंकि शहरी क्षेत्रों में वर्षा नहीं होती है।
(B) क्योंकि शहरी क्षेत्रों में जल की माँग पहले ही आपूर्ति से आगे बढ़ चुकी है।
(C) क्योंकि शहरी लोग जल का संरक्षण नहीं करना चाहते।
(D) क्योंकि शहरी क्षेत्रों में भौम जल स्तर बहुत ऊंचा है।

125. जल प्रदूषण के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?
(A) साबरमती - अहमदाबाद
(B) गोमती - लखनऊ
(C) अडयार - दिल्ली
(D) मूसी - हैदराबाद

126. भारत की जनसंख्या का लगभग दो-तिहाई भाग किस पर निर्भर है?
(A) उद्योग
(B) सेवाएँ
(C) पर्यटन
(D) कृषि

127. निम्नलिखित में से कौन-सा जल-संभर विकास का एक प्रत्यक्ष लाभ है?
(A) पीने और सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता
(B) शहरीकरण में वृद्धि
(C) औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि
(D) विदेशी निवेश में वृद्धि

128. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में कुल 10,360 नदियाँ हैं जिनकी लंबाई 1.6 कि.मी. से अधिक है।
2. गोदावरी, कृष्णा और कावेरी जैसी दक्षिणी भारतीय नदियों में वार्षिक जल प्रवाह का अधिकतर भाग काम में लाया जाता है।
3. ब्रह्मपुत्र और गंगा बेसिन में जल प्रवाह का उपयोग अभी भी पूरी क्षमता से नहीं हो पाया है।

42. राजस्थान में परंपरागत वर्षा जल संग्रहण ढाँचे को किस नाम से जाना जाता है?
(A) कुंड अथवा टाँका
(B) जोहड़
(C) बावड़ी
(D) झील

43. राष्ट्रीय जल नीति, 2012 के अनुसार, उच्च प्राथमिकता आवंटन में क्या शामिल नहीं है?
(A) सुरक्षित पेयजल और स्वच्छता
(B) खाद्य सुरक्षा
(C) न्यूनतम पारिस्थितिकी तंत्र की जरूरतें
(D) औद्योगिक उपयोग

44. 'जल क्रांति अभियान' किस वर्ष आरंभ किया गया था?
(A) 2012-13
(B) 2015-16
(C) 2014-15
(D) 2017-18

45. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (जल उपयोग क्षेत्र)
P. कृषि (धरातलीय जल)
Q. कृषि (भौम जल)
R. औद्योगिक (भौम जल)
S. घरेलू (धरातलीय जल)
List II: (उपयोग का प्रतिशत)
1. 92%
2. 5%
3. 9%
4. 89%
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-3, S-2
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

46. निम्नलिखित में से कौन-सा जल का एक चक्रीय संसाधन होने का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) यह केवल एक बार उपयोग किया जा सकता है।
(B) यह पृथ्वी पर प्रचुर मात्रा में पाया जाता है और इसका पुन: उपयोग संभव है।
(C) यह केवल मनुष्यों द्वारा उपयोग किया जाता है।
(D) इसका वितरण पूरे विश्व में समान है।

47. भारत में नदी बेसिनों में औसत वार्षिक प्रवाह का अनुमान कितना है?
(A) 1,869 घन कि.मी.
(B) 10,360 घन कि.मी.
(C) 4,000 घन कि.मी.
(D) 432 घन कि.मी.

48. निम्नलिखित पर विचार कीजिए:
1. भूमि
2. जल
3. पौधे
4. प्राणी
5. मानवीय संसाधन
जल संभर प्रबंधन के अंतर्गत किन संसाधनों के संरक्षण, पुनरुत्पादन और विवेकपूर्ण उपयोग को सम्मिलित किया जाता है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 5
(C) केवल 3 और 4
(D) उपरोक्त सभी

49. 'जल ग्राम' की अवधारणा किस अभियान का हिस्सा है?
(A) स्वच्छ भारत मिशन
(B) जल क्रांति अभियान
(C) राष्ट्रीय जल मिशन
(D) हरियाली परियोजना

50. दक्षिण भारतीय राज्यों में से किस राज्य में भौम जल उपयोग (% में) इसके कुल भौम जल संभाव्य से ज़्यादा है?
(A) तमिलनाडु
(B) कर्नाटक
(C) आंध्र प्रदेश
(D) केरल

51. देश में प्रयुक्त कुल जल का सबसे अधिक समानुपात निम्नलिखित सेक्टरों में से किस सेक्टर में है?
(A) उद्योग
(B) घरेलू उपयोग
(C) सिंचाई
(D) ऊर्जा उत्पादन

52. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
अभ अभिकथन (A): जल का मूल्यांकन, कार्यक्षम उपयोग और संरक्षण विकास को सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक हो गए हैं।
कारण (R): जल की बढ़ती हुई माँग, अति उपयोग तथा प्रदूषण के कारण जल अभाव एक बड़ी चुनौती है।
उपरोक्त कथनों के आलोक में नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

53. 'पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम' कब लागू किया गया?

(A) जल क्रांति अभियान
(B) स्वच्छ भारत मिशन
(C) अटल भूजल योजना
(D) प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना

140. जल संसाधनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) भारत में जल की मांग और आपूर्ति में कोई अंतर नहीं है।
(B) जल का ह्रास, आवंटन और नियंत्रण तनाव और विवादों का विषय बन गए हैं।
(C) धरातलीय जल का उपयोग हमेशा भौम जल से अधिक कुशल होता है।
(D) भारत में जल संसाधनों के प्रबंधन की कोई आवश्यकता नहीं है।

141. निम्नलिखित को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. जल क्रांति अभियान
2. जल उपकर अधिनियम
3. जल (प्रदूषण का निवारण और नियंत्रण) अधिनियम
4. पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(A) 3, 2, 4, 1
(B) 2, 3, 1, 4
(C) 3, 4, 2, 1
(D) 1, 2, 3, 4

142. रालेगॅन सिद्धि में विद्यालय की इमारत का निर्माण कैसे किया गया?
(A) सरकारी अनुदान से
(B) विदेशी दान से
(C) एक निजी कंपनी द्वारा
(D) केवल गाँव के संसाधनों के उपयोग से

143. भारत के किन क्षेत्रों में शुष्क ऋतुओं में बिना सिंचाई के खेती करना कठिन होता है?
(A) देश के अधिकांश भागों में
(B) केवल उत्तर-पूर्वी भारत में
(C) केवल तटीय क्षेत्रों में
(D) केवल पर्वतीय क्षेत्रों में

144. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभ अभिकथन (A): कुछ राज्यों में भौम जल के अत्यधिक उपयोग से जल स्तर नीचा हो गया है।
कारण (R): इन राज्यों में, विशेषकर पंजाब और हरियाणा में, सिंचाई के लिए कुओं और नलकूपों द्वारा बड़े पैमाने पर जल निकाला जाता है।
उपरोक्त कथनों के आलोक में नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

145. "जल पदचिन्ह और जल ऑडिटिंग" की अवधारणा का उल्लेख किस संदर्भ में किया गया है?
(A) जल क्रांति अभियान
(B) राष्ट्रीय जल नीति, 2012
(C) प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना
(D) रालेगॅन सिद्धि मॉडल

146. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. जन जागरुकता और भागीदारी से प्रदूषण में कमी लाई जा सकती है।
2. जल उपकर अधिनियम 1977 प्रदूषण कम करने में पूरी तरह सफल रहा।
3. 251 उद्योग नदियों और झीलों के किनारे स्थापित किए गए थे।
4. कानूनी व्यवस्थाएं जैसे जल अधिनियम 1974 प्रभावपूर्ण ढंग से कार्यान्वित नहीं हुई हैं।

जल प्रदूषण निवारण के संबंध में उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1, 2 and 3
(B) केवल 2, 3 and 4
(C) केवल 1, 3 and 4
(D) 1, 2, 3 and 4 सभी

147. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (जल प्रवाह बेसिन)
P. गंगा
Q. ब्रह्मपुत्र
R. गोदावरी
S. कृष्णा

List II: (प्रवाह/उपयोग की विशेषता)
1. दक्षिणी भारतीय नदी जहाँ प्रवाह का अधिकतर भाग उपयोग में लाया जाता है।
2. जलग्रहण क्षेत्र में अधिक वर्षा, पर उपयोग अभी भी संभव।
3. दक्षिणी भारतीय नदी जहाँ प्रवाह का अधिकतर भाग उपयोग में लाया जाता है।
4. बड़ा जलग्रहण क्षेत्र, अधिक वर्षा, पर उपयोग अभी भी संभव।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-4, R-3, S-1
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

148. औद्योगिक सेक्टर में सतह जल और भौम जल के उपयोग का क्रमशः प्रतिशत क्या है?

(A) 5% और 2%
(B) 89% और 92%
(C) 9% और 5%
(D) 2% और 5%

149. अलवणीय जल की घटती उपलब्धता और बढ़ती माँग किसके लिए एक चुनौती है?
(A) औद्योगिक विकास
(B) शहरीकरण
(C) सतत पोषणीय विकास
(D) कृषि विस्तार

150. जल किस प्रकार का संसाधन है?
(A) नवीकरणीय संसाधन
(B) अजैव संसाधन
(C) जैव संसाधन
(D) अचक्रीय संसाधन

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत में जल संसाधन प्रबंधन एक जटिल और बहुआयामी चुनौती है, जो संवैधानिक प्रावधानों और नीतिगत ढाँचों के भीतर संचालित होती है। भारतीय संविधान के अनुसार, जल एक राज्य का विषय है, जो सातवीं अनुसूची की सूची-II (राज्य सूची) की प्रविष्टि 17 के अंतर्गत आता है। यह प्रावधान राज्यों को अपने क्षेत्र के भीतर जल आपूर्ति, सिंचाई, नहरों, जल निकासी, तटबंधों और जल भंडारण के संबंध में कानून बनाने का अधिकार देता है। हालाँकि, अंतर-राज्यीय नदियों और नदी घाटियों का विनियमन और विकास संघ सूची (सूची-I) की प्रविष्टि 56 के तहत केंद्र सरकार के अधिकार क्षेत्र में आता है, यदि संसद द्वारा इसे सार्वजनिक हित में समीचीन घोषित किया जाए। इस संवैधानिक द्वैतवाद के कारण जल प्रशासन में अक्सर समन्वय की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए, केंद्र सरकार समय-समय पर राष्ट्रीय जल नीतियां जारी करती रही है, जैसे 1987, 2002 और 2012 में। इन नीतियों का उद्देश्य जल को एक दुर्लभ और बहुमूल्य राष्ट्रीय संसाधन के रूप में मान्यता देना, एकीकृत जल संसाधन विकास और प्रबंधन को बढ़ावा देना और उपयोग में दक्षता में सुधार करना है। फिर भी, इन नीतियों की प्रकृति सलाहकार की होती है और राज्यों पर बाध्यकारी नहीं होती, जिससे उनका कार्यान्वयन असमान रहता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. भारतीय संविधान के अनुसार, 'जल' मुख्य रूप से किस सूची का विषय है?
(A) संघ सूची
(B) राज्य सूची
(C) समवर्ती सूची
(D) अवशिष्ट सूची

152. केंद्र सरकार किस संवैधानिक प्रावधान के तहत अंतर-राज्यीय नदियों के विकास को नियंत्रित कर सकती है?
(A) संघ सूची की प्रविष्टि 56
(B) राज्य सूची की प्रविष्टि 17
(C) समवर्ती सूची की प्रविष्टि 20
(D) अनुच्छेद 262

153. स्रोत के अनुसार, भारत में जल प्रशासन में समन्वय की समस्याओं का मुख्य कारण क्या है?
(A) देश में राष्ट्रीय जल नीतियों का व्यापक अभाव होना
(B) राज्यों के पास पर्याप्त वित्तीय संसाधनों की कमी होना
(C) संवैधानिक द्वैतवाद, जहाँ जल राज्य का विषय है लेकिन अंतर-राज्यीय नदियाँ केंद्र के अधीन हैं
(D) नागरिकों में जल संरक्षण और प्रबंधन के प्रति जागरूकता की कमी

154. राष्ट्रीय जल नीतियों (जैसे 1987, 2002, 2012 में जारी) की कानूनी स्थिति क्या है?
(A) वे सभी राज्यों पर कानूनी रूप से बाध्यकारी हैं।
(B) वे केवल केंद्र शासित प्रदेशों पर लागू होती हैं।
(C) उन्हें सर्वोच्च न्यायालय द्वारा लागू किया जाता है।
(D) वे केवल सलाहकार प्रकृति की हैं।

155. राष्ट्रीय जल नीतियों का प्राथमिक उद्देश्य निम्नलिखित में से क्या है?
(A) जल संसाधनों का पूर्णतः निजीकरण और व्यवसायीकरण करना
(B) केवल कृषि सिंचाई कार्यों हेतु जल उपयोग को प्राथमिकता देना
(C) जल को एक दुर्लभ राष्ट्रीय संसाधन मानना और एकीकृत प्रबंधन को बढ़ावा देना
(D) देश की समस्त नदियों को राष्ट्रीय साझा संपत्ति घोषित करना

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत में भौम जल का अति-दोहन एक गंभीर पर्यावरणीय और सामाजिक-आर्थिक समस्या बन गया है, विशेषकर उत्तर-पश्चिम भारत के कृषि-प्रधान राज्यों में। हरित क्रांति के बाद, उच्च उपज वाली किस्मों (HYVs), विशेष रूप से चावल और गेहूं, की खेती को बढ़ावा मिला, जिनकी जल मांग बहुत अधिक थी। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में, इन फसलों की सिंचाई के लिए बड़े पैमाने पर नलकूपों की स्थापना की गई। किसानों को दी जाने वाली बिजली सब्सिडी ने इस प्रवृत्ति को और तेज कर दिया, क्योंकि पंप चलाने की लागत कृत्रिम रूप से कम हो गई, जिससे पानी निकालने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं बचा। परिणामस्वरूप, इन क्षेत्रों में वार्षिक पुनर्भरण दर की तुलना में निष्कर्षण दर बहुत अधिक हो गई है, जिससे जल स्तर में खतरनाक गिरावट आई है। इस अति-दोहन के कई गंभीर परिणाम हैं। पहला, गहरे और गहरे नलकूप खोदने की आवश्यकता के कारण किसानों की लागत बढ़ जाती है। दूसरा, इससे भूमि धँसाव

(land subsidence) का खतरा पैदा होता है। तीसरा, तटीय क्षेत्रों में, मीठे पानी के जलभृतों के खाली होने से समुद्री खारे पानी का अंतर्वेधन (saline water intrusion) हो सकता है, जिससे भौम जल की गुणवत्ता स्थायी रूप से खराब हो जाती है। इसके अतिरिक्त, भौम जल में फ्लोराइड और आर्सेनिक जैसे हानिकारक तत्वों का सांद्रण भी बढ़ रहा है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए एक बड़ा खतरा है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. स्रोत के अनुसार, उत्तर-पश्चिम भारत में भौम जल के अति-दोहन का मुख्य चालक क्या था?
(A) औद्योगिक विकास
(B) हरित क्रांति के बाद अपनाई गई कृषि पद्धतियाँ
(C) शहरीकरण की तीव्र गति
(D) पर्यटन गतिविधियों में वृद्धि

157. बिजली सब्सिडी ने भौम जल के अति-दोहन को कैसे बढ़ावा दिया?
(A) इसने किसानों को व्यावसायिक फसलें अधिक उगाने के लिए प्रेरित किया।
(B) इसने वर्षा जल संचयन और संरक्षण की आवश्यकता को पूर्णतः समाप्त कर दिया।
(C) इसने सरकार को नई सिंचाई नहरें विकसित करने से बाधित किया।
(D) इसने नलकूप चलाने की लागत कम कर जल निष्कर्षण को अनियंत्रित बढ़ावा दिया।

158. भौम जल के अति-दोहन का निम्नलिखित में से कौन-सा एक संभावित परिणाम नहीं है, जैसा कि स्रोत में वर्णित है?
(A) नदियों में जल प्रवाह में वृद्धि
(B) जल स्तर में गिरावट
(C) भूमि धँसाव का खतरा
(D) तटीय क्षेत्रों में खारे पानी का अंतर्वेधन

159. स्रोत में 'खारे पानी का अंतर्वेधन' शब्द का क्या तात्पर्य है?
(A) नदियों के पानी का समुद्र में मिलना
(B) भौम जल का वाष्पीकरण होना
(C) समुद्री खारे पानी का मीठे पानी के जलभृतों में प्रवेश करना
(D) वर्षा के पानी में लवणता का बढ़ना

160. भौम जल के अति-दोहन से जल की गुणवत्ता पर क्या प्रभाव पड़ता है?
(A) फ्लोराइड और आर्सेनिक जैसे हानिकारक तत्वों का सांद्रण बढ़ सकता है।
(B) जल की स्वच्छता और गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार होता है।
(C) जल में घुली ऑक्सीजन का स्तर असामान्य रूप से बढ़ जाता है।
(D) जल प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा स्वयं ही शुद्ध हो जाता है।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत में अंतर-राज्यीय नदी जल विवाद देश के संघीय ढांचे के लिए एक आवर्ती चुनौती रहे हैं। ये विवाद तब उत्पन्न होते हैं जब एक से अधिक राज्य एक ही नदी के जल संसाधनों को साझा करते हैं और जल के आवंटन और उपयोग को लेकर उनके बीच असहमति होती है। इन विवादों को सुलझाने के लिए, भारतीय संविधान का अनुच्छेद 262 संसद को कानून द्वारा अंतर-राज्यीय नदियों या नदी घाटियों के जल के उपयोग, वितरण या नियंत्रण के संबंध में किसी भी विवाद या शिकायत के न्यायनिर्णयन का प्रावधान करने का अधिकार देता है। इसी शक्ति का प्रयोग करते हुए, संसद ने अंतर-राज्यीय नदी जल विवाद अधिनियम, 1956 (Inter-State River Water Disputes Act, 1956) पारित किया। इस अधिनियम के तहत, जब कोई राज्य सरकार केंद्र से अनुरोध करती है कि किसी नदी जल विवाद का समाधान बातचीत से नहीं हो पा रहा है, तो केंद्र सरकार एक न्यायाधिकरण (Tribunal) का गठन कर सकती है। इस न्यायाधिकरण का निर्णय अंतिम और विवाद में शामिल सभी पक्षों पर बाध्यकारी होता है। कावेरी जल विवाद (तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल और पुडुचेरी के बीच), कृष्णा जल विवाद (महाराष्ट्र, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के बीच) और सतलुज-यमुना लिंक नहर विवाद (पंजाब और हरियाणा के बीच) इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ये विवाद केवल जल के बंटवारे तक ही सीमित नहीं रहते, बल्कि अक्सर क्षेत्रीय राजनीति, कृषि अर्थव्यवस्था और सामाजिक पहचान से जुड़कर और भी जटिल हो जाते हैं।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. भारत में अंतर-राज्यीय नदी जल विवादों को सुलझाने के लिए संवैधानिक आधार किस अनुच्छेद में प्रदान किया गया है?
(A) अनुच्छेद 370
(B) अनुच्छेद 356
(C) अनुच्छेद 14
(D) अनुच्छेद 262

162. अंतर-राज्यीय नदी जल विवाद अधिनियम, 1956 के तहत विवादों के न्यायनिर्णयन के लिए कौन सी संस्था गठित की जाती है?
(A) सर्वोच्च न्यायालय की एक विशेष पीठ
(B) एक जल विवाद न्यायाधिकरण (Tribunal)
(C) एक स्थायी लोक अदालत
(D) एक संसदीय समिति

163. स्रोत के अनुसार, जल विवाद न्यायाधिकरण का गठन कौन करता है?
(A) भारत के राष्ट्रपति
(B) भारत के मुख्य न्यायाधीश
(C) केंद्र सरकार, राज्य के अनुरोध पर
(D) संबंधित राज्यों के मुख्यमंत्री मिलकर

164. न्यायाधिकरण द्वारा दिए गए निर्णय की क्या स्थिति होती है?
(A) यह केवल एक सिफारिश होती है।
(B) इसे सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी जा सकती है।
(C) इसे संसद द्वारा अनुमोदित किया जाना आवश्यक है।
(D) यह अंतिम और सभी पक्षों पर बाध्यकारी होता है।

165. निम्नलिखित में से कौन-सा विवाद स्रोत में एक प्रमुख अंतर-राज्यीय नदी जल विवाद के उदाहरण के रूप में उल्लिखित नहीं है?
(A) गंगा जल विवाद
(B) कावेरी जल विवाद
(C) कृष्णा जल विवाद
(D) सतलुज-यमुना लिंक नहर विवाद

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

जल प्रदूषण के स्रोतों को मुख्य रूप से दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है: बिंदु स्रोत (Point Sources) और गैर-बिंदु स्रोत (Non-point Sources)। बिंदु स्रोत प्रदूषण वे होते हैं जहाँ प्रदूषक एक विशिष्ट, पहचान योग्य स्थान से जल निकाय में प्रवेश करते हैं। इनके उदाहरणों में औद्योगिक संयंत्रों से निकलने वाला बहिःस्राव, नगरपालिका सीवेज उपचार संयंत्रों से निर्वहन और तेल रिफाइनरियों से निकलने वाला अपशिष्ट जल शामिल है। चूँकि ये स्रोत असतत और पहचान योग्य होते हैं, इसलिए इन्हें विनियमित करना और निगरानी करना अपेक्षाकृत आसान होता है। इसके विपरीत, गैर-बिंदु स्रोत प्रदूषण एक विस्तृत क्षेत्र से उत्पन्न होता है और किसी एक विशिष्ट आउटलेट से नहीं आता। यह अक्सर वर्षा या बर्फ पिघलने के कारण भूमि पर से बहने वाले पानी (अपवाह) के साथ फैलता है। कृषि क्षेत्रों से उर्वरकों और कीतापनाशकों का अपवाह, शहरी क्षेत्रों से तूफानी जल अपवाह, और निर्माण स्थलों से तलछट का बहाव इसके प्रमुख उदाहरण हैं। गैर-बिंदु स्रोत प्रदूषण को नियंत्रित करना कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण होता है क्योंकि यह फैला हुआ और परिवर्तनीय होता है। कृषि अपवाह से पोषक तत्वों (नाइट्रोजन और फास्फोरस) की अधिकता के कारण जलाशयों में सुपोषण (Eutrophication) की प्रक्रिया होती है, जिससे शैवाल प्रस्फुटन (algal blooms) होता है और जलीय जीवन के लिए ऑक्सीजन की कमी हो जाती है, जिसे हाइपोक्सिया कहा जाता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. स्रोत के अनुसार, जल प्रदूषण के दो मुख्य स्रोत कौन से हैं?
(A) कृषि और औद्योगिक स्रोत
(B) बिंदु और गैर-बिंदु स्रोत
(C) शहरी और ग्रामीण स्रोत
(D) सतही और भूमिगत स्रोत

167. निम्नलिखित में से कौन-सा एक 'बिंदु स्रोत' प्रदूषण का उदाहरण है?
(A) कृषि खेतों से कीटनाशक युक्त अपवाह
(B) एक नगरपालिका सीवेज उपचार संयंत्र से निर्वहन
(C) एक शहर की सड़कों से तूफानी जल अपवाह
(D) एक बड़े वन क्षेत्र से पत्तियों का अपवाह

168. गैर-बिंदु स्रोत प्रदूषण को नियंत्रित करना क्यों अधिक चुनौतीपूर्ण है?
(A) क्योंकि यह विस्तृत क्षेत्र से उत्पन्न होता है और इसकी पहचान कठिन होती है।
(B) क्योंकि यह बिंदु स्रोतों की तुलना में अधिक हानिकारक और विषैला होता है।
(C) क्योंकि इस प्रकार का प्रदूषण केवल दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में पाया जाता है।
(D) क्योंकि इसके विनियमन हेतु वर्तमान में कोई सुदृढ़ कानून मौजूद नहीं है।

169. 'सुपोषण' (Eutrophication) की प्रक्रिया का मुख्य कारण क्या है?
(A) जल में भारी धातुओं और औद्योगिक अपशिष्टों का मिलना
(B) जल के औसत तापमान में अनियंत्रित और तीव्र वृद्धि
(C) जल में पोषक तत्वों, जैसे नाइट्रोजन और फास्फोरस की अत्यधिक वृद्धि
(D) जल में निलंबित ठोस पदार्थों और तलछट की अत्यधिक वृद्धि

170. सुपोषण के परिणामस्वरूप होने वाले शैवाल प्रस्फुटन (algal blooms) का जलीय पारिस्थितिकी तंत्र पर क्या तत्काल प्रभाव पड़ता है?
(A) यह स्थानीय मछली की आबादी और जलीय विविधता को बढ़ाता है।
(B) यह दूषित जल को मानवीय उपभोग हेतु पूर्णतः शुद्ध बनाता है।
(C) यह जल की प्राकृतिक लवणता और खनिज सांद्रता को कम करता है।
(D) यह जल में ऑक्सीजन स्तर को कम कर हाइपोक्सिया उत्पन्न करता है।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

जल संरक्षण की पारंपरिक प्रणालियाँ देश की विविध भौगोलिक और जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल विकसित हुई हैं। ये प्रणालियाँ न केवल जल संचयन करती हैं, बल्कि सामुदायिक भागीदारी और पारिस्थितिक संतुलन के उत्कृष्ट उदाहरण भी हैं। शुष्क और अर्ध-शुष्क राजस्थान में, 'कुंड' या 'टांका' भूमिगत टैंक हैं जो वर्षा जल को संग्रहीत करने के लिए घरों के आंगनों में बनाए जाते थे, जबकि 'जोहड़' छोटे मिट्टी के चेक डैम होते थे जो वर्षा के पानी को रोककर भूमिगत जल को रिचार्ज करते थे। लद्दाख के ठंडे मरुस्थल में, 'जिंग' छोटे चैनलों की एक प्रणाली है जो ग्लेशियरों के पिघलने से प्राप्त पानी को खेतों तक पहुँचाती है। दक्षिण भारत में, विशेषकर तमिलनाडु में, 'एरी' (Eri) प्रणाली का उपयोग किया जाता था, जो एक आपस में जुड़े हुए तालाबों की श्रृंखला होती थी, जिससे सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण दोनों होता था। बिहार के

मैदानों में 'आहर-पाइन' प्रणाली प्रचलित थी, जिसमें 'आहर' तीन तरफ से तटबंधों से घिरे जलाशय होते थे और 'पाइन' इन जलाशयों तक पानी लाने और वितरित करने वाली नहरें होती थीं। ये सभी प्रणालियाँ स्थानीय ज्ञान, सरल इंजीनियरिंग और समुदाय आधारित प्रबंधन पर निर्भर थीं। आधुनिक जल आपूर्ति प्रणालियों के आगमन के साथ इनमें से कई संरचनाएँ उपेक्षित हो गईं, लेकिन हाल के वर्षों में जल संकट के समाधान के रूप में इनके पुनरुद्धार में रुचि बढ़ी है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. स्रोत के अनुसार, भारत की पारंपरिक जल संरक्षण प्रणालियों की मुख्य विशेषता क्या है?
(A) वे पूर्णतः केंद्र और राज्य सरकारों के वित्तीय पोषण पर निर्भर थीं।
(B) वे उस काल की अत्यंत जटिल और बहुत महंगी तकनीक का उपयोग करती थीं।
(C) वे स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों के अनुकूल और समुदाय-आधारित थीं।
(D) वे विशेष रूप से केवल पीने योग्य जल के संग्रहण हेतु ही डिज़ाइन की गई थीं।

172. राजस्थान में वर्षा जल को रोककर भूमिगत जल को रिचार्ज करने के लिए उपयोग किए जाने वाले छोटे मिट्टी के चेक डैम को क्या कहा जाता है?
(A) कुंड
(B) जोहड़
(C) जिंग
(D) एरी

173. 'जिंग' नामक पारंपरिक जल संचयन प्रणाली भारत के किस क्षेत्र से संबंधित है?
(A) तटीय ओडिशा
(B) पश्चिमी घाट
(C) बिहार के मैदान
(D) लद्दाख का ठंडा मरुस्थल

174. तमिलनाडु की 'एरी' प्रणाली का दोहरा उद्देश्य क्या था?
(A) सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण
(B) केवल पीने का पानी और मछली पकड़ना
(C) नौका विहार और मनोरंजन
(D) केवल भूमिगत जल पुनर्भरण

175. स्रोत के अनुसार, हाल के वर्षों में इन पारंपरिक प्रणालियों में रुचि क्यों बढ़ी है?
(A) पर्यटन और स्थानीय संस्कृति को व्यापक स्तर पर बढ़ावा देने के लिए
(B) उनके ऐतिहासिक गौरव और विशेष पुरातात्विक महत्व को बचाने के लिए
(C) आधुनिक जल संकट के समाधान के रूप में उनकी प्रासंगिकता के कारण
(D) वे आधुनिक वैज्ञानिक प्रणालियों की तुलना में अधिक जल भंडारित करती हैं

46. (B) यह पृथ्वी पर प्रचुर मात्रा में पाया जाता है और इसका पुनः उपयोग संभव है।
जल एक चक्रीय संसाधन है क्योंकि यह जल चक्र के माध्यम से निरंतर अपना रूप बदलता रहता है और पुनः उपलब्ध होता है। महासागरों से वाष्पीकरण, वर्षा और फिर नदियों के माध्यम से समुद्र में वापसी का यह चक्र इसे नवीकरणीय बनाता है। उचित उपचार के बाद जल का कई बार उपयोग किया जा सकता है, जो इसे अन्य संसाधनों की तुलना में अद्वितीय और सतत बनाता है।

47. (A) 1,869 घन कि.मी.
भारत के विभिन्न नदी बेसिनों में कुल औसत वार्षिक प्रवाह लगभग एक हजार आठ सौ उनहत्तर घन किलोमीटर होने का अनुमान है। हालांकि, भौगोलिक, स्थलाकृतिक और अन्य बाधाओं के कारण इस पूरी मात्रा का उपयोग करना संभव नहीं है। इसमें से केवल एक सीमित मात्रा ही वास्तव में उपयोग योग्य जल संसाधनों के रूप में उपलब्ध है, जिसका प्रबंधन सिंचाई और पेयजल हेतु किया जाता है।

48. (D) उपरोक्त सभी
जल संभर प्रबंधन केवल जल तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें भूमि, जल, पौधों, प्राणियों और मानवीय संसाधनों का एकीकृत संरक्षण और विवेकपूर्ण उपयोग शामिल है। इसका मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों और समाज के बीच एक संतुलन स्थापित करना है। यह समग्र दृष्टिकोण पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करता है और स्थानीय समुदायों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के साथ सतत विकास सुनिश्चित करता है।

49. (B) जल क्रांति अभियान
'जल ग्राम' की नवीन अवधारणा जल क्रांति अभियान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसके अंतर्गत देश के प्रत्येक जिले के एक जल-अभाव वाले गाँव को चुनकर उसे जल सुरक्षा के मामले में आत्मनिर्भर बनाने का लक्ष्य रखा गया। इसमें वर्षा जल संचयन, भूजल पुनर्भरण और जल प्रदूषण कम करने जैसी एकीकृत गतिविधियों के माध्यम से गाँव के समग्र जल स्तर को सुधारने का प्रयास किया जाता है।

50. (A) तमिलनाडु
दक्षिण भारतीय राज्यों में तमिलनाडु एकमात्र ऐसा राज्य है जहाँ भौम जल का उपयोग उसकी कुल पुनर्भरण क्षमता से भी अधिक हो गया है। यहाँ कृषि और औद्योगिक गतिविधियों के लिए भूजल का इतना अधिक दोहन किया गया है कि जल स्तर गंभीर रूप से नीचे गिर गया है। इसके परिणामस्वरूप कई क्षेत्रों में जल की गुणवत्ता खराब हो गई है और भविष्य के लिए गंभीर संकट पैदा हो गया है।

51. (C) सिंचाई
भारत में कुल प्रयुक्त जल का सबसे बड़ा हिस्सा, लगभग नब्बे प्रतिशत से अधिक, सिंचाई क्षेत्र में खर्च होता है। देश की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था और मानसून की अनिश्चितता के कारण फसलों को कृत्रिम रूप से जल देना अनिवार्य है। उद्योग, घरेलू उपयोग और ऊर्जा उत्पादन जैसे अन्य सेक्टरों की तुलना में कृषि में जल की खपत बहुत अधिक है, जो जल प्रबंधन हेतु मुख्य चुनौती है।

52. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
बढ़ती जनसंख्या, शहरीकरण और गहन कृषि के कारण जल की माँग तेजी से बढ़ी है, जबकि स्रोतों का अति-दोहन और प्रदूषण इसकी उपलब्धता को कम कर रहे हैं। इस गंभीर जल संकट के कारण अब जल का सही मूल्यांकन, कुशल उपयोग और संरक्षण विकास की निरंतरता के लिए अनिवार्य हो गया है। बिना प्रभावी प्रबंधन के भविष्य में जल अभाव एक विकराल सामाजिक और आर्थिक समस्या बन सकता है।

53. (C) 1986
पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम वर्ष 1986 में लागू किया गया था, जो पर्यावरण के संरक्षण और सुधार के लिए एक व्यापक कानूनी ढांचा प्रदान करता है। यह अधिनियम सरकार को प्रदूषण फैलाने वाली गतिविधियों को रोकने और प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन हेतु कड़े नियम बनाने का अधिकार देता है। जल प्रदूषण के नियंत्रण और पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा के संदर्भ में यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ है।

54. (A) केवल 1, 2 और 3
भारत में वर्षा मुख्य रूप से मानसूनी होती है और इसका वितरण अत्यधिक असमान है, जिससे कुछ क्षेत्र बाढ़ तो कुछ सूखे का सामना करते हैं। गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसे बड़े बेसिन प्रचुर जल राशि वहन करते हैं, लेकिन दक्षिण भारतीय नदियों का अधिकांश जल प्रवाह सिंचाई हेतु पहले ही व्यापक रूप से उपयोग में लाया जा रहा है। अतः यह कहना गलत है कि दक्षिण में जल अप्रयुक्त रहता है।

55. (D) संप्रदाय के सहयोग पर
जल-संभर प्रबंधन परियोजनाओं की सफलता पूरी तरह से स्थानीय समुदाय के सक्रिय सहयोग और भागीदारी पर निर्भर करती है। रालेगॅन सिद्धि और नीरू-मीरू जैसे सफल उदाहरण बताते हैं कि जब लोग स्वयं आगे बढ़कर जल संरक्षण की जिम्मेदारी लेते हैं, तभी स्थायी परिवर्तन संभव होता है। सरकारी नीतियां और तकनीकी सहायता केवल तभी प्रभावी होती हैं जब समुदाय उन्हें अपनाता है और उनका रखरखाव करता है।

56. (A) जल-संभर विकास और प्रबंधन कार्यक्रम
जल-संभर विकास और प्रबंधन कार्यक्रम अक्सर सरकारी प्रयासों के साथ-साथ गैर-सरकारी संगठनों द्वारा भी बड़े पैमाने पर चलाए जाते हैं। ये संगठन स्थानीय समुदायों को जागरूक करने, तकनीकी प्रशिक्षण देने और सूक्ष्म स्तर पर जल संचयन ढांचे बनाने में मदद करते हैं। इसके विपरीत, भाखड़ा नांगल या दामोदर घाटी जैसी विशाल बहुउद्देशीय परियोजनाएं पूर्णतः सरकार द्वारा संचालित और प्रबंधित बड़ी ढांचागत योजनाएं होती हैं।

12. (B) भारत की वर्तमान जल की माँग औद्योगिक आवश्यकताओं के लिए अधिक है।
भारत पारंपरिक रूप से एक कृषि प्रधान देश रहा है, इसलिए यहाँ जल की सर्वाधिक माँग आज भी कृषि क्षेत्र में ही बनी हुई है। वर्तमान में जल का लगभग नब्बे प्रतिशत से अधिक हिस्सा सिंचाई गतिविधियों में प्रयुक्त होता है। औद्योगिक और घरेलू क्षेत्रों में जल की माँग बढ़ रही है, लेकिन वे अभी भी कृषि क्षेत्र की तुलना में काफी पीछे हैं।

13. (D) 1, 2, 3 और 4 सभी सही हैं।
राष्ट्रीय जल नीति 2012 एक व्यापक दस्तावेज है जो जल संसाधनों के इष्टतम उपयोग पर जोर देता है। इसमें अंतर-राज्यीय नदी विवादों के समाधान हेतु कानूनी ढांचे, जल को आर्थिक वस्तु मानने, जलवायु परिवर्तन के अनुसार रणनीतियों की समीक्षा और जल उपयोग दक्षता हेतु मानक विकसित करने का सुझाव दिया गया है। इसका उद्देश्य देश में जल सुरक्षा और समान वितरण सुनिश्चित करना है।

14. (D) 89 प्रतिशत
भारत में धरातलीय जल का सर्वाधिक हिस्सा, लगभग नवासी प्रतिशत, कृषि कार्यों में सिंचाई के लिए उपयोग किया जाता है। घरेलू क्षेत्र में इसका योगदान नौ प्रतिशत और औद्योगिक क्षेत्र में केवल दो प्रतिशत है। कृषि पर अत्यधिक निर्भरता के कारण धरातलीय जल संसाधनों का प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है ताकि अन्य क्षेत्रों की बढ़ती जरूरतों को भी पूरा किया जा सके।

15. (A) वर्षा की स्थानिक-सामयिक परिवर्तिता
भारत में वर्षा मुख्य रूप से मानसूनी मौसम तक सीमित है और इसका वितरण भौगोलिक रूप से भी बहुत असमान है। देश के अधिकांश भागों में शुष्क ऋतुओं के दौरान कृषि के लिए जल की कमी हो जाती है। वर्षा की इसी अनिश्चितता और समय तथा स्थान के अनुसार भारी भिन्नता के कारण कृषि उत्पादकता बनाए रखने के लिए सिंचाई की आवश्यकता अपरिहार्य हो जाती है।

16. (A) P-3, Q-1, R-2, S-1
नीरु-मीरु कार्यक्रम आंध्र प्रदेश में जल संरक्षण के लिए चलाया गया, जबकि अरवारी पानी संसद राजस्थान के अलवर जिले से संबंधित है। हरियाली परियोजना केंद्र सरकार द्वारा प्रवर्तित एक प्रमुख जल-संभर विकास कार्यक्रम है। राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में जल संग्रहण के लिए कुंड या टाँका जैसी पारंपरिक संरचनाओं का उपयोग सदियों से किया जा रहा है, जो स्थानीय जल प्रबंधन का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

17. (B) प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY)
'प्रति बूंद अधिक फसल' का लक्ष्य प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के माध्यम से प्राप्त करने का प्रयास किया जा रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों, जैसे ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई, को बढ़ावा देकर जल उपयोग दक्षता में सुधार करना है। यह तकनीक न केवल जल की बचत करती है, बल्कि कृषि उत्पादकता बढ़ाने और लागत कम करने में भी सहायक सिद्ध होती है।

18. (A) कुओं और नलकूपों द्वारा
पंजाब और हरियाणा में निवल सिंचित क्षेत्र का एक बहुत बड़ा हिस्सा कुओं और नलकूपों के माध्यम से सींचा जाता है। इन राज्यों में भूजल संसाधनों का दोहन बहुत अधिक है क्योंकि यहाँ गहन कृषि पद्धतियाँ अपनाई जाती हैं। हरित क्रांति के बाद से इन राज्यों में नलकूप सिंचाई का जाल बिछ गया है, जिससे फसलों को वर्ष भर जल की सुनिश्चित आपूर्ति संभव हो सकी है।

19. (C) भूमिगत जल में फ्लुओराइड का संकेंद्रण बढ़ना
राजस्थान और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में भूजल के अत्यधिक और अनियंत्रित दोहन के कारण जल स्तर काफी नीचे चला गया है। इसके परिणामस्वरूप भूजल की गुणवत्ता में गिरावट आई है और इसमें फ्लुओराइड जैसे हानिकारक तत्वों का संकेंद्रण बढ़ गया है। यह स्थिति न केवल कृषि के लिए बल्कि मानव स्वास्थ्य के लिए भी गंभीर खतरा उत्पन्न करती है, जिससे हड्डियाँ और दांत प्रभावित होते हैं।

20. (A) केवल 1, 2 और 3
जल गुणवत्ता का अर्थ जल की शुद्धता और अवांछित बाहरी पदार्थों से मुक्त होना है। औद्योगिक अपशिष्ट, रासायनिक उर्वरक और सूक्ष्म जीव जल को गंभीर रूप से प्रदूषित करते हैं। यह प्रदूषक जल में घुलकर या तैरकर पूरे जलीय पारिस्थितिकी तंत्र और मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। भूजल भी इन प्रदूषकों के नीचे रिसने के कारण प्रदूषित होता है, जिससे उसका उपयोग असुरक्षित हो जाता है।

21. (C) संखिया (Arsenic)
पश्चिम बंगाल और बिहार के कुछ विशिष्ट हिस्सों में भूमिगत जल के अत्यधिक निष्कर्षण के कारण आर्सेनिक या संखिया के संकेंद्रण में वृद्धि हुई है। यह एक गंभीर पर्यावरणीय और स्वास्थ्य संबंधी समस्या है, क्योंकि आर्सेनिक युक्त जल का सेवन त्वचा संबंधी रोगों और कैंसर जैसी बीमारियों का कारण बन सकता है। जल स्तर गिरने से मिट्टी की परतों में मौजूद आर्सेनिक भूजल में घुलने लगता है।

22. (B) जल की शुद्धता एवं अवांछित बाह्य पदार्थ-रहित अवस्था
जल गुणवत्ता मूलतः जल की उस अवस्था को दर्शाती है जिसमें वह बाह्य सूक्ष्म जीवों, रसायनों और औद्योगिक अपशिष्टों जैसे प्रदूषकों से मुक्त होता है। जब ये हानिकारक पदार्थ जल में मिल जाते हैं, तो इसकी गुणवत्ता कम हो जाती है और यह मानवीय उपयोग के लिए अनुपयुक्त हो जाता है। शुद्ध जल का संरक्षण पारिस्थितिकी तंत्र और स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

23. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
गर्मियों के महीनों में नदियों में जल का प्रवाह न्यूनतम स्तर पर पहुँच जाता है, जिससे प्रदूषकों का स्वतः शुद्धिकरण और मंदन कम हो जाता है। कम जल राशि में प्रदूषकों की सांद्रता बहुत

अधिक बढ़ जाती है, जिससे जल अधिक विषाक्त हो जाता है। इसके विपरीत, मानसूनी प्रवाह के दौरान अधिक जल होने के कारण प्रदूषक पतले हो जाते हैं और सांद्रता में कमी आती है।

24. (A) गंगा और यमुना
गंगा और यमुना भारत की दो सबसे महत्वपूर्ण लेकिन अत्यधिक प्रदूषित नदियाँ मानी जाती हैं। शहरी कचरा, औद्योगिक अपशिष्ट और कृषि अपवाह इन नदियों की गुणवत्ता खराब करने के मुख्य कारक हैं। विशेष रूप से दिल्ली और इटावा के बीच यमुना और कानपुर एवं वाराणसी के निकट गंगा का प्रदूषण स्तर बहुत अधिक है। सरकार द्वारा इनके शुद्धिकरण के लिए कई मिशन चलाए जा रहे हैं।

25. (C) जैव और जीवाणविक संदूषण
केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़ों के अनुसार, भारतीय नदियों में प्रदूषण का सबसे बड़ा और प्रमुख स्रोत जैव तथा जीवाणविक संदूषण है। यह मुख्य रूप से अनुपचारित घरेलू सीवेज और कचरे के नदियों में सीधे विसर्जन के कारण होता है। हालांकि औद्योगिक अपशिष्ट और कृषि रसायन भी प्रदूषण में योगदान देते हैं, लेकिन जैविक संदूषण की मात्रा और प्रभाव सबसे अधिक व्यापक पाया गया है।

26. (A) 1974
जल (प्रदूषण का निवारण और नियंत्रण) अधिनियम वर्ष 1974 में जल संसाधनों की शुद्धता बनाए रखने और प्रदूषण को रोकने के लिए बनाया गया था। इस कानून का उद्देश्य जल प्रदूषणकारी गतिविधियों को विनियमित करना और नदियों की स्वच्छता सुनिश्चित करना था। इसके बाद से ही देश में प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों की स्थापना और जल संरक्षण हेतु कानूनी प्रयासों को एक ठोस आधार प्राप्त हुआ।

27. (A) 2, 1, 4, 3
भारत में जल और पर्यावरण संरक्षण हेतु विभिन्न अधिनियमों और नीतियों को क्रमिक रूप से लागू किया गया। सबसे पहले 1974 में जल अधिनियम आया, उसके पश्चात 1986 में पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम लागू हुआ। राष्ट्रीय जल नीति को 2012 में नवीनतम रूप में घोषित किया गया और अंततः 2015-16 में जल क्रांति अभियान की शुरुआत हुई। यह क्रम देश की बदलती प्राथमिकताओं को दर्शाता है।

28. (B) जल का पुनः चक्रण एक बहुत ही महंगी और अव्यावहारिक प्रक्रिया है।
जल का पुनः चक्रण और पुनः उपयोग वास्तव में जल संरक्षण का एक व्यावहारिक और कुशल तरीका है, न कि अव्यावहारिक। कम गुणवत्ता वाले उपचारित जल का उपयोग उद्योगों में शीतलन और बागवानी जैसे कार्यों के लिए किया जा सकता है। इससे ताजे और उच्च गुणवत्ता वाले जल की माँग कम होती है और उसे भविष्य के लिए या पीने के उद्देश्यों हेतु सुरक्षित रखा जा सकता है।

29. (C) मुख्य रूप से, धरातलीय और भौम जल संसाधनों का दक्ष प्रबंधन
जल संभर प्रबंधन एक एकीकृत दृष्टिकोण है जिसमें धरातलीय और भूजल संसाधनों का कुशल उपयोग और संरक्षण शामिल है। इसके अंतर्गत वर्षा जल को रोकना, उसका भंडारण करना और भूजल पुनर्भरण को बढ़ावा देना मुख्य उद्देश्य होता है। यह प्रणाली न केवल जल की उपलब्धता बढ़ाती है बल्कि मृदा अपरदन को रोकने और कृषि उत्पादकता में सुधार करने में भी अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।

30. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
विभिन्न नदियों के विशिष्ट खंड अत्यधिक प्रदूषित हैं, जैसे यमुना दिल्ली और इटावा के बीच, और साबरमती अहमदाबाद के पास सबसे अधिक दूषित पाई गई है। गोमती नदी लखनऊ के शहरी अपशिष्टों के कारण प्रभावित है, जबकि गंगा नदी कानपुर और वाराणसी जैसे औद्योगिक और धार्मिक केंद्रों के निकट अत्यधिक प्रदूषित है। इन क्षेत्रों में प्रदूषण नियंत्रण हेतु विशेष निगरानी और उपचार की आवश्यकता होती है।

31. (A) कृषि, मत्स्य पालन और वन रोपण हेतु जल संरक्षण
हरियाली परियोजना केंद्र सरकार द्वारा प्रवर्तित एक महत्वपूर्ण जल-संभर विकास पहल है, जिसे ग्राम पंचायतों के माध्यम से क्रियान्वित किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण करना है ताकि पीने के पानी के साथ-साथ सिंचाई, मछली पालन और वृक्षारोपण के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध हो सके। यह योजना ग्रामीण आत्मनिर्भरता और सतत विकास को प्रोत्साहित करती है।

32. (B) आंध्र प्रदेश
'नीरु-मीरु' कार्यक्रम आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा शुरु की गई एक अनूठी पहल है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'जल और आप' है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत जनभागीदारी के माध्यम से जल संरक्षण और संचयन के विभिन्न ढाँचों, जैसे तालाबों और चेक डैमों का निर्माण किया गया। इसने स्थानीय समुदायों को जल प्रबंधन में सीधे शामिल करके राज्य में जल स्तर सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

33. (B) हरियाली - केंद्र सरकार
हरियाली परियोजना केंद्र सरकार की एक महत्वपूर्ण योजना है जो जल-संभर विकास पर केंद्रित है। अन्य विकल्पों में, अरवारी पानी संसद राजस्थान से संबंधित है, न कि तमिलनाडु से। इसी प्रकार, नीरु-मीरु कार्यक्रम आंध्र प्रदेश की पहल है। अटल भूजल योजना केवल गुजरात तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सात राज्यों के चयनित क्षेत्रों में क्रियान्वित की जा रही है जहाँ भूजल गंभीर स्थिति में है।

34. (B) केवल 3 और 5
जल क्रांति अभियान 2015-16 में पूरे देश में शुरु किया गया था, न कि केवल दक्षिणी राज्यों में। इसका मुख्य उद्देश्य केवल जल संरक्षण ही नहीं था, बल्कि जल प्रदूषण को रोकना और लोगों में जागरुकता फैलाना भी था। इसके तहत जल ग्राम की

अवधारणा अपनाई गई और आर्सेनिक मुक्त कुओं के निर्माण जैसे प्रदूषण निवारण कार्यों पर भी विशेष ध्यान दिया गया था।

35. (C) तमिलनाडु
तमिलनाडु भारत का पहला राज्य है जिसने सभी घरों और इमारतों में वर्षा जल संग्रहण संरचना बनाना कानूनी रुप से अनिवार्य कर दिया है। इस साहसिक कदम का उद्देश्य तेजी से गिरते भूजल स्तर को रोकना और जल सुरक्षा सुनिश्चित करना है। बिना संग्रहण ढांचे के किसी भी भवन निर्माण की अनुमति नहीं दी जाती, जिससे राज्य में जल संचयन की संस्कृति विकसित हुई है।

36. (D) महाराष्ट्र
रालेगॅन सिद्धि गाँव महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में स्थित है और यह पूरे भारत में जल-संभर विकास का एक प्रेरणादायक मॉडल बन चुका है। यहाँ जनभागीदारी और स्वैच्छिक श्रम के माध्यम से बंजर भूमि को उपजाऊ बनाया गया और जल संकट को समाप्त किया गया। इस गाँव की सफलता ने यह सिद्ध किया कि सामुदायिक सहयोग से स्थानीय संसाधनों का कायाकल्प संभव है।

37. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
रालेगॅन सिद्धि में जल संसाधनों के विवेकपूर्ण प्रबंधन के लिए गन्ने जैसी अधिक पानी माँगने वाली फसलों की खेती पर प्रतिबंध लगाया गया। इसके स्थान पर कम पानी वाली और अधिक लाभ देने वाली फसलों को प्रोत्साहित किया गया। यह निर्णय जल संरक्षण के प्रति समुदाय की प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जिससे उपलब्ध जल का इष्टतम उपयोग और सभी ग्रामीणों के लिए समान वितरण सुनिश्चित हो सका।

38. (B) सेना का एक सेवानिवृत्त कर्मचारी
रालेगॅन सिद्धि में परिवर्तन की लहर अन्ना हजारे द्वारा शुरु की गई थी, जो भारतीय सेना के एक सेवानिवृत्त कर्मचारी थे। उन्होंने गाँव लौटने के बाद ग्रामीणों को जल-संभर विकास और सामाजिक सुधारों के लिए संगठित किया। उनके नेतृत्व में गाँव ने गरीबी और जल अभाव को पीछे छोड़कर आत्मनिर्भरता प्राप्त की, जो व्यक्तिगत नेतृत्व और सामुदायिक शक्ति का एक उत्कृष्ट वैश्विक उदाहरण है।

39. (D) तरुण मंडल
रालेगॅन सिद्धि में सामाजिक और आर्थिक सुधारों को गति देने के लिए नौजवानों के एक समूह का गठन किया गया, जिसे 'तरुण मंडल' नाम दिया गया। इस मंडल ने दहेज प्रथा, छुआछूत और शराबखोरी जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ काम किया। साथ ही, इसने स्वैच्छिक श्रम और जल संरक्षण परियोजनाओं के क्रियान्वयन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे गाँव के समग्र विकास में युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित हुई।

40. (A) यह मृदा अपरदन और बाढ़ को बढ़ाता है।
वर्षा जल संग्रहण वास्तव में मृदा अपरदन और बाढ़ को कम करने में सहायक होता है, न कि उसे बढ़ाता है। यह तकनीक जल के सतह पर बहाव को रोककर उसे भूमि के भीतर पुनर्भरण करने या संचित करने में मदद करती है। इससे न केवल जल की उपलब्धता बढ़ती है, बल्कि भूजल की गुणवत्ता में भी सुधार होता है और जल स्तर गिरने से बचता है।

41. (B) केवल 1, 2 and 3 सही हैं।
प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के व्यापक उद्देश्यों में हर खेत तक पानी पहुँचाना, जल उपयोग दक्षता में सुधार करना और स्थायी जल संरक्षण पद्धतियों को बढ़ावा देना शामिल है। यह योजना ग्रामीण और कृषि क्षेत्रों के एकीकृत विकास पर केंद्रित है, न कि केवल शहरी क्षेत्रों पर। इसका अंतिम लक्ष्य 'प्रति बूंद अधिक फसल' प्राप्त करना और किसानों की आय में वृद्धि सुनिश्चित करना है।

42. (A) कुंड अथवा टाँका
राजस्थान के अर्ध-शुष्क और शुष्क क्षेत्रों में वर्षा जल को संग्रहित करने के लिए कुंड या टाँका जैसी पारंपरिक संरचनाओं का निर्माण घरों या खेतों में किया जाता है। यह एक ढकी हुई भूमिगत टंकी होती है जिसमें छत या कृत्रिम जलग्रहण क्षेत्र से पानी इकट्ठा किया जाता है। यह संग्रहित जल विशेष रुप से गर्मियों के महीनों में पीने के पानी का मुख्य स्रोत बनता है।

43. (D) औद्योगिक उपयोग
राष्ट्रीय जल नीति 2012 के अनुसार, जल आवंटन में सर्वोच्च प्राथमिकता सुरक्षित पेयजल और स्वच्छता को दी गई है। इसके बाद खाद्य सुरक्षा और पारिस्थितिकी तंत्र की न्यूनतम आवश्यकताओं को रखा गया है। औद्योगिक उपयोग को प्राथमिकता क्रम में इनके बाद रखा गया है। यह प्राथमिकता जल के जीवन-रक्षक महत्व और सामाजिक न्याय को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से निर्धारित की गई है।

44. (B) 2015-16
जल क्रांति अभियान की शुरुआत भारत सरकार द्वारा वर्ष 2015-16 में की गई थी। इसका उद्देश्य देश में जल सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए जल संरक्षण और प्रबंधन को एक जन आंदोलन बनाना था। इस अभियान के तहत जल ग्राम बनाना, जागरूकता फैलाना और प्रदूषण निवारण जैसे कार्यों पर जोर दिया गया ताकि जल संसाधनों का सतत और न्यायसंगत उपयोग भविष्य में संभव हो सके।

45. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
भारत में जल उपयोग के आंकड़ों के अनुसार, धरातलीय जल का नवासी प्रतिशत कृषि में और भौम जल का बानवे प्रतिशत भी कृषि क्षेत्र में उपयोग होता है। औद्योगिक क्षेत्र में भूजल का उपयोग लगभग पांच प्रतिशत है, जबकि घरेलू क्षेत्र में धरातलीय जल का उपयोग नौ प्रतिशत है। ये आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि देश में जल संसाधनों पर कृषि क्षेत्र का सबसे अधिक दबाव बना हुआ है।

ANSWERS

1. (B) 71 प्रतिशत
पृथ्वी के धरातल का लगभग इकहत्तर प्रतिशत हिस्सा जल से आच्छादित है। यह विशाल जल भंडार मुख्य रूप से महासागरों और समुद्रों में संचित है। हालांकि, इस कुल जल का अधिकांश भाग लवणीय है, जो मानवीय उपयोग के लिए उपयुक्त नहीं है। केवल एक छोटा हिस्सा ही अलवणीय जल के रूप में उपलब्ध है, जो जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

2. (A) लगभग 3 प्रतिशत
पृथ्वी पर उपलब्ध कुल जल का केवल लगभग तीन प्रतिशत भाग ही अलवणीय अथवा मीठा जल है। इस सीमित मात्रा का भी एक बड़ा हिस्सा ग्लेशियरों और बर्फ की चादरों के रूप में जमा हुआ है। शेष जल नदियों, झीलों और भूजल के रूप में मौजूद है, जो मानव उपभोग, कृषि और औद्योगिक गतिविधियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

3. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
भारत के पास विश्व का लगभग दो दशमलव चार पांच प्रतिशत धरातलीय क्षेत्र और चार प्रतिशत जल संसाधन हैं। देश में विश्व की सत्रह प्रतिशत से अधिक जनसंख्या निवास करती है। वार्षिक वर्षण से प्राप्त जल की कुल मात्रा लगभग चार हजार घन किलोमीटर है। यह आंकड़े देश के संसाधनों और जनसंख्या के बीच के तीव्र असंतुलन को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

4. (D) 1,122 घन कि.मी.
भारत में कुल उपलब्ध जल संसाधनों में से केवल एक हजार एक सौ बाईस घन किलोमीटर जल ही वास्तव में उपयोग के योग्य है। इसमें धरातलीय जल का हिस्सा छह सौ नब्बे घन किलोमीटर और पुनः पूर्तियोग्य भौम जल का हिस्सा चार सौ बत्तीस घन किलोमीटर है। सीमित उपलब्धता के कारण जल का संरक्षण और कुशल प्रबंधन भविष्य की आवश्यकताओं के लिए अनिवार्य हो गया है।

5. (A) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
भारत में धरातलीय और भौम जल दोनों का सर्वाधिक उपयोग कृषि क्षेत्र में होता है, जहाँ सतह जल का नवासी प्रतिशत और भूजल का बानवे प्रतिशत उपयोग किया जाता है। औद्योगिक क्षेत्र में भौम जल का उपयोग लगभग पांच प्रतिशत है, जबकि सतह जल का उपयोग केवल दो प्रतिशत है। अतः औद्योगिक क्षेत्र में भूजल का उपयोग सतह जल की तुलना में अधिक होता है।

6. (B) कुएँ और नलकूप
धरातलीय जल के मुख्य स्रोत नदियाँ, झीलें, तलैया और तालाब हैं। कुएँ और नलकूप धरातलीय जल के अंतर्गत नहीं आते, बल्कि ये भौम जल अथवा भूजल प्राप्त करने के प्रमुख साधन माने जाते हैं। भारत में नदियों और उनकी सहायक नदियों की विशाल संख्या धरातलीय जल का सबसे महत्वपूर्ण आधार बनाती है, जिसका कृषि और अन्य क्षेत्रों में व्यापक उपयोग होता है।

7. (B) केवल 1, 3 और 5
गंगा, ब्रह्मपुत्र और बराक ऐसी नदियाँ हैं जिनके जलग्रहण क्षेत्रों में वर्षा की मात्रा अपेक्षाकृत बहुत अधिक होती है। इसके विपरीत, गोदावरी और कृष्णा जैसी दक्षिण भारतीय नदियों में जलग्रहण क्षेत्र बड़े होने के बावजूद वर्षा का वितरण अलग होता है। अधिक वर्षा वाले इन बेसिनों में जल संसाधन की उपलब्धता प्रचुर मात्रा में बनी रहती है, जो कृषि हेतु अत्यंत लाभदायक है।

8. (A) 432 घन कि.मी.
देश में कुल पुनः पूर्तियोग्य भौम जल संसाधन लगभग चार सौ बत्तीस घन किलोमीटर है। इसका एक बड़ा हिस्सा गंगा और ब्रह्मपुत्र बेसिनों में पाया जाता है। भौम जल की उपलब्धता वर्षा की मात्रा और भूवैज्ञानिक संरचना पर निर्भर करती है। वर्तमान में उत्तर-पश्चिमी भारत के राज्यों में सिंचाई के लिए इस संसाधन का बहुत अधिक दोहन किया जा रहा है।

9. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हरित क्रांति की सफलता का मुख्य आधार सिंचाई तंत्र का विकास था। इन क्षेत्रों में नहरों और नलकूपों के माध्यम से फसलों को नियमित आर्द्रता की आपूर्ति सुनिश्चित की गई। नियमित सिंचाई ने उच्च उपज वाली किस्मों के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान कीं, जिससे कृषि उत्पादकता में भारी वृद्धि हुई और हरित क्रांति का लक्ष्य प्राप्त हुआ।

10. (A) छत्तीसगढ़
छत्तीसगढ़ जैसे राज्य अपने उपलब्ध भौम जल संसाधनों का बहुत कम उपयोग कर रहे हैं। इसके विपरीत, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और तमिलनाडु में भूजल का दोहन बहुत अधिक है। छत्तीसगढ़ में प्रचुर वर्षा और धरातलीय स्रोतों की उपलब्धता के कारण भूजल पर निर्भरता अभी भी सीमित बनी हुई है। कम दोहन वाले राज्यों में भविष्य में भूजल विकास की पर्याप्त संभावनाएं मौजूद हैं।

11. (D) मछली पालन और कुछ फसलों की सिंचाई
भारत के तटीय राज्यों, विशेषकर केरल, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में लैगून और पश्च जल के विशाल स्रोत मिलते हैं। यद्यपि यह जल खारा होता है, फिर भी इसका उपयोग व्यावसायिक रूप से मछली पालन के लिए व्यापक स्तर पर किया जाता है। इसके अतिरिक्त, कुछ विशिष्ट किस्मों के धान और नारियल की फसलों की सिंचाई के लिए भी इस जल का उपयोग होता है।

57. (A) 1, 2, 3, 4
भारत में जल प्रबंधन की महत्वपूर्ण घटनाओं का क्रम सत्तर के दशक से शुरू होता है। रालेगॅन सिद्धि में विकास कार्य 1975 के आसपास शुरू हुआ, उसके बाद 1977 में जल उपकर अधिनियम आया। आधुनिक समय में, प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना और जल क्रांति अभियान दोनों 2015 के आसपास शुरू हुए। यह कालक्रम दर्शाता है कि कैसे स्थानीय प्रयासों से शुरू होकर जल प्रबंधन अब एक राष्ट्रीय प्राथमिकता बन गया है।

58. (B) केवल 1, 2 और 4
अटल भूजल योजना जल शक्ति मंत्रालय की एक प्रमुख पहल है जो गुजरात, महाराष्ट्र और कर्नाटक सहित सात राज्यों के भूजल संकट वाले क्षेत्रों में लागू की जा रही है। इसका मुख्य उद्देश्य सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से भूजल प्रबंधन में सुधार लाना और लोगों के जल उपयोग व्यवहार में बदलाव लाना है। हालांकि यह गंभीर ब्लॉकों पर ध्यान देती है, लेकिन इसका दृष्टिकोण व्यापक और व्यवहार-परिवर्तन आधारित है।

59. (D) 60 प्रतिशत
भारत के उत्तरी और उत्तर-पूर्वी भागों में बहने वाली गंगा, ब्रह्मपुत्र और बराक नदियों के बेसिन देश के कुल धरातलीय जल संसाधनों का लगभग साठ प्रतिशत हिस्सा वहन करते हैं। यद्यपि ये नदियाँ देश के केवल एक-तिहाई क्षेत्र में बहती हैं, लेकिन इनके जलग्रहण क्षेत्रों में भारी वर्षा के कारण जल की उपलब्धता बहुत अधिक है। इस विशाल क्षमता का अभी भी पूर्णतः उपयोग किया जाना बाकी है।

60. (B) प्रदूषण कम करना
जल उपकर अधिनियम 1977 का मुख्य उद्देश्य जल प्रदूषण को कम करना और उद्योगों द्वारा जल के विवेकपूर्ण उपयोग को प्रोत्साहित करना था। इसके तहत औद्योगिक इकाइयों पर उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले जल की मात्रा के आधार पर उपकर लगाया जाता है। यह कानून 'प्रदूषण फैलाने वाला भुगतान करे' के सिद्धांत पर आधारित है, ताकि जल संसाधनों की गुणवत्ता को औद्योगिक बहिःस्रावों से सुरक्षित रखा जा सके।

61. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग जल समस्याएं मौजूद हैं। राजस्थान और महाराष्ट्र में भूजल के अधिक दोहन से फ्लुओराइड बढ़ गया है, जबकि पश्चिम बंगाल और बिहार में आर्सेनिक की समस्या गंभीर है। यमुना नदी दिल्ली और इटावा के बीच जैविक कचरे से प्रदूषित है, वहीं तटीय क्षेत्रों में समुद्र के खारे पानी के प्रवेश से मीठे जल के स्रोतों की लवणता बढ़ रही है।

62. (D) धरातलीय जल का उपयोग भौम जल से अधिक है।
घरेलू क्षेत्र में धरातलीय जल का उपयोग कुल सतह जल का नौ प्रतिशत है, जबकि भौम जल का उपयोग केवल तीन प्रतिशत है। इसका मुख्य कारण यह है कि शहरी क्षेत्रों में जलापूर्ति प्रणालियाँ अधिकांशतः नदियों, बांधों और झीलों जैसे धरातलीय स्रोतों पर आधारित होती हैं। हालांकि ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी व्यक्तिगत स्तर पर भूजल का उपयोग अधिक होता है, लेकिन राष्ट्रीय औसत में धरातलीय जल आगे है।

63. (A) नीरू-मीरू
नीरू-मीरू एक सामुदायिक जल-संभर विकास कार्यक्रम है, न कि कोई विशाल बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना। इसके विपरीत, भाखड़ा नांगल, हीराकुड और नागार्जुन सागर जैसी परियोजनाएं बड़ी नदियों पर विशाल बांध बनाकर सिंचाई, बिजली उत्पादन और बाढ़ नियंत्रण जैसे कई उद्देश्यों को पूरा करती हैं। नीरू-मीरू सूक्ष्म स्तर पर जल संचयन और स्थानीय भूजल स्तर को बढ़ाने पर केंद्रित एक जनभागीदारी वाली योजना है।

64. (B) गन्ना
गन्ना एक ऐसी फसल है जिसे अपनी वृद्धि के लिए अत्यधिक जल और निरंतर आर्द्रता की आवश्यकता होती है। इसके विपरीत, गेहूँ को मध्यम और बाजरा या चने जैसी फसलों को बहुत कम जल की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि गन्ने की खेती उन्हीं क्षेत्रों में सफल होती है जहाँ या तो भारी वर्षा होती है या सिंचाई की बहुत अच्छी और बारहमासी सुविधा उपलब्ध होती है।

65. (A) केवल 1 और 2
भारत में उपलब्ध जल संसाधनों की गुणवत्ता में तेजी से गिरावट आ रही है, जो एक गंभीर चिंता का विषय है। हालांकि, नदियों के ऊपरी पहाड़ी क्षेत्रों में, जहाँ मानवीय गतिविधियाँ और औद्योगिक इकाइयाँ कम हैं, जल की गुणवत्ता अभी भी बहुत अच्छी बनी हुई है। जैसे-जैसे नदियाँ मैदानी इलाकों में प्रवेश करती हैं, शहरी और औद्योगिक अपशिष्टों के मिलने के कारण उनका प्रदूषण स्तर बढ़ने लगता है।

66. (A) 85 प्रतिशत से अधिक
पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कृषि की सघनता बहुत अधिक है और यहाँ निवल बोए गए क्षेत्र का पचासी प्रतिशत से अधिक भाग सिंचाई के अंतर्गत आता है। इन क्षेत्रों में वर्षा कम और अनिश्चित होने के कारण खेती पूरी तरह से नहरों और विशेषकर नलकूपों पर निर्भर है। इसी सुदृढ़ सिंचाई व्यवस्था ने इन राज्यों को भारत का 'अन्न भंडार' बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

67. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में तीव्र जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण और औद्योगिक विस्तार के कारण आने वाले समय में घरेलू और औद्योगिक क्षेत्रों में जल की माँग में भारी उछाल आने की संभावना है। जैसे-जैसे लोग शहरों की ओर बढ़ेंगे और जीवन स्तर में सुधार होगा, प्रति व्यक्ति जल की खपत बढ़ेगी। इसके साथ ही, आर्थिक विकास के लिए उद्योगों को भी अधिक जल की आवश्यकता होगी, जिससे जल प्रबंधन चुनौतीपूर्ण हो जाएगा।

68. (D) जल का विलवणीकरण, उसकी कम लागत के कारण
जल का विलवणीकरण यानी खारे पानी को मीठा बनाना एक अत्यंत महंगी और ऊर्जा-गहन प्रक्रिया है, इसलिए इसे जल संरक्षण की एक सामान्य विधि के रूप में नहीं देखा जाता है। इसके विपरीत, जल-संभर विकास, वर्षा जल संग्रहण और जल का पुनः चक्रण ऐसी विधियाँ हैं जो कम लागत में जल की उपलब्धता बढ़ाने और उसके कुशल प्रबंधन में अत्यंत प्रभावी और स्थायी सिद्ध होती हैं।

69. (C) कृषि के मशीनीकरण पर प्रतिबंध
रालेगॅन सिद्धि के सामाजिक सुधारों में दहेज प्रथा, छुआछूत, शराबखोरी और खुले में चराई जैसी कुरीतियों और हानिकारक प्रथाओं पर कड़ा प्रतिबंध लगाया गया था। हालांकि, कृषि के मशीनीकरण पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया गया था, बल्कि इसका उद्देश्य कृषि उत्पादकता बढ़ाना और ग्रामीणों के जीवन स्तर में सुधार करना था। इन सुधारों ने समुदाय में अनुशासन और सहयोग की भावना पैदा की, जो गाँव की सफलता का आधार बनी।

70. (B) 32%
भारत में नदियों के कुल वार्षिक प्रवाह का केवल लगभग बत्तीस प्रतिशत भाग ही वास्तव में उपयोग किया जा सकता है। इसका मुख्य कारण भौगोलिक सीमाएं, स्थलाकृतिक बाधाएं और मानसून के दौरान बहुत अधिक जल का तेजी से समुद्र में बह जाना है। इस सीमित उपयोग योग्य जल, जो लगभग छह सौ नब्बे घन किलोमीटर है, का कुशल प्रबंधन देश की विशाल जनसंख्या की जरूरतों को पूरा करने के लिए अनिवार्य है।

71. (A) केवल 1
सिंचाई की उपलब्धता किसानों को एक ही खेत में एक वर्ष के भीतर एक से अधिक फसलें उगाने, यानी बहुफसलीकरण, की सुविधा प्रदान करती है। यह न केवल कृषि उत्पादन बढ़ाता है बल्कि किसानों की आय में भी वृद्धि करता है। इसके विपरीत, सिंचित भूमि की उत्पादकता असिंचित भूमि से बहुत अधिक होती है और अधिक उपज देने वाली किस्मों को नियमित जल आपूर्ति की अनिवार्य आवश्यकता होती है।

72. (A) मूल्यांकन, कार्यक्षम उपयोग और संरक्षण
विकास की निरंतरता बनाए रखने के लिए जल संसाधनों का सही मूल्यांकन, उनका कार्यक्षम या कुशल उपयोग और निरंतर संरक्षण करना अत्यंत आवश्यक हो गया है। जल की सीमित उपलब्धता को देखते हुए यह जरूरी है कि हम हर बूंद का सर्वोत्तम उपयोग करें और भविष्य की पीढ़ियों के लिए संसाधनों को सुरक्षित रखें। यह दृष्टिकोण आर्थिक प्रगति और पर्यावरणीय संतुलन दोनों को सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य है।

73. (C) चक्रीय
जल एक चक्रीय संसाधन है क्योंकि यह पृथ्वी, वायुमंडल और महासागरों के बीच एक निरंतर चक्र में घूमता रहता है। वाष्पीकरण, संघनन और वर्षण की यह प्रक्रिया जल को पुनः नवीकृत करती रहती है। यद्यपि इसकी कुल मात्रा स्थिर रहती है, लेकिन यह विभिन्न रूपों और स्थानों पर उपलब्ध होता रहता है। इस चक्रीय प्रकृति के कारण ही उचित प्रबंधन से इसका सतत उपयोग संभव हो पाता है।

74. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
भारत में जल और पर्यावरण के कानूनी ढांचे का विकास विभिन्न वर्षों में हुआ। जल अधिनियम 1974 में आया, पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम 1986 में लागू हुआ, और जल उपकर अधिनियम 1977 में प्रदूषण नियंत्रण के लिए बनाया गया। राष्ट्रीय जल नीति का सबसे नवीनतम महत्वपूर्ण संस्करण 2012 में जारी किया गया। ये सभी कानूनी उपाय देश के जल संसाधनों की सुरक्षा और उचित प्रबंधन के लिए आधार प्रदान करते हैं।

75. (D) मध्यम दर
गुजरात, उत्तर प्रदेश, बिहार, त्रिपुरा और महाराष्ट्र जैसे राज्य अपने भौम जल संसाधनों का मध्यम दर से उपयोग कर रहे हैं। इन राज्यों में न तो पंजाब और हरियाणा जैसा अत्यधिक दोहन है और न ही छत्तीसगढ़ जैसा बहुत कम उपयोग। मध्यम उपयोग वाले इन क्षेत्रों में भविष्य में जल की कमी से बचने के लिए अभी से विवेकपूर्ण प्रबंधन और पुनर्भरण तकनीकों को अपनाना अत्यंत आवश्यक हो गया है।

76. (B) भौम जल संसाधनों में वृद्धि
उत्तर-पश्चिमी और दक्षिणी भारत में भौम जल के अत्यधिक दोहन से संसाधनों में वृद्धि नहीं होती, बल्कि उनमें भारी कमी आती है। जल स्तर गिरने से कुएं और नलकूप सूख जाते हैं, जिससे कृषि और विकास कार्यों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसके अलावा, गिरता जल स्तर सामाजिक तनाव और विवादों को जन्म देता है, जो लंबी अवधि में क्षेत्रीय स्थिरता और खाद्य सुरक्षा के लिए हानिकारक सिद्ध होता है।

77. (A) 1, 3, 2
जल संरक्षण के प्रयासों में अन्ना हजारे द्वारा रालेगॅन सिद्धि में 1975 में शुरू किया गया कार्य सबसे प्रारंभिक सफल उदाहरणों में से एक है। इसके बाद 1986 में पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम लागू किया गया, जो एक महत्वपूर्ण कानूनी पहल थी। अंततः 2015-16 में केंद्र सरकार ने जल क्रांति अभियान की शुरुआत की। यह क्रम स्थानीय स्तर से राष्ट्रीय नीतिगत स्तर तक की विकास यात्रा को दर्शाता है।

78. (D) धरातलीय जल और पुनः पूर्तियोग्य भौम जल से 1,869 घन कि.मी. जल उपलब्ध है।
भारत में धरातलीय जल और पुनः पूर्तियोग्य भौम जल का कुल वार्षिक प्रवाह लगभग एक हजार आठ सौ उनहत्तर घन किलोमीटर आंका गया है। हालांकि, तकनीकी और भौगोलिक कारणों से इसका पूरा भाग उपयोग नहीं किया जा सकता है। यह विशाल जल राशि देश की नदियों और भूजल पुनर्भरण प्रणाली के माध्यम से उपलब्ध होती है, जो कृषि और अन्य आवश्यकताओं के लिए जीवन रेखा का काम करती है।

79. (A) ग्राम पंचायतों द्वारा लोगों के सहयोग से
हरियाली परियोजना केंद्र सरकार द्वारा वित्तपोषित है, लेकिन इसका वास्तविक निष्पादन ग्राम पंचायतों द्वारा स्थानीय लोगों के सक्रिय सहयोग से किया जाता है। इस मॉडल का मुख्य उद्देश्य समुदायों को अपने जल संसाधनों के प्रबंधन में सशक्त बनाना है। लोगों की भागीदारी यह सुनिश्चित करती है कि निर्मित जल संचयन ढांचे स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप हों और उनका रखरखाव भविष्य में समुदाय द्वारा ही किया जा सके।

80. (B) प्रदूषक हमेशा जल में घुल जाते हैं, वे कभी निलंबित नहीं होते।
जल प्रदूषक केवल घुलकर ही नहीं, बल्कि निलंबित कणों के रूप में भी जल को दूषित करते हैं। कई हानिकारक रसायन और मिट्टी के कण जल में तैरते रहते हैं, जो उसकी पारदर्शिता और गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। ये निलंबित पदार्थ जलीय जीवन के लिए उतने ही हानिकारक हो सकते हैं जितने कि घुले हुए प्रदूषक, क्योंकि वे जलीय जीवों के श्वसन और पोषण तंत्र को प्रभावित करते हैं।

81. (B) जल की कमी के आधार पर
जल क्रांति अभियान के अंतर्गत 'जल ग्राम' का चयन मुख्य रूप से उन गाँवों से किया गया जो पानी की गंभीर कमी का सामना कर रहे थे। इसका उद्देश्य ऐसे जल-अभाव वाले गाँवों में एकीकृत जल प्रबंधन पद्धतियों को लागू करना था ताकि उन्हें जल सुरक्षा प्रदान की जा सके। यह चयन किसी जनसंख्या या साक्षरता दर पर नहीं, बल्कि वास्तविक आवश्यकता और संकट की गंभीरता पर आधारित था।

82. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
तमिलनाडु सरकार ने वर्षा जल संग्रहण को एक अनिवार्य कानूनी आवश्यकता बना दिया है क्योंकि राज्य जल की कमी और गिरते भूजल स्तर का सामना कर रहा है। भवनों के निर्माण के साथ संग्रहण ढांचे का होना अनिवार्य करने से यह सुनिश्चित होता है कि वर्षा का प्रत्येक बूंद व्यर्थ न जाए और जमीन के भीतर समाकर भूजल स्तर को बढ़ाए। यह जल संरक्षण की दिशा में एक प्रभावी कदम है।

83. (C) राजस्थान
'अरवारी पानी संसद' का संबंध राजस्थान के अलवर जिले से है। यहाँ ग्रामीणों ने तरुण भारत संघ जैसी संस्थाओं के सहयोग से छोटी नदियों और जलधाराओं को पुनर्जीवित करने के लिए सामुदायिक प्रबंधन अपनाया। इस संसद के माध्यम से ग्रामीणों ने जल के न्यायसंगत वितरण और संरक्षण के नियम स्वयं बनाए, जिसने सूखे से प्रभावित क्षेत्र को एक जल-समृद्ध क्षेत्र में बदल दिया।

84. (D) यह भौम जल निकालने में ऊर्जा की खपत बढ़ाता है।
वर्षा जल संग्रहण वास्तव में भूजल स्तर को ऊपर उठाता है, जिससे पानी निकालने के लिए आवश्यक ऊर्जा की खपत कम हो जाती है, न कि बढ़ती है। जब जल स्तर ऊंचा होता है, तो पंपों को कम गहराई से पानी खींचना पड़ता है। इसके अलावा, यह तकनीक भूजल की गुणवत्ता सुधारती है और तटीय क्षेत्रों में खारे पानी के प्रवेश को रोककर मीठे पानी के स्रोतों की रक्षा करती है।

85. (C) केवल 1, 3 और 5
रालेगॅन सिद्धि के मॉडल में ग्रामीणों के स्वैच्छिक श्रम और सामाजिक कुरीतियों जैसे दहेज और जातिवाद पर प्रतिबंध को मुख्य स्थान दिया गया। युवाओं के संगठन 'तरुण मंडल' ने इन सुधारों को लागू करने में अग्रणी भूमिका निभाई। इसके विपरीत, यहाँ वृक्षों की कटाई और चराई पर कड़ा प्रतिबंध था, साथ ही गन्ने जैसी अधिक जल की माँग वाली फसलों की खेती को हतोत्साहित किया गया था।

86. (B) प्राकृतिक संसाधनों, समाज
जल संभर प्रबंधन का व्यापक उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों, जैसे भूमि और जल, और मानवीय समाज के बीच एक स्थायी संतुलन स्थापित करना है। यह प्रणाली यह सुनिश्चित करती है कि आर्थिक गतिविधियों के लिए संसाधनों का दोहन इस प्रकार हो कि पर्यावरण की गुणवत्ता भी बनी रहे। यह आपसी तालमेल ही ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी उन्मूलन और पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा के लिए सबसे प्रभावी मार्ग माना जाता है।

87. (D) मानसूनी वर्षा
भारत में वर्षा का सबसे बड़ा और मुख्य स्रोत दक्षिण-पश्चिमी मानसून है, जो जून से सितंबर के महीनों के दौरान होता है। देश के अधिकांश भागों में वार्षिक वर्षा का लगभग पचहत्तर से नब्बे प्रतिशत हिस्सा इसी अवधि में प्राप्त होता है। वर्षा की इसी मानसूनी प्रकृति के कारण ही कृषि और जल संसाधनों का प्रबंधन इस सीमित समय में प्राप्त होने वाले जल पर निर्भर करता है।

88. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
भारत में वर्षा से कुल चार हजार घन किलोमीटर जल प्राप्त होता है, लेकिन उपयोग योग्य जल संसाधन केवल एक हजार एक सौ बाईस घन किलोमीटर ही हैं। इसमें से धरातलीय जल छह सौ नब्बे और भूजल चार सौ बत्तीस घन किलोमीटर है। यह आंकड़े दिखाते हैं कि प्रचुर वर्षा के बावजूद, सीमित भंडारण और तकनीकी कारणों से हम केवल एक छोटे हिस्से का ही प्रभावी उपयोग कर पा रहे हैं।

89. (C) नगरीय क्षेत्रों और उद्योगों के लिए
जल का पुनः चक्रण और पुनः उपयोग नगरीय क्षेत्रों और औद्योगिक इकाइयों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद है। शहरों में बर्तन धोने या नहाने के बाद निकलने वाले जल का उपयोग बागवानी और शौचालयों में किया जा सकता है। इसी प्रकार, उद्योगों में उपचारित जल का उपयोग मशीनों को ठंडा करने के लिए किया जा सकता है, जिससे स्वच्छ पेयजल की माँग में उल्लेखनीय कमी आती है।

157. (D) इसने नलकूप चलाने की लागत कम कर जल निष्कर्षण को अनियंत्रित बढ़ावा दिया।
कृषि हेतु दी जाने वाली बिजली सब्सिडी ने नलकूपों को चलाने की परिचालन लागत को कृत्रिम रूप से बहुत कम कर दिया। इससे किसानों के पास जमीन से पानी निकालने के लिए कोई आर्थिक हतोत्साहन नहीं रहा, जिसके परिणामस्वरूप भूमिगत जल का अनियंत्रित निष्कर्षण हुआ। कम लागत ने अत्यधिक सिंचाई को बढ़ावा दिया, जिससे क्षेत्रीय जल स्तर में भारी गिरावट दर्ज की गई है।

158. (A) नदियों में जल प्रवाह में वृद्धि
भौम जल के अति-दोहन से जल स्तर में गिरावट, भूमि धँसाव और तटीय क्षेत्रों में खारे पानी का प्रवेश जैसे गंभीर परिणाम होते हैं। हालाँकि, इसका नदियों में जल प्रवाह बढ़ने से कोई संबंध नहीं है। इसके विपरीत, भूजल स्तर गिरने से नदियों का आधार प्रवाह कम हो सकता है, जिससे जलीय पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

159. (C) समुद्री खारे पानी का मीठे पानी के जलभृतों में प्रवेश करना
खारे पानी के अंतर्वेधन का अर्थ है तटीय क्षेत्रों में समुद्री खारे पानी का मीठे पानी के जलभृतों में प्रवेश करना। जब अत्यधिक निष्कर्षण के कारण मीठे पानी का स्तर गिरता है, तो दबाव कम होने से समुद्र का पानी अंदर आ जाता है। इससे भूमिगत जल की गुणवत्ता स्थायी रूप से खराब हो जाती है और वह भविष्य में उपयोग के लिए अनुपयोगी हो जाता है।

160. (A) फ्लोराइड और आर्सेनिक जैसे हानिकारक तत्वों का सांद्रण बढ़ सकता है।
जब भूमिगत जल का अत्यधिक दोहन होता है और जल स्तर काफी नीचे चला जाता है, तो शेष जल में हानिकारक तत्वों का सांद्रण बढ़ जाता है। इसमें फ्लोराइड और आर्सेनिक जैसे तत्व शामिल हैं, जो गहरी मिट्टी की परतों से पानी में घुल जाते हैं। यह स्थिति मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा पैदा करती है और कई जल जनित रोगों को जन्म देती है।

161. (D) अनुच्छेद 262
भारतीय संविधान का अनुच्छेद 262 संसद को अंतर-राज्यीय नदी जल विवादों के समाधान हेतु विशेष कानून बनाने की शक्ति प्रदान करता है। इसके माध्यम से संसद नदियों या नदी घाटियों के जल के उपयोग, नियंत्रण और वितरण से संबंधित शिकायतों के न्यायनिर्णयन का प्रावधान कर सकती है। यह संघीय ढांचे में जल विवादों को सुलझाने के लिए एक महत्वपूर्ण संवैधानिक तंत्र है।

162. (B) एक जल विवाद न्यायाधिकरण (Tribunal)
अंतर-राज्यीय नदी जल विवाद अधिनियम, 1956 के तहत विवादों के न्यायनिर्णयन के लिए केंद्र सरकार द्वारा एक जल विवाद न्यायाधिकरण का गठन किया जाता है। यह एक विशेष कानूनी निकाय है जो संबंधित राज्यों के दावों को सुनने के बाद अपना निर्णय देता है। यह तंत्र सामान्य अदालती प्रक्रियाओं से अलग एक त्वरित और विशेषज्ञ समाधान प्रदान करने के लिए बनाया गया है।

163. (C) केंद्र सरकार, राज्य के अनुरोध पर
जल विवाद न्यायाधिकरण का गठन केंद्र सरकार द्वारा तब किया जाता है जब कोई संबंधित राज्य सरकार इसके लिए औपचारिक अनुरोध करती है। यह अनुरोध तब किया जाता है जब आपसी बातचीत के माध्यम से विवाद का समाधान नहीं हो पाता है। केंद्र सरकार की यह जिम्मेदारी सुनिश्चित करती है कि राज्यों के बीच जल साझाकरण के मुद्दों को हल करने हेतु उचित मंच मिले।

164. (D) यह अंतिम और सभी पक्षों पर बाध्यकारी होता है।
अंतर-राज्यीय नदी जल विवाद अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार, न्यायाधिकरण द्वारा दिया गया निर्णय पूर्णतः अंतिम होता है। यह निर्णय विवाद में शामिल सभी पक्षों और राज्यों पर कानूनी रूप से बाध्यकारी होता है। इसका मुख्य उद्देश्य लंबी कानूनी प्रक्रियाओं को समाप्त करना और अंतर-राज्यीय जल साझाकरण समझौतों को निश्चितता, स्पष्टता और कानूनी शक्ति प्रदान करना है ताकि संघर्ष खत्म हो।

165. (A) गंगा जल विवाद
दिए गए स्रोत में कावेरी जल विवाद, कृष्णा जल विवाद और सतलुज-यमुना लिंक नहर विवाद जैसे महत्वपूर्ण अंतर-राज्यीय नदी जल विवादों का स्पष्ट उल्लेख किया गया है। हालाँकि, गंगा जल विवाद का इस विशिष्ट संदर्भ में जिक्र नहीं किया गया है। यह विवाद मुख्य रूप से भारत और बांग्लादेश के बीच एक अंतरराष्ट्रीय जल साझाकरण मुद्दा रहा है, न कि आंतरिक अंतर-राज्यीय विवाद का हिस्सा।

166. (B) बिंदु और गैर-बिंदु स्रोत
जल प्रदूषण के स्रोतों को मुख्य रूप से बिंदु स्रोत और गैर-बिंदु स्रोत श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। बिंदु स्रोत किसी विशिष्ट और पहचाने जाने वाले स्थान से होते हैं, जबकि गैर-बिंदु स्रोत एक विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र से उत्पन्न होते हैं। इन दोनों के प्रबंधन के तरीके अलग-अलग होते हैं क्योंकि इनके प्रसार की प्रकृति और प्रदूषण के स्तर में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है।

167. (B) एक नगरपालिका सीवेज उपचार संयंत्र से निर्वहन
नगरपालिका सीवेज उपचार संयंत्र से होने वाला निर्वहन बिंदु स्रोत प्रदूषण का एक सटीक उदाहरण है क्योंकि यह एक विशिष्ट पाइप या आउटलेट से जल निकाय में प्रवेश करता है। ऐसे स्रोतों की पहचान करना और उनमें मौजूद प्रदूषकों की निगरानी करना अपेक्षाकृत सरल होता है। इसके विपरीत, खेतों या सड़कों से होने वाला अपवाह बहुत व्यापक, अनिश्चित और पहचानने में कठिन होता है।

168. (A) क्योंकि यह विस्तृत क्षेत्र से उत्पन्न होता है और इसकी पहचान कठिन होती है।
गैर-बिंदु स्रोत प्रदूषण को नियंत्रित करना चुनौतीपूर्ण है क्योंकि यह किसी एक निश्चित स्थान से नहीं बल्कि विस्तृत क्षेत्र से आता है। यह अक्सर वर्षा जल के साथ भूमि के बड़े हिस्सों से बहकर जल निकायों तक पहुँचता है। इसके प्रसार की अनिश्चितता के कारण इसे विनियमित करने के लिए

सबसे गंभीर स्थिति में है। इस क्षेत्र में विशाल शहरी आबादी का कचरा और औद्योगिक इकाइयों का जहरीला अपशिष्ट बिना किसी उपचार के सीधे नदी में डाल दिया जाता है। इस प्रदूषित खंड के कारण नदी का पारिस्थितिकी तंत्र नष्ट हो गया है और जल विषैला हो गया है।

102. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
केरल और ओडिशा में लैगून धरातलीय जल के मुख्य स्रोत हैं, जबकि नहरें अक्सर बड़ी बहुउद्देशीय परियोजनाओं का हिस्सा होती हैं। पंजाब और हरियाणा में सिंचाई के लिए कुओं और नलकूपों का सर्वाधिक उपयोग किया जाता है। राजस्थान में कुंड या टाँका वर्षा जल संग्रहण की एक सदियों पुरानी और प्रभावी पारंपरिक विधि है। यह विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के अनुकूल स्थानीय जल प्रबंधन तकनीकों को दर्शाता है।

103. (D) सिंचाई से एक ही खेत में एक वर्ष में एक से अधिक फसलें उगाना संभव हो जाता है।
सिंचाई की सुविधा होने पर किसान केवल मानसून पर निर्भर नहीं रहते, जिससे वे रबी और जायद जैसी अन्य ऋतुओं में भी खेती कर सकते हैं। इससे एक ही कृषि वर्ष में दो या तीन फसलें लेना संभव हो जाता है। बहुफसलीकरण की यह प्रक्रिया न केवल कुल खाद्यान्न उत्पादन को बढ़ाती है, बल्कि भूमि की आर्थिक उत्पादकता और किसान की वार्षिक आय में भी महत्वपूर्ण वृद्धि करती है।

104. (A) जनसंख्या बढ़ने से
जल की कुल उपलब्ध मात्रा सीमित है, जबकि देश की जनसंख्या निरंतर बढ़ रही है। जैसे-जैसे लोगों की संख्या बढ़ती है, उसी सीमित जल संसाधन का अधिक लोगों के बीच बँटवारा होता है, जिससे प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता में कमी आती है। यह दबाव न केवल पेयजल पर, बल्कि कृषि और औद्योगिक आवश्यकताओं पर भी पड़ता है, जिससे भविष्य में गंभीर जल संकट की संभावना बढ़ जाती है।

105. (C) संदूषित/गंदे पानी का उपभोग
प्रदूषित या संदूषित जल का सेवन मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत घातक है और यह हैजा, टाइफाइड और पीलिया जैसी कई जल-जनित बीमारियों का मुख्य कारण बनता है। जब अनुपचारित सीवेज या औद्योगिक अपशिष्ट जल स्रोतों में मिलते हैं, तो उनमें सूक्ष्म जीव और हानिकारक रसायन बढ़ जाते हैं। स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए शुद्ध पेयजल तक पहुँच और स्वच्छता का होना विकास की एक बुनियादी आवश्यकता मानी जाती है।

106. (A) जल का चक्रीय स्वरुप
जल की चक्रीय प्रकृति वास्तव में एक सकारात्मक गुण है जो इसे नवीकरणीय बनाता है, यह इसके ह्रास का कारण नहीं है। इसके विपरीत, जनसंख्या का स्थानांतरण, तकनीकी प्रगति के कारण जल का अत्यधिक निष्कर्षण और पर्यावरणीय निम्नीकरण ऐसे कारक हैं जो जल संसाधनों की कमी और उनके असमान वितरण के लिए जिम्मेदार हैं। चक्रीय स्वरुप तो जल को बार-बार उपलब्ध कराकर जीवन की निरंतरता सुनिश्चित करता है।

107. (B) केवल 3 and 4
भारत का क्षेत्रफल विश्व के कुल क्षेत्रफल का केवल दो दशमलव चार पांच प्रतिशत है, न कि चार दशमलव चार पांच प्रतिशत। साथ ही, यह कहना बिल्कुल गलत है कि भारत में जल की कोई कमी नहीं है; वास्तव में, देश के कई हिस्से गंभीर जल संकट का सामना कर रहे हैं। जनसंख्या के बढ़ते दबाव और संसाधनों की सीमित मात्रा ने जल की कमी को एक राष्ट्रीय समस्या बना दिया है।

108. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
जल-संभर विकास कार्यक्रम न केवल जल की उपलब्धता बढ़ाते हैं, बल्कि वे भूमि की उर्वरता और रोजगार के अवसर पैदा करके ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी नया जीवन देते हैं। यह प्रबंधन प्रणाली प्रकृति और समाज के बीच एक संतुलन बनाती है, जो सतत विकास के लिए अनिवार्य है। जब स्थानीय संसाधन सुरक्षित होते हैं, तो समुदाय आर्थिक रूप से मजबूत होता है और पारिस्थितिकी तंत्र भी समृद्ध होता है।

109. (C) शीतलन एवं अग्निशमन के लिए
औद्योगिक क्षेत्रों में बहुत अधिक जल की आवश्यकता मशीनों को ठंडा रखने और सुरक्षा उद्देश्यों जैसे अग्निशमन के लिए होती है। इन कार्यों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले पेयजल की आवश्यकता नहीं होती है। अतः नगरीय अपशिष्ट जल को उचित उपचार के बाद इन औद्योगिक कार्यों में पुनः उपयोग किया जा सकता है। यह न केवल ताजे जल की बचत करता है बल्कि अपशिष्ट जल के सुरक्षित निपटान में भी सहायक होता है।

110. (D) सामाजिक द्वंद्वों और विवादों
जब जल जैसे बुनियादी संसाधन की कमी होती है, तो विभिन्न उपयोगकर्ताओं, क्षेत्रों और राज्यों के बीच इसे प्राप्त करने की प्रतिस्पर्धा बढ़ जाती है। जल संसाधनों का ह्रास अक्सर गंभीर सामाजिक तनाव और कानूनी विवादों को जन्म देता है। ऐतिहासिक रूप से, नदियों के पानी के बँटवारे को लेकर राज्यों के बीच होने वाले विवाद इसके प्रमुख उदाहरण हैं, जो राष्ट्रीय एकता और शांति के लिए बड़ी चुनौती बनते हैं।

111. (A) जल ग्रहण क्षेत्र के आकार और उस क्षेत्र में हुई वर्षा पर
किसी भी नदी में पानी की मात्रा मुख्य रूप से उसके जलग्रहण क्षेत्र यानी बेसिन के विस्तार और उस क्षेत्र में होने वाली कुल वर्षा पर निर्भर करती है। बड़े बेसिन और अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों की नदियों में वर्ष भर प्रचुर जल प्रवाह रहता है। इसके विपरीत, छोटे बेसिन या कम वर्षा वाले क्षेत्रों की नदियाँ शुष्क मौसम में सूख जाती हैं या उनमें जल का प्रवाह बहुत कम हो जाता है।

112. (B) केरल, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल
भारत के तटीय राज्यों केरल, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में अनेक लैगून और झीलें पाई जाती हैं, जो धरातलीय जल के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। यद्यपि इनमें से अधिकांश का जल खारा

90. (A) कृषि उर्वरक और कीटनाशक नदी प्रदूषण में योगदान नहीं करते हैं।
वास्तव में, कृषि क्षेत्र में उपयोग किए जाने वाले रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक नदी प्रदूषण के बहुत बड़े स्रोत हैं। बारिश के दौरान ये रसायन बहकर नदियों और झीलों में मिल जाते हैं, जिससे जल विषाक्त हो जाता है। इसके अलावा, ये तत्व रिसकर भूज़ल को भी प्रदूषित करते हैं। यह संदूषण न केवल जलीय पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट करता है, बल्कि मानव स्वास्थ्य के लिए भी घातक है।

91. (D) सात
अटल भूजल योजना भारत के सात महत्वपूर्ण राज्यों - गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और उत्तर प्रदेश के जल संकट वाले क्षेत्रों में कार्यान्वित की जा रही है। इसका मुख्य केंद्र उन क्षेत्रों में भूजल स्तर को ऊपर उठाना है जहाँ दोहन बहुत अधिक है। यह योजना विश्व बैंक की सहायता से और सामुदायिक भागीदारी के सिद्धांत पर आधारित है ताकि स्थायी जल प्रबंधन सुनिश्चित हो सके।

92. (A) केवल 1
जल एक अजैव संसाधन है क्योंकि यह निर्जीव पदार्थों से बना है, लेकिन यह सभी जैविक जीवन का आधार है। यद्यपि यह नवीकरणीय और चक्रीय है, लेकिन इसकी भौतिक प्रकृति अजैविक ही रहती है। यह पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व, जलवायु के नियमन और पारिस्थितिकी तंत्र के सुचारु संचालन के लिए सबसे महत्वपूर्ण भौतिक घटक माना जाता है, जिसका संरक्षण सभी के लिए अनिवार्य है।

93. (C) बढ़ती हुई माँग, अति उपयोग तथा प्रदूषण
जल अभाव का मुख्य कारण केवल जनसंख्या वृद्धि नहीं है, बल्कि उपलब्ध जल का अत्यधिक दोहन और बढ़ता प्रदूषण भी है। जैसे-जैसे माँग बढ़ रही है, जल स्रोतों को उनकी पुनर्भरण क्षमता से अधिक निकाला जा रहा है। साथ ही, औद्योगिक और घरेलू अपशिष्टों के कारण जल की गुणवत्ता इतनी खराब हो जाती है कि वह उपयोग के योग्य नहीं रह जाता, जिससे जल संकट गहराता है।

94. (D) सभी नागरिकों को मुफ्त पानी उपलब्ध कराना
जल क्रांति अभियान का उद्देश्य जल संसाधनों के संरक्षण और प्रबंधन हेतु जागरूकता फैलाना था, न कि मुफ्त पानी का वितरण करना। इसकी मुख्य गतिविधियों में जल ग्राम का निर्माण, प्रदूषित क्षेत्रों में आर्सेनिक मुक्त कुओं का विकास और मीडिया के माध्यम से जल बचत का संदेश लोगों तक पहुँचाना शामिल था। इसका लक्ष्य जल को एक मूल्यवान संसाधन के रूप में स्थापित कर उसकी सुरक्षा करना था।

95. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और और (R), (A) की सही व्याख्या है।
यद्यपि पृथ्वी का सत्तर प्रतिशत से अधिक भाग जल से ढका है, लेकिन मानव उपयोग के लिए उपलब्ध मीठा या अलवणीय जल कुल राशि का केवल तीन प्रतिशत ही है। इस तीन प्रतिशत का भी बड़ा हिस्सा दुर्गम स्थानों या बर्फ के रूप में है। अतः वास्तव में उपयोग के लिए उपलब्ध जल की मात्रा अत्यंत सीमित है, जो इसे एक दुर्लभ और मूल्यवान संसाधन बनाती है।

96. (B) उत्तर-पश्चिमी प्रदेश और दक्षिणी भारत के कुछ भाग
भारत के उत्तर-पश्चिमी राज्यों जैसे पंजाब, हरियाणा और राजस्थान तथा दक्षिणी राज्यों जैसे तमिलनाडु में भूज़ल का उपयोग उसकी कुल क्षमता की तुलना में बहुत अधिक है। इन क्षेत्रों में वर्षा की कमी और गहन कृषि गतिविधियों के कारण किसान भूज़ल पर अत्यधिक निर्भर हैं। लगातार नलकूपों से पानी निकालने के कारण इन क्षेत्रों में जल स्तर चिंताजनक रूप से नीचे गिरता जा रहा है।

97. (B) कोई भी मुकदमा पुलिस को नहीं दिया जाता।
रालेगॅन सिद्धि में स्थापित 'न्याय पंचायत' प्रणाली का उद्देश्य स्थानीय विवादों का गाँव में ही सौहार्दपूर्ण समाधान करना था। इस प्रभावी व्यवस्था के कारण ग्रामीणों को छोटे-मोटे झगड़ों के लिए पुलिस या कचहरी जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। इससे न केवल समय और धन की बचत हुई, बल्कि गाँव में आपसी भाईचारा और सामाजिक एकता भी मजबूत हुई, जो किसी भी सामुदायिक विकास का आधार है।

98. (A) 4, 1, 3, 2
जल प्रबंधन की दिशा में हरियाली परियोजना 2003 में शुरु हुई, उसके बाद 2012 में राष्ट्रीय जल नीति आई। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना और जल क्रांति अभियान दोनों 2015 के आसपास शुरु किए गए थे। यह कालक्रम स्पष्ट करता है कि कैसे भारत में जल संसाधनों के प्रति नीतिगत दृष्टिकोण समय के साथ अधिक एकीकृत और क्रियान्वयन-उन्मुख होता गया है, जिससे सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

99. (C) पानी को आर्थिक रूप से अच्छा माना जाना चाहिए ताकि इसका संरक्षण हो।
राष्ट्रीय जल नीति 2012 का एक प्रमुख पहलू जल को एक आर्थिक वस्तु मानना है ताकि लोग इसकी बर्बादी रोकें और इसके संरक्षण के प्रति जागरूक हों। जब जल का आर्थिक मूल्य समझा जाता है, तो इसके कुशल उपयोग और प्रबंधन को बढ़ावा मिलता है। इसका उद्देश्य जल की फिजूलखर्ची कम करना और एकत्रित राजस्व का उपयोग जल प्रणालियों के रखरखाव और गुणवत्ता सुधार में करना है।

100. (B) केवल 2 and 3
जल-संभर प्रबंधन एक व्यापक दृष्टिकोण है जिसमें बहते जल को रोकना और भूज़ल संचयन की विभिन्न विधियां शामिल हैं। इसका मूल उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और समाज की आवश्यकताओं के बीच एक संतुलन स्थापित करना है। यह केवल धरातलीय जल तक सीमित नहीं है, और न ही यह केवल सरकारी धन पर निर्भर है; इसकी असली शक्ति स्थानीय समुदाय की सक्रिय और स्वैच्छिक भागीदारी में निहित है।

101. (C) यमुना
यमुना नदी को भारत की सबसे अधिक प्रदूषित नदियों में गिना जाता है, विशेष रूप से दिल्ली और इटावा के बीच का खंड

वाली प्रक्रिया है। इस प्राकृतिक पुनर्चक्रण के कारण ही जल की मात्रा बनी रहती है, हालांकि मानवीय हस्तक्षेप इसकी उपलब्धता और गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है।

124. (B) क्योंकि शहरी क्षेत्रों में जल की माँग पहले ही आपूर्ति से आगे बढ़ चुकी है।
शहरी क्षेत्रों में तेजी से बढ़ती जनसंख्या और कंक्रीट के विस्तार के कारण वर्षा जल जमीन में नहीं रिस पाता, जबकि जल की माँग निरंतर बढ़ रही है। कई शहरों में आपूर्ति और माँग के बीच भारी अंतर पैदा हो गया है, जिससे लोग भूजल पर अत्यधिक निर्भर हो गए हैं। ऐसी स्थिति में वर्षा जल संचयन ही एकमात्र स्थायी समाधान है जो भविष्य की जरूरतों को पूरा कर सकता है।

125. (C) अडयार - दिल्ली
अडयार नदी तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई में बहती है, न कि दिल्ली में। दिल्ली की मुख्य नदी यमुना है जो शहर के कचरे के कारण अत्यधिक प्रदूषित है। इसी प्रकार, साबरमती अहमदाबाद की, गोमती लखनऊ की और मूसी हैदराबाद की प्रमुख नदियाँ हैं जो अपने किनारे बसे शहरों के प्रदूषण से प्रभावित हैं। नदियों और शहरों का यह संबंध उनके संरक्षण की दिशा में बहुत महत्वपूर्ण होता है।

126. (D) कृषि
भारत की जनसंख्या का एक विशाल हिस्सा, लगभग दो-तिहाई भाग, आज भी अपनी आजीविका और रोजगार के लिए कृषि पर निर्भर है। देश के ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि जीवन का मुख्य आधार है, जिसके लिए पर्याप्त जल और अनुकूल जलवायु का होना अनिवार्य है। कृषि पर इतनी बड़ी निर्भरता ही भारत को एक कृषि प्रधान राष्ट्र बनाती है और जल संसाधनों के महत्व को कई गुना बढ़ा देती है।

127. (A) पीने और सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता
जल-संभर विकास का सबसे प्रत्यक्ष और तात्कालिक लाभ स्थानीय समुदायों को पीने के स्वच्छ जल और कृषि हेतु सिंचाई की सुविधा मिलना है। जब वर्षा जल को वैज्ञानिक तरीके से रोका और संग्रहित किया जाता है, तो भूजल स्तर बढ़ता है और सूखे कुएं भी पुनर्जीवित हो जाते हैं। इससे न केवल कृषि उत्पादकता बढ़ती है, बल्कि मवेशियों और घरेलू उपयोग के लिए भी पर्याप्त जल सुनिश्चित होता है।

128. (A) केवल 1, 2 and 3
भारत में नदियों का विशाल जाल है जिसमें दस हजार से अधिक नदियाँ शामिल हैं। दक्षिणी भारत की नदियाँ, जैसे गोदावरी और कृष्णा, अपनी जल क्षमता का अधिकांश भाग पहले ही सिंचाई हेतु उपयोग कर रही हैं। इसके विपरीत, गंगा और ब्रह्मपुत्र बेसिन में प्रचुर जल होने के बावजूद अभी भी उनकी पूरी क्षमता का उपयोग नहीं हो सका है। जल प्रवाह केवल नदी के आकार पर नहीं, वर्षा पर भी निर्भर है।

129. (B) लंबे समय तक जल की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए
जल के संयुक्त उपयोग का मुख्य उद्देश्य सतह पर उपलब्ध जल और भूमि के नीचे छिपे जल के बीच एक इष्टतम संतुलन बनाना है। ऐसा करने से किसी एक स्रोत पर अत्यधिक दबाव नहीं पड़ता, जिससे जल की निरंतर आपूर्ति बनी रहती है। यह रणनीति सूखे के समय में सुरक्षा प्रदान करती है और जल संसाधनों के अंधाधुंध दोहन को रोककर उन्हें भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने में मदद करती है।

130. (A) नदियों को जोड़ना
भारत में जल का वितरण बहुत असमान है; जहाँ कुछ क्षेत्रों में बाढ़ आती है, वहीं अन्य हिस्से सूखे रहते हैं। इस असंतुलन को दूर करने के लिए नदियों को जोड़ने की योजना एक प्रभावी दीर्घकालिक उपाय मानी जाती है। इसके माध्यम से अधिक जल वाले बेसिनों से जल की कमी वाले क्षेत्रों में पानी पहुँचाया जा सकता है, जो न केवल सिंचाई के लिए बल्कि समग्र क्षेत्रीय विकास के लिए भी लाभदायक होगा।

131. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारत में जल प्रबंधन के विभिन्न सफल मॉडल अलग-अलग क्षेत्रों की पहचान बन चुके हैं। रालेगॅन सिद्धि महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में स्थित है, जबकि नीरु-मीरु कार्यक्रम आंध्र प्रदेश की प्रमुख पहल है। अरवारी पानी संसद ने राजस्थान के अलवर जिले का कायाकल्प किया। हरियाली परियोजना केंद्र सरकार द्वारा प्रवर्तित एक व्यापक योजना है। ये सभी मॉडल सामुदायिक भागीदारी और स्थानीय समाधानों की शक्ति को प्रदर्शित करते हैं।

132. (D) जल में अनावश्यक बाहरी पदार्थों का मिलना
जल के गुणों में गिरावट या गुणवत्ता का ह्रास तब होता है जब उसमें सूक्ष्म जीव, रासायनिक अपशिष्ट या औद्योगिक जहरीले पदार्थ जैसे अवांछित तत्व मिल जाते हैं। यह प्रक्रिया जल प्रदूषण कहलाती है, जिससे जल पीने या अन्य उद्देश्यों के लिए अनुपयुक्त और असुरक्षित हो जाता है। शुद्ध जल का दूषित होना जलीय जीवन के साथ-साथ संपूर्ण मानव जाति के स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए एक गंभीर खतरा है।

133. (C) जल का मूल्य
व्यक्तिगत और सामुदायिक स्तर पर जल समस्या के समाधान में सबसे बड़ी चुनौती जल के वास्तविक मूल्य के प्रति जागरूकता की कमी है। अक्सर जल को एक मुफ्त उपलब्ध वस्तु माना जाता है, जिससे इसकी बर्बादी अधिक होती है। जब तक लोग जल को एक सीमित और अमूल्य संसाधन के रुप में नहीं देखेंगे, तब तक संरक्षण के प्रयास पूरी तरह सफल नहीं होंगे। जल का सही मूल्यांकन ही इसके मितव्ययी उपयोग की प्रेरणा देता है।

134. (B) अलवणीय जल की उपलब्धता स्थान और समय के अनुसार समान है।
वास्तव में अलवणीय या मीठे जल की उपलब्धता पूरी दुनिया और भारत में स्थान और समय के अनुसार बहुत असमान है। कुछ क्षेत्रों में जल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, जबकि अन्य क्षेत्र गंभीर सूखे का सामना करते हैं। इसी प्रकार, मानसून के दौरान

होता है, फिर भी ये जलीय पारिस्थितिकी तंत्र और स्थानीय आजीविका के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। इनका उपयोग मुख्य रूप से अंतर्देशीय मछली पालन और नौकायन के लिए किया जाता है, जो इन क्षेत्रों की आर्थिक पहचान का हिस्सा हैं।

113. (B) केवल 2 and 3
लैगून और पश्च जल का उपयोग मुख्य रूप से मछली पालन और नारियल जैसी फसलों की सिंचाई के लिए किया जाता है जो थोड़े खारे पानी को सहन कर सकती हैं। इन जल निकायों में मीठा जल नहीं होता, बल्कि यह समुद्र के प्रभाव के कारण खारा या 'ब्रैकिश' होता है। साथ ही, ये केवल पश्चिमी तट तक सीमित नहीं हैं बल्कि भारत के पूर्वी तट पर ओडिशा और बंगाल में भी व्यापक रूप से मिलते हैं।

114. (A) कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था
एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में जनसंख्या का एक बहुत बड़ा हिस्सा अपनी आजीविका के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से खेती पर निर्भर होता है। भारत जैसे देश में, जहाँ दो-तिहाई जनसंख्या कृषि से जुड़ी है, जल की उपलब्धता सीधे तौर पर आर्थिक समृद्धि और खाद्य सुरक्षा से जुड़ी होती है। ऐसी अर्थव्यवस्थाओं में सिंचाई के साधनों का विकास और जल प्रबंधन सबसे महत्वपूर्ण विकासात्मक प्राथमिकता बन जाता है।

115. (C) सभी प्राकृतिक और मानवीय संसाधनों का संरक्षण और विवेकपूर्ण उपयोग
जल संभर प्रबंधन का व्यापक अर्थ केवल जल तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें भूमि, वनस्पति, जीव-जंतु और स्वयं मानवीय कौशल का एकीकृत विकास शामिल है। इसका लक्ष्य स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सभी संसाधनों का इस प्रकार उपयोग करना है कि समाज की प्रगति भी हो और पर्यावरण भी सुरक्षित रहे। यह एक ऐसी समग्र प्रक्रिया है जो सामुदायिक सशक्तिकरण और पारिस्थितिक संतुलन के बीच सेतु का कार्य करती है।

116. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
भारत के विभिन्न राज्यों में भूजल के उपयोग की दर अलग-अलग है। पंजाब और तमिलनाडु में गहन कृषि के कारण उपयोग की दर बहुत अधिक है, जबकि छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में संसाधनों की प्रचुरता के बावजूद उपयोग बहुत कम है। गुजरात में जल संसाधनों का मध्यम दर से दोहन किया जा रहा है। यह विविधता विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्ध सिंचाई सुविधाओं और कृषि पद्धतियों के अंतर को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

117. (C) शीत और ग्रीष्म ऋतुओं में बिना सिंचाई के खेती करना आसान होता है।
भारत की जलवायु में शीत और विशेष रूप से ग्रीष्म ऋतुएँ बहुत शुष्क होती हैं, इसलिए बिना सिंचाई के खेती करना लगभग असंभव होता है। मानसून के बाद होने वाली खेती के लिए सुरक्षित जल स्रोत का होना अनिवार्य है। वर्षा की कमी और अत्यधिक वाष्पीकरण के कारण मिट्टी की नमी तेजी से खत्म हो जाती है, जिससे फसलों की वृद्धि के लिए कृत्रिम जल आपूर्ति अनिवार्य हो जाती है।

118. (B) 2, 1, 3
भारत में प्रदूषण नियंत्रण हेतु कानूनी ढांचे का विकास 1974 के जल अधिनियम के साथ शुरू हुआ। इसके तीन साल बाद, 1977 में जल उपकर अधिनियम लागू किया गया ताकि औद्योगिक इकाइयों द्वारा जल के उपयोग और प्रदूषण को विनियमित किया जा सके। अंत में, 1986 में व्यापक पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम बनाया गया। यह क्रमिक विकास दर्शाता है कि कैसे सरकार ने समय के साथ पर्यावरणीय चुनौतियों के प्रति कड़े कानून बनाए।

119. (D) केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड
सी.पी.सी.बी. यानी केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड भारत की एक प्रमुख वैधानिक संस्था है जो देश में जल और वायु प्रदूषण की निगरानी और नियंत्रण के लिए जिम्मेदार है। यह बोर्ड नदियों की जल गुणवत्ता की नियमित जाँच करता है और प्रदूषण निवारण हेतु मानक निर्धारित करता है। राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों के साथ मिलकर यह औद्योगिक और नगरीय कचरे के प्रबंधन के लिए नीतिगत दिशा-निर्देश भी प्रदान करता है।

120. (A) जल-संभर विकास और वर्षा जल संग्रहण
जल के संयुक्त उपयोग का अर्थ है धरातलीय जल और भूजल दोनों का एक साथ और संतुलित प्रबंधन करना। जल-संभर विकास और वर्षा जल संग्रहण ऐसी तकनीकें हैं जो इन दोनों स्रोतों को मजबूत करती हैं। वर्षा के जल को रोककर न केवल तत्काल सिंचाई की जा सकती है, बल्कि उसे जमीन के नीचे पहुँचाकर भूजल का पुनर्भरण भी किया जाता है, जो लंबे समय तक जल सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

121. (D) उपरोक्त सभी
रालेगॅन सिद्धि के अनुभव ने यह सिखाया है कि सामुदायिक सहयोग और स्वैच्छिक श्रम से बड़ी परियोजनाओं की लागत कम की जा सकती है। स्थानीय नेतृत्व और सामाजिक सुधार, जैसे नशा मुक्ति और छुआछूत का अंत, विकास की नींव रखते हैं। जल संरक्षण ने न केवल कृषि को समृद्ध किया बल्कि रोजगार पैदा कर लोगों को आत्मनिर्भर बनाया, जिससे गाँव में गर्व और एकता की एक नई भावना का संचार हुआ।

122. (A) जलभृतों का पुनर्भरण
वर्षा जल संग्रहण का एक प्रमुख उद्देश्य जलभृतों यानी भूजल के स्रोतों का पुनर्भरण करना है। इसमें वर्षा के पानी को नालों या गहरे कुओं के माध्यम से सीधे जमीन के नीचे पहुँचाया जाता है। यह प्रक्रिया गिरते भूजल स्तर को रोकने और भविष्य के उपयोग के लिए विशाल जल राशि को जमीन के भीतर सुरक्षित करने में मदद करती है, जो शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के लिए अत्यंत लाभदायक है।

123. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
जल एक नवीकरणीय संसाधन है क्योंकि यह जल चक्र के माध्यम से स्वतः ही शुद्ध और पुनः उपलब्ध होता रहता है। महासागरों से वाष्पीकरण, बादलों का बनना और फिर वर्षा के रूप में जल का वापस धरती पर आना एक निरंतर चलने

या सेवा के निर्माण में वास्तव में कितना जल खर्च हो रहा है। जल ऑडिटिंग जल के उपयोग और उसकी बर्बादी की पहचान करने में मदद करती है, जिससे औद्योगिक और घरेलू क्षेत्रों में जल उपयोग दक्षता को बढ़ाया जा सके।

146. (C) केवल 1, 3 and 4
जल प्रदूषण रोकने के लिए जन जागरूकता और स्थानीय भागीदारी सबसे शक्तिशाली हथियार हैं। हालांकि 1974 के जल अधिनियम जैसे कानून मौजूद हैं, लेकिन उनका क्रियान्वयन उतना प्रभावी नहीं रहा है जितना होना चाहिए था। नदियों के किनारे स्थित उद्योग अभी भी प्रदूषण का मुख्य कारण बने हुए हैं। जल उपकर अधिनियम भी प्रदूषण कम करने के अपने लक्ष्यों को पूरी तरह से प्राप्त करने में अभी तक संघर्ष कर रहा है।

147. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
गंगा और ब्रह्मपुत्र बेसिनों में जल की विशाल उपलब्धता है लेकिन उनके दुर्गम क्षेत्रों के कारण अभी भी उपयोग की बहुत गुंजाइश है। इसके विपरीत, दक्षिण भारत की गोदावरी और कृष्णा नदियों के जल का पहले ही लगभग पूरा उपयोग सिंचाई हेतु किया जा रहा है। यह उत्तरी और दक्षिणी भारत के नदी बेसिनों के बीच जल की उपलब्धता और उनके वास्तविक उपयोग की भिन्नता को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

148. (D) 2% और 5%
औद्योगिक क्षेत्र में जल के उपयोग का पैटर्न यह दर्शाता है कि यहाँ धरातलीय जल का योगदान केवल दो प्रतिशत है, जबकि भौम जल का उपयोग लगभग पांच प्रतिशत है। उद्योगों के लिए भूजल एक विश्वसनीय और स्वतंत्र स्रोत माना जाता है, इसलिए वे इस पर अधिक निर्भर रहते हैं। हालांकि यह मात्रा कृषि की तुलना में बहुत कम है, लेकिन औद्योगिक कचरा जल की गुणवत्ता को बहुत अधिक प्रभावित करता है।

149. (C) सतत पोषणीय विकास
अलवणीय जल की सीमित और घटती उपलब्धता सतत पोषणीय विकास के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। यदि हम वर्तमान में ही अपने सभी जल संसाधनों का अति-दोहन या प्रदूषण कर देंगे, तो भविष्य की पीढ़ियों के पास अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कुछ नहीं बचेगा। इसलिए, जल का कुशल उपयोग और संरक्षण ही वह एकमात्र तरीका है जिससे हम आर्थिक प्रगति और पर्यावरणीय सुरक्षा दोनों को बनाए रख सकते हैं।

150. (B) अजैव संसाधन
जल एक महत्वपूर्ण अजैव संसाधन है जो पृथ्वी के निर्जीव भौतिक पर्यावरण का हिस्सा है। यद्यपि इसमें स्वयं जीवन नहीं होता, लेकिन यह पृथ्वी पर सभी जैविक जीवन और पारिस्थितिकी तंत्र की रीढ़ है। जल की उपलब्धता और उसकी गुणवत्ता ही किसी भी क्षेत्र के जैव-विविधता और मानवीय सभ्यता के विकास का मुख्य आधार बनती है, जिससे इसकी सुरक्षा और प्रबंधन वैश्विक स्तर पर अनिवार्य हो जाता है।

151. (B) राज्य सूची
भारतीय संविधान की सातवीं अनुसूची के अनुसार, जल मुख्य रूप से राज्य सूची का विषय है। यह प्रविष्टि 17 के अंतर्गत आता है, जो राज्यों को अपने क्षेत्र के भीतर जल आपूर्ति, सिंचाई, नहरों, जल निकासी और जल भंडारण के संबंध में कानून बनाने की शक्ति प्रदान करता है। इससे राज्यों को स्थानीय जल प्रबंधन में पर्याप्त स्वायत्तता और महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिलती है।

152. (A) संघ सूची की प्रविष्टि 56
संविधान की सातवीं अनुसूची की संघ सूची की प्रविष्टि 56 केंद्र सरकार को अंतर-राज्यीय नदियों और नदी घाटियों के विनियमन और विकास का अधिकार देती है। यह अधिकार तब लागू होता है जब संसद इसे सार्वजनिक हित में आवश्यक घोषित करती है। इससे केंद्र को बड़ी नदी प्रणालियों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका और व्यापक विनियामक शक्ति प्राप्त होती है।

153. (C) संवैधानिक द्वैतवाद, जहाँ जल राज्य का विषय है लेकिन अंतर-राज्यीय नदियाँ केंद्र के अधीन हैं
भारत में जल शासन में समन्वय की समस्याओं का मुख्य कारण संवैधानिक द्वैतवाद है। जहाँ सामान्य जल प्रबंधन राज्य सूची में है, वहीं अंतर-राज्यीय नदियों का विनियमन केंद्र के अधिकार क्षेत्र में आता है। इस संवैधानिक विभाजन के कारण केंद्र और राज्यों के बीच अक्सर नीतिगत असहमति, कानूनी बाधाएं और महत्वपूर्ण प्रशासनिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

154. (D) वे केवल सलाहकार प्रकृति की हैं।
भारत में 1987, 2002 और 2012 में जारी की गई राष्ट्रीय जल नीतियां मुख्य रूप से सलाहकार प्रकृति की हैं। ये नीतियां राज्यों पर कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं हैं, जिसका अर्थ है कि राज्यों के पास इन्हें अपनी क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुसार लागू करने की छूट है। इसी कारण देश भर में इनका कार्यान्वयन अक्सर असमान और भिन्न रहता है।

155. (C) जल को एक दुर्लभ राष्ट्रीय संसाधन मानना और एकीकृत प्रबंधन को बढ़ावा देना
राष्ट्रीय जल नीतियों का प्राथमिक उद्देश्य जल को एक बहुमूल्य और दुर्लभ राष्ट्रीय संसाधन के रूप में मान्यता देना है। ये नीतियां एकीकृत जल संसाधन विकास और प्रबंधन को सक्रिय रूप से बढ़ावा देने पर केंद्रित हैं। इनका लक्ष्य जल उपयोग की दक्षता में सुधार करना और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखते हुए देश की भविष्य की जल मांगों को पूरा करना है।

156. (B) हरित क्रांति के बाद अपनाई गई कृषि पद्धतियाँ
उत्तर-पश्चिम भारत में हरित क्रांति के आगमन के बाद कृषि पद्धतियों में बड़े परिवर्तन आए। उच्च उपज वाली किस्मों, जैसे चावल और गेहूं की खेती में अत्यधिक पानी की सिंचाई की आवश्यकता होती है। इन फसलों की मांग को पूरा करने के लिए बड़े पैमाने पर नलकूपों का उपयोग किया गया, जिससे इस कृषि-प्रधान क्षेत्र में भौम जल का अत्यधिक दोहन शुरु हुआ।

जल अधिक होता है और शुष्क महीनों में कमी हो जाती है। यह असमानता ही जल के न्यायसंगत वितरण और प्रबंधन को एक बड़ी चुनौती बनाती है।

135. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
जल-संभर विकास सतत पोषणीय विकास का एक आधार स्तंभ है क्योंकि यह प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ-साथ आर्थिक प्रगति को भी बढ़ावा देता है। यह भूमि और जल के बीच संतुलन बनाकर न केवल पर्यावरण को पुनर्जीवित करता है, बल्कि कृषि उत्पादन बढ़ाकर स्थानीय लोगों की आय भी सुनिश्चित करता है। यह समग्र दृष्टिकोण आने वाली पीढ़ियों के लिए संसाधनों की सुरक्षा के साथ वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है।

136. (A) मौजूदा स्थिति का आकलन कर कार्य योजना के लिए रूपरेखा प्रस्तावित करना
राष्ट्रीय जल नीति 2012 का मुख्य उद्देश्य देश के जल संसाधनों की वर्तमान स्थिति का वैज्ञानिक आकलन करना और भविष्य के लिए एक सुदृढ़ कार्य योजना तैयार करना था। इसमें जल के आवंटन, संरक्षण और प्रबंधन हेतु स्पष्ट दिशा-निर्देश दिए गए हैं ताकि जल सुरक्षा और समान वितरण सुनिश्चित हो सके। यह नीति जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों को ध्यान में रखकर बनाई गई है ताकि जल प्रबंधन टिकाऊ हो सके।

137. (C) 1000 हेक्टेयर
जल क्रांति अभियान के अंतर्गत जल संरक्षण और प्रबंधन तकनीकों के प्रदर्शन हेतु एक हजार हेक्टेयर के मॉडल कमांड क्षेत्रों की पहचान की गई थी। इन क्षेत्रों में आधुनिक सिंचाई प्रणालियों, जल संचयन ढाँचों और कुशल कृषि पद्धतियों को लागू कर यह दिखाया गया कि कैसे सीमित जल में भी बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। ये मॉडल क्षेत्र अन्य किसानों और समुदायों के लिए सीखने के केंद्र के रूप में कार्य करते हैं।

138. (D) उपरोक्त सभी
जल संकट के समाधान के लिए जल-संभर विकास, वर्षा जल संग्रहण, पुनर्चक्रण और जल का संयुक्त उपयोग जैसे कई उपाय एक साथ अपनाने की आवश्यकता है। यहाँ तक कि तटीय क्षेत्रों में विलवणीकरण भी एक विकल्प हो सकता है। इन सभी विधियों का एकीकृत प्रयोग ही जल की बढ़ती माँग और सीमित आपूर्ति के बीच के अंतर को पाट सकता है और देश की जल सुरक्षा को भविष्य के लिए मजबूत कर सकता है।

139. (D) प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना
'हर खेत को पानी' प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना का एक बहुत ही महत्वाकांक्षी लक्ष्य है। इसका उद्देश्य देश के उन सभी कृषि क्षेत्रों तक सिंचाई की सुविधा पहुँचाना है जो वर्तमान में केवल वर्षा पर निर्भर हैं। नई सिंचाई प्रणालियों के विस्तार और पुरानी प्रणालियों के आधुनिकीकरण के माध्यम से यह योजना खेती के जोखिमों को कम करने और खाद्यान्न सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

140. (B) जल का ह्रास, आवंटन और नियंत्रण तनाव और विवादों का विषय बन गए हैं।
भारत में जल संसाधनों की बढ़ती कमी के कारण इसके आवंटन और उपयोग पर नियंत्रण को लेकर विभिन्न समूहों और राज्यों के बीच अक्सर तनाव और कानूनी विवाद उत्पन्न होते हैं। नदी जल बँटवारे को लेकर होने वाले अंतर-राज्यीय विवाद इसके स्पष्ट उदाहरण हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि जल प्रबंधन केवल एक तकनीकी विषय नहीं है, बल्कि यह एक संवेदनशील सामाजिक और राजनीतिक मुद्दा भी बन चुका है।

141. (A) 3, 2, 4, 1
भारत में जल संरक्षण हेतु कानूनी और नीतिगत प्रयासों का एक लंबा इतिहास रहा है। सबसे पहले 1974 में जल प्रदूषण निवारण अधिनियम आया, उसके बाद 1977 में जल उपकर अधिनियम बना। 1986 में व्यापक पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम लाया गया और हाल के वर्षों में 2015-16 में जल क्रांति अभियान की शुरुआत हुई। यह क्रम देश में जल और पर्यावरण के प्रति बढ़ती सजगता और सरकारी प्रयासों को दर्शाता है।

142. (D) केवल गाँव के संसाधनों के उपयोग से
रालेगॅन सिद्धि में विद्यालय की इमारत का निर्माण ग्रामीणों की एकता और आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। उन्होंने इसके लिए किसी बाहरी सरकारी अनुदान या दान का इंतजार नहीं किया, बल्कि गाँव के अपने संसाधनों और लोगों के स्वैच्छिक श्रम का उपयोग किया। यह उपलब्धि यह सिद्ध करती है कि यदि कोई समुदाय संगठित हो, तो वह अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को स्वयं पूरा करने की क्षमता रखता है और विकास का स्वयं वाहक बन सकता है।

143. (A) देश के अधिकांश भागों में
भारत की मौसमी जलवायु के कारण देश के अधिकांश हिस्सों में वर्षा केवल कुछ महीनों तक ही सीमित रहती है। शुष्क ऋतुओं, जैसे सर्दी और गर्मी, के दौरान मिट्टी की नमी पूरी तरह खत्म हो जाती है, जिससे बिना सिंचाई के फसलों को उगाना बहुत कठिन हो जाता है। यही कारण है कि भारतीय कृषि की सफलता काफी हद तक एक सुदृढ़ और विश्वसनीय सिंचाई प्रणाली की उपलब्धता पर निर्भर करती है।

144. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में सिंचाई के लिए भूजल का इतना अधिक उपयोग किया गया है कि वहाँ जल स्तर तेजी से नीचे गिर रहा है। इन राज्यों में नलकूपों की संख्या बहुत अधिक है जो चौबीसों घंटे फसलों को पानी पहुँचाते हैं। पुनर्भरण की तुलना में निष्कर्षण अधिक होने के कारण जल संसाधनों की स्थिरता खतरे में है, जो भविष्य में कृषि और विकास के लिए एक बड़ी चुनौती बन सकती है।

145. (B) राष्ट्रीय जल नीति, 2012
राष्ट्रीय जल नीति 2012 में 'जल पदचिन्ह' (वाटर फुटप्रिंट) और 'जल ऑडिटिंग' जैसी आधुनिक अवधारणाओं को अपनाने पर जोर दिया गया है। इनका उद्देश्य यह मापना है कि किसी उत्पाद

व्यापक भूमि प्रबंधन नीतियों और सामुदायिक जागरूकता की अत्यधिक आवश्यकता होती है।

169. (C) जल में पोषक तत्वों, जैसे नाइट्रोजन और फास्फोरस की अत्यधिक वृद्धि
सुपोषण की प्रक्रिया जल निकायों में नाइट्रोजन और फास्फोरस जैसे पोषक तत्वों की अत्यधिक वृद्धि के कारण होती है। ये पोषक तत्व मुख्य रूप से कृषि क्षेत्रों से उर्वरकों के अपवाह के माध्यम से जलाशयों में पहुँचते हैं। पोषक तत्वों की यह अधिकता जलीय पौधों और शैवाल की अनियंत्रित वृद्धि को बढ़ावा देती है, जिससे पूरे पारिस्थितिकी तंत्र का प्राकृतिक संतुलन गंभीर रूप से प्रभावित होता है।

170. (D) यह जल में ऑक्सीजन स्तर को कम कर हाइपोक्सिया उत्पन्न करता है।
सुपोषण के कारण होने वाले शैवाल प्रस्फुटन से जल की सतह पूरी तरह ढक जाती है, जिससे सूरज की रोशनी नीचे नहीं पहुँच पाती। जब ये शैवाल मरते हैं, तो उनके अपघटन की जैविक प्रक्रिया में जल की अधिकांश ऑक्सीजन खर्च हो जाती है। इस स्थिति को हाइपोक्सिया कहते हैं, जिससे मछलियों और अन्य महत्वपूर्ण जलीय जीवों का दम घुटने लगता है और मृत्यु होती है।

171. (C) वे स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों के अनुकूल और समुदाय-आधारित थीं।
पारंपरिक जल संरक्षण प्रणालियाँ मुख्य रूप से स्थानीय भौगोलिक और जलवायु परिस्थितियों के अनुरूप विकसित की गई थीं। इनकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इनका समुदाय-आधारित प्रबंधन और स्थानीय ज्ञान पर गहरी निर्भरता थी। ये प्रणालियाँ अत्यंत सरल इंजीनियरिंग का उपयोग करती थीं और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखते हुए स्थानीय आबादी की जल जरूरतों को कुशलतापूर्वक पूरा करने में सक्षम थीं, जो आज भी प्रासंगिक हैं।

172. (B) जोहड़
राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में वर्षा जल को संचित करने और भूमिगत जल के पुनर्भरण के लिए मिट्टी के छोटे चेक डैम बनाए जाते हैं जिन्हें 'जोहड़' कहा जाता है। ये संरचनाएँ बहते हुए वर्षा जल को रोकती हैं, जिससे पानी जमीन में धीरे-धीरे रिसता है। यह तकनीक स्थानीय कुओं के जल स्तर को बनाए रखने के लिए एक प्राचीन और सफल तरीका रही है।

173. (D) लद्दाख का ठंडा मरुस्थल
'जिंग' लद्दाख के ठंडे मरुस्थलीय क्षेत्र की एक विशिष्ट और प्रभावी पारंपरिक जल संचयन प्रणाली है। इसमें ग्लेशियरों के पिघलने से प्राप्त होने वाले पानी को छोटे चैनलों के माध्यम से विशेष जलाशयों में एकत्र किया जाता है और फिर खेतों तक पहुँचाया जाता है। यह प्रणाली ऊंचे पहाड़ी क्षेत्रों में खेती के लिए पानी की निरंतर और व्यवस्थित आपूर्ति सुनिश्चित करने में अत्यंत सहायक होती है।

174. (A) सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण
तमिलनाडु की प्राचीन 'एरी' प्रणाली आपस में जुड़े तालाबों की एक सुनियोजित श्रृंखला थी। इसका दोहरा मुख्य उद्देश्य कृषि सिंचाई के लिए पर्याप्त जल उपलब्ध कराना और भारी वर्षा के दौरान बाढ़ को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करना था। एक तालाब भरने पर अतिरिक्त पानी दूसरे तालाब में चला जाता था, जिससे जल का कुशल प्रबंधन होता था और स्थानीय फसलों को सुरक्षा मिलती थी।

175. (C) आधुनिक जल संकट के समाधान के रूप में उनकी प्रासंगिकता के कारण
हाल के वर्षों में आधुनिक जल आपूर्ति प्रणालियों की सीमाओं और बढ़ते गंभीर जल संकट के कारण पारंपरिक प्रणालियों के प्रति रुचि पुनः बढ़ी है। ये प्रणालियाँ स्थायी, कम खर्चीली और पर्यावरण के पूर्णतः अनुकूल मानी जाती हैं। इनका पुनरुद्धार जल सुरक्षा सुनिश्चित करने और जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से निपटने के लिए एक व्यावहारिक और प्रभावी समाधान माना जा रहा है।

व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

62. गुजरात के प्रमुख तेल क्षेत्र कौन से हैं?
(A) जामनगर, भावनगर, सूरत
(B) के कच्छ, वडोदरा, राजकोट
(C) पोरबander, जूनागढ़, गांधीनगर
(D) अंकलेश्वर, कालोल, मेहसाणा, नवागाम

63. मुंबई हाई, जो एक प्रमुख अपतटीय तेल क्षेत्र है, की खोज किस वर्ष हुई और उत्पादन कब प्रारंभ हुआ?
(A) 1973 में खोजा गया, 1976 में उत्पादन प्रारंभ
(B) 1970 में खोजा गया, 1972 में उत्पादन प्रारंभ
(C) 1975 में खोजा गया, 1978 में उत्पादन प्रारंभ
(D) 1980 में खोजा गया, 1982 में उत्पादन प्रारंभ

64. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में दो प्रकार के तेल शोधन कारखाने हैं: क्षेत्र आधारित और बाजार आधारित।
2. डिगबोई तेल शोधन कारखाना एक बाजार आधारित कारखाने का उदाहरण है।
3. बरौनी तेल शोधन कारखाना एक क्षेत्र आधारित कारखाने का उदाहरण है।
4. क्षेत्र आधारित कारखाने तेल क्षेत्रों के निकट होते हैं, जबकि बाजार आधारित कारखाने खपत बाजारों के पास होते हैं।
5. मथुरा तेल शोधन कारखाना एक क्षेत्र आधारित कारखाना है।

भारत में तेल शोधन कारखानों के प्रकारों के संबंध में उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) केवल 1, 2, 3 और 4

65. प्राकृतिक गैस का उपयोग किस कार्य के लिए नहीं किया जाता है?
(A) औद्योगिक ईंधन के रूप में
(B) भवन निर्माण सामग्री के रूप में
(C) बिजली पैदा करने के लिए ईंधन के रूप में
(D) रासायनिक, पेट्रोकेमिकल और उर्वरक उद्योगों में कच्चे माल के रूप में

66. भारत के प्रमुख गैस भंडार कहाँ पाए जाते हैं?
(A) मुंबई हाई और पश्चिमी तट के संबद्ध क्षेत्र
(B) पूर्वी तट पर महानदी बेसिन
(C) राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्र
(D) उत्तर भारत के मैदानी भाग

67. हाल ही में प्राकृतिक गैस के नए भंडार की खोज किस बेसिन में की गई है?
(A) नर्मदा-तापी बेसिन
(B) गंगा-यमुना बेसिन
(C) कृष्णा-गोदावरी बेसिन
(D) चंबल बेसिन

68. निम्नलिखित में से कौन सा ऊर्जा का एक अपरंपरागत (गैर-पारंपरिक) स्रोत है?
(A) कोयला
(B) नाभिकीय ऊर्जा
(C) पेट्रोलियम
(D) पवन ऊर्जा

69. अपरंपरागत ऊर्जा स्रोतों की एक मुख्य विशेषता क्या है?
(A) ये समाप्य संसाधन हैं।
(B) ये पर्यावरण के लिए हानिकारक हैं।
(C) ये नवीकरण योग्य स्रोत हैं।
(D) ये असमान रूप से वितरित हैं।

70. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए:
List I: (तेल क्षेत्र)
P. डिगबोई
Q. अंकलेश्वर
R. मुंबई हाई
S. कृष्णा-गोदावरी बेसिन

List II: (अवस्थिति)
1. गुजरात
2. पूर्वी तट
3. असम
4. अपतटीय क्षेत्र (महाराष्ट्र)

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

71. नाभिकीय ऊर्जा के उत्पादन में प्रयुक्त होने वाले महत्वपूर्ण खनिज कौन से हैं?
(A) बॉक्साइट और चूना-पत्थर
(B) लौह अयस्क और मैंगनीज
(C) अभ्रक और जिप्सम
(D) यूरेनियम और थोरियम

72. निम्नलिखित घटनाओं को उनके सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. ट्रांबे परमाणु ऊर्जा संस्थान की स्थापना
2. भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC) के रूप में पुनः नामकरण
3. परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से क्रम सही हैं?

9. निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र 'उत्तर-पूर्वी पठारी प्रदेश' खनिज पेटी के अंतर्गत नहीं आता है?
(A) छोटानागपुर (झारखंड)
(B) ओडिशा का पठार
(C) अरावली (राजस्थान)
(D) पश्चिम बंगाल

10. दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): खनिजों की गुणवत्ता और मात्रा के बीच प्रतिलोमी संबंध पाया जाता है।
कारण (R): अधिक गुणवत्ता वाले खनिज, कम गुणवत्ता वाले खनिजों की तुलना में अधिक मात्रा में पाए जाते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

11. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह पेटी कर्नाटक, गोवा तथा तमिलनाडु उच्च भूमि और केरल पर विस्तृत है।
2. यह पेटी लौह धातुओं तथा बॉक्साइट में समृद्ध है।
3. इस क्षेत्र में नेवेली लिग्नाइट को छोड़कर कोयला निक्षेपों का अभाव है।
4. केरल में मोनाजाइट तथा थोरियम के निक्षेप हैं।
5. इस पेटी के खनिज निक्षेप उत्तर-पूर्वी पेटी की भाँति विविधतापूर्ण हैं।

भारत के दक्षिण-पश्चिमी पठार प्रदेश के बारे में उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 1, 2, 3, 4
(C) केवल 2, 3, 5
(D) सभी कथन सही हैं

12. भारत में कोयले का लगभग 97 प्रतिशत भाग किन नदी घाटियों में पाया जाता है?
(A) गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र और सिन्धु
(B) दामोदर, सोन, महानदी और गोदावरी
(C) कृष्णा, कावेरी, नर्मदा और तापी
(D) सतलुज, ब्यास, रावी और चेनाब

13. भारत के किस खनिज पेटी को भवन निर्माण के पत्थरों (जैसे बलुआ पत्थर, ग्रेनाइट, संगमरमर) के लिए समृद्ध माना जाता है?
(A) उत्तर-पूर्वी पठारी प्रदेश
(B) दक्षिण-पश्चिमी पठार प्रदेश
(C) उत्तर-पश्चिमी प्रदेश
(D) हिमालयी पेटी

14. निम्नलिखित में से कौन सा एक अलौह धात्विक खनिज का उदाहरण है?
(A) लौह अयस्क
(B) मैंगनीज
(C) क्रोमाइट
(D) बॉक्साइट

15. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए:
List I: (खनिज पेटी)
P. उत्तर-पूर्वी पठारी प्रदेश
Q. दक्षिण-पश्चिमी पठार प्रदेश
R. उत्तर-पश्चिमी प्रदेश
S. हिमालयी पेटी

List II: (प्रमुख खनिज)
1. ताँबा, जिंक
2. लौह अयस्क, कोयला
3. ताँबा, सीसा, जस्ता
4. लौह अयस्क, बॉक्साइट

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

16. भारत में पेट्रोलियम के आरक्षित भंडार मुख्य रूप से कहाँ पाए जाते हैं?
(A) राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश
(B) असम, गुजरात तथा मुंबई हाई
(C) ओडिशा, पश्चिम बंगाल और बिहार
(D) कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु

17. उत्तर-पश्चिमी खनिज प्रदेश के संबंध में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) यह प्रदेश राजस्थान में अरावली और गुजरात के कुछ भाग पर विस्तृत है।
(B) यह प्रदेश कोयला और लौह अयस्क के विशाल निक्षेपों के लिए जाना जाता है।
(C) यहाँ के खनिज धारवाड़ क्रम की शैलों से संबद्ध हैं।
(D) ताँबा, जिंक आदि यहाँ के प्रमुख खनिज हैं।

18. 'खनिज' की सबसे उपयुक्त परिभाषा क्या है?
(A) कार्बनिक या अकार्बनिक उत्पत्ति का एक प्राकृतिक पदार्थ जिसके निश्चित रासायनिक एवं भौतिक गुण हों।
(B) केवल जैविक प्रक्रियाओं से उत्पन्न कार्बनिक उत्पत्ति का एक विशिष्ट प्राकृतिक भूगर्भिक पदार्थ।
(C) निश्चित रासायनिक संरचना वाला केवल अकार्बनिक स्रोतों से निर्मित एक प्राकृतिक रूप से प्राप्त पदार्थ।
(D) मानव निर्मित अथवा प्राकृतिक रूप से प्राप्त कोई भी उपयोगी भूगर्भिक पदार्थ जो अर्थव्यवस्था में सहायक हो।

19. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

39. निम्नलिखित में से कौन सा राज्य बॉक्साइट का एक गौण उत्पादक है?
(A) ओडिशा
(B) गुजरात
(C) झारखंड
(D) कर्नाटक

40. ताँबा धातु का उपयोग किस उद्योग के लिए अपरिहार्य माना जाता है?
(A) विद्युत उद्योग
(B) सीमेंट उद्योग
(C) उर्वरक उद्योग
(D) कपड़ा उद्योग

41. भारत में ताँबा के मुख्य निक्षेप कहाँ पाए जाते हैं?
(A) ओडिशा के मयूरभंज, कर्नाटक के बेल्लारी, महाराष्ट्र के नागपुर तथा छत्तीसगढ़ के बस्तर जिलों में।
(B) तमिलनाडु के सलेम, आंध्र प्रदेश के कुर्नूल, गुजरात के अमरेली तथा हरियाणा के भिवानी जिलों में।
(C) झारखंड के सिंहभूम, मध्य प्रदेश के बालाघाट तथा राजस्थान के झुंझुनु एवं अलवर जिलों में।
(D) उत्तर प्रदेश के मिर्ज़ापुर, बिहार के गया, पश्चिम बंगाल के पुरुलिया तथा पंजाब के मानसा जिलों में।

42. भारत में उत्पादित अधात्विक खनिजों में कौन सा सबसे महत्वपूर्ण है?
(A) अभ्रक
(B) चूना-पत्थर
(C) डोलोमाइट
(D) फोस्फेट

43. अभ्रक का मुख्य उपयोग किन उद्योगों में किया जाता है?
(A) सीमेंट और इस्पात
(B) कागज और चीनी
(C) रसायन और उर्वरक
(D) विद्युत एवं इलेक्ट्रॉनिक्स

44. झारखंड में उच्च गुणवत्ता वाला अभ्रक कहाँ पाया जाता है?
(A) सिंहभूम ताँबा पट्टी में
(B) निचले हज़ारीबाग पठार की पट्टी में
(C) राजमहल पहाड़ियों में
(D) दामोदर घाटी क्षेत्र में

45. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए:
List I: (खनिज)
P. बॉक्साइट
Q. ताँबा
R. अभ्रक
S. मैंगनीज
List II: (प्रमुख खनन क्षेत्र)
1. झुंझुनु
2. नेल्लोर
3. बालाघाट
4. लोहारडागा
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

46. आंध्र प्रदेश के किस जिले में सर्वोत्तम प्रकार के अभ्रक का उत्पादन किया जाता है?
(A) गुंटूर
(B) कुर्नूल
(C) कडप्पा
(D) नेल्लोर

47. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कोयला, पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस समाप्य परंपरागत स्रोत हैं।
2. परमाणु ऊर्जा एक अनवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है।
3. कोयला और पेट्रोलियम जीवाश्म ईंधन के रूप में जाने जाते हैं।
4. ऊर्जा की आवश्यकता केवल उद्योग और परिवहन में होती है, कृषि में नहीं।
5. परंपरागत ऊर्जा स्रोत पर्यावरण-अनुकूल होते हैं।

भारत में ऊर्जा संसाधनों के संबंध में उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 1, 2 और 4
(C) केवल 2, 4 and 5
(D) केवल 1, 3 and 5

48. राजस्थान में अभ्रक की पट्टी कहाँ विस्तृत है?
(A) जैसलमेर से बाड़मेर तक
(B) जयपुर से भीलवाड़ा और उदयपुर के आसपास
(C) अलवर से भरतपुर तक
(D) कोटा से बूंदी तक

49. निम्नलिखित में से कौन सा ऊर्जा का परंपरागत स्रोत नहीं है?
(A) कोयला
(B) सौर ऊर्जा
(C) पेट्रोलियम
(D) प्राकृतिक गैस

50. भारत में कोयला निक्षेपों का लगभग 80 प्रतिशत भाग किस प्रकार का है?
(A) बिटुमिनस और गैर-कोककारी श्रेणी
(B) ऐंथ्रासाइट और कोकिंग श्रेणी
(C) लिग्नाइट और पीट
(D) सब-बिटुमिनस और कोकिंग श्रेणी

कच्चे माल के रूप में।

29. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मैंगनीज निक्षेप लगभग सभी भूगर्भिक संरचनाओं में पाया जाता है।
2. मुख्य रूप से मैंगनीज धारवाड़ क्रम की शैलों से संबद्ध है।
3. भारत में मैंगनीज का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य कर्नाटक है।
4. महाराष्ट्र में मैंगनीज की खदानें इस्पात संयंत्रों के बहुत निकट स्थित हैं।
5. तेलंगाना, गोआ तथा झारखंड मैंगनीज के प्रमुख उत्पादक हैं।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 5
(D) केवल 2, 4 और 5

30. मैंगनीज निक्षेप मुख्य रूप से किस भूगर्भिक क्रम की शैलों से संबद्ध है?
(A) गोंडवाना क्रम
(B) टर्शियरी क्रम
(C) विंध्य क्रम
(D) धारवाड़ क्रम

31. ओडिशा में मैंगनीज की मुख्य खदानें कहाँ स्थित हैं?
(A) बोनाई, केंदुझर, सुंदरगढ़, गंगपुर
(B) मयूरभंज और सुंदरगढ़
(C) कटक और पुरी
(D) बालासोर और भद्रक

32. दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): बॉक्साइट को छोड़कर अन्य सभी अलौह-खनिजों के संबंध में भारत की स्थिति निम्न है।
कारण (R): भारत में ताँबा, सीसा, जस्ता जैसी अलौह धातुओं के भंडार अपर्याप्त हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

33. मध्य प्रदेश में मैंगनीज की पट्टी किन जिलों तक विस्तृत है?
(A) रीवा, सतना और सीधी
(B) बालाघाट, छिंदवाड़ा, निमाड़, मांडला और झाबुआ
(C) इंदौर, उज्जैन और देवास
(D) ग्वालियर, शिवपुरी और मुरैना

34. बॉक्साइट किस धातु का अयस्क है और इसका उपयोग किसके विनिर्माण में किया जाता है?
(A) एल्यूमिनियम
(B) ताँबा
(C) लोहा
(D) जिंक

35. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए:
List I: (मैंगनीज उत्पादक क्षेत्र)
P. बोनाई, केंदुझर
Q. बालाघाट, छिंदवाड़ा
R. धारवाड़, बल्लारी
S. नागपुर, भंडारा

List II: (राज्य)
1. महाराष्ट्र
2. कर्नाटक
3. मध्य प्रदेश
4. ओडिशा

(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

36. बॉक्साइट मुख्यतः किन निक्षेपों में पाया जाता है और किन चट्टानों से संबद्ध है?
(A) गोंडवाना निक्षेपों और बेसाल्ट चट्टानों से
(B) धारवाड़ निक्षेपों और ग्रेनाइट चट्टानों से
(C) विंध्य निक्षेपों और बलुआ पत्थर से
(D) टर्शियरी निक्षेपों और लैटेराइट चट्टानों से

37. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ओडिशा बॉक्साइट का सबसे बड़ा उत्पादक है।
2. झारखंड में लोहारडागा जिले की पैटलैंड्स में इसके समृद्ध निक्षेप हैं।
3. छत्तीसगढ़ में बॉक्साइट निक्षेप अमरकंटक के पठार में पाए जाते हैं।
4. मध्य प्रदेश के कटनी, जबलपुर तथा बालाघाट में बॉक्साइट के महत्वपूर्ण निक्षेप हैं।

बॉक्साइट के संबंध में उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) 1, 2, और 3
(D) 1, 2, 3 और 4

38. गुजरात के किन क्षेत्रों में बॉक्साइट के प्रमुख निक्षेप हैं?
(A) कच्छ और सूरत
(B) भावनगर और जामनगर
(C) अहमदाबाद और गांधीनगर
(D) वडोदरा और राजकोट

अध्याय 13

खनिज तथा ऊर्जा संसाधन

1. खनिज को किस आधार पर धात्विक और अधात्विक श्रेणियों में समूहित किया जाता है?
(A) आर्थिक मूल्य एवं उपलब्धता के आधार पर
(B) रासायनिक एवं भौतिक गुणधर्मों के आधार पर
(C) खनन की विधि एवं गहराई के आधार पर
(D) औद्योगिक उपयोग एवं मांग के आधार पर

2. दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): भारत, अपनी विविधतापूर्ण भूगर्भिक संरचना के कारण विविध प्रकार के खनिज संसाधनों से संपन्न है।
कारण (R): भारत में भारी मात्रा में बहुमूल्य खनिज पूर्व-पुराजीवी काल में उद्धृत हुए हैं और मुख्यतः प्रायद्वीपीय भारत की आग्नेय तथा कायांतरित चट्टानों से संबद्ध हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

3. निम्नलिखित में से कौन सा खनिज ईंधन खनिजों की श्रेणी में आता है?
(A) माइका
(B) चूना-प्रस्तर
(C) कोयला
(D) ग्रेफाइट

4. खनिजों की विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा कथन सही है?
(A) खनिज क्षेत्र में समान रूप से वितरित होते हैं।
(B) खनिजों की गुणवत्ता और मात्रा के बीच सीधा संबंध होता है।
(C) खनिजों का आवश्यकता के समय तुरंत पुनर्भरण किया जा सकता है।
(D) सभी खनिज समय के साथ समाप्त हो जाते हैं।

5. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए:
List I: (खनिज का प्रकार)
P. लौह धात्विक खनिज
Q. अलौह धात्विक खनिज
R. ईंधन खनिज
S. अन्य अधात्विक खनिज
List II: (उदाहरण)
1. पेट्रोलियम
2. माइका
3. लोहा
4. ताँबा
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

6. उत्तर भारत का विशाल जलोढ़ मैदानी भूभाग आर्थिक उपयोग के खनिजों से विहीन क्यों है?
(A) क्योंकि यह क्षेत्र घनी आबादी वाला है और यहाँ भूमिगत संसाधनों के दोहन की संभावना कम है।
(B) क्योंकि इस क्षेत्र की भूगर्भिक संरचना में खनिजयुक्त चट्टानें नहीं हैं।
(C) क्योंकि यहाँ खनन करना तकनीकी रूप से बहुत कठिन है और आर्थिक रूप से अव्यवहार्य है।
(D) क्योंकि सरकार ने इस क्षेत्र के पारिस्थितिक संतुलन के कारण खनन पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है।

7. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. उत्तर-पूर्वी पठारी प्रदेश में लौह अयस्क, कोयला, मैंगनीज और अभ्रक जैसे खनिज उपलब्ध हैं।
2. दक्षिण-पश्चिमी पठार प्रदेश कोयला निक्षेपों में अत्यधिक समृद्ध है।
3. उत्तर-पश्चिमी प्रदेश के खनिज धारवाड़ क्रम की शैलों से संबद्ध हैं।
4. हिमालयी पेटी में केवल ईंधन खनिजों के भंडार पाए जाते हैं।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 1 और 4

8. अधात्विक खनिजों को उनकी उत्पत्ति के आधार पर किन दो मुख्य प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है?
(A) कार्बनिक और अकार्बनिक
(B) क्रिस्टलीय और गैर-क्रिस्टलीय
(C) कठोर और नरम
(D) ज्वलनशील और गैर-ज्वलनशील

51. भारत में गोंडवाना कोयले के प्रमुख संसाधन किन राज्यों में अवस्थित कोयला क्षेत्रों में हैं?
(A) तमिलनाडु, गुजरात और राजस्थान
(B) असम, मेघालय और नागालैंड
(C) पश्चिम बंगाल, झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़
(D) जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड

52. भारत में सर्वाधिक महत्वपूर्ण गोंडवाना कोयला क्षेत्र किस घाटी में स्थित है?
(A) गोदावरी घाटी
(B) महानदी घाटी
(C) सोन घाटी
(D) दामोदर घाटी

53. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना
2. तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग की स्थापना
3. ट्रांबे परमाणु ऊर्जा संस्थान की स्थापना
4. मुंबई हाई में तेल उत्पादन का प्रारंभ

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से क्रम सही हैं?
(A) 1, 3, 2, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 2, 4, 3
(D) 3, 1, 2, 4

54. झरिया, जो भारत का सबसे बड़ा कोयला क्षेत्र है, किस राज्य में स्थित है?
(A) पश्चिम बंगाल
(B) झारखंड
(C) ओडिशा
(D) छत्तीसगढ़

55. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए:
List I: (कोयला क्षेत्र)
P. रानीगंज
Q. सिंगरौली
R. कोरबा
S. तलचर
List II: (राज्य)
1. छत्तीसगढ़
2. ओडिशा
3. मध्य प्रदेश
4. पश्चिम बंगाल

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-3

56. टर्शियरी कोयला भारत के किन राज्यों में पाया जाता है?
(A) असम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, नागालैंड
(B) मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश
(C) ओडिशा, पश्चिम बंगाल, झारखंड
(D) कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल

57. भूरा कोयला या लिग्नाइट भारत के किन क्षेत्रों में पाया जाता है?
(A) विशेषतः दामोदर और सोन नदी घाटी क्षेत्र में।
(B) छोटानागपुर पठार के झारखंड और पश्चिम बंगाल के आंतरिक भागों में।
(C) तमिलनाडु के तटीय भागों, पुडुचेरी, गुजरात और जम्मू एवं कश्मीर।
(D) ऊपरी असम घाटी और मेघालय के पहाड़ी खनिज क्षेत्रों में।

58. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह द्रव और गैसीय अवस्था के हाइड्रोकार्बन से युक्त होता है।
2. इसकी रासायनिक संरचना, रंग और विशिष्ट घनत्व में भिन्नता पाई जाती है।
3. यह आग्नेय शैलों में पाया जाता है।
4. इसके सह-उत्पाद पेट्रो-रसायन उद्योगों के लिए कच्चे माल का काम करते हैं।

पेट्रोलियम के संबंध में उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 1, 3 और 4
(C) केवल 2 और 3
(D) सभी कथन सही हैं

59. पेट्रोलियम को 'तरल सोना' क्यों कहा जाता है?
(A) क्योंकि यह सोने की तरह पीला होता है।
(B) क्योंकि इसका खनन सोने की खदानों में होता है।
(C) क्योंकि यह बहुत महंगा होता है।
(D) क्योंकि यह दुर्लभ है और इसके विविध उपयोग हैं।

60. भारत में व्यवस्थित ढंग से तेल अन्वेषण और उत्पादन किस वर्ष तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग (ONGC) की स्थापना के बाद प्रारंभ हुआ?
(A) 1947
(B) 1956
(C) 1950
(D) 1961

61. दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): अपपरिष्कृत पेट्रोलियम को सीधे प्रयोग में नहीं लाया जा सकता।
कारण (R): कुओं से निकाला गया तेल अनेक अशुद्धियों से परिपूर्ण होता है और इसे शोधित किए जाने की आवश्यकता होती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही

1. इस पेटी के अंतर्गत छोटानागपुर, ओडिशा का पठार, पश्चिम बंगाल तथा छत्तीसगढ़ के कुछ भाग आते हैं।
2. प्रमुख लौह एवं इस्पात उद्योग इसी क्षेत्र में अवस्थित हैं।
3. यहाँ पर केवल बॉक्साइट और अभ्रक जैसे खनिज ही उपलब्ध हैं।
4. इस क्षेत्र में कोयला के विशाल भंडार पाए जाते हैं।

भारत में प्रमुख खनिज पेटी 'उत्तर-पूर्वी पठारी प्रदेश' के बारे में उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?

(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 1, 3 और 4
(C) केवल 2 और 3
(D) सभी कथन सही हैं

20. नए आरक्षित खनिज क्षेत्र कृष्णा-गोदावरी तथा कावेरी बेसिनों में पाए गए हैं, यह किस खनिज से संबंधित हैं?

(A) कोयला
(B) लौह अयस्क
(C) बॉक्साइट
(D) पेट्रोलियम

21. भारत में पाए जाने वाले लौह अयस्क के दो प्रमुख प्रकार कौन से हैं?

(A) लिमोनाइट और साइडराइट
(B) गोइथाइट और टकोनाइट
(C) हेमेटाइट और मैग्नेटाइट
(D) हेमेटाइट और साइडराइट

22. दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।

अभिकथन (A): लौह-अयस्क की खदानें देश के उत्तर-पूर्वी पठार प्रदेश में कोयला क्षेत्रों के निकट स्थित हैं।

कारण (R): लौह अयस्क के प्रगलन के लिए कोयले की आवश्यकता होती है, जिससे यह निकटता लाभप्रद है।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

23. निम्नलिखित में से कौन सी लौह अयस्क की खान ओडिशा राज्य में स्थित नहीं है?

(A) गुरुमहिसानी
(B) सुलाएपत
(C) बादामपहाड़
(D) नोआमुंडी

24. भारत के लौह अयस्क के कुल आरक्षित भंडारों का लगभग 95 प्रतिशत भाग किन राज्यों में स्थित है?

(A) ओडिशा, झारखंड, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, गोवा, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु।
(B) केवल ओडिशा, झारखंड तथा छत्तीसगढ़ के सघन खनिज क्षेत्रों में।
(C) मुख्य रूप से कर्नाटक, गोवा और महाराष्ट्र के तटीय एवं आंतरिक भागों में।
(D) राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के विखंडित खनिज निक्षेपों में।

25. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए:

List I: (लौह अयस्क खान)
P. गुरुमहिसानी
Q. नोआमुंडी
R. डल्ली-राजहरा
S. कुद्रेमुख

List II: (राज्य)
1. छत्तीसगढ़
2. कर्नाटक
3. ओडिशा
4. झारखंड

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

26. झारखंड की नोआमुंडी और गुआ जैसी महत्वपूर्ण लौह अयस्क खदानें किन जिलों में स्थित हैं?

(A) पूर्वी और पश्चिमी सिंहभूम
(B) हजारीबाग और कोडरमा
(C) दुमका और गोड्डा
(D) रांची और लोहरदगा

27. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. बल्लारि जिले के संदूर-होसपेटे क्षेत्र में
2. चिकमगलूरु जिले की बाबा बूदन पहाड़ियों में
3. शिवमोगा और चित्रदुर्ग जिलों में
4. कोलार और रायचूर जिलों में

कर्नाटक में लौह अयस्क के निक्षेपों के संबंध में उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) सभी कथन सही हैं

28. मैंगनीज का मुख्य उपयोग क्या है?

(A) घरों में विद्युत वायरिंग हेतु तांबे के विकल्प के रूप में विद्युत तार बनाने में।
(B) लौह अयस्क के प्रगलन तथा लौह-मिश्रधातु के विनिर्माण में।
(C) कंक्रीट के साथ मिलाकर उच्च गुणवत्ता वाली भवन निर्माण सामग्री के रूप में।
(D) कृषि पैदावार बढ़ाने के लिए उर्वरक उद्योग में आवश्यक

(A) 1, 2, 3
(B) 3, 1, 2
(C) 2, 3, 1
(D) 3, 2, 1

73. यूरेनियम निक्षेप भारत में किन शैलों में पाए जाते हैं?
(A) गोंडवाना शैल
(B) टर्शियरी शैल
(C) धारवाड़ शैल
(D) विंध्य शैल

74. निम्नलिखित में से किस स्थान पर यूरेनियम अयस्क नहीं पाया जाता है?
(A) केरल का तटीय क्षेत्र
(B) सिंहभूम ताँबा पट्टी
(C) राजस्थान के उदयपुर, अलवर जिले
(D) मध्य प्रदेश का दुर्ग जिला

75. थोरियम भारत में मुख्यतः किससे और कहाँ प्राप्त किया जाता है?
(A) यूरेनियम अयस्क से, सिंहभूम में
(B) बॉक्साइट निक्षेपों से, ओडिशा में
(C) कोयला खदानों से, झारखंड में
(D) मोनाजाइट बालू से, केरल के तटीय क्षेत्र में

76. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. तारापुर परमाणु ऊर्जा संयंत्र महाराष्ट्र में स्थित है।
2. रावतभाटा संयंत्र राजस्थान के कोटा के पास है।
3. कलपक्कम संयंत्र कर्नाटक में स्थित है।
4. नरोरा संयंत्र उत्तर प्रदेश में है।
5. कैगा संयंत्र गुजरात में स्थित है।

भारत के नाभिकीय ऊर्जा संयंत्रों के बारे में उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, और 4
(B) केवल 1, 3, और 5
(C) केवल 2, 3, और 4
(D) सभी कथन सही हैं

77. परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना किस वर्ष की गई थी?
(A) 1947
(B) 1954
(C) 1948
(D) 1967

78. किस ऊर्जा स्रोत को फोटोवोल्टाइक सेलों में सूर्य की किरणों को परिवर्तित करके प्राप्त किया जाता है?
(A) पवन ऊर्जा
(B) भूतापीय ऊर्जा
(C) ज्वारीय ऊर्जा
(D) सौर ऊर्जा

79. दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): भारत के पश्चिमी भागों गुजरात व राजस्थान में सौर ऊर्जा के विकास की अधिक संभावनाएँ हैं।
कारण (R): इन क्षेत्रों में वर्ष के अधिकांश समय आकाश मेघ-रहित रहता है और सौर विकिरण की तीव्रता अधिक होती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

80. सौर ऊर्जा कोयला अथवा तेल आधारित संयंत्रों की अपेक्षा कितने प्रतिशत अधिक प्रभावी है?
(A) 5 प्रतिशत
(B) 7 प्रतिशत
(C) 10 प्रतिशत
(D) 15 प्रतिशत

81. पवन ऊर्जा के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) यह पूर्णरूपेण प्रदूषण मुक्त स्रोत है।
(B) भारत में पवन ऊर्जा उत्पादन की कोई संभावना नहीं है।
(C) यह ऊर्जा का असमाप्य स्रोत है।
(D) पवन की गतिज ऊर्जा को टरबाइन से विद्युत ऊर्जा में बदला जाता है।

82. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए:
List I: (नाभिकीय ऊर्जा परियोजना)
P. तारापुर
Q. रावतभाटा
R. कलपक्कम
S. नरोरा

List II: (राज्य)
1. राजस्थान
2. उत्तर प्रदेश
3. महाराष्ट्र
4. तमिलनाडु

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

83. भारत के किन राज्यों में पवन ऊर्जा के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ विद्यमान हैं?
(A) बिहार, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल
(B) पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड
(C) राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक
(D) ओडिशा, छत्तीसगढ़, झारखंड

84. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. महासागरीय धाराएँ ऊर्जा का अपरिमित भंडार-गृह हैं।
2. भारत के पश्चिमी तट पर वृहत ज्वारीय तरंगें उत्पन्न होती हैं।
3. भारत ने ज्वारीय ऊर्जा का बड़े पैमाने पर व्यावसायिक उपयोग शुरू कर दिया है।
4. ज्वारीय ऊर्जा एक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 4
(C) केवल 3 और 4
(D) सभी कथन सही हैं

85. भूतापीय ऊर्जा कैसे उत्पन्न होती है?
(A) सूर्य के ताप से
(B) पवन की गति से
(C) पृथ्वी के गर्भ से निकलने वाली ऊष्मा से
(D) जल के प्रवाह से

86. भारत में भूतापीय ऊर्जा संयंत्र कहाँ अधिकृत किया जा चुका है?
(A) पुगा घाटी, लद्दाख
(B) मनीकरण, हिमाचल प्रदेश
(C) तातापानी, छत्तीसगढ़
(D) खम्माम, तेलंगाना

87. भूमिगत ताप के उपयोग का पहला सफल प्रयास (1890 में) कहाँ हुआ था?
(A) पेरिस, फ्रांस
(B) लंदन, यू.के.
(C) टोक्यो, जापान
(D) बोयजे शहर, इडाहो (यू.एस.ए.)

88. 'जैव-ऊर्जा' का स्रोत क्या है?
(A) जैविक उत्पाद जैसे कृषि अवशेष, नगरपालिका अपशिष्ट
(B) पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस
(C) यूरेनियम और थोरियम
(D) सूर्य का प्रकाश और पवन

89. दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): जैव-ऊर्जा विकासशील देशों के ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक जीवन को बेहतर बना सकती है।
कारण (R): यह अपशिष्ट एवं कूड़ा-कचरा प्रक्रमित करती है, ऊर्जा पैदा करती है, पर्यावरण प्रदूषण घटाती है और जलाऊ लकड़ी पर दबाव कम करती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

90. नगरपालिका कचरे को ऊर्जा में बदलने वाली एक परियोजना नई दिल्ली के किस स्थान पर स्थित है?
(A) ओखला
(B) कनॉट प्लेस
(C) चाँदनी चौक
(D) करोल बाग

91. खनिज संसाधनों के संरक्षण के लिए निम्नलिखित में से कौन सा उपाय उपयुक्त नहीं है?
(A) ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों का उपयोग
(B) छाजन (स्क्रैप) धातुओं का पुनर्चक्रण
(C) अत्यल्प धातुओं के लिए प्रतिस्थापनों का उपयोग
(D) सामरिक और अत्यल्प खनिजों के निर्यात को बढ़ावा देना

92. निम्नलिखित में से किन धातुओं के लिए छाजन (स्क्रैप) का प्रयोग विशेष रूप से सार्थक है क्योंकि भारत में इनके भंडार अपर्याप्त हैं?
(A) लोहा और मैंगनीज
(B) ताँबा, सीसा और जस्ता
(C) बॉक्साइट और अभ्रक
(D) सोने और चाँदी

93. सतत पोषणीय विकास की अवधारणा क्या आह्वान करती है?
(A) अधिकतम आर्थिक विकास, चाहे पर्यावरणीय लागत कुछ भी हो।
(B) संसाधनों का तीव्रतम गति से दोहन।
(C) भावी पीढ़ियों के लिए संसाधनों का संरक्षण।
(D) केवल गैर-नवीकरणीय संसाधनों पर निर्भरता।

94. मुंबई हाई मुंबई नगर से लगभग कितनी दूरी पर स्थित है?
(A) 120 कि.मी.
(B) 200 कि.मी.
(C) 250 कि.मी.
(D) 160 कि.मी.

95. निम्नलिखित में से किस ऊर्जा स्रोत की प्रौद्योगिकी को निर्माण में आसान, लागत प्रतिस्पर्धी और पर्यावरण अनुकूल माना जाता है?
(A) सौर-तापीय प्रौद्योगिकी
(B) नाभिकीय ऊर्जा
(C) कोयला आधारित तापीय ऊर्जा
(D) जल विद्युत ऊर्जा

96. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में खनिज मुख्यतः तीन विस्तृत पेटियों में सांद्रित हैं।
2. उत्तर-पूर्वी पठारी प्रदेश भारत की सबसे धनी खनिज पेटी है।

3. दक्षिण-पश्चिमी पठार प्रदेश में उच्च कोटि का लौह अयस्क और मैंगनीज पाया जाता है।
4. उत्तर-पश्चिमी प्रदेश पेट्रोलियम निक्षेपों के लिए जाना जाता है, विशेषकर गुजरात में।
5. हिमालयी पेटी धात्विक खनिजों से पूरी तरह विहीन है।

भारत की प्रमुख खनिज पेटियों के संबंध में उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?

(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 1, 2, 3, 4
(C) केवल 2, 3, 5
(D) सभी कथन सही हैं

97. डल्ली तथा राजहरा की खदानें किस खनिज के लिए प्रसिद्ध हैं और किस राज्य में हैं?

(A) कोयला, झारखंड
(B) लौह अयस्क, छत्तीसगढ़
(C) बॉक्साइट, ओडिशा
(D) ताँबा, राजस्थान

98. निम्नलिखित में से कौन सा शहर एच.वी.जे. (हजीरा-विविजयपुर-जगदीशपुर) प्राकृतिक गैस पाइपलाइन पर स्थित नहीं है?

(A) नागपुर
(B) आँवला
(C) शाहजहाँपुर
(D) औरैया

99. निम्नलिखित में से कौन सा एक बाजार-आधारित तेल शोधन कारखाने का उदाहरण है?

(A) डिगबोई
(B) नुमालीगढ़
(C) बरौनी
(D) बोंगईगांव

100. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए:

List I: (तेल शोधन कारखाना)

P. कोयाली
Q. मथुरा
R. हल्दिया
S. तातीपाका

List II: (राज्य)

1. उत्तर प्रदेश
2. आंध्र प्रदेश
3. पश्चिम बंगाल
4. गुजरात

(A) P-4, Q-1, R-3, S-2
(B) P-1, Q-4, R-2, S-3
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

101. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. लौह अयस्क, मैंगनीज तथा क्रोमाइट लौह खनिज हैं।
2. ये धातु आधारित उद्योगों के विकास के लिए सुदृढ़ आधार प्रदान करते हैं।
3. भारत लौह खनिजों के संचय में कमजोर स्थिति में है।
4. भारत लौह खनिजों के उत्पादन में एक अग्रणी देश है।

लौह खनिजों के संबंध में उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) सभी कथन सही हैं

102. दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।

अभिकथन (A): सतत पोषणीय विकास के लिए संसाधनों का संरक्षण अत्यंत आवश्यक है।

कारण (R): संसाधन उपयोग के परंपरागत तरीकों से बड़ी मात्रा में अपशिष्ट और पर्यावरणीय समस्याएँ पैदा होती हैं।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

103. केरल में पाए जाने वाले मोनाजाइट और इल्मेनाइट से कौन सा नाभिकीय खनिज प्राप्त किया जाता है?

(A) यूरेनियम
(B) प्लूटोनियम
(C) रेडियम
(D) थोरियम

104. निम्नलिखित कोयला खनन केंद्रों को उत्तर से दक्षिण के सही भौगोलिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. रानीगंज
2. सिंगरौली
3. सिंगरेनी
4. नेवेली

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से क्रम सही हैं?

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 2, 4, 3
(D) 2, 1, 4, 3

105. निम्नलिखित में-सा एक जीवाश्म ईंधन नहीं है?

(A) कोयला
(B) पेट्रोलियम
(C) जैवभार (बायोमास)
(D) प्राकृतिक गैस

106. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

146. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए:

List I: (राज्य)

P. झारखंड

Q. मध्य प्रदेश

R. राजस्थान

S. आंध्र प्रदेश

List II: (खनिज/खान)

1. बालाघाट (मैंगनीज)
2. नेल्लोर (अभ्रक)
3. नोआमुंडी (लौह अयस्क)
4. झुंझुनु (ताँबा)

(A) P-3, Q-1, R-4, S-2

(B) P-1, Q-2, R-3, S-4

(C) P-4, Q-3, R-2, S-1

(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

147. निम्नलिखित स्थान टर्शियरी कोयला खनन से संबंधित नहीं है?

(A) माकूम (असम)

(B) चेरापूंजी (मेघालय)

(C) कोरबा (छत्तीसगढ़)

(D) कालाकोट (जम्मू-कश्मीर)

148. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. कोयला भारत का प्रमुख ऊर्जा स्रोत है।
2. भारत सौर ऊर्जा में एक वैश्विक नेता के रूप में उभर रहा है।
3. नाभिकीय ऊर्जा का योगदान अभी भी अपेक्षाकृत कम है।
4. भारत अपनी पेट्रोलियम आवश्यकता का अधिकांश भाग आयात करता है।

भारतीय ऊर्जा क्षेत्र के संबंध में उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?

(A) केवल 1 और 4

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1, 2 और 3

(D) 1, 2, 3 और 4

149. प्रायद्वीपीय भारत की प्राचीन क्रिस्टलीय शैलों में अधिकांशतः किस प्रकार के खनिज पाए जाते हैं?

(A) ईंधन खनिज

(B) अधात्विक खनिज

(C) धात्विक खनिज

(D) ये सभी

150. भारत में निम्नलिखित में से कौन-सा खनिज ऊर्जा संसाधन की श्रेणी में आता है?

(A) अभ्रक

(B) बॉक्साइट

(C) कोयला

(D) चूना-पत्थर

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत की धात्विक खनिज संपदा मुख्य रूप से इसके प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र की प्राचीन भूवैज्ञानिक संरचनाओं में निहित है। आर्कियन और धारवाड़ क्रम की कायांतरित चट्टानें लौह अयस्क, मैंगनीज, तांबा और सोने जैसे प्रमुख धात्विक खनिजों का मुख्य स्रोत हैं। इन चट्टानों का निर्माण अरबों वर्ष पूर्व हुआ था और ये विवर्तनिक रूप से स्थिर प्रायद्वीपीय भारत में व्यापक रूप से वितरित हैं। छोटानागपुर पठार, जिसे भारत का 'खनिज हृदय' भी कहा जाता है, इन प्राचीन चट्टानों का एक प्रमुख उदाहरण है। इन खनिजों की उपलब्धता ने भारत के औद्योगिक विकास की नींव रखी है, विशेषकर धातुशोधन, भारी इंजीनियरिंग और निर्माण क्षेत्रों में। इन खनिजों का वितरण असमान है, जिसके कारण खनिज आधारित उद्योगों का संकेंद्रण भी विशिष्ट क्षेत्रों, जैसे पूर्वी भारत के लौह-इस्पात उद्योग क्लस्टर, में हुआ है। यह क्षेत्रीय विकास को प्रेरित करता है, लेकिन साथ ही क्षेत्रीय आर्थिक विषमताओं को भी जन्म देता है। चूँकि ये खनिज अनवीकरणीय हैं, इसलिए इनका विवेकपूर्ण उपयोग और संरक्षण, सतत औद्योगिक विकास और भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। खनिज संपदा के रणनीतिक प्रबंधन में अन्वेषण, कुशल निष्कर्षण और पुनर्चक्रण की नीतियां शामिल हैं।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. भारत में धात्विक खनिजों का सबसे समृद्ध स्रोत निम्नलिखित में से कौन सी भूवैज्ञानिक संरचना है?

(A) टर्शियरी क्रम की चट्टानें

(B) आर्कियन और धारवाड़ क्रम की चट्टानें

(C) गोंडवाना क्रम की चट्टानें

(D) दक्कन ट्रैप की बेसाल्टिक चट्टानें

152. छोटानागपुर पठार को 'भारत का खनिज हृदय' क्यों कहा जाता है?

(A) क्योंकि यह प्राचीन चट्टानों और विविध धात्विक खनिजों में अत्यंत समृद्ध है।

(B) क्योंकि यह भौगोलिक रूप से भारत के बिल्कुल मध्यवर्ती क्षेत्र में स्थित है।

(C) क्योंकि यहाँ देश की सर्वाधिक उपजाऊ और सघन कृषि योग्य भूमि पाई जाती है।

(D) क्योंकि यहाँ देश के अधिकांश प्रमुख नदी प्रणालियों का जलविद्युत केंद्र है।

153. अनुच्छेद के अनुसार, खनिज आधारित उद्योगों का क्षेत्रीय संकेंद्रण किस कारक का प्रत्यक्ष परिणाम है?

(A) कुशल श्रम की उपलब्धता

(B) सरकारी नीतियों का प्रभाव

(C) खनिजों का असमान वितरण

(D) परिवहन नेटवर्क की निकटता

3. प्राकृतिक गैस
4. यूरेनियम
5. थोरियम

इनमें से कौन से जीवाश्म ईंधन के रूप में जाने जाते हैं?

(A) केवल 1, 2, और 3
(B) केवल 1, 2, 3, और 4
(C) केवल 4 और 5
(D) सभी

117. ट्रांबे परमाणु ऊर्जा संस्थान को किस वर्ष 'भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र' के रूप में पुनः नामित किया गया?

(A) 1954
(B) 1962
(C) 1967
(D) 1971

118. निम्नलिखित में से कौन सा एक धात्विक खनिज नहीं है?

(A) लौह अयस्क
(B) चूना-पत्थर
(C) ताँबा
(D) बॉक्साइट

119. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए:

List I: (अपरंपरागत ऊर्जा संयंत्र)

P. भूतापीय ऊर्जा संयंत्र
Q. नाभिकीय ऊर्जा संयंत्र
R. ज्वारीय ऊर्जा की संभावना
S. शहरी अपशिष्ट से ऊर्जा

List II: (स्थान)

1. कैगा
2. ओखला
3. मनीकरण
4. भारत का पश्चिमी तट

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

120. निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा सही सुमेलित नहीं है?

(A) नरोरा नाभिकीय संयंत्र - राजस्थान
(B) कैगा नाभिकीय संयंत्र - कर्नाटक
(C) काकरापाड़ा नाभिकीय संयंत्र - गुजरात
(D) कलपक्कम नाभिकीय संयंत्र - तमिलनाडु

121. दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।

अभिकथन (A): हिमालयी पेटी में ताँबा, सीसा, जस्ता, कोबाल्ट तथा रंगरत्न पाए जाते हैं।

कारण (R): यह पेटी भूगर्भिक रूप से बहुत पुरानी और स्थिर है।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

122. भारत के पश्चिमी तट पर स्थित तेल शोधन कारखानों को उत्तर से दक्षिण के सही क्रम में व्यवस्थित करें:

1. कोयाली
2. मुंबई
3. मंगलूरु
4. कोच्चि

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से क्रम सही हैं?

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 2, 4, 3
(D) 2, 1, 4, 3

123. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों जैसे सौर ऊर्जा, पवन आदि का उपयोग करना।
2. धात्विक खनिजों के मामले में छाजन धातुओं का पुनर्चक्रण करना।
3. अत्यल्प धातुओं के लिए प्रतिस्थापनों का उपयोग कर उनकी खपत घटाना।
4. सामरिक और अत्यल्प खनिजों के निर्यात को घटाना।
5. खनिजों का अंधाधुंध उपयोग ताकि आर्थिक विकास तेजी से हो।

भारत के खनिज संसाधनों के संरक्षण के लिए किए जा सकने वाले उपायों के संबंध में उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?

(A) केवल 1, 2, और 3
(B) केवल 1, 2, 3 और 4
(C) केवल 2, 3, 4 और 5
(D) सभी उपाय सही हैं

124. दक्षिण-पश्चिमी पठार प्रदेश के खनिजों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

(A) यह प्रदेश कोयला निक्षेपों में अत्यंत समृद्ध है।
(B) इसमें निवेली लिग्नाइट को छोड़कर कोयला निक्षेपों का अभाव है।
(C) इस प्रदेश के खनिज निक्षेप उत्तर-पूर्वी प्रदेश की भांति विविधतापूर्ण हैं।
(D) इस प्रदेश में थोरियम और यूरेनियम के कोई भंडार नहीं हैं।

125. भारत में सबसे पुरानी लौह अयस्क की कुछ खदानें और अधिकतर लौह एवं इस्पात संयंत्र किस राज्य की पहाड़ी श्रृंखलाओं के आसपास स्थित हैं?

(A) कर्नाटक
(B) तमिलनाडु

(C) झारखंड
(D) छत्तीसगढ़

126. निम्नलिखित में से कौन सा एक क्षेत्र आधारित (field-based) तेल शोधन कारखाने का उदाहरण है?
(A) बरौनी
(B) मथुरा
(C) पानीपत
(D) डिगबोई

127. भारत में अलौह खनिजों की स्थिति क्या है?
(A) भारत बॉक्साइट के अतिरिक्त अन्य अलौह खनिजों में निम्न स्थिति में है।
(B) भारत सभी अलौह खनिजों के उत्पादन में पूरी तरह आत्मनिर्भर है।
(C) भारत बॉक्साइट को छोड़कर अन्य सभी अलौह खनिजों में धनी है।
(D) भारत के भूगर्भिक क्षेत्र में कोई भी अलौह खनिज नहीं पाया जाता है।

128. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कर्नाटक मैंगनीज का एक प्रमुख उत्पादक है।
2. कर्नाटक की मैंगनीज खदानें धारवाड़, बल्लारी और शिवमोगा में स्थित हैं।
3. महाराष्ट्र भी मैंगनीज का एक महत्वपूर्ण उत्पादक है।
4. तेलंगाना, गोआ तथा झारखंड मैंगनीज के गौण उत्पादक हैं।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 3 और 4
(C) केवल 2 और 4
(D) I, II, III और IV

129. गुजरात और राजस्थान दोनों किस अधात्विक खनिज के समृद्ध स्रोत हैं?
(A) अभ्रक
(B) नमक
(C) चूना-पत्थर
(D) जिप्सम

130. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में कोयले का 80% भाग बिटुमिनस प्रकार का है।
2. यह अधिकतर गैर-कोककारी श्रेणी का है।
3. ऐंथ्रासाइट भारत में पाया जाने वाला सबसे आम कोयला है।
4. दामोदर घाटी भारत का सबसे महत्वपूर्ण कोयला क्षेत्र है।
5. टर्शियरी कोयला गोंडवाना कोयले से अधिक पुराना है।

भारत में पाए जाने वाले कोयले के संबंध में उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, और 4
(B) केवल 2, 3 और 5
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) सभी कथन सही हैं

131. चिकमगलूरु जिले की बाबा बूदन पहाड़ियां किस खनिज निक्षेप के लिए प्रसिद्ध हैं?
(A) बॉक्साइट
(B) ताँबा
(C) लौह अयस्क
(D) मैंगनीज

132. दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा जैसे अपरंपरागत ऊर्जा स्रोत अधिक टिकाऊ और पारिस्थितिक-अनुकूल हैं।
कारण (R): ये स्रोत अधिक समान रूप से वितरित हैं और पर्यावरण-अनुकूल हैं, यद्यपि उनकी आरंभिक लागत अधिक होती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

133. असम घाटी में कौन से खनिज तेल निक्षेप पाए जाते हैं?
(A) केवल प्राकृतिक गैस
(B) केवल कोयला
(C) पेट्रोलियम
(D) ताँबा और सीसा

134. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए:
List I: (खनिज)
P. लौह अयस्क
Q. बॉक्साइट
R. ताँबा
S. अभ्रक

List II: (खनन जिला)
1. सिंहभूम
2. हजारीबाग
3. सुंदरगढ़
4. कालाहांडी

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

135. पेट्रोलियम के सह-उत्पादों का उपयोग किस उद्योग में नहीं होता है?
(A) उर्वरक

(B) कृत्रिम रबर
(C) दवाइयाँ
(D) लौह-इस्पात

136. निम्नलिखित में से कौन सा एक लौह धात्विक खनिज है?
(A) मैंगनीज
(B) ताँबा
(C) बॉक्साइट
(D) सोना

137. भारत के पूर्वी तट पर स्थित नाभिकीय ऊर्जा संयंत्र कौन सा है?
(A) तारापुर
(B) कैगा
(C) कलपक्कम
(D) नरोरा

138. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. धात्विक खनिज
2. अधात्विक खनिज
3. ईंधन खनिज
4. अणु-शक्ति खनिज

उपरोक्त सभी किस व्यापक श्रेणी के अंतर्गत आते हैं?
(A) ऊर्जा संसाधन
(B) खनिज संसाधन
(C) नवीकरणीय संसाधन
(D) जैविक संसाधन

139. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. नेवेली में लिग्नाइट कोयले का भंडार है।
2. गोवा में लौह अयस्क निक्षेप पाए जाते हैं।
3. केरल में मोनाजाइट के निक्षेप हैं।
4. राजस्थान ताँबा उत्पादन में समृद्ध है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4

140. भारत में पेट्रोलियम की खोज और उत्पादन के इतिहास की घटनाओं को उनके सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग (ONGC) की स्थापना
2. मुंबई हाई की खोज
3. मुंबई हाई में उत्पादन प्रारंभ
4. डिगबोई एकमात्र तेल उत्पादक क्षेत्र था

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से क्रम सही हैं?
(A) 4, 1, 2, 3
(B) 1, 4, 2, 3
(C) 4, 2, 1, 3
(D) 1, 2, 3, 4

141. कोयले का उपयोग मुख्य रूप से किन दो कार्यों के लिए किया जाता है?
(A) ताप विद्युत उत्पादन और लौह अयस्क का प्रगलन
(B) सीमेंट बनाना और भवन निर्माण
(C) ताप विद्युत उत्पादन और लौह अयस्क का प्रगलन
(D) परिवहन ईंधन और घरेलू खाना पकाना

142. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना 1948 में हुई।
2. ट्रांबे परमाणु ऊर्जा संस्थान की स्थापना 1954 में हुई।
3. ट्रांबे संस्थान को 1967 में भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र नाम दिया गया।
4. भारत का पहला परमाणु ऊर्जा स्टेशन तारापुर में स्थापित किया गया।
5. रावतभाटा परमाणु संयंत्र उत्तर प्रदेश में स्थित है।

भारत के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम से संबंधित उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2, 3 और 4
(C) केवल 3, 4 और 5
(D) सभी कथन सही हैं

143. 'खनिजों की गुणवत्ता और मात्रा के बीच प्रतिलोमी संबंध' का क्या अर्थ है?
(A) अधिक गुणवत्ता वाले खनिज कम मात्रा में पाए जाते हैं।
(B) अधिक गुणवत्ता वाले खनिज अधिक मात्रा में पाए जाते हैं।
(C) गुणवत्ता और मात्रा का आपस में कोई संबंध नहीं है।
(D) कम गुणवत्ता वाले खनिज कम मात्रा में पाए जाते हैं।

144. दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): गुजरात और राजस्थान दोनों में नमक के समृद्ध स्रोत हैं।
कारण (R): ये दोनों राज्य लंबी तटरेखा और शुष्क जलवायु वाले क्षेत्र हैं जो वाष्पीकरण द्वारा नमक उत्पादन के लिए आदर्श हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

145. छत्तीसगढ़ में अमरकंटक का पठार किस खनिज के निक्षेप के लिए जाना जाता है?
(A) लौह अयस्क
(B) बॉक्साइट
(C) कोयला
(D) चूना-पत्थर

ANSWERS

1. (B) रासायनिक एवं भौतिक गुणधर्मों के आधार पर
खनिजों को उनके विशिष्ट रासायनिक संगठन और भौतिक गुणों के आधार पर दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया जाता है। धात्विक खनिजों में धातुओं की प्रधानता होती है और वे चमकदार होते हैं, जबकि अधात्विक खनिजों में धातुओं का पूर्ण अभाव होता है। यह वर्गीकरण उद्योगों में खनिजों के उपयोग, उनके निष्कर्षण के तरीकों और आर्थिक मूल्य को निर्धारित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

2. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत की भूगर्भिक विविधता विभिन्न प्रकार के खनिजों की उपलब्धता का मुख्य कारण है। प्रायद्वीपीय भारत की प्राचीन आग्नेय और कायांतरित चट्टानें देश के खनिज संसाधनों का भंडार गृह मानी जाती हैं। पूर्व-पुराजीवी काल में निर्मित ये संरचनाएं धात्विक और अधात्विक खनिजों से समृद्ध हैं। भारत में खनिजों का क्षेत्रीय वितरण उसकी जटिल भूगर्भीय संरचना और विकास प्रक्रिया से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित माना जाता है।

3. (C) कोयला
ईंधन खनिजों का उपयोग मुख्य रूप से ऊर्जा उत्पादन के लिए किया जाता है। कोयला एक महत्वपूर्ण जीवाश्म ईंधन है जो औद्योगिक और घरेलू ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। इसे ऊर्जा का पारंपरिक स्रोत भी माना जाता है। अन्य खनिजों जैसे माइका और चूना-पत्थर का उपयोग निर्माण या विद्युत उद्योगों में होता है, लेकिन कोयला विशेष रूप से ताप ऊर्जा प्रदान करने हेतु पहचाना जाता है।

4. (D) सभी खनिज समय के साथ समाप्त हो जाते हैं।
खनिज प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले अनवीकरणीय संसाधन हैं, जिनकी मात्रा निश्चित होती है। इनका निर्माण भूगर्भिक प्रक्रियाओं के माध्यम से लाखों वर्षों में होता है, इसलिए मानवीय समय पैमाने पर इनका पुनर्भरण संभव नहीं है। निरंतर खनन और उपयोग के कारण ये संसाधन धीरे-धीरे समाप्त हो जाते हैं। खनिजों की गुणवत्ता और मात्रा के बीच हमेशा एक प्रतिलोमी संबंध बना रहता है, जो महत्वपूर्ण है।

5. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
धात्विक खनिजों को लौह और अलौह श्रेणियों में बांटा जाता है, जहाँ लोहा लौह धातु का और ताँबा अलौह धातु का उदाहरण है। पेट्रोलियम एक प्रमुख ईंधन खनिज है जिसका उपयोग ऊर्जा उत्पादन में होता है। माइका एक महत्वपूर्ण अधात्विक खनिज है जिसका उपयोग इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग में किया जाता है। इन खनिजों का सही वर्गीकरण उनके औद्योगिक अनुप्रयोगों और प्राकृतिक गुणों पर आधारित होता है।

6. (B) क्योंकि इस क्षेत्र की भूगर्भिक संरचना में खनिजयुक्त चट्टानें नहीं हैं।
उत्तर भारत का विशाल जलोढ़ मैदान नदियों द्वारा लाए गए अवसादों के निक्षेपण से निर्मित हुआ है। इस क्षेत्र की भूगर्भीय संरचना में उन प्राचीन आग्नेय और कायांतरित चट्टानों का अभाव है जिनमें सामान्यतः खनिज पाए जाते हैं। खनिजों की उपस्थिति मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय पठार और पर्वतीय क्षेत्रों की विशिष्ट चट्टानी संरचनाओं से जुड़ी होती है, जिससे यह मैदानी भाग आर्थिक खनिजों से पूरी तरह विहीन है।

7. (A) केवल 1 और 3
उत्तर-पूर्वी पठारी प्रदेश भारत की सबसे धनी खनिज पेटी है, जहाँ कोयला, लोहा और मैंगनीज प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। उत्तर-पश्चिमी प्रदेश के खनिज अरावली की प्राचीन धारवाड़ क्रम की शैलों से संबद्ध हैं, जो ताँबे और जस्ते के लिए प्रसिद्ध हैं। दक्षिण-पश्चिमी पठार प्रदेश में कोयले का अभाव है और हिमालयी पेटी में केवल ईंधन खनिजों के भंडार पाए जाना एक गलत तथ्य है।

8. (A) कार्बनिक और अकार्बनिक
अधात्विक खनिजों को उनकी उत्पत्ति के स्रोतों के आधार पर कार्बनिक और अकार्बनिक श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। जीवाश्म ईंधन जैसे कोयला और पेट्रोलियम कार्बनिक खनिजों की श्रेणी में आते हैं क्योंकि वे मृत जीवों के अवशेषों से निर्मित होते हैं। दूसरी ओर, अभ्रक, चूना-पत्थर और ग्रेफाइट जैसे खनिज अकार्बनिक कहलाते हैं। यह वर्गीकरण खनिजों की रासायनिक संरचना और उनके बनने की प्रक्रिया को दर्शाता है।

9. (C) अरावली (राजस्थान)
भारत की उत्तर-पूर्वी पठारी पेटी के अंतर्गत छोटानागपुर पठार, ओडिशा का पठार, पश्चिम बंगाल और छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्से शामिल हैं। यह क्षेत्र लौह अयस्क, कोयला और मैंगनीज जैसे खनिजों के लिए प्रसिद्ध है। अरावली क्षेत्र राजस्थान में स्थित है, जो उत्तर-पश्चिमी खनिज पेटी का हिस्सा है। अरावली पेटी मुख्यतः ताँबा, जस्ता और भवन निर्माण के पत्थरों के लिए जानी जाती है, न कि उत्तर-पूर्वी पेटी के लिए।

10. (C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
खनिजों की गुणवत्ता और उनकी मात्रा के बीच सदैव एक विपरीत या प्रतिलोमी संबंध देखा जाता है। इसका तात्पर्य यह है कि जो खनिज उच्च गुणवत्ता वाले होते हैं, वे प्रकृति में अत्यंत कम मात्रा में उपलब्ध होते हैं। इसके विपरीत, निम्न गुणवत्ता वाले खनिज प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। कारण कथन गलत है क्योंकि उच्च गुणवत्ता वाले खनिज दुर्लभ होते हैं और प्रचुरता में नहीं मिलते हैं।

154. अनुच्छेद में धात्विक खनिजों के विवेकपूर्ण उपयोग पर क्यों बल दिया गया है?
(A) क्योंकि इन खनिजों का खनन और प्रसंस्करण वर्तमान में बहुत महंगा कार्य है।
(B) क्योंकि इनके अंधाधुंध उपयोग और निष्कर्षण से स्थानीय पारिस्थितिकी को क्षति होती है।
(C) क्योंकि वैश्विक बाजार में इन विशिष्ट खनिजों की वर्तमान आर्थिक मांग बहुत कम है।
(D) क्योंकि वे प्रकृति में अनवीकरणीय हैं और भविष्य के लिए संरक्षण आवश्यक है।

155. निम्नलिखित में से कौन सा कथन अनुच्छेद के मुख्य विचार का सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करता है?
(A) भारत के प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र में ही देश की समस्त आर्थिक गतिविधियां केंद्रित हैं।
(B) भारत को अपने समस्त खनिज संसाधनों का निर्यात कर अधिकतम विदेशी लाभ अर्जित करना चाहिए।
(C) भारत की खनिज संपदा इसकी प्राचीन संरचना से जुड़ी है जो औद्योगिक विकास का आधार है।
(D) धारवाड़ क्रम की चट्टानें केवल स्वर्ण निक्षेपों के लिए ही भूवैज्ञानिक रूप से महत्वपूर्ण हैं।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारत में कोयले को उसकी भूवैज्ञानिक आयु के आधार पर दो प्रमुख श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है: गोंडवाना और टर्शियरी। देश का लगभग 98% कोयला भंडार गोंडवाना कोयला क्षेत्रों से संबंधित है, जो 250 मिलियन वर्ष से भी अधिक पुराने हैं। यह कोयला मुख्य रूप से बिटुमिनस प्रकार का है, जिसमें उच्च कार्बन मात्रा और उच्च तापजनक मान होता है, जो इसे धातुशोधन और ताप विद्युत उत्पादन के लिए आदर्श बनाता है। ये भंडार प्रमुख प्रायद्वीपीय नदी घाटियों - दामोदर, सोन, महानदी और गोदावरी में संस्तरित हैं। दामोदर घाटी, जिसे 'भारत का रूर' भी कहा जाता है, झरिया और रानीगंज जैसे सबसे महत्वपूर्ण कोयला क्षेत्रों का घर है। इसके विपरीत, टर्शियरी कोयला केवल 15 से 60 मिलियन वर्ष पुराना है और मुख्य रूप से पूर्वोत्तर राज्यों जैसे असम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय और नागालैंड में पाया जाता है। इस कोयले में सल्फर की मात्रा अधिक और कार्बन की मात्रा कम होती है, जिससे यह धातुशोधन उद्योगों के लिए अनुपयुक्त हो जाता है। लिग्नाइट, एक निम्न श्रेणी का भूरा कोयला, तमिलनाडु के नेवेली, गुजरात और राजस्थान में पाया जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से विद्युत उत्पादन के लिए किया जाता है। कोयले का यह भूवैज्ञानिक और भौगोलिक वितरण भारत के औद्योगिक परिदृश्य और ऊर्जा सुरक्षा को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. भारत का अधिकांश कोयला भंडार किस प्रकार का है?
(A) टर्शियरी लिग्नाइट
(B) गोंडवाना बिटुमिनस
(C) टर्शियरी एन्थ्रेसाइट
(D) गोंडवाना पीट

157. दामोदर घाटी को 'भारत का रूर' क्यों कहा जाता है?
(A) यह भौगोलिक क्षेत्र कृषि उत्पादकता और हरित क्रांति में बहुत अधिक उन्नत है।
(B) यह प्राकृतिक सुंदरता के मामले में जर्मनी के रूर क्षेत्र के समान माना जाता है।
(C) यह भारत की सबसे लंबी और महत्वपूर्ण नदी घाटी होने के कारण विशिष्ट पहचान रखता है।
(D) यह उच्च गुणवत्ता वाले कोयले के विशाल भंडारों के कारण एक प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र है।

158. गोंडवाना कोयले को टर्शियरी कोयले की तुलना में धातुशोधन के लिए अधिक उपयुक्त क्यों माना जाता है?
(A) क्योंकि इसमें उच्च कार्बन मात्रा और उच्च तापजनक मान होता है।
(B) क्योंकि इसमें नमी की मात्रा अधिक होती है।
(C) क्योंकि इसमें सल्फर की मात्रा अधिक और कार्बन की मात्रा कम होती है।
(D) क्योंकि यह सतह के करीब पाया जाता है और इसका खनन आसान है।

159. निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र टर्शियरी कोयले के निक्षेपों के लिए जाना जाता है?
(A) महानदी घाटी
(B) गोदावरी घाटी
(C) पूर्वोत्तर भारत के राज्य
(D) छोटानागपुर पठार

160. लिग्नाइट कोयले का मुख्य उपयोग क्या है, जैसा कि अनुच्छेद में वर्णित है?
(A) विद्युत उत्पादन के लिए
(B) इस्पात उद्योग में कोक के रूप में
(C) रेलवे इंजनों में ईंधन के रूप में
(D) घरेलू ईंधन के रूप में

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
यद्यपि भारत अलौह खनिजों में अपेक्षाकृत कम संपन्न है, तथापि बॉक्साइट और तांबा देश की औद्योगिक अर्थव्यवस्था के लिए रणनीतिक महत्व रखते हैं। बॉक्साइट, जो एल्यूमीनियम का प्राथमिक अयस्क है, मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय भारत के पठारी क्षेत्रों और तटीय भागों की लैटेराइट चट्टानों में पाया जाता है। यह उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में चट्टानों के गहन अपक्षय द्वारा निर्मित होता है। भारत विश्व के प्रमुख बॉक्साइट उत्पादक देशों में से एक है, जिसमें ओडिशा, गुजरात और झारखंड जैसे राज्य अग्रणी हैं। बॉक्साइट से एल्यूमीनियम का निष्कर्षण एक अत्यंत ऊर्जा-गहन प्रक्रिया है, जिसे बेयर प्रक्रिया (शोधन) और हॉल-हेरोल्ट प्रक्रिया (प्रगलन) के माध्यम से किया जाता है। एल्यूमीनियम अपने हल्के वजन, मजबूती और संक्षारण प्रतिरोध के कारण विमानन, मोटर वाहन और निर्माण उद्योगों

1. भारत में कोयला मुख्य रूप से दो भूगर्भिक कालों, गोंडवाना और टर्शियरी, की शैल क्रमों में पाया जाता है।
2. गोंडवाना कोयला भारत के कुल कोयला भंडार का 90% से अधिक है।
3. झरिया सबसे बड़ा कोयला क्षेत्र है जिसके बाद रानीगंज आता है।
4. टर्शियरी कोयला मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय भारत में पाया जाता है।
5. लिग्नाइट एक निम्न श्रेणी का भूरा कोयला है।

भारत के कोयला संसाधनों के संबंध में उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 2, 3 और 5
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) सभी कथन सही हैं

107. महाराष्ट्र की मैंगनीज खदानों का एक अलाभ (disadvantage) क्या है?
(A) मैंगनीज की गुणवत्ता निम्न है।
(B) खनन की लागत बहुत अधिक है।
(C) यहाँ के भंडार बहुत कम हैं।
(D) ये खदानें इस्पात संयंत्रों से दूर स्थित हैं।

108. राजस्थान का खेतड़ी क्षेत्र किस खनिज के खनन के लिए प्रसिद्ध है?
(A) लौह अयस्क
(B) ताँबा
(C) बॉक्साइट
(D) अभ्रक

109. डोलोमाइट तथा चूना-पत्थर किस उद्योग के लिए कच्चा माल उपलब्ध कराते हैं?
(A) लौह-इस्पात उद्योग
(B) एल्यूमिनियम उद्योग
(C) सीमेंट उद्योग
(D) ताँबा उद्योग

110. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में अपरिष्कृत पेट्रोलियम टर्शियरी युग की अवसादी शैलों में पाया जाता है।
2. 1956 तक, डिगबोई देश का एकमात्र तेल उत्पादक क्षेत्र था।
3. मुंबई हाई, जो एक अपतटीय क्षेत्र है, 1973 में खोजा गया था।
4. पूर्वी तट पर कृष्णा-गोदावरी तथा कावेरी के बेसिनों में भी तेल पाया गया है।

भारत में पेट्रोलियम संसाधनों के बारे में उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4

111. भारत के किस राज्य में विश्व के सबसे समृद्ध मोनाजाइट निक्षेप पाए जाते हैं?
(A) केरल
(B) तमिलनाडु
(C) आंध्र प्रदेश
(D) ओडिशा

112. दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिवथन (A): ताँबा एक मिश्रातु योग्य, आघातवर्ध्य तथा तन्य धातु है।
कारण (R): आभूषणों को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए इसे स्वर्ण के साथ मिलाया जाता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

113. निम्नलिखित में से कौन सा नाभिकीय ऊर्जा संयंत्र भारत के पश्चिमी तट पर स्थित है?
(A) कलपक्कम
(B) तारापुर
(C) नरोरा
(D) रावतभाटा

114. भारत में लौह अयस्क के उत्पादन के प्रमुख केंद्रों को उत्तर से दक्षिण के सही भौगोलिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. गुरुमहिसानी
2. डल्ली-राजहरा
3. बल्लारि
4. कुद्रेमुख

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से क्रम सही हैं?
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 2, 3, 1, 4

115. अभ्रक के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) इसे पतली चादरों में विघटित किया जा सकता है।
(B) यह काफी सख्त और सुनम्य (flexible) होती है।
(C) यह ऊष्मा और विद्युत का अच्छा सुचालक है।
(D) इसका उपयोग विद्युत एवं इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योगों में किया जाता है।

116. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कोयला
2. पेट्रोलियम

निक्षेप।
(B) राजस्थान की अरावली श्रेणियों में पाए जाने वाले विशिष्ट खनिज निक्षेप।
(C) झारखंड राज्य की सिंहभूम पट्टी में स्थित यूरेनियम की विभिन्न खदानें।
(D) संपूर्ण दक्कन के पठारी क्षेत्र में फैली प्राचीन ज्वालामुखीय चट्टानें।

169. भारत के परमाणु कार्यक्रम का अंतिम लक्ष्य क्या है?
(A) दुनिया का सबसे बड़ा परमाणु हथियार शस्त्रागार स्थापित कर सैन्य शक्ति बढ़ाना।
(B) भविष्य में परमाणु ईंधन और यूरेनियम का एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय निर्यातक बनना।
(C) थोरियम आधारित रिएक्टरों का उपयोग करके ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना।
(D) देश के सभी जीवाश्म ईंधन आधारित बिजली संयंत्रों को तुरंत पूरी तरह बंद करना।

170. फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (दूसरे चरण में) की मुख्य विशेषता क्या है?
(A) वे केवल प्राकृतिक यूरेनियम का उपयोग करते हैं।
(B) वे कोई परमाणु अपशिष्ट उत्पन्न नहीं करते हैं।
(C) वे पूरी तरह से सौर ऊर्जा पर चलते हैं।
(D) वे उपभोग किए गए ईंधन से अधिक ईंधन का उत्पादन करते हैं।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारत में गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों का विकास देश की बढ़ती ऊर्जा मांगों को पूरा करने, ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाने और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीति है। सौर और पवन ऊर्जा इस दिशा में दो सबसे प्रमुख स्रोत हैं। भारत को भौगोलिक रूप से वर्ष के अधिकांश समय उच्च सौर विकिरण का लाभ मिलता है, विशेष रूप से राजस्थान और गुजरात जैसे पश्चिमी राज्यों में, जो बड़े पैमाने पर सौर ऊर्जा पार्कों की स्थापना के लिए आदर्श स्थान हैं। पवन ऊर्जा की क्षमता भी विशाल है, विशेषकर गुजरात, तमिलनाडु, महाराष्ट्र और कर्नाटक जैसे राज्यों के तटीय क्षेत्रों और पहाड़ी इलाकों में जहाँ तेज और निरंतर हवाएं चलती हैं। इन नवीकरणीय स्रोतों को अपनाने से जीवाश्म ईंधन पर आयात निर्भरता कम होती है और कार्बन उत्सर्जन में कटौती होती है। हालांकि, इन स्रोतों के विकास में कई चुनौतियां भी हैं। सौर और पवन ऊर्जा की आंतरायिक (intermittent) प्रकृति एक बड़ी बाधा है, क्योंकि ये केवल तभी ऊर्जा उत्पन्न करते हैं जब सूरज चमक रहा हो या हवा चल रही हो। इसके लिए ग्रिड स्थिरता बनाए रखने हेतु ऊर्जा भंडारण प्रणालियों (जैसे बैटरी) और उन्नत ग्रिड प्रबंधन तकनीकों की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त, बड़े सौर और पवन फार्मों के लिए व्यापक भूमि की आवश्यकता होती है, जो भूमि अधिग्रहण से संबंधित सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दे खड़े कर सकती है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. अनुच्छेद के अनुसार, भारत में गैर-पारंपरिक ऊर्जा को बढ़ावा देने का मुख्य चालक क्या नहीं है?
(A) बढ़ती ऊर्जा मांगों को पूरा करना
(B) ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाना
(C) जीवाश्म ईंधन का निर्यात बढ़ाना
(D) जलवायु परिवर्तन से निपटना

172. भारत के कौन से भौगोलिक क्षेत्र सौर ऊर्जा के विकास के लिए सबसे उपयुक्त माने जाते हैं?
(A) पूर्वोत्तर के घने जंगल
(B) पश्चिमी राज्य जैसे राजस्थान और गुजरात
(C) गंगा के उपजाऊ मैदान
(D) हिमालय के ऊंचे पर्वत

173. सौर और पवन ऊर्जा की "आंतरायिक प्रकृति" से क्या तात्पर्य है?
(A) इनका उत्पादन बहुत महंगा होता है।
(B) ये केवल ग्रामीण क्षेत्रों में ही उपलब्ध हैं।
(C) इनके उत्पादन से बहुत अधिक प्रदूषण होता है।
(D) ये ऊर्जा का निरंतर और स्थिर स्रोत नहीं हैं।

174. अनुच्छेद में नवीकरणीय ऊर्जा के विकास से जुड़ी किस चुनौती का उल्लेख किया गया है?
(A) ऊर्जा भंडारण और भूमि अधिग्रहण की समस्या
(B) प्रौद्योगिकी की कमी
(C) कुशल श्रमिकों का अभाव
(D) अंतरराष्ट्रीय सहयोग का अभाव

175. पवन ऊर्जा क्षमता के लिए कौन से क्षेत्र सबसे अधिक आशाजनक हैं?
(A) मध्य भारत के मैदानी इलाके
(B) शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्र
(C) तटीय क्षेत्र और पहाड़ी इलाके
(D) नदी डेल्टा क्षेत्र

में अनिवार्य है। दूसरी ओर, तांबा अपनी असाधारण विद्युत और तापीय चालकता के लिए जाना जाता है। इसके प्रमुख निक्षेप झारखंड के सिंहभूम, मध्य प्रदेश के बालाघाट और राजस्थान के खेतड़ी में स्थित हैं। यह पारंपरिक रूप से बिजली के तारों, ट्रांसफॉर्मर और मोटरों में उपयोग होता है, लेकिन अब हरित ऊर्जा क्रांति में इसकी भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। पवन टरबाइन, सौर पैनल और इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर सभी को बड़ी मात्रा में तांबे की आवश्यकता होती है, जो इसे भारत के सतत विकास लक्ष्यों के लिए एक महत्वपूर्ण खनिज बनाता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. भारत में बॉक्साइट अयस्क मुख्य रूप से किन चट्टानों में पाया जाता है?
(A) ग्रेनाइट चट्टानें
(B) बेसाल्टिक चट्टानें
(C) चूना पत्थर की चट्टानें
(D) लैटेराइट चट्टानें

162. एल्यूमीनियम के कौन से गुण उसे विमानन और मोटर वाहन उद्योगों के लिए विशेष रूप से उपयोगी बनाते हैं?
(A) इसका अत्यधिक उच्च घनत्व, भार वहन करने की क्षमता और विशिष्ट भंगुर प्रकृति।
(B) इसका हल्का वजन, मजबूती और संक्षारण के प्रति प्राकृतिक प्रतिरोध।
(C) इसके विशिष्ट चुंबकीय गुण, प्रचुर उपलब्धता और अंतरराष्ट्रीय बाजार में कम लागत।
(D) इसकी कम विद्युत चालकता और तकनीकी रूप से अत्यधिक उच्च तापीय प्रतिरोध।

163. अनुच्छेद के अनुसार, तांबे की कौन सी विशेषता उसे "हरित ऊर्जा क्रांति" के लिए महत्वपूर्ण बनाती है?
(A) इसका सजावटी मूल्य
(B) इसकी रासायनिक जड़ता
(C) इसकी असाधारण विद्युत चालकता
(D) इसका कम गलनांक

164. बॉक्साइट से एल्यूमीनियम का उत्पादन एक ऊर्जा-गहन प्रक्रिया क्यों है?
(A) क्योंकि इन अयस्कों को पृथ्वी की अत्यधिक गहराई से खोदकर निकालने की आवश्यकता है।
(B) क्योंकि खदानों से प्रसंस्करण इकाइयों तक परिवहन में बहुत अधिक ईंधन खर्च होता है।
(C) क्योंकि इस औद्योगिक विनिर्माण प्रक्रिया के दौरान स्वच्छ जल की अत्यधिक मात्रा उपयोग होती है।
(D) क्योंकि इसके शोधन और प्रगलन की प्रक्रियाओं में भारी मात्रा में बिजली की खपत होती है।

165. भारत में तांबे के प्रमुख खनन क्षेत्र निम्नलिखित में से किस युग्म में सही ढंग से दर्शाए गए हैं?
(A) सिंहभूम (झारखंड) और खेतड़ी (राजस्थान)
(B) नेवेली (तमिलनाडु) और कोरबा (छत्तीसगढ़)
(C) लोहारदगा (झारखंड) और जामनगर (गुजरात)
(D) मयूरभंज (ओडिशा) और बेल्लारी (कर्नाटक)

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत की परमाणु ऊर्जा रणनीति देश के विशिष्ट परमाणु खनिज संसाधनों, विशेष रूप से यूरेनियम के सीमित भंडार और थोरियम के विशाल भंडार, पर आधारित है। इस वास्तविकता को पहचानते हुए, डॉ. होमी जे. भाभा ने एक महत्वाकांक्षी त्रि-स्तरीय परमाणु कार्यक्रम तैयार किया। इसका अंतिम लक्ष्य भारत के विशाल थोरियम भंडारों का उपयोग करके ऊर्जा आत्मनिर्भरता प्राप्त करना है। प्रथम चरण में प्राकृतिक यूरेनियम से चलने वाले दाबित भारी जल रिएक्टर (PHWRs) शामिल हैं। भारत में यूरेनियम अयस्क मुख्य रूप से झारखंड की सिंहभूम पट्टी, आंध्र प्रदेश और राजस्थान के कुछ भागों में धारवाड़ और आर्कियन चट्टानों में पाया जाता है। इन रिएक्टरों से उप-उत्पाद के रूप में प्लूटोनियम-239 प्राप्त होता है। दूसरे चरण में फास्ट ब्रीडर रिएक्टर (FBRs) का उपयोग किया जाता है, जो ईंधन के रूप में प्लूटोनियम-239 और थोरियम का उपयोग करते हैं, जिससे वे उपयोग किए जाने वाले ईंधन से अधिक ईंधन का उत्पादन करते हैं। तीसरा चरण उन्नत भारी जल रिएक्टरों (AHWRs) पर केंद्रित होगा, जो सीधे थोरियम-यूरेनियम-233 चक्र का उपयोग करेंगे। भारत के थोरियम के विशाल भंडार केरल के तटीय क्षेत्रों में पाई जाने वाली मोनाजाइट रेत में केंद्रित हैं, जो इसे इस रणनीति के लिए एक आदर्श संसाधन बनाता है। यह कार्यक्रम खनिज संसाधनों के रणनीतिक उपयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. भारत का त्रि-स्तरीय परमाणु कार्यक्रम किस मौलिक संसाधन विषमता पर आधारित है?
(A) कोयले की अत्यधिक प्रचुरता और खनिज तेल के भंडारों की देशव्यापी अत्यधिक कमी।
(B) यूरेनियम का सीमित भंडार और थोरियम के विशाल निक्षेपों की प्रचुर उपलब्धता।
(C) सौर ऊर्जा की अपार भौगोलिक क्षमता और पवन ऊर्जा की तकनीकी रूप से कमी।
(D) लौह अयस्क के विशाल भंडार और तांबे जैसे रणनीतिक खनिजों की सीमित मात्रा।

167. भारत के परमाणु कार्यक्रम के प्रथम चरण में किस ईंधन का उपयोग किया जाता है?
(A) संवर्धित यूरेनियम
(B) प्राकृतिक यूरेनियम
(C) प्लूटोनियम-239
(D) थोरियम

168. भारत में थोरियम का सबसे बड़ा स्रोत क्या है?
(A) केरल के तट पर पाई जाने वाली मोनाजाइट रेत के

11. (B) केवल 1, 2, 3, 4
दक्षिण-पश्चिमी पठार प्रदेश कर्नाटक, गोवा, तमिलनाडु और केरल तक विस्तृत है। यह पेटी लौह अयस्क और बॉक्साइट में समृद्ध है, लेकिन यहाँ कोयला निक्षेपों का अभाव है, सिवाय नेवेली के लिग्नाइट भंडार के। केरल के तट पर मोनाजाइट और थोरियम के महत्वपूर्ण निक्षेप पाए जाते हैं। हालांकि, इस पेटी के खनिज निक्षेप उत्तर-पूर्वी पेटी की तुलना में कम विविधतापूर्ण हैं, जो अंतिम कथन को गलत बनाता है।

12. (B) दामोदर, सोन, महानदी और गोदावरी
भारत में गोंडवाना काल का कोयला देश के कुल कोयला भंडार का लगभग सत्तानवे प्रतिशत हिस्सा बनाता है। यह मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय भारत की नदी घाटियों जैसे दामोदर, सोन, महानदी और गोदावरी में संचित है। इन क्षेत्रों में बिटुमिनस प्रकार का कोयला पाया जाता है जो औद्योगिक ऊर्जा के लिए आवश्यक है। झरिया और रानीगंज जैसे प्रमुख कोयला क्षेत्र इसी दामोदर नदी घाटी क्षेत्र में स्थित हैं।

13. (C) उत्तर-पश्चिमी प्रदेश
उत्तर-पश्चिमी खनिज पेटी राजस्थान की अरावली पहाड़ियों और गुजरात के कुछ हिस्सों में फैली हुई है। यह क्षेत्र विशेष रूप से अपने भवन निर्माण के पत्थरों जैसे बलुआ पत्थर, ग्रेनाइट और संगमरमर के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ राजस्थान में उच्च गुणवत्ता वाले संगमरमर और ग्रेनाइट का खनन किया जाता है, जो निर्माण कार्यों में उपयोग होते हैं। इसके अलावा, यह क्षेत्र ताँबा और जस्ते के लिए भी महत्वपूर्ण है।

14. (D) बॉक्साइट
धात्विक खनिजों को लौह और अलौह दो श्रेणियों में बांटा जाता है। लौह खनिजों में लोहे का अंश होता है, जैसे लौह अयस्क और मैंगनीज। अलौह खनिजों में लोहे की प्रधानता नहीं होती, जिसके उदाहरण ताँबा और बॉक्साइट हैं। बॉक्साइट एल्युमिनियम का मुख्य अयस्क है। भारत में बॉक्साइट को छोड़कर अन्य अलौह खनिजों के भंडार काफी कम हैं, जिससे औद्योगिक कार्यों के लिए इनका महत्व काफी बढ़ जाता है।

15. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
उत्तर-पूर्वी पठारी प्रदेश लौह अयस्क और कोयला के लिए प्रसिद्ध है, जबकि दक्षिण-पश्चिमी पठार प्रदेश में लौह अयस्क और बॉक्साइट के भंडार मिलते हैं। उत्तर-पश्चिमी प्रदेश राजस्थान और गुजरात में ताँबा और जिंक के लिए जाना जाता है। हिमालयी पेटी में ताँबा, सीसा और जस्ता जैसे खनिज पाए जाते हैं। यह मिलान भारत की विभिन्न खनिज पेटियों और उनकी विशिष्ट खनिज संपदा को सही ढंग से प्रदर्शित करता है।

16. (B) असम, गुजरात तथा मुंबई हाई
भारत में पेट्रोलियम के प्रमुख आरक्षित भंडार मुख्य रूप से तीन क्षेत्रों में केंद्रित हैं। असम में डिगबोई और नाहरकटिया सबसे पुराने तेल क्षेत्र हैं। गुजरात में अंकलेश्वर और मेहसाणा महत्वपूर्ण तेल उत्पादक केंद्र हैं। मुंबई हाई अरब सागर में स्थित एक विशाल अपतटीय क्षेत्र है जो देश के कुल उत्पादन में बड़ा योगदान देता है। इन क्षेत्रों के अलावा कृष्णा-गोदावरी और कावेरी बेसिन में भी नए भंडार मिले हैं।

17. (B) यह प्रदेश कोयला और लौह अयस्क के विशाल निक्षेपों के लिए जाना जाता है।
उत्तर-पश्चिमी खनिज प्रदेश राजस्थान और गुजरात में विस्तृत है और यह मुख्य रूप से धारवाड़ क्रम की शैलों से जुड़ा है। यह क्षेत्र ताँबा, जस्ता, नमक और कीमती पत्थरों के लिए प्रसिद्ध है। हालांकि, यह प्रदेश कोयला और लौह अयस्क के विशाल निक्षेपों के लिए नहीं जाना जाता है। कोयला और लोहा मुख्य रूप से उत्तर-पूर्वी पठारी प्रदेश और दक्षिण-पश्चिमी पठार प्रदेश की विशिष्ट खनिज पेटी में पाए जाते हैं।

18. (A) कार्बनिक या अकार्बनिक उत्पत्ति का एक प्राकृतिक पदार्थ जिसके निश्चित रासायनिक एवं भौतिक गुण हों।
खनिज एक प्राकृतिक रूप से पाया जाने वाला पदार्थ है जिसकी उत्पत्ति कार्बनिक या अकार्बनिक दोनों प्रक्रियाओं से हो सकती है। प्रत्येक खनिज की अपनी एक विशिष्ट रासायनिक संरचना और निश्चित भौतिक गुणधर्म होते हैं, जो उसे अन्य पदार्थों से अलग करते हैं। यह परिभाषा वैज्ञानिक और भूगर्भीय दृष्टिकोण से खनिजों की प्रकृति को स्पष्ट करती है। खनिज संसाधनों का महत्व उनके औद्योगिक उपयोग और आर्थिक मूल्य में निहित होता है।

19. (A) केवल 1, 2 और 4
उत्तर-पूर्वी पठारी प्रदेश भारत की सबसे धनी खनिज पेटी है, जिसमें छोटानागपुर, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और छत्तीसगढ़ शामिल हैं। यहाँ कोयला, लौह अयस्क, मैंगनीज और अभ्रक के प्रचुर भंडार हैं, जिसके कारण प्रमुख लौह-इस्पात उद्योग इसी क्षेत्र में स्थित हैं। कथन तीन गलत है क्योंकि यहाँ केवल बॉक्साइट और अभ्रक ही नहीं, बल्कि खनिजों की एक विशाल विविधता पाई जाती है जो देश की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है।

20. (D) पेट्रोलियम
हाल के वर्षों में भारत के पूर्वी तट पर स्थित कृष्णा-गोदावरी और कावेरी नदी बेसिनों में प्राकृतिक गैस और पेट्रोलियम के नए भंडार खोजे गए हैं। ये अपतटीय क्षेत्र ऊर्जा सुरक्षा की दृष्टि से भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हो रहे हैं। इन क्षेत्रों में अन्वेषण कार्यों ने देश के कुल पेट्रोलियम उत्पादन की क्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहाँ के भंडार भविष्य की ऊर्जा मांग हेतु उपयोगी हैं।

21. (C) हेमेटाइट और मैग्नेटाइट
भारत में लौह अयस्क के दो सबसे महत्वपूर्ण प्रकार हेमेटाइट और मैग्नेटाइट हैं। हेमेटाइट लाल रंग का अयस्क है जिसमें लोहे की मात्रा काफी अधिक होती है और यह औद्योगिक उपयोग के लिए सर्वोत्तम माना जाता है। मैग्नेटाइट काला अयस्क है जिसमें उत्कृष्ट चुंबकीय गुण होते हैं। भारत के कुल लौह अयस्क भंडार का बड़ा हिस्सा इन्हीं दो श्रेणियों का है, जो मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय भारत के राज्यों में पाया जाता है।

संरक्षण और उन्नत तकनीकों का उपयोग करना अनिवार्य है। यह न केवल पारिस्थितिक तंत्र को सुरक्षित रखता है बल्कि भविष्य की आर्थिक स्थिरता और संसाधन सुरक्षा के लिए भी अत्यंत आवश्यक कदम माना जाता है।

103. (D) थोरियम
थोरियम भारत के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीतिक खनिज है जिसे मुख्य रूप से केरल के समुद्र तटीय क्षेत्रों में पाए जाने वाले मोनाजाइट और इल्मेनाइट बालू से प्राप्त किया जाता है। भारत के पास विश्व के थोरियम भंडारों का एक बहुत बड़ा हिस्सा है, जो इसे परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की क्षमता रखता है। थोरियम आधारित परमाणु रिएक्टर भविष्य में देश की ऊर्जा सुरक्षा के लिए एक गेम-चेंजर साबित हो सकते हैं, जिसके कारण इस खनिज का महत्व निरंतर बढ़ता जा रहा है।

104. (A) 1, 2, 3, 4
भारत के प्रमुख कोयला खनन केंद्रों का उत्तर से दक्षिण की ओर सही भौगोलिक क्रम रानीगंज (पश्चिम बंगाल), उसके बाद सिंगरौली (मध्य प्रदेश/उत्तर प्रदेश), फिर सिंगरेनी (तेलंगाना) और अंत में नेवेली (तमिलनाडु) है। रानीगंज सबसे उत्तरी बिंदु पर स्थित है, जबकि नेवेली तमिलनाडु के दक्षिणी हिस्से में स्थित होने के कारण इस श्रृंखला का अंतिम सिरा है। यह क्रम देश के विभिन्न अक्षांशीय क्षेत्रों में कोयला संसाधनों के वितरण और उनके क्षेत्रीय महत्व को स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

105. (C) जैवभार (बायोमास)
जीवाश्म ईंधन वे ऊर्जा स्रोत हैं जो लाखों वर्षों पूर्व दबे हुए मृत जीवों के अवशेषों से निर्मित हुए हैं, जैसे कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस। जैवभार या बायोमास एक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है जो हाल के जैविक उत्पादों जैसे कृषि अवशेषों और नगरपालिका कचरे से प्राप्त होता है। यह जीवाश्म ईंधन की तरह प्राचीन भूगर्भिक प्रक्रियाओं का परिणाम नहीं है। इसलिए बायोमास को अपरंपरागत और सतत ऊर्जा स्रोतों की श्रेणी में रखा जाता है जो अक्षय होते हैं।

106. (C) केवल 1, 3 और 5
भारत में कोयला गोंडवाना और टर्शियरी दो मुख्य भूगर्भिक कालों में पाया जाता है। झरिया भारत का सबसे बड़ा कोयला क्षेत्र है और लिग्नाइट एक निम्न श्रेणी का भूरा कोयला है। कथन दो गलत है क्योंकि गोंडवाना कोयला भंडार का 98 प्रतिशत है, न कि केवल 90 प्रतिशत। कथन चार भी गलत है क्योंकि टर्शियरी कोयला मुख्य रूप से उत्तर-पूर्वी राज्यों में मिलता है, प्रायद्वीपीय भारत में नहीं। अतः केवल एक, तीन और पाँच कथन ही पूर्णतः सत्य और सटीक हैं।

107. (D) ये खदानें इस्पात संयंत्रों से दूर स्थित हैं।
महाराष्ट्र के नागपुर और भंडारा जिलों में मैंगनीज के महत्वपूर्ण निक्षेप पाए जाते हैं और इसकी गुणवत्ता भी अच्छी है। हालांकि, इन खदानों की मुख्य समस्या यह है कि वे प्रमुख लौह-इस्पात संयंत्रों से काफी अधिक दूरी पर स्थित हैं। इस भौगोलिक दूरी के कारण परिवहन की लागत बढ़ जाती है, जिससे यहाँ के मैंगनीज का उपयोग आर्थिक रूप से कम प्रतिस्पर्धी हो जाता है। खनिजों के निष्कर्षण में खदान और उद्योग के बीच की निकटता लागत कम करने में निर्णायक होती है।

108. (B) ताँबा
राजस्थान का खेतड़ी क्षेत्र प्राचीन काल से ही ताँबा खनन के लिए प्रसिद्ध है। यह झुंझुनु जिले में स्थित है और यहाँ 'हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड' द्वारा ताँबे का निष्कर्षण और शोधन किया जाता है। खेतड़ी की ताँबा पट्टी अरावली पर्वत श्रृंखला का हिस्सा है और यहाँ उच्च श्रेणी का ताँबा अयस्क पाया जाता है। ताँबा विद्युत उद्योग के लिए अत्यंत आवश्यक है। राजस्थान, मध्य प्रदेश के साथ मिलकर भारत के ताँबा उत्पादन में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और अग्रणी भूमिका निभाता है।

109. (C) सीमेंट उद्योग
सीमेंट उद्योग में चूना-पत्थर और डोलोमाइट मुख्य कच्चे माल के रूप में उपयोग किए जाते हैं। चूना-पत्थर सीमेंट के निर्माण में कैल्शियम का प्राथमिक स्रोत है, जबकि डोलोमाइट का उपयोग भी इसकी रासायनिक संरचना के कारण किया जाता है। ये खनिज अवसादी और कायांतरित चट्टानों में बहुतायत से पाए जाते हैं। भारत में सीमेंट उद्योग का विकास मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में हुआ है जहाँ ये खनिज प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं, जैसे राजस्थान, मध्य प्रदेश और आंध्र प्रदेश के विभिन्न हिस्से।

110. (D) 1, 2, 3 and 4
भारत में पेट्रोलियम मुख्य रूप से टर्शियरी युग की अवसादी चट्टानों में संचित है। 1956 में ओएनजीसी के गठन तक असम का डिगबोई देश का एकमात्र तेल उत्पादक क्षेत्र था। 1973 में मुंबई हाई की खोज तेल अन्वेषण के क्षेत्र में एक मील का पत्थर साबित हुई। इसके अतिरिक्त पूर्वी तट के कृष्णा-गोदावरी और कावेरी बेसिन में भी नए भंडारों की खोज ने भविष्य की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत किया है। अतः ये चारों कथन भौगोलिक और ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः सत्य हैं।

111. (A) केरल
केरल राज्य के तटीय क्षेत्रों में विश्व के सबसे समृद्ध और विशाल मोनाजाइट निक्षेप पाए जाते हैं। मोनाजाइट एक दुर्लभ मृदा धातु खनिज है जो मुख्य रूप से थोरियम का स्रोत है। केरल की समुद्र तटीय बालू में इल्मेनाइट और मोनाजाइट प्रचुरता में मिलते हैं। यह खनिज संसाधन भारत के भविष्य के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के तीसरे चरण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। केरल की यह विशिष्ट भौगोलिक विशेषता उसे वैश्विक परमाणु खनिज मानचित्र पर एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है।

112. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
ताँबा अपनी लचीली प्रकृति और उच्च चालकता के कारण एक बहुत ही उपयोगी धातु है। इसे अन्य धातुओं के साथ आसानी से मिलाया जा सकता है। आभूषणों के निर्माण में, शुद्ध सोना बहुत नरम होता है, इसलिए उसे मजबूती और कठोरता प्रदान करने के लिए उसमें थोड़ी मात्रा में ताँबा मिलाया जाता है। यद्यपि दोनों कथन स्वतंत्र रूप से सत्य हैं, लेकिन ताँबे की आभूषणों

आयात पर निर्भर रहना पड़ता है। बॉक्साइट के विशाल भंडार और प्रचुर उत्पादन के कारण भारत इस क्षेत्र में एक मजबूत स्थिति में है, जबकि अन्य अलौह धातुओं की कमी बनी हुई है।

33. (B) बालाघाट, छिंदवाड़ा, निमाड़, मांडला और झाबुआ
मध्य प्रदेश भारत में मैंगनीज का एक प्रमुख उत्पादक राज्य है। यहाँ मैंगनीज की एक विस्तृत पट्टी बालाघाट, छिंदवाड़ा, निमाड़, मांडला और झाबुआ जिलों में फैली हुई है। बालाघाट जिला विशेष रूप से अपनी उच्च श्रेणी के मैंगनीज निक्षेपों के लिए प्रसिद्ध है। यह पट्टी भौगोलिक रूप से महाराष्ट्र के नागपुर और भंडारा क्षेत्रों के साथ जुड़ी हुई है, जो मिलकर भारत के मध्य भाग में एक बड़ा मैंगनीज उत्पादक क्षेत्र बनाती है।

34. (A) एल्यूमिनियम
बॉक्साइट एक महत्वपूर्ण खनिज है जो एल्युमिनियम धातु का मुख्य स्रोत है। यह वास्तव में कोई एक खनिज नहीं है, बल्कि एल्युमिनियम युक्त चट्टान है जिसमें एल्युमिनियम ऑक्साइड प्रचुर मात्रा में होता है। एल्युमिनियम अपनी हल्की प्रकृति, मजबूती और विद्युत चालकता के कारण विमान निर्माण, पैकेजिंग, निर्माण और विद्युत उद्योगों में बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है। भारत बॉक्साइट के उत्पादन और भंडार के मामले में एक समृद्ध राष्ट्र माना जाता है।

35. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
बोनाई और केंदुझर ओडिशा के प्रमुख मैंगनीज उत्पादक क्षेत्र हैं। बालाघाट और छिंदवाड़ा मध्य प्रदेश में स्थित हैं, जो अपनी विस्तृत मैंगनीज पट्टी के लिए जाने जाते हैं। धारवाड़ और बल्लारी कर्नाटक के महत्वपूर्ण खनन जिले हैं। नागपुर और भंडारा महाराष्ट्र में मैंगनीज उत्पादन के केंद्र हैं। यह मिलान भारत के विभिन्न राज्यों में मैंगनीज के भौगोलिक वितरण और प्रमुख खनन केंद्रों को सही ढंग से प्रदर्शित करने में मदद करता है।

36. (D) टर्शियरी निक्षेपों और लैटेराइट चट्टानों से
बॉक्साइट मुख्य रूप से टर्शियरी काल के निक्षेपों में पाया जाता है और यह लैटेराइट चट्टानों से गहराई से संबद्ध है। लैटेराइट चट्टानें उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में भारी वर्षा और तीव्र निक्षालन की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप बनती हैं। भारत में बॉक्साइट के भंडार पठारी क्षेत्रों और पहाड़ियों के शिखर पर पाए जाते हैं। ओडिशा, गुजरात और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में ये निक्षेप व्यापक रूप से फैले हुए हैं, जो देश के एल्युमिनियम उद्योग का आधार बनते हैं।

37. (D) 1, 2, 3 और 4
ओडिशा भारत में बॉक्साइट का सबसे बड़ा उत्पादक है, जहाँ कालाहांडी और संबलपुर प्रमुख क्षेत्र हैं। झारखंड में लोहारडागा जिले की पैटलैंड्स में इसके समृद्ध भंडार हैं। छत्तीसगढ़ में अमरकंटक का पठार और मध्य प्रदेश में कटनी, जबलपुर तथा बालाघाट महत्वपूर्ण उत्पादक केंद्र हैं। ये सभी क्षेत्र मिलकर भारत के बॉक्साइट उत्पादन में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। अतः बॉक्साइट के वितरण से संबंधित ये चारों कथन भौगोलिक रूप से पूरी तरह सही और सटीक हैं।

38. (B) भावनगर और जामनगर
गुजरात भारत में बॉक्साइट का एक महत्वपूर्ण उत्पादक राज्य है। यहाँ बॉक्साइट के प्रमुख और समृद्ध निक्षेप मुख्य रूप से भावनगर और जामनगर जिलों में पाए जाते हैं। इन तटीय क्षेत्रों में बॉक्साइट की उपलब्धता निर्यात और स्थानीय एल्युमिनियम उद्योगों के लिए बहुत फायदेमंद है। साबरकांठा और कच्छ जिलों में भी इसके कुछ भंडार मिलते हैं। गुजरात की भौगोलिक स्थिति और लैटेराइट चट्टानों की मौजूदगी यहाँ बॉक्साइट के संचय के लिए उत्तरदायी मानी जाती है।

39. (D) कर्नाटक
भारत में बॉक्साइट का मुख्य उत्पादन ओडिशा, गुजरात, झारखंड, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में केंद्रित है। ओडिशा इसमें अग्रणी है। कर्नाटक, तमिलनाडु और गोवा जैसे राज्य बॉक्साइट के गौण उत्पादक माने जाते हैं क्योंकि यहाँ निक्षेपों की मात्रा और उत्पादन का स्तर प्रमुख राज्यों की तुलना में काफी कम है। कर्नाटक में बेलगावी जिला बॉक्साइट के लिए जाना जाता है, लेकिन इसकी कुल हिस्सेदारी राष्ट्रीय उत्पादन में सीमित है।

40. (A) विद्युत उद्योग
ताँबा अपनी उत्कृष्ट विद्युत चालकता, लचीलेपन और स्थायित्व के कारण विद्युत उद्योग के लिए अनिवार्य माना जाता है। इसका उपयोग बिजली के तारों, केबल, जनरेटर और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के निर्माण में बड़े पैमाने पर किया जाता है। ताँबा ऊष्मा का भी अच्छा सुचालक है। इसके अलावा, इसका उपयोग बर्तन बनाने, रासायनिक उद्योगों और सोने के आभूषणों को मजबूती देने के लिए मिश्रधातु के रूप में भी किया जाता है, जो इसकी बहुमुखी उपयोगिता को दर्शाता है।

41. (C) झारखंड के सिंहभूम, मध्य प्रदेश के बालाघाट तथा राजस्थान के झुंझुनु एवं अलवर जिलों में।
भारत में ताँबा के मुख्य भंडार कुछ विशिष्ट क्षेत्रों तक ही सीमित हैं। झारखंड का सिंहभूम जिला अपनी ताँबा पट्टी के लिए प्रसिद्ध है। मध्य प्रदेश का बालाघाट जिला देश के कुल ताँबा उत्पादन में बड़ा योगदान देता है। राजस्थान में झुंझुनु का खेतड़ी क्षेत्र और अलवर की खदानें ताँबा निष्कर्षण के लिए ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण हैं। ये क्षेत्र मिलकर भारत की ताँबा आवश्यकता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा पूरा करते हैं, हालांकि भारत आयात पर भी निर्भर है।

42. (A) अभ्रक
भारत में उत्पादित अधात्विक खनिजों में अभ्रक सबसे महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह अपनी विशिष्ट विद्युत रोधी और ताप प्रतिरोधी विशेषताओं के कारण औद्योगिक रूप से अत्यंत मूल्यवान है। भारत ऐतिहासिक रूप से विश्व में अभ्रक का एक प्रमुख उत्पादक और निर्यातक रहा है। झारखंड, आंध्र प्रदेश और राजस्थान इसके मुख्य उत्पादक राज्य हैं। यद्यपि चूना-पत्थर की मात्रा अधिक हो सकती है, लेकिन तकनीकी और औद्योगिक उपयोग के संदर्भ में अभ्रक का महत्व अद्वितीय माना जाता है।

43. (D) विद्युत एवं इलेक्ट्रॉनिक्स
अभ्रक की उच्च परावैद्युत शक्ति और ताप प्रतिरोधक क्षमता इसे विद्युत एवं इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योगों के लिए एक आदर्श सामग्री बनाती है। इसका उपयोग कंडेनसर, इंसुलेटर और इलेक्ट्रॉनिक सर्किट में बड़े पैमाने पर किया जाता है। अभ्रक को बहुत पतली पारदर्शी चादरों में विभाजित किया जा सकता है जो काफी मजबूत होती हैं। आधुनिक तकनीक और संचार उपकरणों के विनिर्माण में अभ्रक की भूमिका अपरिहार्य है, जिससे इसकी मांग वैश्विक स्तर पर निरंतर बनी रहती है।

44. (B) निचले हज़ारीबाग पठार की पट्टी में
झारखंड में उच्च गुणवत्ता वाले अभ्रक का भंडार मुख्य रूप से निचले हज़ारीबाग पठार की लगभग 150 किलोमीटर लंबी और 22 किलोमीटर चौड़ी पट्टी में पाया जाता है। इस क्षेत्र को 'कोडरमा-हजारीबाग अभ्रक पेटी' के रूप में भी जाना जाता है। यहाँ से प्राप्त होने वाला अभ्रक अपनी शुद्धता और बड़ी परतों के लिए प्रसिद्ध है। कोडरमा जिला इसी पट्टी का मुख्य केंद्र है, जिसे कभी 'विश्व की अभ्रक राजधानी' के रूप में पहचाना जाता था।

45. (C) P-4, Q-1, R-2, S-3
बॉक्साइट का प्रमुख खनन क्षेत्र झारखंड का लोहारडागा है। ताँबा राजस्थान के झुंझुनु जिले, विशेषकर खेतड़ी में पाया जाता है। अभ्रक उत्पादन के लिए आंध्र प्रदेश का नेल्लोर जिला विश्व प्रसिद्ध है। मैंगनीज के विशाल निक्षेप मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले में स्थित हैं। यह मिलान भारत के चार प्रमुख खनिजों और उनके सबसे महत्वपूर्ण भौगोलिक खनन केंद्रों को सही ढंग से जोड़ता है, जो आर्थिक भूगोल के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण तथ्य हैं।

46. (D) नेल्लोर
आंध्र प्रदेश का नेल्लोर जिला सर्वोत्तम प्रकार के अभ्रक उत्पादन के लिए जाना जाता है। यहाँ उत्पादित अभ्रक अपनी विशिष्ट चमक और उच्च गुणवत्ता के लिए अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी प्रसिद्ध है। नेल्लोर की अभ्रक पट्टी राज्य की सबसे महत्वपूर्ण खनिज बेटी है। अभ्रक के अन्य भंडार विशाखापत्तनम और कृष्णा जिलों में भी पाए जाते हैं, लेकिन गुणवत्ता और उत्पादन की मात्रा के मामले में नेल्लोर का स्थान सर्वोपरि है, जो इसे एक प्रमुख केंद्र बनाता है।

47. (A) केवल 1 और 3
कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस ऊर्जा के परंपरागत और समाप्य स्रोत हैं जो जीवाश्म ईंधन कहलाते हैं। परमाणु ऊर्जा को एक आधुनिक ऊर्जा स्रोत माना जाता है और इसे अनवीकरणीय की श्रेणी में रखा जाता है। ऊर्जा की आवश्यकता कृषि, उद्योग और परिवहन सहित सभी क्षेत्रों में होती है। परंपरागत स्रोत पर्यावरण के अनुकूल नहीं होते क्योंकि वे प्रदूषण फैलाते हैं। अतः केवल कथन एक और तीन भारतीय ऊर्जा परिदृश्य के संदर्भ में सही हैं।

48. (B) जयपुर से भीलवाड़ा और उदयपुर के आसपास
राजस्थान में अभ्रक की एक महत्वपूर्ण पट्टी लगभग 320 किलोमीटर की लंबाई में विस्तृत है। यह मुख्य रूप से जयपुर से शुरु होकर अजमेर, भीलवाड़ा और उदयपुर के आसपास के क्षेत्रों तक फैली हुई है। भीलवाड़ा जिला राजस्थान में अभ्रक उत्पादन का सबसे प्रमुख केंद्र माना जाता है। यहाँ से प्राप्त अभ्रक का उपयोग विभिन्न उद्योगों में किया जाता है। राजस्थान की यह खनिज पेटी देश के कुल अभ्रक उत्पादन में झारखंड और आंध्र प्रदेश के बाद महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

49. (B) सौर ऊर्जा
ऊर्जा के परंपरागत स्रोत वे हैं जिनका उपयोग लंबे समय से किया जा रहा है और जिनके भंडार सीमित हैं, जैसे कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस। सौर ऊर्जा एक अपरंपरागत या गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्रोत है जो सूर्य से प्राप्त होती है और कभी समाप्त नहीं होती। यह एक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है जो पर्यावरण के अनुकूल है। सौर ऊर्जा का विकास भविष्य की ऊर्जा सुरक्षा और सतत विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जाता है।

50. (A) बिटुमिनस और गैर-कोककारी श्रेणी
भारत में पाए जाने वाले कुल कोयला निक्षेपों का लगभग 80 प्रतिशत भाग बिटुमिनस प्रकार का है। यह कोयला मुख्य रूप से गैर-कोककारी श्रेणी का है, जिसका अर्थ है कि इसे सीधे इस्पात प्रगलन के लिए उपयोग नहीं किया जा सकता है। यह ताप विद्युत उत्पादन और अन्य औद्योगिक उद्देश्यों के लिए उपयुक्त है। ऐंथ्रासाइट भारत में बहुत कम मात्रा में पाया जाता है। लिग्नाइट और पीट भी पाए जाते हैं, लेकिन बिटुमिनस सबसे प्रचुर और महत्वपूर्ण है।

51. (C) पश्चिम बंगाल, झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़
भारत में गोंडवाना कोयले के सबसे बड़े और महत्वपूर्ण भंडार उत्तर-पूर्वी पठारी राज्यों में स्थित हैं। पश्चिम बंगाल का रानीगंज, झारखंड के झरिया और बोकारो, ओडिशा का तलचर और छत्तीसगढ़ का कोरबा प्रमुख गोंडवाना कोयला क्षेत्र हैं। यह कोयला करोड़ों वर्ष पुराना है और देश की ऊर्जा आवश्यकताओं का मुख्य आधार है। इन राज्यों में कोयले की प्रचुरता के कारण ही यहाँ भारी उद्योगों और ताप विद्युत संयंत्रों का सघन विकास हुआ है।

52. (D) दामोदर घाटी
दामोदर नदी घाटी भारत का सबसे महत्वपूर्ण और विशाल गोंडवाना कोयला क्षेत्र है। यह झारखंड और पश्चिम बंगाल राज्यों में विस्तृत है। भारत के सबसे बड़े कोयला खनन केंद्र जैसे झरिया, रानीगंज, बोकारो और गिरिडीह इसी घाटी में स्थित हैं। यहाँ से देश का अधिकांश उच्च गुणवत्ता वाला बिटुमिनस कोयला प्राप्त होता है। दामोदर घाटी की भूगर्भीय संरचना कोयला निक्षेपों के संचय के लिए अत्यंत अनुकूल मानी जाती है, जो औद्योगिक क्रांति का केंद्र रही है।

53. (A) 1, 3, 2, 4
भारत में ऊर्जा संस्थानों की स्थापना का सही क्रम इस प्रकार है: सर्वप्रथम 1948 में परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना हुई। इसके पश्चात 1954 में ट्रांबे में परमाणु ऊर्जा संस्थान (AEET) स्थापित किया गया। 1956 में तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग (ONGC) का गठन हुआ। अंततः, 1976 में मुंबई हाई क्षेत्र में तेल का उत्पादन आधिकारिक रूप से प्रारंभ हुआ। यह कालानुक्रम भारत की ऊर्जा आत्मनिर्भरता और तकनीकी विकास के चरणों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

54. (B) झारखंड
झरिया भारत का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण कोयला क्षेत्र है, जो झारखंड राज्य के धनबाद जिले में स्थित है। यह अपने विशाल कोयला भंडारों और कोकिंग कोयले के लिए प्रसिद्ध है, जो इस्पात उद्योग के लिए अनिवार्य है। झरिया कोयला क्षेत्र दामोदर घाटी का हिस्सा है और यहाँ से बड़ी मात्रा में कोयला निकाला जाता है। झारखंड राज्य देश के कुल कोयला उत्पादन और आरक्षित भंडारों के मामले में अग्रणी स्थान पर है, जिसमें झरिया की भूमिका सर्वोपरि है।

55. (B) P-4, Q-3, R-1, S-2
रानीगंज पश्चिम बंगाल का सबसे पुराना और प्रमुख कोयला क्षेत्र है। सिंगरौली मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की सीमा पर स्थित एक विशाल कोयला बेल्ट है। कोरबा छत्तीसगढ़ का मुख्य कोयला खनन केंद्र है जो यहाँ के ताप विद्युत संयंत्रों के लिए प्रसिद्ध है। तलचर ओडिशा का सबसे महत्वपूर्ण कोयला क्षेत्र है जो महानदी घाटी में स्थित है। यह मिलान भारत के विभिन्न राज्यों में कोयला संसाधनों के भौगोलिक वितरण और उनके क्षेत्रीय महत्व को स्पष्ट करता है।

56. (A) असम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, नागालैंड
टर्शियरी कोयला गोंडवाना कोयले की तुलना में काफी नया है और यह मुख्य रूप से भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में पाया जाता है। असम में माकूम और नजीरा, मेघालय में चेरापूंजी और तुरा, तथा अरुणाचल प्रदेश और नागालैंड के कुछ हिस्सों में इसके निक्षेप मिलते हैं। यह कोयला अक्सर गंधक की अधिक मात्रा के लिए जाना जाता है। टर्शियरी निक्षेपों का वितरण भारत के हिमालयी और उत्तर-पूर्वी पर्वतीय क्षेत्रों की विशिष्ट भूगर्भिक संरचना से गहराई से जुड़ा हुआ है।

57. (C) तमिलनाडु के तटीय भागों, पुडुचेरी, गुजरात और जम्मू एवं कश्मीर।
लिग्नाइट, जिसे भूरा कोयला भी कहा जाता है, एक निम्न श्रेणी का कोयला है जिसमें कार्बन की मात्रा कम होती है। भारत में इसके मुख्य भंडार तमिलनाडु के नेवेली क्षेत्र में पाए जाते हैं, जो देश का सबसे बड़ा लिग्नाइट उत्पादक है। इसके अलावा पुडुचेरी, गुजरात के उमरसिर और जम्मू एवं कश्मीर के कालाकोट में भी इसके निक्षेप मिलते हैं। लिग्नाइट का उपयोग मुख्य रूप से विद्युत उत्पादन के लिए किया जाता है, विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ उत्तम कोयला उपलब्ध नहीं है।

58. (A) केवल 1, 2 और 4
पेट्रोलियम हाइड्रोकार्बन का एक मिश्रण है जो द्रव और गैसीय अवस्था में पाया जाता है। इसकी रासायनिक संरचना और रंग में क्षेत्रीय भिन्नता होती है। यह मुख्य रूप से टर्शियरी काल की अवसादी शैलों में पाया जाता है, न कि आग्नेय शैलों में। इसके उप-उत्पादों का उपयोग पेट्रो-रसायन उद्योगों में कच्चे माल के रूप में बड़े पैमाने पर होता है। अतः कथन तीन गलत है क्योंकि तेल का संचय केवल विशिष्ट छिद्रयुक्त अवसादी चट्टानों की संरचनाओं में ही संभव होता है।

59. (D) क्योंकि यह दुर्लभ है और इसके विविध उपयोग हैं।
पेट्रोलियम को उसकी उच्च आर्थिक उपयोगिता और दुर्लभता के कारण 'तरल सोना' की संज्ञा दी गई है। यह आधुनिक परिवहन और उद्योगों के लिए ऊर्जा का अनिवार्य स्रोत है। इसके परिष्करण से प्राप्त होने वाले सह-उत्पादों का उपयोग उर्वरक, कृत्रिम रबर, दवाइयों, सौंदर्य प्रसाधनों और प्लास्टिक उद्योग में कच्चे माल के रूप में किया जाता है। राष्ट्र की आर्थिक प्रगति और औद्योगिक विकास में इसकी भूमिका अत्यंत निर्णायक और बहुआयामी होती है, जो इसे अत्यंत मूल्यवान बनाती है।

60. (B) 1956
भारत में खनिज तेल की खोज और उत्पादन को व्यवस्थित करने के लिए 1956 में तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग (ONGC) की स्थापना की गई थी। इससे पहले, असम का डिगबोई देश का एकमात्र तेल उत्पादक क्षेत्र था। ओएनजीसी की स्थापना के बाद, खंभात की खाड़ी और अंकलेश्वर जैसे नए क्षेत्रों में तेल के बड़े भंडारों की खोज हुई। इस कदम ने भारत के हाइड्रोकार्बन क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक क्रांतिकारी परिवर्तन की शुरुआत की और अन्वेषण को गति दी।

61. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
कुओं से प्राप्त अपरिष्कृत पेट्रोलियम या कच्चा तेल अनेक अशुद्धियों और विभिन्न हाइड्रोकार्बन के जटिल मिश्रण के रूप में होता है। इसे सीधे ईंधन या अन्य उपयोगों में नहीं लाया जा सकता है। इसलिए, इसे तेल शोधन कारखानों (Refineries) में प्रसंस्कृत करना अनिवार्य होता है, जहाँ प्रभाजी आसवन द्वारा पेट्रोल, डीजल और केरोसिन जैसे उपयोगी उत्पाद प्राप्त किए जाते हैं। शोधन की यह प्रक्रिया तेल की उपयोगिता और गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

62. (D) अंकलेश्वर, कालोल, मेहसाणा, नवागाम
गुजरात भारत का एक प्रमुख तेल उत्पादक राज्य है जहाँ कई महत्वपूर्ण तेल क्षेत्र स्थित हैं। अंकलेश्वर इस क्षेत्र का सबसे प्रसिद्ध और बड़ा तेल क्षेत्र माना जाता है। इसके अतिरिक्त कालोल, मेहसाणा, नवागाम, कोसंबा और लुनेज भी महत्वपूर्ण उत्पादन केंद्र हैं। ये तेल क्षेत्र मुख्य रूप से खंभात की खाड़ी और मध्य गुजरात के मैदानी भागों में फैले हुए हैं। यहाँ से प्राप्त कच्चे तेल को कोयाली रिफाइनरी में शोधन के लिए भेजा जाता है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था का आधार है।

83. (C) राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक
पवन ऊर्जा के उत्पादन के लिए उन क्षेत्रों की आवश्यकता होती है जहाँ हवा की गति निरंतर और तीव्र हो। भारत के पश्चिमी और दक्षिणी राज्यों जैसे राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और कर्नाटक में इसके लिए अत्यंत अनुकूल परिस्थितियाँ उपलब्ध हैं। गुजरात की लंबी तटरेखा और राजस्थान के खुले मरुस्थलीय मैदान पवन चक्कियों की स्थापना के लिए आदर्श स्थान प्रदान करते हैं। इन राज्यों ने पवन ऊर्जा क्षेत्र में निवेश करके अपनी नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि की है।

84. (B) केवल 1, 2 और 4
महासागरीय धाराएँ और ज्वारीय तरंगें ऊर्जा का एक अटूट स्रोत हैं और भारत के पश्चिमी तट पर इनके दोहन की अच्छी संभावनाएँ हैं। ज्वारीय ऊर्जा एक नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है जो समुद्री जल के उतार-चढ़ाव से प्राप्त होती है। हालांकि, भारत में अभी तक ज्वारीय ऊर्जा का बड़े पैमाने पर व्यावसायिक उपयोग शुरू नहीं हुआ है, बल्कि यह अभी भी प्रारंभिक और प्रायोगिक चरणों में ही है। अतः कथन तीन गलत है जबकि अन्य सभी कथन पूर्णतः सत्य हैं।

85. (C) पृथ्वी के गर्भ से निकलने वाली ऊष्मा से
भूतापीय ऊर्जा पृथ्वी के आंतरिक भाग से निकलने वाली ऊष्मा का उपयोग करके उत्पन्न की जाती है। जब पृथ्वी के भीतर का मैग्मा जल के संपर्क में आता है, तो वह गर्म होकर भाप में बदल जाता है, जिसका उपयोग टर्बाइन चलाकर बिजली पैदा करने में किया जाता है। यह ऊर्जा का एक अटूट और स्वच्छ स्रोत है। भारत में हिमाचल प्रदेश के मनीकरण और लद्दाख की पुगा घाटी में इसके दोहन की अच्छी संभावनाएं मौजूद हैं जो पारिस्थितिक रूप से सुरक्षित हैं।

86. (B) मनीकरण, हिमाचल प्रदेश
भारत में भूतापीय ऊर्जा के दोहन के लिए एक प्रायोगिक संयंत्र हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में स्थित मनीकरण में स्थापित किया जा चुका है। यह क्षेत्र अपने गर्म पानी के चश्मों के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ पृथ्वी के भीतर की ऊष्मा सतह पर आती है। इसके अतिरिक्त, लद्दाख की पुगा घाटी में भी एक महत्वपूर्ण भूतापीय परियोजना पर कार्य चल रहा है। ये प्रयास भारत की ऊर्जा टोकरी में विविधता लाने और दुर्गम क्षेत्रों में स्वच्छ बिजली पहुँचाने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

87. (D) बोयजे शहर, इडाहो (यू.एस.ए.)
भूतापीय ऊर्जा के उपयोग का ऐतिहासिक विकास काफी रोचक है। पृथ्वी के गर्भ से निकलने वाले गर्म पानी और भाप का उपयोग करके ऊर्जा प्राप्त करने का पहला सफल व्यावसायिक प्रयास वर्ष 1890 में संयुक्त राज्य अमेरिका के इडाहो राज्य के बोयजे शहर में किया गया था। वहाँ गर्म पानी के कुओं का उपयोग पाइपों के माध्यम से घरों और इमारतों को गर्म करने के लिए किया गया था। इस सफलता ने दुनिया भर में भूतापीय संसाधनों के उपयोग की संभावनाओं को नई दिशा दी।

88. (A) जैविक उत्पाद जैसे कृषि अवशेष, नगरपालिका अपशिष्ट
जैव-ऊर्जा या बायो-एनर्जी उन जैविक पदार्थों से प्राप्त होती है जो कृषि अवशेषों, औद्योगिक कचरे और नगरपालिका के अपशिष्टों के रूप में उपलब्ध होते हैं। इन अपशिष्टों को रासायनिक या तापीय प्रक्रियाओं के माध्यम से गैस या बिजली में परिवर्तित किया जा सकता है। यह ऊर्जा का एक सतत और पर्यावरण अनुकूल स्रोत है क्योंकि यह कचरे का प्रभावी प्रबंधन करने के साथ-साथ ऊर्जा की आपूर्ति भी सुनिश्चित करता है। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में इसके विकास की काफी संभावनाएं हैं।

89. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
जैव-ऊर्जा विकासशील देशों के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए एक बहुआयामी वरदान है। यह न केवल कचरे और कृषि अवशेषों को मूल्यवान ऊर्जा में बदलती है, बल्कि इससे जलाऊ लकड़ी पर निर्भरता भी कम होती है, जिससे वनों का संरक्षण होता है। यह प्रक्रिया पर्यावरण प्रदूषण को घटाने में मदद करती है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाती है। इस प्रकार, जैव-ऊर्जा का विकास आर्थिक समृद्धि और पर्यावरणीय स्थिरता दोनों को एक साथ प्राप्त करने का एक सशक्त माध्यम है।

90. (A) ओखला
नई दिल्ली के ओखला में नगरपालिका के कचरे को बिजली में बदलने के लिए एक महत्वपूर्ण जैव-ऊर्जा परियोजना स्थापित की गई है। यह संयंत्र शहर से निकलने वाले ठोस कचरे का प्रसंस्करण करता है और उससे स्वच्छ ऊर्जा उत्पन्न करता है। इस तरह की परियोजनाएं कचरा प्रबंधन की समस्या का समाधान करने और प्रदूषण कम करने में अत्यंत प्रभावी साबित हुई हैं। यह भारत के शहरी क्षेत्रों में अपशिष्ट-से-ऊर्जा (Waste-to-Energy) तकनीक के उपयोग का एक उत्कृष्ट और सफल उदाहरण माना जाता है।

91. (D) सामरिक और अत्यल्प खनिजों के निर्यात को बढ़ावा देना
खनिज संसाधनों के संरक्षण के लिए निर्यात को बढ़ावा देना उपयुक्त उपाय नहीं है, बल्कि सामरिक और दुर्लभ खनिजों का देश के भीतर ही सावधानीपूर्वक संचय करना आवश्यक है। खनिजों के संरक्षण के सही तरीकों में ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों का उपयोग, पुरानी धातुओं का पुनर्चक्रण और दुर्लभ धातुओं के स्थान पर सस्ते विकल्पों को खोजना शामिल है। खनिजों का निर्यात उन्हें तेजी से समाप्त कर सकता है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए संसाधनों की कमी का कारण बनेगा।

92. (B) ताँबा, सीसा और जस्ता
ताँबा, सीसा और जस्ता जैसी अलौह धातुओं के मामले में छाजन या स्क्रैप का उपयोग भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि देश में इनके प्राकृतिक भंडार बहुत सीमित हैं। धातुओं का पुनर्चक्रण न केवल प्राथमिक खनन की आवश्यकता को कम करता है, बल्कि ऊर्जा की बचत और पर्यावरणीय प्रदूषण को घटाने में भी सहायक होता है। भारत को इन धातुओं की कमी के कारण इनके संरक्षण और चक्रीय उपयोग पर विशेष

73. (C) धारवाड़ शैल
भारत में यूरेनियम के निक्षेप मुख्य रुप से प्राचीन धारवाड़ क्रम की शैलों में पाए जाते हैं। ये शैल संरचनाएं धात्विक खनिजों की प्रचुरता के लिए जानी जाती हैं। झारखंड की सिंहभूम ताँबा पट्टी में यूरेनियम का निष्कर्षण व्यापक रूप से किया जाता है। इसके अलावा राजस्थान के उदयपुर और अलवर जिलों की धारवाड़ चट्टानों में भी यूरेनियम के भंडार मिलते हैं। धारवाड़ शैलों की विशिष्ट भूगर्भीय संरचना ही इन रेडियोधर्मी खनिजों के संचय और विकास के लिए उत्तरदायी मानी जाती है।

74. (A) केरल का तटीय क्षेत्र
यूरेनियम अयस्क भारत में झारखंड की सिंहभूम ताँबा पट्टी, राजस्थान के उदयपुर, झुंझुनु और अलवर जिलों तथा छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले में पाया जाता है। केरल का तटीय क्षेत्र यूरेनियम के लिए नहीं, बल्कि थोरियम के मुख्य स्रोत 'मोनाजाइट बालू' के लिए प्रसिद्ध है। केरल में यूरेनियम के व्यावसायिक भंडार नहीं पाए जाते हैं। अतः केरल के तटीय क्षेत्र को छोड़कर अन्य सभी विकल्प भारत के प्रमुख यूरेनियम उत्पादक क्षेत्रों को सही ढंग से दर्शाते हैं, जो परमाणु ऊर्जा हेतु आवश्यक हैं।

75. (D) मोनाजाइट बालू से, केरल के तटीय क्षेत्र में
थोरियम भारत के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण नाभिकीय खनिज है क्योंकि यहाँ इसके विश्व के सबसे बड़े भंडारों में से एक स्थित है। यह मुख्य रूप से केरल के तटीय क्षेत्रों की मोनाजाइट और इल्मेनाइट युक्त बालू से प्राप्त किया जाता है। मोनाजाइट एक फास्फेट खनिज है जिसमें थोरियम की उच्च मात्रा होती है। केरल के अलावा आंध्र प्रदेश, ओडिशा और तमिलनाडु के तटीय क्षेत्रों में भी थोरियम के भंडार पाए जाते हैं, जो भारत के भविष्य के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के लिए रणनीतिक आधार हैं।

76. (A) केवल 1, 2, और 4
भारत के प्रमुख नाभिकीय ऊर्जा संयंत्रों में तारापुर (महाराष्ट्र), रावतभाटा (राजस्थान) और नरोरा (उत्तर प्रदेश) सही ढंग से सुमेलित हैं। कलपक्कम संयंत्र तमिलनाडु में स्थित है, न कि कर्नाटक में; कर्नाटक में कैगा संयंत्र स्थित है। इसी प्रकार कैगा गुजरात में नहीं बल्कि कर्नाटक में है। अतः केवल कथन एक, दो और चार भौगोलिक रूप से सत्य हैं। यह जानकारी भारत में परमाणु ऊर्जा के क्षेत्रीय वितरण और महत्वपूर्ण बिजली उत्पादन केंद्रों को समझने के लिए आवश्यक है।

77. (C) 1948
भारत में परमाणु ऊर्जा के विकास और शांतिपूर्ण उपयोग की योजना बनाने के लिए अगस्त 1948 में परमाणु ऊर्जा आयोग की स्थापना की गई थी। डॉ. होमी जहांगीर भाभा इसके पहले अध्यक्ष थे। इस आयोग की स्थापना स्वतंत्रता के तुरंत बाद वैज्ञानिक आत्मनिर्भरता की दिशा में एक बड़ा कदम था। इसके माध्यम से ही देश में परमाणु अनुसंधान और बिजली उत्पादन के बुनियादी ढांचे की नींव रखी गई, जिसने आगे चलकर भारत को इस क्षेत्र में अग्रणी बनाया।

78. (D) सौर ऊर्जा
सौर ऊर्जा को फोटोवोल्टाइक (PV) सेलों का उपयोग करके प्राप्त किया जाता है, जो सूर्य के प्रकाश को सीधे विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित करते हैं। यह एक स्वच्छ, अक्षय और प्रदूषण मुक्त ऊर्जा का स्रोत है। भारत जैसे उष्णकटिबंधीय देश में इसकी अपार संभावनाएं हैं। सौर ऊर्जा का उपयोग न केवल घरेलू कार्यों में बल्कि बड़े पैमाने पर औद्योगिक और कृषि कार्यों में भी किया जा रहा है, जो जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम करने में सहायक है।

79. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
राजस्थान और गुजरात सौर ऊर्जा के विकास के लिए भारत के सबसे आदर्श क्षेत्र माने जाते हैं। इसका मुख्य कारण यहाँ की भौगोलिक और जलवायु परिस्थितियाँ हैं, जहाँ वर्ष के अधिकांश दिनों में आकाश साफ रहता है और वर्षा कम होती है। सौर विकिरण की उच्च तीव्रता और शुष्क वातावरण फोटोवोल्टाइक प्रणालियों की दक्षता को बढ़ाते हैं। इन राज्यों में विशाल बंजर भूमि की उपलब्धता भी बड़े सौर पार्क स्थापित करने के लिए एक अतिरिक्त लाभ प्रदान करती है।

80. (B) 7 प्रतिशत
सौर ऊर्जा को कोयला या तेल आधारित ताप विद्युत संयंत्रों की तुलना में लगभग सात प्रतिशत अधिक प्रभावी और कुशल माना जाता है। यह प्रभावशीलता न केवल ऊर्जा उत्पादन की दक्षता से जुड़ी है, बल्कि इसके न्यूनतम पर्यावरणीय प्रभाव और लंबी अवधि में कम परिचालन लागत से भी संबंधित है। सौर ऊर्जा संयंत्रों में ईंधन के जलने से होने वाला ऊर्जा ह्रास नहीं होता है, जिससे यह पारंपरिक तापीय ऊर्जा के मुकाबले एक बेहतर और अधिक टिकाऊ विकल्प साबित होता है।

81. (B) भारत में पवन ऊर्जा उत्पादन की कोई संभावना नहीं है।
पवन ऊर्जा के संबंध में विकल्प बी पूरी तरह असत्य है क्योंकि भारत में पवन ऊर्जा के विकास की विशाल संभावनाएँ मौजूद हैं। भारत विश्व के अग्रणी पवन ऊर्जा उत्पादक देशों में से एक है। यह एक पूर्णतः प्रदूषण मुक्त और कभी न समाप्त होने वाला ऊर्जा स्रोत है। पवन चक्कियों के माध्यम से पवन की गतिज ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित किया जाता है। भारत के पास लंबी तटरेखा और खुले मैदान पवन ऊर्जा हेतु अत्यंत अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करते हैं।

82. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
तारापुर परमाणु संयंत्र महाराष्ट्र में स्थित भारत का पहला नाभिकीय ऊर्जा केंद्र है। रावतभाटा राजस्थान के कोटा में स्थित है जो कनाडा के सहयोग से स्थापित किया गया था। कलपक्कम तमिलनाडु में स्थित है और यह पूर्णतः स्वदेशी तकनीक पर आधारित है। नरोरा परमाणु ऊर्जा केंद्र उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले में गंगा नदी के किनारे स्थित है। यह मिलान भारत के विभिन्न राज्यों में परमाणु ऊर्जा के प्रमुख बिजली केंद्रों की भौगोलिक स्थिति को सही ढंग से दर्शाता है।

63. (A) 1973 में खोजा गया, 1976 में उत्पादन प्रारंभ
मुंबई हाई, जो मुंबई तट से लगभग 160 किलोमीटर दूर अरब सागर में स्थित है, भारत का सबसे महत्वपूर्ण अपतटीय तेल क्षेत्र है। इसकी खोज 1973 में एक रूसी और भारतीय टीम द्वारा की गई थी और यहाँ व्यावसायिक तेल उत्पादन 1976 में शुरू हुआ। यह क्षेत्र देश के कुल घरेलू पेट्रोलियम उत्पादन में सर्वाधिक योगदान देता है। 'सागर सम्राट' नामक विशेष ड्रिलिंग प्लेटफॉर्म का उपयोग यहाँ से तेल निकालने के लिए किया गया था, जो एक बड़ी उपलब्धि थी।

64. (A) केवल 1 और 4
भारत में तेल शोधन कारखानों को उनकी अवस्थिति के आधार पर दो श्रेणियों में बांटा गया है। क्षेत्र आधारित कारखाने तेल कुओं के निकट होते हैं, जैसे असम का डिगबोई। बाजार आधारित कारखाने खपत केंद्रों या पाइपलाइनों के पास होते हैं, जैसे बरौनी और मथुरा। कथन दो और तीन गलत हैं क्योंकि डिगबोई क्षेत्र आधारित है और बरौनी बाजार आधारित है। कथन पाँच भी गलत है क्योंकि मथुरा एक प्रमुख बाजार आधारित रिफाइनरी का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है।

65. (B) भवन निर्माण सामग्री के रूप में
प्राकृतिक गैस एक स्वच्छ और बहुमुखी ऊर्जा स्रोत है जिसका उपयोग व्यापक रूप से औद्योगिक और घरेलू कार्यों में किया जाता है। यह बिजली उत्पादन के लिए ईंधन के रूप में और परिवहन क्षेत्र में सीएनजी के रूप में उपयोग होती है। उर्वरक और पेट्रोकेमिकल उद्योगों में यह एक अनिवार्य कच्चे माल के रूप में कार्य करती है। हालाँकि, प्राकृतिक गैस का उपयोग भवन निर्माण सामग्री के रूप में नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह एक ऊर्जा संसाधन है, न कि संरचनात्मक पदार्थ।

66. (A) मुंबई हाई और पश्चिमी तट के संबद्ध क्षेत्र
भारत के प्रमुख प्राकृतिक गैस भंडार मुख्य रूप से पश्चिमी अपतटीय क्षेत्रों में केंद्रित हैं। मुंबई हाई और इसके आसपास के बेसिन देश की अधिकांश गैस आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। इसके अलावा खंभात बेसिन में भी गैस के महत्वपूर्ण भंडार पाए जाते हैं। गैस अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (GAIL) इन भंडारों के परिवहन और विपणन के लिए उत्तरदायी है। पश्चिमी तट की यह गैस बेल्ट भारत के ऊर्जा मानचित्र पर औद्योगिक विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

67. (C) कृष्णा-गोदावरी बेसिन
हाल के अन्वेषणों के दौरान भारत के पूर्वी तट पर स्थित कृष्णा-गोदावरी बेसिन में प्राकृतिक गैस के विशाल और नए भंडार खोजे गए हैं। यह खोज भारत की ऊर्जा सुरक्षा और गैस आधारित अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने के प्रयासों के लिए एक बड़ी सफलता मानी जा रही है। रिलायंस और ओएनजीसी जैसी कंपनियाँ इस क्षेत्र में गहरे समुद्री खनन कार्यों में संलग्न हैं। ये भंडार भविष्य में घरेलू गैस उत्पादन को बढ़ाने और आयात पर निर्भरता कम करने में सहायक होंगे।

68. (D) पवन ऊर्जा
पवन ऊर्जा ऊर्जा का एक अपरंपरागत या गैर-पारंपरिक स्रोत है जो पवन की गतिज ऊर्जा का उपयोग करके टर्बाइन के माध्यम से बिजली उत्पन्न करता है। कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस परंपरागत स्रोत हैं जो सीमित और प्रदूषणकारी हैं। इसके विपरीत, पवन ऊर्जा अक्षय, प्रदूषण मुक्त और पर्यावरण के अनुकूल है। भारत के तटीय क्षेत्रों और पहाड़ी राज्यों में पवन ऊर्जा के विकास की अपार संभावनाएं मौजूद हैं, जो सतत विकास के लक्ष्यों को पूरा करने में सहायक हैं।

69. (C) ये नवीकरण योग्य स्रोत हैं।
अपरंपरागत ऊर्जा स्रोतों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वे नवीकरणीय होते हैं, अर्थात वे प्राकृतिक रूप से निरंतर पुनर्भरण योग्य हैं और कभी समाप्त नहीं होते। सौर, पवन, ज्वारीय और भूतापीय ऊर्जा इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ये स्रोत पर्यावरण के अनुकूल होते हैं क्योंकि इनसे हानिकारक गैसों का उत्सर्जन नहीं होता है। हालांकि इनकी शुरुआती स्थापना लागत अधिक हो सकती है, लेकिन दीर्घकालिक रूप से ये ऊर्जा सुरक्षा और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने के लिए अनिवार्य हैं।

70. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
डिगबोई भारत का सबसे पुराना तेल क्षेत्र है जो असम राज्य में स्थित है। अंकलेश्वर गुजरात का एक प्रमुख ऑनशोर तेल उत्पादक केंद्र है। मुंबई हाई अरब सागर में स्थित एक महत्वपूर्ण अपतटीय क्षेत्र है जो महाराष्ट्र के तट से दूर है। कृष्णा-गोदावरी बेसिन भारत के पूर्वी तट पर स्थित है जहाँ हाल ही में गैस और तेल के बड़े भंडार मिले हैं। यह मिलान भारत के विभिन्न पेट्रोलियम उत्पादक क्षेत्रों की सही भौगोलिक स्थिति को स्पष्ट करता है।

71. (D) यूरेनियम और थोरियम
नाभिकीय ऊर्जा के उत्पादन के लिए यूरेनियम और थोरियम दो सबसे महत्वपूर्ण खनिज हैं। यूरेनियम का उपयोग परमाणु रिएक्टरों में ईंधन के रूप में किया जाता है ताकि नाभिकीय विखंडन के माध्यम से विशाल मात्रा में ऊर्जा प्राप्त की जा सके। थोरियम भी एक महत्वपूर्ण संभावित ईंधन है, जिसके विशाल निक्षेप भारत के केरल तट पर मोनाजाइट बालू में पाए जाते हैं। भारत अपनी तीन चरणों वाली परमाणु ऊर्जा रणनीति के तहत इन दोनों खनिजों के प्रभावी उपयोग पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

72. (B) 3, 1, 2
भारत के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम का विकास एक व्यवस्थित क्रम में हुआ। सबसे पहले 1948 में परमाणु ऊर्जा आयोग का गठन किया गया ताकि इस क्षेत्र में अनुसंधान को दिशा दी जा सके। इसके बाद 1954 में ट्रांबे में परमाणु ऊर्जा संस्थान (AEET) की स्थापना हुई। अंततः, 1967 में डॉ. होमी भाभा के सम्मान में इस संस्थान का नाम बदलकर भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (BARC) कर दिया गया। यह क्रम भारत की वैज्ञानिक प्रगति के महत्वपूर्ण पड़ावों को दर्शाता है।

ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि आयात निर्भरता घटाई जा सके।

93. (C) भावी पीढ़ियों के लिए संसाधनों का संरक्षण।
सतत पोषणीय विकास की मूल अवधारणा यह है कि वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को इस प्रकार पूरा किया जाए कि आने वाली पीढ़ियों के लिए संसाधनों की उपलब्धता और गुणवत्ता से कोई समझौता न हो। यह संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग, बर्बादी को रोकने और पर्यावरण संरक्षण पर बल देती है। खनिजों जैसे सीमित संसाधनों के संदर्भ में यह अवधारणा और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि ये एक बार समाप्त होने के बाद लाखों वर्षों तक दोबारा प्राप्त नहीं किए जा सकते हैं।

94. (D) 160 कि.मी.
मुंबई हाई भारत का सबसे महत्वपूर्ण अपतटीय तेल क्षेत्र है, जो मुंबई शहर से उत्तर-पश्चिम दिशा में अरब सागर के भीतर लगभग 160 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस क्षेत्र में तेल और प्राकृतिक गैस के विशाल भंडार पाए जाते हैं जो देश की ऊर्जा सुरक्षा के लिए अत्यंत निर्णायक हैं। यहाँ समुद्र के भीतर ड्रिलिंग प्लेटफॉर्म स्थापित करके गहराई से कच्चा तेल निकाला जाता है। इसकी भौगोलिक अवस्थिति और रणनीतिक महत्व इसे भारत का प्रमुख खनिज तेल केंद्र बनाते हैं।

95. (A) सौर-तापीय प्रौद्योगिकी
सौर-तापीय प्रौद्योगिकी को इसकी निर्माण की सरलता, लागत में प्रतिस्पर्धात्मकता और उच्च पर्यावरणीय अनुकूलता के कारण ऊर्जा का एक प्रभावी विकल्प माना जाता है। यह तकनीक सूर्य की गर्मी का उपयोग करके बिजली पैदा करती है या सीधे तापीय कार्यों में मदद करती है। अन्य विकल्पों जैसे कोयला या परमाणु ऊर्जा की तुलना में इसमें प्रदूषण का खतरा न्यूनतम होता है और यह भविष्य की ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए एक सस्ता और टिकाऊ समाधान प्रदान करने में सक्षम तकनीक मानी जाती है।

96. (B) केवल 1, 2, 3, 4
भारत की खनिज पेटियों का विवरण पहले चार कथनों में सटीक है, जिसमें उत्तर-पूर्वी पेटी सबसे धनी है और उत्तर-पश्चिमी पेटी गुजरात के पेट्रोलियम के लिए प्रसिद्ध है। हालाँकि, कथन पाँच गलत है क्योंकि हिमालयी पेटी धात्विक खनिजों से पूरी तरह विहीन नहीं है; वहाँ ताँबा, सीसा और जस्ता जैसे खनिजों के भंडार पाए जाते हैं। खनिजों का क्षेत्रीय वितरण भारत की जटिल भूगर्भिक संरचना और उसके ऐतिहासिक विकास को प्रतिबिंबित करता है, जो उद्योग और अर्थव्यवस्था हेतु आधारभूत है।

97. (B) लौह अयस्क, छत्तीसगढ़
छत्तीसगढ़ राज्य में डल्ली और राजहरा की खदानें लौह अयस्क के खनन के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। ये खदानें दुर्ग जिले में स्थित हैं और मुख्य रूप से भिलाई इस्पात संयंत्र को उच्च गुणवत्ता वाले कच्चे लोहे की आपूर्ति करती हैं। यहाँ हेमेटाइट श्रेणी का उत्कृष्ट लौह अयस्क पाया जाता है। डल्ली-राजहरा की पहाड़ियों में स्थित ये निक्षेप भारत के औद्योगिक ढांचे को मजबूती प्रदान करने और इस्पात उत्पादन बढ़ाने में ऐतिहासिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते आ रहे हैं।

98. (A) नागपुर
हजीरा-विजयपुर-जगदीशपुर (HVJ) पाइपलाइन भारत की पहली महत्वपूर्ण क्रॉस-कंट्री गैस पाइपलाइन है जो गुजरात, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के औद्योगिक क्षेत्रों को जोड़ती है। यह पाइपलाइन औरैया, शाहजहाँपुर, आँवला और बबराला जैसे प्रमुख उर्वरक और बिजली संयंत्रों के केंद्रों से होकर गुजरती है। नागपुर इस पाइपलाइन के मार्ग पर स्थित नहीं है, क्योंकि नागपुर महाराष्ट्र में स्थित है जबकि यह पाइपलाइन मुख्य रूप से उत्तर और पश्चिम भारत के राज्यों को प्राकृतिक गैस की आपूर्ति करने के लिए बिछाई गई है।

99. (C) बरौनी
बाजार-आधारित तेल शोधन कारखाने वे होते हैं जो कच्चे तेल के उत्पादन क्षेत्रों से दूर, उपभोक्ताओं या बड़े बाजारों के पास स्थित होते हैं। बिहार में स्थित बरौनी रिफाइनरी इसका एक प्रमुख उदाहरण है, जिसे कच्चे तेल की आपूर्ति पाइपलाइनों के माध्यम से की जाती है। अन्य विकल्प जैसे डिगबोई, नुमालीगढ़ और बोंगईगांव क्षेत्र-आधारित रिफाइनरियाँ हैं जो असम के तेल कुओं के निकट ही स्थापित की गई हैं। बरौनी जैसी रिफाइनरियाँ क्षेत्रीय विकास और ऊर्जा वितरण को सुलभ बनाने में सहायक होती हैं।

100. (A) P-4, Q-1, R-3, S-2
कोयाली तेल शोधन कारखाना गुजरात में स्थित है और यह पश्चिमी भारत की एक प्रमुख रिफाइनरी है। मथुरा रिफाइनरी उत्तर प्रदेश में स्थित है जो उत्तरी भारत की तेल मांग को पूरा करती है। हल्दिया रिफाइनरी पश्चिम बंगाल के तटीय क्षेत्र में स्थित है, जो समुद्री मार्ग से तेल आयात-निर्यात के लिए महत्वपूर्ण है। तातीपाका आंध्र प्रदेश में स्थित एक छोटी लेकिन महत्वपूर्ण रिफाइनरी है। यह मिलान भारत के विभिन्न राज्यों में फैले हुए तेल शोधन बुनियादी ढांचे को सही ढंग से दर्शाता है।

101. (C) केवल 1, 2 और 4
लौह खनिजों के अंतर्गत लौह अयस्क, मैंगनीज और क्रोमाइट शामिल हैं जो इस्पात और अन्य धातु उद्योगों के लिए रीढ़ की हड्डी का काम करते हैं। भारत लौह खनिजों के संचय और उत्पादन दोनों में एक बहुत ही समृद्ध और अग्रणी देश है, न कि कमजोर। कथन तीन गलत है क्योंकि भारत के पास हेमेटाइट और मैग्नेटाइट के विशाल भंडार हैं। ये खनिज देश के औद्योगिक विकास और निर्यात के लिए एक अत्यंत मजबूत आधार प्रदान करते हैं, जिससे भारत विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी है।

102. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
सतत पोषणीय विकास का मुख्य लक्ष्य संसाधनों का इस प्रकार प्रबंधन करना है कि वे लंबे समय तक उपलब्ध रहें। ऊर्जा और खनिजों के उपयोग के पारंपरिक तरीके अक्सर अक्षम होते हैं और बड़ी मात्रा में अपशिष्ट उत्पन्न करते हैं, जिससे गंभीर पर्यावरणीय संकट पैदा होता है। इसलिए, संसाधनों का

22. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत के उत्तर-पूर्वी पठार प्रदेश में लौह अयस्क और कोयला क्षेत्रों की निकटता एक महत्वपूर्ण भौगोलिक विशेषता है। लौह अयस्क से धातु प्राप्त करने या प्रगलन के लिए कोयला ऊर्जा के मुख्य स्रोत के रूप में आवश्यक होता है। इन दोनों संसाधनों का एक ही क्षेत्र में उपलब्ध होना परिवहन लागत को कम करता है और लौह-इस्पात उद्योगों की स्थापना के लिए एक आदर्श आर्थिक वातावरण प्रदान करता है।

23. (D) नोआमुंडी
ओडिशा राज्य लौह अयस्क के विशाल निक्षेपों के लिए जाना जाता है, जहाँ गुरुमहिसानी, सुलाएपत और बादामपहाड़ जैसी महत्वपूर्ण खदानें स्थित हैं। नोआमुंडी झारखंड के पश्चिमी सिंहभूम जिले में स्थित है और यह भारत की सबसे पुरानी और बड़ी लौह अयस्क खदानों में से एक है। यह खदान झारखंड-ओडिशा सीमा के पास होने के बावजूद प्रशासनिक रूप से झारखंड राज्य के अंतर्गत आती है, जो उच्च श्रेणी के हेमेटाइट के लिए प्रसिद्ध है।

24. (A) ओडिशा, झारखंड, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, गोवा, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु।
भारत में लौह अयस्क के आरक्षित भंडार मुख्य रूप से सात राज्यों में केंद्रित हैं, जो कुल राष्ट्रीय भंडार का लगभग 95 प्रतिशत हिस्सा बनाते हैं। ओडिशा, झारखंड और छत्तीसगढ़ जैसे राज्य उत्तर-पूर्वी पेटी का हिस्सा हैं, जबकि कर्नाटक और गोवा पश्चिमी क्षेत्र में महत्वपूर्ण हैं। आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में भी लौह अयस्क के निक्षेप पाए जाते हैं। यह विस्तृत वितरण देश के इस्पात उद्योग के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है।

25. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
गुरुमहिसानी ओडिशा की एक प्रसिद्ध लौह अयस्क खदान है, जबकि नोआमुंडी झारखंड के सिंहभूम जिले में स्थित है। डल्ली-राजहरा छत्तीसगढ़ की महत्वपूर्ण लौह खदान है जो भिलाई इस्पात संयंत्र को कच्चे माल की आपूर्ति करती है। कुद्रेमुख कर्नाटक में स्थित है, जो अपने बाबा बूदन पहाड़ी क्षेत्र के लिए जाना जाता है। यह वर्गीकरण भारत के प्रमुख लौह अयस्क उत्पादक केंद्रों और उनके राज्यों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

26. (A) पूर्वी और पश्चिमी सिंहभूम
झारखंड राज्य में लौह अयस्क का खनन मुख्य रूप से सिंहभूम क्षेत्र में केंद्रित है। नोआमुंडी और गुआ जैसी महत्वपूर्ण खदानें पश्चिमी सिंहभूम जिले में स्थित हैं, जो उच्च गुणवत्ता वाले हेमेटाइट अयस्क के लिए जानी जाती हैं। यह क्षेत्र भारत की सबसे पुरानी लौह अयस्क खनन पट्टी का हिस्सा है और पास के जमशेदपुर जैसे औद्योगिक केंद्रों को कच्चा माल प्रदान करता है। सिंहभूम की भूगर्भिक संरचना लौह खनिजों के लिए अत्यंत अनुकूल मानी जाती है।

27. (B) केवल 1, 2 और 3
कर्नाटक में लौह अयस्क के निक्षेप मुख्य रूप से बल्लारि जिले के संदूर-होसपेटे क्षेत्र, चिकमगलूरु की बाबा बूदन पहाड़ियों और कुद्रेमुख में पाए जाते हैं। इसके अलावा शिवमोगा, चित्रदुर्ग और तुमकूरु जिलों में भी महत्वपूर्ण भंडार हैं। कोलार और रायचूर जिले मुख्य रूप से सोने के खनन के लिए प्रसिद्ध हैं, न कि लौह अयस्क के लिए। अतः पहले तीन कथन कर्नाटक के लौह अयस्क वितरण को सही ढंग से परिभाषित करते हैं।

28. (B) लौह अयस्क के प्रगलन तथा लौह-मिश्रधातु के विनिर्माण में।
मैंगनीज एक महत्वपूर्ण धात्विक खनिज है जिसका उपयोग मुख्य रूप से लौह-इस्पात उद्योग में किया जाता है। यह लौह अयस्क के प्रगलन की प्रक्रिया में एक अनिवार्य कच्चे माल के रूप में कार्य करता है और मिश्रधातु बनाने में मदद करता है। स्टील को कठोर और जंग-रोधी बनाने के लिए इसमें मैंगनीज मिलाया जाता है। इसके अतिरिक्त इसका उपयोग ब्लीचिंग पाउडर, कीटनाशकों और सूखी बैटरी के निर्माण में भी बड़े पैमाने पर किया जाता है।

29. (A) केवल 1 और 2
मैंगनीज निक्षेप लगभग सभी भूगर्भिक संरचनाओं में पाए जाते हैं, लेकिन इनका मुख्य संबंध धारवाड़ क्रम की शैलों से है। भारत में ओडिशा मैंगनीज का सबसे बड़ा उत्पादक है, न कि कर्नाटक। महाराष्ट्र की खदानें नागपुर और भंडारा जिलों में स्थित हैं, लेकिन वे इस्पात संयंत्रों से दूर होने के कारण नुकसानदेह स्थिति में हैं। तेलंगाना और झारखंड गौण उत्पादक हैं। अतः केवल पहले दो कथन ही पूर्णतः सत्य और सटीक हैं।

30. (D) धारवाड़ क्रम
मैंगनीज एक अत्यंत महत्वपूर्ण खनिज है जो मुख्य रूप से प्राचीन धारवाड़ क्रम की कायांतरित और आग्नेय शैलों से संबद्ध है। यह भूगर्भिक क्रम धात्विक खनिजों की प्रचुरता के लिए जाना जाता है। भारत के प्रमुख मैंगनीज उत्पादक क्षेत्र जैसे ओडिशा, कर्नाटक और महाराष्ट्र इसी धारवाड़ संरचना का हिस्सा हैं। गोंडवाना और टर्शियरी क्रम मुख्य रूप से कोयला और पेट्रोलियम जैसे ईंधन खनिजों के भंडार के लिए पहचाने जाते हैं, न कि मैंगनीज के लिए।

31. (A) बोनाई, केंदुझर, सुंदरगढ़, गंगपुर
ओडिशा भारत में मैंगनीज का एक अग्रणी उत्पादक राज्य है। यहाँ की मुख्य खदानें राज्य के उत्तरी और पश्चिमी हिस्सों में स्थित हैं, जिनमें बोनाई, केंदुझर, सुंदरगढ़ और गंगपुर प्रमुख क्षेत्र हैं। इसके अलावा कोरापुट और कालाहांडी जिलों में भी मैंगनीज के महत्वपूर्ण निक्षेप पाए जाते हैं। यह क्षेत्र अपनी उच्च गुणवत्ता वाले मैंगनीज के लिए जाना जाता है, जो घरेलू इस्पात उद्योग और निर्यात दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

32. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत अलौह खनिजों के मामले में आत्मनिर्भर नहीं है और बॉक्साइट को छोड़कर अन्य सभी प्रमुख अलौह धातुओं जैसे ताँबा, सीसा और जस्ते के भंडार यहाँ अपर्याप्त हैं। इन धातुओं की घरेलू मांग को पूरा करने के लिए भारत को अक्सर इनके

में भूमिका उसके विद्युत उद्योग में महत्व या उसकी सामान्य धात्विक प्रकृति की पूर्ण व्याख्या नहीं करती है।

113. (B) तारापुर
तारापुर परमाणु ऊर्जा स्टेशन महाराष्ट्र राज्य के पालघर जिले में अरब सागर के तट पर स्थित है, जो भारत के पश्चिमी तट का हिस्सा है। यह भारत का सबसे पुराना और पहला व्यावसायिक परमाणु ऊर्जा संयंत्र है। कलपक्कम पूर्वी तट (तमिलनाडु) पर है, नरोरा उत्तर भारत (उत्तर प्रदेश) में है और रावतभाटा राजस्थान के आंतरिक भाग में स्थित है। तारापुर की तटीय अवस्थिति समुद्री जल के शीतलन हेतु उपयोग और बड़े औद्योगिक केंद्रों की निकटता के कारण अत्यंत रणनीतिक मानी जाती है।

114. (A) 1, 2, 3, 4
भारत के प्रमुख लौह अयस्क केंद्रों का उत्तर से दक्षिण का सही भौगोलिक क्रम गुरुमहिसानी (ओडिशा), डल्ली-राजहरा (छत्तीसगढ़), बल्लारि (कर्नाटक) और अंत में कुद्रेमुख (कर्नाटक) है। गुरुमहिसानी ओडिशा के उत्तरी भाग में है, जबकि कुद्रेमुख कर्नाटक के दक्षिण-पश्चिमी घाट क्षेत्र में स्थित है। यह क्रम देश के पूर्वी और दक्षिणी खनिज क्षेत्रों के अक्षांशीय विस्तार को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। यह वितरण भारत के विभिन्न राज्यों में लौह अयस्क की उपलब्धता और उनके खनन महत्व को भी प्रदर्शित करता है।

115. (C) यह ऊष्मा और विद्युत का अच्छा सुचालक है।
अभ्रक के बारे में विकल्प सी पूरी तरह असत्य है क्योंकि अभ्रक की सबसे बड़ी विशेषता ही इसका विद्युत और ऊष्मा का कुचालक (इंसुलेटर) होना है। इसी गुण के कारण इसका उपयोग विद्युत उपकरणों और इलेक्ट्रॉनिक्स में बड़े पैमाने पर किया जाता है। अभ्रक को बहुत पतली परतों में बांटा जा सकता है जो पारदर्शी और लचीली होती हैं। यह उच्च वोल्टेज और ताप को सहन करने में सक्षम होता है, जो इसे आधुनिक तकनीक और संचार उपकरणों के लिए अनिवार्य बनाता है।

116. (A) केवल 1, 2, और 3
जीवाश्म ईंधन उन ऊर्जा संसाधनों को कहा जाता है जो प्राचीन काल में मृत जीवों और वनस्पतियों के पृथ्वी के भीतर दबने और लाखों वर्षों के रासायनिक परिवर्तन से बने हैं। कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस इसके प्रमुख उदाहरण हैं। यूरेनियम और थोरियम परमाणु या अणु-शक्ति खनिज हैं, जो रेडियोधर्मी तत्वों के विखंडन से ऊर्जा प्रदान करते हैं, न कि जीवाश्म प्रक्रियाओं से। अतः केवल पहले तीन ही जीवाश्म ईंधन की श्रेणी में आते हैं, जो समाप्य और परंपरागत स्रोत हैं।

117. (C) 1967
1954 में ट्रांबे में स्थापित परमाणु ऊर्जा संस्थान (AEET) का नाम बदलकर 1967 में 'भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र' (BARC) कर दिया गया था। यह परिवर्तन भारत के महान वैज्ञानिक डॉ. होमी जहांगीर भाभा के निधन के बाद उनके सम्मान में किया गया था, जिन्हें 'भारतीय परमाणु कार्यक्रम का जनक' माना जाता है। बार्क आज भारत का प्रमुख परमाणु अनुसंधान केंद्र है जो नाभिकीय ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग, कृषि, चिकित्सा और औद्योगिक अनुप्रयोगों के क्षेत्र में अत्याधुनिक कार्य कर रहा है।

118. (B) चूना-पत्थर
धात्विक खनिजों में धातुओं का अंश होता है और उन्हें प्रसंस्कृत करके शुद्ध धातु प्राप्त की जा सकती है, जैसे लौह अयस्क, ताँबा और बॉक्साइट। चूना-पत्थर एक अधात्विक खनिज है जिसमें किसी धातु का अंश नहीं होता है। यह मुख्य रूप से कैल्शियम कार्बोनेट से बना होता है और अवसादी शैलों में पाया जाता है। चूना-पत्थर का उपयोग सीमेंट, लौह-इस्पात और रासायनिक उद्योगों में बड़े पैमाने पर किया जाता है। यह वर्गीकरण खनिजों की रासायनिक प्रकृति और उनके उपयोग को स्पष्ट करता है।

119. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
भूतापीय ऊर्जा का प्रायोगिक संयंत्र हिमाचल प्रदेश के मनीकरण में स्थित है। कैगा कर्नाटक में स्थित एक प्रमुख नाभिकीय ऊर्जा संयंत्र है। ज्वारीय ऊर्जा की उच्च संभावनाएँ भारत के पश्चिमी तट, विशेषकर खंभात की खाड़ी में देखी गई हैं। शहरी अपशिष्ट से ऊर्जा बनाने का सफल संयंत्र नई दिल्ली के ओखला में स्थापित है। यह मिलान भारत के विभिन्न हिस्सों में अपरंपरागत और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के विकास और उनके विशिष्ट भौगोलिक केंद्रों को सही ढंग से प्रदर्शित करता है।

120. (A) नरोरा नाभिकीय संयंत्र - राजस्थान
भारत के प्रमुख परमाणु ऊर्जा संयंत्रों का स्थान विशिष्ट राज्यों में निर्धारित है। नरोरा परमाणु ऊर्जा केंद्र उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले में स्थित है, न कि राजस्थान में। राजस्थान में स्थित परमाणु ऊर्जा संयंत्र रावतभाटा है जो कोटा के समीप अवस्थित है। अन्य विकल्प सही सुमेलित हैं, जैसे कर्नाटक में कैगा, गुजरात में काकरापाड़ा और तमिलनाडु में कलपक्कम स्थित हैं। यह वर्गीकरण भारत के ऊर्जा मानचित्र को समझने और परमाणु ऊर्जा के क्षेत्रीय वितरण के लिए महत्वपूर्ण है।

121. (C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
हिमालयी पेटी में ताँबा, सीसा, जस्ता और कोबाल्ट जैसे विविध खनिज पाए जाते हैं, जो इसकी जटिल भूगर्भीय संरचना को दर्शाते हैं। हालांकि, कारण कथन गलत है क्योंकि हिमालय एक युवा और अस्थिर पर्वत श्रृंखला है, न कि पुरानी और स्थिर। यह क्षेत्र अभी भी विवर्तनिक रूप से सक्रिय है, जिसके कारण यहाँ खनिजों का दोहन करना कठिन और महंगा होता है। हिमालय की भूगर्भिक हलचलें ही यहाँ की खनिज विविधता और उनके वितरण को प्रभावित करने वाला मुख्य कारक हैं।

122. (A) 1, 2, 3, 4
भारत के पश्चिमी तट पर स्थित तेल शोधन कारखानों का उत्तर से दक्षिण की ओर सही भौगोलिक क्रम कोयाली (गुजरात), उसके बाद मुंबई (महाराष्ट्र), फिर मंगलूरु (कर्नाटक) और अंत में कोच्चि (केरल) है। कोयाली गुजरात के मध्य-पश्चिमी भाग में है, जबकि कोच्चि केरल के दक्षिणी तट पर स्थित होने के कारण इस श्रृंखला का अंतिम बिंदु है। यह क्रम देश के पश्चिमी समुद्री

162. (B) इसका हल्का वजन, मजबूती और संक्षारण के प्रति प्राकृतिक प्रतिरोध।
एल्यूमीनियम का हल्का वजन, उच्च मजबूती और संक्षारण के प्रति उत्कृष्ट प्रतिरोध इसे विमानन और मोटर वाहन उद्योगों के लिए अपरिहार्य बनाते हैं। यह धातु विभिन्न वायुमंडलीय परिस्थितियों में खराब नहीं होती है, जिससे वाहनों और विमानों की दीर्घायु सुनिश्चित होती है। इसके अलावा, इसका कम भार ईंधन दक्षता बढ़ाने में मदद करता है। इन विशिष्ट गुणों के कारण यह आधुनिक विनिर्माण और निर्माण क्षेत्रों के लिए एक आदर्श सामग्री है।

163. (C) इसकी असाधारण विद्युत चालकता
तांबे की असाधारण विद्युत और तापीय चालकता इसे आधुनिक ऊर्जा प्रणालियों का एक अनिवार्य घटक बनाती है। सौर पैनलों, पवन टर्बाइनों और इलेक्ट्रिक वाहनों के बुनियादी ढांचे में इसकी भारी मांग है। हरित ऊर्जा क्रांति की सफलता कुशल ऊर्जा संचरण और भंडारण पर निर्भर करती है, जिसमें तांबा अपनी अद्वितीय विशेषताओं के कारण मुख्य भूमिका निभाता है। यह खनिज भविष्य की कार्बन-मुक्त अर्थव्यवस्था के निर्माण में अत्यधिक सामरिक महत्व रखता है।

164. (D) क्योंकि इसके शोधन और प्रगलन की प्रक्रियाओं में भारी मात्रा में बिजली की खपत होती है।
बॉक्साइट से शुद्ध एल्यूमीनियम प्राप्त करने की प्रक्रिया में शोधन और प्रगलन के दौरान भारी मात्रा में विद्युत ऊर्जा की आवश्यकता होती है। बेयर और हॉल-हेरोल्ट जैसी औद्योगिक प्रक्रियाओं में इलेक्ट्रोलाइटिक निष्कर्षण किया जाता है, जो बिजली पर अत्यधिक निर्भर है। यही कारण है कि एल्यूमीनियम संयंत्र अक्सर उन क्षेत्रों में स्थापित किए जाते हैं जहाँ सस्ती और निरंतर बिजली की आपूर्ति उपलब्ध हो। यह उत्पादन लागत का एक बड़ा हिस्सा है।

165. (A) सिंहभूम (झारखंड) और खेतड़ी (राजस्थान)
भारत में तांबा खनन के सबसे प्रमुख और ऐतिहासिक क्षेत्र झारखंड की सिंहभूम पट्टी और राजस्थान की खेतड़ी खदानें हैं। सिंहभूम क्षेत्र अपने प्राचीन निक्षेपों के लिए प्रसिद्ध है, जबकि खेतड़ी अपनी गहरी खदानों और आधुनिक निष्कर्षण तकनीकों के लिए जाना जाता है। ये क्षेत्र देश की तांबा आवश्यकताओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा पूरा करते हैं। इनके अतिरिक्त मध्य प्रदेश का बालाघाट भी इस खनिज के उत्पादन में अग्रणी है।

166. (B) यूरेनियम का सीमित भंडार और थोरियम के विशाल निक्षेपों की प्रचुर उपलब्धता।
भारत की परमाणु ऊर्जा रणनीति यूरेनियम की घरेलू कमी और थोरियम की व्यापक प्रचुरता के बीच के संतुलन पर आधारित है। देश में यूरेनियम के भंडार सीमित हैं, जबकि केरल की मोनाजाइट रेत में थोरियम के विशाल निक्षेप पाए जाते हैं। इस संसाधन विषमता को दूर करने के लिए डॉ. होमी भाभा ने तीन चरणों वाला कार्यक्रम बनाया। इसका उद्देश्य थोरियम को अंतिम ऊर्जा स्रोत के रूप में उपयोग करना है।

167. (B) प्राकृतिक यूरेनियम
भारतीय परमाणु कार्यक्रम के पहले चरण में दाबित भारी जल रिएक्टरों का उपयोग किया जाता है, जो मुख्य रूप से प्राकृतिक यूरेनियम को ईंधन के रूप में उपयोग करते हैं। ये रिएक्टर न केवल बिजली पैदा करते हैं, बल्कि उप-उत्पाद के रूप में प्लूटोनियम-239 भी उत्पन्न करते हैं। यह प्लूटोनियम कार्यक्रम के आगामी चरणों के लिए आधार तैयार करता है। प्राकृतिक यूरेनियम का उपयोग आयातित संवर्धित ईंधन पर निर्भरता कम करने की एक महत्वपूर्ण रणनीति है।

168. (A) केरल के तट पर पाई जाने वाली मोनाजाइट रेत के निक्षेप।
भारत में थोरियम का सबसे प्रचुर और प्रमुख स्रोत केरल के तटीय क्षेत्रों में पाई जाने वाली मोनाजाइट रेत है। यह खनिज रेत समुद्र के तटीय निक्षेपों में संचित है और इसमें रेडियोधर्मी तत्वों की उच्च सांद्रता होती है। थोरियम की यह उपलब्धता भारत को अपनी भविष्य की ऊर्जा सुरक्षा के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करती है। वैज्ञानिक दृष्टि से यह दुनिया के सबसे बड़े थोरियम भंडारों में से एक है।

169. (C) थोरियम आधारित रिएक्टरों का उपयोग करके ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना।
भारत के परमाणु कार्यक्रम का सर्वोच्च लक्ष्य स्वदेशी थोरियम आधारित रिएक्टरों के विकास के माध्यम से पूर्ण ऊर्जा आत्मनिर्भरता प्राप्त करना है। यह रणनीति देश को विदेशी परमाणु ईंधन आपूर्ति पर निर्भरता से मुक्त करने का प्रयास करती है। थोरियम-यूरेनियम-233 चक्र का प्रभावी उपयोग लंबे समय तक बिजली की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करेगा। इस प्रकार, विशाल थोरियम भंडारों का दोहन करना देश की सतत विकास लक्ष्यों और ऊर्जा सुरक्षा के लिए अनिवार्य है।

170. (D) वे उपभोग किए गए ईंधन से अधिक ईंधन का उत्पादन करते हैं।
फास्ट ब्रीडर रिएक्टर की सबसे अनूठी विशेषता यह है कि वे ऊर्जा उत्पादन के दौरान उपभोग किए गए ईंधन की तुलना में अधिक विखंडनीय सामग्री पैदा करते हैं। ये रिएक्टर प्लूटोनियम-239 और थोरियम का उपयोग करते हैं, जिससे ईंधन का प्रजनन होता है। यह तकनीक परमाणु कचरे को कम करने और उपलब्ध संसाधनों की दक्षता बढ़ाने में मदद करती है। यह त्रि-स्तरीय कार्यक्रम के दूसरे चरण का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और जटिल हिस्सा है।

171. (C) जीवाश्म ईंधन का निर्यात बढ़ाना
भारत में गैर-पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों को अपनाने का प्राथमिक उद्देश्य ऊर्जा सुरक्षा बढ़ाना, बढ़ती घरेलू मांगों को पूरा करना और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करना है। इन स्वच्छ ऊर्जा विकल्पों को बढ़ावा देने से कार्बन उत्सर्जन में कमी आती है और पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित होती है। हालांकि, जीवाश्म ईंधन के निर्यात को बढ़ाना इस रणनीति का हिस्सा नहीं है, क्योंकि मुख्य ध्यान जीवाश्म ईंधन पर आयात निर्भरता कम करने पर है।

लागत पारंपरिक स्रोतों की तुलना में अधिक हो सकती है, लेकिन उनकी परिचालन लागत न्यूनतम होती है और वे भविष्य की ऊर्जा सुरक्षा और पारिस्थितिक संतुलन के लिए सर्वश्रेष्ठ विकल्प माने जाते हैं।

133. (C) पेट्रोलियम
असम घाटी भारत का सबसे पुराना और महत्वपूर्ण पेट्रोलियम उत्पादक क्षेत्र है। यहाँ डिगबोई, नाहरकटिया और मोरन-हुगरीजन जैसे प्रसिद्ध तेल क्षेत्र स्थित हैं। ब्रह्मपुत्र नदी घाटी की अवसादी चट्टानों में कच्चे तेल के विशाल निक्षेप पाए जाते हैं। यहाँ से प्राप्त पेट्रोलियम को रिफाइनरियों में प्रसंस्कृत करके विभिन्न ऊर्जा उत्पाद प्राप्त किए जाते हैं। असम की यह तेल पेटी ऐतिहासिक रूप से भारत की खनिज तेल आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली पहली और सबसे विश्वसनीय स्रोत रही है, जो सामरिक महत्व रखती है।

134. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
लौह अयस्क के लिए ओडिशा का सुंदरगढ़ जिला प्रसिद्ध है। बॉक्साइट के भंडार ओडिशा के ही कालाहांडी जिले में प्रचुरता में पाए जाते हैं। ताँबा झारखंड के सिंहभूम जिले की प्रसिद्ध ताँबा पट्टी से निकाला जाता है। अभ्रक के उच्च गुणवत्ता वाले निक्षेप झारखंड के हजारीबाग पठार क्षेत्र में स्थित हैं। यह मिलान भारत के महत्वपूर्ण खनिजों और उनके विशिष्ट खनन जिलों के बीच के भौगोलिक संबंध को सही ढंग से उजागर करता है, जो देश के आर्थिक ढांचे का आधार हैं।

135. (D) लौह-इस्पात
पेट्रोलियम के शोधन के दौरान कई सह-उत्पाद (By-products) प्राप्त होते हैं जो पेट्रोकेमिकल उद्योगों के लिए आधार प्रदान करते हैं। इनका उपयोग उर्वरक निर्माण, कृत्रिम रबर, सिंथेटिक रेशे, दवाइयाँ, प्लास्टिक और सौंदर्य प्रसाधनों में किया जाता है। हालांकि, लौह-इस्पात उद्योग मुख्य रूप से लौह अयस्क, कोयला और मैंगनीज पर आधारित है। पेट्रोलियम के उत्पादों का इस उद्योग में कोई प्रत्यक्ष या मुख्य उपयोग नहीं होता है। अतः लौह-इस्पात उद्योग पेट्रोलियम सह-उत्पादों के उपयोग का क्षेत्र नहीं है, जो इसे अन्य से अलग करता है।

136. (A) मैंगनीज
धात्विक खनिजों को लौह और अलौह दो वर्गों में विभाजित किया गया है। लौह खनिजों में लोहे का अंश होता है, जैसे मैंगनीज, क्रोमाइट और स्वयं लौह अयस्क। मैंगनीज का उपयोग इस्पात को कठोर बनाने के लिए किया जाता है। ताँबा, बॉक्साइट और सोना अलौह खनिजों के उदाहरण हैं क्योंकि इनमें लोहे का गुण नहीं पाया जाता है। लौह खनिजों का महत्व देश के बुनियादी ढांचे और भारी उद्योगों के विकास में सर्वोपरि होता है, जो आर्थिक प्रगति की नींव रखते हैं।

137. (C) कलपक्कम
कलपक्कम परमाणु ऊर्जा केंद्र, जिसे मद्रास परमाणु ऊर्जा स्टेशन के नाम से भी जाना जाता है, तमिलनाडु राज्य में बंगाल की खाड़ी के किनारे स्थित है, जो भारत का पूर्वी तट है। यह भारत का पहला पूरी तरह स्वदेशी तकनीक से निर्मित परमाणु संयंत्र है। तारापुर और कैगा भारत के पश्चिमी तट पर स्थित हैं, जबकि नरोरा उत्तर भारत के मैदानी भाग में स्थित है। कलपक्कम की स्थिति दक्षिण-पूर्वी भारत की बिजली आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भौगोलिक और रणनीतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

138. (B) खनिज संसाधन
धात्विक, अधात्विक, ईंधन और अणु-शक्ति खनिज ये सभी व्यापक रूप से 'खनिज संसाधन' की श्रेणी के अंतर्गत आते हैं। खनिज वे प्राकृतिक पदार्थ हैं जिनकी एक निश्चित रासायनिक संरचना और भौतिक गुण होते हैं। ईंधन खनिजों को ऊर्जा संसाधनों के रूप में भी वर्गीकृत किया जा सकता है, लेकिन धात्विक और अधात्विक खनिजों को शामिल करने वाली सबसे विस्तृत और उपयुक्त श्रेणी खनिज संसाधन ही है। ये संसाधन किसी भी राष्ट्र के औद्योगिक विकास और आर्थिक समृद्धि के लिए मौलिक आधार प्रदान करते हैं।

139. (D) 1, 2, 3 और 4
भारत के खनिज वितरण के संदर्भ में ये चारों कथन पूरी तरह सत्य हैं। तमिलनाडु के नेवेली में लिग्नाइट का बड़ा भंडार है, गोवा अपने लौह अयस्क निर्यात के लिए प्रसिद्ध है, केरल के तट पर मोनाजाइट (थोरियम का स्रोत) पाया जाता है, और राजस्थान ताँबा उत्पादन में एक अग्रणी राज्य है। ये तथ्य भारत की विविध भूगर्भिक संरचना और विभिन्न राज्यों में खनिजों के क्षेत्रीय सांद्रण को स्पष्ट करते हैं, जो देश की औद्योगिक आत्मनिर्भरता और निर्यात क्षमता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

140. (A) 4, 1, 2, 3
भारत में पेट्रोलियम अन्वेषण का इतिहास एक निश्चित क्रम में विकसित हुआ। सर्वप्रथम, स्वतंत्रता के समय तक असम का डिगबोई एकमात्र तेल उत्पादक क्षेत्र था। इसके पश्चात 1956 में तेल एवं प्राकृतिक गैस आयोग (ONGC) की स्थापना हुई। 1973 में मुंबई हाई जैसे विशाल अपतटीय क्षेत्र की खोज की गई और अंततः 1976 में वहाँ से व्यावसायिक उत्पादन शुरू हुआ। यह कालानुक्रमिक विकास भारत की ऊर्जा सुरक्षा की यात्रा और उसके तकनीकी विस्तार के प्रमुख मील के पत्थरों को सही ढंग से प्रदर्शित करता है।

141. (C) ताप विद्युत उत्पादन और लौह अयस्क का प्रगलन
कोयला भारत का सबसे महत्वपूर्ण पारंपरिक ऊर्जा स्रोत है जिसका बहुआयामी उपयोग होता है। इसका प्राथमिक उपयोग ताप विद्युत संयंत्रों में बिजली पैदा करने के लिए किया जाता है, जो देश की कुल बिजली आपूर्ति का एक बड़ा हिस्सा है। इसके अतिरिक्त, कोकिंग कोयले का अनिवार्य उपयोग लौह-इस्पात उद्योग में लौह अयस्क के प्रगलन और धातु शोधन के लिए किया जाता है। ये दोनों ही क्षेत्र देश के आर्थिक और औद्योगिक ढांचे के स्तंभ हैं, जिनमें कोयला ईंधन के रूप में धुरी की तरह कार्य करता है।

142. (B) केवल 1, 2, 3 और 4
भारत के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम से संबंधित पहले चार कथन ऐतिहासिक रूप से सटीक हैं। परमाणु ऊर्जा आयोग 1948 में

(B) केवल बड़े महानगरीय क्षेत्रों के आधुनिक अवसंरचना विकास पर
(C) सिंचाई, वनीकरण, चरागाह विकास और ग्रामीण अवसंरचना पर
(D) केवल अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों हेतु कृषि उत्पादों के निर्यात पर

22. 'पिछड़े क्षेत्रों के विकास की राष्ट्रीय समिति' ने सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम की समीक्षा में क्या पाया?
(A) यह कार्यक्रम सभी सेक्टरों में समान रूप से सफल रहा।
(B) यह कार्यक्रम मुख्यतः कृषि तथा इससे संबद्ध सेक्टरों तक ही सीमित था।
(C) इस कार्यक्रम ने पर्यावरणीय संतुलन को हानि पहुँचाई।
(D) इस कार्यक्रम को बंद कर देना चाहिए।

23. सूखा संभावी क्षेत्रों के विकास की रणनीति में किस पर मुख्य रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए?
(A) बड़े शहरों के निर्माण पर
(B) भारी उद्योगों की स्थापना पर
(C) केवल सड़क निर्माण पर
(D) जल, मिट्टी, पौधों, मानव तथा पशु जनसंख्या के बीच पारिस्थितिकीय संतुलन पर

24. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (समिति/आयोग)
P. योजना आयोग द्वारा सूखा संभावी जिलों की पहचान
Q. सिंचाई आयोग द्वारा सूखा संभावी क्षेत्रों का परिसीमन
R. पिछड़े क्षेत्रों पर राष्ट्रीय समिति का गठन
S. नीति आयोग की स्थापना
List II: (वर्ष)
1. 1972
2. 1967
3. 2015
4. 1981
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

25. भारत में सूखा संभावी क्षेत्र निम्नलिखित में से कहाँ नहीं फैले हुए हैं?
(A) राजस्थान और गुजरात
(B) महाराष्ट्र का मराठवाड़ा क्षेत्र
(C) पंजाब, हरियाणा और उत्तरी राजस्थान
(D) कर्नाटक पठार और तमिलनाडु की उच्च भूमि

26. 1972 में सिंचाई आयोग ने सूखा संभावी क्षेत्रों का परिसीमन करने के लिए क्या मापदंड अपनाया?
(A) 30 प्रतिशत सिंचित क्षेत्र
(B) 20 प्रतिशत सिंचित क्षेत्र
(C) 40 प्रतिशत सिंचित क्षेत्र
(D) 50 प्रतिशत सिंचित क्षेत्र

27. भरमौर जनजातीय क्षेत्र के विषय में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह हिमाचल प्रदेश के चंबा ज़िले में स्थित है।
2. इसमें भरमौर और होली नामक दो तहसीलें शामिल हैं।
3. इसे 21 नवंबर, 1975 को अधिसूचित जनजातीय क्षेत्र घोषित किया गया।
4. यह 'गद्दी' जनजातीय समुदाय का आवास क्षेत्र है।
5. इस क्षेत्र की जलवायु समशीतोष्ण और संसाधन प्रचुर हैं।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 4
(D) सभी कथन सही हैं

28. पंजाब, हरियाणा और उत्तरी राजस्थान के क्षेत्र सूखा प्रभावित होने से कैसे बच जाते हैं?
(A) अधिक वर्षा के कारण
(B) सिंचाई के प्रसार के कारण
(C) कम जनसंख्या के कारण
(D) वनीकरण के कारण

29. 'गद्दी' जनजातीय समुदाय की क्या विशेषता है?
(A) वे स्थायी कृषक हैं
(B) वे ऋतु-प्रवास करते हैं
(C) वे शहरी व्यवसायों में संलग्न हैं
(D) वे केवल मछली पकड़ने का कार्य करते हैं

30. भरमौर क्षेत्र की अर्थव्यवस्था और समाज को किन कारकों ने प्रभावित किया है?
(A) उपजाऊ भूमि, प्रचुर संसाधन और मृदु जलवायु
(B) शहरीकरण और औद्योगीकरण
(C) प्रचुर वर्षा और सघन वन
(D) कठोर जलवायु, कम संसाधन और भंगुर पर्यावरण

31. भरमौर जनजातीय क्षेत्र में विकास की प्रक्रिया किस दशक में शुरु हुई?
(A) 1970 के दशक में
(B) 1950 के दशक में
(C) 1960 के दशक में
(D) 1980 के दशक में

32. 1974 में पाँचवीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत भरमौर क्षेत्र को कौन-सा दर्जा मिला?
(A) विशेष आर्थिक क्षेत्र
(B) समन्वित जनजातीय विकास परियोजना (आई.टी.डी.पी.)
(C) सूखा संभावी क्षेत्र
(D) पर्वतीय पर्यटन स्थल

152. (A) क्योंकि यह प्राचीन चट्टानों और विविध धात्विक खनिजों में अत्यंत समृद्ध है।
छोटानागपुर पठार को इसकी असाधारण भूवैज्ञानिक संपदा के कारण खनिज हृदय माना जाता है। यहाँ की प्राचीन चट्टानों में विभिन्न प्रकार के धात्विक और अधात्विक खनिजों का सघन भंडार पाया जाता है। यह क्षेत्र देश के औद्योगिक ढांचे को मजबूती प्रदान करता है। खनिज संसाधनों की इस प्रचुरता और विविधता ने इसे भारी इंजीनियरिंग और धातुकर्म उद्योगों के लिए एक प्रमुख केंद्र बना दिया है।

153. (C) खनिजों का असमान वितरण
भारत में खनिज संसाधनों का वितरण भौगोलिक रूप से समान नहीं है, जिससे औद्योगिक विकास में क्षेत्रीय भिन्नता आती है। खनिज आधारित उद्योग मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में स्थापित होते हैं जहाँ कच्चे माल की उपलब्धता प्रचुर होती है। यह असमान वितरण विशिष्ट औद्योगिक क्लस्टरों के निर्माण के लिए उत्तरदायी है, जिसके परिणामस्वरूप कुछ क्षेत्रों का तीव्र आर्थिक विकास हुआ है जबकि अन्य पिछड़ गए हैं।

154. (D) क्योंकि वे प्रकृति में अनवीकरणीय हैं और भविष्य के लिए संरक्षण आवश्यक है।
धात्विक खनिज प्राकृतिक रूप से सीमित और अनवीकरणीय संसाधन हैं, जिनका एक बार उपयोग होने पर पुनर्निर्माण संभव नहीं है। सतत औद्योगिक विकास सुनिश्चित करने और भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं को सुरक्षित रखने के लिए इनका संरक्षण अनिवार्य है। विवेकपूर्ण उपयोग, कुशल निष्कर्षण और रणनीतिक प्रबंधन के माध्यम से इन संसाधनों की दीर्घकालिक उपलब्धता सुनिश्चित की जा सकती है, जो राष्ट्र की आर्थिक सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

155. (C) भारत की खनिज संपदा इसकी प्राचीन संरचना से जुड़ी है जो औद्योगिक विकास का आधार है।
भारत की विशाल खनिज संपदा का सीधा संबंध इसकी प्राचीन भूवैज्ञानिक संरचनाओं, विशेषकर प्रायद्वीपीय पठार की चट्टानों से है। ये संसाधन देश के समग्र औद्योगिक और आर्थिक विकास की आधारशिला रखते हैं। खनिजों का रणनीतिक प्रबंधन और उनका कुशल दोहन औद्योगिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है। यह लेख खनिज वितरण, उनके भूवैज्ञानिक महत्व और भविष्य की विकास नीतियों के अंतर्संबंधों को प्रभावी ढंग से रेखांकित करता है।

156. (B) गोंडवाना बिटुमिनस
भारत के कुल कोयला भंडार का लगभग अठासी प्रतिशत हिस्सा गोंडवाना श्रेणी से संबंधित है, जो लगभग दो सौ पचास मिलियन वर्ष पुराना है। यह कोयला मुख्य रूप से बिटुमिनस प्रकार का है, जिसमें कार्बन की मात्रा और ताप उत्पन्न करने की क्षमता अधिक होती है। इसके उच्च गुणवत्ता वाले गुण इसे धातुशोधन प्रक्रियाओं और ताप विद्युत संयंत्रों में ऊर्जा उत्पादन के लिए अत्यंत उपयुक्त बनाते हैं।

157. (D) यह उच्च गुणवत्ता वाले कोयले के विशाल भंडारों के कारण एक प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र है।
दामोदर घाटी को उच्च गुणवत्ता वाले कोयले के विशाल भंडारों की उपस्थिति के कारण 'भारत का रूर' कहा जाता है। झरिया और रानीगंज जैसे प्रमुख कोयला क्षेत्र इसी घाटी में स्थित हैं। यहाँ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध ऊर्जा संसाधनों ने भारी उद्योगों और विनिर्माण इकाइयों के विकास को प्रेरित किया है। जर्मनी के रूर क्षेत्र की तरह ही यह क्षेत्र भारत की औद्योगिक प्रगति का मुख्य केंद्र है।

158. (A) क्योंकि इसमें उच्च कार्बन मात्रा और उच्च तापजनक मान होता है।
गोंडवाना कोयले में कार्बन की उच्च सांद्रता और उच्च तापजनक मान होता है, जो इसे धातुशोधन के लिए श्रेष्ठ बनाता है। इसके विपरीत, टर्शियरी कोयला तुलनात्मक रूप से नया है और इसमें सल्फर की मात्रा अधिक होती है। बिटुमिनस गुणों के कारण गोंडवाना कोयला औद्योगिक भट्टियों में स्थिर ऊर्जा प्रदान करता है। यही कारण है कि यह लौह-इस्पात जैसे महत्वपूर्ण उद्योगों में प्राथमिक ईंधन के रूप में उपयोग होता है।

159. (C) पूर्वोत्तर भारत के राज्य
टर्शियरी कोयला मुख्य रूप से भारत के पूर्वोत्तर राज्यों, जैसे असम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय और नागालैंड में पाया जाता है। यह कोयला लगभग पंद्रह से साठ मिलियन वर्ष पुराना है और इसमें कार्बन की मात्रा गोंडवाना कोयले की तुलना में कम होती है। इसकी विशिष्ट भूवैज्ञानिक उत्पत्ति और भौगोलिक स्थिति इसे प्रायद्वीपीय कोयला क्षेत्रों से अलग बनाती है। इसका संकेंद्रण मुख्य रूप से हिमालयी क्षेत्रों के करीब स्थित है।

160. (A) विद्युत उत्पादन के लिए
लिग्नाइट एक निम्न श्रेणी का भूरा कोयला है जिसमें नमी की मात्रा अधिक और कार्बन की मात्रा कम होती है। तमिलनाडु के नेवेली, गुजरात और राजस्थान में इसके महत्वपूर्ण भंडार पाए जाते हैं। इसकी विशिष्टताओं के कारण इसका प्राथमिक उपयोग ताप विद्युत उत्पादन के लिए किया जाता है। हालांकि यह धातुशोधन के लिए अनुपयुक्त है, लेकिन क्षेत्रीय ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावी है।

161. (D) लैटेराइट चट्टानें
बॉक्साइट का निर्माण मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में चट्टानों के गहन अपक्षय की प्रक्रिया के माध्यम से होता है। यह एल्यूमीनियम का प्राथमिक अयस्क है जो प्रायद्वीपीय भारत के पठारी और तटीय क्षेत्रों की लैटेराइट चट्टानों में प्रचुरता से पाया जाता है। ओडिशा और झारखंड जैसे राज्यों में इन निक्षेपों की व्यापक उपस्थिति है। लैटेराइट संरचनाएं एल्यूमीनियम ऑक्साइड के संकेंद्रण के लिए आदर्श भूवैज्ञानिक परिस्थितियाँ प्रदान करती हैं।

तट पर पेट्रोलियम प्रसंस्करण बुनियादी ढांचे के अक्षांशीय विस्तार और क्षेत्रीय वितरण को सटीक रूप से दर्शाता है।

123. (B) केवल 1, 2, 3 और 4
खनिज संरक्षण के लिए ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों का उपयोग, धातुओं का पुनर्चक्रण, दुर्लभ धातुओं के विकल्पों की खोज और सामरिक खनिजों के निर्यात को नियंत्रित करना आवश्यक उपाय हैं। कथन पाँच गलत है क्योंकि खनिजों का अंधाधुंध उपयोग सतत विकास के विरुद्ध है और इससे संसाधन भविष्य के लिए समाप्त हो जाएंगे। विवेकपूर्ण और योजनाबद्ध दोहन ही खनिज सुरक्षा सुनिश्चित कर सकता है। अतः केवल पहले चार कथन ही खनिजों के दीर्घकालिक संरक्षण के लिए सही और वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

124. (B) इसमें निवेली लिग्नाइट को छोड़कर कोयला निक्षेपों का अभाव है।
दक्षिण-पश्चिमी पठार प्रदेश कर्नाटक, गोवा, तमिलनाडु और केरल में फैला हुआ है। यह क्षेत्र लौह अयस्क और बॉक्साइट में तो समृद्ध है, लेकिन यहाँ कोयला निक्षेपों का भारी अभाव है। तमिलनाडु के नेवेली में पाया जाने वाला लिग्नाइट इस क्षेत्र का एकमात्र प्रमुख कोयला भंडार है। इस पेटी के खनिज निक्षेप उत्तर-पूर्वी पेटी की तुलना में कम विविधतापूर्ण हैं। केरल में मोनाजाइट के रूप में थोरियम के भंडार भी पाए जाते हैं, जो इस क्षेत्र की खनिज विशिष्टता है।

125. (C) झारखंड
झारखंड राज्य भारत के खनिज इतिहास में एक विशेष स्थान रखता है। यहाँ की पहाड़ियों में देश की सबसे पुरानी लौह अयस्क खदानें, जैसे नोआमुंडी और गुआ, स्थित हैं। इसके अलावा, भारत के प्रमुख लौह और इस्पात संयंत्र, जैसे जमशेदपुर का टिस्को और बोकारो स्टील प्लांट, इसी राज्य में या इसके निकटवर्ती क्षेत्रों में स्थापित हैं। कोयला और लौह अयस्क की एक ही क्षेत्र में प्रचुरता ने झारखंड को भारत के औद्योगिक और खनिज विकास का केंद्र बना दिया है।

126. (D) डिगबोई
क्षेत्र-आधारित तेल शोधन कारखाने वे होते हैं जो सीधे कच्चे तेल के उत्पादन वाले कुओं के पास स्थित होते हैं ताकि परिवहन लागत कम की जा सके। असम का डिगबोई इसका सबसे पुराना और प्रमुख उदाहरण है, जहाँ 1901 में एशिया की पहली रिफाइनरी स्थापित की गई थी। बरौनी, मथुरा और पानीपत बाजार-आधारित रिफाइनरियाँ हैं, जो खपत केंद्रों के पास हैं और पाइपलाइन से तेल प्राप्त करती हैं। डिगबोई की स्थापना का मुख्य उद्देश्य स्थानीय तेल निक्षेपों का त्वरित और सुगम प्रसंस्करण करना था।

127. (A) भारत बॉक्साइट के अतिरिक्त अन्य अलौह खनिजों में निम्न स्थिति में है।
भारत में अलौह खनिजों की स्थिति मिश्रित है। बॉक्साइट के मामले में भारत एक समृद्ध राष्ट्र है और इसके पास विशाल भंडार और उत्पादन क्षमता है। हालाँकि, ताँबा, सीसा और जस्ता जैसी अन्य महत्वपूर्ण अलौह धातुओं के मामले में भारत की स्थिति कमजोर है और घरेलू मांग को पूरा करने के लिए बड़ी मात्रा में आयात करना पड़ता है। यह असंतुलन भारत के भूगर्भिक संरचना में इन विशिष्ट धातुओं के निक्षेपों की प्राकृतिक कमी के कारण है, जो औद्योगिक आत्मनिर्भरता में चुनौती है।

128. (D) I, II, III और IV
मैंगनीज के उत्पादन और वितरण के संदर्भ में ये चारों कथन पूरी तरह सही हैं। कर्नाटक एक प्रमुख उत्पादक है जहाँ धारवाड़ और शिवमोगा में खदानें हैं। महाराष्ट्र के नागपुर और भंडारा भी महत्वपूर्ण केंद्र हैं। तेलंगाना, गोवा और झारखंड में भी मैंगनीज का कुछ उत्पादन होता है, यद्यपि वे गौण उत्पादकों की श्रेणी में आते हैं। भारत में मैंगनीज का वितरण मुख्य रूप से प्रायद्वीपीय पठार की प्राचीन चट्टानी संरचनाओं से जुड़ा हुआ है, जो स्टील उद्योग के लिए आवश्यक है।

129. (B) नमक
गुजरात और राजस्थान दोनों ही राज्य भारत में नमक उत्पादन के सबसे बड़े और समृद्ध स्रोत हैं। गुजरात अपनी लंबी तटरेखा और अनुकूल जलवायु के कारण समुद्री जल से नमक बनाने में अग्रणी है। राजस्थान में सांभर जैसी खारी झीलों और भूमिगत स्रोतों से नमक प्राप्त किया जाता है। यहाँ की शुष्क जलवायु वाष्पीकरण की प्रक्रिया को तेज करती है, जो नमक उत्पादन के लिए एक आदर्श भौगोलिक स्थिति प्रदान करती है। देश के कुल नमक उत्पादन का बड़ा हिस्सा इन्हीं दो राज्यों से आता है।

130. (A) केवल 1, 2, और 4
भारत में पाए जाने वाले कोयले का 80 प्रतिशत हिस्सा बिटुमिनस प्रकार का है, जो मुख्य रूप से गैर-कोककारी श्रेणी का है। दामोदर घाटी देश का सबसे महत्वपूर्ण और विशाल कोयला उत्पादक क्षेत्र है। कथन तीन गलत है क्योंकि ऐंथ्रासाइट भारत में बहुत दुर्लभ है और केवल जम्मू-कश्मीर में मिलता है। कथन पाँच भी गलत है क्योंकि गोंडवाना कोयला (20 करोड़ वर्ष पुराना) टर्शियरी कोयले (5.5 करोड़ वर्ष पुराना) से कहीं अधिक प्राचीन है। अतः केवल 1, 2 और 4 ही सही हैं।

131. (C) लौह अयस्क
कर्नाटक के चिकमगलूरु जिले में स्थित बाबा बूदन पहाड़ियां अपने समृद्ध लौह अयस्क निक्षेपों के लिए प्रसिद्ध हैं। ऐतिहासिक रूप से, भारत में कॉफी के साथ-साथ यहाँ लौह अयस्क के खनन की शुरुआत भी बहुत पहले हुई थी। यह क्षेत्र उच्च गुणवत्ता वाले हेमेटाइट और मैग्नेटाइट अयस्क का भंडार है। यहाँ से प्राप्त लौह अयस्क न केवल घरेलू इस्पात उद्योगों को आपूर्ति किया जाता है, बल्कि मंगलूरु बंदरगाह के माध्यम से इसका बड़े पैमाने पर विदेशों में निर्यात भी किया जाता है।

132. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
सौर और पवन ऊर्जा जैसे अपरंपरागत स्रोत सतत विकास के लिए अनिवार्य हैं क्योंकि वे कभी समाप्त नहीं होते और पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुँचाते। ये स्रोत प्रकृति में अधिक समान रूप से फैले हुए हैं, जो विकेंद्रीकृत ऊर्जा उत्पादन को संभव बनाते हैं। हालांकि इनके संयंत्रों की स्थापना की प्रारंभिक

172. (B) पश्चिमी राज्य जैसे राजस्थान और गुजरात
राजस्थान और गुजरात जैसे पश्चिमी भारतीय राज्य अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति और उच्च सौर विकिरण के कारण सौर ऊर्जा विकास के लिए सर्वाधिक उपयुक्त हैं। इन क्षेत्रों में वर्ष के अधिकांश समय साफ आसमान रहता है, जिससे सौर ऊर्जा का अधिकतम दोहन संभव होता है। यहाँ उपलब्ध विशाल ऊसर और बंजर भूमि बड़े पैमाने पर सौर पार्कों की स्थापना के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करती है, जो देश की ऊर्जा क्षमता बढ़ाती है।

173. (D) ये ऊर्जा का निरंतर और स्थिर स्रोत नहीं हैं।
सौर और पवन ऊर्जा की आंतरायिक प्रकृति का अर्थ है कि इन स्रोतों से बिजली का उत्पादन निरंतर और स्थिर नहीं रहता है। यह उत्पादन मौसम की स्थिति, दिन के समय और हवा की गति पर निर्भर करता है। इस अनिश्चितता के कारण बिजली ग्रिड की स्थिरता बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो जाता है। प्रभावी ग्रिड प्रबंधन और ऊर्जा भंडारण प्रणालियों के बिना, इन नवीकरणीय संसाधनों का चौबीसों घंटे विश्वसनीय उपयोग करना कठिन होता है।

174. (A) ऊर्जा भंडारण और भूमि अधिग्रहण की समस्या
नवीकरणीय ऊर्जा के व्यापक विस्तार में ऊर्जा भंडारण की लागत और भूमि अधिग्रहण जैसी जटिल चुनौतियां शामिल हैं। चूंकि सौर और पवन ऊर्जा का उत्पादन अस्थिर होता है, इसलिए बैटरी जैसी कुशल भंडारण प्रणालियों की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त, बड़े सौर और पवन फार्मों के लिए व्यापक भूमि क्षेत्र चाहिए होता है, जो अक्सर सामाजिक और पर्यावरणीय चिंताओं को जन्म देता है। इन बाधाओं का समाधान करना सफल ऊर्जा संक्रमण के लिए आवश्यक है।

175. (C) तटीय क्षेत्र और पहाड़ी इलाके
पवन ऊर्जा उत्पादन के लिए तटीय क्षेत्र और पहाड़ी इलाके सबसे अधिक आशाजनक माने जाते हैं क्योंकि यहाँ हवा की गति तेज और निरंतर होती है। गुजरात, तमिलनाडु और महाराष्ट्र जैसे राज्यों के तटीय बेल्ट में उच्च वायु क्षमता पाई जाती है। इन क्षेत्रों की भौगोलिक स्थिति पवन टर्बाइनों के प्रभावी संचालन के लिए अनुकूल है। पहाड़ी दर्रे भी वायु प्रवाह को केंद्रित करते हैं, जिससे वे पवन ऊर्जा दोहन के लिए उत्कृष्ट स्थान बन जाते हैं।

बना, ट्रांबे संस्थान 1954 में स्थापित हुआ, जिसे 1967 में 'बार्क' नाम दिया गया, और तारापुर भारत का पहला परमाणु स्टेशन था। कथन पाँच गलत है क्योंकि रावतभाटा परमाणु संयंत्र राजस्थान के चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है, न कि उत्तर प्रदेश में। उत्तर प्रदेश में नरोरा संयंत्र स्थित है। अतः केवल पहले चार कथन ही परमाणु ऊर्जा के संदर्भ में सत्य और सही जानकारी प्रदान करते हैं।

143. (A) अधिक गुणवत्ता वाले खनिज कम मात्रा में पाए जाते हैं।
खनिजों की गुणवत्ता और उनकी मात्रा के बीच प्रतिलोमी या विपरीत संबंध का अर्थ यह है कि प्रकृति में उच्च श्रेणी के खनिज दुर्लभ होते हैं और बहुत कम मात्रा में उपलब्ध होते हैं। इसके विपरीत, जो खनिज निम्न गुणवत्ता के होते हैं, उनके भंडार आमतौर पर बहुत विशाल और व्यापक होते हैं। यह सिद्धांत संसाधनों के आर्थिक मूल्य और उनके संरक्षण की आवश्यकता को रेखांकित करता है। उच्च गुणवत्ता वाले खनिजों का दोहन अधिक महंगा और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण होता है क्योंकि वे सीमित होते हैं।

144. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
गुजरात और राजस्थान भारत के प्रमुख नमक उत्पादक राज्य हैं। गुजरात की लंबी तटरेखा और शुष्क जलवायु समुद्री जल से वाष्पीकरण द्वारा नमक बनाने के लिए विश्व स्तर पर सर्वोत्तम परिस्थितियाँ प्रदान करती है। राजस्थान में अंतर्देशीय नमक उत्पादन सांबर जैसी खारी झीलों और भूमिगत नमकीन जल के माध्यम से किया जाता है। इन दोनों क्षेत्रों की उच्च तापमान और कम वर्षा वाली जलवायु वाष्पीकरण की दर को बढ़ाकर नमक की क्रिस्टलीकरण प्रक्रिया को अत्यंत प्रभावी और आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाती है।

145. (B) बॉक्साइट
छत्तीसगढ़ राज्य में स्थित अमरकंटक का पठार बॉक्साइट के विशाल और समृद्ध निक्षेपों के लिए जाना जाता है। यह क्षेत्र मैकाल पहाड़ियों का हिस्सा है और यहाँ लैटेराइट चट्टानों के निक्षालन से बॉक्साइट का निर्माण हुआ है। यहाँ से प्राप्त बॉक्साइट का उपयोग मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश के रेणुकूट और अन्य एल्युमिनियम संयंत्रों में किया जाता है। अमरकंटक के भंडार भारत के एल्युमिनियम उत्पादन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और क्षेत्र के औद्योगिक विकास में सहायक सिद्ध हुए हैं।

146. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
झारखंड का नोआमुंडी लौह अयस्क खनन के लिए प्रसिद्ध है। मध्य प्रदेश का बालाघाट जिला मैंगनीज और ताँबा दोनों के उत्पादन में अग्रणी है। राजस्थान के झुंझुनु जिले का खेतड़ी क्षेत्र ताँबा खनन का मुख्य केंद्र है। आंध्र प्रदेश का नेल्लोर जिला अपनी उच्च गुणवत्ता वाली अभ्रक पट्टी के लिए जाना जाता है। यह मिलान भारत के प्रमुख राज्यों और उनमें स्थित विशिष्ट खनिज क्षेत्रों को सही ढंग से जोड़ता है, जो किसी भी प्रतियोगी परीक्षा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण भौगोलिक और आर्थिक तथ्य हैं।

147. (C) कोरबा (छत्तीसगढ़)
कोरबा छत्तीसगढ़ का एक प्रमुख कोयला खनन केंद्र है जो गोंडवाना काल के कोयला निक्षेपों से संबंधित है। टर्शियरी कोयला गोंडवाना की तुलना में काफी नया है और यह मुख्य रूप से असम के माकूम, मेघालय के चेरापूंजी और जम्मू-कश्मीर के कालाकोट जैसे पहाड़ी और उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में पाया जाता है। कोरबा में पाया जाने वाला कोयला करोड़ों वर्ष पुराना है और औद्योगिक उद्देश्यों के लिए अधिक प्रयुक्त होता है। अतः कोरबा टर्शियरी कोयला खनन केंद्रों की श्रेणी में नहीं आता है, बल्कि यह गोंडवाना का हिस्सा है।

148. (D) 1, 2, 3 और 4
भारतीय ऊर्जा क्षेत्र के बारे में ये चारों कथन वर्तमान परिदृश्य को सटीक रूप से दर्शाते हैं। कोयला अभी भी देश का प्राथमिक ऊर्जा स्रोत बना हुआ है। भारत ने सौर ऊर्जा की स्थापित क्षमता में तेजी से वृद्धि की है और वह वैश्विक स्तर पर एक बड़ी शक्ति बनकर उभरा है। नाभिकीय ऊर्जा का हिस्सा अभी भी कुल बिजली उत्पादन में सीमित है। साथ ही, भारत अपनी कच्चे तेल की जरूरतों का लगभग 80 प्रतिशत से अधिक हिस्सा विदेशों से आयात करता है, जो ऊर्जा सुरक्षा हेतु एक बड़ी चुनौती है।

149. (C) धात्विक खनिज
प्रायद्वीपीय भारत की प्राचीन क्रिस्टलीय और कायांतरित शैलों में अधिकांशतः धात्विक खनिज पाए जाते हैं। इन चट्टानों की भूगर्भिक संरचना लौह अयस्क, मैंगनीज, बॉक्साइट, ताँबा और सोने जैसे मूल्यवान धातुओं के संचय के लिए अत्यंत अनुकूल होती है। धारवाड़ और कुडप्पा जैसी प्राचीन शैल प्रणालियाँ भारत की खनिज संपदा का मुख्य आधार हैं। यह क्षेत्र देश के औद्योगिक ढांचे को मजबूती प्रदान करने के लिए आवश्यक कच्चे माल की निरंतर आपूर्ति करता है, जो उत्तर भारत के जलोढ़ मैदानों के विपरीत है।

150. (C) कोयला
कोयला एक प्रमुख ऊर्जा संसाधन है, जिसे जीवाश्म ईंधन भी कहा जाता है। इसका उपयोग मुख्यतः तापीय विद्युत उत्पादन, उद्योगों तथा परिवहन में किया जाता है। अन्य विकल्प जैसे अभ्रक, बॉक्साइट और चूना-पत्थर ऊर्जा संसाधन नहीं हैं, बल्कि औद्योगिक कच्चे माल के रूप में उपयोग होते हैं। इसलिए कोयला ही सही उत्तर है क्योंकि यह ऊर्जा उत्पादन में प्रत्यक्ष रूप से प्रयुक्त होता है।

151. (B) आर्कियन और धारवाड़ क्रम की चट्टानें
भारत के प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र में स्थित प्राचीन भूवैज्ञानिक संरचनाएं धात्विक खनिजों का प्राथमिक आधार हैं। विशेष रूप से आर्कियन और धारवाड़ क्रम की कायांतरित चट्टानें अरबों वर्ष पुरानी हैं और विवर्तनिक रूप से अत्यधिक स्थिर मानी जाती हैं। ये संरचनाएं लौह अयस्क, मैंगनीज और तांबा जैसे महत्वपूर्ण संसाधनों से भरपूर हैं, जो औद्योगिक विकास में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं।

(D) 1, 2, 3 और 4

10. निम्नलिखित में से कौन-सा कार्यक्रम 'लक्ष्य-समूह' योजना का एक उदाहरण है?
(A) सीमांत किसान विकास संस्था (MFDA)
(B) कमान नियंत्रित क्षेत्र विकास कार्यक्रम
(C) पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम
(D) सूखाग्रस्त क्षेत्र विकास कार्यक्रम

11. भारत में योजना आयोग का स्थान किस संस्था ने लिया है?
(A) वित्त आयोग
(B) राष्ट्रीय विकास परिषद
(C) भारतीय रिजर्व बैंक
(D) नीति आयोग

12. नीति आयोग की स्थापना का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) पंचवर्षीय योजनाएँ बनाना
(B) आर्थिक नीति निर्माण में राज्यों की भागीदारी सुनिश्चित करना
(C) राज्यों को वित्तीय आवंटन करना
(D) केवल केंद्र सरकार के लिए योजनाएँ बनाना

13. पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रमों को किस पंचवर्षीय योजना में प्रारंभ किया गया था?
(A) तीसरी
(B) चौथी
(C) पाँचवीं
(D) छठी

14. निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्र पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम के प्रारंभिक चरण में शामिल नहीं था?
(A) पश्चिम बंगाल का दार्जिलिंग ज़िला
(B) तमिलनाडु के नीलगिरी
(C) असम की मिकिर पहाड़ी
(D) हिमाचल प्रदेश का शिमला ज़िला

15. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के कालक्रमानुसार व्यवस्थित कीजिए:
1. योजना आयोग का स्थान नीति आयोग द्वारा लिया जाना
2. सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम की शुरुआत
3. पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम का प्रारंभ
4. 'पिछड़े क्षेत्रों पर राष्ट्रीय समिति' का गठन

(A) 2, 3, 4, 1
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 2, 1, 4
(D) 4, 1, 2, 3

16. 1981 में 'पिछड़े क्षेत्रों पर राष्ट्रीय समिति' ने किन पर्वतीय क्षेत्रों को पिछड़े पर्वतीय क्षेत्रों में शामिल करने की सिफारिश की?
(A) वे क्षेत्र जिनकी समुद्र तल से ऊँचाई 600 मीटर से अधिक हो
(B) 600 मीटर से अधिक ऊँचे और गैर-जनजातीय उप-योजना क्षेत्र
(C) वे क्षेत्र जहाँ जनजातीय उप-योजना वर्तमान में लागू न हो
(D) वे क्षेत्र जहाँ पर्यटन विकास की व्यापक संभावनाएँ मौजूद हों

17. पर्वतीय क्षेत्रों के विकास के लिए बनी राष्ट्रीय समिति द्वारा दिए गए सुझावों में से कौन-सा एक नहीं है?
(A) स्थानीय संसाधनों और प्रतिभाओं का विकास
(B) केवल प्रभावशाली व्यक्तियों को लाभ पहुँचाना
(C) अंतः प्रादेशिक व्यापार में पिछड़े क्षेत्रों का शोषण न हो
(D) पारिस्थितिकीय संतुलन बनाए रखना

18. सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम (DPAP) के संबंध में नीचे दिए गए कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
(A) इसका उद्देश्य केवल सूखा संभावी क्षेत्रों में सिंचाई परियोजनाएँ स्थापित करना था।
(B) इस कार्यक्रम की शुरुआत चौथी पंचवर्षीय योजना में हुई।
(C) प्रारंभ में इसमें अधिक श्रमिकों की आवश्यकता वाले सिविल निर्माण कार्यों पर बल दिया गया।
(D) पाँचवीं पंचवर्षीय योजना में इसके कार्यक्षेत्र को और विस्तृत किया गया।

19. सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम की शुरुआत किस पंचवर्षीय योजना में हुई थी?
(A) तीसरी
(B) चौथी
(C) पाँचवीं
(D) सातवीं

20. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): संसाधनों से भरपूर क्षेत्र भी आर्थिक रूप से पिछड़े रह सकते हैं।
कारण (R): आर्थिक विकास के लिए केवल प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता ही पर्याप्त है, तकनीक और निवेश की कोई आवश्यकता नहीं होती।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

21. पाँचवीं पंचवर्षीय योजना में सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम के कार्यक्षेत्र को विस्तृत करते हुए किन पहलुओं पर ज़ोर दिया गया?
(A) केवल भारी विनिर्माण उद्योगों की व्यापक स्तर पर स्थापना पर

अध्याय 14

भारत के संदर्भ में नियोजन और सतत् पोषणीय विकास

1. 'नियोजन' शब्द का प्रयोग सामान्यतः किस प्रक्रिया के संदर्भ में किया जाता है?
(A) परीक्षा की तैयारी
(B) आर्थिक विकास
(C) पर्वतीय स्थल पर भ्रमण
(D) दैनिक दिनचर्या

2. स्वतंत्रता के बाद भारत में किस प्रकार की योजनाओं को प्रारंभ में अपनाया गया था?
(A) केंद्रीकृत-योजनाएँ
(B) विकेंद्रीकृत-योजनाएँ
(C) लक्ष्य-समूह योजनाएँ
(D) प्रादेशिक योजनाएँ

3. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): किसी भी देश में सभी क्षेत्रों में एक समान आर्थिक विकास नहीं हुआ है।
कारण (R): आर्थिक विकास किसी क्षेत्र के संसाधनों पर आधारित होता है और संसाधन सम्पूर्ण देश में समान रुप से वितरित नहीं हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

4. 'खंडीय नियोजन' का क्या अर्थ है?
(A) केवल पिछड़े क्षेत्रों के सामाजिक विकास पर ध्यान देना
(B) क्षेत्रीय विकास में प्रादेशिक असंतुलन को बढ़ावा देना
(C) केवल शहरी क्षेत्रों की भौतिक अवसंरचना विकसित करना
(D) विभिन्न आर्थिक सेक्टरों के विकास हेतु कार्यक्रम बनाना

5. निम्नलिखित में से कौन-सा एक खंडीय नियोजन का उदाहरण नहीं है?
(A) कृषि विकास कार्यक्रम
(B) ऊर्जा क्षेत्र का विकास
(C) पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम
(D) परिवहन और संचार का विकास

6. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (योजना उपागम)
P. खंडीय नियोजन
Q. प्रादेशिक नियोजन
R. लक्ष्य क्षेत्र नियोजन
S. लक्ष्य समूह नियोजन
List II: (विशेषता)
1. लघु कृषक विकास संस्था (SFDA)
2. सूखाग्रस्त क्षेत्र विकास कार्यक्रम
3. विकास में प्रादेशिक असंतुलन कम करना
4. अर्थव्यवस्था के विभिन्न सेक्टरों का विकास
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

7. 'प्रादेशिक नियोजन' का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) केवल विकसित क्षेत्रों का और विकास करना
(B) केवल कृषि सेक्टर पर ध्यान देना
(C) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देना
(D) विकास में प्रादेशिक असंतुलन कम करना

8. योजना आयोग ने 'लक्ष्य क्षेत्र' तथा 'लक्ष्य-समूह' योजना उपागमों को क्यों प्रस्तुत किया?
(A) क्षेत्रीय एवं सामाजिक विषमताओं को काबू में रखने के लिए
(B) आर्थिक विकास की गति को धीमा करने के लिए
(C) केवल शहरी क्षेत्रों के विकास के लिए
(D) अंतर्राष्ट्रीय दबाव के कारण

9. पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसे पाँचवीं पंचवर्षीय योजना में प्रारंभ किया गया।
2. इसके अंतर्गत उत्तर प्रदेश के सभी पर्वतीय ज़िले (वर्तमान उत्तराखण्ड) शामिल थे।
3. 'पिछड़े क्षेत्रों पर राष्ट्रीय समिति' ने 600 मीटर से अधिक ऊँचाई वाले सभी पर्वतीय क्षेत्रों को इसमें शामिल करने की सिफारिश की।
4. इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य केवल प्रभावशाली व्यक्तियों को लाभ पहुँचाना था।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4

33. भरमौर क्षेत्र के लिए बनाई गई समन्वित जनजातीय विकास परियोजना (आई.टी.डी.पी.) का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) गद्दी समुदाय के जीवन स्तर में अपेक्षित सुधार लाना
(B) गद्दियों का विकास करना और क्षेत्रीय विषमता घटाना
(C) क्षेत्र और राज्य के मध्य विकास के अंतर को कम करना
(D) केवल स्थानीय परिवहन सुविधाओं का व्यापक विस्तार करना

34. निम्नलिखित में से कौन-सी नदी भरमौर क्षेत्र से होकर बहती है?
(A) रावी
(B) व्यास
(C) सतलुज
(D) चिनाब

35. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): भरमौर क्षेत्र हिमाचल प्रदेश के सबसे पिछड़े इलाकों में से एक है।
कारण (R): ऐतिहासिक तौर पर, गद्दी जनजाति ने भौगोलिक और आर्थिक अलगाव का अनुभव किया है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

36. भरमौर क्षेत्र में आई.टी.डी.पी. के अंतर्गत किस क्षेत्र को सर्वाधिक प्राथमिकता दी गई?
(A) भारी विनिर्माण और खनिज आधारित उद्योगों का विकास
(B) पर्यटन विकास हेतु बड़े शॉपिंग मॉल का व्यापक निर्माण
(C) सुदूर पर्वतीय क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों का निर्माण
(D) परिवहन, संचार, कृषि और सामाजिक सेवाओं का विकास

37. भरमौर क्षेत्र में जनजातीय समन्वित विकास उपयोजना का सबसे महत्वपूर्ण योगदान क्या है?
(A) केवल परंपरागत कृषि के वार्षिक उत्पादन में भारी वृद्धि
(B) समुदायों के मध्य मौसमी ऋतु-प्रवास में निरंतर वृद्धि
(C) आधारभूत अवसंरचना का विकास (शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल)
(D) प्राचीन जनजातीय एवं पारंपरिक जीवन शैली का संरक्षण

38. भरमौर में आई.टी.डी.पी. लागू होने के बाद हुए सामाजिक लाभों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. साक्षरता दर में तेजी से वृद्धि हुई।
2. लिंग अनुपात में सुधार हुआ।
3. बाल-विवाह में कमी आई।
4. ऋतु-प्रवास की प्रथा पूरी तरह समाप्त हो गई।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4

39. भरमौर क्षेत्र में 1971 से 2011 तक स्त्री साक्षरता दर में क्या परिवर्तन आया?
(A) 10% से बढ़कर 50% हो गई
(B) 5% से बढ़कर 45% हो गई
(C) कोई परिवर्तन नहीं हुआ
(D) 1.88% से बढ़कर 65% हो गई

40. भरमौर क्षेत्र की परंपरागत अर्थव्यवस्था किस पर आधारित थी?
(A) जीवन निर्वाह कृषि व पशुचारण
(B) उद्योग और व्यापार
(C) पर्यटन और सेवाएँ
(D) खनन और वानिकी

41. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के कालक्रमानुसार व्यवस्थित कीजिए:
1. 'द लिमिट टू ग्रोथ' का प्रकाशन
2. 'द पापुलेशन बम' का प्रकाशन
3. ब्रंटलैंड रिपोर्ट ('अवर कॉमन फ्यूचर') का प्रस्तुतीकरण
4. विश्व पर्यावरण और विकास आयोग (WECD) की स्थापना

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 2, 3, 1, 4

42. 20वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में भरमौर क्षेत्र की कृषि में क्या परिवर्तन आया?
(A) दालों और अन्य नकदी फसलों की खेती में बढ़ोतरी हुई
(B) खाद्यान्नों का उत्पादन कम हो गया
(C) खेती पूरी तरह से मशीनीकृत हो गई
(D) लोगों ने खेती करना छोड़ दिया

43. 'विकास' शब्द से क्या अभिप्राय है?
(A) केवल आर्थिक वृद्धि
(B) केवल प्रौद्योगिकी में परिवर्तन
(C) जनसंख्या में वृद्धि
(D) समाज विशेष की स्थिति और उसके द्वारा अनुभव किए गए परिवर्तन की प्रक्रिया

44. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (अवधारणा)
P. विकास (प्रारंभिक संकल्पना)
Q. 1970 के दशक में विकास
R. 1980 के दशक में विकास

S. सतत पोषणीय विकास

List II: (वर्णन)

1. पुनर्वितरण के साथ वृद्धि
2. भावी पीढ़ियों की आवश्यकता पूर्ति को प्रभावित किए बिना वर्तमान की आवश्यकता पूर्ति
3. आर्थिक वृद्धि (सकल राष्ट्रीय उत्पाद में वृद्धि)
4. सामाजिक एवं भौतिक कल्याण सहित बहु-आयामी संकल्पना

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

45. द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत, विकास की संकल्पना किसका पर्याय थी?
(A) सामाजिक समानता
(B) राजनीतिक स्वतंत्रता
(C) आर्थिक वृद्धि
(D) पर्यावरणीय संरक्षण

46. 1970 के दशक में विकास की परिभाषा में कौन-से वाक्यांश शामिल किए गए?
(A) 'केवल वृद्धि'
(B) 'पर्यावरण के साथ वृद्धि'
(C) 'स्थिर विकास'
(D) 'पुनर्वितरण के साथ वृद्धि' तथा 'वृद्धि और समानता'

47. सतत पोषणीय विकास की संकल्पना का प्रादुर्भाव कब हुआ?
(A) 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में
(B) 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में
(C) 18वीं शताब्दी में
(D) 21वीं शताब्दी के प्रारंभ में

48. 1960 के दशक के अंतिम वर्षों में पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर जागरूकता क्यों बढ़ी?
(A) जनसंख्या में कमी के कारण
(B) औद्योगिक विकास के अनापेक्षित प्रभावों के कारण
(C) कृषि उत्पादन में कमी के कारण
(D) राजनीतिक अस्थिरता के कारण

49. निम्नलिखित में से कौन सी पुस्तक सतत पोषणीय विकास की अवधारणा के विकास से संबंधित नहीं है?
(A) 'द पापुलेशन बम'
(B) 'दास कैपिटल'
(C) 'द लिमिट टू ग्रोथ'
(D) 'अवर कॉमन फ्यूचर'

50. 'विश्व पर्यावरण और विकास आयोग' (WECD) की स्थापना किसने की?
(A) संयुक्त राष्ट्र संघ
(B) संयुक्त राज्य अमेरिका
(C) विश्व बैंक
(D) यूरोपीय संघ

51. ब्रंटलैंड रिपोर्ट का आधिकारिक नाम क्या है?
(A) द लिमिट टू ग्रोथ
(B) द पापुलेशन बम
(C) अवर कॉमन फ्यूचर
(D) एजेंडा 21

52. ब्रंटलैंड रिपोर्ट के अनुसार, 'सतत पोषणीय विकास' की परिभाषा क्या है?
(A) केवल वर्तमान पीढ़ी की समस्त आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति सुनिश्चित करना
(B) केवल वर्तमान औद्योगिक एवं आर्थिक विकास की गति को तीव्र बनाए रखना
(C) पर्यावरण संरक्षण की उपेक्षा करते हुए तीव्रतम आर्थिक प्रगति प्राप्त करना
(D) भावी पीढ़ियों के हितों से समझौता किए बिना वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करना

53. इंदिरा गांधी नहर को पहले किस नाम से जाना जाता था?
(A) पंजाब नहर
(B) हरिके नहर
(C) राजस्थान नहर
(D) थार नहर

54. इंदिरा गांधी नहर परियोजना की संकल्पना किसने की थी?
(A) जवाहरलाल नेहरु
(B) कँवर सेन
(C) सरदार पटेल
(D) महात्मा गांधी

55. इंदिरा गांधी नहर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह भारत के सबसे बड़े नहर तंत्रों में से एक है।
2. यह 1948 में कँवर सेन द्वारा संकल्पित की गई थी।
3. इसका प्रारंभ 31 मार्च, 1958 को हुआ।
4. यह नहर पंजाब में हरिके बाँध से निकलती है।
5. यह पाकिस्तान सीमा के समानांतर 100 कि.मी. की औसत दूरी पर बहती है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2, 3 और 4
(C) केवल 3, 4 और 5
(D) सभी कथन सही हैं

56. इंदिरा गांधी नहर कहाँ से निकलती है?
(A) हरिके बैराज
(B) भाखड़ा नांगल बाँध
(C) पोंग बाँध

(D) सलाल बाँध

57. इंदिरा गांधी नहर का निर्माण कार्य कितने चरणों में पूरा किया गया?
(A) एक
(B) तीन
(C) दो
(D) चार

58. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): इंदिरा गांधी नहर तंत्र में सभी लिफ्ट नहरें मुख्य नहर के बाएँ किनारे से निकलती हैं।
कारण (R): लिफ्ट नहर में ढाल के विपरीत प्रवाह के लिए जल को बार-बार मशीनों से ऊपर उठाया जाता है, जो एक विशिष्ट इंजीनियरिंग डिज़ाइन का हिस्सा है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

59. इंदिरा गांधी नहर के चरण-I के कमान क्षेत्र में कौन-से जिले शामिल हैं?
(A) जैसलमेर, बाड़मेर और जोधपुर
(B) केवल चुरु और नागौर
(C) केवल बीकानेर और जैसलमेर
(D) गंगानगर, हनुमानगढ़ और बीकानेर का उत्तरी भाग

60. इंदिरा गांधी नहर के चरण-II का कमान क्षेत्र किन जिलों में फैला हुआ है?
(A) गंगानगर और हनुमानगढ़
(B) बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, नागौर और चुरु
(C) केवल जयपुर और अलवर
(D) केवल कोटा और बूँदी

61. इंदिरा गांधी नहर के प्रसार ने शुष्क क्षेत्र की पारिस्थितिकी, अर्थव्यवस्था और समाज पर कैसा प्रभाव डाला है?
(A) कोई प्रभाव नहीं डाला
(B) केवल नकारात्मक प्रभाव डाला
(C) इसे रुपांतरित कर दिया है
(D) केवल सकारात्मक प्रभाव डाला

62. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (नहर चरण)
P. चरण-I कमान क्षेत्र
Q. चरण-II कमान क्षेत्र
R. नहर परियोजना का प्रारंभ
S. नहर परियोजना की संकल्पना
List II: (सिंचाई प्रारंभ/वर्ष)
1. 1980 के दशक के मध्य में
2. 1960 के दशक के आरंभ में
3. 1948
4. 1958
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

63. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में नहर सिंचाई का एक सकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव क्या है?
(A) भूमि हरी-भरी होना और वायु अपरदन में कमी आना
(B) जल भराव की व्यापक समस्या का समाधान होना
(C) कृषि भूमि में मृदा लवणता की निरंतर वृद्धि होना
(D) क्षेत्र के भू-जल स्तर का और अधिक नीचे जाना

64. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में सघन सिंचाई और जल के अत्यधिक प्रयोग का क्या नकारात्मक प्रभाव पड़ा है?
(A) मृदा की उर्वरता में वृद्धि
(B) जल भराव और मृदा लवणता की समस्या
(C) फसल उत्पादन में कमी
(D) वायु अपरदन में वृद्धि

65. इंदिरा गांधी नहर के कारण कृषि अर्थव्यवस्था में क्या परिवर्तन आया?
(A) बोये गये क्षेत्र में कमी आई
(B) पारंपरिक फसलें जैसे चना, बाजरा और ग्वार का स्थान गेहूँ, कपास, मूँगफली और चावल ने ले लिया
(C) फसलों की सघनता में कमी आई
(D) कृषि उत्पादन पूरी तरह समाप्त हो गया

66. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में सतत पोषणीय विकास के संबंध में निम्नलिखित उपायों पर विचार कीजिए:
1. जल प्रबंधन नीति का कठोरता से कार्यान्वयन।
2. जल सघन फसलों को बोने के लिए किसानों को प्रोत्साहित करना।
3. वनीकरण और चरागाह विकास।
4. जलाक्रांत और लवण प्रभावित भूमि का पुनरुद्धार।
5. केवल कृषि और पशुपालन पर अर्थव्यवस्था को केंद्रित करना।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 3 और 4
(C) केवल 2, 4 और 5
(D) सभी उपाय सही हैं

67. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में कृषि की सतत पोषणता पर प्रश्न क्यों उठ गए हैं?
(A) सिंचाई सुविधाओं की कमी के कारण
(B) किसानों की अरुचि के कारण
(C) जल भराव और मृदा लवणता की समस्याओं के कारण

(A) 26° सेल्सियस
(B) 4° सेल्सियस
(C) 10° सेल्सियस
(D) 20° सेल्सियस

131. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में आर्थिक विविवधीकरण को बढ़ावा देने के लिए किनके बीच प्रकार्यात्मक संबंध स्थापित करने का सुझाव दिया गया है?
(A) केवल विभिन्न भारी उद्योगों के बीच
(B) केवल गाँवों और बड़े शहरों के बीच
(C) गाँवों, कृषि-सेवा केंद्रों और विपणन केंद्रों के मध्य
(D) केवल कृषि और पशुपालन के पारंपरिक सेक्टरों के बीच

132. भारत में नियोजन की विकास यात्रा को कालक्रमानुसार व्यवस्थित करें:
1. भारत में केंद्रीकृत-योजनाओं को अपनाना
2. भारत में विकेंद्रीकृत बहुस्तरीय योजनाओं की ओर कदम बढ़ाना
3. योजना आयोग का स्थान नीति आयोग द्वारा लेना
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 3, 1, 2
(D) 1, 3, 2

133. नीचे दिए गए कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन 1: आर्थिक विकास के लिए संसाधनों के साथ-साथ तकनीक और निवेश की आवश्यकता होती है।
कथन 2: नियोजन अनुभवों से यह महसूस किया गया कि आर्थिक विकास में क्षेत्रीय असंतुलन प्रबलित हो रहा था।
(A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और कथन 2 दोनों गलत हैं।
(C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(D) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

134. आठवीं पंचवर्षीय योजना में किन क्षेत्रों में अवसंरचना को विकसित करने के लिए विशिष्ट क्षेत्र योजना तैयार की गई थी?
(A) केवल पर्वतीय क्षेत्र
(B) उपरोक्त सभी
(C) केवल उत्तर-पूर्वी राज्य
(D) केवल जनजातीय एवं पिछड़े क्षेत्र

135. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): जनसंख्या वृद्धि के कारण लोग कृषि के लिए सीमांत भूमि का उपयोग करने के लिए बाध्य हैं।
कारण (R): सीमांत भूमि के उपयोग से पारिस्थितिकीय निम्नीकरण होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

136. सूखा संभावी क्षेत्रों में वैकल्पिक रोजगार अवसर पैदा करने की आवश्यकता क्यों है?
(A) जनसंख्या वृद्धि के दबाव को कम करने और पारिस्थितिकीय निम्नीकरण को रोकने के लिए
(B) लोगों को शहरी क्षेत्रों में भेजने के लिए
(C) कृषि को पूरी तरह से समाप्त करने के लिए
(D) केवल औद्योगिक विकास के लिए

137. सूखा संभावी क्षेत्रों के विकास के लिए अपनाई जाने वाली रणनीतियों में निम्नलिखित में से क्या शामिल है?
(A) बड़े बांधों का निर्माण
(B) शहरीकरण पर पूर्ण प्रतिबंध
(C) सूक्ष्म-स्तर पर समन्वित जल-संभर विकास कार्यक्रम
(D) केवल नकदी फसलों को बढ़ावा देना

138. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (स्थान)
P. भरमौर
Q. हरिके
R. गंगानगर
S. खणी
List II: (नदी/विवरण)
1. बुढ़ील नदी
2. इंदिरा गांधी नहर
3. रावी नदी
4. सतलुज और व्यास का संगम
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-2, Q-1, R-3, S-4
(D) P-1, Q-2, R-4, S-3

139. भरमौर में आई.टी.डी.पी. का एक सीमाबद्ध नकारात्मक परिणाम क्या रहा?
(A) साक्षरता दर में वृद्धि
(B) बाल विवाह में कमी
(C) लिंग अनुपात में सुधार
(D) विकास का लाभ कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित रहना

140. सतत पोषणीय विकास की अवधारणा के उदय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसका उदय 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।
2. इसका संबंध पर्यावरण पर औद्योगिक विकास के प्रभावों की चिंता से है।
3. एहरलिच की पुस्तक 'द पापुलेशन बम' ने इस चिंता को बढ़ाया।
4. मीडोस की पुस्तक 'द लिमिट टू ग्रोथ' ने भी इसमें योगदान

78. नीचे दिए गए कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन 1: 1980 के दशक तक विकास एक बहु-आयामी संकल्पना के रूप में उभरा।
कथन 2: इसमें समाज के सभी लोगों के लिए वृहद् स्तर पर सामाजिक एवं भौतिक कल्याण का समावेश है।
(A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और कथन 2 दोनों गलत हैं।
(C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(D) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

79. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (क्षेत्र)
P. भरमौर
Q. राजस्थान का मरुस्थल
R. नीलगिरि
S. मराठवाड़ा
List II: (संबंधित अवधारणा/कार्यक्रम)
1. पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम
2. सूखा संभावी क्षेत्र
3. समन्वित जनजातीय विकास कार्यक्रम
4. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

80. 'ओसरा' (वारबंदी) पद्धति का क्या अर्थ है?
(A) नहर के जल का असमान वितरण
(B) निकास के कमान क्षेत्र में नहर के जल का समान वितरण
(C) केवल कुछ किसानों को जल देना
(D) जल का भंडारण करना

81. 2011 की जनगणना के अनुसार भरमौर उपमंडल का जनसंख्या घनत्व कितना था?
(A) 39,113 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर
(B) 21 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर
(C) 100 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर
(D) 50 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर

82. गद्दी जनजाति द्वारा अनुभव किए गए 'भौगोलिक और आर्थिक अलगाव' का मुख्य कारण क्या था?
(A) क्षेत्र की दुर्गम अवस्थिति और कठोर पर्यावरण
(B) उनकी अपनी इच्छा
(C) सरकार की नीतियां
(D) अन्य समुदायों से संघर्ष

83. भरमौर क्षेत्र में आई.टी.डी.पी. लागू होने का एक महत्वपूर्ण आर्थिक परिणाम क्या था?
(A) जीवन निर्वाह कृषि का और मजबूत होना
(B) पशुचारण के महत्व में वृद्धि
(C) नकदी फसलों की खेती में बढ़ोतरी
(D) हस्तशिल्प उद्योग का पतन

84. 'विकास की संकल्पना गतिक है' - इस कथन का क्या अर्थ है?
(A) विकास की परिभाषा हमेशा एक जैसी रहती है।
(B) विकास केवल भौतिकी में एक अवधारणा है।
(C) विकास का कोई अर्थ नहीं है।
(D) विकास की संकल्पना समय और अनुभव के साथ बदलती रही है।

85. 'अवर कॉमन फ्यूचर' report किसने प्रस्तुत की?
(A) एहरलिच
(B) मीडोस
(C) ग्रो हरलेम ब्रंटलैंड की अध्यक्षता वाला आयोग
(D) कँवर सेन

86. इंदिरा गांधी नहर के चरण-I और चरण-II के कमान क्षेत्रों में मुख्य अंतर क्या है?
(A) चरण-I में केवल लिफ्ट नहरें हैं जबकि चरण-II में केवल प्रवाह नहरें हैं।
(B) चरण-I का भूतल ऊबड़-खाबड़ है जबकि चरण-II में स्थानांतरित बालू टिब्बे हैं।
(C) चरण-I का क्षेत्र चरण-II से बहुत बड़ा है।
(D) चरण-I में सिंचाई शुरु नहीं हुई है।

87. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में वनीकरण और चरागाह विकास कार्यक्रमों का एक प्रत्यक्ष लाभ क्या हुआ?
(A) मृदा लवणता में वृद्धि हुई।
(B) जल भराव की समस्या उत्पन्न हुई।
(C) भूजल स्तर और नीचे चला गया।
(D) वायु अपरदन और नहरी तंत्र में बालू निक्षेप की प्रक्रियाएँ धीमी पड़ गईं।

88. पहाड़ी क्षेत्र के विकास की योजनाएँ बनाते समय किन दशाओं को ध्यान में रखा जाता है?
(A) स्थलाकृतिक, पारिस्थितिकीय, सामाजिक तथा आर्थिक दशाओं को
(B) केवल आर्थिक दशाओं को
(C) केवल सामाजिक दशाओं को
(D) केवल राजनीतिक दशाओं को

89. पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसका उद्देश्य बागवानी, रोपण कृषि और पशुपालन का विकास करना था।
2. यह कार्यक्रम स्थानीय संसाधनों के उपयोग पर आधारित था।
3. इसने केवल बड़े उद्योगों के विकास पर ध्यान केंद्रित किया।
4. कार्यक्रम का लक्ष्य पारिस्थितिकीय संतुलन बनाए रखना था।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4

90. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): गद्दी जनजाति आज भी बहुत गतिशील है।
कारण (R): उनकी एक बड़ी संख्या शरद् ऋतु में कृषि और मजदूरी करके आजीविका कमाने के लिए कांगड़ा और आसपास के क्षेत्रों में प्रवास करती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

91. 'पारितंत्र-विकास' (eco-development) का उपाय किस क्षेत्र के लिए विशेष रूप से आवश्यक बताया गया है?
(A) इंदिरा गांधी नहर के चरण-I के लिए
(B) भरमौर क्षेत्र के लिए
(C) दार्जिलिंग जिले के लिए
(D) इंदिरा गांधी नहर के चरण-II के भंगुर पर्यावरण के लिए

92. भरमौर क्षेत्र की औसत ऊँचाई समुद्र तल से कितनी है?
(A) 1000 मीटर से 1500 मीटर
(B) 1500 मीटर से 3700 मीटर
(C) 500 मीटर से 1000 मीटर
(D) 4000 मीटर से 5000 मीटर

93. नियोजन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) नियोजन के दो उपगमन खंडीय और प्रादेशिक हैं।
(B) कमान नियंत्रित क्षेत्र विकास कार्यक्रम एक लक्ष्य क्षेत्र कार्यक्रम है।
(C) SFDA (लघु कृषक विकास संस्था) एक लक्ष्य क्षेत्र कार्यक्रम है।
(D) आठवीं पंचवर्षीय योजना में पिछड़े क्षेत्रों में अवसंरचना विकास के लिए विशिष्ट क्षेत्र योजना तैयार की गई।

94. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (कार्यक्रम/उपागम)
P. पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम
Q. सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम
R. समन्वित जनजातीय उप-योजना (भरमौर)
S. विशिष्ट क्षेत्र योजना (पिछड़े क्षेत्रों हेतु)
List II: (पंचवर्षीय योजना)
1. चौथी
2. आठवीं
3. पाँचवीं
4. पाँचवीं
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-1, R-3, S-2
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

95. 'पुनर्वितरण के साथ वृद्धि' का नारा किस दशक में लोकप्रिय हुआ?
(A) 1970 के दशक में
(B) 1960 के दशक में
(C) 1980 के दशक में
(D) 1990 के दशक में

96. भरमौर क्षेत्र में आई.टी.डी.पी. के लागू होने के बाद, अवसंरचना विकास से कौन से गाँव सबसे अधिक लाभान्वित हुए?
(A) सभी गाँव समान रूप से
(B) रावी नदी के किनारे बसे गाँव
(C) तुंदाह और कुगती क्षेत्रों के दूरदराज के गाँव
(D) केवल होली और खणी क्षेत्रों के गाँव

97. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में सतत पोषणीय विकास को बढ़ावा देने के उपायों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. जल प्रबंधन नीति का कठोरता से कार्यान्वयन।
2. किसानों को खट्टे फलों की खेती के लिए प्रोत्साहित करना।
3. नालों को पक्का करना और वारबंदी पद्धति लागू करना।
4. जलाक्रांत भूमि का पुनरुद्धार।
5. निर्धन भूआवंटियों को वित्तीय सहायता प्रदान करना।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 4 और 5
(D) 1, 2, 3, 4 और 5

98. मानव और पर्यावरण अंतःक्रिया की प्रक्रियाएँ किस बात पर निर्भर करती हैं?
(A) समाज द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी और पोषित संस्थाओं पर
(B) केवल जनसंख्या के आकार पर
(C) केवल राजनीतिक व्यवस्था पर
(D) केवल आर्थिक समृद्धि पर

99. निम्नलिखित घटनाओं को उनके प्रकाशन/स्थापना के वर्ष के अनुसार कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. ब्रंटलैंड रिपोर्ट का प्रकाशन
2. 'द लिमिट टू ग्रोथ' का प्रकाशन
3. 'द पापुलेशन बम' का प्रकाशन
4. WECD की स्थापना
(A) 3, 2, 4, 1

(B) 2, 3, 1, 4
(C) 1, 4, 2, 3
(D) 4, 1, 3, 2

100. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): इंदिरा गांधी नहर के प्रसार से क्षेत्र की कृषि अर्थव्यवस्था में रूपांतरण हुआ है।
कारण (R): नहरों द्वारा सिंचित क्षेत्र के विस्तार से बोये गये क्षेत्र में विस्तार हुआ है और पारंपरिक फसलों का स्थान अधिक मूल्य वाली फसलों ने ले लिया है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

101. 'विकास एक बहु-आयामी संकल्पना है' के अर्थ में निम्नलिखित में से क्या सम्मिलित नहीं है?
(A) लोगों का कल्याण और रहने का स्तर
(B) जन स्वास्थ्य और शिक्षा
(C) केवल प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि
(D) राजनीतिक और नागरिक अधिकार

102. 20वीं शताब्दी के अंतिम तीन दशकों में भरमौर क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में पशुचारण के घटते महत्व को किस बात से आँका जा सकता है?
(A) कुल पारिवारिक इकाइयों का 50% भाग ही ऋतु प्रवास करता है
(B) कुल पारिवारिक इकाइयों का दसवाँ भाग ही ऋतु प्रवास करता है
(C) कुल पारिवारिक इकाइयों का 25% भाग ही ऋतु प्रवास करता है
(D) कोई भी परिवार अब ऋतु प्रवास नहीं करता है

103. 'द लिमिट टू ग्रोथ' पुस्तक के प्रकाशन का क्या परिणाम हुआ?
(A) इसने औद्योगिक विकास को बढ़ावा दिया
(B) इसने जनसंख्या वृद्धि को प्रोत्साहित किया
(C) इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा
(D) इसने पर्यावरणविदों की चिंता को और गहरा कर दिया

104. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (भौगोलिक विशेषता)
P. पीर पंजाल और धौलाधार श्रेणियाँ
Q. रावी और उसकी सहायक नदियाँ बुढ़ील और टुंडेन
R. स्थानांतरित बालू टिब्बे
S. हरिके बैराज
List II: (स्थान/विवरण)
1. इंदिरा गांधी नहर का उद्गम
2. इंदिरा गांधी नहर का चरण-II क्षेत्र
3. भरमौर क्षेत्र
4. भरमौर क्षेत्र
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

105. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में सतत पोषणीय विकास के लिए सुझाए गए उपायों में से कितने उपाय मुख्य रूप से पारिस्थितिकीय संतुलन पुनःस्थापित करने पर बल देते हैं?
(A) दो
(B) तीन
(C) पाँच
(D) चार

106. भरमौर क्षेत्र के बारे में निम्नलिखित में से कौन-sa कथन असत्य है?
(A) जनवरी में यहाँ का औसत मासिक तापमान 26° सेल्सियस रहता है।
(B) यह क्षेत्र पीर पंजाल और धौलाधार पर्वत श्रेणियों के बीच स्थित है।
(C) रावी नदी इस क्षेत्र को चार भूखंडों में विभाजित करती है।
(D) यह 'गद्दी' जनजातीय समुदाय का आवास क्षेत्र है।

107. सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसकी शुरुआत चौथी पंचवर्षीय योजना में हुई।
2. इसका उद्देश्य लोगों को रोज़गार उपलब्ध करवाना था।
3. प्रारंभ में इसमें सिविल निर्माण कार्यों पर बल दिया गया।
4. बाद में इसमें सिंचाई, वनीकरण और आधारभूत ग्रामीण अवसंरचना पर ज़ोर दिया गया।
5. राष्ट्रीय समिति ने पाया कि यह कार्यक्रम सभी सेक्टरों में समान रूप से फैला है।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3 और 4
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 3, 4 और 5
(D) सभी कथन सही हैं

108. 'लक्ष्य क्षेत्र' नियोजन का क्या अर्थ है?
(A) किसी विशेष जनसमूह पर ध्यान केंद्रित करना
(B) आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में नियोजन प्रक्रम पर विशेष ध्यान देना
(C) संपूर्ण देश के लिए एक समान योजना बनाना
(D) केवल शहरी क्षेत्रों का विकास करना

109. नीचे दिए गए कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन 1: भरमौर क्षेत्र में आई.टी.डी.पी. के अंतर्गत विकास का लाभ सभी क्षेत्रों तक समान रूप से नहीं पहुँचा है।
कथन 2: तुंदाह और कुगती जैसे दूरदराज के गाँव अभी भी

(D) बाजार की कमी के कारण

68. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में सतत पोषणीय विकास का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए मुख्य रूप से किस पर बल देना होगा?
(A) औद्योगीकरण पर
(B) शहरीकरण पर
(C) खनन पर
(D) पारिस्थितिकीय सतत पोषणता पर

69. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र के शस्य प्रतिरूप में क्या परिवर्तन सुझाया गया है?
(A) जल सघन फसलों को अधिक बोना
(B) केवल बाजरा और ग्वार बोना
(C) सामान्यतः जल सघन फसलों को नहीं बोना और बागाती कृषि के अंतर्गत खट्टे फलों की खेती करना
(D) खेती बंद कर देना

70. कमान क्षेत्र विकास कार्यक्रम (CAD) के अंतर्गत कौन-से उपाय शामिल हैं?
(A) नालों को पक्का करना
(B) उपरोक्त सभी
(C) भूमि विकास तथा समतलन
(D) वारबंदी (ओसरा) पद्धति

71. भरमौर क्षेत्र के भू-आकृतिक स्वरूप के संबंध में क्या सही है?
(A) यह एक समतल मैदानी क्षेत्र है
(B) यह एक तटीय क्षेत्र है
(C) यह एक मरुस्थलीय क्षेत्र है
(D) यह चारों दिशाओं में ऊँचे पर्वतों से घिरा है

72. भरमौर क्षेत्र के उत्तर और दक्षिण में कौन-सी पर्वत श्रेणियाँ स्थित हैं?
(A) उत्तर में पीर पंजाल और दक्षिण में धौलाधार
(B) उत्तर में शिवालिक और दक्षिण में हिमालय
(C) उत्तर में अरावली और दक्षिण में विंध्य
(D) उत्तर में काराकोरम और दक्षिण में पीर पंजाल

73. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में वनीकरण, वृक्षों का रक्षण मेखला (shelterbelt) का निर्माण और चरागाह विकास पारितंत्र-विकास के लिए अति आवश्यक हैं।
कारण (R): यह क्षेत्र, विशेषकर चरण-2 में, एक भंगुर पर्यावरण वाला मरुस्थलीय क्षेत्र है जहाँ वायु अपरदन एक गंभीर समस्या है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

74. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में 'सामाजिक सतत पोषणता' का लक्ष्य कब हासिल किया जा सकता है?
(A) जब निर्धन आवंटियों को कृषि हेतु पर्याप्त वित्तीय एवं संस्थागत सहायता मिले
(B) जब सभी पात्र व्यक्तियों को समान कृषि भूमि का आवंटन कर दिया जाए
(C) जब केवल बड़े भूस्वामियों और प्रभावशाली किसानों को सहायता प्रदान की जाए
(D) जब संपूर्ण कृषि क्षेत्र को पूर्णतः मशीनीकृत और तकनीक आधारित कर दिया जाए

75. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में आर्थिक विविवधीकरण का क्या महत्व है?
(A) यह केवल कृषि क्षेत्र पर ही निर्भरता और बोझ को और अधिक बढ़ाता है
(B) यह क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में अस्थिरता और असंतुलन पैदा करने का कार्य करता है
(C) इसका स्थानीय विकास और जीवन स्तर में कोई विशेष योगदान नहीं होता है
(D) यह सतत विकास हेतु विभिन्न आर्थिक सेक्टरों में समन्वय स्थापित करता है

76. निम्नलिखित योजनाओं/कार्यक्रमों को उनके प्रारंभ के कालक्रमानुसार व्यवस्थित कीजिए:
1. इंदिरा गांधी नहर परियोजना
2. पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम
3. सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम
4. समन्वित जनजातीय उप-योजना (भरमौर में)

(A) 1, 3, 2, 4
(B) 3, 2, 1, 4
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 4, 3, 2, 1

77. भरमौर क्षेत्र की 'गद्दी' जनजाति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वे 'गद्दीयाली' भाषा बोलते हैं।
2. वे ऋतु-प्रवास करते हैं।
3. उनका आर्थिक आधार मुख्य रूप से कृषि और भेड़-बकरी पालन है।
4. आई.टी.डी.पी. के बाद उन्होंने ऋतु-प्रवास पूरी तरह से बंद कर दिया है।
5. वे आज भी बहुत गतिशील हैं और आजीविका के लिए कांगड़ा जैसे क्षेत्रों में प्रवास करते हैं।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2, 3 और 5
(C) केवल 3, 4 और 5
(D) सभी कथन सही हैं

(A) आर्थिक विविवधीकरण द्वारा अर्थव्यवस्था के अन्य सेक्टरों का विकास करना
(B) केवल खनन पर ध्यान देना
(C) क्षेत्र को पूरी तरह से प्राकृतिक छोड़ देना
(D) बाहरी निवेश पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाना

121. भरमौर क्षेत्र के विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. विकास प्रक्रिया 1970 के दशक में शुरु हुई।
2. गद्दी लोग को अनुसूचित जनजातियों में शामिल किया गया।
3. 1974 में जनजातीय उप-योजना प्रारंभ हुई।
4. भरमौर को आई.टी.डी.पी. का दर्जा मिला।
5. इस योजना का उद्देश्य गद्दियों के जीवन स्तर को गिराना था।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2, 3 और 4
(C) केवल 2, 3 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

122. भरमौर को अधिसूचित जनजातीय क्षेत्र कब घोषित किया गया?
(A) 21 नवंबर, 1975
(B) 15 अगस्त, 1947
(C) 26 जनवरी, 1950
(D) 31 मार्च, 1958

123. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): भरमौर क्षेत्र में स्त्री और पुरुष साक्षरता दर के बीच का अंतर कम हुआ है।
कारण (R): आई.टी.डी.पी. के लागू होने से स्त्री साक्षरता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जो 1971 में 1.88% से बढ़कर 2011 में 65% हो गई।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

124. निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्र सूखा संभावी क्षेत्र नहीं माना जाता है?
(A) महाराष्ट्र का मराठवाड़ा क्षेत्र
(B) केरल का तटीय क्षेत्र
(C) आंध्र प्रदेश का रायलसीमा क्षेत्र
(D) कर्नाटक पठार

125. विकास का असमान प्रतिरुप नियोजकों को क्या करने के लिए प्रेरित करता है?
(A) केवल विकसित क्षेत्रों पर ध्यान देने के लिए
(B) नियोजन प्रक्रिया को रोकने के लिए
(C) एक स्थानिक परिप्रेक्ष्य अपनाने और प्रादेशिक असंतुलन कम करने के लिए
(D) सभी क्षेत्रों के लिए समान नीतियां बनाने के लिए

126. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (कार्यक्रम/अवधारणा)
P. प्रादेशिक नियोजन
Q. खंडीय नियोजन
R. सतत पोषणीय विकास
S. लक्ष्य समूह नियोजन

List II: (उदाहरण/उद्देश्य)
1. ब्रंटलैंड रिपोर्ट
2. MFDA
3. प्रादेशिक असंतुलन कम करना
4. सिंचाई क्षेत्र का विकास

(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

127. 'रक्षण मेखला' (shelterbelt) का निर्माण किस उद्देश्य से किया जाता है?
(A) वायु अपरदन को रोकने के लिए
(B) जल संरक्षण
(C) मृदा की उर्वरता बढ़ाने के लिए
(D) वन्यजीवों को आश्रय देने के लिए

128. भरमौर क्षेत्र को चार भूखंडों- होली, खणी, कुगती और तुंदाह में कौन विभाजित करता है?
(A) पीर पंजाल श्रेणी
(B) रावी और उसकी सहायक नदियाँ
(C) धौलाधार श्रेणी
(D) मानव निर्मित सीमाएँ

129. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसके कारण बोये गये क्षेत्र में विस्तार हुआ है।
2. इससे फसलों की सघनता में वृद्धि हुई है।
3. पारंपरिक फसलों का स्थान गेहूँ, कपास और चावल ने ले लिया है।
4. यह सब केवल शुष्क कृषि का परिणाम है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4

130. भरमौर क्षेत्र में जुलाई का औसत मासिक तापमान कितना रहता है?

विकास की परिधि से बाहर हैं।
(A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और कथन 2 दोनों गलत हैं।
(C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(D) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

110. 'विकास की प्रक्रिया' में निम्नलिखित में से क्या सम्मिलित है?
(A) सोच-विचार की प्रक्रिया
(B) कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करना
(C) उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु गतिविधियों का क्रियान्वयन
(D) उपरोक्त सभी

111. भरमौर क्षेत्र में समन्वित जनजातीय विकास कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण सामाजिक लाभ क्या था?
(A) साक्षरता में लिंग असमानता में कमी
(B) नकदी फसलों के उत्पादन में वृद्धि
(C) पशुचारण का बढ़ता महत्व
(D) ऋतु प्रवास में वृद्धि

112. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में सघन सिंचाई से आरंभ में कृषि और पशुधन उत्पादकता में अत्यधिक वृद्धि हुई।
कारण (R): सघन सिंचाई के कारण जल भराव और मृदा लवणता की समस्याएँ उत्पन्न हुईं, जिससे कृषि की दीर्घकालिक पोषणता पर प्रश्न उठ गए।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

113. 'पिछड़े क्षेत्रों पर राष्ट्रीय समिति' (1981) द्वारा पहाड़ी क्षेत्रों के विकास के लिए दिए गए सुझावों में से कौन-सा एक प्रमुख सुझाव है?
(A) केवल बाहरी प्रतिभाओं का उपयोग करना
(B) जीविका निर्वाह अर्थव्यवस्था को निवेश-उन्मुखी बनाना
(C) पिछड़े क्षेत्रों के बाज़ार व्यवस्था में कोई सुधार न करना
(D) पारिस्थितिकीय संतुलन की उपेक्षा करना

114. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (शब्द)
P. गद्दी
Q. ऋतु-प्रवास
R. आई.टी.डी.पी.
S. कँवर सेन
List II: (विवरण)
1. समन्वित जनजातीय विकास परियोजना
2. इंदिरा गांधी नहर के योजनाकार
3. भरमौर की एक जनजाति
4. मौसम के अनुसार पशुओं के साथ प्रवास
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

115. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में उगाई जाने वाली पारंपरिक फसलें कौन-सी थीं?
(A) गेहूँ, कपास, चावल
(B) मूँगफली, सरसों, गन्ना
(C) चना, बाजरा, ग्वार
(D) खट्टे फल और सब्जियाँ

116. नीति आयोग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. नीति आयोग की स्थापना 1 जनवरी, 2015 को हुई।
2. इसका उद्देश्य भारत के आर्थिक नीति निर्माण में राज्यों की भागीदारी सुनिश्चित करना है।
3. यह केंद्रीय तथा राज्य सरकारों को युक्तिगत तथा तकनीकी सलाह देता है।
4. इसने योजना आयोग का स्थान लिया।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4

117. किस प्रमुख घटना ने पर्यावरण पर औद्योगिक विकास के अनापेक्षित प्रभावों के विषय में वैश्विक चिंता प्रकट की?
(A) द्वितीय विश्व युद्ध का अंत
(B) शीत युद्ध की शुरुआत
(C) 1960 के दशक के अंत में पश्चिमी दुनिया में पर्यावरण मुद्दों पर बढ़ती जागरूकता
(D) भारत की स्वतंत्रता

118. निम्नलिखित में से कौन-सा जोड़ा सही सुमेलित नहीं है?
(A) एहरलिच - द पापुलेशन बम
(B) कँवर सेन - पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम
(C) मीडोस - द लिमिट टू ग्रोथ
(D) WECD - अवर कॉमन फ्यूचर

119. इंदिरा गांधी नहर की कुल नियोजित लंबाई कितनी है?
(A) 19.63 lakh hectare
(B) 1818 वर्ग कि.मी.
(C) 40 कि.मी.
(D) 9060 कि.मी.

120. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में सतत पोषणीय विकास को बढ़ावा देने के लिए कृषि और पशुपालन के अलावा और किस बात पर बल दिया गया है?

दिया।
5. इसका अंतिम रुप ब्रंटलैंड रिपोर्ट में सामने आया।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 4 और 5
(D) 1, 2, 3, 4 और 5

141. इंदिरा गांधी नहर के चरण-II के कमान क्षेत्र की एक प्रमुख विशेषता क्या है?
(A) यहाँ का भूतल समतल है।
(B) यहाँ ग्रीष्म ऋतु में तापमान 20° सेल्सियस रहता है।
(C) यह स्थानांतरित बालू टिब्बों वाला मरुस्थल है।
(D) यहाँ प्रचुर मात्रा में वर्षा होती है।

142. इंदिरा गांधी नहर तंत्र में 'प्रवाह प्रणाल' (Flow System) की नहरें मुख्य नहर के किस किनारे पर स्थित हैं?
(A) बाएँ किनारे पर
(B) दाएँ किनारे पर
(C) दोनों किनारों पर
(D) किसी भी किनारे पर नहीं

143. नीचे दिए गए कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए:
कथन 1: इंदिरा गांधी नहर के कमान क्षेत्र में फसल रक्षण सिंचाई और चरागाह विकास के लिए विस्तारित सिंचाई का प्रावधान है।
कथन 2: यह प्रावधान चरण-1 में फसल उगाने और चरण-2 में फसल रक्षण सिंचाई के लिए है।
(A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और कथन 2 दोनों गलत हैं।
(C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(D) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

144. 'सतत पोषणीय विकास' की अवधारणा मूल रूप से विकास की किस सीमा को स्वीकार करती है?
(A) आर्थिक सीमा
(B) पर्यावरणीय सीमा
(C) सामाजिक सीमा
(D) राजनीतिक सीमा

145. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): केवल कृषि और पशुपालन के विकास से इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में सतत पोषणीय विकास की अवधारणा को साकार नहीं किया जा सकता।
कारण (R): सतत पोषणीय विकास के लिए आर्थिक विविधीकरण आवश्यक है, जो अर्थव्यवस्था के विभिन्न सेक्टरों के बीच संबंध स्थापित करता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

146. 'भरमौर' संस्कृत के किस शब्द का अपभ्रंश है?
(A) ब्रह्मपुर
(B) ब्रह्मौर
(C) भरमपुर
(D) ब्रह्मपुरी

147. योजना आयोग और नीति आयोग के कार्यप्रणाली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. योजना आयोग केंद्र, राज्य और जिला स्तर पर योजनाएँ तैयार करता था।
2. नीति आयोग केवल केंद्र स्तर पर योजनाएँ तैयार करता है।
3. नीति आयोग एक 'थिंक टैंक' के रुप में कार्य करता है।
4. योजना आयोग और नीति आयोग की कार्यप्रणाली बिल्कुल एक जैसी है।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 4

148. 'गद्दी' जनजाति की विशिष्ट पहचान हिमालय क्षेत्र में किस मुख्य कारण से है?
(A) उनकी विशिष्ट भाषा के कारण
(B) उनके विशेष पहनावे के कारण
(C) उनकी अनोखी कृषि पद्धतियों के कारण
(D) उनके ऋतु-प्रवासी जीवन के कारण

149. निम्नलिखित में से कौन-सा एक 'लक्ष्य क्षेत्र' कार्यक्रम का उदाहरण माना जाता है?
(A) लघु कृषक विकास संस्था (SFDA)
(B) सीमांत किसान विकास संस्था (MFDA)
(C) कमान नियंत्रित क्षेत्र विकास कार्यक्रम
(D) प्रधानमंत्री रोजगार योजना

150. निम्नलिखित सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (जिला)
P. चंबा
Q. गंगानगर
R. नीलगिरी
S. रायलसीमा
List II: (संबंधित क्षेत्र/कार्यक्रम)
1. इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र
2. पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम
3. सूखा संभावी क्षेत्र
4. भरमौर जनजातीय क्षेत्र

स्थापित करना और सूखे की स्थिति में भी ग्रामीण समुदायों की आजीविका को सुरक्षित रखना था।

22. (B) यह कार्यक्रम मुख्यतः कृषि तथा इससे संबद्ध सेक्टरों तक ही सीमित था।
पिछड़े क्षेत्रों के विकास की राष्ट्रीय समिति ने सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम की समीक्षा के दौरान पाया कि इसका प्रभाव काफी सीमित रहा है। समिति ने यह निष्कर्ष निकाला कि यह कार्यक्रम मुख्य रूप से केवल कृषि और उससे जुड़े क्षेत्रों तक ही केंद्रित रहा, जिससे अन्य आर्थिक क्षेत्रों का विकास नहीं हो पाया। इसके कारण क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में आवश्यक विविधीकरण की कमी देखी गई, जो विकास के लिए अनिवार्य थी।

23. (D) जल, मिट्टी, पौधों, मानव तथा पशु जनसंख्या के बीच पारिस्थितिकीय संतुलन पर
सूखा संभावी क्षेत्रों के स्थायी विकास के लिए सबसे प्रभावी रणनीति पारिस्थितिकीय संतुलन बनाए रखना है। इसमें जल संरक्षण, मृदा स्वास्थ्य, वनस्पति आवरण और वहां रहने वाले मानव एवं पशु समुदायों के बीच एक सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित करने पर बल दिया जाना चाहिए। जब तक पर्यावरण के इन घटकों के बीच संतुलन नहीं होगा, तब तक सूखे की समस्या का दीर्घकालिक समाधान और क्षेत्रीय विकास संभव नहीं है।

24. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
भारत में नियोजन की महत्वपूर्ण घटनाओं का एक निश्चित कालक्रम है। योजना आयोग ने 1967 में सूखा संभावी जिलों की पहचान की थी। इसके बाद 1972 में सिंचाई आयोग ने इन क्षेत्रों का वैज्ञानिक परिसीमन किया। पिछड़े क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय समिति का गठन 1981 में हुआ। अंततः, आर्थिक नीति निर्माण के आधुनिक ढांचे को अपनाते हुए 2015 में नीति आयोग की स्थापना की गई, जो सहकारी संघवाद का प्रतीक है।

25. (C) पंजाब, हरियाणा और उत्तरी राजस्थान
भारत में सूखा संभावी क्षेत्र मुख्य रूप से राजस्थान, गुजरात, मराठवाड़ा और कर्नाटक पठार के अर्ध-शुष्क भागों में फैले हुए हैं। हालांकि, पंजाब, हरियाणा और उत्तरी राजस्थान के क्षेत्रों को सामान्यतः सूखा प्रभावित श्रेणी से बाहर रखा जाता है। इसका मुख्य कारण इन क्षेत्रों में सिंचाई सुविधाओं का व्यापक प्रसार है, जिसने वर्षा की अनिश्चितता के बावजूद वहां कृषि को स्थिर और सफल बनाने में मदद की है।

26. (A) 30 प्रतिशत सिंचित क्षेत्र
1972 में सिंचाई आयोग ने सूखा संभावी क्षेत्रों की पहचान के लिए एक विशिष्ट मापदंड निर्धारित किया था। आयोग के अनुसार, जिन क्षेत्रों में सिंचित भूमि का विस्तार कुल कृषि योग्य भूमि के 30 प्रतिशत से कम था, उन्हें सूखा संभावी माना गया। यह पैमाना नियोजकों को उन क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करता था जहां जल संसाधनों की भारी कमी थी और सिंचाई के विस्तार की तत्काल आवश्यकता थी।

27. (C) केवल 1, 2, 3 और 4
भरमौर जनजातीय क्षेत्र हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले में स्थित है और इसमें भरमौर तथा होली तहसीलें शामिल हैं। इसे 1975 में अधिसूचित जनजातीय क्षेत्र घोषित किया गया था, जो गद्दी समुदाय का घर है। यद्यपि यहाँ की जलवायु कठोर है और पर्यावरण भंगुर है, लेकिन समशीतोष्ण जलवायु के बजाय यहाँ की परिस्थितियाँ कठिन हैं, इसलिए कथन 5 गलत है। विकास प्रक्रिया यहाँ 1970 के दशक में शुरू हुई थी।

28. (B) सिंचाई के प्रसार के कारण
पंजाब, हरियाणा और उत्तरी राजस्थान जैसे क्षेत्रों में वर्षा कम होने के बावजूद, ये इलाके सूखे की गंभीर मार से बच जाते हैं। इसका मुख्य कारण यहाँ नहरों और ट्यूबवेल के माध्यम से सिंचाई का व्यापक विस्तार होना है। सिंचाई की सुनिश्चित उपलब्धता ने कृषि उत्पादन को मानसून की अनिश्चितता से मुक्त कर दिया है, जिससे यहाँ की अर्थव्यवस्था सूखे के प्रति काफी अधिक लचीली और मजबूत बन गई है।

29. (B) वे ऋतु-प्रवास करते हैं
भरमौर क्षेत्र के 'गद्दी' जनजातीय समुदाय की एक प्रमुख विशेषता उनका ऋतु-प्रवास (transhumance) करना है। वे मौसम के अनुसार अपने पशुओं, विशेषकर भेड़ और बकरियों के साथ ऊपरी और निचले क्षेत्रों के बीच प्रवास करते हैं। यह जीवनशैली पर्वतीय पर्यावरण की कठिन परिस्थितियों और संसाधनों की मौसमी उपलब्धता के साथ उनका एक पारंपरिक और प्रभावी अनुकूलन है, जो उनकी संस्कृति और अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है।

30. (D) कठोर जलवायु, कम संसाधन और भंगुर पर्यावरण
भरमौर क्षेत्र के सामाजिक और आर्थिक विकास की धीमी गति के लिए वहां की कठोर भौगोलिक परिस्थितियां जिम्मेदार रही हैं। क्षेत्र की विषम जलवायु, कृषि योग्य भूमि और अन्य संसाधनों की कमी, और हिमालय का भंगुर पर्यावरण वहां के निवासियों के जीवन को कठिन बनाता है। इन्हीं बाधाओं के कारण गद्दी समुदाय ने ऐतिहासिक रूप से भौगोलिक और आर्थिक अलगाव का सामना किया, जिससे उनके विकास की प्रक्रिया काफी चुनौतीपूर्ण रही।

31. (A) 1970 के दशक में
भरमौर जनजातीय क्षेत्र में विकास की व्यवस्थित प्रक्रिया मुख्य रूप से 1970 के दशक में शुरू हुई थी। इस अवधि में सरकार ने जनजातीय और पिछड़े क्षेत्रों के लिए विशेष नियोजन उपागमों को अपनाना शुरू किया। 1975 में इसे अधिसूचित जनजातीय क्षेत्र घोषित किए जाने के बाद, यहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए लक्षित कार्यक्रम चलाए गए, जिसने गद्दी समुदाय के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन की नींव रखी।

32. (B) समन्वित जनजातीय विकास परियोजना (आई.टी.डी.पी.)
1974 में, पाँचवीं पंचवर्षीय योजना के तहत, भरमौर क्षेत्र को 'समन्वित जनजातीय विकास परियोजना' (ITDP) का दर्जा प्रदान किया गया। इस विशेष प्रशासनिक ढांचे का उद्देश्य इस

बल्कि क्षेत्र की पारिस्थितिक क्षमता को स्थायी रूप से बढ़ाना, सूखे के प्रभाव को कम करना (drought-proofing), और स्थानीय आबादी के लिए स्थायी आजीविका के अवसर पैदा करना था। इस प्रकार, DPAP एक राहत-आधारित कार्यक्रम से विकसित होकर एक समग्र पारिस्थितिक पुनर्स्थापन और संसाधन प्रबंधन पहल बन गया।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम (DPAP) की शुरुआत किस पंचवर्षीय योजना के दौरान हुई?
(A) तीसरी पंचवर्षीय योजना
(B) चौथी पंचवर्षीय योजना
(C) पाँचवीं पंचवर्षीय योजना
(D) छठी पंचवर्षीय योजना

157. प्रारंभ में, DPAP का मुख्य जोर किस पर था?
(A) जलसंभर विकास और मृदा संरक्षण के विभिन्न वैज्ञानिक उपायों पर
(B) शुष्क भूमि बागवानी और सघन वनीकरण को व्यापक बढ़ावा देने पर
(C) स्थानीय आबादी हेतु स्थायी और दीर्घकालिक आजीविका के अवसर बनाना
(D) श्रम-गहन निर्माण कार्यों के माध्यम से रोजगार सृजन करना

158. DPAP के दृष्टिकोण में वैचारिक परिवर्तन के बाद, कार्यक्रम का केंद्रबिंदु क्या बन गया?
(A) जलसंभर विकास का सिद्धांत
(B) केवल राहत कार्य प्रदान करना
(C) बड़े बांधों का निर्माण
(D) औद्योगिक विकास को प्रोत्साहित करना

159. जलसंभर विकास उपागम का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) स्थानीय लोगों को केवल कुछ समय के लिए अस्थायी रोजगार देना
(B) विदेशी सहायता और अंतरराष्ट्रीय तकनीकी निवेश पर निर्भरता बढ़ाना
(C) पारिस्थितिक क्षमता बढ़ाना और सूखे के प्रभाव को कम करना
(D) दूरस्थ शहरी क्षेत्रों में निरंतर स्वच्छ जल की आपूर्ति सुनिश्चित करना

160. अनुच्छेद के अनुसार, DPAP का विकास किस दिशा में हुआ?
(A) राहत-आधारित योजना से पारिस्थितिक पुनर्स्थापन पहल की ओर
(B) एक औद्योगिक विकास कार्यक्रम से कृषि विकास कार्यक्रम की ओर
(C) एक विस्तृत राष्ट्रीय कार्यक्रम से स्थानीय पंचायत कार्यक्रम की ओर
(D) एक सामान्य जल-आपूर्ति योजना से सघन वनीकरण योजना की ओर

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम (HADP) को भारत में उन क्षेत्रों की अनूठी चुनौतियों को संबोधित करने के लिए तैयार किया गया था, जो अपनी विशिष्ट स्थलाकृति, नाजुक पारिस्थितिकी और सामाजिक-आर्थिक पिछड़ेपन की विशेषता रखते हैं। इन क्षेत्रों की विकास संबंधी बाधाएँ मैदानी इलाकों से भिन्न होती हैं, जिनमें दुर्गम भू-भाग, कम जनसंख्या घनत्व, कमजोर आधारभूत संरचना, और भूस्खलन तथा मृदा अपरदन जैसी प्राकृतिक आपदाओं की उच्च आशंका शामिल है। कार्यक्रम का मुख्य दर्शन यह था कि पर्वतीय क्षेत्रों के लिए मैदानी इलाकों में सफल रही विकास रणनीतियों को सीधे लागू नहीं किया जा सकता। इसके बजाय, एक ऐसी रणनीति की आवश्यकता थी जो पारिस्थितिक स्थिरता को प्राथमिकता दे। HADP ने स्थानीय संसाधनों का सतत उपयोग करते हुए स्थानीय समुदायों को लाभान्वित करने पर ध्यान केंद्रित किया। इसके अंतर्गत बागवानी, रोपण कृषि, पशुपालन, वानिकी और पर्यावरण-अनुकूल पर्यटन जैसे क्षेत्रों को बढ़ावा दिया गया, जो पर्वतीय पारिस्थितिकी के अनुकूल थे। कार्यक्रम का एक अन्य महत्वपूर्ण घटक स्थानीय लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए अवसंरचना का विकास करना था, जैसे कि सड़कें, संचार, और बिजली, लेकिन इस बात का ध्यान रखा गया कि इससे पर्यावरण को न्यूनतम क्षति हो। यह कार्यक्रम केवल आर्थिक विकास तक ही सीमित नहीं था, बल्कि इसका उद्देश्य स्थानीय संस्कृति का संरक्षण और यह सुनिश्चित करना भी था कि विकास के लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुँचें। इस प्रकार, HADP ने विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बनाने का एक प्रारंभिक और महत्वपूर्ण प्रयास प्रस्तुत किया।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम (HADP) की आवश्यकता क्यों महसूस की गई?
(A) क्योंकि पर्वतीय क्षेत्रों में जनसंख्या घनत्व बहुत अधिक था
(B) क्योंकि इन क्षेत्रों में औद्योगिक विकास की अपार संभावनाएं थीं
(C) क्योंकि पर्वतीय क्षेत्र प्राकृतिक आपदाओं से पूरी तरह सुरक्षित थे
(D) क्योंकि मैदानी इलाकों की विकास रणनीतियाँ पर्वतीय क्षेत्रों के लिए अनुपयुक्त थीं

162. HADP ने किस प्रकार की गतिविधियों को बढ़ावा दिया?
(A) भारी विनिर्माण उद्योग और व्यापक स्तर पर होने वाले खनन कार्य
(B) बागवानी, पशुपालन और पर्यावरण-अनुकूल पर्यटन विकास
(C) गहन कृषि पद्धति और बहुत बड़े पैमाने पर होने वाले शहरी निर्माण

(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत में स्वतंत्रता के उपरांत अपनाई गई नियोजन की प्रक्रिया में दो प्रमुख उपागमों—खंडीय (सेक्टरल) और प्रादेशिक (रीजनल)—के बीच एक द्वंद्व और समन्वय देखा जा सकता है। प्रारंभिक पंचवर्षीय योजनाओं का झुकाव मुख्यतः खंडीय नियोजन की ओर था, जहाँ कृषि, उद्योग, ऊर्जा, और परिवहन जैसे अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर लक्ष्य निर्धारित किए जाते थे। इस उपागम का उद्देश्य सकल घरेलू उत्पाद में तीव्र वृद्धि और आर्थिक संरचना का आधुनिकीकरण करना था। हालाँकि, इस प्रक्रिया में यह स्पष्ट हो गया कि केवल खंडीय विकास से देश के सभी क्षेत्रों में समान रूप से समृद्धि नहीं आ रही है। विकास का लाभ कुछ औद्योगिक और शहरी केंद्रों में केंद्रित हो गया, जबकि विशाल ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्र विकास की मुख्य धारा से अछूते रह गए। इस क्षेत्रीय असंतुलन की समस्या को संबोधित करने के लिए प्रादेशिक नियोजन की अवधारणा को बल मिला। प्रादेशिक नियोजन एक 'स्थानिक' दृष्टिकोण अपनाता है, जो किसी क्षेत्र विशेष की विशिष्ट समस्याओं, संसाधनों और संभावनाओं पर ध्यान केंद्रित करता है। इसका लक्ष्य पिछड़े क्षेत्रों का उत्थान करना, संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग सुनिश्चित करना और विकास के लाभों का अधिक समान वितरण सुनिश्चित करके क्षेत्रीय विषमताओं को कम करना है। इस प्रकार, भारतीय नियोजन प्रणाली धीरे-धीरे एक ऐसे मिश्रित मॉडल की ओर विकसित हुई जहाँ राष्ट्रीय स्तर पर खंडीय लक्ष्यों को क्षेत्रीय विकास की रणनीतियों के साथ एकीकृत किया जाता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. प्रारंभिक पंचवर्षीय योजनाओं में किस प्रकार के नियोजन पर अधिक बल दिया गया था?
(A) प्रादेशिक नियोजन
(B) खंडीय नियोजन
(C) विकेंद्रीकृत नियोजन
(D) लक्ष्य-क्षेत्र नियोजन

152. खंडीय नियोजन का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) जीडीपी वृद्धि और आर्थिक संरचना का आधुनिकीकरण करना
(B) क्षेत्रीय विषमताओं और असंतुलन को व्यवस्थित रूप से कम करना
(C) ग्रामीण क्षेत्रों का समग्र विकास और बुनियादी ढांचा सुधारना
(D) स्थानीय संसाधनों का कुशल और अनुकूलतम उपयोग सुनिश्चित करना

153. प्रादेशिक नियोजन की अवधारणा को क्यों महत्व मिला?
(A) राष्ट्रीय स्तर पर लक्ष्य निर्धारित करने की प्रशासनिक सुगमता हेतु
(B) विदेशी प्रत्यक्ष निवेश को बड़े पैमाने पर आकर्षित करने हेतु
(C) खंडीय विकास जनित क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करने के लिए
(D) केवल शहरी केंद्रों के विशिष्ट औद्योगिक विकास पर ध्यान देने हेतु

154. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता प्रादेशिक नियोजन से संबंधित है?
(A) यह एक पूर्णतः 'अस्थानिक' और राष्ट्रीय दृष्टिकोण अपनाता है।
(B) यह पूरे देश के लिए एक जैसी समान और व्यापक नीति बनाता है।
(C) इसका मुख्य ध्यान केवल भारी औद्योगिक विकास पर केंद्रित होता है।
(D) यह किसी क्षेत्र विशेष की समस्याओं और संसाधनों पर केंद्रित है।

155. अनुच्छेद के अनुसार, भारतीय नियोजन प्रणाली का विकास किस रूप में हुआ है?
(A) पूर्ण रूप से स्थानीय और प्रादेशिक नियोजन आधारित मॉडल के रूप में
(B) पूर्ण रूप से राष्ट्रीय और खंडीय नियोजन आधारित मॉडल के रूप में
(C) खंडीय और प्रादेशिक रणनीतियों का एक एकीकृत मिश्रित मॉडल
(D) एक संकीर्ण मॉडल जो केवल दूरस्थ पिछड़े क्षेत्रों पर केंद्रित हो

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत में सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम (DPAP) की शुरुआत चौथी पंचवर्षीय योजना के दौरान एक विशिष्ट लक्ष्य क्षेत्र नियोजन पहल के रूप में हुई। इसका प्राथमिक उद्देश्य गंभीर सूखे की स्थिति वाले क्षेत्रों में पारिस्थितिक संतुलन बहाल करना और भूमि, जल एवं अन्य प्राकृतिक संसाधनों की उत्पादकता में सुधार करना था। प्रारंभ में, इस कार्यक्रम का दृष्टिकोण काफी हद तक राहत-उन्मुख था, जिसमें रोजगार सृजन के लिए श्रम-गहन सिविल निर्माण कार्यों पर जोर दिया जाता था। हालाँकि, समय के साथ यह अनुभव किया गया कि यह दृष्टिकोण सूखे की समस्या का स्थायी समाधान प्रदान करने में अपर्याप्त है। अतः, कार्यक्रम के फोकस में एक महत्वपूर्ण वैचारिक परिवर्तन किया गया। बाद के चरणों में, विशेष रूप से 1990 के दशक के मध्य से, इसे जलसंभर विकास (वॉटरशेड डेवलपमेंट) के सिद्धांत पर केंद्रित किया गया। इस नए उपागम का उद्देश्य क्षेत्र के प्राकृतिक अपवाह तंत्र या 'जलसंभर' को एक इकाई मानकर समग्र विकास करना था। इसमें मृदा और जल संरक्षण के उपाय, वनीकरण, चरागाह विकास, और शुष्क भूमि बागवानी को बढ़ावा देना शामिल था। इसका लक्ष्य केवल अस्थायी रोजगार प्रदान करना नहीं,

(B) विकास प्रक्रियाओं में स्थानीय भागीदारी को हतोत्साहित करने पर
(C) लघु वनोपज के संग्रह पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने पर
(D) जनजातीय संस्कृति और पहचान के संरक्षण पर

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

सतत पोषणीय विकास की अवधारणा 1980 के दशक में वैश्विक विकास विमर्श के केंद्र में उभरी, जिसका श्रेय मुख्य रूप से 1987 में प्रकाशित ब्रंटलैंड आयोग की रिपोर्ट, 'हमारा साझा भविष्य' (Our Common Future) को जाता है। इस रिपोर्ट ने सतत विकास को उस विकास के रूप में परिभाषित किया "जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को पूरा करता है।" यह परिभाषा विकास के पारंपरिक मॉडल से एक महत्वपूर्ण विचलन का प्रतीक है, जो केवल आर्थिक वृद्धि, जैसे सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में वृद्धि, पर केंद्रित था। सतत विकास का ढाँचा तीन परस्पर जुड़े स्तंभों पर आधारित है: आर्थिक व्यवहार्यता, सामाजिक समानता और पर्यावरणीय संरक्षण। इसका तर्क है कि सच्चा विकास तभी प्राप्त किया जा सकता है जब ये तीनों आयाम एक साथ और संतुलित तरीके से हासिल किए जाएँ। उदाहरण के लिए, आर्थिक विकास जो पर्यावरणीय गिरावट की कीमत पर आता है या जो समाज में असमानता को बढ़ाता है, वह टिकाऊ नहीं हो सकता। इस अवधारणा ने नीति-निर्माताओं और योजनाकारों को यह सोचने के लिए प्रेरित किया कि आर्थिक गतिविधियों को इस तरह से कैसे डिजाइन किया जाए कि वे प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन न करें, प्रदूषण को कम करें, और यह सुनिश्चित करें कि विकास के लाभ समाज के सबसे गरीब और कमजोर वर्गों तक भी पहुँचें। यह एक अल्पकालिक लाभ के बजाय एक दीर्घकालिक परिप्रेक्ष्य की मांग करता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. सतत पोषणीय विकास की प्रसिद्ध परिभाषा किस रिपोर्ट में दी गई थी?
(A) विश्व बैंक की वार्षिक विश्व विकास रिपोर्ट
(B) संयुक्त राष्ट्र की वैश्विक मानव विकास रिपोर्ट
(C) ब्रंटलैंड आयोग की रिपोर्ट, 'हमारा साझा भविष्य'
(D) क्लब ऑफ रोम की 'द लिमिट्स टू ग्रोथ' रिपोर्ट

172. ब्रंटलैंड आयोग की परिभाषा के अनुसार, सतत विकास क्या है?
(A) केवल वर्तमान पीढ़ी की भौतिक जरूरतों को अधिकतम स्तर तक ले जाना
(B) भावी पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता किए बिना वर्तमान आवश्यकताएं पूरी करना
(C) भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों को वर्तमान से अधिक प्राथमिकता देना
(D) प्राकृतिक संसाधनों की परवाह किए बिना आर्थिक वृद्धि पर ध्यान देना

173. सतत विकास के तीन परस्पर जुड़े स्तंभ कौन से हैं?
(A) कृषि विकास, औद्योगिक विस्तार और आधुनिक सेवा क्षेत्र का उदय
(B) केंद्र सरकार, निजी निगम और सक्रिय नागरिक समाज का समन्वय
(C) प्राथमिक शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ और रोजगार के अवसर
(D) आर्थिक व्यवहार्यता, सामाजिक समानता और पर्यावरणीय संरक्षण

174. सतत विकास की अवधारणा विकास के पारंपरिक मॉडल से कैसे भिन्न है?
(A) यह आर्थिक वृद्धि के साथ पर्यावरणीय और सामाजिक आयामों का एकीकरण करती है।
(B) यह मुख्य रूप से समाज के कमजोर वर्गों की सामाजिक समानता पर ध्यान देती है।
(C) यह त्वरित आर्थिक लाभ हेतु पर्यावरणीय संरक्षण को पूरी तरह से नजरअंदाज करती है।
(D) यह सकल घरेलू उत्पाद (GDP) को विकास का एकमात्र और प्रमुख मापदंड मानती है।

175. अनुच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन-सा विकास 'सतत' नहीं माना जाएगा?
(A) वह विकास जो समाज में आय के न्यायपूर्ण और समान वितरण को बढ़ावा दे
(B) वह विकास जो पूर्ण रूप से सुरक्षित और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों पर आधारित हो
(C) पर्यावरणीय गिरावट और बढ़ती सामाजिक असमानता पर आधारित विकास
(D) वह विकास जो स्थानीय समुदायों के सामाजिक and आर्थिक सशक्तिकरण पर केंद्रित हो

(D) केवल सड़क अवसंरचना निर्माण और तीव्र शहरीकरण की प्रक्रियाएँ

163. HADP का मुख्य दर्शन क्या था?
(A) तीव्र औद्योगीकरण द्वारा आर्थिक विकास
(B) मैदानी क्षेत्रों की विकास रणनीतियों का अनुकरण करना
(C) पारिस्थितिक स्थिरता को प्राथमिकता देना
(D) बाहरी निवेश पर पूर्ण निर्भरता

164. अनुच्छेद के अनुसार, HADP का उद्देश्य केवल आर्थिक विकास तक सीमित नहीं था। इसका एक अन्य प्रमुख उद्देश्य क्या था?
(A) शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण जनसंख्या के बड़े पैमाने पर प्रवास को बढ़ाना
(B) पुरानी पारंपरिक कृषि पद्धतियों को नई तकनीकों से पूर्णतः बदलना
(C) सभी छोटे पर्वतीय गाँवों को बड़े आधुनिक स्मार्ट शहरों में बदलना
(D) स्थानीय संस्कृति का संरक्षण और लाभों का समान वितरण

165. HADP के अंतर्गत अवसंरचना विकास का मुख्य सिद्धांत क्या था?
(A) विकास कार्यों से पर्यावरण को न्यूनतम क्षति सुनिश्चित करना
(B) पर्यावरणीय प्रभाव की उपेक्षा करते हुए तेजी से ढांचागत निर्माण करना
(C) केवल व्यावसायिक पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु अवसंरचना का निर्माण करना
(D) केवल उन्हीं चुनिंदा क्षेत्रों में सड़कें बनाना जहाँ पहले से उद्योग हों

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत में जनजातीय विकास की रणनीति के केंद्र में समन्वित जनजातीय विकास परियोजना (ITDP) की अवधारणा रही है। इसे पाँचवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान जनजातीय उप-योजना (Tribal Sub-Plan) के हिस्से के रूप में प्रस्तुत किया गया था। ITDP का मूल उद्देश्य जनजातीय क्षेत्रों के तीव्र और समग्र विकास के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण अपनाना है, जहाँ विकास के सभी कार्यक्रम एक ही प्रशासनिक इकाई के तहत समन्वित हों। यह उपागम इस समझ पर आधारित था कि जनजातीय समुदायों की समस्याएँ बहुआयामी होती हैं, जिनमें आर्थिक पिछड़ापन, सामाजिक अलगाव और बाहरी लोगों द्वारा शोषण शामिल हैं, और इनसे टुकड़ों-टुकड़ों में नहीं निपटा जा सकता। ITDP के अंतर्गत, कृषि, पशुपालन, लघु वनोपज, शिक्षा, स्वास्थ्य और आधारभूत संरचना जैसे सभी प्रमुख क्षेत्रों में निवेश को एक साथ लाया गया। इसका एक महत्वपूर्ण लक्ष्य जनजातीय लोगों को शोषण से बचाना था, विशेष रूप से भूमि हस्तांतरण और साहूकारों के कर्ज के मामलों में। इसके लिए सुरक्षात्मक कानून बनाए गए और उनका कार्यान्वयन सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया। इसके अतिरिक्त, ITDP ने जनजातीय संस्कृति और पहचान के संरक्षण पर भी जोर दिया, यह मानते हुए कि विकास का अर्थ उनकी जीवन शैली का पूर्ण उन्मूलन नहीं होना चाहिए। इन परियोजनाओं के माध्यम से, सरकार ने राज्य के सामान्य विकास कोष से जनजातीय क्षेत्रों के लिए एक निश्चित अनुपात में धन आवंटित करना सुनिश्चित किया, ताकि इन ऐतिहासिक रूप से उपेक्षित क्षेत्रों को विकास की मुख्यधारा में लाया जा सके।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. समन्वित जनजातीय विकास परियोजना (ITDP) की अवधारणा कब प्रस्तुत की गई?
(A) तीसरी पंचवर्षीय योजना के दौरान
(B) पाँचवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान
(C) चौथी पंचवर्षीय योजना के दौरान
(D) सातवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान

167. ITDP का मूल उद्देश्य क्या है?
(A) जनजातीय क्षेत्रों में केवल बड़े विनिर्माण उद्योगों की स्थापना करना
(B) जनजातीय क्षेत्रों के समग्र विकास हेतु एकीकृत दृष्टिकोण
(C) सभी जनजातीय आबादी को विकसित शहरी क्षेत्रों में स्थानांतरित करना
(D) जनजातीय संस्कृति को आधुनिक शहरी संस्कृति में पूर्णतः परिवर्तित करना

168. ITDP के अंतर्गत किस एक महत्वपूर्ण लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित किया गया?
(A) जनजातीय लोगों को भूमि और कर्ज संबंधी शोषण से बचाना
(B) जनजातीय क्षेत्रों में बाहरी आबादी के स्थायी बसने को प्रोत्साहित करना
(C) पुरानी पारंपरिक कृषि और उत्पादन के पुराने औजारों को बढ़ावा देना
(D) औपचारिक शिक्षा हेतु जनजातीय भाषाओं के उपयोग पर पूर्ण रोक लगाना

169. 'समन्वित' या 'एकीकृत' दृष्टिकोण से क्या तात्पर्य है?
(A) केवल कृषि जैसे किसी एक विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करना
(B) सभी पृथक जनजातीय समुदायों को एक ही भौगोलिक स्थान पर बसाना
(C) विभिन्न कार्यक्रमों को एक ही प्रशासनिक इकाई में समन्वित करना
(D) केंद्र सरकार द्वारा सीधे सभी स्थानीय कल्याणकारी योजनाओं का संचालन

170. ITDP ने विकास के साथ-साथ किस अन्य पहलू पर जोर दिया?
(A) सभी पारंपरिक संस्थाओं के विघटन पर

11. (D) नीति आयोग
भारत में विकास की योजना बनाने के पारंपरिक ढांचे में बदलाव करते हुए योजना आयोग के स्थान पर नीति आयोग की स्थापना की गई है। नीति आयोग एक 'थिंक टैंक' के रूप में कार्य करता है और यह सहकारी संघवाद को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह केंद्र और राज्य सरकारों को नीति निर्माण के लिए आवश्यक रणनीतिक और तकनीकी सलाह प्रदान करने का कार्य करता है।

12. (B) आर्थिक नीति निर्माण में राज्यों की भागीदारी सुनिश्चित करना
नीति आयोग की स्थापना का एक प्रमुख उद्देश्य सहकारी संघवाद की भावना को मजबूत करना है। यह सुनिश्चित करता है कि देश की आर्थिक नीतियों के निर्माण में राज्यों की सक्रिय और प्रभावी भागीदारी हो। नीति आयोग का मानना है कि मजबूत राज्यों से ही एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण होता है, इसलिए यह राज्यों को केंद्र के साथ मिलकर विकास की रणनीतियां बनाने हेतु मंच प्रदान करता है।

13. (C) पाँचवीं
पर्वतीय क्षेत्रों की विशिष्ट भौगोलिक और पारिस्थितिकीय चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए, पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रमों की शुरुआत पाँचवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान की गई थी। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पहाड़ों में रहने वाले लोगों की आजीविका में सुधार करना और वहां के स्थानीय संसाधनों का टिकाऊ उपयोग सुनिश्चित करना था। इसके माध्यम से बागवानी, पशुपालन और बुनियादी ढांचे के विकास पर विशेष बल दिया गया था।

14. (D) हिमाचल प्रदेश का शिमला ज़िला
पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम के शुरुआती चरण में दार्जिलिंग, नीलगिरी और मिकिर पहाड़ियों जैसे विशिष्ट पिछड़े पर्वतीय क्षेत्रों को शामिल किया गया था। इन क्षेत्रों को उनकी कठिन भौगोलिक परिस्थितियों और आर्थिक पिछड़ेपन के कारण प्राथमिकता दी गई थी। हालांकि, शिमला जैसे तुलनात्मक रूप से अधिक विकसित या अन्य श्रेणियों में आने वाले पहाड़ी जिलों को इस कार्यक्रम के प्रारंभिक विशेष लक्षित क्षेत्रों की सूची में नहीं रखा गया था।

15. (A) 2, 3, 4, 1
भारतीय नियोजन के इतिहास में सूखा संभावी क्षेत्र कार्यक्रम 1970 के दशक की शुरुआत में शुरू हुआ। इसके बाद पाँचवीं योजना में पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम आया। 1981 में पिछड़े क्षेत्रों पर राष्ट्रीय समिति का गठन हुआ, जिसने इन कार्यक्रमों की समीक्षा की। अंततः, 2015 में नीति आयोग ने योजना आयोग का स्थान लिया। यह क्रम भारत में क्षेत्र-आधारित नियोजन से संस्थागत सुधारों तक की यात्रा दर्शाता है।

16. (B) 600 मीटर से अधिक ऊँचे और गैर-जनजातीय उप-योजना क्षेत्र
1981 में राष्ट्रीय समिति ने पिछड़े पर्वतीय क्षेत्रों की पहचान के लिए स्पष्ट मानदंड सुझाए थे। समिति की सिफारिशों के अनुसार, उन सभी पर्वतीय क्षेत्रों को पिछड़ा माना जाना चाहिए जिनकी समुद्र तल से ऊंचाई 600 मीटर से अधिक है और जहाँ वर्तमान में कोई जनजातीय उप-योजना लागू नहीं है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि विकास के लाभ उन ऊंचे क्षेत्रों तक भी पहुँचे जो उपेक्षित थे।

17. (B) केवल प्रभावशाली व्यक्तियों को लाभ पहुँचाना
पिछड़े क्षेत्रों के विकास के लिए गठित राष्ट्रीय समिति ने सुझाव दिया था कि विकास की प्रक्रिया स्थानीय संसाधनों और प्रतिभाओं पर आधारित होनी चाहिए। समिति ने पारिस्थिकीय संतुलन बनाए रखने और यह सुनिश्चित करने पर जोर दिया कि व्यापार के माध्यम से पिछड़े क्षेत्रों का शोषण न हो। केवल प्रभावशाली व्यक्तियों को लाभ पहुँचाना इस समिति के सामाजिक न्याय और समावेशी विकास के उद्देश्यों के बिल्कुल विपरीत था।

18. (A) इसका उद्देश्य केवल सूखा संभावी क्षेत्रों में सिंचाई परियोजनाएँ स्थापित करना था।
सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम की शुरुआत वास्तव में चौथी पंचवर्षीय योजना में हुई थी, जिसका मुख्य उद्देश्य सूखा प्रभावित क्षेत्रों में रोजगार पैदा करना और सूखे के प्रभाव को कम करना था। प्रारंभ में इसमें अधिक श्रमिकों की आवश्यकता वाले सिविल निर्माण कार्यों पर बल दिया गया, लेकिन बाद में इसका दायरा बढ़ाकर सिंचाई, वनीकरण और ग्रामीण बुनियादी ढांचे के विकास को भी इसमें शामिल किया गया था।

19. (B) चौथी
सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम (DPAP) को चौथी पंचवर्षीय योजना के दौरान शुरु किया गया था। इस कार्यक्रम का प्राथमिक लक्ष्य उन क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा करना था जो नियमित रूप से सूखे की समस्या का सामना करते थे। इसके माध्यम से भूमि और जल संसाधनों के संरक्षण के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी संपत्ति बनाने पर भी ध्यान दिया गया ताकि सूखे की गंभीरता को कम किया जा सके।

20. (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
यह सत्य है कि प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर होने के बावजूद कई क्षेत्र आर्थिक रूप से पिछड़े रह सकते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि केवल संसाधनों की मौजूदगी ही विकास के लिए पर्याप्त नहीं होती। आर्थिक प्रगति के लिए तकनीकी ज्ञान, कुशल श्रम और पर्याप्त निवेश की भी अनिवार्य आवश्यकता होती है। तकनीक और निवेश के बिना प्राकृतिक संसाधनों का पूर्ण और कुशल दोहन करना संभव नहीं है।

21. (C) सिंचाई, वनीकरण, चरागाह विकास और ग्रामीण अवसंरचना पर
पाँचवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम की रणनीति को अधिक व्यापक बनाया गया। इसका मुख्य ध्यान केवल रोजगार सृजन से हटाकर सिंचाई परियोजनाओं के विस्तार, वनीकरण, चरागाह विकास और बुनियादी ग्रामीण ढांचे को मजबूत करने पर केंद्रित किया गया। इन उपायों का उद्देश्य पारिस्थितिकीय संतुलन को पुनः

43. (D) समाज विशेष की स्थिति और उसके द्वारा अनुभव किए गए परिवर्तन की प्रक्रिया
'विकास' एक व्यापक संकल्पना है जो केवल आर्थिक वृद्धि तक सीमित नहीं है। यह किसी समाज विशेष की समग्र स्थिति और उसके द्वारा समय के साथ अनुभव किए गए गुणात्मक परिवर्तन की प्रक्रिया को संदर्भित करता है। इसमें लोगों के जीवन स्तर में सुधार, सामाजिक समानता, बेहतर स्वास्थ्य और शिक्षा की उपलब्धता शामिल है। संक्षेप में, विकास का अर्थ समाज की भौतिक और सामाजिक व्यवस्था में एक सकारात्मक और स्थायी रुपांतरण है।

44. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
विकास की संकल्पना समय के साथ बदलती रही है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद इसे मुख्य रूप से आर्थिक वृद्धि (GNP) के रूप में देखा गया। 1970 के दशक में इसमें 'पुनर्वितरण के साथ वृद्धि' का विचार जुड़ा। 1980 के दशक में यह सामाजिक कल्याण की एक बहु-आयामी संकल्पना बनी। अंततः, सतत पोषणीय विकास का विचार आया, जो भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों को सुरक्षित रखते हुए वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करने पर जोर देता है।

45. (C) आर्थिक वृद्धि
द्वितीय विश्व युद्ध के तुरंत बाद के काल में विकास को लगभग पूरी तरह से आर्थिक वृद्धि का पर्याय माना जाता था। उस समय किसी देश की प्रगति का पैमाना उसके सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) और प्रति व्यक्ति आय में होने वाली निरंतर वृद्धि थी। यह माना जाता था कि आर्थिक समृद्धि अपने आप समाज की अन्य समस्याओं का समाधान कर देगी, जिससे सामाजिक समानता और कल्याण के अन्य पहलुओं को उस समय कम प्राथमिकता दी गई।

46. (D) 'पुनर्वितरण के साथ वृद्धि' तथा 'वृद्धि और समानता'
1970 के दशक में यह महसूस किया गया कि केवल आर्थिक वृद्धि काफी नहीं है, क्योंकि इसके लाभ समाज के सभी वर्गों तक नहीं पहुँच रहे थे। इसके परिणामस्वरुप, विकास की परिभाषा में 'पुनर्वितरण के साथ वृद्धि' और 'वृद्धि और समानता' जैसे महत्वपूर्ण वाक्यांश शामिल किए गए। इस बदलाव ने विकास के सामाजिक न्याय वाले पहलू पर ध्यान केंद्रित किया, जिससे गरीबी उन्मूलन और आय की असमानता को कम करना मुख्य लक्ष्य बन गया।

47. (A) 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में
सतत पोषणीय विकास (Sustainable Development) की संकल्पना का प्रादुर्भाव 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ। 1960 के दशक के अंतिम वर्षों में पर्यावरण पर औद्योगिक विकास के प्रतिकूल प्रभावों के प्रति बढ़ती चिंता ने इस विचारधारा को जन्म दिया। पश्चिमी दुनिया में पर्यावरणविदों और वैज्ञानिकों ने यह चेतावनी दी कि यदि वर्तमान उपभोग और विकास की गति जारी रही, तो भविष्य के संसाधन और पारिस्थितिकी तंत्र खतरे में पड़ सकते हैं।

48. (B) औद्योगिक विकास के अनापेक्षित प्रभावों के कारण
1960 के दशक के अंतिम वर्षों में वैश्विक स्तर पर पर्यावरण के प्रति जागरुकता बढ़ने का मुख्य कारण तीव्र औद्योगिक विकास के अनापेक्षित और हानिकारक प्रभाव थे। प्रदूषण, संसाधनों का तेजी से दोहन और प्राकृतिक आवासों का विनाश जैसी समस्याओं ने लोगों का ध्यान खींचा। इन मुद्दों ने यह स्पष्ट कर दिया कि विकास की पारंपरिक राह न केवल पर्यावरण को नुकसान पहुँचा रही है, बल्कि मानव जाति के भविष्य के अस्तित्व के लिए भी खतरा पैदा कर रही है।

49. (B) 'दास कैपिटल'
सतत पोषणीय विकास की अवधारणा को विकसित करने में 'द पापुलेशन बम', 'द लिमिट टू ग्रोथ' और 'अवर कॉमन फ्यूचर' जैसी पुस्तकों और रिपोर्टों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये सभी पर्यावरण और संसाधनों की सीमाओं पर केंद्रित हैं। इसके विपरीत, 'दास कैपिटल' कार्ल मार्क्स द्वारा लिखी गई एक प्रसिद्ध कृति है जो मुख्य रूप से पूंजीवाद, श्रम और आर्थिक संबंधों के विश्लेषण पर आधारित है और इसका सतत विकास की पर्यावरणीय अवधारणा से सीधा संबंध नहीं है।

50. (A) संयुक्त राष्ट्र संघ
विश्व पर्यावरण और विकास आयोग (WECD) की स्थापना संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा की गई थी। इस आयोग का गठन वैश्विक स्तर पर पर्यावरण की बिगड़ती स्थिति और आर्थिक विकास के बीच संतुलन बनाने के रास्तों की खोज करने के लिए किया गया था। संयुक्त राष्ट्र के इस पहल का उद्देश्य दुनिया भर के देशों को एक ऐसा साझा दृष्टिकोण प्रदान करना था जिससे विकास की प्रक्रिया पर्यावरण के अनुकूल और दीर्घकालिक रूप से स्थायी हो सके।

51. (C) अवर कॉमन फ्यूचर
ब्रंटलैंड रिपोर्ट का आधिकारिक नाम 'अवर कॉमन फ्यूचर' (Our Common Future) है। यह रिपोर्ट 1987 में विश्व पर्यावरण और विकास आयोग द्वारा प्रस्तुत की गई थी। इसे इसके अध्यक्ष गरो हरलेम ब्रंटलैंड के नाम पर ब्रंटलैंड रिपोर्ट के रूप में व्यापक पहचान मिली। इस ऐतिहासिक दस्तावेज़ ने दुनिया को 'सतत पोषणीय विकास' की एक स्पष्ट और सर्वमान्य परिभाषा दी, जो आज भी वैश्विक विकास नीतियों का मुख्य आधार बनी हुई है।

52. (D) भावी पीढ़ियों के हितों से समझौता किए बिना वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करना
ब्रंटलैंड रिपोर्ट में दी गई सतत पोषणीय विकास की परिभाषा बहुत महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार, विकास ऐसा होना चाहिए जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को इस प्रकार पूरा करे कि आने वाली पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता में कोई कमी न आए। यह अवधारणा संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग, पर्यावरण संरक्षण और अंतर-पीढ़ीगत न्याय पर जोर देती है, ताकि भविष्य में भी पृथ्वी पर जीवन की गुणवत्ता बनी रहे।

दुर्गम क्षेत्र के लिए एक समर्पित जनजातीय उप-योजना तैयार करना और लागू करना था। इसके माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों के विकास कार्यक्रमों को एकीकृत किया गया, ताकि गद्दी समुदाय की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करते हुए उनके जीवन स्तर में सुधार किया जा सके।

33. (B) गद्दियों का विकास करना और क्षेत्रीय विषमता घटाना
भरमौर में शुरु की गई समन्वित जनजातीय विकास परियोजना (ITDP) का मुख्य लक्ष्य गद्दी समुदाय का सर्वांगीण आर्थिक विकास सुनिश्चित करना था। यह परियोजना क्षेत्र की विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण उत्पन्न विकास की बाधाओं को दूर करने और राज्य के अन्य विकसित क्षेत्रों के साथ क्षेत्रीय विषमता को कम करने के लिए बनाई गई थी। इसका मुख्य ध्यान समुदाय की सामाजिक स्थिति को सुधारने और उन्हें आधुनिक सुविधाएं प्रदान करने पर था।

34. (A) रावी
रावी नदी भरमौर जनजातीय क्षेत्र की मुख्य जीवन रेखा है। यह नदी इस ऊंचे पर्वतीय क्षेत्र से होकर बहती है और इसे विभिन्न भौगोलिक खंडों में विभाजित करती है। रावी और इसकी सहायक नदियों, जैसे बुढ़ील और टुंडेन, ने यहाँ गहरी घाटियां बनाई हैं। यह नदी तंत्र न केवल क्षेत्र की जल संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करता है, बल्कि गद्दी समुदाय की पारंपरिक जीवनशैली और कृषि गतिविधियों को भी प्रभावित करता है।

35. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भरमौर क्षेत्र को हिमाचल प्रदेश के सबसे पिछड़े इलाकों में गिना जाता है, जिसका कारण वहां की दुर्गम पहाड़ी अवस्थिति है। गद्दी जनजाति ने सदियों से इस भौगोलिक अलगाव के कारण आर्थिक पिछड़ेपन का अनुभव किया है। बाहरी दुनिया से संपर्क की कमी और सीमित संसाधनों के कारण वहां आधुनिक विकास की लहर देरी से पहुँची। अतः, उनका ऐतिहासिक अलगाव ही उनके वर्तमान आर्थिक पिछड़ेपन का मुख्य कारण बना हुआ है।

36. (D) परिवहन, संचार, कृषि और सामाजिक सेवाओं का विकास
भरमौर क्षेत्र में समन्वित जनजातीय विकास परियोजना के अंतर्गत बुनियादी ढांचे और सामाजिक सेवाओं के विस्तार को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई। इसमें दुर्गम पहाड़ियों में सड़कों और संचार सुविधाओं का विकास, पारंपरिक कृषि पद्धतियों में सुधार और शिक्षा तथा स्वास्थ्य जैसी अनिवार्य सामाजिक सेवाओं का प्रसार शामिल था। इन पहलों का उद्देश्य क्षेत्र के भौतिक अलगाव को समाप्त करना और स्थानीय निवासियों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाना था।

37. (C) आधारभूत अवसंरचना का विकास (शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल)
भरमौर क्षेत्र में जनजातीय उप-योजना का सबसे महत्वपूर्ण और दृश्यमान योगदान आधारभूत अवसंरचना का व्यापक विकास रहा है। इसके माध्यम से गाँवों में स्कूलों की स्थापना, स्वास्थ्य केंद्रों का निर्माण और स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित की गई। इन बुनियादी सुविधाओं ने न केवल वहां के लोगों की स्वास्थ्य स्थिति और साक्षरता में सुधार किया, बल्कि उन्हें विकास की मुख्यधारा से जोड़ने में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

38. (B) केवल 1, 2 और 3
भरमौर में ITDP के लागू होने से साक्षरता दर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और लिंग अनुपात में भी सुधार देखा गया। सामाजिक जागरुकता बढ़ने से बाल-विवाह जैसी कुप्रथाओं में भी कमी आई है। हालांकि, ऋतु-प्रवास की प्रथा पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है, क्योंकि यह उनकी सांस्कृतिक पहचान और पशुपालन आधारित अर्थव्यवस्था का हिस्सा है। वर्तमान में भी गद्दी समुदाय की एक बड़ी संख्या सर्दियों में निचले इलाकों की ओर प्रवास करती है।

39. (D) 1.88% से बढ़कर 65% हो गई
भरमौर क्षेत्र में शिक्षा के प्रसार का सबसे सुखद परिणाम महिला साक्षरता दर में हुई आश्चर्यजनक वृद्धि है। 1971 में महिला साक्षरता केवल 1.88% थी, जो विकास कार्यक्रमों के प्रभाव से 2011 तक बढ़कर 65% हो गई। यह परिवर्तन दर्शाता है कि जनजातीय उप-योजना ने महिलाओं को सशक्त बनाने और उन्हें शैक्षिक अवसर प्रदान करने में सफलता प्राप्त की है, जिससे क्षेत्र की सामाजिक संरचना में सकारात्मक बदलाव आया है।

40. (A) जीवन निर्वाह कृषि व पशुचारण
भरमौर क्षेत्र की पारंपरिक अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से जीवन निर्वाह कृषि और पशुचारण पर आधारित रही है। यहाँ के लोग अपनी जरूरतों के लिए खाद्यान्न उगाते थे और बड़ी संख्या में भेड़-बकरियां पालते थे। चूंकि कृषि योग्य भूमि कम थी, इसलिए पशुपालन आजीविका का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया। गद्दी समुदाय की पूरी जीवनशैली और मौसमी प्रवास की परंपरा इसी कृषि-पशुचारण तंत्र के इर्द-गिर्द विकसित हुई थी, जो सदियों तक अपरिवर्तित रही।

41. (B) 2, 1, 4, 3
सतत विकास की अवधारणा से जुड़ी महत्वपूर्ण घटनाओं का कालक्रम 1968 में 'द पापुलेशन बम' के प्रकाशन से शुरु होता है। इसके बाद 1972 में 'द लिमिट टू ग्रोथ' आई। 1983 में विश्व पर्यावरण और विकास आयोग (WECD) का गठन किया गया, जिसने अंततः 1987 में अपनी प्रसिद्ध ब्रंटलैंड रिपोर्ट ('अवर कॉमन फ्यूचर') प्रस्तुत की। यह क्रम वैश्विक स्तर पर पर्यावरण और विकास के प्रति बढ़ती संवेदनशीलता को दर्शाता है।

42. (A) दालों और अन्य नकदी फसलों की खेती में बढ़ोतरी हुई
20वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में भरमौर क्षेत्र की कृषि में व्यावसायिक बदलाव आया। सिंचाई और बेहतर तकनीक की उपलब्धता के कारण किसानों ने पारंपरिक खाद्यान्नों के साथ-साथ दालों और अन्य नकदी फसलों की खेती शुरु कर दी। इस विविधीकरण ने न केवल किसानों की आय में वृद्धि की, बल्कि क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को भी अधिक बाजार-उन्मुख बनाया। इससे पशुचारण पर उनकी अत्यधिक निर्भरता में भी धीरे-धीरे कमी आने लगी है।

ANSWERS

1. (B) आर्थिक विकास
नियोजन एक मानसिक अभ्यास है जिसमें उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए गतिविधियों का एक क्रम शामिल होता है। आर्थिक विकास के संदर्भ में, इसका अर्थ उन विशिष्ट कार्यक्रमों और रणनीतियों को तैयार करना और लागू करना है जो विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों की प्रगति सुनिश्चित करते हैं। यह संसाधनों के कुशल आवंटन और सुनियोजित प्रयासों के माध्यम से समाज की स्थिति सुधारने की प्रक्रिया है।

2. (A) केंद्रीकृत-योजनाएँ
स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद, भारत ने शुरुआत में केंद्रीकृत नियोजन दृष्टिकोण को अपनाया था। इस प्रणाली के तहत, केंद्र स्तर पर योजना आयोग द्वारा विकास की रूपरेखा तैयार की जाती थी। यद्यपि इसका उद्देश्य पूरे देश में समान प्रगति लाना था, लेकिन बाद के वर्षों में क्षेत्रीय विविधताओं और स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अधिक विकेंद्रीकृत और बहु-स्तरीय नियोजन मॉडल की ओर बदलाव किया गया।

3. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
किसी भी देश में आर्थिक विकास का प्रतिरूप सभी क्षेत्रों में समान नहीं होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि विकास काफी हद तक उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करता है। चूंकि संसाधन पूरे देश में भौगोलिक रूप से समान रूप से वितरित नहीं हैं, इसलिए संसाधन-संपन्न क्षेत्र अक्सर तेजी से प्रगति करते हैं, जबकि संसाधनों की कमी वाले क्षेत्रों में विकास की गति धीमी बनी रहती है।

4. (D) विभिन्न आर्थिक सेक्टरों के विकास हेतु कार्यक्रम बनाना
खंडीय नियोजन का तात्पर्य अर्थव्यवस्था के विशिष्ट क्षेत्रों के विकास के लिए कार्यक्रम तैयार करने और उन्हें क्रियान्वित करने से है। इसमें कृषि, सिंचाई, विनिर्माण, ऊर्जा, परिवहन और संचार जैसे विभिन्न सेक्टर शामिल होते हैं। इस दृष्टिकोण का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक आर्थिक खंड की उत्पादकता और बुनियादी ढांचे को मजबूत करना है, ताकि सामूहिक रूप से पूरे देश का आर्थिक आधार अधिक सुदृढ़ और विकसित हो सके।

5. (C) पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम
नियोजन को खंडीय और प्रादेशिक दो भागों में बांटा जा सकता है। खंडीय नियोजन कृषि या परिवहन जैसे विशिष्ट आर्थिक सेक्टरों पर केंद्रित होता है। इसके विपरीत, पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम एक प्रादेशिक या क्षेत्र-आधारित नियोजन का उदाहरण है, क्योंकि इसका मुख्य लक्ष्य किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र का विकास करना है। अतः यह कार्यक्रम आर्थिक सेक्टर के बजाय एक विशिष्ट भू-भाग की उन्नति पर आधारित है।

6. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
नियोजन के विभिन्न उपागमों का अपना विशिष्ट महत्व है। खंडीय नियोजन आर्थिक सेक्टरों के विकास पर ध्यान देता है, जबकि प्रादेशिक नियोजन क्षेत्रीय असंतुलन को कम करने का प्रयास करता है। लक्ष्य क्षेत्र नियोजन सूखाग्रस्त जैसे विशिष्ट क्षेत्रों को लक्षित करता है। वहीं, लक्ष्य समूह नियोजन लघु कृषक विकास संस्था जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से समाज के विशेष वर्गों, जैसे छोटे किसानों के आर्थिक उत्थान पर केंद्रित होता है।

7. (D) विकास में प्रादेशिक असंतुलन कम करना
प्रादेशिक नियोजन का मुख्य लक्ष्य विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के बीच विकास की खाई को कम करना है। चूंकि संसाधन और अवसर सभी क्षेत्रों में एक समान नहीं होते, इसलिए कुछ क्षेत्र पिछड़ जाते हैं। प्रादेशिक नियोजन इन पिछड़े क्षेत्रों की विशिष्ट समस्याओं की पहचान करता है और वहां विकास को बढ़ावा देने के लिए विशेष रणनीतियां बनाता है, जिससे संतुलित और न्यायसंगत राष्ट्रीय विकास सुनिश्चित हो सके।

8. (A) क्षेत्रीय एवं सामाजिक विषमताओं को काबू में रखने के लिए
योजना आयोग ने महसूस किया कि केवल खंडीय नियोजन से सभी क्षेत्रों और वर्गों का विकास संभव नहीं है। क्षेत्रीय और सामाजिक विषमताओं को दूर करने के लिए 'लक्ष्य क्षेत्र' और 'लक्ष्य-समूह' उपागमों को अपनाया गया। ये रणनीतियां विशेष रूप से उन पिछड़े इलाकों और कमजोर सामाजिक वर्गों पर ध्यान केंद्रित करती हैं जो विकास की मुख्यधारा से बाहर रह गए थे, ताकि सामाजिक न्याय सुनिश्चित हो सके।

9. (B) केवल 1, 2 और 3
पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम पाँचवीं पंचवर्षीय योजना में शुरू किया गया था, जिसमें उत्तर प्रदेश के पहाड़ी जिले भी शामिल थे। राष्ट्रीय समिति ने सिफारिश की थी कि 600 मीटर से अधिक ऊंचाई वाले उन क्षेत्रों को इसमें शामिल किया जाए जो जनजातीय उप-योजना में नहीं आते। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रभावशाली व्यक्तियों के बजाय संपूर्ण पर्वतीय समुदाय का विकास और पारिस्थितिकीय संतुलन बनाए रखना था।

10. (A) सीमांत किसान विकास संस्था (MFDA)
लक्ष्य-समूह नियोजन का मुख्य उद्देश्य समाज के उन विशिष्ट वर्गों का उत्थान करना है जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं। सीमांत किसान विकास संस्था इसी उपागम का एक प्रमुख उदाहरण है, जो विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों की सहायता पर केंद्रित है। अन्य विकल्प जैसे कमान क्षेत्र या सूखाग्रस्त क्षेत्र कार्यक्रम, क्षेत्र-आधारित नियोजन के उदाहरण हैं, जबकि MFDA सीधे तौर पर लक्षित व्यक्तियों को लाभ पहुँचाता है।

53. (C) राजस्थान नहर
इंदिरा गांधी नहर को इसके निर्माण के प्रारंभिक दौर में 'राजस्थान नहर' के नाम से जाना जाता था। यह भारत की सबसे महत्वाकांक्षी सिंचाई परियोजनाओं में से एक है, जिसे राजस्थान के थार मरुस्थल की प्यास बुझाने और वहां की बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने के लिए शुरु किया गया था। बाद में, पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की स्मृति में इस नहर प्रणाली का नाम बदलकर इंदिरा गांधी नहर कर दिया गया, जो आज क्षेत्र की जीवन रेखा है।

54. (B) कँवर सेन
इंदिरा गांधी नहर परियोजना की दूरदर्शी संकल्पना प्रसिद्ध हाइड्रोलिक इंजीनियर कँवर सेन ने की थी। उन्होंने 1948 में एक योजना प्रस्तुत की थी जिसमें पंजाब की नदियों के पानी को राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों तक ले जाने का प्रस्ताव था। उनकी इसी कल्पना ने राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में कृषि और जीवन के कायाकल्प की नींव रखी, जो आगे चलकर विश्व की विशालतम नहर प्रणालियों में से एक के रूप में विकसित हुई।

55. (B) केवल 1, 2, 3 और 4
इंदिरा गांधी नहर भारत की एक विशाल सिंचाई प्रणाली है, जिसकी संकल्पना 1948 में कँवर सेन ने की थी। इसका निर्माण 1958 में शुरु हुआ और यह पंजाब में हरिके बैराज से निकलती है। यह नहर भारत-पाकिस्तान सीमा के समानांतर बहती है, लेकिन इसकी औसत दूरी 100 कि.मी. के बजाय लगभग 40 कि.मी. है, इसलिए कथन 5 गलत है। इस परियोजना ने राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों की कृषि और पारिस्थितिकी को पूरी तरह बदल दिया है।

56. (A) हरिके बैराज
इंदिरा गांधी नहर पंजाब में सतलुज और व्यास नदियों के संगम पर स्थित हरिके बैराज से निकलती है। यहाँ से यह नहर राजस्थान के सूखे और रेतीले जिलों की ओर बढ़ती है। हरिके बैराज इस विशाल नहर प्रणाली का मुख्य स्रोत है, जो हिमालय की नदियों के अतिरिक्त जल को थार मरुस्थल तक पहुँचाने का कार्य करता है। इसी जल की उपलब्धता ने पश्चिमी राजस्थान में कृषि और बस्तियों के स्वरूप को बदल दिया है।

57. (C) दो
इंदिरा गांधी नहर परियोजना का निर्माण और कमान क्षेत्र विकास कार्य दो मुख्य चरणों में पूरा किया गया है। प्रथम चरण में गंगानगर, हनुमानगढ़ और बीकानेर के उत्तरी भागों में सिंचाई सुविधाएं विकसित की गईं। द्वितीय चरण में नहर का विस्तार बीकानेर के दक्षिणी भाग, जैसलमेर, बाड़मेर और अन्य सुदूर जिलों तक किया गया। इस चरणबद्ध विकास ने इतने बड़े क्षेत्र में बुनियादी ढांचे को व्यवस्थित रुप से स्थापित करने में मदद की।

58. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
इंदिरा गांधी नहर प्रणाली में लिफ्ट नहरें मुख्य नहर के बाएँ किनारे पर स्थित हैं क्योंकि वहां की भूमि का धरातल अपेक्षाकृत ऊंचा है। पानी को ऊंचे क्षेत्रों तक पहुँचाने के लिए मशीनों की मदद से जल को बार-बार ऊपर उठाना पड़ता है, जिसे लिफ्ट प्रणाली कहते हैं। इसके विपरीत, दाएँ किनारे पर भूमि का ढाल अनुकूल है, इसलिए वहां प्रवाह नहरें (flow system) बनाई गई हैं जहाँ पानी स्वतः बहता है।

59. (D) गंगानगर, हनुमानगढ़ और बीकानेर का उत्तरी भाग
इंदिरा गांधी नहर के प्रथम चरण के कमान क्षेत्र में मुख्य रुप से राजस्थान के उत्तरी जिले शामिल हैं, जिनमें गंगानगर, हनुमानगढ़ और बीकानेर का उत्तरी हिस्सा आता है। यह क्षेत्र तुलनात्मक रुप से समतल है, जिससे यहाँ नहरों का जाल बिछाना और सिंचाई शुरु करना आसान था। यहाँ सिंचाई की उपलब्धता ने कृषि के स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया और किसानों ने गेहूँ तथा कपास जैसी फसलों का बड़े पैमाने पर उत्पादन शुरु किया।

60. (B) बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, नागौर और चुरु
इंदिरा गांधी नहर परियोजना का द्वितीय चरण अत्यंत विशाल है और यह बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, नागौर और चुरु जिलों के शुष्क क्षेत्रों में फैला हुआ है। इस चरण का मुख्य उद्देश्य उन सुदूर रेतीले इलाकों में जल पहुँचाना था जहाँ वर्षा की भारी कमी रहती है। यहाँ की विषम भौगोलिक परिस्थितियों और ऊंचे बालू के डिब्बों के बावजूद, नहर ने इस पूरे मरुस्थलीय भू-भाग में आर्थिक और सामाजिक बदलाव की नई लहर पैदा की है।

61. (C) इसे रुपांतरित कर दिया है
इंदिरा गांधी नहर के आगमन ने राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों की पूरी तस्वीर को रुपांतरित कर दिया है। इसने न केवल वहाँ की पारिस्थितिकी में सुधार किया है, बल्कि वहाँ की अर्थव्यवस्था और सामाजिक संरचना को भी गहराई से प्रभावित किया है। मरुस्थलीय क्षेत्रों में अब फसलें लहलहा रही हैं, धूल भरी आंधियों में कमी आई है और लोगों का जीवन स्तर सुधरा है। इस परियोजना ने प्रकृति की बाधाओं को विकास के अवसर में बदल दिया है।

62. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
इंदिरा गांधी नहर परियोजना की यात्रा 1948 में कँवर सेन की संकल्पना से शुरु हुई। 1958 में इसका निर्माण आधिकारिक रुप से शुरु हुआ। प्रथम चरण में सिंचाई की शुरुआत 1960 के दशक के प्रारंभ में हुई, जबकि द्वितीय चरण के सुदूर क्षेत्रों तक सिंचाई सुविधाएं 1980 के दशक के मध्य में पहुँचीं। यह समयरेखा दर्शाती है कि कैसे दशकों के निरंतर प्रयास से इस विशाल रेगिस्तानी भू-भाग का कायाकल्प किया गया और वहां जल पहुँचाया गया।

63. (A) भूमि हरी-भरी होना और वायु अपरदन में कमी आना
इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में नहर सिंचाई का एक बहुत ही सकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव भूमि का हरा-भरा होना है। नहर के पानी और बड़े पैमाने पर किए गए वनीकरण के कारण अब उन क्षेत्रों में वनस्पति आवरण बढ़ गया है जो कभी बंजर थे। इस हरियाली ने मिट्टी को जकड़ कर रखा है, जिससे वायु द्वारा होने

103. (D) इसने पर्यावरणविदों की चिंता को और गहरा कर दिया
'द लिमिट टू ग्रोथ' पुस्तक के प्रकाशन ने दुनिया भर के वैज्ञानिकों और पर्यावरणविदों को झकझोर कर रख दिया था। इस पुस्तक ने कंप्यूटर मॉडलिंग के माध्यम से चेतावनी दी थी कि यदि औद्योगिक उत्पादन और जनसंख्या वृद्धि की वर्तमान दर जारी रही, तो पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधन जल्द ही समाप्त हो जाएंगे। इस रिपोर्ट ने विकास की अंधी दौड़ के खतरों को उजागर किया और वैश्विक स्तर पर सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण की अनिवार्य आवश्यकता पर बहस शुरु कर दी।

104. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
विभिन्न भौगोलिक विशेषताएं विशिष्ट स्थानों से जुड़ी हैं। पीर पंजाल और धौलाधार श्रेणियाँ भरमौर क्षेत्र की सीमाएँ बनाती हैं। रावी और उसकी सहायक नदियाँ भरमौर के ऊबड़-खाबड़ बेसिन का हिस्सा हैं। स्थानांतरित बालू टिब्बे मुख्य रूप से इंदिरा गांधी नहर के द्वितीय चरण वाले मरुस्थलीय कमान क्षेत्र में पाए जाते हैं। अंततः, हरिके बैराज वह महत्वपूर्ण स्थल है जहाँ से इंदिरा गांधी नहर निकलती है, जो थार मरुस्थल की ओर पानी ले जाने का मुख्य प्रवेश द्वार है।

105. (C) पाँच
इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र के लिए सुझाए गए सात महत्वपूर्ण उपायों में से पाँच उपाय सीधे तौर पर पारिस्थितिकी तंत्र को बेहतर बनाने और संतुलित करने पर केंद्रित हैं। इनमें जल प्रबंधन, कम पानी वाली फसलों का चुनाव, वनीकरण, चरागाह विकास और खराब हो चुकी लवणयुक्त भूमि का पुनरुद्धार शामिल है। ये सभी उपाय मरुस्थलीय पर्यावरण की नाजुकता को ध्यान में रखते हुए तैयार किए गए हैं, ताकि वहां का विकास दीर्घकालिक और पर्यावरण के अनुकूल बना रहे और भविष्य को सुरक्षित रख सके।

106. (A) जनवरी में यहाँ का औसत मासिक तापमान 26° सेल्सियस रहता है।
भरमौर एक उच्च पर्वतीय क्षेत्र है, जहाँ की जलवायु अत्यंत ठंडी और कठोर है। यहाँ जनवरी में औसत मासिक तापमान हिमांक के काफी करीब या नीचे रहता है, न कि 26° सेल्सियस। 26° सेल्सियस तापमान यहाँ गर्मियों (जुलाई) के दौरान देखा जाता है। अन्य तथ्य जैसे रावी नदी द्वारा क्षेत्र का विभाजन, गद्दी समुदाय का निवास और पर्वत श्रेणियों के बीच इसकी अवस्थिति बिल्कुल सही हैं। तापमान संबंधी यह गलत जानकारी क्षेत्र की वास्तविक कठोर जलवायु को नहीं दर्शाती है।

107. (A) केवल 1, 2, 3 और 4
सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम चौथी योजना में शुरु हुआ, जिसका प्रारंभिक जोर रोजगार सृजन और सिविल कार्यों पर था। बाद में इसमें सिंचाई और वनीकरण जैसे स्थायी सुधारों को शामिल किया गया। हालांकि, राष्ट्रीय समिति ने अपनी समीक्षा में पाया कि यह कार्यक्रम सभी सेक्टरों में समान रुप से सफल नहीं रहा, बल्कि यह मुख्य रूप से केवल कृषि और संबंधित क्षेत्रों तक ही सीमित रह गया था। अतः, इसके प्रसार के संबंध में पाँचवां कथन सही नहीं है।

108. (B) आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में नियोजन प्रक्रम पर विशेष ध्यान देना
'लक्ष्य क्षेत्र' नियोजन एक ऐसी रणनीति है जो उन विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों के विकास पर केंद्रित होती है जो आर्थिक रूप से पिछड़े हुए हैं। इसमें यह माना जाता है कि केवल सामान्य राष्ट्रीय नीतियां इन क्षेत्रों की विशेष समस्याओं (जैसे सूखा, पहाड़ी इलाका या दुर्गमता) को हल नहीं कर सकतीं। इसलिए, इन क्षेत्रों के लिए उनकी स्थानीय जरुरतों और संसाधनों के आधार पर अलग से योजनाएं तैयार की जाती हैं, ताकि वहां विकास की गति को तेज किया जा सके।

109. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
भरमौर में शुरु किए गए विकास कार्यक्रमों के लाभों का वितरण समान नहीं रहा है। क्षेत्र की विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण, जो गाँव सड़कों और नदी घाटियों के करीब थे, वहां विकास तेजी से पहुँचा। इसके विपरीत, तुंदाह और कुगती जैसे दूरदराज के पर्वतीय गाँव अपनी दुर्गमता के कारण अभी भी उन लाभों और सुविधाओं से वंचित हैं जो भरमौर या होली जैसे क्षेत्रों को प्राप्त हुए हैं। यह क्षेत्रीय विकास के भीतर मौजूद असमानता का एक स्पष्ट उदाहरण है।

110. (D) उपरोक्त सभी
नियोजन या 'प्लानिंग' एक व्यापक प्रक्रिया है जिसमें कई चरण शामिल होते हैं। यह सबसे पहले एक मानसिक अभ्यास या सोच-विचार से शुरु होती है, जिसके बाद उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एक विस्तृत कार्यक्रम या रुपरेखा तैयार की जाती है। अंत में, उन उद्देश्यों को हासिल करने के लिए विभिन्न गतिविधियों का व्यवस्थित क्रियान्वयन किया जाता है। अतः, नियोजन केवल कागजों पर योजना बनाना नहीं है, बल्कि यह उद्देश्यों को साकार करने के लिए किए गए संपूर्ण संगठित प्रयासों का मेल है।

111. (A) साक्षरता में लिंग असमानता में कमी
भरमौर क्षेत्र में समन्वित जनजातीय विकास कार्यक्रम (ITDP) का एक सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभाव साक्षरता के क्षेत्र में देखा गया है। विशेष रूप से महिला शिक्षा को मिले प्रोत्साहन के कारण स्त्री साक्षरता दर में तेजी से वृद्धि हुई, जिससे साक्षरता के मामले में पुरुषों और महिलाओं के बीच की पुरानी खाई या असमानता काफी कम हो गई है। यह सामाजिक बदलाव गद्दी समुदाय के आधुनिकीकरण और महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक बहुत बड़ा और प्रभावी कदम साबित हुआ है।

112. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या है।
यह सत्य है कि सघन सिंचाई ने इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में कृषि और पशुधन की उत्पादकता को शुरुआत में काफी बढ़ा दिया था। हालांकि, सिंचाई के इसी अनियंत्रित प्रयोग ने बाद में जल भराव और मिट्टी की लवणता जैसी गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं को जन्म दिया है। कारण (R) अपने आप में सही है, लेकिन यह अभिकथन (A) की व्याख्या नहीं करता कि उत्पादकता क्यों बढ़ी, बल्कि यह उत्पादकता के भविष्य पर

नहर प्रणाली को रेत से ढकने से भी बचाते हैं, जो इस क्षेत्र के टिकाऊ विकास के लिए आवश्यक है।

74. (A) जब निर्धन आवंटियों को कृषि हेतु पर्याप्त वित्तीय एवं संस्थागत सहायता मिले
सामाजिक सतत पोषणता तभी संभव है जब विकास के लाभ समाज के सबसे गरीब तबके तक पहुँचें। इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में, कई निर्धन परिवारों को भूमि तो आवंटित की गई है, लेकिन संसाधनों के अभाव में वे खेती नहीं कर पाते। यदि इन निर्धन आवंटियों को बीज, उपकरण और तकनीकी ज्ञान के लिए पर्याप्त वित्तीय और संस्थागत सहायता दी जाती है, तभी वे आत्मनिर्भर बन पाएंगे और क्षेत्र में वास्तविक सामाजिक समानता आ सकेगी।

75. (D) यह सतत विकास हेतु विभिन्न आर्थिक सेक्टरों में समन्वय स्थापित करता है
किसी भी क्षेत्र के समग्र विकास के लिए केवल कृषि पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है। आर्थिक विविधीकरण के माध्यम से पशुपालन, विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों को भी मजबूत किया जाना चाहिए। यह प्रक्रिया न केवल रोजगार के नए अवसर पैदा करती है, बल्कि विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों के बीच एक प्रकार्यात्मक समन्वय भी स्थापित करती है। इससे क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था अधिक स्थिर और लचीली बनती है, जो सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण और आवश्यक कदम है।

76. (A) 1, 3, 2, 4
भारत में विशिष्ट विकास कार्यक्रमों का एक ऐतिहासिक क्रम है। इंदिरा गांधी नहर परियोजना 1958 में शुरु हुई, जो मरुस्थल सुधार का बड़ा प्रयास था। इसके बाद 1970 के दशक के प्रारंभ में सूखा संभावी क्षेत्र कार्यक्रम आया। पाँचवीं योजना के दौरान पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम शुरु किया गया और इसी दौर में 1974 में भरमौर जैसे जनजातीय क्षेत्रों के लिए समन्वित जनजातीय उप-योजना लागू की गई, जो लक्षित नियोजन के विकास को दर्शाती है।

77. (B) केवल 1, 2, 3 और 5
गद्दी जनजाति की अपनी विशिष्ट भाषा 'गद्दीयाली' है और उनकी अर्थव्यवस्था कृषि तथा भेड़-बकरी पालन पर टिकी है। वे पारंपरिक रुप से ऋतु-प्रवास करते हैं और आज भी आजीविका के लिए सर्दियों में कांगड़ा जैसे क्षेत्रों की ओर जाते हैं। ITDP के आने के बाद उनके जीवन स्तर में सुधार तो हुआ है, लेकिन उनकी गतिशीलता और ऋतु-प्रवास की प्रथा पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है, बल्कि यह उनकी जीवनशैली का एक अनिवार्य हिस्सा बनी हुई है।

78. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
1980 के दशक तक पहुँचते-पहुँचते विकास की अवधारणा में महत्वपूर्ण बदलाव आया। इसे अब केवल आर्थिक विकास के बजाय एक बहु-आयामी संकल्पना के रूप में स्वीकार किया गया। इसमें न केवल आय की वृद्धि, बल्कि समाज के सभी लोगों के लिए व्यापक स्तर पर सामाजिक और भौतिक कल्याण, जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा और समान अवसर को भी शामिल किया गया। यह आधुनिक दृष्टिकोण विकास को अधिक मानवीय और समावेशी बनाने के वैश्विक प्रयासों का परिणाम था।

79. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारत के विभिन्न क्षेत्रों में उनकी समस्याओं के अनुसार विशिष्ट नियोजन कार्यक्रम लागू किए गए हैं। भरमौर में समन्वित जनजातीय विकास परियोजना (ITDP) चल रही है, जबकि राजस्थान का मरुस्थल इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र का हिस्सा है। नीलगिरि पहाड़ियों में पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम लागू है, और मराठवाड़ा जैसे वर्षा की कमी वाले क्षेत्रों को सूखा संभावी क्षेत्र के रूप में चिन्हित कर वहां विशेष रणनीतियां अपनाई गई हैं, जो क्षेत्रीय विकास की विविधता को दर्शाती हैं।

80. (B) निकास के कमान क्षेत्र में नहर के जल का समान वितरण
'ओसरा' या वारबंदी पद्धति का मूल उद्देश्य नहर के जल का न्यायपूर्ण और समान वितरण सुनिश्चित करना है। इस व्यवस्था के अंतर्गत, नहर के कमान क्षेत्र में प्रत्येक किसान को पानी के उपयोग के लिए एक निश्चित समय और बारी आवंटित की जाती है। इससे जल की चोरी और बर्बादी कम होती है और यह सुनिश्चित होता है कि नहर के अंतिम छोर तक स्थित खेतों को भी उनके हिस्से का पानी मिल सके, जो प्रभावी जल प्रबंधन के लिए आवश्यक है।

81. (B) 21 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर
2011 की जनगणना के अनुसार, भरमौर उपमंडल का जनसंख्या घनत्व मात्र 21 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था। यह कम घनत्व इस क्षेत्र की कठिन भौगोलिक परिस्थितियों और सीमित संसाधनों को दर्शाता है। ऊंचे पहाड़ों, कठोर जलवायु और कृषि योग्य भूमि की कमी के कारण यहाँ आबादी बहुत विरल है। गद्दी समुदाय के लोग छोटे-छोटे गाँवों और बस्तियों में रहते हैं, जो अक्सर एक-दूसरे से काफी दूर और दुर्गम इलाकों में स्थित होते हैं।

82. (A) क्षेत्र की दुर्गम अवस्थिति और कठोर पर्यावरण
गद्दी जनजाति के ऐतिहासिक अलगाव का मुख्य कारण उनके निवास स्थान की दुर्गम भौगोलिक स्थिति है। चारों तरफ से ऊंचे पहाड़ों से घिरे होने और अत्यंत ठंडी एवं कठोर जलवायु के कारण, सदियों तक इस क्षेत्र का बाहरी दुनिया और मुख्यधारा की अर्थव्यवस्था से संपर्क बहुत कम रहा। इसी भौतिक बाधा ने उन्हें एक आत्मनिर्भर लेकिन अलग-थलग जीवन जीने के लिए मजबूर किया, जिसके परिणामस्वरुप वे लंबे समय तक आधुनिक विकास और सुविधाओं से वंचित रहे।

83. (C) नकदी फसलों की खेती में बढ़ोतरी
भरमौर में ITDP (समन्वित जनजातीय विकास परियोजना) के लागू होने के बाद वहां की कृषि व्यवस्था में महत्वपूर्ण सुधार आया है। सिंचाई और अन्य सुविधाओं के विस्तार के कारण किसान अब केवल अपनी जरुरत के लिए खाद्यान्न उगाने तक सीमित नहीं हैं। अब वहां बड़े पैमाने पर दालों और अन्य नकदी फसलों की खेती की जाने लगी है। इस व्यावसायिक बदलाव ने

क्षेत्र घोषित होने से यहाँ 'जनजातीय उप-योजना' को अधिक प्रभावी ढंग से लागू करने का मार्ग प्रशस्त हुआ, जिससे गद्दी समुदाय की विशिष्ट सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का समाधान करने और उन्हें विकास की मुख्यधारा में लाने में मदद मिली।

123. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भरमौर क्षेत्र में स्त्री और पुरुष साक्षरता के बीच का अंतर कम होना एक बड़ी सामाजिक उपलब्धि है। 1971 में महिला साक्षरता केवल 1.88% थी, जो आई.टी.डी.पी. (ITDP) के तहत शिक्षा पर दिए गए विशेष जोर के कारण 2011 में बढ़कर 65% हो गई। महिलाओं की शिक्षा में इस भारी वृद्धि ने समाज में शिक्षा के प्रति जागरूकता फैलाई और जेंडर गैप को कम करने में निर्णायक भूमिका निभाई। अतः कारण अभिकथन की सही और सटीक व्याख्या करता है।

124. (B) केरल का तटीय क्षेत्र
भारत के सूखा संभावी क्षेत्रों की पहचान वर्षा की मात्रा और सिंचाई की कमी के आधार पर की जाती है। मराठवाड़ा, रायलसीमा और कर्नाटक पठार जैसे क्षेत्र अक्सर जल संकट का सामना करते हैं। इसके विपरीत, केरल का तटीय क्षेत्र प्रचुर वर्षा और आर्द्र जलवायु वाला इलाका है, जहाँ सूखे की स्थिति सामान्यतः नहीं बनती। यहाँ की भौगोलिक स्थिति और मानसूनी वर्षा की प्रचुरता इसे देश के शुष्क और सूखा संभावी क्षेत्रों की सूची से बाहर रखती है।

125. (C) एक स्थानिक परिप्रेक्ष्य अपनाने और प्रादेशिक असंतुलन कम करने के लिए
जब विकास का लाभ कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित रहता है और अन्य क्षेत्र पिछड़ जाते हैं, तो नियोजकों को 'स्थानिक परिप्रेक्ष्य' अपनाने की आवश्यकता महसूस होती है। इसका अर्थ है कि योजनाएं पूरे देश के लिए एक जैसी होने के बजाय, विशिष्ट क्षेत्रों की भौगोलिक और सामाजिक समस्याओं को ध्यान में रखकर बनाई जानी चाहिए। ऐसा करने से ही पिछड़े क्षेत्रों में विकास की गति तेज की जा सकती है और देश में व्याप्त प्रादेशिक असंतुलन को प्रभावी ढंग से कम किया जा सकता है।

126. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
नियोजन के विभिन्न प्रकार विशिष्ट लक्ष्यों को पूरा करते हैं। प्रादेशिक नियोजन का ध्येय क्षेत्रीय असंतुलन दूर करना है, जबकि खंडीय नियोजन किसी आर्थिक सेक्टर (जैसे सिंचाई) की उन्नति देखता है। सतत पोषणीय विकास की सबसे प्रभावशाली परिभाषा ब्रंटलैंड रिपोर्ट में दी गई है। लक्ष्य समूह नियोजन, जैसे MFDA (सीमांत किसान विकास संस्था), समाज के किसी विशेष कमजोर वर्ग के उत्थान के लिए काम करता है। यह मिलान नियोजन की विविधता और उसके उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

127. (A) वायु अपरदन को रोकने के लिए
'रक्षण मेखला' या 'शेल्टरबेल्ट' का निर्माण मुख्य रूप से वायु द्वारा होने वाले मृदा अपरदन को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है। मरुस्थलीय और शुष्क क्षेत्रों में पेड़ों और झाड़ियों को एक कतार में लगाया जाता है, जो तेज हवाओं की गति को कम कर देते हैं। इससे खेतों की उपजाऊ मिट्टी उड़ने से बचती है और रेत के टीलों को स्थिर करने में मदद मिलती है। यह मरुस्थलीय क्षेत्रों में पारिस्थितिकीय सुरक्षा और कृषि भूमि के संरक्षण का एक बहुत ही प्रभावी तरीका है।

128. (B) रावी और उसकी सहायक नदियाँ
भरमौर जनजातीय क्षेत्र की भू-आकृति को रावी नदी और उसकी सहायक नदियों, जैसे बुढ़ील और टुंडेन, ने गहराई से प्रभावित किया है। ये नदियाँ इस ऊंचे पर्वतीय बेसिन से होकर बहती हैं और इसे चार प्रमुख भौगोलिक खंडों— होली, खणी, कुगती और तुंदाह में विभाजित करती हैं। इन नदियों ने न केवल क्षेत्र का प्राकृतिक परिसीमन किया है, बल्कि यहाँ की बस्तियों, कृषि और पारंपरिक रास्तों के निर्धारण में भी बहुत महत्वपूर्ण और निर्णायक भूमिका निभाई है।

129. (B) केवल 1, 2 और 3
इंदिरा गांधी नहर के आने से क्षेत्र के कृषि परिदृश्य में बड़ा बदलाव आया है। सिंचित क्षेत्र बढ़ने से बोये गए कुल क्षेत्रफल में विस्तार हुआ है और फसलों की सघनता भी बढ़ी है। किसानों ने अब कम पानी वाली पारंपरिक फसलों के बजाय गेहूँ और कपास जैसी अधिक मूल्य वाली फसलें उगाना शुरू कर दिया है। यह सब सघन सिंचाई सुविधाओं का परिणाम है, न कि शुष्क कृषि का, क्योंकि शुष्क कृषि बिना सिंचाई के की जाने वाली खेती को कहते हैं।

130. (A) 26° सेल्सियस
भरमौर क्षेत्र में जुलाई का महीना सबसे गर्म होता है, और तब यहाँ का औसत मासिक तापमान लगभग 26° सेल्सियस तक पहुँच जाता है। उच्च पर्वतीय क्षेत्र होने के बावजूद, गर्मियों में यहाँ का मौसम सुहावना और कृषि के लिए अनुकूल हो जाता है। इसी अवधि के दौरान गद्दी समुदाय अपनी मुख्य फसलें उगाता है और उनके पशु ऊपरी चरागाहों में चरने के लिए जाते हैं। सर्दियों की तुलना में यह समय यहाँ आर्थिक गतिविधियों के लिए सबसे सक्रिय और महत्वपूर्ण माना जाता है।

131. (C) गाँवों, कृषि-सेवा केंद्रों और विपणन केंद्रों के मध्य
इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को केवल कृषि तक सीमित न रखकर उसे और अधिक व्यापक बनाने के लिए विविधीकरण का सुझाव दिया गया है। इसके लिए स्थानीय गाँवों, छोटे कृषि-सेवा केंद्रों और बड़े विपणन केंद्रों के बीच एक प्रभावी कार्यात्मक कड़ी बनाना आवश्यक है। जब ये तीनों स्तर आपस में जुड़ेंगे, तो किसानों को बेहतर सुविधाएं और अपनी उपज का सही मूल्य मिलेगा, जिससे पूरे क्षेत्र का आर्थिक आधार मजबूत होगा और विकास के नए रास्ते खुलेंगे।

132. (A) 1, 2, 3
भारत में नियोजन की यात्रा अत्यधिक केंद्रीकृत व्यवस्था से शुरू हुई, जहाँ दिल्ली से ही राज्यों के लिए योजनाएं बनती थीं। धीरे-धीरे, स्थानीय आवश्यकताओं को देखते हुए विकेंद्रीकृत और बहुस्तरीय नियोजन की ओर कदम बढ़ाए गए, जिसमें

भौगोलिक क्षेत्र (जैसे सूखाग्रस्त या पहाड़ी क्षेत्र) के विकास पर ध्यान देते हैं, जबकि लक्ष्य समूह कार्यक्रम समाज के किसी विशेष वर्ग (जैसे छोटे किसानों) के आर्थिक उत्थान के लिए होते हैं। अतः SFDA को लक्ष्य क्षेत्र कार्यक्रम कहना गलत है क्योंकि यह विशेष रूप से छोटे किसानों पर केंद्रित है।

94. (C) P-3, Q-1, R-3, S-2
भारत में नियोजन की रणनीतियां विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से विकसित हुई हैं। चौथी योजना में सूखा संभावी क्षेत्र कार्यक्रम की शुरुआत हुई, जबकि पाँचवीं योजना में पर्वतीय क्षेत्र विकास और भरमौर की जनजातीय उप-योजना को प्रमुखता दी गई। बाद में, आठवीं योजना के दौरान पिछड़े क्षेत्रों की बुनियादी संरचना को सुधारने के लिए विशिष्ट क्षेत्र योजनाओं पर विशेष बल दिया गया। यह क्रम देश के दुर्गम और उपेक्षित इलाकों को विकास की मुख्यधारा में लाने के प्रयासों को दर्शाता है।

95. (A) 1970 के दशक में
1970 के दशक में 'पुनर्वितरण के साथ वृद्धि' का नारा बहुत लोकप्रिय हुआ था। इस दौरान अर्थशास्त्रियों और नियोजकों ने यह महसूस किया कि केवल आर्थिक वृद्धि से गरीबी दूर नहीं हो रही है, बल्कि अमीर और गरीब के बीच की खाई बढ़ रही है। इसलिए, यह सुझाव दिया गया कि विकास की नीतियों में समानता पर जोर दिया जाना चाहिए और संसाधनों तथा अवसरों का समाज के सभी वर्गों के बीच न्यायपूर्ण बँटवारा होना चाहिए ताकि विकास समावेशी हो सके।

96. (B) रावी नदी के किनारे बसे गाँव
भरमौर क्षेत्र में विकास कार्यों और बुनियादी सुविधाओं का वितरण भौगोलिक पहुँच के अनुसार असमान रहा है। जो गाँव रावी नदी के किनारों पर स्थित थे, वे सड़कों और अन्य संचार माध्यमों से जल्दी जुड़ गए, जिससे उन्हें विकास का अधिक और शीघ्र लाभ मिला। इसके विपरीत, तुंदाह और कुगती जैसे दूरदराज के इलाकों में स्थित गाँव अपनी दुर्गम अवस्थिति के कारण इन सुविधाओं का लाभ देरी से प्राप्त कर सके, जो क्षेत्रीय विकास की एक सामान्य चुनौती है।

97. (D) 1, 2, 3, 4 और 5
इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए एक बहु-आयामी रणनीति आवश्यक है। इसमें जल प्रबंधन के सख्त नियम, कम पानी वाली खट्टे फलों की खेती, और नहरी बुनियादी ढांचे में सुधार (जैसे नालों को पक्का करना) शामिल हैं। इसके साथ ही, खराब हो चुकी जलाक्रांत भूमि को ठीक करना और निर्धन किसानों को आर्थिक मदद देना भी उतना ही जरूरी है। ये सभी उपाय मिलकर मरुस्थल की पारिस्थितिकी और वहां रहने वाले समाज को दीर्घकालिक स्थायित्व प्रदान करते हैं।

98. (A) समाज द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी और पोषित संस्थाओं पर
मानव और पर्यावरण के बीच का संबंध और उनके बीच होने वाली अंतःक्रियाएं मुख्य रूप से समाज की तकनीकी क्षमता और उसकी संस्थागत व्यवस्थाओं पर निर्भर करती हैं। प्रौद्योगिकी यह निर्धारित करती है कि मानव संसाधनों का कितनी कुशलता से दोहन कर सकता है, जबकि सामाजिक संस्थाएं उन संसाधनों के न्यायपूर्ण वितरण और प्रबंधन के नियम बनाती हैं। विकास की पूरी प्रक्रिया इन्हीं दोनों कारकों के माध्यम से पर्यावरण के साथ तालमेल बिठाने का प्रयास करती है, जो सतत भविष्य के लिए आवश्यक है।

99. (A) 3, 2, 4, 1
'द पॉपुलेशन बम' (1968) सबसे पहले प्रकाशित हुई, जिसमें जनसंख्या विस्फोट की समस्या बताई गई। इसके बाद 'द लिमिट्स टू ग्रोथ' (1972) आई, जिसने संसाधनों की सीमाओं पर ध्यान दिया। फिर WECD (World Commission on Environment and Development) की स्थापना 1983 में हुई। अंत में ब्रंटलैंड रिपोर्ट (1987) प्रकाशित हुई, जिसमें सतत विकास की अवधारणा प्रस्तुत की गई।

100. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
इंदिरा गांधी नहर के आने से पश्चिमी राजस्थान की कृषि का पूरी तरह कायाकल्प हो गया है। नहरों के माध्यम से सिंचाई की उपलब्धता ने न केवल उन क्षेत्रों में खेती संभव बनाई जहाँ पहले कुछ नहीं उगता था, बल्कि बोये गए कुल क्षेत्रफल में भी भारी वृद्धि की है। सिंचाई की सुरक्षा मिलने के बाद किसानों ने पारंपरिक कम मूल्य वाली शुष्क फसलों को छोड़कर गेहूँ, कपास और मूँगफली जैसी नकदी फसलों को उगाना शुरु किया है, जिससे क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हुई है।

101. (C) केवल प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि
विकास को एक बहु-आयामी संकल्पना माना जाता है क्योंकि इसमें केवल आर्थिक समृद्धि ही नहीं, बल्कि मानव जीवन के सभी पहलुओं में सुधार शामिल है। इसमें लोगों के रहन-सहन का स्तर, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, जन स्वास्थ्य सेवाएं और नागरिकों के राजनीतिक व नागरिक अधिकार भी महत्वपूर्ण हैं। केवल प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि को विकास कहना अपूर्ण होगा, क्योंकि बिना सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा के केवल आर्थिक आँकड़े वास्तविक प्रगति का सही चित्र प्रस्तुत नहीं करते हैं।

102. (B) कुल पारिवारिक इकाइयों का दसवाँ भाग ही ऋतु प्रवास करता है
भरमौर क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में पशुचारण का महत्व पिछले दशकों में काफी कम हुआ है। पहले यहाँ का जीवन पूरी तरह से मौसमी प्रवास और भेड़-बकरियों पर निर्भर था। लेकिन 2011 के आँकड़ों और हालिया रुझानों के अनुसार, अब कुल परिवारों का केवल लगभग दसवाँ हिस्सा ही पारंपरिक रूप से ऋतु-प्रवास करता है। यह बदलाव क्षेत्र में बढ़ती साक्षरता, आधुनिक रोजगार के अवसरों और कृषि के व्यवसायीकरण के कारण आया है, जिससे गद्दी समुदाय का जीवन अब अधिक स्थिर हो गया है।

पहुँचाने के लिए लिफ्ट नहरों का सहारा लिया गया है। यह ढाल के अनुसार जल वितरण का एक कुशल प्रबंधन है।

143. (C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में सतत विकास के लिए विस्तारित सिंचाई का प्रावधान है, जिसका उद्देश्य फसल रक्षण और चरागाह विकास है। हालांकि, यह कथन गलत है कि चरण-1 में केवल फसल उगाने और चरण-2 में केवल रक्षण सिंचाई का प्रावधान है। वास्तव में, चरण-1 में सिंचाई का सघन उपयोग किया जाता है, जबकि चरण-2 की रणनीति मरुस्थल की नाज़ुकता को देखते हुए रक्षण सिंचाई और पारिस्थितिकीय पुनर्बहाली (जैसे चरागाह और वनीकरण) पर अधिक केंद्रित की गई है।

144. (B) पर्यावरणीय सीमा
सतत पोषणीय विकास की अवधारणा इस मूल विचार पर आधारित है कि विकास की अंधी दौड़ में हम प्रकृति के संसाधनों को असीमित मानकर नष्ट नहीं कर सकते। यह विकास की एक 'पर्यावरणीय सीमा' को स्वीकार करती है, जिसका अर्थ है कि आर्थिक प्रगति तभी तक सार्थक और स्थायी है जब तक वह पृथ्वी के पारिस्थितिकी तंत्र को स्थायी नुकसान न पहुँचाए। यह विचारधारा मानती है कि संसाधनों का दोहन प्रकृति की पुनरुद्धार क्षमता के भीतर ही होना चाहिए।

145. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में केवल कृषि और पशुपालन के पारंपरिक विकास से सतत विकास का लक्ष्य पाना कठिन है। इसके लिए आर्थिक विविधीकरण अत्यंत आवश्यक है, जो अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों जैसे सेवा और विनिर्माण को आपस में जोड़ता है। जब अर्थव्यवस्था के विभिन्न सेक्टर समन्वित होते हैं, तो न केवल रोजगार के नए अवसर मिलते हैं, बल्कि कृषि पर पड़ने वाला अत्यधिक पर्यावरणीय दबाव भी कम होता है, जो सतत विकास के लिए एक अनिवार्य शर्त है।

146. (A) ब्रह्मपुर
'भरमौर' शब्द का ऐतिहासिक और भाषाई उद्गम प्राचीन संस्कृत शब्द 'ब्रह्मपुर' से हुआ है। मध्यकाल में और स्थानीय बोलियों के प्रभाव से यह नाम समय के साथ धीरे-धीरे बदलकर भरमौर हो गया। यह क्षेत्र सदियों से एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और धार्मिक केंद्र रहा है। इसके प्राचीन नाम की यह विरासत आज भी वहां की गद्दी जनजाति की परंपराओं और क्षेत्र की ऐतिहासिक महत्ता को दर्शाती है, जो इसे हिमाचल प्रदेश के अन्य क्षेत्रों से अलग और विशिष्ट पहचान प्रदान करती है।

147. (A) केवल 1 और 3
योजना आयोग एक केंद्रीकृत संस्था थी जो केंद्र से लेकर जिला स्तर तक की योजनाएं तैयार करती थी। इसके विपरीत, नीति आयोग को एक आधुनिक 'थिंक टैंक' के रूप में स्थापित किया गया है, जो सहकारी संघवाद पर जोर देता है। नीति आयोग केवल केंद्र के लिए नहीं, बल्कि राज्यों के साथ मिलकर काम करता है और उन्हें तकनीकी सलाह देता है। अतः यह कहना गलत है कि नीति आयोग केवल केंद्र स्तर पर काम करता है या इसकी कार्यप्रणाली योजना आयोग जैसी ही है।

148. (D) उनके ऋतु-प्रवासी जीवन के कारण
हिमालयी क्षेत्रों में गद्दी जनजाति की सबसे प्रमुख और विशिष्ट पहचान उनके 'ऋतु-प्रवासी' (transhumance) जीवन के कारण है। वे मौसम के बदलाव के साथ अपने पशुधन के साथ ऊँचे पहाड़ों और निचले घाटियों के बीच निरंतर प्रवास करते हैं। यह चुनौतीपूर्ण जीवनशैली न केवल उनकी अर्थव्यवस्था का आधार है, बल्कि इसी ने उनकी सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक लोकगीतों को भी गहराई से प्रभावित किया है। यह विशेषता उन्हें अन्य स्थायी समुदायों से बिल्कुल अलग और अद्वितीय बनाती है।

149. (C) कमान नियंत्रित क्षेत्र विकास कार्यक्रम
'लक्ष्य क्षेत्र' नियोजन का उद्देश्य उन विशिष्ट क्षेत्रों का विकास करना है जो भौगोलिक रूप से पिछड़े हैं। कमान नियंत्रित क्षेत्र विकास कार्यक्रम इसी का एक उदाहरण है क्योंकि यह किसी विशेष नहर या सिंचाई प्रणाली के कमान क्षेत्र (geographical area) पर केंद्रित होता है। इसके विपरीत, लघु कृषक (SFDA) और सीमांत किसान (MFDA) योजनाएं समाज के विशेष वर्गों (people) को लक्षित करती हैं, इसलिए इन्हें 'लक्ष्य समूह' नियोजन कहा जाता है, न कि क्षेत्र-आधारित नियोजन।

150. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
चंबा जिला भरमौर जनजातीय क्षेत्र का मुख्य केंद्र है, जहाँ गद्दी जनजाति निवास करती है। गंगानगर जिला इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र का एक अग्रणी लाभार्थी है, जहाँ मरुस्थल में खेती का स्वरूप पूरी तरह बदल गया है। नीलगिरी पहाड़ियाँ दक्षिण भारत में पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम का एक प्रमुख हिस्सा हैं। वहीं, आंध्र प्रदेश का रायलसीमा क्षेत्र अपनी शुष्कता के कारण सूखा संभावी क्षेत्र नियोजन के अंतर्गत आता है, जो क्षेत्रीय विकास की विभिन्न श्रेणियों को दर्शाता है।

151. (B) खंडीय नियोजन
भारत में नियोजन की शुरुआत में विशिष्ट आर्थिक क्षेत्रों जैसे कृषि और उद्योग के विकास पर बल दिया गया। इस पद्धति में राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों के लिए लक्ष्य तय किए गए। इसका उद्देश्य जीडीपी में वृद्धि और अर्थव्यवस्था का आधुनिकीकरण करना था। इस दृष्टिकोण को ही खंडीय नियोजन कहा जाता है। यह प्रणाली क्षेत्र-विशिष्ट प्रगति पर केंद्रित थी।

152. (A) जीडीपी वृद्धि और आर्थिक संरचना का आधुनिकीकरण करना
खंडीय नियोजन का प्रमुख उद्देश्य देश की कुल उत्पादन क्षमता बढ़ाना और अर्थव्यवस्था के ढांचे को आधुनिक बनाना था। इसके तहत कृषि, ऊर्जा और उद्योग जैसे क्षेत्रों के लिए विशिष्ट राष्ट्रीय लक्ष्य निर्धारित किए गए। यह दृष्टिकोण तेजी से आर्थिक वृद्धि हासिल करने पर केंद्रित था। इसके माध्यम से विकास के लाभों को व्यापक बनाने के बजाय बुनियादी आर्थिक आधार को मजबूत किया गया।

आने वाले संकट या उसके नकारात्मक परिणामों को उजागर करता है।

113. (B) जीविका निर्वाह अर्थव्यवस्था को निवेश-उन्मुखी बनाना
1981 में पिछड़े क्षेत्रों पर राष्ट्रीय समिति ने पहाड़ी क्षेत्रों के विकास के लिए यह महत्वपूर्ण सुझाव दिया था कि वहां की पारंपरिक जीविका निर्वाह अर्थव्यवस्था को अधिक आधुनिक और निवेश-उन्मुखी बनाया जाना चाहिए। इसका अर्थ था कि पहाड़ों में केवल survival के लिए खेती करने के बजाय, वहां बागवानी, पर्यटन और पशुपालन जैसे क्षेत्रों में व्यावसायिक निवेश किया जाए। समिति का मानना था कि इससे स्थानीय लोगों की आय बढ़ेगी और क्षेत्र का आर्थिक पिछड़ापन दूर करने में मदद मिलेगी।

114. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
गद्दी जनजाति भरमौर क्षेत्र की पहचान है, जो अपनी विशिष्ट संस्कृति और ऋतु-प्रवास (मौसम के अनुसार पशुओं के साथ स्थानांतरण) के लिए जानी जाती है। भरमौर के विकास के लिए आई.टी.डी.पी. (समन्वित जनजातीय विकास परियोजना) जैसा विशेष प्रशासनिक ढांचा तैयार किया गया था। वहीं, कँवर सेन वे प्रसिद्ध इंजीनियर और योजनाकार थे जिन्होंने इंदिरा गांधी नहर जैसी विशाल परियोजना की नींव रखी, जिसने राजस्थान के मरुस्थल के आर्थिक और सामाजिक भूगोल को पूरी तरह से बदल कर रख दिया।

115. (C) चना, बाजरा, ग्वार
इंदिरा गांधी नहर के आने से पहले पश्चिमी राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में केवल वे ही फसलें उगाई जाती थीं जो कम पानी में जीवित रह सकें। इनमें चना, बाजरा और ग्वार मुख्य पारंपरिक फसलें थीं, जो स्थानीय लोगों और उनके पशुओं की जरूरतों को पूरा करती थीं। नहर के पानी की उपलब्धता के बाद अब इन फसलों की जगह गेहूँ, कपास और चावल जैसी नकदी फसलों ने ले ली है, जो इस क्षेत्र के कृषि पैटर्न में आए बड़े बदलाव को दर्शाता है।

116. (D) 1, 2, 3 और 4
नीति आयोग की स्थापना 1 जनवरी, 2015 को योजना आयोग को बदलकर की गई थी। यह एक आधुनिक 'थिंक टैंक' है जो केंद्र और राज्यों को नीतिगत मामलों पर सलाह देता है। इसका सबसे बड़ा उद्देश्य सहकारी संघवाद को बढ़ावा देना है, ताकि भारत के विकास और आर्थिक नीति निर्माण में राज्यों की प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित हो सके। यह पुरानी केंद्रीकृत व्यवस्था के विपरीत, एक नीचे से ऊपर (bottom-up) की ओर जाने वाले नियोजन मॉडल का प्रतिनिधित्व करता है।

117. (C) 1960 के दशक के अंत में पश्चिमी दुनिया में पर्यावरण मुद्दों पर बढ़ती जागरूकता
1960 के दशक के अंतिम वर्षों में औद्योगिक विकास के कारण हो रहे प्रदूषण और संसाधनों के विनाश ने पश्चिमी दुनिया में गहरी चिंता पैदा की थी। इस दौरान कई वैज्ञानिकों और लेखकों ने चेताया कि यदि विकास का यही तरीका जारी रहा, तो पर्यावरण पूरी तरह नष्ट हो जाएगा। इसी वैश्विक चेतना ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास की अवधारणाओं की नींव रखी, जिससे भविष्य में विकास और प्रकृति के बीच संतुलन बनाने की नीतियों पर जोर दिया गया।

118. (B) कँवर सेन - पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम
कँवर सेन का नाम मुख्य रूप से इंदिरा गांधी नहर परियोजना की संकल्पना और योजना तैयार करने से जुड़ा है, न कि पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम से। एहरलिच ने 'द पापुलेशन बम' लिखी थी और मीडोस ने 'द लिमिट टू ग्रोथ' के माध्यम से पर्यावरणीय सीमाओं के प्रति चेतावनी दी थी। WECD ब्रंटलैंड रिपोर्ट ('अवर कॉमन फ्यूचर') के लिए उत्तरदायी है। अतः, कँवर सेन का पर्वतीय विकास से मिलान गलत है, क्योंकि उनका योगदान राजस्थान के मरुस्थलीय विकास में रहा है।

119. (D) 9060 कि.मी.
इंदिरा गांधी नहर परियोजना एक विशाल नहरी जाल है। इसकी मुख्य नहर के साथ-साथ इसकी शाखाओं, उप-शाखाओं और वितरिकाओं की कुल नियोजित लंबाई लगभग 9060 किलोमीटर है। यह इतनी लंबी नहर प्रणाली है कि इसने थार मरुस्थल के एक बहुत बड़े हिस्से को सिंचाई के अंतर्गत ला दिया है। इतनी विस्तृत लंबाई और विशाल नेटवर्क के कारण ही यह विश्व की सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण सिंचाई परियोजनाओं में से एक मानी जाती है, जिसने राजस्थान की कृषि को नई दिशा दी है।

120. (A) आर्थिक विविवधीकरण द्वारा अर्थव्यवस्था के अन्य सेक्टरों का विकास करना
इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में केवल कृषि और पशुपालन पर निर्भर रहना सतत विकास के लिए पर्याप्त नहीं है। विशेषज्ञों का सुझाव है कि यहाँ आर्थिक विविधीकरण किया जाना चाहिए, जिसमें अन्य आर्थिक सेक्टरों को बढ़ावा दिया जाए। इसके लिए गाँवों, कृषि-सेवा केंद्रों और विपणन केंद्रों के बीच मजबूत संबंध स्थापित करने की आवश्यकता है। यह विविधीकरण न केवल क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को मज़बूती प्रदान करेगा, बल्कि स्थानीय लोगों को रोजगार के विविध और स्थायी अवसर भी उपलब्ध कराएगा।

121. (B) केवल 1, 2, 3 और 4
भरमौर में विकास प्रक्रिया 1970 के दशक में गद्दी समुदाय को अनुसूचित जनजाति का दर्जा मिलने के साथ शुरु हुई। 1974 में यहाँ विशेष जनजातीय उप-योजना के तहत ITDP लागू किया गया। इस योजना का मुख्य उद्देश्य गद्दी लोगों के जीवन स्तर को ऊपर उठाना और क्षेत्र की विषमताओं को कम करना था, न कि उन्हें गिराना। अतः पाँचवां कथन गलत है। इन प्रयासों ने भरमौर की बुनियादी सुविधाओं और सामाजिक-आर्थिक स्थिति में व्यापक सुधार करने में सफलता प्राप्त की है।

122. (A) 21 नवंबर, 1975
भरमौर क्षेत्र को आधिकारिक तौर पर 21 नवंबर, 1975 को अधिसूचित जनजातीय क्षेत्र के रूप में घोषित किया गया था। इस घोषणा के बाद इस दुर्गम पर्वतीय क्षेत्र के विकास के लिए विशेष प्रशासनिक और वित्तीय प्रावधान किए गए। जनजातीय

गद्दी समुदाय की आय को बढ़ाया है और उन्हें बाजार आधारित अर्थव्यवस्था से अधिक मजबूती से जोड़ दिया है।

84. (D) विकास की संकल्पना समय और अनुभव के साथ बदलती रही है।
विकास को एक 'गतिक' संकल्पना इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसका अर्थ और इसके लक्ष्य कभी स्थिर नहीं रहते। समय के साथ समाज की जरूरतें और चुनौतियां बदलती हैं, और उसी के अनुसार विकास की परिभाषा भी परिष्कृत होती है। उदाहरण के लिए, पहले विकास का मतलब केवल आर्थिक वृद्धि था, लेकिन अब इसमें सामाजिक समानता और पर्यावरण संरक्षण (सतत विकास) भी शामिल हो गया है। यह निरंतर विकासशील और सुधारोन्मुख प्रक्रिया का प्रतीक है।

85. (C) गरो हरलेम ब्रंटलैंड की अध्यक्षता वाला आयोग
'अवर कॉमन फ्यूचर' नामक ऐतिहासिक रिपोर्ट विश्व पर्यावरण और विकास आयोग (WECD) द्वारा प्रस्तुत की गई थी। इस आयोग की अध्यक्षता नॉर्वे की तत्कालीन प्रधानमंत्री गरो हरलेम ब्रंटलैंड ने की थी। इसी कारण इसे सामान्यतः ब्रंटलैंड रिपोर्ट के नाम से भी जाना जाता है। इस रिपोर्ट ने पहली बार अंतरराष्ट्रीय मंच पर सतत पोषणीय विकास की आवश्यकता को रेखांकित किया और इसे परिभाषित किया, जिससे वैश्विक विकास नीतियों में एक बड़ा वैचारिक परिवर्तन आया।

86. (B) चरण-I का भूतल ऊबड़-खाबड़ है जबकि चरण-II में स्थानांतरित बालू टिब्बे हैं।
इंदिरा गांधी नहर के दोनों चरणों के कमान क्षेत्रों की भौगोलिक विशेषताएं भिन्न हैं। चरण-I का क्षेत्र तुलनात्मक रूप से अधिक समतल और स्थिर है, जिससे वहां शुरुआत में खेती करना आसान रहा। इसके विपरीत, चरण-II का क्षेत्र सुदूर मरुस्थल में स्थित है जहाँ स्थानांतरित होने वाले रेत के बड़े टीले (sand dunes) मौजूद हैं। यहाँ की पारिस्थितिकी अधिक नाजुक है, इसलिए यहाँ खेती और बुनियादी ढांचे का विकास करना अधिक चुनौतीपूर्ण और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील कार्य है।

87. (D) वायु अपरदन और नहरी तंत्र में बालू निक्षेप की प्रक्रियाएँ धीमी पड़ गईं।
इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में वनीकरण और चरागाह विकास का सीधा लाभ पर्यावरण की स्थिरता के रूप में मिला है। वृक्षों की कतारों और हरियाली ने तेज हवाओं की गति को कम कर दिया है, जिससे मिट्टी का उड़ना (वायु अपरदन) काफी हद तक कम हो गया है। इसके अलावा, यह वनस्पति आवरण रेत को नहरों में गिरने से भी रोकता है, जिससे नहरी तंत्र में बालू जमने की समस्या कम हुई है और जल का प्रवाह सुचारु रूप से बना रहता है।

88. (A) स्थलाकृतिक, पारिस्थितिकीय, सामाजिक तथा आर्थिक दशाओं को
पहाड़ी क्षेत्रों के लिए योजनाएं बनाते समय एक बहु-आयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। नियोजकों को वहां की विषम स्थलाकृति, संवेदनशील पारिस्थितिकी तंत्र, स्थानीय जनजातीय संस्कृति और आर्थिक सीमाओं को ध्यान में रखना पड़ता है। पहाड़ों में मैदानी इलाकों की रणनीतियां काम नहीं करतीं, इसलिए वहां के संसाधनों का ऐसा उपयोग जरूरी है जो पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना स्थानीय लोगों की आय बढ़ा सके और उनकी सामाजिक विशिष्टता को भी संरक्षित रख सके।

89. (A) केवल 1, 2 और 4
पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम स्थानीय संसाधनों के टिकाऊ उपयोग पर आधारित है, जिसका उद्देश्य बागवानी, पशुपालन और लघु उद्योगों को बढ़ावा देना है। यह कार्यक्रम बड़े उद्योगों के बजाय स्थानीय अर्थव्यवस्था के अनुकूल छोटे और मध्यम स्तर के कार्यों पर ध्यान केंद्रित करता है। इसका मुख्य लक्ष्य पहाड़ों की नाजुक पारिस्थितिकी के साथ सामंजस्य बिठाते हुए विकास करना है। बड़े उद्योगों के विकास पर जोर देना पहाड़ी क्षेत्रों की संवेदनशील प्रकृति के कारण इस कार्यक्रम का हिस्सा नहीं था।

90. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
गद्दी समुदाय की गतिशीलता उनकी आजीविका की जरूरतों से जुड़ी है। भौगोलिक बाधाओं और सर्दियों की कठोरता के कारण, वे आज भी बड़ी संख्या में शरद् ऋतु के दौरान निचले मैदानी इलाकों, जैसे कांगड़ा, में चले जाते हैं। वहां वे कृषि कार्य या मजदूरी करके धन कमाते हैं और अपने पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था करते हैं। यह मौसमी प्रवास उनकी परंपरा और आर्थिक विवशता दोनों का हिस्सा है, जो उन्हें आज भी गतिशील बनाए रखता है।

91. (D) इंदिरा गांधी नहर के चरण-II के भंगुर पर्यावरण के लिए
पारितंत्र-विकास (eco-development) की रणनीति विशेष रूप से इंदिरा गांधी नहर के द्वितीय चरण के लिए प्रस्तावित की गई है। इसका कारण यह है कि चरण-II का क्षेत्र बहुत ही नाजुक और भंगुर मरुस्थलीय पर्यावरण वाला है। यहाँ की मिट्टी और पारिस्थितिकी तंत्र पर मानवीय हस्तक्षेप का बहुत गहरा असर पड़ सकता है। अतः यहाँ ऐसे विकास की आवश्यकता है जो पर्यावरण को बहाल करे और उसे और अधिक बिगड़ने से बचाए, जैसे व्यापक वनीकरण और मृदा संरक्षण।

92. (B) 1500 मीटर से 3700 मीटर
भरमौर क्षेत्र की समुद्र तल से औसत ऊंचाई 1500 मीटर से 3700 मीटर के बीच है। यह ऊँचाई इसे एक उच्च पर्वतीय क्षेत्र बनाती है, जहाँ साल के अधिकांश समय ठंड रहती है और सर्दियों में भारी बर्फबारी होती है। इसी ऊंचाई के कारण यहाँ की वनस्पति और कृषि के प्रकार सीमित हैं। गद्दी जनजाति ने इसी विशिष्ट ऊँचाई वाले वातावरण के अनुसार अपनी जीवनशैली और ऋतु-प्रवास की परंपरा को सदियों से ढाल रखा है।

93. (C) SFDA (लघु कृषक विकास संस्था) एक लक्ष्य क्षेत्र कार्यक्रम है।
नियोजन के संदर्भ में यह समझना जरूरी है कि SFDA (लघु कृषक विकास संस्था) एक 'लक्ष्य समूह' नियोजन कार्यक्रम है, न कि 'लक्ष्य क्षेत्र' कार्यक्रम। लक्ष्य क्षेत्र कार्यक्रम किसी विशेष

पंचायतों और जिलों को भी महत्व मिला। अंततः, 2015 में नीति आयोग के गठन के साथ इस प्रक्रिया को नया रुप दिया गया, जो 'नीचे से ऊपर' के दृष्टिकोण और राज्यों की सक्रिय भागीदारी पर आधारित आधुनिक नियोजन मॉडल है।

133. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
आर्थिक विकास के लिए संसाधनों की प्रचुरता के साथ-साथ आधुनिक तकनीकी ज्ञान और पर्याप्त निवेश की अनिवार्य आवश्यकता होती है। संसाधनों के होते हुए भी तकनीक और निवेश की कमी से क्षेत्र पिछड़ सकते हैं। साथ ही, नियोजन के अनुभवों ने यह भी सिद्ध किया है कि यदि सावधानी न बरती जाए, तो आर्थिक विकास के दौरान कुछ क्षेत्र बहुत आगे निकल जाते हैं और कुछ पीछे छूट जाते हैं, जिससे क्षेत्रीय असंतुलन की समस्या और अधिक गंभीर हो सकती है।

134. (B) उपरोक्त सभी
आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान नियोजकों ने यह महसूस किया कि देश के कुछ विशिष्ट क्षेत्र विकास में पीछे छूट रहे हैं। इसीलिए, पहाड़ी क्षेत्रों, उत्तर-पूर्वी राज्यों और जनजातीय व अन्य पिछड़े क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे (जैसे सड़क, बिजली और पानी) को विकसित करने के लिए विशेष क्षेत्र योजनाएं तैयार की गईं। इन योजनाओं का मुख्य लक्ष्य इन दुर्गम और उपेक्षित क्षेत्रों की विशिष्ट समस्याओं को हल करना और वहां रहने वाले लोगों के जीवन को बेहतर बनाना था।

135. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
जनसंख्या के भारी दबाव के कारण लोग अक्सर ऐसी भूमि (सीमांत भूमि) पर भी खेती करने को मजबूर हो जाते हैं जो कृषि के लिए बहुत उपयुक्त नहीं होती। यह भी सत्य है कि ऐसी भूमि का दोहन करने से मृदा अपरदन और पारिस्थितिकीय निम्नीकरण होता है। हालांकि ये दोनों कथन व्यक्तिगत रुप से सही हैं, लेकिन कारण (R) यह नहीं बताता कि लोग सीमांत भूमि का उपयोग 'क्यों' कर रहे हैं, बल्कि वह उसके केवल 'दुष्परिणाम' को स्पष्ट करता है।

136. (A) जनसंख्या वृद्धि के दबाव को कम करने और पारिस्थितिकीय निम्नीकरण को रोकने के लिए
सूखा संभावी क्षेत्रों में केवल कृषि पर निर्भर रहना जोखिम भरा और पर्यावरण के लिए हानिकारक होता है। जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ती है, लोग कम उपजाऊ भूमि पर भी खेती करने लगते हैं, जिससे प्रकृति का संतुलन बिगड़ता है। इसलिए, इन क्षेत्रों में वैकल्पिक रोजगार के अवसर (जैसे लघु उद्योग या अन्य सेवाएँ) पैदा करना जरुरी है। इससे कृषि भूमि पर दबाव कम होगा और पारिस्थितिकी को और अधिक नुकसान होने से बचाने में भी मदद मिलेगी।

137. (C) सूक्ष्म-स्तर पर समन्वित जल-संभर विकास कार्यक्रम
सूखा संभावी क्षेत्रों की स्थायी उन्नति के लिए सबसे महत्वपूर्ण रणनीति सूक्ष्म-स्तर पर समन्वित जल-संभर (watershed) विकास कार्यक्रम को अपनाना है। इसके माध्यम से वर्षा जल का संग्रहण, मृदा नमी का संरक्षण और स्थानीय वनस्पति के विकास पर ध्यान दिया जाता है। यह स्थानीय स्तर पर जल की उपलब्धता बढ़ाता है और पर्यावरण को पुनर्जीवित करता है। यह छोटे पैमाने पर किया गया प्रयास बड़े बाँधों की तुलना में सूखे के प्रभाव को कम करने में अधिक प्रभावी होता है।

138. (B) P-3, Q-4, R-2, S-1
भरमौर क्षेत्र रावी नदी के पर्वतीय बेसिन में स्थित है, जबकि हरिके वह प्रसिद्ध स्थल है जहाँ सतलुज और व्यास नदियों का संगम होता है और यहीं से इंदिरा गांधी नहर निकलती है। गंगानगर राजस्थान का वह जिला है जहाँ इंदिरा गांधी नहर ने कृषि को पूरी तरह रुपांतरित कर दिया है। अंततः, खणी भरमौर का एक खंड है जो बुढ़ील नदी के किनारे स्थित है। यह मिलान उत्तर भारत के महत्वपूर्ण जल संसाधनों और उनसे जुड़े क्षेत्रों को प्रदर्शित करता है।

139. (D) विकास का लाभ कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित रहना
भरमौर में आई.टी.डी.पी. (ITDP) के क्रियान्वयन के बाद साक्षरता और स्वास्थ्य में बड़े सुधार हुए हैं, लेकिन इसका एक नकारात्मक पहलू यह रहा है कि विकास का वितरण समान नहीं हुआ। रावी नदी के किनारे स्थित सुलभ गाँव तो विकसित हो गए, लेकिन तुंदाह और कुगती जैसे दुर्गम और ऊँचे इलाकों में स्थित गाँव अभी भी बुनियादी सुविधाओं के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यह असमान लाभ ही इस कार्यक्रम की एक प्रमुख सीमा या कमी मानी जाती है।

140. (D) 1, 2, 3, 4 और 5
सतत पोषणीय विकास की अवधारणा का उदय 20वीं सदी के अंत में एक लंबी प्रक्रिया के रुप में हुआ। औद्योगिक विकास के दुष्परिणामों और 'द पापुलेशन बम' व 'द लिमिट टू ग्रोथ' जैसी पुस्तकों ने वैश्विक चिंता को बढ़ाया। इसके बाद संयुक्त राष्ट्र ने WECD की स्थापना की, जिसकी ब्रंटलैंड रिपोर्ट ने अंततः विकास को पर्यावरण के अनुकूल परिभाषित किया। ये सभी घटनाएँ मिलकर आधुनिक सतत विकास की विचारधारा का आधार बनी हैं, जो आज वैश्विक नीति निर्माण का मुख्य केंद्र है।

141. (C) यह स्थानांतरित बालू टिब्बों वाला मरुस्थल है।
इंदिरा गांधी नहर के द्वितीय चरण का कमान क्षेत्र जैसलमेर और बाड़मेर जैसे सुदूर पश्चिमी जिलों में स्थित है, जहाँ का धरातल अत्यंत विषम है। यहाँ विशाल और स्थानांतरित बालू टिब्बे (shifting sand dunes) पाए जाते हैं, जो मरुस्थल की एक प्रमुख विशेषता हैं। यहाँ की जलवायु बहुत ही शुष्क और कठोर है, और पर्यावरण अत्यंत भंगुर (fragile) है। इसी नाजुकता के कारण यहाँ विकास की रणनीतियां पहले चरण की तुलना में काफी अलग और अधिक चुनौतीपूर्ण साबित होती रही हैं।

142. (B) दाएँ किनारे पर
इंदिरा गांधी नहर प्रणाली की एक विशिष्ट इंजीनियरिंग विशेषता यह है कि इसकी प्रवाह प्रणाल (flow system) की नहरें मुख्य नहर के दाएँ किनारे पर बनाई गई हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि दाएँ किनारे की भूमि का ढाल नहर के अनुकूल है, जिससे पानी बिना मशीनों के स्वतः बह सकता है। इसके विपरीत, बाएँ किनारे की जमीन ऊंची है, इसलिए वहां पानी

वाले मृदा अपरदन और रेत के टीलों के खिसकने की समस्या में काफी कमी आई है।

64. (B) जल भराव और मृदा लवणता की समस्या
इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में अत्यधिक और अनियंत्रित सिंचाई के कारण कुछ गंभीर नकारात्मक प्रभाव भी सामने आए हैं। विशेष रूप से जल भराव (waterlogging) और मृदा लवणता (soil salinity) की समस्याएं तेजी से बढ़ी हैं। जब खेतों में जरूरत से ज्यादा पानी दिया जाता है और जलनिकासी की उचित व्यवस्था नहीं होती, तो मिट्टी के निचले स्तर से नमक ऊपर आ जाता है, जिससे उपजाऊ भूमि धीरे-धीरे बंजर होने लगती है, जो पर्यावरण के लिए चिंताजनक है।

65. (B) पारंपरिक फसलें जैसे चना, बाजरा और ग्वार का स्थान गेहूँ, कपास, मूँगफली और चावल ने ले लिया
नहर के पानी की उपलब्धता ने राजस्थान की कृषि अर्थव्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव किया है। अब किसान उन फसलों को भी उगा पा रहे हैं जिन्हें अधिक पानी की आवश्यकता होती है। इसके कारण पारंपरिक शुष्क फसलें जैसे चना, बाजरा और ग्वार धीरे-धीरे कम हो रही हैं और उनका स्थान अधिक मूल्यवान फसलों जैसे गेहूँ, कपास, मूँगफली और चावल ने ले लिया है। इस बदलाव ने किसानों की आय और उत्पादकता में भारी वृद्धि की है।

66. (B) केवल 1, 3 और 4
इंदिरा गांधी नहर क्षेत्र में सतत विकास के लिए जल प्रबंधन नीति का सख्ती से पालन, वनीकरण और लवणता प्रभावित भूमि का सुधार अनिवार्य है। किसानों को जल सघन फसलों (जैसे चावल) के बजाय कम पानी वाली फसलों के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि जल संसाधनों का संरक्षण हो सके। साथ ही, केवल कृषि पर निर्भर रहने के बजाय अर्थव्यवस्था के अन्य सेक्टरों का विविधीकरण करना भी इस नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र के लिए आवश्यक माना गया है।

67. (C) जल भराव और मृदा लवणता की समस्याओं के कारण
इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में कृषि की दीर्घकालिक सफलता पर अब सवाल उठ रहे हैं। इसका मुख्य कारण सघन सिंचाई से उत्पन्न हुई जल भराव और मिट्टी में बढ़ती लवणता की समस्या है। ये समस्याएं भूमि की उर्वरता को नष्ट कर रही हैं, जिससे भविष्य में कृषि उत्पादन कम होने का खतरा है। अतः, यदि जल प्रबंधन में सुधार नहीं किया गया, तो वर्तमान में प्राप्त आर्थिक लाभ लंबे समय तक टिक नहीं पाएंगे।

68. (D) पारिस्थितिकीय सतत पोषणता पर
इंदिरा गांधी नहर कमान क्षेत्र में सतत विकास का लक्ष्य तभी प्राप्त किया जा सकता है जब पारिस्थितिकीय सतत पोषणता (ecological sustainability) को प्राथमिकता दी जाए। चूंकि यह एक नाजुक मरुस्थलीय पारितंत्र है, इसलिए यहाँ किसी भी आर्थिक गतिविधि को पर्यावरण की सीमाओं के भीतर ही संचालित करना होगा। जल का संरक्षण, मृदा की रक्षा और वनीकरण के माध्यम से पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करना ही इस क्षेत्र के उज्ज्वल भविष्य और स्थायी प्रगति की एकमात्र कुंजी है।

69. (C) सामान्यतः जल सघन फसलों को नहीं बोना और बागाती कृषि के अंतर्गत खट्टे फलों की खेती करना
इस शुष्क क्षेत्र में जल संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए फसल प्रतिरूप में बदलाव का सुझाव दिया गया है। विशेषज्ञों का मानना है कि किसानों को चावल जैसी अधिक पानी माँगने वाली फसलों से बचना चाहिए। इसके बजाय, बागाती कृषि को बढ़ावा देना चाहिए, विशेषकर खट्टे फलों की खेती, जो कम पानी में भी अच्छी पैदावार दे सकती हैं। यह दृष्टिकोण न केवल जल की बचत करेगा, बल्कि मृदा लवणता जैसी समस्याओं को भी रोकने में मदद करेगा।

70. (B) उपरोक्त सभी
कमान क्षेत्र विकास कार्यक्रम (CAD) के अंतर्गत जल के कुशल उपयोग के लिए कई महत्वपूर्ण उपाय किए जाते हैं। इनमें कच्चे नालों को पक्का करना ताकि पानी का रिसाव कम हो, भूमि को समतल करना ताकि पानी पूरे खेत में समान रूप से पहुँचे, और वारबंदी (ओसरा) पद्धति को लागू करना शामिल है। वारबंदी पद्धति यह सुनिश्चित करती है कि सभी किसानों को उनके हिस्से का पानी एक निश्चित समय पर और न्यायपूर्ण तरीके से मिल सके।

71. (D) यह चारों दिशाओं में ऊँचे पर्वतों से घिरा है
भरमौर जनजातीय क्षेत्र की भू-आकृतिक विशेषता यह है कि यह चारों ओर से ऊंचे और दुर्गम हिमालयी पर्वतों से घिरा हुआ है। यह एक उच्च पर्वतीय बेसिन जैसा है, जो इसे बाहरी दुनिया से काफी हद तक अलग-थलग रखता है। इसकी इसी भौगोलिक स्थिति के कारण यहाँ की जलवायु कठोर है और यहाँ रहने वाली गद्दी जनजाति ने सदियों तक एक विशिष्ट और स्वतंत्र जीवनशैली विकसित की है, जो उनकी संस्कृति में स्पष्ट झलकती है।

72. (A) उत्तर में पीर पंजाल और दक्षिण में धौलाधार
भरमौर क्षेत्र की भौगोलिक सीमाएं दो प्रसिद्ध हिमालयी पर्वत श्रेणियों द्वारा निर्धारित होती हैं। इसके उत्तर में पीर पंजाल श्रेणी स्थित है, जबकि इसके दक्षिण में धौलाधार श्रेणी फैली हुई है। ये दोनों पर्वत श्रेणियां इस क्षेत्र को एक प्राकृतिक दुर्ग के समान सुरक्षा प्रदान करती हैं, लेकिन साथ ही इसके आवागमन को भी चुनौतीपूर्ण बनाती हैं। इन पर्वतों के बीच स्थित होने के कारण ही भरमौर की जलवायु और वनस्पति अत्यंत विशिष्ट है।

73. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
इंदिरा गांधी नहर के द्वितीय चरण का क्षेत्र एक अत्यंत संवेदनशील मरुस्थलीय पर्यावरण है जहाँ रेत के टीलों का खिसकना और वायु अपरदन बड़ी समस्याएं हैं। इसीलिए यहाँ पारितंत्र-विकास के लिए वनीकरण, रक्षण मेखला (shelterbelts) का निर्माण और चरागाहों का विकास करना अनिवार्य है। ये उपाय न केवल मिट्टी को स्थिर करते हैं, बल्कि

153. (C) खंडीय विकास जनित क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करने के लिए
प्रारंभिक खंडीय नियोजन के कारण विकास का लाभ केवल कुछ औद्योगिक क्षेत्रों और शहरों तक सीमित रह गया। इससे देश के विभिन्न भौगोलिक हिस्सों के बीच भारी आर्थिक असमानता पैदा हो गई। इस बढ़ते क्षेत्रीय असंतुलन को संतुलित करने और पिछड़े क्षेत्रों को विकास में शामिल करने के लिए प्रादेशिक नियोजन की आवश्यकता महसूस की गई। यह दृष्टिकोण मुख्य रूप से क्षेत्रीय विकास और समानता सुनिश्चित करता है।

154. (D) यह किसी क्षेत्र विशेष की समस्याओं और संसाधनों पर केंद्रित है।
प्रादेशिक नियोजन एक 'स्थानिक' दृष्टिकोण है जो किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र की अद्वितीय समस्याओं और संभावनाओं पर केंद्रित होता है। यह प्रणाली उस क्षेत्र में उपलब्ध स्थानीय संसाधनों का विश्लेषण करती है और उनके अनुकूलतम उपयोग की योजना बनाती है। इसका लक्ष्य क्षेत्रीय विषमताओं को कम करना और पिछड़े इलाकों का उत्थान करना है। यह नीति पूरे देश के बजाय स्थानीय विशिष्ट आवश्यकताओं को प्राथमिकता प्रदान करती है।

155. (C) खंडीय और प्रादेशिक रणनीतियों का एक एकीकृत मिश्रित मॉडल
भारतीय नियोजन प्रणाली समय के साथ विकसित होकर एक मिश्रित मॉडल बन गई है। इसमें राष्ट्रीय स्तर पर तय किए गए आर्थिक लक्ष्यों को स्थानीय और क्षेत्रीय विकास की रणनीतियों के साथ जोड़ा जाता है। यह समन्वय खंडीय विकास और प्रादेशिक समानता के बीच संतुलन स्थापित करता है। इस एकीकृत दृष्टिकोण का उद्देश्य समग्र राष्ट्रीय प्रगति के साथ-साथ सभी क्षेत्रों का समान विकास सुनिश्चित करना है।

156. (B) चौथी पंचवर्षीय योजना
भारत में सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम की शुरुआत चौथी पंचवर्षीय योजना के समय की गई थी। इस कार्यक्रम को उन क्षेत्रों के लिए एक विशेष पहल के रूप में बनाया गया था जो बार-बार सूखे की मार झेलते थे। इसका मुख्य उद्देश्य प्रभावित क्षेत्रों में पारिस्थितिक संतुलन को फिर से स्थापित करना था। यह योजना प्राकृतिक संसाधनों की उत्पादकता बढ़ाने और स्थानीय निवासियों को सहायता देने हेतु लाई गई।

157. (D) श्रम-गहन निर्माण कार्यों के माध्यम से रोजगार सृजन करना
शुरुआत में सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम मुख्य रूप से राहत कार्यों पर आधारित था। इसका तात्कालिक लक्ष्य सूखे से प्रभावित ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा करना था। इसके लिए सरकार ने श्रम-प्रधान निर्माण कार्यों को प्राथमिकता दी ताकि स्थानीय लोगों को आय प्राप्त हो सके। उस समय पारिस्थितिक सुधार के बजाय संकट की स्थिति में लोगों को तात्कालिक आर्थिक सहायता देना प्राथमिक माना गया था।

158. (A) जलसंभर विकास का सिद्धांत
समय के साथ यह अनुभव किया गया कि केवल राहत कार्य सूखे का स्थायी समाधान नहीं हैं। इसलिए, 1990 के दशक के मध्य में कार्यक्रम का रुख बदलकर उसे जलसंभर विकास के वैज्ञानिक सिद्धांत पर आधारित किया गया। यह नया दृष्टिकोण किसी क्षेत्र के प्राकृतिक जल निकासी तंत्र को एक इकाई मानकर संसाधनों के प्रबंधन पर जोर देता है। इसका उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और स्थायी विकास करना है।

159. (C) पारिस्थितिक क्षमता बढ़ाना और सूखे के प्रभाव को कम करना
जलसंभर विकास उपागम का मुख्य लक्ष्य किसी क्षेत्र की पारिस्थितिक क्षमता को स्थायी रूप से मजबूत करना है। इसके अंतर्गत मृदा संरक्षण और जल प्रबंधन के उपायों द्वारा जमीन को अधिक उपजाऊ बनाया जाता है। यह प्रणाली सूखे के नकारात्मक प्रभावों को कम करने में सहायक होती है। इससे न केवल पर्यावरण सुरक्षित रहता है, बल्कि स्थानीय आबादी के लिए दीर्घकालिक आजीविका और संसाधनों की उपलब्धता भी बेहतर होती है।

160. (A) राहत-आधारित योजना से पारिस्थितिक पुनर्स्थापन पहल की ओर
सूखा संभावी क्षेत्र विकास कार्यक्रम का विकास एक अल्पकालिक राहत योजना से एक व्यापक पारिस्थितिक पुनर्स्थापन पहल के रूप में हुआ है। प्रारंभ में इसका केंद्र केवल रोजगार सृजन था, लेकिन अब यह प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन और टिकाऊ विकास पर केंद्रित है। यह कार्यक्रम अब क्षेत्र की उत्पादन क्षमता बढ़ाने और पारिस्थितिक संतुलन बहाल करने का कार्य करता है। यह बदलाव विकास की स्थायी सोच को प्रदर्शित करता है।

161. (D) क्योंकि मैदानी इलाकों की विकास रणनीतियाँ पर्वतीय क्षेत्रों के लिए अनुपयुक्त थीं
पर्वतीय क्षेत्रों की विशिष्ट स्थितियों और कठिन भू-भाग के कारण मैदानी इलाकों के लिए बनी सामान्य विकास नीतियाँ यहाँ प्रभावी साबित नहीं हो रही थीं। इन क्षेत्रों की नाजुक पारिस्थितिकी और प्राकृतिक आपदाओं के खतरे को देखते हुए एक विशेष दृष्टिकोण की आवश्यकता थी। इसीलिए पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम शुरू किया गया ताकि यहाँ की अनूठी समस्याओं का समाधान स्थानीय संदर्भ में संतुलित ढंग से किया जा सके।

162. (B) बागवानी, पशुपालन और पर्यावरण-अनुकूल पर्यटन विकास
पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम के तहत ऐसी गतिविधियों को बढ़ावा दिया गया जो पहाड़ों के पर्यावरण के अनुकूल हों। इसमें बागवानी, पशुपालन और पारिस्थितिकी-आधारित पर्यटन जैसी पहलों को प्राथमिकता दी गई। इन कार्यों का उद्देश्य स्थानीय समुदायों की आय बढ़ाना और प्राकृतिक संसाधनों का सतत उपयोग सुनिश्चित करना था। यह रणनीति आर्थिक विकास के साथ-साथ पहाड़ों की संवेदनशील प्रकृति का पूर्ण संरक्षण सुनिश्चित करती है।

(A) 4, 1, 2, 3
(B) 1, 4, 2, 3
(C) 4, 2, 1, 3
(D) 1, 2, 3, 4

20. ग्रामीण सड़कों के घनत्व में प्रादेशिक विषमता क्यों पाई जाती है?
(A) क्योंकि उनका निर्माण राज्य सरकारों द्वारा किया जाता है।
(B) क्योंकि केंद्र सरकार धन आवंटन में भेदभाव करती है।
(C) क्योंकि ग्रामीण जनसंख्या का वितरण समान नहीं है।
(D) क्योंकि वे भूभाग की प्रकृति से प्रभावित होती हैं।

21. 'अटल टनल' के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही नहीं है?
(A) यह विश्व की सबसे लंबी राजमार्ग सुरंग है जिसकी लंबाई 9.02 किलोमीटर है।
(B) यह सुरंग पूरे साल मनाली को लाहौल-स्पीति घाटी से जोड़ती है।
(C) इसका निर्माण भारतीय राष्ट्रीय महामार्ग प्राधिकरण द्वारा किया गया है।
(D) यह सुरंग हिमालय की पीरपंजाल पर्वतमाला में स्थित है।

22. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): ब्रिटिश काल में विकसित किए गए रेलमार्ग मुख्य रूप से संसाधनों के शोषण हेतु थे।
कारण (R): ये रेलमार्ग कच्चा माल उत्पादन क्षेत्रों, बागान क्षेत्रों और पत्तनों को जोड़ते थे।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

23. 'भारतमाला परियोजना' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इसमें लगभग 26,000 किलोमीटर लंबे आर्थिक गलियारों के विकास की परिकल्पना है।
2. इसका उद्देश्य केवल यात्री परिवहन को सुगम बनाना है।
3. इसमें रिंग रोड, बाइपास और ऊंचे गलियारों के विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
4. यह स्वर्णिम चतुर्भुज और उत्तर-दक्षिण पूर्व-पश्चिम गलियारों के साथ माल ढुलाई को सुगम बनाएगा।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 3 और 4
(C) केवल 2 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

24. रेलवे पटरी की चौड़ाई के आधार पर, भारतीय रेल का कौन सा वर्ग पर्वतीय क्षेत्रों तक सीमित है?
(A) छोटी लाइन (Narrow Gauge)
(B) बड़ी लाइन (Broad Gauge)
(C) मीटर लाइन (Meter Gauge)
(D) मानक लाइन (Standard Gauge)

25. 1998 में निर्मित कोंकण रेलवे किन दो स्थानों को जोड़ता है?
(A) मुंबई को गोवा से
(B) गुजरात में पोरबंदर को असम के सिलचर से
(C) महाराष्ट्र में रोहा को कर्नाटक के मंगलौर से
(D) जम्मू में श्रीनगर को तमिलनाडु के कन्याकुमारी से

26. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (संगठन)
P. बी.आर.ओ.
Q. एन.एच.ए.आई.
R. ओ.आई.एल.
S. गेल (इंडिया) लिमिटेड
List II: (स्थापना/निगमन वर्ष)
1. 1995
2. 1984
3. 1960
4. 1959
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

27. जल परिवहन का सबसे महत्वपूर्ण लाभ क्या है?
(A) यह परिवहन का सबसे तीव्र साधन है।
(B) यह हर स्थान पर उपलब्ध है।
(C) यह कम मात्रा में माल के लिए उपयुक्त है।
(D) यह परिवहन का सबसे सस्ता साधन है।

28. भारत में अंतः स्थलीय जलमार्गों के विकास, अनुरक्षण तथा नियमन हेतु अंतः स्थलीय जलमार्ग प्राधिकरण की स्थापना किस वर्ष की गई थी?
(A) 1995
(B) 1986
(C) 1960
(D) 2016

29. कोंकण रेलवे के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह 760 कि.मी. लंबा रेलमार्ग है।
2. यह 146 नदियों और 2000 पुलों को पार करता है।
3. इस मार्ग पर एशिया की सबसे लंबी सुरंग (6.5 कि.मी.) है।
4. इस उद्यम में केवल महाराष्ट्र और कर्नाटक राज्य भागीदार हैं।
5. इसे अभियांत्रिकी का एक अनूठा चमत्कार माना जाता

173. (D) आर्थिक व्यवहार्यता, सामाजिक समानता और पर्यावरणीय संरक्षण
सतत विकास का विचार तीन मुख्य स्तंभों पर टिका है जो परस्पर संबंधित हैं। इनमें आर्थिक लाभ, समाज में समानता और पर्यावरण की सुरक्षा शामिल है। इन तीनों के बीच संतुलन होना अनिवार्य है क्योंकि केवल आर्थिक वृद्धि समाज का भला नहीं कर सकती यदि वह पर्यावरण को नष्ट करे या गरीबी बढ़ाए। जब ये तीनों आयाम साथ मिलकर विकसित होते हैं, तभी विकास को वास्तव में 'सतत' कहा जा सकता है।

174. (A) यह आर्थिक वृद्धि के साथ पर्यावरणीय और सामाजिक आयामों का एकीकरण करती है।
पारंपरिक विकास मॉडल केवल जीडीपी वृद्धि और उत्पादन बढ़ाने पर ध्यान देता था, जिसमें अक्सर पर्यावरण की उपेक्षा होती थी। इसके विपरीत, सतत विकास एक आधुनिक दृष्टिकोण है जो आर्थिक प्रगति के साथ प्रकृति के संरक्षण और सामाजिक न्याय को एकीकृत करता है। यह मॉडल मानता है कि लंबी अवधि में समृद्धि तभी संभव है जब हम अपने प्राकृतिक संसाधनों और समाज के सभी वर्गों का ध्यान रखें।

175. (C) पर्यावरणीय गिरावट और बढ़ती सामाजिक असमानता पर आधारित विकास
कोई भी विकास 'सतत' नहीं कहला सकता जो पर्यावरण को गंभीर क्षति पहुँचाए या समाज में अमीर और गरीब के बीच विषमता बढ़ाए। यदि आर्थिक लाभ के लिए वनों को काटा जाए या प्रदूषण फैलाया जाए, तो वह भविष्य के लिए हानिकारक होता है। सतत विकास का अर्थ ही यही है कि वह पारिस्थितिक रूप से सुरक्षित हो और समाज के सभी वर्गों के लिए न्यायसंगत हो।

163. (C) पारिस्थितिक स्थिरता को प्राथमिकता देना
पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम का मुख्य दर्शन पारिस्थितिक स्थिरता और पर्यावरण संरक्षण को विकास के केंद्र में रखना है। इसका मानना है कि पहाड़ी क्षेत्रों में कोई भी प्रगति प्रकृति को नुकसान पहुँचाकर नहीं होनी चाहिए। इसलिए, विकास की उन रणनीतियों को अपनाया गया जो स्थानीय संसाधनों का विवेकपूर्ण और सुरक्षित उपयोग करती हैं। यह दर्शन पर्यावरण और मानवीय जीवन के बीच एक स्वस्थ संतुलन स्थापित करता है।

164. (D) स्थानीय संस्कृति का संरक्षण और लाभों का समान वितरण
पर्वतीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम केवल आर्थिक लाभ तक सीमित नहीं था। इसका एक बड़ा उद्देश्य स्थानीय जनजातीय और पहाड़ी संस्कृति की पहचान सुरक्षित रखना भी था। इसके अलावा, यह कार्यक्रम सुनिश्चित करता है कि विकास के लाभ किसी एक वर्ग तक न रहकर समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँचें। यह सामाजिक समावेशिता और क्षेत्रीय सांस्कृतिक गौरव को बनाए रखने की महत्वपूर्ण पहल थी।

165. (A) विकास कार्यों से पर्यावरण को न्यूनतम क्षति सुनिश्चित करना
पर्वतीय क्षेत्रों में सड़कें और अन्य बुनियादी सुविधाएँ बनाते समय यह विशेष ध्यान रखा जाता है कि पर्यावरण को कम से कम नुकसान हो। निर्माण कार्य करते समय मृदा अपरदन और भूस्खलन जैसे खतरों को न्यूनतम करने के वैज्ञानिक तरीके अपनाए जाते हैं। यह सिद्धांत बताता है कि आधुनिक सुविधाएँ प्रदान करते समय प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र की रक्षा करना अनिवार्य है। यह पहाड़ों में संतुलित विकास का आधार है।

166. (B) पाँचवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान
समन्वित जनजातीय विकास परियोजना को पाँचवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान जनजातीय उप-योजना के एक प्रमुख भाग के रूप में पेश किया गया था। इस परियोजना का उद्देश्य जनजातीय क्षेत्रों के पिछड़ेपन को दूर करने के लिए विशेष वित्तीय और प्रशासनिक प्रयास करना था। इस समय से भारत सरकार ने जनजातीय कल्याण के लिए अधिक केंद्रित और योजनाबद्ध तरीके से कार्य करना शुरू किया ताकि उन्हें विकास की मुख्यधारा में लाया जा सके।

167. (B) जनजातीय क्षेत्रों के समग्र विकास हेतु एकीकृत दृष्टिकोण
समन्वित जनजातीय विकास परियोजना का मुख्य लक्ष्य जनजातीय क्षेत्रों की समस्याओं का समग्र और एकीकृत समाधान करना है। यह परियोजना शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और बुनियादी ढांचे जैसे विभिन्न क्षेत्रों में एक साथ काम करती है। एक समन्वित दृष्टिकोण अपनाकर, यह सुनिश्चित किया जाता है कि विकास की सभी कड़ियाँ आपस में जुड़ी हों। इसका अंतिम उद्देश्य जनजातीय समुदायों के आर्थिक जीवन स्तर को ऊँचा उठाना है।

168. (A) जनजातीय लोगों को भूमि और कर्ज संबंधी शोषण से बचाना
इस परियोजना का एक अत्यंत महत्वपूर्ण लक्ष्य जनजातीय लोगों को शोषण से मुक्त कराना था। विशेष रूप से भूमि हड़पने और साहूकारों द्वारा दिए जाने वाले कर्ज के कुचक्र से उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया। इसके लिए कड़े कानूनी उपाय किए गए और उनका प्रभावी कार्यान्वयन किया गया। यह सुरक्षात्मक ढाँचा जनजातीय आबादी के अधिकारों और उनकी पैतृक संपत्ति की रक्षा करता है।

169. (C) विभिन्न कार्यक्रमों को एक ही प्रशासनिक इकाई में समन्वित करना
एकीकृत दृष्टिकोण का अर्थ है कि विकास के सभी कार्यक्रमों को एक ही प्रशासनिक इकाई के नीचे संचालित करना। इससे विभिन्न सरकारी योजनाओं के बीच बेहतर समन्वय स्थापित होता है और कार्यकुशलता बढ़ती है। यह पद्धति सुनिश्चित करती है कि जनजातीय समुदायों के लिए दी जाने वाली सहायता और संसाधन सही ढंग से उन तक पहुँचें। यह प्रशासन के विखंडन को रोककर विकास को अधिक प्रभावी बनाता है।

170. (D) जनजातीय संस्कृति और पहचान के संरक्षण पर
विकास कार्यक्रमों को लागू करते समय जनजातीय संस्कृति और उनकी पारंपरिक पहचान को बचाए रखना अत्यंत आवश्यक माना गया। परियोजना का उद्देश्य केवल आर्थिक सुधार नहीं, बल्कि जनजातीय लोगों के रीति-रिवाजों और मूल्यों का संरक्षण करना भी है। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि विकास उनकी मूल पहचान को नष्ट न करे। इस प्रकार, यह आधुनिक प्रगति और सांस्कृतिक विरासत के बीच तालमेल स्थापित करता है।

171. (C) ब्रंटलैंड आयोग की रिपोर्ट, 'हमारा साझा भविष्य'
सतत पोषणीय विकास की सबसे प्रसिद्ध और वैश्विक स्तर पर मान्य परिभाषा ब्रंटलैंड आयोग की रिपोर्ट 'हमारा साझा भविष्य' में दी गई थी। 1987 में प्रकाशित इस रिपोर्ट ने पहली बार विकास और पर्यावरण के बीच के गहरे संबंध को रेखांकित किया। इसने दुनिया को समझाया कि वर्तमान प्रगति ऐसी होनी चाहिए जो भविष्य के लिए संसाधनों के संकट का कारण न बने और पारिस्थितिकी सुरक्षित रहे।

172. (B) भावी पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता किए बिना वर्तमान आवश्यकताएं पूरी करना
ब्रंटलैंड आयोग के अनुसार, सतत विकास का अर्थ है वर्तमान पीढ़ी की जरूरतों को इस प्रकार पूरा करना कि भावी पीढ़ियों के हितों को नुकसान न पहुँचे। यह परिभाषा संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग और भविष्य के प्रति जिम्मेदारी पर जोर देती है। यह हमें सिखाती है कि हम प्राकृतिक संसाधनों के मालिक नहीं बल्कि ट्रस्टी हैं, जिन्हें आने वाली पीढ़ियों के लिए इन अनमोल धरोहरों को बचाकर रखना है।

2. इसका उद्देश्य उत्तरी एवं उत्तर-पूर्वी सीमा से सटी सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सड़कों का विकास करना है।
3. यह केवल सड़कें बनाने का कार्य करता है।
4. इसने चंडीगढ़ को मनाली तथा लेह से जोड़ने वाली सड़क बनाई है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 4
(C) केवल 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

10. भारत में वायु परिवहन की शुरुआत कब और किन दो स्थानों के बीच हुई?
(A) 1911 में, इलाहाबाद से नैनी तक
(B) 1923 में, मुंबई से पुणे तक
(C) 1943 में, दिल्ली से लाहौर तक
(D) 1853 में, मुंबई से थाणे तक

11. भारत में सड़कों का वर्गीकरण निर्माण एवं रख-रखाव के उद्देश्य से किया गया है। निम्नलिखित में से कौन सा उस वर्गीकरण का हिस्सा नहीं है?
(A) राष्ट्रीय महामार्ग (NH)
(B) राज्य महामार्ग (SH)
(C) ग्रामीण सड़कें
(D) अंतर्राष्ट्रीय महामार्ग

12. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): भारत में अंतःस्थलीय जलमार्गों का महत्व रेल व सड़क परिवहन की तुलना में कम हो गया है।
कारण (R): नदियों के जल को सिंचाई हेतु बाँट देने के कारण इनके मार्गों के अधिकांश भाग नौसंचालन के योग्य नहीं रहे हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

13. भारतीय राष्ट्रीय महामार्ग प्राधिकरण (एन.एच.ए.आई.) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इसका प्रचालन 1995 में हुआ था।
2. यह भूतल परिवहन मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्तशासी निकाय है।
3. इसे केवल राष्ट्रीय महामार्गों के विकास की जिम्मेदारी सौंपी गई है।
4. यह राष्ट्रीय महामार्गों की गुणवत्ता सुधार के लिए एक शीर्ष संस्था है।
5. यह राज्य महामार्गों का भी प्रचालन करता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

14. भारतीय रेल को कितने मंडलों में विभाजित किया गया है?
(A) 9
(B) 12
(C) 14
(D) 17

15. 'स्वर्णिम चतुर्भुज' परियोजना का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) देश के चार विशाल महानगरों को जोड़ना
(B) सभी राज्यों की राजधानियों को जोड़ना
(C) ग्रामीण क्षेत्रों को शहरों से जोड़ना
(D) भारत को पड़ोसी देशों से जोड़ना

16. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (रेलवे मंडल)
P. सेंट्रल
Q. ईस्टर्न
R. नार्दन
S. सदर्न

List II: (मुख्यालय)
1. नई दिल्ली
2. चेन्नई
3. मुंबई (सी.एस.टी.)
4. कोलकाता

(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

17. उत्तर-दक्षिण गलियारा किन दो स्थानों को जोड़ता है?
(A) सिलचर से पोरबंदर
(B) श्रीनगर से कन्याकुमारी
(C) दिल्ली से चेन्नई
(D) कोलकाता से मुंबई

18. निम्नलिखित में से कौन सा संचार का वैयक्तिक साधन है?
(A) ई-मेल
(B) रेडियो
(C) टेलीविज़न
(D) सिनेमा

19. भारत में परिवहन के विकास की निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. 'नागपुर योजना' का निर्माण
2. सीमा सड़क संगठन (बी.आर.ओ.) की स्थापना
3. भारतीय राष्ट्रीय महामार्ग प्राधिकरण (एन.एच.ए.आई.) का प्रचालन
4. पहली रेल लाइन का निर्माण

41. भारत में रेडियो का प्रसारण सबसे पहले किस संस्था द्वारा प्रारंभ किया गया था?
(A) ऑल इंडिया रेडियो
(B) प्रसार भारती
(C) रेडियो क्लब ऑफ बाम्बे
(D) भारत सरकार

42. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): उपग्रह संचार आर्थिक एवं सामरिक कारणों से महत्त्वपूर्ण हो गया है।
कारण (R): उपग्रह के उपयोग से एक विस्तृत क्षेत्र का सतत एवं सारिक दृश्य प्राप्त होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

43. 1936 में इंडियन ब्रॉडकास्टिंग सिस्टम को किस नाम से जाना गया?
(A) आकाशवाणी
(B) दूरदर्शन
(C) प्रसार भारती
(D) ऑल इंडिया रेडियो

44. भारत में टेलीविज़न सेवाएँ प्रारंभिक दौर में कहाँ तक सीमित थीं?
(A) केवल मुंबई
(B) केवल राष्ट्रीय राजधानी (दिल्ली)
(C) केवल कोलकाता
(D) मुंबई और दिल्ली दोनों

45. भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली (INSAT) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इसकी स्थापना 1983 में हुई थी।
2. यह एक बहुउद्देश्यीय उपग्रह प्रणाली है।
3. यह केवल दूरसंचार के लिए उपयोगी है।
4. यह मौसम विज्ञान संबंधी अवलोकनों के लिए भी उपयोगी है।
5. इसने राष्ट्रीय टेलीविज़न (डीडी-1) के विस्तार में कोई भूमिका नहीं निभाई।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2 और 4
(C) केवल 3, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

46. भारत की उपग्रह प्रणाली को किन दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है?
(A) INSAT और PSLV
(B) INSAT और IRS
(C) IRS और GSLV
(D) PSLV और GSLV

47. इंडियन रिमोट सेंसिंग सेटेलाइट सिस्टम (IRS) का पहला उपग्रह (IRS-IA) कहाँ से प्रक्षेपित किया गया था?
(A) वैकानूर, रुस
(B) श्रीहरिकोटा, भारत
(C) फ्रेंच गुयाना
(D) केप कैनावेरल, यूएसए

48. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (सड़क वर्ग)
P. राष्ट्रीय महामार्ग
Q. राज्य महामार्ग
R. ज़िला सड़कें
S. ग्रामीण सड़कें
List II: (2020 में लंबाई कि.मी. में)
1. 1,76,818
2. 59,02,539
3. 1,36,440
4. आंकड़े उपलब्ध नहीं
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-3, Q-1, S-2
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

49. हैदराबाद स्थित नेशनल रिमोट सेंसिंग सेंटर (NRSC) का मुख्य कार्य क्या है?
(A) उन्नत श्रेणी के उपग्रहों का डिजाइन एवं स्वदेशी निर्माण करना
(B) उपग्रह आँकड़ों के अधिग्रहण एवं प्रक्रमण की सुविधा प्रदान करना
(C) विभिन्न कक्षाओं में उपग्रहों का सुरक्षित प्रक्षेपण सुनिश्चित करना
(D) राष्ट्र के लिए सटीक मौसम का दैनिक एवं दीर्घकालिक पूर्वानुमान जारी करना

50. भारत में सड़कों की कुल लंबाई का लगभग कितना प्रतिशत हिस्सा ग्रामीण सड़कों के रूप में वर्गीकृत किया गया है?
(A) 80 प्रतिशत
(B) 40 प्रतिशत
(C) 60 प्रतिशत
(D) 90 प्रतिशत

51. निम्नलिखित में से कौन सा कथन राष्ट्रीय महामार्गों के बारे में सही है?
(A) ये पूरे देश की कुल सड़कों की लंबाई का 10% हैं।
(B) इनका निर्माण एवं अनुरक्षण राज्य सरकारों द्वारा किया जाता है।

है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2, 3 और 5
(B) केवल 1, 2, 4 और 5
(C) केवल 3, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

30. राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-1 (रा.ज.मा. 1) का विस्तार कहाँ से कहाँ तक है?
(A) सदिया-धुबरी
(B) कोट्टापुरम-कोलम
(C) काकीनाडा-पुदुच्चेरी
(D) प्रयागराज-हल्दिया

31. भारत में भार के अनुसार लगभग कितना प्रतिशत विदेशी व्यापार महासागरीय मार्गों द्वारा होता है?
(A) 95%
(B) 70%
(C) 50%
(D) 85%

32. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): पाइपलाइनें गैसों एवं तरल पदार्थों के लंबी दूरी तक परिवहन हेतु अत्यधिक सुविधाजनक एवं सक्षम परिवहन प्रणाली हैं।
कारण (R): इनके द्वारा ठोस पदार्थों को भी घोल या गारा में बदलकर परिवहित किया जा सकता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

33. 'पवन हंस' क्या है?
(A) एक यात्री एयरलाइन
(B) एक हेलीकॉप्टर सेवा
(C) एक हवाई अड्डा प्राधिकरण
(D) एक विमान निर्माण कंपनी

34. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?
(A) रा.ज.मा. 3 - गोदावरी नदी
(B) रा.ज.मा. 1 - गंगा नदी
(C) रा.ज.मा. 2 - ब्रह्मपुत्र नदी
(D) रा.ज.मा. 4 - कृष्णा नदी

35. भारतीय संचार प्रणाली के विकास की निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. रेडियो क्लब ऑफ बाम्बे द्वारा पहला प्रसारण
2. ऑल इंडिया रेडियो का आकाशवाणी में बदलना
3. दिल्ली में टेलीविज़न सेवा का प्रारंभ
4. टी.वी. को ऑल इंडिया रेडियो से विगलित कर दूरदर्शन का गठन

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 1, 3, 2, 4
(C) 2, 1, 3, 4
(D) 3, 1, 2, 4

36. एशिया की पहली देशपारीय पाइपलाइन का निर्माण किस कंपनी ने किया था?
(A) गेल (INDIA) लिमिटेड
(B) इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन
(C) हिंदुस्तान पेट्रोलियम
(D) आयल इंडिया लिमिटेड (ओ.आई.एल.)

37. हजीरा-विविजय-जगदीशपुर (एचवीजे) पाइपलाइन की लंबाई कितनी है?
(A) 1157 किलोमीटर
(B) 760 किलोमीटर
(C) 1700 किलोमीटर
(D) 5846 किलोमीटर

38. 'उड़ान' (उड़े देश का आम नागरिक) योजना का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हवाई यात्राओं को और अधिक सुलभ बनाना
(B) क्षेत्रीय कनेक्टिविटी बढ़ाने हेतु किफायती हवाई सेवा उपलब्ध कराना
(C) देश के सभी प्रमुख नगरों में हेलीकॉप्टर सेवाओं का व्यापक विस्तार
(D) मौजूदा हवाई अड्डों के आधुनिकीकरण एवं बुनियादी ढांचा सुधार हेतु

39. भारतीय रेल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इसकी स्थापना 1853 में हुई थी।
2. पहली रेल लाइन मुंबई से थाणे के बीच 34 कि.मी. लंबी थी।
3. यह भारत सरकार का विशालतम उद्यम है।
4. इसकी कुल लंबाई 1,00,000 कि.मी. से अधिक है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

40. संचार के साधनों को किन दो प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है?
(A) वैयक्तिक और सार्वजनिक (जनसंचार)
(B) मौखिक और लिखित
(C) औपचारिक और अनौपचारिक
(D) राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय

अध्याय 15
परिवहन तथा संचार

1. परिवहन तथा संचार का उपयोग किस आवश्यकता पर निर्भर करता है?
(A) केवल वस्तुओं के उत्पादन की लागत को न्यूनतम स्तर तक कम करने हेतु
(B) वस्तुओं की उपलब्धता वाले स्थानों से उपयोग के स्थानों तक स्थानांतरण हेतु
(C) सरकार द्वारा निर्धारित परिवहन नीतियों के पूर्ण कार्यान्वयन हेतु
(D) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को सुदृढ़ बनाने की राष्ट्र की प्रबल इच्छा हेतु

2. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन 1: भारत का सड़क जाल विश्व का दूसरा सबसे बड़ा सड़क-जाल है।
कथन 2: भारत में सड़कों की कुल लंबाई लगभग 62.16 lakh कि.मी. (वार्षिक रिपोर्ट 2020-21) है।
(A) कथन 1 सही है, किन्तु कथन 2 गलत है।
(B) कथन 1 गलत है, किन्तु कथन 2 सही है।
(C) दोनों कथन सही हैं।
(D) दोनों कथन गलत हैं।

3. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (गलियारा)
P. स्वर्णिम चतुर्भुज
Q. उत्तर-दक्षिण गलियारा
R. पूर्व-पश्चिम गलियारा
S. अटल टनल
List II: (लंबाई)
1. 3,640 कि.मी.
2. 4,016 कि.मी.
3. 9.02 कि.मी.
4. 5,846 कि.मी.
(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

4. निम्नलिखित में से कौन सा परिवहन का साधन नहीं है?
(A) स्थल
(B) जल
(C) वायु
(D) अंतरिक्ष

5. एक कंपनी को असम के तेल क्षेत्रों से बिहार के तेल शोधन कारखाने तक कच्चा तेल भेजना है। इस लंबी दूरी के परिवहन के लिए सबसे सुविधाजनक और सक्षम प्रणाली कौन सी होगी?
(A) रेल परिवहन
(B) सड़क परिवहन
(C) पाइप लाइन
(D) जल परिवहन

6. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): मेट्रो रेल ने भारत में नगरीय परिवहन व्यवस्था में क्रांति ला दी है।
कारण (R): मेट्रो रेल का प्रचालन नगरीय केंद्रों के वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने में सहायक है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

7. भारत में सड़क परिवहन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) प्रतिवर्ष सड़कों द्वारा लगभग 85 प्रतिशत यात्री यातायात का परिवहन किया जाता है।
(B) प्रतिवर्ष सड़कों द्वारा लगभग 70 प्रतिशत भार यातायात का परिवहन किया जाता है।
(C) भारत का सड़क जाल विश्व के सबसे बड़े सड़क-जालों में से एक है।
(D) लंबी दूरियों की यात्रा के लिए सड़क परिवहन अपेक्षाकृत अनुकूल होता है।

8. शेरशाह सूरी द्वारा निर्मित शाही राजमार्ग को ब्रिटिश शासन के दौरान क्या नाम दिया गया था?
(A) ग्रांड ट्रंक (जी. टी.) रोड
(B) राष्ट्रीय महामार्ग
(C) स्वर्णिम चतुर्भुज
(D) सीमांत सड़क

9. सीमा सड़क संगठन (बी.आर.ओ.) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इसकी स्थापना मई 1960 में हुई थी।

(C) ये सड़क यातायात के 40 प्रतिशत भाग का वहन करते हैं।
(D) ये केवल राज्यों की राजधानियों को जोड़ते हैं।

52. निम्नलिखित में से कौन सा शहर स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना का हिस्सा नहीं है?
(A) दिल्ली
(B) मुंबई
(C) कोलकाता
(D) हैदराबाद

53. 'संचार' से आपका क्या तात्पर्य है?
(A) वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना
(B) यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना
(C) विचारों, दर्शन और संदेशों का विनिमय करना
(D) कच्चे माल का कारखानों तक परिवहन

54. भारत में पाइपलाइन परिवहन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह गैसों और तरल पदार्थों के लंबी दूरी के परिवहन के लिए उपयुक्त है।
2. इसके द्वारा ठोस पदार्थों को घोल या गारा में बदलकर परिवहित नहीं किया जा सकता है।
3. आयल इंडिया लिमिटेड (O.I.L.) कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस के अन्वेषण, उत्पादन और परिवहन में संलग्न है।
4. गेल (इंडिया) लिमिटेड की स्थापना 1984 में प्राकृतिक गैस के परिवहन और विपणन के लिए की गई थी।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 3 और 4
(C) केवल 2 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

55. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन 1: जल परिवहन, परिवहन का सबसे सस्ता साधन है।
कथन 2: यह ईंधन-दक्ष तथा पारिस्थितिकी अनुकूल परिवहन प्रणाली है।
(A) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।
(B) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(C) दोनों कथन गलत हैं।
(D) दोनों कथन सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।

56. भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् सड़कों की दशा सुधारने के लिए कौन सी योजना आरंभ की गई थी?
(A) बीस वर्षीय सड़क योजना (1961)
(B) नागपुर योजना
(C) प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना
(D) भारतमाला परियोजना

57. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): राष्ट्रीय महामार्गों की लंबाई पूरे देश की कुल सड़कों की लंबाई की मात्र 2 प्रतिशत है।
कारण (R): ये सड़क यातायात के 40 प्रतिशत भाग का वहन करते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

58. बड़ी लाइन (Broad Gauge) में रेल पटरियों के बीच की दूरी कितनी होती है?
(A) 1.676 मीटर
(B) 1.000 मीटर
(C) 0.762 मीटर
(D) 2.000 मीटर

59. केरल का कौन सा विशिष्ट जलरुप अंतःस्थलीय जलमार्ग के रुप में महत्वपूर्ण है और पर्यटकों को आकर्षित करता है?
(A) डेल्टा
(B) लैगून
(C) प्रवाल द्वीप
(D) पश्च जल (कयाल)

60. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (जलमार्ग)
P. रा.ज.मा. 1
Q. रा.ज.मा. 2
R. रा.ज.मा. 3
S. रा.ज.मा. 5
List II: (विस्तार)
1. सदिया-धुबरी
2. कोट्टापुरम-कोलम
3. मातई नदी, महानदी डेल्टा आदि
4. प्रयागराज-हल्दिया
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

61. भारतीय रेल के मीटर गेज की कुल लंबाई (2019-20) कितनी थी?
(A) 63950 कि.मी.
(B) 1604 कि.मी.
(C) 2402 कि.मी.
(D) 67956 कि.मी.

62. प्रसिद्ध नेहरु ट्रॉफी नौकादौड़ (वल्लामकाली) का आयोजन कहाँ किया जाता है?
(A) गंगा नदी में
(B) ब्रह्मपुत्र नदी में
(C) चिल्का झील में
(D) केरल के पश्च जल (कयाल) में

63. भारत के सड़क जाल (2020) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. कुल लंबाई 62,15,797 कि.मी. थी।
2. राष्ट्रीय महामार्गों की लंबाई 1,36,440 कि.मी. थी।
3. राज्य महामार्गों की लंबाई 1,76,818 कि.मी. थी।
4. अन्य सड़कों की लंबाई राष्ट्रीय और राज्य महामार्गों की संयुक्त लंबाई से अधिक है।
5. ग्रामीण सड़कें 'अन्य सड़कों' का एक बड़ा हिस्सा हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

64. वर्तमान में ग्रांड ट्रंक (जी. टी.) रोड किन दो शहरों के बीच विस्तृत है?
(A) कोलकाता से पेशावर
(B) अमृतसर से कोलकाता
(C) दिल्ली से अमृतसर
(D) सिंधु घाटी से सोनार घाटी

65. निम्नलिखित में से कौन सा एक सार्वजनिक संचार माध्यम नहीं है?
(A) रेडियो
(B) फैक्स
(C) समाचार पत्र
(D) सिनेमा

66. भारतीय उपग्रह प्रक्षेपण वाहन का नाम क्या है जिसे भारत ने स्वयं विकसित किया है?
(A) पी एस एल वी (पोलर सेटेलाइट लॉन्च वेहिकल)
(B) आर्यभट्ट
(C) भास्कर
(D) जी एस एल वी (जिओसिंक्रोनस सेटेलाइट लॉन्च वेहिकल)

67. 1943 में कौन सी योजना बनाकर भारत में सड़क परिवहन के विकास का पहला गंभीर प्रयास किया गया?
(A) मुंबई योजना
(B) दिल्ली योजना
(C) नागपुर योजना
(D) कोलकाता योजना

68. निम्नलिखित में से किस वर्ष में पहला रेडियो कार्यक्रम प्रसारित हुआ था?
(A) 1911
(B) 1927
(C) 1936
(D) 1923

69. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): वायु परिवहन भारत जैसे विस्तृत देश के लिए बहुत आवश्यक है।
कारण (R): भारत में दूरियाँ बहुत लंबी हैं तथा भूभाग एवं जलवायवी दशाएँ अत्यंत विविधतापूर्ण हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

70. ज़िला सड़कें किन्हें जोड़ती हैं?
(A) राज्य की राजधानी को जिला मुख्यालयों से
(B) जिला मुख्यालयों को ज़िले के अन्य महत्वपूर्ण स्थलों से
(C) गाँवों को शहरों से
(D) प्रमुख नगरों को रेलवे जंक्शनों से

71. भारत में परिवहन के साधनों के विकास की निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. आयल इंडिया लिमिटेड (ओ.आई.एल.) का निगमन
2. सीमा सड़क संगठन (बी.आर.ओ.) की स्थापना
3. गेल (इंडिया) लिमिटेड की स्थापना
4. भारतीय राष्ट्रीय महामार्ग प्राधिकरण (एन.एच.ए.आई.) का प्रचालन

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 2, 3, 1, 4

72. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन 1: स्वर्णिम चतुर्भुज के निर्माण से भारत के महानगरों के बीच समय-दूरी तथा यातायात की लागत महत्वपूर्ण रूप से कम होगी।
कथन 2: यह परियोजना 4/6 लेन वाले उच्च सघनता के यातायात गलियारे प्रदान करती है।
(A) कथन 1 सही है, किन्तु कथन 2 गलत है।
(B) कथन 1 गलत है, किन्तु कथन 2 सही है।
(C) दोनों कथन सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
(D) दोनों कथन सही हैं, लेकिन कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता।

73. राष्ट्रीय महामार्ग विकास परियोजनाओं (NHDP) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. स्वर्णिम चतुर्भुज चार महानगरों - दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, कोलकाता को जोड़ता है।
2. उत्तर-दक्षिण गलियारा श्रीनगर को कन्याकुमारी से जोड़ता है।
3. पूर्व-पश्चिम गलियारा सिलचर को पोरबंदर से जोड़ता है।
4. इन परियोजनाओं का क्रियान्वयन बी.आर.ओ. द्वारा किया जा रहा है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

74. भारतीय रेल का कौन सा मंडल (जोन) दो अलग-अलग मुख्यालयों से संचालित होता है?
(A) वेस्टर्न
(B) ईस्टर्न
(C) सदर्न
(D) ऐसा कोई मंडल नहीं है

75. 1976 में टी.वी. को ऑल इंडिया रेडियो से अलग करके क्या नाम दिया गया?
(A) आकाशवाणी
(B) प्रसार भारती
(C) डीडी भारती
(D) दूरदर्शन (डी.डी.)

76. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (परिवहन घटना)
P. भारत की पहली रेल लाइन
Q. भारत में वायु परिवहन की शुरुआत
R. कोंकण रेलवे का निर्माण
S. रेडियो क्लब ऑफ बाम्बे द्वारा प्रसारण

List II: (वर्ष)
1. 1911
2. 1998
3. 1853
4. 1923

(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

77. निम्नलिखित में से कौन सा भारत का प्रमुख पत्तन नहीं है?
(A) मुंबई
(B) चेन्नई
(C) पोर्ट ब्लेयर
(D) विशाखापत्तनम

78. निम्नलिखित में से कौन सी एक वैयक्तिक संचार सेवा है जो उपयोगकर्ता को ज्ञान एवं सूचना की दुनिया में सीधे पहुँच बनाने में सहायक होती है?
(A) टेलीफ़ोन के माध्यम से प्रत्यक्ष संवाद स्थापित करने वाली सेवा
(B) दूरदर्शन के माध्यम से प्रसारित होने वाली दृश्य-श्रव्य सेवाएँ
(C) दैनिक समाचार पत्रों द्वारा प्रदान की जाने वाली सूचना सेवा
(D) ज्ञान एवं सूचना की दुनिया तक सीधे पहुँच प्रदान करने वाला माध्यम

79. भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. INSAT की स्थापना 1983 में हुई थी।
2. IRS उपग्रह प्रणाली मार्च 1988 में आरंभ हुई।
3. भारत ने अपना स्वयं का प्रक्षेपण वाहन पी एस एल वी विकसित किया है।
4. NRSC हैदराबाद आँकड़ों के अधिग्रहण और प्रक्रमण की सुविधा देता है।
5. IRS उपग्रहों का उपयोग केवल दूरसंचार के लिए किया जाता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2, 3 और 4
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

80. 'नागपुर योजना' क्यों क्रियान्वित नहीं हो पाई?
(A) वित्तीय संसाधनों की अत्यधिक कमी एवं बजटीय बाधाओं के कारण
(B) रजवाड़ों और ब्रिटिश भारत के मध्य समन्वय एवं सहयोग के अभाव में
(C) द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उत्पन्न वैश्विक परिस्थितियों के कारण
(D) सड़क निर्माण हेतु आवश्यक उन्नत तकनीकी विशेषज्ञता की अनुपलब्धता में

81. भारत में लगभग 14,500 कि.मी. लंबा जलमार्ग नौकायन हेतु उपलब्ध है, जो देश के कुल परिवहन में लगभग कितना योगदान देता है?
(A) 1%
(B) 10%
(C) 5%
(D) 15%

82. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): इंटरनेट ने संचार के क्षेत्र में क्रांति ला दी है।
कारण (R): यह ई-कॉमर्स तथा मौद्रिक लेन-देन के लिए अधिकाधिक प्रयोग में लाया जा रहा है।

कथन 1: भारत में रेलमार्गों का विकास ब्रिटिश उपनिवेशवाद के दौरान हुआ।
कथन 2: इन रेलमार्गों का विकास मुख्य रूप से भारत के आर्थिक विकास के लिए किया गया था।
(A) कथन 1 सही है, किन्तु कथन 2 गलत है।
(B) कथन 1 गलत है, किन्तु कथन 2 सही है।
(C) दोनों कथन सही हैं।
(D) दोनों कथन गलत हैं।

104. आयल इंडिया लिमिटेड (O.I.L.) को एक company के रूप में कब निगमित किया गया?
(A) 1959
(B) 1947
(C) 1966
(D) 1984

105. दूरसंचार, मौसम विज्ञान और अन्य कार्यक्रमों के लिए उपयोगी बहुउद्देश्यीय उपग्रह प्रणाली कौन सी है?
(A) IRS
(B) PSLV
(C) INSAT
(D) NRSC

106. भारत में अंतःस्थलीय जलमार्गों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. रेलमार्गों के आगमन से पहले यह परिवहन की प्रमुख विधा थी।
2. इसकी कुल नौकायन योग्य लंबाई 14,500 कि.मी. है।
3. यह देश के परिवहन में 10% का योगदान देता है।
4. सिंचाई के लिए जल के बँटवारे ने इसे प्रभावित किया है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 2, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

107. राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-2 (रा.ज.मा. 2) किस नदी पर स्थित है?
(A) गंगा
(B) गोदावरी
(C) नर्मदा
(D) ब्रह्मपुत्र

108. निम्नलिखित में से कौन-सा राष्ट्रीय जलमार्ग पश्चिमी तट नहर, चंपाकारा नहर और उद्योग मंडल नहरों को सम्मिलित करता है?
(A) रा.ज.मा. 1
(B) रा.ज.मा. 3
(C) रा.ज.मा. 2
(D) रा.ज.मा. 4

109. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): ग्रामीण सड़कों के घनत्व में प्रादेशिक विषमता पाई जाती है।
कारण (R): पर्वतीय, पठारी एवं वनीय क्षेत्रों में ग्रामीण सड़कों का घनत्व बहुत कम होता है क्योंकि वहाँ निर्माण करना कठिन और महंगा होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

110. भारतीय रेल की कुल लंबाई (रेलवे ईयर बुक 2019-20) कितनी है?
(A) 5,846 कि.मी.
(B) 62,16,000 कि.मी.
(C) 1,36,440 कि.मी.
(D) 67,956 कि.मी.

111. भारत में छोटी लाइन (Narrow Gauge) की कुल लंबाई (2019-20) कितनी है?
(A) 1604 कि.मी.
(B) 63950 कि.मी.
(C) 2402 कि.मी.
(D) 34 कि.मी.

112. भारत में टेलीविजन प्रसारण के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इसकी शुरुआत 1959 में दिल्ली से हुई।
2. 1972 के बाद कई अन्य केंद्र चालू हुए।
3. 1976 में इसे दूरदर्शन नाम दिया गया।
4. INSAT-1A के चालू होने के बाद साझा राष्ट्रीय कार्यक्रमों की शुरुआत हुई।
5. प्रारंभ में यह सेवा पूरे देश में उपलब्ध थी।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2, 3 और 4
(C) केवल 3, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4, 5

113. उपग्रह से प्राप्त चित्रों का उपयोग निम्नलिखित में से किस कार्य के लिए नहीं किया जा सकता है?
(A) मौसम के पूर्वानुमान
(B) ई-मेल भेजना
(C) प्राकृतिक आपदाओं की निगरानी
(D) सीमा क्षेत्रों की चौकसी

114. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन कोंकण रेलवे के बारे में असत्य है?

3. 67,956 कि.मी.
4. 0.762 मीटर
(A) P-1, Q-2, R-4, S-3
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

94. महात्मा गांधी के अनुसार, भारतीय रेलवे ने स्वतंत्रता संग्राम में कैसे योगदान दिया?
(A) तीव्र गति से सेना का परिवहन करके
(B) अंग्रेजों को आर्थिक लाभ पहुँचाकर
(C) डाक सेवाओं में तेजी लाकर
(D) विविध संस्कृति के लोगों को एक साथ लाकर

95. भारत के गैस बुनियादी ढाँचे को 'गैस ग्रिड' के रूप में 34000 किलोमीटर तक पहुँचाने की संभावना है। इस विकास को किस पाइपलाइन ने गति प्रदान की?
(A) हजीरा-विविजय-जगदीशपुर (HVJ) अंतर-राज्यीय पाइपलाइन परियोजना
(B) उत्तर-पूर्वी भारत की प्रमुख नहरकटिया-बरौनी पाइपलाइन प्रणाली
(C) गुजरात क्षेत्र की महत्वपूर्ण मुंबई-अंकलेश्वर पाइपलाइन परियोजना
(D) उत्तर-पश्चिमी भारत की विशाल कांडला-भटिंडा पाइपलाइन प्रणाली

96. भारत के महासागरीय मार्गों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत के पास द्वीपों सहित 7,517 कि.मी. लंबा समुद्री तट है।
2. 12 प्रमुख तथा 200 गौण पत्तन इन मार्गों को संरचनात्मक आधार प्रदान करते हैं।
3. मूल्य के अनुसार लगभग 95% विदेशी व्यापार इन मार्गों से होता है।
4. इन मार्गों का उपयोग देश की मुख्य भूमि तथा द्वीपों के बीच परिवहन के लिए भी होता है।
5. यह जल परिवहन का सबसे महंगा साधन है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 1, 2, 3 और 4
(C) केवल 3, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4, 5

97. 'अमन सेतु' किन दो स्थानों के मध्य स्थित है?
(A) दिल्ली और लाहौर
(B) बारामुला और मुज़फ़्फ़राबाद
(C) मनाली और लेह
(D) अमृतसर और वाघा

98. वह कौन सा परिवहन का साधन है जो वस्तुओं को उत्पादन स्थलों से बाज़ार तक पहुँचाता है?
(A) परिवहन (सामान्य रूप से)
(B) केवल रेल
(C) केवल सड़क
(D) केवल वायुमार्ग

99. भारत में जल परिवहन के विकास की निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. अंतः स्थलीय जलमार्ग प्राधिकरण की स्थापना
2. नेहरू ट्रॉफी नौकादौड़ का प्रचलन
3. राष्ट्रीय जलमार्ग अधिनियम का पारित होना
4. रा.ज.मा.-1 का विकास
(A) 2, 1, 4, 3
(B) 1, 2, 4, 3
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 1, 4, 2, 3

100. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'अन्य सड़कों' की श्रेणी में आता है?
(A) केवल सीमांत सड़कें
(B) केवल अंतर्राष्ट्रीय महामार्ग
(C) केवल ग्रामीण सड़कें
(D) सीमांत सड़कें एवं अंतर्राष्ट्रीय महामार्ग दोनों

101. भारत में सड़क परिवहन की प्रमुख समस्या क्या है, जैसा कि 1961 की बीस वर्षीय सड़क योजना से पहले थी?
(A) निर्मित सड़कों की भौतिक गुणवत्ता का अत्यधिक उत्कृष्ट होना
(B) सड़कों का संकेंद्रण केवल दूरस्थ एवं ग्रामीण अंचलों में होना
(C) सड़कों का संकेंद्रण केवल नगरों एवं उनके निकटवर्ती क्षेत्रों में होना
(D) देश में सड़कों का कोई औपचारिक या संगठित जाल उपलब्ध न होना

102. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (शहर)
P. जयपुर
Q. हाजीपुर
R. हुबली
S. बिलासपुर

List II: (रेलवे मंडल मुख्यालय)
1. साउथ ईस्ट सेंट्रल
2. साउथ वेस्टर्न
3. नार्थ वेस्टर्न
4. ईस्ट सेंट्रल
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

103. नीचे दो कथन दिए गए हैं:

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

83. ऑल इंडिया रेडियो का नाम बदलकर 'आकाशवाणी' किस वर्ष में किया गया?
(A) 1930
(B) 1936
(C) 1957
(D) 1976

84. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) छोटी लाइन की रेल पटरियों के बीच की दूरी 0.762 मीटर या 0.610 मीटर होती है।
(B) मीटर लाइन की रेल पटरियों के बीच की दूरी एक मीटर होती है।
(C) बड़ी लाइन की रेल पटरियों के बीच की दूरी 1.676 मीटर होती है।
(D) भारत में छोटी लाइन की लंबाई बड़ी लाइन से अधिक है।

85. 'पवन हंस' लिमिटेड मुख्यतः किस सेक्टर के लिए हेलीकॉप्टर सेवाएँ उपलब्ध कराता है?
(A) पर्यटन सेक्टर
(B) कृषि सेक्टर
(C) पेट्रोलियम सेक्टर
(D) health सेक्टर

86. राष्ट्रीय जलमार्ग अधिनियम, 2016 के द्वारा कितने अंतर्देशीय जलमार्गों को राष्ट्रीय जलमार्ग घोषित किया गया है?
(A) 5
(B) 111
(C) 50
(D) 200

87. भारत में टेलीविजन के विस्तार में किस उपग्रह प्रणाली ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?
(A) IRS (इंडियन रिमोट सेंसिंग)
(B) आर्यभट्ट
(C) चंद्रयान
(D) INSAT (इंडियन नेशनल सेटेलाइट)

88. निम्नलिखित में से कौन सा राष्ट्रीय जलमार्ग (रा.ज.मा.) और उसके विस्तार का सही युग्म है?
(A) रा.ज.मा. 3 - कोट्टापुरम-कोलम
(B) रा.ज.मा. 1 - सदिया-धुबरी
(C) रा.ज.मा. 2 - प्रयागराज-हल्दिया
(D) रा.ज.मा. 4 - मातई नदी विस्तार

89. भारतीय रेलवे के आधुनिकीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. मीटर तथा नैरो गेज रेलमार्गों को ब्रॉड गेज में बदलने का कार्यक्रम शुरु किया गया।
2. वाष्पचालित इंजनों के स्थान पर डीज़ल और विद्युत इंजन लाए गए।
3. इससे रेलों की गति और ढुलाई क्षमता दोनों में वृद्धि हुई है।
4. वाष्प इंजनों के प्रतिस्थापन से रेलवे स्टेशनों का पर्यावरण खराब हुआ है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

90. सीमा सड़क संगठन (BRO) द्वारा बनाई गई चंडीगढ़-मनाली-लेह सड़क समुद्र तल से औसतन कितनी ऊँचाई पर स्थित है?
(A) 4,270 मीटर
(B) 3,000 मीटर
(C) 5,400 मीटर
(D) 2,500 मीटर

91. भारत में टेलीविज़न प्रसारण की शुरुआत किस वर्ष हुई?
(A) 1957
(B) 1972
(C) 1976
(D) 1959

92. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): कोंकण रेलवे को अभियांत्रिकी का एक अनूठा चमत्कार माना जाता है।
कारण (R): यह रेलमार्ग 146 नदियों व धाराओं तथा 2000 पुलों एवं 91 सुरंगों को पार करता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

93. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (गेज)
P. बड़ी लाइन (Broad Gauge)
Q. मीटर लाइन (Meter Gauge)
R. छोटी लाइन (Narrow Gauge)
S. कुल रेल जाल (2019-20)

List II: (दूरी/लंबाई)
1. 1.0 मीटर
2. 1.676 मीटर

(A) यह महाराष्ट्र, गोवा तथा केरल राज्यों की संयुक्त परियोजना है।
(B) यह 760 कि.मी. लंबा है।
(C) यह रेलमार्ग 91 सुरंगों को पार करता है।
(D) इसका निर्माण 1998 में हुआ था।

115. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (संचार माध्यम)
P. इंटरनेट
Q. रेडियो
R. टेलीविज़न
S. उपग्रह
List II: (विशेषता)
1. दृश्य-श्रव्य माध्यम
2. ई-कॉमर्स और मौद्रिक लेन-देन
3. प्राकृतिक आपदाओं की निगरानी
4. आकाशवाणी
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

116. भारतीय राष्ट्रीय महामार्गों की लंबाई 1951 से 2020 तक कितनी बढ़ी है?
(A) 19,700 कि.मी. से 62,160 कि.मी.
(B) 34,000 कि.मी. से 1,36,440 कि.मी.
(C) 1,000 कि.मी. से 10,000 कि.मी.
(D) 19,700 कि.मी. से 1,36,440 कि.मी.

117. पूर्व-पश्चिम गलियारा किन दो स्थानों को जोड़ता है?
(A) श्रीनगर से कन्याकुमारी
(B) दिल्ली से कोलकाता
(C) असम में सिलचर से गुजरात में पोरबंदर
(D) मुंबई से चेन्नई

118. भारत के आर्थिक विकास में सड़कों की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. सड़कें छोटी दूरियों के लिए सबसे उपयुक्त परिवहन साधन हैं।
2. ये कृषि उपज को बाजारों तक पहुँचाने में मदद करती हैं।
3. ये औद्योगिक विकास के लिए कच्चा माल और तैयार माल पहुँचाती हैं।
4. ये केवल बड़े शहरों के विकास में ही सहायक हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

119. पाइपलाइन द्वारा ठोस पदार्थों को परिवहित करने के लिए क्या करना पड़ता है?
(A) उन्हें गर्म करना पड़ता है।
(B) उन्हें ठंडा करना पड़ता है।
(C) उन्हें छोटे टुकड़ों में तोड़ना पड़ता है।
(D) उन्हें घोल या गारा (स्लरी) में बदलना पड़ता है।

120. भारत में अंतर्देशीय जल परिवहन की एक प्रमुख चुनौती क्या है?
(A) रेल व सड़क परिवहन से मिलने वाली अत्यधिक कठिन व्यावसायिक प्रतियोगिता
(B) संचालन हेतु लगने वाली ईंधन की निरंतर बढ़ती हुई उच्च लागत
(C) गंतव्य तक पहुँचने के लिए परिवहन की तीव्र गति का पूर्ण अभाव
(D) तटवर्ती क्षेत्रों में आधुनिक बंदरगाहों और टर्मिनलों की घोर अनुपलब्धता

121. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): भारत का सड़क जाल विश्व का दूसरा सबसे बड़ा सड़क-जाल है।
कारण (R): भारत में सड़कों का निर्माण प्राचीन काल से ही होता आ रहा है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

122. 'संचार जाल' के अंतर्गत आरंभिक समय में संदेश भेजने के लिए निम्नलिखित में से किसका उपयोग नहीं किया जाता था?
(A) टेलीग्राफ द्वारा
(B) ढोल बजाकर
(C) आग या धुएँ के संकेतों द्वारा
(D) तीव्र धावकों द्वारा

123. भारत की पहली रेल लाइन (मुंबई से थाणे) की लंबाई कितनी थी?
(A) 10 कि.मी.
(B) 100 कि.मी.
(C) 50 कि.मी.
(D) 34 कि.मी.

124. भारत में परिवहन एवं संचार के विकास की निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. भारत की पहली रेल लाइन का निर्माण
2. भारत में वायु परिवहन की शुरुआत
3. पहले रेडियो कार्यक्रम का प्रसारण
4. INSAT प्रणाली की स्थापना
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4

(C) 1, 3, 2, 4
(D) 3, 1, 2, 4

125. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (परिवहन मोड)
P. सड़क
Q. रेल
R. जल
S. वायु
List II: (विशेषता)
1. सबसे सस्ता साधन
2. तीव्रतम साधन
3. घर-घर तक सेवा
4. भारी माल के लिए लंबी दूरी
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

126. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'भारतमाला परियोजना' के बारे में सही नहीं है?
(A) यह लगभग 26,000 किलोमीटर लंबे आर्थिक गलियारों से संबंधित है।
(B) इसका उद्देश्य नगरों से होकर जाने वाले यातायात की भीड़ को कम करना है।
(C) यह माल ढुलाई को सड़क मार्ग से ले जाने में सहायक होगी।
(D) इसमें केवल राष्ट्रीय महामार्गों का निर्माण शामिल है।

127. गेल (इंडिया) लिमिटेड की स्थापना किस उद्देश्य से की गई थी?
(A) प्राकृतिक गैस के परिवहन, प्रसंस्करण और विपणन के लिए
(B) कच्चे तेल का अन्वेषण करने के लिए
(C) तेल शोधन कारखाने स्थापित करने के लिए
(D) पेट्रोलियम उत्पादों का खुदरा विक्रय करने के लिए

128. भारत के राष्ट्रीय महामार्गों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इनका निर्माण और अनुरक्षण केंद्र सरकार करती है।
2. ये राज्यों की राजधानियों, प्रमुख नगरों और पत्तनों को जोड़ते हैं।
3. इनका उपयोग अंतर्राज्यीय परिवहन और रक्षा सामग्री के आवागमन के लिए होता है।
4. ये कुल सड़क यातायात का मात्र 10% वहन करते हैं।
5. 2020 में इनकी कुल लंबाई 1,36,440 कि.मी. थी।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2, 3 और 5
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4, 5

129. मेट्रो रेल का प्रचालन किस प्रकार नगरीय पर्यावरण में सुधार करता है?
(A) ध्वनि प्रदूषण को कम करके
(B) वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने में मदद करके
(C) जल प्रदूषण को रोककर
(D) यातायात जाम को पूरी तरह समाप्त करके

130. राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या 1 (रा.ज.मा.-1) पर यंत्रीकृत नौकाओं द्वारा कहाँ तक नौकायन किया जा सकता है?
(A) पटना तक
(B) हरिद्वार तक
(C) प्रयागराज तक
(D) फरक्का तक

131. भारत में सड़क परिवहन द्वारा कितना प्रतिशत यात्री यातायात का वहन किया जाता है?
(A) 40 प्रतिशत
(B) 70 प्रतिशत
(C) 85 प्रतिशत
(D) 95 प्रतिशत

132. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): डीज़ल और विद्युत इंजनों के प्रयोग से भारतीय रेल की गति और ढुलाई क्षमता बढ़ी है।
कारण (R): कोयले से चलने वाले वाष्प इंजनों की तुलना में डीज़ल और विद्युत इंजन अधिक शक्तिशाली और कुशल होते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

133. असम के नहरकटिया तेल क्षेत्र से बरौनी के तेल शोधन कारखाने तक बनी पाइपलाइन की लंबाई कितनी थी?
(A) 760 कि.मी.
(B) 1700 कि.मी.
(C) 1157 कि.मी.
(D) 205 कि.मी.

134. निम्नलिखित में से कौन सा देशव्यापी जलमार्ग नेटवर्क बनाने और अंतर्देशीय जल परिवहन को बढ़ावा देने के लिए उत्तरदायी है?
(A) भारतीय राष्ट्रीय महामार्ग प्राधिकरण
(B) अंतः स्थलीय जलमार्ग प्राधिकरण
(C) भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
(D) सीमा सड़क संगठन

135. अटल टनल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इसकी लंबाई 9.02 किलोमीटर है।
2. इसका निर्माण सीमा सड़क संगठन (बी.आर.ओ.) द्वारा किया गया है।
3. यह मनाली को लाहौल-स्पीति घाटी से जोड़ती है।
4. यह औसत समुद्र तल से 3000 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

136. यदि किसी व्यक्ति को पर्वतीय क्षेत्रों में या उत्तर-पूर्व सेक्टर में यात्रा करनी हो, तो कौन सी हेलीकॉप्टर सेवा विशेष रूप से उपयोगी है?
(A) पवन हंस
(B) एयर इंडिया
(C) इंडिगो
(D) स्पाइसजेट

137. भारतीय रेल का साउथ सेंट्रल मंडल का मुख्यालय कहाँ है?
(A) चेन्नई
(B) हुबली
(C) सिकंदराबाद
(D) बिलासपुर

138. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (परिवहन परियोजना/योजना)
P. स्वर्णिम चतुर्भुज
Q. भारतमाला
R. उड़ान योजना
S. कोंकण रेलवे
List II: (मुख्य उद्देश्य/प्रकार)
1. क्षेत्रीय कनेक्टिविटी
2. आर्थिक गलियारे
3. महानगरों को जोड़ना
4. पश्चिमी तट रेल संपर्क
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-2, R-1, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

139. इंडियन रिमोट सेंसिंग (IRS) उपग्रहों द्वारा एकत्रित वर्णक्रमीय बैंड डेटा का उपयोग किस प्रमुख क्षेत्र में होता है?
(A) केवल मनोरंजन कार्यक्रमों के प्रसारण में
(B) केवल दूरसंचार सेवाओं में
(C) केवल इंटरनेट प्रदान करने में
(D) प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन में

140. निम्नलिखित में से किस परिवहन साधन को 'परिवहन का सबसे सस्ता साधन' माना जाता है?
(A) रेल परिवहन
(B) जल परिवहन
(C) सड़क परिवहन
(D) वायु परिवहन

141. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत है?
(A) नार्दन रेलवे - नई दिल्ली
(B) ईस्टर्न रेलवे - कोलकाता
(C) वेस्टर्न रेलवे - जयपुर
(D) सदर्न रेलवे - चेन्नई

142. भारत में सड़क नेटवर्क के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह विश्व का दूसरा सबसे बड़ा सड़क नेटवर्क है।
2. इसकी कुल लंबाई 62 लाख कि.मी. से अधिक है।
3. राष्ट्रीय महामार्ग कुल सड़कों का 10% हैं।
4. ग्रामीण सड़कें कुल सड़कों का लगभग 80% हैं।
5. 'नागपुर योजना' सफलतापूर्वक लागू की गई थी।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 1, 2, 3 और 4
(C) केवल 3, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4, 5

143. नीचे दो कथन दिए गए हैं:
कथन 1: हाल के वर्षों में भारत का गैस पाइपलाइन नेटवर्क दस गुना से अधिक बढ़ गया है।
कथन 2: एचवीजे पाइपलाइन ने भारतीय गैस बाजार के विकास को गति प्रदान की।
(A) कथन 1 सही है, किन्तु कथन 2 गलत है।
(B) कथन 1 गलत है, किन्तु कथन 2 सही है।
(C) दोनों कथन सही हैं, और कथन 2, कथन 1 के लिए एक कारण है।
(D) दोनों कथन सही हैं, लेकिन कथन 2, कथन 1 का कारण नहीं है।

144. भारत में किस प्रकार की रेल लाइन की लंबाई सबसे अधिक है?
(A) मीटर लाइन (Meter Gauge)
(B) बड़ी लाइन (Broad Gauge)
(C) छोटी लाइन (Narrow Gauge)
(D) सभी की लंबाई बराबर है

145. मानव अपने विचारों, दर्शन और संदेशों का विनिमय करने के लिए किसका उपयोग करता है?
(A) केवल परिवहन
(B) संचार
(C) परिवहन और संचार दोनों
(D) न तो परिवहन न ही संचार

146. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है:
अभिकथन (A): इंटरनेट को वैयक्तिक संचार तंत्रों में सर्वाधिक प्रभावी एवं अधुनातन माना जाता है।
कारण (R): यह अपेक्षाकृत कम लागत में ई-मेल के माध्यम से सूचनाओं को अभिगम्यता प्रदान करता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) both सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

147. निम्नलिखित में से कौन सा भारत के पूर्वी तट पर स्थित राष्ट्रीय जलमार्ग से संबंधित है?
(A) रा.ज.मा. 3
(B) रा.ज.मा. 2
(C) रा.ज.मा. 5
(D) रा.ज.मा. 1

148. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
List I: (रेलवे मंडल)
P. नार्थ ईस्टर्न
Q. नार्थ ईस्ट फ्रंटियर
R. साउथ ईस्टर्न
S. वेस्ट सेंट्रल
List II: (मुख्यालय)
1. कोलकाता
2. जबलपुर
3. गोरखपुर
4. मालीगाँव (गुवाहाटी)
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

149. सीमा सड़क संगठन (BRO) की एक प्रमुख जिम्मेदारी क्या है, विशेषकर अति ऊँचाई वाले क्षेत्रों में?
(A) रेलवे लाइनों का रखरखाव
(B) हवाई अड्डों का निर्माण
(C) बर्फ़ हटाने की ज़िम्मेदारी
(D) बंदरगाहों का प्रबंधन

150. बीसवीं सदी के प्रारंभ में आधुनिक प्रकार का सड़क परिवहन अत्यंत सीमित होने का मुख्य कारण क्या था?
(A) ब्रिटिश सरकार की उदासीनता
(B) 1943 की 'नागपुर योजना' की विफलता से पहले का काल
(C) प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव
(D) धन और प्रौद्योगिकी का अभाव

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारत में सड़क परिवहन आर्थिक और सामाजिक विकास की आधारशिला है। यह न केवल वस्तुओं और लोगों की भौतिक गतिशीलता को सुगम बनाता है, बल्कि यह एक शक्तिशाली सामाजिक-आर्थिक एकीकरण उपकरण के रूप में भी कार्य करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में, सड़कों का विस्तार कृषि समृद्धि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह किसानों को अपनी उपज को दूर के बाजारों तक पहुँचाने में सक्षम बनाता है, जिससे उन्हें बेहतर मूल्य प्राप्त होता है और फसल के बाद होने वाले नुकसान में कमी आती है। इसके अतिरिक्त, बेहतर कनेक्टिविटी गैर-कृषि रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देती है और स्वास्थ्य तथा शिक्षा जैसी आवश्यक सेवाओं तक पहुँच में सुधार करती है, जिससे ग्रामीण जीवन स्तर में वृद्धि होती है। शहरी परिदृश्य में, सड़कें आर्थिक गतिविधियों की जीवन रेखा हैं, लेकिन वे यातायात की भीड़, प्रदूषण और दुर्घटनाओं जैसी गंभीर चुनौतियों का भी सामना करती हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए, सरकार स्मार्ट ट्रैफिक प्रबंधन प्रणालियों, सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देने और एक्सप्रेसवे तथा बाईपास के निर्माण में निवेश कर रही है। सड़क परिवहन का विकास क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने और दूरस्थ तथा पिछड़े क्षेत्रों को राष्ट्रीय मुख्यधारा से जोड़ने में एक निर्णायक भूमिका निभाता है, जिससे संतुलित क्षेत्रीय विकास सुनिश्चित होता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क संपर्क का विस्तार किस प्रकार कृषि समृद्धि में योगदान देता है?
(A) यह कृषि आदानों की लागत को कम करता है।
(B) यह किसानों को बेहतर बाजार पहुँच और मूल्य प्रदान करता है।
(C) यह सीधे तौर पर फसल की पैदावार को बढ़ाता है।
(D) यह खेती के लिए आवश्यक पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करता है।

152. अनुच्छेद के अनुसार, सड़क परिवहन का सामाजिक प्रभाव क्या है?
(A) यह दूरस्थ क्षेत्रों को मुख्यधारा से जोड़कर सामाजिक एकीकरण को सुगम बनाता है।
(B) यह मुख्य रूप से बड़े शहरी औद्योगिक क्षेत्रों में पर्याप्त रोजगार सृजित करता है।
(C) यह विकसित और पिछड़े क्षेत्रों के बीच क्षेत्रीय असमानताओं को और अधिक तीव्र करता है।
(D) यह स्थानीय पारंपरिक जीवन शैली और सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित करने में सहायक है।

153. शहरी क्षेत्रों में सड़क परिवहन से जुड़ी प्रमुख चुनौती निम्नलिखित में से कौन सी है?
(A) सड़कों के रखरखाव की कमी।
(B) वाहनों की कम गति।
(C) यातायात की भीड़ और प्रदूषण।

(D) सार्वजनिक परिवहन की अनुपलब्धता।

154. अनुच्छेद यह संकेत देता है कि सड़क विकास अप्रत्यक्ष रुप से मदद करता है:
(A) ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित कृषि-आधारित उद्योगों के निरंतर पतन को रोकने में।
(B) बढ़ते शहरीकरण के कारण शहरी आबादी के ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक प्रवास में।
(C) आधुनिक डिजिटल अर्थव्यवस्था में ऑनलाइन वाणिज्य के वैश्विक विकास को सीमित करने में।
(D) स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी अनिवार्य सेवाओं तक बेहतर पहुँच सुनिश्चित करने में।

155. इस अनुच्छेद का मुख्य विषय क्या है?
(A) आधुनिक भारत में सड़क निर्माण की विभिन्न उन्नत तकनीकें।
(B) शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में यातायात दुर्घटनाओं के मुख्य कारण।
(C) भारत में सड़क परिवहन का व्यापक आर्थिक और सामाजिक महत्व।
(D) भारत के विभिन्न राज्यों में सार्वजनिक परिवहन प्रणाली की विफलता।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारतीय रेल परिवहन प्रणाली वर्तमान में एक बड़े आधुनिकीकरण के दौर से गुज़र रही है, जिसका उद्देश्य दक्षता, गति और सुरक्षा में सुधार करना है। इस परिवर्तन का एक प्रमुख घटक समर्पित माल गलियारों (Dedicated Freight Corridors - DFCs) का विकास है। ये गलियारे मालगाड़ियों के लिए विशेष ट्रैक प्रदान करते हैं, जिससे वे यात्री ट्रेनों के साथ प्रतिस्पर्धा किए बिना उच्च गति और भारी भार के साथ चल सकती हैं। इसका परिणाम लॉजिस्टिक्स लागत में कमी और माल की त्वरित डिलीवरी के रूप में होता है। एक और महत्वपूर्ण पहल स्टेशन पुनर्विकास कार्यक्रम है, जिसके तहत प्रमुख स्टेशनों को विश्व स्तरीय सुविधाओं वाले 'मल्टी-मॉडल हब' में बदला जा रहा है, जो रेल, सड़क और मेट्रो परिवहन को एकीकृत करते हैं। इसके अलावा, 'वंदे भारत' जैसी सेमी-हाई-स्पीड ट्रेनों की शुरुआत यात्री अनुभव को बेहतर बना रही है। प्रौद्योगिकी और डिजिटलीकरण भी इस आधुनिकीकरण में केंद्रीय भूमिका निभा रहे हैं। ऑनलाइन टिकटिंग, रियल-टाइम ट्रेन ट्रैकिंग और स्वचालित सिग्नलिंग सिस्टम जैसी प्रणालियों ने न केवल यात्री सुविधा में वृद्धि की है, बल्कि परिचालन दक्षता और सुरक्षा को भी मजबूत किया है। इन प्रयासों का सामूहिक लक्ष्य भारतीय रेलवे को एक आधुनिक, टिकाऊ और आर्थिक रूप से व्यवहार्य परिवहन नेटवर्क बनाना है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. समर्पित माल गलियारों (DFCs) का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) रेल पटरियों की क्षमता को बढ़ाकर यात्री ट्रेनों की गति में वृद्धि करना।
(B) माल और यात्री यातायात को अलग कर माल ढुलाई को सुगम बनाना।
(C) रेलवे स्टेशनों का आधुनिकीकरण और उनका व्यापक स्तर पर सौंदर्यीकरण करना।
(D) देश के दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में रेल पटरियों का नया जाल बिछाना।

157. स्टेशन पुनर्विकास कार्यक्रम का लक्ष्य स्टेशनों को किस रुप में बदलना है?
(A) केवल प्रमुख शहरी केंद्रों में स्थित बड़े रिटेल शॉपिंग मॉल।
(B) केवल निजी और सार्वजनिक वाहनों के लिए आधुनिक पार्किंग सुविधाएँ।
(C) सांस्कृतिक विरासत को दर्शाने वाले ऐतिहासिक राष्ट्रीय स्मारक।
(D) विभिन्न परिवहन साधनों को एकीकृत करने वाले मल्टी-मॉडल हब।

158. डिजिटलीकरण ने भारतीय रेलवे को कैसे प्रभावित किया है?
(A) परिचालन दक्षता और यात्री सुविधाओं में व्यापक सुधार करना।
(B) विभिन्न मार्गों पर चलने वाली ट्रेनों के टिकट मूल्यों में उल्लेखनीय वृद्धि करना।
(C) केवल रेल यात्रा के दौरान प्रयुक्त होने वाली उन्नत सुरक्षा प्रणालियाँ सुधारना।
(D) कम मुनाफे वाले रुटों पर चलने वाली ट्रेनों की कुल संख्या को कम करना।

159. अनुच्छेद के अनुसार, माल और यात्री यातायात को अलग करने का तत्काल परिणाम क्या है?
(A) टिकटों की लागत में कमी।
(B) रेलवे कर्मचारियों के लिए बेहतर काम करने की स्थिति।
(C) मालगाड़ियों की गति और भार क्षमता में वृद्धि।
(D) स्टेशनों पर भीड़ में कमी।

160. भारतीय रेलवे के आधुनिकीकरण के प्रयासों का समग्र लक्ष्य क्या है?
(A) रेलवे को आधुनिक, टिकाऊ और आर्थिक रूप से व्यवहार्य बनाना।
(B) भारतीय रेल नेटवर्क की सभी सेवाओं को पूरी तरह से निजीकृत करना।
(C) रेलवे सेवाओं को केवल लंबी दूरी की अंतरराज्यीय यात्रा तक सीमित करना।
(D) पर्यावरण के अनुकूल पुराने पारंपरिक भाप इंजनों को फिर से वापस लाना।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारत में अंतःस्थलीय जलमार्ग परिवहन, देश की लॉजिस्टिक्स प्रणाली में क्रांति लाने की अपार क्षमता रखते हैं। सड़क और रेल परिवहन की तुलना में, यह भारी और स्थूल वस्तुओं की ढुलाई के लिए एक अत्यंत लागत-प्रभावी और पर्यावरण के

अनुकूल विकल्प प्रस्तुत करता है। प्रति टन-किलोमीटर ईंधन की खपत और कार्बन उत्सर्जन जलमार्गों पर काफी कम होता है, जो इसे एक हरित परिवहन माध्यम बनाता है। हालाँकि, इसकी क्षमता का पूर्ण उपयोग करने में कई चुनौतियाँ हैं। एक बड़ी बाधा नदियों में पानी के प्रवाह की मौसमी परिवर्तनशीलता है, जो वर्ष भर नौगम्यता को प्रभावित करती है। इसके लिए नियमित ड्रेजिंग (तलकर्षण) और नदी चैनलों के रखरखाव की आवश्यकता होती है। दूसरी चुनौती अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा है, जिसमें आधुनिक टर्मिनलों, भंडारण सुविधाओं और सबसे महत्वपूर्ण, अंतिम-मील कनेक्टिविटी का अभाव शामिल है, जो बंदरगाहों को भीभीतरी इलाकों से जोड़ सके। इन बाधाओं को दूर करने के लिए, सरकार ने 'राष्ट्रीय जलमार्ग अधिनियम' जैसे नीतिगत कदम उठाए हैं, जिसका उद्देश्य प्रमुख नदियों को राष्ट्रीय जलमार्ग के रूप में विकसित करना और एक एकीकृत जलमार्ग ग्रिड का निर्माण करना है। इन प्रयासों का सफल कार्यान्वयन भारत की परिवहन लागत को कम कर सकता है और आर्थिक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ा सकता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. अंतःस्थलीय जलमार्ग परिवहन का मुख्य आर्थिक लाभ क्या है?
(A) यह सबसे तीव्र परिवहन साधन है।
(B) इसमें किसी भी प्रकार के रखरखाव की आवश्यकता नहीं होती है।
(C) यह सभी प्रकार की वस्तुओं के लिए उपयुक्त है।
(D) यह भारी वस्तुओं के लिए लागत-प्रभावी है।

162. अनुच्छेद के अनुसार, जलमार्गों को पर्यावरण के अनुकूल क्यों माना जाता है?
(A) क्योंकि ये जलमार्ग पूरी तरह से सौर ऊर्जा तकनीक का उपयोग करते हैं।
(B) प्रति टन-किलोमीटर कम ईंधन खपत और निम्न कार्बन उत्सर्जन।
(C) क्योंकि इनके संचालन से किसी भी प्रकार के ध्वनि प्रदूषण नहीं होता है।
(D) क्योंकि ये कृत्रिम जलमार्ग जलीय पारिस्थितिकी और जीवन को बढ़ावा देते हैं।

163. भारत में अंतःस्थलीय जलमार्गों के संचालन में एक महत्वपूर्ण चुनौती क्या है?
(A) कुशल नाविकों की कमी।
(B) उच्च कर दरें।
(C) नदियों में जल स्तर का मौसमी उतार-चढ़ाव।
(D) जहाजों के निर्माण की उच्च लागत।

164. अनुच्छेद यह बताता है कि जलमार्गों को सफल बनाने के लिए क्या महत्वपूर्ण है?
(A) केवल मशीनों द्वारा प्रमुख नदियों की नियमित ड्रेजिंग और सफाई करना।
(B) उपभोक्ताओं के लिए जल परिवहन शुल्क को पूरी तरह से समाप्त कर देना।
(C) सभी क्षेत्रों में सड़क और रेल परिवहन प्रणालियों को पूरी तरह बदलना।
(D) टर्मिनलों और कनेक्टिविटी सहित एकीकृत बुनियादी ढाँचे का विकास।

165. सरकार द्वारा अंतःस्थलीय जलमार्गों को बढ़ावा देने वाली नीतियों का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) परिवहन लागत को कम करना और आर्थिक प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाना।
(B) तटीय और अंतःस्थलीय क्षेत्रों में केवल पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देना।
(C) समुद्री व्यापार के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय आयात-निर्यात को प्रतिबंधित करना।
(D) केवल नदी के किनारे रहने वाले स्थानीय समुदायों को रोजगार प्रदान करना।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

पाइपलाइन परिवहन भारत की ऊर्जा सुरक्षा रणनीति का एक अभिन्न और सामरिक रूप से महत्वपूर्ण घटक है। यह कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस जैसे हाइड्रोकार्बन के परिवहन के लिए सबसे सुरक्षित, कुशल और विश्वसनीय साधनों में से एक है। सड़क या रेल टैंकरों के विपरीत, पाइपलाइनें मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों या यातायात की भीड़ से अप्रभावित रहते हुए 24x7 निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करती हैं। यह निरंतर प्रवाह रिफाइनरियों और बिजली संयंत्रों के लिए महत्वपूर्ण है, जो देश की आर्थिक गतिविधियों को बनाए रखते हैं। सामरिक दृष्टिकोण से, पाइपलाइनें सतह परिवहन पर निर्भरता कम करती हैं, जिससे सड़कों और रेलवे पर भीड़ कम होती है और पारगमन के दौरान होने वाले नुकसान और चोरी का खतरा भी कम हो जाता है। हालाँकि, पाइपलाइन नेटवर्क के विकास में चुनौतियाँ भी हैं, जिनमें उच्च प्रारंभिक निवेश लागत और भूमि अधिग्रहण की जटिल प्रक्रियाएँ शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, इन महत्वपूर्ण संपत्तियों की सुरक्षा, विशेष रूप से दूरस्थ या संवेदनशील क्षेत्रों में, तोड़फोड़ के खिलाफ एक निरंतर चिंता का विषय है। इन चुनौतियों के बावजूद, सरकार एक व्यापक 'राष्ट्रीय गैस ग्रिड' बनाने की दिशा में सक्रिय रूप से काम कर रही है, ताकि देश के हर कोने तक स्वच्छ ऊर्जा की पहुँच सुनिश्चित हो सके, जो आर्थिक विकास और पर्यावरणीय स्थिरता दोनों के लिए आवश्यक है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. पाइपलाइन परिवहन की प्राथमिक सामरिक भूमिका क्या है?
(A) शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में यात्री परिवहन को सुगम बनाना।
(B) देश के लिए सुरक्षित और निर्बाध ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करना।
(C) दूरदराज के क्षेत्रों से कृषि उत्पादों का सुरक्षित परिवहन करना।
(D) राष्ट्रीय स्तर पर आधुनिक दूरसंचार सेवाओं का व्यापक

विस्तार करना।

167. सड़क/रेल टैंकरों की तुलना में पाइपलाइनों का एक प्रमुख लाभ क्या है?
(A) परियोजना के निर्माण के दौरान बहुत ही कम प्रारंभिक निवेश की लागत।
(B) मौसम और यातायात से अप्रभावित होकर निरंतर आपूर्ति प्रदान करना।
(C) किसी भी प्रकार के कठिन भौगोलिक इलाके में अत्यंत आसान स्थापना।
(D) परिचालन के दौरान तकनीकी प्रणालियों के लिए कम रखरखाव की आवश्यकता।

168. पाइपलाइन नेटवर्क के विकास में एक बड़ी चुनौती क्या है?
(A) उच्च प्रारंभिक निवेश और भूमि अधिग्रहण की कानूनी जटिलता।
(B) पाइपलाइन संचालन के लिए पर्याप्त संख्या में प्रशिक्षित ड्राइवरों की कमी।
(C) ईंधन पंपिंग स्टेशनों के संचालन के लिए लगने वाली उच्च परिचालन लागत।
(D) लंबी दूरी के परिवहन के दौरान उत्पादों की आवाजाही में गति की कमी।

169. "राष्ट्रीय गैस ग्रिड" की अवधारणा का क्या तात्पर्य है?
(A) केवल देश के प्रमुख महानगरों और औद्योगिक शहरों को गैस की आपूर्ति करना।
(B) आपातकालीन स्थिति में गैस भंडारण के लिए विशाल भूमिगत टैंकों का निर्माण।
(C) राष्ट्रव्यापी नेटवर्क जो ऊर्जा स्रोतों को उपभोक्ताओं से जोड़ता है।
(D) भविष्य में विदेशों से होने वाले गैस आयात पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाना।

170. अनुच्छेद के अनुसार, पाइपलाइनें किन अन्य परिवहन क्षेत्रों पर बोझ कम करती हैं?
(A) हवाई परिवहन और जलमार्ग।
(B) केवल हवाई परिवहन।
(C) केवल जलमार्ग।
(D) सड़क और रेल परिवहन।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत में उपग्रह संचार प्रौद्योगिकी ने सूचना प्रसार और शासन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है, जो देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। भारतीय उपग्रह कार्यक्रम को मुख्य रूप से दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है: संचार उपग्रह और सुदूर संवेदन (रिमोट सेंसिंग) उपग्रह। भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह (INSAT) और जीसैट (GSAT) श्रृंखला जैसे संचार उपग्रह दूरसंचार, टेलीविजन प्रसारण (DTH), और मौसम पूर्वानुमान के लिए रीढ़ की हड्डी हैं। इन्होंने टेली-एजुकेशन और टेली-मेडिसिन जैसी सेवाओं के माध्यम से दूरस्थ और दुर्गम क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा की पहुँच को संभव बनाया है। दूसरी ओर, भारतीय सुदूर संवेदन (IRS) उपग्रह, जैसे कि रिसोर्ससैट और कार्टोसैट श्रृंखला, पृथ्वी की सतह का अवलोकन करते हैं। इनसे प्राप्त डेटा का उपयोग कृषि में फसल की पैदावार का आकलन करने, शहरी नियोजन, जल संसाधन प्रबंधन, वन आवरण की निगरानी और सबसे महत्वपूर्ण, बाढ़ और चक्रवात जैसी प्राकृतिक आपदाओं के दौरान राहत और बचाव कार्यों के प्रबंधन में किया जाता है। इस प्रकार, उपग्रह प्रौद्योगिकी न केवल लोगों को जोड़ती है, बल्कि यह सतत विकास और आपदा प्रबंधन के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में भी कार्य करती है, जिससे यह भारत की तकनीकी प्रगति का एक अनिवार्य हिस्सा बन जाती है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. आईआरएस (IRS) जैसी सुदूर संवेदन उपग्रह श्रृंखला का प्राथमिक कार्य क्या है?
(A) मनोरंजन और समाचारों के लिए टेलीविजन संकेतों का निर्बाध प्रसारण करना।
(B) वैश्विक स्तर पर वायरलेस टेलीफोन कॉल और संचार को सक्षम बनाना।
(C) पृथ्वी का अवलोकन कर संसाधन प्रबंधन हेतु डेटा उपलब्ध कराना।
(D) गहरे अंतरिक्ष में विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक और खगोलीय प्रयोग करना।

172. इनसैट (INSAT) जैसी संचार उपग्रह श्रृंखला सामाजिक विकास में कैसे सहायता करती है?
(A) केवल शहरी क्षेत्रों में हाई-स्पीड इंटरनेट की गति को प्रभावी ढंग से बढ़ाकर।
(B) टेली-एजुकेशन और टेली-मेडिसिन के जरिए दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचना।
(C) नई प्रौद्योगिकियों के माध्यम से आधुनिक कृषि उपकरणों की लागत कम करके।
(D) सूचना प्रसार के लिए पुराने पारंपरिक रेडियो प्रसारण को पूरी तरह प्रतिस्थापित कर।

173. अनुच्छेद के अनुसार, उपग्रह आपदा प्रबंधन में कैसे सहायता करते हैं?
(A) तकनीकी हस्तक्षेप के माध्यम से प्राकृतिक आपदाओं को घटित होने से रोकना।
(B) आपदा से गंभीर रूप से प्रभावित लोगों को प्रत्यक्ष वित्तीय मुआवजा प्रदान करना।
(C) केवल भविष्य में आने वाली आपदाओं के बारे में सटीक भविष्यवाणियाँ करना।
(D) आपदाओं की निगरानी और राहत कार्यों में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करना।

174. अनुच्छेद भारत के उपग्रह कार्यक्रमों को किन दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित करता है?
(A) संचार और सुदूर संवेदन उपग्रह।

हवाई नेटवर्क की शुरुआत थी, जो आज वैश्विक स्तर पर भारत को व्यापारिक रूप से जोड़ती है।

11. (D) अंतर्राष्ट्रीय महामार्ग
भारत में सड़कों का औपचारिक वर्गीकरण उनके निर्माण, रखरखाव और प्रशासनिक उत्तरदायित्व के आधार पर किया गया है। इस व्यवस्था के तहत सड़कों को राष्ट्रीय महामार्ग, राज्य महामार्ग, जिला सड़कों और ग्रामीण सड़कों की श्रेणियों में बाँटा गया है। अंतर्राष्ट्रीय महामार्ग जैसा कोई अलग प्राथमिक वर्ग भारतीय सड़क सांख्यिकी के सामान्य वर्गीकरण का हिस्सा नहीं है, क्योंकि ये सड़कें भी आंतरिक रूप से इन्हीं श्रेणियों में आती हैं।

12. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
आधुनिक समय में रेल और सड़क परिवहन के विस्तार ने अंतःस्थलीय जलमार्गों की सापेक्षिक भूमिका को कम कर दिया है। इसका एक प्रमुख कारण नदियों के जल का बड़े पैमाने पर सिंचाई हेतु उपयोग किया जाना है, जिससे नदियों का जल स्तर नौसंचालन के लिए अपर्याप्त हो जाता है। इसके अलावा, नदियों में गाद जमा होने और अन्य बाधाओं के कारण जलमार्गों की परिवहन सक्षमता प्रभावित हुई है।

13. (A) केवल 1, 2 और 4
भारतीय राष्ट्रीय महामार्ग प्राधिकरण ने 1995 में अपना परिचालन शुरू किया और यह भूतल परिवहन मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त निकाय के रूप में कार्य करता है। इसका प्राथमिक कार्य राष्ट्रीय महामार्गों का विकास, रखरखाव और गुणवत्ता में सुधार करना है। यह प्राधिकरण राज्य महामार्गों के प्रबंधन के लिए उत्तरदायी नहीं है, क्योंकि उनका उत्तरदायित्व संबंधित राज्य सरकारों के सार्वजनिक निर्माण विभागों के पास सुरक्षित रहता है।

14. (D) 17
भारतीय रेलवे की प्रशासनिक कार्यकुशलता और बेहतर प्रबंधन सुनिश्चित करने के लिए इसे विभिन्न मंडलों या ज़ोन में विभाजित किया गया है। मानक भौगोलिक और परिचालन संबंधी आवश्यकताओं के आधार पर, यह विशाल नेटवर्क 17 मुख्य मंडलों में संगठित है। प्रत्येक मंडल का अपना मुख्यालय होता है जो अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले रेलमार्गों के सुचारू संचालन, रखरखाव और सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी सावधानीपूर्वक संभालता है।

15. (A) देश के चार विशाल महानगरों को जोड़ना
स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना भारत की एक महत्वाकांक्षी सड़क विकास योजना है जिसका लक्ष्य चार प्रमुख महानगरों को जोड़ना है। दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता को आपस में जोड़कर यह गलियारा देश के औद्योगिक और वाणिज्यिक केंद्रों के बीच यात्रा के समय को काफी कम करता है। 5,846 किलोमीटर लंबी यह परियोजना माल ढुलाई को तेज करने और राष्ट्रीय आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देने हेतु बनाई गई है।

16. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारतीय रेलवे के विभिन्न मंडलों के मुख्यालय सामरिक महत्व के शहरों में स्थित हैं। सेंट्रल रेलवे का मुख्यालय मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस में है, जबकि ईस्टर्न रेलवे का मुख्यालय कोलकाता में स्थित है। उत्तरी रेलवे का संचालन नई दिल्ली से किया जाता है और दक्षिणी रेलवे का मुख्य केंद्र चेन्नई में है। यह विकेंद्रीकृत व्यवस्था इतने विशाल रेल नेटवर्क के कुशल प्रबंधन में मदद करती है।

17. (B) श्रीनगर से कन्याकुमारी
उत्तर-दक्षिण गलियारा भारत की राष्ट्रीय महामार्ग विकास परियोजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो देश के उत्तरी सिरे को दक्षिणी सिरे से जोड़ता है। यह महामार्ग जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर को तमिलनाडु के कन्याकुमारी से जोड़ते हुए लगभग 4,016 किलोमीटर की दूरी तय करता है। इस गलियारे के विकास से विभिन्न राज्यों के बीच व्यापार सुगम हुआ है और उत्तर से दक्षिण तक यात्रा समय में कमी आई है।

18. (A) ई-मेल
संचार के साधनों को व्यक्तिगत और जनसंचार की श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। ई-मेल एक आधुनिक वैयक्तिक संचार साधन है जो दो व्यक्तियों के बीच निजी संदेशों के आदान-प्रदान की सुविधा देता है। इसके विपरीत, रेडियो, टेलीविजन और सिनेमा जनसंचार के माध्यम हैं क्योंकि ये एक साथ बहुत बड़ी संख्या में लोगों तक सूचना, शिक्षा और मनोरंजन पहुँचाने की क्षमता रखते हैं और सार्वजनिक होते हैं।

19. (A) 4, 1, 2, 3
भारत में परिवहन विकास का इतिहास विभिन्न युगों में फैली मील के पत्थर जैसी घटनाओं से बना है। सबसे पहले 1853 में पहली रेल लाइन का निर्माण हुआ, उसके बाद 1943 में सड़कों के लिए नागपुर योजना बनाई गई। मई 1960 में सीमा सड़क संगठन की स्थापना हुई और अंततः 1995 में भारतीय राष्ट्रीय महामार्ग प्राधिकरण ने राष्ट्रीय राजमार्गों के प्रबंधन हेतु अपना औपचारिक प्रचालन शुरू किया।

20. (D) क्योंकि वे भूभाग की प्रकृति से प्रभावित होती हैं।
भारत के विभिन्न क्षेत्रों में ग्रामीण सड़कों के घनत्व में महत्वपूर्ण विषमता देखी जाती है, जिसका मुख्य कारण भौगोलिक बनावट है। मैदानी इलाकों में सड़क निर्माण सरल और सस्ता होता है, जिससे वहां घनत्व अधिक रहता है। इसके विपरीत, पर्वतीय, पठारी और वनीय क्षेत्रों में दुर्गम भूभाग और जटिल प्राकृतिक बाधाओं के कारण सड़कों का जाल बिछाना अत्यंत कठिन और महंगा होता है, जिससे वहां घनत्व कम रहता है।

21. (C) इसका निर्माण भारतीय राष्ट्रीय महामार्ग प्राधिकरण द्वारा किया गया है।
अटल टनल दुनिया की सबसे लंबी राजमार्ग सुरंगों में से एक है, जिसकी कुल लंबाई 9.02 किलोमीटर है। यह सुरंग हिमालय की पीरपंजाल पर्वतमाला में स्थित है और सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि इसका निर्माण सीमा सड़क संगठन द्वारा किया गया है, न कि एनएचएआई

ANSWERS

1. (B) वस्तुओं की उपलब्धता वाले स्थानों से उपयोग के स्थानों तक स्थानांतरण हेतु
परिवहन और संचार प्रणालियाँ संसाधनों को उत्पादन केंद्रों से उपभोग बिंदुओं तक ले जाने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। यह तंत्र आपूर्ति और मांग के बीच की भौगोलिक दूरी को सफलतापूर्वक पाटता है। माल और विचारों के विनिमय को सुगम बनाकर, ये प्रणालियाँ यह सुनिश्चित करती हैं कि आवश्यक वस्तुएँ अपने इच्छित गंतव्यों तक कुशलतापूर्वक और समय पर पहुँचें, जो आर्थिक विकास हेतु अनिवार्य है।

2. (C) दोनों कथन सही हैं।
भारत के पास वर्तमान में दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा सड़क नेटवर्क मौजूद है, जो इसकी व्यापक कनेक्टिविटी को दर्शाता है। आधिकारिक वार्षिक रिपोर्ट 2020-21 के आंकड़ों के अनुसार, देश में सड़कों की कुल लंबाई लगभग 62.16 लाख किलोमीटर तक पहुँच गई है। यह विशाल बुनियादी ढांचा राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को गति देने और देश के दूरदराज के क्षेत्रों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

3. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
भारत की प्रमुख अवसंरचना परियोजनाओं की विशिष्ट लंबाई उनकी व्यापकता को दर्शाती है। स्वर्णिम चतुर्भुज की कुल लंबाई 5,846 किलोमीटर है, जबकि उत्तर-दक्षिण गलियारा 4,016 किलोमीटर लंबा है। पूर्व-पश्चिम गलियारा सिलचर को पोरबंदर से 3,640 किलोमीटर की दूरी से जोड़ता है। इसी क्रम में, सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण अटल टनल की कुल लंबाई 9.02 किलोमीटर है, जो पूरे वर्ष कनेक्टिविटी सुनिश्चित करती है।

4. (D) अंतरिक्ष
परिवहन के पारंपरिक साधनों को मुख्य रूप से स्थल, जल और वायु श्रेणियों में विभाजित किया गया है। स्थल परिवहन में सड़क, रेल और पाइपलाइन शामिल हैं, जबकि जल और वायु मार्ग तीव्र और लंबी दूरी की यात्रा सुगम बनाते हैं। अंतरिक्ष अन्वेषण के अंतर्गत आता है और इसे वर्तमान में वस्तुओं या यात्रियों के सामान्य घरेलू या अंतर्राष्ट्रीय व्यावसायिक परिवहन के साधन के रूप में नहीं माना जाता है।

5. (C) पाइप लाइन
तरल पदार्थों जैसे कच्चे तेल को लंबी दूरी तक भेजने के लिए पाइपलाइन सबसे कुशल और सक्षम प्रणाली मानी जाती है। यह असम के तेल क्षेत्रों से बिहार के रिफाइनरी केंद्रों तक निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करती है। पाइपलाइन परिवहन से वाष्पीकरण या रिसाव के कारण होने वाली हानि न्यूनतम होती है और यह अन्य माध्यमों की तुलना में पर्यावरण के अनुकूल और लागत प्रभावी विकल्प प्रदान करती है।

6. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
मेट्रो रेल ने भारतीय शहरों में यात्रा के तरीकों को पूरी तरह बदलकर नगरीय परिवहन में बड़ी क्रांति ला दी है। यह प्रणाली यात्रियों को तेज, सुरक्षित और आरामदायक विकल्प प्रदान करती है, जिससे निजी वाहनों पर निर्भरता कम होती है। क्योंकि मेट्रो मुख्य रूप से बिजली पर चलती है, यह वाहनों से होने वाले हानिकारक उत्सर्जन को कम करके वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने में सहायक है।

7. (D) लंबी दूरियों की यात्रा के लिए सड़क परिवहन अपेक्षाकृत अनुकूल होता है।
सड़क परिवहन अपनी लचीली प्रकृति के कारण छोटी दूरियों और घर-घर तक सेवा प्रदान करने के लिए सबसे अधिक अनुकूल माना जाता है। हालांकि, बहुत लंबी दूरियों और भारी माल की ढुलाई के लिए रेल परिवहन सड़कों की तुलना में अधिक किफायती और उपयुक्त होता है। भारत में सड़कें 85 प्रतिशत यात्री और 70 प्रतिशत भार यातायात संभालती हैं, फिर भी लंबी यात्रा हेतु सीमाएँ रखती हैं।

8. (A) ग्रांड ट्रंक (जी. टी.) रोड
शेरशाह सूरी द्वारा निर्मित प्राचीन शाही राजमार्ग, जो सिंधु घाटी को सोनार घाटी से जोड़ता था, भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग रहा है। ब्रिटिश शासन के दौरान, औपनिवेशिक प्रशासन ने इस महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे का पुनर्गठन किया और इसे ग्रांड ट्रंक रोड का नया नाम दिया। वर्तमान में, इस प्रसिद्ध मार्ग का विस्तार कोलकाता से अमृतसर तक है और यह प्रमुख व्यापारिक केंद्र जोड़ता है।

9. (B) केवल 1, 2 और 4
सीमा सड़क संगठन की स्थापना मई 1960 में उत्तरी और उत्तर-पूर्वी सीमाओं पर बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए की गई थी। यह सामरिक महत्व की सड़कों का निर्माण और रखरखाव करता है, जिसमें चंडीगढ़-मनाली-लेह मार्ग जैसी चुनौतीपूर्ण परियोजनाएं शामिल हैं। सड़क निर्माण के अलावा, यह संगठन कठिन सर्दियों के दौरान बर्फ हटाने और आपदा राहत कार्यों में भी सक्रिय भूमिका निभाकर रक्षा में सहयोग करता है।

10. (A) 1911 में, इलाहाबाद से नैनी तक
भारत में वायु परिवहन का ऐतिहासिक सफर वर्ष 1911 में एक छोटी लेकिन महत्वपूर्ण घटना के साथ शुरु हुआ था। इस दौरान इलाहाबाद से नैनी के बीच पहली बार विमान से डाक पहुँचाई गई थी, जिसने देश में विमानन सेवाओं की नींव रखी। यह लगभग दस किलोमीटर की संक्षिप्त उड़ान भविष्य के व्यापक

पाइपलाइनों द्वारा भेजा जा सकता है। ऑयल इंडिया लिमिटेड और गेल इंडिया लिमिटेड जैसी कंपनियां देश में तेल और गैस के अन्वेषण, उत्पादन और वितरण के लिए पाइपलाइन नेटवर्क को विकसित और प्रबंधित करने में मुख्य भूमिका निभाती हैं।

55. (D) दोनों कथन सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
जल परिवहन को अन्य परिवहन माध्यमों की तुलना में सबसे सस्ता माना जाता है क्योंकि इसे मार्गों के निर्माण की आवश्यकता नहीं होती। प्राकृतिक जलमार्गों का उपयोग करने के कारण इसकी परिचालन लागत कम रहती है। साथ ही, यह ऊर्जा की कम खपत करता है और प्रति टन माल की ढुलाई पर कम उत्सर्जन करता है, जिससे यह एक अत्यंत ईंधन-दक्ष और पारिस्थितिकी अनुकूल परिवहन प्रणाली बन जाती है।

56. (A) बीस वर्षीय सड़क योजना (1961)
स्वतंत्रता के बाद भारत में सड़कों की जर्जर स्थिति को सुधारने के लिए 1961 में 'बीस वर्षीय सड़क योजना' शुरु की गई थी। इस योजना का उद्देश्य देश के सड़क नेटवर्क का विस्तार करना और सड़कों की गुणवत्ता में सुधार करना था ताकि बढ़ते आर्थिक विकास की जरूरतों को पूरा किया जा सके। इससे पहले 1943 में नागपुर योजना बनाई गई थी, लेकिन वह रजवाड़ों के समन्वय के अभाव में विफल रही थी।

57. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
भारत में राष्ट्रीय महामार्गों की कुल लंबाई पूरे देश के सड़क जाल का मात्र 2 प्रतिशत है, जो उनके बहुत छोटे भौतिक विस्तार को दर्शाता है। इसके बावजूद, वे देश के कुल सड़क यातायात का लगभग 40 प्रतिशत भार वहन करते हैं। ये दोनों तथ्य सही हैं, लेकिन यातायात का अधिक बोझ होना सड़कों की लंबाई कम होने का कारण नहीं है, बल्कि उनकी रणनीतिक महत्ता का परिणाम है।

58. (A) 1.676 मीटर
भारतीय रेलवे में ब्रॉड गेज या बड़ी लाइन सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला वर्ग है। इस प्रणाली में दो रेल पटरियों के बीच की मानक दूरी 1.676 मीटर होती है। बड़ी लाइन का उपयोग भारी माल और लंबी दूरी की यात्री ट्रेनों के सुचारू संचालन के लिए किया जाता है क्योंकि यह अधिक स्थिरता और गति प्रदान करती है। वर्तमान में अधिकांश मीटर गेज लाइनों को ब्रॉड गेज में बदला जा रहा है।

59. (D) पश्च जल (कयाल)
केरल के तटवर्ती क्षेत्रों में पाए जाने वाले पश्च जल या 'कयाल' वहां की भौगोलिक पहचान हैं। ये विशिष्ट जल निकाय न केवल अंतःस्थलीय जलमार्गों के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, बल्कि राज्य के पर्यटन उद्योग का मुख्य आधार भी हैं। इन कयालों का उपयोग स्थानीय परिवहन और माल ढुलाई के लिए सदियों से किया जा रहा है, और ये विश्व प्रसिद्ध नौका दौड़ के लिए भी प्रसिद्ध स्थल हैं।

60. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
भारत के राष्ट्रीय जलमार्ग विभिन्न नदी प्रणालियों के माध्यम से देश के आंतरिक भागों को जोड़ते हैं। राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-1 प्रयागराज से हल्दिया तक विस्तृत है, जबकि संख्या-2 ब्रह्मपुत्र नदी पर सदिया से धुबरी तक फैला है। संख्या-3 केरल के कोट्टापुरम से कोलम के बीच नौकायन की सुविधा प्रदान करता है। संख्या-5 महानदी डेल्टा और मातई नदी के साथ एक महत्वपूर्ण जल परिवहन नेटवर्क का निर्माण करता है।

61. (C) 2402 कि.मी.
भारतीय रेलवे के आंकड़ों के अनुसार, वर्ष 2019-20 तक मीटर गेज लाइनों की कुल लंबाई लगभग 2,402 किलोमीटर थी। यद्यपि भारतीय रेलवे मुख्य रूप से ब्रॉड गेज नेटवर्क को प्राथमिकता दे रही है और 'यूनिगेज' नीति के तहत अन्य गेजों को परिवर्तित कर रही है, फिर भी देश के कुछ हिस्सों में मीटर गेज अब भी परिचालन में है। यह वर्ग ऐतिहासिक रूप से मध्यम दूरी के संपर्क के लिए महत्वपूर्ण रहा है।

62. (D) केरल के पश्च जल (कयाल) में
नेहरु ट्रॉफी नौकादौड़, जिसे स्थानीय स्तर पर 'वल्लामकाली' कहा जाता है, केरल की एक अत्यंत लोकप्रिय सांस्कृतिक और खेल प्रतियोगिता है। इसका आयोजन प्रतिवर्ष केरल के प्रसिद्ध पश्च जल या कयाल में किया जाता है, जहाँ विशाल सर्प नौकाओं के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा होती है। यह आयोजन न केवल स्थानीय लोगों के लिए गौरव का विषय है, बल्कि दुनिया भर से पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

63. (D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5
2020 की सड़क सांख्यिकी के अनुसार, भारत का सड़क जाल अत्यंत विशाल और विविधतापूर्ण है। राष्ट्रीय और राज्य महामार्गों की तुलना में ग्रामीण सड़कों की लंबाई कहीं अधिक है, जो देश के हर कोने तक पहुँच सुनिश्चित करती हैं। ग्रामीण सड़कें 'अन्य सड़कों' की श्रेणी का सबसे बड़ा हिस्सा बनाती हैं। यह व्यापक नेटवर्क कृषि उत्पादों को बाजारों तक पहुँचाने और ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक एकीकरण में आधारभूत भूमिका निभाता है।

64. (B) अमृतसर से कोलकाता
ऐतिहासिक ग्रांड ट्रंक रोड, जिसे शेरशाह सूरी मार्ग भी कहा जाता है, वर्तमान में भारत के दो प्रमुख नगरों, अमृतसर और कोलकाता को आपस में जोड़ता है। यह सड़क उत्तर भारत के विशाल मैदानी भागों से होकर गुजरती है और सदियों से व्यापारिक एवं सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। वर्तमान में इसके विभिन्न हिस्सों को राष्ट्रीय महामार्ग संख्या-1 और संख्या-2 के रूप में आधुनिक स्वरूप प्रदान किया गया है।

65. (B) फैक्स
संचार के साधनों को व्यक्तिगत और सार्वजनिक श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। रेडियो, समाचार पत्र और सिनेमा सार्वजनिक या जनसंचार के माध्यम हैं क्योंकि वे एक साथ लाखों लोगों तक सूचनाएं पहुँचाते हैं। इसके विपरीत, फैक्स एक व्यक्तिगत संचार साधन है जिसका उपयोग विशेष रूप से

द्वारा। यह मनाली को लाहौल-स्पीति घाटी से जोड़कर सर्दियों में भी कनेक्टिविटी सुनिश्चित करती है।

22. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
ब्रिटिश काल के दौरान भारत में रेलमार्गों का विस्तार मुख्य रूप से आर्थिक और राजनीतिक हितों को साधने के उद्देश्य से किया गया था। इन मार्गों का जाल इस तरह बिछाया गया था कि कच्चा माल उत्पादक क्षेत्रों और बागानों को सीधे प्रमुख पत्तनों से जोड़ा जा सके। इससे औपनिवेशिक शासकों को भारतीय संसाधनों का तेजी से शोषण करने और उन्हें विदेशों में निर्यात करने में बहुत आसानी होती थी।

23. (B) केवल 1, 3 और 4
भारतमाला परियोजना एक व्यापक बुनियादी ढांचा कार्यक्रम है जो लगभग 26,000 किलोमीटर के आर्थिक गलियारों को विकसित करने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य केवल यात्रियों ही नहीं, बल्कि मुख्य रूप से माल ढुलाई को सुगम बनाना है। इसमें यातायात की भीड़ कम करने के लिए रिंग रोड और बाईपास का निर्माण शामिल है। यह परियोजना स्वर्णिम चतुर्भुज के पूरक के रूप में देश में रसद दक्षता बढ़ाने हेतु डिज़ाइन की गई है।

24. (A) छोटी लाइन (Narrow Gauge)
भारतीय रेलवे में पटरियों की चौड़ाई के आधार पर तीन प्रमुख वर्ग हैं, जिनमें छोटी लाइन या नैरो गेज मुख्य रूप से पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती है। इसके पटरियों के बीच की दूरी 0.762 मीटर या 0.610 मीटर होती है। पहाड़ियों के घुमावदार और संकरे रास्तों पर ब्रॉड गेज बिछाना कठिन होता है, इसलिए नैरो गेज इन दुर्गम इलाकों में रेल संपर्क प्रदान करने हेतु आदर्श समाधान है।

25. (C) महाराष्ट्र में रोहा को कर्नाटक के मंगलौर से
1998 में निर्मित कोंकण रेलवे भारतीय इंजीनियरिंग की एक शानदार उपलब्धि है जो पश्चिमी तट के साथ रेल संपर्क प्रदान करती है। यह रेलमार्ग महाराष्ट्र के रोहा स्टेशन से शुरु होकर कर्नाटक के मंगलौर तक जाता है। 760 किलोमीटर लंबा यह मार्ग पश्चिमी घाट की कठिन भौगोलिक परिस्थितियों को पार करता है और इस क्षेत्र के आर्थिक विकास के साथ पर्यटन को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध हुआ है।

26. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
भारत के विभिन्न परिवहन और ऊर्जा संगठनों की स्थापना देश की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए अलग-अलग समय पर की गई थी। सीमा सड़क संगठन 1960 में गठित हुआ, जबकि एनएचएआई का प्रचालन 1995 में शुरु हुआ। ऑयल इंडिया लिमिटेड का निगमन 1959 में हुआ और गेल इंडिया लिमिटेड की स्थापना 1984 में प्राकृतिक गैस क्षेत्र के विकास और प्रबंधन के उद्देश्य से की गई थी।

27. (D) यह परिवहन का सबसे सस्ता साधन है।
जल परिवहन को सभी परिवहन साधनों में सबसे किफायती माना जाता है क्योंकि इसे मार्गों के निर्माण के लिए भारी निवेश की आवश्यकता नहीं होती। यह ईंधन-दक्ष और पर्यावरण के अनुकूल माध्यम है, जो विशेष रूप से भारी और भारी मात्रा में माल की लंबी दूरी तक ढुलाई के लिए उपयुक्त है। घर्षण कम होने के कारण इसमें ऊर्जा की खपत अन्य साधनों की तुलना में काफी कम होती है।

28. (B) 1986
भारत में अंतःस्थलीय जलमार्गों के व्यवस्थित विकास, रखरखाव और विनियमन के उद्देश्य से अंतःस्थलीय जलमार्ग प्राधिकरण की स्थापना वर्ष 1986 में की गई थी। इस वैधानिक निकाय का मुख्यालय उत्तर प्रदेश के नोएडा में स्थित है। यह प्राधिकरण राष्ट्रीय जलमार्गों के बुनियादी ढांचे के विकास और नौसंचालन सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार है, जिससे देश के जल परिवहन नेटवर्क को मजबूत और प्रभावी बनाया जा सके।

29. (A) केवल 1, 2, 3 और 5
कोंकण रेलवे 760 किलोमीटर लंबा एक अद्भुत रेलमार्ग है जो पश्चिमी घाट की 146 नदियों, 2000 पुलों और 91 सुरंगों को पार करता है। इसमें एशिया की सबसे लंबी सुरंगों में से एक शामिल है। इस परियोजना में महाराष्ट्र, गोवा और कर्नाटक राज्य भागीदार हैं, न कि केवल दो राज्य। अपनी जटिल इंजीनियरिंग और प्राकृतिक चुनौतियों पर विजय के कारण इसे आधुनिक अभियांत्रिकी का चमत्कार माना जाता है।

30. (D) प्रयागराज-हल्दिया
राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-1 भारत का सबसे महत्वपूर्ण और लंबा अंतःस्थलीय जलमार्ग है, जो गंगा-भागीरथी-हुगली नदी प्रणाली पर विकसित किया गया है। यह मार्ग उत्तर प्रदेश के प्रयागराज से पश्चिम बंगाल के हल्दिया तक लगभग 1,620 किलोमीटर की दूरी तय करता है। यह जलमार्ग घनी आबादी वाले मैदानी क्षेत्रों से होकर गुजरता है और भारी माल के परिवहन के लिए एक किफायती और प्रभावी विकल्प प्रदान करता है।

31. (A) 95%
भारत के विदेशी व्यापार का एक बहुत बड़ा हिस्सा महासागरीय मार्गों द्वारा संपन्न होता है। भार के संदर्भ में, लगभग 95 प्रतिशत अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समुद्री परिवहन के माध्यम से होता है, जबकि मूल्य के अनुसार यह योगदान लगभग 70 प्रतिशत है। विशाल समुद्री तट रेखा और प्रमुख बंदरगाहों की मौजूदगी के कारण, भारत के वैश्विक वाणिज्य और आर्थिक विकास में समुद्री रास्तों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और अपरिहार्य है।

32. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या है नहीं है।
पाइपलाइनें तरल और गैसीय पदार्थों के लंबी दूरी तक परिवहन के लिए सबसे सक्षम माध्यम हैं। हालांकि इनमें ठोस पदार्थों को भी घोल या गारा बनाकर भेजा जा सकता है, लेकिन यह विशेषता मुख्य रूप से पाइपलाइनों की सुविधा को बढ़ाती है, न कि उनके गैस और तरल परिवहन हेतु सुविधाजनक होने का

एकमात्र कारण है। पाइपलाइनें परिवहन लागत कम करने और निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करने में प्रभावी होती हैं।

33. (B) एक हेलीकॉप्टर सेवा
पवन हंस लिमिटेड भारत की एक प्रमुख हेलीकॉप्टर सेवा प्रदाता कंपनी है जो मुख्य रूप से पेट्रोलियम क्षेत्र के लिए अपतटीय संचालन में सहायता करती है। इसके अलावा, यह पहाड़ी राज्यों और उत्तर-पूर्वी भारत के दुर्गम क्षेत्रों में कनेक्टिविटी प्रदान करने के साथ-साथ महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों के लिए पर्यटन सेवाएँ भी संचालित करती है। यह दुर्गम भौगोलिक क्षेत्रों में परिवहन की समस्या को हल करने में मदद करती है।

34. (A) रा.ज.मा. 3 - गोदावरी नदी
भारत के राष्ट्रीय जलमार्गों का नदी प्रणालियों के साथ विशिष्ट जुड़ाव है। राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-1 गंगा नदी पर और संख्या-2 ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित है, जबकि संख्या-4 का विस्तार कृष्णा नदी तक है। राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-3 केरल में पश्चिमी तट नहर, चंपाकारा और उद्योगमंडल नहरों को मिलाकर बनाया गया है, न कि गोदावरी नदी पर। अतः गोदावरी के साथ इसका मेल तकनीकी रूप से गलत है।

35. (B) 1, 3, 2, 4
भारतीय संचार प्रणाली का विकास क्रमिक चरणों में हुआ। सबसे पहले 1923 में रेडियो क्लब ऑफ बाम्बे द्वारा प्रसारण शुरू हुआ। इसके बाद 1959 में दिल्ली से टेलीविजन सेवा की शुरुआत हुई। 1957 में ऑल इंडिया रेडियो का नाम बदलकर आकाशवाणी किया गया, और अंततः 1976 में टेलीविजन को रेडियो से अलग कर दूरदर्शन का गठन किया गया, जिससे सूचना के प्रसार में एक नई गति आई।

36. (D) आयल इंडिया लिमिटेड (ओ.आई.एल.)
एशिया की पहली लंबी दूरी की देशपारीय पाइपलाइन का निर्माण ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा किया गया था। इस ऐतिहासिक पाइपलाइन का निर्माण असम के नाहरकटिया तेल क्षेत्र से बिहार के बरौनी तेल शोधन कारखाने तक कच्चे तेल को पहुँचाने के लिए किया गया था। लगभग 1,157 किलोमीटर लंबी इस परियोजना ने भारत में पेट्रोलियम पदार्थों के सुरक्षित और कुशल परिवहन की दिशा में एक नया अध्याय शुरू किया था।

37. (C) 1700 किलोमीटर
हजीरा-विजयपुर-जगदीशपुर पाइपलाइन भारत की पहली और सबसे बड़ी अंतर्राज्यीय गैस पाइपलाइन परियोजना है, जिसकी कुल लंबाई लगभग 1,700 किलोमीटर है। यह विशाल पाइपलाइन गुजरात के हजीरा को मध्य प्रदेश के विजयपुर के रास्ते उत्तर प्रदेश के जगदीशपुर से जोड़ती है। इस ग्रिड के माध्यम से उर्वरक कारखानों, बिजली संयंत्रों और औद्योगिक केंद्रों को प्राकृतिक गैस की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित की जाती है, जो औद्योगिक विकास को गति देती है।

38. (B) क्षेत्रीय कनेक्टिविटी बढ़ाने हेतु किफायती हवाई सेवा उपलब्ध कराना
'उड़ान' यानी 'उड़े देश का आम नागरिक' योजना का प्राथमिक लक्ष्य भारत के छोटे और मध्यम शहरों के बीच क्षेत्रीय हवाई संपर्क को मजबूत करना है। इस योजना के माध्यम से आम नागरिकों के लिए हवाई यात्रा को सस्ता और सुलभ बनाया गया है। यह योजना कम सेवा वाले हवाई अड्डों को पुनर्जीवित करने और क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए एयरलाइनों को वित्तीय सहायता भी प्रदान करती है।

39. (A) केवल 1, 2 और 3
भारतीय रेलवे की स्थापना 1853 में हुई थी और पहली ट्रेन मुंबई से थाणे के बीच 34 किलोमीटर की दूरी पर चली थी। यह आज भारत सरकार का सबसे बड़ा सार्वजनिक उपक्रम है जो लाखों लोगों को रोजगार और परिवहन सुविधा प्रदान करता है। यद्यपि इसका नेटवर्क विशाल है, लेकिन इसकी कुल लंबाई आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार लगभग 67,956 किलोमीटर है, न कि 1,00,000 किलोमीटर से अधिक।

40. (A) वैयक्तिक और सार्वजनिक (जनसंचार)
संचार प्रणालियों को उनकी प्रकृति और उपयोग के आधार पर मुख्य रूप से दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है। व्यक्तिगत संचार में टेलीफोन, पत्र और ई-मेल जैसे साधन शामिल हैं जो दो पक्षों के बीच निजी संवाद की सुविधा देते हैं। इसके विपरीत, जनसंचार के साधनों में रेडियो, टेलीविजन और समाचार पत्र शामिल हैं, जो एक विशाल जनसमूह तक एक साथ सूचनाएं और मनोरंजन पहुँचाने का कार्य करते हैं।

41. (C) रेडियो क्लब ऑफ बाम्बे
भारत में रेडियो प्रसारण का इतिहास 1923 में शुरू हुआ था, जब रेडियो क्लब ऑफ बाम्बे द्वारा पहली बार कार्यक्रमों का प्रसारण किया गया। इस निजी पहल ने देश में संचार के एक नए युग की शुरुआत की। बाद में, सरकार ने प्रसारण की जिम्मेदारी संभाली और इसे एक संगठित सार्वजनिक सेवा के रूप में विकसित किया, जो आगे चलकर ऑल इंडिया रेडियो और आकाशवाणी के रूप में प्रसिद्ध हुई।

42. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
आधुनिक युग में उपग्रह संचार आर्थिक प्रगति और राष्ट्रीय सुरक्षा दोनों के लिए अपरिहार्य बन गया है। उपग्रहों की उच्च अवस्थिति उन्हें पृथ्वी के विस्तृत भौगोलिक क्षेत्रों का निरंतर और वास्तविक समय में चित्र प्रदान करने में सक्षम बनाती है। यह क्षमता संसाधनों के प्रबंधन, मौसम की निगरानी और सीमावर्ती गतिविधियों पर नजर रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिससे यह एक अनिवार्य सामरिक संपत्ति बन जाती है।

43. (D) ऑल इंडिया रेडियो
भारतीय प्रसारण सेवा का नामकरण समय के साथ कई बार बदला गया। वर्ष 1936 में, तत्कालीन 'इंडियन ब्रॉडकास्टिंग सिस्टम' को नया नाम देते हुए 'ऑल इंडिया रेडियो' के रूप में पुनर्गठित किया गया। यह नाम प्रसारण सेवाओं की अखिल

भारतीय पहुंच और पहचान को रेखांकित करता था। बाद में, 1957 में इसे 'आकाशवाणी' के नाम से भी जाना जाने लगा, जो आज देश का प्रमुख सार्वजनिक रेडियो नेटवर्क है।

44. (B) केवल राष्ट्रीय राजधानी (दिल्ली)
भारत में टेलीविजन सेवाओं का प्रारंभ 1959 में बहुत ही सीमित स्तर पर हुआ था। अपनी शुरुआती अवस्था में, यह सेवा केवल राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली तक ही सीमित थी और कुछ घंटों के लिए शैक्षिक और सूचनात्मक कार्यक्रम प्रसारित किए जाते थे। 1970 के दशक के बाद ही इसका विस्तार मुंबई और अन्य प्रमुख शहरों में हुआ, जिससे धीरे-धीरे यह माध्यम पूरे देश में लोकप्रिय हो गया।

45. (B) केवल 1, 2 और 4
भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली की स्थापना 1983 में हुई थी, जो एक बहुउद्देश्यीय परियोजना है। यह न केवल दूरसंचार के लिए उपयोगी है, बल्कि मौसम विज्ञान संबंधी निगरानी और प्राकृतिक आपदाओं की चेतावनी देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके अतिरिक्त, इसने देश भर में टेलीविजन नेटवर्क के विस्तार और शैक्षिक कार्यक्रमों के प्रसारण में क्रांतिकारी योगदान दिया है, जिससे दूरदराज के क्षेत्रों को जोड़ा गया है।

46. (B) INSAT और IRS
भारत की उपग्रह प्रणाली मुख्य रूप से दो श्रेणियों में विभाजित है। पहली, भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली (INSAT) है, जो दूरसंचार और मौसम विज्ञान के लिए समर्पित है। दूसरी, भारतीय दूरसंवेदी उपग्रह प्रणाली (IRS) है, जिसका उपयोग पृथ्वी के संसाधनों की निगरानी और प्राकृतिक आपदा प्रबंधन के लिए किया जाता है। ये दोनों प्रणालियाँ स्वतंत्र रूप से कार्य करते हुए राष्ट्र की संचार और डेटा आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से पूरा करती हैं।

47. (A) वैकानूर, रूस
भारतीय दूरसंवेदी उपग्रह प्रणाली की शुरुआत 1988 में हुई थी, जब इस श्रृंखला का पहला उपग्रह IRS-1A सफलतापूर्वक प्रक्षेपित किया गया था। भारत ने इस ऐतिहासिक प्रक्षेपण के लिए तत्कालीन सोवियत संघ के वैकानूर प्रक्षेपण स्थल का उपयोग किया था। इस उपग्रह के माध्यम से भारत ने अपनी स्वयं की रिमोट सेंसिंग क्षमताएं विकसित करने की दिशा में कदम बढ़ाया, जिससे कृषि और जल संसाधनों के प्रबंधन में सहायता मिली।

48. (C) P-3, Q-1, S-2
भारत की सड़क सांख्यिकी के 2020 के आंकड़ों के अनुसार, विभिन्न श्रेणियों की सड़कों की लंबाई उनकी व्यापकता दर्शाती है। राष्ट्रीय महामार्गों की लंबाई 1,36,440 किलोमीटर दर्ज की गई, जबकि राज्य महामार्गों का विस्तार 1,76,818 किलोमीटर तक पहुँच गया। ग्रामीण सड़कों का जाल सबसे विशाल है, जिसकी कुल लंबाई लगभग 59,02,539 किलोमीटर है। ये आंकड़े दर्शाते हैं कि ग्रामीण संपर्क देश के सड़क नेटवर्क का आधार है।

49. (B) उपग्रह आँकड़ों के अधिग्रहण एवं प्रक्रमण की सुविधा प्रदान करना
हैदराबाद में स्थित नेशनल रिमोट सेंसिंग सेंटर भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। इसका मुख्य कार्य अंतरिक्ष में स्थित विभिन्न उपग्रहों से प्राप्त होने वाले डेटा या आंकड़ों को प्राप्त करना और उनका विश्लेषण करना है। यह केंद्र प्राकृतिक संसाधनों के मानचित्रण, शहरी नियोजन और आपदा प्रबंधन के लिए सटीक जानकारी उपलब्ध कराता है, जिससे योजनाकारों को बेहतर निर्णय लेने में वैज्ञानिक सहायता मिलती है।

50. (A) 80 प्रतिशत
भारत के विशाल सड़क जाल में ग्रामीण सड़कों की हिस्सेदारी सबसे अधिक है। कुल सड़क लंबाई का लगभग 80 प्रतिशत हिस्सा ग्रामीण सड़कों के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जो देश के गाँवों को मुख्य शहरों और बाजारों से जोड़ती हैं। ये सड़कें ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास और शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए अपरिहार्य हैं, हालांकि इनके घनत्व में भौगोलिक आधार पर काफी भिन्नता पाई जाती है।

51. (C) ये सड़क यातायात के 40 प्रतिशत भाग का वहन करते हैं।
राष्ट्रीय महामार्ग भारत की सड़क प्रणाली की रीढ़ हैं। यद्यपि ये देश की कुल सड़क लंबाई का मात्र 2 प्रतिशत हिस्सा हैं, लेकिन ये कुल सड़क यातायात के लगभग 40 प्रतिशत भाग का वहन करते हैं। इनका निर्माण और रखरखाव केंद्र सरकार द्वारा किया जाता है। ये मार्ग राज्यों की राजधानियों और महत्वपूर्ण व्यावसायिक केंद्रों को जोड़कर निर्बाध अंतर्राज्यीय परिवहन और रसद आवाजाही सुनिश्चित करने में सहायक हैं।

52. (D) हैदराबाद
स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना भारत की चार प्रमुख महानगरों को जोड़ने वाली एक उच्च गति की सड़क प्रणाली है। इस परियोजना के मुख्य स्तंभ दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता हैं। हालांकि हैदराबाद भारत का एक महत्वपूर्ण शहर और परिवहन केंद्र है, लेकिन यह स्वर्णिम चतुर्भुज के प्राथमिक चार कोनों वाले मूल नेटवर्क का हिस्सा नहीं है। यह शहर अन्य राष्ट्रीय राजमार्गों के माध्यम से इस मुख्य जाल से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है।

53. (C) विचारों, दर्शन और संदेशों का विनिमय करना
संचार का अर्थ केवल शारीरिक रूप से वस्तुओं का स्थानांतरण नहीं है, बल्कि यह सूचनाओं और मानवीय अभिव्यक्तियों के आदान-प्रदान की एक प्रक्रिया है। इसके माध्यम से लोग अपने विचारों, दर्शन, ज्ञान और महत्वपूर्ण संदेशों को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति या जनसमूह तक पहुँचाते हैं। यह सामाजिक संपर्क का आधार है और इसके आधुनिक साधनों ने भौगोलिक दूरियों को समाप्त कर सूचना के प्रसार को तीव्र बनाया है।

54. (B) केवल 1, 3 और 4
पाइपलाइन परिवहन तरल और गैसीय पदार्थों के निरंतर आवागमन के लिए एक श्रेष्ठ तकनीक है। आधुनिक इंजीनियरिंग के माध्यम से अब ठोस पदार्थों को भी गारा या घोल में बदलकर

(B) सैन्य और नागरिक उपग्रह।
(C) राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय उपग्रह।
(D) मौसम और नेविगेशन उपग्रह।

175. भारत जैसे देश में संचार के लिए उपग्रह प्रौद्योगिकी का उपयोग करने का एक प्रमुख लाभ क्या है?
(A) अन्य सभी उपलब्ध विकल्पों की तुलना में यह सबसे सस्ती संचार विधि है।
(B) इस तकनीक के उपयोग के लिए किसी भी प्रकार के जमीनी बुनियादी ढांचे की कमी।
(C) स्थलीय नेटवर्क से स्वतंत्र होकर दूरस्थ क्षेत्रों को जोड़ना संभव बनाना।
(D) यह सूचना साझा करने के लिए केवल सरकारी और सैन्य उपयोग हेतु सुरक्षित है।

दो पक्षों के बीच दस्तावेजों को तुरंत भेजने के लिए किया जाता है। यह जनसमूह के लिए सूचना प्रसार का माध्यम नहीं है।

66. (A) पी एस एल वी (पोलर सेटेलाइट लॉन्च वेहिकल)
भारत ने अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में आत्मनिर्भरता हासिल करते हुए अपना स्वयं का प्रक्षेपण वाहन विकसित किया है, जिसे पीएसएलवी (ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान) के रूप में जाना जाता है। यह भारत का एक अत्यंत विश्वसनीय और सफल यान है जिसने कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय उपग्रहों को उनकी कक्षाओं में स्थापित किया है। इसके विकास ने भारत को अंतरिक्ष अनुसंधान और उपग्रहों के स्वदेशी प्रक्षेपण के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर मजबूती प्रदान की है।

67. (C) नागपुर योजना
भारत में सड़क विकास के लिए 1943 में पहली बार एक संगठित और गंभीर प्रयास किया गया, जिसे 'नागपुर योजना' के नाम से जाना जाता है। इस योजना का लक्ष्य देश में सड़कों का एक नेटवर्क बनाना था ताकि प्रशासनिक और आर्थिक जरूरतों को पूरा किया जा सके। हालांकि, रजवाड़ों और ब्रिटिश भारत के बीच समन्वय की कमी के कारण इस योजना को पूरी तरह से लागू नहीं किया जा सका था।

68. (D) 1923
भारत में रेडियो प्रसारण की शुरुआत 1923 में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर थी। रेडियो क्लब ऑफ बाम्बे ने देश में पहला रेडियो कार्यक्रम प्रसारित कर संचार के क्षेत्र में एक नई क्रांति की नींव रखी। इस पहल के बाद भारत में प्रसारण सेवाओं का तेजी से विस्तार हुआ, जिससे शिक्षा, सूचना और मनोरंजन के प्रसार के तरीके पूरी तरह बदल गए और रेडियो घर-घर तक पहुँचने लगा।

69. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत एक विशाल भौगोलिक विस्तार वाला देश है जहाँ एक छोर से दूसरे छोर की दूरियाँ बहुत अधिक हैं। इसके अलावा, यहाँ हिमालय जैसे ऊंचे पहाड़ और विशाल मरुस्थल जैसी विविध भू-आकृतियाँ मौजूद हैं जहाँ सड़क या रेल बनाना कठिन है। ऐसी परिस्थितियों में, वायु परिवहन सबसे तीव्र और प्रभावी साधन के रूप में उभरता है, जो दूरस्थ क्षेत्रों को कम समय में जोड़ने की क्षमता रखता है।

70. (B) जिला मुख्यालयों को ज़िले के अन्य महत्वपूर्ण स्थलों से
जिला सड़कें भारत के सड़क नेटवर्क की एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं। इनका प्राथमिक कार्य जिला मुख्यालय को जिले के विभिन्न महत्वपूर्ण शहरों, बाजारों और अन्य विकास केंद्रों से जोड़ना है। ये सड़कें जिला प्रशासन के सुचारु संचालन में मदद करती हैं और ग्रामीण अंचलों को शहरी सुविधाओं के करीब लाती हैं। इनका निर्माण और रखरखाव मुख्य रूप से जिला परिषदों और स्थानीय प्रशासन की देखरेख में किया जाता है।

71. (A) 1, 2, 3, 4
भारत के परिवहन बुनियादी ढांचे का विकास विभिन्न वर्षों में संगठित रूप से हुआ। ऑयल इंडिया लिमिटेड का निगमन 1959 में हुआ, जिसके बाद 1960 में सीमा सड़क संगठन का गठन हुआ। प्राकृतिक गैस के प्रबंधन के लिए 1984 में गेल इंडिया लिमिटेड की स्थापना की गई। अंततः, 1995 में भारतीय राष्ट्रीय महामार्ग प्राधिकरण ने राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण और रखरखाव के लिए औपचारिक रूप से काम करना शुरु किया।

72. (C) दोनों कथन सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना देश के चार सबसे बड़े महानगरों के बीच यात्रा को तेज करने के लिए डिज़ाइन की गई है। इसके तहत विकसित 4/6 लेन वाले उच्च सघनता के गलियारे वाहनों के लिए निर्बाध मार्ग प्रदान करते हैं। इसके परिणामस्वरूप, इन प्रमुख शहरों के बीच न केवल समय और दूरी कम हुई है, बल्कि यातायात की लागत और ईंधन की खपत में भी काफी कमी आई है।

73. (B) केवल 1, 2 और 3
राष्ट्रीय महामार्ग विकास परियोजना के अंतर्गत स्वर्णिम चतुर्भुज, उत्तर-दक्षिण गलियारा और पूर्व-पश्चिम गलियारा जैसे विशाल बुनियादी ढांचे का निर्माण शामिल है। स्वर्णिम चतुर्भुज चार मुख्य महानगरों को जोड़ता है, जबकि उत्तर-दक्षिण गलियारा श्रीनगर से कन्याकुमारी तक फैला है। पूर्व-पश्चिम गलियारा सिलचर को पोरबंदर से जोड़ता है। इन विशाल परियोजनाओं के क्रियान्वयन की मुख्य जिम्मेदारी भारतीय राष्ट्रीय महामार्ग प्राधिकरण के पास है, न कि बीआरओ के पास।

74. (A) वेस्टर्न
भारतीय रेलवे के प्रशासनिक ढांचे में पश्चिमी रेलवे का एक अनूठा स्थान है। इसके परिचालन को बेहतर बनाने और प्रशासनिक सुविधा के लिए इसे दो अलग-अलग मुख्यालयों के माध्यम से संचालित किया जाता है। यह व्यवस्था इस क्षेत्र के सघन रेल यातायात और व्यापक भौगोलिक विस्तार को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने में मदद करती है, जिससे यात्रियों और माल की आवाजाही को अधिक सुरक्षित और समयबद्ध बनाया जा सके।

75. (D) दूरदर्शन (डी.डी.)
भारत में टेलीविजन सेवाओं के विस्तार के साथ इसे एक स्वतंत्र पहचान देने की आवश्यकता महसूस की गई। वर्ष 1976 में, सरकार ने एक महत्वपूर्ण संगठनात्मक बदलाव करते हुए टेलीविजन सेवा को ऑल इंडिया रेडियो के प्रशासनिक नियंत्रण से अलग कर दिया। इस नई स्वतंत्र इकाई को 'दूरदर्शन' का नाम दिया गया। तब से दूरदर्शन देश के सबसे बड़े सार्वजनिक दृश्य-श्रव्य प्रसारक के रूप में कार्य कर रहा है।

76. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
भारत के परिवहन और संचार इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाएं अलग-अलग वर्षों से जुड़ी हैं। 1853 में देश की पहली रेल लाइन बिछाई गई, जबकि 1911 में वायु परिवहन की शुरुआत

हुई। 1923 में रेडियो क्लब ऑफ बाम्बे ने पहला रेडियो प्रसारण किया, और कोंकण रेलवे का महत्वाकांक्षी निर्माण कार्य 1998 में पूरा हुआ। ये मील के पत्थर भारत की आधुनिक कनेक्टिविटी और विकास की कहानी को दर्शाते हैं।

77. (C) पोर्ट ब्लेयर
भारत में 12 प्रमुख पत्तन हैं जो देश के विदेशी व्यापार के लिए बुनियादी ढांचा प्रदान करते हैं। इनमें मुंबई, चेन्नई और विशाखापत्तनम जैसे बड़े बंदरगाह शामिल हैं जो विशाल मात्रा में माल की आवाजाही को संभालते हैं। पोर्ट ब्लेयर अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का एक महत्वपूर्ण बंदरगाह है, लेकिन इसे आधिकारिक रूप से उन 12 मुख्य राष्ट्रीय 'प्रमुख पत्तनों' की सूची में शामिल नहीं किया गया है।

78. (D) ज्ञान एवं सूचना की दुनिया तक सीधे पहुँच प्रदान करने वाला माध्यम
आधुनिक युग में इंटरनेट संचार का सबसे प्रभावी और उन्नत वैयक्तिक साधन बनकर उभरा है। यह उपयोगकर्ता को दुनिया भर के ज्ञान और सूचना के विशाल भंडार तक सीधे और तत्काल पहुँच प्रदान करता है। ई-मेल और वेब ब्राउजिंग के माध्यम से, कोई भी व्यक्ति अपनी पसंद की जानकारी प्राप्त कर सकता है और दूसरों से जुड़ सकता है। यह माध्यम व्यक्तिगत विकास और व्यावसायिक गतिविधियों में क्रांति ला चुका है।

79. (A) केवल 1, 2, 3 और 4
भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम बहुआयामी है जहाँ इन्सैट प्रणाली दूरसंचार और मौसम की भविष्यवाणी में मदद करती है, वहीं आईआरएस उपग्रह पृथ्वी के संसाधनों की निगरानी करते हैं। भारत ने पीएसएलवी जैसे विश्वसनीय प्रक्षेपण यान विकसित किए हैं। रिमोट सेंसिंग सेंटर उपग्रह डेटा के विश्लेषण का कार्य करता है। यह कहना गलत है कि आईआरएस उपग्रह केवल दूरसंचार के लिए हैं, क्योंकि उनका प्राथमिक कार्य प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और मानचित्रण करना है।

80. (B) रजवाड़ों और ब्रिटिश भारत के मध्य समन्वय एवं सहयोग के अभाव में
1943 की नागपुर योजना भारत में सड़कों के विकास का पहला संगठित प्रयास थी। हालांकि, यह योजना अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में विफल रही क्योंकि उस समय भारत कई छोटी रियासतों और ब्रिटिश क्षेत्रों में विभाजित था। रजवाड़ों और औपनिवेशिक सरकार के बीच प्रशासनिक और वित्तीय सहयोग की कमी ने सड़कों के एक एकीकृत राष्ट्रीय नेटवर्क के निर्माण में बड़ी बाधा उत्पन्न की थी।

81. (A) 1%
भारत के पास लगभग 14,500 किलोमीटर लंबा नौकायन योग्य जलमार्ग है, जिसमें नदियाँ, नहरें और खाड़ियाँ शामिल हैं। इस विशाल प्राकृतिक संसाधन के बावजूद, देश के कुल परिवहन में अंतःस्थलीय जलमार्गों का योगदान वर्तमान में केवल 1 प्रतिशत के आसपास है। यह कम हिस्सेदारी रेल और सड़क परिवहन के तीव्र विस्तार और नदियों में पानी के घटते स्तर के कारण है, जिसे बढ़ाने हेतु प्रयास किए जा रहे हैं।

82. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
इंटरनेट ने संचार की गति और पहुँच को असाधारण रूप से बढ़ाकर वैश्विक स्तर पर क्रांति ला दी है। ई-कॉमर्स और डिजिटल मौद्रिक लेन-देन की बढ़ती लोकप्रियता इसके विविध अनुप्रयोगों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। ये दोनों तथ्य स्वतंत्र रूप से सही हैं, लेकिन केवल आर्थिक लेन-देन की सुविधा इंटरनेट द्वारा संचार क्षेत्र में लाई गई व्यापक क्रांति का एकमात्र कारण या पूर्ण व्याख्या नहीं है।

83. (C) 1957
भारत के सार्वजनिक रेडियो प्रसारण सेवा को एक नई पहचान देने के लिए 1957 में इसका नाम बदलकर 'आकाशवाणी' कर दिया गया। इससे पहले इसे आधिकारिक तौर पर ऑल इंडिया रेडियो के नाम से जाना जाता था। आकाशवाणी ने देश के कोने-कोने तक समाचार, संगीत और महत्वपूर्ण सूचनाएं पहुँचाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। यह नाम आज भी भारत के सबसे बड़े और पुराने रेडियो नेटवर्क का प्रतीक बना हुआ है।

84. (D) भारत में छोटी लाइन की लंबाई बड़ी लाइन से अधिक है।
भारतीय रेलवे के नेटवर्क में बड़ी लाइन या ब्रॉड गेज का प्रभुत्व है और इसकी कुल लंबाई अन्य सभी गेजों की तुलना में बहुत अधिक है। सरकार की 'यूनिगेज' नीति के तहत अधिकांश छोटी और मीटर गेज लाइनों को ब्रॉड गेज में बदला जा चुका है। अतः यह कहना कि छोटी लाइन की लंबाई बड़ी लाइन से अधिक है, वर्तमान तकनीकी स्थिति और रेलवे सांख्यिकी के अनुसार सर्वथा गलत है।

85. (C) पेट्रोलियम सेक्टर
पवन हंस लिमिटेड मुख्य रूप से भारत के पेट्रोलियम क्षेत्र को महत्वपूर्ण हेलीकॉप्टर सेवाएं प्रदान करता है। यह विशेष रूप से ओएनजीसी जैसे संगठनों के लिए अपतटीय तेल अन्वेषण और उत्पादन स्थलों तक जनशक्ति और सामग्री पहुँचाने का कार्य करता है। इसके अलावा, इसकी सेवाओं का उपयोग दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में कनेक्टिविटी और आपदा प्रबंधन के लिए भी किया जाता है, जो जटिल भौगोलिक परिस्थितियों में परिवहन को सुगम बनाता है।

86. (B) 111
भारत में जल परिवहन की अप्रयुक्त क्षमता को देखते हुए, सरकार ने राष्ट्रीय जलमार्ग अधिनियम, 2016 पारित किया था। इस ऐतिहासिक कानून के माध्यम से देश भर के कुल 111 अंतर्देशीय जलमार्गों को राष्ट्रीय जलमार्ग घोषित किया गया है। इसका उद्देश्य देश में एक एकीकृत जल परिवहन नेटवर्क विकसित करना है जो सस्ता, पर्यावरण के अनुकूल हो और मुख्य सड़क एवं रेल मार्गों पर बोझ को कम करने में सहायक हो।

87. (D) INSAT (इंडियन नेशनल सेटेलाइट)
भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली ने देश भर में टेलीविजन सेवाओं के प्रसार और आधुनिकीकरण में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 1983 में इस प्रणाली के चालू होने के बाद से,

दूरदराज के क्षेत्रों में भी साझा राष्ट्रीय कार्यक्रमों का प्रसारण संभव हो सका। इन्सैट उपग्रहों ने निर्बाध संचार सिग्नल प्रदान किए, जिससे शैक्षिक कार्यक्रमों और मनोरंजन के साधनों की पहुँच भारत के हर घर तक सुनिश्चित हो सकी।

88. (A) रा.ज.मा. 3 - कोट्टापुरम-कोलम
राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-3 केरल के पश्चिमी तट पर स्थित है, जो कोट्टापुरम को कोलम से जोड़ता है। इसमें पश्चिमी तट नहर के साथ चंपाकारा और उद्योगमंडल नहरें भी शामिल हैं। अन्य जलमार्गों की बात करें तो संख्या-1 प्रयागराज से हल्दिया तक है और संख्या-2 ब्रह्मपुत्र नदी पर सदिया से धुबरी के बीच है। अतः कोट्टापुरम-कोलम के साथ राष्ट्रीय जलमार्ग-3 का मेल पूर्णतः सही और आधिकारिक है।

89. (A) केवल 1, 2 और 3
भारतीय रेलवे ने अपनी कार्यकुशलता बढ़ाने के लिए पुरानी मीटर और नैरो गेज लाइनों को ब्रॉड गेज में बदलने का व्यापक कार्यक्रम चलाया है। इसी तरह, पुराने वाष्प इंजनों को हटाकर शक्तिशाली डीजल और विद्युत इंजन लाए गए हैं, जिससे ट्रेनों की गति और भार वहन क्षमता में जबरदस्त वृद्धि हुई है। वाष्प इंजनों के हटने से रेलवे का वातावरण अधिक स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त हुआ है।

90. (A) 4,270 मीटर
सीमा सड़क संगठन द्वारा निर्मित चंडीगढ़-मनाली-लेह राजमार्ग दुनिया की सबसे ऊंची सड़कों में से एक है। यह सामरिक मार्ग समुद्र तल से औसतन 4,270 मीटर की अत्यधिक ऊँचाई पर स्थित है। यह मार्ग न केवल रक्षा बलों के आवागमन के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि लद्दाख जैसे दूरस्थ क्षेत्रों को देश की मुख्य भूमि से जोड़ने का एकमात्र सड़क मार्ग है, जो चुनौतीपूर्ण भौगोलिक परिस्थितियों में बनाया गया है।

91. (D) 1959
भारत में टेलीविजन के युग की शुरुआत आधिकारिक तौर पर 15 सितंबर 1959 को हुई थी। इस सेवा का पहला केंद्र राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में स्थापित किया गया था, जहाँ से प्रायोगिक तौर पर कार्यक्रमों का प्रसारण शुरु हुआ। शुरुआत में यह सेवा अत्यंत सीमित थी और केवल शैक्षिक एवं सामाजिक जागरूकता पर केंद्रित थी। बाद के दशकों में उपग्रह प्रौद्योगिकी के समावेश से टेलीविजन पूरे देश में फैल गया।

92. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
कोंकण रेलवे को आधुनिक इंजीनियरिंग का एक शानदार नमूना माना जाता है क्योंकि इसने पश्चिमी घाट की अत्यंत दुर्गम भौगोलिक स्थितियों को सफलतापूर्वक पार किया है। यह मार्ग 146 नदियों, अनगिनत धाराओं, लगभग 2000 पुलों और 91 सुरंगों से होकर गुजरता है। इतनी जटिल प्राकृतिक बाधाओं के बावजूद एक प्रभावी रेल लिंक का निर्माण करना वाकई में एक तकनीकी चमत्कार है जिसने क्षेत्र का कायाकल्प कर दिया है।

93. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
भारतीय रेलवे में पटरियों की चौड़ाई के आधार पर वर्गीकरण और उनका विस्तार विशिष्ट है। बड़ी लाइन के लिए दूरी 1.676 मीटर है, जबकि मीटर लाइन के लिए यह 1.0 मीटर है। छोटी लाइन या नैरो गेज 0.762 मीटर की होती है। सांख्यिकीय आंकड़ों के अनुसार, 2019-20 में भारत के कुल रेल जाल की लंबाई लगभग 67,956 किलोमीटर थी, जो देश की व्यापक रेल कनेक्टिविटी को दर्शाती है।

94. (D) विविध संस्कृति के लोगों को एक साथ लाकर
महात्मा गांधी का मानना था कि भारतीय रेलवे ने देश के विभिन्न हिस्सों के लोगों को करीब लाकर राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रेलवे के माध्यम से अलग-अलग भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों के लोग एक साथ यात्रा करते थे, जिससे उनके बीच आपसी संवाद बढ़ा और एक साझा भारतीय पहचान विकसित हुई। इसने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध जनभावना को एकजुट करने में मदद की।

95. (A) हजीरा-विविजय-जगदीशपुर (HVJ) अंतर-राज्यीय पाइपलाइन परियोजना
हजीरा-विजयपुर-जगदीशपुर अंतर-राज्यीय पाइपलाइन भारत की ऊर्जा सुरक्षा और गैस बुनियादी ढांचे के विकास में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुई है। इस विशाल पाइपलाइन ने देश में 'नेशनल गैस ग्रिड' की नींव रखी, जो वर्तमान में 34,000 किलोमीटर तक पहुँचने की राह पर है। इसने न केवल औद्योगिक ईंधन के रूप में गैस की उपलब्धता सुनिश्चित की, बल्कि देश भर में उर्वरक और बिजली संयंत्रों को भी सक्रिय किया।

96. (A) केवल 1, 2 और 4
भारत का 7,517 किलोमीटर लंबा समुद्री तट और इसके 12 प्रमुख बंदरगाह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए आधारभूत स्तंभ हैं। महासागरीय मार्गों का उपयोग न केवल विदेशी वाणिज्य के लिए बल्कि मुख्य भूमि और द्वीपों के बीच संपर्क के लिए भी किया जाता है। जल परिवहन को सबसे सस्ता साधन माना जाता है, इसलिए इसे 'सबसे महंगा' कहना तकनीकी रूप से गलत है। विदेशी व्यापार का 95% भार इन्हीं मार्गों से होता है।

97. (B) बारामुला और मुज़फ़्फ़राबाद
'अमन सेतु' भारत और पाकिस्तान के बीच स्थित एक प्रतीकात्मक और सामरिक पुल है, जो जम्मू-कश्मीर के बारामुला जिले के उरी क्षेत्र को पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर के मुज़फ़्फ़राबाद से जोड़ता है। यह सेतु दोनों क्षेत्रों के बीच बस सेवा और व्यापारिक संपर्कों के माध्यम से शांति और मानवीय संबंधों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाया गया था। यह सीमावर्ती क्षेत्रों में तनाव कम करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम रहा है।

98. (A) परिवहन (सामान्य रूप से)
परिवहन एक मौलिक आर्थिक गतिविधि है जो वस्तुओं को उनके उत्पादन स्थलों से अंतिम बाजारों और उपभोग केंद्रों तक पहुँचाने का कार्य करती है। चाहे वह सड़क, रेल, जल या वायु मार्ग हो, परिवहन का कोई भी साधन उत्पादक और

163. (C) नदियों में जल स्तर का मौसमी उतार-चढ़ाव।
भारतीय नदियों में पानी के बहाव का स्तर मौसम के अनुसार बदलता रहता है, जो जलमार्गों के संचालन के लिए एक बड़ी चुनौती है। विशेष रूप से शुष्क मौसम में गहराई कम होने से नौगम्यता बाधित होती है। इस समस्या के समाधान के लिए नियमित रूप से तलकर्षण और नदी चैनलों के उचित रखरखाव की आवश्यकता होती है ताकि जहाजों का आवागमन साल भर निर्बाध बना रहे।

164. (D) टर्मिनलों और कनेक्टिविटी सहित एकीकृत बुनियादी ढाँचे का विकास।
जल परिवहन की सफलता केवल जलमार्गों पर निर्भर नहीं है, बल्कि इसके लिए आधुनिक टर्मिनलों और भंडारण सुविधाओं का होना आवश्यक है। इसके साथ ही, बंदरगाहों को भीतरी इलाकों से जोड़ने वाली 'अंतिम-मील कनेक्टिविटी' का विकास भी उतना ही महत्वपूर्ण है। एकीकृत बुनियादी ढांचा यह सुनिश्चित करता है कि वस्तुएं अपने मूल स्थान से अंतिम गंतव्य तक बिना किसी बाधा के सुगमता से पहुँच सकें।

165. (A) परिवहन लागत को कम करना और आर्थिक प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाना।
राष्ट्रीय जलमार्ग नीतियों का प्राथमिक लक्ष्य देश के भीतर परिवहन की कुल लागत को कम करना है। जलमार्गों का एक एकीकृत ग्रिड विकसित करके सरकार आर्थिक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा देना चाहती है। कुशल जल परिवहन के माध्यम से माल की ढुलाई को सुगम बनाया जा सकता है, जो अंततः राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान करने और वैश्विक स्तर पर व्यापारिक बाधाओं को दूर करने में सहायक है।

166. (B) देश के लिए सुरक्षित और निर्बाध ऊर्जा आपूर्ति सुनिश्चित करना।
पाइपलाइन परिवहन राष्ट्र की ऊर्जा सुरक्षा बनाए रखने के लिए एक रणनीतिक साधन के रूप में कार्य करता है। यह कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस जैसे महत्वपूर्ण संसाधनों की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित करता है। रिफाइनरियों और बिजली संयंत्रों को बिना किसी रुकावट के ईंधन उपलब्ध कराकर यह देश की औद्योगिक और आर्थिक गतिविधियों को गति प्रदान करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका प्रभावी ढंग से निभाता है।

167. (B) मौसम और यातायात से अप्रभावित होकर निरंतर आपूर्ति प्रदान करना।
पारंपरिक टैंकरों की तुलना में पाइपलाइनें मौसम की प्रतिकूलताओं और सड़क यातायात की भीड़ से पूरी तरह स्वतंत्र होती हैं। ये प्रणालियाँ बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के निरंतर संचालन करने में सक्षम हैं। इसके कारण हाइड्रोकार्बन का प्रवाह निर्बाध बना रहता है, जो किसी भी आपातकालीन स्थिति में या खराब मौसम के दौरान ऊर्जा की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए सड़क या रेल की अपेक्षा विश्वसनीय है।

168. (A) उच्च प्रारंभिक निवेश और भूमि अधिग्रहण की कानूनी जटिलता।
एक व्यापक पाइपलाइन नेटवर्क बिछाने के लिए बहुत अधिक शुरुआती पूंजी और परिष्कृत तकनीकी संसाधनों की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, भूमि अधिग्रहण से संबंधित कानूनी और सामाजिक प्रक्रियाएं काफी जटिल होती हैं, जिससे परियोजनाओं में देरी हो सकती है। दूरदराज के क्षेत्रों में इन पाइपलाइनों की सुरक्षा सुनिश्चित करना और उन्हें तोड़फोड़ से बचाना भी प्रशासन के लिए एक बड़ी और निरंतर चिंता रहती है।

169. (C) राष्ट्रव्यापी नेटवर्क जो ऊर्जा स्रोतों को उपभोक्ताओं से जोड़ता है।
राष्ट्रीय गैस ग्रिड का उद्देश्य पूरे देश में प्राकृतिक गैस की आपूर्ति के लिए एक एकीकृत नेटवर्क तैयार करना है। यह ग्रिड ऊर्जा स्रोतों को सीधे घरेलू, वाणिज्यिक और औद्योगिक उपभोक्ताओं से जोड़ता है। इसके माध्यम से स्वच्छ और किफायती ऊर्जा की पहुँच देश के हर कोने तक सुनिश्चित की जा रही है, जो आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरणीय संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।

170. (D) सड़क और रेल परिवहन।
पाइपलाइनों के माध्यम से तरल और गैसीय पदार्थों के परिवहन से सड़क और रेल नेटवर्क पर चलने वाले टैंकरों का बोझ कम हो जाता है। इससे मुख्य मार्गों पर यातायात की भीड़ कम होती है और पारगमन के दौरान होने वाले तेल रिसाव या चोरी जैसी समस्याओं में भी कमी आती है। इस प्रकार, पाइपलाइनें अन्य परिवहन साधनों की दक्षता और सुरक्षा बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

171. (C) पृथ्वी का अवलोकन कर संसाधन प्रबंधन हेतु डेटा उपलब्ध कराना।
सुदूर संवेदन उपग्रहों का मुख्य कार्य अंतरिक्ष से पृथ्वी की सतह का विस्तृत अवलोकन करना है। ये उपग्रह महत्वपूर्ण डेटा प्रदान करते हैं जिनका उपयोग प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन, कृषि फसल के आकलन और वन आवरण की निगरानी के लिए किया जाता है। शहरी नियोजन और जल संसाधनों के संरक्षण में भी यह डेटा सटीक निर्णय लेने के लिए एक अनिवार्य और वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

172. (B) टेली-एजुकेशन और टेली-मेडिसिन के जरिए दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँचना।
संचार उपग्रहों ने टेली-एजुकेशन और टेली-मेडिसिन जैसी सेवाओं को सुगम बनाकर सामाजिक विकास में बड़ा योगदान दिया है। इनकी मदद से दुर्गम और ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को भी उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और चिकित्सा परामर्श प्राप्त हो पा रहा है। यह तकनीक सूचना के अंतर को पाटती है और देश के सबसे पिछड़े इलाकों को राष्ट्रीय मुख्यधारा की आधुनिक सेवाओं से जोड़ती है।

109. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत के विभिन्न क्षेत्रों में ग्रामीण सड़कों के घनत्व में काफी असमानता देखी जाती है। इसका मुख्य कारण मैदानी क्षेत्रों की तुलना में पर्वतीय, पठारी और वनीय क्षेत्रों की कठिन भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं। इन दुर्गम इलाकों में ढलान, कठोर चट्टानों और घने जंगलों के कारण सड़क निर्माण करना न केवल तकनीकी रूप से चुनौतीपूर्ण है, बल्कि आर्थिक रूप से भी बहुत महंगा है, जिससे वहां सड़कों का जाल कम सघन है।

110. (D) 67,956 कि.मी.
भारतीय रेलवे की 'ईयर बुक 2019-20' के आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, देश के कुल रेल नेटवर्क की लंबाई लगभग 67,956 किलोमीटर दर्ज की गई है। यह विशाल रेल जाल दुनिया के सबसे बड़े रेल नेटवर्क में से एक है, जो लाखों यात्रियों और करोड़ों टन माल को प्रतिदिन उनके गंतव्य तक पहुँचाता है। यह आँकड़ा भारतीय अर्थव्यवस्था में रेलवे की व्यापक पहुँच और उसकी आधारभूत भूमिका को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है।

111. (A) 1604 कि.मी.
भारतीय रेलवे के आधुनिकीकरण और गेज परिवर्तन की नीतियों के कारण छोटी लाइनों या नैरो गेज का विस्तार अब बहुत कम रह गया है। 2019-20 के आंकड़ों के अनुसार, देश में छोटी लाइन की कुल लंबाई घटकर केवल 1,604 किलोमीटर रह गई है। यह वर्ग अब मुख्य रूप से कुछ विशिष्ट पर्वतीय क्षेत्रों और ऐतिहासिक पर्यटक मार्गों तक ही सीमित है, जबकि मुख्य यातायात अब बड़ी लाइन पर स्थानांतरित हो चुका है।

112. (B) केवल 1, 2, 3 और 4
भारत में टेलीविजन सेवा की शुरुआत 1959 में दिल्ली से हुई और धीरे-धीरे 1972 तक अन्य केंद्रों तक फैली। 1976 में इसे दूरदर्शन का नाम मिला। इन्सैट-1ए के लॉन्च के बाद पूरे देश में एक साथ कार्यक्रमों का प्रसारण संभव हुआ। यह कहना गलत है कि शुरुआत में यह सेवा पूरे देश में उपलब्ध थी, क्योंकि प्रारंभिक वर्षों में यह केवल दिल्ली और कुछ चुनिंदा क्षेत्रों तक ही सीमित थी।

113. (B) ई-मेल भेजना
उपग्रहों से प्राप्त चित्रों और डेटा का उपयोग मौसम के पूर्वानुमान, प्राकृतिक आपदाओं की निगरानी और सीमा क्षेत्रों की सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण कार्यों के लिए किया जाता है। ये चित्र व्यापक भौगोलिक क्षेत्र का सटीक दृश्य प्रदान करते हैं। हालांकि, ई-मेल भेजना एक व्यक्तिगत संचार प्रक्रिया है जो इंटरनेट और कंप्यूटर नेटवर्क पर आधारित है। ई-मेल के लिए उपग्रह चित्रों की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि यह दूरसंचार उपग्रहों के सिग्नल का उपयोग करता है।

114. (A) यह महाराष्ट्र, गोवा तथा केरल राज्यों की संयुक्त परियोजना है।
कोंकण रेलवे परियोजना के बारे में यह तथ्य गलत है कि इसमें केरल एक मुख्य भागीदार राज्य है। वास्तव में, यह महाराष्ट्र, गोवा और कर्नाटक राज्यों का एक संयुक्त उद्यम है। यह 760 किलोमीटर लंबा रेलमार्ग है जिसमें 91 सुरंगें और लगभग 2000 पुल शामिल हैं। 1998 में शुरु हुई यह परियोजना अपनी जटिल इंजीनियरिंग और पश्चिमी तट के दुर्गम क्षेत्रों को रेल से जोड़ने के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

115. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
विभिन्न संचार माध्यमों की अपनी विशिष्ट भूमिकाएँ हैं। इंटरनेट ई-कॉमर्स और डिजिटल मौद्रिक लेनदेन को सुगम बनाता है, जबकि रेडियो या आकाशवाणी सूचना के प्रसारण का एक सशक्त माध्यम है। टेलीविजन एक दृश्य-श्रव्य माध्यम है जो सूचना को अधिक प्रभावी बनाता है। उपग्रहों का उपयोग मुख्य रूप से प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन और आपदाओं की निरंतर निगरानी के लिए किया जाता है, जो राष्ट्र की सुरक्षा के लिए अपरिहार्य है।

116. (D) 19,700 कि.मी. से 1,36,440 कि.मी.
भारत में राष्ट्रीय महामार्गों का विस्तार स्वतंत्रता के बाद से उल्लेखनीय रहा है। वर्ष 1951 में इन सड़कों की कुल लंबाई मात्र 19,700 किलोमीटर थी, जो देश की बढ़ती जरूरतों के साथ निरंतर बढ़ती रही। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, 2020 तक राष्ट्रीय महामार्गों का यह नेटवर्क बढ़कर 1,36,440 किलोमीटर तक पहुँच गया है। यह वृद्धि देश के आर्थिक एकीकरण और बेहतर सड़क परिवहन बुनियादी ढांचे के विकास को दर्शाती है।

117. (C) असम में सिलचर से गुजरात में पोरबंदर
पूर्व-पश्चिम गलियारा भारत की एक विशाल सड़क बुनियादी ढांचा परियोजना है जो देश के पूर्वी और पश्चिमी हिस्सों को जोड़ती है। यह महामार्ग असम राज्य के सिलचर शहर से शुरु होकर गुजरात के तटीय शहर पोरबंदर तक विस्तृत है। लगभग 3,640 किलोमीटर लंबा यह गलियारा विभिन्न राज्यों से होकर गुजरता है और देश के सुदूर क्षेत्रों के बीच माल और यात्रियों की आवाजाही को बहुत सुगम बनाता है।

118. (B) केवल 1, 2 और 3
सड़कें भारत के आर्थिक विकास में बहुआयामी भूमिका निभाती हैं। ये छोटी दूरियों के लिए सबसे उपयुक्त हैं और कृषि उपज को सीधे बाजारों तक पहुँचाकर किसानों की मदद करती हैं। इसके अलावा, औद्योगिक क्षेत्रों को कच्चा माल और तैयार माल पहुँचाने में भी इनका योगदान अतुलनीय है। यह कहना गलत है कि ये केवल बड़े शहरों के विकास में सहायक हैं, क्योंकि ये ग्रामीण जीवन की भी जीवन रेखा हैं।

119. (D) उन्हें घोल या गारा (स्लरी) में बदलना पड़ता है।
पाइपलाइनें आमतौर पर तरल और गैसों के परिवहन के लिए उपयोग की जाती हैं, लेकिन आधुनिक तकनीक के माध्यम से अब ठोस पदार्थों को भी इनके द्वारा भेजा जा सकता है। इसके लिए ठोस पदार्थों को बारीक पीसकर पानी या किसी अन्य तरल के साथ मिलाया जाता है, जिससे वे 'घोल' या 'गारा' (स्लरी) बन जाते हैं। इस अवस्था में उन्हें पाइपलाइनों के माध्यम

अध्याय 16
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार

1. वर्ष 1950-51 में भारत का वैदेशिक व्यापार का मूल्य कितना था?
(A) 77,19,796 करोड़ रुपए
(B) 1,214 करोड़ रुपए
(C) 5,01,065 करोड़ रुपए
(D) 8,45,534 करोड़ रुपए

2. 'पृष्ठप्रदेश' (hinter land) का क्या अर्थ है?
(A) पत्तन की सेवाओं का उपयोग करने वाला भौगोलिक क्षेत्र
(B) पत्तन के सामने स्थित जलीय क्षेत्र का प्रमुख भाग
(C) पत्तन के भीतर स्थित एक प्रमुख औद्योगिक केंद्र
(D) एक देश का तटीय क्षेत्र तथा उससे जुड़ा जल क्षेत्र

3. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (पत्तन)
P. पारादीप
Q. कोच्चि
R. दीनदयाल पत्तन
S. तूतीकोरिन
List II: (अवस्थिति)
1. कच्छ की खाड़ी
2. तमिलनाडु
3. महानदी डेल्टा
4. बेंवानद कायाल
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

4. भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) भारत का व्यापार संतुलन ऐतिहासिक रूप से हमेशा सकारात्मक रहा है।
(B) भारत केवल अपने पड़ोसी देशों के साथ ही द्विपक्षीय व्यापार करता है।
(C) भारत वर्तमान में विश्व व्यापार का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है।
(D) हाल के वर्षों में विदेशी व्यापार की मात्रा और मूल्य दोनों बढ़े हैं।

5. यदि किसी कंपनी को बड़ी मात्रा में लौह-अयस्क का निर्यात जापान को करना है, तो वह किस पत्तन का उपयोग करना पसंद करेगी जो इस कार्य के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है?
(A) कोच्चि
(B) हल्दिया
(C) मार्मागाओ
(D) चेन्नई

6. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): कोच्चि पत्तन को स्वेज-कोलंबो मार्ग के पास अवस्थित होने का लाभ प्राप्त है।
कारण (R): यह एक प्राकृतिक पत्तन है जिसे 'अरब सागर की रानी' के नाम से जाना जाता है।
दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

7. भारत में 1970 के दशक के बाद खाद्यान्नों के आयात में कमी आने का प्रमुख कारण क्या था?
(A) अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कीमतों में वृद्धि
(B) जनसंख्या वृद्धि में कमी
(C) औद्योगिक विकास में तेजी
(D) हरित क्रांति में सफलता

8. भारत का विशालतम कंटेनर पत्तन कौन सा है?
(A) जवाहरलाल नेहरु पत्तन
(B) मुंबई पत्तन
(C) चेन्नई पत्तन
(D) दीनदयाल पत्तन

9. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. कोलकाता पत्तन हुगली नदी पर स्थित है।
2. यह बंगाल की खाड़ी से 128 कि.मी. अंदर स्थित है।
3. इसका विकास पुर्तगालियों द्वारा किया गया था।
4. यह पत्तन गाद की समस्या से जूझ रहा है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4

कृषि उत्पादों और औद्योगिक माल की सस्ती ढुलाई के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो बिहार और उत्तर प्रदेश के प्रमुख शहरों को समुद्री बंदरगाहों से अप्रत्यक्ष रूप से जोड़ता है।

131. (C) 85 प्रतिशत
भारत में सड़क परिवहन यात्री आवाजाही का सबसे प्रमुख माध्यम है। देश के कुल यात्री यातायात का लगभग 85 प्रतिशत हिस्सा सड़कों के माध्यम से ही संपन्न होता है। यह उच्च प्रतिशत सड़कों की व्यापक पहुँच और घर-घर तक सेवा प्रदान करने की उनकी क्षमता को दर्शाता है। बसें, निजी वाहन और अन्य सड़क परिवहन के साधन लोगों की दैनिक यात्रा और लंबी दूरी के सफर के लिए प्राथमिक विकल्प बने हुए हैं।

132. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारतीय रेलवे ने अपनी कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए पारंपरिक वाष्प इंजनों को पूरी तरह से हटाकर आधुनिक डीजल और विद्युत इंजनों को अपनाया है। ये नए इंजन पुराने कोयले वाले इंजनों की तुलना में कहीं अधिक शक्तिशाली, तेज और ऊर्जा-कुशल होते हैं। इनके उपयोग से न केवल ट्रेनों की औसत गति में सुधार हुआ है, बल्कि भारी माल ले जाने की क्षमता भी कई गुना बढ़ गई है, जिससे रेल परिवहन सुदृढ़ हुआ है।

133. (C) 1157 कि.मी.
एशिया की पहली लंबी दूरी की पाइपलाइन के रूप में विख्यात, नहरकटिया-बरौनी पाइपलाइन का निर्माण असम से बिहार तक कच्चे तेल के परिवहन के लिए किया गया था। इस पाइपलाइन की कुल लंबाई लगभग 1,157 किलोमीटर है। यह परियोजना भारत में तेल आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत करने और रिफाइनरी केंद्रों तक कच्चे माल की निरंतर उपलब्धता सुनिश्चित करने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम थी, जिसने परिवहन लागत को काफी कम कर दिया।

134. (B) अंतः स्थलीय जलमार्ग प्राधिकरण
भारतीय अंतःस्थलीय जलमार्ग प्राधिकरण देश में जल परिवहन नेटवर्क के विकास और प्रबंधन के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी संस्था है। इसका कार्य नदियों और नहरों को नौकायन योग्य बनाना, आवश्यक बुनियादी ढांचा विकसित करना और जलमार्गों के माध्यम से माल एवं यात्री परिवहन को बढ़ावा देना है। यह प्राधिकरण पर्यावरण के अनुकूल और लागत प्रभावी परिवहन विकल्प के रूप में जलमार्गों को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने के लिए कार्य करता है।

135. (D) सभी 1, 2, 3 और 4
अटल टनल के बारे में सभी उल्लेखित तथ्य सही हैं। यह 9.02 किलोमीटर लंबी विश्व की महत्वपूर्ण सुरंग है, जिसे सीमा सड़क संगठन ने बनाया है। समुद्र तल से 3000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह सुरंग हिमाचल प्रदेश में मनाली को लाहौल-स्पीति घाटी से जोड़ती है। यह दुर्गम क्षेत्रों के निवासियों के लिए पूरे वर्ष संपर्क बनाए रखने और पर्यटन एवं आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने का एक प्रमुख साधन है।

136. (A) पवन हंस
पवन हंस लिमिटेड भारत की एक प्रमुख हेलीकॉप्टर सेवा प्रदाता कंपनी है, जो विशेष रूप से दुर्गम भौगोलिक क्षेत्रों के लिए उपयोगी है। पर्वतीय क्षेत्रों और उत्तर-पूर्वी राज्यों में, जहाँ सड़क या रेल मार्ग बनाना कठिन है, पवन हंस की हेलीकॉप्टर सेवाएँ जीवन रेखा का कार्य करती हैं। यह न केवल यात्रियों को सुगम यात्रा प्रदान करती है, बल्कि आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं और सामरिक जरूरतों को पूरा करने में भी सक्षम है।

137. (C) सिकंदराबाद
भारतीय रेलवे के दक्षिण-मध्य मंडल का मुख्यालय तेलंगाना राज्य के सिकंदराबाद शहर में स्थित है। यह मंडल दक्षिण और मध्य भारत के एक बड़े हिस्से के रेल परिचालन को नियंत्रित करता है और यात्रियों को उच्च गुणवत्ता वाली सेवाएं प्रदान करने के लिए जाना जाता है। इस मुख्यालय के तहत आने वाला नेटवर्क व्यावसायिक और औद्योगिक रूप से अत्यंत व्यस्त है, जो देश के रेल आर्थिक ढांचे में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

138. (B) P-3, Q-2, R-1, S-4
भारत की विभिन्न परिवहन परियोजनाओं के विशिष्ट लक्ष्य हैं। स्वर्णिम चतुर्भुज प्रमुख महानगरों को जोड़ने के लिए है, जबकि भारतमाला परियोजना आर्थिक गलियारों के विकास पर केंद्रित है। उड़ान योजना का मुख्य उद्देश्य क्षेत्रीय कनेक्टिविटी के माध्यम से आम नागरिकों के लिए हवाई यात्रा को सुलभ बनाना है। कोंकण रेलवे पश्चिमी तट के कठिन रास्तों पर रेल संपर्क प्रदान कर परिवहन की समस्या का समाधान करती है, जो इंजीनियरिंग की मिसाल है।

139. (D) प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन में
भारतीय दूरसंवेदी उपग्रह प्रणाली (IRS) उपग्रहों द्वारा एकत्रित वर्णक्रमीय डेटा का प्राथमिक उपयोग देश के प्राकृतिक संसाधनों के वैज्ञानिक प्रबंधन और निगरानी के लिए किया जाता है। इसके माध्यम से कृषि क्षेत्रों का मानचित्रण, भूजल संसाधनों की खोज, वन क्षेत्र की निगरानी और भूमि उपयोग के पैटर्न का विश्लेषण किया जाता है। यह सटीक डेटा योजनाकारों को संसाधनों के संधारणीय उपयोग और पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रभावी नीतियां बनाने में सक्षम बनाता है।

140. (B) जल परिवहन
जल परिवहन को सभी परिवहन माध्यमों में सबसे सस्ता और पर्यावरण के अनुकूल माना जाता है। इसके मार्गों के निर्माण और रखरखाव के लिए रेल या सड़क की तरह भारी निवेश की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि यह प्राकृतिक जल निकायों का उपयोग करता है। इसके अलावा, जहाज और नौकाएं कम ईंधन में अधिक मात्रा में भारी माल ढोने की क्षमता रखती हैं, जिससे प्रति इकाई परिवहन लागत काफी कम हो जाती है।

141. (C) वेस्टर्न रेलवे - जयपुर
भारतीय रेलवे के मंडलों और उनके मुख्यालयों के युग्मों में वेस्टर्न रेलवे और जयपुर का मेल गलत है। पश्चिमी रेलवे का मुख्यालय वास्तव में मुंबई में स्थित है। जयपुर शहर उत्तर-पश्चिमी रेलवे मंडल का मुख्यालय है। अन्य युग्म जैसे उत्तरी

रेलवे के लिए नई दिल्ली, पूर्वी रेलवे के लिए कोलकाता और दक्षिणी रेलवे के लिए चेन्नई बिल्कुल सही और आधिकारिक प्रशासनिक व्यवस्था के अनुरुप हैं।

142. (A) केवल 1, 2 और 4
भारत का सड़क जाल विश्व का दूसरा सबसे बड़ा नेटवर्क है, जिसकी कुल लंबाई 62 लाख किलोमीटर से अधिक है। ग्रामीण सड़कें इस विशाल नेटवर्क का लगभग 80 प्रतिशत हिस्सा बनाती हैं, जो अंतिम छोर तक कनेक्टिविटी प्रदान करती हैं। यह कहना गलत है कि राष्ट्रीय महामार्ग 10% हैं, क्योंकि वे केवल 2% हैं। साथ ही, नागपुर योजना रजवाड़ों के सहयोग की कमी के कारण पूरी तरह सफल नहीं हो पाई थी।

143. (C) दोनों कथन सही हैं, और कथन 2, कथन 1 के लिए एक कारण है।
भारत में पिछले कुछ वर्षों में गैस पाइपलाइन नेटवर्क का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है, जो अब कई गुना बढ़ चुका है। इस तीव्र वृद्धि का एक मुख्य कारण हजीरा-विजयपुर-जगदीशपुर पाइपलाइन का सफल क्रियान्वयन रहा है। इस परियोजना ने देश में गैस ग्रिड की नींव रखी और गैस आधारित अर्थव्यवस्था के विकास को गति प्रदान की, जिससे औद्योगिक और घरेलू उपभोक्ताओं तक गैस की पहुँच सुलभ और विश्वसनीय हो गई।

144. (B) बड़ी लाइन (Broad Gauge)
भारतीय रेलवे के आधुनिकीकरण और 'यूनिगेज' नीति के तहत, अब देश में बड़ी लाइन या ब्रॉड गेज का विस्तार सबसे अधिक हो गया है। लगभग सभी प्रमुख रेल मार्गों को बड़ी लाइन में बदल दिया गया है ताकि ट्रेनों की गति और भार ढोने की क्षमता बढ़ाई जा सके। मीटर और छोटी लाइनों को अब केवल कुछ विशेष क्षेत्रों तक ही सीमित रखा गया है, जबकि मुख्य नेटवर्क ब्रॉड गेज ही है।

145. (B) संचार
मानव सभ्यता के विकास में संचार एक आधारभूत प्रक्रिया है जिसके माध्यम से विचारों, दर्शन और संदेशों का विनिमय किया जाता है। जहाँ परिवहन लोगों और वस्तुओं की शारीरिक गतिशीलता को सुगम बनाता है, वहीं संचार सूचनाओं और भावनाओं के प्रवाह को संभव बनाता है। इसके बिना सामाजिक संपर्क और सामूहिक प्रगति असंभव है। आधुनिक संचार माध्यमों ने दुनिया को एक वैश्विक गाँव में बदलकर सूचना साझा करने को अत्यंत तीव्र बना दिया है।

146. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
इंटरनेट वर्तमान में व्यक्तिगत संचार का सबसे आधुनिक और प्रभावी तंत्र है, जिसने संवाद करने के तरीकों को पूरी तरह बदल दिया है। इसकी सफलता का एक बड़ा कारण ई-मेल जैसी सेवाएँ हैं, जो बहुत कम लागत में दुनिया भर में कहीं भी सूचनाओं और दस्तावेजों को तुरंत भेजने की सुविधा देती हैं। यह अभिगम्यता और कम परिचालन लागत ही इंटरनेट को आज का सर्वाधिक पसंदीदा संचार माध्यम बनाती है।

147. (C) रा.ज.मा. 5
राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-5 भारत के पूर्वी तटीय क्षेत्र में स्थित एक महत्वपूर्ण जल परिवहन गलियारा है। यह मुख्य रूप से ओडिशा और पश्चिम बंगाल के कुछ हिस्सों को कवर करता है, जिसमें महानदी डेल्टा, ब्राह्मणी नदी और पूर्वी तट नहर के हिस्से शामिल हैं। यह जलमार्ग खनिज समृद्ध क्षेत्रों को बंदरगाहों से जोड़ने में सहायक है, जिससे भारी माल की ढुलाई सस्ती और कुशल होती है, जो क्षेत्रीय आर्थिक विकास को मजबूती प्रदान करती है।

148. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारतीय रेलवे के विभिन्न मंडलों के मुख्यालय सामरिक और प्रशासनिक महत्व के स्थानों पर स्थित हैं। पूर्वोत्तर रेलवे का केंद्र गोरखपुर में है, जबकि पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे का संचालन मालीगाँव (गुवाहाटी) से होता है। दक्षिण-पूर्व रेलवे का मुख्यालय कोलकाता में स्थित है और पश्चिम-मध्य रेलवे का प्रबंधन जबलपुर से किया जाता है। यह विकेंद्रीकृत मुख्यालय प्रणाली इतने विशाल रेल नेटवर्क के प्रभावी नियंत्रण और सुचारु संचालन में सहायता करती है।

149. (C) बर्फ़ हटाने की ज़िम्मेदारी
सीमा सड़क संगठन केवल सड़कों और पुलों के निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि ऊँचाई वाले सीमावर्ती क्षेत्रों में इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। विशेष रूप से सर्दियों के दौरान जब भारी बर्फबारी के कारण सामरिक मार्ग बंद हो जाते हैं, तब बीआरओ बर्फ हटाने की जिम्मेदारी निभाता है। यह कार्य रक्षा बलों की आवाजाही और स्थानीय निवासियों के लिए आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए अपरिहार्य है।

150. (B) 1943 की 'नागपुर योजना' की विफलता से पहले का काल
बीसवीं सदी के शुरुआती दशकों में भारत में आधुनिक सड़कों का विकास बहुत ही धीमी गति से हुआ और यह अत्यंत सीमित था। इसका मुख्य कारण एक व्यापक और संगठित राष्ट्रीय सड़क नीति का अभाव था। 1943 में 'नागपुर योजना' के माध्यम से सड़क विकास का पहला गंभीर प्रयास किया गया था, लेकिन उससे पहले के काल में सड़कों के निर्माण के लिए कोई व्यवस्थित योजना या पर्याप्त वित्तीय संसाधन उपलब्ध नहीं थे।

151. (B) यह किसानों को बेहतर बाजार पहुँच और मूल्य प्रदान करता है।
ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों का विस्तार कृषि समृद्धि का मुख्य आधार है। सड़कें किसानों को उनकी उपज को दूर के बाजारों तक तेजी से पहुँचाने में मदद करती हैं। इससे फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान में कमी आती है और किसानों को उनकी फसलों का उचित मूल्य प्राप्त होता है। साथ ही, कृषि आदानों की सुलभता भी इसके माध्यम से बढ़ती है।

152. (A) यह दूरस्थ क्षेत्रों को मुख्यधारा से जोड़कर सामाजिक एकीकरण को सुगम बनाता है।
सड़क परिवहन दूरदराज के और पिछड़े क्षेत्रों को राष्ट्रीय मुख्यधारा से जोड़ने में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य

करता है। यह सामाजिक-आर्थिक एकीकरण को बढ़ावा देता है और विभिन्न क्षेत्रों के बीच मौजूद असमानताओं को कम करता है। इसके माध्यम से लोग स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी अनिवार्य सामाजिक सेवाओं तक आसानी से पहुँच सकते हैं जिससे विकास सुनिश्चित होता है।

153. (C) यातायात की भीड़ और प्रदूषण।
शहरी क्षेत्रों में सड़क नेटवर्क पर वाहनों के अत्यधिक दबाव के कारण यातायात की भीड़ एक बड़ी समस्या बन गई है। इसके परिणामस्वरूप वायु प्रदूषण का स्तर बढ़ता है, जो सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इसके साथ ही, दुर्घटनाओं की बढ़ती संख्या भी एक गंभीर चुनौती है, जिसके समाधान के लिए सरकार स्मार्ट ट्रैफिक प्रबंधन प्रणालियों और बुनियादी ढांचे में भारी निवेश कर रही है।

154. (D) स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी अनिवार्य सेवाओं तक बेहतर पहुँच सुनिश्चित करने में।
सड़क विकास का प्रभाव केवल माल और वस्तुओं की आवाजाही तक सीमित नहीं है, बल्कि यह अप्रत्यक्ष रुप से सामाजिक सेवाओं को सुगम बनाता है। बेहतर सड़क संपर्क के कारण ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की पहुँच आधुनिक अस्पतालों और शिक्षण संस्थानों तक आसान हो जाती है। यह सुलभता ग्रामीण जीवन स्तर को सुधारने और उनके समग्र सामाजिक विकास में सहायक होती है।

155. (C) भारत में सड़क परिवहन का व्यापक आर्थिक और सामाजिक महत्व।
यह अनुच्छेद मुख्य रुप से देश के समग्र विकास में सड़क परिवहन की बहुआयामी भूमिका पर केंद्रित है। यह रेखांकित करता है कि सड़कें किस प्रकार कृषि, शहरी अर्थव्यवस्था और क्षेत्रीय संतुलन के लिए अनिवार्य हैं। परिवहन का यह माध्यम केवल आवाजाही का साधन नहीं, बल्कि आर्थिक प्रगति और सामाजिक सुधार के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है जो राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोता है।

156. (B) माल और यात्री यातायात को अलग कर माल ढुलाई को सुगम बनाना।
समर्पित माल गलियारों का निर्माण मालगाड़ियों के लिए अलग ट्रैक प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया है। इससे माल और यात्री परिवहन के बीच होने वाला परिचालन संघर्ष समाप्त हो जाता है। यात्री ट्रेनों से अलग चलने के कारण मालगाड़ियाँ अधिक भार लेकर तेज गति से चल सकती हैं, जिससे लॉजिस्टिक्स लागत काफी कम होती है और माल की वितरण प्रणाली में सुधार होता है।

157. (D) विभिन्न परिवहन साधनों को एकीकृत करने वाले मल्टी-मॉडल हब।
स्टेशन पुनर्विकास कार्यक्रम के अंतर्गत रेलवे स्टेशनों को आधुनिक 'मल्टी-मॉडल हब' के रुप में विकसित किया जा रहा है। इन केंद्रों पर रेल, सड़क और मेट्रो जैसी विभिन्न परिवहन प्रणालियों का एकीकरण किया जाता है। यहाँ यात्रियों को विश्व स्तरीय सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं, जिससे यात्रा का अनुभव सुगम और आरामदायक बनता है और परिवहन के विभिन्न साधनों के बीच यात्रियों का स्थानांतरण आसान होता है।

158. (A) परिचालन दक्षता और यात्री सुविधाओं में व्यापक सुधार करना।
भारतीय रेलवे में डिजिटलीकरण ने परिचालन और यात्री सेवाओं के प्रबंधन में क्रांतिकारी सुधार किए हैं। ऑनलाइन टिकटिंग और वास्तविक समय में ट्रेनों की निगरानी जैसी सुविधाओं ने यात्रियों की सुविधा को बढ़ाया है। स्वचालित सिग्नलिंग और डेटा-आधारित प्रणालियों ने न केवल ट्रेनों की सुरक्षा सुनिश्चित की है, बल्कि रेलवे के दैनिक कार्यों की दक्षता को भी पहले की तुलना में काफी मजबूत किया है।

159. (C) मालगाड़ियों की गति और भार क्षमता में वृद्धि।
जब माल और यात्री यातायात के लिए अलग-अलग रास्ते उपलब्ध होते हैं, तो मालगाड़ियों के संचालन में आने वाली बाधाएं दूर हो जाती हैं। इसके प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में मालगाड़ियाँ उच्च गति और भारी भार क्षमता के साथ चलने में सक्षम होती हैं। यह माल की त्वरित डिलीवरी सुनिश्चित करता है, जो औद्योगिक गतिविधियों और देश की आपूर्ति श्रृंखला को मजबूत बनाने के लिए लाभदायक है।

160. (A) रेलवे को आधुनिक, टिकाऊ और आर्थिक रुप से व्यवहार्य बनाना।
रेलवे आधुनिकीकरण का व्यापक उद्देश्य इस विशाल नेटवर्क को अधिक कुशल, सुरक्षित और आर्थिक रुप से मजबूत बनाना है। नई तकनीकों और बुनियादी ढांचे के विकास के माध्यम से इसे एक टिकाऊ परिवहन माध्यम के रूप में तैयार किया जा रहा है। यह प्रयास भारतीय रेलवे को भविष्य की जरूरतों के अनुरुप ढालने और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को अधिक प्रभावी बनाने हेतु हैं।

161. (D) भारी वस्तुओं के लिए लागत-प्रभावी है।
अंतःस्थलीय जलमार्ग भारी और बड़ी मात्रा वाली वस्तुओं की ढुलाई के लिए एक उत्कृष्ट और किफायती माध्यम प्रदान करते हैं। सड़क और रेल की तुलना में इसमें परिवहन लागत काफी कम होती है, जो इसे व्यापार के लिए लाभप्रद बनाता है। कोयला, खनिज और भारी मशीनरी जैसे सामानों के लंबी दूरी के परिवहन के लिए यह सबसे उपयुक्त और सस्ता विकल्प माना जाता है।

162. (B) प्रति टन-किलोमीटर कम ईंधन खपत और निम्न कार्बन उत्सर्जन।
जलमार्गों को एक हरित परिवहन विकल्प माना जाता है क्योंकि ये सड़क या रेल की तुलना में प्रति टन-किलोमीटर ईंधन की बहुत कम खपत करते हैं। ईंधन की यह दक्षता कार्बन उत्सर्जन को न्यूनतम रखने में सहायक होती है। पर्यावरण की दृष्टि से यह माध्यम सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने और वायु प्रदूषण को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

से लंबी दूरी तक कुशलतापूर्वक परिवहित किया जा सकता है।

120. (A) रेल व सड़क परिवहन से मिलने वाली अत्यधिक कठिन व्यावसायिक प्रतियोगिता
भारत में अंतर्देशीय जल परिवहन के विकास के सामने सबसे बड़ी बाधा रेल और सड़क परिवहन से मिलने वाली तीव्र प्रतिस्पर्धा है। सड़क और रेल मार्ग बहुत तेजी से विकसित हुए हैं और वे जलमार्गों की तुलना में अधिक तेज सेवा प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, नदियों में पानी की कमी और बुनियादी ढांचे के अभाव के कारण लोग अक्सर सड़क या रेल के माध्यम से माल भेजना अधिक सुविधाजनक मानते हैं।

121. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
भारत का सड़क नेटवर्क वर्तमान में विश्व का दूसरा सबसे बड़ा नेटवर्क है, जो आधुनिक विकास का परिणाम है। साथ ही, यह भी सच है कि भारत में सड़क निर्माण की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। हालांकि, प्राचीन काल में सड़कों का अस्तित्व होना आज के विशाल और आधुनिक सड़क जाल के विश्व में दूसरे स्थान पर होने का सीधा वैज्ञानिक कारण या एकमात्र व्याख्या नहीं है, बल्कि यह हालिया निवेश की सफलता है।

122. (A) केवल टेलीग्राफ द्वारा
आरंभिक समय में जब आधुनिक संचार तकनीकों का आविष्कार नहीं हुआ था, तब लोग संदेश भेजने के लिए ढोल बजाने, धुएँ के संकेतों या तेज धावकों का उपयोग करते थे। ये पारंपरिक तरीके सूचना प्रसारित करने के प्राथमिक माध्यम थे। टेलीग्राफ एक अपेक्षाकृत आधुनिक विद्युत उपकरण है जिसे 19वीं सदी में विकसित किया गया था। अतः प्राचीन संचार जाल की पारंपरिक विधाओं में टेलीग्राफ को शामिल नहीं किया जा सकता है।

123. (D) 34 कि.मी.
भारतीय रेल का गौरवशाली इतिहास 16 अप्रैल 1853 को शुरू हुआ, जब देश की पहली पैसेंजर ट्रेन पटरी पर दौड़ी। यह ऐतिहासिक सफर मुंबई के बोरी बंदर स्टेशन से थाणे के बीच तय किया गया था। इस पहली रेल लाइन की कुल लंबाई मात्र 34 किलोमीटर थी। इस छोटी सी शुरुआत ने आगे चलकर दुनिया के सबसे विशाल और व्यस्त रेल नेटवर्क में से एक के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया।

124. (A) 1, 2, 3, 4
भारत के परिवहन और संचार क्षेत्र में विकास का एक क्रमिक कालानुक्रम रहा है। सबसे पहले 1853 में पहली रेल लाइन का निर्माण हुआ, उसके बाद 1911 में वायु परिवहन की शुरुआत हुई। रेडियो प्रसारण का पहला कार्यक्रम 1923 में आयोजित किया गया। अंततः, 1980 के दशक में इन्सैट प्रणाली की स्थापना के साथ उपग्रह संचार के क्षेत्र में भारत ने एक आधुनिक और सशक्त युग में प्रवेश किया।

125. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
परिवहन के प्रत्येक साधन की अपनी विशिष्ट विशेषताएं और लाभ हैं। सड़कें घर-घर तक पहुँच प्रदान करने में श्रेष्ठ हैं, जबकि रेलवे भारी माल की लंबी दूरी तक ढुलाई के लिए सबसे उपयुक्त है। जल परिवहन सभी माध्यमों में सबसे सस्ता विकल्प है, और वायु परिवहन सबसे तीव्र गति से यात्रा सुनिश्चित करता है। इन सभी माध्यमों का संतुलित उपयोग किसी भी राष्ट्र की आर्थिक और सामाजिक प्रगति के लिए अनिवार्य है।

126. (D) इसमें केवल राष्ट्रीय महामार्गों का निर्माण शामिल है।
भारतमाला परियोजना एक बहुआयामी बुनियादी ढांचा कार्यक्रम है जो केवल राष्ट्रीय राजमार्गों तक सीमित नहीं है। इसमें आर्थिक गलियारों के विकास के साथ-साथ रिंग रोड, बाईपास और सड़क घनत्व में सुधार जैसी व्यापक योजनाएं शामिल हैं। इसका मुख्य उद्देश्य माल ढुलाई की दक्षता बढ़ाना और शहरों में यातायात की भीड़ को कम करना है। यह परियोजना देश की रसद लागत को कम करने के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण अपनाती है।

127. (A) प्राकृतिक गैस के परिवहन, प्रसंस्करण और विपणन के लिए
गेल (इंडिया) लिमिटेड की स्थापना वर्ष 1984 में भारत सरकार द्वारा एक सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम के रूप में की गई थी। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य देश में प्राकृतिक गैस की विशाल बुनियादी सुविधाओं का विकास करना है। यह कंपनी गैस के परिवहन के लिए पाइपलाइन बिछाने, गैस के प्रसंस्करण और इसके औद्योगिक एवं घरेलू विपणन के लिए उत्तरदायी है, जिससे देश की स्वच्छ ऊर्जा जरूरतों को पूरा किया जा सके।

128. (A) केवल 1, 2, 3 और 5
राष्ट्रीय महामार्गों का निर्माण और रखरखाव केंद्र सरकार की जिम्मेदारी है और ये राज्यों की राजधानियों एवं प्रमुख बंदरगाहों को जोड़ते हैं। इनका उपयोग सामरिक सुरक्षा और रक्षा सामग्री के परिवहन के लिए भी होता है। 2020 में इनकी लंबाई 1,36,440 किलोमीटर थी। यह कहना गलत है कि ये केवल 10% यातायात वहन करते हैं, क्योंकि वास्तव में ये कुल सड़क यातायात का लगभग 40% वहन करते हैं।

129. (B) वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने में मदद करके
मेट्रो रेल प्रणाली नगरीय पर्यावरण में सुधार का एक शक्तिशाली साधन है। यह मुख्य रूप से बिजली पर संचालित होती है, जिससे यह जीवाश्म ईंधन से चलने वाले वाहनों की तुलना में बहुत कम उत्सर्जन करती है। शहरों में बड़ी संख्या में लोग निजी कारों के बजाय मेट्रो का उपयोग करते हैं, जिससे सड़कों पर वाहनों का बोझ कम होता है और हानिकारक गैसों का उत्सर्जन घटता है, जो अंततः वायु प्रदूषण को नियंत्रित करता है।

130. (A) पटना तक
राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-1, जो गंगा नदी पर विकसित है, नौकायन के लिए एक प्रमुख जलमार्ग है। इस मार्ग पर आधुनिक और यंत्रीकृत नौकाओं द्वारा प्रयागराज से आगे मुख्य रूप से पटना तक सुचारु रूप से नौकायन किया जा सकता है। यह जलमार्ग

173. (D) आपदाओं की निगरानी और राहत कार्यों में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करना।
प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़ और चक्रवात के समय उपग्रह प्रौद्योगिकी एक जीवन रक्षक उपकरण के रूप में कार्य करती है। यह आपदा की स्थिति की निरंतर निगरानी करने और राहत कार्यों के लिए सटीक जानकारी प्रदान करने में सहायता करती है। उपग्रह डेटा के माध्यम से आपदा प्रभावित क्षेत्रों की पहचान करना और वहां तेजी से सहायता पहुँचाना संभव होता है, जिससे नुकसान को कम किया जाता है।

174. (A) संचार और सुदूर संवेदन उपग्रह।
भारत ने अपनी तकनीकी आवश्यकताओं के अनुसार उपग्रह कार्यक्रमों को संचार और सुदूर संवेदन श्रेणियों में विभाजित किया है। संचार उपग्रहों का उपयोग मुख्य रूप से प्रसारण और दूरसंचार सेवाओं को मजबूत करने के लिए किया जाता है। जबकि सुदूर संवेदन उपग्रह पृथ्वी के संसाधनों की मैपिंग और निगरानी के लिए समर्पित हैं। ये दोनों प्रणालियाँ मिलकर देश की तकनीकी प्रगति में संतुलित भूमिका निभाती हैं।

175. (C) स्थलीय नेटवर्क से स्वतंत्र होकर दूरस्थ क्षेत्रों को जोड़ना संभव बनाना।
उपग्रह संचार का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह किसी भी जमीनी तार या केबल नेटवर्क के बिना कार्य कर सकता है। इससे पहाड़ों, द्वीपों और रेगिस्तानों जैसे कठिन भौगोलिक क्षेत्रों में कनेक्टिविटी प्रदान करना अत्यंत आसान हो जाता है। स्थलीय बुनियादी ढांचे की सीमाओं से स्वतंत्र होने के कारण, यह तकनीक पूरे देश में सूचना के निर्बाध प्रसार और विश्वसनीय संचार पहुंच सुनिश्चित करती है।

उपभोक्ता के बीच की दूरी को पाटने में मदद करता है। इसके बिना व्यावसायिक गतिविधियाँ ठप हो जाएंगी और आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति श्रृंखला बाधित हो जाएगी, जिससे विकास रुक जाएगा।

99. (A) 2, 1, 4, 3
भारत में जल परिवहन के विकास की घटनाओं का एक निश्चित ऐतिहासिक क्रम है। केरल में नेहरु ट्रॉफी नौकादौड़ की परंपरा पुरानी है। इसके बाद 1986 में अंतःस्थलीय जलमार्ग प्राधिकरण की स्थापना हुई। इसके बाद राष्ट्रीय जलमार्ग-1 का व्यवस्थित विकास किया गया। अंततः, 2016 में राष्ट्रीय जलमार्ग अधिनियम पारित किया गया, जिसके तहत देश भर में 111 जलमार्गों को राष्ट्रीय स्तर की पहचान दी गई।

100. (D) सीमांत सड़कें एवं अंतर्राष्ट्रीय महामार्ग दोनों
भारत की सड़क प्रणाली में मुख्य श्रेणियों के अलावा 'अन्य सड़कों' के अंतर्गत सीमांत सड़कें और अंतर्राष्ट्रीय महामार्ग शामिल किए जाते हैं। सीमांत सड़कें देश की सामरिक सुरक्षा और सीमावर्ती क्षेत्रों के विकास के लिए महत्वपूर्ण होती हैं, जबकि अंतर्राष्ट्रीय महामार्ग पड़ोसी देशों के साथ व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को सुगम बनाते हैं। ये दोनों वर्ग राष्ट्रीय कनेक्टिविटी और क्षेत्रीय सहयोग के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

101. (C) सड़कों का संकेंद्रण केवल नगरों एवं उनके निकटवर्ती क्षेत्रों में होना
बीसवीं सदी के प्रारंभ और 1961 की योजना से पहले, भारत में सड़क बुनियादी ढांचे की सबसे बड़ी चुनौती इनका असमान वितरण था। अधिकांश सड़कें केवल प्रमुख नगरों और उनके आसपास के क्षेत्रों तक ही सीमित थीं, जिससे ग्रामीण भारत परिवहन के मामले में पूरी तरह पिछड़ा हुआ था। इस क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करने और गाँवों को शहरों से जोड़ने के लिए बाद में व्यापक सड़क योजनाएं बनाई गईं।

102. (B) P-3, Q-4, R-2, S-1
भारतीय रेलवे के विभिन्न मंडल मुख्यालय रणनीतिक शहरों में स्थित हैं जो उन क्षेत्रों के रेल परिचालन को नियंत्रित करते हैं। उत्तर-पश्चिमी रेलवे का मुख्यालय जयपुर में है, जबकि पूर्व-मध्य रेलवे का मुख्य केंद्र हाजीपुर में स्थित है। दक्षिण-पश्चिमी रेलवे का प्रबंधन हुबली से किया जाता है और दक्षिण-पूर्व-मध्य रेलवे का मुख्यालय छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में है। यह ढांचा विशाल रेल नेटवर्क के कुशल प्रशासन को सुनिश्चित करता है।

103. (A) कथन 1 सही है, किन्तु कथन 2 गलत है।
भारत में रेलमार्गों का प्रारंभिक विकास ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान हुआ था, लेकिन इसका मुख्य उद्देश्य भारत का आर्थिक विकास करना नहीं था। अंग्रेजों ने रेल का विस्तार मुख्य रूप से अपने प्रशासनिक नियंत्रण को मजबूत करने और भारतीय कच्चे माल को निर्यात के लिए बंदरगाहों तक आसानी से पहुँचाने के लिए किया था। यह व्यवस्था भारतीय संसाधनों के व्यवस्थित शोषण का एक प्रभावी माध्यम थी, न कि लोक कल्याण का साधन।

104. (A) 1959
ऑयल इंडिया लिमिटेड को एक कंपनी के रूप में वर्ष 1959 में निगमित किया गया था। इस संगठन का प्राथमिक उत्तरदायित्व भारत के उत्तर-पूर्वी हिस्सों में कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस के अन्वेषण, विकास और उत्पादन को बढ़ावा देना है। अपनी स्थापना के बाद से, ओआईएल ने देश की ऊर्जा सुरक्षा और घरेलू उत्पादन बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, विशेष रूप से असम और अन्य सीमावर्ती तेल क्षेत्रों के विकास में।

105. (C) INSAT
भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली यानी इन्सैट, भारत की एक बहुउद्देश्यीय और अत्यंत सफल उपग्रह श्रृंखला है। यह प्रणाली दूरसंचार, टेलीविजन प्रसारण और मौसम विज्ञान संबंधी सटीक अवलोकनों के लिए एकीकृत समाधान प्रदान करती है। इसकी सहायता से देश के दूरदराज के क्षेत्रों में भी रेडियो और टीवी सिग्नल पहुँचाना संभव हुआ है, साथ ही यह चक्रवात जैसी प्राकृतिक आपदाओं की समय पर चेतावनी देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

106. (A) केवल 1, 2 और 4
रेलमार्गों के आगमन से पूर्व अंतःस्थलीय जलमार्ग भारत में परिवहन का सबसे महत्वपूर्ण साधन थे। वर्तमान में देश में लगभग 14,500 किलोमीटर लंबा नौकायन योग्य मार्ग है। हालांकि, नदियों के जल का सिंचाई के लिए उपयोग और जलमार्गों में गाद जमा होने जैसी समस्याओं ने इसकी प्रभावशीलता कम कर दी है। वर्तमान में यह देश के कुल परिवहन में केवल 1 प्रतिशत का ही योगदान देता है।

107. (D) ब्रह्मपुत्र
राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-2 भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में ब्रह्मपुत्र नदी पर स्थित एक महत्वपूर्ण जल परिवहन मार्ग है। यह मार्ग असम राज्य में सदिया से धुबरी तक लगभग 891 किलोमीटर की दूरी तय करता है। यह जलमार्ग इस क्षेत्र के लिए जीवन रेखा के समान है, जो भारी माल की आवाजाही को सस्ता बनाता है और दुर्गम भौगोलिक क्षेत्रों में परिवहन का एक विश्वसनीय विकल्प प्रदान करता है।

108. (B) रा.ज.मा. 3
राष्ट्रीय जलमार्ग संख्या-3 केरल राज्य में स्थित है और यह पश्चिमी तट नहर, चंपाकारा नहर और उद्योग मंडल नहरों के एक एकीकृत नेटवर्क से बना है। यह जलमार्ग राज्य के औद्योगिक केंद्रों और बंदरगाहों के बीच माल की ढुलाई के लिए अत्यंत उपयोगी है। इसकी शांत जल प्रणालियाँ न केवल व्यावसायिक परिवहन बल्कि पर्यटन के लिए भी प्रसिद्ध हैं, जिससे यह दक्षिण भारत का एक महत्वपूर्ण जलमार्ग बन जाता है।

(C) केवल 1, 2 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

10. भारत के आयात संघटन के बदलते प्रारुप के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) पूँजीगत वस्तुओं के आयात में लगातार वृद्धि हुई है।
(B) 1950 और 1960 के दशक में खाद्यान्न एक प्रमुख आयात वस्तु थी।
(C) 1973 के ऊर्जा संकट के बाद पेट्रोलियम का आयात बढ़ा।
(D) उर्वरकों का आयात खाद्यान्न की जगह लेने वाली प्रमुख वस्तुओं में से एक था।

11. भारतीय पत्तनों के विकास से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. चेन्नई पत्तन का निर्माण
2. मार्मागाओ पत्तन का पुनर्प्रतिरुपण
3. दीनदयाल (कांडला) पत्तन का विकास
4. जवाहरलाल नेहरु पत्तन का विकास

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 1, 3, 2, 4
(C) 3, 1, 4, 2
(D) 2, 4, 1, 3

12. एक स्थलबद्ध पोताश्रय (Land-locked port) की क्या विशेषता होती है?
(A) यह केवल स्थलरुद्ध या समुद्र तट विहीन पड़ोसी देशों की सेवा करता है।
(B) यह चारों ओर से स्थल से घिरा और समुद्र से नहर द्वारा जुड़ा होता है।
(C) इस प्रकार के पत्तन पर केवल सड़क या रेल मार्ग से ही पहुँचा जा सकता है।
(D) यह आमतौर पर किसी बड़ी नदी के गहरे मुहाने पर अवस्थित होता है।

13. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (पत्तन)
P. न्यू मंगलौर
Q. विशाखापट्नम
R. मार्मागाओ
S. हल्दिया

List II: (प्रमुख पृष्ठप्रदेश/राज्य)
1. ओडिशा, झारखंड
2. कर्नाटक
3. आंध्र प्रदेश, तेलंगाना
4. गोवा, दक्षिणी महाराष्ट्र

(A) P-2, Q-3, R-4, S-1
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-1, Q-3, R-2, S-4
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

14. वर्ष 2021-22 में भारत के कुल निर्यात मूल्य में विनिर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी लगभग कितनी थी?
(A) 16.4%
(B) 11.9%
(C) 71.2%
(D) 67.8%

15. निम्नलिखित में से कौन सा पत्तन भारत के पूर्वी तट पर स्थित नहीं है?
(A) मार्मागाओ
(B) पारादीप
(C) तूतीकोरिन
(D) एन्नोर

16. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): भारत के पश्चिमी तट पर पूर्वी तट की अपेक्षा अधिक पत्तन हैं।
कारण (R): भारत तीन ओर से समुद्र से घिरा हुआ है और प्रकृति ने इसे एक लंबी तटरेखा प्रदान की है।
दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

17. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) मुंबई - कृत्रिम पत्तन
(B) मार्मागाओ - जुआरी नदमुख
(C) चेन्नई - प्राकृतिक पत्तन
(D) पारादीप - कावेरी डेल्टा

18. भारत में छोटे या मझोले पत्तनों के लिए नीतियां कौन बनाता है और नियामक क्रियाएं कौन निभाता है?
(A) राज्य सरकारें
(B) केंद्र सरकार
(C) निजी कंपनियां
(D) पत्तन प्राधिकरण

19. मुंबई पत्तन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह एक प्राकृतिक पत्तन है।
2. यह भारत का सबसे बड़ा पत्तन है।
3. यह 20 कि.मी. लंबा तथा 6-10 कि.मी. चौड़ा है।
4. इसका पृष्ठ प्रदेश केवल महाराष्ट्र तक सीमित है।
5. यह मध्यपूर्व और भूमध्य सागरीय देशों के सामान्य मार्ग के निकट स्थित है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2, 3 और 5

(D) सभी 1, 2, 3 और 4

80. किस पत्तन के पृष्ठ प्रदेश में कर्नाटक, गोवा तथा दक्षिणी महाराष्ट्र शामिल हैं?
(A) मुंबई
(B) मार्मागाओ
(C) न्यू मंगलौर
(D) कोच्चि

81. 2021-22 में भारत के निर्यात में पेट्रोलियम और अपरिष्कृत उत्पादों का हिस्सा कितना था?
(A) 9.2%
(B) 16.4%
(C) 11.7%
(D) 11.9%

82. विशाखापट्नम पत्तन के बारे में क्या विशेष है?
(A) यह एक भू-आबद्ध पत्तन है जिसे नहर द्वारा समुद्र से जोड़ा गया है।
(B) यह एक प्रमुख नदीय पत्तन के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान करता है।
(C) यह एक प्राकृतिक और अत्यंत गहरा पत्तन होने के लिए प्रसिद्ध है।
(D) यह विशेष रूप से केवल अंतरराष्ट्रीय कंटेनरों का ही निपटान करता है।

83. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. तूतीकोरिन पत्तन कोयला, नमक, और खाद्यान्न जैसी वस्तुओं का निपटान करता है।
2. इसका विकास चेन्नई पत्तन के दबाव को बढ़ाने के लिए किया गया था।
3. यह तमिलनाडु में स्थित है।
4. यह एक प्राकृतिक बंदरगाह है।
5. यह केवल पेट्रोलियम उत्पादों का निपटान करता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 1, 3 और 4
(C) केवल 2 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

84. भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में किस वस्तु समूह के निर्यात की हिस्सेदारी समय के साथ कम हुई है?
(A) पेट्रोलियम एवं अपरिष्कृत उत्पाद
(B) अयस्क एवं खनिज
(C) अन्य वस्तुएँ
(D) कृषि एवं समवर्गी उत्पाद

85. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (पत्तन)
P. पारादीप
Q. कोलकाता
R. न्यू मंगलौर
S. मुंबई

List II: (सेवित पृष्ठप्रदेश का एक राज्य)
1. कर्नाटक
2. उत्तर प्रदेश
3. छत्तीसगढ़
4. मध्य प्रदेश

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-2, R-1, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

86. भारत में पेट्रोलियम उत्पादों के आयात में वृद्धि का क्या कारण इंगित किया गया है?
(A) केवल ईंधन के रूप में उपयोग
(B) बढ़ता औद्योगीकरण और बेहतर जीवन स्तर
(C) केवल औद्योगिक कच्चे माल के रूप में उपयोग
(D) पेट्रोलियम की कीमतों में अंतरराष्ट्रीय गिरावट

87. भारत के दो प्रमुख व्यापारिक प्रतिस्पर्धी कौन हैं, विशेषकर विनिर्माण क्षेत्र में?
(A) जापान और दक्षिण कोरिया
(B) संयुक्त राज्य अमेरिका और जर्मनी
(C) ब्राजील और अर्जेंटीना
(D) चीन तथा अन्य पूर्व एशियाई देश

88. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): भारत के विभाजन ने इसके पत्तन अवसंरचना को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया।
कारण (R): कराची और चिटगाँव जैसे दो महत्त्वपूर्ण पत्तन क्रमशः पाकिस्तान और तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) में चले गए।
दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

89. मुंबई पत्तन का पृष्ठ प्रदेश कहाँ तक विस्तृत है?
(A) इसका पृष्ठ प्रदेश केवल महाराष्ट्र राज्य की सीमाओं तक ही सीमित है।
(B) यह मुख्य रूप से केवल विशाल मुंबई शहर की आवश्यकताओं को पूरा करता है।
(C) मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश व राजस्थान के कुछ भाग
(D) यह संपूर्ण दक्षिण भारतीय राज्यों के लिए मुख्य द्वार के रूप में कार्य करता है।

(A) दीनदयाल पत्तन - गुजरात
(B) पारादीप पत्तन - ओडिशा
(C) तूतीकोरिन पत्तन - तमिलनाडु
(D) न्यू मंगलौर पत्तन - महाराष्ट्र

31. भारत में विदेशी व्यापार में तीव्र वृद्धि के लिए निम्नलिखित में से कौन सा कारक उत्तरदायी नहीं है?
(A) कृषि उत्पादन में गिरावट
(B) विनिर्माण के क्षेत्र में संवेगी उठान
(C) सरकार की उदार नीतियाँ
(D) बाज़ारों की विविधरूपता

32. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत का उद्देश्य आगामी पाँच वर्षों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में अपनी हिस्सेदारी को दुगुना करना है।
2. इसके लिए सरकार ने आयात उदारीकरण और आयात करों में कमी जैसे उपाय अपनाए हैं।
3. डि-लाइसेंसिंग (विअनुज्ञाकरण) भी अपनाए गए उपायों में से एक है।
4. प्रक्रिया से उत्पाद के एकस्व (पेटेंट) में बदलाव भी किया गया है।
5. सरकार ने आयातों पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2, 3 और 4
(C) केवल 3, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

33. पारादीप पत्तन का पोताश्रय सबसे गहरा क्यों है?
(A) यह मुख्य रूप से एक विशाल नदी के मुहाने पर स्थित है।
(B) यह भारी पोतों के सुरक्षित निपटान हेतु सर्वाधिक अनुकूल है।
(C) यह पूर्ण रूप से एक कृत्रिम रूप से खोदा गया पत्तन है।
(D) यह एक चारों ओर से सुरक्षित भू-आबद्ध प्राकृतिक पत्तन है।

34. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के वर्ष के अनुसार पहले से बाद के क्रम में लगाएं:
1. भारत के वैदेशिक व्यापार का मूल्य 1,214 करोड़ रुपए होना
2. मार्मागाओ पत्तन का पुनर्प्रतिरुपण
3. चेन्नई पत्तन का निर्माण
4. ऊर्जा संकट से पेट्रोलियम के मूल्य में उछाल

(A) 3, 1, 2, 4
(B) 1, 3, 2, 4
(C) 3, 2, 1, 4
(D) 1, 2, 3, 4

35. वर्ष 2021-22 में, किस क्षेत्र/क्षेत्र-समूह से भारत का आयात सर्वाधिक था?
(A) यूरोप
(B) अफ्रीका
(C) एशिया एवं आसियान
(D) उत्तरी अमेरिका

36. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (पत्तन)
P. कोच्चि
Q. हल्दिया
R. एन्नोर
S. विशाखापट्नम

List II: (विशेषता/विवरण)
1. कोलकाता का अनुषंगी पत्तन
2. भू-आबद्ध पत्तन
3. चेन्नई का अनुषंगी पत्तन
4. स्वेज-कोलंबो मार्ग के पास स्थित

(A) P-4, Q-1, R-3, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

37. हल्दिया पत्तन का निर्माण क्यों किया गया था?
(A) एक नए व्यापार मार्ग को खोलने के लिए
(B) लौह-अयस्क के निर्यात को बढ़ाने के लिए
(C) कोलकाता पत्तन की संकुलता को घटाने के लिए
(D) एक रणनीतिक नौसैनिक अड्डा स्थापित करने के लिए

38. 'व्यापार संतुलन' शब्द का सबसे अच्छा वर्णन क्या है?
(A) एक देश द्वारा कुल आयातित वस्तुओं की मात्रा और प्रकार
(B) एक देश के कुल निर्यात और आयात के मूल्यों के बीच का अंतर
(C) एक देश द्वारा कुल निर्यातित वस्तुओं की मात्रा और प्रकार
(D) सरकार द्वारा द्विपक्षीय व्यापार पर लगाए गए करों का विवरण

39. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): चेन्नई पत्तन विशाल पोतों के लिए अनुकूल नहीं है।
कारण (R): यह एक कृत्रिम पत्तन है और इसके तट के निकट जल उथला है।
दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

(A) लगातार सकारात्मक (अधिशेष)
(B) पहले नकारात्मक, फिर सकारात्मक
(C) संतुलित (शून्य के करीब)
(D) लगातार नकारात्मक (घाटा)

101. कोच्चि पत्तन के पृष्ठप्रदेश में कौन से क्षेत्र शामिल हैं?
(A) इसका पृष्ठ प्रदेश मुख्य रूप से केवल केरल राज्य तक ही सीमित है।
(B) संपूर्ण तमिलनाडु राज्य और आंध्र प्रदेश का अधिकांश दक्षिण-पूर्वी भाग
(C) केरल, दक्षिणी कर्नाटक तथा दक्षिण-पश्चिमी तमिलनाडु के क्षेत्र
(D) केरल और गोवा राज्यों के तटीय जिलों का एक बहुत छोटा सा भाग

102. 1973 में पेट्रोलियम पदार्थों के मूल्य में उछाल का क्या कारण था?
(A) हरित क्रांति
(B) ऊर्जा संकट
(C) औद्योगिक क्रांति
(D) खाद्यान्न संकट

103. निम्नलिखित में से कौन सा पत्तन एक प्राकृतिक बंदरगाह है?
(A) चेन्नई
(B) हल्दिया
(C) तूतीकोरिन
(D) मार्मागाओ

104. भारत के आयात में 2015-16 से 2021-22 के दौरान किस मद के प्रतिशत में गिरावट दर्ज की गई है?
(A) पूँजीगत वस्तुएँ
(B) ईंधन (कोयला, पीओएल)
(C) उर्वरक
(D) अन्य वस्तुएँ

105. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के क्रम में व्यवस्थित करें:
1. भारत के वैदेशिक व्यापार का मूल्य 1,214 करोड़ रुपए होना
2. भारत के वैदेशिक व्यापार का मूल्य 77,19,796 करोड़ रुपए होना
3. भारतीय पत्तनों की नौभार निपटान क्षमता 837 मिलियन टन से अधिक होना
4. मार्मागाओ पत्तन का पुनर्प्रतिरूपण
(A) 1, 4, 3, 2
(B) 4, 1, 2, 3
(C) 1, 3, 4, 2
(D) 2, 1, 4, 3

106. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (पत्तन)
P. कोच्चि
Q. चेन्नई
R. पारादीप
S. मुंबई
List II: (विशेषण/उपनाम)
1. भारत का सबसे बड़ा पत्तन
2. सबसे पुराने कृत्रिम पत्तनों में से एक
3. 'अरब सागर की रानी'
4. सबसे गहरा पोताश्रय
(A) P-3, Q-2, R-4, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-2, S-1
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

107. निम्नलिखित में से कौन सा कथन पत्तन और पोताश्रय के बीच के अंतर को सबसे अच्छी तरह स्पष्ट करता है?
(A) पत्तन और पोताश्रय दोनों ही पूर्णतः एक-दूसरे के पर्यायवाची शब्द हैं।
(B) पत्तन सदैव एक प्राकृतिक संरचना है, जबकि पोताश्रय सदैव मानव निर्मित है।
(C) पोताश्रय वास्तव में किसी बड़े पत्तन का ही एक प्रारंभिक छोटा रूप होता है।
(D) पोताश्रय पोतों के ठहरने का स्थान है, जबकि पत्तन व्यापार का केंद्र है।

108. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): न्यू मंगलौर पत्तन उर्वरकों, पेट्रोलियम उत्पादों और खाद्य तेलों का निपटान करता है।
कारण (R): इसका प्रमुख पृष्ठप्रदेश कर्नाटक है, जहाँ इन वस्तुओं की मांग और आपूर्ति होती है।
दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

109. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत का अधिकांश विदेशी व्यापार सड़क मार्ग से होता है।
2. भारत में 12 प्रमुख और 200 छोटे पत्तन हैं।
3. छोटे पत्तनों के लिए केंद्र सरकार नीतियां बनाती है।
4. प्रमुख पत्तन कुल यातायात के बड़े हिस्से का निपटान करते हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन गलत है?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3

1. जवाहरलाल नेहरु पत्तन को न्हावा शेवा में विकसित किया गया है।
2. इसे मुंबई पत्तन के दबाव को कम करने के लिए एक अनुषंगी पत्तन के रूप में बनाया गया।
3. यह भारत का विशालतम लौह-अयस्क निर्यातक पत्तन है।
4. यह भारत का विशालतम कंटेनर पत्तन है।
5. इसका पृष्ठ प्रदेश केवल मुंबई शहर है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?

(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 1, 3 और 5
(C) केवल 2, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

52. निम्नलिखित में से कौन सी वस्तु भारत के आयात की प्रमुख मदों में शामिल नहीं है?

(A) पेट्रोलियम
(B) मोती और बहुमूल्य रत्न
(C) मशीनरी
(D) चाय और कॉफी

53. निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:

1. भारत में हरित क्रांति के बाद खाद्यान्न आयात में कमी
2. 1950 और 1960 के दशक में खाद्यान्नों की गंभीर कमी
3. पेट्रोलियम का आयात प्रमुखता से बढ़ना
4. 1973 का ऊर्जा संकट

(A) 2, 1, 4, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 4, 3, 1, 2

54. भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के बदलते प्रारुप (Pattern) के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सबसे उपयुक्त है?

(A) इसके व्यापार की कुल मात्रा और संघटन दशकों से स्थिर रहे हैं।
(B) इसके व्यापार की मात्रा, संघटन और दिशा में आमूल परिवर्तन हुए हैं।
(C) इसके व्यापार के संघटन के बजाय केवल व्यापार की दिशा बदली है।
(D) भारत अब पूर्णत: आत्मनिर्भर है और इसे बाह्य व्यापार की आवश्यकता नहीं है।

55. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:

List I: (व्यापारिक क्षेत्र)

P. यूरोप
Q. अफ्रीका
R. उत्तरी अमेरिका
S. एशिया एवं आसियान

List II: (2021-22 में आयात मूल्य, करोड़ रुपये में)

1. 3,68,156
2. 3,78,041
3. 29,18,577
4. 6,40,577

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

56. 'उड़ान' योजना का संबंध किससे है?

(A) असेवित/अल्पसेवित हवाई अड्डों को चालू करने से
(B) समुद्री परिवहन के विकास से
(C) सड़क परिवहन के विस्तार से
(D) रेलवे नेटवर्क के आधुनिकीकरण से

57. निम्नलिखित में से किस पत्तन को लौह-अयस्क और लौह-सांद्र के निर्यात की जरूरतों को पूरा करने के लिए जाना जाता है?

(A) कोच्चि
(B) तूतीकोरिन
(C) न्यू मंगलौर
(D) हल्दिया

58. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:

अभिकथन (A): अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वायु परिवहन की भागीदारी महासागरीय मार्गों की तुलना में कम है।

कारण (R): वायु परिवहन भारी और स्थूल वस्तुओं के वहन करने के लिए बहुत महँगा और अनुपयुक्त होता है।

दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

59. भारत के निर्यात संघटन में 2015-16 से 2021-22 की अवधि में क्या प्रवृत्ति देखी गई है?

(A) विनिर्माण वस्तुओं और कृषि उत्पादों की हिस्सेदारी में स्पष्ट वृद्धि हुई है।
(B) कच्चे पेट्रोलियम और अपरिष्कृत उत्पादों की हिस्सेदारी में भारी कमी आई है।
(C) निर्यात संघटन के सभी प्रमुख क्षेत्रों की हिस्सेदारी तुलनात्मक रूप से स्थिर रही है।
(D) कृषि-विनिर्माण में कमी तथा पेट्रोलियम उत्पादों की हिस्सेदारी में वृद्धि हुई।

60. मार्मागाओ पत्तन के बारे में क्या अद्वितीय है, जो 1961 में इसके महत्व का कारण बना?

(A) यह भारत का सबसे बड़ा और सबसे गहरा प्राकृतिक बंदरगाह माना जाता है।

40. न्यू मंगलौर पत्तन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) यह कर्नाटक में स्थित होकर लौह-अयस्क की ज़रूरतें पूरी करता है।
(B) यह गोवा राज्य के महत्वपूर्ण तटीय क्षेत्र में स्थित है।
(C) यह मुख्य रूप से जूट उत्पादों के निर्यात हेतु प्रसिद्ध है।
(D) यह वर्तमान में भारत का सबसे बड़ा और विशाल कंटेनर पत्तन है।

41. भारत में प्रमुख पत्तनों के विकास एवं आधुनिकीकरण की जिम्मेदारी पहले किन पर थी, और बाद में किन्हें आमंत्रित किया गया?
(A) पहले राज्य सरकारों पर, बाद में केंद्र सरकार को
(B) पहले निजी उद्यमियों पर, बाद में सरकारी अभिकरणों को
(C) पहले सरकारी अभिकरणों पर, बाद में निजी उद्यमियों को
(D) केवल केंद्र सरकार पर

42. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. विशाखापट्नम आंध्र प्रदेश में एक भू-आबद्ध पत्तन है।
2. इसे ठोस चट्टान एवं बालू को काटकर एक नहर द्वारा समुद्र से जोड़ा गया है।
3. इस पत्तन का प्रमुख पृष्ठ प्रदेश केवल आंध्र प्रदेश है।
4. यहाँ एक बाह्य पत्तन का विकास लौह-अयस्क और पेट्रोलियम के निपटान हेतु किया गया है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 4
(C) केवल 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

43. दो देशों के मध्य होने वाला व्यापार क्या कहलाता है?
(A) अंतर्देशीय व्यापार
(B) बाह्य व्यापार
(C) स्थानीय व्यापार
(D) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार

44. 1951 से 2016 तक भारतीय पत्तनों की नौभार निपटान की क्षमता में कितनी वृद्धि हुई?
(A) 10 मिलियन टन से 500 मिलियन टन
(B) 20 मिलियन टन से 837 मिलियन टन
(C) 50 मिलियन टन से 1000 मिलियन टन
(D) 20 मिलियन टन से 500 मिलियन टन

45. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (वर्ष)
P. 2015-16
Q. 2016-17
R. 2020-21
S. 2021-22

List II: (ईंधन का आयात प्रतिशत)
1. 26.7%
2. 25.1%
3. 31.6%
4. 25.4%

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

46. भारत के पारंपरिक निर्यात वस्तुओं, जैसे काजू, में गिरावट का मुख्य कारण क्या है?
(A) उत्पादन में कमी
(B) घरेलू मांग में वृद्धि
(C) सरकार द्वारा निर्यात पर प्रतिबंध
(D) कड़ी अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा

47. कोलकाता पत्तन किन स्थलरुद्ध पड़ोसी देशों को सुविधाएँ उपलब्ध कराता है?
(A) भूटान और नेपाल
(B) पाकिस्तान और अफगानिस्तान
(C) चीन और मंगोलिया
(D) म्यांमार और थाईलैंड

48. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): भारत एक कृषि समृद्ध देश होते हुए भी खाद्य तेलों का आयात करता है।
कारण (R): भारत में तिलहन का उत्पादन घरेलू मांग को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है।
दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

49. तूतीकोरिन पत्तन के विकास का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) मुंबई पत्तन के दबाव को कम करना
(B) चेन्नई पत्तन के दबाव को कम करना
(C) एक नया अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मार्ग बनाना
(D) मछली पकड़ने को बढ़ावा देना

50. भारत में मुख्य रूप से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार किन मार्गों द्वारा संचालित होता है?
(A) समुद्र और वायु द्वारा
(B) स्थल और समुद्र द्वारा
(C) स्थल और वायु द्वारा
(D) केवल समुद्र द्वारा

51. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

70. वर्ष 2021-22 में भारत के आयात संघटन में ईंधन (कोयला, पीओएल) का प्रतिशत हिस्सा कितना था?
(A) 4.4%
(B) 31.6%
(C) 10.1%
(D) 38.5%

71. भारत के पूर्वी तट पर स्थित सबसे पुराने कृत्रिम पत्तनों में से एक कौन सा है, जिसे 1859 में बनाया गया था?
(A) कोलकाता
(B) पारादीप
(C) विशाखापट्नम
(D) चेन्नई

72. भारत में फूलों की खेती से जुड़े उत्पाद, ताजे फल, समुद्री उत्पाद और चीनी के निर्यात में क्या प्रवृत्ति दर्ज की गई है?
(A) वृद्धि
(B) कोई परिवर्तन नहीं
(C) गिरावट
(D) अनिश्चित प्रवृत्ति

73. निम्नलिखित में से कौन सा पत्तन अपने पृष्ठ प्रदेश के रूप में उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों की सेवा करता है?
(A) मुंबई
(B) चेन्नई
(C) कोलकाता
(D) कोच्चि

74. निम्नलिखित में से भारत के निर्यात-संघटन की कौन सी एक प्रमुख वस्तु नहीं है?
(A) पूँजीगत वस्तुएँ
(B) कृषि एवं समवर्गी उत्पाद
(C) अयस्क एवं खनिज
(D) विनिर्मित वस्तुएँ

75. निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित करें (सबसे पहले से सबसे अंत तक):
1. दीनदयाल (कांडला) पत्तन का विकास
2. हल्दिया पत्तन का निर्माण
3. एन्नोर पत्तन का विकास
4. जवाहरलाल नेहरु पत्तन का विकास
(A) 1, 2, 4, 3
(B) 4, 3, 2, 1
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 2, 1, 4, 3

76. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): भारत में पूँजीगत वस्तुओं के आयात में लगातार गिरावट बनी रही है।
कारण (R): यह भारत में बढ़ते स्वदेशी उत्पादन और आत्मनिर्भरता की ओर संकेत करता है।
दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

77. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (वस्तु)
P. खाद्य तेल
Q. उर्वरक
R. लोहा और इस्पात
S. रासायनिक उत्पाद
List II: (2021-22 में आयात मूल्य, करोड़ रु में लगभग)
1. 1,05,796
2. 1,41,532
3. 3,08,882
4. 94,053
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

78. 1950 एवं 1960 के दशक में भारत की प्रमुख आयात वस्तुएँ क्या थीं?
(A) कच्चे पेट्रोलियम पदार्थ, विभिन्न उर्वरक और औद्योगिक रसायन
(B) बहुमूल्य मोती, कीमती रत्न और भारी मात्रा में सोने का आयात
(C) विभिन्न प्रकार की विनिर्मित वस्तुएँ और सिले-सिलाए परिधान
(D) खाद्यान्न, पूँजीगत माल, मशीनरी और उससे जुड़े विभिन्न उपस्कर

79. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत के विदेशी व्यापार में निर्यात की तुलना में आयात का मूल्य अधिक है।
2. 1950-51 की तुलना में 2021-22 में विदेशी व्यापार के मूल्य में भारी वृद्धि हुई है।
3. सरकार की उदार नीतियां विदेशी व्यापार में वृद्धि का एक कारण हैं।
4. भारत विश्व व्यापार में अपनी भागीदारी का केवल एक प्रतिशत है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3

(B) इसका पुनर्प्रतिरुपण जापान को लौह-अयस्क निर्यात करने हेतु किया गया।
(C) इसे विशेष रुप से कपास और वस्त्रों के निर्यात हेतु विकसित किया गया था।
(D) यह महत्वपूर्ण कोंकण रेलवे नेटवर्क का दक्षिणी छोर या टर्मिनस है।

61. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. पारादीप पत्तन कटक से 100 कि.मी. दूर महानदी डेल्टा पर स्थित है।
2. इसका पोताश्रय उथला है और यह छोटे पोतों के लिए उपयुक्त है।
3. इसे मुख्य रूप से बड़े पैमाने पर लौह-अयस्क के निर्यात के लिए विकसित किया गया है।
4. इसका पृष्ठ प्रदेश केवल ओडिशा तक ही सीमित है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन गलत है?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 2
(D) केवल 4

62. सड़क मार्ग द्वारा भारत का व्यापार किन पड़ोसी राज्यों के साथ होता है?
(A) चीन, म्यांमार, थाईलैंड
(B) श्रीलंका, मालदीव
(C) अफगानिस्तान, ईरान
(D) नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, पाकिस्तान

63. वाडीनार में एक अपतटीय टर्मिनल क्यों विकसित किया गया है?
(A) दीनदयाल (कांडला) पत्तन के दबाव को घटाने के लिए
(B) मुंबई पत्तन के दबाव को बढ़ाने के लिए
(C) एक नए पर्यटन स्थल का निर्माण करने के लिए
(D) मछली पकड़ने की गतिविधियों को सुविधाजनक बनाने के लिए

64. निम्नलिखित में से कौन सा पत्तन हुगली नदी पर स्थित है?
(A) पारादीप
(B) हल्दिया
(C) विशाखापट्नम
(D) चेन्नई

65. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (पत्तन)
P. मुंबई
Q. दीनदयाल (कांडला)
R. जवाहरलाल नेहरु
S. मार्मागाओ

List II: (विवरण)
1. भारत का विशालतम कंटेनर पत्तन
2. जुआरी नदमुख पर स्थित
3. देश का सबसे बड़ा पत्तन
4. पश्चिमी एवं उत्तर-पश्चिमी भारत की सेवा

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

66. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): कोलकाता पत्तन को ब्रिटिश भारत की राजधानी होने का प्रारंभिक लाभ प्राप्त था।
कारण (R): इस पत्तन ने अपनी सार्थकता अन्य पत्तनों की ओर निर्यात के दिक्परिवर्तन के कारण काफी हद तक खो दी है।
दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

67. एन्नोर पत्तन कहाँ स्थित है?
(A) चेन्नई के दक्षिण में
(B) कोच्चि के पास
(C) चेन्नई के उत्तर में 25 कि.मी. दूर
(D) विशाखापट्नम के पास

68. भारत में प्रमुख पत्तनों के संबंधों में नीतियां और नियामक क्रियाएं कौन करता है?
(A) राज्य सरकारें
(B) निजी कंपनियां
(C) संबंधित पत्तन न्यास
(D) केंद्र सरकार

69. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत में पत्तनों का उपयोग प्राचीन काल से हो रहा है।
2. पत्तनों का उभरना यूरोपीय व्यापारियों के आगमन के बाद महत्त्वपूर्ण बना।
3. अंग्रेज़ों ने पत्तनों का उपयोग पृष्ठप्रदेशों के संसाधनों के अवशोषण केंद्र के रूप में किया।
4. स्वतंत्रता के बाद पत्तनों का विकास रुक गया।
5. रेलवे के विस्तार ने पत्तनों को राष्ट्रीय बाज़ारों से जोड़ने में मदद की।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

90. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रवेश द्वार के रूप में पत्तनों का उभरना भारत में किस घटना के बाद महत्त्वपूर्ण बना?
(A) यूरोपीय व्यापारियों के आगमन और उपनिवेशीकरण के बाद
(B) प्राचीन मौर्य साम्राज्य के दौरान
(C) मुगल काल के दौरान
(D) 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद

91. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में मणि-रत्नों तथा आभूषणों की एक व्यापक हिस्सेदारी है।
2. 1950 के दशक में भारत खाद्यान्न में आत्मनिर्भर था।
3. पूँजीगत वस्तुओं के आयात में लगातार गिरावट बनी रही है।
4. भारत का व्यापार संतुलन हमेशा अधिशेष में रहा है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन गलत है?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) केवल 2, 3 और 4

92. किस पत्तन का प्रमुख पृष्ठ प्रदेश कर्नाटक है?
(A) मार्मागाओ
(B) न्यू मंगलौर
(C) कोच्चि
(D) तूतीकोरिन

93. किस प्रकार की वस्तुएँ समुद्री परिवहन के लिए सबसे उपयुक्त होती हैं?
(A) उच्च मूल्य वाली और हल्की
(B) नाशवान वस्तुएँ
(C) भारी और स्थूल वस्तुएँ
(D) तत्काल वितरण की आवश्यकता वाली वस्तुएँ

94. जवाहरलाल नेहरु पत्तन को किस अन्य नाम से जाना जाता है?
(A) कांडला
(B) एन्नोर
(C) तूतीकोरिन
(D) न्हावा शेवा

95. निम्नलिखित में से कौन सा हवाई अड्डा एक अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा नहीं है?
(A) शिमला
(B) अहमदाबाद
(C) गुवाहाटी
(D) पटना

96. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (वस्तु श्रेणी)
P. कृषि एवं समवर्गी उत्पाद
Q. अयस्क एवं खनिज
R. विनिर्मित वस्तुएँ
S. पेट्रोलियम व अपरिष्कृत उत्पाद

List II: (2021-22 में निर्यात प्रतिशत)
1. 2.0
2. 67.8
3. 16.4
4. 11.9

(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

97. अंग्रेज़ों ने भारतीय पत्तनों का उपयोग मुख्य रुप से किस उद्देश्य के लिए किया?
(A) भारत में औद्योगीकरण को बढ़ावा देने के लिए
(B) पृष्ठप्रदेशों के संसाधनों के अवशोषण केंद्र के रूप में
(C) भारतीय व्यापारियों को सशक्त बनाने के लिए
(D) सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देने के लिए

98. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): हल्दिया पत्तन स्थूल नौभार जैसे लौह-अयस्क, कोयला और पेट्रोलियम का निपटान करता है।
कारण (R): इसका निर्माण कोलकाता पत्तन की संकुलता को घटाने के लिए किया गया था।
दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

99. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत का अधिकतर विदेशी व्यापार समुद्री एवं वायु मार्गों द्वारा संचालित होता है।
2. भारत का सड़क मार्ग द्वारा कोई विदेशी व्यापार नहीं होता है।
3. भारत के पश्चिमी तट पर पूर्वी तट की अपेक्षा अधिक पत्तन हैं।
4. जल परिवहन सबसे महंगा परिवहन का साधन है।
5. भारत के पास एक छोटी तटरेखा है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 1, 3 और 5
(C) केवल 2, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

100. भारत के विदेश व्यापार में 2004-05 से 2021-22 तक व्यापार संतुलन की क्या स्थिति रही है?

(C) केवल 2, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

20. हवाई परिवहन द्वारा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए सबसे उपयुक्त वस्तुएँ कौन सी हैं?
(A) भारी और स्थूल वस्तुएँ जैसे कोयला और लौह-अयस्क
(B) कम मूल्य वाली और बड़ी मात्रा में उपलब्ध वस्तुएँ
(C) तरल पदार्थ जैसे पेट्रोलियम और रसायन
(D) उच्च मूल्य वाली या नाशवान वस्तुएँ

21. भारत विभाजन के कारण कौन से दो अति महत्त्वपूर्ण पत्तन भारत से अलग हो गए?
(A) मुंबई और कोलकाता
(B) कोच्चि और चेन्नई
(C) कराची और चिटगाँव
(D) कांडला और पारादीप

22. निम्नलिखित में से कौन सा एक स्थलबद्ध पोताश्रय है?
(A) हल्दिया
(B) विशाखापट्नम
(C) मुंबई
(D) एन्नोर

23. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (निर्यात/आयात वस्तु)
P. पेट्रोलियम व अपरिष्कृत उत्पाद
Q. विनिर्मित वस्तुएँ
R. पूँजीगत वस्तुएँ
S. कृषि एवं समवर्गी उत्पाद
List II: (व्यापर की प्रकृति)
1. प्रमुख निर्यात वस्तु (2021-22 में ~68%)
2. प्रमुख आयात वस्तु (2021-22 में ~31.6%)
3. निर्यात वस्तु (2021-22 में ~11.9%)
4. आयात वस्तु (2021-22 में ~10.1%)
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

24. किस पत्तन का विकास मुंबई पत्तन पर दबाव को घटाने के लिए एक प्रमुख पत्तन के रूप में किया गया था?
(A) दीनदयाल पत्तन (कांडला)
(B) मार्मागाओ
(C) न्यू मंगलौर
(D) जवाहरलाल नेहरू पत्तन

25. भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की बदलती प्रकृति के संबंध में, निम्नलिखित में से सबसे उपयुक्त विवरण कौन सा है?
(A) भारत के कुल आयात की मात्रा में पहले की तुलना में भारी वृद्धि हुई है।
(B) भारत के कुल निर्यात की मात्रा में पहले की तुलना में भारी वृद्धि हुई है।
(C) आयात-निर्यात दोनों की मात्रा बढ़ी है, परंतु आयात का मूल्य अधिक रहा है।
(D) भारत के आयात और निर्यात दोनों की कुल मात्रा में क्रमिक गिरावट आई है।

26. दीनदयाल पत्तन (कांडला) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह कच्छ की खाड़ी के मुहाने पर अवस्थित है।
2. इसे देश के दक्षिणी भाग की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए विकसित किया गया।
3. यह भारी मात्रा में पेट्रोलियम और उर्वरकों को ग्रहण करता है।
4. वाडीनार में इसका एक अनुषंगी पत्तन विकसित किया गया है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन गलत है?
(A) केवल 2
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 4
(D) केवल 4

27. 'अरब सागर की रानी' के लोकप्रिय नाम से किस पत्तन को जाना जाता है?
(A) मुंबई
(B) मार्मागाओ
(C) न्यू मंगलौर
(D) कोच्चि

28. कोंकण रेलवे ने किस पत्तन के पृष्ठ प्रदेश में महत्त्वपूर्ण विस्तार किया है?
(A) मुंबई
(B) मार्मागाओ
(C) न्यू मंगलौर
(D) जवाहरलाल नेहरू पत्तन

29. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): 1970 के दशक के बाद भारत में खाद्यान्नों का आयात रुक गया।
कारण (R): 1973 में आए ऊर्जा संकट से पेट्रोलियम के मूल्य में उछाल आया।
दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

30. निम्नलिखित में से कौन-सा जोड़ा गलत है?

(D) केवल 4

110. विशाखापट्नम पत्तन का प्रमुख पृष्ठ प्रदेश कौन से राज्य हैं?
(A) तमिलनाडु और केरल
(B) ओडिशा और पश्चिम बंगाल
(C) महाराष्ट्र और गुजरात
(D) आंध्र प्रदेश और तेलंगाना

111. भारत में पेट्रोलियम के आयात में वृद्धि का एक कारण क्या नहीं है?
(A) घरेलू उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि
(B) बढ़ता औद्योगीकरण
(C) बेहतर जीवन स्तर
(D) अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कदाचनिक मूल्य वृद्धि

112. भारत के आयात में किन वस्तुओं ने खाद्यान्नों का स्थान लिया?
(A) विनिर्मित वस्तुएँ और परिधान
(B) उर्वरक एवं पेट्रोलियम
(C) सोना और चांदी
(D) मशीनरी और इलेक्ट्रॉनिक्स

113. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सभी देशों के लिए परस्पर लाभदायक है।
2. कोई भी देश आत्मनिर्भर नहीं है।
3. विश्व व्यापार में भारत की भागीदारी कुल मात्रा का केवल एक प्रतिशत है।
4. विश्व की अर्थव्यवस्था में भारत की कोई महत्त्वपूर्ण भूमिका नहीं है।
5. भारत का व्यापार संतुलन हमेशा घाटे में रहा है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2 और 5
(C) केवल 3, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

114. पारादीप पत्तन के पृष्ठ प्रदेश में कौन से राज्य आते हैं?
(A) ओडिशा, झारखंड और छत्तीसगढ़
(B) आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक
(C) पश्चिम बंगाल, बिहार और उत्तर प्रदेश
(D) तमिलनाडु, केरल और पुदुच्चेरी

115. चेन्नई पत्तन के पृष्ठ प्रदेश कौन से हैं?
(A) आंध्र प्रदेश और कर्नाटक
(B) केरल और लक्षद्वीप
(C) तमिलनाडु और पुदुच्चेरी
(D) संपूर्ण दक्षिण भारत

116. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (पत्तन)
P. दीनदयाल (कांडला)
Q. मुंबई
R. कोच्चि
S. कोलकाता

List II: (नदी/खाड़ी/सागर)
1. हुगली नदी
2. अरब सागर (बेंवानद कायाल)
3. अरब सागर
4. कच्छ की खाड़ी

(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

117. 'डि-लाइसेंसिंग' (विअनुज्ञाकरण) का क्या अर्थ है, जैसा कि व्यापार नीतियों के संदर्भ में उपयोग किया गया है?
(A) अंतरराष्ट्रीय व्यापार हेतु अनिवार्य लाइसेंसिंग को और कड़ा करना
(B) केवल कुछ विशिष्ट श्रेणी की विलासिता वस्तुओं हेतु लाइसेंस प्रदान करना
(C) व्यापार हेतु लाइसेंस की आवश्यकता को पूर्णतः समाप्त या कम करना
(D) सरकार द्वारा निर्धारित लाइसेंस शुल्क में अत्यधिक वृद्धि कर देना

118. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): मार्मागाओ पत्तन का महत्त्व 1961 में हुए पुनर्प्रतिरुपण के बाद बढ़ा।
कारण (R): इसका पुनर्प्रतिरुपण जापान को लौह-अयस्क के निर्यात का निपटान करने के लिए किया गया था।
दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

119. 2021-22 में भारत के निर्यात में कृषि और समवर्गी उत्पादों का हिस्सा कितना था?
(A) 14.3%
(B) 12.3%
(C) 12.6%
(D) 11.9%

120. भारत के किन दो पत्तनों को एक-दूसरे के दबाव को कम करने के लिए अनुषंगी पत्तनों के रूप में विकसित किया गया है?
(A) मुंबई और जवाहरलाल नेहरू; चेन्नई और एन्नोर
(B) चेन्नई और कोच्चि; पारादीप और विशाखापट्नम
(C) दीनदयाल और मार्मागाओ; तूतीकोरिन और एन्नोर

(A) यह दवा सामग्री और दवाओं का एक प्रमुख वैश्विक आयातक है
(B) इसका औषधि उत्पादन केवल घरेलू और स्थानीय उपभोग के लिए है
(C) यह विश्व के सबसे बड़े उत्पादकों और निर्यातकों में से एक है
(D) वैश्विक दवा बाजार में इस क्षेत्र की कोई उल्लेखनीय भूमिका नहीं है

160. मूल्य-वर्धित विनिर्मित उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने का भारत के लिए एक महत्वपूर्ण लाभ क्या है?
(A) विदेशी मुद्रा अर्जन और व्यापार घाटे को कम करना
(B) कुल व्यापार घाटे में उल्लेखनीय वृद्धि
(C) औद्योगिक रोजगार के अवसरों में भारी कमी
(D) वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं पर अनुचित निर्भरता बढ़ना

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारत की आर्थिक स्थिरता और विकास के लिए ऊर्जा सुरक्षा एक महत्वपूर्ण चुनौती है। देश अपनी कच्चे तेल की आवश्यकता का 85% से अधिक आयात करता है, जिससे यह वैश्विक तेल कीमतों में उतार-चढ़ाव और आपूर्तिकर्ता देशों में भू-राजनीतिक अस्थिरता के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हो जाता है। परंपरागत रूप से, भारत की तेल आपूर्ति का एक बड़ा हिस्सा पश्चिम एशियाई देशों जैसे सऊदी अरब, इराक और यूएई से आता रहा है। हालांकि, जोखिम को कम करने के लिए, भारत ने अपनी आयात टोकरी में विविधता लाने की एक सचेत रणनीति अपनाई है, जिसमें रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे नए आपूर्तिकर्ताओं से खरीद बढ़ाना शामिल है। इसके अलावा, आपूर्ति में किसी भी अप्रत्याशित बाधा से निपटने के लिए, भारत सरकार ने देश के विभिन्न हिस्सों में रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार (Strategic Petroleum Reserves - SPRs) का निर्माण किया है। ये भूमिगत भंडार एक आपातकालीन तेल आपूर्ति प्रदान करते हैं। दीर्घावधि में, भारत आयातित जीवाश्म ईंधन पर अपनी निर्भरता को कम करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों, जैसे सौर और पवन ऊर्जा, के विस्तार और इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) को अपनाने पर जोर दे रहा है। ये प्रयास न केवल भारत के व्यापार संतुलन को बेहतर बनाने में मदद करेंगे, बल्कि जलवायु परिवर्तन के खिलाफ इसकी प्रतिबद्धताओं में भी योगदान देंगे।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. भारत की अर्थव्यवस्था वैश्विक तेल कीमतों के प्रति संवेदनशील क्यों है?
(A) क्योंकि यह तेल का एक प्रमुख वैश्विक निर्यातक है
(B) क्योंकि इसके पास सुरक्षित और विशाल घरेलू तेल भंडार हैं
(C) क्योंकि तेल की घरेलू खपत का स्तर बहुत अधिक कम है
(D) क्योंकि यह अपनी आवश्यकता का अधिकांश कच्चा तेल आयात करता है

162. भारत द्वारा 'रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार' (SPRs) का निर्माण क्यों किया गया है?
(A) वैश्विक बाजारों में तेल के निर्यात को बढ़ावा देने हेतु
(B) आपातकालीन स्थिति में तेल आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए
(C) अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों को नियंत्रित करने हेतु
(D) देश के भीतर कच्चे तेल के घरेलू उत्पादन को बढ़ाने हेतु

163. हाल के वर्षों में भारत अपनी तेल आपूर्ति के संदर्भ में क्या रणनीति अपना रहा है?
(A) केवल एक ही देश से तेल खरीदना
(B) तेल का आयात पूरी तरह से बंद करना
(C) आयात स्रोतों में विविधता लाना
(D) केवल पश्चिम एशियाई देशों पर निर्भर रहना

164. निम्नलिखित में से कौन सा उपाय भारत की ऊर्जा सुरक्षा में दीर्घावधि में योगदान दे सकता है?
(A) विदेशी देशों से भारी मात्रा में कच्चे तेल का आयात करना
(B) वर्तमान रणनीतिक पेट्रोलियम भंडारों की कुल क्षमता को कम करना
(C) नए तेल क्षेत्रों की घरेलू खोज और उत्खनन को पूरी तरह रोकना
(D) नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का विस्तार और इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाना

165. स्रोत के अनुसार, भारत अपनी कच्चे तेल की आवश्यकता का लगभग कितना प्रतिशत आयात करता है?
(A) 85% से अधिक
(B) 25%
(C) 50%
(D) 65%

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारत के विदेशी व्यापार को बढ़ावा देने में विशेष आर्थिक क्षेत्रों (Special Economic Zones - SEZs) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। एसईजेड को विशेष रूप से सीमांकित शुल्क-मुक्त परिक्षेत्रों के रूप में परिभाषित किया गया है जिन्हें व्यापार, संचालन, शुल्कों और करों के लिए विदेशी क्षेत्र माना जाता है। भारत में एसईजेड अधिनियम, 2005 के तहत स्थापित इन क्षेत्रों का प्राथमिक उद्देश्य निर्यात को बढ़ावा देना, घरेलू और विदेशी स्रोतों से निवेश आकर्षित करना, रोजगार के अवसर पैदा करना और बुनियादी ढांचे का विकास करना है। एसईजेड में स्थित इकाइयों को कई प्रकार के राजकोषीय और नियामक प्रोत्साहन प्रदान किए जाते हैं, जैसे कि आयकर में छूट, न्यूनतम वैकल्पिक कर से छूट, और केंद्रीय तथा राज्य करों से मुक्ति। इन क्षेत्रों में प्रक्रियाओं को सरल बनाया गया है और 'एकल-खिड़की' मंजूरी प्रणाली लागू की गई है ताकि व्यापार करने में आसानी हो। भारत में, एसईजेड ने विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) और आईटी-सक्षम सेवाओं,

STUDYING FROM PDFs?

THINK AGAIN.

If you are studying only from PDFs,
you are wasting valuable time.

Research shows that learning from
PRINTED BOOKS has up to
4× HIGHER RETENTION
than studying from screens.

PRINT BOOK = BETTER MEMORY

PDF = LOWER RETENTION

Those who study from **PRINTED BOOKS**
move **AHEAD.**

Others are left **BEHIND**
in competition.



In competitive exams,
being average is not enough.

STAY ONE STEP AHEAD.

प्रोत्साहित करने की नीति अपनाई।
(D) क्योंकि भारत में विभिन्न वस्तुओं की उत्पादन लागत अंतरराष्ट्रीय स्तर से अधिक थी।

131. भारत में पेट्रोलियम उत्पादों का आयात क्यों महत्वपूर्ण है?
(A) यह केवल ईंधन के रूप में उपयोग होता है।
(B) यह केवल औद्योगिक कच्चे माल के रूप में उपयोग होता है।
(C) इसका उपयोग ईंधन और औद्योगिक कच्चे माल दोनों के रूप में होता है।
(D) यह मुख्य रूप से पुन: निर्यात के लिए आयात किया जाता है।

132. निम्नलिखित में से कौन सी एक पारंपरिक वस्तु है जिसके निर्यात में गिरावट आई है?
(A) चीनी
(B) ताजे फल
(C) समुद्री उत्पाद
(D) काजू

133. किस पत्तन का विकास बड़े पैमाने पर लौह-अयस्क के निर्यात के लिए किया गया है और इसका पृष्ठ प्रदेश ओडिशा, झारखंड और छत्तीसगढ़ है?
(A) हल्दिया
(B) विशाखापट्नम
(C) पारादीप
(D) एन्नोर

134. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): रेलवे के विस्तार ने भारत में आंतरिक और बाह्य व्यापार को जोड़ने में मदद की।
कारण (R): रेलवे ने स्थानीय बाज़ारों को क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों से जोड़ने की सुगमता प्रदान की।
दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

135. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. मुंबई एक कृत्रिम पत्तन है।
2. इसमें 54 गोदियाँ और देश का विशालतम टर्मिनल है।
3. जवाहरलाल नेहरू पत्तन इसका अनुषंगी पत्तन है।
4. इसका पृष्ठ प्रदेश केवल गुजरात तक ही सीमित है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन गलत है?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1
(D) केवल 4

136. भारत में व्यापार के उदारीकरण की नीति में क्या शामिल नहीं है?
(A) आयात पर मात्रात्मक प्रतिबंध बढ़ाना
(B) आयात उदारीकरण
(C) आयात करों में कमी
(D) डि-लाइसेंसिंग

137. 2016-17 और 2021-22 के बीच, किस क्षेत्र से भारत के आयात में सबसे अधिक निरपेक्ष वृद्धि (absolute increase) हुई?
(A) यूरोप
(B) अफ्रीका
(C) एशिया एवं आसियान
(D) उत्तरी अमेरिका

138. मुंबई पत्तन किन देशों के सामान्य मार्ग के निकट स्थित है?
(A) मध्यपूर्व, भूमध्य सागरीय देश, उत्तरी अफ्रीका, यूरोप
(B) पूर्वी एशियाई देश
(C) ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड
(D) दक्षिण अमेरिकी देश

139. 2021-22 में भारत के आयात में पूँजीगत वस्तुओं का हिस्सा कितना था?
(A) 12.7%
(B) 13.6%
(C) 13.0%
(D) 10.1%

140. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (पत्तन)
P. कांडला
Q. न्हावा शेवा
R. पारादीप
S. कोच्चि
List II: (अवस्थिति का राज्य)
1. ओडिशा
2. गुजरात
3. केरल
4. महाराष्ट्र
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

141. भारत में वायु परिवहन का उपयोग अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में क्यों सीमित है?
(A) यह अन्य माध्यमों की तुलना में अत्यंत धीमा और प्राय: अविश्वसनीय है।
(B) इसका नेटवर्क वर्तमान में केवल कुछ विकसित पश्चिमी

(C) लंबी तटरेखा और नौगम्य जलमार्ग
(D) दक्षिण भारत का दक्कन का पठार

विशेष रूप से, भारत ने अपने विशाल, कुशल और अपेक्षाकृत कम लागत वाले श्रमबल का उपयोग सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) और व्यावसायिक प्रक्रिया आउटसोर्सिंग (बीपीओ) जैसी सेवा-निर्यात में एक प्रमुख वैश्विक खिलाड़ी बनने के लिए किया। इसके अतिरिक्त, जेनेरिक फार्मास्यूटिकल्स और ऑटोमोबाइल घटकों जैसे श्रम-गहन विनिर्माण क्षेत्रों में भी भारत ने अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता का प्रदर्शन किया है। यह रणनीतिक बदलाव भारत की व्यापार मात्रा और संरचना में तीव्र वृद्धि के पीछे एक मुख्य प्रेरक शक्ति रहा है, जिसने देश को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं का एक अभिन्न अंग बना दिया है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के संदर्भ में 'तुलनात्मक लाभ' का सिद्धांत किसने प्रतिपादित किया?
(A) एडम स्मिथ
(B) डेविड रिकार्डो
(C) कार्ल मार्क्स
(D) जॉन मेनार्ड कीन्स

152. 1991 के बाद भारत की आर्थिक नीति में प्रमुख बदलाव क्या था?
(A) आयात प्रतिस्थापन से निर्यात-उन्मुख विकास की ओर बढ़ना
(B) निर्यात-उन्मुख विकास से आयात प्रतिस्थापन की ओर बढ़ना
(C) पूर्णतः आत्मनिर्भर और एक बंद अर्थव्यवस्था मॉडल को अपनाना
(D) खाद्यान्न आत्मनिर्भरता और कृषि पर पूर्ण ध्यान केंद्रित करना

153. स्रोत के अनुसार, भारत ने किस क्षेत्र में अपने तुलनात्मक लाभ का प्रभावी ढंग से उपयोग किया है?
(A) भारी औद्योगिक मशीनरी का घरेलू उत्पादन
(B) उच्च श्रेणी की विलासिता वस्तुओं का आयात
(C) सूचना प्रौद्योगिकी और सेवा-निर्यात
(D) कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस का निर्यात

154. तुलनात्मक लाभ के सिद्धांत के अनुसार, एक देश को किसमें विशेषज्ञता हासिल करनी चाहिए?
(A) उन वस्तुओं में जहाँ उसे पूर्ण लाभ प्राप्त हो
(B) केवल कृषि उत्पादों के उत्पादन में
(C) उन सभी वस्तुओं के उत्पादन में जिनकी वह खपत करता है
(D) उन वस्तुओं के उत्पादन में जिनकी अवसर लागत सबसे कम हो

155. भारत के 1991 के बाद के आर्थिक मॉडल का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(A) विदेशी व्यापार को सीमित करना
(B) केवल घरेलू बाजार पर ध्यान केंद्रित करना
(C) वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण बढ़ाना
(D) सरकारी नियंत्रण को अधिकतम करना

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
हाल के दशकों में भारत की निर्यात संरचना में एक उल्लेखनीय परिवर्तन देखा गया है, जो पारंपरिक प्राथमिक वस्तुओं से हटकर अधिक मूल्य-वर्धित विनिर्मित उत्पादों की ओर बढ़ रही है। 'मेक इन इंडिया' जैसी सरकारी पहलों ने इस परिवर्तन को और गति दी है, जिसका उद्देश्य भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करना है। इस अभियान के तहत, इंजीनियरिंग सामान, इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्यूटिकल्स और ऑटोमोबाइल क्षेत्र भारत के निर्यात के प्रमुख चालक के रूप में उभरे हैं। उदाहरण के लिए, भारत विश्व में जेनेरिक दवाओं के सबसे बड़े उत्पादकों और निर्यातकों में से एक है, जो वैश्विक मांग का एक बड़ा हिस्सा पूरा करता है। इसी तरह, ऑटोमोबाइल घटकों के निर्यात में भी वृद्धि हुई है, क्योंकि भारतीय कंपनियां वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में एकीकृत हो रही हैं। यह बदलाव न केवल भारत की औद्योगिक क्षमताओं को दर्शाता है, बल्कि वैश्विक बाजार में इसकी बढ़ती प्रतिस्पर्धात्मकता का भी प्रमाण है। मूल्य श्रृंखला में ऊपर उठने का यह प्रयास भारत के लिए विदेशी मुद्रा अर्जित करने, रोजगार सृजित करने और अपने व्यापार घाटे को कम करने के लिए महत्वपूर्ण है। सरकार की नीतियां घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहित करने और निर्यात के लिए अनुकूल माहौल बनाने पर केंद्रित हैं ताकि इस प्रवृत्ति को बनाए रखा जा सके।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. 'मेक इन इंडिया' पहल का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) भारत को एक उन्नत कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था बनाना
(B) भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करना
(C) सेवा क्षेत्र के निर्यात को व्यापक रूप से बढ़ावा देना
(D) विदेशी वस्तुओं के आयात पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना

157. स्रोत के अनुसार, भारत के निर्यात में हालिया वृद्धि किन क्षेत्रों में प्रमुख रही है?
(A) पारंपरिक हस्तशिल्प, सूती वस्त्र और हथकरघा उत्पाद
(B) कच्चा लोहा, इस्पात और विभिन्न कृषि उत्पाद
(C) चाय, कॉफी, मसाले और अन्य बागवानी उत्पाद
(D) इंजीनियरिंग सामान, इलेक्ट्रॉनिक्स और फार्मास्यूटिकल्स

158. भारत की निर्यात संरचना में परिवर्तन का क्या संकेत मिलता है?
(A) पारंपरिक से मूल्य-वर्धित उत्पादों की ओर बदलाव
(B) देश की औद्योगिक क्षमताओं में निरंतर गिरावट
(C) प्राथमिक वस्तुओं पर देश की बढ़ती निर्भरता
(D) वैश्विक बाजार और अर्थव्यवस्था से पूर्ण अलगाव

159. जेनेरिक दवाओं के क्षेत्र में भारत की वैश्विक स्थिति क्या है?

देशों तक ही सीमित है।
(C) यह भारी और स्थूल वस्तुओं के वहन हेतु बहुत महंगा और अनुपयुक्त है।
(D) इसके संचालन में सुरक्षा संबंधी चिंताएँ और जोखिम की मात्रा बहुत अधिक है।

142. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. दीनदयाल पत्तन (कांडला) एक ज्वारीय पत्तन है।
2. इसका विकास कराची पत्तन की कमी को पूरा करने के लिए किया गया था।
3. यह मुख्य रुप से पेट्रोलियम और उर्वरकों का आयात करता है।
4. वाडीनार में एक अपतटीय टर्मिनल इसके दबाव को कम करता है।
5. इसका पृष्ठ प्रदेश दक्षिणी भारत है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2, 3 और 4
(C) केवल 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

143. भारत के विदेशी व्यापार के संघटन में समय के साथ आए बदलाव का क्या अर्थ है?
(A) आयात और निर्यात की जाने वाली वस्तुओं की प्रकृति में परिवर्तन
(B) केवल व्यापार किए जाने वाले देशों में परिवर्तन।
(C) केवल व्यापार की कुल मात्रा में परिवर्तन।
(D) केवल परिवहन के साधनों में परिवर्तन।

144. निम्नलिखित में से कौन सा पत्तन एक ठोस चट्टान और बालू को काटकर बनाई गई नहर के माध्यम से समुद्र से जुड़ा है?
(A) मुंबई
(B) विशाखापट्नम
(C) चेन्नई
(D) पारादीप

145. भारत की स्वतंत्रता के बाद नए पत्तनों को विकसित करने की आवश्यकता क्यों पड़ी?
(A) अंग्रेजों द्वारा निर्मित पुराने पत्तन समय के साथ अब बहुत छोटे पड़ गए थे।
(B) विभाजन के कारण कराची और चिटगाँव पत्तन भारत से अलग हो गए थे।
(C) अंग्रेजों ने भारत छोड़ते समय लगभग सभी पुराने पत्तनों को नष्ट कर दिया था।
(D) सरकार की मंशा विश्व स्तर पर नए व्यापारिक साझेदार और मार्ग बनाने की थी।

146. 'पत्तन के पृष्ठ प्रदेश की सीमाओं का चिह्नांकन मुश्किल होता है'। इसका क्या कारण है?
(A) यह क्षेत्र सुस्थिर नहीं होता और दूसरे पत्तन के पृष्ठप्रदेश से जुड़ सकता है।
(B) क्योंकि इन क्षेत्रों की राजनीतिक और भौगोलिक सीमाएँ निरंतर बदलती रहती हैं।
(C) क्योंकि वर्तमान में सरकार द्वारा ऐसी कोई स्पष्ट भौगोलिक सीमा परिभाषित नहीं है।
(D) क्योंकि किसी भी पत्तन के पृष्ठप्रदेश का वास्तव में कोई भौतिक अस्तित्व नहीं होता।

147. निम्नलिखित में से कौन-सी मद तूतीकोरिन पत्तन द्वारा निपटान की जाने वाली वस्तुओं में शामिल नहीं है?
(A) कोयला
(B) नमक
(C) लौह-अयस्क
(D) चीनी

148. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. विशाखापत्तनम आंध्र प्रदेश में एक भू-आबद्ध पत्तन है।
2. चेन्नई एक प्राकृतिक पत्तन है।
3. कोच्चि पत्तन 'अरब सागर की रानी' कहलाता है।
4. पारादीप पत्तन का पोताश्रय सबसे गहरा है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन गलत है?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 3
(D) केवल 2 और 4

149. भारत के निर्यात में 2015-16 से 2021-22 तक किस श्रेणी की हिस्सेदारी लगभग स्थिर रही है?
(A) कृषि एवं समवर्गी उत्पाद
(B) विनिर्मित वस्तुएँ
(C) अयस्क एवं खनिज
(D) पेट्रोलियम व अपरिष्कृत उत्पाद

150. दो या दो से अधिक देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान की प्रक्रिया को क्या कहते हैं?
(A) घरेलू व्यापार
(B) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार
(C) स्थानीय बाजार
(D) वस्तु विनिमय

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का सैद्धांतिक आधार अक्सर तुलनात्मक लाभ के सिद्धांत में निहित होता है, जिसे डेविड रिकार्डो द्वारा प्रतिपादित किया गया था। यह सिद्धांत तर्क देता है कि देशों को उन वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में विशेषज्ञता हासिल करनी चाहिए जिनमें उनकी अवसर लागत सबसे कम हो, भले ही उनके पास किसी भी वस्तु के उत्पादन में पूर्ण लाभ न हो। 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद, भारत ने आयात प्रतिस्थापन की अपनी पूर्व नीति से हटकर निर्यात-उन्मुख विकास मॉडल को अपनाया। इस बदलाव ने भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत होने और अपने तुलनात्मक लाभों का फायदा उठाने में सक्षम बनाया।

इलेक्ट्रॉनिक्स, कपड़ा और परिधान, तथा फार्मास्यूटिकल्स जैसे क्षेत्रों के निर्यात में अभूतपूर्व योगदान दिया है। ये क्षेत्र न केवल देश के कुल निर्यात में एक बड़ा हिस्सा रखते हैं बल्कि वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के साथ भारत के एकीकरण को भी मजबूत करते हैं।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) को व्यापार और शुल्कों के प्रयोजनों के लिए क्या माना जाता है?
(A) एक घरेलू टैरिफ क्षेत्र
(B) एक विदेशी क्षेत्र
(C) एक कृषि क्षेत्र
(D) एक आवासीय क्षेत्र

167. भारत में एसईजेड की स्थापना का एक प्राथमिक उद्देश्य क्या नहीं है?
(A) निर्यात को बढ़ावा देना
(B) आयात को प्रतिबंधित करना
(C) निवेश आकर्षित करना
(D) रोजगार सृजित करना

168. एसईजेड में स्थित इकाइयों को प्रदान किए जाने वाले प्रोत्साहनों में क्या शामिल है?
(A) आयकर और अन्य शुल्कों में छूट
(B) इकाइयों पर लागू अत्यधिक उच्च कर दरें
(C) अत्यंत जटिल और लंबी नियामक प्रक्रियाएं
(D) कच्चे माल के आयात पर कड़े प्रतिबंध

169. स्रोत के अनुसार, किन क्षेत्रों ने भारत में एसईजेड के माध्यम से निर्यात में विशेष रूप से योगदान दिया है?
(A) केवल कृषि और डेयरी उत्पाद
(B) भारी उद्योग और खनन
(C) सूचना प्रौद्योगिकी, कपड़ा और फार्मास्यूटिकल्स
(D) केवल हस्तशिल्प और कुटीर उद्योग

170. भारत में एसईजेड को किस अधिनियम के तहत कानूनी ढांचा प्रदान किया गया है?
(A) विदेशी व्यापार अधिनियम, 1992
(B) कंपनी अधिनियम, 2013
(C) पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986
(D) एसईजेड अधिनियम, 2005

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के उद्देश्य से, सरकार ने 'सागरमाला कार्यक्रम' नामक एक महत्वाकांक्षी पहल शुरु की है। यह एक पत्तन-आधारित विकास (port-led development) का दृष्टिकोण है जिसका लक्ष्य देश की 7,500 किलोमीटर लंबी तटरेखा और 14,500 किलोमीटर संभावित नौगम्य जलमार्गों की क्षमता का पूर्ण उपयोग करना है। इस कार्यक्रम के चार प्रमुख स्तंभ हैं: बंदरगाह आधुनिकीकरण और नए बंदरगाहों का विकास, बंदरगाह संपर्क में वृद्धि, बंदरगाह-संबद्ध औद्योगीकरण, और तटीय सामुदायिक विकास। इसका मुख्य उद्देश्य लॉजिस्टिक्स लागत को कम करना है, जो वर्तमान में भारत में काफी अधिक है और जो इसके निर्यात को वैश्विक बाजार में महंगा बनाती है। बंदरगाहों की क्षमता बढ़ाकर और उन्हें सड़क, रेल और आंतरिक जलमार्गों के कुशल नेटवर्क के माध्यम से भीतरी इलाकों से जोड़कर, सागरमाला का लक्ष्य कार्गो की आवाजाही के समय और लागत को कम करना है। इसके अतिरिक्त, तटीय आर्थिक क्षेत्रों (Coastal Economic Zones - CEZs) की स्थापना करके बंदरगाहों के पास औद्योगिक समूहों के विकास को बढ़ावा दिया जा रहा है, ताकि विनिर्माण और निर्यात को प्रोत्साहन मिल सके। यह समग्र दृष्टिकोण न केवल भारत के व्यापार को सुगम बनाएगा, बल्कि तटीय क्षेत्रों में आर्थिक विकास और रोजगार सृजन में भी योगदान देगा।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. 'सागरमाला कार्यक्रम' का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) केवल अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों का विकास करना
(B) तटीय समुदायों को आधुनिक आवासीय सुविधाएं देना
(C) भारत की लॉजिस्टिक्स लागत को कम करके व्यापार बढ़ाना
(D) माल ढुलाई हेतु सड़क परिवहन पर पूर्ण निर्भरता बढ़ाना

172. निम्नलिखित में से कौन सा 'सागरमाला कार्यक्रम' का प्रमुख स्तंभ नहीं है?
(A) बंदरगाहों का व्यापक आधुनिकीकरण
(B) शहरी जनसंख्या का ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानांतरण
(C) बंदरगाहों के रेल-सड़क संपर्क में वृद्धि
(D) बंदरगाहों से संबद्ध औद्योगिक क्षेत्रों का विकास

173. 'तटीय आर्थिक क्षेत्र' (CEZs) की स्थापना का क्या लक्ष्य है?
(A) तटीय क्षेत्रों में विशेष आरक्षित वन क्षेत्रों का निर्माण
(B) तटीय क्षेत्रों में पर्यटन गतिविधियों को सीमित करना
(C) मछली पकड़ने वाले समुदायों के लिए विशेष आवास बनाना
(D) बंदरगाहों के पास औद्योगिक समूहों के विकास को बढ़ावा देना

174. सागरमाला कार्यक्रम भारत के निर्यात को कैसे लाभ पहुँचा सकता है?
(A) लॉजिस्टिक्स लागत और समय को कम करके
(B) निर्यात पर कर बढ़ाकर
(C) बंदरगाहों की संख्या कम करके
(D) केवल घरेलू व्यापार पर ध्यान केंद्रित करके

175. स्रोत के अनुसार, सागरमाला कार्यक्रम भारत की किस भौगोलिक विशेषता का लाभ उठाने का प्रयास करता है?
(A) हिमालय की विशाल पर्वत श्रृंखला
(B) राजस्थान का विशाल थार मरुस्थल

(D) मुंबई और जवाहरलाल नेहरु; कोलकाता और हल्दिया

121. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. कोलकाता पत्तन गाद की समस्या से जूझ रहा है।
2. हल्दिया का निर्माण कोलकाता का दबाव कम करने के लिए हुआ।
3. हल्दिया पत्तन कोलकाता से 105 कि.मी. अनुप्रवाह (downstream) पर स्थित है।
4. हल्दिया केवल जूट उत्पादों का निपटान करता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

122. वर्ष 2021-22 में भारत का कुल वैदेशिक व्यापार का मूल्य कितना था?
(A) 77,19,796 करोड़ रुपए
(B) 1,214 करोड़ रुपए
(C) 18,52,340 करोड़ रुपए
(D) 45,72,775 करोड़ रुपए

123. निम्नलिखित में से कौन-सी वस्तु 2021-22 में भारत की प्रमुख आयात वस्तु थी (मूल्य के अनुसार)?
(A) मोती, बहुमूल्य एवं अल्प मूल्य रत्न
(B) रासायनिक उत्पाद
(C) अलौह धातुएँ
(D) पेट्रोलियम एवं उत्पाद

124. निम्नलिखित में से कौन सा पत्तन एक नदमुख (estuary) पर स्थित है?
(A) चेन्नई
(B) मार्मागाओ
(C) पारादीप
(D) विशाखापट्नम

125. भारतीय पत्तनों के आधुनिकीकरण के लिए निजी उद्यमियों को क्यों आमंत्रित किया गया?
(A) सरकारी अभिकरणों की निरंतर बढ़ती विफलताओं और उदासीनता के कारण
(B) सभी प्रमुख पत्तनों का पूर्णतः निजीकरण करने की वर्तमान सरकारी नीति हेतु
(C) काम के बढ़ने और अंतरराष्ट्रीय स्तर के समकक्ष बनाने की ज़रूरत हेतु
(D) पत्तन क्षेत्र में बड़े पैमाने पर विदेशी निवेश को निरंतर आकर्षित करने हेतु

126. भारत के व्यापार में समय के साथ आए बदलावों को कालानुक्रमिक रूप से व्यवस्थित करें:
1. खाद्यान्न का आयात एक प्रमुख मद होना
2. हरित क्रांति
3. पेट्रोलियम का आयात एक प्रमुख मद बनना
4. उदारीकरण और व्यापार में तीव्र वृद्धि

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 4, 3, 2, 1

127. भारत के विदेशी व्यापार की प्रमुख विशेषता क्या है?
(A) व्यापार घाटा
(B) व्यापार अधिशेष
(C) संतुलित व्यापार
(D) आयात पर पूर्ण निर्भरता

128. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
List I: (वर्ष)
P. 2004-05
Q. 2013-14
R. 2016-17
S. 2021-22

List II: (व्यापार संतुलन, करोड़ रुपये में)
1. -8,10,423
2. -7,25,082
3. -14,25,753
4. -1,25,725

(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

129. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. न्यू मंगलौर पत्तन कर्नाटक में स्थित है।
2. यह लौह-अयस्क और लौह-सांद्र के निर्यात की जरूरतों को पूरा करता है।
3. यह कॉफी, चाय, और ग्रेनाइट पत्थर का भी निपटान करता है।
4. इसका प्रमुख पृष्ठप्रदेश केवल मंगलौर शहर है।
5. यह भारत का सबसे बड़ा प्राकृतिक बंदरगाह है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 4 और 5
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

130. 1960 के दशक के बाद आयात प्रतिस्थापन के प्रयासों के बावजूद आयात निर्यातों से अधिक क्यों थे?
(A) क्योंकि उस अवधि में भारत का भुगतान संतुलन बिल्कुल विपरीत रहा था
(B) क्योंकि अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय निर्यात की मांग अत्यंत कम थी।
(C) क्योंकि तत्कालीन सरकार ने आयातों को अत्यधिक

ANSWERS

1. (B) 1,214 करोड़ रुपए
भारत की स्वतंत्रता के प्रारंभिक वर्षों में वैदेशिक व्यापार का आकार बहुत छोटा था। वर्ष 1950-51 के दौरान भारत के कुल विदेशी व्यापार का मूल्य केवल 1,214 करोड़ रुपये दर्ज किया गया था। उस समय भारत मुख्य रूप से कच्चे माल का निर्यात करता था। वर्तमान में भारत के व्यापारिक संघटन और मूल्य में अत्यधिक वृद्धि हुई है, जो देश के आर्थिक विकास का स्पष्ट परिचायक है।

2. (A) पत्तन की सेवाओं का उपयोग करने वाला भौगोलिक क्षेत्र
पृष्ठप्रदेश या हिंटर लैंड उस विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र को कहते हैं जहाँ की वस्तुओं के निर्यात और उपभोग की जाने वाली वस्तुओं के आयात के लिए किसी पत्तन की सेवाओं का उपयोग किया जाता है। यह क्षेत्र पत्तन की आर्थिक सार्थकता को निर्धारित करता है। एक विकसित पृष्ठप्रदेश परिवहन के माध्यमों जैसे रेल और सड़क मार्ग से संबंधित पत्तन से बहुत मजबूती से जुड़ा होता है।

3. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
पारादीप पत्तन ओडिशा में महानदी डेल्टा पर स्थित है, जबकि कोच्चि पत्तन केरल की बेंवानद कायाल के मुहाने पर अवस्थित है। दीनदयाल पत्तन, जिसे कांडला भी कहा जाता है, गुजरात में कच्छ की खाड़ी में स्थित है। तूतीकोरिन पत्तन तमिलनाडु के दक्षिणी तट पर स्थित है। ये सभी पत्तन भारत के समुद्री व्यापार और अर्थव्यवस्था के लिए वर्तमान में अत्यधिक महत्वपूर्ण केंद्र माने जाते हैं।

4. (D) हाल के वर्षों में विदेशी व्यापार की मात्रा और मूल्य दोनों बढ़े हैं।
भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की मात्रा और मूल्य दोनों में हाल के वर्षों में जबरदस्त वृद्धि देखी गई है। यह वृद्धि मुख्य रूप से विनिर्माण क्षेत्र में सुधार, व्यापार नीतियों के उदारीकरण और वैश्विक बाजारों तक सुगम पहुँच के कारण संभव हुई है। निर्यात और आयात के बढ़ते आंकड़ों ने भारत की आर्थिक स्थिति को वैश्विक आर्थिक मंच पर काफी मजबूती और स्थिरता प्रदान की है।

5. (C) मार्मागाओ
मार्मागाओ पत्तन गोवा में जुआरी नदमुख के मुहाने पर स्थित एक शानदार प्राकृतिक बंदरगाह है। इसका महत्व 1961 में इसके पुनर्प्रतिरुपण के बाद काफी बढ़ गया क्योंकि इसे विशेष रूप से जापान को भारी मात्रा में लौह-अयस्क निर्यात करने के लिए विकसित किया गया था। यह पत्तन अपने पृष्ठप्रदेश से कोंकण रेलवे के माध्यम से बहुत अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है, जिससे व्यापार सुगम होता है।

6. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
कोच्चि पत्तन केरल में स्थित है और इसे अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण स्वेज-कोलंबो मार्ग के पास होने का रणनीतिक लाभ मिलता है। यह एक प्राकृतिक पत्तन है जिसे इसकी सुंदरता और व्यापारिक महत्व के कारण 'अरब सागर की रानी' कहा जाता है। यद्यपि दोनों तथ्य सही हैं, लेकिन इसका प्राकृतिक होना या उपनाम होना इसके विशेष व्यापारिक मार्ग की अवस्थिति की व्याख्या नहीं करता है।

7. (D) हरित क्रांति में सफलता
भारत में 1950 और 1960 के दशक में खाद्यान्न की भारी कमी थी, जिसके कारण बड़े पैमाने पर आयात करना पड़ता था। 1970 के दशक में हरित क्रांति की सफलता के बाद भारत खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया। इसके परिणामस्वरूप विदेशों से खाद्यान्नों के आयात में भारी कमी आई और भारत ने अन्य आवश्यक वस्तुओं जैसे पेट्रोलियम और उर्वरकों के आयात पर ध्यान केंद्रित किया।

8. (A) जवाहरलाल नेहरु पत्तन
जवाहरलाल नेहरू पत्तन, जिसे न्हावा शेवा के नाम से भी जाना जाता है, भारत का विशालतम कंटेनर पत्तन है। इसका निर्माण मुख्य रूप से मुंबई पत्तन के बढ़ते दबाव को कम करने के लिए किया गया था। यह पत्तन अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस है और भारत के अंतरराष्ट्रीय व्यापार में कंटेनर यातायात के एक बहुत बड़े हिस्से का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करने के लिए विश्व स्तर पर जाना जाता है।

9. (C) केवल 1, 2 और 4
कोलकाता पत्तन पश्चिम बंगाल में हुगली नदी पर स्थित एक महत्वपूर्ण नदीय पत्तन है। यह बंगाल की खाड़ी से लगभग 128 कि.मी. अंदर स्थित है और लंबे समय से गाद जमा होने की समस्या से जूझ रहा है। इसका विकास पुर्तगालियों द्वारा नहीं बल्कि अंग्रेजों द्वारा किया गया था। यह पत्तन नेपाल और भूटान जैसे पड़ोसी स्थलरुद्ध देशों को महत्वपूर्ण व्यापारिक सेवाएँ और सुविधाएँ प्रदान करता है।

10. (A) पूँजीगत वस्तुओं के आयात में लगातार वृद्धि हुई है।
भारत के आयात संघटन में पिछले कुछ दशकों में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। जहाँ 1950 और 60 के दशक में खाद्यान्न मुख्य आयात वस्तु थी, वहीं बाद में पेट्रोलियम और उर्वरकों का महत्व बढ़ा। पूँजीगत वस्तुओं के आयात में लगातार वृद्धि नहीं हुई है, बल्कि हाल के वर्षों में इसमें कुछ गिरावट की प्रवृत्ति देखी गई है। यह बदलाव भारत की बढ़ती औद्योगिक क्षमता और आत्मनिर्भरता को दर्शाता है।

11. (B) 1, 3, 2, 4
चेन्नई पत्तन भारत के पूर्वी तट पर स्थित सबसे पुराने कृत्रिम पत्तनों में से एक है, जिसका निर्माण 1859 में हुआ था। इसके बाद विभाजन की चुनौतियों के कारण गुजरात में दीनदयाल (कांडला) पत्तन का विकास हुआ। मार्मागाओ पत्तन का पुनर्प्रतिरूपण 1961 में लौह-अयस्क निर्यात हेतु किया गया। अंत में, मुंबई के भार को कम करने हेतु आधुनिक जवाहरलाल नेहरु पत्तन को न्हावा शेवा में विकसित किया गया।

12. (B) यह चारों ओर से स्थल से घिरा और समुद्र से नहर द्वारा जुड़ा होता है।
स्थलबद्ध पोताश्रय एक ऐसा बंदरगाह होता है जो मुख्य रुप से चारों ओर से जमीन से घिरा होता है। इसे समुद्र तक पहुँच प्रदान करने के लिए एक गहरी नहर या जलमार्ग के माध्यम से जोड़ा जाता है। भारत में विशाखापट्नम इस प्रकार के पत्तन का एक प्रमुख उदाहरण है। ऐसी संरचना जहाजों को खराब मौसम और लहरों के प्रकोप से प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान करने में बहुत सहायक होती है।

13. (A) P-2, Q-3, R-4, S-1
न्यू मंगलौर पत्तन मुख्य रुप से कर्नाटक राज्य की व्यापारिक आवश्यकताओं को पूरा करता है। विशाखापट्नम पत्तन आंध्र प्रदेश और तेलंगाना जैसे राज्यों के लिए एक प्रमुख द्वार है। मार्मागाओ पत्तन का पृष्ठप्रदेश गोवा और दक्षिणी महाराष्ट्र तक विस्तृत है। हल्दिया पत्तन, जो कोलकाता के सहायक के रुप में कार्य करता है, ओडिशा, झारखंड और पश्चिम बंगाल के औद्योगिक क्षेत्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान करता है।

14. (D) 67.8%
भारत के निर्यात संघटन में विनिर्माण क्षेत्र की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो गई है। वर्ष 2021-22 के आंकड़ों के अनुसार, भारत के कुल निर्यात मूल्य में विनिर्मित वस्तुओं की हिस्सेदारी लगभग 67.8 प्रतिशत थी। इसमें रत्न और आभूषण, इंजीनियरिंग सामान और रसायन जैसे उत्पाद प्रमुखता से शामिल हैं। यह उच्च प्रतिशत वैश्विक बाजार में भारतीय विनिर्माण उद्योग की बढ़ती प्रतिस्पर्धात्मकता और उत्पादकता के स्तर को स्पष्ट रुप से दर्शाता है।

15. (A) मार्मागाओ
मार्मागाओ पत्तन भारत के पश्चिमी तट पर गोवा राज्य में स्थित है और यह ज़ुआरी नदमुख पर एक सुंदर प्राकृतिक बंदरगाह बनाता है। इसके विपरीत, पारादीप ओडिशा में, तूतीकोरिन तमिलनाडु के दक्षिणी भाग में और एन्नोर चेन्नई के उत्तर में स्थित हैं, जो सभी भारत के पूर्वी तट का हिस्सा हैं। मार्मागाओ मुख्य रुप से जापान को लौह-अयस्क निर्यात करने के लिए प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण माना जाता है।

16. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
भारत के पश्चिमी तट पर पूर्वी तट की तुलना में अधिक प्रमुख पत्तन स्थित हैं, जिसका एक कारण यहाँ की तटरेखा की प्राकृतिक बनावट है। भारत तीन ओर से समुद्र से घिरा है और इसके पास लगभग 7,517 किलोमीटर लंबी तटरेखा है। यद्यपि ये दोनों कथन भौगोलिक रुप से पूर्णतः सत्य हैं, लेकिन केवल लंबी तटरेखा का होना पश्चिमी तट पर अधिक पत्तनों की उपस्थिति का मुख्य कारण नहीं है।

17. (B) मार्मागाओ - ज़ुआरी नदमुख
मार्मागाओ पत्तन गोवा में ज़ुआरी नदमुख के मुहाने पर स्थित एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक बंदरगाह है। मुंबई एक प्राकृतिक पत्तन है, न कि कृत्रिम। चेन्नई भारत के सबसे पुराने कृत्रिम पत्तनों में से एक है। पारादीप पत्तन ओडिशा में महानदी के डेल्टा पर स्थित है, न कि कावेरी डेल्टा पर। इन पत्तनों की भौगोलिक स्थिति उनके द्वारा किए जाने वाले विशिष्ट व्यापार और नौभार निपटान की प्रकृति को प्रभावित करती है।

18. (A) राज्य सरकारें
भारत में पत्तनों को उनके महत्व और आकार के आधार पर दो श्रेणियों में विभाजित किया गया है। 12 प्रमुख पत्तन केंद्र सरकार के अधिकार क्षेत्र में आते हैं और उनके लिए नीतियां केंद्र बनाता है। इसके विपरीत, लगभग 200 छोटे और मझोले पत्तनों के प्रबंधन, विकास और नियामक कार्यों की पूरी जिम्मेदारी संबंधित राज्य सरकारों की होती है। ये छोटे पत्तन क्षेत्रीय आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

19. (B) केवल 1, 2, 3 और 5
मुंबई पत्तन भारत का सबसे बड़ा और सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक पत्तन है, जिसकी लंबाई 20 कि.मी. और चौड़ाई 6-10 कि.मी. है। यह मध्यपूर्व और भूमध्य सागरीय देशों के प्रमुख समुद्री मार्ग के निकट स्थित है। इसका पृष्ठप्रदेश केवल महाराष्ट्र तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें मध्य प्रदेश, गुजरात, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के बड़े भाग भी शामिल हैं। इसमें 54 गोदियाँ और विशाल टर्मिनल उपलब्ध हैं।

20. (D) उच्च मूल्य वाली या नाशवान वस्तुएँ
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वायु परिवहन का उपयोग विशिष्ट प्रकार की वस्तुओं के लिए किया जाता है। यह परिवहन का सबसे महंगा साधन है, इसलिए इसका उपयोग केवल उच्च मूल्य वाली वस्तुओं जैसे कीमती रत्न, आभूषण या ऐसी नाशवान वस्तुओं जैसे ताजे फल और फूलों के लिए किया जाता है जिन्हें बहुत जल्दी गंतव्य तक पहुँचाना आवश्यक होता है। भारी और कम मूल्य वाली वस्तुओं के लिए समुद्री मार्ग ही उपयुक्त है।

21. (C) कराची और चिटगाँव
1947 में भारत के विभाजन ने देश की पत्तन अवसंरचना को बहुत प्रभावित किया। उस समय के दो अत्यंत महत्वपूर्ण बंदरगाह, कराची और चिटगाँव, भारत से अलग हो गए। कराची पत्तन पाकिस्तान के हिस्से में चला गया, जबकि चिटगाँव तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) में चला गया। इन पत्तनों की कमी को पूरा करने के लिए बाद में भारत में कांडला और हल्दिया जैसे नए पत्तन विकसित किए गए।

22. (B) विशाखापट्नम
विशाखापट्नम आंध्र प्रदेश में स्थित एक शानदार भू-आबद्ध या स्थलबद्ध पोताश्रय है। इसका अर्थ है कि यह चारों ओर से जमीन से सुरक्षित है और इसे समुद्र से जोड़ने के लिए चट्टानों को काटकर एक कृत्रिम नहर बनाई गई है। यह विशेषता जहाजों को समुद्र के तूफानों और लहरों से प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान करती है। यहाँ लौह-अयस्क और पेट्रोलियम के निपटान के लिए एक बाह्य पत्तन भी विकसित किया गया है।

23. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
पेट्रोलियम और इसके उत्पादों का भारत के आयात में सबसे बड़ा हिस्सा है, जो 2021-22 में लगभग 31.6 प्रतिशत था। विनिर्मित वस्तुएं भारत के निर्यात का मुख्य स्तंभ हैं, जो कुल निर्यात का लगभग 68 प्रतिशत हिस्सा कवर करती हैं। पूँजीगत वस्तुओं का आयात कुल आयात का लगभग 10.1 प्रतिशत है। कृषि और उससे संबंधित उत्पादों का निर्यात देश के कुल निर्यात का लगभग 11.9 प्रतिशत हिस्सा है।

24. (A) दीनदयाल पत्तन (कांडला)
देश के विभाजन के बाद कराची पत्तन पाकिस्तान के पास चला गया, जिससे पश्चिमी भारत के व्यापार पर बहुत बुरा असर पड़ा। इस कमी को पूरा करने और मुंबई पत्तन पर बढ़ते हुए अत्यधिक दबाव को कम करने के लिए गुजरात में दीनदयाल पत्तन, जिसे कांडला के नाम से जाना जाता है, का विकास किया गया। यह पत्तन विशेष रूप से पेट्रोलियम, उर्वरक और खाद्यान्न के आयात और निर्यात के लिए महत्वपूर्ण है।

25. (C) आयात-निर्यात दोनों की मात्रा बढ़ी है, परंतु आयात का मूल्य अधिक रहा है।
स्वतंत्रता के बाद से भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की मात्रा और मूल्य दोनों में निरंतर वृद्धि देखी गई है। व्यापार संघटन में भी बदलाव आया है और अब विनिर्मित वस्तुओं का महत्व बढ़ा है। हालांकि, भारत के निर्यात की तुलना में आयात का कुल मूल्य हमेशा अधिक रहा है, जिसके कारण देश का व्यापार संतुलन ऐतिहासिक रूप से नकारात्मक या घाटे की स्थिति में बना रहता है।

26. (A) केवल 2
दीनदयाल पत्तन गुजरात में कच्छ की खाड़ी के मुहाने पर स्थित एक प्रमुख बंदरगाह है। इसे देश के पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी भाग की जरूरतों को पूरा करने के लिए विकसित किया गया था, न कि दक्षिणी भाग के लिए। यह भारी मात्रा में पेट्रोलियम और उर्वरकों का निपटान करता है। इसके बढ़ते कार्यभार को संभालने के लिए वाडीनार में एक अपतटीय टर्मिनल के रूप में एक अनुषंगी पत्तन विकसित किया गया है।

27. (D) कोच्चि
कोच्चि पत्तन केरल राज्य में बेंवानद कायाल के मुहाने पर स्थित है। इसकी रणनीतिक स्थिति और प्राचीन काल से ही मसालों के व्यापार के लिए इसकी प्रसिद्धि के कारण इसे 'अरब सागर की रानी' के नाम से जाना जाता है। यह एक सुंदर प्राकृतिक पत्तन है जो स्वेज-कोलंबो अंतरराष्ट्रीय समुद्री मार्ग के बहुत करीब स्थित है, जिससे इसे वैश्विक व्यापार में एक विशेष भौगोलिक और आर्थिक लाभ प्राप्त होता है।

28. (B) मार्मागाओ
मार्मागाओ पत्तन गोवा में स्थित एक प्रमुख प्राकृतिक बंदरगाह है जो जुआरी नदमुख पर अवस्थित है। कोंकण रेलवे के निर्माण और विस्तार ने इस पत्तन के पृष्ठप्रदेश में बहुत महत्वपूर्ण वृद्धि की है। रेलवे नेटवर्क के माध्यम से यह पत्तन अब कर्नाटक, गोवा और महाराष्ट्र के आंतरिक औद्योगिक क्षेत्रों से बेहतर तरीके से जुड़ गया है, जिससे लौह-अयस्क और अन्य व्यापारिक वस्तुओं का परिवहन काफी सुगम और सस्ता हो गया है।

29. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
1970 के दशक में हरित क्रांति की सफलता ने भारत को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बना दिया, जिससे इनका आयात काफी कम हो गया। उसी दौरान 1973 में वैश्विक ऊर्जा संकट आया, जिससे पेट्रोलियम की कीमतों में भारी उछाल आया और भारत का आयात बिल बढ़ गया। यद्यपि ये दोनों घटनाएं ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं, लेकिन ऊर्जा संकट खाद्यान्न आयात कम होने का मुख्य कारण नहीं था।

30. (D) न्यू मंगलौर पत्तन - महाराष्ट्र
दीनदयाल पत्तन गुजरात में स्थित है और पारादीप पत्तन ओडिशा के तट पर अवस्थित है। तूतीकोरिन पत्तन तमिलनाडु के दक्षिणी भाग में अपनी सेवाएं प्रदान करता है। न्यू मंगलौर पत्तन वास्तव में कर्नाटक राज्य में स्थित है, न कि महाराष्ट्र में। यह पत्तन मुख्य रूप से लौह-अयस्क, उर्वरकों और पेट्रोलियम उत्पादों के निपटान के लिए जाना जाता है और कर्नाटक की व्यापारिक आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु महत्वपूर्ण है।

31. (A) कृषि उत्पादन में गिरावट
भारत के विदेशी व्यापार में तीव्र वृद्धि के पीछे कई महत्वपूर्ण कारक रहे हैं। विनिर्माण क्षेत्र में आई तेजी, सरकार द्वारा अपनाई गई उदार आर्थिक और व्यापारिक नीतियां तथा वैश्विक बाजारों की विविधता ने इस वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कृषि उत्पादन में गिरावट व्यापार वृद्धि का कारक नहीं हो सकती, बल्कि कृषि उत्पादों के अधिशेष और विविधीकरण ने निर्यात बढ़ाने में मदद की है, जिससे आर्थिक मजबूती मिली है।

32. (B) केवल 1, 2, 3 और 4
भारत सरकार का लक्ष्य आगामी वर्षों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में अपनी हिस्सेदारी को दोगुना करना है। इसके लिए आयात उदारीकरण, करों में कमी और डि-लाइसेंसिंग जैसे महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। साथ ही एकस्व या पेटेंट व्यवस्था में भी बदलाव किए गए हैं। हालांकि, सरकार ने आयातों पर पूर्ण प्रतिबंध नहीं लगाया है, बल्कि प्रक्रियाओं को सरल और प्रतिस्पर्धी बनाने पर अधिक जोर दिया है ताकि व्यापार बढ़े।

76. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में पिछले कुछ वर्षों में पूँजीगत वस्तुओं के आयात में क्रमिक गिरावट देखी गई है। इसका मुख्य कारण देश के भीतर ही मशीनों और औद्योगिक उपकरणों के स्वदेशी उत्पादन में हुई उल्लेखनीय वृद्धि है। 'मेक इन इंडिया' जैसी सरकारी पहलों के कारण भारत अब कई क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है, जिससे विदेशों से भारी मशीनों को मंगाने की आवश्यकता और उस पर होने वाला खर्च कम हुआ है।

77. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
वर्ष 2021-22 में भारत के आयात में खाद्य तेलों का मूल्य लगभग 1,41,532 करोड़ रुपये रहा। उर्वरकों के आयात पर करीब 1,05,796 करोड़ रुपये खर्च किए गए। लोहा और इस्पात का आयात मूल्य लगभग 94,053 करोड़ रुपये था, जबकि रासायनिक उत्पादों का आयात मूल्य 3,08,882 करोड़ रुपये के करीब दर्ज किया गया। यह आंकड़े दर्शाते हैं कि भारत को अपनी औद्योगिक और कृषि जरूरतों के लिए इन वस्तुओं पर कितनी अधिक निर्भरता रखनी पड़ती है।

78. (D) खाद्यान्न, पूँजीगत माल, मशीनरी और उससे जुड़े विभिन्न उपस्कर
स्वतंत्रता के बाद के शुरुआती दशकों में भारत गंभीर आर्थिक चुनौतियों और खाद्यान्न संकट से जूझ रहा था। 1950 और 1960 के दशक में देश की प्राथमिकता कृषि सुधार और बुनियादी ढांचे का निर्माण करना था, जिसके कारण बड़े पैमाने पर खाद्यान्न, पूँजीगत माल और भारी मशीनरी का आयात किया गया था। उस समय भारत इन वस्तुओं के उत्पादन में आत्मनिर्भर नहीं था, जिससे इनका आयात अपरिहार्य और अत्यंत आवश्यक था।

79. (D) सभी 1, 2, 3 और 4
भारत का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार निरंतर प्रगति पर है, जहाँ आयात का मूल्य हमेशा निर्यात से अधिक रहता है। 1950 के दशक की तुलना में व्यापार के कुल मूल्य में जबरदस्त वृद्धि हुई है, जिसका श्रेय सरकार की उदार व्यापारिक नीतियों को जाता है। हालांकि भारत का कुल वैश्विक व्यापार में हिस्सा अभी भी मात्र एक प्रतिशत के आसपास ही है, जो अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ाने की आवश्यकता को दर्शाता है।

80. (B) मार्मागाओ
मार्मागाओ पत्तन गोवा राज्य में स्थित एक प्रमुख प्राकृतिक बंदरगाह है। इसकी भौगोलिक स्थिति और रेल व सड़क संपर्क इसे एक विशाल पृष्ठप्रदेश प्रदान करते हैं, जिसमें पूरा गोवा राज्य, कर्नाटक का उत्तरी भाग और महाराष्ट्र का दक्षिणी हिस्सा शामिल है। कोंकण रेलवे के विस्तार ने इस पत्तन की पहुँच को और भी सुगम बना दिया है, जिससे यहाँ से लौह-अयस्क और अन्य उत्पादों का परिवहन अत्यधिक सुविधाजनक हो गया है।

81. (B) 16.4%
भारत केवल कच्चे तेल का आयातक ही नहीं है, बल्कि अपनी विशाल रिफाइनिंग क्षमता के कारण यह पेट्रोलियम उत्पादों का एक महत्वपूर्ण निर्यातक भी बनकर उभरा है। वर्ष 2021-22 के आंकड़ों के अनुसार, भारत के कुल निर्यात मूल्य में पेट्रोलियम और इसके अपरिष्कृत उत्पादों की हिस्सेदारी लगभग 16.4 प्रतिशत थी। यह क्षेत्र भारत की निर्यात आय का एक बहुत बड़ा और विश्वसनीय स्रोत बन चुका है, जो वैश्विक ऊर्जा बाजार में भारत की सक्रियता को दर्शाता है।

82. (A) यह एक भू-आबद्ध पत्तन है जिसे नहर द्वारा समुद्र से जोड़ा गया है।
विशाखापट्नम पत्तन आंध्र प्रदेश में स्थित है और इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह एक पूर्णतः भू-आबद्ध (Land-locked) बंदरगाह है। यह चारों ओर से पहाड़ियों और जमीन से सुरक्षित है और जहाजों के आने-जाने के लिए ठोस चट्टानों और बालू को काटकर एक गहरी नहर बनाई गई है जो इसे समुद्र से जोड़ती है। यह संरचना इसे चक्रवातों और समुद्री तूफानों से प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान करती है।

83. (A) केवल 1 और 3
तूतीकोरिन पत्तन तमिलनाडु के दक्षिणी तट पर स्थित है। यह मुख्य रूप से कोयला, नमक, खाद्यान्न, खाद्य तेल और उर्वरकों जैसे माल का कुशलतापूर्वक निपटान करता है। यह एक कृत्रिम पत्तन है जिसे चेन्नई पत्तन के भार को कम करने के लिए विकसित किया गया था। यह केवल पेट्रोलियम उत्पादों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक बहुउद्देशीय बंदरगाह है जो दक्षिण भारत के विविध व्यापारिक क्षेत्रों की आवश्यकताओं को पूरा करता है।

84. (D) कृषि एवं समवर्गी उत्पाद
पिछले कुछ दशकों में भारत के कुल निर्यात में विभिन्न वस्तुओं की हिस्सेदारी में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। जहाँ एक ओर विनिर्मित वस्तुओं का निर्यात बढ़ा है, वहीं दूसरी ओर 'कृषि एवं समवर्गी उत्पादों' की प्रतिशत हिस्सेदारी में समय के साथ क्रमिक गिरावट दर्ज की गई है। हालांकि इनका कुल उत्पादन और मूल्य बढ़ा है, लेकिन निर्यात संघटन में अन्य औद्योगिक क्षेत्रों की तीव्र वृद्धि के कारण इनका तुलनात्मक प्रतिशत अब पहले से कम हो गया है।

85. (B) P-3, Q-2, R-1, S-4
पारादीप पत्तन मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ और झारखंड के खनिजों के निर्यात में मदद करता है। कोलकाता पत्तन का पृष्ठप्रदेश बहुत विशाल है और यह उत्तर प्रदेश व बिहार जैसे राज्यों की सेवा करता है। न्यू मंगलौर पत्तन पूरी तरह से कर्नाटक राज्य की व्यापारिक जरूरतों पर केंद्रित है। मुंबई पत्तन, जो भारत का सबसे बड़ा बंदरगाह है, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के विशाल क्षेत्रों के लिए अंतरराष्ट्रीय व्यापार का मुख्य द्वार है।

86. (B) बढ़ता औद्योगीकरण और बेहतर जीवन स्तर
भारत में पेट्रोलियम उत्पादों के आयात में निरंतर वृद्धि का मुख्य कारण देश में हो रहा तीव्र औद्योगीकरण और लोगों के जीवन स्तर में आया सुधार है। उद्योगों की ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा करने और वाहनों की बढ़ती संख्या के कारण ईंधन की मांग में जबरदस्त इजाफा हुआ है। इसके अतिरिक्त, पेट्रोलियम का उपयोग कई उद्योगों में कच्चे माल के रूप में भी किया जाता

की पूर्ति और आर्थिक विकास के लिए उसे अन्य राष्ट्रों के साथ व्यापारिक संबंध बनाने और बनाए रखने पड़ते हैं।

44. (B) 20 मिलियन टन से 837 मिलियन टन
भारत की स्वतंत्रता के बाद से देश के पत्तनों की नौभार निपटान क्षमता में अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 1951 में भारतीय पत्तनों की कुल क्षमता केवल 20 मिलियन टन थी, जो निरंतर विकास और आधुनिकीकरण के फलस्वरूप वर्ष 2016 तक बढ़कर 837 मिलियन टन से भी अधिक हो गई। यह विशाल वृद्धि भारत के बढ़ते विदेशी व्यापार और मजबूत होती अर्थव्यवस्था का एक बहुत ही ठोस और स्पष्ट प्रमाण है।

45. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
भारत के आयात संघटन में ईंधन (कोयला और पेट्रोलियम) की हिस्सेदारी समय के साथ बदलती रही है। वर्ष 2015-16 में यह हिस्सा 25.4 प्रतिशत था, जो 2016-17 में बढ़कर 26.7 प्रतिशत हो गया। वर्ष 2020-21 में इसमें थोड़ी गिरावट आई और यह 25.1 प्रतिशत रहा, लेकिन 2021-22 में इसमें भारी उछाल देखा गया और यह 31.6 प्रतिशत तक पहुँच गया। यह वृद्धि बढ़ती ऊर्जा आवश्यकताओं और वैश्विक मूल्य वृद्धि को दर्शाती है।

46. (D) कड़ी अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा
काजू जैसे पारंपरिक उत्पादों के भारतीय निर्यात में गिरावट का एक मुख्य कारण अंतरराष्ट्रीय बाजार में बढ़ती हुई कड़ी प्रतिस्पर्धा है। अन्य विकासशील देश अब समान उत्पादों का उत्पादन और निर्यात कम लागत पर कर रहे हैं, जिससे वैश्विक बाजार में भारत की पकड़ कमजोर हुई है। इसके अतिरिक्त, गुणवत्ता मानकों और बदलती वैश्विक मांगों के साथ तालमेल बिठाना भी एक बड़ी चुनौती रही है, जिससे निर्यात आंकड़े प्रभावित हुए हैं।

47. (A) भूटान और नेपाल
कोलकाता पत्तन एक महत्वपूर्ण नदीय बंदरगाह है जो हुगली नदी पर स्थित है। अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण, यह न केवल भारत के विशाल उत्तर-पूर्वी और पूर्वी भागों की सेवा करता है, बल्कि यह नेपाल और भूटान जैसे स्थलरुद्ध पड़ोसी देशों के लिए भी समुद्री व्यापार का एकमात्र मुख्य द्वार है। इन देशों का अधिकांश अंतरराष्ट्रीय व्यापार कोलकाता और इसके सहायक हल्दिया पत्तन के माध्यम से ही संपन्न होता है।

48. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत एक प्रमुख कृषि प्रधान देश है, फिर भी इसे बड़ी मात्रा में खाद्य तेलों का आयात करना पड़ता है। इसका मुख्य कारण यह है कि देश में तिलहन का कुल उत्पादन निरंतर बढ़ती घरेलू मांग को पूरा करने के लिए अभी भी अपर्याप्त है। जनसंख्या वृद्धि और खान-पान की आदतों में बदलाव के कारण खाद्य तेलों की खपत तेजी से बढ़ी है, जिसे पूरा करने हेतु आयात करना अनिवार्य है।

49. (B) चेन्नई पत्तन के दबाव को कम करना
तूतीकोरिन पत्तन तमिलनाडु के दक्षिणी तट पर स्थित एक महत्वपूर्ण बंदरगाह है। इसका विकास मुख्य रूप से चेन्नई पत्तन पर बढ़ते हुए अत्यधिक नौभार के दबाव को कम करने और दक्षिण भारत की व्यापारिक आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से पूरा करने के लिए किया गया था। यह पत्तन कोयला, नमक, खाद्यान्न, खाद्य तेल और उर्वरकों जैसे विविध प्रकार के माल के निपटान के लिए विशेष रूप से जाना जाता है।

50. (A) समुद्र और वायु द्वारा
भारत का अधिकांश अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मुख्य रूप से समुद्री और वायु मार्गों द्वारा ही संचालित होता है। समुद्री मार्ग का उपयोग भारी और बड़ी मात्रा में वस्तुओं के परिवहन के लिए किया जाता है, जबकि वायु मार्ग का उपयोग उच्च मूल्य वाली या जल्दी खराब होने वाली वस्तुओं के लिए होता है। हालांकि पड़ोसी देशों जैसे नेपाल, भूटान और बांग्लादेश के साथ कुछ व्यापार स्थल मार्गों द्वारा भी होता है, पर यह तुलनात्मक रूप से कम है।

51. (A) केवल 1, 2 और 4
जवाहरलाल नेहरू पत्तन को न्हावा शेवा में मुंबई के दबाव को कम करने के लिए एक आधुनिक अनुषंगी पत्तन के रूप में विकसित किया गया है। यह वर्तमान में भारत का सबसे बड़ा और विशालतम कंटेनर पत्तन है। यह केवल मुंबई तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका पृष्ठप्रदेश बहुत बड़ा है। यह मुख्य रूप से विनिर्मित वस्तुओं और कंटेनर यातायात के लिए प्रसिद्ध है, न कि केवल लौह-अयस्क निर्यात के लिए।

52. (D) चाय और कॉफी
भारत के आयात संघटन में पेट्रोलियम, मोती, बहुमूल्य रत्न, मशीनरी, रसायन और उर्वरक जैसी वस्तुएं प्रमुख रूप से शामिल हैं। इसके विपरीत, चाय और कॉफी भारत के लिए महत्वपूर्ण निर्यात वस्तुएं रही हैं, न कि आयात की मदें। भारत विश्व में चाय के बड़े उत्पादकों और निर्यातकों में से एक है। अतः देश अपनी जरूरतों के लिए इनका आयात नहीं करता, बल्कि इन्हें वैश्विक बाजार में बेचकर विदेशी मुद्रा अर्जित करता है।

53. (A) 2, 1, 4, 3
भारत में 1950 और 1960 के दशक में खाद्यान्न की गंभीर कमी थी, जिसके कारण बड़े पैमाने पर आयात किया गया। हरित क्रांति की सफलता के बाद 1970 के दशक में खाद्यान्न आयात में भारी कमी आई। इसके बाद 1973 में वैश्विक ऊर्जा संकट आया जिससे पेट्रोलियम की कीमतें बढ़ गईं। इसके फलस्वरूप भारत के आयात बिल में पेट्रोलियम का हिस्सा बहुत प्रमुखता से बढ़ गया, जो आज भी कायम है।

54. (B) इसके व्यापार की मात्रा, संघटन और दिशा में आमूल परिवर्तन हुए हैं।
पिछले कुछ दशकों में भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के स्वरुप में क्रांतिकारी बदलाव आए हैं। व्यापार की कुल मात्रा में कई गुना वृद्धि हुई है और निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में अब प्राथमिक उत्पादों के स्थान पर विनिर्मित वस्तुओं का बोलबाला है। साथ

118. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
मार्मागाओ पत्तन गोवा में स्थित एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक बंदरगाह है। वर्ष 1961 में इसके पुनर्प्रतिरुपण के बाद इसकी सार्थकता और व्यापारिक क्षमता में भारी वृद्धि हुई। इस विकास का मुख्य उद्देश्य जापान को बड़े पैमाने पर लौह-अयस्क निर्यात करने की सुविधा प्रदान करना था। अपनी रणनीतिक स्थिति और आधुनिक सुविधाओं के कारण आज यह भारत के प्रमुख खनिज निर्यातक पत्तनों में से एक माना जाता है, जो देश की अर्थव्यवस्था में योगदान देता है।

119. (D) 11.9%
भारत ऐतिहासिक रूप से एक कृषि प्रधान देश रहा है, लेकिन हाल के वर्षों में इसके निर्यात संघटन में अन्य क्षेत्रों का महत्व बढ़ा है। वर्ष 2021-22 के आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, भारत के कुल निर्यात मूल्य में कृषि और उससे संबंधित उत्पादों (समवर्गी उत्पादों) का हिस्सा लगभग 11.9 प्रतिशत था। यद्यपि इस क्षेत्र का प्रतिशत हिस्सा विनिर्माण की तुलना में कम है, फिर भी यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था और विदेशी मुद्रा अर्जन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

120. (A) मुंबई और जवाहरलाल नेहरु; चेन्नई और एन्नोर
भारत में प्रमुख पत्तनों पर बढ़ते नौभार के दबाव को कम करने के लिए अनुषंगी पत्तनों का विकास किया गया है। मुंबई पत्तन के भार को साझा करने के लिए आधुनिक जवाहरलाल नेहरु पत्तन (न्हावा शेवा) को विकसित किया गया। इसी प्रकार, चेन्नई पत्तन की संकुलता और दबाव को कम करने के लिए उसके उत्तर में एन्नोर पत्तन का निर्माण किया गया। यह रणनीतिक विकास देश के समुद्री व्यापार को अधिक कुशल और सुगम बनाने में सहायक रहा है।

121. (B) केवल 1, 2 और 3
कोलकाता पत्तन हुगली नदी में गाद जमा होने की गंभीर समस्या का सामना कर रहा है, जो जहाजों की आवाजाही को प्रभावित करती है। इस दबाव को कम करने के लिए कोलकाता से 105 कि.मी. नीचे हल्दिया पत्तन बनाया गया। हल्दिया केवल जूट उत्पादों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारी माल जैसे पेट्रोलियम, कोयला और लौह-अयस्क का भी निपटान करता है। यह पत्तन बड़े जहाजों के लिए कोलकाता की तुलना में अधिक उपयुक्त है।

122. (A) 77,19,796 करोड़ रुपए
भारत के वैदेशिक व्यापार में पिछले कुछ दशकों में अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 2021-22 के दौरान भारत के कुल विदेशी व्यापार (निर्यात और आयात दोनों मिलाकर) का मूल्य 77,19,796 करोड़ रुपये के विशाल स्तर तक पहुँच गया। यह आंकड़ा 1950 के दशक के मात्र 1,214 करोड़ रुपये की तुलना में देश की तीव्र आर्थिक प्रगति, औद्योगिक विस्तार और वैश्विक बाजार में भारत की बढ़ती हुई व्यापारिक भागीदारी का एक अत्यंत प्रभावशाली प्रमाण है।

123. (D) पेट्रोलियम एवं उत्पाद
भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पेट्रोलियम और इसके उत्पादों का आयात सबसे अनिवार्य मद बनी हुई है। वर्ष 2021-22 के दौरान, मूल्य के आधार पर यह भारत की सबसे बड़ी आयात वस्तु थी, जिसका कुल आयात में हिस्सा लगभग 31.6 प्रतिशत था। कच्चे तेल के साथ-साथ भारत पेट्रोलियम उत्पादों का आयात और निर्यात दोनों करता है, लेकिन घरेलू मांग को पूरा करने के लिए इसके भारी आयात पर देश की निर्भरता बनी हुई है।

124. (B) मार्मागाओ
मार्मागाओ पत्तन गोवा राज्य में जुआरी नदमुख (Estuary) के मुहाने पर स्थित एक प्रमुख प्राकृतिक बंदरगाह है। एक नदमुख वह स्थान होता है जहाँ नदी का ताजा पानी समुद्र के खारे पानी से मिलता है। इसकी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति इसे एक सुरक्षित पोताश्रय प्रदान करती है। यह पत्तन मुख्य रूप से लौह-अयस्क के निर्यात के लिए जाना जाता है और रेल मार्ग के माध्यम से अपने समृद्ध खनिज पृष्ठप्रदेश से बहुत अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

125. (C) काम के बढ़ने और अंतरराष्ट्रीय स्तर के समकक्ष बनाने की ज़रुरत हेतु
भारत में समुद्री व्यापार की मात्रा में निरंतर हो रही वृद्धि और वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना करने के लिए पत्तनों के आधुनिकीकरण की आवश्यकता महसूस की गई। पत्तनों की दक्षता बढ़ाने, आधुनिक तकनीक अपनाने और उन्हें अंतरराष्ट्रीय मानकों के समकक्ष बनाने के लिए निजी उद्यमियों को आमंत्रित किया गया। सरकारी और निजी भागीदारी (PPP) के माध्यम से पत्तनों पर नौभार निपटान की गति को तेज करना और परिचालन लागत को कम करना इसका मुख्य उद्देश्य है।

126. (A) 1, 2, 3, 4
भारत के व्यापारिक इतिहास में सबसे पहले 1950-60 के दशक में खाद्यान्न आयात की प्रमुखता थी। इसके बाद 1970 के दशक में आई हरित क्रांति ने भारत को खाद्यान्न में आत्मनिर्भर बनाया। फिर 1973 के ऊर्जा संकट के बाद पेट्रोलियम आयात एक प्रमुख मद के रूप में उभरा। अंत में, 1991 के बाद अपनाई गई उदारीकरण की नीतियों ने भारत के कुल विदेशी व्यापार में जबरदस्त और तीव्र वृद्धि सुनिश्चित की, जो आज भी जारी है।

127. (A) व्यापार घाटा
भारत के विदेशी व्यापार की एक स्थाई विशेषता व्यापार घाटा या नकारात्मक व्यापार संतुलन रही है। इसका अर्थ यह है कि भारत का कुल आयात बिल उसके द्वारा किए जाने वाले निर्यात से प्राप्त आय की तुलना में हमेशा अधिक होता है। यह घाटा मुख्य रूप से पेट्रोलियम उत्पादों, सोने और उच्च तकनीक वाली मशीनों के भारी आयात के कारण होता है। हालांकि भारत निरंतर अपने निर्यात को बढ़ाकर इस घाटे को कम करने के प्रयास कर रहा है।

65. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
मुंबई भारत का सबसे बड़ा पत्तन है जो व्यापक व्यापारिक सेवाएं प्रदान करता है। दीनदयाल पत्तन विशेष रूप से पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी भारत की जरूरतों को पूरा करता है। जवाहरलाल नेहरु पत्तन को न्हावा शेवा के नाम से जाना जाता है और यह देश का विशालतम आधुनिक कंटेनर पत्तन है। मार्मागाओ पत्तन गोवा में जुआरी नदमुख पर स्थित है और अपने खनिज निर्यात कार्यों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध है।

66. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
कोलकाता पत्तन को ब्रिटिश शासन के दौरान भारत की राजधानी होने का प्रारंभिक भौगोलिक और राजनीतिक लाभ प्राप्त था, जिससे इसका अत्यधिक विकास हुआ। बाद में, व्यापार के अन्य आधुनिक पत्तनों की ओर मुड़ने और हुगली नदी में गाद की समस्या के कारण इसकी सार्थकता में कुछ कमी आई है। यद्यपि ये दोनों कथन सही हैं, पर राजधानी होने का लाभ और व्यापार का कम होना अलग-अलग ऐतिहासिक घटनाएँ हैं।

67. (C) चेन्नई के उत्तर में 25 कि.मी. दूर
एन्नोर पत्तन तमिलनाडु में चेन्नई के उत्तर में लगभग 25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसे विशेष रूप से चेन्नई पत्तन पर बढ़ते हुए अत्यधिक नौभार के दबाव को कम करने और कोयला व अन्य भारी वस्तुओं के निपटान के लिए विकसित किया गया था। यह भारत का एक प्रमुख कॉर्पोरेट पत्तन है जो अपनी आधुनिक अवसंरचना और कुशल प्रबंधन के माध्यम से दक्षिणी भारत के समुद्री व्यापार में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

68. (D) केंद्र सरकार
भारत में पत्तनों का प्रबंधन उनके महत्व के आधार पर बंटा हुआ है। देश के 12 प्रमुख पत्तनों (Major Ports) के लिए सभी महत्वपूर्ण नीतियां बनाने, उनका विकास करने और नियामक कार्यों को संपन्न करने की पूरी जिम्मेदारी भारत की केंद्र सरकार की होती है। ये पत्तन राष्ट्र के विदेशी व्यापार के मुख्य स्तंभ हैं। इसके विपरीत, छोटे और मझोले पत्तनों का संचालन संबंधित राज्यों की सरकारों द्वारा किया जाता है।

69. (C) केवल 1, 2, 3 और 5
भारत में समुद्री व्यापार का इतिहास अत्यंत प्राचीन है, लेकिन यूरोपीय व्यापारियों के आगमन के बाद आधुनिक पत्तनों का महत्व काफी बढ़ गया। अंग्रेजों ने इन पत्तनों का उपयोग भारतीय संसाधनों को अपने देश ले जाने के लिए किया। रेलवे के विस्तार ने इन पत्तनों को आंतरिक बाजारों से जोड़ दिया। स्वतंत्रता के बाद पत्तनों का विकास रुका नहीं, बल्कि नई ऊर्जा और आधुनिक तकनीक के साथ और अधिक तीव्र हो गया है।

70. (B) 31.6%
भारत की बढ़ती ऊर्जा जरूरतों के कारण इसके आयात बिल में ईंधन का बहुत बड़ा हिस्सा है। वर्ष 2021-22 के आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, भारत के कुल आयात में कोयला, पेट्रोलियम (POL) और अन्य ईंधन उत्पादों की हिस्सेदारी लगभग 31.6 प्रतिशत थी। यह उच्च प्रतिशत देश की औद्योगिक प्रगति, परिवहन क्षेत्र के विस्तार और घरेलू उत्पादन की तुलना में ऊर्जा की भारी मांग और अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतों में उतार-चढ़ाव को दर्शाता है।

71. (D) चेन्नई
चेन्नई पत्तन भारत के पूर्वी तट पर स्थित सबसे पुराने कृत्रिम पत्तनों में से एक है। इसका निर्माण वर्ष 1859 में किया गया था और यह तब से निरंतर दक्षिण भारत के समुद्री व्यापार का मुख्य केंद्र बना हुआ है। चूंकि यहाँ का तट प्राकृतिक रूप से उथला है, इसलिए इसे कृत्रिम रूप से विकसित किया गया था। यह पत्तन तमिलनाडु और पुदुच्चेरी के पृष्ठप्रदेश की व्यापारिक आवश्यकताओं को कुशलतापूर्वक पूरा करता है।

72. (A) वृद्धि
भारत के निर्यात संघटन में हाल के वर्षों में एक सकारात्मक बदलाव आया है। फूलों की खेती (Floriculture), ताजे फल, समुद्री उत्पादों और चीनी जैसे कृषि आधारित उत्पादों के निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। यह वृद्धि बेहतर कोल्ड स्टोरेज सुविधाओं, आधुनिक प्रसंस्करण तकनीकों और वैश्विक बाजार में भारतीय उत्पादों की बढ़ती मांग के कारण संभव हुई है। यह प्रवृत्ति भारतीय कृषि क्षेत्र के बढ़ते हुए व्यवसायीकरण को भी स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

73. (C) कोलकाता
कोलकाता पत्तन हुगली नदी पर स्थित एक बहुत ही महत्वपूर्ण नदीय बंदरगाह है। इसकी भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि यह भारत के एक बहुत बड़े और समृद्ध पृष्ठप्रदेश की सेवा करता है, जिसमें पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड जैसे राज्य शामिल हैं। यह पत्तन इन राज्यों के औद्योगिक उत्पादों और खनिजों के निर्यात और आवश्यक वस्तुओं के आयात के लिए सदियों से मुख्य द्वार बना हुआ है।

74. (A) पूँजीगत वस्तुएँ
भारत के निर्यात संघटन में विनिर्मित वस्तुएं, कृषि और उससे संबंधित उत्पाद, तथा अयस्क व खनिज पारंपरिक रूप से मुख्य मदें रही हैं। पूँजीगत वस्तुएं (जैसे भारी मशीनरी) मुख्य रूप से भारत के आयात की प्रमुख मदों में शामिल रही हैं, न कि निर्यात की। हालांकि भारत ने अब कुछ विनिर्मित मशीनों का निर्यात शुरु किया है, लेकिन बड़े पैमाने पर यह अभी भी आयात का ही हिस्सा बनी हुई हैं।

75. (A) 1, 2, 4, 3
भारत की स्वतंत्रता के बाद सबसे पहले कराची पत्तन की कमी पूरी करने हेतु कांडला पत्तन विकसित किया गया। इसके बाद कोलकाता के दबाव को कम करने हेतु हल्दिया का निर्माण हुआ। फिर मुंबई के आधुनिक सहायक के रूप में जवाहरलाल नेहरु पत्तन (न्हावा शेवा) का विकास हुआ। सबसे अंत में चेन्नई के भार को कम करने हेतु आधुनिक एन्नोर पत्तन को विकसित किया गया। यह क्रम पत्तन विकास के चरणों को दर्शाता है।

ही, भारत के व्यापारिक साझेदारों की दिशा भी बदली है और अब एशिया और अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं के साथ व्यापार में काफी अधिक वृद्धि दर्ज की गई है।

55. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
वर्ष 2021-22 के दौरान भारत के आयात का भौगोलिक वितरण काफी विविधतापूर्ण रहा। 'एशिया एवं आसियान' क्षेत्र से आयात मूल्य सर्वाधिक 29,18,577 करोड़ रुपये था। यूरोप से आयात लगभग 6,40,577 करोड़ रुपये और उत्तरी अमेरिका से 3,78,041 करोड़ रुपये रहा। अफ्रीका से आयात का मूल्य लगभग 3,68,156 करोड़ रुपये दर्ज किया गया। यह आंकड़े विभिन्न वैश्विक क्षेत्रों के साथ भारत के गहरे व्यापारिक और आर्थिक संबंधों को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

56. (A) असेवित/अल्पसेवित हवाई अड्डों को चालू करने से
'उड़ान' (उड़े देश का आम नागरिक) भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण योजना है जिसका मुख्य उद्देश्य क्षेत्रीय हवाई संपर्क को बढ़ावा देना है। इस योजना के तहत देश के उन छोटे शहरों और कस्बों में हवाई सेवाएँ शुरु की गई हैं जहाँ पहले हवाई अड्डे असेवित या अल्पसेवित थे। यह योजना आम नागरिकों के लिए हवाई यात्रा को सस्ता और सुलभ बनाकर देश के आर्थिक विकास में योगदान देती है।

57. (C) न्यू मंगलौर
न्यू मंगलौर पत्तन कर्नाटक राज्य में स्थित है और इसे विशेष रुप से कुद्रेमुख की प्रसिद्ध खानों से प्राप्त होने वाले लौह-अयस्क और लौह-सांद्र के निर्यात के लिए विकसित किया गया है। यह पत्तन अपनी आधुनिक सुविधाओं के कारण भारी खनिजों के कुशलतापूर्वक निपटान में सक्षम है। इसके अतिरिक्त, यह उर्वरकों, पेट्रोलियम उत्पादों और खाद्य तेलों के व्यापार में भी इस क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

58. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में महासागरीय मार्गों की तुलना में वायु परिवहन की भागीदारी काफी कम रहती है। इसका मुख्य कारण यह है कि वायु परिवहन अत्यंत महंगा होता है और कोयला, लौह-अयस्क या अनाज जैसी भारी और विशाल वस्तुओं के लंबी दूरी तक परिवहन के लिए आर्थिक रूप से अनुपयुक्त है। वायु मार्ग केवल उच्च मूल्य वाली या तत्काल आवश्यकता वाली वस्तुओं के लिए ही व्यवहार्य और लाभदायक विकल्प होता है।

59. (D) कृषि-विनिर्माण में कमी तथा पेट्रोलियम उत्पादों की हिस्सेदारी में वृद्धि हुई।
2015-16 से 2021-22 की अवधि के दौरान भारत के निर्यात संघटन में कुछ विशिष्ट रुझान देखे गए हैं। इस दौरान कृषि और विनिर्मित वस्तुओं के निर्यात की प्रतिशत हिस्सेदारी में तुलनात्मक रूप से कुछ कमी आई है, जबकि पेट्रोलियम और अपरिष्कृत उत्पादों के निर्यात की हिस्सेदारी में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। यह बदलाव वैश्विक तेल बाजार की बदलती कीमतों और भारत की रिफाइनिंग क्षमताओं के विस्तार को प्रत्यक्ष रूप से प्रदर्शित करता है।

60. (B) इसका पुनर्प्रतिरुपण जापान को लौह-अयस्क निर्यात करने हेतु किया गया।
मार्मागाओ पत्तन गोवा के ज़ुआरी नदमुख पर स्थित एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्राकृतिक बंदरगाह है। वर्ष 1961 में इसके महत्व में भारी वृद्धि तब हुई जब इसका विशेष रूप से पुनर्प्रतिरुपण किया गया। इस विकास का मुख्य उद्देश्य जापान को भारी मात्रा में लौह-अयस्क का कुशलतापूर्वक निर्यात सुनिश्चित करना था। आज भी यह पत्तन भारत के खनिज निर्यात व्यापार में अपनी एक विशिष्ट और महत्वपूर्ण पहचान बनाए हुए है।

61. (B) केवल 2 और 4
पारादीप पत्तन ओडिशा में कटक से लगभग 100 कि.मी. दूर महानदी डेल्टा पर स्थित है। इसका पोताश्रय भारत के सबसे गहरे पोताश्रयों में से एक है, जो विशाल और भारी पोतों के सुरक्षित निपटान के लिए अत्यंत अनुकूल है। इसका विकास मुख्य रुप से बड़े पैमाने पर लौह-अयस्क निर्यात हेतु किया गया है। इसका पृष्ठप्रदेश केवल ओडिशा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें झारखंड और छत्तीसगढ़ भी शामिल हैं।

62. (D) नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, पाकिस्तान
भारत अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण कई पड़ोसी देशों के साथ स्थल सीमाओं के माध्यम से जुड़ा हुआ है। भारत का सड़क मार्ग द्वारा विदेशी व्यापार मुख्य रुप से नेपाल, भूटान, बांग्लादेश और पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों के साथ संचालित होता है। इन देशों के साथ सीमावर्ती व्यापारिक चौकियों के माध्यम से दैनिक उपभोग की वस्तुओं, कृषि उत्पादों और औद्योगिक कच्चे माल का नियमित रुप से आदान-प्रदान किया जाता है।

63. (A) दीनदयाल (कांडला) पत्तन के दबाव को घटाने के लिए
गुजरात में वाडीनार में एक आधुनिक अपतटीय टर्मिनल विकसित किया गया है। इस टर्मिनल का प्राथमिक उद्देश्य दीनदयाल पत्तन, जिसे कांडला के नाम से भी जाना जाता है, पर बढ़ते हुए नौभार और व्यापारिक दबाव को प्रभावी ढंग से कम करना है। यह टर्मिनल बड़े तेल टैंकरों और पेट्रोलियम उत्पादों के निपटान के लिए विशेष रुप से डिजाइन किया गया है, जिससे इस क्षेत्र की परिचालन दक्षता में काफी सुधार हुआ है।

64. (B) हल्दिया
हल्दिया पत्तन पश्चिम बंगाल में हुगली नदी के तट पर स्थित एक प्रमुख बंदरगाह है। यह कोलकाता पत्तन से लगभग 105 कि.मी. नीचे की ओर (अनुप्रवाह) अवस्थित है और इसे मुख्य रूप से कोलकाता के भार को कम करने के लिए विकसित किया गया था। हुगली नदी के गहरे हिस्से में होने के कारण यहाँ बड़े जहाज आसानी से आ सकते हैं, जिससे यह भारी औद्योगिक नौभार के लिए अत्यंत उपयुक्त बन जाता है।

है, जिससे इसकी वैश्विक मांग घरेलू उत्पादन से अधिक बनी रहती है।

87. (D) चीन तथा अन्य पूर्व एशियाई देश
वैश्विक व्यापार के वर्तमान परिदृश्य में, भारत को विनिर्माण के क्षेत्र में चीन और अन्य पूर्व एशियाई देशों (जैसे वियतनाम, थाईलैंड) से अत्यंत कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। ये देश अपनी कम उत्पादन लागत और उन्नत विनिर्माण तकनीकों के कारण अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय उत्पादों को बड़ी चुनौती देते हैं। इस प्रतिस्पर्धा का सामना करने के लिए भारत अब अपनी उत्पादन दक्षता और गुणवत्ता मानकों को सुधारने पर निरंतर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

88. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
1947 में भारत के विभाजन ने देश की स्थापित पत्तन अवसंरचना को गहरा धक्का पहुँचाया। पश्चिमी तट पर कराची जैसा महत्वपूर्ण पत्तन पाकिस्तान के पास चला गया, जबकि पूर्वी तट पर चिटगाँव पत्तन तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान का हिस्सा बन गया। इन दोनों प्रमुख द्वारों के छिन जाने से भारत के विदेशी व्यापारिक मार्गों में बड़ी बाधा आई, जिसकी पूर्ति के लिए बाद में कांडला और हल्दिया जैसे नए पत्तन विकसित करने पड़े।

89. (C) मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश व राजस्थान के कुछ भाग
मुंबई पत्तन भारत का सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र है। इसकी अवस्थिति और बेहतरीन कनेक्टिविटी के कारण इसका पृष्ठप्रदेश अत्यंत विशाल है। यह न केवल पूरे महाराष्ट्र की सेवा करता है, बल्कि गुजरात, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग और राजस्थान के कई जिलों की व्यापारिक आवश्यकताओं को भी पूरा करता है। इन क्षेत्रों से औद्योगिक और कृषि उत्पादों का निर्यात और आवश्यक मशीनों का आयात इसी पत्तन के माध्यम से होता है।

90. (A) यूरोपीय व्यापारियों के आगमन और उपनिवेशीकरण के बाद
यद्यपि भारत में प्राचीन काल से ही पत्तनों का उपयोग होता रहा है, लेकिन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रमुख प्रवेश द्वार के रूप में इनका उदय यूरोपीय व्यापारियों के आगमन और उसके बाद हुए उपनिवेशीकरण के दौरान हुआ। अंग्रेजों ने भारतीय संसाधनों के दोहन और कच्चे माल को यूरोप ले जाने के लिए इन पत्तनों का व्यवस्थित विकास किया। इसी दौर में मुंबई, चेन्नई और कोलकाता जैसे आधुनिक महानगरीय पत्तन नगरों की मजबूत नींव रखी गई थी।

91. (B) केवल 2 और 4
भारत 1950 के दशक में खाद्यान्न में आत्मनिर्भर नहीं था और उसे भारी आयात करना पड़ता था। साथ ही, भारत का व्यापार संतुलन ऐतिहासिक रूप से हमेशा घाटे में रहा है क्योंकि आयात का मूल्य निर्यात से अधिक रहता है। विनिर्माण वस्तुओं और रत्नों की निर्यात में बड़ी हिस्सेदारी है। पूँजीगत वस्तुओं के आयात में हाल के वर्षों में कुछ गिरावट दर्ज की गई है, जो घरेलू उत्पादन में वृद्धि की ओर संकेत करती है।

92. (B) न्यू मंगलौर
न्यू मंगलौर पत्तन कर्नाटक राज्य के तट पर स्थित है। इस पत्तन का मुख्य पृष्ठप्रदेश कर्नाटक राज्य ही है, जहाँ से यह कुद्रेमुख की खानों से आने वाले लौह-अयस्क और लौह-सांद्र के निर्यात का प्रबंधन करता है। इसके अलावा, कर्नाटक में उत्पादित होने वाली कॉफी, चाय और मसालों का बड़ा हिस्सा भी इसी पत्तन के माध्यम से वैश्विक बाजारों तक पहुँचता है, जिससे यह राज्य की अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाता है।

93. (C) भारी और स्थूल वस्तुएँ
समुद्री परिवहन अंतरराष्ट्रीय व्यापार का सबसे पुराना और सस्ता माध्यम है। यह विशेष रूप से भारी और स्थूल वस्तुओं जैसे कोयला, लौह-अयस्क, कच्चे तेल और भारी मशीनों के लंबी दूरी तक परिवहन के लिए सबसे अधिक उपयुक्त माना जाता है। चूंकि समुद्री जहाजों की माल वहन क्षमता बहुत अधिक होती है और लागत कम आती है, इसलिए वैश्विक व्यापार का लगभग 95 प्रतिशत हिस्सा आज भी समुद्री मार्गों द्वारा ही संचालित होता है।

94. (D) न्हावा शेवा
जवाहरलाल नेहरू पत्तन को इसके स्थानीय स्थान के नाम पर 'न्हावा शेवा' पत्तन के रूप में भी व्यापक रूप से जाना जाता है। यह मुंबई के निकट स्थित है और इसे विशेष रूप से मुंबई पत्तन के भार को कम करने के लिए एक अत्यधिक आधुनिक और विशाल कंटेनर टर्मिनल के रूप में विकसित किया गया है। वर्तमान में यह भारत का सबसे बड़ा और सबसे तकनीकी रूप से उन्नत कंटेनर पत्तन माना जाता है।

95. (A) शिमला
भारत में अहमदाबाद, गुवाहाटी और पटना जैसे शहरों में अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे स्थित हैं जो पड़ोसी देशों और वैश्विक केंद्रों से जुड़े हुए हैं। इसके विपरीत, शिमला हवाई अड्डा वर्तमान में केवल घरेलू उड़ानें ही संचालित करता है और इसे अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे की श्रेणी में नहीं रखा गया है। भारत के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए बड़े शहरों में स्थित अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

96. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
वर्ष 2021-22 के आंकड़ों के अनुसार, भारत के कुल निर्यात में विनिर्मित वस्तुओं की हिस्सेदारी सर्वाधिक 67.8 प्रतिशत रही। पेट्रोलियम और अपरिष्कृत उत्पादों का हिस्सा लगभग 16.4 प्रतिशत दर्ज किया गया। कृषि और उससे संबंधित उत्पादों का योगदान कुल निर्यात मूल्य का 11.9 प्रतिशत था। अयस्क और खनिजों की हिस्सेदारी सबसे कम यानी लगभग 2.0 प्रतिशत रही। यह आंकड़े भारत की बदलती हुई मजबूत औद्योगिक निर्यात क्षमता को दर्शाते हैं।

97. (B) पृष्ठप्रदेशों के संसाधनों के अवशोषण केंद्र के रूप में
औपनिवेशिक शासन के दौरान अंग्रेजों ने भारतीय पत्तनों का विकास मुख्य रूप से अपने साम्राज्यवादी हितों को पूरा करने के लिए किया था। उन्होंने इन बंदरगाहों को भारत के आंतरिक पृष्ठप्रदेशों से कच्चा माल और बहुमूल्य संसाधन इकट्ठा करने और उन्हें ब्रिटेन भेजने के लिए 'अवशोषण केंद्रों' के रूप में इस्तेमाल किया। रेलवे के विकास का उद्देश्य भी इन संसाधनों को पत्तनों तक जल्दी और आसानी से पहुँचाना था ताकि ब्रिटिश उद्योगों को लाभ मिले।

98. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
हल्दिया पत्तन कोलकाता के सहायक के रूप में पेट्रोलियम, कोयला और लौह-अयस्क जैसे भारी माल का निपटान करता है। इसका निर्माण निश्चित रूप से कोलकाता पत्तन की संकुलता को कम करने के लिए किया गया था। यद्यपि ये दोनों तथ्य पत्तन के महत्व को दर्शाते हैं, लेकिन केवल संकुलता कम करना ही इसके द्वारा संभाले जाने वाले विशिष्ट माल की प्रकृति का एकमात्र कारण नहीं है, बल्कि इसकी भौगोलिक अवस्थिति भी इसमें सहायक है।

99. (A) केवल 1 और 3
भारत का अधिकांश विदेशी व्यापार समुद्री और वायु मार्गों द्वारा ही होता है। पश्चिमी तट पर पूर्वी तट की तुलना में अधिक प्राकृतिक बंदरगाह और पत्तन उपलब्ध हैं। भारत की तटरेखा छोटी नहीं बल्कि 7,517 कि.मी. लंबी है। जल परिवहन वास्तव में सबसे सस्ता परिवहन का साधन है, न कि सबसे महंगा। भारत का सड़क मार्ग से भी पड़ोसी देशों के साथ व्यापार होता है, हालांकि उसकी मात्रा समुद्री व्यापार से कम है।

100. (D) लगातार नकारात्मक (घाटा)
भारत का विदेशी व्यापार संतुलन पिछले कई दशकों से, विशेष रूप से 2004-05 से 2021-22 के दौरान, लगातार नकारात्मक या घाटे की स्थिति में बना रहा है। इसका अर्थ यह है कि भारत द्वारा विदेशों से आयात की जाने वाली वस्तुओं का कुल मूल्य हमेशा उसके द्वारा किए गए निर्यात के मूल्य से अधिक रहता है। यह घाटा मुख्य रूप से भारी मात्रा में पेट्रोलियम, उर्वरकों और पूँजीगत वस्तुओं के आयात के कारण होता है।

101. (C) केरल, दक्षिणी कर्नाटक तथा दक्षिण-पश्चिमी तमिलनाडु के क्षेत्र
कोच्चि पत्तन केरल राज्य में बेंवानद कायाल के मुहाने पर स्थित एक प्राकृतिक बंदरगाह है। इसकी भौगोलिक स्थिति इसे एक विस्तृत और समृद्ध पृष्ठप्रदेश प्रदान करती है। इस पत्तन के माध्यम से न केवल पूरे केरल राज्य का व्यापार होता है, बल्कि यह दक्षिणी कर्नाटक और तमिलनाडु के दक्षिण-पश्चिमी हिस्सों की आवश्यकताओं को भी प्रभावी ढंग से पूरा करता है। यह क्षेत्र विशेष रूप से चाय, कॉफी और मसालों के निर्यात के लिए प्रसिद्ध है।

102. (B) ऊर्जा संकट
वर्ष 1973 में विश्व भर में एक बड़ा ऊर्जा संकट उत्पन्न हुआ था, जिसका सीधा प्रभाव पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों पर पड़ा। इस संकट के कारण अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल और अन्य ईंधन उत्पादों के मूल्यों में भारी उछाल आया। चूंकि भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए बड़े पैमाने पर आयात पर निर्भर था, इस उछाल ने भारत के आयात बिल को काफी बढ़ा दिया और देश की अर्थव्यवस्था पर गहरा व्यापारिक प्रभाव डाला।

103. (D) मार्मागाओ
मार्मागाओ पत्तन गोवा राज्य में जुआरी नदमुख के मुहाने पर स्थित एक उत्कृष्ट प्राकृतिक बंदरगाह है। इसके विपरीत, चेन्नई और तूतीकोरिन कृत्रिम रूप से विकसित किए गए पत्तन हैं। हल्दिया एक नदीय पत्तन है। मार्मागाओ की प्राकृतिक बनावट इसे जहाजों के सुरक्षित आश्रय के लिए अत्यंत उपयुक्त बनाती है। यह पत्तन भारत से विशेष रूप से जापान को किए जाने वाले लौह-अयस्क के निर्यात के लिए विश्व भर में विख्यात और महत्वपूर्ण है।

104. (A) पूँजीगत वस्तुएँ
भारत के आयात संघटन में पिछले कुछ वर्षों में पूँजीगत वस्तुओं (जैसे भारी मशीनरी और उपकरण) की प्रतिशत हिस्सेदारी में गिरावट दर्ज की गई है। यह प्रवृत्ति भारत में बढ़ती औद्योगिक आत्मनिर्भरता और घरेलू विनिर्माण क्षमताओं में सुधार को दर्शाती है। इसके विपरीत, ईंधन और उर्वरकों जैसे उत्पादों की मांग में वृद्धि हुई है, जिसके कारण आयात बिल में उनका प्रतिशत हिस्सा बढ़ गया है, जो बदलती आर्थिक प्राथमिकताओं को प्रदर्शित करता है।

105. (A) 1, 4, 3, 2
ऐतिहासिक क्रम के अनुसार, 1950-51 में भारत के व्यापार का मूल्य 1,214 करोड़ रुपये था। इसके बाद 1961 में मार्मागाओ पत्तन का पुनर्प्रतिरूपण हुआ। फिर 2016 तक भारतीय पत्तनों की नौभार क्षमता 837 मिलियन टन को पार कर गई। सबसे अंत में 2021-22 में भारत के वैदेशिक व्यापार का कुल मूल्य बढ़कर 77,19,796 करोड़ रुपये के विशाल स्तर तक पहुँच गया। यह क्रम भारत की व्यापारिक प्रगति की स्पष्ट यात्रा को दर्शाता है।

106. (A) P-3, Q-2, R-4, S-1
कोच्चि पत्तन को अपने ऐतिहासिक और व्यापारिक महत्व के कारण 'अरब सागर की रानी' कहा जाता है। चेन्नई पत्तन भारत के सबसे पुराने कृत्रिम पत्तनों में से एक है। पारादीप पत्तन का पोताश्रय बहुत गहरा है, जो भारी मालवाहक जहाजों के लिए अनुकूल है। मुंबई पत्तन भारत का सबसे बड़ा और मुख्य बंदरगाह है, जो देश के विदेशी व्यापार के एक बहुत बड़े हिस्से का कुशलतापूर्वक प्रबंधन और निपटान करता है।

107. (D) पोताश्रय पोतों के ठहरने का स्थान है, जबकि पत्तन व्यापार का केंद्र है।
पत्तन और पोताश्रय (Harbour) के बीच एक महत्वपूर्ण तकनीकी अंतर होता है। पोताश्रय वास्तव में एक ऐसा जलीय

क्षेत्र होता है जो प्राकृतिक या कृत्रिम रूप से लहरों से सुरक्षित होता है और जहाँ जहाज केवल लंगर डालते हैं या ठहरते हैं। इसके विपरीत, पत्तन एक व्यापारिक केंद्र होता है जहाँ जहाजों से माल को चढ़ाने, उतारने और उनके भंडारण की सभी आवश्यक आधुनिक सुविधाएं और व्यवस्थाएं उपलब्ध होती हैं।

108. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
न्यू मंगलौर पत्तन कर्नाटक राज्य के तट पर स्थित है और यह उर्वरकों, पेट्रोलियम उत्पादों और खाद्य तेलों जैसे विविध नौभार का कुशलतापूर्वक निपटान करता है। इसका प्रमुख पृष्ठप्रदेश कर्नाटक राज्य है, जहाँ इन वस्तुओं की अत्यधिक मांग और आपूर्ति का केंद्र स्थित है। भौगोलिक निकटता और औद्योगिक आवश्यकताओं के कारण यह पत्तन इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावी भूमिका निभाता है।

109. (A) केवल 1 और 3
भारत का अधिकांश अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सड़क मार्ग के बजाय समुद्री और वायु मार्गों द्वारा होता है। भारत में 12 प्रमुख पत्तन हैं जिनके लिए नीतियां केंद्र सरकार बनाती है, जबकि लगभग 200 छोटे और मझोले पत्तनों के लिए नीतियां संबंधित राज्य सरकारों द्वारा बनाई जाती हैं। प्रमुख पत्तन देश के कुल समुद्री यातायात के बहुत बड़े हिस्से का प्रबंधन करते हैं। ये आंकड़े भारत की मजबूत पत्तन व्यवस्था को रेखांकित करते हैं।

110. (D) आंध्र प्रदेश और तेलंगाना
विशाखापट्नम पत्तन आंध्र प्रदेश के तट पर स्थित एक सुरक्षित भू-आबद्ध बंदरगाह है। इसका पृष्ठप्रदेश मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्यों तक विस्तृत है। यह इन राज्यों के औद्योगिक उत्पादों, जैसे लौह-अयस्क और पेट्रोलियम, के आयात-निर्यात के लिए मुख्य द्वार के रूप में कार्य करता है। यह पत्तन छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्सों की आवश्यकताओं को भी पूरा करता है और क्षेत्र के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

111. (A) घरेलू उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि
भारत में पेट्रोलियम आयात में वृद्धि के कई कारण हैं, जिनमें बढ़ता औद्योगीकरण, लोगों के जीवन स्तर में सुधार और अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतों में होने वाले उतार-चढ़ाव शामिल हैं। पेट्रोलियम आयात बढ़ने का कारण घरेलू उत्पादन में वृद्धि नहीं हो सकती; बल्कि घरेलू उत्पादन मांग की तुलना में कम होना ही इसके भारी आयात का मुख्य कारण है। भारत अपनी तेल की जरूरतों का बड़ा हिस्सा विदेशों से ही पूरा करता है।

112. (B) उर्वरक एवं पेट्रोलियम
स्वतंत्रता के शुरुआती वर्षों में भारत को बड़े पैमाने पर खाद्यान्न का आयात करना पड़ता था। 1970 के दशक में हरित क्रांति की सफलता के बाद भारत खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर हो गया और आयात की मदों में खाद्यान्न का स्थान उर्वरक और पेट्रोलियम जैसे उत्पादों ने ले लिया। यह बदलाव भारत की बदलती हुई आर्थिक प्राथमिकताओं और औद्योगिक ऊर्जा की बढ़ती हुई आवश्यकताओं को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करता है।

113. (A) केवल 1, 2 और 3
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार सभी राष्ट्रों के लिए लाभदायक है क्योंकि कोई भी देश सभी संसाधनों में आत्मनिर्भर नहीं है। विश्व के कुल व्यापार में भारत की हिस्सेदारी वर्तमान में लगभग एक प्रतिशत है। भारत का वैश्विक अर्थव्यवस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है और यह दुनिया की सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। यद्यपि व्यापार संतुलन घाटे में रहता है, पर यह हमेशा आर्थिक कमजोरी का सूचक नहीं होता है।

114. (A) ओडिशा, झारखंड और छत्तीसगढ़
पारादीप पत्तन ओडिशा में महानदी डेल्टा पर स्थित एक महत्वपूर्ण बंदरगाह है। इसकी भौगोलिक स्थिति इसे एक समृद्ध खनिज संपन्न पृष्ठप्रदेश प्रदान करती है। इस पत्तन के माध्यम से मुख्य रूप से ओडिशा, झारखंड और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों से प्राप्त होने वाले लौह-अयस्क और अन्य खनिजों का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निर्यात किया जाता है। यह इन राज्यों के औद्योगिक विकास और व्यापारिक गतिविधियों के लिए एक मुख्य द्वार के रूप में कार्य करता है।

115. (C) तमिलनाडु और पुदुच्चेरी
चेन्नई पत्तन भारत के सबसे पुराने कृत्रिम पत्तनों में से एक है। इसकी अवस्थिति इसे तमिलनाडु राज्य और पुदुच्चेरी केंद्र शासित प्रदेश के लिए व्यापार का प्राथमिक केंद्र बनाती है। यह पत्तन इन क्षेत्रों के औद्योगिक उत्पादों, विशेष रूप से ऑटोमोबाइल और चमड़ा उत्पादों के निर्यात के लिए विख्यात है। इसका पृष्ठप्रदेश इन दोनों क्षेत्रों की व्यापारिक और आर्थिक आवश्यकताओं को कुशलतापूर्वक पूरा करने के लिए रेल और सड़क मार्ग से अच्छी तरह जुड़ा है।

116. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
दीनदयाल पत्तन (कांडला) गुजरात में कच्छ की खाड़ी में स्थित है। मुंबई पत्तन अरब सागर के तट पर स्थित एक प्राकृतिक बंदरगाह है। कोच्चि पत्तन केरल की बेंवानद कायाल के मुहाने पर अरब सागर में अवस्थित है। कोलकाता पत्तन हुगली नदी के तट पर स्थित एक विशिष्ट नदीय पत्तन है। ये सभी पत्तन अपनी विशिष्ट भौगोलिक अवस्थिति के कारण भारत के समुद्री व्यापार को अलग-अलग दिशाओं और क्षेत्रों में मजबूती प्रदान करते हैं।

117. (C) व्यापार हेतु लाइसेंस की आवश्यकता को पूर्णतः समाप्त या कम करना
'डि-लाइसेंसिंग' या विअनुज्ञाकरण का अर्थ है व्यापार और उद्योगों के संचालन के लिए पहले से लागू अनिवार्य सरकारी लाइसेंस की शर्तों को हटाना या उन्हें काफी कम करना। भारत सरकार ने व्यापार उदारीकरण की नीति के तहत कई वस्तुओं के आयात और निर्यात पर से लाइसेंस की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यापार में आने वाली प्रशासनिक बाधाओं को दूर करना और अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना है।

33. (B) यह भारी पोतों के सुरक्षित निपटान हेतु सर्वाधिक अनुकूल है।
पारादीप पत्तन ओडिशा में महानदी डेल्टा पर स्थित है। इस पत्तन का पोताश्रय भारत के अन्य पत्तनों की तुलना में काफी गहरा है। इसकी गहराई भारी और विशाल मालवाहक जहाजों के सुरक्षित रूप से आने-जाने और लंगर डालने के लिए बहुत अनुकूल है। इस गहराई के कारण यह बड़े पैमाने पर लौह-अयस्क और अन्य भारी औद्योगिक सामग्रियों के अंतरराष्ट्रीय निर्यात के लिए एक आदर्श स्थान बन गया है।

34. (A) 3, 1, 2, 4
चेन्नई पत्तन का निर्माण सबसे पहले 1859 में एक कृत्रिम पत्तन के रूप में हुआ था। इसके बहुत बाद 1950-51 में भारत के वैदेशिक व्यापार का मूल्य 1,214 करोड़ रुपये दर्ज किया गया। मार्मागाओ पत्तन का पुनर्प्रतिरुपण 1961 में लौह-अयस्क निर्यात हेतु किया गया। अंत में 1973 में वैश्विक ऊर्जा संकट आया जिससे पेट्रोलियम के मूल्यों में भारी वृद्धि हुई। यह क्रम भारत के आर्थिक और व्यापारिक विकास को दर्शाता है।

35. (C) Asia and ASEAN
वर्ष 2021-22 के आंकड़ों के अनुसार, भारत के आयात में 'एशिया एवं आसियान' क्षेत्र की हिस्सेदारी सबसे अधिक रही है। भौगोलिक निकटता और मजबूत व्यापारिक समझौतों के कारण भारत इन देशों से भारी मात्रा में इलेक्ट्रॉनिक सामान, कच्चा तेल और अन्य विनिर्मित वस्तुओं का आयात करता है। यह क्षेत्र भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बनकर उभरा है, जो वैश्विक व्यापार के बदलते स्वरूप को पूरी तरह प्रदर्शित करता है।

36. (A) P-4, Q-1, R-3, S-2
कोच्चि पत्तन स्वेज-कोलंबो अंतरराष्ट्रीय समुद्री मार्ग के निकट होने का लाभ प्राप्त करता है। हल्दिया पत्तन को कोलकाता पत्तन के भार को कम करने के लिए उसके अनुषंगी पत्तन के रूप में विकसित किया गया है। एन्नोर पत्तन को चेन्नई के सहायक पत्तन के रूप में बनाया गया है। विशाखापट्नम एक प्रसिद्ध भू-आबद्ध पत्तन है जो सुरक्षित बंदरगाह की सुविधा प्रदान करता है और अपने गहरे पोताश्रय के लिए प्रसिद्ध है।

37. (C) कोलकाता पत्तन की संकुलता को घटाने के लिए
हल्दिया पत्तन का निर्माण मुख्य रूप से कोलकाता पत्तन पर बढ़ते हुए अत्यधिक दबाव और संकुलता को कम करने के लिए किया गया था। यह कोलकाता से लगभग 105 कि.मी. नीचे हुगली नदी पर स्थित है। यह पत्तन भारी और स्थूल वस्तुओं जैसे पेट्रोलियम, कोयला और लौह-अयस्क के निपटान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसकी अवस्थिति इसे बड़े जहाजों के लिए कोलकाता की तुलना में अधिक सुलभ और सुविधाजनक बनाती है।

38. (B) एक देश के कुल निर्यात और आयात के मूल्यों के बीच का अंतर
व्यापार संतुलन एक निश्चित समय अवधि में किसी देश द्वारा विदेशों को किए गए कुल निर्यात और विदेशों से किए गए कुल आयात के मूल्यों के बीच के अंतर को दर्शाता है। यदि निर्यात का मूल्य आयात से अधिक होता है, तो उसे सकारात्मक या अनुकूल व्यापार संतुलन कहा जाता है। इसके विपरीत, यदि आयात का मूल्य निर्यात से अधिक हो, तो उसे नकारात्मक या व्यापार घाटा की स्थिति माना जाता है।

39. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
चेन्नई पत्तन भारत के पूर्वी तट पर स्थित एक कृत्रिम पत्तन है। इसकी बनावट ऐसी है कि तट के पास जल काफी उथला है, जिसके कारण यह बहुत बड़े और गहरे जहाजों के प्रवेश के लिए प्राकृतिक रूप से अनुकूल नहीं है। यही कारण है कि भारी और विशाल पोतों के सुरक्षित परिचालन में यहाँ काफी कठिनाइयां आती हैं। यह पत्तन 1859 में बनाया गया था और काफी पुराना भी है।

40. (A) यह कर्नाटक में स्थित होकर लौह-अयस्क की ज़रूरतें पूरी करता है।
न्यू मंगलौर पत्तन कर्नाटक राज्य में स्थित है। यह विशेष रूप से कुद्रेमुख खानों से प्राप्त होने वाले लौह-अयस्क और लौह-सांद्र के निर्यात के लिए विकसित किया गया है। इसके अलावा, यह पत्तन उर्वरकों, पेट्रोलियम उत्पादों, खाद्य तेलों और ग्रेनाइट पत्थर जैसे विविध नौभार का भी कुशलतापूर्वक निपटान करता है। यह कर्नाटक के आर्थिक विकास में एक मुख्य द्वार की तरह कार्य करता है और महत्वपूर्ण सेवाएं प्रदान करता है।

41. (C) पहले सरकारी अभिकरणों पर, बाद में निजी उद्यमियों को
भारत में प्रमुख पत्तनों के विकास और आधुनिकीकरण की प्राथमिक जिम्मेदारी प्रारंभ में केवल सरकारी अभिकरणों के पास थी। हालांकि, बढ़ते व्यापारिक दबाव और अंतरराष्ट्रीय मानकों के साथ तालमेल बिठाने की आवश्यकता को देखते हुए बाद में निजी उद्यमियों को भी इस क्षेत्र में आमंत्रित किया गया। वर्तमान में सरकारी और निजी भागीदारी के माध्यम से पत्तनों की दक्षता और कार्यक्षमता को बढ़ाने के निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं।

42. (B) केवल 1, 2 और 4
विशाखापट्नम आंध्र प्रदेश में स्थित एक सुरक्षित भू-आबद्ध पत्तन है, जिसे चट्टानों और बालू को काटकर बनाई गई नहर द्वारा समुद्र से जोड़ा गया है। यहाँ विशेष रूप से लौह-अयस्क और पेट्रोलियम के निपटान के लिए एक बाह्य पत्तन का विकास भी किया गया है। इसका पृष्ठप्रदेश केवल आंध्र प्रदेश तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें तेलंगाना और छत्तीसगढ़ के कुछ हिस्से भी महत्वपूर्ण रूप से शामिल हैं।

43. (D) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार
जब किन्हीं दो या दो से अधिक देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं का आदान-प्रदान होता है, तो उसे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कहा जाता है। यह व्यापार समुद्री, वायु या स्थल मार्गों के माध्यम से संपन्न हो सकता है। कोई भी देश संसाधनों के मामले में पूरी तरह आत्मनिर्भर नहीं होता, इसलिए अपनी आवश्यकताओं

128. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
भारत का व्यापार घाटा समय के साथ लगातार बढ़ता रहा है। वर्ष 2004-05 में व्यापार संतुलन -1,25,725 करोड़ रुपये था। 2013-14 तक यह बढ़कर -8,10,423 करोड़ रुपये हो गया। वर्ष 2016-17 में यह -7,25,082 करोड़ रुपये रहा, लेकिन 2021-22 में इसमें भारी उछाल आया और यह -14,25,753 करोड़ रुपये के स्तर तक पहुँच गया। यह आंकड़े आयात के मूल्य में होने वाली निरंतर और तीव्र वृद्धि को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

129. (A) केवल 1, 2 और 3
न्यू मंगलौर पत्तन कर्नाटक के तटीय क्षेत्र में स्थित है और इसे विशेष रूप से कुद्रेमुख से लौह-अयस्क निर्यात करने के लिए विकसित किया गया है। यह कॉफी, चाय, और ग्रेनाइट जैसे विविध उत्पादों का भी निपटान करता है। इसका पृष्ठप्रदेश केवल मंगलौर तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरा कर्नाटक राज्य इसमें शामिल है। मुंबई भारत का सबसे बड़ा प्राकृतिक पत्तन है, जबकि मंगलौर एक महत्वपूर्ण आधुनिक बंदरगाह है जो क्षेत्र के विकास में सहायक है।

130. (A) क्योंकि उस अवधि में भारत का भुगतान संतुलन बिल्कुल विपरीत रहा था
1960 के दशक के दौरान भारत ने आयात प्रतिस्थापन की नीतियां अपनाईं, जिसका उद्देश्य घरेलू उद्योगों को बढ़ावा देना था। इसके बावजूद, देश का कुल आयात हमेशा निर्यात से अधिक रहा क्योंकि उस समय भारत का भुगतान संतुलन (Balance of Payment) काफी प्रतिकूल था। औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक मशीनों और कच्चे माल की भारी मांग के कारण आयात बिल निरंतर बढ़ता गया, जबकि निर्यात के अवसर उस समय तुलनात्मक रूप से सीमित और चुनौतीपूर्ण थे।

131. (C) इसका उपयोग ईंधन और औद्योगिक कच्चे माल दोनों के रूप में होता है।
भारत में पेट्रोलियम का आयात केवल परिवहन के लिए ईंधन के रूप में ही नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण औद्योगिक कच्चे माल के रूप में भी किया जाता है। इसका उपयोग उर्वरक उद्योग, प्लास्टिक निर्माण और विभिन्न रसायनों के उत्पादन में व्यापक रूप से होता है। इसी कारण पेट्रोलियम उत्पाद भारत के आयात संघटन का सबसे बड़ा हिस्सा हैं। बढ़ती ऊर्जा मांग और औद्योगिक विस्तार के कारण इसकी निर्भरता अंतरराष्ट्रीय बाजार पर निरंतर बनी हुई है।

132. (D) काजू
काजू भारत की एक पारंपरिक निर्यात वस्तु रही है, लेकिन हाल के वर्षों में इसके निर्यात में गिरावट की प्रवृत्ति देखी गई है। इसका मुख्य कारण अंतरराष्ट्रीय बाजार में वियतनाम जैसे अन्य देशों से मिलने वाली कड़ी प्रतिस्पर्धा है। इसके विपरीत, भारत ने ताजे फल, समुद्री उत्पाद और चीनी जैसे नए और आधुनिक कृषि उत्पादों के निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की है। यह बदलाव वैश्विक बाजार की बदलती मांगों और भारत की उत्पादन क्षमता को दर्शाता है।

133. (C) पारादीप
पारादीप पत्तन ओडिशा के तट पर स्थित है और इसे मुख्य रूप से भारी मात्रा में लौह-अयस्क के अंतरराष्ट्रीय निर्यात के लिए विकसित किया गया है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता इसका बहुत गहरा पोताश्रय है, जो विशालकाय जहाजों के परिचालन के लिए अत्यंत उपयुक्त है। इसका पृष्ठप्रदेश खनिज संपन्न राज्यों जैसे ओडिशा, झारखंड और छत्तीसगढ़ तक विस्तृत है, जो इसे भारत के खनिज व्यापार का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और रणनीतिक केंद्र बनाता है।

134. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में रेलवे के विस्तार ने देश के आंतरिक और बाह्य व्यापार को जोड़ने में एक क्रांतिकारी भूमिका निभाई है। रेलवे नेटवर्क ने दूर-दराज के स्थानीय और क्षेत्रीय बाजारों को पत्तनों से जोड़ा, जिससे कच्चे माल और निर्मित वस्तुओं का परिवहन आसान और सस्ता हो गया। इस कनेक्टिविटी के कारण ही पत्तन अपने विशाल पृष्ठप्रदेशों के संसाधनों का दोहन कर सके और उन्हें अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक कुशलतापूर्वक पहुँचाने में सक्षम हो सके।

135. (A) केवल 1 और 4
मुंबई एक प्राकृतिक पत्तन है, न कि कृत्रिम। यह भारत का सबसे बड़ा और व्यस्ततम पत्तन है जिसमें 54 गोदियाँ उपलब्ध हैं। इसके भार को कम करने के लिए जवाहरलाल नेहरु पत्तन को इसके अनुषंगी पत्तन के रूप में विकसित किया गया है। मुंबई पत्तन का पृष्ठप्रदेश केवल गुजरात तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के विशाल व्यापारिक क्षेत्र भी महत्वपूर्ण रूप से शामिल हैं।

136. (A) आयात पर मात्रात्मक प्रतिबंध बढ़ाना
भारत की व्यापार उदारीकरण नीति का मुख्य उद्देश्य व्यापार में आने वाली बाधाओं को दूर करना है। इसमें आयात उदारीकरण, सीमा शुल्क या आयात करों में कमी, और लाइसेंस की अनिवार्यता को समाप्त करना (डि-लाइसेंसिंग) शामिल है। आयात पर मात्रात्मक प्रतिबंध बढ़ाना उदारीकरण के विरुद्ध है; बल्कि उदारीकरण के तहत ऐसे प्रतिबंधों को या तो पूरी तरह हटा दिया गया है या उन्हें काफी कम कर दिया गया है ताकि वैश्विक व्यापार सुगम हो सके।

137. (C) एशिया एवं आसियान
वर्ष 2016-17 और 2021-22 के बीच, भारत के आयात में 'एशिया एवं आसियान' क्षेत्र से होने वाली वृद्धि सबसे अधिक रही है। यह क्षेत्र अब भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बन गया है। भौगोलिक निकटता, मुक्त व्यापार समझौते और चीन व दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों से इलेक्ट्रॉनिक सामान व कच्चे माल की भारी मांग के कारण इस क्षेत्र से आयात मूल्य में अन्य क्षेत्रों की तुलना में सर्वाधिक निरपेक्ष वृद्धि दर्ज की गई है।

138. (A) मध्यपूर्व, भूमध्य सागरीय देश, उत्तरी अफ्रीका, यूरोप
मुंबई पत्तन भारत के पश्चिमी तट पर स्थित होने के कारण भौगोलिक रूप से अत्यंत रणनीतिक स्थान पर है। यह मध्यपूर्व,

करता है और किफायती स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने में दुनिया भर में भारत की एक विशिष्ट और विश्वसनीय पहचान बनाता है।

160. (A) विदेशी मुद्रा अर्जन और व्यापार घाटे को कम करना
मूल्य-वर्धित विनिर्मित उत्पादों के निर्यात को प्रोत्साहित करने से भारत को बहुआयामी लाभ प्राप्त होते हैं। इससे न केवल विदेशी मुद्रा का प्रवाह बढ़ता है, बल्कि यह व्यापार घाटे को कम करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विनिर्माण क्षेत्र में मजबूती आने से देश की आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ती है और वैश्विक बाजार में भारत की प्रतिस्पर्धात्मक शक्ति पहले से अधिक सुदृढ़ होती है।

161. (D) क्योंकि यह अपनी आवश्यकता का अधिकांश कच्चा तेल आयात करता है
भारत अपनी कच्चे तेल की कुल आवश्यकता का लगभग 85 प्रतिशत से अधिक हिस्सा विदेशों से आयात करता है। इतनी भारी निर्भरता के कारण, अंतर्राष्ट्रीय बाजार में तेल की कीमतों में होने वाला कोई भी उतार-चढ़ाव भारतीय अर्थव्यवस्था को सीधे प्रभावित करता है। यह स्थिति देश की राजकोषीय स्थिति और मुद्रास्फीति दर को वैश्विक ऊर्जा बाजार की घटनाओं के प्रति संवेदनशील बनाती है।

162. (B) आपातकालीन स्थिति में तेल आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए
भारत ने किसी भी भू-राजनीतिक तनाव या प्राकृतिक आपदा के कारण होने वाली आपूर्ति बाधाओं से निपटने के लिए रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार विकसित किए हैं। ये भूमिगत भंडार आपातकालीन स्थिति में देश के लिए तेल का एक सुरक्षित बफर स्टॉक प्रदान करते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य संकट के समय ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करना और घरेलू अर्थव्यवस्था को ऊर्जा की कमी से बचाना है।

163. (C) आयात स्रोतों में विविधता लाना
ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करने के लिए भारत अब किसी एक क्षेत्र या देश पर निर्भर रहने के बजाय अपनी तेल आयात टोकरी में विविधता ला रहा है। पश्चिम एशिया के पारंपरिक आपूर्तिकर्ताओं के साथ-साथ अब रूस और अमेरिका जैसे नए देशों से भी तेल की खरीद की जा रही है। यह विविधीकरण आपूर्ति संबंधी जोखिमों को कम करने और बेहतर मूल्य प्राप्त करने में सहायक है।

164. (D) नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का विस्तार और इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाना
दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा प्राप्त करने के लिए भारत सौर और पवन जैसी नवीकरणीय ऊर्जा के विस्तार पर विशेष ध्यान दे रहा है। इसके साथ ही इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को बढ़ावा देना भी एक महत्वपूर्ण कदम है। ये उपाय जीवाश्म ईंधन के आयात पर देश की भारी निर्भरता को कम करेंगे और पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ व्यापार संतुलन को सुधारने में योगदान देंगे।

165. (A) 85% से अधिक
ऊर्जा के आंकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भारत अपनी कच्चे तेल की विशाल मांग को पूरा करने के लिए बड़े पैमाने पर आयात पर निर्भर है। वर्तमान में देश अपनी जरूरत का 85 प्रतिशत से अधिक तेल आयात करता है। यह उच्च प्रतिशत भारत की ऊर्जा सुरक्षा नीति के लिए एक बड़ी चुनौती है, जिसके कारण देश वैश्विक बाजार की अस्थिरता के प्रति संवेदनशील है।

166. (B) एक विदेशी क्षेत्र
विशेष आर्थिक क्षेत्रों को व्यापार संचालन और कर उद्देश्यों के लिए भारत की भौगोलिक सीमा के भीतर एक विदेशी क्षेत्र माना जाता है। इस विशिष्ट दर्जे का उद्देश्य निर्यात को बढ़ावा देना और प्रक्रियाओं को सरल बनाना है। एसईजेड में संचालित इकाइयों को सीमा शुल्क और अन्य करों के मामले में वैसा ही व्यवहार मिलता है जैसा किसी विदेशी राष्ट्र के साथ व्यापार में होता है।

167. (B) आयात को प्रतिबंधित करना
विशेष आर्थिक क्षेत्रों की स्थापना का मुख्य उद्देश्य विदेशी निवेश को आकर्षित करना, निर्यात को बढ़ावा देना और रोजगार के नए अवसर पैदा करना है। इनका लक्ष्य आयात को प्रतिबंधित करना बिल्कुल नहीं है, बल्कि यह व्यापार को सुगम बनाने और आर्थिक गतिविधियों को गति देने के लिए बनाए गए हैं। एसईजेड विदेशी व्यापार के प्रति एक खुला और उत्साहजनक दृष्टिकोण अपनाते हैं।

168. (A) आयकर और अन्य शुल्कों में छूट
एसईजेड में स्थापित औद्योगिक इकाइयों को व्यवसाय की लागत कम करने के लिए विभिन्न राजकोषीय प्रोत्साहन प्रदान किए जाते हैं। इनमें आयकर से मुक्ति, न्यूनतम वैकल्पिक कर में छूट और केंद्रीय तथा राज्य स्तर के कई शुल्कों से राहत शामिल है। ये रियायतें घरेलू और विदेशी निवेशकों को आकर्षित करने और निर्यात क्षेत्र में उत्पादों को वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए हैं।

169. (C) सूचना प्रौद्योगिकी, कपड़ा और फार्मास्यूटिकल्स
भारत में विशेष आर्थिक क्षेत्रों ने सूचना प्रौद्योगिकी, कपड़ा उद्योग और फार्मास्यूटिकल्स जैसे क्षेत्रों के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन क्षेत्रों में एसईजेड के माध्यम से होने वाला निर्यात देश के कुल निर्यात का एक बड़ा हिस्सा है। यह ढांचा तकनीकी और विनिर्माण आधारित उद्योगों को वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के साथ प्रभावी ढंग से जोड़ने में विशेष रूप से सहायक सिद्ध हुआ है।

170. (D) एसईजेड अधिनियम, 2005
भारत में विशेष आर्थिक क्षेत्रों के संचालन और प्रबंधन के लिए एक व्यापक कानूनी ढांचा एसईजेड अधिनियम, 2005 के माध्यम से प्रदान किया गया है। यह कानून एसईजेड की स्थापना, विकास और वहां स्थित इकाइयों के प्रबंधन के लिए नियम निर्धारित करता है। यह अधिनियम निवेशकों को स्थिरता

है। चेन्नई एक प्राकृतिक पत्तन नहीं है, बल्कि यह भारत के सबसे पुराने कृत्रिम पत्तनों में से एक है, जिसे 1859 में उथले तट पर व्यापारिक सुविधाओं के विकास के लिए कृत्रिम रूप से बनाया गया था।

149. (C) अयस्क एवं खनिज
2015-16 से 2021-22 की अवधि के दौरान भारत के निर्यात आंकड़ों का विश्लेषण करने पर यह पाया गया है कि 'अयस्क एवं खनिज' श्रेणी की हिस्सेदारी लगभग स्थिर बनी रही है। जहाँ विनिर्मित वस्तुओं और पेट्रोलियम उत्पादों के निर्यात में उल्लेखनीय उतार-चढ़ाव और वृद्धि देखी गई है, वहीं खनिजों का निर्यात प्रतिशत कुल निर्यात मूल्य के एक बहुत छोटे और लगभग स्थिर हिस्से (करीब 2 प्रतिशत) के रूप में ही बना हुआ है, जो इसकी निरंतरता को दर्शाता है।

150. (B) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार दो या दो से अधिक देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं के आदान-प्रदान की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। यह व्यापार तब आवश्यक हो जाता है जब कोई देश किसी विशेष वस्तु के उत्पादन में पूरी तरह आत्मनिर्भर नहीं होता है। इसके माध्यम से देश अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करते हैं और विदेशी मुद्रा अर्जित करते हैं। यह प्रक्रिया वैश्विक आर्थिक एकीकरण और राष्ट्रों के पारस्परिक विकास के लिए वर्तमान युग में अत्यंत अनिवार्य और प्रभावी मानी जाती है।

151. (B) डेविड रिकार्डो
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में तुलनात्मक लाभ का सिद्धांत प्रसिद्ध अर्थशास्त्री डेविड रिकार्डो द्वारा प्रस्तुत किया गया था। यह सिद्धांत बताता है कि देशों को उन विशिष्ट वस्तुओं के उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जिनमें उनकी अवसर लागत सबसे कम होती है। यह दृष्टिकोण राष्ट्रों को वैश्विक बाजार में कुशलतापूर्वक व्यापार करने और आर्थिक समृद्धि प्राप्त करने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करता है।

152. (A) आयात प्रतिस्थापन से निर्यात-उन्मुख विकास की ओर बढ़ना
वर्ष 1991 के ऐतिहासिक आर्थिक सुधारों के बाद, भारत ने अपनी पारंपरिक आर्थिक नीतियों में व्यापक परिवर्तन किया। देश ने पहले की आयात प्रतिस्थापन नीति का त्याग कर दिया, जिसका उद्देश्य घरेलू उद्योगों को संरक्षण देना था। इसके बजाय, भारत ने निर्यात-उन्मुख विकास मॉडल को अपनाया, जिससे भारतीय उत्पादों को वैश्विक बाजारों में प्रतिस्पर्धी बनाने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

153. (C) सूचना प्रौद्योगिकी और सेवा-निर्यात
भारत ने अपने विशाल और कुशल श्रमबल का उपयोग करके सेवा क्षेत्र में अपनी वैश्विक उपस्थिति दर्ज कराई है। विशेष रूप से सूचना प्रौद्योगिकी और व्यावसायिक प्रक्रिया आउटसोर्सिंग के माध्यम से, देश ने अपने तुलनात्मक लाभ को सफलतापूर्वक भुनाया है। यह रणनीतिक विशेषज्ञता भारत को वैश्विक सेवा निर्यात बाजार में एक अग्रणी खिलाड़ी के रूप में स्थापित करने में अत्यंत प्रभावी साबित हुई है।

154. (D) उन वस्तुओं के उत्पादन में जिनकी अवसर लागत सबसे कम हो
तुलनात्मक लाभ का आर्थिक सिद्धांत यह तर्क देता है कि राष्ट्रों को उन विशिष्ट वस्तुओं या सेवाओं के उत्पादन में विशेषज्ञता प्राप्त करनी चाहिए जिनमें वे अन्य देशों की तुलना में अधिक कुशल हैं। इसका मुख्य आधार अवसर लागत को न्यूनतम रखना है। ऐसा करने से वैश्विक स्तर पर उत्पादन दक्षता बढ़ती है और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में सभी सहभागी देशों को लाभ होता है।

155. (C) वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण बढ़ाना
भारत में 1991 के बाद लागू किए गए नए आर्थिक मॉडल का प्राथमिक लक्ष्य भारतीय अर्थव्यवस्था को दुनिया की अन्य अर्थव्यवस्थाओं के साथ एकीकृत करना था। उदारीकरण और वैश्वीकरण की इन नीतियों ने व्यापार बाधाओं को कम किया और भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं का एक अभिन्न हिस्सा बनने में मदद की, जिससे देश की आर्थिक विकास दर में उल्लेखनीय सुधार दर्ज हुआ है।

156. (B) भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करना
'मेक इन इंडिया' सरकार की एक प्रमुख पहल है जिसका उद्देश्य देश को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र में बदलना है। यह कार्यक्रम निवेश को बढ़ावा देने, नवाचार को प्रोत्साहित करने और विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे का निर्माण करने पर केंद्रित है। इसके माध्यम से भारत अपनी विनिर्माण क्षमताओं को मजबूत कर रहा है ताकि वैश्विक बाजार में भारतीय उत्पादों की प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ सके।

157. (D) इंजीनियरिंग सामान, इलेक्ट्रॉनिक्स और फार्मास्यूटिकल्स
भारत के निर्यात परिदृश्य में हाल के वर्षों में व्यापक सकारात्मक बदलाव आया है। देश अब केवल पारंपरिक वस्तुओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इंजीनियरिंग सामान, इलेक्ट्रॉनिक्स और फार्मास्यूटिकल्स जैसे उच्च मूल्य वाले क्षेत्रों में अग्रणी निर्यातक बनकर उभरा है। ये क्षेत्र भारत की तकनीकी प्रगति और वैश्विक मानकों के अनुरूप गुणवत्तापूर्ण उत्पादन करने की बढ़ती क्षमता को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

158. (A) पारंपरिक से मूल्य-वर्धित उत्पादों की ओर बदलाव
भारत की निर्यात संरचना में हो रहा परिवर्तन यह संकेत देता है कि देश प्राथमिक और कच्ची वस्तुओं के निर्यात से हटकर अब अधिक मूल्य-वर्धित विनिर्मित उत्पादों पर ध्यान दे रहा है। यह रणनीतिक बदलाव औद्योगिक परिपक्वता और आर्थिक विकास का परिचायक है। इससे न केवल निर्यात मूल्य में वृद्धि होती है, बल्कि देश के भीतर औद्योगिक विकास और रोजगार सृजन को भी बल मिलता है।

159. (C) यह विश्व के सबसे बड़े उत्पादकों और निर्यातकों में से एक है
जेनेरिक दवाओं के क्षेत्र में भारत ने वैश्विक स्तर पर अत्यंत प्रभावशाली और मजबूत स्थिति प्राप्त की है। आज भारत दुनिया के सबसे बड़े जेनेरिक दवा उत्पादकों और निर्यातकों में गिना जाता है। यह क्षेत्र वैश्विक मांग का एक महत्वपूर्ण हिस्सा पूरा

(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 4
(D) 1, 2, 3, 4 और 5

40. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन 1: गंदी बस्तियों की अधिकांश जनसंख्या नगरीय अर्थव्यवस्था के असंगठित क्षेत्र में कम वेतन और अधिक जोखिम भरा कार्य करती है।
कथन 2: गरीबी के कारण गंदी बस्तियों के निवासी नशीली दवाओं, शराब, अपराध और सामाजिक बहिष्कार के प्रति उन्मुख होते हैं।
उपरोक्त में से कौन-sa/se कथन सही है/हैं?
(A) केवल कथन 1
(B) केवल कथन 2
(C) कथन 1 और 2 दोनों
(D) न तो कथन 1 और न ही कथन 2

41. निम्नलिखित में से कौन सा रोग जल जन्य नहीं है?
(A) अतिसार (दस्त)
(B) हेपेटाइटिस
(C) श्वसन संक्रमण
(D) आँतों के कृमि

42. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिए:
List I: (अवधारणा/कार्यक्रम)
P. शहरी धूम्र कुहरा
Q. नमामि गंगे
R. भू-निम्नीकरण
S. ग्रामीण-शहरी प्रवास
List II: (संबंधित समस्या/कारक)
1. प्रतिकर्ष और अपकर्ष कारक
2. मृदा अपरदन एवं लवणता
3. वायु प्रदूषण
4. गंगा नदी की सफाई
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

43. मध्य प्रदेश के झबुआ जिले की सामाजिक-डेमोग्राफिक विशेषता क्या है?
(A) उच्च शहरी जनसंख्या घनत्व
(B) उन्नत औद्योगिक क्षेत्र
(C) अत्यधिक उपजाऊ कृषि भूमि
(D) भील जनजाति की जनसंख्या का उच्च सांद्रण

44. मुंबई की धारावी बस्ती में स्थानीय स्तर पर किन वस्तुओं का निर्माण किया जाता है?
(A) केवल स्थानीय स्तर के मिट्टी के बर्तन और सेरेमिक्स
(B) कसीदाकारी, जरी, चमड़े का काम और उच्च फैशन वस्त्र
(C) केवल औद्योगिक क्षेत्र की भारी मशीनरी और मोटर वाहन
(D) केवल सॉफ्टवेयर सेवाएँ और परिष्कृत इलेक्ट्रॉनिक उपकरण

45. ग्रामीण-शहरी प्रवास के आर्थिक और सामाजिक परिणामों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा निष्कर्ष सही है?
(A) ग्रामीण-शहरी प्रवास सदैव स्थाई और पूरे परिवार सहित संपन्न होता है
(B) प्रवास केवल पुरुषों तक सीमित है और परिवार पर कोई प्रभाव नहीं डालता
(C) आर्थिक सुधार के साथ सामाजिक व व्यक्तिगत चुनौतियों का सामना करना
(D) प्रवासियों को गंतव्य स्थान पर किसी भी प्रकार की कठिनाई नहीं होती है

46. झबुआ जिले में जल संभरण प्रबंधन कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन के पीछे मुख्य कारक क्या था?
(A) केवल केंद्र सरकार द्वारा दिया गया विशेष वित्तीय अनुदान
(B) केवल अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा प्रदान की गई तकनीकी सहायता
(C) बड़ी बहुराष्ट्रीय औद्योगिक कंपनियों द्वारा किया गया भारी निवेश
(D) प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में स्थानीय सामुदायिक सहभागिता

47. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. प्रदूषण के अनेक प्रकार हैं, जैसे जल, वायु, भू और ध्वनि प्रदूषण।
2. जल प्रदूषण केवल मानव क्रियाकलापों से होता है।
3. मानव, जल को उद्योगों, कृषि एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से प्रदूषित करता है।
4. जल में स्वतः शुद्धीकरण की क्षमता असीमित होती है।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4

48. भारत में नगरीय जनसंख्या में वृद्धि का क्या कारण है?
(A) केवल जन्म दर में होने वाली प्राकृतिक वृद्धि
(B) प्राकृतिक वृद्धि, निवल अप्रवास और नगरीय क्षेत्रों का पुनर्वर्गीकरण
(C) केवल ग्रामीण क्षेत्रों से होने वाला निवल अप्रवास
(D) केवल नए नगरीय क्षेत्रों का प्रशासनिक पुनः वर्गीकरण

49. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक तर्क (R) दिया गया है। उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): गंदी बस्तियाँ न्यूनतम वांछित आवासीय क्षेत्र होती हैं।
तर्क (R): इन क्षेत्रों में ऊँचे किराए और ज़मीन की महँगी कीमत के कारण अच्छे आवास उपलब्ध नहीं हो पाते हैं।

और स्पष्टता प्रदान करता है, जिससे देश में निर्यात-उन्मुख औद्योगिक क्षेत्रों का विकास संभव हो सका है।

171. (C) भारत की लॉजिस्टिक्स लागत को कम करके व्यापार बढ़ाना
सागरमाला कार्यक्रम का मुख्य लक्ष्य भारत की विशाल तटरेखा का लाभ उठाकर लॉजिस्टिक्स लागत को कम करना है। वर्तमान में उच्च लॉजिस्टिक्स व्यय भारतीय उत्पादों को वैश्विक बाजार में महंगा बनाता है। बंदरगाह-आधारित विकास के माध्यम से, यह पहल माल की आवाजाही को सस्ता और कुशल बनाती है, जिससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भारत की प्रतिस्पर्धात्मकता और कुल निर्यात मात्रा में वृद्धि होती है।

172. (B) शहरी जनसंख्या का ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानांतरण
सागरमाला कार्यक्रम पूरी तरह से बंदरगाहों के आधुनिकीकरण, उनके भीतरी इलाकों से संपर्क सुधारने और तटीय क्षेत्रों में औद्योगिक विकास पर केंद्रित है। इसमें शहरी जनसंख्या को ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानांतरित करने जैसा कोई उद्देश्य शामिल नहीं है। इसके बजाय, यह पहल तटीय समुदायों के कौशल विकास और वहां रोजगार के अवसर पैदा करके उनके जीवन स्तर को सुधारने पर अपना ध्यान केंद्रित करती है।

173. (D) बंदरगाहों के पास औद्योगिक समूहों के विकास को बढ़ावा देना
तटीय आर्थिक क्षेत्रों की स्थापना सागरमाला परियोजना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका उद्देश्य बंदरगाहों के पास औद्योगिक क्लस्टर विकसित करना है। इन क्षेत्रों में विनिर्माण इकाइयों को स्थापित करने से कच्चे माल के आयात और तैयार माल के निर्यात में लगने वाला समय और लागत काफी कम हो जाती है। यह रणनीति भारत को एक प्रमुख वैश्विक विनिर्माण और निर्यात केंद्र बनाने में सहायक है।

174. (A) लॉजिस्टिक्स लागत और समय को कम करके
सागरमाला कार्यक्रम बंदरगाहों को सड़क, रेल और आंतरिक जलमार्गों से जोड़कर एक एकीकृत परिवहन तंत्र विकसित करता है। इससे माल ढुलाई की लागत और समय में महत्वपूर्ण कमी आती है। जब लॉजिस्टिक्स प्रक्रिया सुव्यवस्थित और सस्ती होती है, तो भारतीय निर्यातकों के लिए वैश्विक बाजार में अपनी पकड़ बनाना आसान हो जाता है, जिससे देश के कुल व्यापार संतुलन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

175. (C) लंबी तटरेखा और नौगम्य जलमार्ग
भारत की भौगोलिक स्थिति 7,500 किलोमीटर लंबी तटरेखा और विशाल नौगम्य जलमार्गों का उपहार प्रदान करती है। सागरमाला कार्यक्रम इसी प्राकृतिक संपदा का अधिकतम आर्थिक लाभ उठाने का एक प्रयास है। जलमार्गों का उपयोग माल ढुलाई के लिए करने से परिवहन लागत कम होती है और पर्यावरण पर भी कम प्रभाव पड़ता है, जो भारत के सतत विकास लक्ष्यों के पूर्णतः अनुरूप है।

भूमध्य सागरीय देशों, उत्तरी अफ्रीका और पूरे यूरोप को जोड़ने वाले प्रमुख अंतरराष्ट्रीय समुद्री मार्ग के बहुत निकट स्थित है। इस अवस्थिति के कारण मुंबई पत्तन सदियों से पश्चिमी देशों के साथ भारत के समुद्री व्यापार का मुख्य द्वार बना हुआ है और देश के आर्थिक विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

139. (D) 10.1%
वर्ष 2021-22 के आंकड़ों के अनुसार, भारत के कुल आयात मूल्य में पूँजीगत वस्तुओं (जैसे भारी मशीनरी, परिवहन उपकरण और अन्य औद्योगिक मशीनों) की हिस्सेदारी लगभग 10.1 प्रतिशत थी। हालांकि भारत अब कई मशीनों का घरेलू उत्पादन कर रहा है, फिर भी अत्याधुनिक तकनीक और उच्च क्षमता वाले उपकरणों के लिए इसे अभी भी अंतरराष्ट्रीय बाजार पर निर्भर रहना पड़ता है। यह हिस्सा भारत के औद्योगिक और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

140. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
कांडला पत्तन (दीनदयाल पत्तन) गुजरात राज्य में कच्छ की खाड़ी में स्थित है। न्हावा शेवा, जिसे जवाहरलाल नेहरू पत्तन भी कहा जाता है, महाराष्ट्र में मुंबई के पास स्थित है। पारादीप पत्तन ओडिशा के तट पर एक महत्वपूर्ण खनिज निर्यातक केंद्र है। कोच्चि पत्तन केरल राज्य में बेंवानद कायाल के मुहाने पर अवस्थित है। ये सभी पत्तन अपने संबंधित राज्यों के आर्थिक विकास और समुद्री व्यापार में एक केंद्रीय और महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

141. (C) यह भारी और स्थूल वस्तुओं के वहन हेतु बहुत महंगा और अनुपयुक्त है।
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वायु परिवहन का उपयोग काफी सीमित है क्योंकि यह परिवहन के अन्य साधनों की तुलना में अत्यंत महंगा है। यह कोयला, लोहा, कच्चा तेल और भारी मशीनों जैसी स्थूल वस्तुओं के लंबी दूरी तक परिवहन के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य नहीं है। वायु परिवहन का महत्व मुख्य रूप से केवल उच्च मूल्य वाली वस्तुओं, कीमती रत्नों और ऐसी नाशवान वस्तुओं के लिए है जिन्हें बहुत कम समय में गंतव्य तक पहुँचाना अनिवार्य होता है।

142. (B) केवल 1, 2, 3 और 4
दीनदयाल पत्तन गुजरात में स्थित एक ज्वारीय पत्तन है, जिसका विकास विभाजन के बाद कराची पत्तन की कमी को पूरा करने के लिए किया गया था। यह पेट्रोलियम और उर्वरकों के आयात का प्रमुख केंद्र है। इसके दबाव को कम करने हेतु वाडीनार में एक अपतटीय टर्मिनल बनाया गया है। इसका पृष्ठप्रदेश पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी भारत है, न कि दक्षिणी भारत। यह पत्तन देश की खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

143. (A) आयात और निर्यात की जाने वाली वस्तुओं की प्रकृति में परिवर्तन
भारत के विदेशी व्यापार के संघटन में आए बदलाव का मुख्य अर्थ उन वस्तुओं के प्रकार और प्रकृति में होने वाले परिवर्तन से है जिनका देश द्वारा आयात या निर्यात किया जाता है। उदाहरण के लिए, स्वतंत्रता के बाद भारत मुख्य रूप से कच्चे माल का निर्यात करता था, लेकिन अब विनिर्मित वस्तुओं का निर्यात अधिक होता है। इसी प्रकार, पहले खाद्यान्न का आयात प्रमुख था, जबकि अब पेट्रोलियम और इलेक्ट्रॉनिक्स का आयात सबसे अधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

144. (B) विशाखापट्नम
विशाखापट्नम पत्तन की भौगोलिक बनावट इसे भारत के अन्य पत्तनों से अलग बनाती है। यह एक भू-आबद्ध बंदरगाह है जहाँ जहाजों के प्रवेश के लिए ठोस चट्टान और बालू को काटकर एक गहरी और सुरक्षित नहर बनाई गई है। यह नहर पत्तन को सीधे समुद्र से जोड़ती है। इस प्रकार की विशिष्ट संरचना के कारण यह पत्तन समुद्री लहरों और चक्रवातों से पूरी तरह सुरक्षित रहता है, जो जहाजों के लंगर डालने के लिए इसे एक आदर्श स्थान बनाता है।

145. (B) विभाजन के कारण कराची और चिटगाँव पत्तन भारत से अलग हो गए थे।
1947 में भारत के विभाजन के समय देश को एक बड़ी व्यापारिक चुनौती का सामना करना पड़ा क्योंकि दो अत्यंत विकसित और महत्वपूर्ण पत्तन, कराची और चिटगाँव, क्रमशः पाकिस्तान और तत्कालीन पूर्वी पाकिस्तान के पास चले गए। पश्चिमी और पूर्वी भारत के व्यापारिक मार्गों में आई इस भारी कमी को पूरा करने के लिए भारत सरकार को कांडला, हल्दिया और पारादीप जैसे नए और आधुनिक पत्तनों को विकसित करने की तत्काल आवश्यकता महसूस हुई थी।

146. (A) यह क्षेत्र सुस्थिर नहीं होता और दूसरे पत्तन के पृष्ठप्रदेश से जुड़ सकता है।
किसी भी पत्तन के पृष्ठप्रदेश की सीमाओं को स्पष्ट रूप से निर्धारित करना कठिन होता है क्योंकि यह क्षेत्र स्थिर नहीं रहता है। परिवहन सुविधाओं के विस्तार और आर्थिक गतिविधियों के बदलने के साथ एक पत्तन का पृष्ठप्रदेश दूसरे पत्तन के पृष्ठप्रदेश के साथ मिल या ओवरलैप हो सकता है। कोई विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र अपनी सुविधा और लागत के आधार पर एक से अधिक पत्तनों की सेवाओं का उपयोग कर सकता है, जिससे इनकी सीमाएं निरंतर बदलती रहती हैं।

147. (C) लौह-अयस्क
तूतीकोरिन पत्तन तमिलनाडु में स्थित है और यह मुख्य रूप से कोयला, नमक, खाद्यान्न, खाद्य तेल, उर्वरक और चीनी जैसी वस्तुओं के निपटान के लिए जाना जाता है। लौह-अयस्क का बड़े पैमाने पर निर्यात मुख्य रूप से पारादीप, मार्मागाओ और विशाखापट्नम जैसे पत्तनों के माध्यम से किया जाता है, न कि तूतीकोरिन से। यह पत्तन दक्षिण भारत की विविध आवश्यकताओं को पूरा करता है और चेन्नई पत्तन के भार को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

148. (B) केवल 2
विशाखापट्नम आंध्र प्रदेश में स्थित एक शानदार भू-आबद्ध पत्तन है। कोच्चि पत्तन को अपने ऐतिहासिक व्यापारिक महत्व के कारण 'अरब सागर की रानी' कहा जाता है। पारादीप पत्तन का पोताश्रय बहुत गहरा है, जो भारी जहाजों के लिए उपयुक्त

10. यदि कोई व्यक्ति किसी ऐसे औद्योगिक क्षेत्र में रहता है जहाँ मोटर-वाहनों और वायुयानों का घनत्व अधिक है, तो उसे किस प्रकार के प्रदूषण का सर्वाधिक सामना करना पड़ेगा?
(A) ध्वनि प्रदूषण
(B) केवल जल प्रदूषण
(C) केवल भू-प्रदूषण
(D) केवल रेडियोधर्मी प्रदूषण

11. 'नमामि गंगे' कार्यक्रम के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसका मुख्य उद्देश्य गंगा नदी के प्रदूषण को नियंत्रित करना और उसकी सफाई करना है।
2. इसके अंतर्गत उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, और झारखंड में 'गंगा ग्राम' का विकास करना शामिल है।
3. यह कार्यक्रम केवल औद्योगिक प्रवाह की निगरानी पर केंद्रित है।
4. इसका एक उद्देश्य नदी के किनारों पर वनीकरण करके जैवविविधता में वृद्धि करना है।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4

12. ध्वनि प्रदूषण को मापने के लिए किस इकाई का प्रयोग किया जाता है?
(A) पास्कल
(B) डेसीबल
(C) जूल
(D) हर्ट्ज़

13. भारत में धरातलीय जल के प्रदूषण का एक प्रमुख कारण निम्नलिखित में से कौन सी सांस्कृतिक गतिविधियाँ हैं?
(A) सघन वृक्षारोपण और व्यापक वन संरक्षण
(B) छत पर वैज्ञानिक वर्षा जल संचयन
(C) तीर्थ यात्राएँ, धार्मिक मेले और पर्यटन
(D) आधुनिक पद्धति की जैविक कृषि का अभ्यास

14. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक तर्क (R) दिया गया है। उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): नगरीय क्षेत्रों के ऊपर बनने वाला कुहरा, जिसे शहरी धूम्र कुहरा कहा जाता है, वायुमंडलीय प्रदूषण के कारण होता है।
तर्क (R): गर्मियों के पश्चात् पहली बरसात में पी.एच. का स्तर उत्तरवर्ती बरसातों से सदैव कम होता है, जो अम्ल वर्षा का संकेतक है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

15. यमुना नदी के प्रदूषण के स्रोतों के संदर्भ में, दिल्ली से चंबल के मिलन तक की प्रदूषित पटरी का मुख्य कारण क्या है?
(A) दिल्ली के घरेलू और औद्योगिक कचरे का विसर्जन
(B) हरियाणा द्वारा केवल सिंचाई हेतु जल का निर्गमन
(C) कृषि गतिविधियों से उत्पन्न विभिन्न सूक्ष्म प्रदूषक
(D) मथुरा व आगरा से निकलने वाले औद्योगिक अपशिष्ट

16. ठोस अपशिष्टों के निपटान के स्रोत क्या हैं?
(A) केवल घरेलू प्रतिष्ठान
(B) घरेलू और व्यावसायिक दोनों प्रतिष्ठान
(C) केवल व्यावसायिक प्रतिष्ठान
(D) केवल कृषि क्षेत्र

17. मेरठ के निकट दौराला में पारिस्थितिकी के पुनर्भरण और मानव स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए किए गए प्रयासों को सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. दौरालावासियों की दयनीय दशा ने एक जनहित सभा का ध्यान आकृष्ट किया।
2. एक गैर-सरकारी संगठन द्वारा पारिस्थितिकी पुनर्भरण के एक मॉडल की रचना।
3. घर-घर जाकर लोगों के स्वास्थ्य-स्तर संबंधी सर्वेक्षण और रिपोर्ट तैयार करना।
4. उद्योगपतियों, ग्रामीणों और जन-प्रतिनिधियों द्वारा टिकाऊ समाधान ढूंढने का प्रयास।
5. उपरली टंकी की क्षमता बढ़ाना और अतिरिक्त पाइपलाइन बिछाना।

उपरोक्त घटनाओं का सही क्रम क्या है?
(A) 1, 2, 3, 4, 5
(B) 2, 1, 3, 4, 5
(C) 1, 3, 2, 4, 5
(D) 3, 1, 2, 4, 5

18. ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर जनसंख्या के प्रवास को प्रभावित करने वाला 'अपकर्ष कारक' (pull factor) कौन सा है?
(A) नगरीय क्षेत्रों में मज़दूरों की अधिक माँग
(B) ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार के निम्न अवसर
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी
(D) ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों के बीच विकास का असंतुलित प्रारूप

19. निम्नलिखित युग्मों में से कौन सा सही सुमेलित नहीं है?
(A) वायु प्रदूषण - सल्फर के ऑक्साइड
(B) जल प्रदूषण - क्लोराइड्स
(C) ध्वनि प्रदूषण - अमोनिया
(D) भू-प्रदूषण - कीटनाशक अवशिष्ट

20. नगरीय अपशिष्ट निपटान की समस्याओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत के अधिकांश छोटे शहरों में 100% अपशिष्ट का संग्रहण और निपटान किया जाता है।
2. अनुपचारित अपशिष्ट के सड़ने से मीथेन जैसी विषाक्त गैसें निकलती हैं।
3. ठोस अपशिष्टों से टाइफाइड और हैजा जैसी स्वास्थ्य संबंधी जोखिम पैदा होते हैं।
4. औद्योगिक इकाइयों के संकेंद्रण से औद्योगिक अपशिष्टों में वृद्धि होती है।
5. अपशिष्टों को उपचारित कर ऊर्जा पैदा करने और कंपोस्ट बनाने में इस्तेमाल किया जा सकता है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) 1, 2, 3, 4 और 5

21. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन 1: भारत में, छोटे और मध्यम नगरों में रोजगार के कम अवसर उपलब्ध होने के कारण, गरीब लोग सामान्यतः महानगरों में प्रवास करते हैं।
कथन 2: महानगरों में जीवन यापन की लागत कम होती है और आवास आसानी से उपलब्ध हो जाता है।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल कथन 1
(B) केवल कथन 2
(C) कथन 1 और 2 दोनों
(D) न तो कथन 1 और न ही कथन 2

22. मानव, जल को किन क्रियाकलापों के माध्यम से प्रदूषित करता है?
(A) केवल भारी व लघु उद्योगों के माध्यम से
(B) उद्योगों, कृषि और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से
(C) केवल आधुनिक कृषि तकनीकों के माध्यम से
(D) केवल विविध सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से

23. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिए:
List I: (नदी और राज्य)
P. गंगा (उत्तर प्रदेश)
Q. यमुना (दिल्ली)
R. गंगा (बिहार)
S. यमुना (उत्तर प्रदेश)
List II: (प्रदूषण की प्रकृति)
1. दिल्ली का घरेलू एवं औद्योगिक कचरा
2. कानपुर का औद्योगिक अनुप्रवाह
3. मथुरा व आगरा में औद्योगिक अपशिष्ट
4. पटना का घरेलू कचरा
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

24. 'नगरीय अपशिष्ट' की श्रेणी में क्या शामिल नहीं है?
(A) फसल के अवशेष और पशुओं का गोबर
(B) प्लास्टिक के डिब्बे और पोलीथिन की थैलियाँ
(C) टूटे काँच के सामान और रद्दी कागज़
(D) कारखानों से निकली राख और मलबा

25. विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में लगभग कितने प्रतिशत संचारी रोग जल-जनित होते हैं?
(A) लगभग आधा
(B) लगभग एक-तिहाई
(C) लगभग एक-चौथाई
(D) लगभग तीन-चौथाई

26. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक तर्क (R) दिया गया है। उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): ध्वनि प्रदूषण स्थान विशिष्ट होता है और उसकी तीव्रता स्रोत से दूरी के साथ कम होती जाती है।
तर्क (R): औद्योगिक क्षेत्रों, परिवहन मार्गों, और हवाई अड्डों के निकट ध्वनि प्रदूषण का स्तर मुख्यमार्ग से दूर स्थित क्षेत्रों की तुलना में अधिक होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

27. 'शहरी धूम्र कुहरा' (Smog) का मुख्य कारण क्या है?
(A) जलवाष्प का संघनन
(B) उच्च तापमान
(C) वनों की कटाई
(D) वायुमंडलीय प्रदूषण

28. ग्रामीण-शहरी प्रवास के दौरान किसी व्यक्ति के लिए मुख्य 'प्रतिकर्ष कारक' (push factor) क्या हो सकता है?
(A) शहरी क्षेत्रों में निश्चित नौकरी का भरोसा
(B) परिवार की निर्धनता और ऋण का भारी बोझ
(C) पूर्व सफल उत्प्रवासियों के जीवन से प्रभावित होना
(D) बेहतर जीवन शैली और आधुनिक सुविधाओं की आकांक्षा

29. गंदी बस्तियों की समस्याओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ये न्यूनतम वांछित आवासीय क्षेत्र होते हैं।
2. इनमें स्वास्थ्य की उच्च स्तरीय सुविधाएँ और खुली हवा का अभाव होता है।
3. यहाँ पेयजल, प्रकाश तथा शौच सुविधाओं जैसी आधारभूत चीजों का अभाव होता है।
4. इन बस्तियों के निवासी मुख्यतः नगरीय अर्थव्यवस्था के संगठित क्षेत्र में कार्यरत होते हैं।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4

30. भू-निम्नीकरण को किस प्रकार परिभाषित किया गया है?
(A) भूमि की उत्पादकता में स्थायी या अस्थायी तौर पर वृद्धि
(B) भूमि पर वन आवरण का विस्तार
(C) भूमि का शहरीकरण
(D) भूमि की उत्पादकता में स्थायी या अस्थायी तौर पर कमी

31. भारत में 1961 के बाद शहरी क्षेत्रों की जनसंख्या में हुई वृद्धि में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर हुए प्रवास का कितना योगदान था?
(A) 29 प्रतिशत
(B) 60 प्रतिशत
(C) 50 प्रतिशत
(D) 10 प्रतिशत

32. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिए:
List I: (क्रियाकलाप)
P. कोयले, पेट्रोल का दहन
Q. वाहित मल निपटान
R. पीड़कनाशी एवं उर्वरकों का उपयोग
S. औद्योगिक प्रक्रम
List II: (प्रदूषण का प्रकार)
1. भू-प्रदूषण
2. वायु प्रदूषण
3. ध्वनि प्रदूषण
4. जल प्रदूषण
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

33. मुंबई की धारावी बस्ती के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता सही है?
(A) चौड़ी सड़कें और सार्वजनिक खुला स्थान
(B) अस्थायी दो से तीन मंजिल ऊँचे भवन
(C) उच्च आय वर्ग के निवासियों का सुरक्षित निवास
(D) सुविकसित हरित पार्क और खेल के आधुनिक मैदान

34. ग्रामीण-शहरी प्रवासियों द्वारा अपनी आय का मुख्य उपयोग निम्नलिखित में से किन कार्यों के लिए किया जाता है?
(A) दैनिक उपभोग, स्वास्थ्य, शिक्षा और कृषि कार्यों पर
(B) केवल व्यक्तिगत सुख-सुविधा व विलासिता की वस्तुओं पर
(C) केवल शेयर बाजार और वित्तीय परिसंपत्तियों में निवेश हेतु
(D) केवल मनोरंजन के साधनों और लंबी पर्यटन यात्राओं पर

35. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक तर्क (R) दिया गया है। उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): भारत के महानगरों जैसे मुंबई, कोलकाता में ठोस अपशिष्ट का 90 प्रतिशत एकत्रित करके निपटाया जाता है।
तर्क (R): देश के अन्य अधिकांश शहरों में, अपशिष्ट का केवल 30 से 50 प्रतिशत कचरा ही एकत्रित किया जाता है, जो स्वास्थ्य संबंधी गंभीर जोखिम पैदा करता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

36. भू-निम्नीकरण की मानवजनित प्रक्रियाओं में क्या शामिल नहीं है?
(A) स्थानांतरित कृषि
(B) खनन और औद्योगिक व्यर्थ
(C) क्षरित चरागाह
(D) प्राकृतिक खड्ड

37. औद्योगिक क्षेत्रों में भू-जल के संदूषण का मुख्य कारण क्या हो सकता है?
(A) कृषि क्षेत्र में प्रयुक्त रासायनिक उर्वरकों का प्रभाव
(B) घरेलू कचरे का अवैज्ञानिक व अनुचित ढंग से निपटान
(C) उद्योगों के अनुपचारित अपशिष्ट जल का निक्षालन
(D) भूमि के भीतर की जटिल प्राकृतिक भूगर्भीय संरचना

38. 'प्रदूषक भोगता है' (Polluter Pays) का वैश्विक नियम किस सिद्धांत पर आधारित है?
(A) प्रदूषण फैलाने वाले व्यक्तियों को राजकीय पुरस्कार देने का सिद्धांत
(B) प्रदूषण फैलाने वाले को इसके नियंत्रण हेतु जिम्मेदार मानने का नियम
(C) प्रदूषण को समाज की एक सामूहिक व अनिवार्य जिम्मेदारी मानने का विचार
(D) प्रदूषण को एक अपरिवर्तनीय प्राकृतिक प्रक्रिया के रूप में देखने का आधार

39. गंगा नदी के प्रदूषण के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. कानपुर के अनुप्रवाह में औद्योगिक प्रदूषण एक बड़ी समस्या है।
2. वाराणसी के अनुप्रवाह में भी प्रदूषण पाया जाता है।
3. नगरीय केंद्रों का घरेलू अपशिष्ट नदी में निर्मुक्त किया जाता है।
4. नदी में लाशों का विसर्जन भी प्रदूषण का एक स्रोत है।
5. फरक्का बाँध क्षेत्र में गंगा पूरी तरह से प्रदूषण मुक्त है।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 5

अध्याय 17

भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में चयनित कुछ मुद्दे एवं समस्याएँ

1. बढ़ती हुई जनसंख्या और औद्योगिक विस्तारण के कारण जल की गुणवत्ता में हुए अत्यधिक निम्नीकरण का मुख्य कारण क्या है?
(A) जल का विवेकपूर्ण उपयोग
(B) जल का अविवेकपूर्ण उपयोग
(C) जल का पुनर्चक्रण
(D) जल संरक्षण के उपाय

2. पर्यावरण प्रदूषण को किस रूप में परिभाषित किया गया है?
(A) मानवीय अपशिष्टों से मुक्त द्रव्य एवं ऊर्जा का परिणाम
(B) मानवीय क्रियाकलापों द्वारा उत्पन्न ऊर्जा का प्राकृतिक संतुलन
(C) प्राकृतिक आपदाओं से मुक्त द्रव्य एवं ऊर्जा का परिणाम
(D) केवल औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले अपशिष्टों का जमाव

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. जब जल में बाहरी पदार्थों की सांद्रता बढ़ जाती है, तो जल प्रदूषित हो जाता है।
2. प्रदूषित जल में स्वतः शुद्धीकरण की क्षमता बढ़ जाती है, जिससे वह उपयोग के योग्य बना रहता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) 1 और 2 दोनों
(D) न तो 1 और न ही 2

4. निम्नलिखित में से कौन सा उद्योग सर्वाधिक जल प्रदूषक उद्योगों की श्रेणी में आता है?
(A) सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी उद्योग
(B) खाद्य एवं पेय प्रसंस्करण संबंधित उद्योग
(C) सौर व पवन जैसे नवीकरणीय ऊर्जा उद्योग
(D) चमड़ा, लुगदी व कागज़, और वस्त्र उद्योग

5. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक तर्क (R) दिया गया है। उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभ अभिकथन (A): आधुनिक कृषि में रासायनिक पदार्थों का उपयोग जल प्रदूषण का एक प्रमुख कारण है।
तर्क (R): अकार्बनिक उर्वरक, कीटनाशक और खरपतवार नाशक जैसे रसायन नदियों और झीलों में बहा दिए जाते हैं और भू-जल तक पहुँच जाते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

6. वायु प्रदूषण के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) जीवाश्म ईंधन का दहन वायु प्रदूषण का एक प्रमुख स्रोत है।
(B) शहरी धूम्र कुहरा मानव स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है।
(C) वायु प्रदूषण से श्वसन, तंत्रिका और रक्त संचार तंत्र संबंधी बीमारियाँ होती हैं।
(D) वायु प्रदूषण के कारण अम्ल वर्षा भी हो सकती है।

7. 'नमामि गंगे' कार्यक्रम के उद्देश्यों में क्या शामिल नहीं है?
(A) शहरों में सीवर ट्रीटमेंट की व्यवस्था कराना।
(B) औद्योगिक प्रवाह की निगरानी।
(C) नदियों के तल की सफ़ाई।
(D) नदियों के किनारों पर कृषि भूमि का विस्तार करना।

8. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिए:
List I: (प्रदूषण का प्रकार)
P. वायु प्रदूषण
Q. जल प्रदूषण
R. भू-प्रदूषण
S. ध्वनि प्रदूषण

List II: (सन्निहित प्रदूषक)
1. विषाणु तथा जीवाणु
2. नाइट्रोजन ऑक्साइड
3. सहन क्षमता से अधिक ऊँची ध्वनि
4. कोलीफार्म एम पी एम

(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

9. संदूषित जल के उपयोग से होने वाली प्रमुख जल-जनित बीमारियाँ कौन सी हैं?
(A) श्वसन संक्रमण और श्वासनली शोथ
(B) नेत्रश्लेष्मला शोथ और रक्तचाप
(C) दस्त, आँतों के कृमि, और हेपेटाइटिस
(D) मधुमेह और हृदय रोग

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

50. 'स्वच्छ भारत मिशन' का एक प्रमुख उद्देश्य क्या है?
(A) शहरी गंदी बस्तियों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना
(B) केवल दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में घरेलू शौचालय बनाना
(C) केवल भारत की प्रमुख बारहमासी नदियों की सफाई करना
(D) केवल औद्योगिक इकाइयों से होने वाले प्रदूषण को पूरी तरह रोकना

51. वायु प्रदूषण के स्रोतों को उनके द्वारा उत्सर्जित प्रदूषकों से सुमेलित करने वाला कौन-सा युग्म सही है?
(A) कोयले का दहन - ऑक्सीजन
(B) ठोस कचरा निपटान - जल वाष्प
(C) औद्योगिक प्रक्रम - नाइट्रोजन ऑक्साइड
(D) वाहित मल निपटान - हाइड्रोकार्बन

52. प्रदूषकों के परिवहित एवं विसरित होने के माध्यम के आधार पर प्रदूषण के वर्गीकरण में निम्नलिखित में से कौन सा प्रकार शामिल नहीं है?
(A) जल प्रदूषण
(B) वायु प्रदूषण
(C) ध्वनि प्रदूषण
(D) प्रकाश प्रदूषण

53. झबुआ जिले के पेटलावाड विकास खंड में सामुदायिक प्रयास के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भील समुदाय ने साझी संपदा संसाधनों को पुनर्जीवित किया।
2. प्रत्येक परिवार ने चरागाह भूमि पर चारा घास बोई।
3. यह निर्णय लिया गया कि दो वर्षों तक इन जमीनों पर कोई खुली चराई नहीं होगी।
4. पशुओं की आहार पूर्ति हेतु नाँद बनाने की योजना थी।
5. समुदाय ने अतिक्रमण करने वाले को समूह से बाहर कर दिया।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 4
(D) 1, 2, 3, 4 और 5

54. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन 1: धारावी, मुंबई में केवल एक मुख्य सड़क गुजरती है, जिसे 'नाइटीफुट रोड' कहा जाता है।
कथन 2: यह सड़क अपनी पूरी लंबाई में नब्बे फुट चौड़ी है।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल कथन 1
(B) केवल कथन 2
(C) कथन 1 और 2 दोनों
(D) न तो कथन 1 और न ही कथन 2

55. निम्नलिखित में से कौन सी प्रक्रिया भू-निम्नीकरण का प्राकृतिक कारण है?
(A) खनन
(B) स्थानांतरित कृषि
(C) औद्योगिक व्यर्थ क्षेत्र
(D) मरुस्थलीय रेतीली भूमि

56. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिए:
List I: (समस्या/मुद्दा)
P. अम्ल वर्षा
Q. टाइफाइड
R. ग्रामीण-शहरी प्रवास
S. भू-क्षारता
List II: (संबंधित कारक)
1. ठोस अपशिष्ट
2. वायु प्रदूषण
3. भू-निम्नीकरण
4. रोजगार के निम्न अवसर
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

57. भारत की सर्वाधिक प्रदूषित नदी किसे माना गया है?
(A) ब्रह्मपुत्र
(B) सतलुज
(C) यमुना
(D) गोदावरी

58. ध्वनि प्रदूषण के सभी स्रोतों में से सबसे बड़ा कारण किसे माना जाता है?
(A) यातायात
(B) उद्योग
(C) लाउडस्पीकर
(D) निर्माण कार्य

59. प्रवास की प्रक्रिया के दौरान होने वाली घटनाओं को सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. स्कूली शिक्षा बीच में छोड़ना।
2. औद्योगिक क्षेत्रों में मजदूरी करना।
3. तकनीकी कौशल सीखना (जैसे वेल्डिंग)।
4. विभिन्न शहरों में कुशल श्रमिक के रूप में कार्य करना।
उपरोक्त का सही क्रम क्या है?
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 3, 2, 4

118. निम्नलिखित में से कौन-सा, भू-निम्नीकरण का प्रत्यक्ष परिणाम है?
(A) उत्पादकता में वृद्धि
(B) उत्पादकता में कमी
(C) जैव विविधता में वृद्धि
(D) भू-जल स्तर में वृद्धि

119. यमुना नदी में, सिंचाई हेतु जल के अत्यधिक निर्गमन के कारण किस क्षेत्र में प्रदूषण की समस्या सबसे गंभीर है?
(A) मथुरा व आगरा के घने आबादी वाले क्षेत्रों में
(B) फरक्का बाँध क्षेत्र और गंगा के डेल्टाई क्षेत्रों में
(C) वाराणसी का अनुप्रवाह वाले ग्रामीण नदी तटीय भागों में
(D) दिल्ली से चंबल के मिलन तक के नदी मार्ग में

120. ग्रामीण-शहरी प्रवास के माध्यम से आर्थिक सुधार प्राप्त करने वाले व्यक्ति सामान्यतः किस प्रकार के श्रम में संलग्न होते हैं?
(A) औद्योगिक और तकनीकी कुशल श्रम
(B) केवल कृषि कार्य
(C) केवल सरकारी सेवा
(D) केवल शिक्षण कार्य

121. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, उच्च आय वर्ग की सुविकसित बस्तियों की मुख्य विशेषता है?
(A) जीर्ण-शीर्ण मकान
(B) खुली हवा का अभाव
(C) चौड़ी सड़कें और व्यवस्थित स्ट्रीट लाइट
(D) आधारभूत सुविधाओं का अभाव

122. नगरीय विकास और पर्यावरणीय समस्याओं से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. नगरीय आवासों की कमी के कारण गंदी बस्तियों का उदय।
2. औद्योगिक अपशिष्ट के कारण भू-जल का संदूषण।
3. संसाधनों के प्रबंधन हेतु सामुदायिक सहभागिता का विकास।
4. रोजगार की तलाश में ग्रामीण जनसंख्या का स्थानांतरण।

उपरोक्त का सही क्रम क्या है?
(A) 4, 1, 2, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 3, 1, 4
(D) 3, 2, 4, 1

123. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन 1: शोर के स्तर को डेसीबल (dB) के संदर्भ में मापा जाता है।
कथन 2: सहन क्षमता से अधिक ऊँची ध्वनि मानव के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल कथन 1
(B) केवल कथन 2
(C) कथन 1 और 2 दोनों
(D) न तो कथन 1 और न ही कथन 2

124. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिए:
List I: (प्रदूषण का स्रोत)
P. कोयले का दहन
Q. नगरीय वाही जल
R. पीड़कनाशी का उपयोग
S. मोटर-वाहन

List II: (प्रमुख प्रदूषण प्रकार)
1. जल प्रदूषण
2. वायु प्रदूषण
3. ध्वनि प्रदूषण
4. भू-प्रदूषण

(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

125. औद्योगिक प्रदूषण से प्रभावित क्षेत्रों में समस्या के समाधान हेतु नागरिक समाज या एन.जी.ओ. द्वारा अपनाया गया प्रथम प्रभावी कदम क्या होता है?
(A) स्थानीय उद्योगपतियों और कारखानों के खिलाफ सड़कों पर प्रदर्शन करना
(B) केंद्र व राज्य सरकार से बड़े वित्तीय मुआवजे की आधिकारिक माँग करना
(C) प्रभावित क्षेत्रों में स्वास्थ्य सर्वेक्षण कर रिपोर्ट तैयार करना
(D) प्रभावित क्षेत्र को पूरी तरह खाली कर सुरक्षित स्थानों पर चले जाना

126. निम्नलिखित में से कौन सी एक पूर्णतः मानवजनित प्रक्रिया है जिसके कारण भूमि कृषि के अयोग्य हो जाती है?
(A) हिमानी क्षेत्र का विस्तार
(B) तटीय रेतीली भूमि का निर्माण
(C) प्राकृतिक खड्डों का निर्माण
(D) खनन व औद्योगिक व्यर्थ क्षेत्रों का विस्तार

127. मुंबई की धारावी बस्ती के संदर्भ निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह केंद्रीय मुंबई का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
2. इसकी गलियाँ इतनी संकरी हैं कि यहाँ वाहनों का प्रवेश अत्यंत कठिन है।
3. यहाँ के अधिकांश भवन अस्थाई प्रकृति के हैं।
4. यह क्षेत्र विविध लघु उद्योगों और शिल्प कार्यों का केंद्र है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4

स्थित होते हैं।
2. इनमें जीर्ण-शीर्ण मकान, स्वास्थ्य की निम्न सुविधाएँ और खुली हवा का अभाव होता है।
3. यहाँ आधारभूत आवश्यक चीज़ों जैसे पेयजल, प्रकाश तथा शौच सुविधाओं का अभाव होता है।
4. यहाँ के निवासी अल्प-पोषित होते हैं और उन्हें विभिन्न रोगों की संभावना बनी रहती है।
5. गरीबी उन्हें अपराध और सामाजिक बहिष्कार के प्रति उन्मुख करती है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 4 और 5
(D) 1, 2, 3, 4 और 5

71. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन 1: भारत में महात्मा गांधी ने गाँवों को 'आदर्श गणतंत्र' माना था।
कथन 2: भारत में अधिकतर ग्रामीण क्षेत्र अभी भी गरीबी और प्राथमिक क्रियाकलापों में संलग्नता जैसी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल कथन 1
(B) केवल कथन 2
(C) कथन 1 और 2 दोनों
(D) न तो कथन 1 और न ही कथन 2

72. वायु प्रदूषण के प्रमुख स्रोत निम्नलिखित में से कौन से हैं?
(A) जीवाश्म ईंधन का दहन, खनन और उद्योग
(B) वैज्ञानिक वनीकरण और व्यापक बागवानी कार्य
(C) जैविक खेती और पशुपालन के पारंपरिक तरीके
(D) वर्षा जल संचयन और सौर ऊर्जा का बड़े पैमाने पर प्रयोग

73. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक तर्क (R) दिया गया है। उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): ग्रामीण-शहरी प्रवास में अक्सर पुरुषों का प्रभुत्व देखा जाता है।
तर्क (R): गंतव्य स्थान पर मजदूरी कम होने के कारण और नौकरी की अस्थायी प्रकृति के कारण, प्रवासी अपनी पत्नियों और बच्चों को गाँव में ही छोड़ देते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

74. 'नगरीय या नगरीय केंद्र' की अवधारणा को किससे विभेदित करने के लिए परिभाषित किया गया है?
(A) ग्रामीण से
(B) औद्योगिक केंद्र से
(C) महानगर से
(D) राजधानी क्षेत्र से

75. झबुआ जिले में जल संभरण प्रबंधन कार्यक्रम के माध्यम से जिले की लगभग कितनी प्रतिशत भूमि का उपचार किया गया?
(A) 10 प्रतिशत
(B) 50 प्रतिशत
(C) 75 प्रतिशत
(D) 20 प्रतिशत

76. निम्नलिखित में से कौन-सा प्रदूषक वायु प्रदूषण से संबंधित नहीं है?
(A) कार्बन मोनोऑक्साइड
(B) कोलीफार्म एम पी एम
(C) सीसा
(D) एस्बेस्टॉस

77. निम्नलिखित पर्यावरणीय और सामाजिक कार्यक्रमों को उनके आरंभ या क्रियान्वयन के सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. झबुआ जिले में जल संभरण प्रबंधन कार्यक्रम का क्रियान्वयन।
2. औद्योगिक क्षेत्रों में पारिस्थितिकी पुनर्भरण के प्रयास।
3. 'नमामि गंगे' कार्यक्रम का आरंभ।
4. स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत।

उपरोक्त का सही क्रम क्या है?
(A) 1, 2, 4, 3
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 4, 2, 3
(D) 4, 1, 3, 2

78. निम्नलिखित युग्मों में से कौन-सा एक गलत सुमेलित है?
(A) अतिसार - जल जन्य रोग
(B) अम्ल वर्षा - वायु प्रदूषण
(C) मीथेन उत्सर्जन - नगरीय अपशिष्ट
(D) प्रतिकर्ष कारक - नगरीय क्षेत्रों में उच्च मजदूरी

79. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिए:
List I: (प्रदूषक)
P. सल्फर के ऑक्साइड
Q. नाइट्रेट
R. विषाणु तथा जीवाणु
S. उच्च डेसीबल ध्वनि

List II: (प्रमुख स्रोत)
1. अनुचित मानव क्रियाकलाप
2. उर्वरकों का उपयोग
3. कोयले का दहन
4. औद्योगिक प्रक्रम

(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4

(D) 3, 1, 2, 4

60. 'प्रतिकर्ष कारक' और 'अपकर्ष कारक' निम्नलिखित में से किसके लिए उत्तरदायी हैं?
(A) भू-निम्नीकरण के लिए
(B) प्रवास के लिए
(C) वायु प्रदूषण के लिए
(D) गंदी बस्तियों के निर्माण के लिए

61. ग्रामीण-शहरी प्रवास के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) विकासशील देशों में गरीब और अर्धशिक्षित श्रमिक ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों के असंगठित क्षेत्र में प्रवास करते हैं।
(B) गंतव्य स्थान पर मज़दूरी कम होने के कारण प्रवासी अपनी पत्नियों को गाँव में छोड़ देते हैं।
(C) ग्रामीण-नगरीय प्रवास में महिलाओं का प्रभुत्व होता है।
(D) प्रवासी अक्सर अपने परिवार का पोषण करने के लिए शहरों की ओर जाते हैं।

62. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक तर्क (R) दिया गया है। उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): जल प्रदूषण विभिन्न प्रकार की जल जनित बीमारियों का एक प्रमुख स्रोत है।
तर्क (R): संदूषित जल के उपयोग से कोई स्वास्थ्य संबंधी समस्या नहीं होती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

63. नगरीय अपशिष्ट, जिसमें कूड़ा-करकट और कबाड़ शामिल है, मुख्यतः किन दो स्रोतों से उत्पन्न होता है?
(A) घरेलू प्रतिष्ठान और व्यावसायिक प्रतिष्ठान
(B) कृषि और वन
(C) केवल अस्पताल
(D) केवल स्कूल और कॉलेज

64. ग्रामीण क्षेत्रों में पारिस्थितिकी पुनर्भरण के लिए किए गए उपायों में निम्नलिखित में से क्या शामिल हो सकता है?
1. गाँव की जलापूर्ति टंकी की क्षमता बढ़ाना।
2. समुदाय को पीने योग्य जल उपलब्ध कराने के लिए पाइपलाइन बिछाना।
3. गाँव के गाद-युक्त तालाब को साफ करना।
4. वर्षा-जल संग्रहण की संरचनाएँ बनाना।
उपरोक्त में से कौन-सा/से विकल्प सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4

65. भारत में, गंगा नदी के प्रदूषण का विषय चिंता का विषय क्यों है?
(A) क्योंकि यह केवल औद्योगिक क्षेत्रों से होकर बहती है।
(B) क्योंकि यह भारत के घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से होकर बहती है।
(C) क्योंकि इसका जल केवल सिंचाई के लिए प्रयोग होता है।
(D) क्योंकि यह भारत की सबसे छोटी नदी है।

66. अनुपचारित नगरीय अपशिष्ट के धीरे-धीरे सड़ने से वातावरण में कौन सी विषाक्त गैस शामिल होती है?
(A) मीथेन
(B) ऑक्सीजन
(C) नाइट्रोजन
(D) हीलियम

67. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिए:
List I: (स्थान/मुद्दा)
P. दौराला
Q. झबुआ
R. धारावी
S. ग्रामीण-शहरी प्रवास
List II: (विशेषता)
1. विशालतम गंदी बस्ती
2. जनसंख्या का स्थानांतरण
3. जल संभरण प्रबंधन
4. पारिस्थितिकी पुनर्भरण
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

68. भू-निम्नीकरण की कौन सी प्रक्रिया मानवजनित और प्राकृतिक दोनों हो सकती है?
(A) हिमानी क्षेत्र
(B) बंजर चट्टानी क्षेत्र
(C) तीव्र ढाल वाली भूमि
(D) जलाक्रांत व दलदली क्षेत्र

69. समुद्री यातायात में शोर की तीव्रता सामान्यतः कहाँ तक अधिक सीमित रहती है?
(A) गहरे और खुले नीले समुद्र के शांत जल क्षेत्र में
(B) तटीय शहरों के भीतरी शांत आवासीय रिहायशी क्षेत्रों में
(C) पत्तन तक, जहाँ माल चढ़ाया व उतारा जाता है
(D) अंतरराष्ट्रीय जलमार्गों के मध्य में स्थित घने गलियारों पर

70. गंदी बस्तियों की समस्याओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ये पर्यावरण की दृष्टि से बेमेल और निम्नीकृत क्षेत्रों पर

90. ठोस अपशिष्टों के लापरवाही से निपटान का क्या परिणाम होता है?
(A) यह हवा से फैलता है और बरसाती पानी के साथ छितरता है
(B) कृषि योग्य भूमि की प्राकृतिक उर्वरता में उल्लेखनीय वृद्धि
(C) आसपास के सभी जल स्रोतों का स्वतः व प्राकृतिक शुद्धीकरण
(D) स्थानीय वायु की गुणवत्ता में सुधार और सुखद वातावरण का निर्माण

91. सामुदायिक जल संभरण प्रबंधन कार्यक्रमों में सफलता का एक प्रमुख कारण क्या हो सकता है?
(A) सरकार द्वारा सभी अवैध अतिक्रमणकारियों को कठोरता से दंडित करना
(B) सभी सार्वजनिक साझी जमीन को बड़ी निजी कंपनियों को लाभ हेतु बेचना
(C) बाहरी विशेषज्ञों की सहायता लेने से पूरी तरह और स्पष्ट रूप से इनकार करना
(D) अतिक्रमणकारी को प्रयोक्ता समूह में शामिल कर लाभांश देना

92. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिए:
List I: (स्थान)
P. कानपुर
Q. दिल्ली
R. मथुरा
S. कोलकाता
List II: (नदी और प्रमुख प्रदूषक)
1. यमुना - घरेलू एवं औद्योगिक कचरा
2. गंगा - औद्योगिक अनुप्रवाह
3. गंगा - घरेलू कचरा
4. यमुना - औद्योगिक अपशिष्ट
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

93. भारत में नगरीय अपशिष्ट निपटान एक गंभीर समस्या क्यों बनी हुई है?
(A) क्योंकि सभी छोटे-बड़े शहरों में 100% कचरा एकत्र कर लिया जाता है
(B) क्योंकि सभी कचरे को अनिवार्य रूप से ऊर्जा बनाने हेतु उपयोग किया जाता है
(C) क्योंकि अधिकांश शहरों में अपशिष्ट का एक बड़ा हिस्सा छूट जाता है
(D) क्योंकि छोड़े गए कचरे से मानव स्वास्थ्य को कोई गंभीर खतरा नहीं होता है

94. 'नमामि गंगे' कार्यक्रम के अंतर्गत किन राज्यों में 'गंगा ग्राम' विकसित करने की योजना प्रस्तावित है?
(A) केवल उत्तर भारत के उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में
(B) केवल पूर्वी भारत के बिहार और झारखंड के औद्योगिक जिलों के आसपास
(C) केवल पश्चिम बंगाल के सुंदरवन और डेल्टा क्षेत्र के तटीय ग्रामीण इलाकों में
(D) उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, और झारखंड के चयनित क्षेत्रों में

95. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक तर्क (R) दिया गया है। उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): भारत में नगरीय केंद्र सामाजिक और आर्थिक संकेतकों में अत्यधिक विविधतापूर्ण हैं।
तर्क (R): नगरीय केंद्रों में एक ओर उच्च आय वर्ग की सुविकसित बस्तियाँ हैं तो दूसरी ओर झुग्गी-बस्तियाँ और गंदी बस्तियाँ हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

96. गर्मियों के पश्चात् पहली बरसात में वर्षा जल के पी.एच. (pH) का स्तर कम होने का मुख्य कारण क्या है?
(A) वायुमंडल में जलवाष्प की अत्यधिक सघनता होना
(B) वायुमंडलीय संचित प्रदूषकों का वर्षा जल में घुलना
(C) सतह के तापमान का असामान्य रूप से बहुत अधिक होना
(D) वायुमंडल में मौजूद धूल कणों की व्यापक उपस्थिति होना

97. ग्रामीण प्रवासियों को शहरों में रोजगार की तलाश के लिए मुख्य रूप से कौन मार्गदर्शन प्रदान करता है?
(A) परिवार के सदस्य
(B) पूर्व में प्रवास कर चुके मित्र और परिचित
(C) निजी ठेकेदार
(D) सरकारी रोजगार एजेंसियाँ

98. जल संभरण प्रबंधन कार्यक्रम मुख्य रूप से किन प्राकृतिक घटकों के बीच संबद्धता को पहचानता है?
(A) भूमि, जल और वनस्पति
(B) उद्योग, शहर और गाँव
(C) सड़क, रेल और वायुमार्ग
(D) सरकार, गैर-सरकारी संगठन और निजी कंपनियाँ

99. वायु प्रदूषण के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वायु प्रदूषण में धूल, धुआँ, गैसें, कुहासा, और वाष्प जैसे संदूषक शामिल होते हैं।
2. जीवाश्म ईंधन का दहन वायु प्रदूषण का एक प्रमुख

उपरोक्त का सही क्रम क्या है?
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 4, 3, 2, 1

137. शहरी क्षेत्रों में 'अपशिष्ट संग्रहण एवं निपटान' का प्राथमिक उत्तरदायित्व किस संस्था का होता है?
(A) केंद्र सरकार
(B) निजी सुरक्षा एजेंसियाँ
(C) स्थानीय नगरपालिका या नगर निगम
(D) राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड

138. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिए:
List I: (क्षेत्र/समस्या)
P. दिल्ली (यमुना)
Q. कानपुर (गंगा)
R. मध्य प्रदेश के पिछड़े जिले
S. मेरठ के औद्योगिक क्षेत्र
List II: (प्रमुख कारण)
1. औद्योगिक अनुप्रवाह का विसर्जन
2. घरेलू और औद्योगिक कचरे का मिश्रण
3. अनुपचारित औद्योगिक जल का निक्षालन
4. प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-1, Q-2, R-3, S-4
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

139. नए परिवेश में प्रवास करने वाले व्यक्तियों को शुरुआती दौर में किन मुख्य चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?
(A) अत्यधिक धनार्जन की सुलभता और समाज में उच्च प्रतिष्ठा की तत्काल प्राप्ति
(B) सरकारी सहायता और जनकल्याणकारी योजनाओं की प्रचुरता व तत्काल उपलब्धता
(C) नए स्थान पर आवास की तत्काल, सुव्यवस्थित और स्थाई रूप से उपलब्धता होना
(D) सीमित संसाधनों के साथ निर्वाह और नई संस्कृति के साथ समायोजन

140. भू-निम्नीकरण के लिए उत्तरदायी कारकों के संबंध में कौन सा कथन सर्वोपयुक्त है?
(A) यह पूरी तरह से एक अपरिहार्य और दुखद प्राकृतिक आपदा का उदाहरण है
(B) प्राकृतिक प्रक्रियाओं और अनियंत्रित मानवीय क्रियाकलापों का परिणाम
(C) यह आधुनिक औद्योगिक विकास और नगरीकरण का एक अनिवार्य नकारात्मक परिणाम है
(D) यह केवल कृषि क्षेत्र और ग्रामीण भूमि के प्रबंधन से संबंधित एक सीमित समस्या है

141. गंदी बस्तियों की विशेषताओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यहाँ आवासों की स्थिति अत्यंत दयनीय और जीर्ण-शीर्ण होती है।
2. यहाँ स्वच्छता, प्रकाश और पेयजल जैसी बुनियादी सुविधाओं का घोर अभाव होता है।
3. घनी आबादी के कारण यहाँ बीमारियों के फैलने की संभावना अधिक होती है।
4. यहाँ के निवासियों का जीवन स्तर उच्च और आय स्थिर होती है।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4

142. 'गंगा ग्राम' की परिकल्पना किस राष्ट्रीय मिशन के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए की गई है?
(A) स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण)
(B) स्मार्ट सिटी मिशन
(C) डिजिटल इंडिया मिशन
(D) नमामि गंगे कार्यक्रम

143. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक तर्क (R) दिया गया है। उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): नगरीय अपशिष्ट को केवल समस्या न मानकर इसे एक संसाधन के रूप में देखा जा सकता है।
तर्क (R): वैज्ञानिक उपचार के माध्यम से अपशिष्ट से ऊर्जा उत्पादन और जैविक खाद का निर्माण संभव है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

144. वायु प्रदूषण के लिए उत्तरदायी 'हाइड्रोकार्बन' का मुख्य स्रोत क्या है?
(A) ग्रामीण क्षेत्रों में खाना पकाने हेतु लकड़ी का अनियंत्रित दहन
(B) जीवाश्म ईंधन (पेट्रोल, डीजल, कोयला) का अधूरा दहन
(C) वर्षा जल को संग्रहित करने वाली पुरानी और खंडहर जल संचयन प्रणालियाँ
(D) खुले खेतों में कृषि अपशिष्टों का प्राकृतिक रूप से सड़ना और गलना

145. ठोस अपशिष्टों के असुरक्षित निपटान से निम्नलिखित में से कौन सी बीमारियाँ फैलने की अधिक आशंका होती है?
(A) हृदय रोग और मधुमेह
(B) टाइफाइड, हैजा और डिप्थीरिया
(C) विटामिन की कमी से होने वाले रोग

(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

109. ध्वनि प्रदूषण के प्रमुख स्रोतों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मशीनीकृत निर्माण तथा तोड़-फोड़ कार्य।
2. तीव्रचालित मोटर-वाहन और वायुयान।
3. सायरन और लाउडस्पीकर।
4. सामुदायिक गतिविधियों से जुड़े उत्सव।
5. शांत पुस्तकालय और ध्यान केंद्र।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

(A) केवल 1, 2, 3 और 4
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1 और 2
(D) 1, 2, 3, 4 और 5

110. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: औद्योगिक कचरे को बहते जल में विसर्जित करने से विषाक्त रासायनिक तत्व जलाशयों में पहुँच जाते हैं।

कथन 2: ये विषाक्त तत्व जल में रहने वाली जैव प्रणाली के लिए अत्यंत हानिकारक होते हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(A) केवल कथन 1
(B) केवल कथन 2
(C) कथन 1 और 2 दोनों
(D) न तो कथन 1 और न ही कथन 2

111. वायु प्रदूषण से मानव शरीर के कौन-से तंत्र मुख्य रूप से प्रभावित होते हैं?

(A) श्वसन तंत्रीय, तंत्रिका तंत्रीय तथा रक्त संचारतंत्र को
(B) केवल शरीर के ऊपरी अंगों के श्वसन तंत्रीय भाग को
(C) केवल मस्तिष्क के संवेदनशील तंत्रिका तंत्रीय भाग को
(D) केवल हृदय और रक्त संचारतंत्र के कार्यों को व्यापक रूप से

112. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिए:

List I: (अवधारणा)

P. प्रतिकर्ष कारक
Q. अपकर्ष कारक
R. जल जनित रोग
S. वायु जनित रोग

List II: (उदाहरण)

1. नगरीय क्षेत्रों में मज़दूरों की अधिक माँग
2. ग्रामीण क्षेत्रों में रोज़गार के निम्न अवसर
3. श्वसन संक्रमण
4. हेपेटाइटिस

(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

113. 'नाइटीफुट रोड' (Ninety Foot Road) किस प्रसिद्ध नगरीय बस्ती के मध्य से गुज़रती है?

(A) झबुआ
(B) धारावी
(C) दौराला
(D) पेटलावाड

114. प्रदूषण के प्रकार और उनके प्रमुख प्रदूषक का कौन सा युग्म सही नहीं है?

(A) ध्वनि प्रदूषण - एस्बेस्टॉस
(B) वायु प्रदूषण - हाइड्रो कार्बन
(C) जल प्रदूषण - टैनिन
(D) भू-प्रदूषण - रेडियोधर्मी पदार्थ

115. नगरीय समस्याओं और प्रवास के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत में ग्रामीण-नगरीय प्रवास में प्रायः पुरुषों की संख्या अधिक होती है।
2. प्रवास की अस्थाई प्रकृति के कारण श्रमिक अक्सर अपने परिवार को साथ नहीं रख पाते।
3. गंदी बस्तियों में जनसंख्या का अत्यधिक जमाव होता है।
4. गंदी बस्तियों के निवासी मुख्य रूप से संगठित क्षेत्र में उच्च वेतन पर कार्यरत होते हैं।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1 और 4
(D) 1, 2, 3 and 4

116. भारत में, ग्रामीण क्षेत्र नगरीय केंद्रों के लिए मुख्य रूप से क्या भूमिका निभाते हैं?

(A) उनके प्रतिस्पर्धी के रूप में
(B) उनसे स्वतंत्र इकाइयों के रूप में
(C) उनके प्रशासनिक नियंत्रक के रूप में
(D) उनके पृष्ठप्रदेश (Hinterland) के सहायक या परिशिष्ट के रूप में

117. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक तर्क (R) दिया गया है। उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:

अभिकथन (A): नगरीय क्षेत्रों के आसपास औद्योगिक इकाइयों के संकेंद्रण से औद्योगिक अपशिष्टों में वृद्धि होती है।

तर्क (R): औद्योगिक कचरे को नदियों में सीधे विसर्जित करने से प्रदूषण की समस्या का स्थाई समाधान हो जाता है।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

स्रोत है।
3. वायु प्रदूषण से केवल श्वसन संबंधी बीमारियाँ होती हैं।
4. वायु प्रदूषण के कारण अम्ल वर्षा नहीं हो सकती है।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4

100. गंदी बस्तियों में रहने वाले बच्चे अक्सर औपचारिक शिक्षा से वंचित क्यों रह जाते हैं?
(A) क्योंकि उनके अभिभावक शिक्षा को महत्व नहीं देते।
(B) क्योंकि उन क्षेत्रों में स्कूलों की उपलब्धता नहीं होती।
(C) क्योंकि बच्चों की पढ़ाई में रुचि नहीं होती।
(D) क्योंकि गरीबी के कारण वे शिक्षा का खर्च वहन नहीं कर पाते

101. निम्नलिखित में से कौन-सा एक, नगरीय अपशिष्टों के कारण होने वाला प्रत्यक्ष स्वास्थ्य संबंधी जोखिम नहीं है?
(A) टाइफाइड
(B) डिप्थीरिया
(C) हेपेटाइटिस
(D) हैजा

102. निम्नलिखित सूचियों को सुमेलित कीजिए:
List I: (गंदी बस्ती की समस्या)
P. जीर्ण-शीर्ण मकान
Q. अल्प-पोषण
R. सामाजिक बहिष्कार
S. शौच सुविधाओं का अभाव

List II: (परिणाम/विशेषता)
1. स्वास्थ्य समस्या
2. आधारभूत सुविधाओं का अभाव
3. सामाजिक समस्या
4. आवास की निम्न गुणवत्ता

(A) P-4, Q-1, R-3, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

103. मुंबई की धारावी बस्ती भौगोलिक रूप से किस प्रकार विकसित हुई है?
(A) एक ऊँची पहाड़ी की चोटी पर स्थित समतल मैदानी भाग पर
(B) एक बड़ी नदी के किनारे स्थित रेतीले और दलदली भाग पर
(C) एक पुराने घने वर्षा वना के बीच स्थित उजाड़ प्राकृतिक क्षेत्र में
(D) अपशिष्ट और कचरे से भरी गई सागर की दलदली भूमि पर

104. ग्रामीण प्रवासियों के लिए अपनी पत्नी और बच्चों को शहरों में साथ रखना कठिन क्यों होता है?
(A) क्योंकि शहरों में नौकरी अक्सर अस्थायी और कम वेतन वाली होती है
(B) क्योंकि परिवार गाँव के पारंपरिक वातावरण को अधिक प्राथमिकता देता है
(C) क्योंकि प्रमुख शहरी क्षेत्रों में नए प्रवासियों के लिए आवास प्रतिबंधित हैं
(D) क्योंकि उनका मासिक वेतन और आय का स्तर अत्यधिक व पर्याप्त होता है

105. मानव भूगोल के अध्ययन में, विभिन्न देशों द्वारा अपनी प्रशासनिक आवश्यकताओं के अनुसार किस अवधारणा को अलग-अलग तरीके से परिभाषित किया गया है?
(A) 'ग्रामीण' की अवधारणा
(B) 'प्रदूषण' की अवधारणा
(C) 'नगरीय या नगरीय केंद्र' की अवधारणा
(D) 'संसाधन' की अवधारणा

106. सामुदायिक विकास की प्रक्रियाओं को सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. साझी संपदा संसाधनों का पुनर्जीवन।
2. चरागाह भूमि पर चारे का रोपण।
3. खुली चराई पर सामाजिक घेराबंदी (प्रतिबंध)।
4. पशुओं के लिए जल और आहार की व्यवस्था।
5. अतिक्रमकों को समूह का सदस्य बनाकर लाभांश साझा करना।

उपरोक्त का सही क्रम क्या है?
(A) 1, 2, 3, 4, 5
(B) 5, 1, 2, 3, 4
(C) 1, 5, 2, 3, 4
(D) 2, 3, 1, 4, 5

107. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) वायु प्रदूषण का स्रोत - विज्ञापन मीडिया
(B) जल प्रदूषण का स्रोत - रेलगाड़ियाँ
(C) भू-प्रदूषण का स्रोत - मोटर-वाहन
(D) ध्वनि प्रदूषण का स्रोत - औद्योगिक प्रक्रम

108. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक तर्क (R) दिया गया है। उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): यद्यपि जल प्रदूषण प्राकृतिक स्रोतों से भी होता है, तथापि मानव क्रियाकलापों से उत्पन्न होने वाले प्रदूषक चिंता के वास्तविक कारण हैं।
तर्क (R): प्राकृतिक प्रदूषक जैसे अपरदन और भू-स्खलन, औद्योगिक प्रदूषकों की तुलना में अधिक हानिकारक होते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।

128. यदि कोई नगरीय निकाय अपने ठोस अपशिष्ट का एक बड़ा हिस्सा एकत्रित करने में विफल रहता है, तो इसका तात्कालिक परिणाम क्या होगा?
(A) पूरे शहर की सौंदर्यता और स्वच्छता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी
(B) कचरा जमा होने से संक्रामक बीमारियों का खतरा बढ़ जाएगा
(C) अपशिष्ट से ऊर्जा और खाद का उत्पादन और भी अधिक सुगम होगा
(D) स्थानीय वायु की गुणवत्ता में सुधार और प्रदूषण का स्तर कम होगा

129. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक तर्क (R) दिया गया है। उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): भू-निम्नीकरण प्राकृतिक और मानवजनित दोनों प्रक्रियाओं का परिणाम है।
तर्क (R): आधुनिक काल में मानवीय हस्तक्षेप के कारण व्यर्थ भूमि के विस्तार की दर प्राकृतिक प्रक्रियाओं की तुलना में अधिक रही है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

130. जल प्रदूषण के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) जल में अवांछित बाहरी पदार्थों की उच्च सांद्रता इसे प्रदूषित बनाती है
(B) प्राकृतिक जल स्रोत हमेशा संदूषण से मुक्त होते हैं
(C) जल में अकार्बनिक पदार्थों की उपस्थिति हमेशा जल की गुणवत्ता बढ़ाती है
(D) प्रदूषित जल का जलीय जीव-जंतुओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है

131. गंगा नदी के मार्ग में आने वाले बड़े औद्योगिक नगरों में प्रदूषण का प्राथमिक कारण क्या है?
(A) केवल आसपास के क्षेत्रों से आने वाले विभिन्न कृषि अपशिष्ट
(B) केवल नदी के किनारों पर होने वाली विविध धार्मिक गतिविधियाँ
(C) घरेलू सीवेज और औद्योगिक अपशिष्ट का सीधा जल विसर्जन
(D) जल परिवहन और मछली पकड़ने की अनियंत्रित मानवीय गतिविधियाँ

132. प्रवास के संदर्भ में 'प्रतिकर्ष कारक' (Push Factor) को किस प्रकार समझा जा सकता है?
(A) शहर में उपलब्ध बेहतर जीवन स्तर और आधुनिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति
(B) शहरों की तड़क-भड़क और चमक-धमक वाली जीवनशैली से प्रभावित होना
(C) बड़े शहरों में स्थित बेहतर शैक्षिक संस्थानों और कॉलेजों की उपलब्धता
(D) ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिकूल परिस्थितियाँ जैसे रोजगार का अभाव

133. ध्वनि प्रदूषण के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह विभिन्न स्रोतों से उत्पन्न होने वाली असहज और तीव्र ध्वनि है।
2. शहरी क्षेत्रों में यातायात शोर का सबसे प्रमुख स्रोत है।
3. समुद्री पत्तनों पर शोर की तीव्रता तुलनात्मक रूप से अधिक होती है।
4. ध्वनि प्रदूषण से केवल सुनने की क्षमता प्रभावित होती है।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4

134. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन 1: भारत में महानगरों की ओर होने वाला प्रवास छोटे नगरों की तुलना में बहुत अधिक है।
कथन 2: छोटे नगरों में रोजगार और जीवन यापन की सुविधाओं का अभाव प्रवासियों को महानगरों की ओर धकेलता है।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल कथन 1
(B) केवल कथन 2
(C) कथन 1 और 2 दोनों
(D) न तो कथन 1 और न ही कथन 2

135. वायु प्रदूषण और अम्ल वर्षा के अंतर्संबंध के बारे में सही कथन चुनिए:
(A) अम्ल वर्षा केवल ग्रामीण और कृषि क्षेत्रों की एक मुख्य पर्यावरणीय समस्या है
(B) यह मुख्य रूप से वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड की अधिकता के कारण होती है
(C) इससे प्रभावित क्षेत्रों की मृदा की प्राकृतिक उर्वरता में काफी सुधार होता है
(D) सल्फर और नाइट्रोजन के ऑक्साइडों का जलवाष्प के साथ मिलना

136. पर्यावरणीय प्रदूषण की प्रक्रिया को सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. मानवीय और औद्योगिक क्रियाकलापों से अपशिष्ट का उत्पादन।
2. अपशिष्ट पदार्थों का भूमि, वायु या जल में विसर्जन।
3. प्राकृतिक संसाधनों की गुणवत्ता में गिरावट।
4. मानव स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी पर प्रतिकूल प्रभाव।

(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

80. भू-निम्नीकरण के वर्गीकरण में किसे 'प्राकृतिक' श्रेणी में नहीं रखा जाता है?
(A) प्राकृतिक खड्ड
(B) स्थानांतरित कृषि जनित क्षेत्र
(C) मरुस्थलीय रेतीली भूमि
(D) हिमानी क्षेत्र

81. जल प्रदूषण के प्राकृतिक स्रोतों में क्या शामिल है?
(A) औद्योगिक कचरा और वाहित मल
(B) अपरदन, भू-स्खलन और पेड़-पौधों का सड़ना-गलना
(C) रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक
(D) नाभिकीय ऊर्जा संयंत्रों से निकलने वाला कचरा

82. मध्य प्रदेश के झबुआ जिले के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. झबुआ जिला भारत के पिछड़े जिलों में से एक रहा है।
2. यहाँ की आर्थिक समस्याओं का एक कारण जंगल एवं भूमि संसाधनों का निम्नीकरण है।
3. यहाँ जल संभरण प्रबंधन कार्यक्रम सरकारी सहायता से संचालित किया गया।
4. इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लोगों की आजीविका को सुधारना है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4

83. ध्वनि प्रदूषण की तीव्रता और प्रकृति किन घटकों पर निर्भर करती है?
(A) केवल सड़क पर चलने वाले भारी वाहन के प्रकार पर
(B) केवल नगरीय क्षेत्रों की मुख्य सड़कों की वर्तमान दशा पर
(C) वाहन के प्रकार, सड़कों की दशा और वाहन की स्थिति पर
(D) केवल दिन के समय और ध्वनि मापने के विशिष्ट उपकरणों पर

84. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन 1: गंदी बस्तियाँ बड़े महानगरों के निर्माण और उनकी अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
कथन 2: इन क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर मृत्तिका शिल्प, कसीदाकारी, और आभूषण जैसे मूल्यवान सामान तैयार किए जाते हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल कथन 1
(B) केवल कथन 2
(C) कथन 1 और 2 दोनों
(D) न तो कथन 1 और न ही कथन 2

85. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक तर्क (R) दिया गया है। उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): नगरीय एवं अनगरीय बस्तियाँ अपने प्राकार्यों में भिन्न होती हैं और कई बार एक दूसरे के पूरक होती हैं।
तर्क (R): भारत में नगरीय केंद्र और ग्रामीण क्षेत्र एक समान सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक वातावरण में विकसित हुए हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

86. उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग धरातलीय जल में किस पदार्थ की मात्रा को बढ़ा देता है?
(A) क्लोराइड
(B) नाइट्रेट
(C) फ्लोराइड
(D) सल्फेट

87. भारत में 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग कितनी प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती थी?
(A) 50%
(B) 75%
(C) 82%
(D) 69%

88. निम्नलिखित में से कौन सी समस्या गंदी बस्तियों से संबंधित नहीं है?
(A) सुविकसित हरित-पट्टियाँ और आधुनिक खेल के मैदान
(B) गंभीर अल्प-पोषण और संक्रामक बीमारियों का फैलाव
(C) बच्चों के लिए उचित और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव
(D) नशीली दवाओं का सेवन, शराब और अपराध की बढ़ती प्रवृत्ति

89. भू-निम्नीकरण के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भू-निम्नीकरण का अभिप्राय भूमि की उत्पादकता की कमी है।
2. भू-निम्नीकरण केवल प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा होता है।
3. मृदा अपरदन, लवणता तथा भू-क्षारता भू-निम्नीकरण के कारण हैं।
4. सभी निम्नकोटि भूमियाँ व्यर्थ भूमि होती हैं।
5. अनियंत्रित प्रक्रियाएँ उपजाऊ भूमि को व्यर्थ भूमि में परिवर्तित कर सकती हैं।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 3 और 5
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 2, 4 और 5
(D) 1, 2, 3, 4 और 5

(D) आनुवंशिक विकार

146. यदि किसी जल निकाय की 'स्वतः शुद्धीकरण क्षमता' नष्ट हो गई है, तो इसका वैज्ञानिक अभिप्राय क्या है?
(A) प्रदूषकों की मात्रा बहुत अधिक होने से प्राकृतिक सफाई संभव नहीं
(B) जल में मछलियों और अन्य जलीय जीवों की कुल संख्या अचानक बढ़ गई है
(C) जल निकाय में केवल शुद्ध वर्षा का ताजा पानी ही प्रचुरता में जमा है
(D) वह जल पूरी तरह से शुद्ध और मानवीय उपभोग के लिए शत-प्रतिशत योग्य है

147. संदूषित जल और जल-जनित रोगों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में संचारी रोगों का एक बड़ा हिस्सा जल प्रदूषण के कारण होता है।
2. दूषित जल के उपयोग से पाचन तंत्र संबंधी गंभीर समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।
3. औद्योगिक अपशिष्टों का शुद्धिकरण जल-जनित रोगों को रोकने में सहायक होता है।
4. केवल समुद्री जल का संदूषण ही मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4

148. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन 1: अत्यधिक घनी और अनियोजित बस्तियों में गलियाँ इतनी संकरी होती हैं कि वहाँ सामान्य परिवहन संभव नहीं हो पाता।
कथन 2: ऐसी बस्तियों में बुनियादी ढांचे का विकास सरकारी नियमों के अनुसार व्यवस्थित रूप से किया जाता है।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल कथन 1
(B) केवल कथन 2
(C) कथन 1 और 2 दोनों
(D) न तो कथन 1 और न ही कथन 2

149. नगरीय सांख्यिकी में 'निवल अप्रवास' (Net In-migration) से क्या तात्पर्य है?
(A) शहर की सीमा के भीतर जन्म लेने वाले सभी बच्चों की वास्तविक कुल संख्या
(B) ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं के कारण मृत्यु दर में होने वाली भारी कमी
(C) शहर में आने वाले और बाहर जाने वालों के बीच का धनात्मक अंतर
(D) शहरी सीमा के भीतर स्थाई रूप से रहने वाले मूल और पैतृक निवासियों की संख्या

150. प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन और सामुदायिक सहभागिता का अंतिम सामाजिक-आर्थिक लक्ष्य क्या होना चाहिए?
(A) केवल पर्यावरण के आंकड़ों का संकलन।
(B) स्थानीय निवासियों की आजीविका और जीवन स्तर में स्थाई सुधार।
(C) केवल सरकारी फंड का अधिकतम उपयोग।
(D) प्राकृतिक क्षेत्रों को पूरी तरह मानव-मुक्त बनाना।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
जल प्रदूषण को उसके उद्गम स्रोतों के आधार पर दो मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है: बिंदु स्रोत और गैर-बिंदु स्रोत प्रदूषण। बिंदु स्रोत प्रदूषण उन स्रोतों से होता है जिनकी पहचान एक विशिष्ट स्थान पर की जा सकती है, जैसे कि औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले बहिःस्राव पाइप, नगर निगम के सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट, या तेल टैंकर। इन स्रोतों से निकलने वाले प्रदूषकों की प्रकृति और मात्रा का अनुमान लगाना और उन्हें नियंत्रित करना अपेक्षाकृत सरल होता है। इसके विपरीत, गैर-बिंदु स्रोत प्रदूषण एक विस्तृत और विसरित क्षेत्र से आता है और इसे किसी एक स्थान से जोड़ा नहीं जा सकता। इसके प्रमुख उदाहरणों में कृषि भूमि से होने वाला रासायनिक अपवाह (जिसमें उर्वरक, कीटनाशक शामिल हैं), शहरी क्षेत्रों की सड़कों से बहने वाला तूफानी जल (जिसमें तेल, भारी धातुएँ और अन्य मलबे होते हैं) और निर्माण स्थलों से होने वाला तलछट का बहाव शामिल है। पोषक तत्वों, विशेष रूप से नाइट्रेट और फॉस्फेट, की अधिकता से होने वाला सुपोषण (यूट्रोफिकेशन) गैर-बिंदु स्रोत प्रदूषण का एक गंभीर परिणाम है, जिससे शैवाल प्रस्फुटन (algal blooms), जलीय ऑक्सीजन में कमी (हाइपोक्सिया) और 'मृत क्षेत्रों' (dead zones) का निर्माण होता है। गैर-बिंदु स्रोतों का प्रबंधन उनकी विसरित प्रकृति के कारण कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण होता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. निम्नलिखित में से कौन सा बिंदु स्रोत प्रदूषण का एक उदाहरण है?
(A) कृषि भूमि से उर्वरकों का अपवाह
(B) एक कारखाने के निकास पाइप से रासायनिक निर्वहन
(C) शहर की सड़कों से तूफानी जल का बहाव
(D) एक बड़े वन क्षेत्र से तलछट का क्षरण

152. गैर-बिंदु स्रोत प्रदूषण को प्रबंधित करना क्यों अधिक चुनौतीपूर्ण है?
(A) क्योंकि यह एक विस्तृत और विसरित क्षेत्र से उत्पन्न होता है।
(B) क्योंकि यह केवल औद्योगिक क्षेत्रों में होता है।
(C) क्योंकि इसमें केवल ठोस अपशिष्ट शामिल होते हैं।
(D) क्योंकि इसका जलीय जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

54. (A) केवल कथन 1
मुंबई की धारावी बस्ती के मध्य से गुजरने वाली एकमात्र मुख्य सड़क को नाइटीफुट रोड के नाम से जाना जाता है। हालांकि इसका नाम नब्बे फुट है, लेकिन यह अपनी पूरी लंबाई में इतनी चौड़ी नहीं है। अत्यधिक अतिक्रमण और घनी बसावट के कारण यह सड़क कई स्थानों पर बहुत संकरी हो गई है। यह सड़क स्लम क्षेत्र की भौगोलिक जटिलताओं और अनियोजित शहरी विकास का एक प्रमुख उदाहरण प्रस्तुत करती है।

55. (D) मरुस्थलीय रेतीली भूमि
भू-निम्नीकरण के प्राकृतिक कारणों में मरुस्थलीय रेतीली भूमि का विस्तार प्रमुख है, जो जलवायु और हवा के बहाव जैसी प्राकृतिक प्रक्रियाओं द्वारा निर्धारित होता है। इसके विपरीत, खनन, स्थानांतरित कृषि और औद्योगिक कचरे का जमाव पूरी तरह से मानवजनित गतिविधियाँ हैं जो भूमि की उर्वरता को नष्ट करती हैं। प्राकृतिक कारणों से होने वाला निम्नीकरण अक्सर भौगोलिक संरचना का हिस्सा होता है, जबकि मानवजनित निम्नीकरण को रोका जा सकता है।

56. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
विभिन्न पर्यावरणीय और सामाजिक समस्याओं का उनके मूल कारकों से सीधा संबंध है। अम्ल वर्षा वायु प्रदूषण का परिणाम है, जबकि टाइफाइड ठोस अपशिष्टों और संदूषित जल से फैलता है। ग्रामीण-शहरी प्रवास के पीछे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के निम्न अवसर एक प्रमुख कारण हैं। भू-क्षारता और लवणता भू-निम्नीकरण की प्रक्रिया के हिस्से हैं जो भूमि की कृषि उत्पादकता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

57. (C) यमुना
यमुना नदी को भारत की सर्वाधिक प्रदूषित नदी माना जाता है, विशेष रूप से दिल्ली और उत्तर प्रदेश के औद्योगिक क्षेत्रों में। दिल्ली से चंबल के संगम तक का इसका मार्ग घरेलू सीवेज और औद्योगिक अपशिष्टों के विसर्जन के कारण अत्यधिक संदूषित है। इस मार्ग में जल की स्वतः शुद्धीकरण क्षमता लगभग समाप्त हो चुकी है। यह प्रदूषण न केवल जलीय जीवन को नष्ट कर रहा है, बल्कि स्वास्थ्य संकट भी बढ़ा रहा है।

58. (A) यातायात
आधुनिक समय में ध्वनि प्रदूषण का सबसे बड़ा और व्यापक कारण यातायात को माना जाता है। सड़कों पर बढ़ते मोटर-वाहनों, तीव्र हार्न और इंजन की आवाज़ निरंतर शोर उत्पन्न करती है। इसके अतिरिक्त, रेलवे और हवाई यातायात भी ध्वनि प्रदूषण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। शहरी क्षेत्रों में बढ़ता यातायात घनत्व लोगों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है, जिससे तनाव और सुनने की शक्ति में कमी आती है।

59. (A) 1, 2, 3, 4
प्रवास की प्रक्रिया में कौशल विकास और आर्थिक प्रगति का एक निश्चित क्रम देखा जाता है। अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों के युवा स्कूली शिक्षा बीच में छोड़कर रोजगार की तलाश में शहरों की ओर जाते हैं। शुरुआत में वे औद्योगिक क्षेत्रों में अकुशल मजदूर के रूप में कार्य करते हैं। अनुभव के साथ वे वेल्डिंग जैसे तकनीकी कौशल सीखते हैं और अंततः विभिन्न शहरों में कुशल श्रमिक के रूप में स्थापित होते हैं।

60. (B) प्रवास के लिए
प्रवास की प्रक्रिया को समझने के लिए प्रतिकर्ष और अपकर्ष कारक अनिवार्य हैं। प्रतिकर्ष कारक वे प्रतिकूल परिस्थितियाँ हैं जो लोगों को अपना निवास स्थान छोड़ने पर मजबूर करती हैं, जैसे गरीबी। अपकर्ष कारक शहरों की वे सुविधाएँ हैं जो लोगों को आकर्षित करती हैं, जैसे बेहतर रोजगार और स्वास्थ्य सेवाएँ। इन दोनों कारकों का अंतर्संबंध ही जनसंख्या के एक स्थान से दूसरे स्थान पर होने वाले स्थानांतरण को निर्धारित करता है।

61. (C) ग्रामीण-नगरीय प्रवास में महिलाओं का प्रभुत्व होता है।
विकासशील देशों में ग्रामीण-शहरी प्रवास में सामान्यतः पुरुषों का प्रभुत्व होता है, महिलाओं का नहीं। पुरुष रोजगार की तलाश में शहरों की ओर जाते हैं, जबकि कम मजदूरी और अस्थाई नौकरियों के कारण महिलाएँ और बच्चे गाँवों में ही रह जाते हैं। प्रवासी अक्सर अपनी आय का बड़ा हिस्सा परिवार के भरण-पोषण के लिए घर भेजते हैं। अतः यह प्रवास प्रारूप मुख्य रूप से आर्थिक विवशता और लिंग आधारित होता है।

62. (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
जल प्रदूषण मानव स्वास्थ्य के लिए एक गंभीर संकट है और यह विभिन्न जल-जनित बीमारियों जैसे दस्त, हैजा और हेपेटाइटिस का मुख्य स्रोत है। संदूषित जल का उपयोग करने से पाचन तंत्र और अन्य अंगों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसलिए, यह कहना सर्वथा गलत है कि संदूषित जल से कोई स्वास्थ्य समस्या नहीं होती। स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए पहली अनिवार्य शर्त है।

63. (A) घरेलू प्रतिष्ठान और व्यावसायिक प्रतिष्ठान
नगरीय अपशिष्ट या कचरा मुख्य रूप से दो स्रोतों से उत्पन्न होता है: घरेलू प्रतिष्ठान और व्यावसायिक प्रतिष्ठान। घरों से निकलने वाला कूड़ा-करकट और बाजारों, दुकानों व कार्यालयों से उत्पन्न होने वाला कबाड़ नगरीय निकायों के लिए प्रबंधन की बड़ी चुनौती है। इसमें रद्दी कागज़, प्लास्टिक, काँच और खाद्य अपशिष्ट शामिल होते हैं। उचित निपटान के अभाव में यह कचरा वायु, जल और मृदा प्रदूषण का कारण बनता है।

64. (D) 1, 2, 3 और 4
ग्रामीण क्षेत्रों में पारिस्थितिकी पुनर्भरण हेतु व्यापक उपायों की आवश्यकता होती है। इसमें पेयजल आपूर्ति हेतु जलापूर्ति टंकी की क्षमता बढ़ाना और सुरक्षित पाइपलाइन बिछाना शामिल है। इसके अतिरिक्त, स्थानीय जल निकायों जैसे तालाबों से गाद हटाना और वर्षा-जल संग्रहण संरचनाओं का निर्माण करना भू-जल स्तर को सुधारने में सहायक होता है। ये सभी कदम मिलकर पर्यावरण के संरक्षण और ग्रामीणों के स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने में मदद करते हैं।

परिवहन प्रणालियाँ हैं, जिनमें सड़क यातायात, रेलगाड़ियाँ और हवाई जहाज शामिल हैं। औद्योगिक मशीनरी, निर्माण गतिविधियाँ, और लाउडस्पीकर जैसे सामाजिक-सांस्कृतिक स्रोत भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। ध्वनि प्रदूषण के प्रभाव केवल श्रवण हानि तक ही सीमित नहीं हैं। इसके गैर-श्रवण प्रभावों में हृदय संबंधी समस्याएँ जैसे उच्च रक्तचाप और हृदय रोग का बढ़ा हुआ जोखिम, तनाव हार्मोन का बढ़ना, नींद में बाधा और बच्चों में संज्ञानात्मक प्रदर्शन में कमी शामिल हैं। यह वन्यजीवों को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है, जिससे जानवरों के संचार, प्रजनन और प्रवासन पैटर्न में बाधा उत्पन्न होती है। ध्वनि प्रदूषण का प्रबंधन शहरी नियोजन, यातायात नियंत्रण, ध्वनि अवरोधकों का उपयोग और शांत प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देने जैसी रणनीतियों के माध्यम से किया जाता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. अनुच्छेद के अनुसार, ध्वनि की तीव्रता को मापने के लिए किस इकाई का उपयोग किया जाता है?
(A) हर्ट्ज़ (Hz)
(B) पास्कल (Pa)
(C) ल्यूमेन (lm)
(D) डेसिबल (dB)

162. किस स्तर से अधिक ध्वनि के लंबे समय तक संपर्क में रहने से स्थायी श्रवण हानि हो सकती है?
(A) 50 डेसिबल
(B) 85 डेसिबल
(C) 65 डेसिबल
(D) 120 डेसिबल

163. निम्नलिखित में से कौन सा ध्वनि प्रदूषण का 'गैर-श्रवण' प्रभाव है?
(A) टिनिटस (कानों में बजना)
(B) स्थायी श्रवण हानि
(C) उच्च रक्तचाप
(D) बहरापन

164. अनुच्छेद में ध्वनि प्रदूषण को 'अदृश्य खतरा' क्यों कहा गया है?
(A) क्योंकि यह केवल रात में होता है।
(B) क्योंकि इसका कोई स्रोत नहीं होता है।
(C) क्योंकि इसे मापा नहीं जा सकता है।
(D) क्योंकि यह वायु या जल प्रदूषण की तरह भौतिक रूप से दिखाई नहीं देता, फिर भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

165. ध्वनि प्रदूषण वन्यजीवों को कैसे प्रभावित करता है?
(A) यह जानवरों के संचार, प्रजनन और प्रवासन पैटर्न में बाधा डालता है।
(B) यह केवल पालतू जानवरों को प्रभावित करता है।
(C) यह जानवरों के लिए भोजन की उपलब्धता को बढ़ाता है।
(D) इसका वन्यजीवों पर कोई ज्ञात प्रभाव नहीं है।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

शहरीकरण की तीव्र गति, विशेष रूप से विकासशील देशों में, नगरपालिका ठोस अपशिष्ट (MSW) के प्रबंधन में भारी चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है। MSW, जिसे आमतौर पर कचरे के रूप में जाना जाता है, में घरों, व्यवसायों और संस्थानों से उत्पन्न होने वाली रोजमर्रा की वस्तुएँ शामिल होती हैं। विकासशील देशों के शहरी कचरे की एक विशेषता इसमें जैविक पदार्थ (जैसे खाद्य अपशिष्ट) का उच्च प्रतिशत (लगभग 50-60%) और पुनर्चक्रण योग्य सामग्री जैसे कागज और प्लास्टिक का निम्न प्रतिशत होना है। अपर्याप्त संग्रह प्रणाली और अनुचित निपटान विधियाँ गंभीर पर्यावरणीय और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ पैदा करती हैं। खुले में कचरा फेंकना और अव्यवस्थित लैंडफिल सबसे आम तरीके हैं, जिनसे भूजल और सतही जल का संदूषण निक्षालन (लीचेट) के माध्यम से होता है। लीचेट एक जहरीला तरल है जो कचरे के ढेर से रिसता है। इसके अलावा, लैंडफिल में जैविक कचरे का अवायवीय अपघटन मीथेन (CH_4) उत्पन्न करता है, जो कार्बन डाइऑक्साइड की तुलना में कहीं अधिक शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए एक एकीकृत अपशिष्ट प्रबंधन दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिसमें स्रोत पर पृथक्करण, पुनर्चक्रण और कंपोस्टिंग को बढ़ावा देना, और स्वच्छता-भराव (सैनिटरी लैंडफिल) तथा अपशिष्ट-से-ऊर्जा (waste-to-energy) संयंत्रों जैसी उन्नत निपटान तकनीकों का विकास शामिल है। यह दृष्टिकोण न केवल पर्यावरणीय बोझ को कम करता है बल्कि कचरे को एक संसाधन में भी बदलता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. विकासशील देशों के नगरपालिका ठोस अपशिष्ट (MSW) की एक प्रमुख विशेषता क्या है?
(A) इसमें भारी धातुओं का उच्च प्रतिशत होता है।
(B) इसमें जैविक पदार्थ का उच्च प्रतिशत होता है।
(C) इसमें पुनर्चक्रण योग्य सामग्री का उच्च प्रतिशत होता है।
(D) यह पूरी तरह से गैर-खतरनाक होता है।

167. 'निक्षालन' (लीचेट) क्या है?
(A) लैंडफिल से निकलने वाली एक हानिरहित गैस
(B) कचरे के ढेर से रिसने वाला एक जहरीला तरल जो जल स्रोतों को दूषित कर सकता है
(C) कचरे को जलाने से उत्पन्न होने वाली राख
(D) कंपोस्टिंग प्रक्रिया का अंतिम उत्पाद

168. लैंडफिल में जैविक कचरे के अवायवीय अपघटन से कौन सी शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस उत्पन्न होती है?
(A) मीथेन (CH_4)
(B) कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2)

(C) सल्फर डाइऑक्साइड (SO_2)
(D) नाइट्रोजन ऑक्साइड (NOx)

169. अनुच्छेद में सुझाए गए 'एकीकृत अपशिष्ट प्रबंधन' दृष्टिकोण में निम्नलिखित में से क्या शामिल नहीं है?
(A) स्रोत पर कचरे का पृथक्करण
(B) पुनर्चक्रण और कंपोस्टिंग को बढ़ावा देना
(C) नदियों में कचरे का सीधा निपटान
(D) स्वच्छता-भराव (सैनिटरी लैंडफिल) का उपयोग

170. अपशिष्ट-से-ऊर्जा (waste-to-energy) संयंत्रों का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) कचरे को समुद्र में फेंकना।
(B) कचरे से केवल जैविक खाद बनाना।
(C) कचरे को बिना किसी उपचार के जमीन में दबाना।
(D) कचरे को ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए जलाना, जिससे लैंडफिल का बोझ कम हो।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भू-निम्नीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें भूमि की जैविक या आर्थिक उत्पादकता में मानवीय गतिविधियों के कारण कमी आती है। यह एक वैश्विक समस्या है जो विशेष रूप से शुष्क, अर्ध-शुष्क और शुष्क उप-आर्द्र क्षेत्रों को प्रभावित करती है, जहाँ इसे मरुस्थलीकरण के रूप में जाना जाता है। मरुस्थलीकरण का अर्थ मौजूदा रेगिस्तानों का विस्तार नहीं है, बल्कि यह विभिन्न कारकों के कारण भूमि की गुणवत्ता में गिरावट है। इसके प्रमुख मानवीय चालकों में अति-चराई (overgrazing) शामिल है, जहाँ पशुओं की संख्या भूमि की वहन क्षमता से अधिक हो जाती है, जिससे वनस्पति आवरण नष्ट हो जाता है और मृदा संघनन होता है। वनों की कटाई, विशेष रूप से कृषि भूमि के विस्तार या ईंधन की लकड़ी के लिए, मिट्टी को हवा और पानी द्वारा अपरदन के प्रति संवेदनशील बना देती है। इसके अतिरिक्त, अस्थिर कृषि पद्धतियाँ, जैसे कि अपर्याप्त सिंचाई तकनीकें, मृदा लवणीकरण (salinization) का कारण बन सकती हैं, जहाँ पानी के वाष्पित होने के बाद मिट्टी की सतह पर लवण जमा हो जाते हैं, जिससे यह पौधों की वृद्धि के लिए अनुपयुक्त हो जाती है। ये सभी प्रक्रियाएँ ऊपरी उपजाऊ मिट्टी की हानि, जल धारण क्षमता में कमी और अंततः भूमि की उत्पादकता के पतन की ओर ले जाती हैं, जिसका खाद्य सुरक्षा और जैव विविधता पर गंभीर प्रभाव पड़ता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. अनुच्छेद के अनुसार भू-निम्नीकरण को कैसे परिभाषित किया गया है?
(A) भूमि का शहरी क्षेत्रों में परिवर्तन
(B) भूमि पर प्राकृतिक आपदाओं का प्रभाव
(C) मानवीय गतिविधियों के कारण भूमि की उत्पादकता में कमी
(D) केवल रेगिस्तानी क्षेत्रों का विस्तार

172. शुष्क, अर्ध-शुष्क और शुष्क उप-आर्द्र क्षेत्रों में होने वाले भू-निम्नीकरण को विशेष रूप से क्या कहा जाता है?
(A) वनीकरण
(B) मरुस्थलीकरण
(C) जलभराव
(D) लवणीकरण

173. 'अति-चराई' (overgrazing) भू-निम्नीकरण में कैसे योगदान करती है?
(A) यह मिट्टी में पोषक तत्वों को बढ़ाती है।
(B) यह जल निकासी प्रणालियों में सुधार करती है।
(C) यह भूजल स्तर को बढ़ाती है।
(D) यह वनस्पति आवरण को नष्ट करती है और मिट्टी को संघनित करती है।

174. 'मृदा लवणीकरण' (salinization) की प्रक्रिया क्या है?
(A) अपर्याप्त सिंचाई के बाद मिट्टी की सतह पर लवण का जमाव
(B) मिट्टी में जैविक पदार्थों का संचय
(C) मिट्टी से सभी खनिजों का निष्कासन
(D) मिट्टी का अम्लीय हो जाना

175. निम्नलिखित में से कौन सा भू-निम्नीकरण का प्रत्यक्ष परिणाम नहीं है?
(A) ऊपरी उपजाऊ मिट्टी की हानि
(B) भूमि की उत्पादकता में गिरावट
(C) शहरी जनसंख्या में वृद्धि
(D) जैव विविधता पर नकारात्मक प्रभाव

ANSWERS

1. (B) जल का अविवेकपूर्ण उपयोग
तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या और औद्योगिक विस्तार के कारण जल संसाधनों का उपयोग अनियंत्रित और अविवेकपूर्ण तरीके से बढ़ा है। इस प्रवृत्ति ने उपलब्ध जल की गुणवत्ता को गंभीर रुप से प्रभावित किया है, जिससे जल का अत्यधिक निम्नीकरण हुआ है। जल प्रदूषण के लिए मानवीय क्रियाकलाप प्राथमिक रुप से उत्तरदायी हैं, जो प्राकृतिक जल स्रोतों के संतुलन और गुणवत्ता को बिगाड़ते हैं।

2. (A) मानवीय अपशिष्टों से मुक्त द्रव्य एवं ऊर्जा का परिणाम
पर्यावरण प्रदूषण को मानवीय गतिविधियों के परिणामस्वरुप उत्पन्न होने वाले अपशिष्ट द्रव्यों और ऊर्जा के वातावरण में मुक्त होने के रुप में परिभाषित किया जाता है। जब ये पदार्थ प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ने लगते हैं, तो इसे प्रदूषण कहा जाता है। प्रदूषण के विभिन्न रुप जैसे वायु, जल और मृदा प्रदूषण प्रत्यक्ष रुप से मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण की गुणवत्ता को प्रतिकूल प्रभावित करते हैं।

3. (A) केवल 1
जल प्रदूषण तब होता है जब बाहरी पदार्थों या अवांछित तत्वों की सांद्रता प्राकृतिक जल स्रोतों में बढ़ जाती है। प्रदूषित होने पर जल की गुणवत्ता में गिरावट आती है और इसकी स्वतः शुद्धीकरण की प्राकृतिक क्षमता कम हो जाती है। यह जल मानव उपभोग और जलीय जीवन के लिए असुरक्षित हो जाता है। अतः जल में बढ़ती सांद्रता ही प्रदूषण का मुख्य वैज्ञानिक संकेतक मानी जाती है।

4. (D) चमड़ा, लुगदी व कागज़, और वस्त्र उद्योग
विभिन्न औद्योगिक इकाइयों में जल का उपयोग कच्चे माल के रुप में या शीतलन हेतु किया जाता है। चमड़ा, लुगदी, कागज़ और वस्त्र उद्योग सर्वाधिक जल प्रदूषक उद्योगों की श्रेणी में आते हैं। ये उद्योग भारी मात्रा में अवांछित अपशिष्ट और विषाक्त रसायनों को नदियों में विसर्जित करते हैं। इससे जल के भौतिक और रासायनिक गुणों में परिवर्तन आता है जो जलीय पारिस्थितिकी तंत्र को नष्ट करता है।

5. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
आधुनिक कृषि पद्धतियों में रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और खरपतवार नाशकों का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जा रहा है। ये अकार्बनिक रसायन वर्षा जल के साथ बहकर नदियों और झीलों में मिल जाते हैं, जिससे धरातलीय जल प्रदूषित होता है। इसके अतिरिक्त, ये रसायन मिट्टी के माध्यम से रिसकर भू-जल तक पहुँच जाते हैं। अतः कृषि रसायनों का यह चक्र जल प्रदूषण का प्रमुख कारण बनता है।

6. (B) शहरी धूम्र कुहरा मानव स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है।
वायु प्रदूषण के संदर्भ में शहरी धूम्र कुहरा मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक होता है, लाभदायक नहीं। यह कोहरे और धुएँ का मिश्रण होता है जो श्वसन संबंधी गंभीर बीमारियाँ उत्पन्न करता है। जीवाश्म ईंधन का दहन और औद्योगिक उत्सर्जन इसके मुख्य स्रोत हैं। इसके कारण अम्ल वर्षा जैसी समस्याएँ भी होती हैं, जो अंततः मानव के तंत्रिका और रक्त संचार तंत्र को प्रभावित करती हैं।

7. (D) नदियों के किनारों पर कृषि भूमि का विस्तार करना।
नमामि गंगे कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य गंगा नदी की स्वच्छता और संरक्षण सुनिश्चित करना है। इसमें सीवर ट्रीटमेंट व्यवस्था, औद्योगिक प्रवाह की निगरानी और नदी के तल की सफाई जैसे लक्ष्य शामिल हैं। इसके अलावा वनीकरण और जैव विविधता संरक्षण पर बल दिया गया है। नदियों के किनारों पर कृषि भूमि का विस्तार करना इस कार्यक्रम का उद्देश्य नहीं है, क्योंकि इससे प्रदूषण बढ़ने का खतरा रहता है।

8. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों को उनके विशिष्ट प्रदूषकों के साथ जोड़कर देखा जाता है। वायु प्रदूषण में नाइट्रोजन के ऑक्साइड मुख्य भूमिका निभाते हैं, जबकि जल प्रदूषण की स्थिति को कोलीफार्म एम पी एम द्वारा मापा जाता है। भू-प्रदूषण विषाणु और जीवाणुओं के प्रसार से संबंधित है। ध्वनि प्रदूषण का स्तर मानव की सहन क्षमता से अधिक ऊँची ध्वनि तरंगों द्वारा डेसीबल में निर्धारित किया जाता है।

9. (C) दस्त, आँतों के कृमि, और हेपेटाइटिस
संदूषित जल का उपयोग मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत जोखिम भरा होता है। इससे दस्त, आँतों के कृमि और हेपेटाइटिस जैसी गंभीर जल-जनित बीमारियाँ होती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, विकासशील देशों में होने वाले अधिकांश संचारी रोग प्रदूषित जल के कारण ही फैलते हैं। स्वच्छ पेयजल की कमी और अपशिष्ट जल का अनुचित निपटान इन स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को और अधिक तीव्र कर देता है।

10. (A) ध्वनि प्रदूषण
औद्योगिक क्षेत्रों और परिवहन मार्गों के निकट रहने वाले लोगों को सर्वाधिक ध्वनि प्रदूषण का सामना करना पड़ता है। मोटर-वाहनों, वायुयानों और मशीनों से निकलने वाली तीव्र ध्वनि मानव के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। ध्वनि की तीव्रता स्रोत से दूरी के साथ कम होती जाती है। ऐसे घने क्षेत्रों में रहने से सुनने की क्षमता प्रभावित होने और तनाव बढ़ने का जोखिम रहता है।

33. (B) अस्थायी दो से तीन मंजिल ऊँचे भवन
मुंबई की धारावी बस्ती अपनी घनी आबादी और विशिष्ट संरचना के लिए जानी जाती है। यहाँ के भवन अक्सर अस्थायी होते हैं और जगह की कमी के कारण दो से तीन मंजिल ऊँचे बनाए जाते हैं। यहाँ की गलियाँ अत्यंत संकरी हैं और बुनियादी सुविधाओं का अभाव है। हालांकि, यह क्षेत्र लघु उद्योगों और शिल्प कार्यों का एक बड़ा केंद्र भी है, जहाँ हज़ारों लोग निवास और कार्य करते हैं।

34. (A) दैनिक उपभोग, स्वास्थ्य, शिक्षा और कृषि कार्यों पर
ग्रामीण-शहरी प्रवासियों द्वारा अर्जित आय का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले उनके परिवारों को भेजा जाता है। इस धनराशि का उपयोग मुख्य रूप से भोजन, स्वास्थ्य सेवाओं, बच्चों की शिक्षा और कृषि संबंधी खर्चों के लिए किया जाता है। प्रवास से प्राप्त यह आर्थिक सहयोग ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने और परिवारों के जीवन स्तर को सुधारने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

35. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत के महानगरों में ठोस अपशिष्ट संग्रहण की दर अन्य शहरों की तुलना में काफी अधिक है। जबकि छोटे शहरों में कचरे का एक बड़ा हिस्सा एकत्रित नहीं हो पाता, जो सड़कर स्वास्थ्य संबंधी गंभीर संकट उत्पन्न करता है। हालांकि दोनों तथ्य अपशिष्ट प्रबंधन की वास्तविक स्थिति को दर्शाते हैं, किंतु छोटे शहरों की खराब स्थिति महानगरों की उच्च संग्रहण दर का कारण या व्याख्या नहीं है।

36. (D) प्राकृतिक खड्ड
भू-निम्नीकरण के कारकों को प्राकृतिक और मानवजनित श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। स्थानांतरित कृषि, खनन और औद्योगिक व्यर्थ का संचय मानवीय क्रियाकलापों के परिणाम हैं जो भूमि की गुणवत्ता घटाते हैं। इसके विपरीत, प्राकृतिक खड्डों का निर्माण एक भू-वैज्ञानिक और प्राकृतिक अपरदन की प्रक्रिया है। हालांकि मानवीय हस्तक्षेप इस प्रक्रिया को तेज कर सकता है, लेकिन इसके मूल में प्राकृतिक भौगोलिक कारण ही प्राथमिक होते हैं।

37. (C) उद्योगों के अनुपचारित अपशिष्ट जल का निक्षालन
औद्योगिक क्षेत्रों में भू-जल प्रदूषण का सबसे प्रमुख कारण कारखानों से निकलने वाले अनुपचारित अपशिष्ट जल का जमीन में रिसना या निक्षालन है। इस अपशिष्ट जल में भारी धातुएँ और विषाक्त रसायन होते हैं जो मिट्टी के माध्यम से भूमिगत जल भंडारों तक पहुँच जाते हैं। एक बार संदूषित होने के बाद भू-जल को स्वच्छ करना अत्यंत कठिन होता है, जो लंबे समय तक जनस्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

38. (B) प्रदूषण फैलाने वाले को इसके नियंत्रण हेतु जिम्मेदार मानने का नियम
प्रदूषक भोगता है या पॉल्यूटर पेज़ का वैश्विक नियम इस सिद्धांत पर आधारित है कि जो इकाई या व्यक्ति पर्यावरण को प्रदूषित करता है, वही इसके निवारण और सफाई की लागत वहन करने के लिए कानूनी रूप से उत्तरदायी है। यह नियम उद्योगों को प्रदूषण कम करने और पर्यावरण अनुकूल तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह पर्यावरणीय न्याय और जवाबदेही सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण उपकरण है।

39. (C) केवल 1, 2, 3 और 4
कानपुर के नीचे की ओर औद्योगिक अपशिष्ट गंगा को अत्यधिक प्रदूषित करता है। वाराणसी क्षेत्र में भी धार्मिक गतिविधियों और शहरी अपशिष्ट के कारण प्रदूषण पाया जाता है। नगरीय क्षेत्रों से घरेलू सीवेज सीधे नदी में छोड़ा जाता है तथा लाशों का विसर्जन भी जल को दूषित करता है। जबकि फरक्का बाँध क्षेत्र में गंगा पूरी तरह प्रदूषण मुक्त नहीं है, इसलिए कथन 5 गलत है।

40. (C) कथन 1 और 2 दोनों
गंदी बस्तियों में रहने वाले अधिकांश लोग नगरीय अर्थव्यवस्था के असंगठित क्षेत्र में कम वेतन पर कठिन श्रम करते हैं। गरीबी और सामाजिक सुविधाओं के अभाव के कारण इन क्षेत्रों के निवासी अक्सर सामाजिक बहिष्कार, नशीली दवाओं और अपराध जैसी समस्याओं के प्रति संवेदनशील हो जाते हैं। ये दोनों स्थितियाँ स्लम निवासियों के जीवन की जटिलताओं और उनके सामाजिक-आर्थिक संघर्षों की वास्तविकता को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं।

41. (C) श्वसन संक्रमण
दस्त, हेपेटाइटिस और आँतों के कृमि संदूषित जल के उपयोग से होने वाले प्रमुख जल-जनित रोग हैं। इसके विपरीत, श्वसन संक्रमण मुख्य रूप से वायु प्रदूषण और संदूषित हवा के माध्यम से फैलता है। जल प्रदूषण के कारण होने वाले रोग पाचन तंत्र को अधिक प्रभावित करते हैं, जबकि वायु प्रदूषण फेफड़ों और श्वसन प्रणाली को नुकसान पहुँचाता है। अतः रोगों का वर्गीकरण उनके प्रसार के माध्यम पर निर्भर करता है।

42. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
पर्यावरणीय समस्याओं और उनसे संबंधित कारकों का गहरा संबंध है। शहरी धूम्र कुहरा वायु प्रदूषण का परिणाम है, जबकि नमामि गंगे कार्यक्रम गंगा नदी की सफाई और संरक्षण हेतु समर्पित है। भू-निम्नीकरण मृदा अपरदन और लवणता जैसी समस्याओं से जुड़ा है। ग्रामीण-शहरी प्रवास के पीछे मुख्य रूप से प्रतिकर्ष और अपकर्ष कारक कार्य करते हैं, जो जनसंख्या के भौगोलिक स्थानांतरण को निर्धारित करते हैं।

43. (D) भील जनजाति की जनसंख्या का उच्च सांद्रण
मध्य प्रदेश का झबुआ जिला मुख्य रूप से अपनी भील जनजाति की जनसंख्या के उच्च सांद्रण के लिए पहचाना जाता है। यह जिला भौगोलिक और आर्थिक रूप से पिछड़ा रहा है, जहाँ संसाधनों के निम्नीकरण ने आजीविका के संकट उत्पन्न किए थे। हालांकि, हाल के वर्षों में सामुदायिक सहभागिता और जल संभरण प्रबंधन के सफल प्रयोगों के कारण यहाँ के प्राकृतिक संसाधनों और सामाजिक स्थिति में महत्वपूर्ण सुधार देखा गया है।

22. (B) उद्योगों, कृषि और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से मानव जल प्रदूषण के लिए विभिन्न माध्यमों से उत्तरदायी है। औद्योगिक कचरे का विसर्जन, आधुनिक कृषि में रासायनिक उर्वरकों का उपयोग और विभिन्न सांस्कृतिक क्रियाकलाप जैसे धार्मिक स्नान और पर्यटन जल की गुणवत्ता को बिगाड़ते हैं। ये गतिविधियाँ जल में अवांछित पदार्थों की सांद्रता बढ़ा देती हैं, जिससे जल की स्वतः शुद्धीकरण क्षमता नष्ट हो जाती है। यह प्रदूषण जलीय जैव तंत्र और मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

23. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
नदियों के प्रदूषण की प्रकृति उनके प्रवाह क्षेत्र की गतिविधियों पर निर्भर करती है। गंगा नदी उत्तर प्रदेश में मुख्य रूप से कानपुर के औद्योगिक प्रवाह से प्रदूषित होती है। यमुना नदी दिल्ली में घरेलू और औद्योगिक कचरे से तथा उत्तर प्रदेश के मथुरा-आगरा में औद्योगिक अपशिष्टों से प्रभावित होती है। बिहार में पटना का घरेलू कचरा गंगा के प्रदूषण का एक प्रमुख कारण है, जो जल की गुणवत्ता घटाता है।

24. (A) फसल के अवशेष और पशुओं का गोबर
नगरीय अपशिष्ट की श्रेणी में मुख्यतः शहरी घरों और व्यावसायिक केंद्रों से निकलने वाला कूड़ा-करकट शामिल होता है। इसमें प्लास्टिक, काँच, रद्दी कागज़ और निर्माण कार्यों का मलबा आता है। फसल के अवशेष और पशुओं का गोबर ग्रामीण या कृषि अपशिष्ट की श्रेणी में गिने जाते हैं। नगरीय कचरे का वैज्ञानिक निपटान न होने से यह दुर्गंध, मीथेन उत्सर्जन और संक्रामक रोगों के प्रसार का कारण बनता है।

25. (C) लगभग एक-चौथाई
विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में लगभग पच्चीस प्रतिशत या एक-चौथाई संचारी रोग जल-जनित होते हैं। संदूषित जल का उपयोग दस्त, हेपेटाइटिस और आँतों के कृमि जैसे रोगों के प्रसार का मुख्य कारण है। यह आंकड़ा जल प्रदूषण के गंभीर स्वास्थ्य प्रभावों को दर्शाता है। अतः सुरक्षित पेयजल की उपलब्धता और अपशिष्ट जल का उचित प्रबंधन जनस्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है।

26. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
ध्वनि प्रदूषण स्थान विशिष्ट होता है क्योंकि इसकी तीव्रता शोर के स्रोत से दूरी बढ़ने पर घटती जाती है। औद्योगिक क्षेत्रों, मुख्य सड़कों और हवाई अड्डों के पास ध्वनि का स्तर बहुत अधिक होता है, जबकि दूर स्थित क्षेत्रों में यह कम हो जाता है। अतः शोर का प्रभाव और उसका भौगोलिक वितरण सीधे स्रोत की समीपता और ध्वनि तरंगों के प्रसार की भौतिक प्रकृति पर निर्भर करता है।

27. (D) वायुमंडलीय प्रदूषण
शहरी धूम्र कुहरा या स्मॉग मुख्य रूप से वायुमंडलीय प्रदूषण के कारण उत्पन्न होता है। यह औद्योगिक इकाइयों और वाहनों से निकलने वाले धुएँ तथा वातावरण में मौजूद कोहरे का मिश्रण होता है। जब प्रदूषक गैसें और धूल कण वायुमंडल में संचित हो जाते हैं, तो वे दृश्यता कम कर देते हैं और श्वसन संबंधी बीमारियों का कारण बनते हैं। यह विशेष रूप से घनी आबादी वाले नगरीय क्षेत्रों की समस्या है।

28. (B) परिवार की निर्धनता और ऋण का भारी बोझ
ग्रामीण-शहरी प्रवास में प्रतिकर्ष कारक वे परिस्थितियाँ हैं जो लोगों को अपना गाँव छोड़ने के लिए मजबूर करती हैं। परिवार की निर्धनता, ऋण का भारी बोझ और रोजगार के अवसरों की कमी प्रमुख प्रतिकर्ष कारक हैं। ये नकारात्मक स्थितियाँ प्रवासियों को बेहतर आर्थिक भविष्य की तलाश में शहरों की ओर धकेलती हैं। अतः प्रवास केवल आकर्षण से नहीं, बल्कि अक्सर ग्रामीण परिवेश की आर्थिक विवशताओं का परिणाम भी होता है।

29. (C) केवल 1, 2 और 3
गंदी बस्तियाँ या स्लम नगरीय क्षेत्रों के वे भाग हैं जहाँ न्यूनतम वांछित आवासीय सुविधाएँ होती हैं। यहाँ जीर्ण-शीर्ण मकान, खुली हवा का अभाव और अत्यधिक भीड़-भाड़ देखी जाती है। इन क्षेत्रों में पेयजल, बिजली और शौच जैसी बुनियादी सुविधाओं की भारी कमी होती है। अधिकांश निवासी असंगठित क्षेत्र में कार्य करते हैं। ये परिस्थितियाँ स्वास्थ्य और स्वच्छता की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील और जोखिमपूर्ण मानी जाती हैं।

30. (D) भूमि की उत्पादकता में स्थायी या अस्थायी तौर पर कमी
भू-निम्नीकरण का अर्थ भूमि की प्राकृतिक गुणवत्ता और उसकी उत्पादकता में होने वाली स्थायी या अस्थायी गिरावट है। यह प्रक्रिया मृदा अपरदन, लवणता, जलभराव और मानवीय हस्तक्षेप जैसे खनन या अनुचित कृषि पद्धतियों के कारण होती है। जब भूमि अपनी उर्वरता खो देती है और फसलों के उत्पादन के योग्य नहीं रह जाती, तो उसे निम्नीकृत भूमि कहा जाता है। यह पर्यावरणीय संतुलन के लिए गंभीर चुनौती है।

31. (A) 29 प्रतिशत
भारत में वर्ष 1961 के बाद शहरी जनसंख्या में हुई वृद्धि का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि इसमें ग्रामीण-शहरी प्रवास का योगदान लगभग उनतीस प्रतिशत था। शहरों में बढ़ते आर्थिक अवसरों और औद्योगिक विकास ने बड़ी संख्या में ग्रामीणों को आकर्षित किया। प्रवास की यह प्रवृत्ति नगरीकरण की प्रक्रिया को तेज करती है, जिससे शहरों की जनसांख्यिकीय संरचना और संसाधनों की माँग में महत्वपूर्ण बदलाव आते हैं।

32. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
विभिन्न मानवीय क्रियाकलाप विशिष्ट प्रदूषण उत्पन्न करते हैं। कोयले और पेट्रोल का दहन वायु प्रदूषण का मुख्य कारण है, जबकि वाहित मल का अनुचित निपटान जल प्रदूषण बढ़ाता है। कृषि में पीड़कनाशियों और उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग मृदा या भू-प्रदूषण के लिए उत्तरदायी है। औद्योगिक प्रक्रमों से निकलने वाला शोर ध्वनि प्रदूषण का स्रोत बनता है। यह वर्गीकरण प्रदूषण नियंत्रण की रणनीतियाँ बनाने में सहायक है।

11. (C) केवल 1, 2 और 4
नमामि गंगे कार्यक्रम का व्यापक उद्देश्य गंगा नदी के प्रदूषण को नियंत्रित करना और उसके पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्जीवित करना है। इसके तहत उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड में गंगा ग्राम विकसित करने और वनीकरण के माध्यम से जैव विविधता बढ़ाने की योजना है। यह कार्यक्रम केवल औद्योगिक निगरानी तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें जन-जागरूकता और सामुदायिक सहभागिता जैसे विभिन्न आयाम भी शामिल हैं।

12. (B) डेसीबल
ध्वनि प्रदूषण को मापने के लिए डेसीबल इकाई का प्रयोग किया जाता है। यह इकाई ध्वनि की तीव्रता और उसके दबाव के स्तर को दर्शाती है। सहन क्षमता से अधिक ऊँची ध्वनि, जिसे शोर कहा जाता है, मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है। सामान्यतः 80 डेसीबल से ऊपर की ध्वनि निरंतर संपर्क में रहने पर सुनने की शक्ति और मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है।

13. (C) तीर्थ यात्राएँ, धार्मिक मेले और पर्यटन
भारत में धरातलीय जल प्रदूषण के लिए विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी उत्तरदायी हैं। तीर्थ यात्राओं, धार्मिक मेलों और पर्यटन के दौरान नदियों के किनारों पर होने वाली मानवीय गतिविधियों से जल में अपशिष्ट पदार्थ बढ़ जाते हैं। पवित्र स्नान और अन्य अनुष्ठानों के कारण नदियों की स्वतः शुद्धीकरण क्षमता प्रभावित होती है। इन गतिविधियों के प्रबंधन के अभाव में जल की गुणवत्ता में अत्यधिक निम्नीकरण देखा गया है।

14. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
नगरीय क्षेत्रों में वायुमंडलीय प्रदूषण के कारण शहरी धूम्र कुहरा बनता है, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इसी प्रकार, पहली वर्षा में संचित प्रदूषकों के घुलने के कारण पी.एच. स्तर कम होता है, जो अम्ल वर्षा का संकेत है। यद्यपि ये दोनों कथन पर्यावरणीय प्रदूषण के महत्वपूर्ण तथ्य हैं, किंतु तर्क अभिकथन की प्रत्यक्ष व्याख्या नहीं करता क्योंकि वे अलग-अलग घटनाओं को दर्शाते हैं।

15. (A) दिल्ली के घरेलू और औद्योगिक कचरे का विसर्जन
यमुना नदी दिल्ली से चंबल के संगम तक भारत की सर्वाधिक प्रदूषित नदियों में से एक है। इसका मुख्य कारण दिल्ली के विशाल घरेलू सीवेज और औद्योगिक अपशिष्टों का सीधे नदी में विसर्जन किया जाना है। इस क्षेत्र में पानी का बहाव कम होने के कारण प्रदूषकों की सांद्रता बहुत अधिक बढ़ जाती है। यह प्रदूषण नदी के जलीय जीवन और पारिस्थितिकी तंत्र को गंभीर रूप से प्रभावित करता है।

16. (B) घरेलू और व्यावसायिक दोनों प्रतिष्ठान
ठोस अपशिष्टों के मुख्य स्रोत घरेलू और व्यावसायिक दोनों प्रतिष्ठान होते हैं। इसमें पुराने इस्तेमाल किए गए सामान, रद्दी कागज़, काँच के टुकड़े, प्लास्टिक के डिब्बे और अन्य कबाड़ शामिल हैं। नगरीय क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि के साथ इन अपशिष्टों की मात्रा भी बढ़ती जा रही है। इनका उचित संग्रहण और वैज्ञानिक निपटान न होने पर ये पर्यावरण और सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न करते हैं।

17. (A) 1, 2, 3, 4, 5
मेरठ के दौराला में पारिस्थितिकी पुनर्भरण की प्रक्रिया एक क्रमबद्ध तरीके से संपन्न हुई। सर्वप्रथम निवासियों की दयनीय स्थिति ने जनहित सभा का ध्यान खींचा, जिसके बाद व्यापक स्वास्थ्य सर्वेक्षण किए गए। इसके पश्चात एक स्वयंसेवी संगठन ने पारिस्थितिकी मॉडल तैयार किया। अंततः उद्योगपतियों और ग्रामीणों के सहयोग से स्थायी समाधान खोजे गए और पाइपलाइन बिछाने के साथ-साथ जलापूर्ति टंकी की क्षमता में वृद्धि की गई।

18. (A) नगरीय क्षेत्रों में मज़दूरों की अधिक माँग
ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर जनसंख्या के प्रवास को प्रभावित करने वाला अपकर्ष कारक नगरीय क्षेत्रों में श्रमिकों की बढ़ती माँग है। शहरों में बेहतर आर्थिक अवसर, नियमित रोजगार और उच्च मजदूरी प्रवासियों को आकर्षित करती है। यह कारक लोगों को अपना पैतृक स्थान छोड़कर आधुनिक सुख-सुविधाओं और उज्ज्वल भविष्य की तलाश में शहरों की ओर जाने के लिए प्रेरित करता है, जो नगरीकरण को बढ़ावा देता है।

19. (C) ध्वनि प्रदूषण - अमोनिया
ध्वनि प्रदूषण का संबंध वायुमंडल में मौजूद अमोनिया जैसे रासायनिक पदार्थों से नहीं है। ध्वनि प्रदूषण मुख्य रूप से मशीनों, वाहनों और लाउडस्पीकर द्वारा उत्पन्न तीव्र शोर से होता है। इसके विपरीत, अमोनिया जल और वायु प्रदूषण का एक कारक हो सकता है। वायु प्रदूषण सल्फर ऑक्साइड से, जल प्रदूषण क्लोराइड से और भू-प्रदूषण कीटनाशकों से संबंधित है, जो पारिस्थितिकी तंत्र के लिए हानिकारक विभिन्न तत्व होते हैं।

20. (B) केवल 2, 3, 4 और 5
नगरीय अपशिष्ट प्रबंधन की समस्याओं के संदर्भ में भारत के अधिकांश शहरों में शत-प्रतिशत कचरा संग्रहण नहीं हो पाता है। अनुपचारित अपशिष्ट के सड़ने से मीथेन जैसी विषाक्त गैसें निकलती हैं और टाइफाइड व हैजा जैसी बीमारियाँ फैलती हैं। औद्योगिक संकेंद्रण से भी कचरा बढ़ता है। हालांकि, इन अपशिष्टों को वैज्ञानिक रूप से उपचारित कर ऊर्जा और कंपोस्ट बनाई जा सकती है, जो पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है।

21. (A) केवल कथन 1
भारत के छोटे और मध्यम शहरों में पर्याप्त आर्थिक अवसरों के अभाव के कारण लोग महानगरों की ओर प्रवास करते हैं। महानगरों में रोजगार की विविधता और अधिक माँग प्रवासियों को आकर्षित करती है। हालांकि, महानगरों में जीवन यापन की लागत बहुत ऊँची होती है और आवास की उपलब्धता एक बड़ी चुनौती बनी रहती है। अतः महानगरों में प्रवास का मुख्य कारण आर्थिक विवशता और बेहतर अवसरों की खोज है।

44. (B) कसीदाकारी, जरी, चमड़े का काम और उच्च फैशन वस्त्र
मुंबई की धारावी बस्ती न केवल एक विशाल गंदी बस्ती है, बल्कि यह लघु उद्योगों का एक संपन्न आर्थिक केंद्र भी है। यहाँ स्थानीय स्तर पर कसीदाकारी, जरी का काम, चमड़े की वस्तुएँ और उच्च फैशन के वस्त्र तैयार किए जाते हैं। यहाँ के कुशल कारीगर सीमित संसाधनों और कठिन परिस्थितियों में भी उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों का निर्माण करते हैं, जिनका व्यापार अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक फैला हुआ है।

45. (C) आर्थिक सुधार के साथ सामाजिक व व्यक्तिगत चुनौतियों का सामना करना
ग्रामीण-शहरी प्रवास प्रवासियों के लिए आर्थिक स्थिति में सुधार का मार्ग तो प्रशस्त करता है, लेकिन इसके साथ ही उन्हें कई सामाजिक और व्यक्तिगत चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। नए परिवेश में समायोजन, परिवार से अलगाव और बुनियादी सुविधाओं की कमी जैसी समस्याएँ उनके जीवन को प्रभावित करती हैं। अतः प्रवास एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें आर्थिक लाभ के साथ-साथ जीवन के विभिन्न पक्षों में संघर्ष शामिल होता है।

46. (D) प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन में स्थानीय सामुदायिक सहभागिता
झबुआ जिले में जल संभरण प्रबंधन कार्यक्रमों की उल्लेखनीय सफलता का मुख्य कारण स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी और सहभागिता रही है। सरकारी प्रयासों को जब स्थानीय लोगों का सहयोग मिला, तो साझी संपदा संसाधनों को पुनर्जीवित करना संभव हो पाया। समुदाय द्वारा चरागाहों की सुरक्षा और जल संचयन के साझा प्रयासों ने पारिस्थितिकी संतुलन को बहाल किया, जिससे यह कार्यक्रम एक सफल मॉडल के रूप में उभरा।

47. (A) केवल 1 और 3
पर्यावरण प्रदूषण के विभिन्न प्रकार जैसे जल, वायु, भूमि और ध्वनि प्रदूषण आधुनिक विश्व की बड़ी चुनौतियाँ हैं। मानव जल को मुख्य रूप से औद्योगिक उत्सर्जन, रासायनिक कृषि और विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से प्रदूषित करता है। यह सत्य नहीं है कि जल प्रदूषण केवल मानवीय क्रियाकलापों से होता है या जल की शुद्धीकरण क्षमता असीमित है। अतः प्रदूषण नियंत्रण हेतु मानवीय व्यवहार में परिवर्तन आवश्यक है।

48. (B) प्राकृतिक वृद्धि, निवल अप्रवास और नगरीय क्षेत्रों का पुनर्वर्गीकरण
भारत में नगरीय जनसंख्या की वृद्धि के पीछे तीन प्रमुख कारक उत्तरदायी हैं। पहला, जन्म दर और मृत्यु दर के बीच का अंतर यानी प्राकृतिक वृद्धि। दूसरा, ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर होने वाला निवल अप्रवास। तीसरा, ग्रामीण क्षेत्रों का नगरीय केंद्रों के रूप में पुनर्वर्गीकरण या शहरी सीमाओं का विस्तार। इन कारकों के सम्मिलित प्रभाव से देश में नगरीकरण की प्रक्रिया निरंतर तीव्र हो रही है।

49. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
गंदी बस्तियाँ या स्लम नगरीय क्षेत्रों के वे न्यूनतम वांछित आवासीय भाग हैं जहाँ रहने की परिस्थितियाँ अत्यंत दयनीय होती हैं। शहरों में जमीन की बढ़ती कीमतों और ऊँचे मकान किरायों के कारण गरीब प्रवासी बेहतर आवास वहन नहीं कर पाते। फलस्वरूप, वे विवश होकर झुग्गी-झोपड़ियों और स्वास्थ्य के प्रति हानिकारक वातावरण में रहने को मजबूर होते हैं। अतः आर्थिक विवशता ही स्लमों के उदय का मूल कारण है।

50. (A) शहरी गंदी बस्तियों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना
स्वच्छ भारत मिशन का एक व्यापक और प्रमुख उद्देश्य शहरी गंदी बस्तियों में रहने वाले लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सकारात्मक सुधार लाना है। इसके अंतर्गत स्वच्छता सुविधाओं का विस्तार, खुले में शौच की समाप्ति और कचरा प्रबंधन पर विशेष ध्यान दिया गया है। यह मिशन न केवल पर्यावरण को स्वच्छ बनाता है, बल्कि वंचित वर्गों के स्वास्थ्य और गरिमापूर्ण जीवन को सुनिश्चित करने की दिशा में भी कार्य करता है।

51. (C) औद्योगिक प्रक्रम - नाइट्रोजन ऑक्साइड
वायु प्रदूषण के स्रोतों और उनके द्वारा उत्सर्जित प्रदूषकों के बीच गहरा संबंध है। औद्योगिक प्रक्रमों से बड़ी मात्रा में नाइट्रोजन के ऑक्साइड और अन्य विषाक्त गैसें निकलती हैं जो वायुमंडल को संदूषित करती हैं। इसके विपरीत, कोयले के दहन से सल्फर ऑक्साइड और कार्बन मोनोऑक्साइड जैसी गैसें निकलती हैं। प्रदूषण नियंत्रण के लिए इन उत्सर्जन स्रोतों की पहचान और उनका वैज्ञानिक प्रबंधन करना अत्यंत आवश्यक होता है।

52. (D) प्रकाश प्रदूषण
प्रदूषकों के संचरण और विसरण के माध्यम के आधार पर प्रदूषण को सामान्यतः जल, वायु, भूमि और ध्वनि प्रदूषण की श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। प्रकाश प्रदूषण, यद्यपि एक आधुनिक पर्यावरणीय समस्या है, किंतु इसे सामान्यतः इन पारंपरिक चार माध्यम-आधारित श्रेणियों में शामिल नहीं किया जाता है। यह वर्गीकरण उन भौतिक माध्यमों पर केंद्रित है जिनके जरिए प्रदूषक मानव और पारिस्थितिकी तंत्र तक पहुँचकर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं।

53. (C) केवल 1, 2, 3 और 4
झबुआ जिले के पेटलावाड में सामुदायिक प्रयासों के तहत भील समुदाय ने साझी संपदा संसाधनों को पुनर्जीवित करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए। प्रत्येक परिवार ने चरागाह भूमि पर चारा रोपण किया और दो वर्षों तक खुली चराई पर प्रतिबंध लगाया। पशुओं के लिए जल और आहार की नाँद बनाने की योजना भी सफल रही। हालांकि, अतिक्रमण करने वालों को समूह से बाहर करने के बजाय उन्हें सदस्य बनाकर लाभांश साझा किया गया।

153. 'सुपोषण' (यूट्रोफिकेशन) की प्रक्रिया का मुख्य कारण क्या है?
(A) जल में भारी धातुओं की अधिकता
(B) जल के तापमान में अत्यधिक वृद्धि
(C) जल में पोषक तत्वों, विशेष रूप से नाइट्रेट और फॉस्फेट, की अधिकता
(D) जल में निलंबित तलछट की मात्रा में वृद्धि

154. अनुच्छेद के अनुसार, 'हाइपोक्सिया' शब्द का क्या अर्थ है?
(A) जल में शैवाल की अत्यधिक वृद्धि
(B) जल में लवणता का बढ़ना
(C) जल निकायों का सूख जाना
(D) जलीय ऑक्सीजन के स्तर में कमी

155. स्रोत के आधार पर, बिंदु और गैर-बिंदु स्रोतों के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) प्रदूषकों का रासायनिक संघटन
(B) प्रदूषण की मात्रा
(C) प्रदूषण स्रोत का भौगोलिक स्थान और उसकी पहचान की स्पष्टता
(D) प्रदूषण का मौसम पर निर्भर होना

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

वायु प्रदूषण को प्राथमिक और द्वितीयक प्रदूषकों में वर्गीकृत किया जा सकता है। प्राथमिक प्रदूषक वे पदार्थ हैं जो सीधे किसी स्रोत से वायुमंडल में उत्सर्जित होते हैं, जैसे कि वाहनों के निकास से कार्बन मोनोऑक्साइड (CO), औद्योगिक प्रक्रियाओं से सल्फर डाइऑक्साइड (SO_2), और जीवाश्म ईंधन के दहन से नाइट्रोजन के ऑक्साइड (NOx)। इसके विपरीत, द्वितीयक प्रदूषक तब बनते हैं जब प्राथमिक प्रदूषक वायुमंडल में अन्य रसायनों के साथ प्रतिक्रिया करते हैं। इसका सबसे प्रमुख उदाहरण प्रकाश-रासायनिक धूम्र-कोहरा (photochemical smog) है, जो शहरी क्षेत्रों में एक आम समस्या है। यह तब बनता है जब सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में नाइट्रोजन ऑक्साइड (NOx) और वाष्पशील कार्बनिक यौगिक (VOCs) प्रतिक्रिया करके भू-स्तरीय ओजोन (O_3) और पेरोक्सीएसिटाइल नाइट्रेट (PAN) जैसे हानिकारक द्वितीयक प्रदूषक बनाते हैं। भू-स्तरीय ओजोन, जो समतापमंडल में सुरक्षात्मक ओजोन परत से भिन्न है, मानव श्वसन प्रणाली के लिए अत्यंत हानिकारक है। इसके अतिरिक्त, कणिकीय पदार्थ (Particulate Matter), विशेष रूप से PM2.5 (2.5 माइक्रोमीटर से कम व्यास वाले कण), वायु प्रदूषण का एक और गंभीर घटक हैं। ये सूक्ष्म कण फेफड़ों में गहराई तक प्रवेश कर सकते हैं और हृदय तथा श्वसन संबंधी गंभीर बीमारियों का कारण बन सकते हैं। इन प्रदूषकों की सांद्रता अक्सर शांत, स्थिर वायुमंडलीय परिस्थितियों में बढ़ जाती है, जिससे दृश्यता कम हो जाती है और सार्वजनिक स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. निम्नलिखित में से कौन सा एक प्राथमिक प्रदूषक का उदाहरण है?
(A) भू-स्तरीय ओजोन (O_3)
(B) सल्फर डाइऑक्साइड (SO_2)
(C) पेरोक्सीएसिटाइल नाइट्रेट (PAN)
(D) प्रकाश-रासायनिक धूम्र-कोहरा

157. प्रकाश-रासायनिक धूम्र-कोहरा के निर्माण के लिए किन घटकों की आवश्यकता होती है?
(A) सल्फर डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड और जल वाष्प
(B) कणिकीय पदार्थ, सीसा और अमोनिया
(C) कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और उच्च आर्द्रता
(D) नाइट्रोजन ऑक्साइड, वाष्पशील कार्बनिक यौगिक और सूर्य का प्रकाश

158. अनुच्छेद के अनुसार, भू-स्तरीय ओजोन और समतापमंडलीय ओजोन में क्या मुख्य अंतर है?
(A) भू-स्तरीय ओजोन मनुष्यों के लिए हानिकारक है, जबकि समतापमंडलीय ओजोन सुरक्षात्मक है।
(B) भू-स्तरीय ओजोन प्राकृतिक है, जबकि समतापमंडलीय ओजोन मानव निर्मित है।
(C) दोनों का रासायनिक सूत्र अलग-अलग होता है।
(D) भू-स्तरीय ओजोन केवल रात में बनता है, जबकि समतापमंडलीय ओजोन दिन में बनता है।

159. PM2.5 को एक गंभीर वायु प्रदूषक क्यों माना जाता है?
(A) क्योंकि यह दृश्यता को कम करता है।
(B) क्योंकि यह पौधों की वृद्धि को रोकता है।
(C) क्योंकि इसका आकार बहुत सूक्ष्म होता है और यह फेफड़ों में गहराई तक प्रवेश कर सकता है।
(D) क्योंकि यह इमारतों को नुकसान पहुँचाता है।

160. 'द्वितीयक प्रदूषक' की सबसे अच्छी परिभाषा क्या है?
(A) वे प्रदूषक जो वायुमंडल में प्राथमिक प्रदूषकों की रासायनिक प्रतिक्रिया से बनते हैं।
(B) वे प्रदूषक जो सीधे एक स्रोत से उत्सर्जित होते हैं।
(C) वे प्रदूषक जो केवल वाहनों से निकलते हैं।
(D) वे प्रदूषक जो गैसीय अवस्था में नहीं होते हैं।

Direction : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

ध्वनि प्रदूषण, जिसे अक्सर एक अदृष्य खतरा माना जाता है, आधुनिक शहरी जीवन का एक सर्वव्यापी और गंभीर पर्यावरणीय मुद्दा है। इसे किसी भी अवांछित या परेशान करने वाली ध्वनि के रूप में परिभाषित किया गया है जो मानव स्वास्थ्य और कल्याण को प्रभावित करती है। ध्वनि की तीव्रता को डेसिबल (dB) नामक एक लघुगणकीय पैमाने (logarithmic scale) पर मापा जाता है। शून्य डेसिबल श्रवण की न्यूनतम सीमा है, और 85 डेसिबल से अधिक के स्तर पर लंबे समय तक संपर्क में रहने से स्थायी श्रवण हानि हो सकती है। शहरी क्षेत्रों में ध्वनि प्रदूषण के मुख्य स्रोत

65. (B) क्योंकि यह भारत के घनी आबादी वाले क्षेत्रों में से होकर बहती है।
गंगा नदी के प्रदूषण की समस्या विशेष रूप से चिंताजनक है क्योंकि यह भारत के सबसे घनी आबादी वाले मैदानी क्षेत्रों से होकर बहती है। नदी के किनारे स्थित सैकड़ों बड़े शहर अपना घरेलू सीवेज और औद्योगिक अपशिष्ट सीधे इसमें विसर्जित करते हैं। जनसंख्या का उच्च दबाव और अपशिष्ट प्रबंधन की अपर्याप्त सुविधाएँ गंगा की पवित्रता और जल की गुणवत्ता को गंभीर रूप से प्रभावित करती हैं, जो जनस्वास्थ्य के लिए खतरा है।

66. (A) मीथेन
जब नगरीय अपशिष्ट को असुरक्षित तरीके से खुले में छोड़ दिया जाता है, तो इसके धीरे-धीरे सड़ने की प्रक्रिया शुरु होती है। इस जैविक अपघटन के दौरान वातावरण में मीथेन जैसी विषाक्त और ज्वलनशील गैस शामिल होती है। मीथेन न केवल वायु प्रदूषण बढ़ाती है, बल्कि यह एक शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस भी है जो जलवायु परिवर्तन में योगदान देती है। कचरे का वैज्ञानिक निपटान इस समस्या को रोकने का एकमात्र उपाय है।

67. (A) P-4, Q-3, R-1, S-2
भौगोलिक स्थानों और उनकी समस्याओं या विशेषताओं के बीच स्पष्ट संबंध है। दौराला औद्योगिक क्षेत्रों में पारिस्थितिकी पुनर्भरण के प्रयासों के लिए जाना जाता है, जबकि झबुआ में जल संभरण प्रबंधन के सामुदायिक मॉडल सफल रहे। धारावी एशिया की विशालतम गंदी बस्तियों में से एक है और ग्रामीण-शहरी प्रवास जनसंख्या के एक स्थान से दूसरे स्थान पर होने वाले स्थानांतरण की प्रक्रिया को स्पष्ट करता है।

68. (D) जलाक्रांत व दलदली क्षेत्र
जलाक्रांत और दलदली क्षेत्रों का निर्माण प्राकृतिक और मानवजनित दोनों प्रक्रियाओं का परिणाम हो सकता है। प्राकृतिक रूप से तटीय क्षेत्रों या भारी वर्षा वाले भागों में दलदल बनते हैं, जबकि मानवीय हस्तक्षेप जैसे दोषपूर्ण सिंचाई पद्धति से भी भूमि जलाक्रांत हो जाती है। यह प्रक्रिया भूमि की गुणवत्ता को कम करती है। हिमानी क्षेत्र या बंजर चट्टानी भूमि जैसे अन्य विकल्प मुख्य रूप से प्राकृतिक भौगोलिक विशेषताओं के अंतर्गत आते हैं।

69. (C) पत्तन तक, जहाँ माल चढ़ाया व उतारा जाता है
समुद्री यातायात के कारण होने वाले शोर की तीव्रता मुख्य रूप से पत्तनों या बंदरगाहों तक ही सीमित रहती है। यहाँ माल चढ़ाने, उतारने और जहाजों के संचालन के दौरान मशीनों द्वारा अत्यधिक ध्वनि उत्पन्न होती है। खुले समुद्र में यातायात का शोर विस्तृत क्षेत्र में फैलने के कारण स्थानीय स्तर पर कम प्रभावी होता है। अतः पत्तन क्षेत्र ध्वनि प्रदूषण के दृष्टिकोण से सबसे संवेदनशील और शोर वाले केंद्र होते हैं।

70. (D) 1, 2, 3, 4 और 5
गंदी बस्तियों या स्लम की समस्याएँ बहुआयामी हैं। ये बस्तियाँ अक्सर निम्नीकृत भूमि पर स्थित होती हैं जहाँ जीर्ण-शीर्ण आवासों में रोशनी और ताजी हवा का अभाव होता है। यहाँ पेयजल और स्वच्छता जैसी आधारभूत सुविधाओं की कमी के कारण निवासियों का स्वास्थ्य प्रभावित होता है। अल्प-पोषण और बीमारियों के खतरे के साथ-साथ आर्थिक अभाव उन्हें अपराध और सामाजिक बहिष्कार की ओर भी धकेल सकता है, जो गंभीर चिंता का विषय है।

71. (C) कथन 1 और 2 दोनों
महात्मा गांधी ने गाँवों को आत्मनिर्भर 'आदर्श गणतंत्र' के रुप में देखा था, जो भारतीय विकास का आधार होने चाहिए। हालांकि, वर्तमान वास्तविकता यह है कि अधिकांश ग्रामीण क्षेत्र अभी भी गरीबी, बेरोजगारी और केवल प्राथमिक कृषि गतिविधियों पर निर्भरता जैसी चुनौतियों से जूझ रहे हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच विकास का यह असंतुलन ही प्रवास और नगरीय समस्याओं को जन्म देता है, जो गांधीवादी मूल्यों के विपरीत है।

72. (A) जीवाश्म ईंधन का दहन, खनन और उद्योग
वायु प्रदूषण के मुख्य स्रोत जीवाश्म ईंधनों का दहन, खनन गतिविधियाँ और औद्योगिक उत्सर्जन हैं। ये प्रक्रियाएँ वायुमंडल में बड़ी मात्रा में धूल, धुआँ और विषाक्त गैसें जैसे सल्फर व नाइट्रोजन के ऑक्साइड निर्मुक्त करती हैं। इससे न केवल हवा की गुणवत्ता गिरती है, बल्कि मानव स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वनीकरण और सौर ऊर्जा जैसे अन्य विकल्प प्रदूषण कम करने के उपाय हैं, इसके स्रोत नहीं।

73. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में ग्रामीण-शहरी प्रवास में पुरुषों का वर्चस्व देखा जाता है, क्योंकि वे परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए रोजगार की तलाश में निकलते हैं। शहरों में मजदूरी कम होने और नौकरी की प्रकृति अस्थाई होने के कारण प्रवासियों के लिए पूरे परिवार को साथ रखना और आवास का खर्च वहन करना कठिन होता है। अतः वे अपनी पत्नियों और बच्चों को गाँव में ही छोड़ने के लिए विवश होते हैं।

74. (A) ग्रामीण से
नगरीय या नगरीय केंद्र की अवधारणा को मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों से अलग करने के लिए परिभाषित किया गया है। नगरीय क्षेत्र वे होते हैं जहाँ जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है और अधिकांश लोग गैर-कृषि कार्यों, जैसे उद्योगों और सेवाओं में संलग्न होते हैं। प्रशासनिक और आर्थिक आधार पर ग्रामीण और नगरीय बस्तियों का यह विभेद विकास की रणनीतियों और संसाधनों के वितरण को निर्धारित करने के लिए आवश्यक होता है।

75. (D) 20 प्रतिशत
मध्य प्रदेश के झबुआ जिले में सरकारी और सामुदायिक प्रयासों के माध्यम से जल संभरण प्रबंधन कार्यक्रम सफलतापूर्वक चलाया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत जिले की कुल भूमि के लगभग बीस प्रतिशत भाग का वैज्ञानिक उपचार किया गया। इस प्रयास से न केवल भूमि की उर्वरता और जल स्तर में सुधार

118. (B) उत्पादकता में कमी
भू-निम्नीकरण का सबसे प्रत्यक्ष और गंभीर परिणाम भूमि की उत्पादकता और उर्वरता में आने वाली कमी है। जब भूमि की गुणवत्ता गिरती है, तो वह फसलों के उत्पादन के योग्य नहीं रह जाती या उपज बहुत कम हो जाती है। यह स्थिति न केवल किसानों की आजीविका को संकट में डालती है, बल्कि खाद्य सुरक्षा के लिए भी खतरा उत्पन्न करती है। अतः निम्नीकरण को रोकना कृषि और अर्थव्यवस्था की स्थिरता के लिए आवश्यक है।

119. (D) दिल्ली से चंबल के मिलन तक के नदी मार्ग में
यमुना नदी में प्रदूषण की समस्या दिल्ली से चंबल के संगम तक के क्षेत्र में सबसे विकराल है। इसका मुख्य कारण यहाँ सिंचाई के लिए अत्यधिक जल का निकाला जाना है, जिससे नदी में पानी का प्रवाह बहुत कम हो जाता है। जल की कमी के कारण दिल्ली और आसपास के शहरों से विसर्जित कचरे और अपशिष्टों की सांद्रता बढ़ जाती है, जिससे नदी एक गंदे नाले के समान प्रतीत होती है।

120. (A) औद्योगिक और तकनीकी कुशल श्रम
ग्रामीण-शहरी प्रवास के माध्यम से अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने वाले व्यक्ति अक्सर शहरों के औद्योगिक और तकनीकी क्षेत्रों में कार्य करते हैं। वे शुरुआत में अकुशल श्रमिक के रूप में जुड़ते हैं और धीरे-धीरे वेल्डिंग, मशीन संचालन या अन्य तकनीकी कार्य सीखकर कुशल श्रमिक बन जाते हैं। यह व्यावसायिक कौशल उन्हें बेहतर आय प्राप्त करने और परिवार का भरण-पोषण करने में मदद करता है, जो प्रवास का एक सकारात्मक आर्थिक परिणाम है।

121. (C) चौड़ी सड़कें और व्यवस्थित स्ट्रीट लाइट
उच्च आय वर्ग की सुविकसित बस्तियाँ नगरीय नियोजन का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। इन क्षेत्रों की मुख्य विशेषताओं में चौड़ी और पक्की सड़कें, व्यवस्थित स्ट्रीट लाइट, सार्वजनिक पार्क और उचित जल निकासी व्यवस्था शामिल हैं। ये सुविधाएँ गंदी बस्तियों की विपरीत परिस्थितियों के साथ एक गहरा विरोधाभास पैदा करती हैं। ऐसी बस्तियों में रहने वालों का जीवन स्तर उच्च होता है और उन्हें सभी आवश्यक नागरिक सुविधाएँ सुलभ होती हैं।

122. (A) 4, 1, 2, 3
नगरीय विकास और पर्यावरणीय समस्याओं का एक निश्चित क्रम देखा गया है। सर्वप्रथम रोजगार की तलाश में ग्रामीण जनसंख्या का स्थानांतरण होता है, जिससे शहरों में आवास की कमी के कारण गंदी बस्तियों का उदय होता है। इसके बाद औद्योगिक विकास और अपशिष्टों से भू-जल संदूषण जैसी समस्याएँ बढ़ती हैं। अंततः इन चुनौतियों से निपटने के लिए संसाधनों के प्रबंधन हेतु सामुदायिक सहभागिता और वैज्ञानिक उपायों का विकास होता है।

123. (C) कथन 1 और 2 दोनों
शोर या ध्वनि प्रदूषण को डेसीबल की इकाई में मापा जाता है, जो ध्वनि की तीव्रता को व्यक्त करती है। सहन क्षमता से अधिक ऊँची और निरंतर ध्वनि मानव के शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक संतुलन पर भी नकारात्मक प्रभाव डालती है। इससे उच्च रक्तचाप, अनिद्रा और तनाव जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। अतः ध्वनि प्रदूषण को केवल एक असुविधा नहीं, बल्कि एक गंभीर स्वास्थ्य जोखिम के रूप में देखा जाना चाहिए।

124. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
मानवीय गतिविधियाँ विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों को जन्म देती हैं। कोयले का दहन बड़ी मात्रा में धुआँ और गैसें छोड़कर वायु प्रदूषण करता है। नगरीय वाही जल या सीवेज नदियों में मिलकर जल प्रदूषण का कारण बनता है। कृषि में पीड़कनाशियों का उपयोग मृदा की गुणवत्ता गिराकर भू-प्रदूषण करता है। मोटर-वाहनों और यातायात से उत्पन्न शोर प्रत्यक्ष रूप से ध्वनि प्रदूषण बढ़ाता है, जो नगरीय जीवन की एक बड़ी समस्या है।

125. (C) प्रभावित क्षेत्रों में स्वास्थ्य सर्वेक्षण कर रिपोर्ट तैयार करना
औद्योगिक प्रदूषण से प्रभावित क्षेत्रों में सुधार हेतु नागरिक समाज या एन.जी.ओ. का सबसे प्रभावी पहला कदम वैज्ञानिक साक्ष्य जुटाना होता है। प्रभावित निवासियों के बीच स्वास्थ्य सर्वेक्षण आयोजित करना और विस्तृत रिपोर्ट तैयार करना समस्या की गंभीरता को प्रमाणों के साथ सरकार और समाज के सामने लाता है। यह प्रक्रिया नीतिगत बदलावों और कानूनी कार्यवाहियों के लिए एक ठोस आधार प्रदान करती है, जैसा कि दौराला के मामले में देखा गया।

126. (D) खनन व औद्योगिक व्यर्थ क्षेत्रों का विस्तार
खनन और औद्योगिक व्यर्थ क्षेत्रों का विस्तार पूरी तरह से एक मानवजनित प्रक्रिया है जिसके कारण उपजाऊ भूमि कृषि और अन्य उपयोगी कार्यों के अयोग्य हो जाती है। खनन से जमीन खोद दी जाती है और औद्योगिक कचरे से मिट्टी विषाक्त हो जाती है। इसके विपरीत, हिमानी क्षेत्र या तटीय रेतीली भूमि का निर्माण प्राकृतिक भौगोलिक प्रक्रियाओं के अंतर्गत आता है। अतः मानवजनित भूमि क्षरण पर्यावरणीय स्थिरता के लिए अधिक गंभीर संकट है।

127. (A) केवल 1, 2 और 4
मुंबई की धारावी बस्ती केंद्रीय मुंबई का एक महत्वपूर्ण भाग है जो अपनी घनी बसावट और संकरी गलियों के लिए जानी जाती है, जहाँ वाहनों का प्रवेश असंभव है। यह क्षेत्र केवल एक स्लम नहीं, बल्कि लघु उद्योगों और शिल्पकला का एक बड़ा आर्थिक केंद्र भी है। हालांकि यहाँ के भवन अक्सर स्थायी नहीं होते, लेकिन कथन 3 की तुलना में अन्य तीन विकल्प धारावी की वास्तविक पहचान को अधिक प्रभावी ढंग से दर्शाते हैं।

128. (B) कचरा जमा होने से संक्रामक बीमारियों का खतरा बढ़ जाएगा
यदि कोई नगरीय निकाय ठोस अपशिष्ट संग्रहण में विफल रहता है, तो सड़कों और खाली स्थानों पर कचरे का ढेर जमा होने लगता है। यह अपशिष्ट सड़कर मीथेन जैसी गैसें छोड़ता है और मक्खियों व मच्छरों के प्रजनन का केंद्र बन जाता है।

में नाइट्रेट की उच्च सांद्रता मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है और यह जलीय पारिस्थितिकी तंत्र में पोषक तत्वों के असंतुलन का कारण भी बनती है।

87. (D) 69%
भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार, देश की कुल जनसंख्या का लगभग उनहत्तर प्रतिशत हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता था। यह आंकड़ा दर्शाता है कि भारत की अर्थव्यवस्था और समाज का एक बड़ा आधार अभी भी गाँवों में निहित है। हालांकि, ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर निरंतर प्रवास के कारण नगरीय जनसंख्या बढ़ रही है, फिर भी ग्रामीण क्षेत्र जनसंख्या वितरण की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बने हुए हैं।

88. (A) सुविकसित हरित-पट्टियाँ और आधुनिक खेल के मैदान
गंदी बस्तियों या स्लम की मुख्य विशेषताओं में घनी आबादी, जीर्ण-शीर्ण आवास और बुनियादी सुविधाओं का अभाव शामिल है। यहाँ सुविकसित हरित-पट्टियों और आधुनिक खेल के मैदानों का पूर्णतः अभाव होता है। इसके बजाय, यहाँ के निवासी अल्प-पोषण, संक्रामक बीमारियों और नशीली दवाओं के सेवन जैसी सामाजिक-आर्थिक समस्याओं से जूझते हैं। ये क्षेत्र नगरीय नियोजन की विफलता और संसाधनों के असमान वितरण को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

89. (A) केवल 1, 3 और 5
भू-निम्नीकरण का अर्थ भूमि की उत्पादकता और उर्वरता में आने वाली गिरावट है। इसके प्रमुख कारणों में मृदा अपरदन, लवणता और जलभराव जैसी प्रक्रियाएँ शामिल हैं। अनियंत्रित मानवीय और प्राकृतिक हस्तक्षेप उपजाऊ कृषि भूमि को भी व्यर्थ भूमि में बदल सकते हैं। हालांकि सभी निम्नकोटि भूमियाँ व्यर्थ नहीं होतीं, फिर भी उनका प्रबंधन आवश्यक है ताकि उन्हें पुनः उपयोगी बनाया जा सके और पर्यावरणीय संतुलन बना रहे।

90. (A) यह हवा से फैलता है और बरसाती पानी के साथ छितरता है
ठोस अपशिष्टों के लापरवाही से किए गए निपटान के गंभीर पर्यावरणीय परिणाम होते हैं। यह कचरा हवा के माध्यम से आसपास के क्षेत्रों में फैलता है और वर्षा के पानी के साथ बहकर जल निकायों को प्रदूषित करता है। इससे दुर्गंध और बीमारियों के कीटाणु फैलते हैं, जिससे स्थानीय वायु और जल की गुणवत्ता गिरती है। अतः कचरे का वैज्ञानिक और सुरक्षित प्रबंधन जनस्वास्थ्य और पर्यावरण सुरक्षा हेतु अनिवार्य है।

91. (D) अतिक्रमणकारी को प्रयोक्ता समूह में शामिल कर लाभांश देना
सामुदायिक जल संभरण प्रबंधन कार्यक्रमों की सफलता का एक अभिनव और प्रभावी कारण संघर्ष के बजाय समावेशी रणनीति अपनाना है। जब किसी अतिक्रमणकारी को प्रयोक्ता समूह का हिस्सा बना लिया जाता है और उसे संसाधनों से मिलने वाले लाभांश में हिस्सेदारी दी जाती है, तो वह संरक्षण का समर्थक बन जाता है। यह दृष्टिकोण सामाजिक सद्भाव बढ़ाता है और साझी संपदा संसाधनों के सतत प्रबंधन को सुनिश्चित करने में मदद करता है।

92. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
भारत के विभिन्न औद्योगिक नगरों का उनकी निकटवर्ती नदियों के प्रदूषण में विशिष्ट योगदान है। कानपुर गंगा नदी में भारी औद्योगिक अनुप्रवाह विसर्जित करता है, जबकि दिल्ली में यमुना नदी मुख्य रूप से घरेलू और औद्योगिक कचरे से प्रदूषित है। मथुरा में यमुना नदी औद्योगिक अपशिष्टों का सामना करती है और कोलकाता में गंगा के प्रदूषण का एक बड़ा कारण शहर का घरेलू कचरा और अन्य नगरीय अपशिष्ट हैं।

93. (C) क्योंकि अधिकांश शहरों में अपशिष्ट का एक बड़ा हिस्सा छूट जाता है
भारत में नगरीय अपशिष्ट निपटान एक गंभीर चुनौती है क्योंकि अधिकांश शहरों में उत्पन्न होने वाले कचरे का केवल तीस से पचास प्रतिशत हिस्सा ही एकत्रित किया जाता है। कचरे का एक बड़ा हिस्सा गलियों, नालियों और खुले स्थानों में ही छूटा रह जाता है। यह जमा कचरा सड़कर दुर्गंध पैदा करता है और संक्रामक बीमारियों का केंद्र बनता है, जो शहरी स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए निरंतर खतरा है।

94. (D) उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, और झारखंड के चयनित क्षेत्रों में
नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत गंगा ग्राम विकसित करने की योजना उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड के चयनित ग्रामीण क्षेत्रों के लिए प्रस्तावित है। इसका उद्देश्य गंगा नदी के किनारे बसे गाँवों में स्वच्छता सुनिश्चित करना, कचरा प्रबंधन करना और लोगों को नदी संरक्षण के प्रति जागरूक करना है। यह पहल नदी की निर्मलता बनाए रखने के साथ-साथ ग्रामीण विकास और पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्यों को जोड़ती है।

95. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत के नगरीय केंद्र सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक विविधतापूर्ण हैं, जहाँ विकास के विपरीत स्तर एक साथ मौजूद होते हैं। शहरों में एक ओर उच्च आय वर्ग के लोगों के लिए सभी सुख-सुविधाओं से लैस आधुनिक और सुविकसित बस्तियाँ हैं, तो दूसरी ओर प्रवासियों और गरीबों की घनी झुग्गी-झोपड़ियाँ हैं। विकास का यह विरोधाभास नगरीय जीवन की असमानता और संसाधनों के वितरण में मौजूद गहरी खाई को दर्शाता है।

96. (B) वायुमंडलीय संचित प्रदूषकों का वर्षा जल में घुलना
गर्मियों के लंबे सूखे अंतराल के बाद होने वाली पहली बरसात में वर्षा जल का पी.एच. स्तर कम पाया जाता है, जो इसकी अम्लीय प्रकृति को दर्शाता है। इसका मुख्य कारण वायुमंडल में लंबे समय से संचित धूल कणों, धुएँ और सल्फर व नाइट्रोजन के ऑक्साइडों का वर्षा जल के साथ घुलना है। यह प्रक्रिया अम्ल वर्षा की शुरुआत का संकेत है, जो मिट्टी और जल निकायों को प्रभावित करती है।

159. (C) क्योंकि इसका आकार बहुत सूक्ष्म होता है और यह फेफड़ों में गहराई तक प्रवेश कर सकता है।
PM2.5 सूक्ष्म कणिकीय पदार्थ हैं जिनका व्यास 2.5 माइक्रोमीटर से कम होता है। इनके अत्यंत छोटे आकार के कारण, ये सांस लेने पर फेफड़ों के सबसे गहरे हिस्सों तक पहुँच सकते हैं और रक्त प्रवाह में भी प्रवेश कर सकते हैं। यह स्थिति हृदय रोगों, अस्थमा और अन्य श्वसन संबंधी गंभीर बीमारियों के जोखिम को बहुत अधिक बढ़ा देती है, जिससे यह सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए खतरा है।

160. (A) वे प्रदूषक जो वायुमंडल में प्राथमिक प्रदूषकों की रासायनिक प्रतिक्रिया से बनते हैं।
द्वितीयक प्रदूषक वे पदार्थ हैं जो सीधे किसी स्रोत से उत्सर्जित नहीं होते हैं। ये तब बनते हैं जब प्राथमिक प्रदूषक वायुमंडल में मौजूद रसायनों या सूर्य के प्रकाश के साथ परस्पर क्रिया करते हैं। ओजोन और पेरोक्सीएसिटाइल नाइट्रेट इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इन प्रदूषकों का निर्माण और इनका प्रभाव अक्सर विशिष्ट वायुमंडलीय स्थितियों, तापमान और गैसों की सांद्रता पर पूरी तरह निर्भर करता है।

161. (D) डेसिबल (dB)
ध्वनि की तीव्रता को मापने के लिए डेसिबल नामक लघुगणकीय पैमाने का उपयोग किया जाता है। यह पैमाना मानव कान द्वारा अनुभव की जाने वाली ध्वनि की विशाल रेंज को प्रभावी ढंग से दर्शाता है। शून्य डेसिबल सुनाई देने वाली सबसे धीमी ध्वनि को दर्शाता है। ध्वनि प्रदूषण के संदर्भ में, उच्च डेसिबल स्तर मानव स्वास्थ्य, सुनने की क्षमता और आसपास के पर्यावरण के लिए हानिकारक माने जाते हैं।

162. (B) 85 डेसिबल
विशेषज्ञों के अनुसार, 85 डेसिबल से अधिक तीव्रता वाली ध्वनि के लंबे समय तक संपर्क में रहने से सुनने की क्षमता को स्थायी नुकसान पहुँच सकता है। यह सीमा वह बिंदु है जहाँ ध्वनि ऊर्जा कान की नाजुक आंतरिक कोशिकाओं को नष्ट करना शुरू कर देती है। इसलिए, औद्योगिक क्षेत्रों और निर्माण स्थलों पर ध्वनि नियंत्रण उपायों को सख्ती से लागू करना कर्मचारियों की सुरक्षा के लिए आवश्यक होता है।

163. (C) उच्च रक्तचाप
ध्वनि प्रदूषण के गैर-श्रवण प्रभावों में वे शारीरिक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव शामिल हैं जो सुनने की क्षमता से सीधे संबंधित नहीं हैं। उच्च रक्तचाप इसका एक प्रमुख उदाहरण है, क्योंकि शोर शरीर में तनाव प्रतिक्रिया उत्पन्न करता है। अन्य प्रभावों में हृदय रोग का जोखिम बढ़ना, नींद में भारी बाधा आना और बच्चों की सीखने तथा ध्यान केंद्रित करने की संज्ञानात्मक क्षमता का प्रभावित होना शामिल है।

164. (D) क्योंकि यह वायु या जल प्रदूषण की तरह भौतिक रूप से दिखाई नहीं देता, फिर भी स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।
ध्वनि प्रदूषण को 'अदृश्य खतरा' इसलिए कहा जाता है क्योंकि वायु या जल प्रदूषण के विपरीत, इसे आँखों से नहीं देखा जा सकता। यह वातावरण में किसी भौतिक मलबे या रंग परिवर्तन के रूप में प्रकट नहीं होता है। इसके बावजूद, यह निरंतर मानव स्वास्थ्य, मानसिक शांति और पारिस्थितिकी तंत्र को चुपचाप प्रभावित करता रहता है, जिससे इसके प्रति सामाजिक जागरूकता और कानूनी नियंत्रण अक्सर कम होता है।

165. (A) यह जानवरों के संचार, प्रजनन और प्रवासन पैटर्न में बाधा डालता है।
ध्वनि प्रदूषण वन्यजीवों के लिए अत्यधिक तनावपूर्ण होता है क्योंकि यह उनके प्राकृतिक व्यवहार में हस्तक्षेप करता है। कई जानवर संचार, शिकार और नेविगेशन के लिए ध्वनियों पर निर्भर होते हैं। अत्यधिक शोर उनके प्रजनन संकेतों को बाधित करता है, प्रवासन के रास्तों को बदल देता है और उनके जीवित रहने की संभावनाओं को कम कर देता है। यह अंततः पूरे पारिस्थितिक संतुलन के लिए एक गंभीर खतरा उत्पन्न करता है।

166. (B) इसमें जैविक पदार्थ का उच्च प्रतिशत होता है।
विकासशील देशों में नगरपालिका ठोस अपशिष्ट की संरचना विकसित देशों से भिन्न होती है। यहाँ कचरे में जैविक पदार्थ, जैसे कि खाद्य अपशिष्ट और छिलकों की मात्रा बहुत अधिक, लगभग 50-60 प्रतिशत तक होती है। यह उच्च नमी सामग्री के कारण कंपोस्टिंग के लिए उपयुक्त होता है, लेकिन अगर इसे सही तरीके से प्रबंधित न किया जाए, तो यह गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं और दुर्गंध का कारण बनता है।

167. (B) कचरे के ढेर से रिसने वाला एक जहरीला तरल जो जल स्रोतों को दूषित कर सकता है
निक्षालन या लीचेट एक जहरीला और दुर्गंधयुक्त तरल है जो कचरे के ढेर या लैंडफिल के माध्यम से बारिश के पानी के रिसने से बनता है। जैसे ही पानी कचरे से गुजरता है, वह हानिकारक रसायनों और भारी धातुओं को घोल लेता है। यदि इसे वैज्ञानिक रूप से नियंत्रित न किया जाए, तो यह रिसकर भूजल और आसपास के जल निकायों को गंभीर रूप से प्रदूषित कर सकता है।

168. (A) मीथेन (CH_4)
जब लैंडफिल में जैविक कचरे को ऑक्सीजन की अनुपस्थिति में सूक्ष्मजीवों द्वारा तोड़ा जाता है, तो इस अवायवीय प्रक्रिया के परिणामस्वरूप मीथेन गैस उत्पन्न होती है। मीथेन एक अत्यंत शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैस है, जो ग्लोबल वार्मिंग में कार्बन डाइऑक्साइड की तुलना में कहीं अधिक योगदान देती है। इस गैस का उचित संग्रह करके इसे ऊर्जा के एक उपयोगी और नवीकरणीय स्रोत के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

169. (C) नदियों में कचरे का सीधा निपटान
एकीकृत अपशिष्ट प्रबंधन एक समग्र दृष्टिकोण है जिसका उद्देश्य कचरे के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करना है। इसमें कचरे को स्रोत पर अलग करना, पुनर्चक्रण को बढ़ावा देना और स्वच्छता-भराव जैसी सुरक्षित विधियों का उपयोग शामिल है। नदियों में कचरे का सीधा निपटान करना किसी भी प्रकार के वैज्ञानिक प्रबंधन का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह जल प्रदूषण

और विज्ञापन मीडिया दृश्य प्रदूषण के कारक हो सकते हैं। प्रदूषण के प्रकारों की सही पहचान उनके नियंत्रण और शमन के लिए प्रभावी नीतियां बनाने हेतु आवश्यक है।

108. (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
यद्यपि जल प्रदूषण प्राकृतिक स्रोतों जैसे अपरदन और भू-स्खलन से भी होता है, किंतु मानव क्रियाकलापों से उत्पन्न औद्योगिक और रासायनिक प्रदूषक कहीं अधिक चिंताजनक हैं। ये मानवजनित प्रदूषक विषाक्त होते हैं और लंबे समय तक पर्यावरण में बने रहते हैं। यह कहना गलत है कि प्राकृतिक प्रदूषक औद्योगिक प्रदूषकों से अधिक हानिकारक होते हैं, क्योंकि प्राकृतिक प्रक्रियाओं में स्वतः शुद्धीकरण की संभावना अधिक होती है जो रसायनों में नहीं होती।

109. (A) केवल 1, 2, 3 और 4
ध्वनि प्रदूषण के प्रमुख स्रोतों में मशीनीकृत निर्माण, तोड़-फोड़ के कार्य, तीव्र गति वाले मोटर-वाहन और वायुयान शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, सायरन, लाउडस्पीकर और सामुदायिक उत्सवों में होने वाला शोर भी शांति को भंग करता है। पुस्तकालय और ध्यान केंद्र जैसे शांत स्थान ध्वनि प्रदूषण के स्रोत नहीं हो सकते। शोर का यह बढ़ता स्तर मानव के मानसिक स्वास्थ्य, एकाग्रता और सुनने की क्षमता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

110. (C) कथन 1 और 2 दोनों
औद्योगिक कचरे को सीधे नदियों और जलाशयों में विसर्जित करने से उनमें भारी धातुएँ और विषाक्त रासायनिक तत्व घुल जाते हैं। ये रसायन जल की प्राकृतिक गुणवत्ता को नष्ट कर देते हैं और जलीय जैव प्रणाली के लिए अत्यंत घातक सिद्ध होते हैं। मछलियों और अन्य जलीय जीवों की मृत्यु के साथ-साथ ये विषाक्त पदार्थ खाद्य श्रृंखला के माध्यम से मनुष्यों तक भी पहुँचते हैं, जो एक गंभीर पर्यावरणीय और स्वास्थ्य संकट है।

111. (A) श्वसन तंत्रीय, तंत्रिका तंत्रीय तथा रक्त संचारतंत्र को
वायु प्रदूषण का मानव शरीर पर बहुआयामी और हानिकारक प्रभाव पड़ता है। प्रदूषित हवा में मौजूद सूक्ष्म कण और विषाक्त गैसें सीधे फेफड़ों में पहुँचकर श्वसन तंत्र को नुकसान पहुँचाती हैं। इसके अतिरिक्त, ये प्रदूषक रक्त में घुलकर संचार तंत्र को प्रभावित करते हैं और तंत्रिका तंत्र पर भी नकारात्मक असर डालते हैं। इससे हृदय रोग, कैंसर और श्वसन संबंधी गंभीर बीमारियाँ होने का खतरा निरंतर बना रहता है जो जनस्वास्थ्य के लिए चुनौती है।

112. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
प्रवास और स्वास्थ्य के बीच गहरा अंतर्संबंध है। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के निम्न अवसर एक प्रतिकर्ष कारक हैं, जबकि शहरों में मजदूरों की माँग एक अपकर्ष कारक है। स्वास्थ्य की दृष्टि से, हेपेटाइटिस संदूषित जल के सेवन से होने वाला रोग है, जबकि श्वसन संक्रमण मुख्य रूप से वायु प्रदूषण के कारण होता है। इन कारकों और रोगों की पहचान पर्यावरण और सामाजिक सुरक्षा की योजना बनाने में अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।

113. (B) धारावी
नाइटीफुट रोड मुंबई की प्रसिद्ध और विशालतम गंदी बस्ती धारावी के मध्य से गुजरने वाली मुख्य सड़क है। यह सड़क धारावी की घनी आबादी और व्यावसायिक गतिविधियों का केंद्र है। यद्यपि इसका नाम नब्बे फुट है, लेकिन अतिक्रमण और सघन बसावट के कारण इसकी वास्तविक चौड़ाई कई स्थानों पर बहुत कम हो गई है। यह सड़क धारावी की अनूठी शहरी बनावट और वहां के निवासियों के दैनिक संघर्ष का प्रतीक मानी जाती है।

114. (A) ध्वनि प्रदूषण - एस्बेस्टॉस
प्रदूषण के प्रकारों और उनके कारकों के बीच सही संबंध समझना आवश्यक है। एस्बेस्टॉस मुख्य रूप से वायु और मृदा प्रदूषण का कारक है जो श्वसन रोगों का कारण बनता है, इसका ध्वनि प्रदूषण से कोई सीधा संबंध नहीं है। ध्वनि प्रदूषण का स्रोत शोर है। वहीं, हाइड्रोकार्बन वायु प्रदूषण, टैनिन जल प्रदूषण और रेडियोधर्मी पदार्थ भू-प्रदूषण से संबंधित सही युग्म हैं जो पर्यावरण के विभिन्न घटकों को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करते हैं।

115. (A) केवल 1, 2 और 3
भारत में ग्रामीण-नगरीय प्रवास मुख्य रूप से पुरुषों द्वारा किया जाता है और अस्थाई नौकरी के कारण वे परिवार को साथ नहीं रख पाते। गंदी बस्तियों में जनसंख्या का जमाव इतना अधिक होता है कि बुनियादी सुविधाएँ अपर्याप्त हो जाती हैं। यह कहना गलत है कि स्लम निवासी संगठित क्षेत्र में उच्च वेतन पर कार्य करते हैं, बल्कि वे असंगठित क्षेत्र में कम मजदूरी पर कठिन श्रम करने को मजबूर होते हैं।

116. (D) उनके पृष्ठप्रदेश (Hinterland) के सहायक या परिशिष्ट के रूप में
भारत में ग्रामीण और नगरीय क्षेत्र एक-दूसरे से पूरी तरह अलग नहीं हैं। ग्रामीण क्षेत्र नगरीय केंद्रों के लिए पृष्ठप्रदेश या हिंटरलैंड की भूमिका निभाते हैं, जहाँ से शहरों को खाद्यान्न, कच्चा माल और श्रम की आपूर्ति होती है। यह अंतर्निर्भरता दर्शाती है कि शहरों का विकास और उनकी अर्थव्यवस्था काफी हद तक ग्रामीण संसाधनों पर आधारित है। ग्रामीण क्षेत्रों के पिछड़ने का सीधा प्रभाव नगरीय क्षेत्रों की समस्याओं और प्रवास पर पड़ता है।

117. (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
नगरीय क्षेत्रों के निकट औद्योगिक इकाइयों के संकेंद्रण से निकलने वाले अपशिष्टों की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि होती है, जो पर्यावरण के लिए चुनौती है। हालांकि, औद्योगिक कचरे को सीधे नदियों में विसर्जित करना किसी भी समस्या का समाधान नहीं है, बल्कि यह जल प्रदूषण को और अधिक बढ़ा देता है। प्रदूषण का स्थायी समाधान केवल अपशिष्टों के वैज्ञानिक उपचार और उनके पुनर्चक्रण के माध्यम से ही संभव है, न कि नदी विसर्जन से।

97. (B) पूर्व में प्रवास कर चुके मित्र और परिचित
ग्रामीण प्रवासियों के लिए शहरी क्षेत्रों में रोजगार और आवास की तलाश में उनके सामाजिक संपर्क सबसे बड़ी भूमिका निभाते हैं। पूर्व में गाँव से शहरों की ओर प्रवास कर चुके मित्र और परिचित नए प्रवासियों के लिए मार्गदर्शक और सहायक बनते हैं। यह अनौपचारिक नेटवर्क उन्हें शुरुआती संघर्षों से उबरने और नए परिवेश में समाहित होने में मदद करता है, जो प्रवास की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण सामाजिक पक्ष है।

98. (A) भूमि, जल और वनस्पति
जल संभरण प्रबंधन कार्यक्रम एक एकीकृत दृष्टिकोण है जो मुख्य रूप से तीन प्राकृतिक घटकों—भूमि, जल और वनस्पति—के बीच के गहरे अंतर्संबंध को पहचानता है। इसका उद्देश्य इन संसाधनों का इस प्रकार प्रबंधन करना है जिससे मृदा अपरदन कम हो, भू-जल स्तर बढ़े और हरियाली का विस्तार हो। इन घटकों का सामूहिक संरक्षण ही पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता और स्थानीय समुदायों की आर्थिक सुरक्षा को सुनिश्चित करने का आधार बनता है।

99. (A) केवल 1 और 2
वायु प्रदूषण वायुमंडल में धूल, धुएँ और विषाक्त गैसों जैसे अवांछित संदूषकों के संचय का परिणाम है, जिसका मुख्य स्रोत जीवाश्म ईंधन का दहन है। यह केवल श्वसन तक सीमित नहीं है, बल्कि तंत्रिका और रक्त संचार तंत्र को भी प्रभावित करता है और अम्ल वर्षा का कारण भी बन सकता है। वायु की गुणवत्ता में गिरावट मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए एक निरंतर बढ़ता हुआ वैश्विक संकट है।

100. (D) क्योंकि गरीबी के कारण वे शिक्षा का खर्च वहन नहीं कर पाते
गंदी बस्तियों या स्लम में रहने वाले बच्चों के औपचारिक शिक्षा से वंचित रहने का सबसे बड़ा कारण परिवार की अत्यधिक निर्धनता है। आर्थिक तंगी के कारण माता-पिता शिक्षा का खर्च वहन नहीं कर पाते और अक्सर बच्चों को भी आय के छोटे-मोटे कार्यों में लगना पड़ता है। इसके अलावा, इन क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी और प्रतिकूल वातावरण भी बच्चों के भविष्य को सीमित कर देते हैं।

101. (C) हेपेटाइटिस
नगरीय अपशिष्टों और अनुपचारित कचरे के सीधे संपर्क से टाइफाइड, डिप्थीरिया और हैजा जैसी संक्रामक बीमारियाँ फैलने का सीधा खतरा होता है। हालांकि हेपेटाइटिस भी एक गंभीर बीमारी है, लेकिन इसे सामान्यतः ठोस अपशिष्ट निपटान के बजाय मुख्य रूप से संदूषित जल और भोजन के माध्यम से फैलने वाला जल-जनित रोग माना जाता है। कचरे का उचित प्रबंधन इन स्वास्थ्य जोखिमों को कम करने के लिए अनिवार्य है ताकि सार्वजनिक स्वच्छता बनी रहे।

102. (A) P-4, Q-1, R-3, S-2
गंदी बस्तियों की समस्याएँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। जीर्ण-शीर्ण मकान आवास की निम्न गुणवत्ता को दर्शाते हैं, जबकि बच्चों में अल्प-पोषण गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनता है। इन क्षेत्रों के निवासियों को अक्सर समाज की मुख्यधारा से अलग-थलग या सामाजिक बहिष्कार का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त, शौचालय और पेयजल जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव इन बस्तियों की एक दुखद किंतु अनिवार्य विशेषता बनी हुई है।

103. (D) अपशिष्ट और कचरे से भरी गई सागर की दलदली भूमि पर
मुंबई की धारावी बस्ती का भौगोलिक विकास एक विशिष्ट प्रक्रिया का परिणाम है। यह हिस्सा कभी सागर की दलदली भूमि था, जिसे धीरे-धीरे कचरे और अपशिष्ट पदार्थों से भरकर रहने योग्य बनाया गया। इसी कारण यहाँ की मिट्टी की प्रकृति और जल निकासी की व्यवस्था अत्यंत दोषपूर्ण है। ऐसी भूमि पर अनियोजित और घनी बसावट ने धारावी को दुनिया की सबसे चर्चित और चुनौतीपूर्ण स्लम बस्तियों में बदल दिया है।

104. (A) क्योंकि शहरों में नौकरी अक्सर अस्थायी और कम वेतन वाली होती है
ग्रामीण प्रवासियों के लिए अपने परिवार को शहरों में साथ रखना एक बड़ी आर्थिक चुनौती है। शहरों में मिलने वाली नौकरियाँ अक्सर असंगठित क्षेत्र में होती हैं जो अस्थायी और कम वेतन वाली होती हैं। प्रवास के शुरुआती वर्षों में आय इतनी सीमित होती है कि प्रवासी शहर के ऊँचे आवास खर्च और जीवन यापन की लागत वहन नहीं कर पाते। फलस्वरूप, वे आर्थिक सुरक्षा के लिए अपने परिवार को गाँव में ही छोड़ देते हैं।

105. (C) 'नगरीय या नगरीय केंद्र' की अवधारणा
मानव भूगोल के अध्ययन में नगरीय या नगरीय केंद्र की परिभाषा एक सार्वभौमिक चुनौती रही है। विभिन्न देश अपनी प्रशासनिक, जनसांख्यिकीय और आर्थिक आवश्यकताओं के अनुसार इसे अलग-अलग तरीके से परिभाषित करते हैं। कहीं जनसंख्या का आकार मुख्य आधार होता है, तो कहीं गैर-कृषि कार्यों में संलग्नता। यह विविधता दर्शाती है कि शहरीकरण के मानदंड स्थानीय संदर्भों और विकास के स्तर के अनुसार बदलते रहते हैं, जो सांख्यिकीय विश्लेषण को जटिल बनाते हैं।

106. (A) 1, 2, 3, 4, 5
सामुदायिक विकास और संसाधनों के पुनर्जीवन की प्रक्रिया एक तार्किक क्रम में बढ़ती है। पहले साझी संपदा की पहचान और उसके पुनर्जीवन का निर्णय लिया जाता है, फिर चरागाहों पर चारा घास लगाई जाती है। इसके बाद खुली चराई पर प्रतिबंध लगाकर संसाधनों की सुरक्षा की जाती है। पशुओं के लिए पानी और आहार की नाँद बनाई जाती है और अंततः अतिक्रमण करने वालों को समूह में शामिल कर लाभ साझा किया जाता है।

107. (D) ध्वनि प्रदूषण का स्रोत - औद्योगिक प्रक्रम
ध्वनि प्रदूषण का एक प्रमुख और प्रत्यक्ष स्रोत विभिन्न औद्योगिक प्रक्रम और मशीनों का संचालन है। कारखानों में चलने वाली भारी मशीनें और विनिर्माण की प्रक्रियाएँ निरंतर तीव्र शोर उत्पन्न करती हैं जो आसपास के वातावरण को प्रभावित करती हैं। इसके विपरीत, मोटर-वाहन वायु प्रदूषण

इसका तात्कालिक और गंभीर परिणाम हैजा, टाइफाइड और अन्य संक्रामक बीमारियों के फैलने का खतरा बढ़ना है। अतः नियमित कचरा संग्रहण सार्वजनिक स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

129. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
भू-निम्नीकरण प्राकृतिक और मानवजनित दोनों कारणों से होता है और आधुनिक समय में मानवीय हस्तक्षेप ने व्यर्थ भूमि के विस्तार को काफी तेज कर दिया है। ये दोनों तथ्य भूमि संरक्षण के दृष्टिकोण से सही हैं। हालांकि, मानवजनित दर का अधिक होना यह स्पष्ट नहीं करता कि निम्नीकरण दोनों प्रक्रियाओं का परिणाम है; यह केवल मानवीय प्रभाव की गंभीरता को रेखांकित करता है। अतः दोनों कथन स्वतंत्र रूप से सत्य हैं।

130. (A) जल में अवांछित बाहरी पदार्थों की उच्च सांद्रता इसे प्रदूषित बनाती है
जल प्रदूषण का वैज्ञानिक आधार जल में अवांछित बाहरी पदार्थों या रसायनों की सांद्रता का बढ़ना है, जो जल की प्राकृतिक गुणवत्ता को नष्ट कर देते हैं। प्राकृतिक जल स्रोत हमेशा शुद्ध नहीं होते और जलीय जीवन पर प्रदूषण का अत्यंत घातक प्रभाव पड़ता है। जब जल में विषाक्त तत्व मिलते हैं, तो उसकी स्वतः शुद्धीकरण क्षमता समाप्त हो जाती है और वह मानव उपभोग तथा पारिस्थितिकी तंत्र के लिए असुरक्षित हो जाता है।

131. (C) घरेलू सीवेज और औद्योगिक अपशिष्ट का सीधा जल विसर्जन
गंगा नदी के तट पर स्थित बड़े औद्योगिक नगरों में प्रदूषण का प्राथमिक और सबसे गंभीर कारण घरेलू सीवेज और कारखानों से निकलने वाले अपशिष्टों का बिना किसी उपचार के सीधे नदी में विसर्जन करना है। ये नगर प्रतिदिन करोड़ों लीटर संदूषित जल नदी में छोड़ते हैं, जिससे जल की जैविक ऑक्सीजन माँग बढ़ जाती है और जलीय जीवन संकट में पड़ जाता है। यह विसर्जन नदी की निर्मलता में सबसे बड़ी बाधा है।

132. (D) ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिकूल परिस्थितियाँ जैसे रोजगार का अभाव
प्रवास के संदर्भ में प्रतिकर्ष कारक या पुश फैक्टर उन नकारात्मक और प्रतिकूल स्थितियों को दर्शाते हैं जो व्यक्ति को अपना मूल स्थान छोड़ने के लिए प्रेरित या विवश करती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की कमी, गरीबी, कृषि का पिछड़ापन और बुनियादी सुविधाओं का अभाव प्रमुख प्रतिकर्ष कारक हैं। ये कारक लोगों को आर्थिक सुरक्षा की तलाश में शहरों की ओर जाने के लिए एक दबाव के रूप में कार्य करते हैं।

133. (A) केवल 1, 2 और 3
ध्वनि प्रदूषण विभिन्न स्रोतों से उत्पन्न होने वाली वह तीव्र और असहज ध्वनि है जो शांति को भंग करती है। शहरी क्षेत्रों में यातायात इसका मुख्य स्रोत है, जबकि पत्तनों पर भी शोर की तीव्रता बहुत अधिक होती है। ध्वनि प्रदूषण केवल सुनने की क्षमता ही नहीं, बल्कि एकाग्रता, मानसिक स्वास्थ्य और हृदय की गति को भी प्रभावित करता है। अतः इसे एक व्यापक स्वास्थ्य समस्या मानकर नियंत्रित करना समाज के लिए आवश्यक है।

134. (C) कथन 1 और 2 दोनों
भारत में प्रवासियों का झुकाव छोटे नगरों के बजाय महानगरों की ओर अधिक होता है, क्योंकि वहाँ रोजगार की अधिक संभावनाएँ और विविध आर्थिक अवसर मौजूद हैं। छोटे नगरों में बुनियादी सुविधाओं और आधुनिक जीवन शैली के अभाव के कारण वे प्रवासियों को आकर्षित नहीं कर पाते। फलस्वरूप, महानगरों पर जनसंख्या का दबाव निरंतर बढ़ता जा रहा है, जो वहां के संसाधनों और बुनियादी ढांचे पर अत्यधिक बोझ डालता है।

135. (D) सल्फर और नाइट्रोजन के ऑक्साइडों का जलवाष्प के साथ मिलना
अम्ल वर्षा एक गंभीर वायुमंडलीय समस्या है जो मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन के दहन से निकलने वाले सल्फर और नाइट्रोजन के ऑक्साइडों के कारण होती है। जब ये गैसें वायुमंडल में मौजूद जलवाष्प के साथ रासायनिक क्रिया करती हैं, तो सल्फ्यूरिक और नाइट्रिक एसिड बनाती हैं जो वर्षा के साथ जमीन पर गिरते हैं। इससे मृदा की उर्वरता घटती है, जलीय जीवन नष्ट होता है और ऐतिहासिक इमारतों को भी नुकसान पहुँचता है।

136. (A) 1, 2, 3, 4
पर्यावरणीय प्रदूषण की प्रक्रिया एक व्यवस्थित क्रम में घटित होती है। सर्वप्रथम मानवीय और औद्योगिक गतिविधियों से विभिन्न प्रकार के अपशिष्ट उत्पन्न होते हैं। इसके पश्चात इन अपशिष्टों को उचित उपचार के बिना भूमि, वायु या जल में विसर्जित किया जाता है। इससे प्राकृतिक संसाधनों की मौलिक गुणवत्ता में गिरावट आती है और अंततः मानव स्वास्थ्य तथा संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र पर इसके विनाशकारी और प्रतिकूल प्रभाव पड़ने लगते हैं।

137. (C) स्थानीय नगरपालिका या नगर निगम
शहरी क्षेत्रों में कचरे के संग्रहण, परिवहन और उसके वैज्ञानिक निपटान का प्राथमिक और कानूनी उत्तरदायित्व स्थानीय नगरपालिका या नगर निगम का होता है। ये संस्थाएँ स्वच्छता अभियान चलाने और कूड़े के उचित प्रबंधन हेतु आधारभूत ढांचा प्रदान करती हैं। हालांकि राज्य और केंद्र सरकारें नीतियां और धन उपलब्ध कराती हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन और स्वच्छता बनाए रखने का कार्य नगरीय निकायों की कार्यकुशलता पर ही निर्भर करता है।

138. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
विभिन्न क्षेत्रों में पर्यावरणीय समस्याओं के अलग-अलग प्रमुख कारण हैं। दिल्ली में यमुना नदी घरेलू और औद्योगिक कचरे के मिश्रण से प्रदूषित है, जबकि कानपुर में गंगा मुख्य रूप से औद्योगिक अनुप्रवाह का शिकार है। मध्य प्रदेश के पिछड़े जिलों में प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित क्षरण आजीविका का संकट बढ़ाता है। मेरठ जैसे औद्योगिक क्षेत्रों में अनुपचारित

रसायनों का जमीन में रिसना या निक्षालन भू-जल को संदूषित करने का मुख्य कारण है।

139. (D) सीमित संसाधनों के साथ निर्वाह और नई संस्कृति के साथ समायोजन
प्रवास के बाद नए नगरीय परिवेश में बसना एक कठिन प्रक्रिया है, जहाँ प्रवासियों को सीमित आर्थिक संसाधनों के साथ जीवन निर्वाह करना पड़ता है। उन्हें न केवल रोजगार और आवास की अनिश्चितता का सामना करना पड़ता है, बल्कि नई शहरी संस्कृति और सामाजिक मूल्यों के साथ समायोजन करना भी एक बड़ी व्यक्तिगत चुनौती होती है। यह संघर्ष अक्सर उनके मानसिक और सामाजिक जीवन को प्रभावित करता है, जिसे प्रवासी अपनी दृढ़ता से सहते हैं।

140. (B) प्राकृतिक प्रक्रियाओं और अनियंत्रित मानवीय क्रियाकलापों का परिणाम
भू-निम्नीकरण एक जटिल पर्यावरणीय समस्या है जो प्राकृतिक प्रक्रियाओं जैसे अपरदन और मानवीय क्रियाकलापों जैसे खनन व दोषपूर्ण कृषि के सम्मिलित प्रभाव का परिणाम है। यद्यपि कुछ निम्नीकरण प्राकृतिक रूप से होता है, किंतु वर्तमान में अनियंत्रित मानवीय हस्तक्षेप ने इस प्रक्रिया को बहुत तेज कर दिया है। भूमि की उत्पादकता और उर्वरता को बनाए रखने के लिए इन दोनों कारकों के संतुलित प्रबंधन और सतत उपयोग की आवश्यकता होती है।

141. (C) केवल 1 और 4
गंदी बस्तियों की विशेषताओं में आवासों की दयनीय स्थिति और बुनियादी सुविधाओं जैसे पेयजल व स्वच्छता का घोर अभाव प्रमुख है। अत्यधिक भीड़भाड़ के कारण यहाँ संक्रामक बीमारियाँ तेजी से फैलती हैं। यह कहना गलत है कि यहाँ के निवासियों का जीवन स्तर उच्च होता है, बल्कि वे आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से अत्यंत वंचित परिस्थितियों में रहने को मजबूर होते हैं। अतः स्लम जीवन अभाव और चुनौतियों का एक सघन केंद्र है।

142. (D) नमामि गंगे कार्यक्रम
गंगा ग्राम की परिकल्पना नमामि गंगे कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसका उद्देश्य गंगा नदी के किनारे स्थित गाँवों को मॉडल ग्राम के रूप में विकसित करना है, जहाँ स्वच्छता और प्रदूषण नियंत्रण के सभी मानकों का पालन किया जाए। यह पहल नदी की निर्मलता बनाए रखने में ग्रामीण समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित करती है। इसके माध्यम से कचरा प्रबंधन और वनीकरण को बढ़ावा देकर नदी के पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित किया जाता है।

143. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
नगरीय अपशिष्ट को केवल एक पर्यावरणीय समस्या के रूप में देखने के बजाय इसे एक मूल्यवान संसाधन माना जा सकता है। वैज्ञानिक उपचार और आधुनिक तकनीकों के माध्यम से कचरे से ऊर्जा का उत्पादन और उच्च गुणवत्ता वाली जैविक खाद का निर्माण किया जा सकता है। यह दृष्टिकोण न केवल प्रदूषण को कम करता है, बल्कि कचरे के आर्थिक मूल्य को भी उजागर करता है, जो सतत शहरी विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

144. (B) जीवाश्म ईंधन (पेट्रोल, डीजल, कोयला) का अधूरा दहन
वायु प्रदूषण के लिए उत्तरदायी हाइड्रोकार्बन मुख्य रूप से पेट्रोल, डीजल और कोयले जैसे जीवाश्म ईंधनों के अधूरे दहन से उत्पन्न होते हैं। जब ये ईंधन वाहनों या कारखानों के इंजनों में पूरी तरह नहीं जल पाते, तो वे सूक्ष्म कणों और गैसों के रूप में हवा में मिल जाते हैं। ये हाइड्रोकार्बन मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होने के साथ-साथ ग्लोबल वार्मिंग और ओजोन परत के क्षरण में भी योगदान देते हैं।

145. (B) टाइफाइड, हैजा और डिप्थीरिया
ठोस अपशिष्टों के असुरक्षित और खुले में निपटान से पर्यावरण में रोगजनक कीटाणु पनपते हैं जो संक्रामक बीमारियों का कारण बनते हैं। कचरे के ढेर और संदूषित वातावरण से टाइफाइड, हैजा और डिप्थीरिया जैसी बीमारियाँ फैलने की प्रबल आशंका होती है। ये बीमारियाँ मुख्य रूप से अपशिष्ट जल और मक्खियों के माध्यम से मानवीय संपर्क में आती हैं। अतः सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा के लिए कचरे का व्यवस्थित प्रबंधन अनिवार्य है।

146. (A) प्रदूषकों की मात्रा बहुत अधिक होने से प्राकृतिक सफाई संभव नहीं
नदियों और अन्य जल निकायों में प्रकृति द्वारा प्रदत्त स्वतः शुद्धीकरण की एक निश्चित क्षमता होती है। हालांकि, जब प्रदूषकों की मात्रा एक सीमा से अधिक हो जाती है, तो यह प्राकृतिक प्रक्रिया रुक जाती है और जल निकाय अपनी सफाई स्वयं नहीं कर पाता। इसका अर्थ है कि प्रदूषण इतना गंभीर हो चुका है कि जल अब मानवीय हस्तक्षेप और उपचार के बिना शुद्ध नहीं हो सकता। यह स्थिति पारिस्थितिकी तंत्र की विफलता को दर्शाती है।

147. (A) केवल 1, 2 और 3
भारत में संचारी रोगों का एक बहुत बड़ा हिस्सा जल प्रदूषण और संदूषित जल के उपयोग से जुड़ा हुआ है। यह पाचन तंत्र को प्रभावित कर दस्त और हेपेटाइटिस जैसी बीमारियाँ पैदा करता है। औद्योगिक अपशिष्टों का शुद्धिकरण इन रोगों को फैलने से रोकने में अत्यंत सहायक होता है। केवल समुद्री जल ही नहीं, बल्कि धरातलीय और भू-जल का संदूषण भी मानव स्वास्थ्य के लिए उतना ही घातक और चिंताजनक विषय है।

148. (A) केवल कथन 1
गंदी बस्तियों जैसी अत्यधिक घनी और अनियोजित बस्तियों में सड़कों और गलियों का अभाव होता है, जिससे वहां सामान्य परिवहन और आपातकालीन सेवाओं का पहुँचना अत्यंत कठिन हो जाता है। ये बस्तियाँ प्रायः सरकारी नियमों के उल्लंघन और अनधिकृत भूमि पर विकसित होती हैं, जिसके कारण वहां बुनियादी ढांचे का व्यवस्थित विकास संभव नहीं हो पाता। विकास की यह कमी वहां के निवासियों के जीवन को और अधिक असुरक्षित बनाती है।

149. (C) शहर में आने वाले और बाहर जाने वालों के बीच का धनात्मक अंतर
नगरीय सांख्यिकी में निवल अप्रवास शहर की जनसंख्या वृद्धि का एक महत्वपूर्ण घटक है। इसका अर्थ शहर में बाहर से आकर बसने वाले लोगों और शहर छोड़कर बाहर जाने वाले लोगों के बीच का शुद्ध धनात्मक अंतर है। जब आने वालों की संख्या अधिक होती है, तो यह शहरों पर संसाधनों के दबाव को बढ़ाता है। यह आँकड़ा ग्रामीण-शहरी प्रवास की तीव्रता और शहरों के आकर्षण को वैज्ञानिक रूप से मापने में मदद करता है।

150. (B) स्थानीय निवासियों की आजीविका और जीवन स्तर में स्थाई सुधार।
प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन और सामुदायिक सहभागिता का मुख्य लक्ष्य केवल पर्यावरण संरक्षण तक सीमित नहीं है। इसका अंतिम सामाजिक-आर्थिक उद्देश्य स्थानीय समुदायों की आजीविका को सशक्त बनाना और उनके जीवन स्तर में सकारात्मक सुधार लाना है। जब स्थानीय लोग संसाधनों के प्रबंधन में भाग लेते हैं, तो वे अपनी आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने के साथ-साथ प्राकृतिक संपदा का सतत उपयोग सुनिश्चित करते हैं, जो विकास की नींव है।

151. (B) एक कारखाने के निकास पाइप से रासायनिक निर्वहन
बिंदु स्रोत प्रदूषण वह है जिसकी पहचान एक विशिष्ट और निश्चित स्थान पर की जा सकती है। कारखाने के निकास पाइप से निकलने वाला रासायनिक निर्वहन इसका सटीक उदाहरण है क्योंकि प्रदूषक का उद्गम स्थल स्पष्ट है। इसके विपरीत, कृषि भूमि या सड़कों से होने वाला बहाव व्यापक क्षेत्रों से आता है, जिसे वैज्ञानिक रूप से गैर-बिंदु स्रोत प्रदूषण माना जाता है।

152. (A) क्योंकि यह एक विस्तृत और विसरित क्षेत्र से उत्पन्न होता है।
गैर-बिंदु स्रोत प्रदूषण एक विस्तृत और विसरित क्षेत्र से उत्पन्न होता है, जिससे इसके विशिष्ट उद्गम स्थल की पहचान करना अत्यंत कठिन हो जाता है। चूंकि यह प्रदूषण किसी एक पाइप या चैनल से नहीं निकलता, इसलिए इसे नियंत्रित करने के लिए व्यापक प्रबंधन और नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है। इसकी तुलना में, बिंदु स्रोतों की निगरानी और नियंत्रण करना तकनीकी रूप से सरल होता है।

153. (C) जल में पोषक तत्वों, विशेष रूप से नाइट्रेट और फॉस्फेट, की अधिकता
सुपोषण या यूट्रोफिकेशन की प्रक्रिया मुख्य रूप से जल निकायों में पोषक तत्वों, विशेषकर नाइट्रेट और फॉस्फेट की अधिकता के कारण होती है। ये पोषक तत्व अक्सर कृषि उर्वरकों और सीवेज के माध्यम से जल में पहुँचते हैं। इससे शैवाल की अत्यधिक वृद्धि होती है, जो सूर्य के प्रकाश को रोकता है और अंततः जल में ऑक्सीजन के स्तर को कम करके जलीय जीवन को क्षति पहुँचाता है।

154. (D) जलीय ऑक्सीजन के स्तर में कमी
हाइपोक्सिया उस स्थिति को संदर्भित करता है जब किसी जल निकाय में घुलित ऑक्सीजन का स्तर बहुत कम हो जाता है। यह अक्सर सुपोषण और शैवाल प्रस्फुटन के बाद होता है, जब मृत शैवाल के अपघटन के दौरान सूक्ष्मजीव भारी मात्रा में ऑक्सीजन का उपयोग करते हैं। ऑक्सीजन की यह कमी मछलियों और अन्य जलीय जीवों के जीवित रहने के लिए अत्यंत घातक और संकटपूर्ण सिद्ध होती है।

155. (C) प्रदूषण स्रोत का भौगोलिक स्थान और उसकी पहचान की स्पष्टता
बिंदु और गैर-बिंदु प्रदूषण स्रोतों के बीच प्राथमिक अंतर उनके भौगोलिक स्थान की पहचान की स्पष्टता में निहित है। बिंदु स्रोत प्रदूषण एक एकल और पहचान योग्य स्रोत जैसे कारखाने के पाइप से होता है। इसके विपरीत, गैर-बिंदु प्रदूषण एक विस्तृत क्षेत्र से आता है और इसे किसी एक निश्चित बिंदु से जोड़ना संभव नहीं होता है। यही कारण है कि इन दोनों का प्रबंधन भिन्न होता है।

156. (B) सल्फर डाइऑक्साइड (SO_2)
प्राथमिक प्रदूषक वे हानिकारक पदार्थ होते हैं जो सीधे किसी विशिष्ट स्रोत, जैसे औद्योगिक इकाइयों या वाहनों से वायुमंडल में उत्सर्जित होते हैं। सल्फर डाइऑक्साइड एक प्रमुख प्राथमिक प्रदूषक है जो मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन के दहन और धातुकर्म प्रक्रियाओं से उत्पन्न होता है। ओजोन और पैन जैसे पदार्थ रासायनिक प्रतिक्रियाओं के माध्यम से वायुमंडल में द्वितीयक रूप से बनते हैं, न कि सीधे उत्सर्जित होते हैं।

157. (D) नाइट्रोजन ऑक्साइड, वाष्पशील कार्बनिक यौगिक और सूर्य का प्रकाश
प्रकाश-रासायनिक धूम्र-कोहरा के निर्माण के लिए नाइट्रोजन ऑक्साइड और वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों के बीच सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में प्रतिक्रिया होना आवश्यक है। यह प्रक्रिया विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में होती है जहाँ वाहनों और उद्योगों से इन रसायनों का भारी उत्सर्जन होता है। इस जटिल रासायनिक अभिक्रिया के परिणामस्वरुप भू-स्तरीय ओजोन और पेरोक्सीएसिटाइल नाइट्रेट जैसे अन्य हानिकारक द्वितीयक प्रदूषक उत्पन्न होते हैं।

158. (A) भू-स्तरीय ओजोन मनुष्यों के लिए हानिकारक है, जबकि समतापमंडलीय ओजोन सुरक्षात्मक है।
भू-स्तरीय ओजोन और समतापमंडलीय ओजोन के बीच मुख्य अंतर उनके प्रभाव और स्थान में है। समताप मंडल में मौजूद ओजोन सूर्य की हानिकारक पराबैंगनी किरणों को सोखकर पृथ्वी की रक्षा करती है। इसके विपरीत, निचले वायुमंडल में बनने वाली भू-स्तरीय ओजोन एक शक्तिशाली प्रदूषक है। यह मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है और विशेष रूप से श्वसन प्रणाली को गंभीर और दीर्घकालिक क्षति पहुँचा सकती है।

हुआ, बल्कि स्थानीय भील समुदाय की आजीविका के साधनों और जीवन स्तर में भी सकारात्मक बदलाव आए।

76. (B) कोलीफार्म एम पी एम
कार्बन मोनोऑक्साइड, सीसा और एस्बेस्टॉस वायु प्रदूषण से संबंधित प्रदूषक हैं जो स्वास्थ्य को गंभीर नुकसान पहुँचाते हैं। इसके विपरीत, कोलीफार्म एम पी एम जल प्रदूषण का एक जैविक संकेतक है, जो जल में जीवाणुओं की उपस्थिति और संदूषण के स्तर को दर्शाता है। प्रदूषण नियंत्रण के लिए इन विभिन्न प्रदूषकों की पहचान उनके संचरण के माध्यम के आधार पर करना अनिवार्य है ताकि उचित समाधान अपनाए जा सकें।

77. (A) 1, 2, 4, 3
भारत में विभिन्न पर्यावरणीय और सामाजिक कार्यक्रमों का क्रियान्वयन एक कालानुक्रमिक क्रम में हुआ। झबुआ में जल संभरण प्रबंधन के शुरुआती प्रयास सफल रहे, जिसके बाद औद्योगिक क्षेत्रों में पारिस्थितिकी पुनर्भरण की पहल हुई। वर्ष 2014 के अक्टूबर में स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत हुई, जबकि नमामि गंगे कार्यक्रम को जून 2014 में ही प्राथमिकता के साथ आरंभ किया गया था। ये कार्यक्रम देश के सतत विकास को गति प्रदान करते हैं।

78. (D) प्रतिकर्ष कारक - नगरीय क्षेत्रों में उच्च मजदूरी
प्रतिकर्ष कारक वे नकारात्मक स्थितियाँ होती हैं जो लोगों को अपना स्थान छोड़ने पर मजबूर करती हैं, जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार की कमी। इसके विपरीत, नगरीय क्षेत्रों में उच्च मजदूरी और बेहतर अवसर अपकर्ष कारक या पुल फैक्टर्स कहलाते हैं जो प्रवासियों को आकर्षित करते हैं। अन्य युग्म जैसे अतिसार का जल से संबंध और अम्ल वर्षा का वायु प्रदूषण से जुड़ाव सही सुमेलित और वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित तथ्य हैं।

79. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
विभिन्न प्रदूषकों का उनके स्रोतों से गहरा संबंध है। सल्फर के ऑक्साइड मुख्य रूप से कोयले के दहन से उत्पन्न होते हैं, जबकि नाइट्रेट का स्तर कृषि में उर्वरकों के उपयोग से बढ़ता है। विषाणु और जीवाणु अनुचित मानवीय क्रियाकलापों और अपशिष्ट विसर्जन के माध्यम से जल और भूमि को प्रदूषित करते हैं। उच्च डेसीबल की ध्वनि विभिन्न औद्योगिक प्रक्रमों और मशीनों के संचालन का सीधा परिणाम होती है।

80. (B) स्थानांतरित कृषि जनित क्षेत्र
भू-निम्नीकरण के वर्गीकरण में स्थानांतरित कृषि को मानवजनित प्रक्रिया माना जाता है, क्योंकि इसमें मनुष्य द्वारा वनों को जलाकर और भूमि का अनुचित उपयोग करके उसकी उर्वरता नष्ट की जाती है। इसके विपरीत, प्राकृतिक खड्ड, मरुस्थलीय रेतीली भूमि और हिमानी क्षेत्र प्राकृतिक भौगोलिक प्रक्रियाओं के परिणाम हैं। यद्यपि मानवीय गतिविधियाँ इन प्राकृतिक प्रक्रियाओं को तीव्र कर सकती हैं, परंतु स्थानांतरित कृषि पूरी तरह से एक सांस्कृतिक और मानवीय क्रिया है।

81. (B) अपरदन, भू-स्खलन और पेड़-पौधों का सड़ना-गलना
जल प्रदूषण केवल मानवीय गतिविधियों से ही नहीं, बल्कि प्राकृतिक स्रोतों से भी होता है। मृदा अपरदन, भू-स्खलन और पेड़-पौधों के प्राकृतिक रूप से सड़ने-गलने से जल में बाहरी पदार्थ मिल जाते हैं जो इसकी गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। हालांकि प्राकृतिक प्रदूषक पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा होते हैं, लेकिन औद्योगिक कचरे और रसायनों जैसे मानवजनित प्रदूषक कहीं अधिक विषाक्त और नुकसानदेह होते हैं, जिन्हें नियंत्रित करना अनिवार्य है।

82. (A) केवल 1, 2 और 4
झबुआ जिला भारत के उन पिछड़े क्षेत्रों में शामिल है जहाँ जंगलों और भूमि संसाधनों के निम्नीकरण ने गंभीर आर्थिक संकट पैदा किए थे। यहाँ जल संभरण प्रबंधन का मुख्य उद्देश्य पारिस्थितिकी सुधार और लोगों की आजीविका को बेहतर बनाना था। हालांकि सरकार ने इसमें सहायता दी, लेकिन इसकी वास्तविक सफलता का आधार सामुदायिक सहभागिता थी। अतः स्थानीय लोगों की सक्रिय भागीदारी ने ही इसे एक सफल पर्यावरणीय मॉडल बनाया।

83. (C) वाहन के प्रकार, सड़कों की दशा और वाहन की स्थिति पर
ध्वनि प्रदूषण की तीव्रता और उसकी प्रकृति कई तकनीकी घटकों पर निर्भर करती है। इसमें चलने वाले वाहन का प्रकार, सड़कों की भौतिक दशा और स्वयं वाहन की यांत्रिक स्थिति प्रमुख हैं। खराब सड़कों पर पुराने और रखरखाव के अभाव वाले वाहन अधिक शोर उत्पन्न करते हैं। इसके अतिरिक्त, यातायात का घनत्व और गति भी शोर के स्तर को बढ़ाती है, जो नगरीय पर्यावरण के लिए चुनौती है।

84. (C) कथन 1 और 2 दोनों
गंदी बस्तियाँ या स्लम नगरीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि यहाँ से बड़े शहरों को सस्ता श्रम प्राप्त होता है। इसके अलावा, इन क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर मृत्तिका शिल्प, कसीदाकारी, जरी और आभूषण निर्माण जैसे मूल्यवान उत्पादों का निर्माण होता है। ये बस्तियाँ न केवल लोगों को आश्रय देती हैं, बल्कि लघु उत्पादन केंद्रों के रूप में शहरों की आर्थिक विविधता और विकास में भी योगदान करती हैं।

85. (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
नगरीय और ग्रामीण बस्तियाँ अपने कार्यों में भिन्न होती हैं और अक्सर एक-दूसरे की पूरक होती हैं, जहाँ ग्रामीण क्षेत्र संसाधनों की आपूर्ति करते हैं। हालांकि, यह कहना गलत है कि भारत में ये दोनों क्षेत्र एक समान वातावरण में विकसित हुए हैं। वास्तव में, नगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक वातावरण में व्यापक अंतर होता है, जो उनके विकास के प्रारूप को अलग बनाता है।

86. (B) नाइट्रेट
आधुनिक कृषि में नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग धरातलीय और भूमिगत जल में नाइट्रेट की मात्रा को बढ़ा देता है। जब वर्षा का पानी खेतों से बहकर नदियों और झीलों में पहुँचता है, तो यह नाइट्रेट जल को संदूषित कर देता है। जल

और जलीय पारिस्थितिकी तंत्र के लिए अत्यंत विनाशकारी होता है।

170. (D) कचरे को ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए जलाना, जिससे लैंडफिल का बोझ कम हो।
अपशिष्ट-से-ऊर्जा संयंत्रों का मुख्य उद्देश्य कचरे की मात्रा को कम करना और साथ ही उपयोगी ऊर्जा प्राप्त करना है। इन संयंत्रों में गैर-पुनर्चक्रण योग्य कचरे को नियंत्रित परिस्थितियों में जलाया जाता है, जिससे बिजली या ऊष्मा उत्पन्न होती है। यह प्रक्रिया लैंडफिल के लिए आवश्यक भूमि की मांग को कम करती है और शहरी कचरे को एक मूल्यवान ऊर्जा संसाधन के रूप में उपयोग करने में मदद करती है।

171. (C) मानवीय गतिविधियों के कारण भूमि की उत्पादकता में कमी
भू-निम्नीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मानवीय हस्तक्षेप के कारण भूमि की गुणवत्ता और उसकी जैविक या आर्थिक उत्पादन क्षमता में लगातार गिरावट आती है। इसमें मिट्टी के पोषक तत्वों की कमी, अपरदन और अन्य भौतिक या रासायनिक परिवर्तन शामिल हैं। यह समस्या न केवल कृषि उत्पादन को प्रभावित करती है, बल्कि पारिस्थितिक तंत्र की स्थिरता और मानवता की खाद्य सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा है।

172. (B) मरुस्थलीकरण
शुष्क, अर्ध-शुष्क और शुष्क उप-आर्द्र क्षेत्रों में होने वाले भू-निम्नीकरण को मरुस्थलीकरण कहा जाता है। इसका अर्थ मौजूदा रेगिस्तानों का भौतिक रूप से आगे बढ़ना नहीं है, बल्कि यह मानवीय गतिविधियों और जलवायु परिवर्तनों के कारण उपजाऊ भूमि का बंजर और मरुस्थल जैसी स्थिति में बदल जाना है। यह प्रक्रिया मिट्टी की उत्पादकता, जैव विविधता के विनाश और स्थानीय समुदायों के आर्थिक पतन का कारण बनती है।

173. (D) यह वनस्पति आवरण को नष्ट करती है और मिट्टी को संघनित करती है।
अति-चराई तब होती है जब पशुओं की संख्या भूमि की वहन क्षमता से अधिक हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप पौधों और घासों का सुरक्षात्मक आवरण नष्ट हो जाता है, जिससे मिट्टी सीधे हवा और पानी के अपरदन के संपर्क में आ जाती है। इसके अलावा, पशुओं के खुरों के निरंतर दबाव से मिट्टी दबकर सख्त हो जाती है, जिससे उसकी जल सोखने की क्षमता काफी कम हो जाती है।

174. (A) अपर्याप्त सिंचाई के बाद मिट्टी की सतह पर लवण का जमाव
मृदा लवणीकरण की समस्या अक्सर दोषपूर्ण या अपर्याप्त सिंचाई पद्धतियों के कारण उत्पन्न होती है। जब सिंचाई का पानी मिट्टी की सतह पर वाष्पित हो जाता है, तो वह अपने पीछे लवणों की एक परत छोड़ देता है। समय के साथ, मिट्टी में लवणों की यह सांद्रता इतनी बढ़ जाती है कि यह पौधों की जड़ों के लिए हानिकारक हो जाती है और भूमि कृषि के लिए अनुपयुक्त हो जाती है।

175. (C) शहरी जनसंख्या में वृद्धि
भू-निम्नीकरण के प्रत्यक्ष परिणामों में ऊपरी उपजाऊ मिट्टी की उर्वरता कम होना, कृषि उत्पादकता में भारी गिरावट और जैव विविधता की हानि शामिल हैं। शहरी जनसंख्या में वृद्धि एक सामाजिक-आर्थिक प्रवृत्ति है जो विभिन्न कारकों पर निर्भर करती है। हालांकि ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि खराब होने से लोग पलायन कर सकते हैं, लेकिन जनसंख्या वृद्धि को भू-निम्नीकरण की प्रक्रिया का सीधा परिणाम नहीं माना जा सकता है।

Nodia Editions LLP

125, Sector 6, Vidhyadhar Nagar, Jaipur 302039

MRP. ₹ 620